

---

---

*Printed by Babu Durga Prasad Manager at,  
Shri Sukhadeo sahai Jain Printing Press  
Dhanmandi, Ajmer.*

---

---

*London Agents*  
PROBSTHAIN & CO.  
Oriental Booksellers,  
41 Great Russell Street, London, W. C 1.

colleague Mr. Banarsi Das Jain, who had been invited to advise, consulted several other scholars, including Drs. Gune, Belvalkar, and A. B. Dhruva. It was then decided that the meanings of the Prākṛit words should be given in English as well as in Hindī and Gujarātī. The editing and the Gujarātī translation have been done by Swāmī Ratnachandraji, a renowned monk of great literary abilities and reputation, while the Hindī and English translations are by other hands. The expenses have been borne by the S. S. Jain Conference. As Dr. Suali records, the question was debated at the Jain (Śvetāmbara) Conference at Bhāvanagar in 1908. The opinion of Prof. H. Jacobi was asked, and he had suggested the name of Dr. Suali. This Dictionary, however, is not of the comprehensive character then contemplated. It has been confined to Ardha-Māgadhī.

### 3. Ardha-Māgadhī Glossaries and Encyclopaedias:—

Several Jain Sūtras have been published with Prākṛit-Sanskṛit glossaries. The following may be mentioned:—

- I. *Āyāramga ( Ācārānga-sūtra )* First Śruta-skandha, ed. W. Schubring, German Oriental Society, Leipzig, 1910.
- II. *Fragment der Bhagavatī*, ed. Weber. Legend of Khamḍakā. Berlin, 1866-67.
- III. *Specimen der Nāyādhammakahā*, by P. Steinthal, First Chapter, Leipzig, 1881.
- IV. *Uvāsagadasāo*, ed. Hoernlo, Calcutta, 1888-90.
- V. *Ovavāiyā ( Aupāpātika )*, ed. E. Leumann, Leipzig, 1883.
- VI. *Nnāyāvāiyā-suttam*, ed. S. J. Warren, Amsterdam, 1879.
- VII. *Kappa-suttam*, ed. H. Jacobi, Leipzig, 1879.

Mention should be made of the *Abhidhāna-Rājendra*. Some 80 years ago a Jain priest, Rājendra Vijaya by name, conceived

॥ श्रीः ॥

ॐ नमोऽस्तु महावीराय ॐ

सचिच्च

# अर्ध-मागधी कोष.

सम्पादक

पूज्यपाद श्री गुलाबचन्द्रजी स्वामी के शिष्य

शतावधानी जैनमुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज

( लीम्बड़ी सम्प्रदाय ).

भाग १.

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की तरफ से

प्रकाशक

केसरीचंद भंडारी.

राजवाड़ा चौक इन्दौर.

सर्व अधिकार स्वाधीन.

# कोष देखने के नियम ।

( १ ) प्रथम मूल शब्द मोटे टाइप में दिया गया है और उसके बाद उस शब्द का लिङ्ग अथवा जाति दर्शक संक्षिप्त वर्ण दिया गया है । तदनन्तर उस मूल शब्द का संस्कृत प्रातिशब्द दिया है, और फिर उस शब्द के अर्थ गुजराती, हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में क्रमशः दिये गये हैं । ये अर्थ पूर्ण हो जाने पर मूल शब्द जिन जिन सूत्रों में या ग्रन्थों में प्रयुक्त हुआ है उन २ सूत्रों के या ग्रन्थों के संक्षिप्त नाम और जिस जगह वह शब्द आया है उस गाथा ( श्लोक ) या अध्ययन आदि का निर्देश अङ्कों द्वारा किया गया है, जिनका पूर्ण खुलासा कोषान्तर्गत सूत्रों की सूचि से तथा व्याकरण के सक्षेप की सूचि से हो सकता है । कई शब्दों के साथ सूत्रों के प्रमाण-वाक्य ( अवतरण ) भी दिये गये हैं । जिन शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं उनके भिन्न २ अर्थ १, २, ३, इत्यादि अङ्कों द्वारा क्रमशः बताये हैं ।

( २ ) जहां कहीं मूल शब्द अर्थान्तर की दृष्टि से लिङ्गान्तर में प्रयुक्त हुआ है, वहां उस अर्थ के साथ जाति का निर्देश भी कर दिया है ।

( ३ ) सामासिक शब्द मूल शब्द के पेटे में दिये हैं और उन्हें भी मूल शब्द के समान मोटे टाइप में रखकर उनके पूर्व यह—चिन्ह किया है और इसी प्रकार सामासिक संस्कृत प्रातिशब्दों को भी ऊपर निर्दिष्ट चिन्ह के साथ रक्खा है ।

( ४ ) धातु को पहिचानने के लिये उसके पूर्व यह ✓ चिन्ह किया है और उसके जितने रूप प्रायः उपलब्ध हो सके, वे सब लकारादि क्रम से दिये हैं अथवा विशेष प्रातिपत्ति के लिये तत्सङ्कार का निर्देश भी किया गया है जैसे विधि लकार, आज्ञार्थ लकार ।

( ५ ) जो मूल शब्द अर्थ-मागधी का नहीं है किन्तु पेशाची आदि अन्य सर्वग्य भाषाओं का है, उसके पूर्व यह \* चिन्ह किया है और ऐसे शब्दों के संस्कृत-प्रतिरूप उपलब्ध न होने के कारण उनका अनुवादमात्र संस्कृत में दिया है, जैसे - \* अगड ( रूप ) आदि ।

( ६ ) जिस मूल शब्द का संस्कृत पर्याय तो यों का त्यों हो सकता है किन्तु वह पर्याय संस्कृत-साहित्य में प्रसिद्ध नहीं है अथवा पूर्व काल में प्रसिद्ध होगा और अब प्रचलित नहीं है, ऐसे संस्कृत पर्यायों को पहिचानने के लिये उनके पूर्व यह ∴ चिन्ह लगाया है, जैसे—अवलुय ( \* अवलुक-नौकादण्ड ), अगड ( \* अगत-अज्ञात ), अभिसरमाण ( \* अभिसरमाण-अभिसरत ), अवचरोचित्ता ( \* अव्यपरोपिता-अव्यपरोपण ) आदि । कहीं कहीं मूल शब्द और संस्कृत-पर्याय में वृहद् अन्तर देखने में आता है, जैसे -फास ( स्पर्श ), नाग ( ज्ञान )

---

---

प्रबन्धकर्त्ता बाबू दुर्गाप्रसाद के प्रबन्ध से श्रीसुखदेवसहाय  
जैन छापाखाना धानमण्डी अजमेर में मुद्रित.

---

---

the region to the east and west of Meru remains in darkness, and when the sun shines over the Mahāvīdeha Kṣetra the region of Bharata Iravata Kṣetra remains in the dark. The lighted part and the dark part of the earth increase and diminish according as the sun changes his position from the inner to the outer circle and from outer to the inner circle. जं० पं० ७, १३५.—पक्ष. पुं० ( -पक्ष ) कृष्णपक्ष, अंधारी ३ कृष्णपक्ष, the dark half of a month सू० पं० १३;

**अंधार. पुं०** ( अन्धकार ) अंधार अंधेरा. Darkness. ओष० नि० २७०;

**अंधारिय. त्रि०** ( अन्धकारित ) अंधकारमय धरेल अंधकारमय किया हुआ. Darkened. सु० च० २, ५६६;

**अंधारूव. त्रि०** ( अन्धरूप ) अवयव शून्य-आकृति; लोदसारूप अवयव रहित आकृति Without limbs; shapeless “ तएणं सामियादेवी तयारूरं हुंडं अंधारूवं पासइ ” विवा० १, १;

**अंधिय. पुं०** स्त्री० ( अन्धिक ) चार इन्द्रिय वाला जीव A living being having four sense-organs. पक्ष० १; जीवा० १; भग० १५, १; उत्त० ३६, १४५;

**अंधिल्ल. त्रि०** ( अन्ध ) जन्मांध; जन्म से अंधा. Born blind. पिं० नि० ५७२;

**अंधिल्लग. त्रि०** ( अन्धक ) जन्म से अंधा. Born blind परह० १, १; २, ५;

**अंध. पुं०** ( अम्ब ) परमाधामी नारकीने दुष्टे अने जिये उछाले ते अंध; ५६२ परमाधामी माने अंध जो परमाधामी नारकी को मारे और ऊँचा उछाले वह; पंद्रह परमाधामी में से एक One of the 15 Paramādhāmīs (tormentors) who torture beings in hell and toss them aloft. भग० ३, ७; सम० १५;

**अंध. पुं०** ( आम्र ) आंभानु आ३, आंभो आम्र वृक्ष, आम A mango tree राय० ४; पक्ष० १; आया० २, ४, २, १३८; ठा० ४, १, ओष० नि० ७७०, निती० १५, ५; ( २ ) डेरी; आंभानु इल आम्रफल, आम a mango पिं० नि० १६६, अणुजो० ६४; भग० ८, ३; १६, ६; २२, २; दस० ७, ३३; आया० २, ७, २, १६०; ( ३ ) डेरीना गोट-लानु धोखु आमों की गुठलियों के धोवन का पाणी a drink prepared by washing the mango stones भग० १५, १;—आराम पुं० ( -आराम ) आंध्र वन; आंभानु वन आम्रवन, आमों का वन. a grove of mango trees निर० ३, २,—कृष्णग. पुं० ( -कृष्णक ) आंभाना इल-तो गोटले; डेरीना गोटले आम की गुठली. a mango stone. भग० १५, १;—खुज्ज. न० ( -कुज्ज ) आंभाना इलनी पेड़े वक्र धारे स्थिति करनी ते, आसनते अंध प्रकार आम्रफल की भांति वक्राकार स्थिति करना; आसन का एक प्रकार a bodily posture with a curve like that of a mango. प्रव० ५६३; पंचा० १८, १७;—खुज्जय. पुं० ( -कुज्जक ) आंभाना आ३नी पेड़े वाक्रे वणी गथेल-कुथडे. आम्र के माद के समान जो टेढा होगया हो-कूवडा. one who is bent like a mango tree: a hump back भग० १, ३,

सचिव अर्ध-मागधी कोष

त्वरितं किं कर्त्तव्यं, विदुषा संसारसंततिच्छेदः ।  
किं मोक्षतरोर्बीजं, सम्यग् ज्ञानं क्रियासहितम् ॥  
किं पथ्यदनं धर्मः, कः शुचिरिह यस्य मानसं शुद्धम् ।  
कः पण्डितो विवेकी, किं विषमवधीरिता गुरवः ॥

ज्येमां आंभाना पक्षवनी रचना विशेष कथा-  
मां आवे अंभुं अंभ नाट्य; अत्रीस प्रकारना  
नाटकमांनुं अंभ. जिसमें आम के पत्तों की  
रचना विशेष रूप से की जाय ऐसा एक नाट्य;  
बत्तीस प्रकार के नाटकों में से एक प्रकार का  
नाटक. One of the thirty-two  
dramas characterised by the  
decoration of the leaves of the  
mango-tree राय० ६४;

**अंबय.** पुं० ( आम्रक ) डेरी; आंभानुं कृष्ण  
आम. A mango उत्त० ३४, १२; सु०  
च० ११, १०, ( २ ) अंभ नामनु अंभ माणुस  
इस नाम का एक पुरुष. name of a man  
अणुजो० १३१;

**अंबर.** न० ( अम्बर ) आकाश आकाश The  
sky. भग० २०, २; कप्प० ३, ४.६; ( २ )  
वस्त्र कपड़ा; वस्त्र a cloth परह०  
१, १, पञ्च० २; ( ३ ) उभयनु अंभ  
गूलर का वृक्ष. a kind of tree  
bearing fig-like fruit भग० २२, ३;  
—तल न० (—तल) आकाशनुं तलु-सपाटी  
आकाशतल the vault of the sky.  
नाया० १; ६; भग० ३, २, कप्प० ३, ३६,

**अंबरस.** न० ( + अम्बरस-अम्बर ) आकाश  
आस्मान The sky भग० २०, २,

**अंबरिस.** पुं० न० ( अम्बरीष ) लुहारनी  
कोडनी लाठी-लुहरी. लुहार की भट्टी A fur-  
nace in a blacksmith's shop  
जीवा० ३, (२) पदर नति पैकी लीण नतना  
परमाधामी, के जे नारकीना शरीरना कटका-  
भंड डेरी लाठीमा पक्षववानुं काम करे छे  
पंद्रह प्रकार के परमाधामियों में से दूसरे  
प्रकार का परमाधामी, जो नारकियों के शरीर  
के टुकड़े कर भट्टी में पकाने का काम  
करता है the second of the  
fifteen kinds of Paramādhāmīs

( torturers ) who cut into pieces  
the beings living in hell and  
roast them in the furnace  
भग० ३, ७;

**अंबरिसि.** पुं० ( अम्बपिं ) लुओ "अंबरिस"  
शब्दना लीणे. अर्थ देखो "अंबरिस" शब्द  
का दूसरा अर्थ. vide "अंबरिस" २  
सम० १५;

**अंबरीस.** पु० न० ( अम्बरीष ) लुओ "अंबरिस"  
शब्द. देखो "अंबरिस" शब्द. vide "अंबरिस."  
जीवा० ३,

**अंबलसाग.** पुं० ( अम्बलसाक ) अंभ नतनी  
वनस्पति एक जाति की वनस्पति A kind  
of vegetation भग० २१, ७;

**अंबसालवण.** न० ( आम्रशालवन ) आमल-  
कटपा नगरीना ईशान भुवामां आवेनुं आंभानुं  
वन आमलकल्पा नामक नगरीके ईशान कोन  
का आम का वन A grove of mango-  
trees situated to the north-east  
of the city named Āmalakalpā  
" आमलकल्पाए शयरीए बहिया उत्तरपुर-  
तिथिमे दिसीमाए अंबसालवणे याम चेंद्रए  
होत्था, पोरणे जाव पडिरुवे " राय० ४;  
निर० ३, २,

**अंबा** स्त्री० ( अम्बा ) माता; जननी मा,  
माता; जननी A mother हे अंब. स०  
प्र० ए० नाया० १४, ( २ ) नेमनाथना  
शासननी अधिष्ठात्री देवी. नेमनाथ तीर्थ-  
कर के शासन की अधिष्ठात्री देवी. the  
presiding goddess of Nem-  
nātha's cult प्रव० ३७८,

**अंबाडग** पु० ( आम्रातक ) अम्बाडनुं अंभ;  
अम्बाडनी वृक्षनी अंभ नत. बहुत  
बीज वाले वृक्ष का एक जाति A kind  
of tree the fruit of which is  
full of seeds. भग० २२, ३; पञ्च० २,





अणुत्त० ३, १; अणुजो० ६४; १५४; ( २ )  
न० अयाडानुं कृण उक्त वृक्ष का फल  
fruit of Ambādā tree आया० २,  
१, ८, ४३, ( ३ ) अयाडाना कृणु धोवण  
—पाणी उक्त वृक्ष के फल का धोवन-पानी  
water in which Ambādā fruit  
has been washed भग० १५, १;  
—पेसिया. स्त्री० (—पेशिका ) अयाडानी  
पेशी-डातणी बहुवीजकवृक्ष का टुकड़ा. a thin  
cutting of a tree named Ambādā  
दसा० १०, ५;

श्रंवालिया. स्त्री० ( आम्लिका ) आंयणी  
इमली A tamarind tree भग० १८, ६;  
श्रंवावल्ली. स्त्री० ( आस्लवल्ली ) आटास  
वाणी अेक वेल-लता खट्टे रस वाली एक  
बेल-लता A creeper having acid  
juice पत्र० १;

श्रंबिया. स्त्री० ( अम्बिका ) अम्बिका-पायभा  
वासुदेवनी माता पाँचवे वासुदेव ( सुदर्शन )  
की माता का नाम Name of the mo-  
ther of the fifth Vāsudeva सम०  
श्रंबिल न० ( अचास्ल ) आयम्बिल; तपने  
अेक प्रकार आयंबिल, तप का एक प्रकार  
A mode or species of austerity,  
Āyambila प्रव० २०६;

श्रंबिल. न० ( अम्बिल-अम्ला ) अेक लतनी  
हरी वनस्पति एक प्रकार की हरी वनस्पति  
( अम्मीखेद्ये, पञ्जाबी ). A kind of  
green vegetable. पत्र० १;

श्रंबिल. पु० ( अस्ल ) आटे रस, आटास  
खट्टा रस; खटाई Acid juice; acidity  
मम० २२; ( २ ) त्रि० आटास वाणु, आटु-  
खट्टा; खटाई वाला acid, having sour  
juice. भग० २, १; ११, ११; २०, ५;  
दस० ५, १, ६७; जीवा० ३, १, पत्र० १;  
आया० १, ५, ६, १८; २, १, ७, ४१; ठा० १,

१; उत्त० ३६, १८; नाया० १; पि० नि०  
भा० ८३; ज० प० २, ३८; अणुजो० ३१;  
—उद्गम. न० (—उदक) कंठ जेयुं अत्यन्त  
आटु पाणी कांजी के समान अत्यन्त खट्टा  
पानी water resembling gruel,  
very acid in taste पत्र० १;—णाम.  
न० (—नामन् ) नामकर्भनी ६३ प्रकृति-  
मानी अेक, जेना उदयथी ज्वने आटास  
वाणुं शरीर भजे-जेम आंयणीना ज्वने  
भज्यु छे नामकर्म की ६३ प्रकृतियों में से  
एक प्रकृति, जिसके उदय से जीव को खटास  
वाला शरीर प्राप्त हो-जैसे इमली का जीव.  
one of the 93 varieties of  
Nāma-Karma as a result of  
which the soul has to bear  
acidity in the body; e g the  
life in a tamarind tree क० गं०  
१, ४१; —रस. पुं० (—रस ) आटे रस  
खट्टा रस. acid juice; acidity. भग०  
८, १;

श्रंबिलिआ. स्त्री० ( आम्लिका ) आंयणीनुं  
अ३ इमली का वृक्ष. A tamarind tree.  
ज० प० ३;

श्रंबु. न० ( अम्बु ) पाणी; ज० पानी.  
Water ओव० ३८, —स्थंभ. पुं० (—स्तम्भ)  
पाणीने रोकवानी अेक कला; ६४ कलाभांनी  
१३ भी कला पानी को रोकने की एक कला,  
६४ कलाओं में से १३ वीं कला the art  
of stopping a flow of water;  
the thirteenth Kalā or art  
ओव० ४०;—भक्ति. त्रि० (—भक्तिन् )  
पाणी उपर ज्वनार पानी के आधार से  
अथवा पानी के ही द्वारा जीने वाला living  
on water भग० ११, ६; निर० ३, ३;  
—वासि. त्रि० (—वासिन् ) पाणीभां  
रहेवा वाणे पानी में रहने वाला. residing

# अर्पणपत्रिका ।



धर्म-धुरंधर प्रवर-पांडित पूज्यपाद श्रीगुलाबचंद्रजीस्वामी  
तथा तल्लघुभ्राता महाराजश्रीवीरजीस्वामी ! आप  
बन्ने सहोदरोप घणी न्हानी वयमां प्रव्रज्या अंगीकार  
करी शास्त्रामृतनो अपूर्व आस्वाद लीधो अने आ  
चरणरज सेवकने दीक्षित करी, विद्यानो मधुर रस  
चखाड्यो, शास्त्राभ्यासमां घणी सहाय्य आपी,  
म्होटो उपकार कर्यो छे, पटलुंज न्ही पण  
शासनोपयोगी साहित्यविकासना कार्यमा  
पण आजसुधी सहाय आपता रहो छो,  
तेथीज आ सेवक कोषनिर्माण जेवा  
विकटमार्गमां चालवाने समर्थ  
थयो छे अने तेनो पार पास्यो  
छे, ते सर्व आपनी कृपानुं  
फळ छे पटला माटे आ-  
भारवश आ सेवक धर्म-  
साहित्य अने भाषा  
साहित्यना अंग-  
रूप आ पुस्त-  
क अपना  
चरण मां  
अर्पण  
करे  
छै.

रत्नचंद्र.

food contains matter with life in it. " आजीवियसमयस्स णं अयमहे पयस्सते अकसीणपडिभोइणो सव्वसत्ता " भग० ८, ५;—महाणसिय. पुं० (—महानसिक—महानसमन्नपाकस्थानं तदाश्रितत्वाद्वाऽन्नमपि महानसमुच्यते; तत्तश्चासीणं पुरुषशतसहस्रेभ्योऽपि दीयमान स्वयमभुक्तं सत् तथाविधलब्धिविशेषादनुत्तितं, तच्च तन्महानसं भिषाखब्धं भोजनमसीणमहानसं तदस्ति येषां ते तथा ) ७ लब्धिना प्रभावथी हुणरो भाणुसोने न्माडे तो पणु पोते न भाय त्यां सुधी अन्न पुटे नहि तेवी लब्धि वाणे भाणुस—साधु. जिस लब्धि के प्रसाद से जब तक स्वयं कुछ न खाय तब तक हजारों मनुष्यों को जिमाने पर भी भोजन न खुटे ऐसी लब्धि वाला मनुष्य—साधु. a person whose store of food is not exhausted, even though he feeds thousands of men, until he himself has not taken it, by virtue of a particular Labdhi or spiritual acquisition. प्रव० १५१८; आ० १६,

अकसीणमहाणसी. स्त्री० (असीणमहानसी) ७नाथी थोडा अन्नभा हुणरो भाणुसोने न्माडी शकाय तेवी लब्धि. थोड़े से अन्न में हजारों मनुष्यों को भोजन करा सकने वाली लब्धि A spiritual attainment by which thousands of men can be given food from a small quantity of it. प्रव० १५०६;

अकसीरमहुसणिय. पुं० ( असीरमधुसणिक ) दूध, घी आदि वर्जनार—अलिग्रह धारी साधु दूध, घी आदि का त्यागी साधु An ascetic abstaining from milk, ghee etc. परह० २, १,

अकखुअआआरचरिस्स. पुं० ( अस्तकारचारित्र—अस्तकारमतिचारैरप्रतिहतं स्वरूपं चरित्रं येषां ते तथा ) अतिचार रहित आरित्र पाणनार; अण्डित आरित्र पाणनार. अतिचार रहित चारित्र पालने वाला, अखडित चारित्र पालने वाला One who observes unbroken right conduct. वव० ३, ३;

\*अकखुडिअ त्रि० ( स्वलित ) डेस लागेल; आ० ३६. ठुकराया हुआ Obstructed; stumbled. सु० च० ४, २२६;

अकखुइ. पुं० ( अखुइ ) गंभीर—दयालु—श्रावक; श्रावकना अेडवीस गुणुमानो पहेलेो गुणु उदार—गंभीर—दयालु—श्रावक; श्रावक के इकीस गुणों में से पहिला गुण A kind and generous Śrāvaka; the first of the 21 qualities of a Śrāvaka or Jaina layman पंचा० ७, ४, प्रव० १३७०;

अकखुपुरी स्त्री० ( अखुपुरी ) अे नामनी अेड नगरी, डे न्यां सूर्यनी अत्रमहिपी तरीडे उपन्न थवानी सूर्यप्रल गृहस्थनी सुरप्रला आदि पुत्रीओ रहेती हुती एक नगरी का नाम, जहा कि, सूर्यप्रभ गृहस्थ का सूरप्रभा आदि कन्याएं रहती थी और जो सूर्य की पटरानी होनेवाली थी The name of a otheity where Sūyaprabhā and other daughters of Sūryaprabha were living destined to become the crowned queens of the Sun god नाया० ६०

अकखुभिअ त्रि० ( अखुमित ) क्षोभ न पाभेद क्षोभ रहित. Undistracted; unagitated " अतथे अणुविग्गे अकखुभिअ " उवा० २, ६६, नाया० ६,

अकखेत्त न० ( अखेत्त ) आर न्गीन; पाडने



अवसकरण. न० (अवप्वकरण) पाछा ७२० ते पीछे जाना. Act of following; pursuit. पंचा० १३, १०;

अवसक्ति त्रि० (अवप्वक्तिन्) दूर रहनेवाला; पाछा रहनेवाला, पीछे हटनेवाला Remaining at a distance; retreating backwards सूय० २, ६, ६,

अवसन्न. त्रि० (अवसन्न) निमग्न, तल्लीन थयेला; डुबी गयेला निमग्न; तल्लीन; डूबा हुआ. Plunged in, absorbed in, drowned in उक्त० १३, ३०, ३२, ७६;

√अवसप्प. धा० I. (अप + सृप्) दूर भागी ७२०, सट्टी ७२०. दूर भाग जाना; सटक जाना. To escape, to run away अवसप्पंति. सूय० १, ३, २, १४;

अवसपिप. त्रि० (अवसपिन्) छोड़ने वाला- ७२०; त७२०. छोड़कर भाग जाने वाला (One) who abandons and flies away. "अपडिन्नस लवावसपिपयो" सूय० १, २, २, २०;

अवसपिणी. स्त्री० (अवसपिणी) ६१ कोडा कोडि सागरोपम प्रमाण उतरतो कोडा; समये समये ६१ दिशावनार छ आरापरिमित कोडा- विभाग दस कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण काल, जिसमें हर समय अवनति ही होती रहती है वह छ आरा परिमित कालविभाग. The æon of decrease, measuring six Ārās; the time of descent equal to ten Kodākoḍī Sāgaropamas, a Kodākoḍī=(a crore x a crore). भग० ३, २, ५, १;

अवसुय. त्रि० (अपसद) तु२७. हलका, तुच्छ. Mean; low; base ठा० ४, ४;

अवसवस त्रि० (अपस्ववश) परवश, स्वतंत्रता रहित. परवश, परार्थीन Not free; dependent. नाया० १६; १६;

अवसव्व. न० (अपसव्व) ग्रहणी आलविशेष. ग्रहों की गतिविशेष. A particular kind of the motions of the planets जीवा० ३, ३;

अवसह पुं० (अवसथ) धर; आश्रय, आश्रम. घर, आश्रय; आश्रम A place of shelter, a house, an ascetic's abode. उक्त० ३२, १३; परह० १, १;

अवसाण. न० (अवसान) छेडा, अंत; पर्यवसान; समाप्ति. पर्यवसान, अन्त, समाप्ति. End, conclusion पिं० नि० ११३; ओघ० नि० भा० ४५, ओघ० नि० ७६; ओव० ३१; जीवा० ३, ४, विशेष० ८८, अणुजो० १२८, निसी० २०, ३१, नाया० १; प्रव० १३४८; कप्प० ४, ६२;

अवसिद्धंत. पुं० (अपसिद्धान्त) अपसिद्धांत; असत्य सिद्धांत, असत्य सिद्धान्त A false principle or doctrine विशेष० २४५७,

√अवसीअ धा० I (अव+पद्) रीतिपुं; इलेश पाभवे. दुखी होना, क्लेश पाना. To be afflicted, to feel pain.

अवसीअ उक्त० २७, १५,

अवसेस. पुं० (अवशेष) आधीनुं, शेष रहलुं; वधेनुं. शेष रहा हुआ, बचा हुआ. A remnant भग० ३, १; ५, ८, ६, ३, ४; ७, ६; १२, ६, २०, ८, २४, १, २०; नाया० १, ५, ८; १६, विवा० ६, वव० २, ५; ओव० ३४; सम० प० २३१; उक्त० २६, २०, वेय० २, १२; जं० प० २, ३३; ५, ११७; राय० ७३; ठा० ७, उवा० १, १६; प्रव० ८६६;

अवसोहिय. सं० कृ० अ० (अवशोष्य) दूर करीने; परित्यजने. दूर करके. Having removed or abandoned. "अवसोहिय इट्यापहं" उक्त० १०, ३२;

# INTRODUCTION.



## 1. Need and Value of an Ardha-Māgadhī Dictionary:—

All those who have occasion to study the ancient scriptures of the Jains will welcome this Dictionary. Especially will this be true of laymen who are not deeply learned in the ancient language of the Jain church, and also of those who are starting the study of Ardha-Māgadhī, whether for the purposes of philology, of philosophy, or for the general history of Indian thought and religion. Such have had to depend on Commentaries and detached Glossaries dealing each with one particular text. A further justification for the enterprise lies in the hope that it may furnish useful material for a more comprehensive Prākṛit Dictionary embracing all the known dialects of the Middle stage of the Indian language, which has come down in various forms from Vedic ages to the Indo-Āryan languages of to-day. The spelling of MSS. varies and in order that a student or editor may be able to see what forms are found in other passages and are recognised as correct he needs a Dictionary with references to the texts. That is what this book proposes to supply for Ardha-Māgadhī. Further study may lead to the correction of many forms, but it is to facilitate such study that this work has been undertaken.

## 2. Inception and Compilation of the Dictionary:—

In 1912 Dr. Luigi Sualì announced his intention of preparing a Prākṛit Dictionary, ( Z D M G 1912-p. 544 ) Mr. Kesari-chand Bhandāri of Indore had sent a list of words to Dr Sualì, who returned it when his work was interrupted by the Great War. Mr Kesari-chand Bhandāri then persuaded a Jain priest Śatāvadhānī Pandit Śrī Ratnachandrajī to take up the work of making a Dictionary of the Jain Prākṛits. The Sūtras were indexed with the assistance of three other priests. For this they used their own MSS, and Bālu-char printed texts ( see below ). In 1920 my pupil and

the idea of preparing an encyclopaedia of Jainism. After 22 years' work in collaboration with several disciples he brought out the first volume of the *Abhidhāna Rājendra* in 1910. Since then four more volumes have appeared, the last word being *Bhola*. One or two more volumes are expected to complete the work.

Each Prākṛit word is followed by its Sanskrit equivalent, meanings in Sanskrit, reference to the text, and a discussion of the various aspects of the word with quotations from other works. The size and cost (each volume 1000 pages for Rs. 25) make it a work of reference for libraries rather than a student's dictionary. The introduction contains Hemacandra's Prākṛit Grammar with his commentary. In the sketch of the declensions, all possible forms are given, whether they occur in literature or not. Thus about 50 forms of the Ablative singular of *yushmad* are catalogued, though hardly any of these occur in AMg. literature. This Encyclopaedia puts together under each head what is to be found in the original texts and in the commentaries.

#### 4. Texts —

For the general student without an inside knowledge of the Jain Scriptures it may be useful to mention the AMg texts which have been published.

(a) *BĀLUCHAR TEXTS* — R. B. Dhanpati Singh of Bāluchar, Murshidabad District (Bengal) brought out an edition of the AMg. canon with a Sanskrit commentary and Gujarātī translation, printed at Benares, Bombay, and Calcutta, 1875-1886. Hoernle criticised this series as paying "no regard whatsoever to textual or grammatical correctness". The series was presented free to Sādhus, Jain temples, and several libraries.

(b) *JAINĀGAMODAYA TEXTS* — More scholarly is the series brought out by the Jaināgamodaya Samiti, Bombay, 1910-1920. The volumes are printed in MS form, i. e., on loose leaves



tied in a bundle. There is a Sanskrit commentary and some variant readings in footnotes.

(c) *HYDERABAD SERIES*.—AMg Texts with a Hindī translation prepared by a Jain priest, Śrī Amolak Rikhi; printed at the expense of a rich Jain patron, Hyderabad (Deccan) 1919–1920, in MS. form, and distributed free to Sādhus and libraries. The text is not free from errors.

Besides these, of which the second series is much the best for students of the language, there are various editions of the more popular works such as the Kappa, Uttarajjhayaṇa, Dasaveyāliya, etc.

In Section 3 above have been enumerated seven texts published by European scholars with vocabularies. To these may be added four without vocabularies:—

VIII. *Āyānāṅga*, ed. H. Jacobi, Pali Text Society, 1882.

IX. *Anuttarovavāiṇya*, ed. L. D. Barnett, Oriental Translation Fund, Vol. XVII. London 1907 (appendix to Translation of *Antagaḍa*).

X. *Dasaveyāliya*, ed. Leumann in Z. D. M. G., Vol. 46.

XI. *Uttarajjhayaṇa* ed. Jarl Charpentier, Uppsala, 1922.

## 5 Translations.—

The Gujarātī translation of the whole Canon in the Bāluchar series and the Hindī translation in the Hyderabad edition have been mentioned above. In English there are Jacobi's in the "Sacred Books of the East" Series, ( Vols XXII, XLV ), Hoernle's *Uvāsagadasāo*, and Barnett's *Antagaḍadasāo* and *Anuttarovavāiṇya*.

## 6. Grammars and Readers :

*Ardha-Māgadhī* ( or *Ārsha* ) grammar is expounded by the Prākṛit grammarians. The most important are those of Hemacandra in India and of Pischel in Europe. A sketch of the grammar, which

has been prepared by Mr. Banarsi Das Jain, M. A., is appended to this introduction. Mention may also be made of an Ardha-Māgadhī Reader by the same scholar, which is being published by the University of the Punjāb.

### 7 Material included in this Dictionary :

About 50,000 words have been collected by indexing 49 works. These include 11 Angas, 12 Upāṅgas, 7 Pañṇas, 6 Chedasūtras, 4 Mūlasūtras, the Nandīsutta, the Anuogadāra, and the Oghaniryukti. That is nearly the whole of the Śvetāmbara Canon and all important supplementary works.

### 8. History and peculiarities of Ardha-Māgadhī :

The Language of the Jain Sūtras is called Ardha Māgadhī. The Sūtras state that the Blessed Mahāvīra preached the Law in that language, and regard it as the basic language from which others are derived. The Indian Grammarians call the language of the Sūtras "Ārsam," i. e. the language of Rishis.

Pischel in his Prakrit Grammar, §16, quotes the following passages :—

Samavāyamaṅga-sutta 98 Ovavāiṃya-sutta 56 Paṇṇavanā-sutta 59. Hemacandra I. 3, IV. 287. Premacandra Taikavāgīśa's commentary on Daṇḍin's Kāvyaḍarśa I 33. Namisādhū on Rudrata's Kāvyaḷaṃkāra 2. 12. Vāgbhata's Alaṃkāratilaka. I. 1.

From these passages Pischel shows (§17) "that Ārṣa and Ardhamāgadhī are identical, and that according to the tradition the language of the old Jaina-suttas was Ardha-Māgadhī, and indeed as Hemacandra's example from the Dasa-veyāliya-sutta (633-19) shows, not only prose but also Poetry."

Why was it called Ardha-Māgadhī? The chief characteristics of Māgadhī are *rasor laśau, la* and *śa* instead of *ra* and *sa* and *e* in the nom. sing. masc.; thus *Rāmo* becomes *Lāme*. Ardha-Māgadhī

retains *ra* and *sa*, but has the nom. masc. in *e*; *Mahāvīre* except in poetry, where *o* is frequently found.

Thus Ardha-Māgadhī has some of the peculiarities of Māgadhī but not all. This is the explanation of the name "Half-Māgadhī" given by Abhayadeva on *Samavāyamaṅga* p. 98 and *Uvāsagadasāḥ* p. 46. (Pischel, *Prākṛit Gr.* §17.)

In poetry the language differs somewhat from that of prose. Nominative singular in *-o* is frequently found instead of *e*. The AMg. form *mīlakkhū* (Skt *mlecchā*) is found only in prose; poetry has *mecchā* like other Prākṛits. Some of these differences have been attributed to translation from Sanskrit originals.

The metrical works have also a number of peculiarities common to Māhārāshtrī, and this form of the language has been described as a mixture of Māhārāshtrī and Māgadhī. The later Jain writings are in a form of Māhārāshtrī tinged with Ardha-Māgadhī. In this change of dialect we may see a trace of the spread of Jainism towards the South-West.

Where did Ardha-Māgadhī originate?

The oldest Sanskrit work on poetics, ascribed to Bharata, mentions (17 48) Ardha-Māgadhī as one of the seven languages, the others being Māgadhī, Āvantī, Prācyā, Śaurasenī, Bāhlikā and Dākṣiṇātyā. In the Drama, according to the same authority, it is the language of servants, Rājputs and guildmasters (śresthinām). In the MSS. of the Dramas, however, this statement is not borne out. The monk Jīvasiddhi in the *Mudrārāksasa*, and Kṣapanaka in the *Prabodhacandrodaya* are shown as speaking Māgadhī.

Nevertheless in the fragments of Buddhist plays found in Central Asia, and ascribed to Aśvaghoṣa, the learned editor Professor Lüdeis would recognise some passages of Old Ardha-Māgadhī.

In the Southern dialect of Aśoka's inscriptions we find *sa* and *ra* combined with nom. sing. in *e*.

Aśoka's Eastern dialect has *la* for *ra* e *q* *lājā* for "king", so that we may conclude Ardha-Māgadhī was not the language of Patna in the Mauryan period.

Exactly when and where what we call Ardha-Māgadhī arose remains a question for investigation. It seems probable that its original home was not very far to the West or perhaps to the South West of ancient Magadha.

During the Mauryan empire it is likely that the Eastern language of Patna spread further to the West, at least in palaces and bazars though not in villages. When the Mauryan empire declined, the use of the Eastern idiom probably contracted, when in later times the central power had its centre of gravity further West, the Śaurasenī form of speech would press further down the Ganges valley. Such movements of the prevailing literary dialects would make it difficult to locate a particular form of language, even when the exact date was given, a circumstance that occurs but rarely.

According to tradition Mahāvīra taught in Ardha-Māgadhī, and his words are recorded in that language. According to tradition again Gautama Buddha taught in Māgadhī, while his words are recorded not in Māgadhī but in Pāli. Yet both are represented as contemporaries, and associated with the same part of the country.

If both Teachers used the same language, perhaps an old form of language, resembling Ardha-Māgadhī, spoken round Benares, between the Śaurasenī and the Māgadhī countries, the literary language of either church must have changed before the extant scriptures were recorded in writing. When such changes took place, and how great they were, it would be hardly possible to determine.

Ardha-Māgadhī, as we have it, is (like Pāli) more archaic than the Dramatic Prakrits. It agrees with Māgadhī in having the Nom. sing. masc. in *e*; the use of gen. sing. *tava*, past participles

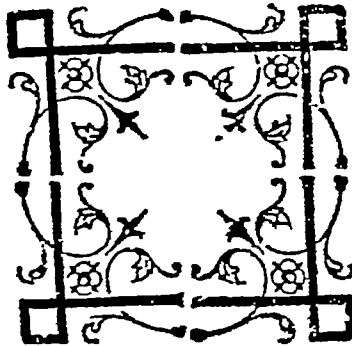
in *Ḍa* for *Ṭa* after roots in *ṛ* (but not always); *ga* for *ka*, “*Asoga*”; but this is rare in *Māgadhī*.

It differs markedly in retaining *ra* and *sa*. *Ardha-Māgadhī* differs in many respects from *Māhārāstrī* e. g. locative in *msi*; (*M.* has—*mmi*) dative in *ttāe*, infinitives in *ttae, ittae*, gerunds in *ttā, ttāṇam, ccā, ccānam*, and so on.

A clearer view of the structure of the language is given in Mr. Banarsi Das' sketch of the grammar appended herewith. This is based on forms found in the texts, not merely on the theory of the grammars.

*Oriental College, Lahore.*

**A. C. Woolner.**



# Skeleton Grammar of Ardha-Māgadhī.

## Alphabet.

### Vowels.

1. Short	अ a	इ i	उ u	(ए) e	(ओ) o
Long	आ ā	ई ī	ऊ ū	ए e	ओ o

### Consonants

2.	Suads	Sonants
----	-------	---------

	Unaspirate	Aspirate	Unaspirate	Aspirate	Nasal
Mutes.	क् k	ख kh	ग् g	घ gh	ङ ṅ
	च ch	छ chh	ज j	झ jh	ञ ñ
	ट t	ठ th	ड d	ढ dh	ण ṇ
	त् t	थ th	द d	ध dh	न् n
	प p	फ ph	ब b	भ bh	म् m
Fricatives		स् s	य y, र r, ल् l, व v,	ह h	ः m (anusvāra)

### Notes

- 3 (1) Nasal vowels, also, are used in verse. A pure vowel when followed by an anusvāra is often nasalised for the sake of metre, and then the anusvāra disappears

( 2 ) Short ष् and ओ ष are not distinguished in MSS. They are indifferently denoted by ष् or ष and ओ or ष respectively.

( 3 ) इ, उ, ए, न and म् when followed by mutes of their class, are always replaced by the + anusvāra.

( 4 ) Conjunct consonants may occur as ( i ) double e. g. क्क, ग्ग, च्च etc, ( ii ) an unaspirated followed by a similar aspirate of the same class e. g क्क्ख, ग्ग्ग, च्च्च etc, ( iii ) a nasal followed by a mute of the same class in which case the nasal must be changed to anusvāra e. g अंग ( अङ्ग ), संख ( शङ्ख ), पंच ( पञ्च ) etc, ( iv ) anusvāra followed by व् or म् e. g. सवर, हंस etc. or ( v ) ए or म् followed by ह् e. g. विष्टु, अम्हे etc.

### Declension.

4 Ardhā-Māgadhī admits of declension in ङ nouns for number and case It has two numbers, Singular and Plural; three † genders, Masculine, Feminine and Neuter, and eight cases Nominative, Accusative, Instrumental, † Dative, Ablative,

---

+ This is only a peculiarity of spelling In pronunciation the nasals retain their proper sound e. g अंग is pronounced as अङ्ग anga, पञ्च as पञ्च pañcha, दंड as दण्ड danda, दंत as दन्त danta, अंब as अम्ब amba and so forth.

ङ Including Adjectives, Numerals and Pronouns

‡ The gender of most nouns is fixed. Nouns denoting animate objects and adjectives change their gender according to certain rules

† To say that Prakrits have no Dative case means that they have lost the direct descendant from the old Indian prototype, its place having been taken by the Genitive form. Ardhā-Māgadhī, however, retains the old 'Dative Singular' side by side with the new one

Genitive, Locative and Vocative with their same functions as in Sanskrit

The order of cases as given above is that followed by Sanskrit Grammarians who based it on similarity of forms. On the same principle the order of cases in a Prakrit Grammar should be Nominative, Vocative, Accusative, Dative, Genitive, Instrumental, Locative and Ablative which will be followed when full declension of a word is given

### Nouns.

5 For convenience sake, the declension of nouns may be treated under the following heads —

- a Masculine nouns ending in अ
- b Masculine nouns ending in इ or उ.
- c Neuter nouns ending in अ, इ or उ
- d Feminine nouns ending in इ or उ.
- e Feminine nouns ending in आ, ई or ऊ.
- f Irregular forms.

6

देव m. ' a god '

	Singular	Plural
N.	देवे, देवो	देवा
V.	देवा ' देवो !	देवा !
Ac.	देवं	देवे, देवा
D	देवस्स, देवाण्	देवाण
G.	देवस्स	देवाण
I	देवेणं	देवेहिं
L	देवसि, देवे	देवेषु
Ab.	देवाओ, देवा	देवेहितो

Note 1 Sometimes in poetry the final anusvāra disappears and the preceding vowel may or may not be nasalised.



2. The forms देवो N Sing and देव Ac Pl. are frequent in poetry, but rare in prose.

7	मुनि 'sage'	साहु. 'monk'
Singular		
N	मुनी	साहु
V	मुनी !	साहु !
Ac	मुनि	साहु
D G.	मुनियो, मुनिस्म	साहुयो, साहुस्म
I	मुनिया	साहुया
L	मुनिसि	साहुमि.
Ab	मुनीओ, मुनियो	साहुओ, साहुयो
Plural		
N Ac	मुनियो, मुनी	साहुयो, साहु, साहवो
V	मुनियो ! मुनी !	साहवो !
D G	मुनीणं	साहुण
I	मुनीहिं	साहुहिं
L	मुनीसु	साहुसु
Ab	मुनीहितो	साहुहितो

Note. In N and Ac Pl the forms मुनीओ and साहुओ, also, are met with

8	वण n. 'forest'	दहि n. 'curd'	महु n 'honey'
Singular			
N, Ac	वणं	दहि	महु.
Plural			
N Ac.	वणाह, वणाणि	दहीहं, दहीणि	महुह, महुणि

Note. For other cases the neuter stems are declined like the corresponding masculine ones.

9	कुञ्चि f. 'womb'	धेणु f 'cow'
---	------------------	--------------

## Singular

N. V.	कुच्छी	धेणु
Ac	कुच्छि	धेणु
D G I.	कुच्छीए	धेणुए
L	कुच्छिमि	धेणुमि
Ab.	कुच्छीओ	धेणुओ

## Plural

N V Ac	कुच्छीओ, कुच्छी	धेणुओ, धेणु
D G	कुच्छीण	धेणुण
I	कुच्छीहिं	धेणुहिं
L.	कुच्छीसु	धेणुसु
Ab.	कुच्छीहितो	धेणुहितो

10 साला f 'house'      देवी f 'goddess'      वह् f 'daughter-in-law'

## Singular

N.	साला	देवी	वह्
V	साले	देवी	वह्
Ac	साल	देवि	वहु
D G I L	सालाए	देवीए	वह्ए
Ab	सालाओ	देवीओ	वह्ओ

## Plural.

N. V Ac	सालाओ, साला	देवीओ, देवी	वह्ओ, वह्
D G	सालाण	देवीण	वह्ण
I	सालाहिं	देवीहि	वह्हि
L	सालासु	देवीसु	वह्सु
Ab	सालाहितो	देवीहितो	वह्हितो

11 There are a number of words of frequent use that are declined a little differently from the above types. Their irregular forms are generally the direct descendants of the corresponding old Indian ones which analogy has failed to reduce to any of the common types. Among masculines may be noted —

पिउ or पिड ( skt. पितृ ) 'father'.

	Singular	Plural
N V	पिया ( skt पिता, पितः )	पियरो ( skt. पितरः )
Ac	पियरं ( skt पितरम् )	पियरो
D G	पिउणो, पिउस्स	पिऊणं, पिईणं
I	पिउणा	पिऊहिं, पिईहिं
L	पियरि ( skt. पितरि )	पिऊसु, पिईसु
Ab.	पिउणो	पिऊहिंसां, पिईहिंतौ

भाउ or भाइ ( skt. भ्रातृ ) 'brother'.

Sing N. V भाया ( skt भ्राता, भ्रातः ), Ac. भायरं ( skt भ्रातरम् ); D G भाउणो, भाउस्स; Pl N V. भायरो ( skt भ्रातरः ), भायरा; Ac. भायरो, भायरे; D G. भाऊण, भाईण, I भाऊहि, भाईहि.

Similarly are declined the agent nouns derived from the old stems ending in ऋ e. g. दाउ or दाइ ( skt दातृ ) 'giver'.

Among feminines may be noted —

12

माउ or माइ ( skt. मातृ ) 'mother'.

	Singular	Plural
N	माया ( skt माता )	मायरो ( skt मातरः )
Ac	मायर ( skt मातरम् )	मायरो
D G.	माउण	माऊणं. माईण
I.	माउणा	माऊहिं, माईहि, मायाहि
L.	माउण	माऊसु, माईसु

धूया ( skt. दुहितृ ) 'daughter' is declined like साला f, but धूयरं Ac. Sing and धूयराहिं I. Pl also occur. Other examples are राय m 'king' and आय or अप्प m. 'self'.

राय ( skt. राजन् ) m 'king'.

Sing N. राया ( skt. राज्ञा ), V. राय ( skt राजन् ), राया, Ac रायं, रायाणं ( skt. राजानम् ), D G. रायणो ( skt. राजन् ) रायस्स; I. राइणा, राणा

(skt. राज्ञा), Pl N V. रायाणो (skt राजानः); Ac रायाणो, D G राइणः  
I राइहि, L राइसु.

आयं or अप्प (skt. आत्मन्) m 'self'

Sing. N आया, अप्पा (skt. आत्मा), Ac आयाणं, अप्पाण, अत्ताण (skt. आत्मानम्), D G अप्पणो (skt आत्मनः), I अप्पण (skt आत्मना), Ab. आयओ, अत्तओ (skt आत्मन.), Pl N अप्पणो (skt आत्मान), Ac अप्पणो (skt आत्मन).

- 13 Sometimes the irregular forms exist side by side with the regular ones. This occurs chiefly where old stems end in अत्, वत्, मत् or अम् e.g वयं 'word' has I Sing. वएण and वयसा (skt. वचसा), तव 'penance' has I Sing. तवेण and तवसा (skt. तपसा); तेय 'heat' has I Sing तेण and तेयसा (skt तेजसा); अरहंत 'Arahanta' has N Sing. अरइते and अरहं (skt. अहन्), भगवत 'venerable' has G Sing. भगवत्सं and भगवओ (skt भगवत्), I. Sing. भगवत्तेण and भगवया (skt. भगवता); etc

### Adjectives

- 14 Adjectives are declined exactly like nouns. They take the same number, gender and case as the nouns which they qualify.

Comparative and Superlative degrees are expressed by adding -यर (or -तर) and -यम (or -तम) respectively to the positive e.g. अप्प 'little' अप्पयर 'less' अप्पयम 'least', दढ 'strong' दढयर 'stronger' दढयम 'strongest', मह (skt महत्) 'great' महत्तेर 'greater' महत्तम 'greatest' Some of the forms are the remnants of the old prototypes in ईयस् and इष्ट e.g. सेय (skt. श्रेयत्) 'better' कणिष्टे (skt. कनिष्ठे) 'youngest', जेष्ट (skt. ज्येष्ठ) 'eldest'.

### Numerals

- 15 **Cardinal**

1. एग or एक्क used in the singular.

	N <sup>s</sup>	Ac	D	G	I	Ab
Mas.	एगे	एगे	एगस्से	एगेण	एगसि	एगाओ
Neu.	एग	"	"	"	"	"
Fem	एगा	"	एगाए			"

एग when used in the plural means 'some', 'a few'.

	N. Ac	D G	I	L	Ab.
Mas.	एगे	एगेसि	एगंहि	एगेसु	एगेहितो

2 xदो from 2—18 ( दो to अट्ठारस ) are used in the plural.

	N. Ac	D G	I.	L	Ab.
Mas	दो	दोएहं	दोहि	दोसु	दोहितो
Neut	दोग्णि	”	”	”	”
Fem	दुवे	”	”	”	”

At the beginning of a compound दो often becomes दु or वे e. g. दोमासिय 'lasting for two months', दुगुण 'double' दुपय 'biped' वेइंदिय 'having two sense-organs.'

3 ति

	N Ac.	D. G	I.	L.	Ab.
Mas	तत्रो	तिएहं	तिहि	तीसु	तीहितो
Neut	तिरिण	”	”	”	”

At the beginning of a compound ति may become ते e. g. तिविह 'of three kinds', तेइंदिय 'having three sense-organs'.

4 चउ

	N Ac.	D. G	I	L	Ab.
Mas	चत्तारो	चउएहं	चउहि	चउसु	चउहितो
”	चउरो	”	”	”	”
Neut	चत्तारि	”	”	”	”

In compounds चउ becomes चउर् before words beginning with a vowel, e. g. चउरिंदिय 'having four sense-organs'. But if the word begins with a consonant, the latter is doubled e. g. चउरिविह 'of four kinds', चउप्पय 'quadruped'

× No regard is paid to the gender of दो, ति and चउ. The same form may be used for all genders, thus we find तिरिण पुरिसा 'three men' तत्रो वणाइं 'three forests'. Other numerals have a single form to represent all the genders.

∴ Sometimes तीहि ।

5 पंच

N Ac.

D G

I.

L

Ab

पंच

पंचरह

पंचहिं

पचसु

पंचहिंतो

Before other numerals पंच becomes पण्य or परण्य e. g. पण्यबोसं-  
'twenty-five', परण्यरस 'fifteen'.

6 छ

In compounds छ becomes सड before words beginning with a  
vowel, e. g. सडंगवी 'knowing the six Angas (of the Vedas) A  
consonant after छ is doubled, e. g. छम्मासिय 'lasting for six months',  
छदिसि, in six directions'.

7 सत्त, 8 अट्ट, 9 नव, 10: दस, 11. एकारस, इकारस, 12. दुवालस, वारस; 13.  
तेरस, 14 चोदस, चउदस, 15 परण्यरस, 16. सोलस, 17 सत्तरस, 18 अट्टारस; 19  
एगूणवीस, अउणवीसइ; 20. वीस, वीसइ, 21 एगवीस, 22 वावीस; 23. तेवीस;  
24 चउवीस, 25. पण्यवीस, 26 छव्वीस, 27 सत्तवीस, 28 अट्टावीस; 29. अउण्यतीस,  
30 तंसि, 31. एकतीस, 32. बत्तीस, 33 तेतीस, 34 चोतीस, 35 पण्यतीस, 36 छत्तीस,  
37 सत्ततीस, 38 अट्टतीस, अट्टतीस, 39 एगूणचालीस, 40. चालीस, 41. एकचत्तालीस,  
इगयाल, 42. बायालीस, 43 तेयालीस, 44 चउयालीस, चोयालीस, 45 पण्ययालीस,  
पण्ययाल; 46. छायालीस, 47 सत्तचत्तालीस, सत्तवालीस, सायालीस, 48 अट्टचत्तालीस,  
अट्टयालीस, अट्टयाल, 49 एगूणपरण्यस, अउण्यपरण्य, 50 परण्यस<sup>1</sup>, 51. एक्कावरण्य, 52  
बावरण्य, 53. तेवरण्य, 54 चउवरण्य, 55 पण्यपरण्य, 56 छप्परण्य, 57. सत्तावरण्य,  
58. अट्टावरण्य, 59. एगूण्यसट्टि, अउण्यट्टि, 60 सट्टि<sup>2</sup>, 61. इगसट्टि, एगट्टि, 62 वासट्टि,  
बावट्टि, 63 तेसट्टि, तेवट्टि, 64 चोसट्टि, चउवट्टि, 65 पण्यसट्टि, परण्यट्टि; 66. छावट्टि,  
67 सत्तसट्टि, 68. अट्टसट्टि, अट्टसट्टि, 69 एगूण्यसत्तरि, अउण्यसत्तरि, 70 सत्तरि<sup>3</sup>; 71 एक-  
सत्तरि, 72 बावत्तरि, 73 तेवत्तरि, 74 चोवत्तरि, 75 पंचहत्तरि, परण्यत्तरि, 76 छावत्तरि;  
77. सत्तहत्तरि, 78 अट्टहत्तरि, 79. एगूण्यसीइ, 80 असीइ, 81 एक्कासीइ, 82. वासीइ,  
83. तेसीइ, तेयासी, 84 चउरासीइ, चोरासी, 85. पचासीइ, 86. छनसीइ, 87. सत्तासीइ;  
88 अट्टासीइ; 89. एगूण्यणउइ, 90. नउइ, 91. एक्कणउइ, 92 बाणउइ, 93. तेणउइ,  
94 चउणउइ, 95. पंचाणउइ, 96 छण्यणउइ, 97. सत्तणउइ 98 अट्टाणउइ,  
99 नवणउइ

1 Changed to. -परण्य or -वरण्य in other numerals

2 May change to -अट्टि or वट्टि in other numerals.

3 May change to -हत्तरि or -वत्तरि in other numerals.

## 6 Rules for the use of Numerals

1 is used in the Singular and in all the genders

2-4 have different forms in different genders but no regard is paid to them.

5-18 are used in the Plural as Masculine and are declined exactly like पञ्च.

19-48 are used in the Singular. They are declined in the Nom and Acc like Neuters ending in अ and in other cases like Feminines ending in आ or ई

49-58 are used in the Plural and are declined like पञ्च.

In cases other than the Nom and Acc they are often declined like Feminines ending in आ

59-99 are used in the Singular. They are declined in the Nom and Acc like Neuters ending in इ, and in other cases like Feminines ending in ई.

## 17 Examples

Nom अष्टमस्त अगस्त दस अङ्कत्रया परात्ता ' of the eighth Anga ten chapters have been preached ' नायासं पुगूलावीस अङ्कत्रया परात्ता ' of the Nāyas nineteen chapters have been preached ' तेवीस तित्थयरा '( there had been) twenty-three Tirthankaras ' सुमिणसत्थेसु वायालीसं सुमिणा, तीसं महासुमिणा, वावत्तरीसं सुमिणा परात्ता ' in books on dreams forty-two dreams, thirty great dreams seventy-two dreams in all, have been preached.

Acc. अरहतमायरो चउदस महासुमिणे पासिता पडिदुक्कति 'mothers of Arhantas awake after seeing fourteen great dreams, वीस वासाइं सामण्यपरियागं पाउसिता 'after leading the life of a Samana for twenty years ' अरहते कितइस्तमि चउवीस पि केवली 'I shall praise the Arhantas, all the twenty-four Kevalin.' वावत्तरी कलाओ सिद्धाविता 'having taught the seventy-two arts '

lostr एक्कीसाए तित्थयरोहे by twenty-one Tirthankaras पञ्चहत्तरीए वासेहिं हेसेहि ' seventy-five years being left'.

Gen दुवाल्सण्हं भारियाण ' of twelve wives' एणसिं चउहसण्हं महानुमियाण  
' of these fourteen great dreams ' वत्तीसाण देवाण ' of thirty-two gods '

Loc. तीसाण वास सहस्सेसु ' in thirty thousands of years ' वावीसाण  
परीसहेसु 'in twenty-two sufferings'

18

### Higher numerals

100 सय used as Neut. or Mas 200 दो सयाइ, दो सया, 300 तिणिया सयाइ;  
400 चत्तारि सयाइ.

1000 दस सया, सहस्स Mas or Neut साहस्सी Fem 2000 दो सहस्ताइ, दुवे  
सहस्से. 14000 Samanas चोहसमणसाहस्सीओ 36,000 Nuns छत्तीस अजिया  
साहस्सीओ

108 अट्टसय, 1008 अट्टसहस्स, 30, 249 Yojanas तीस च सहसाइ, दोरिया य  
अउयापणणे जोयणसण् 1721 Yojanas सत्तरस एक्कीसे जोयणसण् 430 Yojanas  
चत्तारितीसे जोयणसण्

100,000, सयसहस्स (Neut, Mas) सयसाहस्सी Fem Sometimes तक्ख N  
1,000,000 दस रायसहस्ताइ

10,000,000 कोडि Fem 100,000,000,000,000 कोडाकोटि Fem

19

### Ordinals

1 पढम, पढमिण्ण, 2 बिइय, बीय, दोच्च, 3 तइय तच्च, 4 चउत्थ, 5 पचम, 6 छट्ठ; 7 सत्तम, 8  
अट्टम, 9 नवम, 10 दसम, 11 एक्कारसम, 12 बारसम, दुवाल्सम, 19 एणूयवीसइम, एणूयवीसम,  
20 बीसइम, वीस, 23 तेवीसइम, 24 चउवीसइम, 30 तीसइम, तीस, 40 चत्तालीसइम, 49  
अउयापणण, 50 पन्नपचाइम, 72 बावत्तर, 80 असीइम, 84 चउरासीइम, 97 सत्ताणउय

Note 1 Ordinals are generally formed by adding ऋ to the cardi-  
nals.

2 Their Feminine is formed by adding ई or आ पढम has  
always पढमा.

20

### Numerals increased by half

half अद्ध, अद्ध, 1½ दिवद्ध 2½ अट्टाइज्ज, 3½ अट्टट्ट, 4½ अद्ध पचम 5½ अद्धछट्ट,  
6½ अद्धसत्तम 7½ अद्धदसम 8½ अद्धनवम.



Note A number increased by half is generally denoted by adding the next higher ordinal to अर्द्ध, द्विर्द्ध=Skt. द्विकार्ध or द्वितीयार्ध.

21

### Multiplicatives.

1 सहं 'once' 2 दुस्रुत्तो, दुक्खुत्तो, दोच्चं 'twice' 3 तिस्रुत्तो, तिस्रुत्तो, तच्चं 'thrice' 7 सत्तस्रुत्तो 'seven times' 3×7 तिसत्तस्रुत्तो 'twenty-one times' अयंतस्रुत्तो 'infinitely, ad infinitum'

### Pronouns.

22

#### First person

	Singular.	Plural
N	अहं, हं	अम्हे, वय
Ac.	ममं, म	अम्हे, यो
D. G.	मम, ममं, मे	अम्हं, यो
I	मए	अम्हेहिं
L	[ ममंसि, मइ ]	अम्हेसु
Ab	[ ममार्हितो ]	[ अम्हेहितो ]

23

#### Second person

	Singular	Plural
N	तुम, तं	तुम्भे, तुम्हे
Ac	तुम	तुम्भे, मे
D. G	तव, ते, तुम्भ	तुम्भं, तुम्हं, मे, वो,
I.	तुमे	तुम्भेहिं
L	तुमंसि, [ तइ ]	[ तुम्भेसु ]
Ab	[ तुमार्हितो ]	[ तुम्भेहितो ]

24

#### Third person

	Singular.			
	Mas.	Neut.	Fem.	
N.	से, सो	तं	सा	
Ac.	<div style="text-align: center;"> <span style="font-size: 2em;">}</span>            त         </div>			तं

D. G.	तस्स, से	तीसे
I.	तेयं	तीए, ताए
L	तंसि, तंमि	तीसे
Ab.	ताभ्रो	ताभ्रो

## Plural.

	Mas.	Neut.	Fem.
N. Ac	ते	ताइं, ताणि	ताभ्रो
D. G	तेसिं		तासिं
I	तेहिं		ताहि
L	तेसु		तासु
Ab	[ तेहितो ]		ताहितो

25

Demonstratives 1. एय (Skt एतद्) 'this', 'that'.

## Singular

	Mas.	Neut	Fem.
N	एसे, एसो	एय	एसा
Ac.	एय		एयं
D G	एयस्स		एयाए
I	एएणं		एयाए
L	एयासि, एयंमि		एयाए
Ab.	एयाभ्रो		एयाभ्रो

## Plural

	Mas.	Neut	Fem
N Ac	एए	एयाइं	एयाभ्रो
D G.	एएसिं		एयासिं
I	एएहिं		एयाहिं
L	एएसु		एयासु
Ab.	[ एएहितो ]		[ एयाहितो ]

## 2. इम ( Skt. इम् ) ' this. '

## Singular

	Mas	Neut	Fem.
N	अय, इमे	इम, इदं	इयं इमा
Ac.	इम	इमं. इदं	इम
D G.	इमस्स, अस्स		इमीसे, इमाए
I,	इमेण		इमाए
L	इमामि, इममि अस्सि		इमीसे इमाए
Ab.	इमायो		इमाओ

## Plural

	Mas	Neut.	Fem
N Ac	इमे	इमाइं	इमाओ
D. G	इमेनि		इमासिं
I	इमेहि		इमाहिं
L	इमेसु		इमासु
Ab.	[ इमेहितो ]		[ इमाहितो ]

26 Interrogative. क ( Skt किम् ) ' who ? ' ' which ' ?

## Singular

	Mas.	Neut	Fem.
N.	के	क	का
Ac	क		कं
D. G.	कस्स		कीसे
I.	केण		कए
L	कसि, [ कंमि, कस्सि ]		कीसे
Ab.	काओ		काओ

## Plural.

	Mas.	Neut.	Fem.
N. Ac	के	काइ	काओ

D G	केलिं	कासिं
I	केहि	काहिं
L.	केसु	कासु
Ab	[ केहितो ]	[ काहितो ]

27 Relative, ज ( Skt यद् ) ' who ' ' which '

Declined exactly like the Interrogative ' क '.

28 Other pronouns.

अय्य ' other ', अवर ' other ' एग ( pl ) ' some ', कयर ' which ' पर ' other ' सव्व ' all ' etc. are declined like ' क '

29 Sandhi

In Ardha-Māgadhī there is no room for the Visarga and Consonant Sandhi, for the former does not exist in it and the latter never stands alone at the end of a word. From among the Vowel Sandhi, the following are the chief types —

(i) अ + अ = आ

जीव + अजीव = जीवाजीव 'Jīva and Ajīva'.

य + अवि = यावि 'and also'.

(ii) अ + अ followed by a Conjunct Consonant\* = अ

मरण + अंत = मरणत 'lasting till death', 'fatal'.

उत्तर + अर्द्ध = उत्तरर्द्ध 'northern half',

न + अत्थि = नत्थि 'it is not'.

(iii) अ + इ = ए

राय (राअ) + इसि = राएसि 'a royal sage'

महा + इसि = महएसि 'the great sage'.

\*Anusvāra must be regarded as a consonant

(iv) अ + इ followed by a Conjunct Consonant = इ

देव + इद = देविद 'the lord of gods'.  
महा + इङ्गि = महिङ्गी 'great glory'.

(v) अ + उ = ओ

सीय (सीअ) + उदग = सीओदग 'cold water'  
समण + उवासग = समणोवासग 'Samaṇa's servant', 'a Shrāvaka'

(vi) अ + उ followed by a conjunct consonant = उ

पुरिस + उत्तम = पुरिसुत्तम 'the best among men', 'an epithet of the Jinas'

जिण्ण + उजाय = जिण्णुजाय 'a ruined old garden'.

(vii) अ + ए = ए

इह + एव = इहेव 'even here'

(viii) अ + ओ = ओ

भक्ख + ओयण = भक्खोयण pastry and boiled-rice'

(ix) An anusvāra followed by a vowel is changed into म् e g-  
धम्मं + आइक्खइ = धम्ममाइक्खइ 'he declares the law', फलं इच्छइ = फलमिच्छइ  
'he desires the fruit'.

(x) In compound, an anusvāra is often inserted when the next member begins with a vowel e g-अण्ण + अण्ण = अण्णमण्ण 'one another' दीह + अद्धा = दीहमद्धा 'having a long journey', 'distant', 'vast', गोण्ण + आइ = गोण्णमाइ 'ox' etc.

### Verb,

30 A verb in Ardha-Māgadhī is conjugated for persons number, \* tense, mood and voice There are three persons, three tenses, two moods = and two voices

\* Present Past and Future with their ns ualf unctions

– Imperative denoting order or comamnd and Potential denoting precept, authority or choice.

The verbal roots are divided into two groups—the पास group and the कर group—according as the terminations are directly added to the root, or an additional ए is inserted between the root and some of the terminations .

31

### Present Tense (Active)

#### Terminations.

	III	II.	I.
Singular	इ	सि	आमि
Plural	अति	ह	आमो

Note. Sandhi rules are observed while adding terminations to the root.

Exceptions 1 इ ( III Sing ) does not undergo Sandhi.  
2 In कर roots अति ( III pl ) loses its अ, and आमि ( I Sing ) and आमो ( I pl ) their आ.

	पास ' to see '		कर ' to do '	
	Singular	Plural	Singular	Plural
III	पासइ	पासंति	करेइ	करेति
II	पाससि	पासह	करेसि	करेह
I	पासामि	पासामो	करेमि	करेमो

#### Irregular.

अस्ति	He, she, it is	सन्ति	they are
असि, सि	Thou art	स्य	you are
असि, मि	I am	मो	we are

The above are derived from the corresponding forms of the Sanskrit root अस् ' to be '.

\*Especially the Present and Imperative terminations.

## Past Tense ( Active ).

## Terminations.

Sing	III, II, I	इत्था.	
Pl	III, II, I	इंसु	
Sing	III, II, I	पासित्था	करेत्था or करित्था
Pl.	III, II, I	पासिसु	

Irregular — वयासी from वय ' to speak ' and अकासी from कर 'to do' are used for all numbers and persons.

## Future Tense ( Active ).

## Terminations.

		III,	II,	I
Sing	इस्सइ	इस्ससि	इस्सामि.	
Pl.	इस्सति	इस्सह	इस्सामो.	
III.	पासिस्सइ	पासिस्सति	करिस्सइ	करिस्सति
II.	पानिस्ससि	पानिस्सह	करिस्ससि	करिस्सह
I	पानिस्सामि	पानिस्सामो	करिस्सामि	करिस्सामो

Besides this, there is another way of forming the future viz by substituting हि for स in the terminations कर is changed to का before हि.

III-	पासिहिइ	पासिहिति	काहिइ or काही	काहिति
II.	पानिहिसि	पानिहिह	काहिसि	काहिह
I	पानिहिमि	पानिहिमो	काहिमि	काहिमो

Note In the III Sing ही + इ often contract into ही as in काही 'he will do', नाही 'he will know'.

Irregular, I Sing वोच्छ from वय 'to speak', करिस्स from कर 'to do'.

## Imperative Mood

## Terminations.

	III	II	I
Sing	उ	०, आहि	आमि
Pl.	अतु	ह	आमो

III पासड	पासंतु	करेड	करेंतु
II पास, पासाहिं	पासह	करेहि	करेह
I पासामि	पासामो	करेमि	करेमो

Irregular. (1) II Sing. sometimes ends in सु e. g. सरसु from सर 'to remember', कहसु from कह 'to tell'.

(2) अत्थु III Sing corresponds to Sanskrit अस्तु from अस् 'to be'

35

### Potential Mood.

Terminations	III	II	I
Sing.	एजा	एजा, °सि, °हि	एजा, °मि
Pl	एजाम	एजाह	एजाम
	Singular		Plural
III	पासेजा		पासेजाम
II	पासेजा, पासेजासि, पासेजाहिं		पासेजाह
I	पासेजा, पासेजामि		पासेजाम

Note. (1) No distinction is made between the roots of पास and कर groups.

(2) The Vowel before जा is short ए for which इ or ए are indiscriminately found in MSS.

Another way of forming the Potential Mood is to add ए to the root for all numbers and persons e g III, II, I Sing, and Pl पासे, करे etc.

Irregular कुजा III Sing (Skt कुर्यात्) from कर 'to do,' लिया (Skt ल्यात्) from the Sanskrit root अस् 'to be'.

36

### Causals and Denominatives.

Note These roots are generally conjugated like those of कर group.



( i ) Causals are formed by adding व to the roots that end in आ e g. ठा ' to stand ', ठाव् ' ' he stands ', ठावेव् ' he causes to stand ', स्ना ' to bathe '. स्नाव् ' he bathes ', स्नावेव् ' he causes to bathe. '

( ii ) If a root ends in short अ, the short अ is lengthened and व added to it e g. कर ' to do ', करेव् ' he does ', करावेव् ' he causes to do ', कृष् ' to cut '. कृष्वेव् ' he cuts ', कृष्वावेव् ' he causes to cut'.

( iii ) In some roots the medial short अ is lengthened without adding व e g मर ' to die ', मरव् ' he dies ' मारेव् ' he kills ', पठ ' to fall, to lie ', पठव् ' he lies ', पाठेव् ' he lays'.

( iv ) In Demonstratives, the nouns themselves are used as verbs Sometimes व is inserted. स्नायेव् 'he bathes' (स्नाय ' bath ') उचारेव् ' he eases himself ' ( उचार ' stools '), पासवयेव् ' he makes water ' ( पासवय 'urine' ), सदावेव् ' he calls ' ( सद् ' sound ' ).

37

### Passive Voice.

As a general rule, the Passive is formed by inserting इज्ज between the root and the termination e g सुणव् 'he hears' सुणिज्जव् ' he is heard', पुच्छव् 'he asks' पुच्छिज्जव् ' he is asked,' कहव् 'he says', कहिज्जव् 'he is said '

### Irregular.

( i ) लब्धव् ( Skt लभ्यते ) 'he is found', मुच्यव् ( Skt मुच्यते ) 'he is released', भिज्जव् ( Skt भिद्यते ) 'he is separated,' नज्जव् ( Skt ज्ञायते ) 'it is known' etc.

( ii ) कीर is sometimes used instead of करिज्ज e.g. कीरव् 'it is done.'

38

### Participles.

( i ) Present Active Participle is formed by adding अंत or माण्य to the root, e g पासंत, पासमाण्य 'seeing'; चिदंत चिदमाण्य 'staying'; चरत, चरमाण्य 'moving'.

( ii ) Present Passive Participle is formed by adding श्रंत or माण to the Passive form of the root e g. करिञ्जत, करिञ्जमाण ' being done, ' दिञ्जत, दिञ्जमाण ' being given '

( iii ) Past Active Participle is formed by adding वंत to the Past Passive Participle e g. रक्खियवत ' ( he ) protected ' हसियवत ' ( he ) laughed ' Its use is extremely rare in Ardha-Māgadhī

( iv ) Past Passive Participle is generally formed by adding इय to the root e. g रक्खिय 'protected' पुच्छिय 'asked' चलिय 'shaken ' Irregular.

गय ( Skt गत ) 'gone' कड ( Skt कृत ) ' done ' मुय, मड, ( Skt. मृत ) ' dead ' मुत्त ( Skt मुक्त ) ' released ' etc.

( v ) Future Active Participle. No examples have been met in the scriptures

( vi ) Future Passive participle ( Necessitative ) is formed ( a ) by adding णिञ्ज to the root or ( b ) by adding न्व to the Past Passive Participle e g करणिञ्ज 'ought to be done' वंदणिञ्ज 'ought to be greeted, respectable' पासियन्व 'ought to be seen', जाणियन्व ' ought to be known, ' knowable ' पुच्छियन्व 'ought to be asked '

**Irregular.**

कायन्व 'ought to be done' पेज्ज 'ought to be drunk, drinkable'.

### Gerund.

Gerundial Participle is formed in many ways. The chief ones are noted below -

( i ) By adding इत्ता to the root e. g पासित्ता 'having seen' करित्ता 'having done' गच्छित्ता 'having gone. '

( ii ) By adding णं to form No. 1 e g पासित्ताणं 'having seen, ' चइत्ताणं 'having left '

( iii ) By adding ऊण or इऊणं to the root e g नाऊण 'having known' दाऊण 'having given' बंधिऊणं 'having bound' पासिऊण 'having seen.'

( iv ) By adding इत्तु to the root e. g. बधित्तु 'having bound ' जाणित्तु 'having known '

Irregular.

( a ) कट्टु 'having done ' साहट्टु ' ' having removed,'

( b ) क्किच्चा ( Skt कृत्वा ) ' having done ', नच्चा ( Skt ज्ञात्वा ) 'having known', चिच्चा ( Skt. त्यक्त्वा ) 'having left'.

( c ) अभिगम्म ( Skt अभिगम्य ) 'having known', निसम्म ( Skt. निशाम्य ) 'having heard'

( d ) परिण्याय ( Skt परिज्ञाय ) 'having known', समादाय ( Skt.) 'having taken'.

40

### Infinitive.

The Infinitive is generally formed by adding इत्तए to the root e g. करित्तए 'to do', गच्छित्तए 'to go', पाउब्भावित्तए 'to appear'

Sometimes उं or इउं is added to the root e g. दाउ 'to give', काउ 'to do', पासिउं 'to see', गिण्हिउं 'to take'.

41

### Compounds.

Two words joined together without using the termination to express the relation between them form a compound. Compounds are treated like single words. They may be divided into three classes according to their use as a noun, an adjective or an adverb.

42 A noun compound may be formed in the following ways—

( a ) By putting together two nouns which would have required the copulative and ( च or य ) to express their relation if used separately Such compounds are generally used in the Plural, e. g. जीवार्जावा ( जीवे य अजीवे य ) 'soul and non-soul', नरपसूयं ( नरा य

पसूय=नरपसूयो ते सि ) 'of men and animals', गाम नयरेसु ( गामेसु य नयरेसु य ) 'in villages and towns'.—

( b ) By putting together two nouns of which the first would have taken an oblique case, if used separately e g. विसमरण ( विसेण मरणं ) 'death by taking poison', सुहधम्मे ( सुहाए धम्मे ) 'virtuous actions for happiness', चोरभय ( चोराओ भय ) 'fear from a thief', पुरणफलं ( पुरणस्स फल ) 'result of good deeds' गिहवासे ( गिहसि वासे ) 'residence at home'.

( c ) By putting together an adjective and a noun, the latter being qualified by the former e g नीलुप्पलं ( नील उप्पल ) 'blue lotus', सुभकम्माइ ( सुभाइं कम्माइ ) 'good deeds' <sup>1</sup>

An adjective compound may be formed:—

( a ) By putting together two 'adjectives e g. सेयरत्ते ( सेए रत्ते ) 'white and red' <sup>2</sup>

( b ) By putting together a noun which would have taken an oblique case if used separately, and an adjective e g गिह गए ( गिहं गए ) 'gone home' सजम संजुत्ते ( सजमेण सजुत्ते 'possessed of restraint,' रुक्खपडिए ( रुक्खाओ पडिए ) 'fallen from a tree', गायकुसले ( गायसि कुसले ) 'skilled in singing' <sup>3</sup>

( c ) By putting together two nouns, or an adjective and a noun, the relation between which would have been expressed by an oblique case of the relative pronoun 'ज' if used separately e g जियकोहे ( जिए कोहे जेण ) 'that has overcome wrath' पंचिदिए ( पंच इदियाइ जस्स ) 'who has five sense-organs' <sup>4</sup>

An adverb compound is formed by adding an adverbial preposition to a noun e. g अणुगंग 'along the Ganges', आणुपुण्य 'in due order' <sup>5</sup> Such compounds are rarely met with

—Sanskrit name for these compounds is द्वन्द्व

\*Any case except the Nominative and the Vocative.

×Sanskrit name for such compounds is तत्पुरुष

<sup>1,2</sup> Sanskrit कर्म धारय.

<sup>3</sup> Sanskrit तत्पुरुष

<sup>4</sup> Sanskrit बहुव्रीहि.

<sup>5</sup> Sanskrit अन्ययीभाव.

- 45 A compound may be further joined with an other compound, a noun or an adjective. e. g. पंचिन्द्रियजीवा ( पंचिन्द्रिय adj comp.+जीव ) 'souls having five sense-organs', सत्थकोसहत्थे ( सत्थकोस noun com.+हत्थ ) 'having a surgical box in hand'.

### Suffixes.

- 46 To form a feminine आ or ई is added to words ending in अ e. g. अय 'he-goat', अया 'she goat.', दारय 'male child', दारिया 'female child' भुजमाण m. भुंजमाणी f 'enjoying', पंचम m पचमी f. 'fifth',
- 47 To form an abstract त्त or त्तण is added to the word e. g. देव 'god,' देवत्त 'godhood', पुत्त 'son' पुत्तत्त 'sonship', आयरिय 'preceptor', आयरियत्त or आयरियत्तण 'preceptor ship', तक्कर 'thief', तक्करत्त or तक्करत्तण thievishness,
- 48 To form a possessive वत्त or मत्त is added to the noun e. g. धण 'wealth' धणवत्त 'wealthy', गुण 'merit' गुणवत्त 'possessing merits' विज्जा 'knowledge' विज्जामत्त 'learned', मइ 'wisdom', मइमत्त 'wise'
- 49 To form an adjective इल्ल is added to the noun e. g. दाहिण 'south' दाहिणिल्ल 'southern' 'right', गाम 'village' गामिल्ल or गामेल्लग 'vulgar', 'rural'.

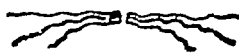
50

### Syntax.

In prose the words are arranged much in the same order in Hindi, Punjabi or Gajrati e. g. से खं नरगाओ उवट्ठिता सुपइट्टपुरे नयरं गोणत्ताए पच्चायाहिइ 'returning from hell, he will be born as an ox in the town of Supatthapura', अहं पिवासिय पुरिसायं अट्टा कूवाओ सियंल जलं कड्ढामे 'I draw cold water from the well for the sake of thirsty persons'

51

In a verse, however, the words may be put in any order e. g. सुणेह मे एगगमणा, मग्ग जिणेहिं देसियं 'O ye ! Listen heedfully of me, the law preached by the Jinas.



# GRAMMATICAL ABBREVIATIONS

AND

Their Equivalents.

कोषान्तर्गत-व्याकरणानां संकेतो ।

पु०	पुल्लिङ्ग.
स्त्री०	स्त्रीलिङ्ग
न०	नपुंसकलिङ्ग
पु० न०	पुल्लिङ्ग अने नपुंसकलिङ्ग
पु० स्त्री०	पुल्लिङ्ग अने स्त्रीलिङ्ग
त्रि०	त्रिलिङ्ग-पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग अने नपुंसकलिङ्ग.
सं० कृ० अ०	सम्बन्धार्थ कृदन्त अव्यय.
हे० कृ० अ०	हेत्वर्थ कृदन्त अव्यय
व० कृ० त्रि०	वर्तमान कृदन्त त्रिलिङ्ग.
अ०	अव्यय
धा० I II. I, II	धातुनो पहेलो गण बीजो गण अथवा उभयगण
ना० धा०	नाम धातु
वि०	विध्यर्थ
आ०	आज्ञार्थ
भूत०	भूतकाल.
भवि०	भविष्यकाल
सं० कृ०	संबन्धार्थ कृदन्त
हे० कृ०	हेत्वर्थ कृदन्त
व० कृ०	वर्तमान कृदन्त
क० वा०	कर्मणि वाच्य
णि०	णिजन्त
प्र० ए० व०	प्रथमा विभक्तिनु एक वचन, बहुवचन
द्वि० ए० व०	द्वितीयानु एक वचन, बहुवचन.
तृ० ए० व०	तृतीयानु एक वचन, बहुवचन.
प० ए० व०	पंचमीनु एक वचन, बहुवचन.
ष० ए० व०	षष्ठीनु एक वचन, बहुवचन
स० ए० व०	सप्तमीनु एक वचन, बहुवचन.

# A GUIDE TO TRANSLITERATION.



## Vowels.

अ=A	उ=U	लृ=Li	ओ=O
आ=Ā	ऊ=Ū	लृ=Li	औ=Au
इ=I	ऋ=Ṛi	ए=E	ॠ=M̄
ई=Ī	ॠ=Ṛī	ऐ=Ai	ऌ=H̄

## Consonants.

क-Ka	ट-Ta	प-Pa	ष-Sa
ख-Kha*	ठ-Tha	फ-Pha	स-Sa
ग-Ga	ड-Da	ब-Ba	ह-Ha
घ-Gha	ढ-Dha	भ-Bha	क्ष-Kṣa
ङ-Na	ण-Ṇa	म-Ma	ज्ञ-Jña
च-Cha	त-Ta	य-Ya	
छ-Chha	थ-Tha	र-Ra	
ज-Ja	द-Da	ल-La	
झ-Jha	ध-Dha	व-Va	
ञ-Ña	न-Na	श-Sa	

# PREFACE.



It is an established fact that Prākṛit had once been the chief language in India, and religious and important literary works of different castes and creeds have been written in this language. Such monumental works prove beyond doubt the lofty ideals and brilliant progress of India in olden days. Archæologists and scholars have discovered its outstanding and chosen works from time to time and have appreciated the high ideals with which the language is well nigh saturated. Its richness in thought and classical literature has thus attracted the attention of scholars both in the East and the West and has made them discover its hidden literature from time to time with increasing zeal and devotion. It may safely be said that the works have a shining flush of their own and have awakened the curiosity of men of letters more and more with the advance of research work. The importance of its literature has carved its way for being prescribed in the different Eastern and Western Universities. The greatness of ancient India in general and of Jainism in particular lies in the depths of this language. It is the mother of almost all Āryan languages in India and due to its resourcefulness is the key note to the real comprehension of other languages and dialects, once prevalent in India and now in some form or other connected with its vast literature. This should speak for the importance of the language in the annals of India and her people. That there should be no dictionary on scientific lines for such an all-absorbing literature is in itself pitiable.

It is an admitted fact that no language can be rightly understood without its grammar and dictionary. This speaks for the pressing necessity of compiling these volumes. Aīdha-Māgadhī is the one important offshoot of this great language as is evident from the fact that the great Tīrthāṅkara Mahāvira of enlightened intelligence preached the sacred tenets of the great religion in this form of Prākṛit language. As has already been remarked, no-



dictionary on scientific lines exists for throwing sufficient light on even the most important expressions, used by these master minds of old. In the existing literature, only two small dictionaries are seen and these too are rare. Their names are Pāialachhīnāmamālā and Deśināmamālā.

Both are on metrical lines and not very useful, for the general public or for scholars of modern taste and type.

With the researches made by scholars, it has now become a matter of prime importance to prepare comprehensive dictionaries, elucidating the important terms, used in the different branches and offshoots of the great Prākṛit which stands in need of the close and unceasing attention of scholars and general readers without whose active co-operation no hope can exist for the revival of the great literature, reflecting India and her people in the real light of civilization. The importance of a comprehensive dictionary on scientific lines is not unknown to scholars. In the absence of such a dictionary, confusion in thought is unavoidable and it is for this confusion that the great author of the Mahābhārata, the renowned Vyās of old remarked "Veda is afraid of a man of little learning, lest he might harm it" (by putting wrong interpretation on its contents). From what is written above it will be clear that the glorious history of ancient India is lying in the dark depths of obscurity and no history of the civilization of the country in the past can be brought together without compilation of dictionaries, explaining the real sense of the important terminology of the literature. The whole of Jaina literature, especially the thirty-two Āgamas (the sacred scriptures of the Jainas) is written in the Ardha-Māgadhī form of Prākṛit. While studying these sacred texts, my father's attention was drawn to the English translation of some of these works by Western scholars, who with all their keen intelligence, vast erudition and admirable love for literature, have not been able to avoid putting in wrong interpretations because of their ignorance of the definite significance of technical terms due to the lack of a real dictionary. Even the great German scholar of Jaina literature, the learned Professor Herman Jacobi of

established répute, "Jaina Ratna Divākara," the sun of Jaina religion has not been able to escape misunderstanding, creating a great disturbance among the Jaina public because of his wrong interpretations here and there, in the absence of a really helpful dictionary. Thus a great harm has been done to the religious and literary ancient Prākṛit works, the literature is not yet safe and free from being misinterpreted. Such events and circumstances attracted the attention of my revered father and made him realise the absolute necessity of the preparation of one such dictionary, enabling scholars to understand the right application of words and their real significance. Accordingly, in 1910 A. D my father began the work of collecting and arranging systematically the words, used in the Jaina Sūtras and could with his incessant efforts collect about fourteen thousand words in a short time. On this occasion the reputed Italian scholar, Dr. Sualī, expressed his intention of preparing a Prākṛit dictionary to the Śvetāmbara Jaina Conference, a fact, which pleased my father Mr. Kesari Chandji Bhandāri who made over this list of words to the said conference for being forwarded to Dr. Sualī with the view that the great scholar's work would be facilitated to an extent at least, by this collection and would be best arranged by the well-known scholar with his keen intelligence and ability. Unfortunately in the meantime the great war broke out in Europe and on account of this and such other various reasons, Dr Sualī could not undertake the work. At my father's request the Śvetāmbara Sthānakvāsī Jaina Conference promised to help the preparation and publication of this dictionary and happily he took up the work, which was no easy task in the absence of help from scholars and such other important equipments. The great work thus could not make a fast progress and was a source of great anxiety to my father, who for his pressing work, was at this stage called upon to go to Bombay, where he could luckily chance to see the great saint and scholar Śatāvadhānī Muni Śrī Ratnachandaji Mahārāj. Eagerly conscious of the great task before him, my father lost no time in availing himself of this happy occasion and he requested and appealed to the great sage to accept the work. In keeping with the magnanimity of heart and the great devotion

to the sacred cause of literature, the learned sage accepted the task and by his mighty learning and admirable exertion, has been able to finish up so accurately and admirably the work within the short space of only three years

### Sketch of the life of the great sage.

The great sage, to whose active and constant efforts these volumes owe their compilation was born on Thursday the 12th of Vaishākha Śukla Saṃvat 1936 in the village of Bhārorā (Kathiawār). His mother's name was Laxmibai and his father was known as Vīrpāl Shāh. After finishing the six books (complete vernacular course) of Gujarātī language, he, according to the family tradition, was initiated into the commercial work in the twelfth year of his life. In this connection he went to places like Bombay, Belāpur (south) Sanāvad (C. I) with his elder brother for trading purposes. He was married in his thirteenth year. Hardly had three years of matrimony rolled on when his dear wife left this transitory world for ever, leaving her only daughter behind. This bereavement tended to intensify the pre-existing and growing desire for seclusion from worldly ties and instead of grief and sorrow, gave him an occasion to qualify himself much more for the sacred Mission of his future life. Accordingly Pandit Śrī Ratnachandrajī Mahārāj learnt a good deal of the religious principles of ascetic life and received instructions from the great sage Śrī Gulābchandrajī Swāmī of Limbdi (Kathiawār). Fortunately his father and his elder brother, though following the commercial occupation, had in themselves a religious turn of mind and did not, as is not unusual, raise obstacles in his way to asceticism. The affection of a mother, however, is invariably unbounded, and she for her sublime affection, could not easily permit her young son to sever all connection with household affairs. Thus for a year more he led the life of a layman, but blessed was he all through to conduct his studies in Daśavaikālika, Uttarādhyayana, Thokadās etc. The deep study of the sacred and philosophic works enlightened his vision all the more and in his seventeenth year he became an avowed disciple of the Limbdi sage. As his extremely keen intelligence would have it, he lost not a minute and just began his Sanskrit

studies, finishing the Siddhānta Chandrikā, Siddhānta Kaumudī, Tatva Bodhinī, Manoramā, Pañcha Kāvya (all the five important literary works), works on Figures, Prosody, Logic and Dramaturgy, in all of which he became an accomplished scholar very soon. This was followed by his literary pursuits of the different systems of philosophy, Sāṅkhya and Pātañjal specially. Thus the period of thirteenth to twentififth year of his life was devoted entirely to literary pursuits, followed by discourses and sermons in Saṃvat 1966. Due to his extraordinary talents he can carry on one hundred discourses at one and the same time, a fact to which testimony is borne by personages like Sir Nārāyaṇ Chandāvarkar of Bombay, who was much pleased to admit and admire the great capacity, learning and intelligence of this great sage, endowed with the rare power of discrimination, tranquillity of mind, absence of vanity, energetic enthusiasm and indefatigable exertion. He is an advanced writer and a poet, author of several Sanskrit and Gujarātī works of established repute, of which the following may be noted — Kartavyakaumudī, Bhāvanīśataka, Life of Ajarāmarajī Swāmī, Thirty-five verses etc. Many of his articles have been published in several Gujarātī journals. All these have been well put together in Ratna Gadya Māhikā. The present dictionary is the product of the efforts of this learned sage, to whom best thanks are due from men of literary tastes.

### Utility of the Dictionary.

It is a happy fact, indeed, to see the growing number of readers of Jaina literature not only in India, but also in countries abroad like England, Italy, Germany, America, France etc. To learn Jaina literature as also to carry on research work, scholars and historians have to study Ardha-Māgadhī. To such gentlemen these volumes, it is hoped, will be useful as a constant companion. To those interested in Philology and Etymologies of Āryan languages and dialects, like Hindī, Gujarāty, Bengālī, and Marāthī as also to those interested in a comparative study of these and such other languages, these volumes, it is hoped, will be found very useful and instructive. These volumes will again be helpful to those interested in

the development of modern Indian languages, and to scholars of advanced literary tastes. Besides Sanskrit, English, Gujarātī and Hindī languages have also been used in explaining the words in order that the volumes may be helpful to gentlemen, conversant with different important languages in India and abroad. It is now an admitted fact that Hindī is the Lingua Franca of India and English is the one common language for the vast British Empire and other civilised countries. This dictionary explains the meanings of important terms describing the high ideals and advanced civilization of ancient India. A large number of quotations from standard works have been inserted to signify the exact connotation and use of the particular word. These quotations add considerably to our knowledge and mental pleasure. Derivations of nouns and verbs along with their equivalents have also been discussed herein. Lest some words might yet remain unexplained and unelucidated frequent use has been made of illustrations, showing the form and nature of a particular thing, signified by a word. Technical words have been written in English form with proper marks, explaining their clear pronunciation, which may be of great use to Western scholars. Thus every effort has been made to make these volumes as good and useful as possible by using the five languages. The meanings given herein do not illustrate or explain a particular creed or religion, but are clear, free from all prejudices and admittedly correct on all hands. Such a dictionary then sees the light of the day, due to the perseverance and self-sacrificing nature of a learned propounder of Jainism. I must specially invite the attention of my Jaina brethren, following a form of creed other than that of Śvetāmbara Sthānakavāsī Jinas to the fact that the volumes are expected to be useful not merely to Śvetāmbara Sthānakavāsī Jinas but also to the Digambara Jinas equally.

### Difficulties in the compilation of this dictionary

It is a well-known fact that the majority of those, supposed to be well-versed in the Ardha-Māgadhī form of Prākṛit are the Jaina ascetics, whose religion is wholly written in this language. As enjoined by the Śāstras (scriptures) a Jaina saint cannot stay in

one particular place beyond a prescribed period and must move round from place to place, big or small, a fact which on the face of it looks arduous and inconvenient for collection of words and compilation of a dictionary. Learned Pandits, belonging to other religions, being not well acquainted with Jainism and its principles, could not be fully well utilised. Again, they could not freely undertake a change from place to place with the compiler of this dictionary. Thus when some learned men, trained in the technicalities, left the work, others had to be engaged afresh and the same amount of trouble had again to be taken in training them for the work.

Great, again, was the difficulty in finding out scholars for English and Hindi translation work. Some non-Jainas or Digambara Jainas were the person obtainable for the work and they, on account of their unfamiliarity with the technicalities could not do full justice to the real significance of terms and thus in some places the meaning was entirely upset or misunderstood. In order that the readers may fully realise the difficulty in the translation work, a few specimens, proposed before consultation, the second and third those of the English translator and all the rest those of the Hindi translator are noted below.

**Original expressions. Correct meanings. Mistaken translation.**

1-अजाया. त्रि०	Careful abandonment of things on the part of an ascetic.	Careful preservation of things on the part of a Sādhu.
2-अयादत्त. त्रि०	Unwary, without proper circumspection.	Useless.
3-अयादत्तगम्य न०	Movement without proper circumspection.	Unnecessary movement, useless movement.
4-अयायय्य न०	A place where persons of non-ascetic conduct etc. lodge.	A place of residence for beasts, impotents, etc.
5-अयिदानता. स्त्री०	Doing actions without any desire of fruit,	(That) of which the reasons can-not be fathomed.

6-अथेसयिज त्रि०

Not acceptable to a Unimaginable to a  
Sādhu due to some Sādhu  
fault.

It would, however, be unfair to say that this in any way reflects upon the literary ability of the persons concerned.

The last and the greatest difficulty in bringing out the work was the great physical and mental suffering of my revered father, Mr. Kesharīchandjī Bhandārī, whose keen interest and devoted zeal for editing and publishing the Kosa is clear on the very face of it. In obedience to his esteemed commands I had the fortune to conclude the remaining work. Fully confident though I am of my lack of knowledge and intelligence, yet I venture to submit this literary work to its literary readers with a repeated request for their kind indulgence.

My duty will only be half done without an expression of gratitude to those, who have been of special use and help in the compilation and bringing out of this work. Swāmī Śrī Uttamchandrajī (Limbdī). Upādhāyājī Atmārāmjī of the Punjāb, Paudīt Mādhava Munijī and Pandit Deochandrajī of Cutch deserve my hearty thanks for their kind assistance in the collection of words. Besides the aforesaid learned Jaina saints I am indebted to Mr. Popatlal Kevalchand Shāha for his kind help in the collection of some words, to Dr. S. K. Belvakar, Professor of Sanskrit, Deccan College Poona, for his kind and valuable suggestions from time to time and to Pandit Gaurīśāṅkara Hīrāchand Ozhā of Ajmer for the kind help he gave in correcting proofs to an extent.

My hearty thanks are due to A. C. Woolner Esquire M. A. (oxon) Principal, Oriental College, Lahore for the scholarly contribution that he has made in the form of a really informing Introduction to this Kosa. He undertook this purely as a labour of love and this affords a clear proof of his noble generosity of heart.

We owe the skeleton Grammar prefixed to the Koṣa to Babu Banarsidasjī M. A., professor, Oriental College, Lahore. Although

merely in outlines it must be the result of a great amount of reading of the original Sūtras. For the benefit that he has thus voluntarily given us of his knowledge, I am greatly indebted to him.

I must express my feelings of gratefulness to Mr P. N. Kachhi B. A. of M. S. High School, Indore, for the trouble he took in translating the Gujarati meanings into English, chiefly because, though he was paid for the same, his work was not mercenary. Moreover, almost the whole of the English portion of this volume has passed under his scrutinising eye. The Koṣa has had the benefit of having Pandit Thakurdattaji as one of the most conscientious and steadily working subordinate working under the supervision of the original compiler. The energy with which he conducted the work of carrying such a vast and varied mass of matter through the press is simply admirable and specially entitles him to my thanks.

Messrs. Naginadas Manakalal of Bombay, Bhavasar Gulabchand Kalyanchand of Surat, Maganlal Kuberdas of Kathor, Nyhalchandji Jaychandji of Dhoraji, Vakil Jivaraj Vardhaman of Jetpur, Ghevaria Devidas Lakhamchand of Porbander, Seth Dhīrajlal Trimbaklal of Limbdi, Seth Vanechand Deoji of Vankaner, Seth Vikamchand Amritlal of Morvi and Gopalji Ladka of Thangarh deserve my appreciation and thanks for their kindness in looking after the comforts and conveniences of the compiler and his assistants.

Muni Rupchandrajī, Muni Shivalalji and Mr Kalidas Damji of Dhoraji Girl School deserve my thanks for their kind assistance to the compiler in different ways.

My best and grateful thanks are due to the Śvetāmbara Sthānakavāsī Jaina Conference, whose ready help in money and encouragement, led to the accomplishment of this great work.

Last, but not the least, indebted and grateful am I to the learned gem, the expounder of Jainism, Swāmī Śrī Ratnachandrajī Mahārāja of Limbdi, owing to whose incessant, active labours and greatest pains in compiling and conducting the dictionary work as



a whole, I have this day been able to put these volumes before the learned for opinion and use. I must frankly admit that the work would not have seen the light of the day had it not been for the learned devotion, energetic attention and dutiful enthusiasm of the Satavadhānī saint Ratnachandraji.

In conclusion, I respectfully request scholars and readers kindly not to mind minor errors, due to mistakes in printing, translation etc. here and there. I shall feel much obliged to those who will kindly take the trouble of communicating their kind suggestions to me, with a view to correction and improvement in the second edition.

Rajawada Chowk, SARDARMAL BHANDARI,  
Indore (C. India).



## Publisher's Note.

---

Almost immediately since the time that my longcontinued efforts in the direction of getting a reliable and comprehensive Ardha-Māgadhī Dictionary compiled by competent authorities on the subject, began to take a practical and tangible shape, my health began to fail and I fell a victim to a malady which is peculiarly antagonistic to mental work. Burning with an ardent desire on the one hand to realise an ideal which I had made one of the supreme aims of my life and deprived on the other, of the very instrument which led to its accomplishment, I continued to work with as much energy as I could command, throwing a great deal of my burden and responsibility upon the shoulders of my son Sardarmal. A time came at last, however, when it became absolutely imperative upon me to shift the whole burden upon him and if I am to judge from the results so far achieved, I feel I have every reason to hope that the work will be successfully brought to completion under his care and management. Very few of those persons not actually engaged in a task similar to this, can have an idea of the demand that it makes upon the energy and mental resources of its organizers. Endless correspondence, touring, watchful and diligent supervision of the work as it progressed, from the literary standpoint of accuracy and from the artistic standpoint of external attractiveness—these were and still are the demands to which he has proved himself equal. And I think it is a part of my sacred duty to acknowledge cheerfully the debt I owe to him in this connection. But for the fervour and energy with which my son devoted himself to the work which I was compelled to give up, the Ardha-Māgadhī Dictionary, at least in its present shape, would have taken an indefinitely long time to see the light of the day.

My son, Sardarmal has given an account of the vicissitudes through which my earlier efforts at the compilation of an Ardha-

Māgadhī Dictionary had to pass and so I need not detail them here. Enough also has been said by him as to its utility.

In conclusion I request scholars and general readers who consult this dictionary to have due regard to the circumstances sketched above and pardon minor inaccuracies if they have crept in.

Rajwada Chowk,

Indore (c. i. )

KESARICHAND BHANDARI.

---

## TRANSLATOR'S NOTE.

---

It was not without a considerable amount of diffidence that I undertook the work of translating into English the Gujarati portion of the *Ardha-Māgadhī Dictionary*. The original compiler of a work like this has got certain advantages which a mere translator cannot be expected to have. The former gives the meanings and explanations of words with a thorough grasp of their contextual bearings, while the latter has to depend upon these meanings and explanations without an opportunity to consult the texts on which they are based. One Gujarati word, for instance, might convey a number of different senses and it would be difficult to give the right equivalent for it in English, without knowing the context. Under these circumstances the only course left for me was to consult *Mahārāj Shri Ratnachandraji* by correspondence and this I have done as far as possible.

Another difficulty was about Jaina religious technical terms in which the Jaina scriptures abound. The little smattering of Jaina religion which I had, was altogether insufficient to answer the purpose of rendering accurately in a foreign tongue the sense conveyed by these technical words. It is true that a number of scholars both Eastern and Western have worked in this field, but the lack of a single comprehensive lexicon made it a matter of great labour, at least at the commencement of my work, to find out the required information lying scattered in various works. Happily for me, however, Mr. Kesharichandji Bhandari, the publisher, of this work placed at my disposal his wide and varied stock of books on Jainism and I have amply and freely availed myself of the information, both in point of manner and matter, supplied by these works. I have frequently referred to the works of Mrs. Sinclair, Messrs. Jagmahendialal Jaini, Champatrai Jaini, H Jacobi, Hoernle, Warren, Gandhi etc etc.

Mr. J. L. Jaini's "Jaina Gem Dictionary" has been of inestimable use to me and the same also has been the case with Mrs. Sinclaire's "Heart of Jainism". I have also frequently referred to V. S. Apte's "Sanskrit Dictionary". My sincere thanks are due to all the above named scholars for the help I have derived from their works.

In spite of all this, I am far from thinking that the work of translation might be deemed satisfactory by scholars. However, since I have not yet finished the whole stock of 50,000 words, if opinions and suggestions reach me through the publisher, I shall be highly grateful for them and shall willingly make use of them in my future work.

In conclusion I have to express my deep debt of gratitude to Messrs, Kesharichandji J. Bhandari and Sardarmalji K. Bhandari for the untiring zeal with which they answered my numerous queries on various difficult points of Jaina creed. Mr, Sardarmalji, who in consequence of his father Kesharichandji's illness, has devoted himself with indefatigable energy to the work of publishing this dictionary, specially deserves my thanks for critically going through my work before it is carried to the press.

Praying, that the great Tirthankaras may enable me to go through the whole of my work and thus to render my services to the cause of the noble Jaina religion, I conclude.

**Pritamjal N. Kachhi, B.A.**

M. S. High School,

# Hints for the study of this Dictionary.

1. The original word is printed in the large type followed by the grammatical gender. Then is given its Sanskrit equivalent. The Gujarati, Hindi and English explanations come next in order. References to the Sūtras and other works from which the original word is taken are indicated by an abbreviated terminology, the full explanations of which can be learnt from the list of Sūtras given in the Kōṣa. Explanations of grammatical abbreviations can be learnt from the list of abbreviations. In many cases quotations too, are given, followed by proper references. Where a word has more than one sense, the different senses are marked (1) (2) (3) etc.

2. Where a word bears a different sense in a different gender, the latter is indicated along with the former.

3. Compounds of the original word are given along with the latter and are enclosed into brackets with the sign—standing for the original word. The Sanskrit equivalents of compounds are also similarly given with the same mark prefixed.

4. Roots are given with the mark √ prefixed to them and as far as possible, conjugated forms in different tenses and moods are also given.

5. A word which does not belong to Aīdha-Māgadhī proper but to some other cognate dialect such as Pāisāchī etc. is marked with an asterisk, thus \*, and its explanation only is given for want of the exactly corresponding Sanskrit word to which it can be traced, e. g. \* अगड् (कूप), etc.

6. When a word which can, by ordinary rules of Prakrit grammar be given a Sanskrit garb, which, however, is not current in Sanskrit literature the nearest approximate Sanskrit equivalent is given with the mark ॥ prefixed to it, e. g. अवलुय (अवलुक-नौकादण्ड), अगड (अगत-अज्ञात), अभिसरमाण (अभिसरमाण-अभिसरत्), अवरोविता (अव्यपरो-पिता-अन्यपरोपय) etc. In some places a great divergence is met with

between the original principal word and its Sanskrit prototype, e. g. फास (स्पर्श), नास (ज्ञान), उपरिह्वा† (उपरितन) etc. No asterisk is prefixed to such words as these, because they belong to Ardha-Māgadhī proper; and they are invariably rendered into Sanskrit by words included in brackets above.

7. The gender given before the principal word applies to that Ardha-Māgadhī word only, and not to its Sanskrit equivalent. Of course, as a general rule, the Sanskrit equivalents agree with the original principal words in gender. Genders of words have been given according as they are found in the Sūtras, e. g. अकखुद्. पु० (अबुद्) a Jaina layman. This word is here assigned the masculine gender although in Sanskrit, as an adjective, it would have all the three genders. But in the Sūtras it is used in the sense of "a Jaina layman" only, and so is assigned the masculine gender. In the same way अंबिल. न० (अम्ला) a kind of vegetation. This word is feminine in Sanskrit but in the Sūtras it is used in the neuter gender only and so it is assigned neuter gender only.

8. In Ardha-Māgadhī an Anusvāra is not changed to the nasal of the class of the following consonant as in Sanskrit. The order of words therefore is based upon the natural rank of the Anusvāra which comes after ओ e. g. after अ ओ comes अक and after अक comes अकड etc.

9. Absolute participle, infinitive of purpose, and present participle have been given separately when the root from which they are formed has not been met with. In other cases they have been included under the root from which they are formed. When the first two formations have been given independently they are regarded as indeclinables, after the fashion of the Sūtrakāras: - e. g. अकियाणं. सं० क० अ० (अकृत्वा), अभिगंतुं. हे० क० अ० (अभिगन्तुम्) etc.

---

† The termination ह्वा is very common in Ardha-Māgadhī and so no asterisk is prefixed where it occurs. It is rendered in Sanskrit by तर, त्स, तन.

10. Roots have been principally divided into three conjugations viz I, II, and I-II. Some conjugated forms of roots have been given separately, e g. अकारिँसु, अलाहि etc the reason for this being that they are in the past tense and take the augment अ. The roots from which they are formed have been indicated here, e g. वीदे कृ, लभ् etc. In Aīdha-Māgadhī words, a preposition is prefixed to the root and the whole given as one word, while in their Sanskrit equivalents they have been separated by a cross

Denominatives have also been sometimes given and they have been indicated by the abbreviation ना० घा०\*

11. When the same word ending in अ and also in य signifies the same meaning, either अ or य has been placed after it, preceded by a dash, e. g. अवगअ-य. Sometimes the case is otherwise, य being substituted for अ. This procedure is based upon the frequency of a particular form in the Sūtras or upon the references and quotations given in the Kosā. Similarly the third person singular terminations namely इ and ति have been given along with the root in the same place. Although अवगअ and अवगय are both met with in the Sūtras, still however, the inflected form is one only, namely अवगए

12. There are some cases in which क is optionally changed to ग in the middle of a word, these have not been given separately, but the change has been indicated in one and the same place; e g. अव्वोक-ग-ड ( अव्याकृत ) etc.

13. तद्, युष्मद्, अस्मद् and other pronouns have been declined in all their cases as far as possible. There is no dative case in Aīdha-Māgadhī. Its sense being conveyed by such terminations as, स्थे, द्वे etc. Some words in their inflected forms, undergo changes which are not found in the case of other words, e g. राजन् Gen. Sing. रराणो

---

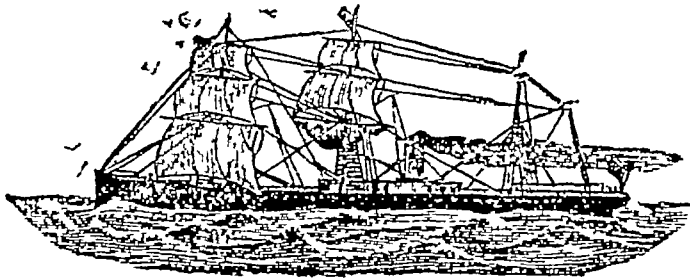
\* ए is prefixed to the terminations ( तिप्, तस्, भि etc ) before they are applied to the roots in the case of the I Gana. In the case of the II Gana it is not so prefixed. In the case of I-II it is prefixed optionally.



14. No word, not occurring in the Sūtras, has been admitted in the Koṣa, nor has any word been introduced in it before clearly grasping its proper sense. Quotations, however, have been given only where necessary or useful. For reasons of space the number of quotations has had to be limited within a reasonable compass. Still however, they have been given in the case of nearly fifty per cent words. The references given have been verified several times over and are therefore absolutely correct. These references are based upon the available works, a classified index of which along with their abbreviations has been given in the Kosa under the heading "A list of works consulted"

15. The Sanskrit equivalents are grammatically correct and have been given after consulting a number of dictionaries. Where one equivalent did not fully serve the purpose, another equivalent has been added. In some cases the original roots and even the terminations applied to them have been shown. Compounds, etymological analysis etc. have been given in some cases where necessary but not too often, for fear of swelling the bulk of the work. Explanations in Gujarati, Hindi and English have been made as full as possible by resorting to different modes of expression.

16. Only that meaning of a word which it bears in the Sūtras is given here; others, though they might be met with in Sanskrit literature, have been excluded.



# प्रस्तावना



[ अनुवादक मि. पी. एन. कच्छी ]

## ( १ ) अर्ध-मागधी कोषनी आवश्यकता अने उपयोगिता ।

पुरातनी जैन शास्त्रोना अभ्यासीओ आ कोषनो आनंदधी स्वीकार करशे विशेषे करीने जैन धर्मनी पुरातनी भाषानो जेओने पूर्ण परिचय नथी एवा श्रावको तेमज तुलनात्मक भाषाशास्त्र, तत्त्वज्ञान अथवा भारत भूमिमा प्रचलित किचारसरणी अने धर्मनुं ऐतिहासिक अन्नलोकन करवाना इरादाथी आ भाषानो अभ्यास करनाराओने आ कोष आदरणीय थशे. ऊपर कहेला वर्गना अभ्यासीओने प्रत्येक शास्त्रीय ग्रन्थ ऊपरनी टीकाओ अने ते ग्रन्थने जोडेला शब्दकोषो ऊपर आधार राखी कार्यनिर्वाह करवो पडे छे. आ उपरात वैदिक समयधी आरंभीने आधुनिक भारतवर्षीय आर्यभाषाओना विविध स्वरूपोमा प्रचलित, हिन्दी आर्यभाषानी मध्यभाबस्थाना सर्वे रूपातरोनो समावेश करता एक वृहद् शब्दकोष माटे आ कोष उपयोगी साधन पूरु पाडशे एवी आशा राखी शकाय अने ते दृष्टिधी जोतां पण आ साहसिक प्रयत्ननी आवश्यकता सिद्ध करी शकाय तेम छे. हस्तलिखित पुस्तकोमां एकज शब्दना भिन्न भिन्न रूपो जोवामां आवे छे अने आवा शब्दो कये कये स्थळे छे अने तेनां केवां केवां रूपो छे ए जाणावा माटे अभ्यासी अथवा तो ग्रन्थसंपादकने मूलग्रन्थमां जे स्थळे ते आवेला छे ते दर्शावनार एक कोषनी आवश्यकता रहे छे अर्धमागधी-भाषा पूरती आ आवश्यकता पूरी पाडवा माटे आ कोष समर्थ थशे आ भाषाना अभ्यासमां प्रगति थतां कदाचिद् घणां रूपो अशुद्ध सिद्ध थाय परन्तु आवा अभ्यासनी वृद्धि करवाना हेतुधीज आ कोष प्रसिद्ध करवानुं कार्य हाथमां लेवामां आवेलुं छे ।

## ( २ ) कोषनी शुरुआत अने रचना ।

ई. स. १९१२ मां डॉ. ल्युइगी स्वॉलीओ एक प्राकृत शब्द-कोष तैयार करवानो पोतानो इरादो जाहेर कर्यो ( Z. D. M. G. १९१२ पृ. ५४५ ). इंदोर निवासी श्री. केसरीचंदजी भंडारीए पोते एकत्र करेला शब्दो डा. स्वॉलीने मोकली आपेला परन्तु युरोपीय महान युद्ध शरु थवाथी तेमा. ( डॉ. स्वॉलीना ) कार्यमां अंतराय आववाथी आ शब्दो तेमणे श्री. केसरीचंदजी भंडारीने पाड्ढा मोकली आप्या. श्री. केसरीचंदजी भंडारीए विविध जैन प्राकृतोमा आवेला शब्दोना एक कोष तैयार करवा एक जैन मुनिने आप्रह कर्यो. अने तेमणे ते वात स्वीकारी, अने त्रण अन्य मुनिओनी सहायता लई सूत्रोमांथी शब्दोना संग्रह कर्यो. शब्दो संग्रह करवामां तेओए पोताना पासेनी हस्तलिखित प्रतो अने बालुचर ( Bāluchar ) छापेला ग्रन्थोना उपयोग कर्यो ई. स. १९२० मां मारा शिष्य अने सहाय्यापक श्री. बनारसीदासजी ने आ बाबतमा सलाह आपवा माटे आमन्त्रण करवामां आव्युं अने तेओए डा. गुणे, डा. बेलबेलकर आ. बा. ध्रुव वंगेरे विद्वानोनी सलाह लई ठराव्यु के प्राकृत शब्दोना अर्थो इंग्रेजी, तेमज हिन्दी अने गुजराती भाषाओमा आपवा ग्रन्थ संपादन तथा गुजराती भाषान्तरनु काम स्वामी मुनि रत्नचंद्रजीए करेलुं छे अने हिन्दी अने इंग्रेजी भाषान्तरो अन्य व्यक्तिओए करेला छे आ कार्यमां लागेलो लर्चे के. स्या. जैन कॉन्फरन्से आपवानुं स्वीकारेस छे ।

डॉ. स्वॉलीना लखवा प्रमाणे आ प्रश्न ई. स. १९०८ मा जैन श्रेतांवर कॉन्फरन्से भावनगर-मां चर्चेलो हतो अने ए वावतमा प्रो. ह. जेकोवीनो अभिप्राय पूछवामां आवता तेओए डा. स्वॉलीनु नाम सूचवेलुं हतुं. आ कोष ते समये धारेली विशाल योजनाने अनुसरतो नथी, कारण के अत्रे तो मात्र अर्धमागधी शब्दोने समावेश करवामा आवेलो छे ।

### ( ३ ) अर्ध-मागधी शब्दसंग्रहो अने विश्व-कोषो ।

प्राकृत-संस्कृत शब्दकोषो सहित घणां जैन सूत्रो प्रसिद्ध थयेलां छे. तेमांनो केटलां एक नीचे प्रमाणे छे —

- १ आचारांग ( आचारांग सूत्र ) पहेलुं श्रुतस्कंध, संपादक, उवी. शुत्रिंग जर्मन ओरियन्टल सोसाइटी लीप्झीग १९१० ।
- २ फ्रगमेन्ट डर भगवती, संपादक, उवेवर, खडकनी पुराणिक कथा, घर्लिन १८६६—६७ ।
- ३ स्पेसिमेन डर नयधम्मकहा(जाताधर्मकथा)संपादक, पी. स्टेइनथल पहेलुं अध्ययन, लीप्झीग १८८१
- ४ उवासगदसाओ ( उपासकदशा ) संपादक, हार्नेल, कलकत्ता १८८८—९० ।
- ५ ओववाइय ( औपपातिक ) संपादक ई ल्युमॅन, लीप्झीग १८८३ ।
- ६ निरयावलीय सुत्तं, ( निरयावलिका ) संपादक, एस. जे. उर्वरेन, एमस्टर्डेम, १८७९ ।
- ७ कप्प सुत्तं ( कल्प सूत्र ) संपादक, ह. जेकोवी, लीप्झीग १८७९ ।

अत्रे अभिधानराजेन्द्र नामना जैन धर्मना विश्वकोषनो नाम निर्देश करवानी पण जरूर छे लग भग त्रीश वर्ष पहेला राजेन्द्रविजय नामना साधुए उपरोक्त विश्वकोष तैयार करवानो संकल्प कर्यो. तेमणे पोताना केटलाएक शिष्योनी साथे वावीस वर्ष श्रम करी ई. स. १९१० मा अभिधानराजेन्द्रनुं पहेलुं पुस्तक ( पहेलां भाग ) बहार पाडयो त्यार पछी वाजा चार भागो प्रसिद्ध थएलां छे अने चौथा भागना अन्तिम शब्द “ भोल ” छे हजु एक बे भागो बहार पड्ये सकल ग्रंथनी समाप्ति थशे एवी आशा छे ।

उपरोक्त विश्वकोषमां प्रत्येक प्राकृत शब्दनी पाछळ तेनुं संस्कृत रूप, संस्कृतमा विवरण, मूलग्रंथमा जे स्थळे ते आवेलो छे तेनो निर्देश अने अन्य ग्रंथोमा जे विविध अर्थोमां ते वपराएलो छे तेनी अवतरणो सहित चर्चा आपवामां आवेल छे. प्रत्येक भागना पृष्ठ १००० हजार छे अने मूल्य रु. २५ छे परंतु आ ग्रंथने विद्यार्थीओने उपयोगी शब्द कोष न कहेता पुस्तकालयोमा राखवा लायक एक वृहत्-कोष कही शक्य प्रस्तावनामां हेमचन्द्रनुं प्राकृत-व्याकरण तेमनीज करेली टीकासहित आपवामां आवेल छे नामना रूपाख्यानो आपवामा जेटला शक्य तेटला रूपो आपवामा आवेलां छे पछी ते साहित्य-मा मळी आवे के नहि. उदाहरणार्थ पंचमी एक वचनमां ‘युष्मद्’नां पचास रूपो आपवामा आवेला छे परन्तु अर्ध-मागधी साहित्यमां आ रूपोमानुं कोई पण भाग्येज जोवामा आवे छे आ विश्वकोषमा प्रत्येक विषयना सम्बन्धमा जे काइ मूळ ग्रंथोमा तेमज टीकाओमा आपेलु छे ते सघळानो समावेश करवामां आवेलो छे ।

## ( ४ ) मूळ ग्रन्थो ।

जैन शास्त्रोनुं ज्ञानं न धरावता सामान्य परिचय माटे अभ्यास करनारात्रोने नीचेना मूळ अर्ध-मागधी ग्रन्थो उपयोगी थशे एम धारी अत्रे निर्दिष्ट करवामा आवे छे ।

( ए ) बालुचर मूळग्रन्थो-मुर्शिदाबाद ( बगळा ) जिल्लामां आवेल बालुचर निवासी रा. ब. धनपतिसिंहे अर्ध-मागधी शास्त्रोनी संस्कृत टीका अने गुजराती भाषान्तरसहित एक आवृत्ति बनारस, मुंबई अने कलकत्तामा छपावी बहार पाई ( ई सन् १८७५-१८८६ ) हॉर्नेल आ पुस्तक-माळा उपर टीका करता जणावे छे के “तेनी अंदर मूळग्रन्थनी तेमज व्याकरणनी शुद्धता ऊपर कोई पण लक्ष आपवामां आवेलुं नथी ” आ ग्रन्थमाळा साधुओने, जैन देवालयो अने घणापुस्तकालयोने विना मूल्य आपवामा आवेल छे ।

( बी ) जैनागमोदय मूळग्रन्थो-जैन आगमोदय समितिए मुंबईमा ई. स १९१०-१९२० मा बहार पाडेल ग्रन्थमाळा, उपरनी माळा करता विद्वत्तानी दृष्टिअे ववारे सारी छे आ माळाना पुस्तको पोथीना रूपमा छपायेला छे तेनी अंदर संस्कृत टीका आपवामा आवेली छे तेमज टीपोमां कोई कोई पाठ भेदो पण आपेला छे ।

( सी ) हैद्राबाद ग्रन्थमाळा-अमोलकत्रयणि नामना जैन साधुए तैयार करेल हिन्दी भाषान्तर सहित अर्ध-मागधी मूळग्रन्थो-आ माळा ई स १९१६-१९२० हैद्राबाद ( दक्षिण ) ना एक धनवान आश्रयदाताए पोताने खर्चे पोथीना आकारमा छपावी विनामूल्य साधुओ तेमज पुस्तकालयोमा बहेंची आपेल छे परन्तु मूळग्रन्थनी अंदर अशुद्धताओ आवी गयेली छे ।

आ उपरात ( केमानी बीजी ग्रन्थमाळा अर्ध-मागधीना अभ्यासीओ माटे सर्वोत्तम छे ) कप्प, उत्तरा-जम्भयण, दसवेयालिय इत्यादि ववारे लोकप्रिय ग्रन्थोनी जुदी जुदी घणी आवृत्तिओ बहार पडेली छे ।

आ प्रस्तावनाना त्रीजा मथाळानी नीचे युरोपीय विद्वानोए शब्दार्थ-कोषसहित छपावी प्रसिद्ध करेला सात मूळ ग्रन्थो आपवामां आवेला छे आ उपरात शब्दार्थ-कोषरहित पण बीजा त्रण बहार पडेली छे ते नीचे प्रमाणे—

८ आचार्याग, संपादक, ह जेकोबी पाली टेक्स्ट सोसायटी १८८२

९ अणुत्तरोववाइय, संपादक, वार्नेट, थोरियंटल ट्रान्सलेशन फंड पुस्तक १७ सु, लन्डन १९०७  
( अतगड सूत्रना भाषान्तर ने पारिशिष्टना रूपमा जोडेल )

१० दसवेयालिय, संपादक, ल्युमेन पुस्तक ४६ सु ( Z D M G. मा )

## ( ५ ) भाषान्तरा ।

बालुचर माळामा आपेल गुजराती अने हैद्राबाद माळामां आवेल हिन्दी भाषान्तरा विषे ऊपर कहेवामां आवेलु छे इप्रेजामा जेकोविए “ सेकेड बुक्स ऑफ धि ईस्ट ” ना पुस्तक २२ मा अने ४५

मां करेल भाषान्तर, हॉनेलनुं करेल उवासगदसाओनुं भाषान्तर अने बार्नेटनुं करेल अंतगद-  
दशाओ अने अणुत्तरोववाइयनु भाषान्तर ए प्रमाणे छे ।

### ( ६ ) व्याकरणो अने पाठ्य पुस्तको ।

अर्ध-मागधी ( अथवा अर्ध ) व्याकरणो प्राकृत वैयाकरणिकोए रचेनां छे. देशी व्याकरणोमां मुख्य हेमचन्द्राचार्य कृत अने विशेषी साक्षरोए रचेल व्याकरणोमां मुख्य पिश्चेल कृत छे. श्री. बनारसीदास जैन ऐम. ए. एओए तैयार करेल संक्षिप्त व्याकरण आ प्रस्तावनाने जोडवामा आवेल छे. श्रीबनारसीदासे तैयार करेल एक अर्ध-मागधी पाठ्य पुस्तक पंजाब विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित करवामा आवनार छे ।

### ( ७ ) आ कोषमां आपेली शब्द संख्या ।

ओगण पचास ग्रन्थोमांथी लगभग ५०,००० शब्दोनो सप्रह करी अत्रे समावेश करवामा आवेलो छे आ ग्रन्थोनो अंदर ११ अंगो, १२ उपांगो ७ पदरणाओ, ६ छेद सूत्रो, ४ मूळसूत्रो, नन्दीसूत्र, अणुओगद्वार अने ओघनिर्युक्ति ए ग्रन्थोनो समावेश थयेलो छे; एटले के सघळां श्वेतांबरी शास्त्रोनो अने तेने लगता सघळा मुख्य ग्रन्थोनो समावेश थयेलो छे ।

### ( ८ ) अर्धमागधी भाषानो इतिहास अने ते भाषानी विशेषताओ ।

जैन सूत्रोनी भाषाने अर्ध-मागधी कहेवामा आवे छे-आ सूत्रोमां कहेवामा आवेल छे भगवान् महावीरे आ भाषामा जैनसिद्धान्तनो उपदेश कर्यो अने तेनी अंदर एम पया कहेवामा आवेल छे, के आ भाषामाथी अन्य भाषाओ शास्त्रारूपे उद्भवेली छे ।

देशी वैयाकरणिको आ सूत्रोनी भाषाने “ आर्षम् ” ऐटले ऋषिओनी भाषा एवं नाम आपे छे. पिश्चेलकृत प्राकृत व्याकरण ( १ ) मां नीचे निर्दिष्ट अवतरणो आपेलां छे ।

समवायांग सुत्त ६८, ओववाइय सूत्र ५६, पणवया सूत्र ५६, हेमचन्द्र १, ३, ४, २८७, प्रेमचंद्र तर्कवागीशकृत दंभीना काव्यादर्श ऊपरनी टीका १, ३३, रुद्रकृत काव्यालंकार ऊपर नमिसाधु कृत टीका २, १२, अने वाग्भट्टकृत अलंकार तिलक, १, १

ऊपर कहेलां अवतरणो उपरथी पिश्चेल सिद्ध करे छे के ( १७ ) “ आर्ष अने अर्ध-मागधी ए वेमां परस्पर भेद नथी अने जैन पुरातनी सूत्रोनी गद्य अने पद्य बक्षेनी भाषा परंपरागत मतानुसार अर्धमागधी छे; अने हेमचन्द्रे दसवेयालिय सुत्तमांथी आपेलुं उदाहरण ( ६३३-१६ ) पया एज वात सिद्ध करे छे” ।

आ भाषाने अर्ध-मागधी शा माटे कहेवामा आवी ? मागधी भाषानी मुख्य विशेषताओ आ प्रमाणे छे ‘रसोर्लशौ’ ऐटले ‘र’ अने ‘स’ ने बदले अनुक्रमे ‘ल’ अने ‘श’ थाय छे, उदाहरणार्थ, ‘रामे’ ने बदले ‘लामे’ थाय छे, अने प्रथमा ए व. पुं मां ए आवे छे. अर्ध-मागधीनी अंदर ‘र’ अने ‘स’ एमना एम रहें छे. परन्तु प्र. ए. व पुं. मा ‘ए’ आवे छे, उदाहरणार्थ ‘महावीरे’, परन्तु काव्योमा प्रथमा एक वचन पु. ओकारान्त पया थणी वखत दृष्टिगोचर थाय छे ।

आ प्रमाणे अर्ध-मागधीमां मागधी भाषानी केटली एक विशेषताओ समाएली छे, अर्थात् तेनी सघळी विशेषताओनो समावेश थयेलो नथी माटे तेने अर्ध-मागधी कहेवामा आवे छे एवो खुलासो “ अर्ध-मागधी ” नी व्याख्या आपतां समवायांग ( पृष्ठ ६८ ) अने उवासगदसांग, ( पृ. ४६ ) उपरनी तेमनी टीकामा अभयदेवे आपेली छे ( पिश्वेल प्राकृत व्या. १७ ).

काव्योनी भाषा गद्यात्मक लेखोनी भाषाथी थोडी घणी विभिन्न जोवामा आवे छे उदाहरणार्थ एकारान्त प्रथमा एक वचनने स्थाने घणी वखत ओकारान्त प्रथमा एक वचन जोवामा आवे छे.

अर्ध-मागधी रूप ‘ मिलक्खु ’ ( सं० म्लेच्छ ) मात्र गद्यमाज जोवामा आवे छे, परन्तु काव्यमां अन्य प्राकृत भाषाओ प्रमाणे ‘ मेच्छ ’ रूप आपवामा आवेल छे गद्य अने पद्यनी भाषामाना तफावतो-मांना केटला एकनुं कारण एवुं बताववामा आवे छे, के मूल सस्कृत गद्य पद्यादिनुं प्राकृत भाषान्तर थयेलु होवाथी आ तफावतो उद्भवेला छे ।

काव्य ग्रन्थोमा महाराष्ट्री प्राकृतनी पण केटली एक विशेषताओ जोवामा आवे छे अने तेथी आ ग्रन्थोनी भाषाने महाराष्ट्री अने मागधीनुं मिश्रण पण कहेवामा आवेल छे. अर्वाचीन जैन ग्रन्थो अर्ध-मागधीथी थोडे अंशे मिश्रित महाराष्ट्रीना एक रूपान्तरमा लखाएला छे. भाषाना थयेला आ रूपान्तर ऊपरथी आपणे अनुमानी शकीए के ते समये जैन धर्मनो नैर्ऋत कोण ( दक्षिण पश्चिम दिशा ) तरफ प्रचार थयेलो होवो जोइए ।

अर्ध-मागधीनुं मूल उद्भव स्थान कर्णु ? भरते रचेल कहेवामा आवता काव्यशास्त्र विषयक अतिप्राचीन ग्रन्थमां अर्ध-मागधीने सात भाषाओमांनी एक गणवामा आवी छे, आ सातमानी चाकीनी छ आ प्रमाणे छे — मागधी, आवन्ती, प्राच्य, सुरसेनी, बाहलीक अने दक्षिणात्य ( १७, ४८ ).

उपरोक्त ग्रंथकारनुं कहेवुं एम पण छे, के नाटकोमां आ भाषा, नोकरो, रजपुतो अने व्यापारीओ वापरे छे परन्तु नाटकोनी हस्तलिखित प्रतोमा ऊपर आपेलो नियम पळाएलो जोवामा आवतो नथी. सुद्वाराक्षस नामक नाटकमां जीवसिद्धि नामनो साधु अने प्रबोधचन्द्रोदयमा क्षणिक, मागधी भाषा, वापरे छे एम बताववामा आवेल छे ।

तो पण मध्य एशियामा मळी आवेला अश्वघोषकृत कहेवाता केटलां एक अपूर्ण बौद्ध नाटको-माना केटला एक संदर्भो प्राचीन अर्ध-मागधी भाषामा छे एवु ते नाटकोना विद्वान् संपादक प्रोफेसर ल्युडर्सनुं मानवुं छे ।

अशोकना दक्षिणना शिलालेखोनी भाषामा एकारान्त प्रथमा एक वचन तेमज ‘स’ अने ‘र’ वचनेनो समावेश जोवामा आवे छे.

अशोकनी पूर्वतरफनी भाषामा ‘र’ ने स्थाने ‘ल’ जोवामा आवे छे उदाहरण-लाजा-राजा; अने आ ऊपरथी आपणे अनुमानी शकीए के मौर्य समयमां पटणानी भाषा अर्ध-मागधी न होती.

जे भाषाने आपणे अर्ध-मागधी कहीए छीए ते भाषा बराबर कये स्थळे अने कये नमये

उद्भवती आ प्रश्नो हजु निर्णय थयेलो नथी. तेनुं मूळ उत्पत्तिस्थान प्राचीन मगधदेशना पश्चिम भागथी अथवा नैर्ऋत ( दक्षिण-पश्चिम ) भागथी बहु दूर न होतुं एवी मान्यता संभावित जणाय छे ।

मौर्य सार्वभौम राजाओना समयमां पूर्व तरफनी पटणानी भाषा पश्चिम तरफ फेलाती गई; पछी तेनो फेलाव मात्र राजमहेलोमा अने बजारोमाज थयेलो होय अने गामडाओमां न थयेलो होय ।

ज्यारे मौर्यवंशी राज्यनी पडती थई त्यारे कदाचित् आ पूर्वनी भाषानो उपयोग कम थई गयो होय. ज्यारे पाण्डिता समयमा सार्वभौम सत्तानुं केन्द्र पश्चिम तरफ थयुं त्यारे प्राकृत भाषानुं शौरसेनी स्वरूप गंगानदीनी आसपासना प्रदेशोमा वधारे वधारे प्रचलित थयुं होय ए स्वाभाविक छे आ प्रमाणे भाषानां मुख्य रूपान्तरोनी एक प्रदेशमाथी बीजा प्रदेशमां थयेली गतिओने लीधे भाषाना अमुक रूपान्तरनुं स्थान निश्चित करवुं ए, ( जोके ते समयना लेखको क्वचित्ज तारीखनो निर्देश करे छे ) लेखकोए वरावर तारीखनो निर्देश करेलो होय तो पण सुसाध्य नथी ।

परंपराए चाली आवती दन्तकथा उपरथी आपणे जाणी शकीए छीए के महावीरे अर्ध-मागधीमां उपदेश कर्यो हतो तेज प्रमाणे दन्तकथा द्वारा आपणे जाणवा पामीए छइए के गौतम बुद्धे मागधीमां उपदेश कर्यो हतो ( जो के गौतमबुद्धनो उपदेश मागधीमा लखायेलो नथी परन्तु पालीमां लखायेलो छे ) परन्तु बन्ने समकालीन हता अने एकज प्रदेशमा रहेता हता एवं वर्णन करवामा आवे छे ।

जो बन्ने धर्मोपदेशकोए एकज भाषानो उपयोग करेलो होय अने आ भाषा शौरसेनी अने मागधी भाषाना प्रदेशोनी वच्चेना बनारसनी आसपासना प्रदेशनी अर्धमागधीने मळती आवती प्राकृतनुं कोई प्राचीन रूपान्तर होय तो एम कही शक्य के आ भाषा बन्ने धर्मोना शास्त्रो, ग्रन्थोमा लखायां ते पहेला विकृत थयेली होवी जोइए ( अर्थात् रूपान्तरने पामेली होवी जोइए ), आ रूपान्तर क्यारे थयुं अने केटले अंशे थयु ए निश्चित करवुं ए शक्य जणातुं नथी ।

जे स्वरूपमा अर्ध-मागधी आपणा जोवामा आवे छे ते स्वरूप ( पाली प्रमाणे ) नाटकोनी प्राकृत भाषाओथी वधारे प्राचीन छे मागधीनी पेठे तेमा प्र ए व पुं एकारान्त थाय छे, षष्ठी. एक वचनमा “ तव ” नो उपयोग करवामा आवे छे, रकारान्त धातुओनुं भूत कृदन्तनु रूप “ त ” ने बदले “ द ” धी करवामा आवे छे ( परन्तु आम सर्वत्र थतुं नथी ) ‘क’ ने बदले “ ग ” थई जाय छे; उदाहरण ‘असोग’ ( परतु मागधीमा आ बहु न्यून प्रमाणमा थाय छे ) ।

अर्ध-मागधीनी अदर ‘र’ अने ‘स’ नुं रूपान्तर न थतुं होवाथी ते मागधीथी आ बावतमा स्पष्ट रीते जुदी पडे छे अर्ध मागधी, महाराष्ट्रीथी घणां बावतोमा जुदी पडे छे. उदाहरणार्थ अर्ध-मागधीनी, अदरनो सप्तमीनो प्रत्यय ‘अंसि’ ( महाराष्ट्री अदर ‘म्मि’ छे ) चतुर्थीनो त्तत्रे, हेत्वर्थक कृदन्तनो त्तत्रे ‘इत्तए’ संबधक कृदन्तनो ‘त्ता’ ‘त्तणम्’ इत्यादि ।

अर्ध-मागधी भाषानी घटनानुं वधारे विस्तृत वर्णन श्री बनारसीदासे तैयार करेल अने अत्रे जोडवामा आवेल व्याकरणनी रूपरेखामां करवामा आवेल छे. आ रूपरेखा मूलग्रन्थोमा वापरवामा आवेला नाम, धातु इत्यादिना रूपो ऊमरधी तैयार करवामां आवेल छे. केवळ प्राकृत व्याकरणोमा आपेल सिद्धान्तो उपरथी नहि ।

# प्रकाशक की ओर से दो शब्द ।

यह बात निर्विवाद है कि प्राकृत भाषा भारत वर्ष की प्रधान भाषा है और इसमें समय समय पर अनेकानेक धार्मिक और साहित्य विषयक महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे गये हैं, जो कि आज भी भारतवर्ष के उज्वल आदर्श और उच्च विचारों को प्रकाशित कर रहे हैं। प्राचीन तत्त्ववेत्ताओं और अन्वेषण-कर्त्ताओं ने इस भाषा के उत्तमोत्तम ग्रन्थों को उपलब्ध किया है और इसके गुप्त महत्व पर मुग्ध होकर इसके गुणों को विशेष परिश्रम से अधिकाधिक प्रकट किया है; यहां तक कि इस भाषा के जो अमूल्य ग्रन्थ अब तक गुप्त थे आज अपनी जागृत ज्योति से देश देशान्तरों को देदीप्यमान कर रहे हैं और प्राचीन भारत की विशेषतः जैन साहित्य की उज्वल कमनीय कीर्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण दे रहे हैं। ग्रन्थों की उपलब्धि के साथ साथ विद्वानों की रुचिपूर्ण साहित्य की गवेषणा और इसके बढ़ते हुए महत्व को देखकर केवल भारतवर्षीय ही नहीं वरन् प्राच्य और पाश्चात्य समस्त प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों ने अपनी उच्च शिक्षा प्रणाली में किसी न किसी रूप में इस भाषा के रूप रूपान्तरों को योग्य स्थान प्रदान कर इसको यथावत् सम्मानित किया है। पुनः आधुनिक भारतवर्षीय आर्य-भाषाओं ( हिन्दी, गुजराती, बंगला, मराठी आदि ) का इस भाषा के किसी न किसी रूप से प्रादुर्भाव और निकट सम्बन्ध, तथा इन भाषाओं के सम्यक् ज्ञान के लिये इस भाषा की उपयोगिता आदि अनेक महत्वपूर्ण बातों को यथावत् समझने के लिये इस भाषा के बृहत् कोष की परम आवश्यकता प्रतीत हुई।

किसी भाषा का ज्ञान कोष और व्याकरण के बिना सुलभ नहीं हो सकता। प्राप्य ग्रन्थों में अभी तक आधुनिक शिष्ट प्रणाली के अनुसार अर्धमागधी का कोई कोष उपस्थित नहीं है।

अर्ध-मागधी भाषा इसी प्राकृत भाषा की प्रधान एवं महत्वपूर्ण शाखा है, जिसमें सर्वज्ञ भगवान तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी ने जैन धर्म का उपदेश किया है। यह बात विद्वानों को ज्ञात ही है कि प्राकृत भाषा का साहित्य बहुत विस्तृत है और इसकी एक एक शाखा तथा प्रशाखा पर इस कोष के सदृश अनेक कोष निर्माण करने की बड़ी आवश्यकता है, जो कि विद्वानों के अविश्रान्त परिश्रम, साहित्य सामग्री की उपस्थिति तथा राजा महाराजा धनी मानी सज्जनों के उत्साह पूर्ण सहानुभूति बिना सुलभ नहीं है। मुझे आशा है कि इस सम्बन्ध में गुणी और विज्ञ सज्जन अवश्यमेव दत्तचित्त और सचेष्ट होकर भारत के प्राचीन साहित्य को प्रत्यक्ष और सुलभ करेंगे। भारत की समस्त आर्य-भाषाओं के बहुतसे अज्ञात शब्दों की व्युत्पत्ति पर इसी भाषा की शाखा प्रशाखाओं के द्वारा पूर्ण प्रकाश डाला जा सकता है। इतिहासकारों को तथा प्राचीन तत्व-संशोधकों को इन्हीं सब कारणों से इस भाषा का ज्ञान सम्पादन करना अत्यंत आवश्यक ही नहीं वरन् अनिवार्य होगया है, और भाषा का ऐसा ज्ञान सम्पादन करने के लिये एवं उच्च से उच्च तत्वों से परिपूर्ण साहित्य को पढ़ने के लिये कोष ही एक महान् साधन हो सकता है। कोष के अभाव में अर्थ के स्थान में अनर्थ आदि होजाते हैं जिस कारण साहित्य को यही हानि



हो रही है, और जिससे विद्वान् मज्जन रचय परिचित भी हैं। व्यासजी ने महाभारत के आदि में ठीक कहा है “विभेत्यल्पश्रुताऽदो मामयं प्रहरिष्यति”। उपरोक्त से यह प्रत्यक्ष ही है कि कोष की अनुपलब्धि के कारण प्राचीन भारत का गौरवयुक्त इतिहास प्रायः सर्व साधारण के लिये अबतक प्रकाशित नहीं हुआ है और इसके बिना भारत की प्राचीन सभ्यता का दिग्दर्शन होना असम्भवसा ही है।

अर्थ भागवी का महत्व प्रायः जैन साहित्य में अरा पडा है। इन्हीं परम उपयोगी सद्ग्रन्थों के अध्ययन करते समय मेरे पूज्य पिताजी तथा उनके एक मित्र की दृष्टि पाश्चिमात्य विद्वानों के जैन सूत्रों के अंग्रेजी अनुवाद पर पड़ी और उनको यह प्रतीत हुआ कि इन परिश्रम-शील कुशाग्र-बुद्धि विद्वानों ने भी साम्प्रदायिक शब्दों के अर्थ से नितान्त अनभिज्ञ होने के कारण विपरीत अर्थ लिख डाले हैं। उदाहरणार्थ—पाश्चात्य ग़रब विद्वान् और प्रख्यात पण्डित प्रसिद्ध जर्मन् डॉ० हरमन जेकोबी जो जैन साहित्य के प्रौढ पण्डित होने के कारण आज भारतवर्ष में “जैनरत्न-दिवाकर” नाम से प्रख्यात है, आचाराग आदि सूत्रों का जो अंग्रेजी अनुवाद कुछ वर्ष पूर्व किया था उसमें कितने ही शब्दों का जैन सिद्धान्त से विपरीत और अमात्मक अर्थ कर डाला, जिससे जैन समाज में एक प्रकार का चोभ उत्पन्न हो गया और जिसकी दुःखमय स्मृति अभी तक लोगों के हृदय पटल से नहीं हटी है। इस प्रकार साम्प्रदायिक शब्दों को जानने के साधनों के अभाव के कारण साहित्य सम्बन्धी और धार्मिक बहुत कुछ हानि हो चुकी है और हो रही है। ऐसी घटनाओं को देखकर ऐसी त्रुटियों के सशोधन के हेतु, यथार्थ भाव प्रकट करने के लिये कोष के समान अनुपम साधन की अतीव आवश्यकता प्रतीत होने लगी और उसके सम्पादन की इत्कट इच्छा दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी। इस दशा में मेरे पूज्य पिताजी ने सन १९१० ईसवी में जैन सूत्रों से शब्द संग्रह करना प्रारम्भ कर दिया और स्वल्प समय में ही लगभग १४००० शब्दों का संग्रह भी कर लिया। इसी समय इटली के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ० स्वाली ने इसी प्रकार का एक कोष निर्माण करने की इच्छा श्री श्वेताम्बर जैन कॉन्फरन्स को प्रकट की। जब यह बात मेरे पूज्य पिताजी केसरीचन्द्रजी भडारी को ज्ञात हुई तब उन्होंने यह विचार करके कि ये माननीय विद्वान् स्वाली महोदय इस महत्वपूर्ण कार्य को अधिक सुयोग्यता और दक्षता से सम्पादन कर सकेंगे, अपनी संग्रह की हुई शब्दावली उक्त कॉन्फरन्स को डॉ० स्वाली महोदय की सेवा में भेजने के लिये समर्पण कर दी। समय के फेर से यूरोप से भीषण महायुद्ध प्रारम्भ हो गया तथा अनेक ऐसे कारण उपस्थित हो गये जिससे यह कोष उक्त महोदय द्वारा सम्पादित न हो सका। मेरे पिताजी के अनुरोध से श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स ने इस कार्य में अभिरुचि प्रकट की तथा व्यय आदि की मजूरी देकर पूर्ण सहायता एवं सहानुभूति प्रकट की। तथापि विद्वानों की सहायता तथा अन्य साधनों की अनुपस्थिति के कारण कोष का महान् कार्य यथेष्ट रूप से उन्नति न कर सका। पिताजी कोष को सुव्यवस्थित रीति से और शीघ्रतासे सम्पादन करने की उग्र चिन्ता में ही थे कि इतने में उन्हें कार्यवश बंधई जाना पडा और वहां शतावधानी पण्डित मुनिवर श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी के शुभ दर्शनो का सुअवसर प्राप्त हुआ। मुनिजी की प्रख्यात विद्वत्ता और सामयिक दर्शन का उपयोग पूज्य पिताजी ने पूर्ण रूप से किया और श्री स्वामी जी महाराज से कोष सम्पादन कार्य के वास्ते विनीत विनय किया, जिसको स्वनामधन्य रत्नचन्द्रजी महाराज ने कृपाकर स्वीकार कर लिया, और बहुत ही अल्प समय में सुचारु रूप से सम्पादन कर

ढाला । केवल तीन वर्ष की अवधि में ऐसे महान् कार्य को सर्वाङ्ग सुन्दर और सम्पूर्ण करना स्वामीजी की विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता और कल्याणकारी परिश्रम का प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

## श्री स्वामीजी का संक्षिप्त जीवनचरित्र ।

जैन मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज के अविश्रान्त परिश्रम का फल यह कोप है । आपका जन्म संवत् १६३६ वैशाख शुक्ल १२ गुरुवार को कच्छ देश में सुंद्रा नगर के पास भारोरा नामक ग्राम में हुआ । आपकी मातेश्वरी का नाम लक्ष्मिबाई और पिताजी का नाम वीरपाल शाह था । गुजराती भाषा की छः पुस्तकों का अध्ययन करने के अनन्तर आप अपने जेष्ठ बन्धु के साथ कुल-क्रमागत प्रणाली के अनुसार वाणिज्य व्यापार में कुशलता प्राप्त करने के हेतु केवल चारहवें वर्ष ही में बम्बई, बेलापूर ( दक्षिण ) सनावद ( मालवा ) आदि व्यापार स्थानों में भेजे गये, वहां आपने धान्यादि का व्यापार किया । आपका विवाह-संस्कार १३ वें वर्ष हुआ । गृहस्थाश्रम में तीन वर्ष भी व्यतीत न हो पाये थे कि आपकी सहधर्मिणी ने अपने स्मारक स्वरूप केवल एक कन्या को छोड़ इस असार संसार का सदैव के लिये परित्याग कर दिया, और इस प्रकार अपने वियोग से महाराज श्री के सहज परम गुण वैराग्य को परिपूर्ण करने में सहायता दी । महाराज श्री के हृदय में वैराग्य का पूर्ण प्रादुर्भाव तो था ही अपनी धर्मपत्नी के विछोह से आपको अपने इस उत्तम उत्पन्न सहज गुण की वृद्धि करने का अवसर प्राप्त होगया और अत्यंत शोक तथा क्षोभ के स्थान में वैराग्य-वासना ने अपना उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ अधिकार जमाया और मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज को साधुत्व ग्रहण करने में सहायता दी । साधुत्व अङ्गीकार करने के पूर्व आपने कुछ समय साधुत्व सम्बन्धी आवश्यक तत्वों के ग्रहण करने में व्यतीत किया । दीक्षा स्वरूप महान् सकल्प ग्रहण करने में आप को विशेष आपत्ति न हुई । “ प्रसादचिन्हानि पुरः फलानि ” क्योंकि आपके पूज्य पिताजी तथा ज्येष्ठ भ्राता वाणिज्य व्यापार द्वारा आजीविका करते हुए भी ऐसे शुभ तथा महान् पुण्य कार्य में मनाही न करने का सत्य सङ्कल्प पहिले ही कर चुके थे । यह असाधारण सुविधा होने पर भी माता के अपार और अगाध प्रेम के कारण महाराज श्री को इस निमित्त आज्ञा तुरन्त न मिल सकी । इस प्रकार एक वर्ष पर्यन्त आपने सासारिक मनुष्य की भाँति जीवन व्यतीत करते हुए दण्डवैकालिक, उत्तराध्ययन, थोकेडे इत्यादि का अध्ययन दक्षिण होकर किया और इसी अवधि में आपने अपने तीव्र वैराग्य भावों का दृश्य इस प्रकार प्रत्यक्ष किया कि स्वयं, पूज्य माताजी ने उन्हें दीक्षा ग्रहण करने के लिये अनुमति प्रदान कर दी । इस प्रकार आपने संवत् १६५३ के जेष्ठ शुक्ल ३ के दिन पूज्यपाद श्री १००८ श्री गुलाबचन्द्रजी स्वामी ( लीबडी संप्रदाय ) के समीप अपनी उमर के १७ वें वर्ष में परम पवित्र दीक्षा ग्रहण की । दीक्षित होने के पश्चात् शीघ्र ही आपने संस्कृत का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया और अल्प काल में ही सिद्धान्तचन्द्रिका, सिद्धान्तकौमुदी, तत्त्वत्रयी, जर्नारत्ना, पञ्चकाव्य, अलङ्कार, साहित्य, नाटक आदि का सम्यक्ज्ञान उपार्जन कर लिया, और अनन्तर न्याय के तर्कसंग्रह से लगाकर जगदीश गदाधर के बाध-अनुमति ग्रन्थ तर्क अध्ययन भक्तिभाति किया । इसके पश्चात् साय्यदर्शन, पातञ्जलदर्शन आदि ग्रन्थों की जिज्ञा कच्छ और काठियावाड़ के

अनेक ग्रामों में रहकर उपार्जन की और इस प्रकार सत्तरहवें वर्ष की अवस्था से लगाकर उनतीस वर्ष तक संस्कृत का अध्ययन किया तदनन्तर संवत् १९६६ से व्याख्यान देना और अध्यान करना प्रारम्भ किया। आप ऐसे प्रतिभाशाली मुनिरत्न हैं कि लगातार सौ अध्यान कर सकते हैं। इन श्रीमान् के अध्यान कई अच्छे अच्छे ग्रामों में हुए हैं और उनकी रिपोर्ट पुस्तकाकार रूप में प्रसिद्ध हो चुकी है। बम्बई में भी एक समय अध्यान हुए थे, उस समय महाराजजी की विद्वत्ता का प्रत्यक्ष प्रमाण करने के लिये सर चंदावरकर आदि अनेक विद्वान उपस्थित हुए और अन्त में महाराज की सामर्थ्य, विद्वत्ता और बुद्धिमत्ता की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। जैन मुनियों में आपके सदृश विद्वान, बुद्धिमान, उत्साही, परिश्रमी, विवेकी, शान्तप्रकृति और निरभिमानी मुनि थोड़े ही होंगे। आप जैसे विशिष्ट विद्वान हैं वैसे ही धुरंधर लेखक और आशुकवि भी हैं। आपने कई ग्रन्थों की रचना संस्कृत और गुजराती भाषा में की है जिनमें कर्तव्यकौमुदी, भावभाषातक, अजरा-मरजी स्वामी का जीवन-चरित्र, गर्भित भक्ताम्बर की पादपूर्ति, ३५ स्तोत्र आदि प्रधान हैं। आपके कई संस्कृत और गुजराती लेख मासिक पत्रों द्वारा प्रसिद्ध हो चुके हैं और उनका संग्रह "रत्नगद्यमालिका" नामक पुस्तक में प्रकाशित हो चुका है। यह कोष जिसके अभाव में बड़े बड़े विद्वान जैन धर्म के अगम्य और अद्वितीय तत्वों का भाव यथावत् न समझ सकते थे और जिसके लिये आज सकल विद्वत्समाज टकटकी लगाये हुए आतुरता से देख रहा था उक्त मुनिजी ही के अविश्रान्त परिश्रम का फल है।

## कोष की उपयोगिता।

यह सन्तोष की बात है कि जैन धर्माध्यायी सज्जनों की संख्या अब दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। भारतीय विद्वान ही नहीं, किन्तु इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रान्स, इटली, अमेरिका आदि देशों के प्रसिद्ध २ विद्वान भी इस धर्म के साहित्य को ग्रहण करने लगे हैं। इस लिये उन्हें और इतिहास-खोज करने वालों को अर्ध-मागधी भाषा के साहित्य का अध्ययन करना पड़ता है। इन पाठकों तथा सज्जनों के लिये कोष अमूल्य ही है। इसके सिवाय वर्तमान आर्य भाषाओं जैसे हिन्दी, गुजराती, बंगला, मराठी आदि के शब्दों की व्युत्पत्ति ढूँढ कर निकालने में तुलनात्मक भाषा-शास्त्र के अध्ययन करने वाले को बड़ी कठिनाई होती है। इस कोष से वे कठिनाइयाँ भी दूर हो सकती हैं। साथ में वर्तमान देशी भाषाओं के विकास की जो चर्चा साहित्य-संसार में चल रही है, उसको भी इस ग्रन्थ से बड़ी भारी सहायता मिलने की पूर्ण संभावना है। इसके सिवाय यह कोष अर्ध मागधी के अतिरिक्त संस्कृत, गुजराती, हिन्दी और अंग्रेजी इन चार भाषाओं में होने के कारण हर एक देश के विद्याप्रेमी को उपयुक्त हो सकता है। प्रायः आज तक जितने कोष देखने में आये हैं, वे सब केवल एक या दो ही भाषा के हैं, और इस कारण सर्व साधारण के लिये उपयुक्त नहीं हो सकते। सार्वजनिक उपयोगी बनाने के हेतु इस कोष की रचना पर विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर एक देश के विद्यार्थियों से लेकर बड़े २ विद्वानों के भी उपयोग में आ सके, इस हेतु भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी, राजभाषा अंग्रेजी, आदि भाषा संस्कृत तथा गुजराती का उपयोग किया गया है। अर्ध-मागधी शब्दों का अनुवाद उपरोक्त कही हुई भाषाओं

में किया जाने के कारण तुलनात्मक भाषा शास्त्र और साहित्य अध्ययन करने वालों के लिये यह बड़े ही महत्व की चीज़ होगी, इतना ही नहीं, परन्तु यह कोष अर्ध-मागधी भाषा में भरे हुए जो अगम्य तत्व हजारों वर्ष पहिले जाने जा चुके हैं उन्हें सुलभता से और सुगमता से जानने की कुजी है। इस ग्रन्थ में हजारों अर्ध-मागधी अवतरण भी दिये गये हैं, इस कारण यदि इस कोष को अवतरण-कोष भी कहें तो अनुचित न होगा। इन अवतरणों को पढ़ने से आनन्द और शान्ति के साथ २ ज्ञान की भी खूब वृद्धि होती है। कोष की उपयोगिता बढ़ाने के हेतु क्रियाओं और सज्ञाओं के रूपाख्यान भी दिये गये हैं, तथा गहन शब्दों का स्वरूप स्पष्ट रीति से समझाने के अभिप्राय से जहाँ तहाँ कितने ही चित्रों की भी योजना की गई है। इस कोष की एक और विशेषता यह है कि इसके अंग्रेजी अनुवाद में जहाँ २ पारिभाषिक आदि शब्द ज्यों के त्यों अंग्रेजी अक्षरों में रखे हैं उनका उच्चारण शुद्ध और सुलभता से हो सके इस हेतु उन शब्दों के अक्षरों के ऊपर अलग २ तरह के चिन्ह किये हैं जिससे पाश्चिमात्य विद्वान शब्दों का शुद्ध उच्चारण बहुत ही सुलभता से कर सकते हैं। इस प्रकार इस ग्रन्थ को सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने में विशेष ध्यान रक्खा गया है। मैं यह कहना अत्युक्ति नहीं समझता कि इसके समान उपयुक्त पञ्चभाषिक कोष आज तक प्रकाशित नहीं हुआ। इस कोष में जो अर्थ दिये गये हैं वे विशिष्ट साम्प्रदायिक मंतन्य रहित हो कर निर्विवाद, असन्दिग्ध और शुद्ध हैं क्योंकि इस ग्रन्थ के सपादक एक विद्वान तत्वज्ञानी और जैन धर्म के आचार विचार को पूर्णतया जानने वाले निर्मल मुनि-रत्न हैं। अन्य साम्प्रदायिक जैनी भाइयों से मैं यह विशेष प्रार्थना कर देना चाहता हूँ और उनको पूर्ण विश्वास दिलाना आवश्यक समझता हूँ कि इसमें साम्प्रदायिक भेदभाव नहीं रक्खा गया है। इस कारण जैन धर्मान्तर्गत श्वेताम्बर, दिगम्बर, स्थानकवासी आदि समस्त संप्रदाय के महानुभाव इस ग्रन्थ से महान् लाभ उठा सकते हैं।

## कोष बनाने के कार्य में उपस्थित बाधाएं।



प्रथम तो इस भाषा के जानकार विशेषतः जैन मुनि ही होने के कारण प्रायः इन मुनियों के सिवाय इस कार्य में विशेष सहायता इतर सज्जनों से प्राप्त न हो सकी। जैन मुनि धर्मशास्त्रानुसार मर्यादित काल से अधिक समय एक ग्राम में निवास नहीं कर सकते और छोटे बड़े सब ही प्रकार के ग्रामों में उन्हें विचरना होता है ऐसी दशा में कोष जैसे महान् कार्य को करने के साधन व सञ्चित सामग्री सर्वत्र समुचित उपस्थित न हो सकी। इस कारण शब्द-संग्रह आदि कार्यों में नाना प्रकार की बाधाएं उपस्थित हुईं। पुनः इस कार्य में सहायता के हेतु जो शास्त्री आदि अन्य सहायक श्री महाराजजी की सेवा में रखे गये थे वे जैन धर्म से अपरिचित होने के कारण उनसे यथेष्ट सहायता न मिल सकी। श्री महाराजजी के विहार के कारण शास्त्री आदि अन्य कार्यकर्त्ताओं को भी उनके साथ २ बारवार एक ग्राम से दूसरे ग्राम जाना आवश्यक होता था और यह परिश्रम बहुतों को असह्य होने के कारण किञ्चित् अनुभवप्राप्त कार्यकर्त्ता इस कार्य का परित्याग कर देते थे। नये कार्यकर्त्ताओं को पुनः कार्य से परिचित कराने में बहुत कुछ कष्ट उठाना पड़ा और कार्य में विलम्ब हुआ। जिन जैन मुनियों से शब्द-संग्रह के कार्य में सहायता प्राप्त हुई उनके शुभ नाम

उल्लेख करना मेरा आवश्यक धर्म है और वे परिडित, मुनि श्री उत्तमचन्द्रजी स्वामी (तीर्थदीर्घ सम्प्रदाय) पंजाब के श्री उपाध्यायजी श्री आत्मारामजी महाराज, प्रवर परिडित पूज्य श्री माधव मुनिजी महाराज और कच्छ आठकोटि सम्प्रदाय के परिडित मुनि श्री देवचंद्रजी स्वामी हैं। इन्हो के अतिरिक्त श्रीयुत पोपटलाल केवलचंद्र शाह ने भी शब्द-संग्रह के कार्य में यद्यपि अल्प किन्तु जो तन मन से सहायता की है उसके लिये मुझे आशा है कि साहित्यानुरागी विद्वान आप सर्व महानुभावों के अवश्य आभारी होंगे। यह कार्य अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण होने के कारण इस कार्य में योग देने योग्य सज्जन केवल गिने चुने उपरोक्त मुनिवर हैं। मैं उनका परम उपकार मानता हूँ। इन निर्दिष्ट मुनिवरो के सिवाय जैन साधुवर्ग में दो चार महात्मा ऐसे हैं कि जो इस कार्य में विशेष सहायता दे सकते थे, कारण वे अच्छे विद्वान भी हैं किन्तु कई ऐसे अनिवार्य कारण उपस्थित होगये कि जिससे वे साधुजन कोप जैसे महत्वपूर्ण कार्य में योग न देसके। यदि उन महात्माओं द्वारा इस कोप के कार्य में सहायता मिलती तो यह कोप और भी सुन्दर होजाता किन्तु “कर्मणो गहना गतिः” इस अद्वैत सिद्धान्त के अनुसार हमें उनकी मौलिक विद्वत्तापूर्ण सहायता से वञ्चित ही रहना पडा।

मूल शब्दों के गुजराती अर्थ का हिन्दी अनुवाद करवाने में बड़ी भारी बाधा उत्पन्न हुई। वैसे ही अंग्रेजी अनुवाद के लिये अंग्रेजी जानने वाले विद्वानों की खोज की गई परन्तु जितने विद्वान मिले सब अजैन या दिगम्बर जैन मिलने के कारण उनके अनुवाद करवाने पर कई जगह त्रुटियां पाई गई, जिसका कारण इन सज्जनों का साधुओं के आचार से तथा अन्य पारिभाषिक शब्दों से अनभिज्ञ होना ही है। पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद यथावत् न कर सके, इतना ही नहीं, किन्तु कई स्थानों में अर्थ के अनर्थ कर डाले, जिन्हे सुधारने में बहुत ही परिश्रम उठाना पडा। इन अनर्थों के कुछ नमूने नीचे उद्धृत किये जाते हैं जिससे विज्ञ सज्जनों को यह ज्ञात होजायगा कि साम्प्रदायिक पारिभाषिक शब्दों का भाव अन्य भाषा के अनुवाद में लाना विशेषतः जैन धर्म के रहस्य से अपरिचित विद्वानों के लिये कितना कठिन है।

मूल शब्द ।	गुजराती अनुवाद ।	हिन्दी या अंग्रेजी अशुद्ध अनुवाद ।	हिन्दी या अंग्रेजी शुद्ध अनुवाद ।
१ अजाया त्रि०	साधुने नाखी देवानी चीज यत्ना-सहित परठववी ते.	साधु की फैंकदेने योग्य चीज को यत्ना पूर्वक सभाल कर रखना	साधु के तजने योग्य वस्तु को यत्नान्चार पूर्वक त्यागना
२ अणाउत्त त्रि०	उपयोग रहित, उपयोग विनानो, असावचेत	बिना उपयोग का; निरुपयोगी Useless	उपयोग रहित असावधान. Unwary, without proper circumspection
३ अणाउत्तगमण न०	उपयोग विना चालवु ते.	Un-necessary movement	Movement without proper circumspection

पासत्था वगैरेनुं उत्तरवानु स्थान

पशु अथवा नर्पुसक आदि के उतरने (ठहरने) का स्थान.

शिथिलाचारी आदि के उतरने (ठहरने) का स्थान

१ अणदानता स्त्री०

नियाणुं न करवानो भाव, फलाशसा रहितपणु

जिसका निदान न किया जासके वह

फलाशा रहित भाव, नियाणा न करने का भाव,

३ अणसण्जिज्जिःत्रि०

साधुने न कल्पे तेवु

साधु की कल्पना में न आवे ऐसा.

साधुके लेने योग्य न हो वैसा, किसी भी दोष से जो अप्राप्त होगया हो वह

इस कोप की अंग्रेजी प्रस्तावना लिखने में प्रो ए. सी वूलनर साहिब ने जो परिश्रम उठाकर इस कोप की उपयोगिता और उपादेयता बढ़ाई है उसके लिये मैं उनका अन्त करण से आभारी हू। वैसे ही श्रीयुत बनारसीदासजी एम. ए प्रोफेसर थोरियंटल कॉलेज लाहोर, इन्होंने ने कोप की उपयोगिता बढ़ान के लिये जो अर्ध-मागधी व्याकरण देकर उदारता वतलाई है तथा कोप के कार्य में जो यथा समय सूचनाएँ दी है उनके लिये मैं आपका बहुत आभार मानता हू।

इस कोप का अंग्रेजी अनुवाद श्रीयुत प्रीतमलालजी कच्छी बी ए ने किया है। यद्यपि आप अजैन हैं-तो भी आपने इस कार्य के पूर्व ही जैन-शास्त्र आदि का मनन कर लिया था जिस कारण आप साम्प्रदायिक व पारिभाषिक आदि शब्दों के अर्थ का भाव भर्त्ताभांति अंग्रेजी में ला सके। यद्यपि इन महाशय को शब्दानुवाद के लिये पर्याप्त द्रव्य प्रदान किया गया था तथापि इन्होंने यह कार्य केवल वैतनिक दृष्टि से ही नहीं किया, वरन् उत्साह और प्रेम के साथ किया जिसके लिये मैं आपका परम उपकार मानता हू। इसी ही प्रकार परिदत्त ठाकुरदत्तजी शास्त्री ने महाराज श्री रत्नचन्द्रजी के समीप रहकर जो कोप का कार्य किया है तथा छापखाने में रहकर सशोधन के कार्य में जो परिश्रम उठाया है उसके लिये आप अनेक धन्यवाद के पात्र हैं।

इस कोप के कार्य में प्रो एस् के धेलवेलकर एम् ए पीएच् डी डेफन कॉलेज पूना, ने बारम्बार अनेक सूचनाएँ देकर कोप को उपयुक्त और सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने में जो सहायता दी है तथा परिदत्त गौरीशकर हीराचदजी ओम्ला ने कतिपय प्रूफ सशोधन के कार्य में जो कष्ट उठाया है उसके लिये मैं आपको अनेक धन्यवाद देता हू। जिन २ ग्रामों में श्री महाराजजी ने रहकर कोप का काम किया है और वहाके सघ के जिन जिन नेताओं ने परमार्थ बुद्धि से स्वयं कोप के कार्य में सहायता दी है उन महानुभावों के नाम निम्नलिखित हैं। मैं उनका परम उपकार मानता हू।

बम्बई-श्रीयुत नगीनदास माणिकलाल ।  
कठोर-भावसार मगनलाल कुबेरदास ।  
जैतपुर-वकील जीवराज वर्धमान ।  
लीवडी-शेठ धीरजलाल त्रिबकलाल ।  
झांकारनेर-शेठ वनेचंद देवजी ।

सूरत-भावसार गुलाबचन्द कल्याणचन्द ।  
धोराजी-शा न्यालचन्द जेष्ठजी ।  
पोरबदर-धेवरिया देवीदास लखमीचद ।  
थानगढ-शेठ गोपालजी लाडका ।  
मोरवी-शेठ वांकमचद अमृतलाल ।

इन सज्जनों के अतिरिक्त मुनि श्री रूपचन्द्रजी स्वामी, मुनि श्री शिवलालजी तथा वाडीलाल छोटावाल ( लींबड़ी ), धोराजी कन्याशाला के अध्यापक श्रीयुत कालिदास दामजीने भी जो यथाशक्ति मदद दी है उसके लिये मैं आपका आभारी हूँ ।

साहित्य सम्बन्ध में मेरे पूज्य पिताजी को कितनी निर्मल और उग्र रुचि है इसका साक्षी स्वयं यह कोष प्रकाशनका कार्य है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रकाशक के यह दो शब्द यदि स्वयं मेरे पूज्य पिताजी की लेखनी से लिखे जाते तो कहीं अधिक उपयुक्त और रुचिकर होते, परन्तु इस कोष की हस्तलिखित प्रति संपूर्ण पूरी होने के पूर्व ही “ श्रेयांसि बहुविधानि ” इस नियम के अनुसार मेरे पूज्य पिताजी को गहन मानसिक व्याधि ने आ घेरा और उन्हें यह कार्य इसी ही दशा में विवश हो छोड़ना पड़ा । श्रीमान् पिताजी की आज्ञानुसार यह अवशिष्ट कार्य करना मेरा परम धर्म हुआ । यद्यपि मेरी शक्ति और बुद्धि इतनी नहीं है कि मैं इस उत्तम ग्रन्थको विज्ञ सज्जनों की सेवा में उपस्थित कर सकूँ, तथापि पूज्य पिताजी के अनुग्रह और विद्वानों की सुदृष्टि के आधार पर मैं इस कोष को विद्वत्समाज की सेवा में सादर समर्पण करता हूँ और यह विनती करता हूँ कि मेरे अल्पज्ञान के कारण सशोधनकार्य में यदि त्रुटियाँ रह गई हों तो उदार पाठक वृन्द “ हंसक्षीरन्यायेन ” शुद्ध बातों को ग्रहण करेंगे और मेरी अज्ञानता के लिये क्षमा प्रदान करेंगे, तथा द्वितीय संस्करण के हेतु रचना पद्धति अनुवाद, छपाई आदि सम्बन्धी त्रुटियों की सूचना मुझे देनेका परम अनुग्रह प्रकट करेंगे । अंग्रेजी अनुवाद सम्बन्धी कठिनाइयों का सार अनुवादक महोदय की वचनावली से प्रकट होगा ।

अंत में शतावधानी मुनिवर श्री रूपचन्द्रजी महाराज को पुनः अनेकानेक धन्यवाद देना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूँ क्योंकि उनके उत्साह, सद्धर्म-पालन और अनेक शास्त्र परिशीलन बिना यह प्रकाशन सर्वथा असंभव ही होता । श्री श्वे० स्था० जैन कान्फरन्स को धन्यवाद देना और उसका गुणगान करना मेरा आवश्यक धर्म है, क्योंकि इस सस्था की सहायता और उत्साह वृद्धि के कारण इस उत्तम साहित्य सेवा का परम, सौभाग्य मेरे पूज्य पिताजी को प्राप्त हुआ ।

राजवाड़ा चौक

इन्दौर (मालवा)।

विनीत

सरदारमल्ल भंडारी।



उपरिक्त - ( उपरितन ) आदि २ किन्तु ऐसे शब्दों के पूर्व यह \* चिन्ह नहीं दिया उसका कारण यह है कि ये शब्द खास अर्ध-मागधी भाषा के ही हैं और इनके लिये संस्कृत के निर्दिष्ट रूप ही प्रचलित तथा प्रसिद्ध हैं । वर्णभेद होते हुए भी केवल अवगमात्र से ही उनके संस्कृत रूपों का बोध हो जाता है । इस कारण ऐसे शब्दों के पूर्व यह \* चिन्ह नहीं दिया । वैसे ही ऐसे शब्दों के रूपान्तर साहित्य में किसी जगह देखने में नहीं आये ।

( ७ ) मूल शब्द के आगे जो जाति दी गई है वह अर्ध-मागधी शब्दों की ही है न कि उनके संस्कृत-पर्यायों की । प्रायः मूल शब्द और संस्कृत प्रतिशब्दों की जाति अधिकांश मिलती जुलती ही है तथापि खासकर वह जाति मूल शब्दों की ही है । जिस शब्द की जो जाति सूत्र में मानी गई है अर्थात् सूत्रकारों ने जिस शब्द को जिस जाति में प्रयुक्त किया है उस शब्द की वही जाति यहां भी दी गई है जैसे:-अक्रुद्. पुं० ( अक्षुद्र ) गंभीर श्रावक । यह शब्द पुलिङ्ग माना गया है, किन्तु संस्कृत में क्षुद्र अथवा अक्षुद्र दोनों विशेषण माने गये हैं, वास्ते यह तीनों लिङ्गों में प्रयुक्त होना चाहिये था किन्तु सूत्रों में यह शब्द केवल श्रावक के लिये ही आया है और उसे पुलिङ्ग ही माना है वास्ते कोष में भी उसे पुलिङ्ग बतलाया है । इसी प्रकार अंविस्त न० ( अम्ला ) एक प्रकार की वनस्पति । संस्कृत में यह शब्द स्त्रीलिङ्ग माना है किन्तु सूत्रों में इस शब्द को नपुंसक लिङ्ग में ही प्रयुक्त किया है वास्ते यहां भी उसे नपुंसक लिङ्ग में ही रखा है ।

( ८ ) शब्दों का अनुक्रम वर्णमाला के अनुसार-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ, अं, और षाद में व्यञ्जन-क, ख, ग, वगैरह इस प्रकार रखा है ।

( ९ ) संस्कृत भाषा में जिस प्रकार अनुस्वार को परसवर्ण-वर्ग के अन्त्याक्षर के रूप में परिवर्तन कर स्थानान्तर-अनुनासिक + अक्षर के बाद रखा जाता है, वैसे अर्ध-मागधी भाषा में नहीं होता । इस भाषा में अनुस्वार को अनुस्वार के ही रूप में रखा जाता है अतः उसकी गणना अनुस्वार ही में की गई है, इस कारण इस कोष में अनुस्वार को व्यञ्जन के पूर्व ही रखा है, जैसे—अओ के बाद अं क और उसके पश्चात् अकड आदि ।

( १० ) सम्बन्धार्थ कृदन्त, हेत्वर्थ कृदन्त, और वर्तमान कृदन्त इनमें जिसका धातु नहीं मिला वह अलग दिया है और जिसका धातु उपलब्ध है, उसे धातु के साथ ही रखा है । तीनों प्रकार के कृदन्त जहां स्वतन्त्र ( धातु के अतिरिक्त ) दिये हैं, वहां उन्हें अव्यय कर दिया है, कारण कि सूत्रकारों ने भी ऐसी हालत में प्रायः इनको अव्यय ही माना है । जैसे:- अक्रियार्ण

---

÷ 'ल्ल' प्रत्यय अर्धमागधी में प्रसिद्ध होने के कारण यह \* चिन्ह नहीं दिया । इसकी संस्कृत छाया ' तर, तम, तन् ' है ।

+ अनुस्वार के बाद जब 'क' से 'म' तक कोई भी अक्षर आता है तब अनुस्वार को परसवर्ण अर्थात् कवर्ग का कोई अक्षर हो तो 'ङ' और चवर्ग का कोई वर्ण हो तो ञ् आदि आदि होजाता है । इसीसे संस्कृतमें अनुस्वार सबसे प्रथम न रखकर अन्त में दिया जाता है । वही अनुस्वार प्रथम आता है जिसके अन्त्य वर्ण य र ल व श ष स ह होते हैं ।



सं० कृ० अ० ( अकृत्वा ) आदि २ । जहाँ तक हो सका वहाँ तक ऐसे रूपों को धातु के साथ ही रखा है; परन्तु जिनके धातु खोज करने पर भी न मिल सके और जो धातु मिले उनके साथ वर्ण-सादर्य न होने के कारण इन्हें पृथक् ही रखना पड़ा ।

( ११ ) धातु + के मुख्यतया तीन गण माने गये हैं जो धातु प्रथम गण के हैं उनके आगे I ऐसा अङ्क दिया है । जो द्वितीय गण के हैं उनके आगे II ऐसा अङ्क दिया है और जो उभयगण के हैं उनके आगे I, II ऐसे अङ्क दिये हैं । थोड़े धातुओं की क्रियाएँ अलग भी दी गई हैं, जैसे:- अकारिसु, अलाहि आदि २ । इन क्रियाओं को पृथक् रखने का कारण यह है कि, ये क्रियाएँ लुङ् लकार की हैं और इनके पूर्व 'अ' है, अनुक्रम में फरक न आने के हेतु इनको अलग रखकर इनके आगे लिख दिया है कि देखो 'कृ' धातु और 'लभ्' धातु । क्रिया को देखने के पूर्व उसके धातु को देखना चाहिये जिससे उस धातु के साथ ही सब क्रियाएँ मिल सकती हैं । अर्ध-मागधी में उपसर्ग धातु के साथ ही रखा है और संस्कृत में उपसर्ग और धातु के बीच यह + चिन्ह दिया है । कहीं कहीं नाम धातु भी आये हैं और उनके आगे ना० धा० ऐसा सचेप किया गया है ।

( १२ ) एकार्थ वाचक शब्दों का अन्तिम अक्षर यदि 'अ' अथवा 'य' आया है तो दोनों ( अ, य ) उस शब्द के साथ दिखला दिये हैं, जैसे:- अवगअ-य \* । इसी प्रकार धातु के रूपों में भी अन्तिम अक्षर 'इ' और 'ति' उस रूप के साथ ही बतलाए हैं । कहीं पर 'अवगअ' व कहीं पर 'अवगय' ऐसे दोनों रूप देखने में आते हैं परन्तु इस शब्द का प्रयोग जहाँ जहाँ स्वतन्त्र रूप से किया है और जब वह विभक्त्यन्त हो जाता है तब 'अवगए' ऐसा ही होता है ।

( १३ ) कई स्थानों में शब्दान्तर्गत 'क' और 'ग' के दो शब्द न दिखलाकर उन दोनों को और ग का एक ही शब्द में वैकल्पिक समावेश कर दिया है, जैसे—अव्वोक-ग-ङ (अव्याकृत) ।

( १४ ) तद्, युष्मद्, अस्मद् आदि त्यठादि शब्दों के रूप जहाँ तक सूत्रों में मिल सके, सभी प्रथमा विभक्ति से सातवीं विभक्ति तक अनुक्रम से दिये हैं । अर्ध-मागधी में चतुर्थी विभक्ति का व्यवहार नहीं होता वास्ते उसके रूप नहीं दिये । चतुर्थी विभक्ति को जानने के प्रत्यय

+ जिस धातु के उपान्त्यवर्ण अर्थात् प्रत्यय ( तिप्, तस्, मि आदि ) के पूर्व के अक्षर में 'ए' की मात्रा लग जाती है, वे धातु द्वितीय गण के होते हैं । जिस धातु के उपान्त्य अक्षर में "ए" की मात्रा नहीं लगती वे प्रथमगण के होते हैं । कोई धातु ऐसे भी है कि जिनको यह मात्रा विकल्प से लगती है । ऐसे धातु उभयगणी माने गये हैं, जैसे:- अरिहृ प्रथमगणी, अवमय्येति द्वितीयगणी, अवक्मइ, अवक्मेइ उभयगणी ।

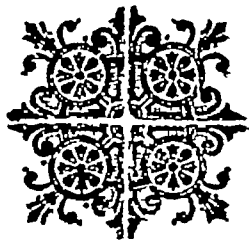
\* इस शब्द में 'अ' के पीछे 'य' है, कहीं पर 'य' के पीछे 'अ' मिलेगा इस प्रकार का विन्यास प्रमाणाधिक्य ( अर्थात् सूत्रों में अकारान्त शब्दों का बाहुल्य होने से 'अ' प्रथम और यकारान्त शब्दों की प्रचुरता से 'य' प्रथम रक्ता है ) रेफरन्स और कोटेशनस के लिहाज से किया है ।

‘ त्थे ’ ‘ द्वे ’ हैं । कई शब्दों के ऐसे भी रूप दिये गये हैं कि जिनका अन्य शब्दों की अपेक्षा किसी विभक्ति में भिन्नरूप होता है, जैसे—‘ राजन् ’ शब्द का षष्ठी विभक्ति में ‘ रराणो ’ ऐसा रूप होता है ।

( १५ ) कोई भी शब्द बिना सूत्रों में देखे और बिना अनुसन्धान किये नहीं दिया गया । अवतरण ( कोटेशन ) केवल जहां देना उपयुक्त व आवश्यकीय समझा वहीं दिया गया है तो भी प्रायः फी सदी पचास के अवतरण दिये गये हैं । सूत्रों के जो प्रमाण अङ्क (रेफरन्स) दिये हैं वे बिलकुल ही सही हैं; कारण उनको एक बार ही नहीं किन्तु अनेक बार जांचकर दिया है । समस्त शब्द वर्तमान में जितने ग्रन्थ उपलब्ध हैं और जिनकी सूचि दे चुके हैं, उन्हीं में से चुने गये हैं । खुलासे के लिये देखो “ कोषान्तर्गत सूत्रोनी यादी ” ।

( १६ ) संस्कृत-पर्याय अनेक कोषानुमोदित और व्याकरणरीति से भी शुद्ध हैं । जहां एक संस्कृत पर्याय से काम नहीं चला वहां उसका दूसरा पर्याय भी दिया है, जैसे ही कहीं कहीं प्रकृति-प्रत्यय भी दिखलाया है; व्युत्पत्ति समास भी किये हैं । प्रत्येक शब्द का धातु वगैरह लिखने से या प्रकृति-प्रत्यय समासादि करने से अथवा दूसरा पर्याय आदि देने में ग्रन्थ का विस्तार एक दम बढ जाता, वास्ते आवश्यकता से अधिक इस विषय की ओर ध्यान नहीं दिया । अन्य भाषाओं में दो दो तीन तीन पर्याय देकर प्रकारान्तर से अर्थ करके समझाया गया है ।

( १७ ) संस्कृत साहित्य के अनुसार एक शब्द के अनेक अर्थ हो सकते हैं, किन्तु इस कोष में केवल वे ही अर्थ दिये गये हैं जो कि सूत्र-प्रतिपादित हैं । प्रकारान्तर से इस कोष को “आगमकोष” भी कह सकते हैं ।



## चित्र-सूची ।

नाम				पृष्ठ संख्या
१ अंधयारखेत ( अन्धकार-क्षेत्र )	..	...	...	३५
२ अट्टमंगल ( अष्ट-मङ्गलिक )	..	...	...	१२५
३ अट्टारससहस्ससीलंगरह ( अष्टादशसहस्र-शीलाङ्ग-रथ )	..	...	...	१३१
४ अट्टाङ्गदीव ( अट्टी-अट्टाई द्वीप )	..	...	...	१३६
५ अभिगम ( अभिगमन )	..	...	...	३४६
६ अभिसेयसिला ( अभिषेक-शिला )	..	...	...	३६७
७ अहोलोय ( अधोलोक )	..	...	...	५१०



॥ श्रीः ॥

ॐ नमोऽस्तु महावीराय ॐ

❀ सचित्र ❀

## ॥ अर्द्धमागधी-कोष ॥

अ ]

अ.

[ अड्डकस

अ. अ० ( च ) अने, वणी और And, also दस० ६, १, १३, ( २ ) गथानुं यरणु पु३ डरवा आ अन्वय वपरायछे गाथा का चरण पूरा करने के काम में आने वाला a particle used expletively. अणुत्त० १०, ८, क० गं० १, ३६, ५८,

अअगर. पुं० ( अजगर ) अण-अक्षरे, तेने गर-गणीनार, अेक अतनेो भोडो पीडामणो साप, अणगर अजगर एक साप का नाम, जो वक्रों को भी निगल जाता है A huge serpent ( boa-constrictor ) said to swallow goats सूय० २, ३, २४,

अइ. अ० ( अति ) अतिशय, धणु, वधारे, अत्यंत ज्यादह, बहुत, अतिशय. Excessive, too much नाया० १, १५, पंचा० १, २, पि० नि० भा० २५,

अइअंवल. त्रि० ( अत्यम्ल ) अतिआदु बहुत खट्टा Very sour, very acid कप्प० ४, ६५;

अइअच. सं० कृ० अ० ( अत्येत्य ) अतिक्रमणु डरीने, उधधीने उलाघकर Having transgressed, having gone beyond bounds. “अइअच सव्वयो सगं” आया० १, ६, २, १८३, ( २ ) उपेक्षा डरीने,

गणुकार्या विना उपेक्षा करके having neglected, not having minded. “फरसाड दुत्तितिक्खाड अइअच मुणी परकम-मारो” आया० १, ६, १, ६,

अइआर. पुं० ( अतिचार ) अत, डे प्रतिज्ञा लांगवानी तैयारी डरपी, अतभंगने सन्मुख थयुं ते, अतनी ७६ उधधवाने पग उपाउवे; अतविगधवानी डाशिश अत, अथवा प्रतिज्ञा भग करने को उद्यत होना Readiness to violate a vow, a preparatory stage of the violation of a vow. ठा० ३, ४, प्रव० २६६;

अइइ. स्त्री० ( अदिति ) पुनर्वसु नक्षत्रनेो अधिष्ठाता देवता पुनर्वसु नक्षत्र का अधिष्ठाता देवता The presiding deity of the Punarvasu constellation the seventh of the lunar asterisms. “पुराव्वमू अइइदेवयाए परणत्ते” सू० प० १०; ठा० २, ३,

अइउकस. त्रि० ( अत्युत्कर्ष-उत्कर्षमभिमाम-मतिक्रान्तः ) अलिमानगहित, आडंकार विनानेो अहकार रहित अभिमान विनाका. Devoid of pride “नवस्सो अइउमो” दस० ५, २, ४२;

अइउच्च. त्रि० ( अन्युच्च ) अति उच्युं, धातु उच्युं बहुत ऊंचा Very high “नाडउ-चे व नीएवा” उक्त० १, ३४,

अइउज्जल. त्रि० ( अत्युज्वल ) अतिश्वच्छ, धातुयोश्चुं बहुत अच्छा. Extremely clear, very bright. सु० च० ४, १८०,

अइउरह. त्रि० ( अत्युष्ण ) अति उनुं बहुत गर्म Excessively hot. कप्प० ४, ६५;

\* अइउल्ल. त्रि० ( अत्यार्द्र ) अतिभिनुं, भातु बिनाशवाणुं बहुत गोला Very damp कप्प० ४, ६५,

अइउसिण. त्रि० ( अत्युष्ण ) धातुं गरम, धातु उनुं बहुत गर्म Very hot सु० च० २, ४१६,

अइकंङ्कइय. न० ( अतिकण्डूयित ) नभवेडे अतिशय भन्नेणवु-वलेरवुं. नखो से बहुत ज्वादाह खुजाना Scratching too much with nails “नाइकंङ्कइयं सेयं” सूय० १, २, २, १४,

अइककखड. त्रि० ( अतिकर्कश ) अत्यन्त डडेणु-डडेणु; धातु भडभय्युं बहुत खरदरा Very hard, extremely rough विशेष० १०४५,

अइकाय. पु० ( अतिकाय ) दक्षिण दिशाभा रहेनार महोरग नतिना व्यंतरदेवतानो षड् दक्षिण दिशा से रहने वाले महोरगजातिके व्यंतरदेव का इन्द्र Lord of the Vyantara gods of the Mahoraga class inhabiting the southern regions नाया० २, ५. भग० ३, ८ १०, ५, ठा० २, ३ पन्न० २, ( २ ) त्रि० भेट्टा शरीर वाला बड़े शरीर वाला. of a bulky body corpulent नाया० ६;

अइकिलिह. त्रि० ( अतिक्लिष्ट ) अत्यंत सं-क्लिष्ट-डडेश युक्त बहुत क्लेश वाला, अत्यन्त क्लिष्ट Greatly troubled or agitated. क० प० ४, ७६;

अइकंत. त्रि० ( अतिक्रान्त ) उल्लंघन डरेयुं. उलाघा हुआ Transgressed. नाया० १, पन्न० २, ( २ ) जे वपत मुडरर डरेय डेय तेने उल्लंघीने डरेयुं तप अथवा पय्यभाणु निश्चित समय का उल्लंघन करके किया हुआ तप अथवा प्रत्याख्यान (पचखारा) austerity or vow practised after the time fixed for it has elapsed. “सोदाइंतवोकम्मं पडिवज्जइ तं अइच्छिण काले एवं पचखारां अइकंतं होई नायव्वंति” ठा० १०, भग० ७, २, प्रव० १८७, —चारि. त्रि० (—चारिन् ) भयादानुं उल्लंघन डरी विचरनार-वर्तनार सर्यादा को उलाघ कर चलने वाला (one) who violates prescribed rules of conduct; a transgressor. “कालाइकंतचारिणो जडवि” प्रव० ७८४,

अइकंत. त्रि० ( अतिकान्त ) अतिभनोहर, अति मुदर बहुत सुन्दर, परम मनोहर Very charming परह० १, ४;

√अइकम. धा० I ( अति+कम् ) अतिक्रमणु डरेयु; उल्लंघन डरेयुं उलाघना To transgress, to violate

अइकमइ भग० १, ६, ५, २. ६, पिं० नि० १६४, ओव० ३८,

अइकमंति कप्प० ६, ६३,

अइकमेज्जा वि० वेय० ५, ४१,

अइकम्म. सं० कृ० गच्छा० ५,

अइकमित्तु ल० कृ० दस० ५, २, ११;

अइकममाण. भग० १, ६,

अइकमंत. व० कृ० पि० नि० १८४, प्रव०  
८४६,

अइकम. पुं० ( अतिक्रम ) क्षीधेल व्रत-पर्य-  
भाण्य अथवा प्रतिज्ञा लांगवानो संकटप  
-धरणी करवी, के अनुमोदन करयुं ते लिये  
हुए व्रत की प्रतिज्ञा का भंग करना या उसका  
अनुमोदन करना A thought or an  
inclination to violate a vow or  
a self-imposed oath, approval  
of such thought or deed. "आहा  
कम्मणिमंतण, पडिसुणमारो अइकमो होइ"  
पि० नि० १७६, वेय० ५, ६, पंचा० १, ३२,  
ठा० ३, ४, दस० ५, २, २५, [ २ ] उधंधन  
करयुं, अतिक्रमण करयुं उलाघना, अतिक्रमण  
करना violation, transgression  
आव० ४, ६;

अइकमणिज्ज. त्रि० ( अतिक्रमणीय ) उधंधन  
करवा योग्य उल्लघन करने योग्य Fit to  
be transgressed. सूय० २, ७, ८१,  
अइगअ. त्रि० ( अतिगत ) अेडवार भरी इरी  
तेमाने उत्पन्न थयेल, अतिशय-वारवार  
उपजेल एक वार मर के फिर उसी में उत्पन्न  
हुआ; वारवार उत्पन्न हुआ Reborn  
in the same species, born fre-  
quently. उक्त० १०, ५,

अइगंतूण. सं० कृ० अ० ( अतिगम्य ) उधंधीने  
उलाघकर Having transgressed.  
विशे० ६०४,

√ अइगच्छु धा० I. ( अति+गम् ) उधंधन  
करयुं. उलाघना. To transgress  
अइगच्छइ दसा० ५, २७;

अइगच्छमाण व० कृ० नाया० १,

अइगमण. न० ( अतिगमन ) नवा आववानो  
मार्ग आने जाने का मार्ग Way in or  
way out. नाया० २,

अइगुण. पुं० ( अतिगुण ) अतिशय-प्रभाव  
वाणी गुण अतिशय-प्रभाव वाला गुण Highly  
powerful quality. उक्त० ३१, २०,

अइचित्त. त्रि० ( अतिचिन्त ) अत्यन्त चिन्त-  
युक्त अतिशय चिन्तायुक्त Full of exce-  
ssive anxiety नाया० १,

√ अइच्छु. धा० I ( ~ अति-गच्छु+गम् )  
पामयुं, प्राप्त करयुं प्राप्तकरना, पाना.  
To obtain. ( २ ) अतिक्रमण करयुं.  
अतिक्रमण करना. to pass over.  
अइच्छइ ओघ० नि० ५१८,  
अइच्छत व कृ उक्त० २६, ५,

\* अइच्छिअ-य. त्रि० ( अतिक्रान्त ) अति-  
क्रमण करेले, अन्यत्र गमन करेले अति-  
क्रमण किया हुआ, अन्यत्र गया हुआ.  
Transgressed; gone elsewhere.  
पि० नि० २८८, उक्त० ३३, २४, क० प०  
१, ३५, ( २ ) अतिक्रमण करेले, उधंधन  
करेले अतिक्रमण किया हुआ, उल्लघन किया  
हुआ transgressed, violated.  
"जेसिं तु विउला सिक्खा मूलियंते अइच्छिअ"  
उक्त० ७, २१,

अइजाअ. पुं० ( अतिजात-अतिक्रान्तो जातं  
जाति जनक वा अतिजात ) आप करेता अधिष्ठ  
पराक्षमी पुत्र, नति, के पिता करेता वधाये  
संपत्ति अने इति मेणवनार पुत्र जाति,  
अथवा पिता की अपेक्षा अधिक संपत्ति और  
कीर्ति प्राप्त करने वाला पुत्र A person  
who is more renowned than  
his father or any other person  
of his own community ठा० ४, १;  
( २ ) विजतीय सिन्नजतीय विजातीय;  
भिन्नजाति वाला of a different caste  
or class "जे भिन्नु वत्थं अइजाएया गहेइ  
गहन वा साइजड " निर्वा० १, ५५,

अइजागरण न० (अतिजागरण) धलुं ळगवु  
ते; धलुं उजगरो इरवेा बहुत जगना.

Excessive vigil नाया० १६;

अइजायमाण. व० ह० त्रि० ( ~ अतियात् )  
आवतुं आताहुआ Coming. दसा० १०, ३,

अइहुभइंत. त्रि० (अतीष्टभद्रान्त-अत्यन्तमिष्टो-  
भद्रोऽन्तःपरिणामो यस्य तत् ) अत्यन्त ष्ट  
अने इल्याणु इरी नेतुं परिणाम छे अयेतुं  
अत्यन्त इष्ट और कल्याणकारी परिणाम वाला  
Productive of very desirable  
and wholesome results दसा० १०, १,

अइण. न० ( अजिन ) आभुं; अर्भ चमड़ा  
Leather, skin सू० प० २०;

अइणिच्चल. त्रि० (अतिनिश्चल) अत्यन्त दृढ-  
अलायमान न थाय तेतुं अत्यन्त दृढ. Very  
firm, highly constant पंचा० १४, ३७,

अइणिच्चमहुरत्त. न० ( अतिस्निग्धमधुरस्व )  
ने वयनमा अत्यन्त स्निग्धता अने मधुरता  
धी गोलनी भाइइ रहेल छे अयेवा तीर्थइरना  
वयनने अनिशय, तीर्थइरनी वएणीने १८  
मे। अतिशय तीर्थकर की वारी का १६वाँ  
अतिशय, कि जिससे वारी में अत्यन्त माधुर्य  
होता है Extraordinary loveliness  
and sweetness of the speech  
of Tirthamkaras; the 19th  
superhuman virtue of Tirtham-  
karas' speech सम० ३५,

√ अइतुइ. धा० I (असि×तुइ) अेइइम तोउतुं,  
तोडी नाअतुं एकदम तोइ देना. To break  
off.

अइतुइति सू० १, १, २, २२;

अइतेया. स्त्री० ( ~ अतितेजा-अतितेजस् )  
अतुईशी, आइशनी रात्रिनु नाम चतुईशी  
की रात्रि का नाम The night of the

fourteenth day of the bright  
half of a month जं०प० ७, १५२;

अइत्था. स्त्री० ( अदिस्ता ) लिक्षा न आप-  
वाती षष्ठ्य मिच्छा न देने की इच्छा Unwill-  
ingness to give alms. विशेष ३५४;

अइत्थावणा. स्त्री० ( अतिस्थापना ) उल्लं-  
घन इरवायोग्य इर्मस्थिति; अप्पाधाइल  
उपरान्तनी इर्मस्थिति उल्लंघन करने योग्य  
कर्मस्थिति, अवाधाकाल के बाहिर की कर्म-  
स्थिति State of Karma after its  
fructification "होइ अवाहा अइत्या-  
वणाओ " क० प० ३, १;

अइत्थिय. त्रि० ( अतिस्थित ) उल्लंघन इरी  
रहेल उलाघकर ठहरा हुआ Gone  
beyond; transcended दसा० ६, ३२;

अइत्थणी. स्त्री० ( अतिस्तमी ) मोटा स्तन  
वाणी स्त्री बड़े स्तन वाली स्त्री A woman  
with big breasts पि० नि० ४१८,

अइदंपज्ज. न० ( ऐदम्पर्य ) तात्पर्य; भावार्थ  
गर्हित तत्व सारांश, तात्पर्य. Gist, pur-  
port पंचा० १४, १०,

अइदीह. त्रि० ( अतिदीर्घ ) धलुं लांभुं बहुत  
लंबा. Excessively long विशेष ५१६;  
—कालरण. त्रि० (—कालश् ) धलुं लांभा  
इणने ळणुनार बहुत लंबे काल को जानने  
वाला. one whose knowledge  
extends over a very long period  
of time विशेष ५१६;

अइदुक्ख. न० ( अतिदुःख ) धलुं दुःख;  
अत्यन्त असाता. बहुत दुःख, अत्यंत असाता  
Excessive pain or misery. सू० १,  
५, १, २१;

अइदुल्लह. त्रि० (अतिदुर्लभ) अत्यन्त मुश्किली-  
थी प्राप्त थाय तेतुं अत्यंत कठिनाई से प्राप्त  
होने योग्य Very rare, very difficult



to obtain. गच्छा० ६१;

अद्दुस्सह त्रि० ( अतिदुःसह ) अत्यन्त दुःसह, धर्षी मुश्केलीथी सहन थाय नेवु. अत्यन्त दुःसह, बर्षी कठिनाई से सहन करने योग्य. Extremely unbearable. उक्त० १६, ७३;

अद्दूर त्रि० ( अतिदूर ) अतिदूर-ध्रुवे छेटे, वेगुं बहुत दूर. Very far. उक्त० १, ३४, ओव० २७, ३२, उवा० ७, २०८,

अद्दुसमा. स्त्री० ( अतिदुष्पमा ) दुष्पम-दुष्पम नामे अवसर्पिणी कालने छोडे अने उत्सर्पिणी ने पडेले आरे दु षम-दु षम नामक अवसर्पिणीकाल का छठा भेद और उत्सर्पिणी काल का पहिला आरा. The first division ( Ārā ) of Utsarpiṇī and the sixth division ( Ārā ) of Avasarpiṇī named Dussama. Dussama कालो अद्दुसमाएवि” प्रव० १०५१,

अद्दुधायि. त्रि० ( अतिध्राडित ) लभावेलु ठगाया हुआ, छला हुआ. Misled, deceived परह० १, ३;

अद्दुधुत्त त्रि० ( अतिधूर्त-अतीव प्रभूतं धूर्तमष्ट-प्रकारं कर्म यस्य सः ) लारेडर्भी, अडुल डर्भी बहुकर्मी, बडा धूर्त, आठ प्रकार के कर्मों में तस्तीन. One excessively absorbed in the eight sorts of Karma, a rogue सूय० २, २, ५६,

अद्दुनीअ. त्रि० ( अतिनीच ) अतिनीचुं स्थल, उंडु बोपड वगेरे बहुत नीचा स्थान, गहरा भोंयरा वगैरह A very low place, an underground cellar or cavity उक्त० १, ३४,

अद्दुपंडुकंवलसिला स्त्री० ( अतिपाण्डुकंवल-शिला ) मेडुपर्वत उपरनी दक्षिणदिशा तरङ्गी अलिपेड शिला. मेरु पर्वत के ऊपर

की दक्षिण दिशा की अभिपेक शिला. Name of a stone, situated in the southern direction of the mountain Meru on which the birth ceremony of a Tirthamkara is performed ” दो अद्दुपंडुकंवलसिलाओ ” ठा० २, १, जं० प० २,

अद्दुपडागा स्त्री० ( अतिपताका ) पताका उपर पताका, धण उपर धण ध्वजा पर ध्वजा, अतिपताका A flag above a flag. नाया० १, ओव०

अद्दुपरिणाम. पुं० ( अतिपरिणाम-अति व्याप्स्य परिणामोऽर्थ परिणामनं यस्य सोऽतिपरिणाम ) शास्त्रमां अतावेद अपवादडरतां पणु वधारे अपवादेने आश्रय डरनार, उत्सन्नमतिवाणे शास्त्रोक्त अपवाद से भी अधिक अपवाद का आश्रय करने वाला, उत्सन्नमति वाला One who stretches the meaning of the scriptures in the matter of exceptions allowed therein विशेषे १२६२,

अद्दुपास पुं० ( अतिपार्श्व ) भरतक्षेत्रना कुंधुनाथ-स्वामीना समकालीन डरवत क्षेत्रना तीर्थडरनु नाम भरतक्षेत्र के तीर्थकर कुंधुनाथस्वामी का समकालीन इरवतक्षेत्र का तीर्थकर Name of the Tirthamkara of Iravata Ksetra, being a contemporary of Kunthunātha of Bharata-Ksetra सम० ८४,

अद्दुपासंत त्रि० ( अतिपश्यत् ) असाधारण दृष्टिमे जेनार असाधारण दृष्टि से देखने वाला One who sees with an extraordinary sight. सूय० १, ३, ४, १४,

अद्दुष्पमाण त्रि० ( अतिप्रमाण ) प्रमाण(माप) थी वधारे. प्रमाण (माप) से अधिक Exceed-

ing proper measure. पि० नि० ६४७;

**अइप्पसंग.** पुं० ( अतिप्रसङ्ग ) अनिपरिचय  
इरवे ते अनि परिचय करना Too much  
familiarity or acquaintance  
पंचा० १०, २१; ( २ ) अतिव्याप्ति, लक्ष्यते  
मुष्टी लक्ष्यथी ष्छार लक्ष्यनुं वृत्तुं ते. अतिव्याप्ति  
लक्षण का दोष, लक्ष्य ओ छोड़ कर लक्ष्यान्तर  
में भी जाने वाला. the logical defect  
of a definition being too wide  
पंचा० ६, ६;

**अइवल.** पुं० ( अतिवल ) आवती येवीसी-  
ना पायभावाभुदेवतु नाम आगामी चोवीसी के  
पाचवें वासुदेव का नाम. Name of the  
fifth Vāsudeva of the next cycle  
सम० ५ ( २ ) भरतचक्रीतो पौत्र; महायशानो  
पुत्र भरतचक्रवर्ती का पौत्र; महायश का पुत्र  
grandson of Bharata Chakra  
vartī and son of Mahāyāsā  
ठ० ८, १; ( ३ ) अतिशक्तवान्; धृष्टी  
शक्तिवागुं अत्यन्तवलवान्, अमितशक्ति-  
शाली. very powerful, strong.  
ओव० ६६;

**अइभद्वय.** त्रि० ( अतिभद्रक ) वेतुं दर्शन धर्षु  
साइं होय ते जिसका दर्शन बहुत अच्छा हो  
वह. One whose sight is very  
auspicious. नाया० १६;

**अइभार.** पुं० ( अतिभार ) ६६ उपरातनो भार  
मर्यादा से अधिक भार. Excessive  
burden. “अइभारो न आरवेयव्वो” उवा०  
१, ४५, प्रव० २७५; पंचा० १, १०; ( २ )  
पहेला अणुव्रतनो येथो अतिचार पहिले  
अणुव्रत का चौथा अतिचार The  
fourth Atichāra of the first  
Anuvrata. उवा० १, ४५, —रोवण  
न० (—रोपण ) अनिलार लरवे ते,

आवडना पहेला व्रतनो येथो अतिचार.  
अतिभार लाडना; श्रावक के पहिले व्रतका  
चौथा अतिचार. overloading, the  
first Atichāra of the first vow  
of a Jaina layman. प्रव० २७५;

**अइभूमि** स्त्री० ( अतिभूमि ) वे वर्या उपर  
साधुओने वर्या भाटे गृहस्थनी मनाछे ते  
वर्या जिस स्थान में साधुओ को जाने के  
लिये गृहस्थ की मनाही हो वह स्थान. The  
place where Sādhus are forbid-  
den to go by the laity. दस० ५,  
१, २४;

**अइभोयण.** न० ( अतिभोजन ) धर्षु भोवन  
इरवुं ते, धर्षु भावुं ते बहुत भोजन करना;  
बहुत खाना Eating too much; glu-  
ttony. नाया० १६;

**अइमंच** पुं० ( अतिमञ्च ) मांथा उपरनो माथो.  
अतिमञ्च, पलंग पर पलंग. A cot upon  
another cot “मंचाइमंचकालियं” ओव.

**अइमद्विया.** स्त्री० ( अतिमृत्तिका ) माटीनी  
गार; इदव कीचड़ Mud जीवा० ३,

**अइमत्त.** त्रि० ( अतिमात्र ) मात्रा-परिमाणु  
उपरांतनुं मात्रा-परिमाण से अधिक. Be-  
yond proper measure. “ नाइमत्तं  
तु भुंजेज्जा ” उक्त० १६, ८, आया० २, १५,  
१७८;

**अइमाण** पुं० ( अतिमान ) अत्यन्त अलिमान;  
सुभूमचक्रवर्तीनी माइइ धर्षु अलिमान  
इरवुं ते बहुत अभिमान; सुभूमचक्रवर्ती के  
समान बहुत अभिमान करना. Inordinate  
pride, e. g. like that of Chakra  
vartī Subhūma सूय० १, ८, १८;

**अइमाय.** त्रि० ( अतिमात्र-मात्रामतिक्रान्तो-  
ऽतिमात्रः ) प्रमाणु उपरनु; ६६ उपरातनुं.

मर्यादा से अधिक, अतिमात्र Beyond proper limits “पणीयं भक्तपाणं च अइमायं पाणभोयणं” उक्त० १६, ८, प्रव० ५६५, सम० ६,

**अइमाया.** स्त्री० ( अतिमात्रा-अत्यधिका मात्रा इति ) अधिष्ठ प्रमाण अधिक प्रमाण Excessive measure “ नो अइमायाए पाणभोयणं आहारिता भवई से निग्गंथे ” उक्त० १६, ८, प्रव० ५६५,

**अइमुच्छिय** त्रि० ( अतिमूर्च्छित ) विपयादि-  
कृमा अतिआसक्त, सासारिककार्यमा अति-  
लीन थयेल विपयादि में अधिक आसक्त,  
सासारिककार्यों में अतिलीन Too much  
engrossed in temporal affairs,  
given too much to worldly  
pursuits परह० १, ४,

**अइमुत्त** पुं० ( अतिमुक्त्त ) अंतगउत्तरना छंडा  
वर्गना १५मा अध्ययननु नाम अंतगउ  
सूत्र के छठे वर्ग के १५वे अध्ययन का नाम  
Title of the fifteenth chapter  
of the sixth section ( Varga )  
of the Antagada Sūtra अंत०  
६, १५, ( २ ) पोलासपुरना विजय राजने  
पुत्र, के जे न्हानी उभरमां छोडराओनी  
साथे रमता गौतमस्वामीने जेठ पोताने  
धेर तेडीलावी आहारादि उहारावी साथे साथे  
समवसरण सुधी गयो, त्यां महावीरने भोध  
सांखणी वैराग्य पाभी दीक्षा लीधी अगियार  
अगने अभ्यास करी धरुण वरसनी प्रनरुया  
पाणी गुणुरयणुतप करी आपर विपुल  
पर्वत उपर परभ पद पाभ्या पोलासपुर के  
विजयनरपति का पुत्र, जिसने वचपन में  
लडका के साथ खेलते खेलते गौतमस्वामी को  
देखा और अपने घर लेजाकर आहारादि सम-  
र्पण किया और साथसाथ समवसरण तक गया

वहा महावीर के उपदेश से विरक्त हो दीक्षा ग्रहण  
की, एकादश ग्रंथों का अभ्यास कर चिरकाल  
की प्रव्रज्या पालन की और गुणुरयण नामक  
तपकर अन्त में विपुल पर्वत पर परमपद प्राप्त  
किया Son of king Vijaya of  
Polāsapura He (Aimutta) while  
yet a boy listened to Mahāvīra's  
Sermons He was converted  
and entered Nirvāna at Vipula  
Mountain after studying the  
Aṅgas and performing penan-  
ce अंत० ६, १५, (३) भगवतीमां स्थविर  
साधुओओ जेनामाटे सिद्धि विषयक प्रश्न  
पूछयो तेपणु आने आ ‘अधमुत्त’ त्या कुमार  
समणु तरीके आलेजेल छे अटला माटे के,  
कुमारअवस्थामां धरुणी न्हानी उभरमा दीक्षा  
लीधी अटली न्हानी उभर के, जेणे अकफ  
उहेता पाणी आडी माटीनी पाण पाधी,  
पोतानी पातरी तेमां तरावी, नावानी रमत  
करवामां साधुपणुनो भ्याल न राभ्यो  
आ जेठने स्थविरसाधुओने तेनामाटे  
आशका थतां, महावीरस्वामीने पूछी जेधु  
के, ‘अधमुत्तकुमारसमणु’ इटले लवे सिद्ध  
थशे ? महावीरस्वामीओ उत्तर आभ्यो के,  
आलवमाडीन सिद्ध थशे, माटे तमे तेनी  
लीलना न करे ( ३ ) भगवतीसूत्र में  
स्थविर साधुओं ने जिसकी सिद्धि के सम्बन्ध में  
पूछा है वह भी यही “अइमुत्त” है वहा कुमार  
समण नाम से उल्लेख किया गया है इसमें  
एकाएक छोटी अवस्था में दीक्षा ग्रहण की  
थी, उस समय इसका इतना वचपन था कि,  
एकवार वहते जल में मृत्तिका का बन्ध बांध  
दिया और अपनी पात्री की नौका बना तराने  
लगा, उस सेल में इतना लीन होगया  
कि, निजसाधुत्व को भुला दिया, यह देख  
कर ही स्थविर साधुओं में आशका हुई और

उन्हों ने महावीरस्वामी से पूछा कि, 'अइमुत्त कुमारसमण' कितनेक जन्म ग्रहण कर सिद्ध होगा ? तब महावीर ने उत्तर दिया कि, इसी भव में ही सिद्ध होगा इसकी अवहेलना न करो ( ३ ) The "Kumāra Samana" about whose future Siddhahood a question is asked by Sthavira monks to Mahāvīra, is identical with this same Aimutta He is here i. e. in the Bhagavatī Sūtra styled Kumāra because he was initiated into the order at such an early age that once, forgetting his monkhood, he dammed with a little mud wall some flowing water and converting his alms-bowl into a toy boat began to play. The Sthavira monks thrown into doubt at this, questioned Mahāvīra as to his future Siddhahood. Mahāvīra told them not to mock at him, assuring them that he would become a Siddha immediately after the end of that very life. भग० ५, ४; ( ४ ) माधवीलता माधवी लता. a creeper known as Mādhavī. कप्प० ३, ३७; ( ५ ) तिन्दुकुं अउ तिन्दुक का वृक्ष a Tinduk-tree ओव० जं० प० ( ६ ) तालुं अउ तालु वृक्ष. a Tāl-tree. ओव० जं० प०

अइमुत्तग. पुं० ( अतिमुक्तक ) माधवी वेद माधवी वेल. Mādhavī creeper. जीवा० ३, ४, पन्न० १; ( २ ) पूर्णरीते मुक्त थयेले; अनिष्टुटे थयेले पूर्णतया मुक्त. pei-

fectly liberated. पन्न० १;—चंद्र. पुं० (—चन्द्र ) संपूर्णचंद्रमा; राहुथी मुक्त थयेले चंद्रमा पूर्णचन्द्र; राहु से मुक्त चन्द्र full moon; the moon freed from the grasp of Rāhu ( eclipse ). पन्न० १, ( २ ) लुहारनी धमणु. लुहार की धोकनी bellows. पन्न० १;

अइमुत्तया. स्त्री० ( अतिमुक्त्तिका ) माधवी वेद, वासंती माधवी वेल; वासंती The Mādhavī creeper. पन्न० १;

अइमुत्तलया. स्त्री० ( अतिमुक्तलता ) माधवी-भोगरानी वेद, मोगरे की वेल, माधवीलता. A kind of creeper, Mādhavī creeper. ओव० राय० १३७,—मंडव. न. (—मण्डप ) भोगरानी वेदने मांडवे मोगरे की वेल का मण्डप. a bower of Mādhavī creeper. राय० १३७;

अइमोह त्रि० ( अतिमोह ) अतिशय मोह युक्त. अत्यन्त मोह से युक्त Highly infatuated or charmed. नाया० १,

अइयंचिय. सं० कृ० अ० ( अत्यन्च्य ) अतिक्रमणु डरीने; उल्लंघने अतिक्रमण करके, उलाघकर Having transgressed, going beyond ठ० ५, १,

अइयाण. न० ( अतियान ) नगरमां प्रवेश करेवे ते नगर में प्रवेश करना. Entering a town ठ० ३, ४,—इइदि. स्त्री० (—इद्धि ) राजा नगरमां प्रवेश करे ते वभते थल्लर-हाट पक्ति वगेरे शाणुगार-वामां आवे ते. राजा के नगर में प्रवेश करते समय बाजार-हाट वगैरह का शृंगार. decoration of the shops, bazars etc at the time of a king's entry into a town. ठ० ३, ४;—कहा.

स्त्री० ( -कथा ) राज्ञे नगरमां प्रवेश  
कथो होय तेनी कथा कहेवी-वर्णुन करवुं ते.  
राजा के नगर प्रवेश की कथा narration  
of a king's entry into a town.  
ठा० ४, २;—गिह न० ( -गृह ) नगरमां  
प्रवेश करतां दरवाजा पासो जे घर होय ते  
नगर में प्रवेश करते समय दरवाजे के पास  
जो घर हो वह घर. a house situated  
near the entrance of a town.  
ठा० २;

अध्याय. त्रि० ( अतिवात ) रवाना थध गयेल  
रवाना हुआ, प्रस्थित. Departed. "अध्या-  
याओ णराहिवो " उक्त० २०, ५६;

अध्यायरक्ख त्रि० ( अत्यात्मरक्-अतीवास-  
उत्तमः परैः पापकर्मभिः रक्षा यस्य सोऽत्या-  
त्मरक्ः ) पापकर्मथी आत्माने संसारमा  
रखवनार पापकर्म से आत्मा को संसार में  
भटकाने वाला One who causes the  
soul to wander in the world  
by wicked Karmas ( sins )  
" अध्यायरक्खे दाहियागामिए नेरहर "   
सू० २, २, ५६;

अध्याय पुं० ( अतिचार ) लुओ 'अध्याय'  
शब्द देखो " अध्याय " शब्द. Vide  
" अध्याय " पञ्च० १०, दस० ५, १, ६;  
( २ ) जे दोषथी व्रत मलीन थाय, जे  
भांगे तेवो दोष वह दोष, जिससे व्रत मलिन  
अथवा नष्ट हो. a defect in the obser-  
vance of vow which makes it  
violated. पञ्च० १, उक्त० २६, ३६; प्रव० २,  
पंचा० १, ६०, ( ३ ) आधाकर्म्म आश्री साधुओ  
आधाकर्म्म आहार पात्रमां लीधो त्याथी माडी  
उपाश्रथे आथी ते आहार मोढामा नापे त्यां  
सुधी अतियार, पछी अलुआयार अतिक्रम तथा  
व्यतिक्रम पछी अने अलुआयार पहेलानी जे

दोषनी स्थिति ते; अपराध, जे दोषनुं त्रीनुं  
पगथीयुं अपराध अथवा दोष का तीसरा  
भेद, अर्थात् दोष के चार भेद हैं-अतिक्रम,  
व्यतिक्रम, अतिचार, और अनाचार इन में  
से तीसरा भेद the third stage of  
the violation of a vow. The  
four stages are Atakrama, Vya-  
tikrama, Atichāra and Anā-  
chāra. "पयभेयाइं वइक्कम्मगाहिए तइएयरो-  
गिलिए" पिं० निं० १८२, ( ४ ) श्रावक व्रतना  
" जवाइद्ध " धत्यादि ६६ अतियारमानो  
गमे ते ओक श्रावक के व्रतो के " जवाइद्ध "   
आदि ६६ अतिचारों में का कोई भी एक  
अतिचार one of the 99 acts of  
transgressing a layman's vow.  
आव० १, ४;—चरण न० ( -चरण )  
अतियार-दोष वाणुं यारित्र दूषित चारित्र.  
fulty or sinful conduct भक्त० २०;

अहर त्रि० ( \* अतिर-अतिरोहित ) अ-नदि,  
निरोहित-ढांकेलु-छुपावेलु, प्रगट प्रकट;  
नहीं छुपाया हुआ Not concealed,  
manifest. पिं० निं० ५६०.

अहर. पुं० ( अतर-सागर ) समुद्र. समुद्र The  
sea सु० च० १, ३६६.

अहरत्त पुं० ( अतिरात्र ) अधिक तिथि, दिन  
वृद्धि, ओकवर्षमा छ दिवस वधे छे तेमानो  
गमे ते ओक अधिकतिथि, दिनवृद्धि, वर्ष में  
जो छ-दिन बढ़ते हैं उनमें से कोई भी एक  
दिन. One of the six intercalary  
days in a calendar " छ अहरत्ता  
परणत्ता तंजहा-चउत्थेपन्वे अट्ठमेपन्वे " ठा०  
६, १, सू० ५० १२,

अहरत्तकंवला स्त्री० ( अतिरत्तकंवला )  
भेइना शिपर उपरनी ओक लाना जे नया  
तीर्थकरनेो न-मासिपेक थाय छ मर पवत के

शिखर के ऊपरकी एक शिला, कि, जिस पर तीर्थकर का जन्माभिषेक होता है A stone on the summit of Meru where the birth of a Tirthankara is celebrated. ङ० २, ३;

✓ अहरयाव धा० १. ( अति+रच्-णि० ) षिञानु करायवु; आसन गोठवाववु. विछोना कराना, आसन लगवाना. To get a bed or seat arranged.

“अहरयावेइ”. नाया० २,

“अहरयावेइत्ता.” सं० कृ० नाया० २;

अहरा स्त्री० ( अचिरा ) १६मा तीर्थकर अथवा ५मा चक्रवर्ती शान्तिनाथनी माता १६वें तीर्थकर अथवा ५ वें चक्रवर्ती शान्तिनाथ की माता का नाम The mother of Śāntinātha the 16th Tirthankara or the 5th Chakravartī सम० प्रव० ३२३;

अहरा अ० ( अचिरात् ) तत्काल; अेकदम तत्काल-एकदम, तुरंत At once, immediately विशे० १३११, पंचा० १८, ५०,

अहरित्त त्रि० ( अतिरिक्त ) भिन्न, लुद्धु भिन्न, जुदा Separate. पि० नि० भा० ४, नाया० ८, परह० २, ५, ( २ ) अधिक, वधारे ज्यादह much, more उवा० १, ५२, विशे० ४६, ३४०, —सेज्जासणिय त्रि० ( —शय्यासनिक ) प्रमाण उपरांत आसन-पथारी राधनार ( साधु ). प्रमाण से अधिक विछोना रखने वाला साधु one ( e g a Sādhu ) who keeps a larger seat or bed than that allowed by rules दसा० १, ७,

अहरुव. पुं० ( अतिरूप ) भूतदेवतानी अेक गत. भूत देवता की एक जाति A class of infernal gods पञ्च० १०;

अहरेक. पुं० ( अतिरेक ) वधारे; विशेषता. विशेष, अधिकता. Excess; peculiarity निसी० १, ४७, —बंधण. न० ( —बन्धन ) अधिक बंधन ज्यादह बन्धन. strict bondage निसी० १, ४७,

अहरेग पुं० ( अतिरेक ) लुओ “अहरेक” श०६. देखो ‘अहरेक’ शब्द Vide ‘अहरेक’. भग० ३, ३, ६, ३३; ओव० १६, ४०, ओष० नि० ६७०, प्रव० २८३, कप्प० ३, ३४, जीवा० ३, ३, निसी० १४, ५; नाया० १, —पडिग्गह पुं० न० ( —पतद्ग्रह ) प्रमाण उपरांत पात्र. प्रमाण-नियम से अधिक पात्र a receptacle or vessel exceeding proper number. वव० ८, १४; —प्रमाण न० ( —प्रमाण ) अधिक प्रमाण. अधिक प्रमाण excess of measure. निसी० ५, ७;

अहरेगयर त्रि० ( अतिरेकतर ) अतिशय वधारे. बहुत ज्यादह Excessive. प्रव० २०७;

अहरेगया स्त्री० ( अतिरेक-ता ) अधिकता. अधिकता Excess; state of being in excess. पंचा० १, २४,

अहरेय. पुं० ( अतिरेक ) विशेषता; वधारे अधिकता, विशेषता. Excess, particularity नाया० १,

अहलाभ. पुं० ( अतिलाभ ) अतिलाभ, धरो लाभ बहुत लाभ, ज्यादह लाभ Immense gain “अपिच्छया अहलाभेवि सते” दस० ६, ३, ५,

अहलोलुअ. त्रि० ( अतिजोलुप ) अत्यन्त लोलुपी, रसलपट. अत्यन्त लोलुपी, लंपट. Very covetous, of an extremely sensual nature उक्त० ११, ५;

अइव अ० ( अतीव ) अहु, वधारे, अति बहुत; ज्यादह Excessively नाया० १२;

अइवइत्ता सं० कृ० अ० ( अतिमज्य ) छोडीने, तछने त्यागकर. Leaving off, having left off भग० ७, १, (२) उलंधीने, अतिक्रमण करीने उलाघ कर, अतिक्रमण करके having transgressed, having gone beyond. सूय० २, २, ६५; नाया० ६,

अइवईय सं० कृ० अ० ( अतिवर्त्य ) उलंधीने उलाघ कर Having crossed or transgressed क० प० ३, ४,

✓ अइवइत्ता धा० 1 ( अतिवृत् ) उलंधुं उलाघना To transgress

अइवइत्ता वि० आया० १, ५, ६, १६८,

अइवइत्ता न० ( अतिवर्तन ) उलंधन इरुं उलाघना Transgression. आया० १, ५, ६, १६६,

अइवइत्ता स्त्री० ( अतिवृष्टि ) अतिवृष्टि, हृदथी वधारे वरसाह अतिवृष्टि, ज्यादह नरसात Excessive rain सम० ३४,

✓ अइवत्ता धा० 1 ( अतिवृत् ) अतिक्रमण इरुं उलंधुं उलाघना To transgress, to go beyond

अइवत्ताइ " कतारं अइवत्ताइ " उक्त० २७, २,

अइवत्तिय त्रि० ( अतिपातिक ) निर्दोष, दोष रहित. निर्दोष, दोष रहित Sinless, faultless " अइवत्तिय अयाउट्टि " आया० १, ६, १, १७,

अइवयंत व० कृ० त्रि० ( अतिमज्य ) अतिक्रमण इरुं उलाघता हुआ Transgressing. नाया० १,

✓ अइवाअ धा० 1. ( अतिवृत् ) नाश इरुं, वध इरुं, हु अ उपपद्युं नाश करना, वध

करना, दुःख देना, घात करना To destroy; to kill, to inflict pain

अइवाअज्ज. वि० आया० १, २, ४, ५५,

अइवाएजा वि० दस० ४,

अइवायावेजा णि० वि० दस० ४;

अइवाइत्ता सं० कृ० भग० २, ६,

अइवाइ त्रि० ( अतिपातिन् ) हिंसा इरुं नार; धातकी हिंसा करने वाला, घातकी One who kills or injures. सूय० १, ५, १, ५;

अइवाइत्ता त्रि० ( अतिपातयित् ) अतिपात-हिंसा इरुं नार, नाश इरुं नार हिंसा करने वाला, नाश करने वाला One who kills or injures or inflicts pain. ङ० ३, १;

अइवाय. पुं० ( अतिपात ) हिंसा, नाश. हिंसा. Destruction, killing, injury. भग० ७, १, उवा० १, ४५;

अइवासा. स्त्री० ( अतिवर्षा ) जेरनेो वरसाह, धोधमार वृष्टि बड़े जोर की वर्षा, मुसलधार वर्षा Heavy rain भग० ३, ७,

अइविगिट्ठ. न० ( अतिविकृष्ट ) तथु, चार, डे तेथी वधारे उपवास बेगा इरुं नार; आइरुं तथ एक साथ तीन, चार, या अधिक उपवास करना, कठोर तप Fasting for three, four or more days continuously, severe penance उक्त० ३६, २५१,

अइविज्ज. त्रि० ( अतिविद्य ) आगमना सहभावने ज्ञानार आगम के सद्भाव को जानने वाला One knowing the essence of the Sūtras " तमहा अइविज्जो यो पडिसं-जज्जिआसि " आया० १, ५, ३, १३६,

अइवुट्ठि. स्त्री० ( अतिवृष्टि ) अतिवृष्टि, हृदथी वधारे वरसाह हृद मे ज्यादह वर्षा Excessive rain प्रव० ४२०,

अहवेग. पुं० ( अतिवेग ) उतावणी गति; धृष्टी  
उप. शीघ्रगति; बहू जल्दी. Great  
speed. नाया० १६; कप्प० ३, ४६;

अहवेलं. अ० ( अतिवेकम् ) वेणा-काल  
उलंघीने समय को उल्लाघ कर. Trans-  
gressing the proper time. सूय०  
१, १४, १५;

अहवेला. स्त्री० ( अतिवेला ) साधुना आचारीनी  
भर्यादा. साधु के आचार की मर्यादा. Restric-  
tions imposed upon a Sādhu  
in point of conduct "नाहवेकं  
विहजेजा पावदिट्टी विहज्जई" उत० २, २२;

अहसंकिलेस पुं० ( अतिसंबलेश ) चित्तनी  
अत्यंत मलीनता; संकिलष्ट-क्षुद्र भनोलाव.  
वित्त की अत्यन्त मलीनता; क्षुद्रभाव. Utter  
debasement of mind पंचा० १५, ६;

अहसंघट्ट. पुं० ( अतिसंघट्ट ) अत्यंत-संघट्टो-  
ल्लवेनुं संभर्दन अत्यन्त जीवों का संभर्दन.  
Excessive mutual collision of  
living beings. प्रव० ६०२;

अहसंपयोग. पुं० ( अतिसम्प्रयोग ) ऐकद्रव्यनी  
साथे थीज द्रव्यने अतिशय योग करवे ते  
एक द्रव्य के साथ दूसरे द्रव्य का अत्यन्त संयोग  
करना. Uniting too much; ( e. g.  
one substance with another ).  
सूय० नि० २, २, १६२;

अहसय. पुं० ( अतिशय ) अतिशय; धृष्टुं;  
अधिक. ज्यादह, बहुत Excess. सु०  
च० १०, २२६, सम० १०, नंदी० ५४, विशेष०  
३२१६; ( २ ) प्रभाव प्रभाव. power,  
prowess. सु० च० १०, २२६; नंदी०  
५४, विशेष० ३२१६, प्रव० ६०५, —साणि  
पुं० ( —ज्ञानिन् ) अवधि आदि प्रत्यक्ष ज्ञान  
-युक्त अविज्ञानादि प्रत्यक्षज्ञान सहित.

possessed of direct visual know-  
ledge, such as Avadhijnāna etc.  
वव० १;

अहसाइ त्रि० ( अतिशयिन् ) केवल मनः पर्यव  
अने अवधिज्ञानवाणा; यौद्धपूर्वी अने आमर्षो-  
पधि आदि लब्धि युक्त; प्रभावक पुत्र्य. केवल  
मनःपर्यवज्ञान और अविज्ञान वाला; चौदह-  
पूर्वी और आमर्षोपधि आदि लब्धि सहित;  
प्रभावकपुरुष. One possessed of  
Kevala, Manah-paryāya and  
Avadhijñāna or knowledge and  
also of spiritual attainments  
such as Āmarsausadhi etc. पंचा०  
५, २०;

अहसीय. त्रि० ( अतिशीत ) अत्यन्त ठंडु-  
बहुत ठंडा. Extremely cold. ठा० ५,  
१; कप्प० ४, ६५,

अहसुहुम. त्रि० ( अतिसूक्ष्म ) अत्यंत-आरीक.  
बहुत बारीक. Excessively minute.  
पंचा० १८, ३३,

अहसेस पुं० ( अतिशय ) अतिशय असाधारण  
प्रभाव; परम अहलुत प्रभाव; तीर्थंकर अने  
तेमनी वाणीने अहलुत प्रभाव असाधारण  
प्रभाव; अद्भुत प्रभाव. Wonderful pow-  
er—e. g. supernatural power of  
a Tirthānkara's words ओव० २७;  
ठा० ३, ४; वव० ६, ७;—अजभयण. न०  
(—अध्ययन) अतिशय वाणा अध्ययन; उत्थान  
समुत्थान वगेरे अध्ययन. अतिशय वाला-  
उत्थान समुत्थान वगैरह का अध्ययन. Adhy-  
ayanās or scriptural studies such  
as Utthāna, Samutthāna etc. of  
supernatural power. विशेष० ५५२;

अहसेसि. त्रि० ( अतिशयिन् ) अतिशयथी युक्त;  
प्रभावशाली. अतिशय से युक्त, प्रभावशाली.



Possessed of supernatural powers. ओष० नि० भा० ३०,

अरि. पुं० ( अतिथि-न विघ्नते सततप्र-  
वृत्त्या विशदैकाकाराऽनुष्ठानतया तिथयो दिन-  
विभागा यस्य सोऽतिथिः ) अभ्यागत; अतिथि..  
मेहमान. A guest. भग० ११, ६; (२) लेनी  
आववानी तिथि-दिवस मुकरर नथी अेवा साधु  
-भुनि. जिसके आने की तिथि नियत न हो ऐसा  
साधु-मुनि. an ascetic whose day  
of arrival is not certain भग० ११,  
६; —पूजा स्त्री० ( -पूजा ) अतिथिनी  
सेवा-आकरी, परेलागत, आहारादिमां  
सत्कार. अतिथि की सेवा; मेहमानदारी.  
hospitality to guests. "अरिपूयं  
करेह करेहता तत्रो पच्छा अप्पणा आहारमा-  
हरेह " भग० ११, ६,

✓ अरिहील धा० I. ( अति+हील् ) धा०  
हीलया करपी; निन्दा करपी बहुत निन्दा  
करना To censure greatly.

अरिहीलजा. वि० दस० ५, १, ६६;

✓ अरि. धा० I ( अति+इ ) अतिक्रम-  
उल्लंघन करवुं उलाघना To transgress;  
(२) प्रवेश करवे। प्रवेश करना. to enter.

अरिति-इ. पंचा० १८, १३,

अरित. व० कृ० कप्प० ७, २०७,

अरि स्त्री० ( \* अजी-अजा ) अकरी अकरी  
A she-goat. "अरि-कुक्खी" नाया० १,

अरिय. त्रि० ( अतीत ) पसार थयेल; उल्लंघी  
गयेल उलाघा हुआ Transgressed;  
past; gone beyond ओष० नि० २८२,  
दस० ७, ८, नाया० १, आया० १,  
३, ३, ११७, १, ४, १, १२८; पञ्च० १५;  
उत्त० २६, २१, ३३, १७, प्रव० २७,  
( २ ) अरि कारणुसर पर्युपलादि पर्व-  
मा करवानु तप के पञ्चआणु पर्व वीत्या

पधी करवुं ते, दश प्रकारना पञ्चआणुमां  
धीणुं पञ्चआणु किसी कारण से पर्युपणादि  
पर्व में करने का तप या पञ्चखाण पर्व व्यतीत  
होने पर करना; दश प्रकार के पञ्चखाण में  
से दूसरा पञ्चखाण. the 2nd of the  
ten kinds of Pachchakhāṇas;  
viz. practising an austerity or  
observing a vow after the time  
scripturally fixed for it has  
elapsed ( due to unavoidable  
causes ) प्रव० १८७;—काल पुं०  
( -काल ) गयेला काल; भूतकाल. गुजरा  
हुआ काल; अतीत समय. past time.  
सम० १०;—पञ्चखाण न० ( -प्रत्याख्यान  
न ) भूतकालमां करवा योग्य पञ्चआणु;  
पञ्चआणुना दश प्रकारमाने अेक प्रकार.  
भूतकाल में करने योग्य प्रत्याख्यान, प्रत्या-  
ख्यान के दस भेदों में से एक. a vow of  
time past, one of the ten  
varieties of vows known as  
Pachchakhāṇas प्रव० १८७,

अरिव अ० ( अतीव ) लुभो " अरिव "  
श०६ बहुत विशेष; ज़्यादाह Very much;  
extremely. नाया० १, ८; भग० ३,  
१; परह० १, १, जं० प० ५, ११६,

अउअ-य पुं० न० ( अयुत ) ८४ लाख  
अउअंग प्रमाणे काल विलाग ( ८४ लाख  
अयुतांगने अेक अयुत थाय ) ८४ लाख  
अयुतांग प्रमाण काल A period of  
time known as Ayuta, consist-  
ing of 84 lacs of Ayutāngas  
( one Ayuta is equal to 84 lacs  
of Ayutāngas ). अयुजो० ११५, ठा०  
२, ४, भग० ५, १, २५, ५,—अंग पुं० न०  
( -अङ्ग ) ८४ लाख अर्थनिपुं प्रमाणे काल

विभाग. ८४ लाख अर्थनिपूर प्रमाण काल.  
measurement of time equal to  
eighty-four lacs of Arthanipūras ( a smaller measure of  
time ). अणुजो० ११५; ठा० २, ४;  
भग० ५, १; २५, ५;

**अउज्झ** त्रि० ( अयोध्य ) परसैन्यथी जेभां  
प्रवेश करी न शक्य तेवुं. जिसमें शत्रु की सेना  
प्रवेश न कर सके. Impenetrable to a  
hostile army. पञ्ज० २,

**अउज्झा.** स्त्री० ( अयोध्या ) गंधिलावती  
विजयनी मुष्य राजधानी गंधिलावती विजय  
की मुख्य राजधानी. Capital town of  
Vijaya or continent named  
Gandhilāvati. ठा० २, ३; ( २ ) विनी-  
ताऽपरनामक अयोध्या नगरी. अयोध्या नगरी,  
जिसका दूसरा नाम विनीता भी है. city  
of Ayodhyā also called Vinitā.  
सु० च० १५, २२६;

**अउण.** त्रि० (\* अणुण-ऊन) विंशति आदि दश-  
कानी पूर्वे आ शष्पे जेडाय छे तेनो अर्थ  
अेक कम-अेछो थाय छे. बीस आदि दहाई के  
पीछे इसे जोडने से उक्त संख्या का अर्थ एक कम  
होजाता है. उदाहरणार्थ यदि विंशति ( बीस )  
के पीछे इसे लगाया जाय तो उसका अर्थ उन्नीस  
होता है। "Less by one" prefixed  
to multiples of ten. नाया० ३; जं०  
५० १, ६;—असीति. स्त्री० ( -असीति )  
ओगणुअेसी; ७९नी संख्या. उन्नासी,  
७९ की संख्या. seventy-nine. जं०  
५० १, ६;—ट्टि. स्त्री० ( -षष्टि ) ओगणु  
साठनी संख्या; ५९. उनसठ; ५९. fifty-  
nine, 59. कप्प० ५, १३५;—त्तरि. स्त्री०  
( -सप्तति ) ओगणुसीतेर; ६९; उनहत्तर;  
६९ sixty-nine; 69. क० ग० ६, २१;

—सीस. स्त्री० ( -त्रिंशत् ) ओगणुत्रीस;  
२९नी संख्या. उन्तीस की संख्या; २९.  
twenty-nine; 29. उक्त० ३६, २४३;  
नाया० ३;—पण्ण त्रि० ( -पञ्चाशत् )  
ओगणुपयास; ४९ नी संख्या. उन्चास  
की संख्या forty-nine. पञ्ज० २; भग०  
२, १;—पन्नास त्रि० ( -पञ्चाशत् )  
४९; ओगणुपयास उन्चास; ४९ forty-  
nine; 49. प्रव० ११११;—घरण त्रि०  
( -पञ्चाशत् ) ओगणुपयास; ४९ उन्-  
चास की संख्या. forty-nine. विशेष०  
३५४५;—वीस त्रि० ( -विंशति ) ओग-  
णुस; १९. उन्नीस की संख्या. nineteen.  
“ सागरा अउणवीसं तु उणोसेयं ठिईभवे ”  
उक्त० ३६, २३३;—सत्तरि. स्त्री० ( -सप्त-  
ति ) ओगणुतेर; ६९ नी संख्या उनहत्तर.  
sixty-nine. कप्प० ५, १३६;

**अउमाण.** न० ( अपमान ) अपमान; अना-  
दर. अपमान; तिरस्कार. Disrespect.  
“अउमाणं परिवज्जप्” सूय० १, १, ४, ४;

**अउल.** त्रि० ( अतुल ) जेनी तुलना थई शकै  
नहि तेवुं जिसकी तुलना न हो सके.  
Matchless. दस० ७, ४३; ६, ३, १५;  
पञ्ज० २; उक्त० ३६, ६५;

**अउव्व.** त्रि० ( अपूर्व ) पूर्वे न जेअेलुं.  
पाहिले न देखा हुआ Unseen before;  
unprecedented. भक्त० १६७,

**अउओ.** अ० ( अतः ) आदिथी. यहां से.  
Hence; from here. प्रव० ८४१;  
( २ ) अेटला माटे; अे डारणुथी. इसलिये.  
therefore, hence. प्रव० २१६;

**अउओज्झ** त्रि० ( अयोध्य ) युद्ध योज्य नहि.

युद्ध के अयोग्य. One unfit for fighting. भग० ७, ६,

अत्रोपरं अ० ( अतः परम् ) ओ पछी इसके बाद. After this or that, next to this or that क० गं० ४, ७५,

अत्रोमय. त्रि० ( अयोमय ) लोहाका; लोहमय Made of iron. " अत्रोमण्यां संवासण्यां गहाय "सूय० २, २, ८१, विवा० ४; जीवा० ३, १,

अंक. पुं० ( अङ्क ) ओक जतने सईद मणि एक जाति का सुफेद मणि. A kind of white gem. उक्त० ३४, ६, ( २ ) ओक जतनु रत्न, अंकरत्न, सच्चित्त पृथ्वीतु ओक परिष्णाम. एक जाति का रत्न, अंकरत्न, सच्चित्त पृथ्वी का एक परिष्णाम a jewel; a precious stone उक्त० ३६, ७५, कप्य० २, २६, नाया० १; राय० २८, ६४, पञ्च० १, जीवा० ३, ४, ( ३ ) ओलो, गोद. गोद, उत्संग a lap निसी० ७, २४, राय० १३०; २८८, नाया० १; ८१, पि० नि० ४१०; जीवा० ३, ४, ( ४ ) चिन्ह, लाछन, निशानी चिन्ह, लाछन, निशानी a sign or mark. ओव० १०, सू० प० २०, ( ५ ) ओकथी नव सुधीना आंकडा एक से नौ तक के अङ्क. numerals from one to nine. पञ्च० २, ( ६ ) आंकडानी लिपि, १८ लिपिभानी ओक अंकलिपि-अठारह प्रकार की लिपियों में से एक लिपि a figure-script, one of the eighteen scripts. पञ्च० १, —कंड पुं० ( —काण्ड ) रत्नप्रला पृथ्वीना अरकांडने अकरत्नमय सो जेजने जडे-सैदमे भाग रत्नप्रभा पृथ्वी के खर कांड का अंकरत्नमय सौ योजन चौथा चौदहवां भाग the fourteenth division of the Khar-kānda of Ratnaprabhā world, consisting of

white jewels and with a breadth of hundred Yojanas. जीवा० ३, १; ठा० १०, १, —करेलुग पुं० ( —करेलुक ) पालुमानी ओक जतनी वनस्पति जल में की एक प्रकार की वनस्पति a kind of aquatic plant. आया० २, १, ८, ४७, —टिह्नी स्त्री० ( —स्थिति ) आंकडा तथा रेखांके विचित्ररीते स्थापवाते, ६४ कलाभानी ४३मी कला अंक तथा रेखा की विचित्र स्थापना करनी, ६४ कलाओं में से ४३ वीं कला. a striking arrangement of numerical figures and geometrical lines; forty-third of the sixty four arts. ओव० ४०; —धर पुं० ( —धर ) चन्द्रमा. the moon जीवा० ३, —धाई स्त्री० ( —धात्री ) ओलाभां-गोदभां ओसाडी सुवाडी आलकने रमाडनार धावभाता; पांच प्रकारनी धावभाताभानी ओक गोदी में बिठला या सुला कर बालक को खिलाने वाली धाय, पांच प्रकार की धाय मे से एक प्रकार की धाय. a wet nurse who fondles a child in her lap, one of the five sorts of nurses. नाया० १, १६, आया० २, १५, १७६; विवा० २, भग० ११, ११; —मुह न० ( —मुख ) पद्मासनने अत्रभाग पद्मासन का अत्रभाग the fore part of Padmāsana (a kind of posture) सू० प० ५, —लिवि स्त्री० ( —लिपि ) अक लिपि, वर्णमाला, अठार लिपिभानी ओक. अठारह प्रकार की लिपियों में से एक लिपि; वर्णमाला figure script; one of the eighteen scripts. सम० १८. —वणिय पुं० ( —वणिज् ) अकरत्नना व्यापारी. अंकरत्न का व्यापारी. a dealer

in Ankaratna jewels. राय०  
—हर पुं० ( -हर ) चंद्रमा. चन्द्र the  
moon. जीवा० ३;

अंकण. न० ( अङ्कन ) तपावेल सणीयाथी वाछ-  
रडा वगेरेने आंङ्कवा-शियाणना पग वगेरेने  
आकारे चिन्ह करपुं ते. चेंचुए लगाना; तपे  
हुए लोहे के सरिये से बछ्वा वगैरह को  
दागना-चिन्हविशेष करना. Branding of  
animals with red hot iron bars.  
नाया० १७; कप्प० ३, ३६;

अंकवडंसय पुं० ( अङ्गावतंसक ) धशान  
धन्द्रना भुष्यविमाननुं नाम. ईशानइन्द्र के  
मुख्य विमान का नाम. Name of the  
principal heavenly abode of  
Isāna-Indra. भग० ४, १;

अंकामय. त्रि० ( अङ्कमय ) अङ्क- रत्नमय  
पदार्थ. अङ्क-रत्नमय पदार्थ. (A substance)  
inlaid with white gems "अंकामया  
पक्खा पक्खवाहा" ओव० जं० प० ७, १६६;

अंकावई. स्त्री० ( अङ्गावती ) महाविदेहनी  
सीतोदा नदीने नर्मणे डांठे आवेली रम्य  
विजयनी राजधानी. महाविदेह की सीतोदा  
नदी के दक्षिण की ओर रम्यविजय की  
राजधानी. The capital of Ramya-  
Vijaya situated on the right  
bank of Sitodā river of Mahā-  
Videha. ठ० २, ३; ( २ )  
पश्चिममहाविदेहना दक्षिणभांडवानी पहेली  
विजयनी सरहद उपरनेो वपारा पर्वत.  
पश्चिम महाविदेह के दक्षिणखंड की पहिली  
विजय की सीमा परका वखारा पर्वत.  
the Vakhārā mountain on the  
boundary of the first Vijaya  
in the southern division of  
western MahāVideha. जं० प०

अंकिय त्रि० ( अङ्कित ) अङ्कितथयेल; चिन्ह  
सहित. चिन्ह सहित. Bearing a mark.  
ओव० १०, पञ० २;

अंकुर. पुं० ( अङ्कुर ) पांङ्काने प्रथम नीकजेल  
क्षुण्णो; पांङ्कानी शश्यातनी लालटीसी. पत्तों  
की कौपत्त A sprout of a leaf. पञ०  
१७; ३६, राय० ६३; १५६, दसा० ५, १६;  
भग० ७, ६;

अंकुस. न० ( अङ्कुश ) हाथीना भाथामा  
भारवानुं हथियार; लोढाने अङ्कपासथी  
वाजेल आंङ्कडो. हाथी को मारने का लोहे का  
अंकुश. A hook for driving ele-  
phants. "अंकुसेण जहा नागो धम्मे संत्ति  
वाङ्गो" उक्त० २२, ४८; दस० २, १०;  
जं० प० ५, ११६; जीवा० ३, ३; परह० १,  
४; ठा० ४, २; राय० ६३, नाया० १७;  
( २ ) अंकुशने आकारे हाथ पगनी रेखा.  
अंकुश के आकार की हाथ पाँव की रेखा.  
the curved lines on the palm  
and the sole of the foot re-  
sembling a hook उक्त० ६, ६०; (३)  
वृक्षना पक्षव छेदवानुं सन्यासीनुं अङ्क उपकरधुं.  
वृक्षों के पत्ते छेदने का सन्यासियों का एक  
शस्त्र an instrument used by a  
Samnyāsī to cut the foliage of  
trees नाया० ५, ( ४ ) भाषा लटकववाने  
चंद्रवामाने अंकुशाकार आंङ्कडो. चंद्रवा-  
छत वगैरह में माला लटकाने का अंकुश के  
समान टेढ़ा आँकड़ा. a hook fastened  
to a ceiling cloth for hanging  
garlands जीवा० ३, ४; (५) महाशुक्रदेव  
लोडना अङ्क विमाननुं नाम, ३ जेमां रहेनार  
देवतानी १६ सागरोपमनी स्थिति-आयुष्य.  
छे महाशुक्र देवलोक के एक विमान का नाम,  
जहाँ के रहने वाले देव की १६ सागरोपम

की आयु है a celestial mansion of the heavenly world Mahā-Sūkra where the gods live 16 Sāgaropamas of years. सम० १६, ( ६ ) वंदनाने छोटा दोष, रजोहरणने अंकुशनी पेटे ये हाथमा राभी युवादिदने वंदना करवाथी लागतो अेक दोषx वन्दना का छठा दोष रजोहरण को अंकुश के समान दोनो हाथों में रखकर गुरु आदि को वन्दना करने से लगने वाला एक दोषx the sixth fault of Vandana ( obeisance ) committed by holding the Rajoharana like a hook while saluting or bowing to elders \* प्रव० १५०;

अंकुसत्र. पुं० ( अङ्कुशक ) लुओ। 'अंकुश' शब्दना त्रीन्व नभरनेो अर्थ देखो 'अंकुश' शब्द का तीसरा अर्थ. Vide 'अंकुश' ३ ओव० ३६, भग० २, १,

अंकुसा स्त्री० ( अङ्कुशा ) थैादमा श्रीअनन्तनाथ-तीर्थकरनी शासन देवीनु नाम १४ वें तीर्थकर-श्रीअनन्तनाथ की शासनदेवी का नाम. Name of the tutelary goddess of the 14th Tirthankara, Shri Anantanātha. प्रव० ३७८,

अंकेसण न० ( अङ्केलन ) धोडाने मारवानेो याभुङ्क घोडे को मारने का चाबुक A whip to strike a horse भग० १, १,

—पहार पुं० (—प्रहार)याअभानेो मार-धा चाबुक की मार का घाय a lash of a whip. जं० प०४,

अंकेसाहणी स्त्री० ( अङ्केशायिनी ) भोणामा सुवावाणी पुत्री नेवी गोद मे सोनेवाली पुत्री के समान Sleeping in a lap ( like a daughter ) मूय० १, ४, १, २८,

अंकोल पुं० ( अङ्कोल-अङ्कयते लक्ष्यने कीलाकारकण्टकैरिति ) अडोलनु आड; अे आड हिदना दरेड प्रान्तमा उगे छे, अेना पीनु तेल नीकणे छे, अे अड विशाण होय छे, तेना पांदा आंगण अे आगण पडोणां अने करणीना नेवा लाया अने रेभावाणा होयछे. अंकोल का वृक्ष, यह वृक्ष हिदुस्तान के प्रत्येक प्रान्त मे पैदा होता है, इसके बीज का तेल निकलता है, यह फल विशाल होता है, इस के पत्ते एक दो अंगुल चौड़े होते हैं और करणी के पत्ते के समान लंबे एव रेखा वाले होते हैं A species of large trees bearing oil seeds, found throughout India. भग० २२, २, ४, पत्र० १;

अंग न० ( अङ्ग ) अङ्गदरकवाना शुभाशुभ फल अतापनार निमित्तशास्त्र, २६ पाप सूत्रमांनु अेक. अङ्गफरकने के शुभाशुभ फल को कहने वाला निमित्तशास्त्र. The science that foretells events from the throbbing of a limb,

\* नोट—आ दोष परत्वे लुदा लुदा मत छे, अेक डडेछे, डे सुतेल युवादिदनी पछेडी वगेरे अेथी नगाडी अेकाकरी वदना करे ते अंकुश दोष. पीन्व डडे छे, हाथीने अंकुश लागता शिर उन्नु नीयुं करे तेभ वदना करे ते अंकुश दोष त्रीन्वे मत उपर न्णाय्यो ते वान्णी छे

x नोट—इस दोष के सम्बन्ध मे भिन्न भिन्न मत हैं कि, सोये हुए गुरु आदि को उन के वखादि खैच कर जगाना और फिर बैठा कर उन्हें वन्दना करना यह अंकुश दोष है । दूसरा कहता है कि, हाथी को अंकुश लगाने से जिस प्रकार हाथी सिर ऊंचा नीचा करता है उसी प्रकार वन्दना के समय करना तीसरा मत ऊपर दिया गया है और वही उचित भी है

\* Note—According to some, salutation after rudely awakening them etc.

one of the 29 Sūtras known as Pāpa Sūtras ( because they come in the way of salvation ). सम० २६; ठा० ८, १; सूय० २, २, २६; अंग. न० ( अङ्ग ) शरीरना अवयव, भस्तक वगेरे शरीरना अठ अंग शरीर के अवयव, मस्तक आदि शरीर के आठ अंग Any of the limbs of the body, the eight parts of the body e. g. head etc. “ बाहू २ रू ४ पुट्टी ५ सिर ६ उर ७ उयरंगा ८ ” क० गं० १, ३४, अणुजो० १२७, उत्त० २, ३, ५, २३, वव० १०, २१; २२; २३, २४; भग० १, ७, ७, ५; ११, ११; नाया० १, २; विवा० १ १. पन्न० २३; ( २ ) मुख्यअवयव; प्रधानअंग प्रवान अंग-मुख्यअवयव. chief part. नाया० १; १६; ( ३ ) पुं० देशविशेष, जेने छेल अिहार डेछे. देश विशेष, जिसे आजकल विहार कहते हैं name of the country of Bihār. पन्न० १, भग० १५, १; नाया० ८; निर० १, १, ( ४ ) अंगसूत्र, अ य रांग अ दि ११ अंग. अंगसूत्र; आचाराङ्गादि ११ अङ्ग. the eleven Sūtras of the Jaina canon, Āchārāṅga etc “ अंगेण वाहिरेणव, सो सुत्तस्सत्ति मायव्वो ” उत० २८, २१; अणुजो० ३, ४२, १४६, पन्न० १५; नाया० १; भग० २, १; ४, १, ७, १०; ( ५ ) अ० वाङ्मालक्षरमा ‘ किमंग ’ अे ३पे अ.वेछे. वाक्यालंकार में भी “ किमंग ” ऐसा आता है. emphatic particle-“ what to speak of. ” ? “ छ तं महाफलं खलु तहारूपायं अरिहतायं भगवंतायं नामगोयस्स-

विस्सवणयाप् किमंग पुण अभिगमणवंदणा- नमसणपडिपुच्छणपञ्जुवासणयाए ” राय० ( ६ ) डारणु कारण. cause विशेष० ६३०; १५८६;—अहिव पुं० (-अधिप) अंगदेशने २०७ अंगदेश का राजा. a king of the country of Anga ( Bihār ). सु० च०३, ११३,—चूलिया स्त्री० (-चूलिका) अ य २ दिअगनी यूसिका-आयारांग आ-दिमां न डेख अर्थने जेमां संग्रह कर-वामां अये छे ते; डबिडसूत्रविशेष. आचारादिअंगों की चूलिका-आचारादि अंगों में न कहे हुए अर्थ का जिसमें संग्रह किया गया है वह, कालिकसूत्र विशेष the Chūlikās of Āchārāṅga etc. which contain supplementary matter not given in the body of the Āngas ( also known as Kālika Sūtras ). ठा० १०, १, नदी० ४३; वव० १०, २७,—च्छहिय त्रि० (\*-च्छिन्न ) छेदयेखु अंग छेदा हुआ अङ्ग. wounded limb “ वेयगच्छहियं अगच्छहियं पक्खाफोडियं करेह इमं णयणुप्पाडियं करेह ” सूय० २, २, ६३;—जणवय न० (-जनपद) अंगदेश. विहार. Bihār. नाया० १५;—पञ्चंगसंठाण न० (-प्रत्यङ्गसंस्थान ) अंग-भस्तकदि, प्रत्यंग-नयनदि अेनां संठाणु. अङ्ग प्रत्यङ्ग का संस्थान. disposing in order the limbs and their parts वस० ८, ५८,—पडियारिया स्त्री० (-प्रति-चारिका ) शरीरनी सेवा करनारी द.सी; अं६२तुं डम डरन २ दसी शरीर की सेवा करने वाली दासी, घर के भीतर का काम करने वाली नौकरनी. a personal female atten-

It is extremely meritorious to repeat the name of the ideal saints or of the blessed Arhantas, what to speak of paying a visit to, praising, bowing or serving them ?

dant, household female servant  
 नाया० १; १४; भग० ११, ११,—एविष्ट.  
 त्रि० (-प्रविष्ट) अंगशस्त्र-न्तर्गतश्रुतविलग,  
 आचारंग अदि ५२ अंग अंगशास्त्रों के  
 अन्तर्गत श्रुतविभाग, आचारागादि बारह अंग  
 12 Angas such as Āchāraṅga  
 etc. ठा० २, १, नंदी० ४३, क० ग० १,  
 ६;—स्फुरणा. स्त्री० (-स्फुरणा-स्फुरणम्)  
 अंगनुं द्रुक्नुं अंगों का फरकना. throbb-  
 ing of limbs प्रव० १४२०,—फास पुं०  
 (-स्पर्श) शरीरतो स्पर्श शारीरिक स्पर्श.  
 bodily touch नाया० १६,—बाहिर  
 त्रि० (-बाह्य) श्रुततो अेक विलग,  
 उत्तराध्ययन वगेरे अंग अङ्कानां सूत्रे  
 श्रुत का एक विभाग, अंगों के आतेरेक्त  
 उत्तराध्ययनादि Sūtras outside the  
 Angas. a division of Jaina  
 canon ठा० २, १; नंदी० ४३,—भंजण.  
 न० (-भञ्जन) आणस भरोडवी, शरीरना  
 अवयवो ते मे उवा। आलस्य से शरीर मरोडना,  
 शरीर के अवयव मरोडना twisting and  
 stretching of limbs through  
 sloth. पराह० २, ५,—भेय पुं० (-भेद)  
 अंगना लेद अंग का भेद the different  
 sorts of limbs विशेष ११६,—मंदिर  
 न० (-मन्दिर) अणनगरीनी अङ्कानु अेक  
 उद्यान चपानगरी के बाहिर का उद्यान  
 a garden situated outside the  
 Champā city “अगमदिरसि चेद्वयंसि  
 महारायस्स सरीरं विप्पज्जहामि” भग० १५, १,  
 —मगह पुं० (-मगध) अंग अने मगध  
 अे अे पसे पसे ना देश अंग और मगध  
 नामक (पास पास के) दोनों देश two  
 adjacent countries named Anga  
 and Magadha वेय० १, ४६,—मह पुं०

(-मर्द) अंगनु मर्दन डरनर माणुस शरीर  
 की मालिश करने वाला मनुष्य. a man  
 who rubs the body with oil etc.  
 सु० च० ४, ७८,—महिया स्त्री० (-मर्दिका)  
 मर्दन डरनर दसी मालिश करने वाली  
 दासी a maid servant who rubs  
 the body with oil etc भग० ११,  
 ११,—राग पुं० (-राग) अंग ७पर मस-  
 णवाना-लेपवाना डेसर, यदन वगेरे सुगंधी  
 पदार्थ अंग ऊपर लगाने का सुगन्धित उवटना.  
 fragrant substances like saffron,  
 sandal etc used to perfume the  
 body राय० ५४, नाया० १६,—राय पुं०  
 (-राज) अंगदेशतो राज अगदेश का  
 राजा a king of the country of  
 Anga नाया० १६,—लोग पुं० (-लोक)  
 देशविशेष देशविशेष name of a  
 country जं० प० ३, ५२;—वंस पुं०  
 (-वंश) अंगदेशतो राजतो वंश अगदेश का  
 राजकीय वंश lineage of the king  
 of the country of Anga सम०  
 ७६,—विगार पुं० (-विकार) अंग  
 स्फुरणना द्रुक्नुं अथन अंगफरकने के  
 फलाफल का कथन divining the re-  
 sults of the throbbings of the  
 parts of the body “अंगविगारं  
 सरस्स विजय जो विज्जाहि न जीवइ स  
 भिक्खू” उक्त० १५, ७,—विज्जा स्त्री०  
 (-विद्या) अंगद्रुक्नुवना शुभशुभ द्रुक्  
 नुलुवनी विद्या अंगफरकने का शुभाशुभ  
 फल जानने की विद्या. the science of  
 divining the results good or  
 bad from the throbbing of  
 limbs ‘अगविज्ज च अे पउजति, नहु ते  
 समणा बुच्चति” उक्त० २, १३, (२) निभि-

तादि इलाइल अतावनार अेड शास्त्र-अेड  
पठन्तो निमित्तादि फलाफल वताने वाला शास्त्र.  
a science interpreting omens.  
उत्त० ८, १३;—संचाल पुं० (—सञ्चाल )  
शरीरता अवयवोनुं सहज थोडुं थालवुं ते  
शरीर के अवयवों की थोड़ी सी हलचल.  
slight movement of the limbs  
of the body. “ सुहुमेहि अंग  
संचालेहि ” आव० ५, १;

अंगण. पुं० न० ( अङ्गण ) आंगणुं; इणियु,  
योड; धर आगणतो पुत्रो लाग आगन,  
चौक. A courtyard राय० ३३, १३०;  
ओव० १७, जं० प० २, ३१, जीवा० ३, ४,  
उत्त० ७, १, पञ्च० ११,

अंगणा. स्त्री० ( अङ्गना ) अंग उपर अनुराग  
उपज्वनार भाटे अंगना, स्त्री अंगों पर  
अनुराग उत्पन्न कराने वाली होने से अंगना,  
स्त्री A woman, a beautiful wo-  
man. तंडु० २४. पिं० नि० २१४,

अंगमंग न०( अङ्गमङ्ग ) अंगउपाग, अवयवता  
अवयव अङ्गोपाङ्ग, छोटे २ अवयव Parts  
of a limb “ रायलक्षणाविराड्यंग-  
मंगा ” नाया० ६; १४, भग० ७, ६, जं०  
प० २, ३३,

अंगय पुं० न० ( अङ्गय ) आडुआसरणु,  
आंलुअन्ध भुजा का गहना, वाजूवंद A  
bracelet worn on the upper  
arm पञ्च० २, ओव० २२; नाया० १,  
जीवा० ३, ४ परह० १, ४, ( २ ) देवतातु  
अेड आसरणु देवता का एक आभूषण  
an ornament of a deity राय०  
१८६,

अंगारंगप्रविष्ट त्रि० ( अङ्गारङ्गप्रविष्ट )  
अंगप्रविष्ट-आनाराग वगेरे सूत्र अने  
अनगप्रविष्ट-आवयव वगेरे सूत्र अङ्ग

प्रविष्ट-आचाराङ्गादिसूत्र और अनङ्गप्रविष्ट-  
आवश्यक वगेरे सूत्र Sūtrās like  
Āchārāṅga included in Aṅgas  
and those like Āvaśyaka not  
included in Aṅgas. विशेष० ५२७;

अंगार पुं० ( अङ्गार ) अग्नि; अणतो डोलसो.  
अङ्गार; जलता हुआ कोयला. A burning  
charcoal. पिं० नि० ११४; प्रव० २६७;  
( २ ) स्वादिष्टअन्न अने तेना दातारनी  
प्रशंसा करतां आहार करताथी साधुने लागतो  
अेड आहारनो दोष, अंगाल दोष स्वादिष्ट अन्न  
और अन्नदाता की प्रशंसा करते २ आहार  
करने से साधु को लगने वाला दोष; इङ्गाल  
दोष a sin incurred by a Sādhu  
while eating, by praising the  
deliciousness of the food and  
the giver of it गच्छा० ७,—कहिढणी.  
स्त्री० (—कर्पिणी ) अग्नि देवता-उथलाव-  
वानो दोढानो सणीओ. अग्नि उलटपुलट  
करने का लोहे का सरिया-खौंचा. a poker.  
भग० १६, १;—दाह. पुं० (—दाह ) अग्नि  
लाडज आणी डोलसा पाडवामां आवे छे ते  
अथान वह स्थान, जहां लकड़ी जलाकर कोयले  
बनाये जाते हैं a place where wood  
is converted into coal by com-  
bustion आया० २, २, १,—पतावणा.  
स्त्री० (—प्रतापना ) टाढ उडवाने अग्निपासे  
अर्ध शरीर तपावतुं ते, तापणी; धुणी ठंड  
मिटाने के लिये अग्नि के पास जाकर शरीर  
तपाना to warm the body at the-  
fireside. परह० २, ५,

अंगारक पुं० ( अङ्गारक ) अंगणनाभनो  
अह; ८८ अहमानो अेड अह मंगल नामक ग्रह;  
८८ ग्रहों में का एक ग्रह. The planet  
Mars परह० १, ५, ओव० २६; पञ्च० २;



**अंगारमद्ग** पुं० ( अङ्गारमर्दक ) अंगारमर्दक  
ये नाम्नी प्रसिद्धिपामेला इन्द्रदेवनामे अेक  
अलव्य आचार्य अङ्गारमर्दक नाम से प्रसिद्धि  
प्राप्त एक रुद्रदेव नामक अभव्य आचार्य. A  
preceptor unworthy of salvation  
named Rudradeva who become  
famous by his name of Angāla-  
Mardaka पंचा० ६, १३,

**अंगारिय** त्रि० ( अङ्गारित-अङ्गारो रोग-  
विशेषः स जातोऽस्येति ) अंगाररोग वाणी  
शेरडी, के ले रोगथी शेरडीनी कृतणीने रग  
अदलार्थ लय छे अंगाररोग वाला गन्ना-सांठा,  
जिस रोग से उसके छिलके का रंग बदल जाता  
है A sugarcane with a disease  
which alters its colour आया० २,  
१, ६, ४८,

**अंगाल** पुं० ( अङ्गार ) अंगारो, कथलेो अंगार,  
कोयला. A burning charcoal, a  
coal. पंचा० १, २२,

**अंगिरस** त्रि० ( आङ्गिरस ) अंगिरस-गौतम  
गोत्रनी अेक शाखा तेमां उपलेल पुरुष ते-  
आंगिरस गौतमगोत्र की एक शाखा में  
उत्पन्न पुरुष One born in a branch  
belonging to the line of Gau-  
tama ठा० ७, १,

**अंगुह** पुं० ( अङ्गुष्ठ ) अंगुठो अंगूठा  
The thumb, the great toe नाया०  
८, सम० ११, ओष० नि० ३६०, भग० ३, २,  
प्रव० २५८,—**पसिण** पुं० न० (—प्रक्ष) अंगु-  
ठामां देवतानु आह्वान करी अंगुठधीन नवाय  
देवानी विद्या अंगूठे मे देवता का आह्वान कर  
के अंगूठे से ही उत्तर देने की विद्या, एक प्रकार  
की हाजरात a branch of learning

dealing with answering by  
means of the thumb after in-  
voking a deity in it (२) ते विद्यानु प्रति-  
पादन करनार प्रश्नन्याकरणु नवमु अध्ययन,  
के ले हल विच्छेद थर्ध गयेल छे उक्तविद्या का  
प्रतिपादन करने वाला प्रश्नन्याकरण का नवो  
अध्याय, जिसका कि, अब विच्छेद हो गया है.  
the ninth chapter of Praśna-  
vyākaraṇa which explains the  
above but which is now extinct.  
ठा० १०, १,

**अंगुह्य** पुं० ( अङ्गुष्ठक ) अंगुठो अंगूठा.  
the thumb, the great toe.  
नाया० १४,

**अंगुल** न० ( अङ्गुल ) आगण; आहलव्य  
प्रमाणे लरपविशेष-वेतनेो पारभो भाग.  
अंगुली, अंगुल; वैत का वारहवो हिस्सा.  
A finger, a measure of length  
equal to the twelfth part of a  
span भग० १, ५ ३, १ ६, ५, ७, ११,  
१; २१, १, २४, १२, ३६, १, ज० प० ३,  
५७, पञ्च० १२, सू० प० १६, उक्त०  
२६, १३, ओष० नि० २७; प्रव० ७५,  
—**पहुत्त** न० (—पृथक्त्व) लुओ “अंगुलपु-  
हुत्त” शब्द देखो ‘अंगुलपुहुत्त’ शब्द  
vide “अंगुलपुहुत्त” भग० २१, ६, २४, १,  
—**पुहुत्त** न० (—पृथक्त्व) अे आगणधी ८  
आगणमुधी दो अंगुल से नौ अंगुल तक a  
measure of length, from two to  
nine Angula measures ( finger  
—breadth ) भग० २२, १,—**पोहत्तिय**.  
त्रि० ( \*—पृथक्त्वक-अङ्गुलपृथक्त्वं शरीरा-  
वगाहनामानमेपामस्तीत्यङ्गुलपृथक्त्वकाः )  
नेनी अेथी भाडी नव अंगुलमुधीनी शरीर  
अवगाहना-आगणधी छे ते जिसके शरीर की

ऊंचाई २ से ६ अंगुल तक की है वह one whose height is from 2 to 9 Angula measures ( finger-breadth). पञ्च० १;—भाग पुं० (-भाग) अंगुलना (असंख्य'तमे) भाग अंगुल का असख्यातवर्ण भाग an (infinite simal) division of the measure called Angula .i.e., a finger's breadth क० प० १, ६;

—वगाह. पुं० (-अवगाह) अंगुलीनी अवगाहना-क्षेत्रस्पर्शना. अंगुल की अवगाहना; क्षेत्रस्पर्शना occupation of space equal to a finger's breadth, क० प० १, २०;

अंगुलि. स्त्री० (अङ्गुलि) आंगुली ( हाथपगनी) अंगुली. A finger or a toe. निसी० ३, ४६; श्राव० १०, पञ्च० २; नाया० १, ८, दस० ४, आया० १, १, २, १६, उवा० २, ६४,—कोस. पुं० (-कोश) आंगुलीभा पहरेव'नी ले डानी, लाडनी, डे य.भड'नी अगे'डी अंगुली में पहिरने का लोहे, लकड़ी, अथवा चमड़े का अंगुशताना. a thimble राय०—फोडरा न० (-स्फोटन) आंगुलीना टय डी वग डवा ते चुटकी वजाना a snap of the thumb and the finger तंडु० २५.—भमुहा स्त्री० (-भ्रू) ड.उसग्गमा अ गणीना वेडा गलुव थी डे डंके संकेत लशावव-अडुटि हल वव थी ल गते अके टेप, ड उसग्गने. अके टेप कायोत्सर्ग का एक दोष; अंगुली के पेर गिनने से या कुछ इशारा करने से अथवा भौ चलाने से कायोत्सर्ग में लगने वाला दोष. a fault in Kāūsagga ( a kind of trance-condition ) consisting in counting the finger joints or moving the eyebrows

to signify something. “ अंगुलि भसुहाओ विय चालंतो तह य कुणइ उस्समां” प्रव० २६२;

अंगुलिजग. न० ( अङ्गुलीयक ) आंगुलीना आक्षरलो; वेड, वींटी वगेरे अंगुलियों का गहना, अंगूठी वगैरह. A ring. जीवा० ३, ३; नाया० १; श्राव० ३१; कप्प० ४, ६२;

अंगुलिया स्त्री० (अङ्गुलिका) आंगुली. अंगुली. A finger, a toe भग० ८, ३; जीवा० ३, ३; निसी० १, २; पिं० नि० २८७;

अंगुवंग पुं० ( अङ्गोपाङ्ग ) नामकर्मनी अके प्रकृति नामकर्म की एक प्रकृति. A species of Nāma-Karma. (ie .body-making Karma.) प्रव० १२७५;

अंगोवंग. न० ( अङ्गोपाङ्ग ) भस्तकादि अथ अने अंगुलि आदि उपांग मस्तकादि अंग और अंगुल आदि उपाङ्ग. Parts of a body and their sub-divisions “ नहकेसमंसुअंगुलिओहा खलु अंगोवंगाणि ” उक्त० टी० ३; पञ्च० २३; विवा० १, क० गं० १, ३४; ४८; क० प० ४, ७४,—णाम न० (-नामन्) जेना उदयथी शरीररूपे लीधेल पुद्गो अंग उपांग रूपे परिणुमे ते नामकर्मनी अके प्रकृति; अंगोपांगनाभकर्म. नामकर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से शारीरिक पुद्गल अंगोपाङ्ग रूप मे परिणत होते हैं; अंगोपाङ्ग नाम कर्म. a variety of Nāma-Karma ( i e , body-making Karma ) by the maturing of which are produced the limbs of the body and their sub-divisions क० गं० १, ४८,

✓ अंच धा० I. ( अञ्च् ) संकेद्युं, संकायुं, भेगुं करुं. इकठा करना To fold up, to gather up ( २ ) पूजुं, पूजा करुं पूजा करना; पूजना to worship ( ३ ) गति करुं. जाना to go.

अंचति पंचा० १६, २६,

अंचेइ. " वामं जायुं अंचेइ " राय० १६, श्रौव० १२; जीवा० ३, ४, जं० प० ३, ५३; भग० ६, २२,

अंचेइत्ता. सं० कृ० भग० ६, ३३,

अंचि. पुं० ( अञ्चि ) गति करुं ते, ज्ञुं ते गति करना; जाना. The act of going. भग० १५, १;

अंचि. पुं० ( आञ्चि ) आवुं ते. आना. The act of coming. भग० १५, १;

अंचिअ. न० ( अञ्चित ) अेकप्रकारनुं न'टक, देवताना उर नाटकमानुं २५ भुं न'टक एक प्रकार का नाटक, देवताओं के ३२ नाटकों में से २५ वॉ नाटक. A kind of a drama, the 25th of the thirty two dramas of gods. जीवा० ३, ४, राय० ६४, ( २ ) त्रि० पूज्य; रज्जमन्य पूज्य, राजमान्य. worthy of worship or reverence भग० १५, १, ( ३ ) न० अेकवार ज्ञुं ते एक वार जाना the act of going once भग० १५, १,

अंचियंचिय न० ( अञ्चिताञ्चित ) गमना-गमन, आहिथी त्यां अने त्याथी आहि ज्ञुं आवुं ते, गति आगति, गमागम आना जाना, गमनागमन Walking to and fro. भग० १५, १,

अंचियरिभिय. न० ( अञ्चितरिभित ) अेक प्रक रनु न'टक, देवत न' उर नाटकमानुं २७ भु न'टक एक प्रकार का नाटक, देवताओं के ३२ नाटकों में से २७ वॉ नाटक. A kind of

drama, the 27th of the thirty-two dramas of gods. जीवा० ३, ४; राय० ६४;

✓ अंछ धा० I ( अञ्छ-आ+कृप् ) आकर्षणुं करुं; भेयनु आकर्षित करना, खेंचना. To attract, to pull, to draw.

अंछति विशेष० ७६४,

अंछवेइ. शि० नाया० १; भग० ११, ११;

अंछवेइत्ता शि० सं० कृ० नाया० १, भग० ११, ११;

अंजण न० ( अञ्जन ) क्षण्णी; आंणु काजल; अञ्जन Collyrium for the eye. भग० १५, १, पि० नि० भा० ४४, उत्त० ३४, ४, उवा० २, १०७, नाया० ६; प्रव० ८५७, ( २ ) सौधीरांणन, सुरमे, ध'तुविशेष; सयित्तद्धिनपृथ्वीतो अेक प्रक'र सौ-वीराञ्जन. सुरमा, धातुविशेष, सचित्तफठिन पृथ्वी का एक भेद sulphuret of antimony etc used as collyrium for the eye राय० ६०; १२३; उत्त० ३६, ७५, आया० २, १, ६, ३३, पन्न० १, विशेष० २१२, निसी० ४, ४८, सू० प० २०; ( ३ ) रसांणन, रसवती, ६३-हुणदरना अष्टमाश उकाण मां अकरीनु भूत्र भेणवी अन वेळ आं-णव नी शणी रसाञ्जन, रसवती, दाह-हल्दी के अष्टमाश काढे में चकरो का मूत्र मिलाकर उस से सस्कारित आजने की सलाई a pencil of collyrium for the eye made of a certain medicinal plant दस० ३, ६; ( ४ ) तपावेत्र लोढ नी शणीथी आपमां दु अ उतपन्न करुं ते गर्म की हुई लोहे की सलाई से आख में दु ख उत्पन्न करना. act of causing pain in the eye by means of a red hot iron rod. सम० ११; ( ५ ) आप अ.णी, आपमा क्षण्णी वगेरे आंणुं ते आख में काजल

चगैरह लगाना. to apply collyrium to the eyes. “ वमणंजणपलिमंथं ” सूय० १, ६, १२; ( ६ ) रत्ननी अेड लत. रत्न की एक जाति. a variety of jewel. राय० २६; कप्प० २, २६; नाया० १; पन्न० १७, ( ७ ) रत्नप्रभा पृथ्वीना भरतंडनेो दशमो लाग, ३ ७ अेड ह्मर जेहननेो लडेो छे. रत्नप्रभा पृथ्वी के खर खरह का दशवाँ भाग, जो एक हजार योजन चौड़ा है. the tenth part of the Kharakānda of Ratnaprabhā world, which is 1000 Yojanas in width जीवा० ३, १, ठा० १०, १; ( ८ ) रम्यविजयनी पश्चिमसरहृद उपरनेो वपारा पर्वत रम्यविजय की पश्चिम सीमा का वखारापर्वत the Vakhārā mountain on the western boundary of Ramyavijaya ठा० २, ५; जं० प० ५, ११५; ( ९ ) आडभा देवलोडनुं अे नामनुं अेड विमान, ३ ७यां देवतानी १८ सागरनी स्थिति छे. आठवे देवलोक का इस नाम का एक विमान, जहा के देवो की १८ सागर की आयु है a heavenly mansion of the eighth Devaloka ( abode of gods) where the gods live for 18 Sāgaras ( a vast measure of time ) सम० १८; ( १० ) इयडवर पर्वतनुं सातमुं इट रुचकवर पर्वत का सातवाँ कूट. seventh summit of Ruchakavara mountain ठा० ८, १; ( ११ ) अे नामनेो अेड वेलधर देवता इस नाम का वेलधर देव. a Velandhara god of that name. भग० ३, ७. ( १२ ) द्वीपकुमारना धन्ना त्रील लोडपालनुं नाम द्वीपकुमार के इन्द्र के तीसरे लोकपाल का नाम name of the third Lokapāla of

the Indra of Dvīpakumāra. भग० ३, ६; ( १३ ) उदधिकुमारना धन्ना प्रलंनना योथा लोडपालनुं नाम. उदधि कुमार के इन्द्र-प्रभंजन के चौथे लोकपाल का नाम name of the fourth Lokapāla of the Indra ( Prabhañjana ) of Udadhi-kumāra ठा० ४, १ ( १४ ) वनस्पतिविशेष वनस्पति विशेष a species of vegetation. अ्रोव० ( १५ ) वायुकुमारनातिना धन्नुं नाम वायुकुमारजाति के इन्द्र का नाम. the name of the Indra ( lord ) of the class of gods known as Vāyukumāra भग० ३, ८;—धाड. पुं० ( -धातु ) धातुविशेष, सुरमेो धातु विशेष, सुरमा Sulphuret of antimony etc used as collyrium नंदी० ३१,—रिट्ट. पुं० ( -रिट्ट ) वायुकुमारनेो योथा धन्ना वायुकुमार का चौथा इन्द्र the fourth Indra of Vāyukumār. भग० ३, ८;—समुग्ग पुं० ( -समुद्रक ) अंननेो अथलो. अंजन का डिब्बा. a box for keeping collyrium जीवा० ३, ४;—सलागा स्त्री० ( -शलाका ) अंनवानी शणी अंजने की सलाई. a stick for applying collyrium to the eye. “ तिलगकरणिमंजणसलागं ” सूय० १, ४, २, १०;

अंजणई स्त्री० ( अंजनकी ) अे नामनी अेड लता—वेल इस नाम की एक वेल. A kind of a creeper. पन्न० १०,

अंजणकोसिया स्त्री० ( अंजनकोशिका ) वनस्पति विशेष वनस्पति विशेष A species of vegetation. पन्न० १७, राय० ६२; जीवा० ३, ४;

**अंजणग** पुं० ( अञ्जनक ) अञ्जन रत्नमय पर्वतविशेष, नंदीश्वर द्वीपमां आवेल अञ्जनगिरि पर्वत. नंदीश्वर-द्वीप का अजनगिरि-पर्वत, रत्नमयपर्वतविशेष A mountain named Añjanagiri situated in Nandīśvara island ज० प० २, २३, ठा० ४, १, प्रव० १४८७,

**अंजणगिरि** पुं० ( अञ्जनगिरि ) कृष्ण रंगने पर्वतविशेष, अञ्जनगिरि पर्वत काले रंग का पर्वतविशेष; अजनगिरि A mountain of black colour named Añjanagiri. नाया० ८, १६, प्रव० १४८७, ( २ ) मेरुना लक्ष्मण वननु योयुं इट. मेरु के भद्रसाल वन का चौथा कूट fourth summit of Meru ( a mountain ) situated in Bhadrāsāla forest. ठा० ८, १, ( ३ ) ते इटने अधिपति देवता उक्त कूट का अधिपति देव the presiding deity of that summit ज० प० ४,

**अंजणजोग** पुं० ( अञ्जनयोग ) सत्तावीशमी कृष्ण सत्तावीसवी कला The twenty-seventh art श्रव० ४०,

**अंजणपर्वत** पुं० ( अञ्जनपर्वत ) नंदीश्वर-द्वीपने अेक पर्वत, इ ७८ हजार जेजने नो उयो, अेकहजार जेजने उडो, अने दशहजार जेजने लाये पडोणे छे नंदीश्वर-द्वीप का एक पर्वत, जो ८४ हजार योजन ऊंचा, एक हजार योजन ऊडा और दश हजार योजन लंबा चौडा है. A mountain of the island Nandīśvara which is eighty-four thousand Yojanas high, one thousand Yojanas under-ground and ten thousand Yojanas in length and width जीवा० ३, ४,

**अंजणपुलक** न० ( अञ्जनपुलक ) रत्ननी

अेक जत रत्न की एक जाति. A kind of jewel कप्प० २, २६,

**अंजणपुलक** पुं० ( अञ्जनपुलक ) रत्न विशेष रत्नविशेष A kind of precious stone नाया० १;

**अंजणपुलात्र** पुं० ( अञ्जनपुलाक ) अञ्जनपुलाकडांड, भरडांडने ११मे विभाग अञ्जनपुलाक कारण्ड; खरकारण्ड का ११ वॉ हिस्सा The eleventh division of the Kharakānda. जीवा० ३, १,

**अंजणा** स्त्री० ( अञ्जना ) नृपवृक्षना नैऋत्य भुशानी अेक वावडीनु नाम जवृक्ष के नैऋत्य कोण की एक वावडी का नाम The name of a well in the southwest of Jambū Vīksa ( a sacred tree ). जीवा० ३, ४, ( २ ) योथी वरडनु नाम चौथे नरक का नाम name of the fourth hell जीवा० ३, १, ठा० ७, १, प्रव० १०८५,

**अंजणिया** स्त्री० ( अञ्जनिका ) अञ्जण राप्पावाती उष्णी अञ्जन रखने की डिब्बी A box for keeping collyrium. मूय० १, ४, २, ७;

**अंजलि** पुं० स्त्री० ( अञ्जलि ) भोभो, करसंपुट, जेडेला भे हाथ जोडे हुए दो हाथ, करसंपुट. The cavity formed by hollowing the palms of two folded hands नाया० १, ५; १६, भग० २, १, ७, ६, १५, १, जीवा० ३, ४, श्रव० ११; २०, राय० २८; दस० ६, २, १७; मम० १२; अणुजो० ३६, श्रव० ति० ७६७, वव० १, ३७, कप्प० १, ५, ( २ ) भे हाथ जेडी मस्तके लगावना ते दोनों हाथों को जोड़कर मस्तक पर लगाना. touching the head with folded hands दंम० ६, ३. १२;

अंजु पुं० ( अण्ड ) अंड, अंडा-डीडी वगैरे-  
ना अंडा अंडा An egg. उत्त० ३२, ६;  
राय० ४६; ६३; सूय० २, ३, २२; ठा० १०,  
१, आया० १, ७, ६, २२२; ( २ ) विपाक-  
सूत्रं अंडनामं त्रीणुं अध्ययन विपाक-  
सूत्र का अण्डनामक तीसरा अध्याय. the  
third chapter of Vipāka Sūtra  
named Anda विवा० ३; ( ३ ) मोरना  
अंडना दृष्टान्ताणुं ज्ञातासूत्रं त्रीणुं  
अध्ययन. ज्ञातासूत्र का मोर के अंड के  
दृष्टान्त वाला तीसरा अध्याय the third  
chapter of Jñātā Sūtra where  
the illustration of a peacock's  
egg is given नाया० ३; सम० १६; ( ४ )  
उत्तर भरतमानो अेक देश उत्तर भरतक्षेत्र  
का एक देश a country of northern  
Bharata जं० प०—उड न० (-पुट )  
अंडानु डेटुं. अंड के बाहिर का खिलका  
egg-shell दसा० ६, १६,—कड. त्रि०  
(-कृत) अंडाभाथी थयेत्, अंडाये करेत्. अंडे  
मे से उत्पन्न, अंडाद्वारा किया हुआ.  
produced from an egg. “माहणा  
समणा एगे आह अंडकडे जगे ” सूय० १,  
१, ३, ८,—सुहुम. न० (-सूक्ष्म) अण्डा  
अंडा; भाभी, डीडी, गरेणी, डाडिंडा वगैरेना  
अंडा. मक्खी चाटी आदि छोटे २ जंतुओं  
के अंडे. an egg of a small insect.  
“ अंडसुहुमं च अष्टमं ” दस० ८, १५;  
कप्प० ६, ४४,

अंजु त्रि० ( ऋजु ) सरल; मायाप्रपंच  
रहित. सरल, मायाप्रपंच रहित Straight-  
forward “अंजुधम्मं जहातच्चं जिणाणं तं  
सुणेह मे ” सूय० १, ६, १, आया० १, ४,  
३, १३४, ( २ ) संयमी, संनभधारी  
संयमी. self-controlled आया० १, ६,  
१, ७; सूय० १, १, २, २१, ( ३ ) निर्दोष;  
योद्धो. निर्दोष; शुद्ध. innocent. सूय०  
२, १, ४६,

अंजुया स्त्री० ( अञ्जुका ) सत्तरमा तीर्थंकरनी  
मुष्य साध्वीनु नाम सत्रहवे तीर्थंकर की  
मुख्य साध्वी का नाम. The name of  
the chief female ascetic disci-  
ple of the 17th Tirthankara.  
सम०

अंजू स्त्री० ( अञ्जू ) शकेन्द्रनी येथी अग्रभ-  
क्षिपीनु नाम शकेन्द्र की चौथी पटरानी का  
नाम The name of the fourth  
principal queen of Śakrendra.  
भग० १०, ५, ( २ ) धनदेव-सार्थवाहनी  
पुत्री, डे जेतुं वर्णन ‘विपाकसूत्र’ ना  
दशमा अध्ययनमां छे. धनदेव-श्रेष्ठी  
की पुत्री का नाम, जिसका वर्णन  
विपाकसूत्र के दशवें अध्याय में है name  
of the daughter of Dhanadeva,

a merchant mentioned in the  
tenth chapter of Vipāka Sūtra.  
विवा० १; ठा० १०; नाया० ध० ६;  
अंड पुं० ( अण्ड ) अंड, अंडा-डीडी वगैरे-  
ना अंडा अंडा An egg. उत्त० ३२, ६;  
राय० ४६; ६३; सूय० २, ३, २२; ठा० १०,  
१, आया० १, ७, ६, २२२; ( २ ) विपाक-  
सूत्रं अंडनामं त्रीणुं अध्ययन विपाक-  
सूत्र का अण्डनामक तीसरा अध्याय. the  
third chapter of Vipāka Sūtra  
named Anda विवा० ३; ( ३ ) मोरना  
अंडना दृष्टान्ताणुं ज्ञातासूत्रं त्रीणुं  
अध्ययन. ज्ञातासूत्र का मोर के अंड के  
दृष्टान्त वाला तीसरा अध्याय the third  
chapter of Jñātā Sūtra where  
the illustration of a peacock's  
egg is given नाया० ३; सम० १६; ( ४ )  
उत्तर भरतमानो अेक देश उत्तर भरतक्षेत्र  
का एक देश a country of northern  
Bharata जं० प०—उड न० (-पुट )  
अंडानु डेटुं. अंड के बाहिर का खिलका  
egg-shell दसा० ६, १६,—कड. त्रि०  
(-कृत) अंडाभाथी थयेत्, अंडाये करेत्. अंडे  
मे से उत्पन्न, अंडाद्वारा किया हुआ.  
produced from an egg. “माहणा  
समणा एगे आह अंडकडे जगे ” सूय० १,  
१, ३, ८,—सुहुम. न० (-सूक्ष्म) अण्डा  
अंडा; भाभी, डीडी, गरेणी, डाडिंडा वगैरेना  
अंडा. मक्खी चाटी आदि छोटे २ जंतुओं  
के अंडे. an egg of a small insect.  
“ अंडसुहुमं च अष्टमं ” दस० ८, १५;  
कप्प० ६, ४४,  
अंडअ पुं० न० ( अण्डक ) अंड. अंडा. An  
egg भग० २, ६, प्रव० ८२३;  
अंडक पुं० न० ( अण्डक ) अंड. अंडा. An  
egg. परह० १, २;

**अण्डग.** पुं० न० ( अण्डक ) ँडु अण्डा. An egg. ओव० १६, भग० ३, १,  
**अण्डय.** त्रि० ( अण्डज ) ँडामांथी उत्पन्न थयेव प्राणी-पक्षी सर्प वगेरे अण्डज प्राणी ( Creatures ) born of eggs, oviparous creatures. नाया० १; ३, दस० ४; सूय० १, ७, १, आया० १, १, ६, ४८, भग० ७, ५, ठा० ३, १, ७, १, जीवा० ३, २. प्रव० १२५०, ( २ ) कोशेटामांथी उत्पन्न थतो तातणे कोसा ( कोया ) का तार. silk thread of the cocoon. अणुजो० ३७;—**ग्राहि** पुं० ( -ग्राहिन् ) ँडामांथी उत्पन्न थयेव प्राणिते पडुनार पक्षियों को पकड़ने वाला one who catches birds नाया० २,—**वाणिय** पुं० न० ( -वाणिय्य ) ँडानो व्यापार अडे का व्यापार. trade in eggs विवा० ३, —**वाणियअ** त्रि० ( -वाणिय्यक ) ँडानो व्यापारी अडे का व्यापारी a dealer in eggs. विवा० ३,  
**अण्डयमेत्त** त्रि० ( अण्डकमात्र ) ँडानेवडुं. अडे के बराबर Of the size of an egg. पंचा० १६, २१;  
**अण्डु** न० ( अण्डू ) दशडला; डुथडडी लोहे अथवा लकडी की हथकडी An iron or wooden hand-cuff ओव० ३८,  
**अंत** न० ( आन्त्र ) आतरड आंत The entrails, the bowels “ दो अता पंच वामा परणात्ता तजहा थूलते तणुयंते य ” तंडु० सूय० २, १, ४६,—**गय** त्रि० ( -गत ) आतरडामां रडेडुं आंतो मे रहा हुआ existing in the bowels. सूय० २, १, ४६,  
**अंत** त्रि० ( आन्त-अन्ते भोजनान्तेऽवशिष्टमान्तम् ) आतां आता वधेडुं खाते र वचा हुआ Remnants of food taken “ अताहारे पंताहारे ” भग० ६, ३३;

नाया० ५; १६;—**अह** त्रि० ( -अदिन्-अन्ते भवमान्तं जघन्यं घल्लचणकादि तदत्तं भोक्तुं शीलमस्येत्यान्तादी ) तु०७ आहार लेनार; अत'हारी ( मुनि ) तुच्छ आहार लेने वाला, अंताहारी ( मुनि ). ( an ascetic ) eating inferior kind of food पंचा० १८, २३,—**आहार** पुं० ( -आहार ) आता आडी रडेयो ( शेष ) डेय ते आहार खाते र बाकी वचा हुआ आहार remnants of food taken ठा० ५, १, ( २ ) डलडुं धान्य, अणु वाल वगेरे हलका अनाज; चण आदिक inferior kind of corn. e g gram etc ओव० ४०,

**अंत** अ० ( अन्तर् ) अन्तर, माहि अन्दर; भीतर In, inside भग० १४, ६, ( २ ) मध्य, वय्ये. मध्य, बीच में in the middle भग० ३, ४,—**सुहुत्त** न० ( -सुहुत्त ) सुहुत्तथी अन्तरनो समय, सुहुत्तथी ओछो डाल सुहुत्त के अन्दर-भीतर का काल, सुहुत्त से कम समय a space of time shorter than a Mubūta ( a measure of time ) उत्त० ३३, ३१, ३४, ६०;  
**अंत** त्रि० ( अन्त्य ) अन्तिम, छेडु आखिरी, अन्तिम. Last विश० ८८;  
**अंत** पुं० ( अन्त ) पर्यंत छेडे पर्यन्त, सिरा Final limit भग० १, १, ६, २, १, ३, ३, ५, ५, नाया० १, क० ग० २, ६, १३, ( २ ) भेद, प्रकार भेद, प्रकार sort, variety “ चाउरत ” चत्वारोऽन्ता गतिभेदा यत्र स सत्वारश्चाउरंत. ” सूय० २, ५, २३; ( ३ ) रागद्वेष रागद्वेष passion and hatred. “ दोहिचि अंतेहि अहिस्समायेहि ” आया० १, ३, ३, ११६, सूय० २, १, ४६; ( ४ ) भूमिभाग; प्रदेश भूमिभाग, प्रान्त a land, a region “ एगंतमंनं अवफमनि ” भग० २, १; ३, ३;

( ५ ) समीप, पास नज़दीक. near. नाया० ८; ( ६ ) निर्णय, युद्धो निर्णय; फैसला. decision " तिविहे अंते पन्नत्ते संजहाल्लोगंते वेयंते समयंते " ठा० ३, ४; ( ७ ) विनाश; भंग भंग, विनाश destruction. नाया० १६; सम० १, ( ८ ) रोग चामारी. disease. विशेष० ३४५४;—**आहार** पुं० (—आहार) खाता खाडी रहेलो ( शेष ) होय ते आहार खाते २ वाकी बचा हुआ आहार remnants of food taken. ठा० ५, १, —**कड** त्रि० (—कृत) जेणे संसारने अंत कर्यो होय ते संसार का अंतकरने वाला. one who has attained final liberation आया० २, १५, १; सूय० १, १२, १५; भग० २, १, —**कम्म** न० (—कर्मन्) लुगडानी डेर; पखनी दिनारी. चक्र की कोर. the border of a garment. जीवा० ३, ४, राय० १८६; —**कर** त्रि० (—कर) संसारने अंतकरनार संसार का अंत करने वाला one who is to attain final liberation. भग० १, ४; ५, ४, —**काल** पुं० (—काल) मरुकाण; प्रलयकाण मृत्युसमय; प्रलयकाल. the time of death or dissolution. परह० १, ३, —**किरिया** स्त्री० (—क्रिया) संसार या कर्मने अंत करवानी क्रिया-अनुष्ठान संसार अथवा कर्म के नाश करने की क्रिया. process of securing final liberation. पन्न० २०, ठा० ४, १, सम० ६; ( २ ) सक्षयकर्मक्षयरूप मोक्ष सकल कर्मों का क्षयरूप मोक्ष salvation resulting from destruction of all Karmas i. e. actions. भग० १, ८, ३, ३; पंचा० १६, १६; —**कुल** न० (—कुल) उच्च कुल, हीनकुल, नीचकुल. a low family कर्प० २, १६; दसा०

१०, १०, —**खरिया**. स्त्री० (—अखरिका) अठारलिपिभांती नवमी लिपि. अठारह लिपियो मे की नवी लिपि. the ninth of the eighteen scripts पन्न० १; ( २ ) ६३ भी डणा. ६३ वीं कला. sixty-third art. ओव० राय० ४०; —**गमण**. न० (—गमन) छेडे ज्युं ते. अन्त तक जाना. act of going to the end नाया० १; —**चरअ-य**. पुं० (—चरक) गृहस्थे भोजन कर्या पछी अवशेष रह्यु होय तेनी गवेषणा करनार अभिग्रहधारी साधु गृहस्थ के भोजन करने के पश्चात् बचे हुए भोजन की जाँच-पड़ताल ( गवेषणा ) करने वाला अभिग्रहधारी साधु. an ascetic who has made up his mind to beg food after satisfying himself that the householder has finished his meal ठा० ५, १; परह० २, १; —**चारि** पुं० (—चारिन्) अंत आहार-तुच्छ आहार लेवानो अभिग्रह धरनार साधु. तुच्छ आहार लेने का अभिग्रह धारण करने वाला साधु a Sādhu who has vowed to take inferior kind of food ठा० ४, ४, १०; —**जीवि** पुं० (—जीविन्) गृहस्थे खाता शेष रहेल आहार छोडोरी तेना उपर ज्यवन यथावनार साधु. गृहस्थ का अवशिष्ट आहार लेकर अपना उदर पालन करने वाला साधु a Sādhu who lives on remnants of food taken by householders ठा० ५, १, —**दुग** न० (—द्विक) सयोगीकेवली तथा अयोगीकेवली ये अंतना ये गुणुष्ठाणा. सयोगी केवली और अयोगी केवली ये अन्त के दो गुणस्थान. the last two Gunasthānas ( stages of spiritual progress ) viz. those of Sayogī-Kevalī



( i. e. a would-be omniscient with vibratory activity of the soul not quite gone ) and Ayogī Kevalī (i.e one free from all such vibratory activity of the soul ). क० गं० ४, ५१, —पाल पुं० (—पाल) देशनी सीमा के सरहदतु रक्षायु करनार पु३५. देश की सरहद—सीमा की रक्षा करने वाला. one who guards the boundaries of a country जं० प० अंतत्र. पुं० ( अन्तक ) कामकीने छोडे धनुष का आखिरी सिरा The end of a bow वि० नि० ६७; उक्त० ३२, १६, अंतकिरिया स्त्री० ( अन्तक्रिया ) पन्नवथुना वीसभा पदनुं नाम, के जेभां अंतक्रियाने अधिकार छे. पन्नवणा के वीसवें पद का नाम, जिसमें अन्तक्रिया का अधिकार है The twentieth chapter of Panna-vaṇā Sūtra treating of ' Anta-kriyā ' पन्न० १, भग० १, २; अंतग पुं० ( अन्तक ) छोडे, अंत आखिर, अन्त End "तस्संतगं गच्छइ वीयरगो" उक्त० ३२, १६; ( २ ) त्रि० विनाशकारक; अंतकरनार विनाशकारक, अन्त करने वाला. ( one ) who destroys or ends सूय० १, ६, ७, ( ३ ) दुष्परित्यज्, मुश्केलीथी छोडी शक्य तेवु. कठिनाई से छूट सकने वाला. difficult to be avoided or given up. " चिन्ताया अंतगं सोयं शिरवेकसो परिष्वपु " सूय० १, ६, ७, अंतगड त्रि० ( अन्तकृत ) जेले ससारने अने नन्ममरणुने अंत कर्ये अथवा तीर्थ-करादि संसार का और जन्ममरण का अंत करने वाले तीर्थकरादि One ( a Tirth-aṅkara etc. ) who has freed himself from birth and death

कप्प० ५, १२३; नाया० ५; अणुजो० १२७; —दसा. स्त्री० ( -दशा ) संसारने अंत करनार मुमुक्षु महात्माओनी दशा-अवस्थानुं जेभां वर्णन करवाभां आव्युं छे अथुं "अंत-गडदशा" नामनु आठमुं अंगसूत्र, जेभां आठ वर्गभां ६० अध्ययनने सभावेश करवाभां आव्ये छे संसार का अंत करने वाले मुमुक्षु महात्माओं की दशा का जिसमें वर्णन किया गया है ऐसा "अंतगडदशा" नाम का आठवाँ अंगसूत्र, जिसके आठवर्गों में ६० अध्ययन हैं. the eighth Anga Sūtra named Antagada Daśā, dealing with the ten conditions or states of persons desirous of emancipating themselves from the cycle of worldly existence; eighth Anga Sūtra named Antagada Daśā in which is given the description of the state of Sādhus who have attained to final liberation It contains ninety nine chapters टा० १०, १, सम० १, ८, नंदी० ४४, ५२, अंत० १, १; अणुजो० ४२,—भूमि स्त्री० ( -भूमि ) संसारने अंतकरनार निर्वाणुगामि महा-पुत्रेनी भूमि-निर्वाणुसमय निर्वाणभूमि-संसार का अंतकरने वाले महापुरुषों का निर्वाणसमय the time of final liberation of saints जं० प० २, ३१, नाया० ८, कप्प० ७, २२६, अंतगय न० ( अन्तगत ) आनुगाभिड अवधि ज्ञानने अथ बेद आनुगामिक अवधिज्ञान का एक भेद A variety of Ānugā-mika Avadhijñāna, i e visual knowledge which accompanies the soul " से कि तं अंतगयं, अंतगयं

तिविहं परणत्तं तंजहा पुरओ अंतगयं, मगओ  
अंतगयं, पासओ अंतगयं ” नंदी०

अंतर्द्वारा. न० ( अन्तर्धान ) गेय थर्ध लुं;  
अदृश्य थुं. अदृश्य होना; गुप्त हो जाना.  
Act of disappearing पि० नि०  
५००;

अंतर्द्वारिण्या. स्त्री० ( अन्तर्धानिका ) अदृश्य  
थवानी विद्या. अदृश्य होने की विद्या. The  
art of making oneself invisible.  
सूय० २, २, ३०;

अंतर्द्वारिणी. स्त्री० ( अन्तर्धानिका ) लुओ  
उपलो श०६ देखो ऊपर का शब्द. Vide  
“अंतर्द्वारिण्या ” सूय० २, २, ३०;

अंतर्मिल्ल. त्रि० ( अन्तिम ) अंतनुं, छेवटनुं.  
आखिरी; किनारे का. Last; final “ तम्हा  
दोण्हंपि अंतर्मिल्लाणं ” क० प० १, ३८;

अंतमुहु न० ( अन्तर्मुहूर्त ) अन्तर्मुहूर्तनुं  
हुंनुं नाम. अन्तर्मुहूर्त का छोटा नाम. An  
abbreviation of Antarmuhūrta  
( a measure of time ). क० गं०  
१, १६; ५, ५६;

अंतमुहुन्त. न० ( अन्तर्मुहूर्त ) मुहुर्त-भे धडी-  
नी अंदरनेो डाण दो घड़ी के बीच का काल,  
जिसे अंतर्मुहूर्त कहते हैं. A period of  
time falling short of a Muhūrta  
( a measure of time ). क० गं० ५,  
६२; प्रव० १०१४;

अंतर. पुं० ( अन्तराय ) विघ्न विघ्न. An  
obstacle. “अंतरमकार वा निहारे संक-  
मरणं वा ” ओष० नि० भा० २६७;

अंतर त्रि० ( आन्तर ) अंदरनुं; आंतरिक;  
अंत-इरलु संलधी. भीतर का; अंत-करण  
सम्बन्धी. Internal. सु० च० १, १; उक्त०  
२७, ११;

अंतर. न० ( अन्तर ) आंतरं; व्यवधान; भे  
पन्तुनुं देश आश्री परस्पर छेदुं स्थान अथवा

क्षेत्र की अपेक्षा से दो वस्तुओं के बीच का  
अंतर-व्यवधान. Interval of space.  
जं० प० ३, ६६; राय० २६३; भग०  
२, १०; २५, ४; ७; ( २ ) भे वस्तुवच्येनुं  
अथवा अेकवस्तुनी भे परिस्थिति वच्येनुं डाण  
आश्री आंतरं-छेदुं, जेम ऋषभदेव अने  
महावीरस्वामीनुं अंतर समय की अपेक्षा  
से दोवस्तुओं के बीच का अंतर-जैसे ऋषभदेव  
और महावीरस्वामी के बीच का अंतर. in-  
terval of time. नंदी० ५६; अणुजो०  
८०; उक्त० ३६, १४; पि० नि० २७१; क०  
प० १, २१; ( ३ ) अंतर.ल; मध्य; वच्येनेो  
भाग. बीच का हिस्सा; मध्यभाग. interven-  
ing portion उक्त० ७, ४; पन्न०  
२; राय० ३२; भग० २, १; ३, ६; ८, ७;  
१०, ३; १५, १; १८, ७; २०, ६; नाया० १;  
१८; ( ४ ) भेद; विशेषता; गुणुआश्री तक्षवत-  
भेद, गुणसम्बन्धी भेद difference. भग०  
२, ३; ( ५ ) वधत; अवसर अवसर; समय.  
time. आया० १, २, १, ६५, परह० १, ३;  
नाया० ६; ( ६ ) भर्भ; अेय छिद्र, मर्म.  
fault नाया० ८; ( ७ ) विघ्न; आडधिल.  
विघ्न obstacle. भग० ८, २; ओष० नि०  
भा० २६७; नाया० १; २; ( ८ ) विना; वगर.  
विना; सिवाय. without. भग० ५, ७; ८,  
३, १५, १,—अद्धा स्त्री० ( -अद्धा ) आं-  
तरनेो डाण बीच में का समय. inter-  
vening time आया० १, ८, ८, ६;  
—अप्पा. पुं० ( -आत्मन् ) शरीर अंतर्गत  
आत्मा. शरीरान्तर्गत आत्मा. embodi-  
ed soul. भग० २, २,—उअग पुं० न०  
( -उदक ) पाणीनी अन्तर रहेल द्वीप. जल के  
अंदर का द्वीप. an island जं० प० ३, ६६;  
—कंद. पुं० ( -कन्द ) पाणीमा उत्पन्न  
थती अेक जलनी वनस्पति जल में उत्पन्न  
होने वाली एक जाति की वनस्पति. an aqua-

the plant पत्र० १;—करण न० (—करण) यथाप्रवृत्तिकरण, अपूर्वकरण अने अनिवृत्तिकरण ये त्रयुभांनु गमे ते अेक, सम्यक्त्वना डारणुरूप अध्ववसायविशेष यथाप्रवृत्तिकरण, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण इन तीनों में से कोई एक, सम्यक्त्व का कारणरूप अध्ववसायविशेष any one of the three conditions of spiritual thought, activity known as Yathāpravṛttikarāṇa, Apūrvakarāṇa and Anivṛttikarāṇa, these conditions being the cause of right knowledge ( Samyaktva ) क० प० २, ४; —गृह न० (—गृह) अे धरनी वर्येनुं अंतर दो घरों के बीच का अंतर distance between two houses वेय० ३, १६, —जाय. न० (—जात) भाषाना ने पुद्गले अंतराले समश्रेणीमां रहीनेन भाषापरिणामने प.मे छे ते भाषापरिणतपुद्गल भाषारूप परिणत वे पुद्गल जो अंतराल में समश्रेणी में रहकर भाषारूप से परिणमते हैं the molecules of speech coming out at measured intervals giving rise to speech आया० नि० टी० २, ४, १, ३१३,—राई स्त्री० (—नदी) महानदीनी अपेक्षाये नानी नदी, जेते १२५ जेनने ५८ छे अेवी आर अंतर नदीयो सीता अने सीतोदाने उलयकांठे छे. महानदी की अपेक्षा से छोटी नदी, जिसका पाट १२५ योजन का है, ऐसी बारह नदिया सीता और सीतोदा नदियों के दोनों किनारों पर हैं. any of the twelve small rivers, viz. on each bank of the two great rivers Sitā and Sitodā. “ जम्बूमंदरपुरत्थिमेणं सीयाए महाणदीए उभयकूले छ अंतरणईओ परण-त्ताओ संजहा-गाहाबई दहचई पंकवई तत्त-

जला मत्तजला उम्मत्तजला । जम्बूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओयाए महाणदीए उभयकूले छ अंतरणईओ परणत्ता तंजहा-खीरोदा सीह-सोया अंतोवाहिणी उम्मिमालिणी फेन-मालिणी गभीरमालिणी” ठा० ६, १, जं० प० ५, १२०,—तुल्ल त्रि० (—तुल्य) अनुभाग अंधना अेक स्थानथी थीनन स्थानवर्येना आतरा नेटलुं अनुभागबंध के एक स्थान से दूसरे स्थान बीच के अंतर के समान equal to the interval existing between one stage of Anubhāga Bandha ( intensity of Karmae bondage ) and the next stage. क० प० १, ३२,—पडिबिबिय त्रि० (—प्रतिबिम्बित) अेदर पडछायावाणु भीतर प्रतिच्छाया वाला reflecting within सु० च० २, १०५,—पल्ली स्त्री० (—पल्ली) मूलक्षेत्र-मुप्यनगरथी अदीगाठि उपरनु गामडुं मूलक्षेत्र-मुख्यनगर से अठ्ठाई कोस की दूरी पर का ग्राम a suburb about five miles distant from a city प्रव० ६२८,—भासिल्ल पुं० (—भाषावत्) गुर्वादिड अेकता होय तेनी वर्ये भोली उठनार शिष्य गुरुजनों के बीच में बोल उठने वाला शिष्य. a disciple interrupting a preceptor in his speech उक्त० २७, ११:

अंतरंजिया स्त्री० (अन्तरजिका) अे नामनी अेक नगरी, के न्यां त्रैराशिक निह्वनी उत्पत्ति थई इस नामकी एक नगरी, जहा त्रैराशिक निह्व की उत्पत्ति हुई Name of a city where arose the Tairāsika Nihava ( a heretic ). विशेष० २४५१; अंतरगय त्रि० (अन्तर्गत) अंतर्भाव पामेडुं; अंदर अ वीगयेडुं अंत प्रविष्ट; भीतर गया हुआ, अंतर्भाव प्राप्त Involved, included, remaining inside परह० २, ३;

अंतरदीव. पुं० (अन्तर्द्वीप) युद्धहिमवंत अने शिखरी पर्वतनी लवणसमुद्र तरङ्ग नीङ्गेल-उठा उपरना द्वीप; ५६ अंतरद्वीप. चुह हिमवंत और शिखरीपर्वत के लवणसमुद्र की ओर निकले हुए हिस्से पर के द्वीप; ५६ अंतर्द्वीप. A group of the fifty-six islands on that part of Chulla-Himavanta and Sikhari mount, which projects into the Lavana ocean. भग० ६, ३; १०, १; जीवा० १; प्रव० ६१;

अंतरदीवग पुं० स्त्री० (अन्तर्द्वीपग) अंतर द्वीपमां रहेनार; युद्धहिमवंत अने शिखरी पर्वतनी लवणसमुद्रमां पडती उठाभानां द्वीपा उपर रहेनार मनुष्य; ५६ अंतरद्वीपाना मनुष्य. अंतर्द्वीपों मे रहने वाला; चुह हिमवंत और शिखरीपर्वत के लवणसमुद्र मे आये हुए हिस्से के द्वीपों में रहने वाला मनुष्य. A person residing in any of the islands named Antara-Dvīpas, fifty-six in number. पत्र० १; उक्त० ३६, १६४;

अंतरदीविया स्त्री० (अन्तरद्वीपिका) छप्पन अंतरद्वीपमा उत्पन्न थयेकी स्त्री छप्पन अन्तर्द्वीपो में उत्पन्न हुई स्त्री. A woman born in any of the fifty-six Antara-Dvīpas ठा० ३, १;

अंतरद्धा स्त्री० (अन्तर्द्धानम्) अंतर्धान थवुं; भ्रंश-नाश थवे ते. अन्तर्द्धान होना, नाश होना. Disappearance; vanishing; destruction "सद् अंतरद्धं च" पंचा० १, २०; उवा० १, ५०;

अंतरभाव. पुं० (अन्तरभाव) परमार्थ. परमार्थ. Benevolence; charity. पंचा० १८, २४;

अंतरभूय त्रि० (अन्तर्भूत) अंतर्भूत थयेल,

थीनामां भणी गयेल. दूसरे मे मिलाहुआ; जो दूसरे में अन्तर्भूत हो गया होवह Amalgamated, included विशेष० १६;

अंतरा. अ० (अन्तरा) मध्ये; वच्ये; अंदर. मध्य मे; अन्दर. Inside; between. भग० ३, ६; १५, १; सूय० १, २, १, ३१; १, ८, १५; वेय० १, १२; औष० नि० ११२; दस० ८, ४७; कप्प० २, ३०; पन्न० १६; नाया० १५,—आवण न० (आपण) अन्दरतुं छोट भीतर का बाजार. a market or a shop inside a place. नाया० ११, विवा० १,—दोमासिय. त्रि० (द्विमासिक) धे मासनी अंदरतुं दो मास के अंदर का. of less than two months' duration निसी० २०, १७,—पह. पुं० (पथ) ज्यांज्युं छे अने ज्यांथी ज्युं छे ते धे वच्ये ने भाग जहा जाना है और जहा से जाना है उन दोनों के बीच का मार्ग. the path that lies between the place of starting and that of destination. भग० २, १;—मंथ. पुं० (मन्थ) केवल-समुद्घातक्रियामा मथानाकारने समय; के० स० ने पांचमे समय केवलसमुद्घातक्रिया मे मंथनाकार का समय; केवलसमुद्घात का पाँचवाँ समय. the fifth unit of time in Kevala-samudghāta "अंतरामंथे-वटमाणो" भग० ८, ६,—वास पुं० (वास) मुसाफरीमां वच्ये वच्ये मजल दर मजल भेलाणु डरवे ते यात्रा में बीच बीच मंजिल दर मंजिल ठहरते जाना. halting at intervals in a journey. रत्य० २१३;

अंतराह्य न० (अन्तरायिक) दान आदिमां विघ्न नापनार अंतराय डरवे दानादि मे विघ्न डालने वाला अन्तराय कर्म. (Obstructive) destiny which debats

inclination to charity etc भग० ६, ३; ८, ८; ११, १, २६, १; ठा० २, ४, ४, १; पञ्च० २२; ( २ ) अन्तरायकर्मजनकपाप अन्तरायकर्मजनक पाप. sin producing obstructive destiny पि० नि० ३८७, भग० ८, ६;—कर्म न० ( -कर्मन् ) अन्तराय कर्म. देखो “अन्तराद्य” शब्द. vide “अंतराद्य.” भग. ८, ६;

**अंतराय** न० ( अन्तराय ) कर्मनो आश्लेभेद; दान, लाभ, भोग, उपभोग अने वीर्य-सामर्थ्यमा अंतराय-विघ्न नाभनार कर्म. कर्म का आठवाँ भेद, दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य में विघ्न डालने वाला कर्म The eighth variety of Karma ( destiny ) which obstructs charity, profit, comfort, happiness and power श्रौ० २०, भग० ६, ३; उत्त० ३३, ३; दसा० ६, १५, क० गं० २, २०; ६, ३६, ( २ ) विघ्न; नउतर, अउयलु विघ्न, अडचन an obstacle क० गं० १, ५४; सम० ३०, पि० नि० ३७०; पञ्च० २३;—**प्रभाव पुं०** ( -प्रभाव ) अंतरायकर्मनो प्रभाव-सामर्थ्य. अन्तरायकर्म का सामर्थ्य the power of obstructive destiny प्रव० १२७४,

**अंतराल** न० ( अन्तराल ) वर्येने भाग बीच का हिस्सा; मध्यभाग Intermediate space; middle भग० १४, १; नाया० १२, प्रव० १४६७;

**अंतराधि** अ० ( अन्तराधि ) वर्येपलु, वयगाणे पलु बीच में भी Even in the middle, even in the midst कप्प० ६, ६२,

**अंतरिक्ष** य० ( अन्तरिक्ष ) आन्तरे-छेदे गेहुं दूरी पर रहा हुआ. Situated at a distance पि० नि० १३४, श्रौघ० नि० ६६७; प्रव० १६८; गच्छा० ८३, कप० ४, ८३;

**अंतरिक्ष** न० ( अन्तरि(री)क्ष-अन्त. स्वर्ग पृथिव्योर्मध्ये ईक्ष्यते, अन्त. ऋक्षाणि वा यस्य), आडाशमां थता ग्रहवेध आदिनुं शुभाशुभफल-लक्षणानार निमित्तशास्त्र. आकाश में होने वाले ग्रहवेध आदि का, शुभाशुभ फल जताने वाला निमित्तशास्त्र. A science interpreting the good or bad effects of heavenly phenomena in the planetary system etc प्रव० १४२२,

**अंतरिक्षिया** स्त्री० ( अन्तरीया ) वेसवाडिय गणुथी निक्षेपे त्रीण शाखा वेसवाडिय गण से निकली हुई तीसरी शाखा. Name of the third branch of the Gana ( order of monks ) called Vesa-vādiya कप्प० ८,

**अंतरिया** स्त्री० ( अन्तरिका-अन्तरातीति ) आंतरं, व्यवधान, छेदु. दूरी, व्यवधान, अन्तर. Distance; interval. सू० प० १०; ( २ ) ( अन्तस्य विच्छेदस्य कारणमन्तरिका ), विवक्षितवस्तुनी समाप्ति, विवक्षितवस्तु की समाप्ति Conclusion of any particular thing “आण्अंतरियाणु वट्टमाणस्स” जं० प० २,

**अंतरुच्छुय** न० ( अन्तरिक्षुक ) शे० डीनी वयली गाड साठे-गन्ने की विचली गाठ Joint of a sugarcane आया० २, ७, २, १६०;

**अंतरेण** अ० ( अन्तरेण ) विना; पग०. विना, सिवाय- Without उत्त० १, २५.

**अंतलिकख** न० ( अन्तरीक्ष-अंतर्मध्ये ईक्षान दर्शन यस्य तदन्तरीक्षम् ) आडाश आकाश. The sky “अतलिकखत्ति णं वया गुज्जाणु-चरियत्ति य” दस० ७, ५३, श्रौघ० ३१; जं० प० ३, ४५; नाया० १ ८, आया० २, १, ६, ३७, सूय० १, ५, २, १७, उत्त० १२, २५, श्रौघ० नि० २८, भग० २०, २, ( २ ) श्रि० ( अन्तरीक्षमाकाशं तयभवमान्तरीक्षम् ) आडा-

शमां यतां उल्कापात, गंधर्वनगर, ग्रहवेध वगेरे. आकाश में होने वाला उल्कापात, ग्रहवेध वगेरह heavenly phenomena e, g the fall of a meteor etc. ठा० ८, १, (३) आकाशमा यता ग्रहवेधादिना कलाक्षल यतायनार निमित्तशास्त्र; आकाशविद्या. आकाश में होने वाले ग्रहवेधादि का फलाफल यताने वाला निमित्तशास्त्र; आकाशविद्या. the science which interprets the omens of heavenly phenomena; astrology सूय० २, २, २६, उक्त० १५, ७, सम० २८,—उदय न० (—उदक) वरसादनु पाणी वर्षा का पानी. rain-water उवा० १, ४१,—जाय त्रि० (—जात) नीनथी उये रहेनार पदार्थ. पृथ्वी से ऊंचा रहने वाला पदार्थ things existing in the sky. उवा० १, ४१, निसी० १३, ६, १६, २८,—पडिवरण त्रि० (—प्रतिपन्न) आकाशमां रहेनार आकाश में रहने वाला celestial; heavenly उवा० २, ११३.

अंतव त्रि० (अन्तवत्) अत-छेडावाणुं अन्त वाला, आखिर वाला Having an end. सूय० १, १, ४, ६,

अंतसो अ० (अन्तशस्) छेवट, अंते अन्त में. At the end, at last, finally सूय० १, २, १, ६;

अंतालिचय त्रि० (अन्तलिप्त) भांदि विपेडुं. भीतर लिपा हुआ. Smeared from within वय० १, १६,

अंति त्रि० (अन्तिन्-अन्तो जात्यादिप्रकर्ष-पर्यन्तोऽरवास्तीन्यन्ती) न्त्य दिनी अपेक्ष ये उत्तमोत्तम जातिवगेरह की अपेक्षा से उत्तमोत्तम Highest in point of caste etc. ठा० १०, १;

अंति त्रि० (अन्त्य) छेड्यु, अन्तमां छेपव

थयेल अन्त में उत्पन्न हुआ. Last. विशेष ४२२,

अंतिअ-य न० (अन्तिक) पासे; समीप; नज्दीक पास, नजदीक Near; in the vicinity “अरण्येसि अंतिष् वासोष्वा” आया० १, १, १, ४; नाया० १; ५; ८; ६; १०, १२; १६; भग० १, ७; ६; २, १; ५; ५, ४; ७, ६, १५, १; १८, १०; दस० ८, ४६; ओव० १२; ३६; राय० ३६; ठा० ३, १, उक्त० १, ४; ७, १२; वव० ७, १७; कप्प० २, २६, ४, ५६;

अंतिम त्रि० (अन्तिम) छेड्युं; छेवटनुं; अन्त चरम, आखिर का; अन्त का. Last; final पि० नि० १५६; भग० १, ६; क० गं० ४, २६, प्रव० ४३२; ठा० १, १; —ऊसास पुं० (—उच्छ्वास) छेड्यो श्वास. आखिरी श्वास. last breath; final breath प्रव० १३६७,—राई. स्त्री० (—रात्रि) रात्रिने छेडा-छेड्यो लाग पिछली रात. the last part of the night. भग० १५, १; १६, ६;—लोभ. पुं० (—लोभ) आरयोऽडीमानी छेडी सज्जनी योऽडीने लोल; नेनी वधारेमां वधारे पंढर दिवसनी स्थिति हेःय ते लोल. चारचौकड़ी में की अन्तिम संज्वलन की चौकड़ी का लोभ, जिसकी ज्यादह से ज्यादह १५ दिन की स्थिति हो वह लोभ the last variety of the four-fold greed known as “संज्वलन” having a maximum duration of fifteen days क०प० ७, ४१;—सरीरिय पुं० (—शारीरिक) अन्तशरीरी अन्त; छेड्युं शरीर धारण करनार; अर्थात् नेने तेन लवमा भोक्ष न्युं छे ते. चरमशरीर जीव; अर्थात् आखिरी शरीर वाला जीव. one who is embodied for the last time, i. e. one who is to obtain salva-

tion in the very life. भग० १, ४;  
५, ४; ठा० १, १;

अंतिमल्ल. त्रि० ( अन्तिम ) छेव० जुं. आखिरी.  
Last; final "तम्हा कालो ल्थ अंतिमल्लाणं"  
क० प० १, ११;

अंते अ० ( अन्तर ) भीड़ि; अंदर भीतर  
In; inside. निसी० १७, २०,

अंतेउर. न० ( अन्तः पुर ) अंत पुर; अनंत-  
पानुं; राणीवास. अन्त पुर, जनानखाना.  
A harem श्रोव० ३३, जं० प० ३, ७०,

जीवा० ३, ४; राय० २०, ३३, १३०, २२२,  
२४२; श्रोष० नि० भा० १८, २६, नाया० १,  
८, १४, भग० ६, ३३; १३, ६, १५, १,

सु० च० २, ३६३, विवा० १, निर० १, १,  
कप्प० ४, ८८; ५, १०६,—परियाल पुं०  
(-परिवार ) अंत पुरने परिवार, दास दासी

वगेरे. अन्त पुर के दासदासी जगेरह  
male and female servants etc  
of a harem. निर० १, १,

अंतेउरिया स्त्री० (अन्तःपुरिका) अंत पुरमां  
रहेनारी स्त्री, राजनी राणी अन्त पुर में  
रहने वाली स्त्री; राजा की राणी A woman  
living in a harem, a queen.  
नाया० १६,

अंतेपुरिय. त्रि० (अन्तःपुरिक) अंत पुर संभं  
धी. अंत पुरसम्बन्धी Relating to a  
harem विवा० ४,

अंतेवासि पुं० ( अन्तेवासिन् ) शिष्य, चेला,  
पासेरहेनार-छेनुरी-शिष्य शिष्य, चेला,  
समीप रहने वाला A disciple who  
always lives near his preceptor

जं० प० १, २, सू० प० १; नाया० १, ६;  
१६; श्रोव० १४, भग० १, ६, २, १, ३,  
१; ५, ६; ७, १०; सम० १०००; उवा० १, ७६;  
७६; दसा० ४, ६१; वव० १०, १५;  
कप्प० ७, २२४; ( २ ) आशा छेव० नार;

समीपवर्ती. आजानुयायी, समीपवर्ती one  
who obeys " तत्थ णं सावत्थीए  
णयरीए पप्पसिस्स रण्णो अंतेवासी जियस-  
त्तुणामं राया होत्था" राय० २११,

अंतो अ० ( अन्तर ) अंदर, भीड़िलि डोर;  
मध्ये. अंदर, भीतर, मध्य में In the inte-  
rior, inside "अंतोपडिग्गहासि" आया०

२, ६, १, १५२, "एवामेव मायी मायं कट्टु  
अंतो अंतोउरियाइ" ठा० ८, १, श्रोव० ३३;  
पञ्च० १, २, पिं० नि० २३२; ठा० २, ४,

वव० ६, ७, ६, १०, निमी० ८, १२, ६,  
२०, दसा० २, ८, ६; ६, १, ७, १; वेय०  
१, ७; २, १; ४, २८, भग० २, १, ८,

८; १५, १, नाया० १; २; ३; ८, १६;  
सूय० २, २, ६६, उत्त० ३३, १७,  
—कोडीकोडि त्रि० (-कोटिकोटि) डेडा

डोडि ( डरेऽने डरेऽड गुत्था डरिअते) सागरे-  
पमनी अंदरनु कोडाकोड सागरोपम के भीतर  
का falling short of-less than—one

crore into one crore of Sāgaro-  
pamas ( a period of countless  
years) क० प०) ५, ५,—खरिया स्त्री०

(-वेश्या) गामनी अंदर रहेनार वेश्या-  
नायिका गाँव के भीतर रहने वाली वेश्या a  
prostitute living inside a town

or village "वेञ्चपि रायगिहेणयरे अतो-  
खरियाए उववज्जिहिति " भग० १५, १;  
—गय त्रि० (-गत) अतर्भूत; तेनी

अंदर आवीगथेल अन्तर्गत, भीतर-अंदर  
आया हुआ. included in नाया० ६;  
—जल न० (-जल) पाणीनी अंदर. पानी

के भीतर in the water, under  
water नाया० ६,—एदंत त्रि० (-ए-  
दत्त) गगामाथी छिन्धार करतो. गले से  
बोलता हुआ uttering from the

throat दसा० ६, २,—कुट्ट. पुं० न०

(-दृष्ट ) अंदर रही पीडा डरनाइ शल्य. अंतरंग में पीडा करने वाला शल्य. a pain rankling in the heart like a thorn. ठा० ४, ४; —धुम्म. पुं० (-धूम ) धरती अंदर धुधवातो धुभाडे. घर के भीतर भरा हुआ धुआ. dense smoke filled in a house. दसा० ६, ४, —मुहुत्त. न० (-मुहूर्त ) मुहूर्त-अे घडीनी अंदरनेो समय मुहूर्त-दो घडी के भीतर का समय. duration of time less than forty-eight minutes भग० २, ५, ५, ८; ६, ३; १८, ८; २४, ६; जीवा० १; पञ्च० ४; क० प० १, ११; ३८; जं० प० २, ३१; अणुजो० १४१;—मुहुत्तिअ त्रि० (-मौहूर्तिक ) नेनु डाणपरिभाषु अंत-मुहूर्त-मुहूर्तानी अ-दरनु छे ते अन्तमुहूर्त कालप्रमाण. lasting for a duration of time shorter than forty-eight minutes “तत्थणं जे से आभोगनिम्बत्तिण्णु सेणं असंखेज्जसमइण्णु अंतोमुहुत्तिण्णु” भग० २, ४;—लित्तय त्रि० (-लित्तक ) अ-दर दिपेणुं भीतर से लिपा हुआ plastered with cow-dung etc in the inside. वेय० १, १६;—चट्ट. त्रि० (-चूत्त ) अंदरना लागमां गोण, अंतरगोण भीतरी भाग में गोल round in the inside “तेणं शरणां अंतोवट्टा वाहि चउरंसा” सूय० २, २, ३६;—वाहिणी स्त्री० (-वाहिनी ) धुमुदपिन्यनी पश्चिमसरहद उपरनी महाविदेहनी पार अन्तर्नदीमानी अेड. कुमुद विजय की पश्चिमसीमा पर की महाविदेह की वारह अतर्नदियो मे से एक नदी. one of the twelve subterranean rivers of Mahāvideha continent flowing on the western boundary of Kumudavijaya country “कुमुद

विजए अरजा रायहाणी अंतोवाहिणी वाई” जं० प० ४, १०२, ठा० २, २,—सप्त. त्रि० (-शल्य-अन्तर्मध्ये शल्यं यस्य ) अंदरनुं शल्य; ७६२ न देभातो ऋषभ नेने छे ते. जिसके भीतर शल्य हो वह. one having internal sorrow ठा० ४, ४; ( २ ) नेणु अपराध डरी आलोचना नहीं डरी ते; नेना मनमां अपराधरूप शल्य छे ते जिसमे अपराध करके आलोचना नहीं की वह; जिसके मन में अपराधरूपी कांटा चुभता है. one who has bitings of conscience for faults भग० २, ५, —सप्तमरण. न० (-शल्यमरण ) अंतोशल्यमरण-माया नियाणु वगेरे शल्य राप्पीने भरवु ते माया आदि शल्य सहित मरना. death without expiation for deceit, desire for future sense-enjoyments etc. which rankle-in the heart. भग० २, १; सम० १७; निसी० ११, ४१,—हियय. न० (-हृदय) अन्त.डरणु, मन अन्त.करण; मन. mind; heart उक्त० २३, ४५; अंतोअंत पुं० ( अन्त्योपान्त ) अंतमध्य सहित. अन्त मध्य सहित. The middle as well as the end taken together तुमं चैव णं संसियं वत्थं अंतोअंतेण पहिलोहिस्सामि ” आया० २, ५, १, १४६; अंतोमज्जावसाणिय. न० ( अन्तमध्यावसानिक ) अलिनयना चार प्रकारमानो छेलेो प्रकार अभिनय के चार भेदो मे से अन्तिम भेद. The last of the four kinds of dramatic gesticulation. राय० ६६; अंडुय. पुं० ( अन्दुक-अन्धते बध्यतेऽनेनेति ) लथीना पग आंधवानी सांडण हाथी का पैर बाँधने की साँकल. A chain for tying the foot of an elephant. सूय० २ = ६३;



अंध स्त्री० ( अन्ध ) पग आंधवानी सांडण;  
पेडी पांव बाधने की साकल; बेडी.  
fettors सू० १, ५, १, २१;

अंदोलक पुं० ( आन्दोलक ) हिंडोणो;  
हिंडोका. झूला. A swing जीवा० ३, ४,

अंदोलित त्रि० ( आन्दोलित ) आन्दोलन  
आपेडुं हीयडोपेडुं. झुलाया हुआ; हिलाया  
हुआ Swung. ओव० ३८,

अंदोलन न० ( आन्दोलन ) हिंडोणाभाट  
खाट का झूला. A swinging cot.  
सू० ३, ११;

अंध पुं० ( अन्ध ) अंधदेश, जगन्नाथनी नीचे  
आवेड अंधदेश, वेनी भेडेच्छदेशमां गणुना  
डरेडी छे अन्धदेश; जगन्नाथ के दक्षिणभाग  
का एक देश, जिसकी गणना म्लेच्छदेशों मे  
की गई है. Name of a country  
situated to the south of Jagan-  
nātha. पञ० १; परह० १, १, प्रव०  
१५६८, ( २ ) त्रि० अंधदेशवासी मनुष्य  
अंधदेशवासी मनुष्य an inhabitant of  
the Andhra-country. पञ० १, परह०  
१, १, प्रव० १५६८,

अंध त्रि० ( अन्ध ) आंधणो, नेत्रहीन अन्धा.  
Blind आया० १, १, २, १६; ठा० ७, १;  
अणुजो० १२८, सू० १, १, २, १६, १,  
१२, ८; पंचा० ११, ११, ( २ ) ज्ञान रहित;  
अज्ञानी ( लाक्षणिक ) ज्ञानरहित; अज्ञानी.  
( लाक्षणिक ) Illiterate, ignorant.  
भग० ७, ६;—पुरिस. पुं० (—पुरुष )  
अन्धांध, अन्धधी आंधणो. जन्मान्ध, जन्म से  
अन्धा. One who is born blind  
विवा० १,—रूप. पुं० न० (—रूप ) शून्या-  
कार; जेनुं शरीर अवयवशून्य-दोलासारूप  
छे ते. अवयवशून्य शरीर वाला One  
having a body devoid of limbs  
विवा० १, १,

अंधत्र. त्रि० ( अन्धक ) आंधणो; अध अन्धा.  
Blind. विशेष० ११५६;

अंधकार. पुं० ( अन्धकार ) अधाड; अधकार.  
अंधेरा Darkness. ओव० २१; भग० ६,  
५, ७, ७, परह० १, ३; सम० ३४, ठा०  
२, ४;

अंधग. पुं० ( अन्धक-अंधिप ) वृक्ष, आड झाड़.  
A tree. भग० १८, ४,—वरिह पुं०  
(—वन्धि-अंधिपा वृक्षास्तेपां वन्ध्यस्तदाश्रय-  
त्वेनेत्यांधिपवन्ध्यः ) आडर अंधि; आडना  
लाडडाने आथी-उत्पन्न थयेल अंधि वृक्षो  
का लकड़ी के द्वारा उत्पन्न अग्नि. fire pro-  
duced by friction of trees. भग०  
१८, ४,

अंधगवरिह. पुं० ( अन्धकवन्धि-अन्धका  
अप्रकाशकाः सूक्ष्मनामकर्मोदयाद्ये वन्ध्यस्ते  
अन्धकवन्ध्यः ) सूक्ष्मअंधि; सूक्ष्म ते-  
जःशून्य सूक्ष्मअग्नि, सूक्ष्म तेजःकाय.  
Latent fire, a body in which  
fire is latent “ हंता ? गोयमा ?  
जावइया चरा अंधगवरिहणो जीवा तावइया  
परा अंधगवरिहणो जीवा सेव भंते ? भंतेत्ति ”  
भग० १८, ४;

अंधगवरिह पुं० ( अन्धकवृष्णि ) समुद्रवि-  
जयराजतुं अपर नाम समुद्रविजय राजा  
का दूसरा नाम. Another name of  
king Samudravijaya. “ चारवती-  
ए गयरीए अंधगवरिहणामं राया परिवसइ ”  
अंत० १, १, दस० २, ८; उक्त० २२, ४४,

अंधगार. पुं० ( अन्धकार ) अधाड अंधेरा.  
Darkness. सू० प० १३;

अंधतत न० ( अन्धत्व ) अधपाणुं अधपन.  
Blindness आया० १, २, ३, ७८;

अंधततण. न० ( अन्धत्व ) अधपाणु अधपन.  
Blindness प्रव० १३८८;

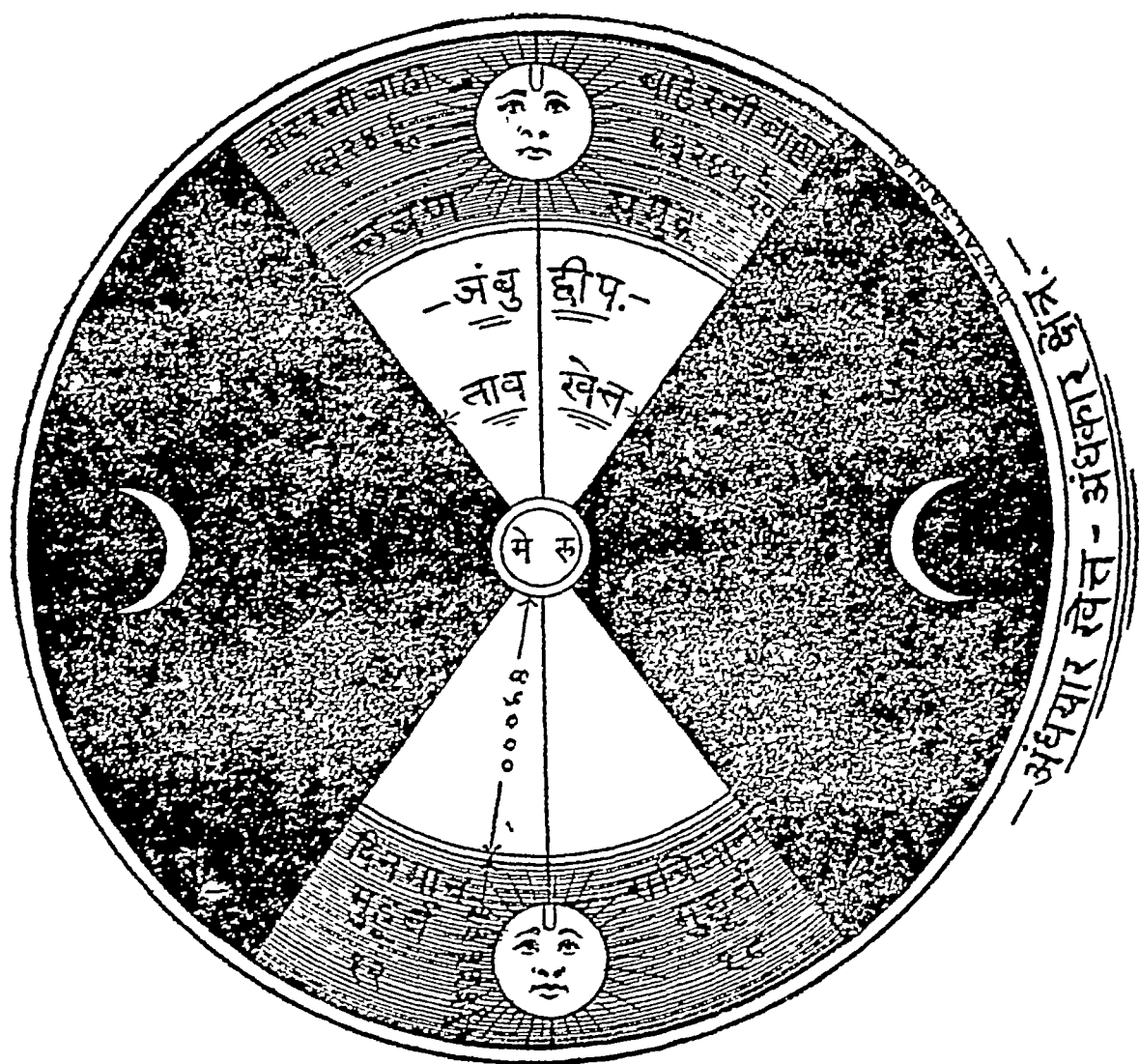
अंधत्वम्. न० ( अन्धत्वम् ) अधकार; अधाड.

अंधेरा, अंधकार. Darkness " असुरियं नाम महाभितावं अंधत्तमं दुष्पतरं महंतं "

सूय० १, ५, १, ११;

अंधयार. पुं० ( अन्धकार ) अंधा३ अंधेरा; अंधकार. Darkness. ओव० ३०; अणुजो० १३०; उत्त० २८, १२; सु० च० २, ५६; पञ्च० २; भग० ५, ६; नाया० १; विशेष०

लेथी अंधार अने अंधारने मांडलेथी अंधर आवे तेम अंधकारक्षेत्र अने तापक्षेत्रनी न्यूनाधिकता थाय छे जहां सूर्य का प्रकाश नहीं पड़ता वह प्रदेश; सूर्य जब भरतहरिवतक्षेत्र में रहता है तब मेरु की पूर्व और पश्चिम दिशा की ओर अंधकारक्षेत्र होता है और जब सूर्य महाविदेहक्षेत्र में रहता है तब भरत-



७७३; कप्प० ३, ३२; ६०; पंचा० १३, ११; जं० प० ३, ५४; ७, १३५;—खेत्त. न० (-क्षेत्र) ज्वां सूर्यने प्रकाश न पडे ते प्रदेश; सूर्य ज्येदे भरतहरिवतक्षेत्रमां छेय त्यादे मेरुनी पूर्व पश्चिमे अंधकारक्षेत्र छेय अने महाविदेहमा सूर्य छेय त्यादे भरतहरिवत तरक्ष अंधकार क्षेत्र छेय; सूर्य अंधरने मांड-

हरिवतक्षेत्र अंधकाक्षेत्र बन जाता है. सूर्य अंधर के मंडल से बाहिर और बाहिर के मंडल से अंधर आता है तब अंधकारक्षेत्र और तापक्षेत्र की न्यूनाधिकता होती है. the region where the sun does not shine. when the sun shines over the Bharata Iravata Ksetra

दसा० ७, १०; वेय० ५, ३१;—\*चोयग. स्त्री० ( -त्वच् ) आंघांनी छाल आमके झाड की छाल. the bark of a mango tree. भग० १५, १; निसी० १५, ७; —डाल. न० ( -डालक ) डेरीतुं नातुं पटकुं. आम का छोटा टुकड़ा. a small slice of a mango आया० २, ७, १६१; निसी० १५, ७;—पेसिया. स्त्री० ( -पेशिका ) आंघांना झलनी-डेरीनी थीर आम की फाँक. a slice of a mango. दसा० १०, ५; —पेसी. स्त्री० ( -पेशी ) आंघांनी-डेरीनी थीर-डातणी. केरी की फाँक. a slice of a mango. निसी० १५, ७;—फल. न० ( -फल ) डेरी. आम का फल. a mango. वव० ६, ३३;—भित्त. पुं० ( -भित्त ) आंघा-नो डटके. आम के झाड का टुकड़ा a piece of a mango tree. निसी० १५, ७; —भित्तय. न० ( -भित्तक ) डेरीनी अर्धी डड-डडसीडे; अडधीयुं आधा आमफल. a half of a mango. आया० २, ७, २, १६०; —सालग. पुं० न० ( -शालक ) आंघांनी नडी छाल आमवृत्त की मोटी छाल. thick bark of a mango tree निसी० १५, ७; अंघ. न० ( आम्ल ) छाल वगेरेथी संस्कारेल पदार्थ. छाछ डालकर बनाया हुआ पदार्थ. An article prepared with butter-milk; etc जं० पं० ३; अंघ. त्रि० ( अम्ल ) भाटुं खट्ट. Sour निसी० १५, ७; —कांजिया. स्त्री० ( -कांजिका ) भाटी डांछ खट्ट छाछ. sour gruel. निसी० १७, ३०; अंघग. न० ( आम्रक ) डेरी. आम्रफल. आम. A mango. इत्त० ७, ११; अणुत्त० ३, १; —ठिया. स्त्री० ( -अस्थिका ) डेरीनो गोठले आम की गुठली A mango stone. अणुत्त० ३, १;

अंघट्ट. पुं० ( अम्बट्ट ) माताना पक्षनी अपेक्षाये आर्य जति माताना पक्षे आर्य. माता के पक्ष से आर्यजाति Arya from the mother's side. अ० ६, १; पक्ष० १; ( २ ) ब्राह्मणपुरुष अने वैश्यस्त्रीथी उत्पन्न थयेल ओक अवांतर जति. ब्राह्मणपुरुष और वैश्यस्त्री से उत्पन्न एक अवान्तर-दूसरी जाति. a mixed sub-caste sprung from a Brāhmana father and a Vaiśya mother. सूय० टी० १, ६, २;

अंघड. पुं० ( अम्बड ) अंघडनामे ओक ब्राह्मण संन्यासी. अंघडनाम का एक ब्राह्मण सन्यासी. A Brāhmana ascetic named Ambada, ओव० ३८; ( २ ) जम्बूद्वीपना भरतखंडमां थनार २२ मा तीर्थकरना पूर्वजवनुं नाम जम्बूद्वीपके भरतखण्ड में होने वाले २२वें तीर्थकर के पूर्वभव का नाम name of the 22nd Tirthankara in Bharata Khaṇḍa of Jambū Dvīpa in his last previous birth. सम०.—जीव. पुं० ( -जीव ) अंघडनामना तापसना ७५; डे ने आवनी योवीसीमां आवीसमा 'देवजिन' नामे तीर्थकर थसे अंघड नामक तापस का जीव, जो आगामी चौवीसी में २२ वॉ 'देवजिन' नाम का तीर्थकर होगा. the soul of an ascetic named Ambada who will be the 22nd Tirthankara by name Devajina in the coming Chovisī (cycle) प्रव० ४७४; अंघत्तण न० ( अम्लत्व ) अटाश. खटाई. Sourness. विशेष० १४६७; अंघघाई. स्त्री० ( अम्बघात्री ) धावमाता; आलडने धवरावनारीमाता. धायमाता; बालक को दूध पिलाने वाली माता. A foster mother; a wet nurse नाया० १; अंघपल्लवपविभक्ति. न० ( आम्रपल्लवप्रविभक्ति )

in water; aquatic भग० ११, ६,  
निर० ३, ३;

अंस. पुं० ( अंस ) भाग, हिस्से भाग, हिस्सा  
Part; share उक्त० २२, १३;

अंस. पु० ( अंस ) रक्षन्ध, आध, अलो कधा  
Shoulder ठा० ४, ३, पत्र० ३६, क०  
गं० २, २६;—उवसत्त त्रि० (—उपसक्त)  
अंला उपर रहने कधे पर रहा हुआ rest  
ing on a shoulder कप्प० ३, ३६;  
—गअ-य. त्रि० (—गत) अंला उपर रहने  
कधे पर रहा हुआ resting on a shoul  
der विवा० १, ३; नाया० १८;

अंसय. पुं० ( अंसक ) कल्पेय भाग—हिस्से  
कल्पित भाग—हिस्सा A fixed part  
वेय० १, ६,

अंसि. स्त्री० ( अंसि ) अणु कोना A cor  
ner ठा० ८, १,

अंसि. व० उ० ए० ( अस्मि ) हुं छुं मैं हू  
I am “दिसाओ आगओ अहमंसि जाव”  
आया० १, १, १, ४,

अंसिया. स्त्री० ( + अंशिका—अंशस् ) अंश,  
गुह्यप्रदेशमा भसानो रोग अंश, बवासीर,  
गुह्यप्रदेश में होने वाली मसे की बामारी का  
नाम Piles भग० १६, ३,

अंसिया. स्त्री० ( + अंशिका—अंश ) अंशो  
भाग, हिस्से छोटा भाग, छोटा हिस्सा  
A small part वेय० २, १८,

अंसु. न० ( अश्रु ) आसु, नेत्रजल आंसु,  
आँखों का पानी; नेत्रजल Tears उक्त०  
२०, २८; नाया० १, ५, ज० प० २, ३३,  
भग० ६, ३३, परह० १, १,—धारा. स्त्री०  
(—धारा ) आंसुनी धारा आंसुओं की  
धारा flow of tears नाया० १;

अंसुय पुं० ( अंसुक ) चीन देशमा अगाउना  
वपतमा अनतु कीडानी लाणतु हीर; चीनाध  
हीर प्राचीन काल में चीनदेश में कीड़े

की लार से बनने वाला रेशम, चिनाई रेशम  
China silk आया० २, ५, १, १४५;  
अणुजो० ३७, ( २ ) वस्त्रविशेष; शृंवाणा  
वस्त्रनी अेक जात; चीनना सत्रनी अनावतनुं  
वस्त्र वस्त्रविशेष, कोमलवस्त्र की एक जाति,  
चीन के सूत से बना हुआ वस्त्र a kind of  
soft cloth made of China silk.  
जीवा० ३, ३; ४, आया० २, ५, १, १४५;  
नाया० १, म० प० २०, निसी० ७, ११,  
अंसोत्थ. पु० ( अश्वत्थ ) पिप्पलानु अड  
पीपल का वृक्ष The holy fig-tree, ficus  
religiosa भग० २२, ३,

अकंटय. त्रि० ( अकण्टक ) काटा रहित; काटा  
बिनातु. काटा रहित, बिना काटे का Thorn-  
less जीवा० ३, ( २ ) प्रतिस्पर्धी बिनातु.  
प्रतिस्पर्धी से रहित unrivalled, having  
no rival “ अहोयकटय मलियकटयं  
अकटयं” नाया० १, भग० ११, ६,  
अकंड. न० ( अकारण्ड ) अनवसर, वपत  
वगरेतु, अकाण अनवसर, अकाल, वे समयका.  
Inopportune, out of season सु०  
च० १३, ३१,

अकंडूअय. पुं० ( अकण्डूयक—न कण्डूयत  
हृयकण्डूयकः ) शरीरमा अणुआवे तोपणु  
अणुआणे नहि ते, अलिग्रहविशेषधारी साधु.  
शरीर में खुजली चलने पर भी न खुजाने  
वाला, अभिग्रहविशेषधारी साधु One who  
has a vow not to scratch his  
body even though troubled by  
itching sensation, an ascetic  
who has taken this vow ठा०  
५, ३, श्रौच० १६, परह० २, १,

अकंडूयग. पुं० ( अकण्डूयक ) लुण्ठो  
“अकंडूयग” शब्द देखो शब्द “अकंडूयग”  
vide “अकंडूयग” ठा० ५, १;

अकंत. त्रि० ( अकान्त ) अन्ति बिनातुं, तेन

वगरनुं; सौन्दर्य रहित कान्तिहीन; तेजहीन; सौन्दर्यरहित. Devoid of lustre; devoid of beauty. ठ० ङ, १, नाया० १, भग० १, ५; ६, २; ७, ६, ६, ३३, पञ्च० २८, जं० प० २, ३६; ( २ ) अलुग-भृत्; अप्रिय अप्रिय unpleasant, obnoxious भग० १, ७,—स्वर, पुं० ( -स्वर ) अप्रिय स्वर; कठोर स्वर अप्रिय स्वर; कठोर स्वर harsh voice भग० १, ७; जं० प० २, ३६,

अकंततर, त्रि० ( अकान्ततर ) अतिअप्रिय; धलु अलुगभृत्. बहुत अप्रिय Extremely unpleasant. भग० १६, ३,

अकंप. त्रि० ( अकम्प ) कं५-क्षोभ रहित कम्प रहित; चोभ रहित. Firm; fixed; free from destruction जं० प० २, ३१, ३, ५२;

अकंपिय. पुं० ( अकम्पित ) महावीरस्वामी-ना आठमा गणधर महावीरस्वामी के आठवें गणधर का नाम The eighth Gana-dhara of Mahāvīra Svāmī सम० ११, ७८; विशेष० १८८५,

अककस. त्रि० ( अकर्कश ) कर्कश नहि; मृदु, कोमल. Soft, not harsh "अणवज्जमककसे" दस० ७, ३, भग० ७, ६;

अकज्ज. न० ( अकार्य ) न करवा योग्य कार्य, अधटित काम. न करने योग्य कार्य; न करने लायक काम. An improper action नाया० २, १६, पिं० नि० १८५, भग० ७, ६; जं० प० २, ३६;—पडिबद्ध. त्रि० ( -प्रतिबद्ध ) अकार्य करवाभा तत्पर. न करने लायक काम को करने में तत्पर Intent on doing an improper action नाया० १८,

अकज्जमाण त्रि० ( अक्रियमाण ) कथी वगरनुं; न करवा जो न किया जाता हो Not being done भग० १, १७;—कड. त्रि० ( -कृत-क्रियमाणं ) वर्तमानकाले कृतं तन्निषेधादक्रिय-

माणकृतम् ) वर्तमानकाल अने भूतकालनी क्रियाथी अनेध नहि वर्तमानकाल और भूतकाल की क्रिया से नहीं बना हुआ. not resulting from what is being done in the present nor from what has been done in the past "अकिञ्च दुक्खं अफुसं दुक्खं अकज्जमाणकडं दुक्खं" भग० १, १०;

अकदु. सं० कृ० अ० ( अकृत्वा ) कथी वगर; न करीने बिना किये Without having done; without doing. ठ० ३, २; भग० १, १०,

अकट्ट. त्रि० ( अकाष्ट ) काष्ठ रहित, धंधला विनातुं काष्ठ रहित, बिना लकड़ी का Without fuel "जंसि जलंतो अगणी अकट्टो" सूय० १, ५, २, ११;

अकड. त्रि० ( अकृत ) नहि करेनुं नहीं किया हुआ. Unperformed; not done. "कडं कडित्ति भासिज्जा, अकडं नो कडित्ति य" उक्त० १, ११; "अकडं करिस्सामित्ति मण्णमाणे" आया० १, १, २, ६६; भग० १, ६;

अकट्ठिण. त्रि० ( अकठिन ) कोमल, कठिन नहि कोमल, कठिनता रहित Soft; easy; not hard जीवा० ३, ४,

अकरण. पुं० ( अकर्ण ) लवणसमुद्रमां सात सो न्नेलत उपर आवेलेो अेक अंतरद्वीप; १७ मेो अंतरद्वीप लवणसमुद्र में सात सौ योजन की दूरी पर का एक अंतरद्वीप, १७वें अंतरद्वीप का नाम An island situated in the Lavana ocean at a distance of 700 Yojanas from the shore ठ० ४, २; ( २ ) ते अंतरद्वीपमां रहेनार मनुष्य. उक्त अंतरद्वीप में रहने वाला मनुष्य. a person residing in that island. ठ० ४, २; पञ्च० १;

अकरणलिङ्ग. त्रि० ( अकर्णलिङ्ग ) अर्ण

ज्ञानवाणो; जेसे कान छेदाव्या नथी ते अखड कान वाला; जिसने कान नहीं छिदाये हैं वह. Having unperforated ears, having ears not perforated. निसी० १४, ६, अकति. त्रि० ( अकति-न कति न संख्याता इत्यकति ) संख्याता-गणनीया न आवे तेरला; असंख्य वा अनंत असंख्य; अगणित, अनन्त Innumerable, infinite ठा० १, ३, —संचिय. पुं० ( -सञ्चित ) अेक समये असंख्याता-अनंता उत्पन्न थता एव एक समय में असंख्यात-अनन्त उत्पन्न होने वाले जीव innumerable lives coming into existence simultaneously ठा० १, ३, भग० २०, १; अकप्प पुं० ( अकल्प ) कल्पे नहि तेवु; अपे नहि तेवु, अयोग्य, साधुने अहण्यु करवा योग्य नहि अयोग्य, साधु के न प्रहण करने योग्य Unacceptable, improper for a Sādhu “वयल्लकं कायल्लकं अकप्पो गिहिभायखं ” दस० ५, ८, सम० १८, पिं० निं० १८६, आव० ४, ८; पंचा० १२, १४; प्रव० २७, ८२०; अकप्पठिय पुं० ( अकल्पस्थित ) अथेलकादि दश प्रकारना कल्प-भर्यादा रहित, वर्येना २२ तीर्थकरना साधु अचेलकादि दश प्रकार के कल्प-रहित, बीच के २२ तीर्थकरों के साधु Having no restrictions of ten kinds as regards nakedness etc, disciples of the 22 intermediate Tirthankaras वेय० ४, १४; अकप्पिय. त्रि० ( अकल्पिक ) अयोग्य, अकल्पनीक-अनेधण्णीय अयोग्य; अकल्पनीक, अनेपणीय Improper, not prescribed; unacceptable “अकप्पियं ग्ग इच्छिज्जा पडिगाहेज्ज कप्पियं” दस० ६, ४८; ५, १, ६१, ४३, ४८,

अकम्म. न० (अकर्मन्) कर्मनो अभाव, आश्रव निरोध. कर्मों का अभाव, आश्रव का निरोध Absence of Karma ( action ), checking of Āśrava भग० ३, ३, १७, २, ( २ ) त्रि० कर्म रहित कर्म रहित. free from actions “अस्थियं भते! अकम्मस्स गहं पण्णायह हंता अस्थि ” भग० ७, १; आया० १, ५, ६, १६६; प्रव० ११३२; सूय० १, १, २, १५,

अकम्मओ. अ० ( अकर्मत्स ) कर्मविना. कर्मविना Without Karma ( action ). “ओ अकम्मओ विभत्तिभाव परिण-मइ” भग० १२, ६;

अकम्मंस. पुं० ( अकर्मांश-न विद्यते कर्मांशो-यस्य सः ) कर्मरज रहित कर्मरज रहित. Free from even the slightest Karma “अप्पतिअं अकम्मंसे, एयमहं मिगे चुए ” सूय० १, १, २, १२, ठा० ५, ३, ( २ ) घातीकर्म रहित स्नातक विशेष, केवली. a Snātaka abstaining from actions which destroy the spiritual qualities of the soul; a Kevalī भग० २५, ६;

अकम्मकारि. त्रि० ( अकर्मकारिन् ) अयोग्य काम करनार अयोग्य कार्य करने वाला. A doer of an improper action. परह० १, २,

अकम्मभूम. पुं० ( अकर्मभूम ) असि, मसी अने इसी ( तलवार, कलम अने पेती ) अे त्रणु प्रकारना कर्मव्यापार विना कल्पवृक्ष उपर आधार राप्पी एवन निर्वाह करनार; जुगलिया असि, मसी और कृपि ( तलवार, कलम और खेती ) रूप कर्मव्यापार के विना कल्पवृक्षों के आधार मे जीवन निर्वाह करने वाला; जुगलिया

One of those who depend for their livelihood entirely on Kalpavriksha ( wish-fulfilling tree ) without doing any business e. g. of fighting, writing or agriculture; one of the Jugalyās उत्त० ३६, १६७;

**अकर्मभूमग.** पुं० ( अकर्मभूमक-कर्म-कृषिवा-णिज्यादि मोक्षानुष्ठानं वा तद्विकला भूमिर्येषां तेऽकर्मभूमास्त एवाकर्मभूमकाः ) अकर्मभूमिना गर्भजमनुष्य, जुगलिया. अकर्मभूमि (जिस समय पृथ्वी पर विना कृषि, वाणिज्यादि कर्म किये भी मनुष्य जीवननिर्वाह कर सकता है ) के गर्भज मनुष्य, जुगलिया One of the Jugalyās born in a land devoid of any action such as agriculture etc पत्र० १;

**अकर्मभूमय.** पुं० ( अकर्मभूमक ) लुओ। 'अकर्मभूमग' शब्द देखो "अकर्मभूमग" शब्द. vide "अकर्मभूमग" सम० १४,

**अकर्मभूमि,** स्त्री० ( अकर्मभूमि ) लोगभूमि; दृषिआदि कर्म रहित कल्पवृक्ष वाणी भूमि, जुगलियाना ३० क्षेत्र भोगभूमि, कृषि आदि कर्मरहित कल्पवृक्ष वाली भूमि; जुगलियाओ के ३० क्षेत्र ( ऐसे ३० स्थान हैं जहाँ जुगलिया उत्पन्न होते हैं ) Any of the 30 regions of inaction for the Jugalyās, the land of enjoyment "कह विहेणं भंते? अकर्मभूमिओ परणत्ताओ गोयमा ! तीसं अकर्मभूमिओ प० तं० पंच हेमवयाहं पंच हेरणवयाहं पंच हरिवासाहं पंच रम्मगवासाहं पंच देवकुराहं पंच उत्तरकुराहं" भग० २०, ८, २५, ६; ७, प्रव० ३६,

**अकर्मभूमिय.** पुं० स्त्री० ( अकर्मभूमिज ) तीस अकर्मभूमि-भोगभूमिना मनुष्य; जुग-

लिया तीस अकर्मभूमि-भोगभूमि में उत्पन्न मनुष्य, जुगलिया Men belonging to the thirty lands of inaction; the Jugalyās ठा० ३, १;

**अकर्मया** स्त्री० ( अकर्मता ) कर्मने अभाव; कर्मने उच्छेद कर्म का अभाव, कर्म का उच्छेद. Absence of Karma; eradication of Karma उत्त० २१, ७१;

**अकर्मवीरिय.** न० ( अकर्मवीर्य ) पंडित वीर्य; पंडितभावसहित सामर्थ्य परिडत वीर्य, पंडितभावसहित सामर्थ्य Power coupled with wisdom सूय० १, ८, ६;

**अकर्महा.** अ० ( अकस्मात् ) अकस्म; अन्यातक. अचानक, एकदम Accidentally; suddenly सु० च० ४, २६२, —दंड. पुं० (—दण्ड ) धार्या वगर अकस्मात्—ओर्थितुं अकने लुतां पीलुं लुतां लय ते; योथुं क्रियास्थानक एक को दण्ड देते समय विना निश्चय के अकस्मात् दूसरे को दण्ड दे देना; चौथा क्रियास्थानक striking a wrong person quite accidentally, the fourth Kriyāsthānaka ठा० ५, २, सम० १३, प्रव० ८३०;—दंडवत्तिय. पुं० न० (—दण्डप्रत्ययिक—अकस्माद्दण्डः प्रत्ययः कारणं यस्य ) योथुं क्रियास्थानक; अकने मारवानुं धारी मारता अकस्मात् पीलने मारी नाथुं ते चौथा क्रियास्थानक, एक को मारने का निश्चय कर अकस्मात् दूसरे को मारडालना the fourth Kriyāsthānaka originating from killing or striking a wrong person quite accidentally सूय० २, २, १७,—भय. न० (—भय ) आल निमित्त विना कल्पना मात्रथी उत्पन्न थतु लय; सात लयभानुं अक वाह्य कारण के विना कल्पनामात्र में

उत्पन्न होने वाला भय, सात प्रकार के भयों में से एक प्रकार का भय imaginary fear, one of the seven kinds of fear ठा० ७, १, सम० ७, भग० ७, १, प्रव० १२३४;

**अकय** त्रि० ( अकृत ) न करेखु विना किया हुआ Unperformed परह० २, १, ( २ ) साधुने उद्देशीने न अनावेखु साधु के उद्देश्य से न बनाया हुआ not specially prepared for ascetics “अकयमकारियमसकपियमणाहुय ” भग० ७, १; क० प० २, ५०, पचा० १२, ४१, —**आगम** पुं० (—आगम) अकृताभ्यागमन, न करेख पाप वगेरेना कृणी प्राप्ति, न्यायशास्त्रप्रसिद्ध अेक दोष विना किये हुए पाप आदि के फल की प्राप्ति, न्यायशास्त्र का माना हुआ एक प्रसिद्ध दोष experiencing the fruits of sins etc without committing them, A well-known fallacy in Nyāya or logic विशे० १५, १७, —**करण** न० (—करण) न करवायेखु कामनुं करखुं ते न करने योग्य काम को करना performance of an improper action भक्त० ७६, —**पायच्छित्त** त्रि० (—प्रायश्चित्त) जेखे प्रायश्चित्त नथी कीखु ते जिसने प्रायश्चित्त न किया हो वह one who has not atoned for his sins निसी० १०, १४,, —**पुरय**. त्रि० (—पुरय) पुण्यथी रहित होय ते, जेखे पुण्य उर्युं नथी ते, अकृतपुण्य जो पुरय से रहित हो वह, जिसने पुरय नहीं किया हो वह; अकृतपुरय one who has not earned religious merit by holy actions “अकयपुरयाजणमणो-रहाविव चित्तिज्जमाणी ” नाया० २; ६, १२, १६, निर० १, १, —**लकखण** त्रि० (—लक्षण)

अपराध लक्षण वाणु, अपलक्षणु वुरे लक्षण वाला, कुलक्षणी a man possessed of ominous signs or marks राय० २७६, —**संभोग** पु० (—सम्भोग) न करेख ( धर्म अधर्मते ) सम्भोग—प्राप्ति न किया हुआ ( धर्माधर्म का ) सम्भोग—प्राप्ति. experiencing the results of action not done. विशे० ३२३१, —**सुय** पु० (—श्रुत) अगीतार्थ; शास्त्रवेत्ता नहि अगीतार्थ, शास्त्रज्ञान रहित one not acquainted with the Śāstras or scriptures वव० ४, ६,

**अकयणु** त्रि० ( अकृतज्ञ—कृतमुपकारं पर सम्बन्धिन न जानातीत्यकृतज्ञः ) कृतन, करेखाने नहि जणुनार कृतज्ञ, किये हुए उपकार को भूलजाने वाला Ungrateful नाया० ६; ठा० ४, ४,

**अकयणुया** स्त्री० ( अकृतज्ञता ) कृतनता; करेख उपकारने नहि जणुयुं ते कृतज्ञता; किये हुए उपकार को भूल जाना Ingratitude “ चउहि ठाणेहिं संते गुणे णासेज्जा तंजहा—कोहेण पढिणिवेसेणं अकयणुयाण् मिच्छताहिणिवेसेण ” ठा० ४, ४,

**अकयर्थ** त्रि० ( अकृतार्थ ) अकृतार्थ—कृतार्थ नहि, निष्फल अकृतार्थ, निष्फल Unsuccessful, unhappy राय० २७६, नाया० १२,

**अकरंडुय** त्रि० ( अकरण्डक—अविद्यमानं मांस-लतयाऽनुपलक्ष्यमाणं करण्डकं पृष्ठवशा-स्थिकं यस्य देहस्याऽसावकरण्डकः ) जेना वासानां हाडकां भासथी लथी होवाथी अडार देभाता नथी तेखुं ( शरीर ) जिस शरीर के रीढ़ ( पृष्ठवंश ) की हड्डी मांस में भरी हुई होने से बाहिर नहीं दिखाई देती हो A body of which the spinal cord is not visible owing to excess of flesh



‘अकरंदुयकरागरुयगाणिम्मलसुजायणिरुवहय-  
देहधारी’ ओव० १०;

अकरण न० ( अकरण ) न० उ२पुं; न० आ२रपुं.  
नहीं करना, आचरण में नहीं लाना Omitting  
to do. ओव० ३५, भग० ६, १; वव० १, ३७,  
अकरणओ. अ० (अकरणतस्) न० उ२वा आ२श्रीने  
नहीं करने के सम्बन्ध में On account of  
omitting to do. भग० १, १,

अकरण्या स्त्री० ( अकरण्याता ) न० आ२रपुं;  
न० से२पुं. आचरण नहीं करना, सेवन नहीं  
करना Omitting to do. “अकरण्याए  
अ०मुदित्तए” ठा० २, १, “सज्जायस्स अक-  
रण्याए उभओ कालं” आव० ४, ६, भग०  
८, ६; १५, १, वेय० ४, २५;

अकरणि स्त्री० ( अकरणि ) आ२केशि व२न२थी  
क्षम उ२वानी ना पा२थी ते चिह्नाकर काम करने  
से इनकार करना. Emphatic prohibi-  
tion of an action परह० १, १;

अकरणिज्ज. त्रि० ( अकरणीय ) न० उ२वा  
योग्य कार्य, अ२कर्तव्य न करने योग्य;  
अ२कर्तव्य Improper not fit to be  
done. “मिच्छन्ति वा वितहन्ति वा असच्चन्ति  
वा अकरणिज्जन्ति वा एगहा” आया० १, १,  
७, ६१; २, १, ३, ३५;

अकरित. व० कृ० त्रि० ( अकुर्वत् ) न० उ२तो, न०  
आ२रतो. न करता हुआ; आचरण न करता  
हुआ. Not doing “भयंता अकरिता य  
बंधमोक्खपहण्णिणो” उॡत० ६, १०, पंचा०  
५, ४६;

✓ अकरिसु. कृ० धा० भू० उ० ए० ( अकार्षम् ) भे  
उॡरुं मैंने किया I did. ठा० ३, १,

✓ अकरिस्सं. कृ० धा० भू० उ० ए० ( अकार्षम् ) भे  
उॡरुं मैंने किया I did आया० १, १, १,  
५०;

अकरेमाण. व० कृ० त्रि० ( अकुर्वत् ) न० उ२तो; न०  
आ२रतो. न करता हुआ; न आचरता हुआ

Not performing. नाया० ६; भग०  
१५, १; अणुजो० २७;

अकलंक. त्रि० ( अकलङ्क ) उॡलं३-दोष रहित.  
कलंक-दोषहीन Stainless; faultless.  
पंचा० ६, २०,

अकलुण. त्रि० ( अकरुण-नास्ति करुणा यस्य यत्र  
वा ) निर्दय; दयावगर्ते दयाहीन; निर्दयी.  
Merciless, cruel नाया० ६; परह० १, ३;

अकलुस. त्रि० ( अकलुष ) क्रोधादि उॡलुपलाव  
रहित; द्वेष रहित क्रोधादि कलुषभाव रहित,  
द्वेष रहित. Not turbid; pure, clear;  
free from anger hatred etc.  
अंत० ७;

अकलेवर. पुं० ( अकलेवर ) शरीर रहित;  
सिद्धभगवान् शरीर रहित; सिद्धभगवान् One  
having no physical body; a Si-  
ddha. उॡत० १०, ३५;

अकसाइ पुं० ( अकषायिन्-कषाया न विद्यन्ते  
यस्यासावकषायी ) क्रोधादि उॡपाय रहित; अॡक-  
षायी. अकषायी; क्रोधादि विकार रहित. Free  
from passion “अकसाई विगयगेही  
य सहस्सेसु अमुच्छिए भाई” आया० १,  
६, ४, १५; भग० ६, ४; ६, ३१; जीवा० १;  
प्रव० १२६२;

अकसाइय पुं० ( अकषायिक ) उॡपाय रहित  
अॡय; अॡषायी कषायरहित जीव; अकषायी.  
A soul free from Kaṣāya i. e.  
passions such as anger etc. भग०  
८, २;

अकसाय. त्रि० ( अकषाय ) उॡपायने सर्वथा  
उॡपशम-क्षय उॡरनार कषाय का सर्वथा उॡपशम  
-क्षय करने वाला Entirely free from  
passions, anger, hatred etc. “अक-  
सायं अहक्खायं छुडमत्थस्स जिणस्स वा”  
उॡत० २८, ३३; जं० प० २, ३८;—मोहणिज्ज-

न० (-मोहनीय) हास्यादि नोकषायरूप मोहनीय कर्मनी प्रकृति. हास्यादि नोकषायरूप मोहनीय कर्म की प्रकृति the Karmic nature of Mohaniya Karma (excluding Karma) in the shape of Nokasāya (nine minor faults) such as laughter etc उत्त० ३६, १०;

**अकसायि** त्रि० (अकषायिन्) लुप्तो 'अकसाइ' शब्द. देखो 'अकसाइ' शब्द Vide 'अकसाइ.' भग० १८, १; २५, ६; २६, १; ३०, १, ४०, १.

**अकसिणा**, त्रि० (अकृत्स्न) अपूर्ण; अधुर् अपूर्णा, अधूरा Incomplete; falling short of perfection. अणुजो० ६०, पंचा० ६, ४२, (२) त्रि० अपरिपूर्ण-अकृत्स्न स्कंध-ज्येष्ठाथी अति मोटा पीन्ने स्कंध छे ते, द्विप्रदेशी भाडीने यावत् अनत परमाणुसम्बन्धी थयेव पणु ओक परमाणु ओछो छोय ते अकृत्स्नस्कंध, ज्येष्ठी रीते कभश ये त्रयु आर परमाणुओ ओछा करतां छेवट द्विप्रदेशिक स्कंध पणु अकृत्स्न स्कंध छेवाय छे अपरिपूर्ण-अकृत्स्नस्कंध-जिससे बहुत बड़ा दूसरा स्कंध है वह, द्विप्रदेशिक (दो प्रदेश वाला) परमाणु स्कंध से लेकर एक कम अनंत परमाणु तक के स्कंध तक अकृत्स्नस्कंध ही कहलाते हैं any integral part which falls short of perfection by one to innumerable atoms in relation to the whole विशेष० ८६७,—पवत्तय पु० (-प्रवर्त्तक-अकृत्स्नमपरिपूर्ण सयम प्रवर्त्तयन्ति विदधति ये ते तथा) ओक देशी निवृत्ति पाभेव एक देश से निवृत्ति पाया हुआ. one partially following the practice of self-control "अकमिणपवत्तयाणं विरयाविरयाणं एव मलु जत्तो संसारपयणु-

करणे दग्धत्थए क्वदिदंतो" पंचा० ६, ४२; अकसिणा स्त्री० (अकृत्स्ना) आरौपणा-नो-प्रायश्चित्तनो योधो प्रक्षर, ज्येष्ठा वधारे तप समाधि शके ते प्रायश्चित्त प्रायश्चित्त का चौथा प्रकार, जिसमें अधिकतप का समावेश होसके वह. The fourth variety of expiation, expiation with a larger scope for severe austerity सम० २८, ठा० ५, २;

**अकाइय** पुं० (अकायिक-नास्ति कायो येषां ते अकायास्त एवाकायिका.) डायारहित. श्रव; सिद्धलगवान् कायारहित जीव; सिद्धभगवान् An emancipated soul; a Siddha भग० ८, २; जीवा० ६, पत्र० ३;

**अकाम** पुं० (अकाम) धन्धानो अभाव; धन्धा नहि; अनिच्छा इच्छा का अभाव; अनिच्छा Absence of desire, desirelessness "तं च होज्ज अकामेणं विमरणेण पडिच्छियं" दस० ५, १, ८०. (२) न्या सर्वधन्धानी निवृत्ति थाय छे ते, मोक्ष जहाँ समस्त इच्छाओं का निवृत्ति होती है वह स्थान-मोक्ष. a state characterised by the extinction of all desires 1०, final bliss "संथव जहेज्ज अकामकामे" उत्त० १५, १, (३) त्रि० विषय-डामना रहित विषय-कामना रहित free from passions भग० ७, ७ ६, २२, ११, ११, —काम त्रि० (-काम-न विद्यते कामस्व कामोऽभिलाषो यस्य सोऽकामकामः) विषयवाचना रहित, विषयनी धन्धा वगरनो विषयभोग की इच्छा रहित free from sexual desire "संथव जहेज्ज अकामकामे" उत्त० १५, १,—किञ्च त्रि० (-कृत्य-कमनं काम इच्छा न कामोऽकामन्नेन-

कृत्यं कर्तव्यं यस्यासावकामकृत्यः ) धृच्छ विना काम इरनार विना इच्छा के काम करने वाला acting without any desire ( of gain etc. ) सूय० २, ६, १७, —छुहा स्त्री० (—सुधा ) निर्जरा नी धृच्छ विना परतत्रपले लुभ वेक्षी. निर्जरा की इच्छा विना परधीनता से भूख सहन करना involuntary endurance of hunger without any desire to put a stop to the fructification of Karma. भग० १, १;—शिगरण त्रि० (—निकरण) नेमां अनिच्छा—धृच्छाने अभाव निरक्षण—कारण छे अ्येवुं जिसमें इच्छा का अभाव कारण हो वह having its origin in absence of desire “ एषुणं अंधा मूढा तमप्यविद्धा तमपद्धलमोहजाल पल्लिद्धा अकामनिगरणं वेद्यणं वेयंतीति ” भग० ७, ७;—शिज्जरा. स्त्री० (—निर्जरा ) निर्जरा नी धृच्छविना परधीनपले लुभतरस वगेरे सहन इरवा ते. निर्जरा की इच्छा विना परधीनता से सुधा तृपा आदि का सहन करना. the act of enduring hunger, thirst etc from compulsion without any desire to put a stop to the fructification of Karma भग० ८, ६; ठा० ४, ४,—तरहा स्त्री० (—तृष्णा ) निर्जरा नी धृच्छ विना परतत्रपश तृपा वेक्षी. विना निर्जरा की इच्छा के परधीनता से तृपा सहन करना involuntary endurance of thirst, without any desire to purge away the fruits of Karma. भग० १, १,—निज्जरा. स्त्री० (—निर्जरा ) लुभे “अकामशिज्जरा” शब्द. देखो “अकामशिज्जरा” शब्द vide “अकामशिज्जरा.” क० गं० १, १६,—दंभचेरवास पुं० (—अ-

हचर्यवास ) निर्जरा नी धृच्छ विना इच्छा द्यालुथी अहचर्य पाणुं ते विना निर्जरा की इच्छा क किसीके दवाव से ब्रह्मचर्य का पालन करना. compulsory celibacy, without any desire to purge away the fruits of Karma भग० १, १;—मरण. न० (—मरण—अकामेन अनिप्सितत्वेन त्रियतेऽस्मिन्नित्यकाममरणम् ) आलभरणु; आलभावे—अज्ञानपले विषय आदिनी आसक्तिमा थतुं मरण बाल मरण; बालभाव—अज्ञानभाव ( विषय आदि की आसक्ति ) मे मरण Lit involuntary death i e, death after leading an unvirtuous life “ बालाण च अकामं तु, मरण असह भवे ” उक्त० ५, २; अकामअय त्रि० (अकामक) लुभे “अकामक” शब्द देखो “अकामक” शब्द Vide “अकामक” नाया० १६; १६; अकामक. त्रि० (अकामक) कामना—धृच्छ रहित, विषय वासना रहित कामना रहित, इच्छा रहित, विषयवासना रहित Free from desire. “अकामक परिकम्मं को ते वारिउमरिहति” सूय० १, ३, २, ७, नाया० १, (२) अनलिपशीय; धृच्छवा योग्य नहि. अनभिलषणीय; नहीं चाहने योग्य undesirable. परह० १, १, अकाममाण व० क० त्रि० (अकाममान—न कामयते असावकाममानः) धृच्छान इरतो इच्छा नहीं करता हुआ. Not desiring नाया० १६; अकामिय त्रि० (अकामिक) निरभिलाषी; धृच्छ वगरतो निरभिलाषी, विना इच्छा का. Free from desires. “ तहेव संतातंता परितंता अकामिया ” विवा० १, १; अकामिय त्रि० (अकाम्य) न धृच्छवा योग्य; अनिष्ट न चाहने लायक, अनिष्ट. Undesirable; evil राय० २६२;

**अकामिया.** स्त्री० ( : अकामिता-अकामता )  
 अनिच्छा, धृच्छानो अभाव. अनिच्छा;  
 इच्छा का अभाव Absence of desire  
 “अकामियाए चिंतांति दुःखं”, परह० १, ३,  
**अकाय** पुं० ( अकाय ) क्षयारहित श्व; सिद्ध  
 भगवान्. शरीररहित जीव; सिद्धभगवान्  
 Liberated soul, a Siddha ठा० २, ३,  
**अकारश्च** त्रि० ( अकारक ) अपथ्य अपथ्य.  
 Unwholesome. ओष० नि० २०३,  
 नाया० १३; ( २ ) न करनार-अकर्ता, क्रिया  
 नहीं करने वाला, अकर्ता-क्रिया शून्य  
 not doing; devoid of action  
 “एवं अकारश्चो अप्पा एव ते उ पगम्भिया”  
 सूय० १, १, १, १३; परह० १, २,  
**अकारग** पुं० ( अकारक ) लुप्तो “अकारश्च”  
 शब्द देखो “अकारश्च” शब्द. Vide  
 ‘अकारश्च’ परह० १, २,  
**अकारि** त्रि० ( अकारिन् ) नहि करवावाणो,  
 नहि करनार नहीं करने वाला A do-no-  
 thing, a lazy fellow. “अकारिणो त्थ  
 वज्झंति मुच्चं कारगो जणो ” उक्त० ६, ३०,  
**अकारिय.** त्रि० ( अकारित ) न करयेत्तुं. नहीं  
 कराया हुआ Not caused to be done  
 भग० ७, १; परह० २, १,  
**अकाल** पुं० ( अकाल ) अनवसर, कुवभत  
 अनवसर; असमय, बुरा वक्त Improper  
 time, unfavourable time नाया०  
 ८, १५, १६, आया० १, २, १, ६२, दसा० १,  
 १३, आव० ४, ७; ( २ ) दुष्काल, दुष्काल  
 दुष्काल, अकाल famine “अका-  
 ले वरिसइ” ठा० ७, १; ( ३ ) गोचरी आदिने  
 निषिद्धकाल; कुसमय prohibited time  
 for begging food etc. “अकाले  
 चरसि भिक्षू काल न पडिलेहसि ” दस० ५,  
 २, ५, —चारि पु० ( -चारिन् ) कुवेणा-

कुवभते गोचरी आदि करनार कुसमय में  
 गोचरी ( भिक्षा ) आदि करने वाला one who  
 begs food etc. at the prohibited  
 time. दस० ५, २, ५;—दोहल पु०  
 (-दोहद) कुवेणाये उत्पन्न थतो दोहद-गर्भिणी  
 स्त्रीने थती धृच्छा. कुसमय में गर्भिणी स्त्री को  
 उत्पन्न होने वाली इच्छा-दोहला the long-  
 ing of a pregnant woman at an  
 improper time नाया० १,—पडिवोहि.  
 त्रि० ( -प्रतिवोधिन् ) कुवेणाये-रात्रे जग-  
 नार-करनार कुसमय में-रात्रि में जगने वाला-  
 फिरने वाला a person who keeps  
 late hours “मितक्खणि अणारियाणि  
 दुस्सयणापाणि दुप्पयणावणिजाणि अकाल  
 पडिवोहियि” आया० २, ३, १, ११५,—पढण.  
 न० ( -पठन ) अकाले लक्षुवु-वांच्युं ते अ-  
 समय में पढना-वांचना studying at a  
 prohibited time पंचा० १५, २८;  
 —परिभोइ त्रि० ( -परिभोजिन् ) रात्रि  
 भोजन करनार, रात्रेभानार रात्रिभोजन  
 करने वाला taking one's food at  
 night आया० २, ३, १, ११५;—परि-  
 हीण न० ( -परिहीन-कालविलम्बो न  
 विद्यते यत्र ) धल्लु जल्दी-शीघ्र, तत्काल;  
 वगर विद्यते. तत्काल, विना विलंब, बहुत  
 जल्दी, शीघ्र instantly, immediate-  
 ly. “अकालपरिहीण चैव सुरियाभस्स अंतियं  
 पाउम्भवह ” नाया० १६;—मेह पुं०  
 (-मेव ) अकाले वरसाइ; भावु. अकाल  
 में-असमय में वर्षा rain out of season.  
 नाया० १,—वासि पु० ( -वपिन् ) भाव-  
 णो वरसाइ; कुवभते वरसनार कुसमय की  
 वर्षा, असमय में वर्षा. rain out of sea-  
 son ठा० ४, ४, ( २ ) वगर जरीआते  
 दानादि देनार ( दाक्षिण्य ) विना आवश्यक्ता  
 के दान देने वाला a person giving

alms without any need on the part of the recipient ( fig ) ठा० ४, ४;—संज्ञायकारत्र पुं० (—स्वाध्यायकारक) इवभते स्वाध्याय इरनार; अडाणे लणुनार; असमाधिनुं १५ भुं स्थानक सेवनार. कुसमय में स्वाध्याय करने वाला; अकाल में पढ़ने वाला; असमाविके १५ वें स्थानक का पालन करने वाला. one who studies scriptures at an improper time; one who exposes himself to the 15th source or cause of lack of concentration सम० २०,—समय. पुं० (—समय) विपरीत समय. विपरीत समय adverse time. नाया० १;

**अकालिय.** त्रि० ( अकालिक ) वभत पडेया पडेलांनुं; अडाणे प्राप्त थयेत्. समय से पहिले का, असमय में प्राप्त. Premature, untimely. “रुवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं” उक्त० ३२, २४,  
✓ **अकासी.** क०धा०भू०प्र०ए० (अकार्षीत्) तेले इर्थु.उसने किया He did. सम० ३; सूय० १, ५, २, २३; नाया० ८, दसा० ६, ६,

**अकाहल** त्रि० ( अकाहल—कुत्सितं हलतीति काहलं न काहल विद्यते यस्यासौ ) २५४ अक्षर भाषी. स्पष्ट अक्षर कहने वाला; स्पष्टाक्षर भाषी. Speaking distinctly. परह० २, २;

**अकिचण.** त्रि० (अकिञ्चन) डिंयन—प्रतिबंध धारक धनकनकादि रहित; निष्परिशुद्धी प्रतिबंधकारक-धनकनकादि रहित; निष्परिशुद्धी Not possessed of worldly effects; poor. दस० ६, ६६, ८, ६४; उक्त० २, १४; नाया० १०; परह० २, ५, ओव० १०, १७, प्रव० ६५७,

**अकिचणया.** स्त्री० (अकिञ्चनता) निष्परिशुद्धी पणुं निष्परिशुद्धपन Freedom from possession of worldly effects. “चउन्निहा अकिचणया परणत्ता तजहा-मण-

अकिचणया वहअकिचणया कायअकिचणया उवकरणअकिचणया” ठा० ४, ३,

**अकिञ्च** न० (अकृत्य) साधुने न इरवा येअ. साधु के न करने योग्य. A thing not fit to be done by an ascetic. पंचा० १५, २; भग० १, १०;—ठाण. न० (—स्थान) चारित्रना भूल गुणादि भांगे तेनुं अकृत्यनुं स्थान. चारित्र के मूलगुणादि को भंग करने वाला अकृत्य का स्थान. cause of an improper action violating the chief principles of right conduct. भग० ८, ६; १०, २; वव० १, ३७;

**अकिज्ज** त्रि० (अक्रय) परीदवाने येअ. नहि. न खरीदने योग्य. Unfit to be purchased. “सुक्कीयं वा सुविकीयं अकिज्जं किज्जमेव वा” दस० ७, ४५;

**अकिट्ट** त्रि० (अकृष्ट) नहि भेडेनुं; न भोडेनुं. बिना जोता हुआ, बिना खोदा हुआ. Untilled; not dug भग० ३, २,

**अकित्तण.** न० (अकीर्त्तन) अकीर्त्तन—गुणग्राम वभाणु न इरवां ते कीर्त्तन नहीं करना, गुण ग्राम का वर्णन न करना. Not praising the merits. उक्त० ३२, १५;

**अकित्ति** स्त्री० (अकीर्त्ति) अपकीर्त्ति; अपयश. अपकीर्त्ति, बुराई, अपयश, निंदा. Infamy; disrepute गच्छा० ५५,—कर. त्रि० (—कर) अपकीर्त्ति इरवावाणे. अपकीर्त्ति करने वाला, बुराई करने वाला disgraceful; defaming भग० ६, ३२,—कारय. त्रि० (—कारक) अपकीर्त्ति इरवावाणे अपकीर्त्ति-बुराई करने वाला. disgraceful, defaming. भग० १५, १,—जणअ. त्रि० (—जनक) अपकीर्त्ति इरनार अपकीर्त्ति करने वाला disgraceful, bringing on disgrace; causing ill fame. गच्छा० ५५,

**अकित्तिस** त्रि० (अकृत्रिम) असली, भूल;

स्वाभाविक; कुदरती; मनुष्यनी कृतिथी नहि  
 पनेनुं. असली, मूल; स्वाभाविक, कुदरती;  
 प्राकृतिक; मनुष्यादि की कृति से नहीं बना हुआ.  
 Natural; not artificial. जं० प० १,  
 १२; विशेष० ४७५;

**अक्रियाणं.** सं० क० अ० (अकृत्वा) न करीने;  
 कर्था पगर. बिना किये. Without doing,  
 without having done. ओव० १४२;

**अक्रिय.** पुं० ( अक्रिय ) कथिकी, अधिकरणि-  
 डी आदि सावध क्रिया रहित शरीरादि की सावध  
 क्रिया-पापक्रिया रहित Free from sin-  
 ful actions connected with the  
 body or with the use of wea-  
 pons etc. भग० ११, १; २५, ७;  
 अणुजे० १५१; ( २ ) स्त्री० श्रुवादि पदार्थों  
 ने अस्वीकार; नास्तिकपणु जीवादि पदार्थों  
 का अस्तित्व न मानना; नास्तिकपना  
 atheism, denying the existence  
 of the soul etc. "किरियं च रोयण् धीरे,  
 अक्रियं परिवज्जण् " उक्त० १८, ३३; (३)  
 त्रि० श्रुवादिना अस्तित्वनुं उत्थापन करनार,  
 नास्तिक. जीवादि के अस्तित्व का खंडन करने  
 वाला, नास्तिक. an atheist, one who  
 denies the existence of the soul  
 " अक्रिय राहु मुह दुद्धरिस " नंदा० ६,  
 सम० १,—आय पुं० (—आत्मन्) आत्मा-  
 ने अक्रिय-क्रियाविनाने भातनार साध्य  
 दर्शन पगेरे. आत्मा को अक्रिय-क्रियारहित  
 मानने वाला. a school of philosophy  
 holding that the soul is not a  
 doer, e. g. the Sāṅkhya System  
 " जे केह लोमि उ अक्रियआया, अन्नेण  
 पुहा धुयमादिसंति " सूय० १, १०, १६;  
 —वाह् पुं० (—वादिन्) श्रुवादि पदार्थना  
 अस्तित्वना अपक्षप करनार; अक्रियावादी,  
 नास्तिक, उ३; श्रुवादिमाना ट४मा वेदना अक्रि-

यावादी जीवादि पदार्थों के अस्तित्वका अपक्षप  
 करने वाला, अक्रियावादी, नास्तिक, ३६३ पाखं-  
 डियों में से ८४ वें प्रकार का अक्रियावादी an  
 atheist, one belonging to the  
 84th of the 363 kinds of here-  
 tics जो किरियमाहंसु अक्रियवाह्" सूय०  
 १, १२, ४; भग० ३०, १; ठा० ४, ४, दगा०  
 ६, ३; प्रव० १२०२;

**अक्रिया स्त्री० (अक्रिया)** दुष्ट क्रिया, मिथ्यात्व  
 आदि युक्त अनुष्ठान दुष्ट क्रिया, मिथ्यात्व आदि  
 सहित अनुष्ठान Heretical action, ir-  
 religious action, wicked action.  
 "अक्रिया तिविहा पणत्ता तंजहा " ठा०  
 ३, ३, भग० २, ५, ७, २; ८, ६; ३५, १; ४१, १;  
 श्राव० ४, ८, सम० १, सूय० २, १, १७,

**अक्रिय त्रि० (अक्रीत)** सधुना उद्देश्यी नहि  
 प्रीदेश. साधु के लिये न खरीदा हुआ Not  
 purchased with the object of  
 giving to an ascetic भग० ७, १;

**अकीरमाण त्रि० ( अकुर्वाण )** न करतो.  
 नहीं करता हुआ Not doing भग० १५, १;

**अकील त्रि० (अकील)** भीला विनातुं कीले बिना  
 का. Without a nail, having no  
 nail. पंचा० ७, १०;

**अकुओभय त्रि० ( अकुतोभय—न विद्यते कुतः  
 कस्माद् भयं यस्य )** जेने कापथी लय नथी ते  
 जिसका किसीका भी भय न हो वह Quite  
 fearless. " आणण् अभिसमेवा अकुओ  
 भयं " आया० १, १, ३, १२४;

**अकुक्कुअ त्रि० ( अकुक्कु—कुस्मितं कृजति  
 आक्रन्दतीति कुक्कुजो न कुक्कुजोऽकुक्कुजः )** दुःख-  
 ना उद्गार विनातो;—हायवेय-आक्रन्दन  
 रहित दुःख के उद्गार-हायविलाप-आक्रन्दन  
 रहित Unlamenting, free from  
 groans "अकुक्कुमो तथ हियामण्जजा"  
 उता० २१, १८,

अकुक्कुय-अ त्रि० ( अकुक्कुच ) भुभ्रविकार  
रहित. मुखविकार रहित. Free from dis-  
tortion of the face. आया० १, ६, ४, १४;  
(२) अशिष्ट-भाउ येषां विनातो. अशिष्ट-अस-  
भ्य-भाइचेष्टा रहित. free from vulgar  
gestures. “ अकुक्कुओ णिसाएज्जा  
णय वित्तासए परं” उक्त० २, २०;

अकुडिल वि० (अकुडिल) वांड वगरतुं, आंटी  
धुंटी वगरतुं, सीधुं; लुब्धाध वगरतुं; भायारहित;  
सरल कुटिलता रहित; सरल, माया  
रहित; सीधा; निष्कपट Straight, even;  
straightforward. ओव० २१; भग०  
६, ३३; जीवा० ३, ३,

अकुतूहल त्रि० (अकुतूहल) कुतूहल-आश्चर्य  
वगरतो, ध्रुवलादि विधाना यमत्कार ज्ञेया डे  
पताववानी ध्रुव विनातो कुतूहल रहित;  
आश्चर्य रहित; इन्द्रजालादि विद्या के चमत्कार  
वताने अथवा देखने की इच्छासे रहित De-  
void of curiosity, free from a  
desire to see jugglery oneself or  
to show it to others. “नियावित्ती  
अचवले अमाई अकुतूहले” उक्त० ३४, २७;  
११, १०;

अकुत्थ त्रि० (अकुत्थ) शीलरूप सुगंध रहित.  
शीलरूप सुगंध रहित Devoid of the  
sweet smell of good or right  
conduct पंचा० १४, ३४;

अकुमार पुं० (अकुमार) कुमार-कुंवारा नहि ते  
जो कुंवारा नहीं वह; विवाहित पुरुष A  
married person. सम० ३०;

अकुमारभूअ-य. त्रि० ( अकुमारभूत ) गृह-  
स्थाश्रमी; परल्लोको. विवाहित; जो कुंवारा  
न हो; गृहस्थाश्रमी A householder.  
“अकुमारभूए जे केई कुमारभूएत्तिहंए”  
सम० ३०, ( २ ) आश्रमधारी नहि ते

जो बालब्रह्मचारी न हो. one not a celi-  
bate from birth. सम० ३०;

अकुव्वमाण. व० क० त्रि० (अकुर्वत) न करतो नहीं  
करता हुआ Not doing “धणियं तु पुत्राहं  
अकुव्वमाणो” उक्त० १३, २१;

अकुसल. न० (अकुशल) अशुभ, माहु; पराण;  
अभंगल अशुभ, अभंगल. Inauspicious,  
bad ओव० १६; परह० १, २, (२) त्रि० अमणु;  
वक्तव्यावक्तव्यनी समज विनातो अजाण;  
वक्तव्यावक्तव्यमूढ. ignorant; indiscre-  
et. प्रव० ६०३;—कम्मोदय पुं०  
(—कर्मोदय) अशुभ कर्मो उदय. अशुभ कर्मों  
का उदय rise or maturity of bad  
Karma. पंचा० १, ३५;—जोग.  
पुं० (—योग) अशुभयोग मन, वचन अने  
कायातो व्यापार अशुभयोग-मन, वचन और  
काया का व्यापार evil activities of  
mind, tongue and body. प्रव० ६०३;  
—निवित्ति. स्त्री० (—निवृत्ति) अशुभयोग-  
पापना व्यापारथी निवृत्ति. पाप के व्यापार से  
निवृत्ति. freedom from or absti-  
nence from sinful operations (of  
mind, speech and body) प्रव० ६०३;  
—मण. न० (—मनस्) आर्तध्यानादि युक्त  
मन आर्तध्यानादि सहित मन. a troubled  
mind. भग० २५, ७,—वई. स्त्री० (—वाच्)  
अभंगल वचन, अशुभ वचन अभंगल वचन;  
अशुभ वचन. improper speech; in-  
auspicious words. भग० २५, ७;

अकुसील. त्रि (अकुशील) शुद्धाचारी; सुशील.  
शुद्धाचारी, सुशील; अच्छे चाल चलन वाला.  
Of unblemished conduct, “अकुसी-  
ले सया भिक्खू” सूय० १, ६, २८;

अकुहय. त्रि० (अकुहक) ध्रुवलादि कुतूहल  
रहित इन्द्रजालादि कुतूहल रहित Free  
from curiosity concerning jugg-

glory etc. "अलोलुपु अकुहण अमाई" दस० ६, ३, १०,

**अक्रूर.** त्रि० (अक्रूर) क्रूरता रहित क्रूरता रहित Free from cruelty प्रव० १३७०,

**अकेवल.** त्रि० (अकेवल-न विद्यते केवल मस्मिन्नित्यकेवलम्) अशुद्ध. अशुद्ध Impure. "एस ठायो अणारिणु अकेवले अप्पडिपुत्ते" सूय० २, २, ५७,

**अकेवलि.** पुं० (अकेवलिन्) ज्ञेयज्ञानी नहि, सर्वज्ञ नहि केवलज्ञान रहित, असर्वज्ञ. Not possessed of perfect knowledge, not omniscient. भग० १५, १,

**अकोऊहल्ल.** त्रि० (अकुतूहल) नाटकदि कुतूहल रहित नाटकादि कुतूहल रहित Free from curiosity concerning dramas etc. "अकोऊहल्ले य सया स पुज्जो" दस० ६, ३, १०;

**अकोप्प.** त्रि० (अकोप्य) दोष करवा योग्य नहि; अदूषणीय. कोप करने के अयोग्य; अदूषणाय Unblamable faultless "अकोप्प जंघजुयला" जीवा० ३, ३, पयह० १, २,

**अकोविय** त्रि० (अकोपित) दूषण रहित. Faultless "आरिय उवसपज्जे, सब्ब धम्मसकोवियं" सूय० १, ८, १३,

**अकोविय.** पुं० (अकोविद) अपठित, शास्त्र भोध रहित पाठित्यरहित; शास्त्रज्ञान रहित Illiterate; ignorant of the scriptures दस० ६, २, २३; "सूढे षोयाणुगामिणु दौवि एणु अकोविया" सूय० १, १, २, १८;

**अकोसायंत.** व० क० त्रि० (अकोशायमान) पीयेतु, विक्षसपामेतु; प्रक्षुब्धित विकास पाया हुआ; प्रफुल्लित Full-blown. ओव० १०, जीवा० ३, ३,

**अकोसिया.** स्त्री० (अकोशिका) अनामनी अक्षे मिठाई-मुण्डी एक प्रकार की मिठाई A kind of sweet-meat. जीवा० ३, ३,

**अकोहरा.** त्रि० (अक्रोधन) क्रोध वगरतुं; गुस्सा रहित. क्रोध रहित; गुस्सा रहित Free from anger. "अकोहरो सच्चरणु तवस्सी" सूय० १, १०, १२;

**अकंत** त्रि० (अकान्त) अप्रिय; क्षति रहित. अप्रिय; क्षति रहित Devoid of lustre; unpleasant सूय० १, १, ४, ६, नाया० ८;

**अकंत** त्रि० (आक्रान्त) पीडित, व्याथेय; पराभव पामेय पीडित, दवाया हुआ; पराजित. Afflicted, overpowered "सब्बे अकंतदुक्खा य" सूय० १, १, ४, ६, पि० नि० भा० ३७, (२) पुं० पगनेो पृथ्वी साथे संघर्षणु यतां नीडणतो वायु, केणे अयित्त वायु डडेवाय छे पाँव का पृथिवी के साथ संघर्षण होने से उत्पन्न होने वाला अचित्त (जीव रहित) वायु. the inanimate wind produced by the contact of the foot with the ground ठा० ५, ३,

**अकंद** पुं० (आक्रन्द) रडतुं-रैतुं ते, दुःखनी भूम पाडनी ते. रोना, दुःख से चिल्लाना Crying. सु० च० ८, ७६, प्रव० ४४०,

**अकतूवरी** स्त्री० (अकतूवरी) अक्षे जलनी शुभ्रवतस्पति एक प्रकार की गुच्छ वनस्पति A kind of vegetable growth. पत्र० १,

**अकवौदिया** स्त्री० (अकवौन्दिका) अक्षे जलनी वेत एक जाति की वेत. A kind of creeper पत्र० १;

✓ **अक्रम** धा० I. (आक्रम्) आक्रमणु डणु; पराभव करवे। आक्रमण करना, पराभव करना To assault, to defeat. (२) पगवडे जमीन साथे मसणु. पैरों में जमीन पर मसलना to trample down:

अक्कमेज्जा वि०-भग० १८, ३,

अक्कमित्ता सं० क० भग० १४, ३;

अक्कमिड. हे० क० सु० च० १, २८०;



**अक्रिष्ट.** त्रि० ( अक्लिष्ट ) अप्पाधित; उलेश रहित; स्वस्थ. बाधा रहित; क्लेश रहित, तंदुरुस्त. Sound; healthy. भग० ३, २, जं० प० २, २६,

**अक्रिय.** त्रि० ( अक्रिय ) क्रिया रहित; निष्क्रिय. क्रिया रहित; निष्क्रिय. Inactive; free from action. विशेष० ३२;

**अक्कुट्ट** त्रि० ( आकुट्ट ) उठोर वचनधी-आकेश वचनधी ओलावेस. कर्कश-कठोर वचन से बुलवाया हुआ Called out with harsh words. असहं विसदृचत्तदेहे अक्कुट्टे व हए व लूसिए वा ” दस० १०, १, १३;

**अक्केज्ज.** त्रि० ( अक्केय ) अपरीष्टवा योअ्य नहि ते. न खरादने योग्य Unworthy of being purchased. विशेष० २६६४;

**अक्केय.** त्रि० ( अक्केय्य ) अपरीष्टीन शक्य तेवुं; अमूल्य, अमूल्य, जो खरीदा न जासके Invaluable; priceless प्रव० १२४४;

✓ **अक्कोस** धा० I. ( आ०कुश् ) आकरी वचन उडेवां; उपेका आपवेा; धमकी आपवी. कठोर वचन कहना, उलहना देना, धमकी देना. To scold, to upbraid.

अक्कोसह. ठा० ५, १; सु० च० १५, १५१;

अक्कोसंति. अंत० ६, ३; नाया० १६;

अक्कोसेज्ज. वि० उक्त० २, २४;

**अक्कोस** पुं० ( आक्कोश ) आकेश वचन; उठोर-निष्ठुर वचन; तिरस्कार लरेस वचन. कठोर वचन, तिरस्कारयुक्त वचन Harsh words. उक्त० १, ३८; १५, ३; प्रव० ६६४; भग० ८, ८,—परिसह पुं० (—परिषह ) आकेश-तिरस्कार लरेस वचनतो परिषह; साधुना २२ परिषहमानो ६२ मे परिषह कठोर अथवा तिरस्कार भरे वचनों को सहन करना; साधु के २२ परीषहों में से १२वाँ

परीषह the 12th of the 22 Parisa has of Sādhus viz. the bearing of harsh words. उक्त० २, १;

**अक्कोस.** न० ( \* अक्कोश ) साधुने योभासुं रडेवाने अयोअ्य क्षेत्र, उे जेनी अेड अे उे त्रएु आलुअे नदी, पहाड उे हिंसक पशु डेअ्य तेवुं क्षेत्र. साधु के चौमासा न करने योग्य स्थान, जिसके कि, एक दो या तीनों ओर नदी, पहाड या हिंसक पशु हों A place improper for a Sādhu to live in during the monsoon. वव० १०;

**अक्कोसणा** स्त्री० ( आक्कोशना-आक्कोश ) लुअे “अक्कोस” शब्द. देखो ‘अक्कोस’ शब्द. Vide “अक्कोस” नाया० १६;

**अक्कोह.** त्रि० ( अक्कोध ) लुअे “अक्कोहण” शब्द देखो ‘अक्कोहण’ शब्द Vide “अक्कोहण.” भग० १, ३;

**अक्कोहण.** त्रि० ( अक्कोधन ) लुअे “अक्कोहण” शब्द देखो ‘अक्कोहण’ शब्द. Vide “अक्कोहण” उक्त० ११, ५;

**अक्ख.** पुं० ( अक्ख ) गाडानी धरी. गाडी का धुरा. An axle of a car. उक्त० ५, १४; सूय० १, ७, ३०; २, १, ५६; भग० ७, ६; ओष० नि० ८, ५४६; ओव० ४०; अणुजो० १०; ( २ ) रभवाना पासा. खेलने का पासा. a die to play with. सूय० २, २, २३; पिं० निं० भा० ७; विशेष० ५८२; ( ३ ) इद्राक्षिनी मणुके. रुद्राक्ष का मनका. a bead of Rudrākṣa ( a kind of tree ). अणुक्त० ३, १; ( ४ ) चार हाथ परिमित अेड अरुपः धनुष्य. चार हाथ प्रमाण धनुष्य. the length of a bow. भग०

६, ७; सम० ६६; अणुजो० १३३;  
 ( ५ ) श्रव; आत्मा जीव, आत्मा a soul.  
 “जीवो अकखो अथवावयवभोयणगुणायि-  
 षोपण” विशेष० ८६; ( ६ ) ध्रिय. इन्द्रिय a  
 sense; an organ. विशेष० ६१; १५६७;  
 निसी० ७, १४,—उवंग न० (—उपाङ्ग-  
 अक्षय्य धुर उपाङ्गोऽभ्यञ्जनम् ) गाडानी  
 धरीने तेल वगेरे योपडवाभां आवेछे ते.  
 गाडी के धुरे में जो तैल आदि चुपड़ा जाता  
 है वह. oil etc. used for lubricat-  
 ing the axle of a cart. गच्छा०  
 ५८;—चम्म न० (—चर्मन् ) पाणी डाढवानो  
 डेश. पानी निकालने की चरस a large  
 leather bucket for drawing  
 water. “अकखचम्मं उट्टगंडदेसं” नाया०  
 ६; ८,—वाडग. पुं० (—पाटक ) योरस  
 आसन; आब्बेड चौकी. a square stool.  
 “तेसियं बहुमज्जदेसभाप पत्तेयं २ वहरा-  
 मया अकखवाडगा पयसात्ता” जीवा० ३,  
 ४,—सुत्तमाला स्त्री० (—सूत्रमाला ) रुद्र-  
 क्षणी माला. रुद्राक्ष की माला a rosary  
 having Rudrākṣa beads. “अकख-  
 सूत्तमाला विव गण्डिज्जमाणेहि ” अणु-  
 जो० ३;—सोय. न० (—स्रोतस् ) गाडानी  
 पैडानी धरीनुं अरंडुं—छिद्र. गाडी के धुरे  
 का तिरछा छेद. a slanting hole in  
 the axle of the wheel of a  
 cart. भग० ७, ६; जं० प० २, ३६;  
 अकखइय. त्रि० (अक्षतिक) अक्षय; अविनाशी  
 अविनाशी; नाश न होने वाला Undecay-  
 ing, indestructible. “अकखइयवी-  
 षुणं अप्पाणं कम्मबंधणेणं मुहरि” परह०  
 १, २;  
 अकखओदय त्रि० (अक्षयोदक-अक्षयं शाश्व-  
 तमविनाशयुदकं जल यस्य) अणुट पाणीवाणु;  
 सद्य पाणीथी लरेनु अखट पानी वाला;

सदा पानी से भरा रहने वाला Ever filled  
 with water. “जहा से सयंभूरमणे  
 उदही अकखओदप्” उक्त० ११, ३०,

अकखओवसम पुं० (अक्षयोपशम) क्षयोपश-  
 मतो अभाव; कर्मना उदितभागनो क्षय अने  
 अनुदितभागनो उपशम ते क्षयोपशम, तेनो  
 अभाव. क्षयोपशम का अभाव; कर्म के  
 उदितभाग के क्षय और अनुदितभाग के  
 उपशमको क्षयोपशम कहते हैं उसका अभाव.  
 Absence of Kṣayopāśama ī. e.  
 destruction of that portion of  
 Karma which is ripe for fruit  
 and subsidence of that which  
 is not yet ripe. विशेष० १०४;

अकखण न० (आख्यान) उट्टेनु; आख्यान  
 उट्टेनु कथा कहना. Narration पि० नि०  
 भा० ५०४,

अकखम त्रि० (अक्षम) असमर्थ; अनुयित;  
 अथोऽय असमर्थ, अयोग्य Powerless,  
 improper ठा० ३, ३, ५, १;

अकखमा स्त्री० (अक्षमा) क्षमानो अभाव;  
 सहनशीलता नहि. क्षमा अथवा सहनशीलता  
 का अभाव Absence of forgiveness,  
 want of patience. भग० १२, ५,  
 सम० ४२,

अकखय. पुं० (अक्षत) अक्षत-अक्षीशुद्ध योभा  
 पूर्ण (सावुत) चावल Unbroken grains  
 of rice. प्रव० १३४६, पचा० ४, १०,  
 (२) त्रि० परिपूर्ण; अक्षत. परिपूर्ण, अखड.  
 whole. सम० १,

अकखय त्रि० (अक्षय) अविनाशी; अक्षय; नाश  
 वगैरे नाश रहित, अविनाशी, अक्षय Unde-  
 caying; imperishable. नाया० १, ७;  
 सम० १; ७; भग० १, १, ६, ३३; १८, १०;  
 ओव० १, राय० २३; जीवा० ३, ४, सु० च०  
 ३, १८४, पचा० ४, ४७, काप० २, २४, अत्र०

६, ११,—आचारचरित त्रि० (—आचार-  
चरित) अखंड आचार-चरित्रवाणु. अखंड  
आचार-चरित्र वाला of unbroken,  
uninterrupted right conduct  
आव० ४, ८,—गिहि पु० (—निधि) अक्षय  
भंडार; अणुट भंडार अखूट भंडार, अक्षय भं-  
डार inexhaustible treasure. “अ-  
क्षयगिहि च अणुवट्टेस्सामि” विवा० १, ७, ना  
या० २,—गीवि स्त्री० (—नीवि-निव्ययति  
निवीयते वेति) अणुट मुडी अक्षय पूंजी  
inexhaustible wealth. नाया० २,  
—तईया स्त्री० (—तृतीया) अभात्री,   
वैशाख सुदि ३ अक्षयतृतीया, वैशाख सुदि ३  
the third day of the bright-half  
of the month of Vaisākha सू०  
प० १२,—सुख न० (—सुख) शश्वत सुभुत  
स्थान; मोक्ष शाश्वत सुख का स्थान, मोक्ष  
final emancipation permanent  
bliss भक्त० ६६,

अक्षर न० (अक्षर) स्वर व्यंजनरूप अक्षर  
माहा स्वर व्यंजनरूप वर्णमाला Letters  
of the alphabet consisting of  
vowels and consonants कं० प० ४,  
६; क० ग० १, ६, राय० १७०, पञ्च० ३६,  
ओव० १६, ४३, विशेष० ६७, ४६१, अणुजो०  
१३, १४६; ( २ ) सज्ञाक्षर, व्यंजनाक्षर  
अने लघ्विअक्षर अक्षरश्रुतना त्रयु भेद-  
माने अक्ष सजाक्षर, व्यंजनाक्षर और लघ्वि-  
अक्षर में से कोई भी एक; अक्षरश्रुत का एक भेद  
one of the three kinds of Aksara  
Śrutas “ से कि तं अक्षरमुयं २ तिविहं  
पञ्च तंजहा-सन्नवखरं वंजणवखरं लद्धिक्खर ”  
नदी० ( ३ ) अथल; अविनश्वर अविचल;  
अविनाशी constant, indestruc-  
tible विशेष० ४५७,—अणुसार. पु०  
(—अनुसार) अथ अथने अनुसरतु ते श्रुत-

शास्त्र का अनुसरण acting according  
to scriptural texts विशेष० १४४;  
—उवल्लंभ पुं० (—उपलभ) श्रुतज्ञानने  
उपयोग श्रुतज्ञान का उपयोग use of  
scriptural knowledge विशेष० ४६६,  
—गुण पुं० (—गुण) अनंतागमा, पर्याय,  
उच्यार वगेरे अक्षरना गुणु. अनंतागम, पर्याय,  
उच्चार वगेरह अक्षर के गुण any of the  
properties of letters such as Ana-  
ntāgama, Paryāya, Uchchāra  
etc सूय० १, १, १, ६,—पुट्टिया स्त्री० (—पु-  
ष्टिका) अक्षर लिपिमांती ९मी लिपि. अठारह  
लिपियों में से ९वीं लिपि का नाम the 9th  
of the 18 scripts पञ्च० १,—अभव.  
त्रि० (—अभव) अक्षरना उच्यारथी उत्पन्न थतु;  
अक्षरोच्यारण्य अक्षर के उच्चारण से उत्पन्न  
होने वाला produced by the sound  
of letters विशेष० १६७,—लंभ. पुं०  
(—लभ) शब्दनी जति, अर्थ वगेरेतु ज्ञान  
शब्द की जाति, अर्थ वगेरह का ज्ञान know-  
ledge of gender, meaning etc.  
of words “ अक्षरलंभो सरणी ण होज्ज  
पुरिसाडवरणविरणायण ” विशेष० ६०, ११७;  
१४३, ४७४,—लभ पुं० (—लभ) लुओ  
“ अक्षरलंभ ” शब्द देखो ‘अक्षरलंभ’  
शब्द vide “अक्षरलंभ”. विशेष० १२५,  
—संबद्ध पुं० (—सम्बद्ध) जे शब्दमां अक्षर  
—वर्ण व्यक्त-रूप लोय ते जिस शब्द में  
अक्षर स्पष्ट हो वह a word in which  
the letters are clear or distinct  
ठा० २, ३,—सरिणवाय पुं० (—सन्निपात)  
अक्षरनेतो सयोग, अक्षरनेतुं जेडाणु अक्षरों  
का सयोग combination of letters  
“ अजिणायणं जिणसंकासाणं सम्बखरस-  
रिणवायाण ” ठा० ३, ४,—सम न० (—सम)  
हम्भ, दीर्घ, श्रुत वगेरे जे अक्षर जेवा लोय

तेषां भेदेषां ते, गेयस्वरविशेष अक्षरों का शुद्ध उच्चारण, गेय ( गाने का ) स्वर विशेष phonetic pronunciation of a letter अणुजो० १२८; ठा० ६, १; —समास पुं० (—समास ) अक्षरों के अक्षरों के परस्पर भेदाप-बोधाद्यु अकारादि वर्णों का परस्पर संयोग combination of two or three or more letters क० गं० १, ७,—सुय पुं० (—श्रुत ) श्रुतज्ञान के अनेक भेद श्रुतज्ञान का एक भेद a variety of Śrutajñāna ( scriptural knowledge ) नदी० ३७,

**अक्षरत्र** पुं० (अक्षरक) दास, गुलाम. दास, गुलाम A servant, a slave गोवाल्लय य भयण्डक्खरण पुत्ते य धूय सुणहाए”पि० नि० ३६७;

**अक्षलित्र-य** त्रि० (अस्खलित) अक्षलित, स्पष्ट, योद्धुं, अस्खलित, स्पष्ट Without a break, clear, fluent पंचा० ४, २७; अणुजो० १३—चरित्र त्रि० (—चरित्र ) जेनुं चरित्र अक्षलित छे ते अस्खलित चरित्र वाला of unbroken or unswerving right conduct गच्छा० ४१;

**अक्षवात्र-य** पुं० (अक्षपाद) न्यायदर्शनना प्रणेता अक्षपाद नामना आचार्य, गौतम मुनि न्यायदर्शन का रचयिता अक्षपाद नामक आचार्य, गौतम मुनि The name of the founder of the Nyāya philosophy is the preceptor named Aksapāda विशे० १५०८,

**अक्षविय** त्रि० (अक्षपित) क्षय इरेख नहि, अपावेख नहि नष्ट नहीं किया हुआ Not destroyed विशे० ५२६,

✓ **अक्षवा** धा० 1 (आ-ख्या) इहेतुं, इथन इतुं,

निरूपण इतुं कहना; कथन करना, निरूपण करना To narrate, to tell, to relate अक्षवाड हे० कृ० भग० २, १; दस० ८, २०, अक्षवाइय न० (आख्यातिक) साध्य क्रियापद (यथाऽकरोत् करोतीत्यादि) साध्य क्रियापद. An inflected verb परह० २, २, अक्षवाइया स्त्री० (आख्यायिका) वार्ता, इतिहास इथा-इतइथा कहानी; दंतकथा A legend, a fable पत्र० ११, मम० ६, आया० २, ११, १७०, (य) —ठाण न० (—स्थान) इथा, वार्ता-इतवानुस्थान कथा, कहानी कहने की जगह a place where tales or stories are narrated आया० २, ११, १७०, (य) —णिसिसय न० (—निश्चित) इतइथा आश्रित जुहाणुं, मृपा-जुहुं नयमे भेद दंतकथा पर अवलम्बित मूठ, मूठ का नवो भेद falsehood based upon a legend, ninth variety of falsehood निसी० १२, ३२, ठा० १०, १, प्रव० ८६६,

**अक्षवाडग** पु० (अक्षवाट-अक्षवाट) अभाडो-भेदोने कुस्ती इतवानी जग्या; प्रेक्षोने भेसवानी ओटलो, मजलसनु स्थान पहलवानो की कुस्ती करने की जगह, अखाडा, दर्शको के बैठने का चबूतरा, मजलिस का स्थान A gymnasium, a verandah for spectators, a place where a festival is held “तेस्विणं बहुसमरमणिज्जाण भूमिभागारणं बहुमज्जदेसभाए पत्तेय रवहरामए अक्षवाडगे” राय० ६७, भग० ६, ५, ३, ३, ठा० ३, ३;

**अक्षवाय** त्रि० (आख्यात) इहेतुं; इतुं; प्रकशित, प्रकृत Told, related, revealed “सति मेव दुवे ठाण अक्षवाया मारणति य” उत० ५, २, “सुय मे पाउस तेण भगवया एमववायं” ठा०

१, १; उत्त० ८, १३; २४, ३; आया० १, १, १; दस० ६, ४, १; भग० २, १; ६, १; १२, ४; विवा० १; दसा० १, २; सम० १; ओव० ३५;—आयार त्रि० (—आचार) आ०यात आ०यार वाणे। आख्यात आचार वाला। ( one ) of unbroken right conduct. वव० ३, ३;—पव्वज्जा. स्त्री० (—प्रव्रज्या—आख्यातेन धर्मदर्शनेन प्रव्रज्या ) धर्मदेशना सांखणी षोडश पाभीने दीक्षा लेवी ते; प्रव्रज्याते अये भेद. धर्मोपदेश के श्रवण से बोध प्राप्त कर दीक्षा लेना; प्रव्रज्या का एक भेद. renouncing worldly life as a result of religious teaching; one of the modes of entering religious order. ठा० ३, २; ४, ४;

**अक्खायग.** पुं० ( आख्यायक ) शुभाशुभ इल इहेनार; निमित्त प्रकाशक. शुभाशुभ फल कहने वाला; निमित्त ज्ञानी. One who foretells the good or bad consequences of omens. जीवा० ३, ३;

**अक्खायार.** पुं० ( आख्यातारः—आख्यातृ ) इहेनार; इथन इरनार कहने वाला. A teller. “ पुटो पावाउया सब्बे अक्खायारो सय सयं ” सूय० १, १, ३, १३,

**अक्खि** न० ( अक्षि—अरनुत्ते विषयानिति ) नेत्र; अक्षु; आंभ नेत्र; आंख. An eye. “ अक्खिहिं य णासाहिं य जिच्चमाहिं ओट्ठेहिं य ” विवा० १, २, नाया० १,—अंतर न० (—अन्तर) आंभनु छिद्र. आख का छेद the pupil of the eye “ अक्खिन्तरेसु दुवे ” विवा० १, १;—राग. पुं० (—राग) आंभनु अंजन सेयरा आदि आखो का अंजन collyrium for the eye “ आसूणि मक्खिरागं च गिद्धुवघाय कम्मगं ” सूय० १, ६, १५.—वेयणा स्त्री०

(—वेदना) आंभनी पीडा—वेदना; आंभने रोग. आंखों का रोग; आंख की वेदना—पीडा. pain in the eye; an eye-disease. विवा० १, ४;

**अक्खित्त.** त्रि० ( आक्षिप्त ) आकर्षण इरेल; अयेल आकर्षित; खीचा हुआ. Attracted. पि० नि० ३१३; नाया० १६; ( २ ) ललया-वेल; लालच आपेल. लालच में फँसा हुआ; जिसे लालच दिया गया हो वह enticed. नाया० २; ( ३ ) भुकी दीधेल; डूँडी दीधेल; तल दीधेल छोड़ दिया गया; फँका हुआ. abandoned; thrown away. पंचा० १२, ४१;

✓ **अक्खिव.** धा० I. ( आनक्षिप् ) आक्षेप इरेवा; आकर्षण इरयुं आक्षेप करना, आकर्षण करना. To attract. ( २ ) स्वीकारयुं. स्वीकार करना. to accept.

**अक्खिवइ.** “ अक्खिवइ मयां विसमत्थसत्थ-सुहुमत्थकहणेण ” सु० च० २, ३८०;

**अक्खिवरण.** न० ( आक्षेपण ) चित्तनी व्यग्रता-आकुलता इरवी. आकुलता; चित्त की व्यग्रता. Distraction of the mind. परह० १, ३;

**अक्खीण.** त्रि० ( अक्षीण ) क्षय न पाभेयुं; पुइ न थयेयुं अधूरा; जय को न पहुँचा हुआ. Not completely consumed; unexhausted “ अक्खीणदव्वसारा ” परह० १, ३; ठा० ४, १,—भंभ. त्रि० (—भंभ) अये इदेशने क्षय नथी इयेते. जिसने क्लेश का जय न किया हो वह one who has not put an end to troubles. दस० ६, १, ११;—पडि-भोइ. पुं० (—परिभोगिन्—अक्षीणमक्षी-णायुत्कमप्रासुकं परिभुञ्जत इत्येवं शीला अक्षीण परिभोगिनः ) सयेत आहार लेनार. मनेन आहार करने वाला one whose

अथोग्य भूमि. ऊसर भूमि Salt, unfertile land. ठा० ४, ४;—वासि. त्रि० (—वर्षिन्) उपर नमीनभां वरसनार ऊसर भूमि में बरसने वाला. (rain) pouring on barren land. ठा० ४, ४, ( २ ) पात्रा पात्रनी पगीक्षा विना दान देनार. पात्राऽपात्र की परीक्षा के विना दान देने वाला (one) who gives alms without discrimination. ठा० ४, ४;

अक्खेव. पुं० ( आक्षेप ) पूर्वपक्ष, आशंका डरी पुञ्जुं ते; प्रश्न. पूर्वपक्ष; शंका करके प्रश्न पूछना. Stating one's doubts and objections as to the soundness of a reasoned principle "तस्सक्खेवपमोक्खं च अचयंतो तहि दिञ्चो" उक्त० २५, १३; भग० १, २, विशेष० १४४४, २८०५; ( २ ) भीजना हाथमाधी द्रव्यनुं हरणुं डरयुं ते; गौणचोरीना १९ भेद दूसरे के हाथ में से द्रव्य चुराना; गौणचोरी का १९ वॉ भेद. the 19th variety of minor theft viz snatching away anything from the hands of another person परह० १, ३;

अक्खेवणी. स्त्री० ( आक्षेपणी—आक्षिप्यते मोहात्तत्त्वं प्रत्याकृष्यते श्रोताऽनचेत्याक्षेपणी ) लेथी श्रोतानुं तत्त्व प्रत्ये आक्षेपणुं थाय तेवी धर्मइथा; आर धर्मइथामानी अेड. धर्मकथा, जिससे श्रोताओं का तत्त्व का और आकर्षण हो; चार प्रकार की धर्मकथाओं में से एक Religious preaching which begets love for eternal truth in the hearers, one of the four varieties of religious preaching "अक्खेवणीकहा चउच्चिहा पन्नत्ता तंजहा-आयार-क्खेवणी ववहारक्खेवणी परात्तिक्वेवणी तिठ्ठिवायक्खेवणी" ठा० ४, २; ओव० २१;

अक्खेवि त्रि० ( आक्षेपिन् ) वशीकरण आदिथी पारंहुं द्रव्य हरनार वशीकरणादि से दूसरे का द्रव्य हरण करने वाला. One who takes away the wealth of another by means of fascination or enchantment. परह० १, ३;

अक्खोड. धा० I. ( आ०स्फुट् ) वआदिडने अधर राप्पी थोडुड अटडनुं—पंभेरनुं. वस्त्रादि को अधर रखकर थोडासा झटकना—खंखेरना. To flap clothes etc; to whisk. अक्खोडिजा. वि० दस० ४;

अक्खोड. पुं० ( अक्षोट ) अक्षरोटनुं अड. अक्षरोट का फाड़. A walnut tree. ( २ ) न० तेनुं इण अक्षरोट. the fruit of a walnut tree. पञ्च० १७; प्रव० ६६;

अक्खोभ. त्रि० ( अक्षोभ ) क्षोभ रहित; निश्चल, अउग क्षोभ रहित; निश्चल. Un-agitated; firm "अक्खोभे सागरो व्वथिमिण्" परह० २, ५; एत्थुस्सगो अक्खोभो होई जिणा चियणो " पंचा० ४, २८, जं० प० ३, ४२; नंदी० ११; ( २ ) अंतगड सूत्रना पहिला वर्गना आठमा अध्ययननुं नाम अंतगड सूत्र के पहिले वर्ग के आठवें अध्याय का नाम. the 8th chapter of the first section of Antagada. अंत० १, ८; ( ३ ) अंधकवृष्णि राजनी धारणी राजणीना पुत्र, डे नेनेमनाथ प्रभु पासे दीक्षा लध गुणरयणु तप डरी सोण वर्षनी प्रवन्था पाणी अेड भासनी संथारो डरी शत्रुंजय उपर सिद्ध थया. अंधकवृष्णि राजा को धारणी रानी का पुत्र, जिसने नेमिनाथ प्रभु से दीक्षा ली थी और गुणरयण तप करके तथा सोलह वर्ष तक दीक्षित अवस्था में रहकर अंत में एक मास का निरशन किया और शत्रुंजय ऊपर मोक्ष प्राप्त किया. the son of Dhāraṇī the queen of Andhaka

Vrisni, who took Diksā from Neminātha, observed Gunarayana penance, practised Pravrajyā (asceticism) for 16 years, gave up food and drink for one month, and obtained salvation on Śatruñjaya अत० २, १,

**अक्खोवञ्जण** न० ( अक्षोपाञ्जन-अक्षस्य उपाञ्जनमक्षोपाञ्जनम् ) गाडानी धरीने तेह आदि पदार्थ योपडवा ते गाडी के धुरे को जो तैल आदि लगाया जाता है वह Oil etc used for lubricating the axle of a cart भग० ७, १;

**अक्खोह** त्रि० ( अक्षोभ ) लुओ " अक्खोभ " श०६. देखो " अक्खोभ " शब्द Vide " अक्खोभ " नाया० ६;

**अखड** त्रि० ( अखण्ड ) अखंड-परिपूर्ण, भागेलुं-तुटेलुं नडि सावुत, अखड, परिपूर्ण Entire, unbroken प्रव० ८४६, पंचा० ४, ३४, नंदी० स्थ० ४०; नाया० ७;—**चारित्त** न० ( -चारित्र ) अखंड-निर्दोष चारित्र निर्दोष चारित्र faultless right conduct, unswerving right conduct प्रव० ८४६, —**दत्त** त्रि० ( -दन्त ) जेना दातनी पत्रीसी अखंड होय ते, परिपूर्ण दांतवाणे अखंड दातो की बत्तीसी वाला; परिपूर्ण दातो वाला ( one ) who has not lost any tooth जीवा० ३, ओव०—**महव्वञ्ज** त्रि० ( -महाव्रत ) अखंडित महाव्रत वाणे अखंडित महाव्रत वाला ( one ) of unswerving ascetic vows भक्त० २५; —**विरइभाव** पुं० ( -विरतिभाव ) परिपूर्ण विरतिपण्यु, सर्व विरतिपण्यु पूर्ण विरतिपण, सर्व विरतिपण complete asceticism

or renunciation पंचा० १, ३३, **अखंडिय** त्रि० ( अखण्डित ) लुओ " अखंड " श०६ देखो " अखड " शब्द. Vide " अखड. " प्रव० ५८८;

**अखणपण** त्रि० ( अमल ) साध, स्वच्छ. साफ. Clear, clean सु० च० २, ५६८;

**अखज्ज** न० ( अखाद्य ) अपाण, पावाने अपोष्य पदार्थ अभक्ष्य; न खाने योग्य A substance unfit for eating. नाया० १६;

**अखाग.पु०** ( आख्याक ) ओ नामने ओइ अनार्य देश एक अनार्य देश का नाम. Name of an Anārya country. प्रव० १५६७;

**अखिल** त्रि० ( अखिल ) आणु, संपूर्ण, समस्त; अणुं समस्त, सम्पूर्ण Whole, entire. " अखिले अग्निदे अणिएयचारी " सूय० १, ७, २८;

**अखेम** त्रि० ( अक्षेम ) उपद्रव सहित. उपद्रव सहित Not free from annoyance. ठा० ४, २, दसा० ७, १२;—**खुव पुं०** ( -रूप ) उपद्रव सहित देभाव-आकार उपद्रव सहित दृश्य-आकार. ( a form or appearance ) with marks of trouble upon it ठा० ४, २;

**अखेयराण** त्रि० ( अखेदज्ञ ) पीजना दुःखने न जणुनार-अनभिस दूसरे के दुःख को न जानने वाला-अनभिज्ञ Ignorant of or unsympathetic towards the sufferings of others आया० १, २, ३, ८०,

**अग्रह** स्त्री० ( अगति ) अभ्रशत गति, नरक आदि गति कुगति, नरक गति Perdition; damnation " दुविहा खेरइया परणत्ता तंजहा-गइसमावज्जगा चेव अग्रइसमावज्जगा चेव जाव वेमाणिया " ठा० २, २;

—समावरण. पुं० (—समापन्न ) नरकादि गतिने पाभेक्ष. नरकादि कुगति को प्राप्त. gone to perdition. ठा० २, २;  
**अगंठिल्ल**. त्रि० (अग्रन्थिमत् ) गांठे वगरनुं विना गांठ का; गांठ रहित. Without a knot; devoid of knots. भग० १६, ४;  
**अगंतूण**. सं० कृ० अ० ( अगत्वा ) गया विना; न लधने विना गये; न जाकर. Without having gone; without going. पन्न० ३६;  
**अगंध**. पुं० ( अग्रन्ध-न विद्यते ग्रन्थो बाह्याभ्यन्तरोऽस्येत्यग्रन्धः ) निर्ग्रन्थ; साधु. निर्ग्रन्ध; परिग्रह रहित साधु. A Sādhu; an ascetic. “पावं कम्मं अकुव्वमाणे एस महं अगंध वियाहिए” आया० १, ८, ३, २०७; जं० प० १, ३१;  
**अगंध**. त्रि० (अग्रन्ध) गंध रहित; गंधविनाजुं. गंध रहित; विना बास का. Devoid of smell. भग० २, १०; ११, १; २०, २०;  
**अगंधरण**. पुं० (अग्रन्धन ) सर्पनी अेक जलत, के जे आगमां अणवानुं पसंद करे पणु अेर पाधुं युसे नहि. सर्प की एक जाति, जो अग्नि में जलना पसंद करे पर जहर को पीछा न चूसे. A species of serpents which would never suck back poison even if fire is applied to them. “नेच्छंति वंतयं भोचुं कुले जाया अगंधणे” दस० २, ६; उत्त० २२, ४२;  
**अगड**. पुं० (कूप ) झूवा. कूप; कूआं, A well. आया० २, १, २, २१; भग० ५, ७; ८, ६; पन्न० २; नाया० ८; १६; ठा० २, ४; ओव० ३८; पिं० नि० भा० १७; ओघ० नि० ६६; विशेष० ७६४; अणुजो० १३४;—**तड**. पुं० (—तट ) कुवाणे डाडे कूप का तट. A border of a well नाया० ८; १६;  
**—ददुर**. पुं० (—दूर) कुवाणे देडे कूप-

मंडक; कूप का मंडक. a frog in a well. नाया० ८; १६;—**मह**. पुं० (—मह) कुवाणे भोच्छवः इपनिमिते महोत्सव कूप का महोत्सव. a festival in connection with a well. आया० २, १, २, १२;

**अगड**. त्रि० (\*अगत-अज्ञात) न ज्ञाणेलं. बे मालूम; न जाना हुआ. Not known; unknown. वव० ६, १४,—**सुय**. त्रि० (—श्रुत) आचारंग, निशीथ आदि सूत्रने जेणे अभ्यास क्यो नथी ते. आचारंग, निशीथ आदि सूत्रों का जिसने अभ्यास न किया हो वह. one who has not studied Sūtras (e.g. Āchārāṅga, Nīśītha etc.). वव० ६, १४;

**अगडदत्त**. पुं० ( अगडदत्त. ) शंखपुरना सुंदर राजनी सुलसा राज्णीने पुत्र, के जेने पोतानी स्त्री महनमंजरीनुं दुश्चरित्र जेध वैराग्य उत्पन्न थयो हुतो तेनी विस्तृत कथा उत्त० ४ अ० नी टीका मां छे. शंखपुर के सुंदर राजा की सुलसा राणा का पुत्र, जिसको अपनी पत्नी का दुश्चरित्र देखकर वैराग्य उत्पन्न हुआ था. इसकी विस्तृत कथा उत्त० ४ अ० की टीका में है. The name of a son of Sulasā queen of Sundara, the king of Śāṅkhapura, who became an ascetic on knowing the bad character of his wife Madana-mañjarī (for details of this vide Uttarādh. ch. com. 4th ). उत्त० टी० ४;

**अगदिय**. त्रि० (अग्रथित) प्रतिअन्ध वगरनेा; आहारादिमां अगृह्ण-अनासक्त प्रतिबन्ध रहित; आहारादि में लोलुपता रहित. Without restrictions; free from restrictions; free from craving for delicious food etc. “अणुण-ए अगदिए अदीणे अविमणे ” परह० २, १;



अग्रसंत व० कृ० त्रि० ( अग्रणयत् ) न गणु-  
रते। न गिनता हुआ Not minding;  
not caring for. भक्त० ११५,

अगणि पुं० ( अग्नि ) अग्नि; आग,  
अग्नि. Fire “ इंगलं अगणि अचिं  
अलायं वा सजोह्यं ” दस० ८, ८; १०,  
१, २, पञ्च० २, पिं० नि० २५६, आया० २,  
१०, १६६, विशेष० ५६८,—काय-अ पुं०  
(-काय ) अग्निना ज्व, तेजसाय अग्नि के  
जीव, तेजस्काय के जीव. creatures with  
bodies of the element of fire  
“अगणिकाद्या भते, अहुणो ज्जालिए समाणे  
महाकम्मतराए चव ” भग० १, ८; ५, ६; ६,  
६; ७, १०; ८, ६; १४, ५, १५, १;  
१६, १, १८, ६; १६, ५; नाया० १४, १६,  
आया० १, ७, ३, २१०. दसा० ७, १;  
—ज्झामिय त्रि० ( -ध्मात् ) अग्निथी  
दजेल-अजेल अग्नि से झुलसा हुआ-जला  
हुआ scorched by fire भग० १५, १;  
—ज्झूसिय त्रि० ( :-जोपित ) अग्निथी  
सेवाअेल अग्नि से गर्म किया हुआ heat-  
ed with fire भग० १५, १,—ज्झूसिय  
त्रि० ( \*-सोपित ) अग्निथी अजेल-रूपांतर  
पाभेल अग्नि से जला हुआ-रूपान्तर पाया हुआ  
transformed on account of be-  
ing heated with fire भग० १५, १,  
—णिक्खत्त त्रि० ( -निक्षिप्त ) अग्निनी  
अदर नाअेलु अग्नि में डाला हुआ thrown  
into fire “अगणिणिक्खत्तं अफा-  
सुय अरोसणिज्जं लाभे सते णो पडिगाहेज्जा”  
आया० २, १, ६, ३६;—परिणामिय. त्रि०  
(-परिणामित ) अग्निरूपे परिणाम पमा-  
उल अग्निरूप में परिणामित transfor-  
med into fire भग० ५, २, १५, १,  
—सेविय त्रि० ( -सेवित ) अग्निथी  
सेवाअेल अग्निद्वारा उष्ण किया हुआ

heated with fire. भग० ५, २;  
अगणिय सं० कृ० अ० ( अगणित्वा ) न गणु-  
क्षरीने, अवगणुना क्षरीने न गिनकर, अवग-  
णना करके Having disregarded,  
having despised भक्त० १३८;

अगणेमाण व० कृ० त्रि० ( अग्रणयत् ) नहि  
गणुक्षरते। वेपर्वाह Not minding.  
नाया० ६;

अगत्थि पुं० ( अगस्ति ) अे नाभते ८८ अह-  
भांते ४५ भे अह ८८ ग्रहों में से ४५ वें ग्रह  
का नाम Name of the 45th of the  
88 planets. ठा० २, ३, सू० प० २०,

अगत्थिय पुं० ( अगस्तिक ) अगत्थियानु आड;  
अे आडने धोला तथा राता पुलो आवे छे,  
अेना पातरा आअलीनां पातरा जेवां होय छे  
अगस्त का भाव, इस भाव के सफेद और लाल  
फूल होते हैं तथा इमली के समान पत्ते होते  
हैं A kind of tree with white  
and red flowers and leaves like  
those of a tamarind tree अणुत्त०  
३, १;

अग्रम न० ( अग्रम ) आकाश आकाश Sky,  
ether. भग० २०, २,

अग्रामिय न० ( अग्रामिक ) जेना पाड-गाथा  
वगेरे परस्पर सरभा नथी अेयु श्रुत, आ-  
आरागादि डालिड श्रुत वह श्रुत ( शास्त्र ),  
जिसके पाठ, गाथा वगैरह परस्पर समान न  
हो, आचारागादि कालिक श्रुत A scripture  
in which the Gāthās etc are  
not harmonious in form, e g.  
Āchāraṅga etc “ अग्रामिय का-  
लियसुयं ” नदी० ४३; विशेष० ५४६;

अग्रम्म त्रि० ( अग्रम्य ) नयाने योग्य नहि ते  
न जाने योग्य, पहुंच से बाहिर Unfit for  
restorting to. परह० १, २, (२) छां०  
गतिदीड अया योग्य नहि ते, भा अहेन वगेरे.

रतिक्रीड़ा के अयोग्य; मा, वहिन आदि those with whom sexual connection is prohibited, e. g. a mother, a sister etc परह० १, २, —गामि पु० (—गामिन्) मा, थडेन वगेरे साथे व्यलियार सेवनार मा, वहिन वगैरह के साथ व्यभिचार करने वाला. an incestuous person. परह० २, १;

**अगय.** त्रि० (अगत) नहि गयेल नही गया हुआ Not gone. भग० ८, ७; ११, १०;

**अगर** पु० (आकर) भाषु-लेभाथी सोनु, रूपु वगेरे अनि० पदार्थ तीक्ष्ण ते खान A mine, e. g. of gold, silver etc. अणुजो० १३१; (२) भीक्षना अगर निमक की क्यारी. a salt pan अणुजो० १३३;

**अगर** पुं० (अगर) अगर-येक नततो धूप-सुगंधी पदार्थ. अगर धूप, A kind of incense, अणुजो० १३३;

**अगरला.** स्त्री० (अगरला) ले वालीनी अदर अक्षर, अर्थ वगेरे स्पष्ट होय ते वाली स्पष्ट अक्षर और अर्थ वाली वाली Distinct and perspicuous speech “अगरलाए अमम्मणाए सच्चक्खरसखिणवायाए” (‘अगरलाएत्ति’ सुविभक्ताक्षरतया) ओव० ३४;

**अगरहिय** त्रि० (अगर्हित) जेणे पापनी गर्हा-निंदा नथी करेले ते जिसने पाप की निंदा न की हो (One) who has not expressed censure for sins परह० १, २,

**अगरिह** त्रि० (अगर्ह्य) अनिन्द्य; निंदाते योग्य नहि ते निंदा के अयोग्य, अनिन्द्य Unworthy of censure or blame. “तहाविसे अगरिहे अचेत्ते जे समाहिए” आया० १, ८, ८, १४,

**अगरु.न०** (अगरु) अगरयन्दन; येक नततो सुगंधी पदार्थ. अगर; एक जाति का सुगन्धित

पदार्थ. Aloe wood, a kind of fragrant sandal wood. “कुठं तगर अगुरुं संपिटं सम्मसुरसिरेणं” सूय० १, ४, २, ८; जावा० ३, ४,—गंधिय त्रि० (—गन्धित) अगर यन्दनतो धूपआपेल अगरचन्दन से धूप दिया हुआ. perfumed with the incense of sandal wood etc तरडु०—पुड पुं० (—पुट) अगरतो पुडो. अगर का पुडा a packet of aloe wood. “अगरुपुडाण वा लवंगपुडाणं वा वासपुडाणं वा” जं० प०—वर पुं० (—वर) कृष्णागर, काणो अगर कृष्णागर, काला अगर, black aloe wood. नाया० १७;

**अगरुलहु** त्रि० (अगरुलघु) ज्यो “अगरुलहु” शब्द देखो ‘अगरुलहु’ शब्द Vide “अगरुलहु” क० गं० १, २५;

**अगलुअ** पुं० (अगरुक) अगर, कृष्णागर. अगर; एक जाति की सुगन्धित लकड़ी. Black aloe wood ओव० ३८;

**अगविह्व** त्रि० (अगवेषित) आहारादिनी गवेषणा-तपास नहि करेले विना खोजा हुआ आहारादि Not sought or searched (e. g. food etc) “अगविह्वस्स उ गहणं न होई नय अगाहियस्स परिभोगो” पिं० नि० ७८;

**अगवेसिय** सं० कृ० अ० (अगवेषित्वा) गवेषणा विना; शोध-तपास कर्था अगर विना खोजे. Without having searched निस्सी० २, ४८; ४, १६, ६, ७, १५, ३४,

**अगहण** त्रि० (अग्रहण) जे पुद्गल वर्गणा औदारिकादि शरीररूपे ग्रहण न थई शके ते जिस पुद्गल वर्गण का औदारिकादि शरीर रूप से ग्रहण न होसके वह. Material molecules which are nonassimilable into the physical body. क० गं० ५, ७५;—अंतरिय. त्रि० (—अन्तरित) ग्रहण न थई शके तेवी वर्गणाने

आंतरे रहेल प्रहण न हो सके ऐसी वर्गणा के अंतर पर रहा हुआ separated by an interval of non-assimilable material molecules. क० गं० ५, ७५;

**अगाहिय.** त्रि० ( अगृहीत ) नहि अहणु इरेल, अस्वीकारेल अस्वीकृत, बिना ग्रहण किया हुआ. Unaccepted. पिं० निं० ७८; प्रव० ६२७;

**अगाह.त्रि०** ( +अगाह ) तत्त्वनिष्ठ, जेणे शास्त्रे अवगाहेल छे ते तत्त्वज्ञ, जिसने शास्त्रों का खूब अध्ययन किया हो वह. One who has profoundly studied the scriptures सूय० १, १३, १३; ( २ ) त्रि० ताव वगेरेनी साधारणु वेदना. ज्वर वगैरह का साधारण कष्ट an ordinary physical malady such as fever etc. वेय० ५, ३८;—**पण** त्रि० ( -प्रज्ञ ) तत्त्वमां निष्ठा पाभेदी जेनी प्रज्ञा-समज छे ते जिसकी प्रज्ञा-बुद्धि तत्त्वनिष्ठ हो ( one ) who has understood the eternal reality “अगाहपणणे सुविभावियप्पा, अन्न जण पन्नसा परिहवेज्जा” सूय० १, १३, १३;

**अगामिय** त्रि० ( अगामिक ) आगल आववा वाजुं. भविष्य में होने वाला, आने वाला Arriving, pending in future नाया० १५,

**अगामिया** स्त्री० ( अगामिका ) जेनी अदर डोर्ष गाभ नथी तेवी अटवी ऐसा जगल, जिसमें कोई गांव न हो A forest region in which there is no village ओव० ३६; भग० १५, १,

**अगार.** पुं० ( अगार ) धर; मडान घर. A house “ समरेसु य अगारेसु सधीसु य महापहे ” उक्त० १, २६, भग० ८, ६; नाया० १; कप्प० १, १; ( २ ) गृहस्थाश्रम, गृहवास गृहस्थाश्रम the life of a married person. भग० १५, १, ( ३ )

छुटगत; मोक्षण. कूटछाट, बन्धन रहित. absence of severity. भग० १५, १; ( ४ ) छुटगतवाणे धर्म, आवड धर्म. आवकों का धर्म the religion of a jain layman ओव० २७;—**दाह.** पुं० ( -दाह ) धरमा आग लागवी; धर सणगजुं. घर जलना, घर में आग लगनी. catching of fire by a house. ओव० २७; आया० २, ३, ८०,—**बंधण.** न० ( -बन्धन ) पुत्र, इलत्र, धन, धान्यादि गृहस्थधन. स्त्री, पुत्र, धन, धान्य आदि का बंधन a worldly tie which binds a man to a son, wife, wealth etc “ एव समुद्धिय भिक्खू, वोसिजा-गारबंधणं ” सूय० १, ३, ३, ७,—**वास.** पुं० ( -वास ) गृहवास, गृहस्थाश्रम गृहस्थाश्रम worldly life of a married man. “ अगारवासमज्जे वसित्ता ” भग० १५, १, उक्त० २, २६; निर० ३, ४, कप्प० ७, २२७;

**अगारस्थ** पुं० ( अगारस्थ-अगारं गृहं, तत् तिष्ठन्तीति अगारस्था ) गृहस्थ, गृहस्थाश्रमी. गृहस्थ, गृहस्थाश्रमी A householder, a married man leading a worldly life पिं० निं० ३१४,

**अगारव** त्रि० ( अगौरव ) ऋद्धि वगेरेना अलिमानथी गहित ऋद्धि वगैरह के आभेमान से रहित Free from the pride of spiritual attainments परह० २, ५;

**अगारविल्ल** त्रि० ( अगर्विष्ट ) गर्व-भेद रहित निरहंकारी Free from the intoxication of pride क० गं० १, ५६;

**अगारि** पुं० ( अगारिन् ) गृहस्थ, गृहस्थाश्रमी. गृहस्थ A married man leading a worldly life; a householder.

‘ अगारिणो वि समणा भवतु. सेवति उ तेवि-

तहप्पगारं ” सूय० २, ६, ६; उत्त० ५, १६;  
२३; दस० ६, ५८; कप्प० ६, २;—कम्म-  
न० (—कर्मन् ) गृहस्थनुं धर्म-आयरणु;  
सावध क्रिया गृहस्थ का आचरण; सावध  
क्रिया actions of a householder.  
“णिकलम्म से सेवह गारिकम्मं ण पारए होइ  
विमोयणाए ” सूय० १, १३, ११;

अगाह त्रि० ( अगाध ) अगाध-थाग वगरनुं;  
गभीर अथाह Fathomless, deep  
दस० ७, ३६, ठा० ४, ४;

अगिज्झ त्रि० ( अग्राह्य ) हाथथी लथ शक्य  
नहि तेवु हाथ से न ग्रहण करने योग्य  
Incapable of being held in the  
hand “ तत्रो अगिज्झा परणत्ता, तंजहा  
समए पएसे परमाणू ” ठा० ३, २, पिं०  
नि० ५४५,

अगिणि पुं० ( अग्नि ) अग्नि देवता. अग्नि देवता  
Fire, fire god उत्त० ३६, १०६;—ज्झा-  
भिय. त्रि० (—ध्मापित ) अग्निथी धमायेलुं.  
अग्नि से धौका हुआ heated with fire  
by means of bellows भग० ५, २;

अगिरहमाण. व० कृ० त्रि० ( अगृह्णत् ) अलु  
न डरेतो, ग्रहण न करता हुआ. ( One )  
not taking पिं० नि० १११;

अगिद्ध त्रि० ( अगृह्ण ) आसक्त नहि-अना-  
सक्त, लोडुपी नहि अनासक्त, खानपानादि  
मे लोलुपता न रखने वाला Not addicted  
to; not enticed by, not greedy  
of food “ अगिद्धे सहफासेसु आरंभेसु  
अणिसिए ” सूय० १, ६, ३५, १, १, ४,  
४; दस० १०, १, १६, भग० १४, ७,  
नाया० १७;

अगिला द्वा० ( अग्लानि ) अज्ञानि-भेदने  
अभाव, उत्साह; डोश. ग्लानि-खेद का अभाव;  
उत्साह; जोश. Absence of depress-  
ion; enthusiasm. “ कुज्जा भिववू

गिलाणस्स अगिलाए समाहिए ” सूय० १,  
३, ३, २०. “ अगिलाए संगिरहह अगिलाए  
उवगिरहह अगिलाए भत्तेणं पाणेणं विण-  
येण वेयावडियं करेह ” भग० ५, ४, “अगि-  
लाए संगिरहमाणे अगिलाए उवगिरहमाणे”  
भग० ५, ६; “ कायव्वमगिलायओ ”  
( अग्लान्यैवकार्यम् ) उत्त० २६, १०; वव०  
२, ७; ठा० ५, १; पंचा० १५, २६; ओव०  
३४;

अगिलाण त्रि० ( अग्लान ) अज्ञानि रहित;  
उत्साही, थाडविनाते। ग्लानि रहित-उत्साही,  
जोशीला Buoyant in spirits, en-  
thusiastic नाया० १; ५;

अगिह त्रि० ( अगृह ) धरेतो त्याग डरेतार  
( मुनि ). घर का त्याग करने वाला ( मुनि ).  
Houseless, ( an ascetic ) who  
has abandoned his house. कप्प०  
६, ३०,

अगिहिभूय. त्रि० ( अगृहीभूत् ) गृहस्था-  
श्रमी नहि थयेल जो गृहस्थाश्रमी न हुआ हो.  
One who has not become a  
householder वव० २, १६,

अगीय. पुं० ( अगीत ) शास्त्रने अजानु;  
अगीतार्थ शास्त्र का अजान One igno-  
rant of scriptures पंचा० ११, ६;

अगीयत्थ पुं० ( अगीतार्थ ) शास्त्रने अजानु.  
शास्त्र को न जानने वाला One ignorant  
of scriptures. जीवा० १, गच्छा०  
४६;

अगुण पुं० ( अगुण ) अगुण-अविनय, प्रमाद  
आदि अगुण. अविनय, प्रमाद आदि दोष  
A vice like immodesty, fatuity  
etc दस० ५, २, ४१, ६, ३, ११; सु०  
च० १, ४, ( २ ) त्रि० गुण रहित; गुण  
वगरने। गुण रहित destitute of  
virtue दस० ५, २, ४१, ६, ३, ११;

सु० च० १, ४;—पेहि त्रि० (—प्रेक्षिन्—  
अगुणान्पेक्षते तच्छीलश्च यः ) अथगुणु न्नेवा  
वाणो; दोषदर्शी दोष-अवगुण देखने वाला.  
fault finding, captious. भग० २, १,  
दस० २, २, ४१;

अगुणतीस. त्रि० ( एकोनविंशत् ) अगुण-  
त्रीश; २९ उनतीस, २९ Twenty-nine;  
29 क० प० २, २५,

अगुत्त त्रि० (अगुत्स) मन, वचन अने कायाअे  
करी पापथी गुप्त-रक्षित थयेलेो नहि. गुप्ति  
रहित. गुप्ति रहित; जो मन, वचन और काया  
के पाप से रहित न हो. Not free from  
sin arising from mind, speech  
and action. उत्त० ३४, २१, आया० १, १,  
२, १४, पंचा० १६, १६,—इन्द्रिय त्रि०  
(—इन्द्रिय ) नेत्रे धृष्टिये गोपनी नथी ते  
इन्द्रियाधीन; जिसने इन्द्रियों का दमन न  
किया हो one who has not subdu-  
ed the senses नाया० ४;

अगुत्ति स्त्री० ( अगुत्ति ) गुप्तिनेो अभाव,  
मन, वचन अने कायाने पापथी अथावधानेो  
अभाव गुप्ति का अभाव; मन, वचन और  
काया को पाप से न वचाना Not forti-  
fying the senses against mental  
and physical sins “ तत्रो अगुत्तिओ  
परणसाओ, तंजहा—मणअगुत्ती वयअगुत्ती  
कायअगुत्ती ” ठा० ३, १, दस० ६, ५६,  
पि० नि० ६३, परह० १, २,•

अगुरु पु० ( अगुरु ) अगर यदन अगर  
Aloe wood, a kind of sandal  
wood जं० प० २, २६,—वर पुं०  
(—वर ) कृष्णागर कृष्णागर. black aloe  
wood नाया० १,

अगुरुअ. न० ( अगुरुक ) अगुरुलघु नाम  
कर्म; नामकर्मनी अेक प्रकृति अगुरुलघु  
नामकर्म, नामकर्म की एक प्रकृति The

Nāmakarma called Aguru-  
laghu, a variety of Nāmakarma  
क० गं० २, ६,

अगुरुलघुग न० ( अगुरुलघुक ) लुभेो  
“अगुरुअ”शब्द देखेो ‘अगुरुअ’ शब्द Vide  
“ अगुरुअ ”. क० प० ४, २०,

अगुरुलघु त्रि० ( अगुरुलघु ) अगुरुलघु नहि ते,  
ने भारे नहि अने लघु पथु नहि ते जो  
भारी और हलका न हो Any thing  
neither very heavy nor very  
light विशे० ६६, ४६१, पत्र० १३, ठा०  
१, १, जं० प० २, २६, क० गं० १, ४७;  
—चउ. न० (—चतुष्क ) अगुरुलघुनाम,  
उपघातनाम, पराघातनाम अने उच्छ्वास  
नाम अे नामकर्मनी यार प्रकृति अगुरु-  
लघुनाम, उपघातनाम, पराघातनाम और  
उच्छ्वास नाम ये नामकर्म की ४ प्रकृतियां  
the group of the four varieties  
of Nāmakarma viz Agurulaghu-  
nāma, Upaghātanāma, Parā-  
ghātanāma and Uchchvāsa-  
nāma. क० ग० १, २६;—चउक्क न०  
(—चतुष्क ) अगुरुलघु १, उपघात २, पराघात ३  
अने श्वासोच्छ्वास ४, अे नामकर्मनी यार  
प्रकृतियोनेो समुदाय नामकर्म की-अगुरुलघु १,  
उपघात २, पराघात ३ और श्वासोच्छ्वासरूप ४  
इन चार प्रकृतियों का समुदाय the group  
of the four species of Nāma-  
karma, viz 1, Agurulaghu, 2,  
Upaghāta, 3, Parāghāta and  
4, Śvāsochchhivāsa क० ग० १,  
४७,—णाम न० (—नामन् ) नामकर्मनेो  
अेक भेद, ३ नेना उदयथी एव अति भारे  
नहि तेम अति लघु नहि तेवु दारीर पाभे  
ते नामकर्मनी अगुरुलघु नामे प्रकृति.  
नामकर्म की जिस प्रकृति के उदय से जीव

बहुत भारी या बहुत हलके शरीर वाला नहीं होता उस प्रकृति का नाम. a variety of Nāmakarma by the rise of which the soul acquires a body neither very light nor very heavy. सम० २८,—परिणाम. पुं० (—परिणाम ) अगुरुलघुरुपे परिणति विशेष; अगुरुलघुरुपे पर्याय. ऐसा पर्याय जो अगुरुलघु हो. modification in the form of Agurulaghu. “ अगुरुलघुपरिणामेणं भन्ते ! कतिविहे परणत्ते ? गोयमा ! एगागारे परणत्ते’ पञ्च० १३, ठा० १०, १; सम० २२; अगुरुलघुय. त्रि० (अगुरुलघुक) जेभां गुरुता-ला-रेपणुं नथी तेम लघुता-ललकापणु नथी तेवा द्रव्य, गुणु अने पर्याय, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश, काण, एव अने यडिक्कासिया पुद्गल-लाथा, मन अने कर्म योग्य द्रव्य-लाव देश्या, दृष्टि, दर्शन, ज्ञान, अज्ञान, संज्ञा, मनो ज्ञेग, वचनज्ञेग, साकारोपयोग अने अनाकारोपयोग अे सर्व अगुरुलघु जणुवा वे द्रव्य, गुण अथवा पर्याय जिनमें गुरुत्व-भारीपन और लघुत्व-हलकापन नहीं है. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश, काल, जीव और चउफासिया पुद्गल अर्थात् भाषा, मन और कर्मयोग्य द्रव्य-भाव लेश्या दृष्टि दर्शन, ज्ञान, अज्ञान, संज्ञा, मनोयोग वचनयोग, साकार, अनाकार उपयोग ये सब अगुरुलघु हैं. A substance, quality etc not being very heavy or very light; e. g medium of motion and rest, space, time, life, mind, knowledge etc. भग० १, ६; २, १; १०; प्रव० १२७७; —गुरा. पुं० (—गुरा ) ज्ञानादिगुणु, के जे गुरु पणु नथी अने लघु पणु नथी भाटे अगुरु लघु ज्ञानादिगुण, जो कि, गुरु भी नहीं है और लघु भी नहीं हैं. a quality e g.

knowledge etc. which is neither heavy nor light. भग० ११, १०; अगेज्झ. त्रि० (अग्राह्य) अणु इरवा योअ नडि ग्रहण करने के अयोग्य. Unacceptable. भग० २०, २; अगेहि. स्त्री० (अगृद्धि) अनासक्ति; लोडुपताने अलाव. अनासक्ति, खानपानादि की लोलुपता का अभाव. Absence of greediness for delicious food etc. भग० १, ८; अगोविय. त्रि० (अगोपित) नडि छुपावेद; प्रगट; पुद्गुं प्रकट, जाहिर. Manifest, unconcealed. “सव्वधम्ममगोवियं” सूय० १, ८, १३; अगग. न० (अग्र) अग्र भाग; आगलो भाग आगे का हिस्सा. The forepart. नाया० १८; दसा० ६, १; अणुजो० १२८; सू० प० १; पिं० नि० ३५७; ओघ० नि० ७०; ( २ ) टोय; अशी; उपलो भाग. अनी; नोक. top; edge. “ कुसगेणं तु मुंजणु ” उक्त० ६, ४४; ७, २३, ( ३ ) छेडाने भाग; प्रांतभाग; किनारी; वस्त्रने छेडा. अंतिम भाग; किनार; वस्त्र का पल्ला. end, border of a garment. राय० ८१; ( ४ ) लवोपग्राही-अघातिकर्म भवोपग्राही-अघातिकर्म. a karma which does not destroy the qualities of the soul. “अगं च मूलं च विगिं च धीरे” आया० १, ३, २, १८३, ( ५ ) परिमाणु; वज्जन. वजन, माप. weight, measure. नंदी० १४, ( ६ ) प्रधान-रत्नादि. प्रधान-रत्नादि. jewels etc. any thing prominent नाया० १; १६; सूय० २, ३, ३; अगग. त्रि० (अग्र्य-अग्रे भवमग्र्यम्) अग्रेसर; प्रधान; शिरोमणुि अगुआ, मुखिया. Chief; leading “ अगं वणिण्हि आहियं ” सूय० १, १, २, ३, जं० प० २, ३३; —अणीअ. न० (—अनीक) मोर्यानुं सै-य.

भोरचे की सेना. the van of an army. “जेणेव भरहस्स रणणो अग्गाणीअं तेणे-  
व उवागच्छति” जं० प० नदी० २६;—उज्जाण.  
न० (—उद्यान) नगरनी ७४२तुं श्रेष्ठ विद्यान.  
नगर के बाहिर का श्रेष्ठ बगीचा the best  
garden outside a town. “हृत्थिसी-  
सयस्स रायरस्स बहिया अग्गुज्जाणे सत्थस-  
स्सिण्वेसं करेति” नाया० ८, ६, १२, १६;  
—दय न० (—उदक) लवणु समुद्रनी व२ये  
व२य सोण ७७२ जेवन उंउं पाणी छे तेना  
उपर जे भे गाउनी पाणीनी शिभा वध धट  
थाय छे ते लवण समुद्र के बीचो बीच  
सोलह हजार योजन ऊंडा पानी है उसपर जो  
दो कोस के पानी की शिखा न्यूनाधिक होती  
है वह the waves, in the centre  
of Lavana ocean (16000 yojana-  
nas in depth) rising and  
falling to a height of 4 miles  
“लवणस्स रां समुद्दस्स सट्ठियागसाहस्सीओ  
अग्गोदयं धारंति” जीवा० ३, ४, सम० ६०,  
—केश. पुं० (—केश) वलाग्र; केशने अग्र-  
भाग. केश-बाल का अग्र भाग the fore-  
part of the hair, the tip of a  
hair. नाया० २, भग० ६, ३३,—जीह न०  
(\*जिह्व-जिह्वाग्रम्) उलने अग्रभाग; जि-  
ह्वाग्र. जीभ के आगे का भाग, जिह्वाग्र the  
tip of the tongue “अवदालियव-  
यणविवरनिस्सालियग्गजीहे” उवा० २, ६२,  
—तापस. पुं० (—तापस) धनिष्ठा नक्षत्रं  
गोत्र. धनिष्ठा नक्षत्र का गोत्र Gotra or  
family origin of the Dhanisthā  
constellation “धणिष्ठाणक्खत्ते किं गोत्ते  
पण्यत्ते? अग्गतावसगोत्ते पण्यत्ते” सू०  
प० १०,—द्वार. न० (—द्वार) आगलुं आरलुं  
आगे का दरवाजा the outer door,  
front door. ओघ० नि० २६२, प्रव० ६३६,

—द्वारणिज्जामग पु० (—द्वारनिर्यामक)  
आगला दरवाजा पास उला रहेनार निर्यामक  
साधु. अगले दरवाजे के पास खड़ा रहने वाला  
निर्यामक साधु a Niryamaka Sādhu  
who stands at the outer door.  
ओघ० नि० २६२; प्रव० ६३६,—पपस पु०  
(—प्रदेश) आगलो प्रदेश-भाग. अगला हिस्सा.  
front part, anterior portion.  
प्रव० १३२;—पिंड पुं० (—पिण्ड) भि-  
क्षा आपवाभाटे अथवा डागडा, कुतराने ना-  
भवा भाटे पड़ेलेथी डाढी राभेले भोराडने।  
भाग भिक्षा देने के लिये अथवा कौश्रो वा कुत्तों  
को खिलाने के लिये पहिले से निकाला हुआ  
भोजन का हिस्सा a portion of food  
which is set apart for mendi-  
cants or crows and dogs, “से  
भिक्षू वार जाव पविट्ठे समाणे से जं पुण  
जाणेजा, अग्गपिंड उक्खिप्पमाणं पेहाए,  
अग्गपिंडं णिक्खिप्पमाणं पेहाए अग्गपिंडं  
हीरमाणं पेहाए अग्गपिंडं परिभाइजमाणं  
पेहाए” आया० २, १, ६, २५;—वीय  
पुं० (—बीज-अग्रं बीजयेपांते तथा) अग्रभाग  
जेतो पीज छे तेवी वनस्पति, अग्रभाग रे-  
पवाथी उगे छे ते, जेवा डे तिण, ताव, पिप्पण  
वगेरे. जिसका अग्रभाग जमीन में लगाने से  
जो उत्पन्न होती हो वह वनस्पति, जैसे-तिल,  
पीपल आदि a kind of vegetation  
which can be made to grow by  
planting the top part which  
serves as a seed आया० २, १, ६,  
४७, दस० ४, ठा० ४, १, सूय० २, ३, १०;  
—महिसिन्ता स्त्री० (—महिषीत्व) पट्टराणी-  
पणु; अग्रमहिषीपणु पट्टरानी पद the  
position of a crowned queen  
नाया० ध० ३, ४;—महिसी स्त्री० (—महिषी)  
पट्टराणी-मुप्यराणी, धट्टराणी मुख्वराणां;

इन्द्राणी a crowned queen, wife of Indra कप्प० २, १३, भग० ३, १; १०, २; नाया० १३, अंत० २, १; ठा० ३, १; जं० प० १, १४; राय० ६४; उत्त० १६, १, नाया० ध० ४,—रस पुं० (—रस) मुख्य-रस; शृंगार रस मुख्य रस; शृंगार रस. the sentiment of love, the chief sentiment “संपिडिया अग्गरसप्पभूया” उत्त० १४, ३१;—सिर. न० (—शिरस्) शिर-भाथानो आगलो भाग. मस्तक के आगे का हिस्सा the fore part of the head “घणनिचियसुबद्धलक्खखण्डय कुडागारणिभाणिरूवमपिडियग्गसिरा” तंडु०—सिहर न० (—शिखर) वनस्पतिनी टो-य-उपरलो भाग वनस्पति का टैखना-ऊपर का हिस्सा. the top part of vegetation “सोहियवरंकरग्गसिहरा” ओव० राय०—सोण्डा पुं० (—शुण्डा) हाथीनी सुउने आगलो भाग हाथी की सूड के आगे का हिस्सा. the fore part of the trunk of an elephant उवा० २, १०१, —हत्थ पुं० (—हस्त-हस्ताग्रम्) हाथनी आगलो भाग हाथ के आगे का हिस्सा the fore part of a hand or an arm राय० ३२, ओव० २२, कप्प० २, १४;

अग्गओ अ० (अग्रतस्) आगल आगे In front of, before पंचा० २, २४;

अग्गओकाउं सं० कृ० अ० (अग्रतकृत्वा) आगल करीने आगे करके. Having placed in front, having placed at the head प्रव० ६२६;

अग्गदत्त. पुं० (अग्रदत्त) धरवत क्षेत्रना आलु येवीसीना तेवीसमा तीर्थकरनु नाम इखत क्षेत्र के वर्तमान चौवीसी के २३ वें तीर्थकर का नाम. Name of the 23rd Tir-thankara of Iravata Ksetra in

the current Chovisi. प्रव० ३००; अग्गय. न० (अग्रक) अग्र भाग. अग्र भाग. Front part; anterior portion. प्रव० १४०२;

अग्गल न० (अर्गल) ८६ भा महाअणुनाम ८६ वें महाग्रह का नाम. The 86th great planet so named सू० प० २०; (२) भोगण-आरण्णाने आणुं मुक्खानुं दाडुं. दरवाजे की चटकनी-आडी. A bolt of a door, a latch “अग्गलं फलिहं दारं कवाडं वा विसंजण” दस० २, २, ६;—पासग पुं० (—पाशक-यत्रार्गला-निक्षिप्यन्ते सः) भोगणना पास; जेभां भोगण नाभवामा आवेछे ते साकल का कुंदा receptacles or fasteners of a door-bolt, a hook for a latch. राय० १०६;—पासाय पुं० (—पासाद) लुओ शब्द “अग्गल पासग” देखो शब्द “अग्गलपासग” vide “अग्गलपासग.” जीवा० ३, ४;—अग्गला. स्त्री० (—अर्गला) भोगण; आणुं दाडुंवाणे आणणीये दरवाजा बंद करने का आडा (२) सांडण; अणुं. साकल. a bolt of a door; a latch. “अग्गला अग्गलपासाया य वहरामईतो” राय० उत्त० ६, २०, दस० २, २, ६; ७, २७; अया० २, ४, २, १३८, अग्गहण. न० (अग्रहण) अस्वीकार; नअणु-णु करवुं ते. अस्वीकार. Non-acceptance क० प० १, १६,—वग्गणा. स्त्री० (—वर्गणा) वर्गणा विशेष, औदारिक शरीरादि-रूपे अणु न थर् शके जेवे। पुद्गलसमूह. वर्गणा विशेष, औदारिक शरीरादि के रूप से ग्रहण न हो सकने वाला पुद्गल समूह a particular kind of molecules, a collection of molecules which are not capable of forming a physical body etc. क० प० १, १६;



**अग्गहणा** स्त्री० (अग्रहणा) औदारिकादि शरीररूपे अहुषु न थर्ध शके तेवा पुद्गलनी वर्गणा-समूह. जो औदारिकादि शरीररूप से ग्रहण न हो सके ऐसे पुद्गलों की वर्गणा-समूह. A collection of atoms which cannot be incorporated into the Audārika ( physical ) body etc. क० गं० ५, ७७;

**अग्गहणिय.** पुं० न० (अग्राहिक) अधरणी, सीमन्तोत्सव सीमंत; सीमन्तोत्सव. Festival for the first pregnancy सु० च० १, ३०६;

**अग्गहिय.** त्रि० (अग्रहीत) अहुषु न करेद ग्रहण न किया हुआ Not taken, not accepted. विशे० २६४,

**अग्गाणीय.** न० (अग्राणीय-अग्रं परिमाणं तस्यायनं गमनं परिच्छेदः, तस्मै हितमग्राणीयम्) सर्वद्रव्य, गुणु अन्ये पर्यायानुं परिमाणु प्रतिपादन करनार १४ पूर्वमानो थीने पूर्व सम्पूर्ण द्रव्य, गुण और पर्याय का परिमाण प्रतिपादन करने वाला १४ पूर्वों में से दूसरा पूर्व The 2nd of the 14 Pūrvas which describes Dravya, Guna and Paryāya. "बीहयं अग्गाणीयं तत्थ सन्वदन्वाण पज्जवाणं य सन्वजीवाणं य अग्ग परिमाण वन्निज्जहत्ति" नदी० ५६; प्रव० ७१८, जं० प० ३, ५६;

**अग्नि** पुं० (अग्नि) अग्नि; आग Fire भग० ६, ७, नाया० १; २, ८, निर० ३, ३; अणुजो० १३१, भक्त० ४२, पंचा० १८, १०, उक्त० २, ७; जं० प० ५, ११४, (२) कृत्तिकाक्षत्रने अधिष्ठाता अग्निदेवता. कृत्तिका नक्षत्रका अधिष्ठातृदेव. the god fire, the presiding deity of Krittikā constellation "दो अग्नीओ" ठा० २, ३, ४, २, सू० प० १०; (३) भवनपति देवतानी

अहुषुत, अग्निभुमार देवता. भवनपति देवता की एक जाति, अग्निभुमार देवता a kind of Bhavanapati gods, god known as Agnikumāra. ओव० २३, उक्त० ३६, २०४, सम० ७६; —काञ्च पुं० (-काय) लुओ 'अगणिकाय' शब्द देखो "अगणिकाय" शब्द vide "अगणिकाय." दसा० ६, ४, —ज्वाला स्त्री० (-ज्वाला) अग्निनी ज्वाला-ज्वाल अग्नि की ज्वाला. flames. नाया० ८, —थंभणिया स्त्री० (-स्तम्भनिका) अग्नि स्तम्भन करनारी विद्या अग्नि का स्तम्भन-रुकावट करने वाली विद्या. the art of stopping the spread of fire. सूय० २, २, ८१, —दहण न० (-दहन) अग्निदाह, मृतको अग्निसंस्कार अग्निदाह, मृतक का अग्निसंस्कार. the ceremony of cremating a dead body. परह० १, १, —पयोग पुं० (-प्रयोग) अग्निने प्रयोग, अग्नि सगगावयो ते अग्नि का प्रयोग, आग सुलगाना lighting up fire; kindling of fire विवा० ६, राय० २८२, जं० प० ३, ५८, —मेह पुं० (-मेघ) अग्निनी पेड़े शरीरमां दाह उत्पन्न करनार वरसाह अग्नि के समान शरीर में दाह उत्पन्न करने वाली वर्षा rain burning the body like fire भग० ७, ६; —विदह्द त्रि० (-विदग्ध) अग्निथी अणेषु. आग से जला हुआ burnt with fire. प्रव० ८५७, —सामण त्रि० (-सामान्य) जेभा अग्निने लाग-द्विस्से छे तेषु अग्नि के भाग-हिस्से वाला (that) in which Agni or fire claims a share; shared in common with Agni or fire. नाया० १, भग० ६, ३३; —साहिय. त्रि०

(—साध्यक ) लुब्धो शब्द “अग्नि सामरण.” देखो शब्द “ अग्नि सामरण. ” vide “ अग्नि सामरण. ” “ हिरण्ये य सुवर्ण्ये य जाव सावइज्जे अग्नि साहिण् चोर साहिण् राय साहिण् मच्चु साहिण् ” भग० ६, ३३, नाया० १; —सिद्धा स्त्री० (—शिखा) अग्निनी न्याणा। अग्नि की ज्वाला flames. ठा० ४, २; —सेवण. न० (—सेवन ) अग्नि तुं सेवन इरुं; तापणी इरी तपुं ते. अग्नि का सेवन करना—तापना. warming oneself at the fire. प्रव० ४४०;—हुय पुं० (×-हुत—हुताग्निः) जेषु अग्नि मां होम इधी छे अवे तापस; तापसनी अेड नत. जिसने अग्नि में होम किया हो वह; एक प्रकार का तपस्वी. an ascetic who has thrown an oblation into fire. निर० ३, २, —होत्त. न० (—होत्र ) आक्षिण् धर्म प्रभाषे भंत्रोऽप्यारपूर्वकं घी, नव वगेरे अग्नि मां होमाय छे तेद्रव्य अग्नि होत्र छे अने नैनदष्टि अे धर्म ध्यान रूप अग्नि मां कर्म रूप धंधणु होमवा ते वास्तविड लाव अग्नि होत्र. वैदिक धर्म के अनुसार भंत्रोच्चारपूर्वकं घी, जब वगेरह जो द्रव्य अग्नि में होमे जाते हैं वे अग्नि होत्र कहलाते हैं और जैन धर्मानुसार धर्म ध्यान रूप अग्नि में कर्म रूपी इंधन को होमना वास्तविक भाव अग्नि होत्र है. an oblation to fire in which, according to Brāhmana's religion, ghee, barley etc are sacrificed with some Mantras or incantations, while according to Jaina standpoint fuels in the form of Karma are sacrificed in the fire of religious meditation. “अग्नि होत्त सुहा वेया ” उक्त० २२, १६; विशे० १६४०; निर० ३, ३, —होत्तवाइ. पु०

(—होत्रवादिन् ) द्रव्य—आद्य अग्नि होत्र थी न स्वर्ग प्राप्ति माननार वादी. अग्नि होत्र से ही स्वर्ग की प्राप्ति मानने वाला. a believer in the doctrine of the attainment of heaven by only oblation of material substances to fire. “जे अग्नि होत्तवाइ जल सोयं जे य इण्ठि ” सूय० टी० १, ७; —होम पुं० (—होम ) अग्नि मा होम पुं—इवन इरुं ते. अग्नि में इवन करना. pouring an oblation into fire. नाया० १४; १६; जं० प० २, ११४; अग्नि अ. पुं० ( आग्नि ) अग्नि देवता अे आपेद तेथी “ अग्नि क ” अेवुं नाम आपेद डोई पुइप. अग्नि देवता की कृपा से उत्पन्न पुरुष का नाम. A person given as a gift by fire-god and hence so named. विवा० १; अणुजो० १३१; अग्नि उत्त. पुं० ( अग्नि पुत्र ) भरत क्षेत्रना २३ भा पार्श्वनाथ स्वामिना समकालीन धरवत क्षेत्रना तीर्थकर भरत क्षेत्र के २३ वें तीर्थकर पार्श्वनाथ स्वामी के समकालीन इरवत क्षेत्र के तीर्थकर. Tirthankara of Irvata Ksetra and a contemporary of Pārśvanātha, the 23rd Tirthankara of Bharata Ksetra. “ जिय राग मग्नि सेण खीण राय मग्नि उत्तं च ” सम० १७, अग्नि कुमार. पुं० ( अग्नि कुमार ) अग्नि कुमार नामे लवनपति देवता नी पांचवीं नति. अग्नि कुमार नामक भवनपति देवता की पांचवीं जाति. The fifth class of Bhavana-pati gods named Agnikumāra ठा० २, २; पन्न० १; भग० ३, ७; ( २ ) स्त्री० अे नतनी देवी. इस जाति की देवी, a female deity of the above class of gods. भग० ३, ७;

**अग्निचव** पुं० ( आग्नेय ) उत्तर तरङ्गनी भे  
 कृष्णराजनी वर्ये आग्नेयाभ विमानमां  
 वसता ८ भी नतना लोकान्तिक देवता उत्तर  
 की ओर की दो कृष्णराजियों के बीच के  
 आग्नेयाभ विमान मे रहने वाले ८ वीं जाति  
 के लोकान्तिक देव. The 8th class of  
 Lokāntika gods in the Āgneyā-  
 bha heavenly abode between  
 the two Kṛṣṇarājīs in the  
 north. ठ० ६, १, भग० ६, ५, नाया० ८,  
 प्रव० १४६२, (२) पुं० कौशिकगोत्रनी अेक  
 शाखा कौशिकगोत्र की एक शाखा. a  
 branch of Kauśika Gotra. ठ० ७,  
 १, ( ३ ) ते शाखामानो पुंश्च उक्त शाखा  
 का पुरुष a person belonging to  
 that branch ठ० ७, १;

**अग्निचाभ.** न० ( आग्नेयाभ ) उत्तर तरङ्गनी  
 भे कृष्णराज वर्येणु पांयमा देवलोकनु अेक  
 विमान उत्तर दिशा की दो कृष्णराजियों के  
 बीच का पाचवें देवलोक का एक विमान A  
 heavenly abode of the fifth  
 Devaloka between the 2 north-  
 ern Kṛṣṇarājīs ठ० ५, ३,

**अग्निदत्त** पुं० ( अग्निदत्त ) आर्य भद्रबाहुना  
 शिष्यनु नाम आर्य भद्रबाहु के शिष्य का  
 नाम Name of a disciple of Ārya  
 Bhadrabāhu कप्प० ८,

**अग्निदास.** पु० ( अग्निदास ) अग्नि देवताना  
 संबधथी डोर्ध मांशुसनु आपवामा आवेक्षु  
 नाम. अग्नि देवता के सम्बन्ध से किसी मनुष्य  
 का रखा हुआ नाम A personal name  
 ( Lit servant of fire-god )  
 अणुजो० १३१,

**अग्निदिएण** पुं० ( अग्निदत्त ) अग्नि देवताना  
 संबधथी डोर्ध मांशुसनु आपवामा आवेक्षु  
 नाम अग्नि देवता के सम्बन्ध से किसी मनुष्य

का रखा हुआ नाम A personal name  
 ( Lit. given by fire ) अणुजो०  
 १३१,

**अग्निदेव** पुं० ( अग्निदेव ) अग्नि देवताना  
 संबधथी डोर्ध मांशुसनु आपवामा आवेक्षु  
 नाम अग्नि देवता के सम्बन्ध से किसी मनुष्य  
 का रखा हुआ नाम. A personal name  
 ( Lit. the fire-god ) अणुजो० १३१;

**अग्निधम्म** पुं० ( अग्निधर्म ) अग्निदेवताना  
 संबधथी डोर्ध मांशुसनु आपवामा आवेक्षु  
 नाम अग्निदेवता के सम्बन्ध से किसी मनुष्य  
 का रखा हुआ नाम A person so  
 named after the fire-god. अणुजो०  
 १३१,

**अग्निप्यभा** स्त्री० ( अग्निप्रभा ) १२ भा  
 तीर्थङ्करनी प्रवर्णया पालपीनु नाम, प्रवर्णया  
 महोत्सवमां ने पालपीमां अेका हुता तेनुं  
 नाम १२ वे तीर्थंकर दीक्षामहोत्सव मे जिस  
 पालकी पर बैठे थे उस पालकी का नाम.  
 The name of a palanquin of  
 the 12th Tirthankara in which  
 he sat at the time of the cele-  
 bration of his Pravrajyā. सम०

**अग्निभूइ.** पुं० ( अग्निभूति ) श्रीमहावीरस्वा-  
 भीना पीन गणधरनुं नाम श्रीमहावीर  
 स्वामी के दूसरे गणधर का नाम. The  
 name of the 2nd Ganadhara of  
 Mahāvīrasvāmī विशेष० १८१६, सम०  
 ११, भग० ३, १, नदी० स्थ० २०; ( २ ) म-  
 हावीर स्वामीना आगला दशमा लवनु ( भंदि-  
 रसंनिवेशमा उत्पन्न थयेल आल्लणुनु ) नाम.  
 महावीरस्वामी के दशवें भव ( मन्दिर सन्निवेश  
 मे उत्पन्न हुए ब्राह्मण ) का नाम name of  
 a Brāhmaṇa born in the village  
 of Mandua at the time of the

10th birth of Mahāvīrasvāmī.

कप्प० ८;

**अग्निम.** त्रि० ( अग्निम ) आगलुं; आगलनुं, पहेलानु. आगे का, पहिला Foremost; first, anterior. सु० च० १, ५, प्रव० ८८५; जं० प० २, १६, अणुजो० ४६;

**अग्निमाणव** पुं० ( अग्निमानव ) दक्षिण तरङ्गना अग्निकुमार देवतानो षण्ड दक्षिण दिशा के अग्निकुमार देवता का इन्द्र The Indra of the Agnikumāra gods of the south. ठा० २, ३; सम० ३२; पञ्च० २, भग० ३, ८,

**अग्निमिस्ता** स्त्री० ( अग्निमित्रा ) गोशालाना शिष्य पोलासपुरवासी शकदाल कुम्हारनी स्त्रीनुं नाम गोशाला के शिष्य पोलासपुर निवासी शकदाल कुम्हार की स्त्री का नाम. Name of the wife of Śakadāla, a potter and a disciple of Gośālā residing in Polāsapura उवा० ७, २०४;

**अग्निगय** पु० ( अग्निज ) अग्निमय व्याधि, जेमां आधेनुं सर्व अग्निमय थर्ष जय अने लुप्य भटे नहि तेवे अग्नि रोग अग्निमय व्याधि, एक रोग का नाम, जिसके होने से सदा भूख बनी रहती है और खाया हुआ अग्निमय हो जाता है. A kind of disease by which all food taken is burnt away and the hunger is never removed विवा० १, १; ( २ ) वत्सगोत्रनुं अग्नि अवा-तर-पेटागोत्र वत्सगोत्र का एक अवान्तर गोत्र a subdivision of Vatsagotra ठा० ७, १;—**रोगि** त्रि० (—रोगिन् ) अग्निमय व्याधिवाणे; अग्निमय आधेनुं अग्निमय अग्निमय व्याधिवाणे अग्निमय थर्ष जय अग्निमय व्याधिवाणे अग्निमय व्याधिवाणे (one) suffering from a disease by which all the

food, that one takes is burnt away without appeasing hunger. विशेष० २०४८;

**अग्निरक्षित** पुं० ( अग्निरक्षित ) अग्नि नाम का एक मनुष्य. Name of a person. अणुजो० १३१;

**अग्निहस्त** त्रि० ( अग्निहस्त ) आगलो; पहेलानो. पहिला; अगला. Foremost; first; anterior. “अग्निहस्तमयसिरसो” निसी० १, ४१,

**अग्निहस्त** पु० ( अग्निहस्त ) ८८ अग्निहस्ता ५५ भा महाअग्निहस्त नाम ८८ प्रहो मे से ५५ वे महाअग्निहस्त का नाम. Name of the 55th great planets ठा० २, ३; सू० प० २०;

**अग्निवेश** पुं० ( अग्निवेशमन् ) पक्षिना यैः द्वादश दिवसनुं—यैः द्वादशनुं नाम पक्षवादे के चौदहवें दिन-चौदस का नाम. The name of the fourteenth day of a fortnight. सू० प० १०, जं० प० ७, १५२; कप्प० ५, १२३, ( २ ) दिवसना २२ भा मुहूर्तनुं नाम दिन के २२ वें मुहूर्त का नाम name of the 22nd Muhūrta of a day. सू० प० १०, ( ३ ) कृत्तिका नक्षत्रनुं गोत्र. कृत्तिका नक्षत्र का गोत्र the Gotra or family origin of the Krittikā constellation. सू० प० १०;

**अग्निवेशायण** पुं० ( अग्निवेशायण ) दिवसना २३ भा मुहूर्तनुं नाम दिन के २३ वें मुहूर्त का नाम Name of the 23rd Muhūrta of a day. सम० ३०, ( २ ) गोशालाना ५ भा दिशाचर साधु गोशाला के ५ वें दिशाचर साधु. Gośālā's 5th missionary disciple भग० १५, १, ( ३ ) सुधर्मास्वामीनीनुं गोत्र सुधर्मास्वामी का गोत्र. Gotra

or family origin of Sudharmā-  
svāmī. नंदी० स्थ० २३; ( ४ ) ते गोत्रमां  
उत्पन्न थनार पुश्य सुधर्मास्वामी के गोत्र में  
उत्पन्न होने वाला पुरुष a person born  
in the above Gotra. नंदी० स्थ० २३,  
अग्निशर्म पुं० ( अग्निशर्मन् ) ओ नामने  
डेअिआहणु एक ब्राह्मण का नाम A Brā-  
hmana of that name. अणुजो०  
१३१,

अग्निसीह पुं० ( अग्निशिख ) दक्षिण दिशाना  
अग्निकुमार देवतानो धन्द्र दक्षिण दिशा के  
अग्निकुमार देवों का इन्द्र Lord of  
the Agnikumāra gods of the  
south. भग० ३, ८, पञ्च० २, सम० ३२;  
ठ० २, ३, ;

अग्निसीह पुं० ( अग्निशिख ) यालु अवसर्पिणीना  
सातमा अलदेव अने वासुदेवना पितातु नाम  
वर्तमान अवसर्पिणी के सातवें बलदेव और  
वासुदेव के पिता का नाम Name of the  
father of the seventh Vāsudeva  
and Baladeva of the present  
Avasarpiṇī सम०

अग्निसेण पुं० ( अग्निषेण ) यालु अवसर्पिणी-  
मां न्यूद्धीपना धरिवतक्षेत्रमा थयेला त्रीण  
तथा अेकविसमा तीर्थकरतु नाम वर्तमान  
अवसर्पिणी में जंबूद्वीप के इरवतक्षेत्र में  
उत्पन्न हुए तीसरे तथा २१वें तीर्थकर का नाम  
Names of the thud and the  
twentyfirst Tīthankara of the  
Irvata region of Jambū-  
dvīpa in the present Avasar-  
piṇī “ चंद्राण्य सुचंद्रं अग्निसेण च  
नादिसेणं च ” सम० ६६; प्रव० २६८, ( २ ) ओ  
नामने अेक भाणुस इस नाम का एक मनुष्य.  
a man of that name अणुजो० १३१,  
अग्नेई. स्त्री० ( अग्नेदी ) अग्निडेणु, दक्षिण

अने पूर्व दिशानी वञ्चेते। पुणु-विदिशा।  
अग्निकोन, दक्षिण और पूर्वदिशा का  
मध्यभाग-विदिशा. The south-east  
quarter ओच० नि० भा० २७६, भग० १०,  
१, १३, ४, ( इ )—दिशा. स्त्री० (—दिशा )  
अग्नि पुणु, पूर्व दक्षिण वञ्चेनी विदिशा।  
अग्निकोन, पूर्व और दक्षिण के बीच की विदिशा।  
the south-east quarter भग० १६,  
८,

अग्नेज्भ. त्रि० ( अग्नेज्भ ) अग्नेज्भ, अणु  
न थाय तेवुं ग्राह्य न हो ऐसा, अग्नेज्भ.  
Unacceptable. ओच०

अग्नेणीय न० ( अग्नेणीय ) अग्ने पूर्वमांने  
धीने पूर्व चौदह पूर्वों में से दूसरा पूर्व. The  
second of the fourteen Pūrvas.  
सम० १४,

अग्नेय त्रि० ( अग्नेय ) वत्सगोत्रनी शाखा  
अने ते शाखाने भाणुस वत्सगोत्र की शाखा  
और उस शाखा का मनुष्य A variety of  
Vatsa Gotra and a man of that  
Gotra ठ० ७, १,

अग्नेसर त्रि० ( अग्नेसर ) अग्नेसर-आगेवान;  
प्रमुष्य अणुआ, प्रमुख, नेता A leader.  
सु० च० २, ६१,

अग्रघ धा० I. ( अर्ह ) योग्य थयु, लायक  
अनतुं योग्य होना, लायक बनना To de-  
serve; to be fit for.

अग्रघ उक्त० ६, ४४,

अग्रघेह नाया० ८,

अग्रघ. पुं० ( अर्घ ) पुजनी सामग्री पूजन की  
सामग्री Materials for worship  
नाया० १६, विशेष० १४८०, ( २ ) मच्छ कच्छ आदि जलचर  
जंवा ७१ मच्छ कच्छ आदि जलचर  
जंवा aquatic animals like fish,  
tortoise etc जीवा० ३, ४, ( ३ ) पुं०

- किम्भत; मूल्य; ५०५. कीमत; मूल्य.  
price; value. संथा० ४६, विशेष० १४८०;
- ✓ अग्घा. चा० I. ( आघ्रा ) सुंधुं; गंध  
लेवी. सूचना. To smell  
अग्घाह्. पन्न० १५, नाया० १;
- अग्घाडग. पुं० ( आघ्रातक ) अये नामनी अयेक  
लतनी वनस्पति; अधाडे. एक जाति की  
वनस्पति. A plant growing in  
marshy places. पन्न० १;
- ✓ अग्घाय. धा० I. ( आघ्रा ) सुंधुं; गंध  
लेवी. सूचना. To smell.  
अग्घायह्. आया० २, १५, १७६;  
अग्घायैति. नाया० १७;
- अग्घाय सं० कृ० “ सुरभिगंधाणि वा  
अग्घाय से तत्थ आसायवडियाए  
मुच्छिण्ण ” आया० २, १, ८, ४४;  
अग्घायमाण. व० कृ० नाया० १;
- अग्घाय. त्रि० ( आघ्रात ) सुंधेधु; गंध लीधेधुं.  
सूघ हुआ. Smelt. विशेष० २३८४;
- अग्घाह् त्रि० ( अघात्तिन् ) आत्माना ज्ञानादि  
गुणोनी धात न इरनार; आत्मा के ज्ञानादि  
गुणों का घात न करने वाला. (One) that  
does not obstruct the qualities  
of the soul such as knowledge  
etc. क० प० २, ४४; क० गं० ५, १४;  
—कम्म. न० (—कर्मन् ) आत्मगुणोनी स्वतः  
धात न इरे तेवा वेदनीय आदि कर्म आत्मगुण  
की स्वयं घात न करे ऐसा वेदनीय आदि  
कर्म Karma such as Vedaniya  
etc. which do not of them-  
selves destroy the qualities of  
the soul. क० प० २, २३;
- अचंकरण ज० ( अचंकरण ) यंक्रमण-यास-  
वानी गतिने अभाव; न यासवुं ते. गति का  
अभाव; न चलना. Motionlessness  
नाया० १,

अचंकारियभट्टा. स्त्री० ( अचंकारितभट्टा )  
धन्यसेठनी पुत्री, जे तेनी आज्ञा उधावे तेनी  
साथे परणववामां आवी હતી, पतिने सङ्-  
ल्लमां राખती. એકદા રાખના દબાણથી સ્ત્રીની  
આજ્ઞા ન પાળી તેથી તે માનિની સ્ત્રી રિસાઇ  
ભાગી, ચોરોએ લુંટી; રંગારાને ત્યાં વેચી; ધણું  
કષ્ટ વેઠ્યા પછી તેના પતિએ તેને છોડાવી,  
ત્યારથી તેણીએ ક્રોધ, માન વગેરે દોષોને દૂર  
કર્યા. મુનિપતિ નામના સાધુના દાઝેલ શરીરની  
દવામાટે લક્ષપાક તેલ બહોરવા એક સાધુ  
તેને ઘેર આવ્યા. તેમને બહોરાવવામાટે લાવતા  
દાસીના હાથે લક્ષપાકના એક પછી એક એમ  
ત્રણ સીસા પુટી ગયા તો પણ બેને ક્રોધ  
ન થયો. ચોથીવાર પોતે સીસો લઈ આવી  
સાધુને બહોરાવ્યો એનો વિસ્તાર મુનિપતિ ચ-  
રિત્રમાં છે. ધન્યસેઠ કી પુત્રી, जिसका विवाह  
उसकी आज्ञा उठाने वाले के साथ हुआ था,  
यह सदा अपने पति को दबाव में रखती थी,  
एक वार राजा के दबाव डालने से स्त्री की  
आज्ञा का पालन नहीं हुआ अतः वह मानिनी  
स्त्री, गुस्सा होकर भाग निकली, रास्ते में  
चोरों ने उसे लूटा और रंगेरे के यहाँ बेचा,  
इस प्रकार जब बहुत कष्ट उठाया तब उसे उस-  
के पति ने छोड़ाया और तबसे फिर उसने क्रोध  
मान आदि करना छोड़ दिया. मुनिपति नामक  
साधु के जले हुए शरीर की दवा के लिये  
लक्षपाक नामक तेल लेने के लिये एक साधु  
इसके घर आया उस समय लक्षपाक तेल  
की तीन शीशिया दासी के हाथ से फूट गई तो  
भी उसे क्रोध न हुआ, चौथी वार वह स्वयं  
शीशी लेकर आई और साधु को तेल दिया. इस  
का विस्तृत वर्णन मुनिपतिचरित्र में है.  
The daughter of Dhanyasetha,  
She was married to a person  
who was willing to obey her  
commands. She used to keep

her husband in check. Once as her husband could not obey her order because of his having had to obey some command of the king, that proud woman got exasperated and went away. She was robbed by thieves and was sold to a dyer. Her husband procured liberty for her after she had suffered much. Thenceforth she gave up all vices like anger, pride etc. Once an ascetic came to her house to beg for Laksapāka oil (oil which is produced by mixing a lac of things) for medicinal purposes for a sage named Munipati who was suffering from scalds on his body. At that time her maid-servant chanced to break three bottles of Laksapāka oil one after another as she brought them, yet she did not become angry. At the fourth time she herself brought a bottle and gave it to the sage. This is related in detail in the biography of Munipati गच्छा० २;

**अचंचल** त्रि० (अचंचल) जेणे ध्रिये वश करी लोय ते, व्यथ नहि ते जिसने इन्द्रियों को वश किया हो वह. One who has subdued his senses जं० प० ३, ५७; प्रव० ५५०;

**अचंड** त्रि० (अचण्ड) निष्कारण डोध रहित बिना कारण के क्रोध से रहित Devoid of

unreasonable anger. “मा अचंडालियं कासी” उक्त० १, १०;

**अचक्रिय**. त्रि० (अचकित) परिषद आदिथी अकित थाय नहि तेवे; त्रासन पाभे तेवे जो परीषह (दुख) से चकित न हो वह. One who is not daunted by sufferings समुद्गंभीरसमा दुरासया, अचक्रिया केणह दुप्पहंसया” उक्त० ११, ३१;

**अचक्खु**. न० (अचक्षु) आभ सिवायनी भीण्यार ध्रिये अने मन. नेत्र के सिवाय दूसरी चार इन्द्रिया और मन Mind and four senses other than the eye.

क० गं० १, १०; ३, १७; पत्र० २३;

( २ ) त्रि० अक्षु-आंभ वगरने. चक्षु

रहित destitute of eyes. क० गं० ४,

१५; क० प० ४, ३४;—दंसण. न०

(-दर्शन) आंभ सिवाय भीण्य ध्रियेथी

सामान्य ज्ञान-भोध थाय ते आंख के सिवाय

दूसरी इन्द्रियों से जो सामान्य ज्ञान हो वह.

ordinary knowledge obtained

through senses other than the

eyes जीवा० १; भग० २, १०; ८, २; २५, ४;

—दंसणावरण न०(-दर्शनावरण) दर्शनावर-

णिय कर्मनी अेक प्रकृति, के जेना उदयथी एव

अयक्षुदर्शन ( आंभ सिवाय भीण्य ध्रियेथी

सामान्य ज्ञान थाय ते) न पाभे दर्शनावरणीय

कर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से जीव अचक्षु-

दर्शन ( आंख के सिवाय दूसरी इन्द्रियों से

जो सामान्य ज्ञान हो ) नहीं प्राप्त कर सके.

A variety of Darśanāvaranīya

Karma under the influence of

which an individual cannot have

knowledge derived through

senses other than the eyes.

उक्त० ३३, ६; सम० १७;—दंसण त्रि०

(-दर्शनिन्) अक्षुदर्शन वगरने एव, अेक

‘धृद्रियथी त्रयु धृद्रियवाणो ऽथ. चक्षुदर्शन-  
रहित एक इन्द्रिय से तीन इन्द्रियों वाला जीव  
a living being having one or  
more of three senses other  
than the fifth viz the eyes.

भग० ६, ६, १३, १; ठा० ४, ४,—फास. पुं०  
(-स्पर्श) अन्धकार; अंधारं. अंधेरा; अंध-  
कार. darkness. “पुरश्चो पचाए पिहृश्चो  
इत्थिमयं दुहृश्चो अचक्रुफासो मज्जेसरा  
शिवयंति” नाया० १४;—विसय. पुं०  
(-विषय) दृष्टिगोचर नहि ते, आंभथी न  
देभाय ते जो दृष्टिगोचर न हो वह. invis-  
ble; imperceptible “अचक्रुविसश्चो  
जत्थ पाणा दुप्पडिलेहया” दस० ५, १, २०;

अचक्रवृत्त. त्रि० ( अचक्रवृत्त ) आंभथी न  
देभाय तेवुं; नेनुं याक्षुप प्रत्यक्ष न थाय तेवुं.  
जो नेत्रों द्वारा प्रत्यक्ष न हो सके अर्थात् अचा-  
क्रवृत्त. Invisible; imperceptible.  
परह० १, १; दस० ६, २८;

अचर्यत. व०कृ० त्रि० ( अशक्रवृत्त ) अशक्त  
थतो, असमर्थ थतो. असमर्थ होता हुआ Be-  
coming powerless or incapable  
“चोइया भिक्खु चरियाए अचर्यता जवित्तए”  
सूय० १, ३, २, २०; उक्त० २५, १३;

अचर. पुं० ( अचर ) पृथ्वी आदि स्थावर ऽथ  
पृथ्वी आदि स्थावर जीव. Lives devoid  
of the power of motion e. g  
earth etc उक्त० ३२, २७;

अचरम. त्रि० ( अचरम ) लुग्गे “अचरिम”  
शब्द. देखो ‘अचरिम’ शब्द Vide “अच-  
रिम”. विशेष० ४११, राय० ७४;

अचरिम त्रि० ( अचरम ) संसार मध्यवर्ती,  
संसारने छोडे आवेला नहि संसार की चरमा-  
वस्था को नहीं पहुंचा, संसारमध्यवर्ती;  
अनेक वार जन्ममरणधर्मयुक्त Plunged  
into the world; far from final

liberation. भग० ३, १; ६, ६, ८,  
६; १३, १; १४, ४; १८, १; २६, ११;  
३३, ११; जीवा० १०, पन्न० १८,—समय.

पुं० ( -समय ) अरम-छेत्ता समयथी  
पहेलानो समय, छेत्तो समय नहि ते.  
अंतिम समय से पहिले का समय. duration  
preceding the final period. नंदी०

अचरिमय. त्रि० ( अचरम-क ) लुग्गे  
“अचरिम” शब्द देखो ‘अचरिम’- शब्द  
Vide “अचरिम” भग० ३४, १;

अचल. त्रि० ( अचल ) अलायमान नहि; स्थिर;  
निश्चल जो चलायमान न हो; स्थिर; निश्चल.  
Motionless; steady “अग्निहे अचले  
अवहिलेसे परिव्वए” आया० १, ६, १६५;

“अचले जह मंदरे गिरिवरे” परह० २, ५;  
ओव० १०, नाया० १, ८; सम० १; (२) दश

दशारमांनो षष्ठा दशाहं दस दशाहों में से छठा  
दशाह. the sixth of the ten Daśā-

rhas. अत० १; (३) मल्लिनाथना पूर्व जन्मो  
(महाबलना जन्मो) अेक मित्र, के जेणे तेमनी  
साथे दीक्षा लीधी હતી मल्लिनाथ का पूर्वभवका  
(महाबल के भव का) एक मित्र, जिसने महाबल के

साथ दीक्षा ली थी A friend of Malli-  
nātha in his ( i. e. Mallināth's )  
previous birth He took Diksā

from the latter ( whose name  
was then Mahābala ). नाया० ८;  
(४) यालुवअसर्पिणीना पहेला जलदेवनु नाम

वर्तमान अवसर्पिणी के प्रथम बलदेव. name  
of the first Baladeva of the cur-  
rent Avasarpinī. सम० (५) अंतगड-

सूत्रना श्रीगणेशना पांयमां अध्ययननु नाम,  
अंधकवृषिणु रागनी धारणी राणीना पुत्र, के जे  
नेमिनाथ प्रभु पासे दीक्षा लध गुणुरयणु तप  
इरी सोण वरसनी प्रवन्त्या पाणी अेक भासनी  
सथारोइरी शत्रुण्य उपर सिद्ध थया अंतके



दूसरे बर्ग के पांचवें अध्याय का नाम, जिसमें अंधकवृष्णि राजा की धारणी राणी का पुत्र जो नेमिनाथ प्रभु से दीक्षा लेकर, गुणरयण तप करके सोलह वर्ष की प्रव्रज्या पाल कर और एक मास का संथारा ( अनशन ) कर शत्रुञ्जय पर सिद्ध हुआ. Name of the 5th chapter of the 2nd section of the Antagada Sūtra where the son of Dhāranī, the queen of king Andhakavṛṣṇi, is mentioned. He was initiated by Lord Neminātha, and he practised the Guṇarayaṇa austerity, observed asceticism for 16 years and after a month's entire fasting attained final beatitude on mount Satruñjaya अंत० २, ५, अचलपुर न० ( अचलपुर ) अहमदीपनी पास आवेला आलीर देशमानु अेक नगर, के जेभा रेवतीनक्षत्र आचार्यना शिष्येअे दीक्षा लीधी ब्रह्मद्वीप के पास वाले आभीर देश का एक नगर, जिसमें रेवतीनक्षत्र आचार्य के शिष्यों ने दीक्षा ली थी A city in the Ābhīra country near Brahmadvīpa where the disciples of an Achārya named Revatīnakṣatra took Dīksā नदी० स्थ० ३२,

अचलभाया पुं० ( अचलभाता-अचलभातृ ) महावीरस्वामीना नवमा गणधर महावीर स्वामी का नवौ गणधर The ninth Gaṇadhara of Mahāvīra Svāmī नदी० स्थ० २०, सम० ११, ७२,

अचलमाण व० क० त्रि० ( अचलत् ) न चालतुं न चलता हुआ Motionless, not moving कप्प० ६, ४५,

अचला स्त्री० ( अचला ) शक्रेन्द्री सातमी अग्रमहिषी शक्रेन्द्र की सातवी अग्रमहिषी The seventh of the favourite queens of Śakrendra नाया० २, अचलिय न० ( अचलित ) वस्त्र तथा शरीर छाने नहि अेवी रीते पडिलेहणु डरवुं ते, पडिलेहणुने अेक शुशु वस्त्र तथा शरीर न हिले, इस प्रकार पडिलेहण करना, पडिलेहण का एक गुण Carefully passing the eyes over a thing without giving motion to the body or the clothes टा० ६, १, ( २ ) अयत्न, यथायमान न थयेल अचल, स्थिर steady नाया० ८, पंचा० १४, १६, भग० १, १०,—कर्म न० (—कर्मन् ) अयत्नित कर्म, उदयमा आवेल नहि अेवु कर्म जिस कर्म का उदय न हुआ हो वह Karmas which have not matured भग० १, १,

अचवचव त्रि० ( अचवचव ) अयत्न अेवा शब्द-अवाोर रहित 'चवचव' इस प्रकार के शब्द से रहित Unaccompanied with sound produced by chewing " असुरसुर अचवचवं आहारमाहारैह " भग० ७, १, पण्ह० २, १,

अचवचल त्रि० ( अचवचल ) अयत्न, अयत्नता रहित, स्थिर स्वभाववाणे, मन, वचन अने धारा वडे धैर्य शम्भनार चपलता रहित, स्थिर स्वभाव वाला, मन, वचन और काया से धैर्य रखने वाला Not restless, steady " अतुरियमचवचलममभत्ते सुह पोत्तिरं पडिलेहेहै " भग० २, ५, ७, १०; नाया० १, राय० ३३, दम० ८, २६; उक्त० ३४, २७, काप० १, ५; सम० प० २३६;

अचाइय त्रि० ( अचकृत ) अशक्त, असमर्थ अशक्त, नामर्थ रहित Powerless, incapable तमचाइय तरुणम-

पत्तजातं ढंकाई अवत्तगमं हरेज्जा ” सूय० १,  
१४, २;

अचाय. पुं० ( अत्याग ) न त्तरुं; त्याग न  
डरवे। न छोडना. Not giving up or  
abandoning. “ सच्चित्ताणमचायचाय  
मज्झिण ” प्रव० ४४१;

अचायंत. व० कृ० त्रि० ( अशक्नुवत् ) सहन  
डरवाने अशक्त; असमर्थ. सहन करने को  
अशक्त Incapable of enduring;  
powerless “अन्वावाध अचायंतो नेच्छई  
अपचेतए एणु” सूय० १, ३, १, ७,

अचिअ. पुं० ( अचित ) नाटकेनो अेडं प्रडार  
नाटक का एक भेद. A kind of a  
drama. ठा० ४, ४;

अचित. त्रि० ( अचिन्त्य ) अडल; अतर्क्य,  
नेनुं यितन न डरी शक्य तेनुं. जिसका  
चितन न क्रिया जासके, अचिन्त्य Un-  
imaginable; inconceivable. विशेष०  
६७; १०५८;

अचित्तण न० ( अचित्तन ) यितवननो अभाव,  
यितवन न डरनुं ते चितन का अभाव. Not  
to think about or imagine. “अचि-  
त्तणं चैव अकित्तण व” उक्त० ३२, १५;

अचिक्कण न० ( अचिक्कण ) यिडासनो अ-  
भाव चिकनाहट का अभाव. Absence of  
greasiness भग० १६, ४; ( २ )  
यिडास रहित, यिडास वगरनुं चिकनाहट  
रहित. devoid of greasiness भग०  
१६, ४;

अचिड्ड त्रि० ( अचेष्ट ) येषा रहित; हाले आले  
नहि तेनु; निर्ज्व चेषा रहित; निष्क्रिय;  
निर्जीव. Motionless; inanimate.  
विशे० ११४४;

अचिड्डिसा सं० कृ० अ० ( अस्वित्वा ) उभा  
न रडीने खडे न होकर Not standing,  
without standing. ठा० ३, २;

अचित्त. पुं० ( अचित्त ) अयेत, निर्ज्व;  
अव वगरनी वस्तु; वस्त्र, सुकुं-दाड्डुं, सोनुं  
इपु विगेरे अचेत, निर्जीव; जह, सोना रूपा  
आदि. An inanimate thing e. g.  
cloth, dry wood, gold etc.  
भग० २, ५; ६, ७; ७, ७; १०; ८, ६; १३,  
७, १८, ७, नाया० १; १६; पि० नि०  
भा० ८; दस० ५, १, ८१; ६, १४; षड्ढ०  
६; ठा० ३, १; विशेष० ८६६; सूय १, १, २,  
१; २, ३, २, उक्त० २५, २४; ओव० १७,  
निसी० १, १०; वव० ७, १७; जं० प० २,  
३१, ४६; आया० १, ८, ७, २१; अणुजो०  
४६; १३१,—आहार. पुं० ( -आहार )  
प्रासुक आहार; अयेत आहार. प्रासुक आहार,  
अचेत ( दोषरहित ) आहार acceptable  
pure food. भग० १३, ५;—पइडिय.  
त्रि० ( -प्रतिष्ठित ) अयितने आश्री रहल.  
अचित्त-निर्जीव के आश्रय स्थित-ठहरा हुआ.  
being in touch with inanimate  
objects. निसी० २, ६,

अचित्तकम्म त्रि० ( अचित्तकर्मन् ) यित्रडाम  
रहित, यित्रामणु रहित विना चित्र का. Hav-  
ing no paintings on. वेय० १, २०;

अचित्तत्त न० ( अचित्तत्व ) अयितपणुं.  
अचित्तपन; निर्जीवपन. Lifelessness;  
state of being lifeless प्रव० ३७;

अचित्तमंत. त्रि० ( अचित्तवत् ) येतन रहित.  
चैतन्य रहित Inanimate “चित्तमंतम-  
चित्तं वा खेव सयं अदिन्नं गिरहेज्जा” दस०  
४, सूय० १, १, १, २,

\* अचियत्त त्रि० ( अप्रिय ) अनिष्ट, अप्रिय.  
अनिष्ट; अप्रिय. Unpalatable, un-  
pleasant पि० नि० ५७०; ५८०, ( २ )  
गुड उपर पूर्यलाव नहि राभनार गुरु मे  
पूज्यभाव न रखने वाला. having no  
reverence for a preceptor. दस०

५, १, १७; ७, ४३; उत्त० १७, ११,  
 ओष० नि० २३६, ( ३ ) स्त्री० अप्रीति,  
 प्रेमनो अलाव अप्रीति, प्रेम का अभाव  
 want of love ओष० नि० भा० २६१, दस०  
 ५, १, १७,—अंतै उरपरघरप्पवेस पुं०  
 ( -अन्तःपुरपरगृहप्रवेश-अचियत्तोऽनभिम-  
 तोऽन्तःपुरप्रवेशवत् परगृहप्रवेशो येषां  
 ते तथा ) अन्त पुरनी भा३३ भीष्मना  
 धरमां प्रवेश इरवानुं अनिष्ट गणुनार  
 श्राव३ अन्त पुर के समान दूसरे के घर में  
 प्रवेश करने को अनिष्ट समझने वाला श्रावक.  
 a Jaina layman who shuns  
 another's house as if it were a  
 harem “ ऊसिय फलिहा अवगुयादुवार  
 अचियत्तै उरपरघरप्पवेसा ” सूय० २, २,  
 ७६;

अचिरं अ० ( अचिरम् ) ०८६टी, त२त०, अ३  
 ६भ. शीघ्र, तुरंत At once, immedi-  
 ately सू० प० २०, जीवा० ३, ३;

अचिरकाल पुं० ( अचिरकाल ) त२३६  
 तत्काल Immediately, present  
 time प्रव० ७१६;

अचिरवत्त्रि० ( अचिरवृत्त ) त२तनु,  
 थोडा वअतनुं अनेनुं तुरत का, थोडे समय  
 का बना हुआ Fresh, of recent  
 occurrence भग० १२, ६,

अचिरा अ० ( अचिरात् ) त२३६, ६भ-  
 श्ण० तुरंत Immediately, present-  
 ly क० प० ७, ३३;

अचिरोग्गय पु० ( अचिरोद्गत ) त२त ७जेदो  
 सूर्य, आल सूर्य तुरंत का उगा हुआ सूर्य The  
 early morning sun भग० १४, ६;

अच्युतकल्प पुं० ( अच्युतकल्प ) आ२भो  
 देवलो३ बारहवाँ देवलोक The twelfth  
 Devaloka ( abode of gods )  
 भग० २, १,

अचेयकड त्रि० ( अचेतकृत ) अचेत  
 वस्तुथी अनेनुं. निर्जीव वस्तु से बना हुआ.  
 Made up of inanimate things.  
 भग० १६, २,

अचेयण त्रि० ( अचेतन ) चेतन रहित,  
 निर्जीव. चैतन्य रहित; निर्जीव. Inani-  
 mate, lifeless “ इत्थ वावि अचे-  
 यणो ” आया० १, ८, ७, १५; पगह० १, २, पिं०  
 नि० भा० १३, विश० ६१;

अचेल त्रि० ( अचेल ) वस्त्र वगैरहो वस्त्र  
 रहित Devoid of clothes (२) अल्प-  
 वस्त्रधारी अल्प वस्त्रधारी using a  
 very small number of clothes  
 “जे अचेले परिपुसिपु संचिक्खव्हं” आया० १,  
 ६, २, १८३, पचा० १७, ११, ( ३ ) अचेद  
 -वस्त्रनो परिपुसिपु अचेल-वस्त्र का परीपह  
 enduring discomfort caused by  
 absence of garments भग० ८, ८;  
 —परिसह पु० ( -परिपह ) वस्त्रनी तगीनुं  
 इष्ट सहन इरनुं ते, २२ परिपुसमानो छेो  
 वस्त्रनो परिपुसिपु वस्त्र की न्यूनता-कमी का कष्ट  
 सहन करना, २२ में से छठा वस्त्रपरीपह.  
 enduring discomfort caused by  
 scantiness of clothes, the sixth  
 of the twenty-two Paṇisahas.  
 सम० २२, भग० ८, ८,

अचेलअ त्रि० ( अचेलक-न विद्यन्ते चेलानि  
 वासांसि यस्यासावचेलक कुत्सितं वा चेल  
 यस्यासावचेलक ) वस्त्र रहित वस्त्र रहित.  
 Devoid of clothes ज० प० २, ३१;  
 ( २ ) कुत्सित-थोडी डिम्भतना वस्त्रवाणो.  
 कुत्सित-अल्पमूल्य के वस्त्र वाला. wearing  
 garments of little or no value.  
 निर्मा० ११, ३६, उत्त० २, १२,

अचेलग पु० ( अचेलक-न विद्यन्ते चेलानि

धिषन्से वा अप्रशस्तानि मानोपेतैकवर्णानि  
चेत्तानि वस्त्राणि यस्मिन् सः ) वस्त्र न  
राप्त्वानो अर्थात् सद्देह अने मानोपेत  
अल्पवस्त्र राप्त्वानो धर्म-आचार, पडेला  
अने छेला तीर्थकरना साधुओंको आचार  
बद्ध न रखने का अर्थात् सफेद और मानोपेत  
अल्प वस्त्र रखने का आचार; पहिले और  
अन्तिम तीर्थकर के साधुओं का आचार. The  
religious practice of wearing  
scanty and white clothes; prac-  
tice among the Sādhus of the  
first and the last Tirthankaras  
ठ० ६, १, उक्त० २३, १३,—धम्म पुं०  
(-धर्म) पडेला अने छेला तीर्थकरना साधु-  
ओंको आचार पहिले और अन्तिम तीर्थकर के  
साधुओं का आचार. the religious prac-  
tice of the Sādhus of the first  
and the last Tirthankaras ठ०  
६, १;

अचेलिया स्त्री० ( अचेलिका ) वस्त्ररहित स्त्री  
वस्त्ररहित स्त्री A naked woman.  
वेय० ५, १६;

अचोद्भ्र त्रि० ( अचोदित ) अप्रेरित, जेने  
प्रेरणा करवाभा न आवी डेय ते अप्रेरित,  
जिसे प्रेरणा न की गई हो Uninspired,  
unimpelled “विस्तो अचोद्भ्र मिच्चं,  
स्वित्पं हवह सुचोद्भ्र” उक्त० १, ४४;

अचोक्ख त्रि० ( अचोक्ख ) अशुद्ध, अपवित्र  
अशुद्ध; अपवित्र Impure जीवा० ३, ३,  
नाया० ६,

अचोरिय न० ( अचौर्य ) चोरीने अभाव चोरी  
का अभाव. Act of abstaining from  
stealing. “अचोरियं करेत्तं” परह० १, २;

✓ अक्ष धा० II. ( अक्षि ) त्यज्, त्याग  
करवे त्याग करना. To abandon, to  
relinquish

अक्षेहि. सूय० १, २, ३, ७;

✓ अक्ष धा० II. ( अक्ष् ) अर्च्यु, पूज्युं; पूज  
करवी; सत्कार करवे पूजना, पूजा करना,  
सत्कार करना To worship, to pay  
respects.

अक्षेह जीवा० ३, ४, आया० १, २, १,  
६५, नाया० १६, निर० ५, १,

अक्षेति जं० प० २, ३३,

अक्षेम उक्त० १२, ३४,

अक्षिमो उक्त० १२, ३४,

अक्षेज्य सं० कृ० सु० च० २, ७०;

अक्षिज्य क० वा० सु० च० २, ३८२;

अक्ष त्रि० ( अक्ष्य ) अर्चनीय, पूजनीय अर्च-  
नीय; पूजने योग्य. Worthy of wor-  
ship ठ० २, १, ( २ ) अे नामको लव-  
काण विभाग; प्राणुको सातमे अने सुहूर्तको  
७७ मे भाग. इस नाम का लव-कालविभाग;  
प्राण का सातवाँ और सुहूर्त का ७७ वाँ भाग  
a division of time so named,  
equal to  $\frac{1}{7}$  of Prāna or  $\frac{1}{77}$  of a  
Muhūrta कप्प० ५, १२३,

अक्षंग न० ( अक्ष्यङ्ग ) अतिशय भोगना अंग-  
मधमांसादि अतिशय भोग का अंग-मद्य  
मांमादि Stimulating and delicious  
food and drink e g flesh, wine  
etc पंचा० १, २१;

अक्षंत त्रि० ( अक्ष्यन्त ) अतिशय, धण्डं.  
अतिशय, बहुत ज्यादा Excessive.  
( २ ) अंत-आरंभ-शर्यातने उलंधी गयेल,  
जेनी शर्यात नथी ते; अनादि अनादि.  
having no beginning; existing  
from eternity. निर० १, १; ३, २;  
उक्त० ३२, १, भग० १८, १; विशेष०  
५६; ७२, पंचा० १४, ४४,—काल त्रि०  
( -काल ) धण्डो धण्डो वमत. बहुत लंबा

समय, अति दीर्घकाल. a very long period of time “ अर्चन्त कालस्स समुत्तयस्स सम्बस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ” उत्त० ३२, १,—परम त्रि० (—परम) धलुं उत्कृष्ट अति उत्कृष्ट excellent “ अर्चन्तपरमो आसी, अउलो रूवविम्हओ ” उत्त० २०, ५,—मसिण त्रि० (—मसण) अत्यंत कोमल बहुत कोमल very soft or delicate प्रव० १४६६,—विसुद्ध. त्रि० (—विशुद्ध) अति विशुद्ध, धलुं निर्मल, सर्वथा निर्दोष अत्यन्त विशुद्ध, बहुत निर्मल extremely pure, unsullied “ अर्चतविसुद्धदीहरायकुलवंसप्यसूय ” ठा० ६,—सुद्धि. त्रि० (—सुखिन्) अत्यंत-धलो सुभी बहुत सुखी extremely happy “ तोहोइ अर्चन्तसुही कयस्थो ” उत्त० ३२, ११०,

**अर्चन्तिय.** त्रि० ( अत्यन्तिक ) अत्यन्त, धलुं. बहुत, ज्यादह. Excessive, very much “ योगन्तणच्चन्तिय उवपुवं वयन्ति ते दोवि गुणोदयम्मि ” सूय० २, ६, २४,

**अर्चन्विल** त्रि० ( अत्यन्त ) अतिशय आदु. बहुत खटा Extremely sour दस० ५, १, ७८,

**अर्चक्खर** न० ( अत्यन्तर ) डोय तेथी अधिक अक्षर भोयवुं ते; ज्ञानेो अेक अतिथार होवे उससे अधिक अन्तर बोलना; ज्ञान का एक अतिचार Speaking or pronouncing more words than are actually contained (e g in a text); a fault connected with knowledge आव० ४, ७, अणुजो० १३,

**अर्चण** न० ( अर्चन ) अर्था, पूज, पुल आदिथी सत्कार करवेो ते पूजन, पुष्प आदि से सत्कार करना Worship परह० १, ३;

**अर्चणा** स्त्री० ( अर्चना ) सुभउ यदन आदिनु विदेपन करवु ते. चंदन आदि का लेप

करना. Applying unctuous preparations of sandalwood etc उत्त० ३६, १८,

**अर्चणिया** स्त्री० ( अर्चनिका ) अर्थन-विदेपन आदि करवां ते अर्चन-विलेपन आदि करना. Act of worshipping with flowers, sandal etc भग० ४, १,

**अर्चणिज्ज** त्रि० ( अर्चनीय ) अर्थन-पूजन करवा योग्य, यंदन आदिथी अर्थवा योग्य अर्चन-पूजन करने योग्य, चंदन आदि से अर्चने योग्य Worthy of worship. भाया० २, ७, १५, १७, १८, १९, भग० १०, ५, ६, राय० १६०, जं० ५० ७, १७१,

**अर्चत्थं** अ० ( अत्यर्थम् ) अतिशय, धलुं अतिशय, बहुत ज्यादह Excessive, very much. “ अंगारपलित्तककप्पअर्चत्थं सीय वेयणा ” परह० १, ३, विशेष० १८६६, सूय० २, ६, ४२,

**अर्चत्थत्त** न० ( अत्यर्थत्व ) सत्य युक्त वाणीना उप अतिशयमानेो आठमेो अतिशय, रहस्य युक्त वचन भोलवुं ते सत्य के ३५ अतिशयो में का आठवाँ अतिशय, गंभीर वचन बोलना The eighth of the 35 Atisayas of truth, power of uttering words bearing profound meaning राय०

**अर्चवभुय** त्रि० ( अत्यद्भुत ) अति विलक्षण; अति आश्चर्यकारक अति विलक्षण, बहुत आश्चर्यकारक Extremely wonderful, preternatural सु० च० ३, १७१; ६, ११२,

**अर्चय** पु० ( अत्यय ) विध्न, विनाश विघ्न; विनाश An obstacle, destruction. वेय० ३, ४, उत्त० १०, १,

**अर्चसण** पुं० ( अर्चण ) पक्षणेो आठमेो

दिवस; आरसनुं नाम. पक्ष का बारहवाँ दिन; द्वादशी. The twelfth day of every fortnight. सू० प० १०, जं० प० ७, १५२,

अच्चा स्त्री० ( अर्चा-अर्च्यतेऽसावाहारालङ्कारादिभिरित्यर्चा ) शरीर, देह. शरीर. The body. “एगच्चाए पुण एगे भयंतारो भवंति” सू० २, २, ६, आया० १, १, ६, ५३, ( २ ) क्रोधना अध्यवसायनी ऋणाणां क्रोध की ज्वाला. flames of wrath. आया० १, ८, ६, २२१, १, ६, १, ११, ( ३ ) लेश्या. लेश्या *Leśyā* i e. thought-tint or matter-tint “दुह्नभाओ तहच्चाओ जे धम्मट्टं वियागरे” सू० १, १५, १८, ( ४ ) तेज. तेज. lustre. आया० १, ४, ३, १३४,

अच्चाइरण त्रि० ( अत्याकीर्ण ) भीयो भीय लरेल लवालब भरा हुआ, दूंस कर भरा हुआ. Overfilled; filled to excess “अच्चाइरण वित्तो णो परस्स शिक्खमणप्पवेसाए” आया० २, ३, १, १२२,

अच्चासराया स्त्री० ( अत्यासनता ) आसन ऋभावु, ओड ऋथाओ धला वभत सुधी भेसी रहेवु. आसन जमाना, एक स्थान पर बहुत देर तक बैठे रहना Act of sitting for a long time at the same place ठ० ६, १;

अच्चासरण त्रि० ( अत्यासन्न ) अति नज्ज, छेड पासैनु. बहुत नजदीक, विल्कुल पास. Very near; close to, just beside “अच्चासरणे णाईदूरे सुस्सुसमाणे” भग० १, १, ओव० २२; २७;

✓ अच्चासाअ. धा० I. ( अति+आ+शब्+णि० ) उपसर्ग डरेवो उपसर्ग करना To torment ( २ ) ध्वंस डरेवो, ध्वंस करना. to destroy ( ३ ) अशातना डरेवी. अशातना-अविनय करना to

disturb, to trouble; to destroy.

अच्चासाएइ निसी० १०, ४;

अच्चासाइत्तए. भग० ३, २;

अच्चासाएमाण. व० कृ० ठा० १०;

अच्चासायंत. व० कृ० निसी० १०, ४;

अच्चासाइय त्रि० ( अत्याशातित ) उपसर्ग डरेल; आशातना डरेल उपसर्ग किया हुआ; कष्ट दिया हुआ. Tormented, disturbed, troubled, “सेय अच्चासाइए उमाणे परिकुविए” ठा १०; भग० ३, २;

अच्चासायणा. स्त्री० ( अत्याशातनता ) लुओ ‘अच्चासायणा’ देखो ‘अच्चासायणा’ शब्द Vide “अच्चासायणा”. क० गं० १, ५४,

अच्चासायणा स्त्री० ( अत्याशातना ) हीलना डरेवी ते, डलडुं पाडपुं ते. अवहेलना करना. Humiliation; contemptuous conduct निसी० १०, ४; भग० ३, २; ठा० १०;

अच्चि स्त्री० ( अर्चिष् ) डिरेणु किरण. A ray, a beam of light पञ्ज० २, ( २ ) रत्नादिना तेजनी ऋणाणां रत्नादि के तेज की ज्वाला. flaming lustre or brilliance of jewels etc. “अच्चिए तेएणं लेसाए दस दिसाए उज्जोएमाणे” भग० २, ५; पञ्ज० १; ओव० २२; ( ३ ) शरीरमाथी नीडणती डन्तिनी ऋणाणां शरीर में से निकलती हुई कान्ति की ज्वाला halo of light emanating from the body ठा० ८, १; ( ४ ) अग्निनी छुटी पडी गयेली-तूटेली-ऋणाणां-जल अग्नि की टूटी हुई ज्वाला. a broken streak of fire उत्त० ३६, १०६, जीवा० ३, १; ठा० ५, ३, राय० ४३; नाया० १६; ( ५ ) दीवानी शिभा दीपक की शिखा flame of a lamp. दम० ४, ८, ८, ( ६ ) कृष्ण

राशनी वस्ये आवेक्षु ओड लोडान्तिड देवता-  
नुं विमान कृष्णराजी के बीच में आया हुआ  
लोकान्तिक देवता का एक विमान a heavenly  
abode of the Lokāntika  
gods in the midst of Krisna-  
rājī सम० ८, प्रव० १४६०, भग० ६, ५; (७)  
सूर्य सूर्य the sun नाया० १;—सह-  
स्समालशिञ्ज त्रि० (—सहस्रमालनीय-  
अर्चिषां किरणानां सहस्रैर्मालिनीयं परिवार-  
णीम् ) जेभांथी आसपास आश्चर्य उपलवे  
अधी हलरो डिरेणोनी भाणा छुटती होय  
तेवी वस्तु जिसके आसपास से आश्चर्य जनक  
किरणों की माला निकलती हो ऐसी वस्तु  
a thing from which thousands  
of wonderful series of rays  
emanate नाया० १;—सहस्समाला  
स्त्री० (—सहस्रमाला ) हलरो डिरेणोनी  
भाणा—हार, हजारों किरणों की माला a  
series of thousands of rays of  
light भग० १०, ५,—सहस्समालि-  
शिय त्रि० (—सहस्रमालिनिक ) जेभांथी  
हलरो डिरेणोनी हारो छुटे तेवी वस्तु जिसमें  
से सहस्रों किरण निकलती हैं ऐसी वस्तु. a  
thing from which thousands of  
rays emanate भग० १०, ५,

अच्चिष्पमा स्त्री० ( अर्चिष्पमा ) ओड  
देवीनु नाम, एक देवी का नाम Name  
of a goddess नाया० ५० ८,

अच्चिमालि त्रि० ( अर्चिमालिन् ) डिरेणोनी  
भाणाथी वीटाथेदे। किरणों की माला से घेरा  
हुआ. Surrounded by a series  
of rays जीवा० ४, ( २ ) पुं० सूर्य सूर्य  
the sun सूर्य० १, ६, १३, उक्त० ६, २७, जं०  
५० ७, २७, सम० ५० २१४, (३) न० कृष्णराश-  
नी वस्ये आवेक्षु लोडान्तिड देवतानु विमान  
कृष्णराजी के बीच का एक लोकान्तिक देवता

का विमान a heavenly abode of  
Lokāntika gods situated in  
the midst of Krisnarājī सम०  
८; भग० ६, ५;

अच्चिमाली स्त्री० ( अर्चिमाली—मालिनी )  
सूर्य अने चंद्रनी त्रीश अग्रमहिपीनु नाम  
सूर्य और चंद्र का तीसरी पट्टराणी का  
नाम. The name of the third  
chief queen of the sun and the  
moon सू० ५० १८; भग० १०, ५, जीवा०  
४, १; ठा० ४, १; नाया० ५० ७, ( २ )  
अग्निपुष्पाना रतिकर पर्वतनी पश्चिमे न्या-  
वेदी शक्रदेवेन्द्रनी पट्टराणीनी राजधानी.  
अग्नि कोन के रतिकर पर्वत की पश्चिम दिशा  
में आई हुई शक्रदेवेन्द्र की पट्टराणी की  
राजधानी the capital of the queen  
of the lord of first Devaloka  
situated to the west of the  
Ratikara Mountain of the  
south-east ठा० ४, २,

अच्चिय त्रि० ( अर्चित ) अर्च्ये, पूज्ये  
अर्चित, पूजित Adored, worshipped  
ओघ० नि० भा० ३०७, भग० १२, ८, नाया० १;

✓ अर्चीकर ना० धा० II ( अर्चीकर ) पूज-  
अर्थां करवी अर्चा करना, पूजा करना To  
worship.

अर्चीकरेइ निसी० ४, २,

अच्युक्कड त्रि० ( अत्युक्कट ) अति उग्र, अति  
उन्नत अति उग्र, बहुत ज्यादा उन्नत-उन्नत.  
Furious, highly excited, intoxi-  
cated with power ओघ० नि० ६२२;

अच्युष्टिय त्रि० ( अत्युष्टिय ) अत्यन्त अकार्य-  
धर्युं अघटित कार्य करवाने तैयार अथे  
अत्यन्त बुरा कार्य करने को तैयार Intent  
on doing a most improper act

“ अच्युतसिण वा, अगारिणं वा  
समयाणुसिद्धे ” सूय० १, १४, ८;

अच्युतसिण त्रि० ( अत्युन्नत ) अति उच्युं बहुत  
उन्नत. Very high; lofty or  
exalted. कण्प० ३, ३६;

अच्युतसिण त्रि० ( अत्युष्ण ) अतिशय गरम-उत्तु,  
अति उष्ण स्वभाववाणुं. अतिशय उष्ण;  
बहुत गर्म स्वभाव वाला. Very hot; of  
a very haughty temperament  
ठ० ५, ३;

अच्युत पुं० ( अच्युत ) आरभो देवलोक,  
आरभुं स्वर्ग. बारहवें देवलोक, बारहवाँ स्वर्ग.  
The twelfth celestial abode.  
सम० २२, ठ० २, ३, ( २ ) अगियारमा  
तथा आरभो देवलोकना ईन्द्रनु नाम ग्यारहवें  
तथा बारहवें देवलोक के इन्द्र का नाम.  
name of the Indra of the  
eleventh and twelfth Devalokas.  
ठ० २, ३,—कण्प पुं० ( -कल्प ) आरभो  
देवलोक. बारहवाँ देवलोक the twelfth  
region of gods भग० २४, १२,

अच्युदय न० ( अच्युदक ) मोटा वरसाद;  
महावृष्टि. अतिशय वृष्टि, मूसलघार वर्षा.  
Heavy rain “समए वा सत्तार्यं अच्युदये  
सुखतरं ण वा गेइ ” ओब० ( २ ) धणुं  
पाणुं. बहुत जल. excessive rain  
जीवा० ३,

अच्युय पुं० ( अच्युत ) आरभो देवलोक. बार-  
हवाँ देवलोक The twelfth region  
of gods. भग० ३, १; १०, १७, ६; १८,  
७, अणुजो० १०३; १३४, निर० २, ५,  
विशे० ४३६, सम० १५०; भक्त० १७०, जं० प०  
२, ३२, ( २ ) ११ भा अने १२ भा देवलोकना  
ईन्द्रनु नाम ग्यारहवें तथा बारहवें देवलोक के  
इन्द्र का नाम name of the Indra  
of the eleventh and twelfth

Devalokas. पञ्च० २; सम० ३२; नाया०  
८; ( ३ ) आरभो अच्युत देवलोकवासी देवता.  
बारहवें अच्युत देवलोक में रहने वाले देवता.  
gods residing in the twelfth De-  
valoka named Achyuta उक्त० ३६,  
२०६; पञ्च० १; ( ४ ) अविनाशी अविनाशी.  
eternal, imperishable. भग० १,  
२,—कण्प पुं० ( -कल्प ) आरभो देवलोक.  
बारहवाँ देवलोक the twelfth region  
of gods. भग० १७, ६;

अच्युयवर्दिसग पुं० ( अच्युतावतंसक ) आरभो  
देवलोकनु अेक विमान, ३ ७ भां रहेनार देवता-  
नी स्थिति आवीस सागरोपमनी छे अे देवता  
अच्यारमे अच्यारमे महीने श्वासोच्छ्वास ले छे,  
अेने आवीस आवीस हजार वर्षे लुभ लागे छे.  
बारहवे देवलोक का विमान, जहाके निवासी  
देवों की आयु बावीस सागरोपम की है और बे  
ग्यारहवें २ महीने श्वास लेते हैं और २२  
हजार वर्षों के बाद उन्हें लुधा लगती है. An  
abode in the twelfth Devaloka.  
The duration of life of the gods  
living there is 22 Sāgaropamas  
(a measure of time). These gods  
breathe every 11th month  
and feel hungry after the lapse  
of every 22 thousand years.  
सम० २२,

अच्युया. स्त्री० ( अच्युता ) श्रीपद्मप्रभु  
तथा श्रीकुन्थुनाथस्वामीनी शासनदेवी श्री  
पद्मप्रभु तथा श्रीकुन्थुनाथस्वामी की शासन  
देवी The presiding goddess of  
the cult of Śrī Padma Prabhu  
and Śrī Kunthunātha Svāmī.  
प्रव० ३७७; ३७८;

अच्युसिण त्रि० ( अत्युष्ण ) धणुं गरम-उत्तु.  
बहुत गर्म Very hot. “ अच्युसिण



सुपेण वा जावकुमारि वा ” आया० २, १, ७,  
३६; निसी० १७, २७; २८,  
✓ अच्छ. धा० I. ( आस् ) भेसवुं; आसन  
लगावुं बैठना, आसन लगाना. To sit,  
to take a seat.  
अच्छ उक्त० ३१, ३, सु० च० ७, १६२;  
अच्छंति पंचा० १७, ४;  
अच्छते. पि० नि० १६८;  
अच्छाहि. नाया० ५; भग० ६, ३३;  
अच्छउ विशेष० १३४८,  
अच्छमाण. व० कृ० ओघ० नि० ७७१,  
नाया० १,  
अच्छिउं हे० कृ० भक्त० ८४;  
अच्छ त्रि० ( अच्छ ) स्फटिकना जेवुं स्वच्छ,  
निर्मल, योद्धुं. स्फटिक के समान स्वच्छ,  
निर्मल Pure; clear, pure as crys-  
tal. भग० २, ८, १५, १, १६, ७, जं०  
प० ४, ७४, जीवा० ३, १, ४, पन्न० २;  
सम० प० २११; ओघ० नि० ५५४; नाया०  
४, १२; ( २ ) पुं० मेरु पर्वत. मेरु पर्वत the  
mountain Meru “ ता अच्छंसिणं  
पच्चयंसि ” सू० प० ५, ( ३ ) अे नामने  
अेक आर्य देश एक आर्य देश कां नाम  
name of an Ārya country  
भग० १५, १, प्रव० ६०४, ( ४ ) स्फटिक  
स्फटिक. crystal पन्न० १,—उदग न०  
(-उदक) स्वच्छ पाणी. निर्मल जल स्वच्छ  
पानी, निर्मल जल. pure water, clear  
water राय०  
अच्छ पुं० ( अक्ष ) रीछ रीछ Bear  
आया० २, १, ५, २७, भग० ३, ५, ७, ६,  
जीवा० ३, ३, पन्न० १, नाया० १;  
—भल्ल पुं० (-भल्ल) रीछ रीछ. a bear  
परह० १, १;  
अच्छ न० ( अक्ष ) आण आख An eye  
ओघ० ३१

अच्छंद त्रि० ( अच्छन्द ) परधीन; पर-  
तंत्र. परधीन. परतंत्र Dependent  
“ अच्छदा जेण भुजंति ण से चाडत्ति  
बुच्चई ” दस० २, २,  
अच्छण. न० ( आसन ) भेडक, आसन बैठक,  
आसन A seat उक्त० २६, ७, जीवा०  
३, ४,—घर. न० (-गृह ) भेडकनुं  
स्थान बैठक का स्थान the place for  
sitting, a seat नाया० ३;  
अच्छण पुं० ( अच्छण ) अहिंसा. अहिंसा  
Abstaining from injury. दस० ८,  
३,—जोय पुं० (-योग ) अहिंसामय  
प्रवृत्ति अहिंसा की प्रवृत्ति. act or con-  
duct involving no injury “ तेमिं  
अच्छणजोएणं शिच्चं होयव्वयं सया ”  
दस० ८, ३,  
अच्छणअ न० ( आसनक ) स्वाध्याय भूमि;  
स्वाध्याय स्थान स्वाध्यायभूमि, स्वाध्याय  
का स्थान. Seat occupied at the  
time of studying Śāstras “ उच्चारे  
पासवणे लाउय निस्सेवणे य अच्छणप ”  
ओघ० नि० भा० ११६,  
अच्छणितर न० ( अच्छनिकुर ) ८४ लाख  
अक्षनिकुरांगेनो अेक अक्षनिकुर थाय; ८४  
लाख अक्षनिकुरांग प्रमाणे ङणविभाग  
८४ लाख अच्छनिकुरांग प्रमाण काल विभाग.  
A period of time measured by  
eighty-four lacs of Aksanikurā-  
ngas ( a division of time so  
named ) ठा० २, ४,  
अच्छणितरंग न० ( अच्छनिकुराङ्ग ) ८४ लाख  
नक्षिननेो अेक अक्षनिकुराङ्ग थाय; ८४  
लाख नक्षिन प्रमाणे अेक ङणविभाग  
८४ लाख नक्षिन प्रमाण काल विभाग; अक्ष  
निकुराङ्ग नामक एक कालविभाग. A  
period of time measured by

eighty-four lacs of Nalinas ( a division of time so named ).

ठा० २, ४;

अच्छराग. त्रि० ( अच्छन्नक ) ञुओ "अच्छ-  
त्तय" शब्द. देखो "अच्छत्तय" शब्द  
Vide "अच्छत्तय". नाया० १५;

अच्छत्तय त्रि० ( अच्छन्नक ) छत्र वगरतुं  
छत्र रहित. Having no umbrella.

"अदंतवणे अच्छत्तए अणुवाणहए" ठा० ६,  
भग० १, ६,

अच्छदिय. त्रि० ( अच्छादित ) ढांकेलुं ढका  
हुआ. Covered परह० २, ४,

अच्छरकारक. त्रि० ( आश्चर्यकारक ) आश्चर्य  
उपलवे अेषु; विस्मयकारी विस्मयकारी,  
आश्चर्यकारक Wonderful, astonish-  
ing. परह० २, २,

अच्छरस त्रि० (अच्छरस) अति निर्मल; अेटलुं  
निर्मल के नेभां पासेनी वस्तुनुं प्रतिभिय  
पडे आतिनिर्मल, इतना निर्मल कि, जिसमें  
समीपवर्ती वस्तु का प्रतिविव पढ़ सके Very  
clean, transparently clear. राय०  
१८६, जं० प० ५, १२२,

अच्छरसातंडुल न० ( अच्छरसतण्डुल-  
अच्छो रसो येषु ते अच्छरसाः ते च ते  
तण्डुलाश्च, पूर्वपदस्य दीर्घत्वं प्राकृतत्वात् )  
श्वेत-सङ्केत द्विच्य योभा सफेद चावल.  
Excellent white rice " अच्छेहिं  
सेएहिं रयणामएहिं अच्छरसातंडुलेहिं अट्ट-  
मंगले आलिहइ " राय०

अच्छरा स्त्री० ( अप्सरा-अप्सरस् ) देवांगना,  
अप्सरा. अप्सरा, देवाङ्गना A heavenly  
damsel, a celestial nymph नाया०  
५, भग० ३, २; सु० च० ३, ६२, जीवा०  
३, ३, ४, जं० प० २, २१, पत्र० २, ३४,  
निर० ५, १; ( २ ) सौधर्मेन्द्र की

पट्टराणी सौधर्मेन्द्र की दूसरी पट्टराणी.  
second of the principal queens  
of Saudharmendra. ठा० ४, २;  
नाया० ध० ६, ( ३ ) शकेन्द्र की छठी अग्रम-  
हिणी. शकेन्द्र की छठी अग्रमहिणी. sixth  
of the principal queens of  
Śakrendra. भग० १०, ५;—गण पुं०  
(-गण ) अप्सरातो समूह अप्सराओ का  
समुदाय a multitude of heavenly  
damsels निर० ५, १,

\*अच्छरा स्त्री० ( पुटिका ) थपटी वगाडी ते;  
आगणी अने अगुडे लेगा डरी वगाडवा ते.  
चुटकी वजाना Producing a sharp  
sound by snapping the thumb  
against a finger. सूय० २, २, ५४;  
पत्र० ३६,—णियाय पुं० (-निपात् ) आं-  
पतो पणडारे भारिअे के थपटी वगाडीअे  
तेटले डण चुटकी वजाने मे या आख का पलक  
मारने में जितना समय लगता है उतना समय.  
time measured by a twinkling  
of an eye or snapping of fingers.  
जीवा० ३, १, भग० ६, ५; ओव० ४२;

अच्छरिय. त्रि० ( अवस्तृत ) आच्छादित;  
ढांकेलुं; ओढाडेलुं ढका हुआ. Covered.  
राय० ६२,

अच्छवि पुं० ( अच्छवि-छविः काययोगः स  
नास्ति यस्य स तथा ) डायाना योगने रोडनार  
स्नातक, यौदमा गुणुडाणुवाणा साधु काया  
के योग को रोकने वाला स्नातक, चौदहवें गुण-  
स्थानवर्ती साधु An ascetic who  
stops the activities of body, a  
Sādhu in the fourteenth Gu-  
nasthāna. ठा० ५, ३, भग० २५, ६;

अच्छविकर पुं० ( अच्छपिकर-नत्तपिः-स्वपर-  
योरायानो यः सः तत्करणशीलो न भवति  
सोऽत्तपिकरः ) प्रशस्त विनयतो अेड प्रडारः

पोताने अने परने दुःख न उपजे तेवी रीते  
भनने ये।०यु ते प्रशस्त विनय का एक भेद;  
अपने को और दूसरे को दुःख न हो, इसप्रकार  
मन की योजना करना Guiding the  
mind in a way which would  
cause no harm, a sort of noble  
behaviour भग० २५, ७,

अच्छा स्त्री० ( अच्छा ) व३णु देशमांती ऐ३  
नगरी. वरुण देश की एक नगरी A city  
of the country called Varuna.  
पत्र० १, प्रव० ६०४,

अच्छि न० ( अक्षि ) नेत्र, यक्षु. नेत्र, आँख  
An eye. उक्त० २०, १६, श्रोव० १०,  
जीवा० ३, १, ३, दस० ८, २०, अणुजो०  
१३०; पत्र० १, ३, आया० १, १, २, १६,  
श्रोघ० नि० ७३६, श्रोघ० नि० भा० २६६;  
निर० ३, ४, निसी० ३, ६१, ६२, राय० १६४,  
विवा० २; दसा० ७, १, भग० ३, ७, १४,  
१, नाया० १, वेय० ६, ४,—अंतर पुं०  
न० (—अन्तर ) ये आभनी व३येतो  
भाग दो आखों के बीच का भाग the  
part intervening the two eyes  
विवा० १,—कणुग, पु० (—कणक ) आभ-  
मा पडेव २०-३णु आख में पड़ा हुआ रज-  
कण a particle of dust etc. in  
the eye पंचा० १८, १०,—ठयण न०  
(—स्थगन ) आभतुं ढा३पुं आख का ढकना  
closing the eye, covering the  
eye पंचा० २, २५;—शिमिलिय न०  
(—निमीलित ) आभ भियवी ते आख मीच-  
ना shutting of the eye, wink-  
ing of the eye जीवा० ३,—शिमि-  
लियमेत्त. न० (—निमीलितमात्र ) आभ  
भियीने उधा३वी ऐटलो३ण-वभत आख  
मीच कर फिर खोलने में जितना समय लगता  
है उतना काल time measured by

the twinkling of the eye “अच्छि  
शिमिलियमेत्तं एत्थि सुहे दुक्खमेव अणुवदं”  
जीवा० ३,—पत्त न० (—पत्र ) आभनी  
पापणु आँख की वन्नी; पलक an eye-  
lid भग० १४, ८, जीवा० ३, ३, निसी० ३,  
५५, ६०, राय० १६४,—पव्व न० (—पव्वन् )  
आभतो सांधी, ये आभ व३येतो अतराल.  
दो आखों के बीच का स्थान. the space  
intervening the two eyes पत्र०  
११,—मल पु० (—मल ) आभतो भेल;  
पीयो आँख का मैल mucus or gum of  
the eye निसी ३, ६४, प्रव० ४३६;  
—रोडय पुं० (—रोडक ) आर धट्रिय-  
वाणो ऐ३ ७व चार इन्द्रियो वाला एक जीव.  
a creature having four organs  
of sense पत्र० १,—विचित्त न०  
(—विचित्र—विचित्रे अक्षिणी यस्य सः) विचित्र  
आभवाणो अतुरिद्रिय ७वविशेष विचित्र  
आखो वाला चतुरिन्द्रिय जीवविशेष a four  
sensed being having curious  
eyes. उक्त० ३६, १४७,—वेयणा स्त्री०  
(—वेदना ) आभनी वेदना—दुःख, १६ रोग-  
भानो १२ भो रोग आख की वेदना, सोलह  
रोगों में से बारहवाँ रोग pain in the eye;  
12th out of the sixteen diseases  
नाया० १३, उक्त० २०, १६.—वेहग पु०  
(—वेधक ) आर धट्रियवाणो ऐ३ ७व चार  
इन्द्रियों वाला एक जीव a creature hav-  
ing four organs of sense. “डोल  
मिंगारीयविराली अच्छिवेहगु” उक्त० ३६,  
१४८, पत्र० १,—शूल पु० (—शूल )  
आभतुं शय, १६ रोगभानो ऐ३ रोग.  
आख का शूल, १६ रोगों में से एक रोग.  
eye-sole, a kind of disease of  
the eye; one of the sixteen  
diseases जावा० ३, ३,

अच्छिज्ज. न० ( अच्छेद्य ) छेदवाने अशक्य;  
छेदी न शक्य तेपुं छेदने के लिये अशक्य;  
जो छेदा न जा सके वह. Incapable of  
being cut or pierced ठ० ३, २;  
पि० नि० ३६६;

अच्छिज्ज. त्रि० ( अच्छेद्य ) आण्डादि पासे-  
थी छीनवी लघु ने आहारादि साधुने आपवाथी  
लागतो अेड दोष; उद्गमनना १६ दोषमानो  
१४ भो दोष वच्चों से छीनकर साधु को आहार  
आदि देने से लगने वाला एक दोष; उद्गमन के  
१६ दोषों में से १४ वाँ दोष. A sin  
incurred by snatching food  
from others and giving it to  
the Sādhus, fourteenth of the  
sixteen faults of Udgamana.  
आया० १, ८, २, २०२; ठ० ६, १; पत्र० २,  
निसी० १४, ४, १६, ४; पि० नि० ६३;

अच्छिराण. त्रि० (अच्छिन्न) छेदयुं-डापेलु नडि  
ते; लुदुं पाडेयुं नडि ते छेदा हुआ न हो वह.  
Uncut, unseparated ठ० १०.

अच्छिराण. त्रि० (अच्छिन्न) अविच्छिन्न, निर-  
तर. अविच्छिन्न; निरंतर. Ceaseless, con-  
stant. पि० नि० २३२;—छेदराय.  
न० (—छेदनयिक) अछिन्नच्छेद नयनी अपे-  
क्षाये रयेला सूत्र; गोशालाना मतना सूत्रनी  
परिपाटी. अच्छिन्नच्छेद नय की अपेक्षा से  
रचित सूत्र; गोशाला के मत की परिपाटी  
Sūtras composed from the stand  
point of Achchhinna-chchheda, a  
method of the Sūtras of Gośālā's  
tenets. सम० २२,—छेदराय. पुं०  
(—छेदनय) परस्पर अविभक्तसूत्रानो छेद-  
विलाग छिन्नार नयविशेष; जेम “ धम्मो-  
मंगलमुक्किट्टं” अे गाथा अर्थदृष्टिये  
थीछ गाथा साथे संकलित छतां पाइती  
दृष्टिअेने तेने अलग अलग मानतार

अेड नय परस्पर अविभक्त सूत्रों का विभाग  
चाहने वाला नयविशेष; जैसे कि, ‘धम्मो  
मंगल मुक्किट्टं’ यह गाथा अर्थ दृष्टि से दूसरी  
गाथा के साथ संकलित होने पर भी पाठ की  
दृष्टि से उसे पृथक् मानने वाला नय. the  
standpoint denying the interre-  
lation of scriptural texts. सम० २२;

अच्छित्ति स्त्री० (अच्छित्ति) अव्यवच्छेद; विच्छेद-  
नो अभाव अव्यवच्छेद; विच्छेद का अभाव.  
Absence of break, continuity.  
प्रव० ७८६;

अच्छित्तिकारि त्रि० (अच्छित्तिकारिन्) नाश  
न डरतार, छेद न डरतार. नाश न करने  
वाला, छेद न करने वाला One who  
does not cut, one who does not  
destroy. विशे० १४५८;

अच्छिद्ध त्रि० (अच्छिद्ध) छिद्र वगरनुं;  
निश्छिद्र; धाटुं-छिद्र विनानुं. छिद्र रहित.  
Without holes. भग० १५, १; जीवा०  
३, ३; ओव० १०; ( २ ) गोशालाना षडिशाचर  
साधुमांनो अेथा दिशाचर साधु गोशाला के छ.  
दिशाचर साधुओं में से चौथा दिशाचर साधु.  
the fourth of the six Diśāchara  
Sādhus of Gośālā भग० १५, १;—  
कुच्छि. पुं० (—कुच्छि) छिद्र वगरनी मासथी  
भरी हुई कुच्छि. an arm-pit without  
a hollow i. e. full of flesh.  
“अतियाकुच्छी अछिद्धकुच्छी अलंबकुच्छी”  
नाया० १,—पत्त त्रि० (—पत्र-अच्छिद्राणि  
पत्राणि यस्य सः) जेना पांदां डाई रोगादिथी  
थतां छिद्रवाणां न होय ते जिसके पत्ते किसी  
रोगादि के कारण छिद्र वाले न हो वह. with  
leaves without holes caused by  
some disease etc. “अच्छिद्रपत्ता  
अविरलपत्ता अनाईणपत्ता” नाया० १;

अच्छिय न० ( अक्षिक ) डोई अेक वृक्षतुं इल;  
रंगवामा उपयोगि डोई अडतुं इल. किसी एक  
वृक्ष का फल; रंगने मे उपयोगी वृक्षविशेष  
का फल. A fruit of a tree used  
for dying purposes. आया० २, १,  
८, ४६;

अच्छिल. पुं० ( अक्षिल ) आर धद्रियवाणे  
अेक अ्व. चार इन्द्रियों वाला एक जीव A  
creature having four organs of  
sense. उक्त० ३६, १४६;

अच्छी. स्त्री० ( आच्छी-अच्छदेशोद्भवा स्त्री )  
अच्छ देशमां उत्पन्न थयेली स्त्री अच्छदेश  
में उत्पन्न हुई स्त्री A woman born in  
a country called Achchha पत्र०  
११;

✓ अच्छीकर. ना० धा० II. (अच्छी×कृ) स्वच्छ  
करनुं, साक्ष करनुं. स्वच्छ करना, साफ करना  
To cleanse; to purify.

अच्छीकरेइ. निसी० ४, ३;

अच्छुत्ता. स्त्री० ( अस्पृष्टा ) २० मा तीर्थकरनी  
शासन देवीतुं नाम २० वें तीर्थकर की शासन  
देवीका नाम. Name of the tutelary  
goddess of the 20th Tirthan-  
kara. प्रव० ३७८;

अच्छुय. त्रि० ( आस्तृत ) आच्छादित करेनुं;  
ढाँकेनुं ढका हुआ. Covered. नाया० ८;

अच्छेज्ज त्रि० ( अच्छेद्य ) छेदी न शक्य  
अेयु छेदा न जा सके ऐसा. Incapable of  
being cut भग० २०, ५, ठा० ३, २,

अच्छेज्ज. न० ( आच्छेद्य-आच्छिद्यते पुत्रादेः  
सकाशाद्यत्साधुदानार्थं तदाच्छेद्यम् ) डोईना  
हाथमांथी लई साधुने आपुनुं ते, आहारने  
अेक दोष. किसीके हाथ में से छीन कर साधु  
को देना, आहार का एक दोष Giving (food  
etc) to a Sādhu after snatch-  
ing it away from the hands of

another; a fault connected with  
food. पंचा० १३, ६, परह० २, ५, दसा०  
२, ७; भग० ६, ३३;

अच्छेर. पुं० ( आश्चर्य ) आश्चर्य डारक अनाव;  
अछेइ आश्चर्य कारक वनाव A wonder,  
a wonderful event प्रव० ८६६, जीवा०  
३, ३,—पेच्छुरिज्ज न० ( -प्रेक्षणीय )  
आश्चर्यजनक दृश्य; डैतुक उपलवे अेवी वस्तु.  
आश्चर्यजनक दृश्य a wonderful specta-  
cle; a thing that would excite  
curiosity. जीवा० २,

अच्छेरग. पुं० न० ( आश्चर्य ) आश्चर्यकारी  
अनाव; दश अछेरामातुं गमे ते अेक.  
आश्चर्यकारी वनाव, दस आश्चर्यकारी वनावों  
मे से एक. A wonderful event; one  
of the ten wonderful events.  
ठा० १०, ( २ ) आश्चर्य पाभनुं ते,  
अयंभे-अयंभे पाभनु ते आश्चर्य करना  
astonishment “अच्छेरगमच्चुदण्”  
उक्त० ६, ५१, जं० प० २, २१;

अच्छेरय पुं० न० ( आश्चर्य ) लुभे “अच्छेर”  
शब्द देखो “अच्छेर” शब्द Vide ‘अच्छेर’.  
नाया० ८, १७, प्रव० ३३, कप्प० २, २२;  
अच्छेरयभूय. त्रि० ( आश्चर्यभूत ) नवांथ लेयुं.  
अचंभे जैसा. Wonderful, astonish-  
ing पंचा० ६, ३०;

अच्छोड न० ( आच्छोटन ) धोपीनी भाइक  
लुगजने शिला साथे न्नेरथी पठाउनुं-जीडनु  
ते. धोवी के समान वलों को शिला पर जोर  
जोर से पछाड़ना Dashing a cloth  
against a slab of stone for wash-  
ing etc पिं० निं० भा० ३४,

अज. पुं० ( अज ) अडरे वकरा A he-  
goat जीवा० ३, ३, विवा० ४;

अजड स्त्री० ( अयति ) अयिदनि; अयनीपायु.

अविरति; अव्रतापन. Absence of freedom from attachment to worldly objects; non-asceticism. क० गं० ३, १८; ४, २३;

अजजर त्रि० (अजजर) ८२-ध३पणु रहित, ध३पणु वगरेनु. वृद्धावस्था से रहित. Free from old age; free from senility. ज्ञा० ३;

अजडिल. त्रि० (अजडिल) ८२-ध३पणु. जटा रहित Devoid of matted hair. भग० १६, ४;

अजय त्रि० (अयत-न विद्यते यतं यतिर्यतना यस्य सोऽयतः ) यत्ना-न्ययणा रहित. यत्नाचार रहित Without efforts at self-control; without minute observation. दस० ४, १, ८, १, पि० नि० ३५३; ( २ ) गृहस्थ ळेवा साधु, सावध द्विधाथी निवृत्त न थयेव साधु गृहस्थ के समान साधु, जो सावध क्रिया से निवृत्त न हुआ हो. a Sādhu who acts like a layman, who has not abstained from sinful activity. गच्छा० १, ( ३ ) त्रि० अविरत सम्यग्दृष्टि; योथा गुणुदाणुवाणे. अविरत सम्यग्दृष्टि; चौथे गुणस्थान वाला a person in the fourth stage of spiritual evolution, having faith, but not observing rules of conduct. क० गं० २, १५; क० प० ५, २७; ( ४ ) न० यत्नाने अभाव. यत्नाचार का अभाव. absence of minute observation. “अजयं चरमाणो य पाणभूयाइं हिंसई” दस० ४, १;—गुण पुं० (—गुण) अविरति सम्यग्दृष्टि गुणुवाणु; योथुं गुणु दाणुं अविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थान; चौथा गुणस्थान. the fourth Gunasthāna marked with non-cessation from

worldly attachment. क० गं० ३, २१;—जुअ त्रि० (—युत) अविरति सम्यग्दृष्टि गुणुदाणु सहित. अविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थान सहित. associated with the Gunasthāna called Avirati Samyagdṛiṣṭi. क० गं० ४, ६;

अजयणा त्रि० (अयतना) यत्ना-न्ययणाने अभाव. यत्नाचार का अभाव. Absence of minute observation. “अजयणाणु पकुव्वंति पाहुणगाणु अवच्छला” गच्छा० १२०; पचा० १५, १८;

अजयित्ता. सं० कृ० अ० (अजित्वा) न श्रुतीने. न जीतकर Without conquering. ठा० ३, २;

अजर त्रि० (अजर-नास्ति जरा यस्य) ८२ रहित; ध३पणु वगरेनो वृद्धावस्था रहित. Without old age. ( २ ) पुं० सिद्ध-लगवान्. सिद्धभगवान्. one who has attained to salvation; a Siddha. ओव०

अजराउय त्रि० (अजरायुज) ८२-यु८-गर्भा-शयमाथी ८२ साथे ८८-मतो प्राणिवर्ग, तेथी सिद्ध अ८२-यु८. जरायुज नहीं सो; जिसका जन्म कोख से न हुआ हो. Not born from the womb, not viviparous. प्रव० १४८२;

अजरामर. न० (अजरामर-न विद्यते जरामरौ यत्र तदजरामरम्) ८२यां ८२-भरणु नथी अेवुं स्थान जरा मरण रहित स्थान. A place where there is neither decay nor death तण्डु० २६; ( २ ) ८२-ध३पणु भरणु रहित. जरामरण रहित. undecaying and immortal. “अहो-यरात्रो परितप्पमाणे अठेसु सुडे अजरामरेव” सूत्र० १, १०, १८, ( ३ ) पुं० ८२-भरणु

रहित, अमर; सिद्धभगवान् . जरामरण  
रहित, अमर; सिद्धभगवान् ( one ) free  
from old age and death, immor-  
tal; a Siddha. गच्छा० ४७,

**अजस** न० ( अयशस् ) अपयश, अपकीर्ति;  
निन्दल अपयश, अपकीर्ति, बुराई, निन्दा  
Disgrace, dishonour. भग० ६,  
३३, ४१, १, क० गं० १, २७, २, ७,  
—कारग. त्रि० (-कारक) अपकीर्ति डर-  
नार बुराई करने वाला, अपकीर्ति करने वाला  
bringing on disgrace; defaming.  
भग० ६, ३३, —किञ्चिणाम. न० (-कीर्तिना-  
मन् ) नामकर्मेनी ओड प्रकृति, डे गेना  
उदयथी ओव अपकीर्ति पाभे नामकर्म की  
एक प्रकृति, जिसके उदय से जीव की अपकीर्ति  
होती है. a variety of Nāmakarma  
by whose rise a living being is  
subjected to infamy. क० गं०  
१, ६७;—जराग. त्रि० (-जनक ) अपयश  
डरनार अपयश करने वाला. causing  
infamy, libellous, defamatory.  
गच्छा० ५५;—बहुल. त्रि० (-बहुल) गेना  
धरां काम अपयश लरेदां डोय ते जिसके  
अधिक कार्य अपयश से भरे हों abound-  
ing in dishonourable deeds,  
infamous, notorious “ शियडिबहुले  
साईबहुले अजसबहुले ” सूय० २, २, ३५,  
**अजसोकिञ्चि**. स्त्री० ( अयशःकीर्ति ) नाम  
कर्मेनी ओड प्रकृति, डे गेना उदयथी ओव अपयश  
पाभे नामकर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय  
से जीव अपयश प्राप्त करता है A variety  
of Nāmakarma by whose rise  
a living being suffers infamy.  
पञ्च० २३; सम० २६;

**अजस्सं**. अ० ( अजसम् ) निरंतर. डभेशा.  
निरतर, सदा. Always; incessantly.

“आमरणंतमजस्सं संजमपारेपालयां विहिशा”  
पंचा० ७, ४६,

**अजह** त्रि० ( अजघन्य ) थोडाभां थोडा नहि ते;  
मध्यम अथवा उत्कृष्ट जघन्य न हो वह, मध्यम  
अथवा उत्कृष्ट Other than the very  
lowest, mediate or the highest.  
भग० ८, १०, ११, ११; क० प० १, ६२,

**अजहरणमणुक्कोस**. त्रि० ( अजघन्यमनुत्कर्ष  
—अजघन्योत्कर्ष ) न्धन्य नहि अने उत्कृष्ट  
नहि ते, मध्यम मध्यम Intermediate,  
between two extremes भग०  
८, १०, ११, ११; १८, ४, २५, ६; नाया० १६;

**अजहरणुक्कोस** त्रि० ( अजघन्योत्कर्ष ) न्धन्य  
डे उत्कृष्ट नहि ते, मध्यम. मध्यम Inter-  
mediate, between the two extre-  
mes. भग० ८, १०, पञ्च० ५, —पयसिय.  
पुं० (-प्रदेशिक ) न्धन्य नहि अने उत्कृष्ट  
नहि किन्तु मध्यम प्रदेशनुं अनेल-निष्पन्न  
मध्यम प्रदेश का बना हुआ belonging  
to or having its birth in the  
intermediate region. ठा० १, १;

**अजहतथ** न० ( अयथार्थ ) अयथार्थ नाम;  
शुशुडीन नाम. गुणाहीन नाम; अयथार्थ नाम.  
Name devoid of real qualities;  
name inconsistent with its  
meaning विशेष० ८४७, ठा० १, १

**अजहन्न** त्रि० ( अजघन्य ) न्धन्य नहि, मध्यम  
अथवा उत्कृष्ट जघन्य नहीं, मध्यम अथवा  
उत्कृष्ट Not lowest, not minimum,  
medium or highest क० गं० ५,  
४६; ४७;—मणुक्कोस त्रि० (-अनुत्कर्ष )  
न्धन्य अने उत्कृष्ट नहि, मध्यम जघन्य और  
उत्कृष्ट नहीं, मध्यम. neither highest  
nor lowest. medium प्रव० ११५८.

**अजा** स्त्री० ( अजा ) थडरी बकरी A she-  
goat ज० प० २, २४,

**अजाइय.** त्रि० ( अयाचित ) नहि लयेलुं; अदत्तादान-अप्या विना दीधेलुं. विना मांगा हुआ; विना याचना किये लिया हुआ. Unso-  
solicited. “मुसावायं बहिष्ठं च उग्गहं च  
अजाइयं” सूय० १, ६, १०; उत्त० २, २८,  
नाया० ५;

**अजाइया** सं० कृ० अ० ( अयाचित्वा ) न मां-  
गीने, मांग्या विना. न मांगकर; मागे विना.  
Without soliciting; without  
making a demand. “कवाडं नो पणो-  
लिज्जा उग्गहंसि अजाइया ” दस० ५, १,  
१८; ६, १४;

**अजाणंत.** व० कृ० त्रि० ( अजानत्-अजानान )  
डल्पाडल्पने न लणुतो; अल्पज्ञ, अगीतार्थी.  
कल्पाकल्प को नहीं जानता हुआ; अल्पज्ञ  
Ignorant, not knowing. “अजा-  
णंता सुसं वदे” सूय० १, १, ३, ८,

**अजाणग** त्रि० ( अज्ञानक-अज्ञ ) अज्ञ, अ-  
लणु; अज्ञानी. अज्ञ; अजान, अज्ञानी.  
Ignorant. “अजाणगा जन्नचाई  
विज्जमाहणसंपया” उत्त० २४, १७;

**अजाणमाण.** व० कृ० त्रि० ( अजानान ) न  
लणुतो. न जानता हुआ. Not knowing;  
ignorant of क० प० ५, २४,

**अजाणय.** त्रि० ( अज्ञानक-अज्ञ ) लुभ्यो  
'अजाणग' श०६. देखो 'अजाणग' शब्द  
Vide 'अजाणग.' “एव विप्पडिवन्नेगे  
अप्पणा उ अजाणया ” सूय० १, ३, १, ११;

**अजाणिय.** सं० कृ० अ० ( अज्ञात्वा ) अप्या  
विना विना जाने. Without knowing;  
having no knowledge. निसी० २,  
४८; ४, १४; ६, ७, १५, ३४;

**अजाणिया.** स्त्री० ( \* अज्ञानिका-अज्ञा ) अ  
लणु स्त्री; समल वगरनी अजान स्त्री;  
समक रहित स्त्री. An ignorant wo-  
man नंदी० स्थ० ४५;

**अजाणू.** स्त्री० ( अज्ञा ) अप्या विना देभा देभी-  
थी डे डोधना डडेवाथी डरेली पापनी निवृत्ति.  
विना जाने देखा देखी या किसीके कहने से की  
हुई पाप की निवृत्ति. Unconscious ab-  
stention from sin. “तिविहा वावत्ती  
पणत्ता तं-जाणू अजाणू वित्तिगिच्छा” ठा०  
३, ४;

**अजाय.** त्रि० ( अजात ) नहि अनेलुं; नहि  
उत्पन्न थयेलुं. विना बना हुआ; अनुत्पन्न. Not  
born or produced. विशेष० ४१८,  
( २ ) अगीतार्थ, शास्त्रना अलणु. अगी-  
तार्थ; शास्त्र का अनजान. Ignorant of  
scriptures. प्रव० ७८७,—आहार. त्रि०  
(-आहार-अजातो न मिलितः शुद्ध आहारो  
यस्यासौ, निराहारो वेति ) निर्दोष आहार न  
भणवाथी आहार विना यदापी लेनार (साधु).  
निर्दोष आहार के न मिलने पर आहार के  
बिना चलाने वाला ( साधु ). ( an asce-  
tic ) who can do without food  
when he does not get faultless  
food. गच्छा० ५७,—कप्प. पुं० (-कप्प)  
अगीतार्थने डल्पा-आचार. अगीतार्थ का  
आचार the conduct or practice of  
a person ignorant of scriptures.  
प्रव० ७८७;

**अजाया.** त्रि० ( अजाता ) साधुये नाभी देवानी  
थी वतनासहित परंषपी ते. साधु के तजने  
योग्य वस्तुको यत्नाचारपूर्वक त्यागना. Care-  
ful disposal of waste things by a  
Sādhu. ओष० नि० ६०७;

**अजिअ.** पुं० ( अजीव ) अणुय; अणु नहि ते.  
अजीव Non-soul; ( any thing )  
inanimate. प्रव० ४४१; क० गं० १, १५;

**अजिआ.** स्त्री० ( अजिता ) भील तीर्थडर  
अनितनाथनी शासनदेवीनुं नाम. दूसरे  
तीर्थकर अजितनाथ की शासनदेवी का नाम.



Name of the tutelary goddess of Ajitanātha, the 2nd Tirthankara प्रव० ३७७,

अजिह्विन्द्रिय-य. त्रि० ( अजितेन्द्रिय-न जितानि श्रोत्रादीनीन्द्रियाणि येन स तथा ) छिद्रियो जेने वश नथी ते; छिद्रियोने न शतनार. इन्द्रियों को न जीतने वाला, जिसके वश इन्द्रियों नहीं हैं वह. One who has not subdued his senses उक्त० ३४, २२;

अजिण. न० ( अजिन ) भृग-हृत्पु आदिनु यामुं हिरण आदि का चमड़ा. Skin of a deer etc आया० १, १, ६, ५३; उक्त० ६, २१, सूय० २, २, ६, ( २ ) यर्भ-यामुं धारणु करतु ते चर्म धारण करना the act of putting on a skin “चिराजिणं नगिण्णं जदी संघाडिमुंडिणं” उक्त० ६, २१; ( ३ ) पुं० जिन-तीर्थकर नहि ते, वीतराग नहि ते. जो जिन-तीर्थकर न हो वह; जो वीतराग न हो वह one who is not a Tirthankara i e one who has not conquered passions ओव० १६, भग० १५, १;—आहार त्रि० (—आहारक ) जिननामकर्म अने आहारकशरीर अथे अथे प्रकृति शिवायनुं जिननामकर्म और आहारकशरीर इन दो प्रकृतियों के सिवाय का. with the exception of the two Karma Prakritis viz Jinanāma Karma and Ahārakaśarīra क० गं० ३, २३,—मणुआउ त्रि० (—मनुजायुष् ) जिननाम तथा मनुष्यनुं आयुष्य अथे अथे प्रकृति शिवायनुं जिननाम और मनुष्य इन दो प्रकृतियों के सिवाय का. with the exception of the two Karma Prakritis viz Jinanāma and Manuṣyāyusya क० गं० ३, ७,

अजिण न० ( अजीर्ण ) अपचो; पोराड

पायन न थाय ते. भोजन का न पचना; अजीर्ण. Indigestion. पि० नि० ८६;

अजित. पुं० ( अजित ) अजित नामे भील तीर्थकर अजित नाम के दूसरे तीर्थकर Name of the 2nd Tirthankara सम० २३, २४,

अजिय-अ त्रि० ( अजित ) छिद्रियो जेने वश नथी तेवे, छिद्रियो पराजित पावे नहि तेवे जो किनामे पराजित न हो सके वह. Invincible. भग० ६, ३३, नाया० १; ( २ ) भरतक्षेत्रनी यालु योवीसीना भील तीर्थकरनुं नाम भरतक्षेत्र की वर्तमान चौबीसी के दूसरे तीर्थकर का नाम name of the second Tirthankara, of the present cycle of twentyfour of Bharata Kṣetra भग० २०, ८; अणुजो० ११६, ( ३ ) नवमा सुविधिनाथ तीर्थकरना यक्षनु नाम नवे सुविधिनाथ तीर्थकर के यक्ष का नाम name of the Yakṣa, of the ninth Tirthankara, Suvidhinātha प्रव० ३७५, —जिण्णिद पुं० (—जिनेन्द्र ) यालु अवसर्पिणीना भरतक्षेत्रना भील तीर्थकर वर्तमान अवसर्पिणी के भरतक्षेत्र के दूसरे तीर्थकर का नाम second Tirthankara of Bharat Kṣetra in the present Avasarpinī विशेष० ५६६;

अजियसेण, पु० ( अजितसेन ) जम्बूद्वीपना भरतक्षेत्रना यालु अवसर्पिणीमां यथेन नवमा तीर्थकरनुं नाम जम्बूद्वीप के इरवतक्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी के नवे तीर्थकर का नाम Name of the ninth Tirthankara, of the present Avasarpinī in the Bharata Kṣetra of Jambūdvīpa. सम० प० २०० ( २ ) अंतगड मूत्रना त्रील वर्गना त्रील अध्ययननु नाम अन्तगड

सूत्र के तीसरे वर्ग के तीसरे अध्याय का नाम name of the third chapter of the third part of Antagāda Sūtra अंत० ३, ३, ( ३ ) भद्रपुर निवासी नाग गाथापतिनी पत्नी सुलसाना पुत्र, के ने नेमनाथ प्रभु पासे दीक्षा लई २० वरसनी प्रव्रज्या पाणी शत्रुंजय उपर ओइ भासनेो संथारेो इरी निर्वाण पद पाभ्या. भद्रपुर निवासी नाग गाथापति की पत्नी सुलसा का पुत्र, जिसने नेमनाथ प्रभु से दीक्षा लेकर २० वर्षों तक प्रव्रज्या पालन की और शत्रुजय ऊपर एक मास का संथारा कर, निर्वाण पद प्राप्त किया. the son of Sulasā the wife of Nāga Gāthāpati, resident of Bhaddalapura, who having taken orders as a disciple of Neminātha, practised asceticism for twenty years, observed absolute fasting for a month on Śatruñjaya and attained salvation. अंत० ३, ३,

**अजिया-आ** स्त्री० ( अजिता ) योथा तीर्थंकर श्रीअभिनन्दनस्वामीनी मुख्य साध्वी चौथे तीर्थंकर श्रीअभिनन्दनस्वामी की मुख्य साध्वी. The principal nun of the fourth Tirthankara, Abhinandana Svāmī प्रव० ३०६, सम० प० २३४,

**अजीर.** न० ( अजीर्ण ) अपयो; अशुर्ण अजीर्ण. Indigestion नाया० १३; पि० नि० आ० २५;

**अजीरग.** न० ( अजीर्ण ) लुओ ' अजिरण ' शब्द देखो 'अजिरण' शब्द Vide 'अजिरण' जीवा० ३, ३, भग० ३, ७, ज० प० २, २४; **अजीरण,** न० ( अजीर्ण ) अपयो; अशुर्ण-अजीर्ण Indigestion प्रव० ८७२; **अजीव.** पुं० ( अजीव-न जीवा अजीवाः ) ७३,

येतन रहित पदार्थ, निर्णय पदार्थ चैतन्य रहित पदार्थ, जड An inanimate object. "रूविणो य अरूवी य अजीवा दुविहा भवे अरूवी दसहा वुत्ता रूविणो वि चउव्विहा" उक्त० ३६, ४, नाया० ५, ओव० ३४; दस० ४, १२, अणुजो० ८, १२८, पन्त० १, भग० १, ६, २, ५, १०, ५, ६, ७, ७; राय० २२४; जं० प० २, ३१;—**अभिगम.** पुं० (—अभिगम) गुणु प्रत्यय अवधि आदि ज्ञानथी अणुव-पुद्गलादिनेो ओध थवेो ते. गुण प्रत्यय अवधि आदि ज्ञान से पुद्गलादि का बोध होना. realisation of the knowledge, of things devoid of life, through Gunapratyaya, Avadhī and other varieties of knowledge. जीवा० १,—**आणवणिया.** स्त्री० (—आज्ञापनिका) अणुव परत्वे आज्ञा-आदेश इरवाथी लागेल इर्भ अंध, आणवणिया क्रियाने ओइ लेइ अजीव सम्बन्धी आज्ञा करने से जो कर्मबंध हो वह. आणवणिया क्रिया का एक भेद Karma incurred by giving orders with reference to things devoid of life; a variety of Ānavanīyā Kriyā ठ० २, १,—**आणवणिया.** स्त्री० (—आनायनी) अणुवरूप वस्तु भगाववाथी लागती क्रिया, आनायनी क्रियाने ओइ लेइ अजीवरूप वस्तु मंगाने से जो कर्मबंध हो वह, आनायनी क्रिया का एक भेद Kriyā or Karma incurred by asking for things devoid of life; a variety of Ānāyanī Kriyā. ठ० २, १,—**आरंभिया.** स्त्री० (—आरम्भिका) अणुवरहित इलेवर निमित्ते आरंभ इरवाथी लागती क्रिया-इर्भ अंधाय ते, आरंभिया क्रियाने ओइ लेइ जीवरहित कलेवर के निमित्त आरंभ करने से जो कर्मबंध हो वह;

आरंभिया क्रिया का एक भेद a variety of Ārambhiyā Kriyā i. e. sin incurred by acts done with reference to dead bodies, a kind of Ārambhiyā Kriyā ठा० २, १;—करण. न० (—करण) अशुचि कर्तुं-शुचन प्रयोग ( व्यापार ) थी निशुचि वस्तुने लेप, रूप वगैरे संस्कार कर्त्वा ते जीव के प्रयोग से निर्जीव वस्तु का लेपादि संस्कार करना act of smearing, shaping etc, lifeless things, done by animate things विशेष० ३३४२,—किरिया. स्त्री० (—क्रिया) अशुचनो व्यापार, अशुचि पुद्गलसमूहनुं धर्मापथिक अध क्के सांपरायिक अधरूपे परिशुभनुं ते, धरियावहिया अने सांपरायिकी अे अे क्रिया-भाथी गमे ते अेक. अजीव का व्यापार, अजीवपुद्गलसमूह का ईर्यापथिक बध या सांपरायिक बंधरूपसे परिणामना, इरियावहिया और सांपरायिकी इन दोनों क्रियाओं मे से कोई भी एक movements of inanimate objects resulting in groups called Iriyāpathikabandha or Sāmparāyikabandha “दो किरियाओ परात्ता, तंजहा जीवकिरिया चैव अजीवकिरिया चैव” ठा० २, १,—शिसिसय त्रि० (—निःश्रित) अशुचने आश्री रहैल अजीव के आश्रय मे रहा हुआ in touch with a thing devoid of life ठा० ७,—शिसिसय. त्रि० (—निःसृत) अशुचथकी नीकलेल. अजीव से निकला हुआ produced from a thing devoid of life ठा० ७,—द्वव. न० (—द्रव्य) अशुचि द्रव्य-पदार्थ; धर्मास्तिकाय आदि ५ द्रव्य अजीवद्रव्य, धर्मास्तिकाय आदि पांच द्रव्य inanimate matter classified into five divisions viz

Dharmāstikāya etc. भग० ११, १०, १५, ४; २५, २,—दिद्विया स्त्री० (—द्विष्टिका) अशुचि-यित्रामलु आदि जेवाथी लागती क्रिया, दिद्विया क्रियानो अेक भेद अजीवचित्र आदि देखने से जो कर्मबंध हो वह, दिद्विया क्रिया का एक भेद Kriyā or Karma incurred by seeing inanimate objects such as painting etc, a variety of Ditthiyā-Kriyā ठा० २, १,—देस पुं० (—देश) अशुचनो अेक विभाग, अशुचिरूप आपी वस्तुने अेक कडे। अजीव का एक विभाग, अजीवरूप सम्पूर्ण वस्तु का एक टुकडा. a part of inanimate matter उक्त० ३६, २, भग० २, १०, १०, १; १६, ८,—पच्चक्खाराकिरिया स्त्री० (—अग्रत्याख्यानक्रिया) मदिरा वगैरे अशुचनु प्रत्याभ्यान नहि कर्त्वाथी लागती क्रिया, अपच्य-इप्पालु क्रियानो अेक भेद मदिरा आदि अजीव वस्तुओ का प्रत्याख्यान न करने से जो कर्मबंध हो वह, अपचक्खारा क्रिया का एक भेद Kriyā or Karma incurred by not taking vows to abstain from drinking wine etc, a variety of Apachchakkhāna Kriyā ठा० २, १,—पज्जव. पु० (—पर्यव) अशुचना पर्याय, अशुचना विशेष धर्म, अशुचना शुशु अजीव का पर्याय, अजीव का विशेष धर्म, अजीव का विशेष गुण specific properties of inanimate matter. अजीवपज्जवाण भत्ते ! कइविहा परात्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तजहा रूविअजीव पज्जवा अरूविअजीवपज्जवा य ” पन० ५, भग० २५, ४,—परावणा स्त्री० (—प्रजापना) अशुचनु निःपाशु-प्रतिपादन कर्त्तु, अच ५-प्रशर अतापना ते अजीव हा नितपाण

करना—स्वरूप बताना. defining and explaining the nature and varieties of inanimate matter. “से किं तं अजीवपरिणामवशात् ? अजीवपरिणामवशात् दुविहा परिणामात्, तंजहा रूविअजीवपरिणामवशात् अरूविअजीवपरिणामवशात् य” पन्न० १; —पद. न० ( -पद ) पञ्चम्या सूत्रना पांचमा पदं नाम पञ्चम्यासूत्र के पांचवे पद का नाम. name of the fifth part of Pannavanā Sūtra भग० २५, ४;—परिणाम. पुं० ( -परिणाम ) अंधन, गति वगैरे अश्रवना परिणाम बंधन, गति आदि अजीव का परिणाम transformations of inanimate matter resulting in molecular bondage, motion etc “दसविहे अजीवपरिणामे परिणामे तंजहा बंधनपरिणामे गह्यपरिणामे ठाणपरिणामे भेदवन्नरसपरिणामे गंधपरिणामे फासपरिणामे अगुह्लह्यसहपरिणामे ” ठा० १०, भग० १४, ४,—पाउस्त्रिया. स्त्री० ( -प्राद्वेपिकी ) अश्रवपदार्थ-पथरा वगैरे उपर द्वेष करवाथी लागती क्रिया—कर्मबंध अजीव पदार्थ के साथ द्वेष करने से जो कर्मबंध होवह Kriyā or Karma incurred by despising things devoid of life. भग० ३, ३; ठा० २, १,—पाडुच्चिया. स्त्री० ( प्रातीतिकी—अजीव प्रतीत्य चो रागद्वेषोद्धवस्तज्जो यो वन्धः सा, अजीवप्रातीतिकी ) अश्रव प्रत्ये रागद्वेष करवाथी लागतो कर्मबंध, पाडुच्चिया क्रियातो अश्रव भेद अजीव से रागद्वेष करने से जो कर्मबंध होवह, पाडुच्चिया क्रिया का एक भेद Karma incurred by showing fondness for or hatred towards things devoid of life; a variety of Pāduchchiyā Kriyā ठा० २, १,—पुट्टिया

स्त्री० ( \*पुट्टिका—स्पुट्टिका ) अश्रवने रागद्वेषे स्पर्श करवाथी लागती क्रिया—कर्मबंध; पुट्टिया क्रियातो अश्रव भेद. अजीव को रागद्वेष रूप भावो से स्पर्श करने से जो कर्मबंध होवह; पुट्टिया क्रिया का एक भेद. Kriyā or Karma incurred by touching things devoid of life with feelings of love or hatred; a variety of Putthiyā Kriyā ठा० २, १; —पपस. पुं० ( -प्रदेश ) अश्रवद्रव्यतो प्रदेश, अश्रव द्रव्यतो अश्रवमा अश्रवो लाग-रुधनी साथे लागेल परमाश्रु. अजीव द्रव्य का प्रदेश; अजीव द्रव्य का छोटे से छोटा हिस्सा. the minutest part of a thing devoid of life, atoms forming a quarter molecule भग० १०, १; १६, ८,—भाव. पुं० ( -भाव ) अश्रवना पर्याय. अजीव का पर्याय. various forms of things devoid of life. विशेष० ३३४१; —भावकरण न० ( -भावकरण ) स्वाभाविकरीते विसूसा लावे वादणा विगैरेनु रूपान्तर थाय छे ते स्वाभाविक रीति से मेघ आदि का जो रूपान्तर होता है वह. changes that are naturally produced in matter such as clouds etc. विशेष० ३३४२;—मिस्त्रिया. स्त्री० ( -मिश्रिता ) सत्यमृषा लापानो अश्रव भेद, अश्रव धणा माणुसो मरी गयेल छे थोडा अश्रवता होय त्यां अश्रव भोले के “अश्रव आ अश्रव मरी गयेल छे ” आमा अश्रव सायुं अने अश्रव भोले अने वणी ते अश्रव आश्रित भाटे अश्रवमिश्रित सत्यमृषा. सत्यमृषा भाषा का एक भेद; जहा बहुत मनुष्य मरगये हों और थोड़े जीवित हों वहां ऐसा कहे कि “सब मर गये” इसमें सत्य और भूठ दोनों मिले हैं और फिर यह कथन

अजीवयाश्रित होने के कारण अजीव मिश्रित सत्यमृषा कहाता है. speech referring to lifeless things, which is partly true and partly false; a variety of Satyamṛisā, a kind of speech. पत्र० ११,—रासि. पुं० (-राशि) अश्रवणे समूह अजीव का समूह a collection of things devoid of life. “अजीवरासी दुविहा परणसा तंजहा रूविअजीवरासी अरूविअजीवरासी” सम० २;—विजय. पुं० न० (-विचय) अनंत पर्यायवाणी धर्मास्तिकाय आदि अश्रव द्रव्यनु स्थितन उरवुं ते अनंत पर्याय वाले धर्मास्तिकाय आदि अजीव द्रव्य का चिंतवन करना. the act of thinking about things devoid of life e. g. Dharmāstikāya etc. which assume various forms. सम० ४, —विभक्ति. स्त्री० (-विभक्ति) अश्रवणी विलक्षित—अश्रवणुं पृथङ्करण-विवेयन-विलागदर्शन अजीव का पृथक्करण-विभाग analysis of the nature of things devoid of life. “एसा अजीवविभक्ती समासेण वियाहिया” उक्त० ३६, ४७, —वैदारणिया. स्त्री० (-वैदारणिका-वैक्रयणिका-वैचारणिका-वैतारणिका-अजीवं विचारयति, असमानभागेषु विक्रीणाति, द्वैभाषिके, विचारयति, पुरुषादिविप्रतारणबुद्ध्या भणति, यत् सा) अश्रवणे विदारवाथी ३ अश्रव वस्तु निमित्ते कोषने छेतरवाथी लागती क्रिया-उर्भयन्ध; विदारणियाक्रियाने अेड लेद अजीव का विदारण करने या अजीववस्तु के निमित्त से किसी को ठगने से जो कर्मबंध हो वह; विदारणिया क्रिया का एक भेद Kriyā or Karma incurred by deceiving somebody in

connection with things devoid of life or by tearing them, a variety of Vidāranīyā Kriyā. ठ० २, १;—सामंतोवणियाइया. स्त्री० (-सामन्तोपनिपातिकी) पोतानी वस्तुना वभाणुथतां सालणी मनमां मयडावाथी-राश्रथवाथी लागती क्रिया-उर्भयन्धन; सामतो-वणियाइया क्रियाने अेड लेद. अपनी वस्तु की प्रशंसा सुनकर प्रसन्न होने से जो कर्म बंधन हो वह, सामतोवणियाइया क्रिया का एक भेद. Kriyā or Karma incurred by being elated at the praise of one's own thing, a variety of Sāmantovaṇīyāyā Kriyā. ठ० २, १;—साहत्थिया स्त्री० (-स्वाहस्तिका) अश्रव-भङ्ग विगेरे लक्ष पोताने हाथे अश्रवने मारता लागती क्रिया-उर्भयन्ध, साहत्थिया क्रियाने अेड लेद अजीव-खड्ग वगैरह लेकर अपने हाथ से अजीव को मारने से जो कर्मबंध हो वह, साहत्थिया क्रिया का एक भेद Kriyā or Karma incurred by striking things devoid of life with things devoid of life such as a sword etc, a variety of Sāhatthiyā Kriyā ठ० २, १,

अजीवकाय. पुं० (अजीवकाय) अश्रवद्वित्त डाय-धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय अने पुद्गलास्तिकाय. जीवरहित काय-धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय Matter devoid of life e. g. Dharmāstikāya, Adharmāstikāya, Ākāśāstikāya and Pudgalāstikāya प्रव० ८४६; भग० ७, १०,—असंजम. पु० (-असंजम) अश्रवडाय-वस्तु, पात्रादिड पायन्ता थगेस अश्रवणी हिंसा. अजीवकाय-वस्तु,

पात्रादि का उपयोग करने में जो हिंसा हुई हो वह destruction of life caused while using things devoid of life such as garments, vessels etc ठ० ७;—असमारंभ पुं० (—असमारम्भ) अशुवकाय-वस्त्र, पात्रादि लेतां मुक्तां क्वां अशुवने परिताप-दुःखं न उपलव्यु ते अजीवकाय-वस्त्र पात्रादि उठाते रखते किसी जीव को दुःख न देना abstaining from causing harm to living beings in the act of taking or laying down lifeless things such as garments etc. ठ० ७,—आरंभ. पुं० (—आरम्भ) अशुवकाय-वस्त्र, पात्रादि लेतां मुक्तां अशुवने दुःखं न उपलव्यु ते, आरंभिया क्रियानो अशुवने अजीवकाय वस्त्र, पात्र आदि उठाते रखते समय जीव को दुःख देना, आरंभिया क्रिया का एक भेद causing pain to a living being in taking or laying down things devoid of life such as garments etc ठ० ७,—संजम. पुं० (—संयम) पुस्तक, वस्त्र, पात्र आदि लेतां मुक्तां यत्ना राप्वी ते; क्वां अशुवने दुःखं न उपलव्यु ते. पुस्तक, वस्त्र, पात्र आदि उठाते रखते समय यत्नाचार रखना; किसी जीव को दुःख न पहुंचाना. not causing pain to any living being in taking and placing down books, garments etc ठ० ७, अजीवत्त पुं० (अजीवत्व) अशुवपणुं अजीवपन. Lifelessness भग० ७, १०; अजुगलिय. त्रि० (अजुगलित) अशुव पङ्क्ति-अशुव हारमां न रहेल; समश्रित्तिये न रहेल. एक पङ्क्ति में न रहा हुआ, तितर वितर, अव्यवस्थित. Not in a line, not in the same stage. श्रव०

अजुज्झित्ता. सं० कृ० अ० (अयुद्ध्वा) युद्ध-धर्या विना, न लडीने; लडाईं डीधा वगर. विना युद्ध किये. Without resorting to fighting ठ० ३, २;

अजुत्त त्रि० (अयुक्त) अनुचित; अयोग्य. अनुचित; अयोग्य. Improper. विशेष० १६, प्रव० १६१२, (२) योग्यतानो अभाव योग्यता का अभाव. impropriety. विशेष० १३२,—रूव. त्रि० (—रूप) असंगत-अनुचित वेपवाणे असंगत-अनुचित वेष वाला having improper dress. ठ० ४, ३;

अजूरणया स्त्री० (ः अजीर्णता-अजरणता) शरीरने अशुव अनावनार शोक-शुभ्रणा न डरवी ते. शरीर को जीर्ण करने वाला शोक आदि का न करना Abstaining from grief which causes emaciation of the body “बहूयां पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए” भग० ७, ६;

अजोग. त्रि० (अयोग्य) अयोग्य; योग्य नहि ते. अयोग्य Unworthy; improper. प्रव० ५७, सूय० २, ६, ३०;—रूव. त्रि० (—रूप) अयोग्य; अधटित; अनुचित. अयोग्य; अनुचित. improper; unworthy. “अजोगरूवं इह संजयाणं पावंतु पाणाण य संभुकाउं” सूय० २, ६, ३०;

अजोग. पुं० (अयोग) योगनी अपक्षता रहित शैलेशी अवस्था; योग-भन, वचन अने ध्याना व्यापारनो अभाव मन, वचन, और कायरूप योग का अभाव. A state called Saileśī; absence of activities of mind, speech and body भग० २६, १,

अजोगत्त. न० (अयोगत्व) अजोगिपणु;

जोग रहित पणु योग रहित पना Absence of activities of mind, speech and body ओव० ४३,  
**अजोगया.** स्त्री० ( अयोगता ) योगनो अभाव, योगनिरोध, अयोगिपणु योग का अभाव अयोगीपन Vide "अजोगत्त" सम० ५,  
**अजोगि** पुं० (अयोगिन्) योग रहित-मन, वचन अने क्वाणा योग विनातो; शैक्षमा गुणुडाणुवाणो एव तथा सिद्ध भगवान् मन, वचन और काय के भोग से रहित; चौदहवें गुणस्थानवर्ती जीव तथा सिद्ध भगवान् Free from activities of mind, speech and body, a soul in the fourteenth Gunasthāna, a soul who has obtained salvation प्रव० ७३६, १३३३; ठा० २, १; ४, ४; भग० ६, ३; ४, ६, ३१, १८, १, २५, ६, २६, १, क० ग० २, २, ४, ५०,—**केवलि** पुं० (—केवलिन्-अयोगी चाऽमौ केवली च तथा ) शैक्षमा गुणुडाणुवाणा शैक्षी अवस्थाने पाभेक्ष डेवली भगवान् चौदहवें गुणस्थान की अवस्था को प्राप्त केवली भगवान् a Kevali in the fourteenth Gunasthāna, who is free from all activities of mind, speech and body. सम० १४,—**केवलिगुणुडाणु** न० (—केवलिगुणुस्थान-न योगी अयोगी अयोगी चाऽमौ केवली च अयोगिकेवली तस्य गुणुस्थानम् ) शैक्षमा गुणुडाणुना नाम चौदहवें गुणस्थान का नाम 14th Gunasthāna so named because the Kevalis are free from physical activity here क० ग० २, २;—**भवत्थ** पुं० (—भवत्थ ) शैक्षी अवस्थाने पडेअेक्ष डेवली भगवान्, शैक्षमा गुणुस्थानवर्ती डेवली चौदहवें गुणस्थानवर्ती केवली Kevali God who has attained

to the fourteenth Gunasthāna where the activities cease. भग० ८, ८,—**भवत्थकेवलि** पुं० (—भवत्थकेवलिन् ) शैक्षी अवस्थाने पडेअेक्ष डेवली शैक्षी अवस्था को प्राप्त केवली vide "अजोगिकेवलि" भग० ८, ८,  
**अजोग्ग** त्रि० (अयोग्य) अनुचित; अधटित. अनुचित, अघटित Improper, unworthy पंचा० ५, २०,  
**अजोगिय**. पु० (अयोनिक-नास्ति योनिरूपत्ति स्थानं यस्य स तथा ) सिद्धभगवान्; मुक्तात्मा सिद्धभगवान्; मुक्तात्मा The liberated soul ठा० २, १;  
**अजोसयंत** व० क० त्रि० (अजोपयत्) न सेवतो; न पाणतो सेवन न करता हुआ, पालन न करता हुआ Not observing, not resorting to "समाहिमाघातमजोसयता सत्थारमेव फरुसं वयंति" सूय० १, १३, २, आया० १, ६, ३, १८८,  
**अजोसिय** त्रि० (अजुष्ट) न सेवेत्तु; न पाणेत्तु, सेवन न किया हुआ, न पालन किया हुआ Not observed, not practised "जे विरणवणा अजोमिया" सूय० १, २, ३, २,  
**अज्ज** धा० I ( अर्ज् ) उपार्जनं करुं, भेणवुं, भेणुं करु, सय्य करुवे. उपार्जन करना. प्राप्त करना, सचय करना To earn, to obtain, to hoard  
 अज्जेह भत्त० ६७,  
 अज्जेह क० गं० १, ५६,  
 अज्जणित्ता सं० क० "एगत दुक्खं भवमज्जणित्ता वेदति दुक्खी तमयत्तदुक्खं" सूय० १, ५, २, ३५,  
**अज्ज** अ० (अद्य) आज, आज; आजन्नि; आजन्नेन आज To-day भग० ३, २; ६, ३३ ११, ११; १५, १, नाया० १, ८,

१६; परह० १, २; नंदी० स्थ० ३३; आया० १, ३, २, १११; उक्त० २, ३१; १०, ३१; पिं० निं० १६१; विवा० ५; विशे० २३८५; निसी० ६, १२; भक्त० ४;—अभिह अ० (—प्रभृति) आ०थी भांडीने आज से शुरू करके. from to-day; hence forth. “ खो खलु भंते ! कप्पइ अज्जअभिह अरणउत्थिया वा ” कप्प० ५, १३२; उवा० १, ५८, जं० प० २, ३१;

अज्ज. त्रि० (आर्य—आरात् सर्वहेयधर्मभ्यो यातः प्राप्तो गुणैरित्यार्यः) श्रेष्ठ, उत्तम; पवित्र; शिष्ट; पवित्र आचार विचारवान् उत्तम, श्रेष्ठ, पवित्र आचार विचार वाला Pure; civilised; noble; refined, cultured. प्रव० १४२; भग० २, ५, ३, १, ५, ४; ८; ८, ७, नाया० १, १६; दस० ६, ५४; नंदी० स्थ० २६; पिं० निं० २०६, अणुत्त० १, १, वव० १, २३; ( २ ) पुं० भानो आप; नानो माता का पिता—नाना maternal grandfather. नंदी० ( ३ ) आपनो आप; दादो. पितामह; दादा, बाबा paternal grandfather. नाया० ८; ( ४ ) गोत्र प्रवर्तक ऋषिविशेष; जेना गोत्रमां शांडिल्यना शिष्य उत्तधरसूरि था. गोत्र प्रवर्तक ऋषिविशेष, जिसके गोत्र में शांडिल्य का शिष्य जीतधरसूरि हुआ. a sage, the patriarch of a Gotra in which Jitadharasūri, the disciple of Śāṅḍilya, was born. नंदी० ( ५ ) पु० वैभारपर्वतनी नीचेने ओइ ढू. वैभारपर्वत के नीचे का एक जलाशय a pond under the mountain Vaibhāra भग० २, ५,—उक्त. पुं० (—पुत्र) धर्मी भा आपनो पुत्र धार्मिक माता पिता का पुत्र a son of pious and holy parents ठ० ८;—ओभासि. त्रि० (—अवभासिन्) आर्य नहि छतां आर्यनी

पेडे लासतो, आर्यालास. आर्य न होते हुए आर्य के समान प्रतिभासित होने वाला, आर्याभास. Ārya in appearance though not in reality. “ अज्जओभासी ” ठ० ४, २;—जाइ त्रि० (—जाति) जतिअये इरी आर्य; आर्य जतिमां उत्पन्न थयेल; आर्य जाति में उत्पन्न an Ārya by birth. “अज्जजाई” ठ० ४, २;—दिट्ठि. त्रि० (—दृष्टि) जेनी दृष्टि आर्यपवित्र होय ते जिसकी दृष्टि पवित्र हो वह. puresighted, noble-sighted. “अज्जदिट्ठी” ठ० ४, २;—परण. त्रि० (—प्रज्ञ) जेनी प्रज्ञा—समज्जु आर्य—उत्तम होय ते उत्तम प्रज्ञा-समझ वाला endowed with great wisdom. “ अज्जपरणे चउभंगो ” ठ० ४, २,—पय. पुं० (—पद) शुद्ध धर्म दर्शावतार पद—वाक्य, आर्य—आप्त वचन शुद्ध धर्म प्रकट करने वाला वाक्य words of an Ārya pointing out true religion etc ; authoritative speech. “पवेयए अज्जपयं महामुणी” दस० १०, १, २०;—परक्कम. त्रि० (—पराक्रम) जेनी पराक्रम अहादुरी लथी उत्तम होय ते, आंतरिक दुश्मनने लंकाववा पराक्रम दर्शावतार उत्तम पराक्रम वाला, आंतरिक शत्रुओं पर जय प्राप्त करने में पराक्रम प्रकट करने वाला. of renowned valour, heroic in subduing internal enemies e g. passions “ अज्जपरक्कमे ” ठ० ४, २;—परियाअ. त्रि० (—पर्याय) जेनी पर्याय—प्रमत्त्या-दीक्षा आर्य होय ते उत्तम दीक्षा वाला. practising high and noble asceticism. “अज्जपरियाए” ठ० ४, २,—परिवाल त्रि० (—परिवार) जेनी परिवार आर्य छे ते उत्तम परिवार वाला having high and noble attendants



“ अज्जपरिवाले ” ठा० ४, २;—भासि-  
त्रि० (—भाषिन्) आर्यभाषा भोलनार.  
आर्यभाषा बोलने वाला one who  
speaks a refined language. “अज्ज-  
भासी” ठा० ४, २;—मण. त्रि० (—मनस्)  
केतुं मन आर्य-पवित्र होय ते आर्य-पवित्र  
मन वाला pure-minded, noble-  
minded “ अज्जमणे ” ठा० ४, २,  
—रूप त्रि० (—रूप) जेतो वेध आर्य  
छे ते, रूप-देभावमा आर्य आर्य वेष वाला  
refined in appearance. “अज्जरूपे”  
ठा० ४, २,—ववहार त्रि० (—व्यवहार)  
जेतो व्यवहार आर्य-उत्तम-पवित्र होय ते.  
आर्य-पवित्र व्यवहार वाला noble and  
refined in dealings “अज्जववहारे”  
ठा० ४, २,—वित्ति त्रि० (—वृत्ति)  
जेती वृत्ति आशुविडा आर्य-पवित्र होय  
ते आर्य-पवित्र आजीविका वाला follow-  
ing a noble and holy avoca-  
tion. “ अज्जवित्ती ” ठा० ४, २,  
—संकल्प. पु० (—सङ्कल्प) जेतो सङ्कल्प-  
विचार आर्य-पवित्र होय ते आर्य-पवित्र विचार-  
संकल्प वाला one whose thoughts  
are pure and holy “ अज्ज-  
सकप्पे ” ठा० ४, २,—सीलायार त्रि०  
(—शीलाचार) आर्यते छले तेवे उत्तम  
आचार विचार जेतो होय ते आर्यपुरुषों  
को शोभा देने योग्य जिसका उत्तम आचार  
विचार हो वह of noble and refined  
conduct “अज्जमीलायारे” ठा० ४, २,  
—सेवि त्रि० (—सेविन्) आर्यनी सेवा  
करनार. आर्य की सेवा करने वाला one  
who serves a pure and noble  
person “ अज्जसेवी ” ठा० ४, २;

अज्जअ-य. पु० ( आर्यक ) पितामह, दादा;  
आपते आप पितामह; दादा. वावा A

paternal grand-father. “ अज्जए  
पज्जए वादि तप्पुत्तुल्ल पिउत्ति य ” दस० ७,  
१८, “ अज्जयपज्जयपिउपज्जयागए ” भग०  
६, ३३; नाया० १, ६, अंत० ६, ३;  
अज्जआसाढ. पुं० ( आर्यापाढ ) श्रीवीरनि-  
र्वाण पक्षी २१४ वर्षे, जे अव्यक्तदृष्टिमत  
याल्युं ते अव्यक्तवादीना गुरु श्वेतांशिका  
नगरीमा हृदयशयना शैथिली डालधर्म पापी  
सौधर्म देवलोके गया, पक्षी पोताना शिष्योने  
लण्णाववा पोताना मृतक शरीरमां प्रवेश करी,  
सञ्चयन थछ, शिष्यने लण्णावी, आचार्य  
अनापी याल्या गया, ते उपरथी शिष्योने  
आशका थछ के आपणामाथी पणु डोछना  
शरीरमां देवतानो प्रवेश न होय तेनी पात्री  
शुं ? भाटे डोछने वदनाज न करपी आम  
अव्यक्तवादी पथ थोडो वचन याल्यो.  
आ मतना मूलनिमित्त आर्यआपाढ छता.  
श्रीवीरनिर्वाण के २१४ वर्ष पीछे जिसने अव्यक्त  
दृष्टिमत चलाया था, उसके गुरु का नाम; ये  
श्वेताविका नगरी मे हृदयशयल के रोग मे मरकर  
सौधर्म देवलोक मे गये, पीछे अपने गिच्यों को  
पढाने के लिये अपने मृतकशरीर मे प्रवेश कर  
सजीव हुए और शिष्य को पढाकर तथा उमे  
आचार्य बनाकर पीछे चले गये, उसपर से  
शिष्यों को आशका हुई कि, अपने मे ने  
किसीके भी शरीर मे देवता का प्रवेश न हुआ  
हो, इसका क्या विश्वास ? इमलिये किमीको  
बंदना ही न करने का उन्होंने निश्चय किया  
यह अव्यक्त पथ थोडे समय तक चला, इस  
मत के मूलनिमित्त आर्यआपाढ ही थे.  
The originator and founder of  
the tenet known as Avyakta-  
Dristi, in the 214th year after  
Śrī-Vīranivāna. He died  
in the city named Śvetāmbikā,  
of heart-disease and went to

Saudharma heaven, whence in order to teach his disciples he entered into his own dead body, instructed his disciples and then passed away Upon this the disciples suspected the possibility of presence of a god in the body of some one of them, and consequently they did not bow to any one. Thus this faith was in vogue for a time The chief expounder of this faith was Ārya-Āsādhā उत्त० टी० ३,

अज्जइसिवालिय. पु० ( आर्यपिपालित ) माठरस गोत्री आर्यशान्तिश्रेणिना यथा शिष्य माठरस गोत्री आर्यशान्तिश्रेणि के चौथे शिष्य Fourth disciple of Ārya Śāntisreni of Mātharasa Gotra. कप्प० ८,

अज्जइसिवालिया स्त्री० ( आर्यपिपालिता ) आर्यपिपालितथी नीडजेस अेड शाखा आर्यपिपालित से निकली हुई एक शाखा A branch originating from Ārya-Risipālita “धरेहितो अज्जइसिवालिया इत्थण अज्जइसिवालिया साहा णिग्गया” कप्प० ८,

अज्जकरह. पु० ( आर्यकृष्ण ) दिगम्बर मतना स्थापक शिवभूतिना गु३ दिगम्बर मत के स्थापक शिवभूति के गुरु The Guru of Śivabhūti, the founder of the Digambara faith. विशेष० २५५१;

अज्जकण्ण. त्रि० ( आर्यकल्प ) आर्यासाध्वीनेरु इधे साधुने नदि ते आर्यासाध्वी का कल्पने वाली ( साधु का न कल्पने वाली ) वस्तु Suited to or prescribed for

a nun as distinguished from a monk गच्छा० ६१,

अज्जकालग पु० ( आर्यकालक ) स्वातिसूरिना शिष्य; श्यामार्य ( श्रीलुं नाम ) नामना आचार्य स्वातिसूरि के शिष्य; श्यामार्य ( दूसरा नाम ) नाम के आचार्य The disciple of Svātisūri; a preceptor also named Śyāmārya कप्प० ८,

अज्जकुवेर पु० ( आर्यकुवेर ) आर्यशान्तिसेना शिष्य आर्यशान्तिसेन के शिष्य Name of a disciple of Ārya-Śāntisena कप्प० ८,

अज्जकुवेरी. स्त्री० ( आर्यकुवेरी ) आर्यकुवेरथी नीडजेसी शाखा आर्यकुवेर से निकली हुई शाखा An offshoot derived from or having as its head Ārya-Kubera कप्प० ८;

अज्जगंग. पु० ( आर्यगङ्गा ) द्विक्रिया नामे निहव मतना प्रवर्तक निहवाचार्य; अेडदा आर्यगंग नदी उतरता हुता त्तारे पगे पाणीनी हडक अने माथे ताप ल ग्यो, ते उपरथी तेले विचार क्यो डे सिद्धतमा अेड समथे अे कियानो अनुभव न थाय अेम डलु छे ते प्रत्यक्ष विरुद्ध छे आ उपरथी तेले पोतानो लुद्धे मत स्थाप्यो द्विक्रिया नामक निहव मत के प्रवर्तक निहवाचार्य; एकवार आर्यगंग नदी पार कर रहे थे, उस समय पैरों को पानी की ठंडक और सिरपर धूप लगी, तब उन्होंने विचार किया कि, सिद्धान्त में लिखा है कि एक समय से दो क्रियाओं का अनुभव नहीं होता, परंतु यह कथन तो प्रत्यक्ष विरुद्ध है वम, इसपर से उन्होंने अपना पृथक्

मत स्थापित किया Name of the expounder of the agnostic faith called Dvikriyā, (dual actions) While crossing a river he felt the cold of the water on the feet and the heat of the sun on the head Upon this he thought two simultaneous operations to be possible though the Scriptures laid down the contrary, and he established his new tenets accordingly विशेष २४२५,

अज्जघोस पुं० ( आर्यघोष ) पार्श्वनाथस्वामीना श्रीगणेश्वर पार्श्वनाथस्वामी के दूसरे गणेश्वर. The second Ganadhara of Pārsvanātha Svāmī ज० ८, १, कप्प० ६, १५६, ८,

अज्जचंद्र पुं० ( आर्यचन्द्र ) ओ नामना ओड मुनि एक मुनि का नाम Name of an ascetic कप्प० ५, १३४,

अज्जचंद्रणा. स्त्री० ( आर्यचन्द्रना ) महावीरस्वामीनी प्रथम साध्वी, ३६००० साध्वीमा भुष्य साध्वी महावीरस्वामी की प्रथम साध्वी, ३६००० साध्वियों में मुख्य साध्वी The first female ascetic of Mahāvira Svāmī, the chief of the 36000 female ascetics भग० ६, ३३; अन्त० ८, १,

अज्जजंबू पुं० ( आर्यजम्बू ) सुधर्मा स्वामीना शिष्य सुधर्मास्वामी के शिष्य The disciple of Sudharmā Svāmī "अज्जसुहम्मं अंतवासी अज्जजंबू जाव पज्जुवासति" नाया० १, कप्प० ८, नाया० १०

अज्जजक्खिणी स्त्री० ( आर्यजक्खिणी ) नेमनाथस्वामीनी प्रथम शिष्या-साध्वी नेमनाथ

स्वामी की प्रथम शिष्या-साध्वी The first female disciple of Nemanātha Svāmī कप्प० ६, १६२;

अज्जजयंत पुं० ( आर्यजयन्त ) आर्य-वज्रसेनना श्रीगणेश्वर आर्यवज्रसेन के तीसरे शिष्य The third disciple of Ārya-Vajrasena कप्प० ८,

अज्जजयंती स्त्री० ( आर्यजयन्ती ) आर्य-रथ नामना स्थविरथी नीकलेल ओड शाष्वा. आर्यरथ नाम के स्थविर से निकली हुई एक शाखा A branch originating from an old sage named Ārya-Ratha " धेरेहितो गं अज्जरहेहितो गं हत्थण अज्जजयती साहा खिग्गया" कप्प० ८,

अज्जजसम्भ पुं० ( आर्यजसम्भव ) आर्य-शयम्भवना शिष्य आर्यशयम्भव के शिष्य. Name of a disciple of Ārya-Sayyambhava कप्प० ८,

अज्जजीवधर पुं० ( आर्यजीवधर ) कैशिक गोत्रना शाण्डिल्यसूरिना शिष्य, अतधर नामना सूरि कौशिक गोत्र के शाण्डिल्यसूरि के शिष्य, जीवधर नामक सूरि Jitadhara, the disciple of Śāṇḍilyasūri, of Kauśika Gotra " वंदे कोसियगुत्तं सडिह्ण अज्जजीवधर " 'नंदी०

अज्जजेहिल पुं० ( आर्यजेहिल ) आर्य-नागना शिष्य आर्यनाग के शिष्य Name of a disciple of Ārya-Nāga कप्प० ८,

अज्जण न० ( अज्जन ) भेगु डरवु, ओडु डरवु ते इकट्ठा करना Earning, hoarding, accumulating विशेष २०६३,

अज्जसंदिह पुं० ( आर्यसंदिह ) आर्यमंगुना शिष्य अने आर्यनागसुग्गिना गुरु आर्यमंगु के शिष्य और आर्यनागहस्ता के गुरु The

disciple of Ārya-Mangu and the preceptor of Ārya-Nāgahastī  
“नागस्मि दंसणस्मि य तदविणयणिच्चकालमुज्जुत्तं अज्जरावस्तुसिरसा वदे य संतमणं ” नदी०

अज्जरावस्तु पुं० ( आर्यनक्षत्र ) आर्य-  
भद्रना शिष्य आर्यभद्र के शिष्य. Name  
of the disciple of Ārya-Bhadra  
कप्प० ८;

अज्जराइल. पुं० ( आर्यनागिल ) आर्य-  
वज्रसेनना प्रथम शिष्य. आर्यवज्रसेन के  
प्रथम शिष्य. Name of the first  
disciple of Ārya-Vajrasena.  
कप्प० ८;

अज्जराइला स्त्री० ( आर्यनागिला ) आर्यनागि-  
ल नामना स्थविरथी नीडणेल शाखा. आर्य-  
नागिल नामक स्थविर से निकली हुई शाखा A  
branch deriving its origin from  
the sage named Ārya-Nāgila  
“ थेराओ अज्जराइलाओ अज्जराइला  
साहा णिग्गया ” कप्प० ८,

अज्जराइली स्त्री० ( आर्यनागिली ) आर्य-  
वज्रसेनथी नीडणेली शाखा. आर्यवज्रसेन से  
निकली हुई शाखा A branch deriving  
its origin from Ārya-Vajrasena  
“ थेरोहितो अज्जवहरसेणिपुहितो इत्थणं  
अज्जराइली साहा णिग्गया ” कप्प० ८,

अज्जराइत्ता. सं० कृ० अ० ( अर्जयित्वा )  
उपार्जन करके, भोगपीने उपार्जन करके, प्राप्त  
करके Having earned “ एगंतदुक्खं  
भवमज्जराइत्ता ” सूय० १, ५, २, ३५;

अज्जता स्त्री० ( आर्यता ) आर्यपण्यु, श्रेष्ठता,  
साधुवृत्ति आर्यत्व; श्रेष्ठता, साधुवृत्ति  
Nobility; piety. भग० १४, ६; १६, २;

अज्जतावस पुं० ( आर्यतापस ) आर्यवज्रसेनना  
याथा अपनेवासी-शिष्य आर्यवज्रसेन के

चौथे समीप रहने वाले प्यारे शिष्य. The  
fourth pet disciple of Ārya-  
Vajrasena. कप्प० ८;

अज्जतावसी स्त्री० ( आर्यतापसी ) आर्य-  
तापसथी नीडणेल शाखा. आर्यतापस से  
निकली हुई शाखा. A branch deriving  
its origin from Ārya-Tāpasa.  
“ थेराओ अज्जतावसाओ अज्जतावसी साहा  
णिग्गया ” कप्प० ८;

अज्जत्त. त्रि० ( अद्यत्क ) आधुनिक;  
आजकालने आधुनिक. Modern;  
belonging to the present time.  
“ जे इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति ”  
कप्प० ६, ६;

अज्जथूलभद्द. पुं० ( आर्यस्थूलभद्र )  
आर्यसंभूतविण्यना शिष्य अने महागिरि  
तथा सुहस्तिना गुर् आर्यसंभूतविजय के  
शिष्य और महागिरि तथा सुहस्ती के गुरु  
The disciple of Ārya-Sambhū-  
tavijaya, and the preceptor of  
Mahāgiri and Suhastī. कप्प० ८,

अज्जदिणण पुं० ( आर्यदत्त ) पार्श्वनाथना पहिला  
गणधर. पार्श्वनाथ के पहिले गणधर. The  
first Ganadhara of Pārśvanātha.  
सम० ( २ ) काश्यपगोत्री छन्दस्तना शिष्य.  
काश्यप गोत्री इन्द्रदत्त के शिष्य. the  
disciple of Indradatta, of Kā-  
śyapa-Gotra. प्रव० ३०८, कप्प० ८,

अज्जद्वय पुं० ( आर्यार्द्रक ) महावीरस्वामी-  
ना शिष्य आर्यार्द्रकुमार महावीरस्वामी के  
शिष्य आर्यार्द्रकुमार Ādrakumāra,  
the disciple of Mahāvīra Svāmī.  
सूय० नि० २, ६, १६०;

अज्जधरगिरि पुं० ( आर्यधरगिरि ) आर्यधर-  
गिरिना शिष्य आर्यधरगिरि के शिष्य. Name

of a disciple of Ārya-Falgu-  
mitra. कप्प० ८;

अज्जधम्म पुं० ( आर्यधर्म ) आर्य-  
मंगुना शिष्य अने भद्रगुप्तना गुर् आर्य-  
मंगु के शिष्य और भद्रगुप्त के गुरु. The  
disciple of Ārya-Mangu, and the  
preceptor of Bhadrāgupta.  
“ वंदामि अज्जधम्मं ततो वंदे य भद्गुत्ते य ”  
नदी० कप्प० ८;

अज्जधम्म. पुं० ( आर्यधर्मन् ) आर्यहरितना  
शिष्य आर्यहस्ती के शिष्य. Name of  
a disciple of Ārya-Hastī.  
कप्प० ८,

अज्जनाग. पुं० ( आर्यनाग ) आर्यरक्षना  
शिष्य आर्यरक्ष के शिष्य Name of a  
disciple of Ārya-Rakṣa  
कप्प० ८,

अज्जनागहस्ति पुं० ( आर्यनागहस्तिन् )  
आर्यनन्दिलक्षमणुना शिष्य. आर्यनन्दिल-  
क्षमण के शिष्य The disciple of  
Ārya-Nandilaksamana. नदी०  
स्थ० ३०,

अज्जपउम पुं० ( आर्यपद्म ) आर्यवज्रना  
शिष्य. आर्यवज्र के दूसरे शिष्य.  
The second disciple of Ārya-  
Vajra कप्प० ८,

अज्जपउमा स्त्री० ( आर्यपद्मा ) आर्यपद्मथी  
नीक्षेण शाखा. आर्यपद्म से निकली हुई  
शाखा A branch originating from  
Ārya-Padma. “ थेरेहिंतो अज्जपउ-  
मेहिंतो इत्थण अज्जपउमा साहा सिग्गया ”  
कप्प० ८,

अज्जपूसगिरि पुं० ( आर्यपुष्यगिरि ) आर्य-  
रथना शिष्य आर्यरथ के शिष्य A  
disciple of Ārya-Ratha. कप्प० ८;

अज्जपोमिल. पुं० ( आर्यपोमिल ) आर्य-  
वज्रसेनना शिष्य. आर्यवज्रसेन  
के दूसरे शिष्य. The second disciple  
of Ārya-Vajrasena कप्प० ८,

अज्जपोमिला स्त्री० ( आर्यपोमिला )  
आर्यपोमिलथी नीक्षेण शाखा आर्य-  
पोमिल से निकली हुई शाखा. A  
branch deriving its origin  
from Ārya-Pomila. “ थेराओ  
अज्जपोमिलाओ अज्जपोमिला साहा सिग्गया ”  
कप्प० ८,

अज्जप्पभव पुं० ( आर्यप्रभव ) काश्यप  
गोत्रना आर्यजम्बूस्वामीना शिष्य. काश्यप  
गोत्र के आर्यजम्बूस्वामी के शिष्य The  
disciple of Ārya Jambū Svāmī,  
of the Kāśyapa Gotra कप्प० ८,

अज्जफग्गुमित्त पुं० ( आर्यफलामित्त )  
आर्यपुष्यगिरिना शिष्य अने आर्यधनगिरिना  
गुरु आर्यपुष्यगिरि के शिष्य और आर्यधनगिरि  
के गुरु The disciple of Ārya-  
Pusyagiri, and the preceptor of  
Ārya-Dhanagiri कप्प० ८,

अज्जभव पुं० ( आर्यभव ) आर्यशिवभूति-  
ना शिष्य. आर्यशिवभूतिके शिष्य Name  
of a disciple of Ārya-Siva-  
bhūti कप्प० ८;

अज्जभववाहु. पुं० ( आर्यभववाहु ) आर्य-  
यशेभद्रना शिष्य आर्ययशोभद्र के शिष्य  
Name of a disciple of Ārya-  
Yaśobhadra. कप्प० ८,

अज्जम पुं० ( अर्यमन् ) अर्यमा, पूर्वाक्षरगुणी  
नक्षत्रनो देवता अर्यमा, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का  
देवता Āryamā; the god of Pūrvā-  
fālgunī ज०प० ७, १५७; १७१, ठ० २, ३;  
( २ ) उत्तराक्षरगुणी नक्षत्रनो स्वामी-देवता.

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी-देव the presiding deity of the Uttarāfālgunī constellation. सू० प० १०; अणुजो० १३१;

अज्जमंगु पुं० ( आर्य्यमङ्गु ) आर्य्यसमुद्रना शिष्य. आर्य्यसमुद्र के शिष्य. The disciple of Ārya-Samudra. नदी० स्थ० २८;

अज्जमणग. पु० ( आर्य्यमणग ) शय्यम्भवसुरिना शिष्य अने पुत्र शय्यम्मवसुरि के शिष्य और पुत्र. The disciple and son of Śayyambhavasūri छहि मासेहि अहिअ अज्जकययामियां तु अज्जमणगेय ” कप्प० ८;

अज्जमहागिरि. पुं० ( आर्य्यमहागिरि ) आर्य्यस्थूलभद्रना शिष्य, ३ जे जिन-इपीमाइइ उअ विहारी हुता अेभणे आर्य्यसुहस्तीथी आहारपाणी जुहुं करी जुद्धे गच्छ यलाय्यो; त्यारथीगच्छनी सिनना थछ आर्य्यस्थूलभद्र के शिष्य, जो जिन कल्पी के समान उग्र विहारी थे इन्होंने आर्य्यसुहस्ती से आहारपाणी पृथक् कर पृथक् गच्छ चलाया था, तमी से गच्छ की भिन्नता हुई The disciple of Ārya-Sthūlabhadra, he after the manner of a Jinakalpī, used to walk very far. He founded a separate sect, severing his connection with Ārya-Suhastī, which made the beginning of sectarian difference. कप्प० ८;

अज्जय. पुं० ( आर्य्यजय ) अे नामनी लीदी वनस्पति; तुलसीनु अउ इस नाम की हरी वनस्पति, तुलसी का झाड़ The holy basil; ocymum sanctum पन्न० १, अज्जरक्ख. पुं० ( आर्य्यरक्ख ) आर्य्यनक्षत्रना

शिष्य. आर्य्यनक्षत्र के शिष्य The disciple of Ārya-Nakṣatra. ” थेरस्स यं अज्जयक्खत्तस्स कासवगुत्तस्स अज्जारक्खे थेरे अंतेवासी कासवगोत्ते ” कप्प ८०;

अज्जरक्खिय पुं० ( आर्य्यरक्खित्त ) तोसलिपुत्र आर्य्यना शिष्य, ३ जेणे वज्रस्वामी पासे नव पूर्व करतां इंधइ अधिक अभ्यास करी हुता तोसलिपुत्र आचार्य के शिष्य, जिन्होंने वज्रस्वामी के पास से नौ पूर्वों से भी कुछ अधिक अभ्यास किया था The disciple of the preceptor Tosaliputra, who had studied more than nine Pūrvas under Vajra-Svāmī. “वंदामि अज्जरक्खियं खमये रक्खियचरित्त सव्वंगे” नदी० १;

अज्जरह पुं० ( आर्य्यरह ) आर्य्यवज्रस्वामीना त्रीण शिष्य. आर्य्यवज्रस्वामी के तीसरे शिष्य. The third disciple of Ārya-Vajra Svāmī कप्प० ८, अज्जरोहण. पुं० ( आर्य्यरोहण ) आर्य्यसुहस्तिना शिष्य आर्य्यसुहस्ती के शिष्य. Name of a disciple of Ārya-Suhastī. कप्प० ८;

अज्जल. पु० ( अजल ) देशविशेष; पाणीनी तगीवाणे देश. देशविशेष; पानी की जहा कमी है वह देश Name of a country; a country where there is dearth of water ( २ ) त्रि० अे देशमां रहेनार मनुष्य उरु देश में रहनेवाला मनुष्य. people residing in the above country. पन्न० १;

अज्जव न० ( आर्य्यवज्जो-रागद्वेषदरववर्जितस्य सामायिकवत कर्म भावो वा आर्य्यवम् ) सरलता, भाया इपटने अलाय सरलता; माया कपट का अभाव Straightfor-

wardness, frankness, absence of fraud. प्रव० १६१, उक्त० २६, २, सम० १०, ठा० ४, १, परह० २, १, नाया० १, १०, जं० प० २, ३१; भग० २५, ७, सु० च० २, ४६, ओव० १६; २०; राय० २१२, ( २ ) दश अभ्युधर्ममानो त्रीणे धर्म श्रमण के दस धर्मों में से तीसरा धर्म the third of the ten essential virtues of an ascetic. ठा० २, १, ( ३ ) ३१ योग संग्रहमानो १० भो योग संग्रह ३१ योग संग्रहों में से १० वॉ योग संग्रह the tenth of the thirty-one Yoga-sangrahas सम० ३१, ( ४ ) संवर संवर checking the inflow of Karma ठा० ५, १,—द्वारा न० (—स्थान ) सवरत्तु स्थान; साधु, शोभन, आर्जव आदि सवरना पाय भेद सवर का स्थान, साधु, शोभन, आर्जव आदि सवर के पांच भेद the five varieties of straightforwardness e g softness etc which check the inflow of Karma. " पंच अज्जवट्टाणा परणत्ता, तंजहा-साहुअज्जवं साहुमद्वं साहु-त्ताववं साहुखती साहुमोत्ती " ठा० ५, १, —प्यहाण त्रि० (—प्रधान ) सरलता मुप्य छे नेमां येयुं. सरलता जिसमें मुख्य है ऐसा that in which honesty is prominent. ओव०—भाव न० (—भाव ) सरल वृत्ति, उपरतो अभाव, सरल स्वभाव सरल वृत्ति, कपट का अभाव, सरल स्वभाव straightforwardness, frankness "मायमज्जवभावेण लोभं सतोसओ जिये" दस० ८, ३६,

अज्जवइर पु० ( आर्यवज्र ) आर्यसिंहगिरिना शिष्य. आर्यमिहगिरि के शिष्य. The disciple of Ārya-Simbhagiri कप्प० ८,

अज्जवइरसेण पु० ( आर्यवज्रसेन ) आर्य-वज्रना शिष्य आर्यवज्र के शिष्य The disciple of Ārya-Vajra कप्प० ८, अज्जवइरी स्त्री० ( आर्यवज्री ) आर्यवज्रथी नीडणेल शाखा आर्यवज्र से निकली हुई शाखा A branch deriving its origin from Ārya-Vajra "थेरेहितो णं अज्जवइरेहितो णं गोयमसगोत्तेहितो हत्थणं अज्जवइरी साहा शिग्गया" कप्प० ८, अज्जवया स्त्री० (—आर्जवता—आर्जव) सरलता, माया, कपट तथा दलनो त्याग, दश अभ्युधर्ममानो त्रीणे धर्म सरलता, माया, कपट तथा दंभ का त्याग, श्रमण के दस धर्मों में से तीसरा धर्म Straightforwardness, absence of deceit and hypocrisy, the third of the ten essential virtues of a saint. " अज्जवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? अज्जवयाए णं काटज्जुयय भासुज्जुययं भावुज्जुययं " उक्त० २६, ४२,

अज्जवि अ० ( अजावि ) आन सुधी, आन पर्यंत आज तक, आजपर्यन्त Up to this day सु० च० १, १,

अज्जविग्गु पु० ( आर्यविष्णु ) आर्य-नेहिलना शिष्य आर्यजेहिल के शिष्य. Name of a disciple of Ārya-Jehila. कप्प० ८,

अज्जविय न० ( आर्जव ) माया—दुटिलतानो त्याग करवे ते, सरलता माया—कुटिलता का त्याग करना, सरलता. Straightforwardness, honesty सूय० २, १, ५७, आया० १, ६, ५, १६४, सु० च० १, १,

अज्जवुद्ध पुं० ( आर्यवृद्ध ) आर्यसम्प-लिड अने आर्यलड ये भेना शिष्य आर्य-सम्पलिक और आर्यभद्र इन दोनों के शिष्य Name of a disciple of Ārya-

- Sampalika and Ārya-Bhadra  
कप्प० ८;
- अज्जवेडय न० ( आर्यवेटक ) श्रीगुप्तकी  
नीकणेल य रणुणुनु छटुं दुल श्रीगुप्त से  
निकला हुआ चारणगण का छठ कुल The  
sixth family of the Chārana-  
gana, originating from Śrīgupta.  
कप्प० ८;
- अज्जसंघपालक पुं० ( आर्यसंघपालक )  
आर्यवृद्धना शिष्य आर्यवृद्ध के शिष्य.  
Name of a disciple of Ārya-  
Vṛiddha कप्प० ८;
- अज्जसंडिल. पुं० ( आर्यशारिडल्य ) आर्य-  
धर्मना शिष्य आर्यधर्म के शिष्य Name  
of a disciple of Ārya-Dharma.  
कप्प० ८,
- अज्जसंतिसेणिअ पुं० ( आर्यशान्तिसेनक )  
आर्यदिनना शिष्य. आर्यदिन के शिष्य.  
Name of a disciple of Ārya-  
Dinna. कप्प० ८,
- अज्जसंपलिय पुं० ( आर्यसम्पलिक ) आर्य-  
कालकना शिष्य आर्यकालक के शिष्य.  
Name of a disciple of Ārya-  
Kālaka. कप्प० ८,
- अज्जसंभूयविजय पुं० ( आर्यसम्भूतविजय )  
आर्यशोभदना शिष्य आर्यशोभद के  
शिष्य. Name of a disciple of Ārya-  
Yaśobhadra कप्प० ८;
- अज्जसमिय पुं० ( आर्यसमित ) आर्य-  
वज्रस्वामीना मामा अने आर्यसिंहगिरिना  
शिष्य. आर्यवज्रस्वामी के मामा और आर्यसिंह-  
गिरि के शिष्य The maternal uncle  
of Ārya-Vajra-Svāmī and the  
disciple of Simhagiri कप्प० ८;
- अज्जसमुद्द पुं० ( आर्यसमुद्र ) शारिडल्य  
स्वामीना शिष्य उदधि आचार्य, जेतुं नंदा-

अल क्षीण यथाथी अपराक्रम मरण ययुं हुतुं.  
शांडिल्यस्वामी के शिष्य उदधिआचार्य,  
जिनका जंघाबल क्षीण होने से अपराक्रम  
मरण हुआ था The disciple of  
Śāṇḍilya Svāmī, named Udadhi-  
Āchārya, who died without do-  
ing notable deeds on account  
of a disease enfeebling the  
thighs. आया० नि० १, ८, १, २६६;  
नंदी० स्थ० २७;

अज्जसाम पुं० ( आर्यश्याम ) जेतुं भीजुं  
नाम कालकाचार्य हुतुं ते श्यामाचार्य  
श्यामाचार्य, जिनका दूसरा नाम कालकाचार्य  
था. Śyāmāchārya, whose other  
name was Kālākāchārya. कप्प० ८;

अज्जसिंह. पुं० ( आर्यसिंह ) आर्यधर्मना  
शिष्य. आर्यधर्म के शिष्य Name of  
a disciple of Ārya-Dharma.  
कप्प० ८;

अज्जसिज्जंभव. पुं० ( आर्यशच्यम्भव )  
आर्यप्रभवना शिष्य आर्यप्रभव के शिष्य.  
Name of a disciple of Ārya-  
Prabhava कप्प० ८,

अज्जसिवभूद्द पुं० ( आर्यशिवभूति ) आर्य-  
धनगिरिना शिष्य. आर्यधनगिरि के शिष्य.  
Name of a disciple of Ārya-  
Dhanagiri. कप्प० ८,

अज्जसीहगिरि. पुं० ( आर्यसिंहगिरि ) आर्य-  
दिनना शिष्य. आर्यदिन के शिष्य. Name  
of a disciple of Ārya-Dinna.  
कप्प० ८;

अज्जसुए अ० ( अचत्तः ) आजकल; आज  
के काले आजकल; आज या कल. Now-a-  
days, today or tomorrow. सूय०  
१, २, ३, ६;



**अज्जसुहत्थि.** पुं० ( आर्यसुहस्तिन् ) आर्य-  
स्थूलभद्रना स्थविर शिष्य. आर्यस्थूल-  
भद्र के स्थविर शिष्य. The old disciple  
of Ārya-Sthūlabhadra. कप्प० ८;  
**अज्जसुहम्म** पुं० ( आर्यसुधर्मन् ) महावीरस्वा-  
मिना पायभा गणधर, के जेने जन्म कुट्टाग  
संनिवेशमां धम्मिह्ण आसिण्णुनी स्त्री सद्धिदा-  
थी भयो हतो, ५० वरसनी उम्भरे महावीर  
स्वामि पासे प्रव्रज्या लीधी, तीस वरस महावी-  
रस्वामीनी सेवा करी वीरनिर्वाणु पछी १२  
वर्ष ६२ वरसनी उम्भरे केवलज्ञान उपज्जुं,  
आठ वरस केवल प्रव्रज्या पाणी, अेक से  
वरसनु आयुष्य भोगवी पोताना शिष्य  
ज्जुने पाटे भेसाडी निर्वाणु पद पाभ्या  
महावीरस्वामी के पाचवें गणधर, जिनका जन्म  
कुट्टाग सन्निवेश मे धम्मिह्ण ब्राह्मण की स्त्री  
महिला से हुआ था, इन्होंने ५० वर्ष की  
अवस्था मे महावीरस्वामी से दीक्षा ली और  
तीस वर्ष तक महावीरस्वामी की सेवा की,  
फिर वीरनिर्वाण के १२ वर्ष बाद ६२ वर्ष की  
अवस्था में केवलज्ञान उत्पन्न हुआ, आठ  
वर्ष तक केवल प्रव्रज्या पालन कर १०० वर्ष  
की अवस्था मे अपने शिष्य जम्बू को अपने  
पाटपर बिठला कर निर्वाण प्राप्त किया The  
fifth Gaṇadhara of Mahāvīra. He was born of Bhaddilā, the  
wife of a Brāhmaṇa, named Dhamilla, in the village of  
Kullāga. He took orders as a  
disciple of Mahāvīra, at the age  
of 50 years, and served Mahā-  
vīra Svāmī for 30 years He  
attained full knowledge at the  
age of 92 years, 12 years  
after Mahāvīra Nivāna. He  
observed asceticism the

for 8 years and secured absolu-  
tion at the age of hundred  
years after installing his disci-  
ple Jambū as successor. कप्प० ८;  
नाया० ध० सम० १००, विवा० १;

**अज्जसेणिय.** पुं० ( आर्यश्रेणिक ) आर्यशान्ति-  
श्रेणिकना पीज्ज शिष्य. आर्यशान्तिश्रेणिक  
के दूसरे शिष्य. The second disciple  
of Ārya-Sāntisīṇika. कप्प० ८;

**अज्जसेणिया** स्त्री० ( आर्यश्रेणिका ) आर्यश्रेणि-  
कथी नीकलेदी शाखा आर्यश्रेणिक से निकली  
हुई शाखा A branch deriving its  
origin from Ārya-Sreṇika “धेरे-  
हितो यां अज्जसेणिएहितो इत्थयां अज्ज-  
सेणिया साहा गिग्गया” कप्प० ८;

**अज्जहत्थि** पु० ( आर्यहस्तिन् ) आर्य-  
सधपाण्डना शिष्य. आर्यसधपालक के शिष्य.  
Name of a disciple of Ārya-  
Sanghapālaka कप्प० ८,

**अज्जा** स्त्री० ( आर्या ) शातदेवी, अथा, दुर्गा-  
शान्तदेवी, अम्बा, दुर्गा. The goddess  
Durgā नाया० ८, अणुजो० २०, ( २ )  
आर्या, साध्वी, महासती, आर्या, साध्वी;  
महासती a chaste woman, a  
female ascetic, a nun प्रव०  
३४१; गच्छा० ६६, नाया० १६; भग० ६,  
३३, अंत० ८, १; संथा० ५६, ओघ० नि०  
६७१, निर० ३, ४; नाया० ध० १०, ( ३ )  
आर्या छंद-गाथा पनाववा अने पिछानवानी  
हुणा, ६४ हुणामानी २१ भी हुणा. आर्या  
छंद बनाने और पहिचानने की कला; ६४  
कलाओं में से २१ की कला the art of  
composing poetry in the me-  
tric called Āryā भोव० ४०, ( ४ )  
आर्या नामे मात्रा छंद; प्राकृतभा जेने गाथा  
श्लेषाभां आवे छे ते आर्या नामक मात्र  
छंद. प्राकृत में जिसे गाथा कहते हैं वह छंद

metre *Āryā* which is called *Gāthā* in *Prākṛita* जं० प० २; ( ५ ) पंढरमा तीर्थंकरनी प्रथम साध्वीनुं नाम. १५ वें तीर्थंकर की पहिली साध्वी का नाम. name of the first female ascetic follower of the 15th Tirthankara प्रव० ३१०;—अणुचर पुं० (—अनुचर) आरज्जनी पाछा यादवार ( साधु ) आर्या के पीछे चलने वाला ( साधु ). an ascetic who walks behind a nun “ अज्जाणुचरो साहू, लहहू अकिच्चि सु अचिरेण ” गच्छा० ६३,—कप्प. पु० (—कल्प-आर्याणामेव साध्वीनामेव कल्पत हृत्या-र्याकल्पः ) आर्यामे लावेत्त आहार आर्या द्वारा लाया हुआ आहार food brought by a female ascetic गच्छा० ६१,—लङ्. त्रि० (—लब्ध ) आरज्जमे भेणु-वेत्त आर्याका प्राप्त किया हुआ obtained or acquired by a nun. गच्छा० ६०.—संसर्गी. स्त्री० (—ससर्गी—संसर्ग ) साध्वीतो परिचय; साध्वीतो सदुवास—ससर्ग साध्वी का परिचय; साध्वी का सहवास. contact with a female ascetic “ अज्जामंसर्गिअग्गिअविससर्गिमी ” गच्छा० ६३;—सरिस त्रि० (—सदरा ) आरज्जना नेतुं आर्या के मनान. like or resembling a nun “ अज्जास्सरिणा हु बंधयो उवमा ” गच्छा० ७०;

अज्जावय. पुं० ( अध्यापक ) लक्ष्मणवार, उपाध्याय पढ़ाने वाला; उमाव्याव A teacher, a preceptor. प्रव० ७६४; अज्जावेयच्च. त्रि० ( आज्ञापयितव्य ) हुंभुं करवे; द्यायुं करुं ने आज्ञा करना, दवाव डालना Act of ordering or commanding “ न हंतव्वा न अज्जा-

वेयव्वा न परिधिसव्वा ” आया० १, ४, १, १२६; ( २ ) आज्ञा करवा योग्य. आज्ञा करने योग्य. fit to be ordered. सूय० २, १, ४८;

अज्जिअ. त्रि० ( अजित ) भेणुवेतुं; अेकटुं करेत्त प्राप्त किया हुआ. Earned; accumulated “ धम्मज्जियं च ववहारं, बुदेहायरियं सया ” उक्त० १, ४२; १८, १६; जं० प० ३, ६७; विरो० २०२२; २०६४,

अज्जिआ-या स्त्री० ( आर्यिका ) दादी; मांके आपनी माता दादी; नानी, मा या पिता की माता. Grand-mother; father's or mother's mother दस० ७, १६; राय० २४६; ( २ ) आर्या-आरज्ज; साध्वी; महासती आर्या; साध्वी; महामती. a female ascetic; a Jaina nun. गच्छा० १११; नाया० २; ८; १६; भग० १, १; जं० प० २, ३१, नाया० ध०—संपया. स्त्री० (—संपद् ) आरज्ज-साध्वीरूप संपदा. साध्वीरूप संपदा. the life of a nun regarded as wealth. कप्प० ७, २१४;—साहस्सी स्त्री० (—सहस्ती ) हजार आरज्जमे हजार आर्याये. a thousand nuns. कप्प० ७, २२४, नाया० ५; ८,

अज्जुण. पुं० ( अर्जुन ) अक्षुणीज्वाणुं अेक लत-तु वृक्ष, डडायातुं भड; आ आउनी छत्त सडेड होय छे, तेमाथी दुध नीके छे, अे आउ-ना पाहडां अक्षुणीदार, लाया अने गोण होय छे बहुवाजक वृक्षविशेष; इन काष्ठ की छाल सफेद होती है, उनमें से दूध निकलता है और उसके पत्ते अनीदार, लंबे और गोल होते हैं A kind of tree with white bark and pointed long and oval leaves; terminalia alata glabra ओव० पत्र० १, परद० १, ४; नाया० ६; राय० ६, भग० २१, ६;

२२, ३; ( २ ) तृण-अविशेष एक विशेष जाति की घास. a kind of grass " अञ्जुणगुह्वं तस्स जाणुह्वं " उवा० २, ६४, पन्न० १, भग० २१, ६, जीवा० ३, ४, ( ३ ) सङ्केद रंग. सफेद रंग. white colour पन्न० २, ( ४ ) सङ्केद सुवर्ण-सोतुं सफेद सोना whitish gold. पन्न० २, ( ५ ) गौतमपुत्र अर्जुन, केनेना शरीरमां गोशाला-ये छट्ठीवार परावर्त परिहार क्यो छे अमे ते कहेतो हुतो गौतम का पुत्र अर्जुन, जिसके शरीर में गोशाला ने छठी वार परावर्त परिहार (प्रवेश) किया है, ऐसा वह कहता था Arjuna, the son of Gautama in whose body Gośālā had entered for the sixth time ( as he said ) " अञ्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरी-रगं विप्पजहामि " भग० १५, १; ( ७ ) पाण्डु राजानो त्रीणे पुत्र; अर्जुन. पारद्वराजा के तीसरे पुत्र, अर्जुन Arjuna, the third son of king Pāndu नाया० १६, सु० च० १५, ८७, विवा० ८, —सुवर्ण न० (—सुवर्ण) सङ्केद-खेतका-यन-सोतुं. सफेद सोना. whitish gold ओव०—सुवर्णमय. त्रि० (—सुवर्णकमय) सङ्केद सुवर्णमय सफेद सुवर्णमय full of whitish gold उक्त० ३६, ५६,

अञ्जुणम् पुं० ( अर्जुनक ) राजगृहनिवासी एक भाणी, केने मुद्गरपाणि नामना यक्षनी मद्दधी छ पुत्र्य अने एक स्त्री अमे ७ भाणुसोना पुन करते हुतो, एक प्रसंगे महावीरस्वामीना समागम यथां ते षोडशपाभ्यो दीक्षा लभ छठना पारश्या करवानी प्रतिज्ञा दीधी अने समताभावनु सेवन करी छ महिनामा सर्व कर्म अपावी सिद्धपद तेशे भेज्युं राजगृह निवासी एक माली, जो कि, मुद्गरपाणि नामक यक्ष की सहायता से ७ मनुष्यों ( छ पुरुष और एक स्त्री ) का खून करता था. एक समग्र

महावीरस्वामी का समागम होने पर उसे बोध हुआ, और दीक्षा लेकर छठ का पारणा करने की प्रतिज्ञा ली और समताभाव का सेवन कर छ मास में समस्त कर्मों का क्षय कर सिद्धपद प्राप्त किया A gardener of Rājagṛha, who used to murder seven men ( six males and one female ) every day with the aid of a Yakṣa, named Mudgarapāṇi. Once he met Mahāvīra Svāmī, from whom he obtained knowledge From that very moment he became a true penitent, took orders, observed fasts for every two days out of three, secured equanimity, practised severe austerities, and thus having destroyed all his Karmas in six months attained to salvation अत० ६, ३,

अञ्जेव अ० ( जयैव ) आज्ञे, आज्ञेण आज, आजही Even to-day " अञ्जेव धम्म पडिवज्जयामो, जहिं पवणा न पुण्णम-वामो " उक्त० १४, २८, भग० २, १, कप्प० १, २६,

अञ्जो पु० ( हे आर्य ) संशोधन, आभंत्रण सम्बोधन, आभंत्रण A form of addle-ss ing a revealed person " अञ्जोत्ति समये भगव महावीरे गोयमाहसमये शिगगये आमत्तिता " ठा० ३, २, " अञ्जो ! सामादयं जायामो " भग० १, ६, " एत्थं अञ्जो कण्हे वासुदेवे " (अञ्जोत्ति आमन्त्रणवचनम्) ठा० ६,

अञ्जोग त्रि० ( अयोग्य ) अनुचित, अनेग अनुचित, अयोग्य Unworthy, im- proper पंचा० १३, २८,

अज्भट्टिअ. न० ( अध्यात्मस्थित-अभ्यवसित )  
अध्यवसाय; परिणाम. अभ्यवसाय; परिणाम.  
Mental state, thoughts. विवा० १,  
दसा० १०, ३,

अज्भत्त. न० ( अध्यात्म ) मन; चित्त. मन;  
चित्त. Mind, conscience. सूय० १, २,  
२, १२;

अज्भत्थ त्रि० ( अध्यात्मस्थ-अध्यात्मं मनस्त-  
स्मिन् तिष्ठतीत्यध्यात्मस्थम् ) मनमां उत्पन्न  
थयेल सुप्, दु, ष, मिध्यात्व वगेरे. मन में उत्पन्न  
सुख, दु ख, मिध्यात्व वगैरह. Born in the  
mind e g conceptions of happi-  
ness, misery etc “ अज्भत्थहेउं  
णिययस्स बंधो, ससारहेउं च कयंति बंधं ”  
( अध्यात्मशब्देनेहात्मस्था मिध्यात्वादय  
अच्यन्ते ) उत्त० १४, १६, प्रव० ६०३,

अज्भत्थ न० ( अध्यात्मस्थ अध्यात्म-अधि  
आत्मनि वर्त्तत इत्यध्यात्मम् ) अंत ३२णु;  
चित्त अन्तःकरण; चित्त Conscience,  
mind. पक्क० ११, सूय० १, ४, २, २२,  
( २ ) आत्मध्यान; आत्मभावना आत्म-  
ध्यान, आत्म भावना contemplation  
of the soul सूय० १, ८, १६, ओव०  
२; ( ३ ) ( आत्मानमधिकृत्य यद्वर्त्तते तदध्या-  
त्मम् ) सुप् दु ष आदि आंतरिक भाव सुख  
दु खादि आन्तरिक भाव. internal emo-  
tions e g. of happiness, misery  
etc. “ जे अज्भत्थं जाणइ से बहिया जाणइ  
जे बहिया जाणइ से अज्भत्थं जाणइ ” आया०  
१, १, ७, २६, “ अज्भत्थं सब्बओ सब्बं  
दिस्स पाये पियायण् ” उत्त० ६, ७; ओष०  
नि० ७४५; पि० नि० ६७१, —उक्ताण-  
जुत्त. त्रि० ( ध्यानयुक्त-अध्यात्मना शुभ  
मनसा ध्यान यत्तेन युक्तो यः स तथा )  
प्रशस्त ध्यानयुक्त प्रशस्त ध्यानसहित.  
engaged in deep religious

meditation. परह० २, ५;—दंड.  
पुं० ( -दण्ड ) कषाय के आर्त्तध्यानादि  
निमित्तथी लागतो कर्मबन्ध, आठमुं क्रिया  
स्थानक. कषाय अथवा आर्त्तध्यानादिनिमित्त  
से लगने वाला एक कर्मबन्ध; आठवाँ क्रिया  
स्थानक. Karmic bondage incurred  
by anger etc, the eighth Kūyā  
Sthānaka परह० २, ६;—दोस पुं०  
( -दोष ) अंदरना दोष-कषाय, कोध, मान,  
माया अने लोभ. अन्तरङ्ग दोष-कषाय, क्रोध,  
मान, माया और लोभ. inward evil  
passions such as anger, pride,  
deceit and greed “ कोहं च मायं  
च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्भत्थदोसा ”  
सूय० १, ६, २६;—वृत्तिअ. पुं०(-वृत्तिक)  
अध्यात्म-आत्माने आश्री उत्पन्न थयेल  
कोधादि कषाय अथवा आर्त्तध्यानादि निमित्ते  
लागती क्रिया-कर्मबन्ध, क्रियानां तेर स्थानक-  
भानुं आठमु स्थानक. अध्यात्म-आत्मा को  
आश्रयकर उत्पन्न क्रोधादि कषाय अथवा आर्त्त-  
ध्यानादि के निमित्त से जो कर्मबन्ध हो वह;  
क्रिया के तेरह स्थानको से से आठवाँ  
स्थानक Karma incurred by think-  
ing of pain, anger etc which  
have the soul for their substra-  
tum, the eighth of the 13  
ways of incurring sin सूय० २,  
२, १६,—वयण. न० ( -वचन-आत्मान-  
मधिकृत्य प्रवर्त्तते यत् तदध्यात्मवचनम् )  
अध्यात्म वचन, वचनना सोण प्रकाशना  
सातमे प्रकाश. अध्यात्म वचन, वचनके सोलह  
भेदों में से ७ वाँ भेद philosophy  
dealing with the soul; the  
seventh of the sixteen kinds of  
speech आया० २, ४, १, ११२;  
—चिसुअ त्रि० ( -विशुद्ध ) शुद्ध अंत-

इत्युवाणे. शुद्ध अन्तःकरण वाला. of clear conscience; of pure heart "तन्हा अज्भक्त्यविमुदे सुविमुक्ते" सूय० १, ४, २, २२,—विसोहिजुत्त. त्रि० (—विशोधिमुक्त ) विशुद्ध—पवित्र भाव-वाणे; आंतरिक शुद्धिवाणे. विशुद्ध—पवित्र भाव वाला, आन्तरिक शुद्धि वाला. pure at heart, clear in conscience "जा जयमाणस्स भवे, विराहणा सुत्तविहिसमग्गस्स । सा होइ शिज्जरफला अज्भक्त्य विसोहिजुत्तस्स" ओव०—सुइ. स्त्री० (—श्रुति ) चित्तनिरोधना उपाये अतावनार शास्त्र; अध्यात्मशास्त्र. चित्तनिरोध के उपाय बतलाने वाला शास्त्र, अध्यात्मशास्त्र Sāstra dealing with the means of restraining the mind; a spiritual Sāstra. परह० २, १, अज्भक्तियय त्रि० (—अध्यात्मस्थित-आध्यात्मिक) आत्मसम्बन्धी, आंतरिक; आत्माश्रित. आत्मसम्बन्धी, आन्तरिक, आत्माश्रित Relating to the mind, internal अन्० ३, ८, (२) आत्मिक भाव; अध्यवसाय विशेष, संकल्प; मानसिक तरंग आत्मिक भाव, अध्यवसाय विशेष, संकल्प; मानसिक तरंग Thought activity. भग० २, १, ३, १; २, ६, ३३, १६, १, नाया० १, ५, ८; १२, १३, १४, १६; आया० २, १३, १४२; जीवा० ३, ४, सूय० २, २, १६, राय० २४, कप्प० ४, ८६; ( ३ ) अध्यात्म-मानसिक शोड, आर्त्तध्यानवगेरे इत्यथी लागती क्रिया-इत्यन्ध, क्रियाना तेर स्थानकमांनु आहंमु स्थानक. अध्यात्म-मानसिक शोक, आर्त्तध्यान वगैरह करने से जो कर्मबन्ध हो वह; क्रिया के तेरह स्थानको से से आठवाँ स्थानक. Karma incurred by sorrow etc.; the eighth of the 13 sources of Kīyā. सम० १३;

अज्भक्तियया स्त्री० (—अध्यात्मस्थिता-आध्यात्मिकी) इच्छं पणु इणु विना भनमां अणतरा इथा इरपी ते; आहंमु क्रियास्थानक अकारण चित्त में जलना, ८ वाँ क्रियास्थानक. The 8th source of incurring Karma viz worry without any ground. प्रव० ८३४;

अज्भक्त्य. न० (—अध्यात्म) लुओ "अज्भक्त्य" श०६ देखो शब्द 'अज्भक्त्य'. Vide "अज्भक्त्य" परह० २, ३, सूय० १, ८, १६, विशेष० ६६०,—जोग पु० (—योग) अध्यात्मयोग; धर्मध्यान अध्यात्म योग, धर्मध्यान spirituality; religious meditation सूय० १, १६, ३, —रय. त्रि० (—रत्त) प्रशस्तध्यानभग्न, आत्मध्यानमा तत्पर थयेइ प्रशस्त ध्यान में मग्न, आत्मध्यान में तत्पर. engaged in or absorbed in spiritual meditation दस० १०, १, १५; —सवुड त्रि० (—संवृत) अध्यात्मशास्त्रना उपयोगमां भन लगाउवावाणे अध्यात्म शास्त्र के उपयोग में मन लगाने वाला. one absorbed in thinking upon putting into practice spiritual matters learnt from scriptures "वहगुत्ते अज्भक्त्यसवुडे" आया० १, ५, ४, १५६;

अज्भक्तियय न० (—अध्ययन) शास्त्रनुं प्रकरणु. सूत्रनो पेटा विभाग शास्त्र का प्रकरण, सूत्र का अवान्तर विभाग. A chapter of a scripture क० गं० १, ६०, कप्प० ५, १४६, अणुजो० ६, २८, ओष० नि० भा० ३०६, नाया० १६, विवा० १; (२) अणुनुं; अध्यास इत्येते ते पठना; अभ्यास करना study. वव० १०, २०; पि० नि० ६६०, दस० ४, (३) (अधीयते ज्ञायन्ते एभिरित्यव्ययनानि मामानि) नाम,

अर्थवाचक शब्द. संज्ञा; अर्थवाचक शब्द & word expressing a sense. "ता कंह देवतायं अज्भययं आहितातिवपुजा" सू० प० १, नाया० १, दसा० १०, ११; निर० १, २, नाया० ध० २; भग० ८, ७; विशे ६६०, अणुजो० १४६;—छुक्कवग्ग पुं० (—षट्कवर्ग) छ अध्ययनना समुदायरूप आवश्यक सूत्र. छ: अध्ययनों का समुदायरूप आवश्यक-सूत्र. Āvaśyaka Sūtra formed of six chapters. अणुजो० २८,

√ अज्भयाव. धा० I (अधि+इण्+णि०) लशुवतुं; अभ्यास करावणे पढ़ाना, अभ्यास कराना To teach.

अज्भयाविति. विशे० ३१६६;

अज्भवसाय. न० (अध्यवसान) अंत करणनी वृत्ति; मनना परिणाम; संकल्प. अन्त-करण की वृत्ति, मन का परिणाम-संकल्प. Thought-activity सूय० २, २, ८०; अणुजो० २७; भग० ६, ३१; ११, ११; २४, १; १२; ३१, १; नाया० १; ८; उत्त० १६, ७; श्रौव० ४१; विशे० १६६; २०४१; पन्न० ३४, क० प० १, ४१; (२) लेख्या-परिणामनी कंधं स्पष्टपणे प्रवृत्ति लेख्या-परिणाम की कुछ स्पष्टरीति से प्रवृत्ति thought-activity. अंत० ३, ८,—आवरणिज्ज. न० (—आवरणीय) अध्यवसान-भावचारित्रने अटकावनार अेड् कर्मप्रकृति; चारित्रमेहनीयनी प्रकृतिविशेष भावचारित्र को रोकने वाली एक कर्मप्रकृति; चारित्र मोहनीय की प्रकृतिविशेष. impure thought-activity obstructing inward right conduct भग० ६, ३१;—णिव्वत्तिय. त्रि० (—निर्वसित) अध्यवसायथी उत्पन्न थयेल. अघवनाय से उत्पन्न resulting from thought-activity

"अज्भवसायणिव्वत्तिपुरां करणोवापुणं" भग० २२, ८;

अज्भवसाय. पुं० (अध्यवसाय) मनना सूक्ष्म परिणाम; संकल्प, बंधहेतुभूत आत्मानि परिणुतिविशेष. मन का सूक्ष्म परिणाम, संकल्प, बंधहेतुभूत आत्मा की परिणति विशेष. Thought-activity causing bondage to the soul सु० च० १२, ६७; क० गं० २, २२; नंदी० १२;

अज्भवसिअ-य न० (अध्यवसित) अध्यवसाय; मनोभावविशेष अध्यवसाय; मनोभाव विशेष Thought-activity e. g. love, hatred etc अणुजो० २७, पंचा० २, १६;

अज्भहिय. न० (आत्महित) आत्महित-लक्षुं, स्वहित आत्महित, स्वहित One's own welfare, one's own good; spiritual welfare परह० २, १;

अज्भाइयव्व त्रि० (अध्वेतव्य) लशुवतुं; अध्ययन करवु पढ़ाना; अध्ययन करना. Study. (२) अध्ययन करवाने-लशुवाने योग्य. अध्ययन करने-पढ़ने के योग्य. worthy of study दस० ६, ४, ३;

अज्भारोह पुं० (अध्वारोह-उपर्युपर्यध्वारोहन्तीति अध्वारोहा.) अणु अड उपर उगती कामवृक्ष नामनी लीली वनस्पति दूसरे भाइ पर उगने वाली कामवृक्ष नाम की एक हरी वनस्पति. A kind of green vegetation called Kāmavrikṣa growing on another tree. सूय० २, २, ६; पन्न० १,

√ अज्भाव धा० II (अधि+इ+णि०) लशुवतुं, अध्ययन करावतुं पढ़ाना; अध्ययन करवाना To teach, to cause to study

अज्भावेइ. गच्छा० ६४,

**अजभावरणा.** स्त्री० ( अजभावरणा-अजभावरण )  
 लघुवचुं ते पदाना Act of teaching  
 क० ग० १, ६०,

**अजभावरय.** पुं० ( अजभावरय ) उपाध्याय  
 उपाध्याय A religious preceptor,  
 who studies and teaches Śā-  
 strias “अजभावरयाणं पठिकूलाभासी” उक्त०  
 १२, १६; सु० च० १, ३३७;

**अजभावरसिस्ता** सं० कृ० अ० ( अजभावरसिस्ता ) भां  
 रहिने भीतर रह कर, अन्दर रहकर. Hav-  
 ing resided in “ पञ्च तिरथगरा कुमार-  
 वासमजभावरसिस्ता” ठा० ५, ३;

**अजभावरणा** स्त्री० ( अजभावरणा-अजभावरण )  
 सहन करवुं ते, परिसह भववे ते सहन  
 करना, परीषह सहना Endurance of  
 discomforts उक्त० टी० २,

**अजभावरहार** पुं० ( अजभावरहार ) आकाङ्क्षित पदं  
 अनुसंधान करवु ते, मूलभां न देणातु पद  
 भीलसूत्रभांथी लेवुं ते आकाङ्क्षित पद का  
 अनुसंधान करना, सूत्र में जो पद न हो उसे  
 दूसरे सूत्र में से लेना. Supplying a  
 portion from another text  
 for completing the meaning  
 of a certain text आया० टी० १, १,  
 ४, ३७,

**अजभोयर.** न० ( अजभोयर-अर्थभ्योऽनवरतं  
 दीयमानमपि वर्द्धत एव नतु क्षीयत इत्य-  
 क्षीयाम् ) शास्त्रनु अध्ययन, प्रकरण, अध्याय  
 शास्त्र का अध्ययन, प्रकरण; अध्याय A  
 chapter of a scriptural text  
 विशेष० ६६१, अणुजो० १२४, ( २ ) क्षय  
 न पागेल अक्षय undecayed  
 सम० ३०,—भङ्ग त्रि० (—भङ्ग ) क्षय-  
 क्षयक्षयि निवृत्त नहि थयेव क्लेश-कलह से  
 अनिवृत्त not free from troubles  
 and quarrels सम० ३०,

**अजभुववरणा** त्रि० ( अजभुववरणा-अधिकमत्त्वर्थ  
 सुपपन्नस्तचित्तस्तदात्मकः ) विषयभोगभा  
 त-मय थनेवे, विषयासक्त विषयभोग में  
 तन्मय; विषयासक्त Grossly addicted  
 to sensual pleasures सू० १, २,  
 ३, ४, १, ३, २, २२,

**अजभुसिञ्ज** त्रि० ( अजभुसिञ्ज ) आश्रित;  
 आश्रये आवेल आश्रित, आश्रय में आया  
 हुआ Depending on, seeking  
 shelter of पिं० नि० ४५०;

**अजभुसिर.** त्रि० ( अजभुसिर ) दर-रहित  
 छिद्र दरनुं दरार रहित, छिद्ररहित Free  
 from cracks or holes ओघ०  
 नि० ७०७, उक्त० २४, १७, ( २ ) तृण-  
 भङ्गथी ढकथेवुं नहि तृण से न ढका हुआ.  
 not covered with grass प्रव० ७१६;

**अजभेया** त्रि० ( अजभेया-अजभेय ) पाठ करनार;  
 लघुनार पाठ करने वाला, पढने वाला A  
 student, a reciter, a reader  
 विशेष० १४६४,

**अजभेसरणा** स्त्री० ( अजभेसरणा ) सत्कार पूर्वक  
 आरा सत्कार पूर्वक आज्ञा Respectful  
 direction सम०

**अजभोयर** पुं० ( अजभोयर ) सधुनेभाटे  
 आधरलुमां उभेरो करी आहार पाली आदि  
 आपवा ते, आहारने ओक टोप. साधु के  
 लिये आधन में और बढ़ती कर आहार पानी  
 आदि देना, आहार का एक दोष A fault  
 connected with food, viz  
 giving that food, water etc to  
 an ascetic which is prepared  
 after specially adding water  
 to that already boiling, when a  
 Sādhu comes टम० ५, १, ५५, पिं०  
 नि० ६३; प्रव० ५७८,

अज्भोयरअ पुं० ( अध्यवपूरक ) गृहस्थ पोतानेभाटे रसोच इरतो होय तेभां साधुने आववानी अथर सांखणी वधारे इरी अथवा आधरशुभा उभेरे इरी तैयार इरेल आहार साधुने आपवार्थी लागतो अेक दोष, सोण उद्गमनभांने सोणभो दोष. गृहस्थ अपने लिये रसोई बनाता हो उस समय साधु के आने का समाचार सुनकर जो अधिक रसोई बनाई हो, अथवा अधान में और मिलाकर जो आहार तैयार किया हो, वह आहार साधु को देने से जो दोष लगे वह; सोलह उद्गमनों में से सोलहवाँ दोष. A kind of sin which a man incurs by cooking more than what is required for himself when he hears of the arrival of a Sādhu or an ascetic; the last of the sixteen sins called Udgamanas. "अज्भोयरओ तिविहो जावत्तिय सघरमीसपासंढे मूलम्मिय पुग्गकए ओयरई तियह अट्टाए " पिं० नि० २४८; ओव० ४०,

✓ अज्भोवज्ज धा० I. ( अधि+उप+पद् ) तन्मय ययुं; प्राप्यवस्तुनी साथे अध्यवसायनी अेकता इरी. तन्मय-तर्हान होना; प्राप्यवस्तु के साथ अध्यवसाय की एकता करना. To be completely absorbed in; to concentrate the whole thought-activity upon the object to be obtained.

अज्भोवज्जइ नाया० १७; निर्सा० १२, ३५;

अज्भोवज्जिजा. विधि० आया० २, १५, १७६;

अज्भोवज्जह आ० नाया० ८;

अज्भोवज्जिहिति. भवि० ओव० ४०;

अज्भोवज्जमाण व० क० निर्मा० १७, ७.

अज्भोवज्जणा. स्त्री० ( अध्युपपादना ) विषय आसक्ति. विषयासक्ति Attachment to sensual pleasures. "तिविहा अज्भोवज्जणा जायू अजायू बित्तिगिच्छा " ठा० ३, ४,

अज्भोववण्ण त्रि० ( अध्युपपन्न ) विषयभां आसक्ता; गृह; मुर्छित; वेतुं एवन विषयाधीन होय ते. विषयासक्त; मुर्छित; विषयाधीन जीवन वाला. Addicted to sensual pleasures नाया० २; ५; ८; १४, १७, भग० १३, ६; सूय० १, २, ३, ४; दसा० ६, १; ओघ० नि० ६००; जं० प० २, २२;

अज्भोववन्न त्रि० ( अध्युपपन्न ) लुओ उपलो शब्द देखो ऊपर का शब्द. Vide "अज्भोववण्ण". आया० १, १, ७, ६१;

अज्भोववाय पुं० ( अध्युपपात् ) इंधपथु अहणु इरयामा यित्तनी अेकाग्रता कुच्च भी ग्रहण करने में चित्त की एकाग्रता का होना. Concentration of the mind upon the attainment of a thing. "परस्स अज्भोववायवोभजणयाइं" परह० २, ५,

अअंभ्र त्रि० ( अकम्भ्र ) लोल रहित; माया रहित लोभ रहित, माया रहित. Without greed. आया० १, ५, ३, १५३;

अअंभ्रा. स्त्री० ( अकम्भ्रा ) मायाने अभाव. कपट का अभाव. Absence of deceit. ( २ ) इहइने अभाव. कगके का अभाव. absence of quarrel "न से समे होइ अअंभ्रपत्ते " सूय० १, १३, ६;

अट्ट. त्रि० ( आर्त्त-अर्त्तिः शारीरमानसी पीडा, तत्र भव आर्त्तः ) शारीरिक या मानसिक पीडाधी पीडतो; पीडित थयेत; दुःखी. शारीरिक या मानसिक पीडा से पीडित Afflicted in mind or body. "अट्टे



लोए परिजुणयो दुस्संबोहे अविजाणए ”  
 आया० १, १, २, १४, १, २, ५, ६४,  
 नाया० १, १६, निसी० ८, ३; ओव० ३४;  
 आव० ४, ७; क० गं० १, ३०, ( २ ) न०  
 दिलगीर थवुं; इदन करवुं; उरणा करवी;  
 आर्त्तध्यान करवु ते. दुःखी होना, रुदन कर-  
 ना, आर्त्तध्यान करना to give way to  
 sorrow; to moan, to bewail  
 उक्त० ३०, ३३, ३४, ३१, परह० १, २;  
 नाया० १, ८; १३, १६, भग० ३, २;—वस  
 पुं० ( -वस ) आर्त्तध्यानने वस थवु ते.  
 आर्त्तध्यान के वस होना. to be swayed  
 by thoughts of pain: नाया० १;  
 —स्सर. पुं० ( -स्वर ) आर्त्तनाद; दुःखने  
 शब्द, दुःखने अवाण आर्त्तनाद, दुःख भरा  
 शब्द lamentation. (२) त्रि० जेने स्वर-  
 अवाण दुःखथी पीडित होय ते दुःख से  
 पीडित स्वर वाला. having a tone  
 expressive of pain “ अट्टस्सरे ते  
 कलुणं रसते ” सूय० १, ५, १, २४,

अट्टजभाण न० ( आर्त्तध्यान ) आर्त्तध्यान,  
 चिन्ता; धृष्टिना वियोग के अनिष्टना संयोगथी  
 भेद पाभवे ते. आर्त्तध्यान, चिन्ता, इष्टवियोग  
 व अनिष्टसंयोग से दुःखी होना. Feeling of  
 affliction, anxiety, to be dejected  
 at the separation of a be-  
 loved thing or at meeting with  
 unfavourable circumstances.  
 कप्प० ४, ६२, राय० २६४, नाया० १; सम०  
 ४, ठा० ४, १,—उवगय त्रि० ( -उपगत )  
 आर्त्तध्यान करनार, अर्त्ति—शोड निमज्ज आर्त्त-  
 ध्यान करने वाला, शोकमग्न engrossed in  
 painful thoughts “ अट्टज्जाणोवगए  
 भूमिगयदिद्विण् जिक्कयाइ ” सूय० २, २,  
 १६, निसी० ८, ११, जं० प० ३, ५६०;

अट्टहास पुं० ( अट्टहास ) उया स्वरथी हसवुं

ते, अट्टहास हसवु ते उच्चस्वर से हंसना.  
 Loudlaughter. नाया० ८, प्रव० १४२२;  
 अट्टण पुं० ( अट्टन ) अट्टणनामने उल्लेखी  
 वासी ओक मल्ल, के जे सोपारक नगरना राज  
 पासेथी धणी वार धनाम लध आवतो, पण  
 पाछगथी तेनी जरा अवस्थाभां ओक लुवान  
 तेनो हरीक्ष जण्ये, तेथी ते पराजय पाभ्ये  
 अने आपरे दुःखी थतां विरक्त थछ दीक्ष  
 क्षीधी. “जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं” उक्त०  
 ४, १, नी टीकाभां विस्तारथी आ दृष्टांत  
 धडपणुंभां डोर्ध त्राणु—शरणु नथी ओ विषय  
 उपर आपनाभां आव्यु छे. उज्जयिनी में  
 रहने वाला अट्टण नामक एक मल्ल, जो कि,  
 सोपारक नगर के राजा के पास से बहुतसी वार  
 इनाम लाता था. परन्तु पीछे से उसकी जराव-  
 स्था में एक प्रतिस्पर्धी खडा हुआ, जिसने उसे  
 पराजित किया, इससे उसने दुःखी होकर दीक्षा  
 ली “जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं” उक्त० ४, १;  
 की टीका में विस्तार से यह दृष्टान्त वृद्धावस्था में  
 कोई शरण नहीं है, इस सम्बन्ध में दिया गया है.  
 An athlete named Attana,  
 residing in Ujjain. He often  
 received presents from the  
 king of a city named Sopār-  
 aka. But in his old age there  
 arose a rival and he was  
 defeated, so being disgusted  
 he entered religious order.  
 “जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं” उक्त० ४, १;  
 अट्टण. न० ( अट्टन ) वुं—आलवुं ते; गति करवी  
 ते चलना; गति करना Going, moving.  
 ओव० ३१; ( २ ) कसरत करवी, शारीरिक  
 अभ लेवे ते. कसरत करना, शारीरिक अभ  
 करना to take physical exercise.  
 ओव०—साला. छी० ( -शाळा ) कसरत  
 शाळा, कसरत करवानी जग्या. व्यायामशाळा;

कसरत करने की जगह gymnasium “जे-  
 योव अद्वैतसाला तेयेव उवागच्छह ” नाया०  
 १; भग० ११, ११, ओव० ३१, कप्प० ५, १०१;  
**अद्वैतर** न० ( आर्त्ततर ) अतिशय-धृष्टु  
 आर्त्तध्यान; विशेष आर्त्तध्यान करवुं ते  
 अतिशय आर्त्तध्यान करना. Intense  
 Ārttadhyāna ( lamentation )  
 “पञ्जिज्जमाणद्वतरं रसंति” सूय० १, ५, १, २५;  
**अद्वैतस** पुं० ( अद्वैतरूप-अद्वैतःरूप्यति ) अद्वैतसालुं  
 आड, गुच्छवनस्पतिनी ओड अत अद्वैत का  
 वृक्ष; गुच्छवनस्पति की एक जाति A kind  
 of tree. पञ्च० १,  
**अद्वैतहास** पुं० ( अद्वैतहास ) अडअड इगीने  
 हसवुं ते जोरसेहंमना Loud laughter  
 परह० १, ३;  
**अद्वैतलग** पुं० न० ( अद्वैतलक ) गढ उपर रहे-  
 वानुं स्थान; अटारी, अरूपो गढ ऊपर  
 रहने का स्थान; भरोखा, अटारी. A  
 turret. जीवा० ३, ३, परह० १, १; भग०  
 ५, ७, ( २ ) गढ तथा डिधाना डोड उपर  
 आधेल शस्त्र राभवानु भडान गढ या  
 किले पर बनवाया हुआ शस्त्र रखने का स्थान  
 a turret on a fortress for stor-  
 ing weapons “ पागारं कारयित्ता य  
 गोपुरद्वैतलगाणि य ” उक्त० ६, १८,  
**अद्वैतलय** पु० ( अद्वैतलक ) लुओ शब्द “ अद्वै-  
 तलग ” देखो “अद्वैतलग” शब्द Vide “अद्वै-  
 तलग”. राय० २०१, निसी० ८, ३, पञ्च० २,  
 नाया० १६; अणुजो० १३४; सम० ५० २१०,  
**अद्वैत** त्रि० ( अर्त्तित ) पीडित, दुःखी पीडित;  
 दुःखी Afflicted ओव० ३५,  
**अद्वैत** पुं० ( अर्थ ) अर्थ; आचारगादि सूत्रोने  
 अर्थ-भाव; आराश अर्थ, आचारागादि सूत्रों  
 का अर्थ-भाव Meaning, sense, pur-  
 port निसी० १, २८, १६, ६; उक्त० १, ८, ३,  
 १०, राय० २३५; नाया० १, ५, दम० ५,

१३; भग० १५, १, ओव० ११, कप्प० १,  
 ७, क० गं० १, ४१; २, ३१, ( २ ) प्रयोजन;  
 उद्देश्य प्रयोजन; उद्देश्य aim; object,  
 motive. नाया० १; ५; १८, १६; भग०  
 १, ६; २, १, ५; ५, ४; १५, १, १८, ७, दस०  
 १०, १, ८; उक्त० ४, ४, पिं० निं० भा० ३, पिं०  
 निं० १०३, राय० ३६; वेय० ३, २६, ( ३ )  
 पदार्थ; वस्तु-तत्त्व पदार्थ-तत्त्व a thing,  
 an object. पंचा० ६, १, राय० २५;  
 अणुजो० २७; ( ४ ) कार्य-काम. कार्य, कृत्य.  
 action, act; work. ठा० ५, २, पञ्च०  
 ३६, ( ५ ) आलु विषय-प्रसंग प्रसंग-प्र-  
 स्तुत विषय. current subject mat-  
 ter. अणुजो० १३४, ( ६ ) परमार्थ; मोक्ष.  
 परमार्थ, मोक्ष. final emancipation;  
 salvation दस० ८, ४३; उक्त० १, ८;  
 ( ७ ) धारणा धारणा ideal. भग०  
 ३, १,—कर पुं० ( -कर-अर्थान् हिताहित-  
 प्राप्तिपरिहारादीन् राजादीना दिग्याम्रादौ  
 तथोपदेशद्वारा करोतीत्यर्थकर ) प्रधान; मंत्री  
 प्रधान; दीवान, मंत्री, a minister, a  
 counsellor ठा० ४, ३, ( २ ) निमित्त  
 प्रकाशक, निमित्तियो निमित्तजानी an in-  
 terpreter of signs and omens.  
 ठा० ४, ३,—क्रिया स्त्री० ( -क्रिया )  
 इधने इध प्रयोजन पडये आरभादि क्रिया  
 इधी ते; क्रियाना तेरे स्थानइमानुं पडेडु  
 स्थानइ किसी न किसी प्रयोजन के पडने पर  
 आरभादि क्रिया करना, क्रिया के १३ स्थानकों  
 में से पहिला स्थानक the first of the  
 13 Kriyā Sthānakas ( sources  
 of incurring Karma ), viz doing  
 an action involving killing etc  
 on some ground or for some  
 reasons or other प्रव० ८२५;  
 —जाय त्रि० ( -जात ) धनार्थी; धननी

नश्रीयातवाणो. धनार्थी, धन की जरूरत वाला  
 needy "अदृष्टाय भिक्षुं गिलायमाण  
 नो कप्पइ" नव० २, १८, ( २ ) संयमधी  
 यथायमान थयेल संयम से चलित one  
 who has swerved from  
 asceticism "अदृष्टायं शिग्गये शिग्गार्थिं  
 गिरहमाणे वा शिग्गइक्कमइ" ठा० ५, २,  
 —जुत्त त्रि० ( -युक्त ) हेयोपादेयरूप  
 अर्थ युक्त, अर्थ-भोक्ष तदुपयुक्त हेयोपादेय  
 रूप अर्थ युक्त, मोक्षोपयुक्त containing  
 discussion on things that should  
 be abandoned or practiced 1 e  
 on matters showing the way  
 to salvation "अदृष्टुत्ताणि सिक्खेज्जा  
 शिरट्ठाणि उ वज्जण" उत्त० १, ८,—दंसि  
 त्रि० ( -दर्शिन ) अर्थवेत्ता, शास्त्रिणा अर्थने  
 ज्ञानार. अर्थवेत्ता, शास्त्रों के अर्थ को  
 जानने वाला one knowing the  
 sense of scriptures समाल्लवेज्जा  
 पडिपुत्तभासी, निसामिया सामिय अदृष्टसी"  
 सूय० १, १४, २४,—दुग्ग त्रि० ( -दुर्ग )  
 परिशुभे गहन, दुर्गम गूढ, गहन परियाम  
 बाला inaccessible, abstruse "पवे-  
 दइस्से दुहमइदुग्ग"सूय० १, ५, १, २, १, १०,  
 १०;—पय न० ( -पद ) सूक्ष्म बुद्धिधी  
 विचारवा योग्य पद-वाक्य सूक्ष्म बुद्धि से  
 विचारने योग्य पद-वाक्य a sentence  
 requiring close thinking to be  
 understood. "समाहियं अदृष्टपयोचसुद्ध"  
 सूय० १, ६, २६, क० प० २, ४६, ( २ )  
 अर्थ-अशुद्धादि रक्ष, पद-आनुपूर्वी आदि,  
 अशुद्धरक्ष आदि पदार्थनी आनुपूर्वी-परि-  
 पाटी त्र्यणुकादि स्कंध, पद-आनुपूर्वी आदि,  
 त्र्यणुकस्कंध आदि पदार्थ को परिपाटी pro-  
 gressive order of substances e  
 g. atom, molecule etc. "ने कि त

येगमववहाराणं अणोवणिहिया दन्वाणुणुव्वी  
 पंचविहा प० त० अदृष्टपयपल्लवणा" अणुजो०  
 नंदी० २६,—सइया स्त्री० ( -गतिका )  
 सैकडे अर्थ जेभांथी ठे ऐवी वाणी ऐसी  
 वाणी जिसके सैकडे अर्थ हो सके speech  
 capable of hundreds of mean-  
 ings "अणुणरुत्ताहि अदृष्टसइयाहि वग्गूहि  
 अणुदरणं अभिणुदता" जं० प०

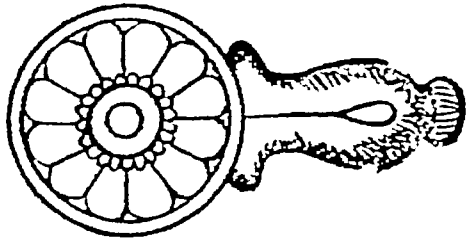
अदृष्ट त्रि० ( अष्टन् ) आठ, आठनी सख्या.  
 आठ, आठ की संख्या Eight उत्त० २६,  
 १६, पक्क० १, ४, सम० ८, ठा० १, १; पिं०  
 नि० ६८, नाया० १; २, ५, ६, ज० प० ३, ५२,  
 वस० ६, ७, ८, १३, सु० च० २, २४४; सू०  
 प० १, भग० १, १, ५, ३, ७, ५, ४, ८;  
 ६, ७, ८, २; १८, ८, २४, ११, ३१, १;  
 वव० ८, १५, राय० ४७, ओव० १०; १२;  
 —अदृष्टमिआ स्त्री० ( -अष्टमिका ) आठ  
 अठवाडिया-६४ दिवस अने २८८ दातनी अष्ट  
 लिङ्गुपडिमा-अभिग्रह तपविशेष, ६ जेभा  
 पहेले आठ दिवसे अथवा पहेले अष्टके अष्ट  
 अष्ट दात अन्नपाणी लेवाय, पछी पीज्ज  
 अष्टके प्रत्येक दिवसे भे भे दात अन्नपाणी लेवाय  
 भेभ दरेक अष्टकमा अष्ट अष्ट दात वधारता  
 आठमे अष्टके आठ आठ दात अन्नपाणी  
 लेवाय आठ अठवाडे-६४ दिन और २८८  
 दात का एक भिक्षुपडिमा-अभिग्रह  
 तपविशेष, अष्टक के प्रत्येक दिन एक एक दात  
 अन्नजल लिया जाय, दूसरे अष्टक के प्रत्येक  
 दिन दो दो दात अन्नजल लिया जाय, इस  
 प्रकार प्रत्येक अष्टक में एक एक दात अन्नजल  
 बटाने से आठवे अष्टक में आठ आठ दात अन्न  
 जल लिया जाय a kind of penance,  
 practised by an ascetic, lasting  
 for eight weeks or 64 days with  
 288 Dātas ( a particular way  
 of giving food and water ) of

food and water. On every day of the first week one Dāta of food and water is to be taken, on every day of the second week two Dātas of food and water are to be taken Thus on every succeeding week one additional Dāta of food and water is to be taken ” अष्टमियाणं भिक्षुपादिमा षडसटीषु राहंदिषुहिं दोहिं य अष्टासीषुहिं भिक्षुपासुहिं” सम० ६४, अंत० ८, ५; श्रौव० १२, वव० ६, ३८;—आहिय. त्रि० (-आहिक) आठ दिवस संबंधी आठ दिन सम्बन्धी. relating to or pertaining to eight days. पंचा० ८, ४८, —उत्तर. त्रि० (-उत्तर) आठे डरी अधिक, आठ ७५-२. आठ से अधिक exceeding by eight, exceeding eight “अट्टुत्तरं सयसहस्रं पीडदायं दत्तयंति” श्रौव० भग० २६, १८, “परहावागरणोसु अट्टुत्तरं पसियासयं अट्टुत्तरं अपसियासयं” सम० प० १६०, —उत्तरसय. न० (-उत्तरगत) १०८; अेक से आठ. एक सौ आठ one hundred and eight प्रव० ४७७, —उवास पु० (-उपवास) आठ उपवास आठ उपवास eight fasts. पंचा० १६, ३०;—उस्सेह त्रि० (-उत्सेह) जेनी आठ जेजनी उयाध होय ते. आठ योजन की ऊंचाई वाला eight Yojana's in height. “चक्रह पइदाया अट्टुस्सेहा य” ठा० ६, —करिण-अ-य त्रि० (-करिणिक) आठ भुजावाणुं अठपेहलु. having eight corners, octagonal. जं० प० ३, ५४; ठा० ८, १; —करम न० (-कर्मन्) आठ डर्म; १ बुं जना-परणीय, २ बुं दर्शनावरणीय, ३ बुं वेदनीय, ४ बुं मोहनीय, ५ बुं आयुष्य, ६ बुं नाम, ७ बुं

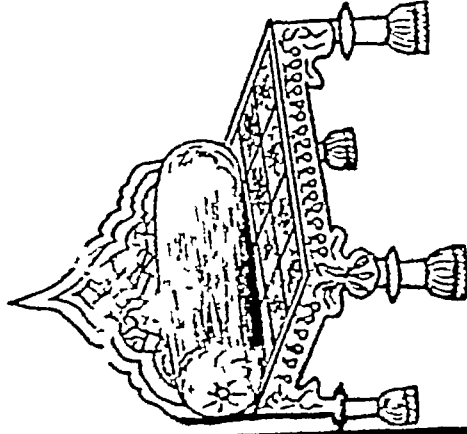
गोत्र अने ८ बुं अंतराय अे आठ डर्म आठ कर्म; १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयुष्य, ६ नाम, ७ गोत्र और ८ अन्तराय. the eight varieties of Karmas viz ( 1 ) Jñānāvāraṇīya, ( 2 ) Darśanāvāraṇīya, ( 3 ) Vedanīya, ( 4 ) Mohanīya, ( 5 ) Āyusya, ( 6 ) Nāma, ( 7 ) Gotra, ( 8 ) Antarāya नाया० ५; ६;—कर्मपगडि. स्त्री० (-कर्मप्रकृति) आठ डर्मनी प्रकृति आठ कर्मों की प्रकृति. the varieties of the eight classes of Karma. नाया० ५; ६, —गडि. स्त्री० (-गति) आठ गति, १ नरक गति, २ तिर्यक, ३ तिर्यक स्त्री, ४ नर, ५ नारी, ६ देव, ७ देवी अने, ८ सिद्धगति आठ गति, १ नरकगति, २ तिर्यक गति, ३ तिर्यक स्त्री, ४ नर, ५ नारी, ६ देव, ७ देवी और ८ सिद्धगति. the eight varieties of Gatis or conditions of existence; viz ( 1 ) Narak Gati, ( 2-3 ) lower creatures (male & female) (4-5) human beings (male & female) (6) Deva (7) Devī (8) Siddha. भग० २५, ३, —गुण. पुं० (-गुण) गीतना आठ गुण, आठ गुणो डरी युक्त गीत आठ गुणों सहित गीत; गीत के आठ गुण the eight qualities or merits of a song; a song having the eight qualities “पुरणं रत्तं च अलंकियं, वट्ट तहेव अविपुट्टं, महुरं समं सुलक्षियं अट्टगुणा होंति गेयस्स” जीवा० ३, राय० १३१;—गुणोववेय न० (-गुणोपपेत) आठ गुणयुक्त गीत आठ गुणसहित गीत. (a song) perfect in its eight merits. जीवा० ३, —चक्रवालपइदाया त्रि० (-चक्रवालप्रतिष्ठान) आठ अक्ष-पैजाने



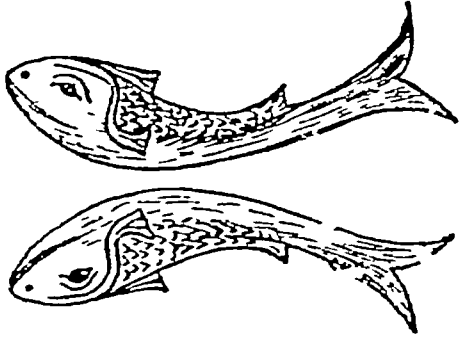
कृपण.



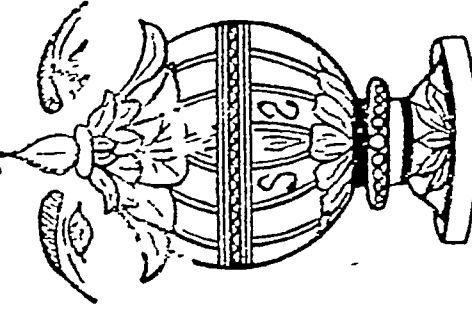
भद्रासन.



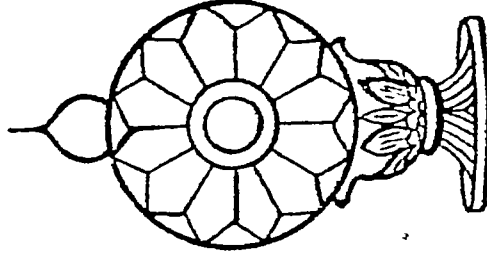
मत्स्य.



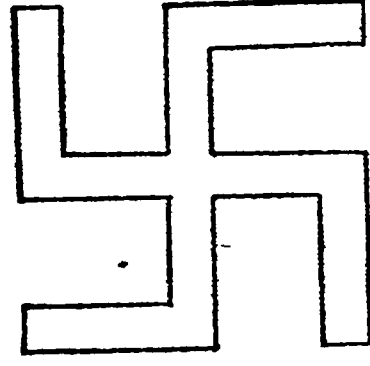
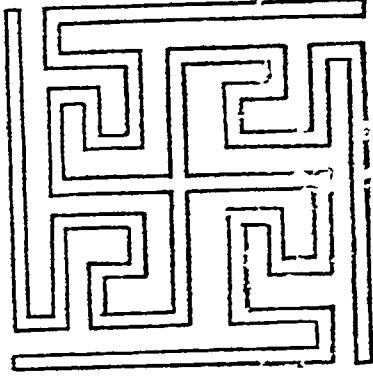
कुम्भ.



संयुक्त.



श्लासिक.



अक्षुभंगल - आठ मंगलिक.

S. K. Chandra. 34.

आधारे रहें। आठ चाकों-पैयों के आधार पर ठहरा हुआ resting on eight wheels. "एगमेगेय महाविही अट्टचकवा-कपट्टाणे" जीवा० ३;—द्वारा. न० (-स्थान) क्षाण्य सूत्रनुं आठमु स्थान स्थानाङ्ग सूत्र का आठवाँ स्थान. the eighth Sthāna of Sthānānga Sūtra. "एवं जहा अट्टट्टाणे" ठा० १०;—णाय-कुमार. पुं० (-ज्ञातकुमार) ज्ञातवंशना आठ कुमार. eight princes of the Jñāta dynasty नाया० ८;—तीस पुं० (-त्रिंशत्) ३८, आठतीस अठतीस. thirty-eight नाया० ४०. सम० २४; भग० ४१, १, जं० प० १, ११;—दिसाकुमारिया स्त्री० (-दिशाकुमारिका) आठ दिशाकुमारी आठ दिशाकुमारियों. eight Disākumārīs नाया० ८;—पप्सिय त्रि० (-प्रदेशिक) आठ प्रदेशों के अनेके आठ प्रदेशों का बना हुआ made up of eight particles ठा० "पृथग्यं अट्टपप्सिए रूयगे" ठा० १०, भग० १२, ४;—पडस त्रि० (-पट्त) आठ पडवाणुं. आठ पुडत वाला consisting of eight layers or folds. भग० ६, ३३;—पिट्ठणिद्विठिया स्त्री० (-विष्टनिष्ठिता) आठ बार पिसवायी उत्पन्न थयेल मदिराविशेष आठ बार पीसने से बनने वाली मदिरा a kind of wine produced by pounding a substance eight times पन्न० १७, जीवा० ३;—फास पुं० (-स्पर्श) शीत, उष्ण वगैरे आठ स्पर्श शीत, उष्ण वगैरे आठ प्रकार के स्पर्श. eight varieties of touch, e g cold, hot etc. विशे० ६४६;—भव पुं० (-भव) आठ भव आठ भव eight births भग० २४, १७;—भाइआ-या स्त्री० (-भा-

गिका) भाणीना आठमा भाग जेटुं रसभाप-वानुं भाप, अत्रीश पल प्रभाणे रसमान विगेष माणां के आठवे भाग जितना रस नापने का माप; बत्तीस पल के अनुसार रस का मान-प्रमाण a measure of capacity for liquids equal to the eighth part of a Mānī अणुजो० १३२, १५३;—भागपलि-ओवम न० (-भागपल्योपम-पल्योपमभाग) पल्योपमने आठमे भाग पल्योपम का आठवाँ भाग period of time equal in extent to the eighth of the Palyopama period भग० २४, १२;—मअ. पुं० (-मद) आठ मद, जाति, कुल, पल, रूप, तप, श्रुत, लाल अने ऐश्वर्य-भेदोटाध अने आठ परतुपरतवे मद-अडुंकार करवे। ते आठ मद, जाति, कुल, वल, रूप, तप, श्रुत, लाभ और ऐश्वर्य इन बातों का अहंकार करना eight kinds of pride due to ( 1 ) caste, ( 2 ) family, ( 3 ) physical strength, ( 4 ) beauty, ( 5 ) penance, ( 6 ) learning, ( 7 ) gain, ( 8 ) power & wealth. आऊ० २६;—मंगल न० (-मङ्गल) आठ मंगल आठ मंगल. eight auspicious things तस्सयं असोगवरपायवस्स उवरि बहवे अट्ठ मङ्गलगा परणत्ता तंजहा १ सोवत्थिय २ सिरिचत्था ३ णंदियावत्त ४ वड्ढमाणाग ५ महासण ६ कलस ७ मच्छ ८ दप्पण" ओव० ज० प० ३, ५३;—मयमहण त्रि० (-मदमधन) आठ मदने नाश करनार; आठ मदने मधनार आठों मदों का नाश करने वाला destroyer of the eight varieties of pride. परह० २, ५;—महापाडिहारे न० (-महाप्रातिहार्य) तीर्थकर महाराजने देवताओं तर्-क्षी आठ प्रकारे अतावाते प्रसाव, अशोड

वृक्ष, दिव्यपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, आमर, सिंहासन, भामंडल-अंभोजाना भागनुं तेज, देवदुंदुभि अने छत्र उपर छत्र ये आठ प्रातिहार्य तीर्थकरों का देवताओं द्वारा प्रकट किये जाने वाला आठ प्रकार का प्रभाव; अशोकवृक्ष, दिव्यपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, भामंडल, देवदुंदुभि और छत्र ये आठ प्रातिहार्य the glory of Tirthankaras testified by gods, in eight ways; e. g. showering celestial flowers etc. नदी०—मुक्ति पुं० (—मूर्ति) शिव; महादेव. शिव; शङ्कर, महादेव the god having eight forms i. e. Śiva, Mahādeva ठ० ६,—रस पुं० (—रस) शृंगार आदि आठ रस; शृंगार, वीर, कर्षणा, हास्य, रौद्र, भयानक, भीमत्स अने अद्भुत ये आठ रस आठ प्रकार के रस; शृंगार, वीर, कर्षणा, हास्य, रौद्र, भयानक, वीमत्स और अद्भुत ये आठ रस. eight kinds of poetic sentiments viz ( 1 ) Śringāra, ( 2 ) Vīra, ( 3 ) Karuṇā, ( 4 ) Hāsyā, ( 5 ) Raudra, ( 6 ) Bhayānaka, ( 7 ) Bībhatsa, ( 8 ) Adbhuta राय० १३१, —रससंपत्त त्रि० (—रससम्प्रयुक्त) आठे रसथी लरपर, आठ रसयुक्त. आठ प्रकार के रसों से युक्त replete with the eight poetic sentiments जीवा० ३;—चक्र त्रि० (—पञ्चाशत्) अट्ठावन, ५८. अठावन, ५८. fifty-eight, 58. क० गं० १, ३२,—वीस त्रि० (—विंशति) आठ अने वीस, २८. अठाईस; २८ twenty-eight, 28. क० गं० १, ३, क० प० २, २४, ७, ११;—सष्टि स्त्री० (—षष्टि) ६८, अठसठ ६८, अष्टसठ sixty-eight भग० २६, १, २१,—समय त्रि० (—समय)

नेनी स्थिति आठ समयनी होय ते. जिसकी स्थिति आठ समय की हो lasting for eight Samayas ( i. e. units of time ). क० प० १, ४०,—सय न० (—शत) अेक से अने आठ; १०८. एक सौ आठ. one hundred and eight. निर० ३, ४; ठ० १०; उत्त ०३६, ६२; —सयसिद्ध. पुं० (—शतसिद्ध—अष्टशतसिद्धते सिद्धाश्च निर्वृत्ताश्च अष्टशतसिद्धा ) ऋषभ-देवस्वामी साथे उत्कृष्टी अवगाहनावाणा तेमना १०८ साधुओं अेकठ वपते सिद्ध थया ते अछेइं; ६१ अछेइंमांनुं अेक अछेइं. ऋषभदेवस्वामी के उत्कृष्ट अवगाहना वाले १०८ साधुओं के एक समय में मोक्ष प्राप्त होने की आश्चर्य जनक घटना, दस अछेरों ( आश्चर्य जनक घटनाओं ) में से एक अछेरा. Rishabhadeva and his Sādhus, 108 in number, who attained to salvation simultaneously. This is one of the ten wonderful events ठ० १०,—सहस्स. न० (—सहस्र) अेक हजार अने आठ. एक हजार आठ one thousand & eight “वहरामयवत्थणित्तणजोइयअट्ठसहस्सवरकंचण ” ओव०—सामइय त्रि० (—सामयिक) आठ समयमां निष्पन्न थाय ते; देवल समुद्घात वजरे, ३ के आठ समयमा पूर्ण थाय छे आठ समयों में निष्पन्न होने वाला, केवलसमुद्घात वजैरह, जो आठ समयों में पूर्ण हो जाते है ( Kevalasamudghāta, etc. ) that can be finished in eight Samayas. “केवलसमुग्घाण अट्ठसामइए परणत्ते ” ओव०—सीइ जी० (—अशीति) अठ्यासी; ८८ षट्ठ; अठ्यासी eighty-eight, 88 प्रव० ३६६,—सोवणिय त्रि० (—सौवर्णिक) आठ सोनाभोज प्रभा-



धु; जेतुं वन्न आऽ सोनाभेडार जेटुं होय  
ते सोने की आठ माहरों जितने वजन वाला  
eight gold Mohars in weight.  
“ऐगमेगस्स रां रराग्गे चाउरंतचक्कवट्टिस्स  
अट्टसोवणिण्ण क्काकिणीरयणे” ठा० ८; जं०  
प० ३, ५४;—हत्तरि त्रि० (-सप्तति) ७८;  
अष्टोत्तर. अठहत्तर. seventy-eight  
“अट्टहत्तरिण्ण सुवण्णकुमारदीवकुमारावासस-  
यसहस्सायां” सम० ७८; पञ्च० २;

अष्टम न० ( अष्टम ) नवमा पूर्वनी त्रीण  
आचारवस्तुमाथी नीक्षेण सुभद्रु भना  
शुभाशुभ-निमित्तसूत्र अष्टांग-निमित्तशा-  
स्त्र; भौम, उत्पात, स्वप्न, आतरिक्ष, आग  
( अंग इडे ते ), स्वर, लक्षण अने व्यंजन  
अे आऽ अग्राणुं निमित्तशास्त्र नवे पूर्व की  
तीसरी आचारवस्तु में से निकला हुआ सुख  
दुःख का शुभाशुभ फल बतलाने वाला निमि-  
त्तशास्त्र; भौम, उत्पात, स्वप्न, आन्तरीक्ष, अंग  
फरकना, स्वर, लक्षण और व्यंजन, इन आठ  
अङ्गों वाला निमित्तशास्त्र The science  
of interpreting signs and  
omens classified as inquiring  
happiness and misery into  
eight subdivisions such as  
Bhauma, etc It is derived from  
the third Āchānavastu of the  
ninth Pūrva नाया० १, भग० ११, ११,  
१५, १, सूय० १, १२, ६;—आउवेअ  
पुं० (-आयुर्वेद ) आऽ अगसहित आयुर्वेद  
आठ अंगो सहित आयुर्वेद ( वैद्यकज्ञान )  
Āyurveda or medical science  
consisting of eight parts. विवा०  
७,—णिमित्त. न० (-निमित्त ) लुओ  
“अष्टम” शब्द देखो “ अष्टम ” शब्द-  
vide “ अष्टम ” सूय० १, १२, ६;  
अष्टमिन्त न० ( अष्टकमात्र ) आऽ पर्यन्त .

आठ तक Up to eight क० प० १, १२,  
अष्टम. त्रि० ( अष्टम ) आऽभुं आठवाँ.  
Eighth भग० २, १, ८, १, नाया०  
८; ६; १६, दस० ८, १५; सम० ८, ठा०  
६, १, क० गं० १, २, दसा० ७, ११;  
नाया० ध० ८; ( २ ) अट्टम-त्रणु  
उपवास, ७ टट्ट-वपत उद्वेधी आऽभे टट्टे  
आहार लेवे ते, त्रणु उपवास भेगा करना ते.  
तीन उपवास साथ २ करना; भोजन के ७  
समयो को उलाघ कर आठवे समय भोजन  
करना Three continuous fasts,  
continuous omission of seven  
meals नाया० ८, भग० २, १, ३, १,  
६, ३१, २०, ६,—भक्त न० (-भक्त )  
अट्टम, त्रणु उपवास भेगा करना ते.  
तीन उपवास लगातार करना, अष्टम  
three continuous fasts “तप्या  
से भरहे राया अष्टमभक्तंति पोसहसालाओ  
पडिणिक्खमइ” ज० प० ३, २२; भग०  
१, १, ७, ६, ओव० १६, नाया० १, ८, १३,  
१६, जीवा० ३, ४, विवा० १; पञ्च० २८;  
—भक्तिय. त्रि० (-भक्तिक ) अट्टम तप  
करना, अट्टम अट्टमना पारणा करना  
लगातार तीन उपवास करने वाला, अष्टम करने  
वाला observing three continu-  
ous fasts कप्प० ६, २३, भग० १६, ४,  
अष्टमअ. त्रि० ( अष्टम-क ) लुओ “अष्टम”  
शब्द देखो “अष्टम”शब्द Vide “अष्टम”  
विशे० १४८७,

अष्टमी स्त्री० ( अष्टमी ) अष्टमी, आऽभ  
अष्टमी The eighth day of every  
half of a lunar month दसा० ६,  
२, विवा० ४, ज० प० ७, १५३, जीवा० ३, ४,  
पचा० १, १७, राय० २२५,—पोसहिय त्रि०  
(-पौषधिक ) आऽभने पोसे ( पोषध )  
करना अष्टमी का पोषध-उपवास करने वाला

observing Pausadha, on the eighth day of every half of a lunar month. आया० २, १, २, १०; —माई. त्रि० (—आदि) आठम आदि पर्वना दिवस अष्टमी आदि पर्व ( a sacred day) such as the eighth day of a fortnight etc. “अष्टमिमाईसु दिवसेसु” प्रव० ६६७,

**अष्टम्य** न० (अष्टक) आठनेो अर्थे. आठ का समूह. A group of eighth. क० गं० ६, ११,

**अष्टया.** स्त्री० (अर्थता) अपेक्षा अपेक्षा. Desire, expectation “अंगष्टयाप्” सम०

**अष्टविह.** त्रि० (अष्टविध) आठ प्रकारनुं आठ प्रकार का Of eight kinds “अष्टविह कम्मतमपडलपडिच्छरणे” उक्त० ३०, २६; भग० १, ६;—चंधय. त्रि० (—बन्धक) आठ प्रकारनां कर्म बाधनार; आठे कर्मनी प्रकृतिनेो बांध करनार. आठ कर्मों का या आठ कर्मों की प्रकृतियों को बांधने वाला. incurring bondage arising from all the eight sorts of Karma भग० ६, ६;

**अष्टसेण** पुं० (अष्टसेन) वत्स गोत्रनी शाखा अने तेभा अन्भेलेो पुत्र्य वत्स गोत्र की शाखा और उसमें उत्पन्नपुरुष A branch of Vatsa-Gotra; a person born in that branch. ठा० ७, १,

**अष्टसेण** पुं० (अर्थसेन) अर्थसेन नामनेो पुत्र्य. पुरुषविशेष का नाम. Name of a man. ठा० ७, १;

**अष्टहा** त्रि० (अष्टधा) आठ प्रकारे. आठ प्रकार से. Of eight kinds, in eight ways. भग० १२, ४; पंचा० ६, २;

**अष्टा** स्त्री० (अष्टा) मुंडे; लोच कराने के लिये केशों को मुट्टिमें पकड़ना Holding hair by the

fist of the hand to pluck them out. “चउहिं अट्टाहिं लोयं करेह” जं० प० अट्टाण. न० (अस्थान) अस्थान; अनुचित स्थान; अधुचित स्थान अनुचित स्थान; खराब जगह. An improper place. “अट्टाणमेयं कुसला वयंति, दगेण जे सिद्धिसुदाहरंति ” सूय० १, ७, १५, २, ६, ३३; पिं० निं० भा० २४;—ट्टवणा. स्त्री० (—स्थापना) अस्थान—अुत्ना अवग्रह—मां—उपधि राप्पवाने अनुचित स्थानमां पडिलेहणु करेह उपधि राप्पवी ते; प्रमाद पडिलेहणुनेो अेक भेद गुरु के अवग्रह में उपधि रखने के अयोग्य स्थान में पडिलेहण की हुई उपधि रखना; प्रमादपडिलेहण का एक भेद keeping the materials and garments inspected minutely, in improper place; a variety of Pramāda, Padilehanā. ठा० ७;

**अट्टाण** न० (आस्थान) भेद; सभा बैठक, सभा. An assembly; a meetingplace. ठा० ५, १;—मंडव. न० (—मण्डप) भेद; गृह; भेदनुं स्थान. बैठक का स्थान; बैठकगृह. a drawing room, a seat ठा० ५, १,

**अट्टाणउइ** त्रि० (अट्टानवति) ६८; अट्टाणुं अट्टानवें; ६८. Ninety-eight. जं० प० ७, १४६; सम० ६८;

**अट्टाणवइ.** स्त्री० (अट्टानवति) अट्टाणुनी सभा. ६८, अट्टानवें. Ninety-eight. प्रव० ३५०;

**अट्टाणित्र** त्रि० (अस्थानिक) स्थान—आधार नहिं ते; अनाधार; अपात्र आधार रहित; अपात्र, स्थान विना. That which would not give support to, incapable of retaining, “अट्टाणिप् होइ यहुगुणायं, जेणाणसंकाइ मुमं वपुज्जा” सूय० १, १३, ३;

अष्टादंड पुं० (—अर्थदण्ड—अर्थेन स्वपरोप-  
कारलक्षणेन प्रयोजनेन दण्डो हिंसा अर्थ-  
दण्डः ) पोताना सुभते माटे के पारडा सुभ-  
ते माटे शुवनी हिंसा करती ते, प्रथम क्रिया  
स्थानक. अपने या दूसरे के सुख के लिये  
जीव की हिंसा करना, प्रथम क्रियास्थानक  
Destruction of living beings for  
one's own or another's happi-  
ness, the first Kriyāsthāna  
ठा० २, १, ५, २, सम० २, १३;—घृत्तिअ-य  
पुं० न० (—प्रत्ययिक ) दंडसमादाना तेर  
क्रियास्थानकमानु प्रथम क्रियास्थानक,  
पोताने अर्थे के स्वर्नादिना अर्थे हिंसादि  
पाप करवु ते दंडसमादान के तेरह क्रिया-  
स्थानकों में से प्रथम क्रियास्थानक, अपने या  
स्वजनादि के लिये हिंसादि पाप करना des-  
truction of or injury to living  
beings for one's own or anothers  
benefit, the first of the thirteen  
Kriyāsthāna s of Dandasamā-  
dāna “ पढमे दंडसमादायो अष्टादण्ड-  
समादायो अष्टादंडवसिपुत्ति आहिज्जह ”  
सूय० २, २, ५,

अष्टापय न० ( अष्टापद ) लुगटु, लुगार  
जुआ Gambling निसी० १३, ८,  
अष्टाबंधि त्रि० ( अर्थबन्धिन् ) विना प्रयेरने  
अधिक बंध न देनेर ( साधु ). वेकाम अधिक  
बंध न देने वाला ( साधु ) ( An ascetic )  
who does not incur Karmic  
bondage without absolute ne-  
cessity कप्प० ६, ५४,

अष्टार. त्रि० ( अष्टादशन् ) आठ+दस, अष्टार  
अठारह Eighteen. पन्न० ४;

अष्टारस. त्रि० ( अष्टादशन् ) अष्टार,  
१८ नी संख्या अठारह को सख्या Eight-  
een “ पढमे छम्मासे अत्थि अष्टारस  
१७

सुहृत्ता राई” सू० प० १, नाया० १, ५; १८;  
नंदी० ४५, ठा० ३, १; ओव० ४१, पन्न०  
२, ४, भग० ५, १; ८, ७, ६; १०; ८, ८, ११,  
११, २४, २१; २३, जं० प० १, १६, सम० १८;  
—कोडाकोडि स्त्री० (—कोटिकोटि )  
अठार कडाकोड ( कुरेड गुणित कुरेड ).  
अठारह कोडाकोड 18 Kodākoda, i e.  
18 x crore x crore क० प० १, ६४;  
—द्वारा न० (—स्थान) संयममां अरति-भेये-  
नी पामेल साधुये संयममां मनने स्थिर करवा  
माटे उच्य अने दृढ भाव उत्पन्न करवाने विया-  
रवाना वियारणीय १८ स्थान, वैराग्य भावना  
१८ वियारस्थान संयम मे बँचनी उत्पन्न होने  
पर संयम मे मन स्थिर करने के लिये, उच्च  
और दृढ भाव उत्पन्न करने के लिये, साधु के  
विचारने योग्य १८ स्थान, वैराग्यभावना के  
१८ विचारस्थान the eighteen  
points of high meditation by  
which a Sādhu steadies himself  
when he feels-disturbed in the  
practice of self-restraint, the  
eighteen points of renuncia-  
tion “समयेण भगवया महावीरेण अष्टा-  
रसद्वाराया पन्नत्ता, तणहा-वयच्छकं कायच्छकं,  
अकप्पो गिहि भाययं । पलियकनिसिज्जा य,  
सिणायां सोभवज्जण ” सम० १८,—देशी-  
भासा स्त्री० (—देशीभाषा ) १८ देशनी  
भाषा अठारह देशों की भाषा language  
of eighteen countries नाया०  
६,—पावद्वारा न० (—पापस्थान ) प्राणा-  
तिपात आदि अठार पापस्थान प्राणाति-  
पात आदि अठारह पापस्थान eighteen  
sources of sins e g destroy-  
ing life ( Pīnātipāta ) etc.  
“सन्वं पायाइवाय, अलियमदत्त च मेहुयं सन्वं  
सन्वं परिगाहं तह, राहभत्तं च घोमिरिसो।

सर्वं कोहं मायं, मायं लोभं च राग दोषे  
 य। कलहं अभक्खायं, पेसुभं परपरिचायं ॥  
 मायामोसं मिच्छादंसणसखं तहेव बोसिरिमो ।  
 अंतिमजसासम्मि य, देहंपि जिणाइपण-  
 क्खं” प्रव० ५४,—मुहुत्त. न० (-मुहूर्त्त )  
 अट्टार मुहुर्त्त, ३६ धी. अट्टारह मुहूर्त्त,  
 ३६ घड़ियों eighteen Muhūrtas of  
 time equal to 36 Ghadīs. भग०  
 ५, १; जं० प० ७, १३४,—वंजण. न०  
 (-व्यञ्जन) लो० ननी अट्टारभी अत; लोभां  
 अट्टारमु व्यंजन-शा३ छे अयेतुं लो० न भोजन की  
 १८ वीं जाति; जिसमे १८ वीं व्यंजन-शाक होता  
 है food containing vegetables,  
 the eighteenth variety of food.  
 “सूओदणो जवणं, तिणिय य मंसाइ गोरसो  
 जूसो । भक्खा गुल्लावणिया, मूलफला  
 हारियगंडागो ॥ होइ रसालू य तहा, पाण  
 पाणीय पाणग खेव । अट्टारसमो सागो  
 शिरुवहणो सोइओ पिंडो ॥” चं० प० २०;  
 —सीलंगसहस्स न० (-शीलाङ्गसहस्र )  
 अट्टार ७०२ शीलना ले६-प्रकार शील के  
 अट्टारह हजार भेद eighteen thousand  
 varieties of the qualities  
 of right conduct पंचा० १४, २३;  
 —सेणि स्त्री० (-श्रेणि ) प्र० नना १८  
 वर्ग; अट्टार वर्ष; नव नारू अने नव  
 डारू भली १८ वर्ष नौ नारू और नौ कारू  
 मिलकर १८ वर्ग; जैसे कुम्हार सुनार आदि  
 १८ प्रकार के कारीगर eighteen  
 classes of artisans & craftsmen,  
 e. g goldsmiths etc “ कुंमार  
 पट्टहत्ता, सुवणकारा य सूचकारा य । गंधव्वा  
 कासवगा, मालाकारा य कज्जकरा ॥ तंघोला  
 य प्पु, नवप्पयारा य गारुआ भणिया ।  
 अहण्य गावप्पयारे, कारुअवण्ये पवक्खामि ॥  
 चम्म परजत्तपीलगागंच्छियाद्धिपय कंसकारा य ।

सीवगुआरभिक्खा, घोवण वणणाइ अट्टदस ॥  
 “ तण्णं ताओ अट्टारससेणिप्पसेणिओ  
 भरहेयं रत्ता एवंवुत्ता समाणीओ हट्टाओ ”  
 जं० प० ३, नाया० ८,

अट्टारसम. त्रि० ( अष्टादशतम ) १८ भुं;  
 अट्टारमु अट्टारहवो Eighteenth. नाया०  
 १८, भग० २०, ५; ( २ ) आ३ उपवास भेगा  
 करवा ते, १७ टंक-वपत उद्धंधीने १८ भे  
 टके आट्टार लेवे ते. लगातार आठ उपवास  
 करना; भोजन के १७ टंकों ( वस्तुओं ) में भोजन  
 न कर १८ वें टंक में भोजन करना eight  
 continuous fasts; continuous  
 omission of seventeen meals.  
 वव० ६, ४१; ४२; भग० २, १;  
 नाया० १; ८;

अट्टारसय न० ( अष्टादशशत ) अ३ सो अने  
 अट्टार एक सौ अट्टारह One hundred  
 and eighteen, 118. क० गं०  
 ३, २२;

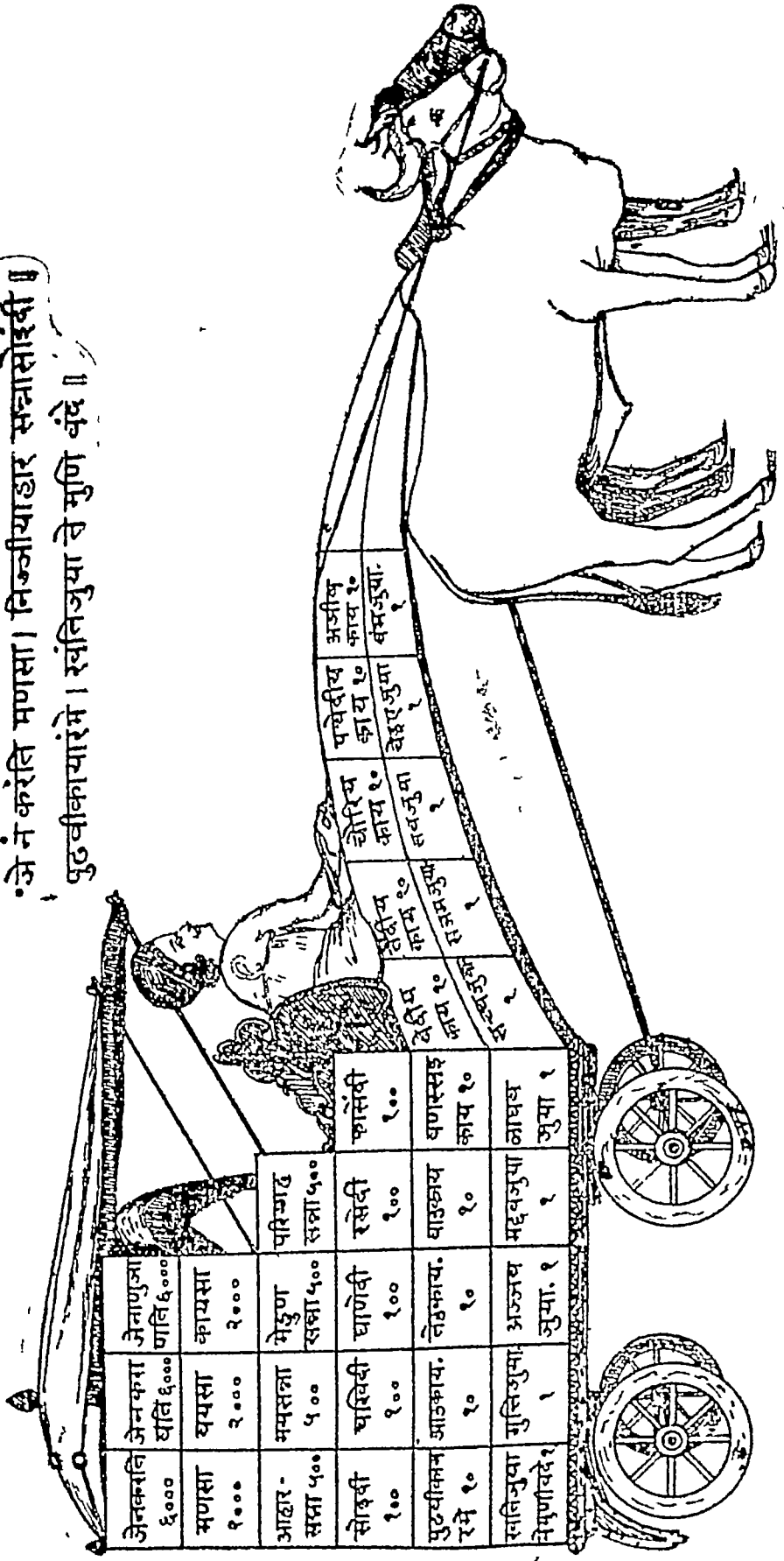
अट्टारसविध त्रि० ( अष्टादशविध ) अट्टार  
 प्रकारनु. अट्टारह तरह का. Of eighteen  
 kinds or sorts. आव० ४, ७,

अट्टालोभि. त्रि० ( अर्थालोभिन्-अर्थे द्रव्ये  
 आ समन्तालोभो विद्यते यस्य सः ) द्रव्यते  
 लोभी-लालस्यु द्रव्य का लोभी; लालची.  
 Avaricious; covetous of money.  
 “ संजोगट्टी अट्टालोभी ” आया० १, २,  
 १, ६२;

अट्टावण स्त्री० ( अष्टपञ्चाशत् ) अट्टावण;  
 ५८ नी संख्या ५८ की संख्या Fifty-  
 eight “ पढमदोषपंचमासु तिसु पुढवीसु  
 अट्टावणं शिरयावाससहस्सा ” सम० ५८;  
 क० गं० २, ८, जं० प० ४, ८६;

अट्टावय पुं० न० ( अष्टापद ) धूत डीडा; जुगार.  
 जुआ Gambling “अट्टावयं ण सिक्खि-  
 ज्जा ” सूय० १, ६, १७. नाया० १; ( २ )

जे नं करति मणसा । निञ्जीयाद्वार सन्नासोईवी ॥  
पुढवीकायारंभे । खंतिजुया ते मुणि बंदे ॥



जेनकरनि ६०००	जेनकरा घति ६०००	जेनापुजा णति ६०००	मणसा १०००	मयसका ५००	परिजठ सत्ता ५००	मेहुण सत्ता ५००	फासंवी १००	वणस्सइ काय १०	पणेवी १००	रसेदी १००	घाणेवी १००	वणस्सइ काय १०	पयेवीय काय १०	अजीव काय १०
पुढवीकान रंभे १०	सनिजुया नेयणीवदे १	गुलिजुया १	आउकाय. १०	आउकाय. १०	घाउकाय. १०	तेठकाय. १०	मदवजुया १	लाघव जुया १	देइएजुया १	सवजुमा १	सवजुमा १	सवजुमा १	वमजुया. १	वमजुया. १

अद्वारससइस्ससीलंगरह

योपट; शतरंजनी रमत चौपट, सतरंज का खेल the game of chess, a kind of gambling play. सूय० १, ६, १७; दस० ३, ४; नाया० १, (३) शतरंज रमवानी कला; ७२ कलाओं में से १३ वीं कला the art of playing the game of chess; thirteenth of the seventy-two arts ओव० ४०, (४) जुगारनु योपट, शतरंज वगेरेतो पट जुग्रा का तख्ता, चौपट व सतरंज का पट a gambling board, a chess-board etc. जं० प० २, २०, (५) जेना उपर ऋषभदेवस्वामी निर्वाण्य पद पाभ्या ते पर्वत, अष्टापद नामे पर्वत जिस पर्वत पर से ऋषभदेवस्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया था, उस पर्वत का नाम-अष्टापद a mountain called Astāpada where Rishabhadeva Svāmī obtained liberation पंचा० १६, १७, प्रव० ३६४; (६) अष्टापद नामतो द्वीप अष्टापद नाम का द्वीप an island called Aṣṭāpada जीवा० ३, ३,—सिहर न० (-शिखर) अष्टापद पर्वतनु शिखर अष्टापद पर्वत का शिखर a summit of mount Aṣṭāpada कप्प० ७, २२७,—सेल पुं० (-शैल) अष्टापद नामतो पर्वत अष्टापद नाम का पर्वत the mountain named Astāpada कप्प० ७, २२७,

अष्टावय. न० (अर्थपद) अर्थशास्त्र, धन धान्यादि उपार्जन करवानु शास्त्र अर्थशास्त्र, सम्पत्तिशास्त्र. Economics, political economy. सूय० १, ६, १७

अष्टावीस. त्रि० (अष्टाविंश) बीस अने आठ; अष्टावीस अष्टावीस. Twenty-eight " तिथियकोसे अष्टावीस धनु-

सय" ज० प० २, २६; ७, १५६, भग० ३, १; ६, ३; १०, ५; २०, ५; २४, १; ३१, २८, ३२, २, ४१, ३, सु० च० १, ३६६, ओव० २६; पञ्च० २; ४, नाया० ८;

अष्टावीसह त्रि० (अष्टाविंशति) अष्टावीस; २८वीं संख्या अष्टावीस की संख्या Twenty-eight. विशेष ११६; पञ्च० १;

अष्टावीसहस्र. त्रि० (अष्टाविंशतिसहस्र) अष्टावीससं अष्टावीसवाँ. Twenty-eighth. (२) न० १३ उपवास भोगा करवा ते, २७ टंक उलंघीने २८ मे टंक आहार लेवा ते १३ उपवास करना; २७ टंक उलंघकर २८ वें टंक में आहार लेना thirteen consecutive fasts; omission of twenty-seven continuous meals. नाया० १, भग० २, १;

अष्टासीह. त्रि० (अष्टाशीति) ८८; अष्टासी अष्टासी. Eighty-eight नाया० ८; भग० १०, ५, २४, १, १२; सम० ८८, वव० ६, ३८, जं० प० १, १२,

अष्टाह. न० (अष्टाह) आठ दिवसतो समुदाय आठ दिनों का समूह. A period of eight days नाया० ८,

अष्टाहिस्र-य त्रि० (अष्टाहिक) निरंतर-लगोलग आठ दिवसनु एक साथ आठ दिनों का. Of continuous eight days. जं० प० नाया० ८,—महिमा स्त्री० (-महिमन्) आठ दिवसतो महोत्सव; अष्टाह महोत्सव. आठ दिनों का महोत्सव. a festival of eight days नाया० ८;

अष्टि त्रि० (अर्थिन्) प्रयोजनवालो. प्रयोजन वाला, मतलबी. Having a purpose, intending पञ्च० २८, आया० १, ६, ४, १६२;

अष्टि. न० (अस्थिन्) हाड, हाड हड्डी A bone. " अष्टीय अष्टीमिजाय " आया०

१, १, ६, ५३; भग० १, ७; २, १, ५, ३, ४, ५, २, पि० नि० भा० ५०; नाया० १; २, सूय० २, १, १५, औव० ३१, राय० २२४; भक्त० १४२; कप्प० ४, ५१,—कच्छुभ-  
पुं० ( -कच्छुप ) अङ्-धृष्ठा ङाङ्ङावाणे  
ङायणे बहुतसी हृष्टियो वाला कछुवा a  
tortoise having many bones तंडु०  
—कठिण त्रि० ( -कठिन-कठिनास्थिक-  
कठिनानि अस्थिकानि यत्र तत्तथा ) ङङ्  
ङावाणे कठिन-मज्जवूत हाड वाला hav-  
ing hard, strong bones “अट्टिय-  
कठियो सिरणहारुबंधणे” तंडु०—चम्म-  
सिरत्ता स्त्री० ( -चर्मशिरावत्ता-अस्थीनि  
च चर्म च शिराश्च ज्ञायवो विद्यन्ते यस्य स  
तथा तज्जावस्तत्ता ) शरीरमां मात्र ङाङ्ङा,  
आमडी अने स्नायुनुं अस्तित्व, मांस अने  
दोहि विना ङाङ्, आमडी अने स्नायुनु रडेवु  
शरीर में केवल हड्डी, चर्म और स्नायुओं का  
अस्तित्व होना, मांस और रक्त के सिवाय हड्डी,  
चर्म और स्नायु का रहना condition  
of being a mere skeleton  
containing nothing but  
bones, skin and sinews, total  
emaciation “अट्टिचम्मसिरत्ताए पणणा-  
यंति णो चैव णं मंससोणियत्ताए धयां  
अणगारं” अणुत्त० २,—चम्मावणुत्त त्रि०  
( -चर्मावचद्ध ) अत्यंत कृश-दुर्बल, जेना  
शरीरमा मांस सुकाष्ठ ज्वाथी आमडी ङाङ्ङाने  
वणणी रही होय ते अत्यन्त कृश, दुर्बल,  
जिसके शरीर का मांस सूख गया हो और अस्थि-  
पंजर शेष हो very lean; with skin  
touching the bones, totally  
emaciated “अट्टिचम्मावणुत्तए किडिडिडि-  
भूए किले धमणिसत्तए यावि होत्था ” भग०  
२, १;—जुद्ध. न० ( -युद्ध ) ङाङ्ङाथी- ङाङ्-  
ङाना हृथियारथी अङ्ङणीजने प्रहार उरवा ते

हड्डी से—हृष्टियों के शस्त्रों से एक दूसरे पर प्रहार  
करना fighting with weapons  
made of bones नाया० १,—ज्जाम-  
न० ( -ध्याम ) अणुं-ङाणुं पडेयुं ङाङ्ङुं जली  
हुई—काली पडी हुई हड्डी. a bone burnt  
black भग० ५, २,—थंभ पुं० ( -स्तम्भ )  
ङाङ्ङाने थाबले, ङेनी उपमा अपच्यथा-  
णावरणीयना मानने आपवामां आवी छे.  
हृष्टियों का स्तम्भ, जिसकी उपमा अपच्यथाणा-  
वरणीय के मान को दी गई है a pillar of  
bones to which the variety of  
pride called Apachchakhāṇā-  
vaṇiṇi is compared “चत्तारि  
थमा पञ्जत्ता, तंजहा सेलथमे अट्टियंभे वास्यंभे  
तिणिसत्तयाथंभे ” ठ० ४, २;—दाम न०  
( -दामन् ) ङाङ्ङानी भाणा हृष्टियों की माला.  
a garland of bones तंडु०—धम-  
णिसंतारणसंतय त्रि० ( -धमणिसन्ता-  
नसन्तत ) ङाङ्ङा अने नसेथी व्याप्त; नसा-  
णथी व्याप्त; शरीरे दुर्बल हृष्टियों और  
नसों से भरा हुआ; नसों के जाल से व्याप्त;  
दुर्बल शरीर वाला very lean, reduced  
to bones and veins “अट्टिधमणिस-  
तारणसंतय सग्वाओ समंता परिसमंत च ”  
तंडु०—भंजण न० ( -भञ्जन ) शरीर-  
दंड, ङरेडनु ङाङ्ङुं रीढ़ की हड्डी the  
spinal cord. परह० १;—मिजा स्त्री०  
( -मज्जा ) ङाङ्ङाने भावे; जेभाथी देत-  
वीर्य उत्पन्न थाय छे ते हृष्टियों का गूदा, जिस-  
से से वीर्य उत्पन्न होता है वह marrow of  
the bones of which the vital-  
fluid is formed ( २ ) ङाङ्ङानी यरथी,  
ङाङ्ङानु तत्त्व-सार हृष्टियों का गूदा, हृष्टियों  
का सार marrow of the bones.  
सूय० २, २, ६, २, ७, ३; ठ० ४, २;  
आया० १, १, ६, ५३; भग० १, ७, ३, ४,

—मिजापेमाणुरागरत्त. त्रि० (—मजाप्रे-  
मानुरागरक्त—अस्थिमजा. प्रेमाणुरागेय सा-  
र्वज्ञप्रवचनप्रीतिरूपकुसम्भादिरागेण रक्ता इव  
रक्ता येषां ते तथा ) जेनी हाडेहाडनी  
मिन्नमां प्रवचन धर्मनो रंग लागेलो होय ते;  
जेनु अंतःकरण दृढ श्रद्धा थी लावित थयेतुं होय  
ते जिसकी हड्डी हड्डी में—रग रग मे धर्म का रंग  
भरा हो; जिसका अन्तःकरण दृढ श्रद्धा से युक्त  
हो. imbued with religious feeling  
to the marrow. “अभिगहियट्टे अट्टिमि-  
जापेमाणुरागरत्ते ” सूय० २, ७, ६६; भग०  
२, ५; नाया० १;—रासि पुं० (—राशि )  
हाड्डानो ढगलो. हड्डियों का ढेर. a heap  
of bones. नाया० ६; आया० २, १, १, १;  
—सुहा. स्त्री० ( ×—सुखा—सुख ) हाड्डाने  
मुभडारी—थंपी; शरीर या शरीरना अवयव  
र्यपाववा—दयाववा ते. शरीर के अवयवों को  
दवाना. shampooing etc. pleasing  
to the bones. विवा० ६; नाया० १;  
कप्प० ४, ६१;

अदिठअ. न० (अस्थिक) गोदली; इलना ढणीया  
वगेरे. गुठली. The stone of a fruit  
दसा० ६, ४; दस० ५, १, ८४;

अदिठअगाम. पुं० (अस्थिकग्राम) वेगवती  
नदीने डाठे आवेतुं वर्द्धमानपुर नामनु गाम,  
जेनुं प्रथम नाम वर्द्धमान હતુ પણ એક વણ-  
વરાનો બળદ નદીમાં થાકતાં તેના ધણીએ  
તેની સારવારને માટે વર્द्धमानपुरના મહાજન-  
ને અમુક રકમ આપી તે ચાલ્યો ગયો  
મહાજને બરાબર સંભાળ ન લીધી તેથી  
દુઃખી થતો પણ મરણ સમયે સારી લેશ્યા આ-  
વ્યાથી તે મરી શૂલપાણિ નામે યક્ષ થયો ગામ  
અને મહાજન ઉપર ડોપાયમાન થવાથી  
મહામારી રોગ મૂક્યો. તેમાં એટલા માણસો  
મર્યા કે હાડકાના ઢગલાના ઢગલા થયા. ત્યારથી  
તેનું ‘અદિઠઅગામ’ નામ પડ્યું. આખરે ગામ

બહાર શૂલપાણિ યક્ષનું મંદિર સ્થાપવાથી  
શાંતિ થઈ. જે મંદિરમાં મહાવીરસ્વામી  
એક રાત રહ્યા હતા અને શૂલપાણિ યક્ષે મહા-  
વીર સ્વામિને પરિપહ આપ્યો હતો. વેગવતી  
નદી કે કિનારે બસા હુઆ વર્द्धमानपुर ગ્રામ;  
जिसका पहिला नाम वर्द्धमान था. परन्तु  
एक वनजारे का बैल नदी में थक जाने से जब  
वह विल्कुल आगे न बढ़ सका, तब वनजारे ने  
उसकी सार संभाल के लिये वर्द्धमानपुर के  
महाजन को कुछ रकम दी और वह वहाँ से  
चला गया. परन्तु महाजन ने उसकी देख रेख  
न की, इससे वह बहुत दुःखी हुआ. अन्त  
में मरते समय शुभ लेश्यारूप परिणाम होने  
से वह मरकर शूलपाणि नामक यक्ष हुआ,  
और उस ग्राम व महाजन पर कुपित होकर, उसने  
महामारी फैलाई, उससे इतने आदमी मरे कि,  
ग्राम में हड्डियों के ढेर हो गये तबसे उसका  
नाम “अदिठअगाम” पड़ गया. आखिर जब गाँव  
बाहिर शूलपाणि यक्ष का मंदिर बनवाया गया  
तब महामारी शांत हुई. इसी मन्दिर में  
महावीरस्वामी एक रात भर रहे थे और शूल-  
पाणि ने उन्हें कष्ट दिया था. (Lit a] heap  
of bones) A city on the Vega-  
vatī river, once called Var-  
dhamānapura but afterwards  
styled Atthiagāma, on account  
of the following incident. A  
bullock of an itinerant mer-  
chant crossing the river, got  
fatigued The merchant leav-  
ing some money with the  
Mahājanas of the city for its  
treatment, passed on. The Mah-  
ājanas neglected the bullock  
and it died and was reborn  
as a Yakṣa named Śūlapāṇi.



Enraged at the citizens he spread plague in the city which carried off thousands whose bones formed a great heap, thenceforward this city came to be called Atthiagāma. At last a temple was built in the name of Sūlapāṇi, outside the city, and the plague subsided in the town. In this temple Mahāvira Svāmī put up for a night Sūlapāṇi gave him much trouble कण्ण० ५, १२१,

अदिठअण्ण त्रि० (अस्थितात्मन्) ञेने आत्मा अस्थिर छे जेवे अस्थिर आत्मा वाला Of unsteady soul दस० २, ६;

अदिठग. न० (अस्थिक) ङडडुं, ङडड हड्डी. A bone परह० १, ३, ( २ ) वर्धमानपुर नगर, अट्टीअणाम वर्धमानपुर, अट्टीअणाम a city named Vardhamānapura. भग० १५, १;

अदिठय. न० (अस्थिक) लुओ "अट्टिग" श०६ देखो "अट्टिग" शब्द Vide 'अट्टिग'. भग० ६, ३३,—कट्टुदिठय त्रि० (—काष्ठोत्थित—अस्थिकान्येव काष्ठानि काठिन्यसाधर्म्यात् तेभ्यो यदुत्थितं तत्तथा ) ङडिन ङडनु अनेख शरीर, मण्णुत ङडनु मजवूत हड्डियों से बना हुआ शरीर having strong bones, a body made up of hard bones भग० ६, ३३;

अदिठय. न० (आर्थिक-अर्थ्यत इत्यर्थो मोक्षः स प्रयोजनमस्येत्यार्थिकम्) मोक्ष साधक मोक्ष की साधना करने वाला ( One ) endeavouring after final bliss "पसन्ना लाभइस्संति, विडलं अट्टियं सुयं" उक्त० १, ४६ ( २ ) त्रि० धरिष्ठा करनार

इच्छा करने वाला. wishing. सूय० १, २, ३, १५;

अदिठय. त्रि० (अर्थित) धरिष्छेत्तुं. इच्छित Wished, desired; longed for. \* उक्त० १, ४६;

अदिठय. त्रि० (अस्थित) स्थिर न रहेल. स्थिर न रहा हुआ. Unsteady; not firm. परह० १, ३; भग० २५, २,

अदिठयअ. त्रि० (अस्थितक) अनियमित; अनवस्थित, अनियमित. Irregular, unsteady. प्रव० ६६३;

अदिठयकण्ण पुं० (अस्थितकण्ण) अनवस्थित कल्प,—आचार मर्यादा, वन्येना आपीस तीर्थ-करेना साधुओने आचार, के जे जेके सरभा शास्त्रीय नियमनी मर्यादाथी आधवाभां नथी आव्यो अर्थात् ते साधुओ महिनाथी वधारे पणु रहेवुं होय तो रहे; पडिकमणु अतिचार न लाग्या होय तो न पणु करे, राजपिंड पणु ल्ये, वस्त्र रगीन भणे तो ते पणु वापरे, जेकेने उद्देशी आहार कर्यो होय ते भीण लघु शके वगेरे आचार जेके सरभो नहि माटे तेओने अनवस्थित कल्प अनवस्थित आचार, बीच के बावीस तीर्थकरो के साधुओ का आचार, जो शास्त्रीय नियमों से मर्यादित नहीं था अर्थात् एक मास से अधिक कहीं रहना हो तो वे साधु रहते थे, अतिचार न लगा हो तो पडिकमण भी नहीं करते थे, राजपिंड भी ले लेते थे और मिलने पर रगीन वस्त्र भी पहिनते थे. साराश यह कि, समान और नियमित आचरण नहीं था इस लिये वह अनवस्थित कल्प कहलाता था. Unsettled rules of conduct; the conduct of the Sādhus of the intermediate 22 Tirthankaras This conduct was not bound down by hard and fast rules of Śāstras, e g they

could stay at the same place for more than a month, they did not perform Padikamaṇa if they had not incurred any faults, they could accept food from a king, they could put on coloured garments if they got them and they could accept the food meant for other Sādhus. This kind of conduct ( Āchāra ) is called Anavasthitakalpa. भग० २५, ६; ७,

आद्वियगाम. पुं० ( अस्थिकग्राम ) वर्धमानपुर शहेरतुं अपरनाम, डे ज्या शूलपाणि यक्षतुं स्थान हुतुं. वर्धमानपुर का दूसरा नाम, जिस शहर में शूलपाणि यक्ष का स्थान था Another name of the city of Vardhamānapura, where there was an abode of the Yakṣa called Sūlapāni कप्प० ५, १२१; अद्विल्लअ पुं० ( अस्थिक ) डपासीया; डपासतु पी०. बिनोला. Cotton-seed पिं० नि० ६०३;

अठायमाण व० कृ० त्रि० ( अतिष्ठत् ) न उभो रहेतो. न खड़ा होता हुआ. Not remaining in a standing posture पंचा० १६, १३;

✓ अड. धा० I. ( अट् ) लभतुं; इरुं अमण करना, घूमना. To wander अडइ भग० २, ५, पिं०. नि० २१७; अडंति. परह० १, १; अडंत व० कृ० पिं० नि० १६४, अडमाण व० कृ० नाया० १४, १६; १६ भग० २, ५; ७, १०; १५, १, विवा० १, अडित्तपु. हे० कृ० भग० २, ६; अडेत्ता सं० कृ० भग० ३, १;

अड पुं० ( अट् ) रोमरायनी पाभवाणा पा- रेवा यडला वगेरे. कवूतर के पंख समान पख वाला पक्षी विशेष गौरैया वगैरह. A bird, such as dove, sparrow etc. जीवा० १;

अड. त्रि० ( अष्ट ) आठनी संख्या; ८. आठ, ८ Eight, 8 क० गं० ३, २०, ४, २५,—तीस. त्रि० ( -त्रिंशत् ) आठतीस; ३८. अडतीस, ३८. thirty-eight; ३८. क० गं० २, २७;—नउइ खी० ( -नवति ) अडालुं; ६८. अठानवें; ६८. ninety-eight; ९८. प्रव० ३६६,—वन्न. त्रि० ( -पञ्चाशत् ) अडानव; ५८. अठान, ५८. fifty-eight, 58. क० गं० १, २; २, ६; प्रव० ३७२,—वीस. त्रि० ( -विंशति ) अडालीश; २८. अडईस; २८. twenty-eight; 28. क० गं० १, ३१;—सडि खी० ( -षष्टि ) अडसड; ६८ नी संख्या अडसठ, ६८ की संख्या sixty-eight “विमलस्स रां अरहओ अडसठो समणसाहस्सीओ ” सम० ६८,

अडई खी० ( अटवी ) अटवी, जंगल जंगल; वन. A forest, a jungle. सु० च० ८; १३६;

अडडम् त्रि० ( अडाह्य ) अग्निधी पाणी श- डाय नहि तेषु जो अग्निसे नजल सके. Incapable of being burnt ठा० ३, २; भग० २०, ५, पंचा० १४, ३४;

अडड. न० ( अट्ट ) ८४ लाख अडडंग प्रमाण डालविशेष ८४ लाख अडडंग प्रमाण काव A period of time measuring eighty-four lacs of Adadāngas “चडरासीइं अडडंगसयसहस्साइं से पुगे अडडे” अणुजो० ११६, भग० ६, १; ६, ७, २६, ५, ठा० २, ४; जीवा० ३, ४, जं० ५० २, १८,—अंग न० ( -अङ्ग ) ८४ लाख तुष्टि

प्रमाण्यु द्वाणविशेष ८४ लाख चुटित प्रमाण  
काल a period of time measur-  
ing eighty-four lacs of Trutitas  
भग० ५, १, २५, ५, ठा० २, ४, अणुजो०  
११६;

**अडग** न० ( अटन ) अटन डरवुं, २५५वुं; डर-  
वुं. भटकना, फिरना Wandering  
ठा० ६,

\***अडपत्तारण** न० ( साटदेशे स्वमामख्यातेऽन्यत्र  
च थिक्किरित्तिप्रासिद्धे वाहनभेदे ) वाहन  
विशेष एक तरह की सवारी A kind of  
vehicle. जीवा० ३,

**अडयाल** त्रि० ( अष्टत्वारिंशत् ) ४८, अड-  
तालीस अडतालीस Forty-eight क०  
ग० २, १५, ६, २७, प्रव० १७, ३७२,  
भग० ३, ७; पत्र० २, ज० प०—सय न०  
(-शत) अडतालीस अधिक सो, ओक सो अने  
अडतालीस एक सौ अडतालीस; १४८ one  
hundred and forty-eight, 148.  
क० ग० २, २५;

\***अडयाल** पुं० ( प्रशंसायाम् ) प्रशंसा; डीर्ति,  
वभाण्यु प्रशंसा, तारीफ, कीर्ति Flame,  
praise पत्र० २, जं० प० १, ११,

**अडयालीस** त्रि० ( अष्टत्वारिंशत् ) अडता-  
लीस, ४८ नी संख्या अडतालीस की संख्या  
Forty-eight "धम्मस्स यं अरहन्तो अड-  
यालीसं गणा" सम० ४८, भग० ५, ८, ६,  
७, २४, १२, १८, अणुजो० १३३, जं० प०  
२, १६,

**अडवि** स्त्री० ( अटवी ) जंगल, अटवी जंगल,  
वन. A forest ठा० ५, २;—जत्ता  
स्त्री० (-यात्रा ) अटवी-जंगलनी मुसाफ़री  
वनयात्रा, जंगल की मुसाफ़री. travel in  
a forest निसी० १६, ११,—संसिय.  
त्रि० (-संभ्रित ) अटवीने आश्रीते रहेल.

वनवासी, जंगल में रहने वाला. residing  
in a forest. विवा० ३,

**अडवी** स्त्री० ( अटवी ) जंगल, अटवी जंगल;  
वन A forest नाया० १५, १८, १६, भग०  
१५, १; ओव० ३६, जं० प० १, १०, परह०  
१, १; सु० च० ७, २३६, विशेष० १२११, राय०  
२६२,—जम्मण. न० ( -जन्मन् ) अटवी-  
जंगलमां जन्म थाय ते, जंगलप्रसूतिजुं दु ष  
वन में जन्म होना, जंगल में प्रसूति होने का  
दु ख birth in a forest, pain of  
child-birth in a forest परह० १,  
१,—वास पुं० (-वास ) जंगलमा. वसपुं  
ते, अटवीनिवास वनवास जंगल में वसना.  
residence in a forest. " उन्विग्ग-  
अप्पया अतरया अडवीवासं उवेत्ति " परह०  
१, ३,

**अडिल्लपुं०** ( अटिल-चर्मचर्दी ) आमडानी पांथ-  
वाणे ओक पक्षी, यमगीदड चमड़े के पखों वाला  
एक पक्षी, चमगीदड. A kind of a bird  
having wings of leather पत्र० १;

**अडोविय** त्रि० ( आटोपित ) भरैल भराहुआ.  
Full परह० १, ३,

\***अडुवियडु** त्रि० ( इतस्तत ) आम तेम,  
आडु पाछु, कम विनानु इधर उधर, आगे  
पीछे, क्रम रहित Confused, disorder-  
ed, at sixes and sevens प्रव०  
७५४,

**अडुड** त्रि० ( आढ्य ) धन धान्यादि थी परिपूर्थु  
समृद्धिवान् धनधान्यादि से युक्त, समृद्धि-  
वान् Rich, wealthy नाया० १, ३; ५,  
७, १३, १४, १५, १६, भग० २, १, ५;  
३, १; ६, ३३, १५, १, २५, ७, राय० २८६;  
—इज्जा स्त्री० (-इज्या-आढ्ये क्रियमाये-  
ज्या आढ्येज्या ) धनाढ्य पुरुषे डरेल सत्कार,  
सुणविशेष. धनाढ्य पुरुष के द्वारा किया हुआ

सत्कार, सुखविरोध. respect shown by a rich man ठ० १०,

अर्द्ध. न० (अर्द्ध) अर्ध, अर्धुं, अर्धो भाग आधा, आधाहिस्सा A half, half. नदी० स्थ० ३३,—अपङ्कति. स्त्री० (—अपङ्कान्ति-अर्द्धस्यासमग्ररूपस्य एकदेशस्य वा एकादिपदात्मकस्यापक्रमणमवस्थापनं शेषस्य तु द्वयादिपदसंघातरूपस्य एकदेशस्योर्ध्वगमनं यस्यां रचनायां सा) ऋतुप्रमाणे ऋधन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट तपस्याना परिमाण्यमा वध घट करवी ते, ऋधन्य, १ मध्यम २ अने उत्कृष्ट ३ उपवासमाथी अेक देश अेटले प्रथम ऋधन्य पदनेो त्याग करवो ते, द्वाभवा तरीके ग्रीष्म ऋतुमा ऋधन्य, १ मध्यम २ अने उत्कृष्ट ३ उपवास करवा, त्यार पछी शिशिर ऋतुमा ऋधन्य, २ मध्यम ३ उत्कृष्ट ४ उपवास करवा, वर्षा ऋतुमा पशु अेम समऋतुं ऋतु के अनुसार जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट तपस्या के परिमाण में न्यूनाधिकता करना, जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट उपवास में से एक देश अर्थात् प्रथम जघन्य पद का त्याग करना. उदाहरणार्थ—ग्रीष्म ऋतु में जघन्य, १ मध्यम २ और उत्कृष्ट ३ उपवास करना, शिशिर ऋतु में जघन्य, २ मध्यम ३ और उत्कृष्ट ४ उपवास करना, वर्षा ऋतु में भी इसी क्रम से समझना चाहिये. progressive and regressive regulation of the three kinds of penance viz lowest, middle, and highest according to season, e g if two fasts are middle in summer, they become lowest in winter. विशे० १२७२,—उरुग पु० (—उरुक-अर्द्ध-मुक्कादिभजतात्पर्योः) देउ अने साथी उपर वीटवानु आधीनु अेक उपगच्छ, दे अे मक्षनी अदी नेयु, अयग्रहानन्तक पट्टनी

उपर देउने वीटी लर्ध साथी उपर दशथी अंधाय छे साध्वी के पहिनेने का एक वस्त्र, जो कमर और घुटनों के ऊपर के भाग पर लपेटा जाकर अवग्रहानन्तक पट्ट के ऊपर कत्तों से बांधा जाता है a garment worn by female ascetics round the waist and the thigh प्रव० ५३७;—कखेत्त. न० (—चेत्र) अेक अहोरात्र परिमित क्षेत्र पर्यंत यंद्रनी साथे नेग नेउनार नक्षत्र; उत्तराभाद्रपद, उत्तराशुक्ल, उत्तराषाढा, रोहिणी, पुनर्वसु अने विशाखा अे छ नक्षत्र. एक अहोरात्र तक चन्द्र के साथ सम्बन्ध रखने वाला नक्षत्रसमूह; उत्तराभाद्रपद, उत्तराशुक्ल, उत्तराषाढा, रोहिणी, पुनर्वसु और विशाखा ये छः नक्षत्र. a constellation remaining in conjunction with the moon for a day and a night These constellations are, Uttarābhādra pada, Uttarāphālgunī, Uttarāsādhā, Rohinī, Punarvasu and Viśākhā सू० ५० १०,—भरह. पु० (—भरत) भरतक्षेत्रनेो अर्ध भाग भरत क्षेत्र का आधा भाग one half of Bharata Ksetra कप्प० १, २;—रत्त. पुं० (—रात्र) मध्य रात; अर्ध रात. मध्य रात्रि; आधी रात doad of night, midnight ओव० नि० ६६२,

अर्द्धग त्रि० (आद्यक) संपत्तिथी लक्ष्म. सम्पत्ति से भरा हुआ. Wealthy; full of wealth; replete with wealth. पचा० १२, १४,

अर्द्धाञ्ज त्रि० (अर्द्धतृतीय-अर्द्ध तृतीयं यत्र तत्) अर्द्धी, अे अने अर्द्ध अर्द्धाञ्ज. Two and a half. पद्म० १३ १८, राय० १०४; जीवा० ३, १ अणुजो० १३४, भग० २, ८, ६, ३१;

महाराज





१४, ६, २४, २०, विवा० १, निसी० २०, ३६, दसा० ५, २३; विशेष० ६६३; ओष० नि० ७२३; प्रव० ४०६, आव० ४, ८, जं० प० १, १४;—दीव पुं० (—द्वीप ) अढी द्वीप; जम्बूद्वीप, धातकीपुंड्रद्वीप अने पुण्ड्रद्वीपते अर्द्धभाग-अर्द्धपुण्ड्रद्वीप अेम अे अने अर्द्ध-अढी द्वीप; पिस्ताणीस लापणोन्नता विस्तारमां छे, अेमांज मनुष्यनी वसति छे, अेटे ते मनुष्यक्षेत्र कडेवाय छे. अढाई द्वीप, जंबूद्वीप, धातकीखंड द्वीप और आवा पुष्कर द्वीप इन अढाई द्वीपों का विस्तार ४५ लाख योजन है, इसी क्षेत्र मे मनुष्य रहते हैं, अत इन अढाई द्वीपों को मनुष्यक्षेत्र भी कहते हैं. two continents and a half, viz Jambū-Dvīpa, Dhātakī-Dvīpa and half of the Puskara Dvīpa, their extent is forty-five lacs of Yojanas Human beings live only in these and therefore they are called Manusyaksetra मग० ६, ३३,

√ अण. धा० I ( अण् ) प्राण धारणुं क्त्वा, गतिं क्त्वा. प्राण धारण करना, गति करना To breathe, to move.

अण्ड विशेष० ३४१,

अण. त्रि० (अनन्त) अनन्तानुबन्धिनुं दुंडुं नाम अनन्तानुबन्धी का छोटा नाम An abbreviation of Anantānubandhī क० गं० १, १७, २, ५, १४, ५, ५७, —पगतीस त्रि० (—पकृत्रिंशत्) अनन्तानुबन्धी आदि ३१ प्रकृतियां अणन्तानुबन्धी आदि ३१ प्रकृतियां. thirty-one Prakritis (Karmic natures) such as Anantānubandhī etc क० गं० ३, ६, —चउवीस त्रि० (—चतुर्विंशति) अनन्तानुबन्धी आदि चौवीस प्रकृति अनन्तानु-

बन्धी आदि २४ प्रकृतियां twenty-four Prakritis (Karmic natures) such as Anantānubandhī etc क० गं० ३, ८, १६,—छवीस त्रि० (—षट्षंशति) अनन्तानुबन्धी आदि छवीस प्रकृति अनन्तानुबन्धी आदि २६ प्रकृतियां. twenty-six Prakritis (Karmic natures) such as Anantānubandhī etc क० गं० ३, ५,

अण न० (अण-अणति गच्छति तासु तासु चोनिषु जीवोऽनेनेति अणम्) पाप पाप Sin. परह० १, १; (२) क्रोधादि चार क्वाय four passions viz anger etc “अणदस नपुंसि-त्थिवेयङ्क च पुरिसवेय च” विशेष० १२८४,

अण न० (अण) क्त्वा, अणु. कर्ज अण Debt नाया० १८, विशेष० १३१; परह० १, २,—अण् क्ली० (—अर्त्त) रान्ते क्त्वा, क्त्वा, क्त्वा, क्त्वा पीडितो राजा का अणो; अणोऽपि. a debtor of a government, a debtor ठा० ३, ४,—अण पु० (—अण) अण-पाप क्त्वा, चोवीसभो गौण प्राणतिपात अण-पाप करने वाला, चोवीसवो गौण हिसा a sinner, a borrower, the twenty-fourth subordinate variety of Himsā परह० १, १; —धारण पु० (—धारक-अण व्यवहार देयं द्रव्यं तयो धारयति स) क्त्वा, क्त्वा, क्त्वा, देनदार a debtor विवा० ३, नाया० १७, १८,—अण पु० (—अण) दीधेल पैशा पाण देवा-वसुध क्त्वा, अणु अण-सत्ता छे ते दिये हुए कर्ज को वसुध करने की सत्ता वाला (one) able to recover the money lent. परह० १, २,—अण पु० (—अण) ३।

न आपे ते; इरञ्ज भांगे-न आपे ते; देवाणीये कर्जं न चुकाने वाला; दिवालिया. a bankrupt, an insolvent पञ्च० १; ३;

**अण्ड**. अ० ( अनति ) अत्यंत नहि, अति-कमलुने अभाव आधिक्य रहित; अत्यन्त रहित. अतिक्रमण का अभाव Absence of excess. तंडु०—वर त्रि० (—वर—न विद्यते अतिवरं यस्मात्तदनतिवरम् ) प्रधान; सर्वोत्तम; श्रेष्ठमां श्रेष्ठ. मुख्य; सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम. pre-eminent, of highest excellence. श्रोव०—विलंबियत्त. न० (—विलम्बितत्व ) सत्यवचनना ३५ अतिशयमानो २८ भो अतिशय; विलंबे नहि पलु अप्पंड प्रवाहे भोलवुं ते. सत्यवचन के ३५ अतिशयों में से २८ वों अतिशय; रुकते हुए न बोलकर धाराप्रवाह से बोलना. the twenty-eighth of the thirty five Atisayas of truthful speech; speaking fluently without a break. राय०—संधाय न० (—सन्धान) अव्ययन; न छेतरु ते कपट न करना, वंचन न करना absence of deceit. “भियगाण्डसंधायं सासयवुद्धी य जयणा य” पंचा० ७, ६,

**अण्डकमण्डिज्ज**. त्रि० ( अनतिक्रमणीय ) नेमां व्यभिचार, अतिव्याप्ति आदि दोष न आवे तेवे न्वाथ ऐमा उत्तर जिसमें व्यभिचार, अतिव्याप्ति आदि दोष न हों. A reply free from logical fallacy “अण्डकमण्डिज्जाइं वागरणाइ” भग० १५, १;

**अण्डवत्तिय**. सं० कृ० अ० ( अनतिपत्य ) न उधधीने; अतिपात-दिसा न इरीने न उल्लोषकर, बिना हिंस्र किये. Without having killed; without having

transgressed, “अण्डवत्तियं सब्वेसि पाणायां” आया० १, ६, ५, १६४,

**अण्डवाएमाण** व० कृ० त्रि० (अनतिपातयत्) नहि मारतो, दु.अ नहि आपतो; प्राणुति-पात नहि इरतो. न मारते हुए; दु.ख न देते हुए Giving no pain, not killing. “अण्डवकंखमाणा अण्डवाएमाणा” आया० १, ७, ३, २०७, १, ६, ३, १८७;

**अण्डंग**. न० ( अनङ्ग ) विषयसेवनना भुष्य अंग शिवायना अंग-स्तन, कुक्षि, भुष्य, छाती वगेरे विषयसेवन के मुख्य अंग के सिवाय अन्य अंग-स्तन, कुक्षि, मुख, छाती आदि. Parts of a body other than the sexual organ e g. breasts, arm-pit, face, chest etc. पंचा० १, १६; ( २ ) अनावटी लिग आदि कृत्रिम लिग आदि. an artificial sexual organ. ठा० ३, २, ( ३ ) विषय सेवन के इस्तकर्म आदिनी छंछा विषय सेवन की या इस्तक्रिया आदि की इच्छा. desire for sexual intercourse, masturbation etc. प्रव० १०७६; ( ४ ) पार अंगसूत्रथी पाण्ड-विन्त. बारह अंगसूत्रों से बाह्य-भिन्न. not included in the twelve Aṅga-Sūtras. विशे० ८४४,—कीडा. क्री० (—क्रीडा) अनेरे अगे क्रीडा-कामयेष्टा इरवी ते, इस्तकर्म, दुयमर्दनादि दुयेष्टा इरवी ते; आवधना योथा आशुप्रतने त्रीणे अतिचार. अनंगक्रीडा करना; इस्त मैथुन करना, कुचमर्दन आदि कुकृत्य; आवक के चौथे अणुव्रत का तीसरा अतिचार. third Atichāra of the fourth Anuvrata of Śrāvakas; amorous dalliance. प्रव० ३७८; १०७६;



उवा० १, ४८, पंचा० १, १६;—पडिसे-  
विणी. स्त्री० (—प्रतिसेविनी ) अनेरे अगे  
विषयसेवन करनारी, परपुरुष साथे व्यभिचार  
सेवनारी. नियमित अंगों के सिवाय दूसरे अंगों  
से विषयसेवन करने वाली, परपुरुष के साथ  
व्यभिचार करने वाली. a woman of  
licentious character. ठा० ५, २;—  
प्वचिदूठ न० (—प्रविष्ट) अंग-पुस्तक-सूत्रो,  
उववाच वगेरे सूत्रो अगवाह्य सूत्र-उववाच  
चगैरह सूत्र Sūtras not included  
in the Angasūtras, e g. Uvavāi  
etc. नंदी०

अरण्यसेना स्त्री० (अनङ्गसेना) कृष्णवासुदेवना  
वधतमा द्वारकानी मुष्य गण्डिका-वेश्या  
कृष्णवासुदेव के समय की द्वारिका में रहने  
वाली मुख्य वेश्या The principal  
prostitute of Dvārikā in the  
time of Kṛṣṇavāsudeva अत०  
१, १; नाया० ५, निर० ५, १;

अरण्य त्रि० (अनन्त) अंत-छेडा वगरनु,  
नि सीम, असंख्यातने पणु उधंधी गयेल,  
अनंत, निरवधि अन्त रहित; सीमा रहित,  
असख्यात से भी बहुत अधिक, अनन्त.  
Unlimited, infinite “अण्यते णिइए  
लोए सासए ण विणस्सति” सूय० १, १, ४, ६;  
ओव० १०; २०; ४०, नाया० १; १४; भग०  
१, १, ४, २, १, १०; ३, १, ५, ४, ६; ७,  
७, १४, ४, १६, ६, २४, १६; उत्त० ४, ५,  
१०, ६, २८, ८; सम० १, १६, २४, सू० प०  
२०, राय० २३, नंदी० स्य० ३४; पि० नि०  
भा० २८, ४४; ठा० १, १, अणुजो० ४८,  
विशो० ७३४, ( २ ) न० डेवणज्ञान. केवल  
ज्ञान. perfect knowledge नाया० ८;  
( ३ ) न० आकाश आकाश the sky भग०  
२०, २; ( ४ ) पुं० भरतक्षेत्रना आधु  
अवसर्पिणीना १४ मा तिर्थक्षर अनंतनाथ.

भरतक्षेत्र की वर्तमान अवसर्पिणी के १४ वे  
तिर्थक्षर अनन्तनाथ Anantanātha the  
14th Tirthankara of the present  
Avasarpiṇī of the Bharata  
Kṣetra अणुजो० ११६, सम० ५४, भग०  
२०, ८, ( ५ ) त्रि० अत्यंत; प्रभूत. बहुत  
ज्यादह. too much, abundant ठा०  
४, १, ( ६ ) पुं० अनन्तकाय; कंदमूलादि.  
अनन्त काय; कन्दमूलादि roots etc.  
( containing many lives ). पञ्च०  
११,—उत्सर्पिणी स्त्री० (—उत्सर्पिणी )  
अनंती उत्सर्पिणी, कालविभागविशेष.  
अनंती उत्सर्पिणी, कालविभागविशेष  
Utsarpiṇī ( an ascending cycle  
of time ) going on eternally.  
क० गं० ५, ८६,—कर त्रि० (—कर )  
संसारने अंत करवाने अशक्त, संसारने  
अन्त न करनार. संसार का अन्त करने में  
अशक्त powerless to attain final  
bliss “ तेणतिसंजोगमतिप्पहाय,  
कायोवगाणतकरा भवति ” सूय० २, ६,  
१०,—काय. पु० (—काय ) अनंतकाय;  
कंदमूलादि अनन्तकाय, कन्दमूलादि.  
vegetables growing under-  
ground, and containing infinite  
lives प्रव० २२५, पञ्च० ११,—काय-  
मिस्स. त्रि० (—कायमिश्र ) अनंतकाय-कंद  
मूलादि साथे भेजसभेज थयेल अनन्त  
काय-कंदमूलादि के साथ मिला हुआ mixed  
up with vegetables containing  
infinite lives. निसी० १०, ५,—काल.  
पुं० (—काल ) अनंतकाल, छेडा वगरने  
काल अनन्त काल. eternity परह० १,  
३;—गुण पु० (—गुण ) अनंतगणु-  
वधारे, अनंतगणु अनन्तगुणा infinitely  
multiphed उत्त० २४, १०, भग० ६, ३;

७, ७, ८, २, १२, ४; १७, १२, २०, १०; २५, ४, क० प० १, २६; क० ग० ४, ४२; ज० प० २, २७,—गुणिय त्रि० (—गुणित) अनंत गुण-वधारे, अनंतगुण; अनते गुणेषु अनन्त से गुणा क्रिया हुआ; अनन्त गुणित. infinitely multiplied क० प० १, ३१; प्रव० १४४६,—घाट्. पुं० (—घातिन्-अनन्तविषयतया अनन्ते ज्ञानदर्शने हन्तुं विनाशयितुं शीलं येषां ते अनन्तघातिनः) आत्माना भूय गुणुनी धातु इत्यार इर्भप्रकृति; धाति इर्भनी प्रकृति. आत्मा के मूल गुणों का घात करने वाली कर्मप्रकृति a variety of Karma destructive of the spiritual qualities of the soul “ पसत्थजोगपदिवन्ने यं अणुगारे अखण्त-घाट्पज्जने खवेइ ” उक्त० २६, ७;—चक्रु पु० (—चक्रुप्) अनन्त-अतविनाशु यक्षु-ज्ञान छे नेतुं ते; देवणज्ञानी अनन्तज्ञान वाला; केवलज्ञानी. one having perfect knowledge, omniscient. “ तरिउं समुइं च महाभवोवं, अभयंकरे वीरे अणत-चक्रु ” सूय० १, ६, २५;—जीव. त्रि० (—जीव) अनन्तदायिद्वयवाणी वनस्पति; इहमूल वगेरे साधारण वनस्पति अनन्तकायिक जीव वाली वनस्पति, कंदमूल वगैरह साधारण वनस्पति vegetation with infinite lives in it, e. g. radish, carrot etc. “ जस्स मूलस्स भग्गस्स, समो भंगो य दीसइ । अखण्तजीवे उ से मूले, जेयावणणे तहाविहा ॥ जस्समूलस्स कट्ठाओ, इल्ली बहलतरा भवे । अखण्त जीवा उ सा इल्ली, जायावणणा तहाविहा ” पद्म० १; भग० ७, ३;—जीविअ-य पु० (—जीविक) अनन्त छे नेमा छे ते; अनन्त दायिद्वय वनस्पतिविशेष जिममे अनन्त जीव छे; अनन्तकाय वाली वनस्पति vege-

tation with infinite lives in it, e. g. roots etc. भग० ८, ३; ठा० ३, १,—णायण न० (—ज्ञान-अनन्तं स्वपरपर्यायापेक्षया वस्तु ज्ञायते येन तदनन्तज्ञानम्) देवणज्ञान केवलज्ञान omniscience; perfect knowledge. दस० ६, १, ११,—णायणउक्कमअ. पु० (—ज्ञानोपगत) देवणज्ञान प्राप्त करेह; देवणज्ञानी केवल ज्ञान युक्तः केवलज्ञानी. having perfect knowledge, omniscient दस० ६, १, ११;—णायणदंसि. पुं० (—ज्ञानदर्शिन्-अनन्तं ज्ञानं दर्शनं च यस्यासावनन्तज्ञानदर्शी) देवणज्ञान अने देवणदर्शनवाणी; देवणी केवलज्ञान और केवलदर्शन वाला, केवली having perfect omniscience and perfect right belief. “ अखण्त-णायणदंसि से, धम्मं देसि तवं सुतं ” सूय० १, ६, २४,—णायि. पु० (—ज्ञानिन्) अनन्तज्ञानी, देवणज्ञानी अनन्तज्ञानी; केवलज्ञानी. one having perfect knowledge, omniscient. “ अखण्त-णायि य अणतदंसि ” सूय० १, ६, ३, भग० ६, ७, दसा० ६, १८,—दंसि. पुं० (—दर्शिन्) देवणदर्शनी, देवणी तथा सिद्ध भगवान् केवलदर्शन वाला, केवली तथा सिद्ध भगवान्. Kevali and Siddhagods, one possessed of perfect right belief. सूय० १, ६, ३;—पणसिअ पुं० (—प्रदेशिक) अनन्त प्रदेशिक रक्षक, अनन्त परमाणु भेगा थवाथी अनेसी अेड वस्तु. अनन्त प्रदेशिक स्कंध; अनन्त परमाणुओं के एकत्रित होने से बनी हुई एक वस्तु. a thing made up of innumerable atoms भग० २, १, ५, ७; ८, २; १०, १०; १४, १०, १८, ६; ८, २७, ४, अणुजो० १३२; ठा० १,

१;—पार स्त्री० (—पार—अनन्त पार. पर्य-  
न्तो यस्य फासस्य सोऽनन्तपार. ) अपार  
अपार infinite, endless, bound-  
less “केण अणतं पारं संसारं हिंङ्ग जीवो”  
आउ० “से पञ्चया अस्त्रयसागरे वा, महो-  
दहि वा वि अणतपारे” सूय० १, ६, ८,  
—भाग पुं० (—भाग) अनंतमे भाग-अंश  
अनन्तवँ हिस्ता infinitesimal part  
भग० १, १; १८, ३, २५, ६; अणुजो०  
१४५, उक्त० ३३, २४, विशेष० १४०; क०  
प० १, ३०,—भागहीण त्रि० (—भाग-  
हीन) अनंतमे भागे ओष्ठुं-डीणु अनन्तवँ भाग  
से कम-न्यून infinitely less, infini-  
tesimally less भग० २५, ६,—भाग-  
मब्भहिय त्रि० (—भागाभ्यधिक) अनंत-  
मे भागे अधिक. अनन्तवँ भाग से अधिक in-  
finite limally more भग० २५, ६,—  
मिस्सिया स्त्री० (—मिश्रिता) प्रत्येक पन-  
रपति पासे पडेल अनतकाय-इंदमूल आदि  
वेधने येम कडेवु डे “आ अधु अनतकायिक  
छे” ते सत्यमृषा भाषानो अेक लेद प्रत्येक  
वनस्पति के पास में पड़े हुए अनन्तकाय-  
कंदमूलादि को देख कर यह कहना कि,  
“ये सब अनन्तकाय हैं” यह सत्यमृषा  
भाषा का एक भेद a kind of speech  
partly true and partly false; e g  
seeing a mixture of Ananta-  
kāya (roots full of infinite lives)  
and Pratyeka vegetable, to  
call the whole as Ananta-  
kāya without mentioning the  
Pratyeka-kāya vegetable पत्र०  
११,—मीसय न० (—मिश्रक) नुओ  
“अणतमिस्सिया” शब्द देखो “अणत-  
मिस्सिया” शब्द vide “अणतमिस्सिया”  
ठा० १०,—मोह त्रि० (—मोह) अनत-

अंत विनानो मोह-दर्शनमोहनीय वेने छे ते;  
मिथ्यात्वी-अज्ञानी अंतरहित मोह-दर्शनमो-  
हनीय वाला, मिथ्यात्वी, अज्ञानी. infinite-  
ly deluded in the matter of  
right belief. “दीवप्पणट्टे व अग्रंत  
मोहे, नेयाउयं दट्ठुमदट्ठुमेव” उक्त० ४,  
५,—वग्ग पु० (—वर्ग) अनंतते अनत  
गुणा इरवा ते, अनंतानो वर्ग. अनन्त को  
अनन्त से गुणा करना, अनन्त का वर्ग multi-  
plying the infinite and making  
it infinite-fold ओव०—वग्गभइय  
त्रि० (—वर्गभक्त) अनंतते वर्गे इरी भाग  
पाडेल-वेयणी इरेल अनन्त का वर्ग करके  
फिर उसका विभाग किया हुआ. divided  
into infinities “सोऽणंतवग्ग-  
भइओ, सव्वागासेण सीएज्जा” ओव०  
—वत्तियाणुप्पेहा स्त्री० (—वृत्तितानुप्रेषा-  
अनन्ता अत्यन्तप्रभूता वृत्तिर्वर्त्तन यस्यासा-  
वनन्तवृत्ति., तस्य भावस्यानुप्रेषा अनन्तवृ-  
त्तितानुप्रेषा) शुद्धध्याननी अेक भावना;  
अनंतकाणथी लव भूमणु थाय छे तेनाथी  
निवर्तवानु थितवन इरवु ते शुद्धध्यान की  
एक भावना, अनतकाल से होने वाले संसार  
अमण से छूटने का चिंतवन deep medi-  
tation on emancipation  
from transmigration, a variety  
of pure concentration of the  
soul on itself ओव० २०, भग०  
२५, ७, ठा० ४, १,—संसारि त्रि०  
(—संसारिन्) वेने संसारभा अनत लव  
रभइवु छे ते ऐमा जीव जिसे ससार में अनंत  
भवो तक अमण करना है involved in  
the cycle of endless births and  
deaths भग० ३, १,—संसारिय पु०  
(—संसारिक) वेने संसारभा अनत लव  
इरवा छे अेवा इव ऐमा जांव जिने संसार

से अनन्त भव धारण करना है. a being involved in the cycle of endless births and deaths राय० ७६; ठा० २, २,—समय पुं० (-समय) अनंता समय अनंत समय. a period of time ranging from one to infinite Samayas ठा० १, १; पन्न० १;—समयसिद्ध. पुं० (-समयसिद्ध) जेने सिद्ध थये अनन्त समय थया होय ते जिसे सिद्ध हुए अनन्त समय—असंख्य काल व्यतीत हुआ हो वह A Siddha who attained or is said to have attained liberation infinite time ago “ एगा एकसमय सिद्धाणं वगणा एगा अणिकसमयसिद्धाणं वगणा एगा पढमसमयसिद्धाणं वगणा एवं जाव अणंतसमयसिद्धाणं वगणा ” ठा० १, १, पन्न० १;—हिय न० (-हित) मोक्ष. मोक्ष salvation, final emancipation, absolution, eternal beatitude. दस० ६, २, १६,—हियकामुय त्रि० (-हितकामुक) मोक्षाभिलाषी; मोक्षनी धर्यावाणो; मुमुक्षु मोक्ष का अभिलाषी, मोक्ष की इच्छा वाला; मुमुक्षु-aspiring to final emancipation “ किं पुणं जे सुअग्गाही अणंतहियकामुय ” दस० ६, २, १६;

अणंतअ-य. पुं० ( अनन्तक ) रज्जुद्वारा साधु का रजोहरण-उपकरण A kind of brush kept by a Sādhu to remove dust, insects etc. ओष० नि० २२२; ( २ ) जंबूद्वीपना धरत क्षेत्रना यालु अवसर्पिणीना त्रैदमा तीर्थंकर जंबूद्वीप के इरवतक्षेत्र सम्बंधी वर्तमान अवसर्पिणी के १४ वे तीर्थंकर. the fourteenth Tirthankara of the

present Avasarpinī of the Iravata region of Jambūdvīpa. सम० प० २४०; ( ३ ) अनन्तकाल अनन्त काल Anantakāya पंचा० १, २१; मुहपत्ति; मुषवस्त्रिका मुहपत्ति mouth-cloth or mouth-screen. “मुहयंतय-देहा ” प्रव० ६३; ( ५ ) त्रि० अनन्त रहित. अनन्त रहित endless, eternal प्रव० १२२१;

अणंतअ-युक्तो. अ० ( अनन्तकृत्वस् ) अनन्ती वार; अनन्ता वपत; अनन्तीवेणा. अनन्त वार. Repeated for endless times; infinite times “ असति अदुवा अणंतकृत्वस्तो ” भग० १२, ६, २, ३; ६, ५, ११, १; १२, ७; १६, ६; २१, १; ३५, १; जं० प० ७, १७६;

अणंतग न० ( अनन्तक ) आभरणविशेष; लुलमां पडेरवानुं ओड धरेणुं आभरण विशेष, बाँहों से पहिने का आभरण An armlet, a bracelet. राय० १२६; ( २ ) शाश्वत; अविनाशी शाश्वत; अविनाशी. eternal. “ चिद्ध अणंतगं सोयं, निरवेणो परिव्वप् ” सूय० १, ६, ७; ( ३ ) गणत्रीरूप संप्रियाविशेष; ज्युतअनंत, परित्तअनंत अने अनन्तानंत अे त्रयु अथवा ओडकना जवन्य, मध्यम अने उदक अेम त्रयु त्रयु लेद होवाधी नव भेदमानो गमे ते ओड गिन्तीरूप संख्या विशेष; युक्त अनंत, परीतानंत और अनन्तानत के उत्कृष्ट, जघन्य और मध्यम की अपेक्षा से नौ भेद होते हैं उनमें से एक. ( Math ) infinite; infinity-it is of three kinds viz Juttānanta, Parittānanta and Anantānanta each divided into minimum, medium and maximum. “ से किंत

अथांतग ? अथांतग तिविहे पयणत्ते, तंजहा परिसाथांतग जुसायतए अथांतायतए” अणु-  
जो० ( ४ ) उनतुं यत्त, कामण वगेरे. कम्मल  
वगैरह ऊनी वस्त्र woollen clothes  
such as blankets etc. ओघ०  
नि० ३६;

अथांतग त्रि० (अनन्तक) गणुवाते ओघ  
भेद संख्या का एक भेद. Mode of  
numerical calculation. “पंचविहे  
अथांतगे पयणत्ते” ठा० ५, ३;

अथांतजिण. पुं० (अनन्तजिन) आलु अवसर्पि-  
णीना भरतक्षेत्रना १४ भा तीर्थंकर वर्तमान  
अवसर्पिणी काल के भरतक्षेत्र के १४ वें तीर्थ-  
कर. The fourteenth Tirthankara  
of the Bharata Ksetra of the  
present Avasarpinī. प्रव० २६४,

अथांततथ पु० (अनन्तार्थ) धरवतक्षेत्रना  
आवती योवीसीना चौथमा तीर्थंकरनु नाम  
हरवतक्षेत्र के आगामी चौथी के २० वें  
तीर्थकर का नाम Name of the 20th  
Tirthankara of Iravata Ksetra  
in the coming Chovīsī. प्रव०  
३०४;

अथांतर न० (अनन्तर) अन्तरनिना; अन्तर  
रहित. अन्तर बिना, अन्तर हीन. Without  
intervening space, spaceless  
नाया० १, ८, १५, १६; भग० २, १; ५, १, ४;  
१२, ८; १३, १; १५, १, १६, ३; ३२, १, ३४,  
४; (२) पछी, आ६. पश्चात्, बाद after-  
wards, then पक्ष० २, दत्ता० १०, ३;  
राय० ६६, कप्प० १, २, क० प० २, ५, (३)  
नअड. नजदीक, पास. adjoining close  
to पिं० निं० २७६; (४) निअडे गयेव  
आरभा दृष्टिवादे अगना पीज्ज विलाग-  
सूत्रने। प.थमे भेद विच्छेद हुए बारहवे  
दृष्टिवाद अज्ञ के दूसरे विभागसूत्र का

पाचवें भेद. the 5th division of the  
2nd Vibhāga Sūtra of the 12th  
Aṅga viz. Diṣṭivāda, which  
is no longer extant नदी० ५६;  
—आगम न० (—आगम) तीर्थंकरे गणु-  
धरने सखणावेव आगम; आगमने ओघ  
भेद. तीर्थंकरों ने गणवरों को सुनाया  
हुआ आगम, आगम-शास्त्र का एक प्रकार.  
a mode or variety of scriptur-  
es, a division of scriptures  
भग० ५, ४, सूय० नि० टी० १, १, १, २८,  
—आहार पु० (—आहार) श्रुवे उत्पन्न  
थया पछी पड़ेले समये लीधेला आहार  
उत्पन्न होने के बाद पहिले समय में जीव ने  
लिया हुआ आहार. the first food taken  
after birth by a living being  
भग० १३, ३, —आहारग पु० (—आहारक)  
श्रुवना प्रदेशनी छेक पासे रहेला—अ.तरा रहित  
रहेला पुद्गलने आहार करने न-रही वगेरे  
श्रुवे जीव के प्रदेश के बिल्कुल पास वाले  
पुद्गल का आहार करने वाले नारकी वगैरह  
जीव. hellish beings eating matter  
in immediate contact with liv-  
ing beings भग० २६, ६; ३३, ६, ठा०  
१०, (२) उत्पन्न थया पछी पड़ेले समये  
आहार लेना उत्पन्न होने के बाद पहिले समय  
में आहार लेने वाला. one taking food  
in the first moment after birth.  
पक्ष० ३४, ठा० १०;—उच्चिहा लो०  
(—उपनिधा—उपनिधानमुपनिधा, अनन्तरे-  
शोपनिधाअन्तरोपनिधा—मार्गणा) अनन्तर-  
लेकेना योगस्थान साथे तेना पछीना ये ग-  
स्थाननी मार्गणा करनी ते मिले हुए योग-  
स्थान के साथ उसके पाँडे के योगस्थान की  
मार्गणा करना investigation of an  
immediately succeeding Yoga.

sthāna परह० २, ५,—उवचरणग पु० (—उपपन्नक—न विद्यतेऽन्तरं समयादि व्यवधानमुपपन्ने उपपाते येषां ते अनन्तरोपपन्नका ) प्रथम समयमां उत्पन्न थयेल ७५, जेने उपपन्ने ओड समय थये छे ते प्रथम समय मे उत्पन्न जीव; जिसे जन्म लिये एक ही समय हुआ हो a being after whose birth more than one Samaya or instant has not passed भग० १३, १०, १४, १, २६, २, २६, १, ठा० १०, —ओगाढ त्रि० (—अवगाढ) प्रकृत समय-मां आडाश प्रदेशने अवगाढी रहेल प्रकृत समय से आकाश प्रदेश को अवगाहन कर ठहरा हुआ localised in space in the time present भग० १३ १, ३३, १,—ओगाढग पु० (—अवगाढक) प्रकृत समयमां आडाश प्रदेशने अवगाढी रहेल ७५ प्रकृत समय से आकाश प्रदेश को अवगाहनकर ठहरा हुआ जाव a living being localised in space in the time present ठा० २, २, भग० २६, ४,—खेत्तोगाढ त्रि० (—खेत्तावगाढ) प्रकृत वस्तुनी छेड पासैना आडाश प्रदेशने अवगाढी रहेल प्रकृत वस्तु के बिल्कुल नजदीक के आकाश प्रदेश को रोकै हुए localised in space immediately next to the thing present “खो अणतरखेत्तो-गाढे पोमगले अत्तमायाण् आहारैति ” भग० ६, १०,—गोटिय त्रि० (—अन्थित ) आतर विना ओड गाडनी साथे भीछ, भीछनी साथे त्रीछ ओम सुथेस विना अन्नर के पान पास लगी हुई गोटो से गुवा हुआ knotted without intervals, closely interwoven भग० ५, ६,—निग्गाण त्रि० (—निर्गत ) आतर

विना—युगपत्—ओडस समये नीकणेल युगपत्—एकसाथ निकले हुए started simultaneously. भग० १४, १,—पच्छाकड त्रि० (—पश्चात्कृत—अनन्तर अव्यवधानेन यः पश्चात्कृतः स ) वर्तमाननी जेडेने आगये समय, वर्तमानथी पड़ेलाने समय वर्तमान से मिला हुआ पहिला समय the immediate past सू० प० ८,—पज्जसग. पु० (—पर्याप्तक—न विद्यते पर्याप्तत्वेऽन्तर येषां तेऽनन्तरा, ते च ते पर्याप्तकाश्चेत्यनन्तर पर्याप्तकाः ) पड़ेला समयने पर्याप्त; पर्याप्त थवाने प्रथम समय पहिले समय के पर्याप्त जीव; पर्याप्त होने का पहिला समय the first Samaya of becoming Paryāpta or fully developed in senses etc ठा० १०, भग० २६, ८, ३३, ८,—पुरक्खड त्रि० (—पुरस्कृत ) वर्तमाननी जेडेने पाछेला समय, भीजे समय वर्तमान समय से लगा हुआ दूसरा समय ( आगे का समय ) the immediate future “अणतरपुरक्खडे कालसमयंसि ” सू० प० ८,—बंध पु० (—बन्ध) आतरा विनाते बंध अन्तर रहित बंध uninterrupted bondage भग० २०, ७,—सिद्ध पु० (—सिद्ध) प्रकृत समयमा सिद्ध थयेस होय ते, प्रथम समयना सिद्ध. प्रकृत समय मे जो सिद्ध हुआ हो, प्रथम समय का सिद्ध the Siddha of the immediate past ठा० २, १, भग० २४, ४; नदी० २०, पन्न० १,

अणतरहिअ-य त्रि० (—अनन्तरहित ) स-यित, ७१ संहित; सचित्त, सजाव Living; containing life जे भिक्खु माउपगामस्स मेहुणवहियाण् अणतरहियाण् पुढवीण् शिमी-यावेजा” निर्गा० ७, १६, १३, ६, १४, ३२; १६, २६, दग्गा० २, १५, १६ नम० २१;

**अरांतविजय पुं०** (अनन्तविजय) भरतक्षेत्र-  
मा आवती योवीसीमा थनार २४ मा  
तीर्थकर भरतक्षेत्र की आगामी चौवीसी में  
होने वाले २४ वें तीर्थकर The would-be  
twenty-fourth Tirthankara in  
the coming Chovisi in Bharata  
Ksetra सम० प० २४१; (२) जंबूद्वीपना  
ध्रिगत क्षेत्रमा आवती उत्सर्पिणीमां थनार  
२० मा तीर्थकर जंबूद्वीप के इरवतक्षेत्र में  
आगामी उत्सर्पिणी में होने वाले बीसवें तीर्थकर  
the would-be twentieth Tir-  
thankara in the coming Utsar-  
pinī in the Iravata Ksetra  
of Jambūdvīpa प्रव० २६८, सम०  
प० २४१, २४३,

**अरांतवि-वी-रिय पुं०** (अनन्तवीर्य) भरत  
क्षेत्रमा आवती योवीसीमा त्रेवीशमा तीर्थ-  
करनु नाम भरतक्षेत्र की आगामी चौवीसी के  
२३ वे तीर्थकर का नाम Name of the  
23rd Tirthankara of Bharata  
Ksetra in the coming Chovisi  
प्रव० २६७,

**अरांतसेण पुं०** (अनन्तसेन) गरुड अवासर्पि-  
णीमा ४ था कुलगर गत अवासर्पिणी के चौथे  
कुलगर The fourth Kulagara of  
the past Avasarpinī सम० प० २२६,  
(२) लद्दलपुर निवासी नाग गाथापतिनी वार्या  
सुलसानो पुत्र, अरीरीते वसुदेव अने देवकीनो  
पुत्र, के ल्हे २० वर्ष दीक्षा पाणी, १४ पूर्व-  
नो अभ्यास कियो अने शत्रुज्य उपर सिद्ध  
थया महलपुर निवासी नाग गाथापति की  
भार्या सुलसा का पुत्र, वास्तव में वसुदेव  
देवकी का पुत्र, जिसने २० वर्षों तक दीक्षा  
पाली और १४ पूर्व का अभ्यासकर शत्रुज्य से  
मोक्ष को गया the son of Sulasā  
the wife of Nāga Gāthapati, a

resident of Bhaddalapura, as a  
matter of fact the son of Vasu-  
deva and Devakī He observ-  
ed asceticism for twenty years,  
studied the fourteen Pūvas  
and obtained salvation on the  
Śatruñjaya अन्त० ३, २, (३) अंत-  
गडना श्रील वर्गना पील अथयननु नाम  
अन्तगड के तीसरे वर्ग के दूसरे अव्याय का  
नाम the second chapter of the  
third section of the Antagada  
Sūtra अन्त० ३, २,

**अरांतसो अ०** (अनन्तसम्) अनन्त वार  
अनन्त-अनेक वार Endless times,  
times without number सूय० १,  
१, १, २७, १, २, १, ६, भक्त० ७६,

**अरांतहा अ०** (अनन्तधा) अनन्त प्रकार  
अनन्त प्रकार In infinite ways भग०  
१२, ४,

**अरांतारांत त्रि०** (अनन्तानन्त) अनन्त  
गुणया अनन्त, अनन्तानन्त अनन्तानन्त;  
अनन्त से गुणा अनन्त Infinite multi-  
plied by infinite भग० १४, २,

**अरांतारुवांधि पुं०** (अनन्तारुवांधिन्) अनन्त  
झणसुधी आत्माने ससाग्साथे अन-  
गंध-ससर्ग डगवनार डपायनी यार योडडी-  
भानी प्रथम योडडी अनन्त काल तक आत्मा  
को सत्तार में भटकाने वाले कपाय की चार  
चौकडियों में से पहिली चौकडी The first  
of the fourfold division of  
Kasāyas, eternally binding the  
soul to worldly existence विने०  
१२८७, भग० ६, ३१ उत्त० २६ १;  
सम० १६, पञ्च० १४,—कोह. पुं०  
(-क्रोध) अनन्तव्यपथित अभ्यायनार  
द्विध, के ल्हे उत्पन्न थया पथी पतिनी शत्रुनी

पेडे भरलु सुधी पणु लुसाय नहि अने सम-  
दितने अटडावे ते डोध. अनन्त भव पर्यंत  
संसार में भटकाने वाला क्रोध, जो उत्पन्न  
होने के बाद मरण तक न छूटे और जिसके  
कारण सम्यक्त्व उत्पन्न न हो सके. anger  
which causes one to wander in  
worldly existence for eternity,  
the influence of which can  
neither be obliterated nor  
effaced like a cleft in a moun-  
tain, and which precludes the  
possibility of Samyaktva ( true  
religion ). ठा० ४, १;

अरांतिय त्रि० ( अनन्तिक ) पासै नहि; नलुड  
नहि ते असमीप; दूर Not near, not  
in the vicinity. भग० ५, ४; (२) त्रि०  
अत वगरनु; छेडा वगरनु, अनंत अंत रहित;  
छोर रहित, अनन्त. endless; eternal  
“ नरस्स लुदस्स न तेहि किच्चि, इच्छा हु  
आगाससमा अरांतिया ” उक्त० ६, ४८;

अरांदमारा व० कृ० त्रि० ( अनन्दत् ) सुभन  
भोगवतो सुख का उपभोग न करता हुआ  
Not enjoying happiness तडु०

अरांध. त्रि० ( अनन्ध ) आधणो नहि ते;  
दृष्यतो जो अन्वा न हो वह. Not blind,  
seeing पंचा० ११, ११;

अरांविल त्रि० ( अनम्ल ) स्वादे डेर थयेल  
नहि, जेभा रस यत्तित न थये। डोय-आहुं  
न पडि गयुं डोय ते जिसका स्वाद न  
किगदा हो That which has not  
become sour, or lost its taste  
through decomposition आया० २,  
१, ७, ४१, निरसो० १७, ३०;

अरांसुवाह. पु० ( अनश्रुपातिन् ) भार्गवो  
परिश्रम-थ-ड लाये। डोय तो पणु आसु न  
पेरनर; घोडा वगेरे धक जाने पर भी श्रॉत्

न बहाने वाला, घोडा वगैरह. (One)  
not shedding tears though  
fatigued by journey, e. g. a  
horse etc. “ जं अचंडपाहि अदंडपाहि  
अरांसुवाह ” जं० प०

अराकभिरण त्रि० ( \*अनासाभिन्न ) नाथ्या  
वगरतो; नाथेल नहि. विना नया हुआ. With  
the nose unbored or unperfo-  
rated. “ अणिलंच्छिण्हिं अराकभिरणोहिं  
गोणेहि तसपाणविवज्जिण्हिं वित्तेहिं वित्ति  
कप्पेमाणा विहरंति ” भग० ८, ५;

अराकमित्ता. सं० कृ० अ० ( अनाक्रम्य )  
आक्रमणु डर्या विना; आक्रमणु न डरीने  
विना आक्रमण किये Without attack-  
ing, without having attacked.  
भग० १४, ३;

अराकख पुं० ( अनक्ष ) म्हेच्छ देशविशेष  
म्लेच्छ देश. Name of a country of  
heathens. पन्न० १; परह० १, १, ( २ )  
त्रि० म्हेच्छ देशभा रहेनार मनुष्य म्लेच्छ देश  
में रहने वाला मनुष्य. people living in  
Mlechchha Desā पन्न० १; परह १, १;

अराकख पुं० ( ईर्ष्यायां रोपे च ) धर्ष्या-अदे-  
पार्थ ईर्ष्या Jealousy ( २ ) रोप. क्रोध.  
anger सु० च० ५, ३७; ६, ५६;

अराकखर न० ( अनक्षर ) अनक्षर श्रुत  
अनक्षर ( अक्षर रहित ) श्रुत Illiterate.  
विशे० ५०१;—सुय. न० ( -श्रुत ) लुओ  
उपरो शब्द देखा ऊपर का शब्द. vide  
above. नंदो० ३८,

अराकखेअ त्रि० ( अनाख्येय ) कथन डरवा  
योग्य नहि कथन करने के अयोग्य. Not  
worth describing. विशे० २६४७,

अराग न ( अराक ) ऋणु; डरवा; देखें.  
कर्ज Debt. सूय० १, ३, २, ८;

अरागाढ. न० ( अरागाढ ) प्रथम डारणु नहि.



प्रबल कारण नहीं। A cause or reason which is not cogent or urgent. गच्छा० ११६;

अरण्यगार पु० (अनगर-अनागर-नविद्यते आगारादिकं द्रव्यजात यस्यासौ) त्यागी, गृह वगैरना-साधु-महात्मा त्यागी, साधु A houseless monk, an ascetic who has abandoned all possessions. श्रौव० १७, पञ्च० १५, ३६, विवा० १; निसी० २०, ११, उत्त० १, १८, २, १४; आया० १, १, २, १५; १, ६, २, १८३; ठा० २, १, दस० ४, १८; सू० प० १, जं० प० २, ३३; नंदी० ६; पि० नि० २६३; भग० १, १, ६, २, ५; ७, १०; नाया० १, ५, १४; १६; १६;—धम्म पु० (-धर्म) मुनिधर्म, साधुतो धर्म; सर्व विरति आरित्ररूप यतिधर्म, अंति, मुक्ति आदि दश प्रकारतो यतिधर्म मुनियों का धर्म, सर्व विरति चरित्ररूप यतिधर्म duties of an ascetic, ten in number e g Khanti etc “अरण्यगारधम्मो ताव इह खलु सन्वओ सन्वयाए सुंहे भवित्ता” भग० १६, ६,—मग्ग पु० (-मार्ग) उत्तराध्ययन सूत्रना ३५ भा अध्ययननु नाम, जेभां अणुगार-साधुतो मार्ग दर्शावामां आये छे ते, (उत्तराध्ययननु) ३५भु अध्ययन. उत्तराध्ययन सूत्र के ३५ वे अध्याय का नाम, जिसमें अनगर-साधु के मार्ग का निरूपण है name of the thirty-fifth chapter of Uttarādhyayana Sūtra, expounding the duties of a Sādhu. उत्त० ३५, २१,—महेसि पु० (-महर्षि) साधुना गुण युक्त महार्षि-महात्मा साधुत्व के गुणों से युक्त महर्षि-महात्मा. a great sage having the qualities of a Sādhu or an ascetic सम०—चाद.

पुं० (-वादिन्) साधुना गुणरहित होना छता पीताने साधु तरीके ओणअ वनार; वेध मात्र धरनार शक्य दि साधुत्व के गुणों से राहत साधु, केवल वेधमात्र रखने वाला साधु a hypocritical saint, an ascetic in name and dress “अरण्यगारवाइणो पुड-विहिंसगा निग्गुणा अगारिसमा” आया० नि० १, १, २, १००,—विणय न० (-विनय) अणुगार-साधुतो विनय-चारित्रधर्म. अनगर-साधु का विनय-चारित्रधर्म. right belief, right conduct etc. on the part of an ascetic. नाया० ५;—सहस्स न० (-सहस्र) हजार अणुगार-साधुओ हजार साधु a thousand houseless saints कण्प० ७, २२७;—सामाइय त्रि० (-सामायिक) सर्व विरति रूप सामायिक; साधुतो धर्म-अथार साधुओं का एक प्रकार का आचार, सर्व विरतिरूप सामायिक. the conduct of an ascetic e g self-contemplation. श्रौव०—सीह. पुं० (-सिंह) मुनिभां सिंह समान. मुनियों में सिंह के समान lit a lion of a Sādhu, the most advanced among the Sādhus “एवं धुणित्ताण स रायसीहो, अणुगारसीह परमाह भत्तिए” उत्त० २०, ५८,—सुय न० (-श्रुत) सूयगडंगनुं २१भुं अणुगारश्रुतनाभनु अध्ययन सूत्रकृताङ्ग का २१ वा अध्ययन. name of the 21st chapter of Sūtra-Kritānga सम० २३;

अरण्यगार. पुं० (अनाकार) अणुगार-दर्शनतो-उपयोग, जेभा अकार २५ष्ट प्रतीत न थाय ते उपयोग दर्शन का उपयोग, जिसमें आकार स्पष्ट न जान पड़े यह उपयोग. Vision without definite perception or form. क० प० १, २६;—

पपाउग्गा स्त्री० ( -प्रायोग्या ) अध आश्री  
अनाकार उपयोगने योग्य प्रकृति वन्व का  
आश्रयकर अनाकार उपयोग के योग्य प्रकृति  
Karmic nature of the above  
kind, in relation to bondage  
क० प० १, ६६;

अणगारिय. त्रि० ( अनगारिक-अनगारः  
साधुस्तस्येडम् ) साधु संगधी अनुष्ठान वगेरे  
साधु सम्बन्धी अनुष्ठान-कर्मकारण्ड वगैरह.  
Religious practice etc concern-  
ing or relating to a Sādhu ओव०  
२७, उक्त० १०, २६, ज० प० २, ३०,

अणगारिया स्त्री० ( अनगारिता ) साधुपण्य,  
साधुवृत्ति, साधुने भाव साधुपना, साधुवृत्ति.  
Asceticism "अणगारियं पव्वणुजा"  
भग० २, १; ६, ३१, ११, ११, १५, १;  
नाया० १, विवा० १, पन्न० २०,

अणगिलाइअ त्रि० ( अनग्लानिक-नग्लानि-  
रग्लानिः, न अग्लानिरनग्लानिस्तत्र  
भवोऽनग्लानिक ) अग्लानि आहार विना  
अग्लानि थाय अग्लानि आहार लेयुं ते. जब  
आहार विना शरीर में ग्लानि-अशक्ति-निर्वलता  
हो तब आहार लेना Taking food  
only when there is discomfort  
or debility arising from not  
taking it. परह० २, १,

अणग्घ. त्रि० ( अनर्घ्य ) अमूल्य; अलु डिम्भती  
अमूल्य, बहुत कीमती Invaluable,  
precious. सत्या० ४६, ज० प० २, ५४,

अणञ्चंतिय पु० ( अनात्यान्तिक ) भेद भाग-  
नारते मुझीने लागी न लयुं, डिनु छेवट सुधी  
भेद आपनी ते सहायता मागने वाले को  
छोडकर न भागना, किन्तु अन्त तक सहायता  
देना Helping a man to the last  
without deserting him at any  
time विशेष० १०२८,

अणञ्चाविय. न० ( अन्नचित्त ) पडिलेहण  
इरतां पोताने तथा वस्त्रने हलाववा-नयाववां  
नहि ते, पडिलेहणने ओड गुण.  
पडिलेहण ( प्रतिलेखन ) करते समय  
शरीर को तथा वस्त्रों को न हिलाना-  
न नचाना; पडिलेहण ( प्रतिलेखन )  
का एक गुण Examining garments  
without moving them or  
one's own body, a kind of merit  
in Paḍilehana " वरथे अण्णाणम्मि  
य चउविहं अणञ्चावियं" ठा० ६, १, उक्त०  
२६, २५;

अणञ्चासादणया स्त्री० ( अनत्याशातना )  
अण्णे 'अणञ्चासायणा' शब्द देखो "अणञ्चा-  
सायणा" शब्द Vide "अणञ्चासायणा"  
भग० २५, ७,

अणञ्चासादणा स्त्री० ( अनत्याशातना )  
अण्णे 'अणञ्चासायणा' शब्द देखो "अणञ्चा-  
सायणा" शब्द Vide "अणञ्चासायणा"  
भग० २५, ७,

अणञ्चासायणा. स्त्री० ( अनत्याशातना-अतीव  
सम्यक्त्वादिलाभ शातयति विनाशयतीत्यत्या-  
शातना न तथा अनत्याशातना ) गुण  
आदिनी आशातना न इरपी ते गुरु आदि  
की आशातना न करना Not showing  
disrespect or irreverence to-  
wards a preceptor etc उक्त० २६,  
४, ओव० २०,—सोल पु० ( -शील )  
अति आशातना न इरना अत्यन्त  
आशातना न करने वाला one not  
given to show disrespect to-  
wards a preceptor etc. उक्त०  
२६, ४,

अणज्ज त्रि० ( अन्याय ) अन्याय युक्त;  
न्याययुक्त नहि ते अन्याय सहित. Unjust.  
परह० १, १;

अणज्ज. त्रि० (अनार्य्य-आराघात सर्वहेयधेम-  
भ्य इत्यार्य्य न आर्य्यमनार्य्यम् ) अनार्य्य;  
भेदश्च, कूर अनार्य्य; म्लेच्छ, कूर A bar-  
barian; a cruel man सु० च० १२,  
६६, परह० १, ४, ( २ ) न० ५५५ कर्म,  
अनार्य्य अनुष्ठान पाप कर्म, बुरा काम an  
evil deed परह० १, २,—धम्म त्रि०  
(—धर्म-अनार्य्याणामिव धर्मः स्वभावो येषा  
ते तथा ) अनार्य्यस्वभाववाणो अनार्य्य  
स्वभाव वाला of evil disposition  
( २ ) धर्मने नामे अनार्य्य कर्म करनार  
धर्म के नाम से अनार्य्य कर्म करने वाला one  
who does evil actions in the  
name of religion सूय० १, ७,  
६,—भाव. पु० (—भाव ) क्रोधादि दुर्गुण-  
वाणो भाणुस क्रोधादि दुर्गुण वाला मनुष्य  
a man full of vices such as  
anger etc ठा० ४, २,

अणज्जभवसाय पुं० ( अनध्यवसाय ) निर्वि-  
कल्प ज्ञान, विशेषरहित सामान्य ज्ञान  
निर्विकल्प ज्ञान, भेदाभेदरहित सामान्य ज्ञान  
General knowledge without  
perception of accurate distinc-  
tions विशे० ६२,

अणज्जभोववण त्रि० ( अनधुपपन्न )  
भूर्छा-आसक्तिरथी रहित विषयासक्ति-  
मूर्च्छा से रहित Free from in-  
fatuation or attachment to  
worldly objects परह० २, १, भग०  
१४, ७,

अणद्व त्रि० ( आणद्व ) नाश पभेल नष्ट,  
जिसका नाश हो गया हो वह Destroyed  
“ अणद्वकिन्ती पव्वइण् ” उक्त० १८, ४६,

अणद्व. त्रि० ( अनर्थ ) अर्थरहित. निरर्थक.  
निष्प्रस; निष्प्रयोजन अर्थ-प्रयोजन रहित.

Meaningless, useless प्रव० ८२७,  
भग० २, ५, १५, १, राय० २२५, निर्ना०  
१, २०, १८, १, पिं० नि० १०३, दस० ४,  
( २ ) डानी, नुकसानी हानि, नुकसान  
loss नाया० १४, परह० १, २,  
—कारण त्रि० (—कारक ) अनर्थकारी;  
पुत्रपार्थनी धात करनार अनर्थ करने वाला;  
पुरुषार्थ का नाश करने वाला harmful;  
pernicious परह० १, २,—किरिया  
छां० (—क्रिया ) वगरप्रये न्ते आण्णादि क्रिया  
करनी ते निरर्थक आरम्भादि क्रिया करना do-  
ing actions involving killing etc.  
without any necessity प्रव० ८२५,  
अणद्वग पु० ( अनर्थक ) २८ भो गैणु परि-  
अड अट्टावीसवो गौण परिग्रह The  
twenty-eighth Gauna Pari-  
graha or worldly possession  
परह० २, १,

अणद्वमिय त्रि० ( अगस्तमित ) नडी आथ-  
भेदो (अर्थ) बिना अस्त हुआ (सूर्य) Not  
yet set e g the sun वेय० ५, ६,—  
संकप्प त्रि० (—सङ्कल्प ) द्वियस आथम्या  
पहेला न्ते आवाते संकल्प छे ते दिन  
अस्त होने के पहिले जिसका भोजन करने का  
निमय हो वह having a vow to take  
food before sun-set वेय० ५, ६,

अणद्वदंड पु० ( अनर्थदण्ड ) अर्थ-स्वार्थ विना  
आत्माने दण्डो ते, निष्कण्ण-निष्प्रये न्त  
पाप करवा ते, पीणु क्रियास्थानक विना प्रयो-  
जन पाप करना, दूसरा क्रियास्थानक Pur-  
poseless sin ठा० २, १, ५, २, मम०  
२, १३,—वत्तिअ न० (—प्रत्ययिक ) वगर  
प्रये न्ते मात्र कीडा के व्यसनथी अणद्विसादि  
पापस्थानक सेवतु ते, पीणु क्रियास्थानक विना  
प्रयोजन केवल क्रोडाया व्यसन से जीवहिनादि  
पाप कृत्य करना, दूसरा क्रियास्थानक the

second Kriyāsthānaka viz. incurring sin without any purpose, out of mere humour. “ अहावरे दोचे दंडसमादाये अण्डादंडवतिष्ति आहिज्जइ ” सूय० २, २, ८,—वेरमण. न० (—विरमण) अनर्थ दंड से निवृत्त होना, श्रावक का आठवाँ व्रत the eighth vow of a Jaina; abstention from purposeless sin उवा० १, ५२;

अण्डावांधिय. त्रि० ( अनर्थवन्धिक—अर्थेन प्रयोजनेन विना पक्षमध्ये वारद्वयं त्रयं वा लम्पनिकायाः कम्बाना बन्धन यः करोति सोऽनर्थवन्धिकः ) विना प्रयोजने पञ्चादीयां भ्ये त्रयु वर पात्र वगेरेने अंध आपनार ( साधु साध्वी ) बेकाम दो तीन वार पखवाड़े मे पात्रों को बन्ध देने वाला ( साधु साध्वा ) ( One, e. g. an ascetic, male or female ) who unnecessarily fastens together vessels etc twice or thrice in a fortnight कण्प० ६, ५३;

अण्डण न० ( अनटन ) अटन—भूमणु न इरुते न भटकना Not wandering or moving from place to place. पंचा० १३, ३४,

अण्डद्व. त्रि० ( अनर्द्ध—न विद्यते अर्द्धं येषामित्यनर्द्धम् ) जेनुं अर्ध न थाय अेवुं; इटडा न थध शके अेवुं जिसका आधा हिस्सा न हो सके. Incapable of being divided into halves; impartible. भग० ५, ५, २०, ५; २५, ४;

अण्डिह. त्रि० ( अनद्धि ) ऋद्धिथी रहित ऋद्धिसे रहित Devoid of prosperity. भग० ८, १; ( ० ) त्री० ऋद्धिने अभाव

ऋद्धि का अभाव. absence of prosperity. भग० ८, १;

अणुणुणविय. सं० कृ० अ० ( अननुज्ञाप्य ) २०१ वगर; अनुज्ञा सिवाय. विना आज्ञा के; विना अनुमति के Without permission. आया० २, १, ५, २८;

अणुतावित्ता. सं० कृ० अ० ( अननुताप्य ). तपाय्या विना विना तपाये Without heating; without having heated सूय० २, ४, १०;

अणुनाय त्रि० ( अननुज्ञात ) अज्ञा नहि आपेक्ष जिसे आज्ञा न दी हो वह. Not ordered प्रव० १२६, ६६१, सु०च० ७, ११;

अणुपालण न० ( अननुपालन ) पालन न इरुनुं न पालना Act of not observing or maintaining प्रव० २८६;

अणुपालणया स्त्री० (—अननुपालनता—अननुपालन ) पालन न इरुनुं ते; पाणुं—वर्तुं नहि ते पालन नहीं करना, वर्तन नहीं करना. Non-observance. “ पोसहोववासस्त सम्ममणुपालणया ” उवा० १, ५५;

अणुचाइ. त्रि० ( अननुपातिन् ) सिद्धांतने अनुसरुं नहि; सिद्धांतथी विद्ध. सिद्धान्त के प्रतिकूल Not conforming to scriptural texts. प्रव० १२२;

अणुचाय पुं० ( अननुपात ) न अ. ववुं ते. नहीं आना. Not coming पंचा० ७, ११;

अणुसय पु० ( अननुशय ) गर्दने अलाव गवे का अभाव Absence of pride. ( २ ) पश्चात्तापने अलाव. पश्चात्ताप का अभाव. absence of repentance. अणुजो० १३०;

अणुसासणा स्त्री० (—अननुशासना—अननुशासन ) शिक्षाने अलाव शिक्षा का अभाव. Absence of admonition; absence of instruction. नाया० ११;

अरण्य त्रि० (अनन्य) मोक्ष मार्गधी सिद्ध नहि  
 ते, ज्ञानादि मोक्ष मार्ग से अभिन्न Knowledge etc falling with the path  
 leading to salvation “ अरण्यं चरमाणे से ण छरणे ण छणावण् ” आया०  
 १, २, २, ११४, विशेषे० ३४, १५६,—आराम  
 त्रि० (—आराम—मोक्षमार्गादन्यत् न रमत  
 इति ) मोक्ष मार्ग सिवाय भीजे नहि  
 रमनार मुक्ति मार्ग के अतिरिक्त आनन्द न  
 मानने वाला (one) who finds delight  
 in nothing except the path  
 that leads to final bliss आया० १,  
 २, ६, १०१,—चेष्ट त्रि० (—चेष्ट ) अन्य-  
 भीष्ट येषा—प्रवृत्तिवगरेते अन्य प्रवृत्तिहीन  
 ( one ) having a single activity  
 or business. पचा० ४, १६;—दंशि.  
 त्रि० (—दर्शिन ) यथायोग्य पदार्थ ज्ञेनार,  
 अन्यथा ज्ञेनार नहि ते पदार्थ को यथार्थ  
 रीति से ( अन्यथा रीति से नहीं ) देखने वाला—  
 जानने वाला. looking at a thing  
 from the right point of view.  
 आया० १, २, ६, १०१,—नेय त्रि०  
 (—नेय ) अन्यथी—भीन्नथी न दोरवाय तेवे,  
 स्वयंभुद्ध स्वयंभुद्ध, दूसरे का अनुसरण न  
 करने वाला self-enlightened “येतारो  
 अनेसिं अरण्यनेया, बुद्धा हु ते अंतकडा हवंति”  
 ( नच स्वयंभुद्धत्वादन्येन नीयन्ते तस्वावबोधं  
 कार्यन्त इत्यनन्यनेया. ) सूय० १, १२, १६,—  
 परम पुं० (—परम—न विद्यतेऽन्यः परमः प्रधानो  
 यस्मादित्यनन्यपरम. ) संयम, आरिद्र. ममय,  
 चारित्र, character, self-restraint  
 “अरण्यपरम याशी, यो पमाए कयाह  
 वि” आया० १, ३, ३, ११६,—मण  
 त्रि० ( —मनस्—न विद्यते अन्यद् धर्म-  
 ध्यान लक्षणान्मनो यस्य सोऽनन्यमना. )  
 ओडाश्रयितवाणे. एकाग्र चित्त वाला.

with concentrated mind ओव०  
 अरण्यत्त न० (अनन्यत्व ) अनन्यपणुं,  
 तन्मयता अनन्यपना, तन्मयता Identity.  
 विशेषे० ६४७,

अरण्यहय पुं० (अनाश्रव ) आश्रवनिरोध,  
 नवां इर्भने आवतां अटडाववां ते आश्रव का  
 निरोध; नवीन कर्मों का आश्रव रोकना.  
 Stoppage of the influx of  
 Karma भग० २, ५, परह० १, १,  
 —कर त्रि० (—कर ) आश्रवनिरोध  
 इरनार, नवा इर्भने आवतां अटडावनार  
 आश्रव का निरोध करने वाला, नये कर्मों  
 का आश्रव रोकने वाला stopping the  
 influx of Karma भग० २५, ७,

अरण्यहयत्त न० (अनहस्कत्व—न विद्यते अह-  
 पापं यस्मिन् तत् अनहस्कं तस्य भायोऽजं-  
 हस्कत्वम् ) पापरहितपणु, आश्रवने अ-  
 भाव पाप रहितपना, आश्रव का अभाव  
 Absence of sin, freedom from  
 sin उक्त० २६, २६,

अणतिक्रमणिज्ज त्रि० (अनतिक्रमणीय )  
 अतिक्रमणु इरवा योग्य नहि, उल्लंघना योग्य  
 नहि न उलाघने योग्य Improper to  
 be transgressed ओव० ३८, भग० २,  
 ५,—द्वयस्व त्रि० (—वचन—अनतिक्रमणीय  
 वचन येषां ते ) जेना वचन उल्लंघन इरवा  
 योग्य नथी ते, माता, पिता, गुरु वगैरे जिस्का  
 वचन उल्लंघन करने योग्य न हो, जैसे माता,  
 पिता, गुरु आदि whose words cannot  
 be transgressed, e g parents  
 etc “अस्मापिउण अणइक्कमणिज्जवयणा”  
 ओव० ३८;

अणतिविलंबियत्त न० (अनतिविलम्बितत्व)  
 अतिविलम्बित नो लुते, वचनना उप  
 अतिशयमानो ओड विना विषव किये  
 बोलना, वचन के इश्र अतिशयो ने ने एड

Speech without too much halting; one of the thirty-five Ati-sayas of speech. ओव०

अणत्त. त्रि० ( ऋणात् ) ऋणी; इरुदर. ऋणी. ( One ) sunk in debt, a debtor. प्रव० १६८;

अणत्त. त्रि० ( अनात्र-आ अभिविधिना त्रायन्ते दुःखात्संरुन्तीति आत्रा, न आत्रा अनात्राः ) दुःखी न अयावतार दुःख से न बचाने वाला. Not saving from misery. “ नेरइयाणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला अणत्ता पोग्गला? नो अत्ता पोग्गला अणत्ता पोग्गला ” भग० १४, ६;

अणत्तद्विय. त्रि० ( अनात्मार्थिक ) पोतानुं इरेव नहि ते; अस्वीकारेणुं. बिना अपनाया हुआ. Not accepted as one's own. आया० २, १, १, ८, ( २ ) स्वार्थी नहि ते, परमार्थी परमार्थी, जो स्वार्थी न हो unselfish. परह० २, १;

अणत्तपरण त्रि० ( अनात्मप्रज्ञ-न विद्यते आत्मनो हिताय प्रज्ञा येषां ते ) जेनी बुद्धि आत्महित इरवामा नथी ते; व्यर्थ बुद्धि-वाणे। जित्ती बुद्धि आत्महित करने में तत्पर न हो. ( One ) whose intelligence is not devoted to spiritual progress: ( one ) of futile intellect “ एणे अवसीयमाणे अणत्तपरणे ” आया० १, ६, १, १७२,

अणत्तव. त्रि० ( अनात्मवत् ) इपायथी युद्ध कपाय वाला. Possessed of moral filth in the form of anger, deceit etc ठ० ६,

अणत्थ अ० ( अन्यत्र ) भीजे स्थदे; भीजे देडाणे. दूसरे स्थान पर. At another place; elsewhere पञ्च० ११,—नय

त्रि० ( -गत ) भीजे स्थदे गयेक. दूसरे स्थान पर गया हुआ. gone to another place भग० ७, ६;

अणत्थ पुं० ( अनर्थ ) अनर्थ हेतु; अेडवी-सभो गौण परिग्रह अनर्थ हेतु; इकवीसवो गौण परिग्रह. A material possession leading to misfortune; the twenty-first Gauna Pari-graha परह० १, ५; पंचा० ७, ४१; ( २ ) त्रि० अर्थरहित; निप्रयोजन वे मतलब बिना प्रयोजन. purposeless. नाया० ५, ८, १६, १७, —दंड. पुं० ( -दण्ड ) प्रयोजन बिना इर्मयंधनमां पडवुं ते; बिना मतलबे इर्मथी दंडावुं ते. बिना प्रयोजन कर्मबंध करना या कर्मफल से दंडित होना. taking in Karma without purpose. ओव०—दंडवत्त. पुं० ( -दण्डवत्त ) बिना प्रयोजने आत्माने दंडावा न देवे ते; श्रावडनु आडभुं मत श्रावक का ८ वों मत, जिसमे वे काम आत्मा को नहीं दंडाते. the eighth vow of a Jaina layman viz. guarding the soul against unnecessary evils ( i e. evil Karmas ). प्रव० २८३; —फलद. त्रि० ( -फलद ) अनर्थकारी इध आपनार अनर्थकारी फल देने वाला. productive of a disastrous fruit or result. पंचा० ३, ३७;—चाय. पुं० ( -चाय ) निप्रयोजन भोडवु ते बिना प्रयोजन बोलना speaking without any purpose परह० २, २;

अणत्थंतर न० ( अनर्थान्तर-न विद्यतेऽर्थान्तरं यस्य तत् ) अेडोर अर्थवाणे शब्द एकही अर्थ वाला शब्द. A word having only one meaning. विशेष० २२०२; अणत्थग त्रि० ( अनर्थक ) निप्रयोजन वे

काम. Causeless; purposeless  
पंचा० ६, ३६;

अणस्थमियसंकल्प. त्रि० ( अनस्तमित-  
सङ्कल्प ) जेते दिवसमां आवानो संकल्प  
छे ते. दिवस मे भोजन करने का जिसका  
संकल्प हो ( One ) who has vowed  
to take food during daytime  
only वेय० ५, ६,

अणस्थय. त्रि० ( अनर्थक ) निरर्थक. निरर्थक,  
व्यर्थ Useless, fruitless विशेष० २२६,

अणपरिणय पु० ( अणपशिक-अप्रज्ञसिक )  
कुतूहलप्रिय व्यंतर देवतानी अेक जत;  
व्यंतरनी सोण जतमांती नवमी जत कौतू-  
हल प्रिय व्यंतर देवता की एक जाति, व्यंतरो  
की सोलह जातियों में से नवीं जाति  
An order of celestial beings  
( the ninth of the sixteen  
orders ) indulging in pranks  
भग० १०, २, पञ्च० २, परह० १, ४, ओव०  
२४;

अणपुराण. न० ( अन्नपुराण ) अन्न आपतां  
पुण्य-शुभ कर्म उपार्जन थाय ते अन्न दान  
से उत्पन्न होने वाला पुण्य. Good Karma  
earned by giving food ठा० ६, १,

अणप्यगम्य. त्रि० ( अनर्प्यग्रन्थ ) आध्यात्मिक  
ग्रंथनी माइक जेते तेने आपवा येअ नदि  
ते, अर्पणु करवा अयोग्य ज्ञानादि आध्यात्मिक  
ग्रंथ के समान प्रत्येक को न देने योग्य ज्ञान आदि  
Spiritual knowledge etc which  
cannot be like a sacred book  
cannot be transferred from  
hand to hand ओव०

अणप्यगम्य पु० ( अनल्पग्रन्थ ) अहुसूत्री  
बहुसूत्री, बहुत से सूत्रों वाला One well-  
versed in many Sūtras ओव०

अणप्यगम्य त्रि० ( अनात्मग्रन्थ-अविद्यमान

आत्मनः सम्बन्धी ग्रन्थो हिरण्यादिर्यस्य स.)  
परिग्रह रहित; अपरिग्रही परिग्रह रहित;  
अपरिग्रही. Having no worldly  
possessions ओव०

अणपिपय न० ( अनर्पित ) अविशेषित; विशेषण  
विशिष्ट न करेक, अविशिष्ट, सामान्य विशेष-  
ता रहित, सामान्य, साधारण Possessed  
of common attributes; similar,  
alike ठा० १०; विशेष० २१५३,—णय  
पु० ( -नय-अनर्पितमविशेषितं सामान्य  
मुच्यते, तद्वादी यो नयः सः ) सर्व वस्तु सा-  
मान्य छे अेभ विशेष-निरपेक्ष सामान्य ग्राही  
नयविशेष सम्पूर्ण वस्तुओं को सामान्य मानने  
वाला-सामान्यग्राही नयविशेष a stand-  
point which regards all things  
alike because they possess  
some common attributes विशेष०  
२१५३,

अणभुद्विय त्रि० ( अनभ्युत्थित ) धर्म  
करवाने तैयार न थयेक धर्म करने को जो  
उद्यत न हुआ हो Shaking from  
duty नाया० ५,

अणभुवगम पु० ( अनभ्युपगम ) अस्वीकार  
अस्वीकार Non-acceptance क०  
प० ५, २८,

अणभुवगय त्रि० ( अनभ्युपगत ) श्रुत  
सपदाने न पामेक, आत्माने न जलुनार  
आत्मा को न जानने वाला Not initiated  
into the nature of the soul  
विशेष० १४४७,

अणभिश्रोग. त्रि० ( अनभियोग ) अर्थात्  
करवा योग्य नदि ते, दुष्टो करवा योग्य नदि  
ते आक्रमण करने के अयोग्य; चढाई के  
अयोग्य. Unworthy of attack  
unsuitable for attack ओव०

अणभिकत त्रि० ( अनभिकान्त ) उ० ३१

गयेल नहि, अनुबंधित नही उलांघा हुआ.  
Not transgressed; not violated  
आया० १, ४, ४, १३८;—किरिया  
स्त्री० (-क्रिया) जेमां पीण डोष मतना  
लिशु उतर्या नथी जेवी ज्य्या ऐसा स्थान  
जहां दूसरे मत का भिक्षु न उतरा हो. a  
place where ascetics of another  
faith have not put up आया० २,  
२, २, ८१,

अणभिगम पुं० (अनभिगम) विस्तार पूर्वक  
जोधेनो अलाव विस्तृत शिक्षा का अभाव.  
Not containing instructions  
in details. भग० १, ६, (२) समकित-  
नी अप्राप्ति. समकित (सम्यक्त्व) की अप्राप्ति  
non-attainment of right belief.  
“अबोहिणु अणभिगमेणुं” सूय० २, ७, ३८;

अणभिगगहिय त्रि० (अनभिगगहिक) दुमत-  
नी पडड नहि डरनार कुमति की पकड न  
करने वाला (One) who does not  
obstinately hold to or stick  
to heretical tenets ठा० २, १;

अणभिगगहिय त्रि० (अनभिगुहीत)  
पडड डरेल नहि; आग्रहथी पडडेल नहि  
न पकडा हुआ, आग्रह पूर्वक न पकडा हुआ  
Notheld, not persistently held  
प्रव० ६७३; उक्त० २८, २६; पञ्च० १,  
—कुदिट्टि त्रि० (-कुदट्टि-अनभिगुहीता  
अनङ्गीकृता कुदट्टिद्वैद्व्यतरूपा येनासौ )  
जेने मिथ्यात्ववादी मतनो अगीडार डरेल  
नहि ते जिसने मिथ्यावादी मत का अंगीकार  
नहीं किया है (one) who has not  
accepted tenets of heretical  
creeds like those of Buddha  
etc उक्त० २८, २६ प्रव० ६७३,—सिजा-  
सरिय त्रि० (-जग्गामनिक) शय्यासन  
पिथड आसिग्रहथी रहित जग्गामन

सम्बन्धी अभिग्रह से रहित. not practis-  
ing any vow relating to things  
used for bedding and seat.  
कप्प० ६, ५३;

अणभिगगहिया स्त्री० (अनभिगुहीता) जेना  
अर्थ ज्य्याय नहि जेवी भाषा जिसका अर्थ न  
जाना जाय ऐसी अव्यक्त भाषा. Unin-  
telligible or incomprehensible  
speech पन्न० ११; भग० १०, ३,  
प्रव० ६०२;

अणभिगगा त्रि० (अनभिज्ञ) अजान, भूर्ध.  
अजान, मूर्ख. Ignorant; foolish.  
विशे० १६५६, सु० च० ७, २८६;

अणभिधेय त्रि० (अनभिधेय) अवाच्य; नहि  
डहेवा ज्य्य न कहने योग्य. Unworthy  
of utterance, unfit to be told.  
विशे २५;

अणभिभूअ-य त्रि० (अनभिभूत) पराजित  
नहि पाभेल. अपराजित Not defeated,  
not overpowered आया० १, ५, ६,  
१६७,

अणभिलप्प त्रि० (अनभिलाप्य) ज्योडवाने  
अज्योड्य, वाणीने अज्योड्यर जो कहा न जा सके,  
बोलने के अयोग्य Unspeakable, inex-  
pressible विशे० १४१,

अणभिलसेमाण व० क० त्रि० (अनभि-  
लपमाण-अनभिलपत्) न धरुतो.  
इच्छा न करता हुआ Not desiring.  
नाया० १, उक्त० २६, ३३;

अणभिवुट्टि स्त्री० (अनभिवृष्टि) अनावृष्टि;  
वरसादेनो अलाव अनावृष्टि. Drought,  
absence of rain प्रव० ४५०;

अणभिस्संग पुं० (अनभिष्वङ्ग) प्रतिबन्ध  
रहित, संग-लेपरहित साधु प्रतिबन्ध रहित;  
संग-परिग्रह रहित साधु Free from



attachment; e g. a Sādhu. पंचा०  
१४, १७,

अणभिस्संगंओ अ० (अनभिष्वङ्गतस्) प्रति-  
ष्ण-ध रहित पणु प्रतिबन्ध रहितपन से  
Without attachment पचा० ४, ३५,

अणभिहरोमाणा व०कृ० त्रि० (अनभिघ्नत्) न  
हृषुतो, न घात डरतो. न मारता  
हुआ, न घात करता हुआ Not  
killing. “ तणुणं अग्हे पुढवि अपच्चेमाणा  
अणभिहरोमाणा ” भग० ८, ७,

अणभिहाणा. त्रि० (अनभिधान) नाम रहित  
नाम रहित. Nameless विशेष ६१,

अणारिह. त्रि० (अनर्ह) अयोग्य; नादायक  
अयोग्य Unfit, unworthy नाया० १,  
भग० १५, १;

अणाल पुं० (अनल-नास्ति अल पर्यासिर्य-  
स्य) अग्नि आग. Fire परह० १, १,  
(२) त्रि० अज्जेग, नादायक अयोग्य unfit,  
unworthy निसी० ११, ३३, ३५,

अणालंकिय. त्रि० (अनलकृत) अलंकार वगर-  
ने; आभूषण्युद्धि रहित आभूषणादि से रहित  
Devoid of ornaments निसी० १२,  
३४; उक्त० ३०, २२, भग० २, १, १८, ५,  
—विभूसिय त्रि० (-विभूषित) अलंकार  
अने विभूषा-वस्त्रादिङ्गी शोभाथी रहित  
अलंकार और वस्त्रादि की शोभा रहित.  
devoid of the splendour of orna-  
ments, dress etc भग० २, १,

अणालक्खिय त्रि० (अलक्षित) अज्ञातुं  
नहीं जाना हुआ Unknown, not  
marked पि० नि० ३६५;

अणालिय न० (अनलीक) लुप्त नहिले, सत्य  
सत्य Not-falsehood, truth. भक्त०  
१५७,

अणालुकक. त्रि० (अनलोक्य-लोकितुं योग्यो  
लोक्य., न लोक्य. अलोक्य., न अलोक्य

अनलोक्यः) नदरे देभाय तेषु, दृष्टिगोचर.  
दृष्टि से देख सकने योग्य, दृष्टिगोचर  
Capable of being seen, visible.  
‘अणलुके लुकमिति अप्पाणं मच्चइ’  
भग० १५, १,

अणालियणिज्ज. त्रि० (-अनाश्रयणीय) आ-  
श्रय डरवा योग्य नहिले आश्रय करने  
के अयोग्य. Unfit to be resorted to;  
unworthy. ‘विसवह्मिअणालियणिज्जाओ’  
तंडु०

अणवं पुं० (अणवत्) दिवसनुं २६ मुं  
लोकात्तर मुहूर्त दिन का २६ वाँ लोकोत्तर  
मुहूर्त The twenty-sixth Lokotta-  
ra Muhūrta of a day जं० प० ७,  
१५२, सू० प० १०;

अणवकंखमाणा त्रि० (अनवकाङ्क्षमाणा-अ-  
नवकाङ्क्षत्) न धृषुतो थडा, भोगनी धृषु  
नहिले राभतो इच्छा न करता हुआ, भोग की  
इच्छा न रखता हुआ Not desiring, not  
desiring enjoyments “सुसवडा  
पंचहिं संवरोहिं इह जीवियं अणवकखमाणा”  
उक्त० १२, ४२, नाया० १, १६, भग० २, १;  
३, १, काप० ६, ५१, आया० १, ६, ३, १८७,  
१, ७, ३, २०७, ओव० ३६, जं० प० ३, ७०,

अणवकंखवत्ति. न० (अनवकाङ्क्षवत्ति-अनव-  
काङ्क्षा परप्राणानिरपेक्षा स्वगतापायपरि-  
हारनिरपेक्षा वा वृत्तिर्वर्तन यत्र वैरे तत्तथा)  
भेमा परप्राणुनी अथवा पोताना पापना  
परिहारनी अपेक्षा राभवामा नथी आवती  
अथवा वर्तनयाणु पैर-वेरभाव निममें द्यरे  
के प्राणों की अथवा अपने पाप के परिहार की  
अपेक्षा नहीं रखी जाती ऐसी वृत्ति वाला वैरभाव.  
Feeling of hostility devoid of  
regard for another's life as also  
for the sin incurred by destroy-  
ing it The attitude of the

mind being as careless about another's life as about one's own sinlessness. भग० १, ८;

**अणवकंखवत्तिया.** स्त्री० ( अनवकाङ्क्षप्रत्यया—अनवकाङ्क्षा स्वशरीराद्यनपेक्षत्वं सैव प्रत्ययो यस्याः सा अनवकाङ्क्षप्रत्यया ) पो-  
तानी के परनी श्रुद्गीनी अपेक्षा राभ्या विना साहसयी पापक्रिया थाय ते. अपनो या दूसरे की जिदंगी की परवाह किये विना जो साहस से पाप क्रिया हो वह Sinful action rashly done without regard for one's own or another's life. “अणवकंखवत्तिया किरिया हुविहा पयणत्ता, आय-  
सरीरअणवकंखवत्तिया चेव परसरीरअणवकंखवत्तिया चेव” ठा० २, १;

**अणवकंखा.** स्त्री० ( अनवकाङ्क्षा ) ध्वि० अभाव. इच्छा का अभाव. Absence of desire. ठा० १, १;

**अणवगय.** त्रि० ( अनवगत ) न ज्ञाते. नहीं जाना हुआ. Not known. ठा० ४, ४;

**अणवगल्ल.** त्रि० ( अनवकल्प—वार्द्धक्यरहित ) जराशुर्लु नहि थयेत्त; जरावगरेतो. वृद्धावस्था से रहित; जो जराजीर्ण नहीं हुआ है Not infirm through old age. अणुजो० १३८, भग० ६, ७,

**अणवज्ज.** त्रि० ( अनवद्य ) निर्दोष, पाप रहित. निर्दोष; पाप रहित. Innocent; not guilty; faultless. ( २ ) न० पाप-दोषतो अभाव. पाप—दोष का अभाव. innocence; absence of guilt आघ० नि० ७४६; दस० ७, ३; ४६; भग० ५, ६; विशेष० ७२; ६६८;—भासा. स्त्री० (—भाषा ) पाप—दोषरहित भाषा; निरवद्य भाषा; दोषने दुःख न उपजावे तेवी

भाषा पाप—दोष रहित भाषा; निरवद्य भाषा; किसीको दुःख न देने वाली भाषा. faultless and harmless speech. भग० १६, २;

**अणवदृष्य.** न० ( अनवस्थाप्य ) दोषभाटे साधुने आपवाना प्रायश्चित्तो अेक प्रकार; जेभां अमुक वभतसुधी साधुने प्रतथी षडार राभी ते पछी देवामां आवे तेवुं अेक अय-  
श्चित्त. दोषी साधु को देने योग्य एक प्रकार का प्रायश्चित्त; जिसमें अमुक समय तक साधु को व्रत बाहिर रख फिर उसे साधुत्व में ले लेते हैं ऐसा एक प्रायश्चित्त का प्रकार. A mode of administering expiation to a monk for a sin, by temporarily expelling him from the fraternity of monks. आ० १६; प्रव० ७६२; वव० २, ७;  
( २ ) त्रि० अनवस्थाप्य नामे प्रायश्चित्त-ने योय्य. अनवस्थाप्य नामक प्रायश्चित्त के योग्य. (one) deserving of the expiation named Anavasthāpya. वेय० ४, ३;—अरिह. न० (—अर्ह—यस्मिन्नासेविते कञ्चन कालं व्रतेष्वनवस्थाप्यं कृत्वा पश्चात्परीतया तद्दोषोपरतो व्रतेषु स्थाप्यते तदनवस्थाप्यार्हम् ) नवमुं प्रायश्चित्त; के जे आपवाने, दोष सेवनार साधुने अमुक वभत सुधी व्रत षडार राभी, तप डरावी, ते दो-  
पनी निवृत्ति थया पछी व्रतनुं आशेषु डरवामां आवे ते प्रायश्चित्त नवां प्रायश्चित्त; जिसके द्वारा दोषी साधु को अमुक समय तक व्रत बाहिर रखकर तप कराने के बाद दोष की निवृत्ति हो जाने पर पाँछे उसे व्रत अंगीकार कराया जाय वह प्रायश्चित्त. the ninth variety of expiation; a Sādhu temporarily debarred from observing a vow and made to

undergo penance. ठा० १०; भग० २५, ७,

**अणवद्विय.** त्रि० ( अनवस्थित ) अस्थिर. Unsteady. उवा० १, ५३; ( २ ) अनियतप्रमाणवाणो; जेतुं ओक सरपुं प्रमाण नथी ते. अनियत प्रमाण वाला, जिसका प्रमाण एक समान न हो varying, changing. “अणवद्विआ णं तत्थ खलु राहंदिया पणत्ता” चं० प० ८; प्रव० २८४; तंडु० २३;—करण. न० (—करण ) सामाधिकनो वभत पुरो तथा पडेला पाणवु ते, श्रावकना नवमा व्रतनो पांयभो अतिचार श्रावक के ६ वें व्रत का ५ वाँ अतिचार, सामायिक का समय होने से पहिले ही पालन कर लेना. the fifth partial violation ( Atichāra ) of the 9th vow of a Jaina layman, viz failing to observe the time fixed for Sāmāyika. प्रव० २८४,—संठारण न० (—संस्थान ) ओक ठेकाणु स्थिति न करपी ते; निरंतर गति करपी ते एक स्थान पर स्थित न रहना, निरंतर गमन करना perpetual motion जीवा० ३,

**अणवणीयत्त.** न० (अनपनीतत्व) डारक, डायण, वयन, लिंग आदि दोषथी अयुक्त, सत्यवयननो २५ भो अतिशय कारक, काल, वचन, लिङ्ग आदि दोषों से अयुक्त, सत्य वचन का २५ वाँ अतिशय Not being faulty in the matter of case-inflection, tense, gender etc, the 25th supernatural manifestation of truthfulness in speech. सम० ३५;

**अणवणियाय** पुं० ( \*अनपन्निक=अप्रज्ञप्तिक ) व्यन्तर देवोनी ओक नत व्यन्तर देवों की छोटी ( प्रथम ) जाति के देव. A deity of the minor class of

Vyantara gods. पन्न० २, भग० १०, २;

**अणवत्तप्पया** स्त्री० ( अनवत्राप्यता ) अंग हीनता. अंग हीनता. Bodily defect; deformity of limbs of the body. ठा० ८,

**अणवत्था** स्त्री० ( अनवस्था ) अनवस्था दोष; जे दलीलनो डयांय पणु अवस्थान न थाय-छेडो न आवेत्यां अनवस्था दोष उपस्थित थाय छे अनवस्था दोष, जहाँ दलील-युक्ति का कहीं भी अवस्थान न हो-अन्त न हो उसे अनवस्था दोष कहते हैं A fallacy in logic leading to ad infinitum argument विशेष० १५, महा० प० ३१; अणुजो० १४८;

**अणवदग्ग.** त्रि० ( अनवनताग्र-अवनत-मासन्नमग्रमन्तो यस्य तत्तथा, तन्निपे-धादनवनताग्रम् ) अनंत, छेडवगरतुं अन्त रहित, नित्य, अनन्त Endless; perpetual. भग० १, १;

**अणवदग्ग** त्रि० ( अनवदग्र-न विद्यतेऽवदग्रं पर्यन्तो यस्य सोऽयमनवदग्र इति ) अंत वगरतुं, छेड वगरतुं, अनंत. अंत रहित, नित्य; अनंत Perpetual; endless. भग० १, १, २, १, ५, ६; ७, ७, ६, ३२; १२, २; १५, १; १६, ६; नाया० २; श्रोव० २१; परह० १, ३, सूय० २, २, ८२; ठा० २, १;

**अणवयक्खमाणा** व० कृ० त्रि० (अनपेक्षयत् ) न अपेक्षा राभते; न जेतो अपेक्षा न रखता हुआ; न देखता हुआ Not seeing, not desiring, not expecting “अणवयक्खमाणा सेलएणं जक्खेयं” नाया० ६;

**अणवयन्त्रिखत्ता.** सं० कृ० अ० (अनन्वेद्य ) न जेतने, जेत्या विना न देखकर, बिना देखे. Without seeing or having seen “ जेषं नो पम् मग्गयो रुवाइं

अणवयक्खित्ता णं पासित्तण् ” भग० ७, ७;  
 अणवयगग त्रि० ( अनवदग्र ) णुओ। ‘ अण-  
 वदग्ग ’ श०६. देखो ‘ अणवदग्ग ’ शब्द  
 Vide ‘ अणवदग्ग ’. भग० १, १;  
 अणवरय. त्रि० ( अनवरत्त ) निरंतर; हमेश  
 सदा, हमेशह Always; perpetually.  
 नाया० १, भग० ६, ३३, सु० च० १, १११,  
 ओव० ३०, जं० प० २, ३०; पंचा० ५, ४४;  
 अणवराह त्रि० ( अनपराध ) अपराध  
 रहित. अपराध रहित Faultless;  
 guiltless विशेष १८४०;  
 अणविकखया स्त्री० ( अनपेक्षा ) अपेक्षा-दृष्-  
 रेण न राप्थी ते. देख रेख न रखना  
 Absence of proper supervision.  
 गच्छा० ३८,  
 अणवेक्खमाण. व० क० त्रि० ( अनपेक्षमाण )  
 अपेक्षा न राप्थी ते. अपेक्षा न रखता हुआ  
 Not expecting. “ धुखे उरालं  
 अणुवेहमाणे, चिच्चाण सोयं अणवेक्खमाणे ”  
 सूय० १, १०, ११; नाया० १६,  
 अणस्सण न० ( अनशन ) हमेशनेभाटे डे  
 थोडा वपतनेभाटे अन्नपाणीतो त्याग  
 डरेवो ते; उपवास अथवा संधारे सदा के  
 लिये या अल्प काल के लिये अन्नजल का त्याग  
 करना, उपवास अथवा संधारा Fasting;  
 giving up food and water for  
 some time or permanently  
 ओव० १६; भग० २, १, ३, १; २५, ७, नाया०  
 ५, ८; १४, १५; सम० ६, ठा० ६, १; सूय० १,  
 २, १, १४, उत्त० ३०, ८; निर० ३, १;  
 प्रव० २७१; नाया० ध०  
 अणस्सायणा. स्त्री० ( अनाशातना ) अण्  
 नी आशातना ( अनादर ) न डरेवी ते गुरु  
 आदि की आशातना ( अनादर ) न करना.  
 Not showing disrespect or ii-

reverence to a preceptor etc.  
 प्रव० १५८;

अणस्सादेमाण व० क० त्रि० ( अनासादयत् )  
 अणुपाभतो, न प्राप्त डरेतो प्राप्त न करता  
 हुआ Not obtaining “ पव्वयं वा  
 विसमं वा अणस्सादेमाणे ” भग० १५, १,  
 \*अणह. त्रि० ( अघत ) नाश वगरनुं. नाश रहित;  
 नित्य Indestructible. सु० च० २,  
 ३४,—समग्ग. त्रि० ( -समग्र ) सहिस-  
 क्षामत भाव अने सहिसक्षामत दुटुंअवाणो;  
 रस्तामां योरादिक्थी वेतुं धन लुंटाअेलुं नथी  
 ते सुरक्षित धन और कुटुंब वाला, रास्ते मे  
 चोर वगैरह से जो न लूटा गया हो वह. with  
 property and family quite safe.  
 “ लद्धे कयकज्जे अणहसमग्गे णियगं वरं  
 हव्वमाणे ” नाया० ८; ६; १८;

अणह. त्रि० ( अनघ ) पाप वगरनुं; निरवध.  
 पाप से रहित, पवित्र, निर्दोष Sinless;  
 faultless, pure पंचा० १६, ४५;  
 ओव० ३२; नाया० ८; प्रव० ६६६;

अणहय त्रि० ( अनाहत ) ननु; वापरेलु नहि  
 नया, व्यवहार में न लाया हुआ New;  
 unused जीवा० ३, ३;

अणहार पुं० ( अनाहार ) अणुहार ( आ-  
 डार न लेवो ते ) मार्गणु-दार अणाहा  
 रक मार्गणा—द्वार. Fasting क० ग०  
 ४, २१;

अणहिगय. त्रि० ( अनधिगत ) अणितार्थ,  
 शास्त्रवेत्ता नहि ते शास्त्रो को नहीं जानने  
 वाला, शास्त्रज्ञान रहित Not conversant  
 with Śāstras विशेष ३७७;

अणहिज्जमाण त्रि० ( अनधीयमान—यान )  
 न लणुतो न पढ़ता हुआ Not study-  
 ing “ ते विज्जभावं अणहिज्जमाणे,  
 आहंसु विज्जा परिमोक्खमेव ” सूय० १,  
 १२, १०,

**अणहिरिचिह्न**. त्रि० ( अनभिनिचिह्न ) अलि  
निवेश-कुमतना आग्रहथी रहित. कुमत के  
आग्रह से रहित Not attached to,  
free from, insistence on false  
doctrines पंचा० ३, २८;

**अणहिल्लपाडणगणयर** न० ( प्रभासपत्तन-  
नगर ) सौराष्ट्र-गुर्जर प्रान्तमां आवेक्ष ओ  
नाभनुं नगर; प्रभासपाटण गुजरात-  
काठियावाड़ मे सरस्वती नदी के तट पर  
एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान; प्रभासपाटन.  
Name of a town in Saurāstra  
in Gujarāt, also named  
Prabhāsa-Pātana भग० २४, १;

**अणहीण** त्रि० ( अनधीन ) स्वाधीन, परतंत्र  
नहि स्वतंत्र; स्वाधीन Independent  
विशे० १८७५;

**अणहीय** त्रि० ( अनधीत ) अभ्यास न  
करेक्ष; न लक्षेक्ष विना पढा हुआ. Un-  
educated गच्छा० ४३,—परमत्थ. पु०  
(—परमार्थ-अनधीता अनभ्यस्ता परमार्थां  
आगमरहस्यानि यैस्तेऽनधीतपरमार्था. )  
अगीतार्थी; शास्त्रवेत्ता नहि ते शास्त्रज्ञान  
रहित, शास्त्रों को न जानने वाला. one,  
not conversant with the truths  
of Śāstras. “ जे अणहीयपरमत्थे,  
गोयमा ! संजण भवे. ” गच्छा० ४३,

**अणह** त्रि० ( अनादि-न विद्यते आदिः प्राथ-  
म्यमस्येत्यनादिः ) आदि-शब्दात् वगर्नु,  
अनादि इत्यथी आद्यं आवतु आदि रहित,  
अनादि काल से चला आता हुआ Beginningless,  
coming down from  
eternity ओव० २१, छ० ३, १,  
ओघ० नि० ७७५; क० गं० ५, ४; क० प० २,  
६, विशे० ५३७,—**णिहण** त्रि० (—निघन)  
अनादि अनन्त; जेना आदि अने अनन्त  
नथी तेजुं जिसका आदि और अनन्त न हो;

अनादि अनन्त. having neither  
beginning nor end; eternal. सम०  
—संताण पुं० (—सन्तान) अनादि प्रवाह;  
अनादि परपर. अनादि प्रवाह, अनादि परम्परा.  
uninterrupted, stretching from  
eternity “ अणाइसंताणकम्मबंधण-  
किळेसच्चिक्खिहसुहुत्तरं ” ओव० परह० २, ३;  
—सपज्जवसिअ त्रि० (—सपर्यवसित )  
जेनी आदि नथी पण पर्यवसान-छेडे छे ते.  
जिसका आदि न हो परन्तु अंत हो.  
( one ) without a beginning but  
having an end, beginningless  
but not endless प्रव० १३२१,

**अणाइअ-य** त्रि० ( अनादिक ) अनादि;  
उत्पत्ति रहित, शब्दात् वगर्नु अनादि;  
उत्पत्ति रहित Without a beginning,  
without creation भग० २, १; ८, ८;  
उत्त० ३६, ८, आया० १, ७, १,  
११६, प्रव० १३२१,—सिद्धंत. पुं०  
(—सिद्धान्त) अनादि इत्यथी सिद्ध थयेल-  
रु० थयेल सिद्धात् अनादि काल से  
स्थापित, अनादि काल से रूढि में आया हुआ.  
established from eternity.  
अणुजो० १३१,

**अणाइअ** त्रि० ( अज्ञातिक ) स्वजन-कुटुम्ब  
वगर्नु विना कुटुम्ब का Destitute  
of relatives. भग० १, १,

**अणाइअ-य** त्रि० ( अणातीत-अणमयकं  
पापमतिशयेनेत गतमणातीतम् ) पापने  
प्राप्त थयेल पाप युक्त; पापको प्राप्त हुआ  
Passing into the limit of sin,  
become sinful; constituted  
into sin भग० १, १,

**अणाइअ-य**. त्रि० ( अणातीत ) इत्यथी;  
देवदार; इत्यथी, कर्जदार, अणात् A  
debtor भग० १, १.

अणाइज्ज. न० ( अनादेय ) नामधर्मनी श्रेष्ठ प्रकृति के जेना उदयथी भाणुसतुं वचन मान्य न थाय नामकर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से मनुष्य का वचन मान्य न हो. A variety of Nāma-Karma by the rise of which a man's words are not accepted (even though they be true ). क० गं० १, २७; —दुग, न० ( -द्विक ) अनादेय नाम अने अजसोडीर्ति नाम. अनादेय नाम और अयशः कीर्ति नाम. the two Nāma-Karmas viz Anādeya-Nāma and Ayaśahkīrti-Nāma. क० गं० २, १६, —वयरा त्रि० ( -वचन-अनादेयं वचनं येषां ते तथा ) अनादेय वचनवाणुं; जेतुं वचन-डोर्ध पणु मान्य न डरे ते. अनादेय वचन वाला; जिसके वचन का कोई भी मान न करे. one uttering words doomed to disbelief भग० ७, ६,

अणाइरण त्रि० ( अनाचीर्य ) साधुने आचरवा योग्य नहि; अडरपनीय; पर अनाचीर्युमानो गभे ते श्रेष्ठ साधु के आचरण के अयोग्य, अकल्पनीय; ५२ अनाचीर्यो मे से कोई भी एक. Unworthy of being practised by an ascetic, one of the fifty-two practices unworthy of a Sādhu “ तेसि मेयमणाइरणं, निगंयाणं महेसिण ॥ १ ॥ उडेसिय कीयगढं, नियागं अभिहडाणि य । राहभत्ते सिणाणि य, गंधमल्ले य वियणे ॥ २ ॥ संनिहिगिहि-मत्ते य, रायपिडे किमिच्छए । सवाहणं वंत-पहोयणा य, संपुच्छणा देहपलोयणा य ॥ ३ ॥ अट्टावए य नार्त्ताए, द्दत्तस्स य धारणाट्टाए । तेगि-च्छं पाहणा पाए, समारंभं च जोइयो ॥ ४ ॥ सिजायरपिंडं च, आसंदी पलियंकए । गिहंतर निसिजा य, गायस्तुव्वट्टणाणि य ॥ ५ ॥ गिहि-

यो वेयावडियं, जा य आजीववत्तिया । तत्ता निदुडभोइसं, आउरस्सरणाणि य ॥ ६ ॥ मूळए सिगवेरे य, उच्छुखंडे अनिच्चुडे । कंदे मूले य सच्चित्ते, फले बीए य आमए ॥ ७ ॥ सोवबले सिंधवे लोणे, रोमा लोणे य आमए । सामुरे पंसुखारे य, कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥ धुवणेत्ति वमणे य, वत्थीकम्मविरेयणे । अंजणे दंतवणे य, गायान्भंगविभूसणे ॥ ९ ॥ दस० ३, १-६; .

अणाइन्न. त्रि० ( अनाचीर्य ) साधुने आचरवा योग्य नहि साधु के न आचरणे योग्य. Not worthy of being practised by a Sādhu or an ascetic. प्रव० १०१६;

अणाइल त्रि० ( अनाविल ) स्वच्छ; भेद रहित; पाप रहित. स्वच्छ, मैल रहित; पाप रहित Pure, free from sin. “ अणाइ-ले या अकसाई भिक्खु, सकेव देवाहिवाई जुइमं ” सूय० १, ६, ८; १, १४, २१; १, १५, १२; परह० २, १;

अणाउ. पुं० ( अनायुष्-न विद्यते चतुर्विधम-प्यायुर्यस्य स भवत्यनायुः ) आयुः कर्म रहित; सिद्ध भगवान् सिद्ध भगवान्; आयु. कर्म रहित A Siddha; one freed from Ayuhkarma. ( २ ) जिन-जेने इरीथी उत्पन्न थपु नथी तेवा डेवणी, तीर्थंडर वगेरे. जिन-जिन्हें पुनर्जन्म धारण न करना हो; तीर्थ-कर, केवली वगैरह. Kevalis etc. freed from rebirth. “ अणुत्तरे सम्बजगंघि-विज्जं, गंधा अतीते अभए अणाउ ” सूय० १, ६, २६; प्रव० १२६२; ( ३ ) शुवविशेष. एक प्रकार का जीव. a kind of living being. ठा० २, १;

अणाउअ. पुं० ( अनायुष्क ) शुभ्रे “अणाउ” शब्द. देखो “ अणाउ ” शब्द. Vide “ अणाउ ” अणुजो० १२७;

**अणाउज्जिय.** त्रि० ( अनायोगिक ) उप-  
योग रहित; असावधान उपयोग रहित,  
असावधान Utility; unwary; un-  
circumspect. “उदाहु अणाउज्जिया?”  
भग० २, ५;

**अणाउट्टि** स्त्री० ( अनाकुट्टि ) हिंसानो  
अभाव; अहिंसा हिंसा का अभाव, अहिंसा  
Absence of killing or giving  
pain; non-injury. “अइवत्तियं अणा-  
उट्टिं, सयमनेसिं अकरणयाए” आया० १,  
६, १, १७;

**अणाउट्टि.** त्रि० ( अनाकुट्टिन् ) अहिंसक;  
हिंसा न करना. अहिंसक; हिंसा न करने  
वाला Abstaining from killing or  
giving pain; one who abstains  
from killing or injuring others  
“जायं काएणाउट्टी, अबुहोजं च हिंसति”  
सूय० १, १, २, २५;

**अणाउत्त.** त्रि० ( अनायुक्त ) उपयोग रहित;  
उपयोग विना; असावधेय उपयोग रहित,  
असावधान. Unwary, without pro-  
per circumspection. ठा० २, १;  
उत्त० १७, ६, भग० ७, १; २५, ७,—आ-  
इणया स्त्री० (—आदानता ) विना उपयोग  
वस्तु देवा भूइवाथी लागती क्रिया-कर्मबंध,  
अणुभोगप्रत्ययक्रियानो अेक भेद असावधानी  
से वस्तु उठाने और रखने की क्रिया से होने  
वाला कर्मबंध; अणाभोगप्रत्ययक्रिया का  
एक भेद Karma incurred by tak-  
ing up or laying down a thing  
without proper circumspection;  
a variety of Kriyā called Anā-  
bhogapratyaya ठा० २, १,—गमण  
न० (—गमन ) उपयोग विना आलवु ते,  
उपयोग शून्य गति करवी ते उपयोग विना  
चलना movement without proper

circumspection भग० २५, ७,  
—पमज्जणया स्त्री० ( :—प्रमार्जनता-  
प्रमार्जन ) उपयोग रहित पुनवाथी लागती  
क्रिया-कर्मबंध असावधानी के साथ पूजने से  
होने वाला कर्मबंध. Karma incurred  
by brushing off carelessly, or  
without proper circumspection.  
ठा० २, १,

**अणाउल.** त्रि० ( अनाकुल ) आकुलता रहित  
आकुलता रहित Untroubled; un-  
distracted “जत्थत्थमिए अणाउले,  
समविसमाइ मुणी हियासए” सूय० १, २,  
२, १४; नाया० ८, दस० ६, १, १३,

**अणाकुल** त्रि० ( अनाकुल ) लुओ ‘अणा-  
उल’ शब्द देखो ‘अणाउल’ शब्द. Vide  
“अणाउल”. पंचा० ५, ३६;

**अणागत्र-य** पुं० ( अनागत ) भविष्य काण;  
आवतो काण भविष्य काल The future.  
भग० १, १, ४; ६; २, १; २, ८, ६, १४,  
३; २५, ५. नाया० ८; जं० प० ७, १३७;  
सम० १३; ओव० ४३, कप्प० २, २०;  
( २ ) न आवेलु नहीं आया हुआ not  
come. ओव० ४३, पन्न० २; नंदी० १४,  
( ३ ) त्रि० भविष्यमा भणवानु, लावी नम  
सअधी भविष्य में मिलने वाला, भावी जन्म  
सम्बन्धी to be got in the future;  
concerning the future both.  
“हत्यागया इमे कामा, कालिया जे अणा-  
गया” उत्त० ५, ६, सूय० १, २, २, ५,  
१, २, ३, २१, अणुजो० ४२, ( ४ ) न०  
पर्युपणुमां इरवानु तप इंछं इरएणु अर  
अगाउथी इरी लेवु ते, दस पच्यभाणुमानुं  
अेक पर्युपण में किये जाने वाला तप किसी  
कारण से पहिले कर लेना; दस प्रत्याख्यानो में से  
एक प्रत्याख्यान (पचखाण) performing  
devout austerity (Tapa) of Pa-

ryūṣana at an earlier date for some reason; one of the ten Pachchkhāṇas. प्रव० १८६; भग० ७, २;—क्षेत्र. न० (—क्षेत्र) ७वे पक्षी आववानुं क्षेत्र; ७े क्षेत्रमां गति नथी इरी तेषु क्षेत्र आगे आने वाला क्षेत्र; जिस क्षेत्र मे गति नही की ऐसा क्षेत्र. the future Ksetra. भग० ८, ८,—द्धा. स्त्री० (—अद्धा) भविष्य काल. भविष्य काल. future time. अणुजो० ११५; भग० १, ६, १२, ५; २२, ५, प्रव० १०५३;—वयण. न० (—वचन) भविष्य कालनुं वचन; भविष्यकाल वाचक विभक्ति प्रत्यय—जैसे “ करिष्यति ” the termination of the future tense ठा० ३, ४, आया० २, ४, १, १३२;

अणागइ. स्त्री० ( अनागति ) न आवुं ते. नहीं आना Not coming back ( २ ) सिद्धशिला; न्याथी इरी आवुं नथी ते. सिद्धशिला, जहासे फिर वापिस नहीं आना पड़ता वह स्थान. Siddha-Silā from which there is no return. “गइ च जो जाणइ णागइं च ” सूय० १, १२, २०;

अणागंता सं० कृ० अ० ( अनागत्य ) न आवीने. न आकर. Without coming, without having come. ठा० ३, २,

अणागम. पुं० ( अनागम ) आगम लक्षण हीन आगम; अपौरुषेय आगम अपौरुषेय आगम, आगम के लक्षणों से रहित आगम. Scripture without the indispensable features of such; impersonal scripture, revelation अ० १०:

अणागमण. न० ( अनागमन ) संयम लधने पाछा धेर न आवुं ते संयम धारण करके पीछे घर न आना. Not returning home after a vow of asceticism. “ जे लोगंसि अणागमणधम्मिणो आणाए मामगं ” आया० १, ६, २, १८४,—धम्मि. त्रि० (—धम्मिन्) लीधेली प्रतिज्ञाने निर्वाह इरनार, संयम लधने पाछा धेर न नरनार. ली हुई प्रतिज्ञा का पालन करने वाला; संयम लेकर पीछे घर न जाने वाला. ( one ) acting up to the vow taken; ( one ) not returning home after a vow of asceticism आया० १, ६, २, १८४;

अणागलिय. त्रि० ( अनर्गलित ) निवारण न इरेल; अटकावेल नहि. निवारण न किया हुआ, न रोका हुआ. Not stopped; not detained. भग० १५, १; नाया० ६;

अणागलिय त्रि० ( अनाकलित ) प्रमाण उपरान्तुं, अपरिमित अपरिमित; प्रमाण रहित Beyond measure. भग० १५, १;

अणागाढ. न० ( अनागाढ ) साधारण इरणु, गाढ इरणु नहि साधारण कारण. Reason, not very serious निसी० ११, २७;

अणागार. न० ( अनाकार—न विद्यमाना आकारा महतराकारादयो विच्छिन्नप्रयोजनत्वात् प्रसिपत्तिर्यस्मिंस्तदनाकारम् ) पञ्च-भालुमां दुष्ण, अटवी वगेरेते आगार-छुट न राभवी ते; अनाभोग अने सहसा अे अे सिवाय आडीना आगार विनानु पञ्चभालु पञ्चक्याण में दुष्काल, वन वगैरह की छुट न रखना, अनाभोग और सहसा, इन दो के सिवाय बाकी के आगारों से रहित पञ्चक्याण. A vow of omission ( e. g. food ) not admitting exceptions



regarding one's being in a forest etc; a vow of omission with two exceptions only viz listlessness and force भग० ७, २, प्रव० १८४; ठा० १०; ( २ ) ( अविद्यमान आकारो भेदो ग्राह्यस्यास्येत्यनाकारम् ) आकार-भेद-विशेष रहित उपयोग; सामान्यग्राही दर्शनोपयोग आकार-भेद-विशेष रहित उपयोग, सामान्यग्राही दर्शनोपयोग. knowledge without differentiation of particulars. विशेष० ७६३; क० गं० ४, १५; जीवा० १; पञ्च० २; ३०; भग० १८, ८;—उवउत्त त्रि० ( -उपयुक्त ) सामान्यग्राही दर्शनना उपयोगवाणो; दर्शनना उपयोग सहित सामान्यग्राही दर्शन के उपयोग वाला; दर्शनोपयोग सहित. possessed of general and undifferentiated view पञ्च० ३; भग० १, ५; ६, ४, ८, २, ६, ३१, ११, १; १८, १; २४, १; २६, १;—उवओग. पुं० ( -उपयोग ) सामान्यग्राही दर्शनोपयोग सामान्यग्राही दर्शन का उपयोग general and undifferentiated view. विशेष० ४१२, भग० १, ६, १२, ५;

अणाघाडज्जमाण त्रि० ( अनाघायमान ) सूंध्या वगरनुं. बिना सूंध्याहुआ Unsmelt; not smelt. भग० १, १;

अणाघाय त्रि० ( अनाघात ) आघात विनातुं आघात सहित Unstruck, not hit उत्त० ६, १८;

अणाचार. त्रि० ( अनाचार ) आचार हीन आचार हीन Devoid of Āchāra i e right conduct etc गच्छा० ६४,

अणाजीवि त्रि० ( अनाजीविन्-न आजीवी अनाजीवी ) तपना इक्षनी धृष्ट्या वगरने, निस्पृही इच्छा रहित, निस्पृही. Dis-

interested; exempt from desire. "अगिलाए अणाजीवी, णायवो सो तवायारो" पंचा० १५, २६,

अणाढाडज्जमाण. व० कृ० त्रि० (अनाद्रियमाण) अनादर करतो, सत्कार न करतो अनादर करता हुआ Disregarding, disrespecting. भग० ३, १, नाया० १; १६,

अणाढायमाण. व० कृ० त्रि० (अनाद्रियमाण) अनादर करतो, तिरस्कार करतो तिरस्कार करता हुआ Disregarding, showing contempt नाया० १, ६; १४; भग० ३, १; आया० २, १, २, १३,

अणाडिअ-य पुं० (अनादत्त) अणाडिअ नामे नंबूद्वीपने अधिष्ठाता देवता अणाडिअ नाम का जम्बूद्वीप का अधिष्ठातृ देव The presiding deity of Jambūdvīpa, named Anād̥hia जं० प० ४, ६०; जीवा० ३, ४, उत्त० ११, २७; ( २ ) कडंडी नगरीने ओक गृहस्थ, के जे स्थविरनी पासे दीक्षा लई पड़ेला देवलोकमा अणाडिअ विमानमां जे सागरने आउजे उत्पन्न थयो, त्यांथी यवी महाविदेहमां मोक्ष अशे काकदी नगरी का एक गृहस्थ, जो स्थविर से दीक्षा लेकर पहिले देवलोक के अणाडिअ विमान में दो सागर की आयु सहित उत्पन्न हुआ वहांसे महाविदेह में जन्म लेकर मोक्ष को प्राप्त होगा a gentleman of the city named Kākandī, who was born for a life of 2 Sāgaras in Anād̥hia abode in the first Devaloka, after taking Dikṣā from a Sthavira After dying in that place, he will take birth in Mahāvīdeha and then get salvation. निर० ३, १०; ( ३ ) न० पड़ेला देवलोकनुं 'अणाडिअ' नामनु विमान

पहिले देवलोक का "अणादिआ" नाम का विमान. an abode named Anādha, of the first Devloka. निर० ३, १०; ( ४ ) अनादर पूर्वक वंदना करनी; वंदनाते पहिले दोष. अनादर पूर्वक वंदना करना, वंदना का पहिला दोष salutation without respect; first fault in salutation. प्रव० ६३; १५०;

**अणादिआ-या.** स्त्री० ( अनादता ) जंबूद्वीपना अधिष्ठाता अनादत देवतानी राजधानी जंबूद्वीप के अधिष्ठाता अनादत देव की राजधानी. The capital of Anādrita, the presiding deity of Jambūdvīpa. जीवा० ३, ४; जं० प०

**अणादिज्जमाण.** व० कृ० त्रि० (अनाद्रियमाण) अनादर पाभतो; तिरस्कार पाभतो. अनादर पाता हुआ; तिरस्कार पाता हुआ. Being insulted; being disregarded. ज्ञाया० १४;

**अणादियमाण** व० कृ० त्रि० (अनाद्रियमाण) लुओ "अणादिज्जमाण" शब्द. देखो "अणादिज्जमाण" शब्द. Vide "अणादिज्जमाण". नाया० १;

**अणाण.** न० (अज्ञान) अज्ञान अज्ञान. Ignorance. भग० २४, १२; २६, १; —**अभाव.** पुं० (अभाव) अज्ञानते अभाव. अज्ञान का अभाव. absence of ignorance. पंचा० ६, २५;

**अणाणस्त.** न० (अनानात्व) भेद रहित, भेदते अभाव भेद रहित, भेद का अभाव. Absence of distinction भग० ३४, १;

**अणाणा** स्त्री० (अनाज्ञा) आज्ञानते अभाव, जेभा वीतरागनी आज्ञा नथी ते आज्ञा का अभाव; वीतराग की आज्ञा रहित. Absence of command or order e. g. of

a Vitarāga. "अणाणाए एगे सोवट्टाणा अणाणाए एगे निरुवट्टाणा" आया० १, ५, ६, १६६; १, १, २, ४२; १, २, ६, १००; १, ६, ३, १६२;

**अणाणुगामि.** न० (अनानुगामि) जे ज्ञाने ज्ञान उत्पन्न थयुं होय ते ज्ञाने रहे पीछे ज्ञाने साथे न ज्ञाने अविज्ञान; अवधिज्ञानते अविज्ञान का एक भेद, जो ज्ञान जिस स्थान पर उत्पन्न होता है उसी स्थान पर ज्ञानी उसका उपयोग कर सकता है दूसरे स्थान पर वह नष्ट हो जाता है. A variety of Avadhi Jñāna limited to the place where a person acquired it. नंदी० ६;

**अणाणुगामियत्ता** स्त्री० (अनानुगामिकता-अनानुगामिकत्व) लव परंपराभां साथे न आवे ते. भव परम्परा में साथ न रहने वाला. Not accompanying in the cycle of rebirths दसा० ७, १२;

**अणाणुगिद्ध.** त्रि० (अननुगृह) अनासक्त; अभुञ्जित; भावानी लोलुपता वगरते. अनासक्त; मूर्छा रहित; खान पान की लोलुपता रहित. Not greedy, e. g. of food. "अणाणस्त पाणास्त अणाणुबिद्धे" सूय० १, १३, १७;

**अणाणुपुव्वी.** स्त्री० (अनानुपूर्वी) अनुक्रमेण परिपाटीथी विपरीत, व्युत्क्रम; अनुक्रमते अभाव. अनुक्रम के विरुद्ध; परिपाटी के विपरीत; व्युत्क्रम; अनुक्रम का अभाव. Against, departing from, regular order. भग० १, ६; १७, ४; २५, २;

**अणाणुबंधि.** न० (अनानुबन्धिन्) पडिलेडुधु डरतां वरतेने डोष पणु लाग नजर पडार न रहे ते; अप्रमादपडिलेडुधुने अक प्रकार. पडिलेहण करते समय वक्र का कोई भी हिस्सा दृष्टि से बाहिर न रहना; अप्रमादपडिले-

हण का एक भेद Thorough examination of a garment, a variety of Apramāda ( non-negligent ) Padīlehaṇa उत्त० २६, २६;

म० ६, १;

**अणायुवाह** पु० ( अनानुवादिन् ) वादिभ्ये ङ्लेस साधन-हेतुनो अनुवाह इरवानी पशु व्याकुलपशुने लीधे नेनामां शक्ति नथी ते वादी के कहे हुए हेतु का अनुवाद करने की भी जिसमें व्याकुलता के कारण शक्ति न हो. One who cannot even rehearse the argument of an opponent through lack of composure. “ से मुम्सुई होइ अणायुवाह ” सूय० १, १२, ५;

**अणायुवीहत्तु**. अ० ( अननुविचिन्त्य ) विचार्या विना बिना विचार किये. Without thinking; without having thought “ अणायुवीहत्तु मुस वयंति ” सूय० १, १२, २;

**अणाताविय**. त्रि० ( अनातापित ) ने साधु योतानां वस्त्र, पात्र वगेरे बिनाशवाणा उप-इरशुने तडडाभां न नापे ते जो साधु अपने भांगे हुए उपकरणों को धूप में नहीं सुकाता. Not exposing vessels, clothes etc. which are damp, to sunlight ( said of a Sādhu ) कप्प० ६, ५३,

**अणातीय** पु० ( अनातीत-आ समन्तादतीव इतो गतोऽनाद्यनन्तसंसारे स आतीतः, न आतीतोऽनातीतः ) संसारसमुद्रनी पार नानार; संसारने उल्लधी पडेदे पार पडोयनार श्रव संसारसमुद्र के पार जाने वाला. One who crosses the worldly ocean. आया० १, ८, ६, २२२;

**अणादि**. त्रि० ( अनादि ) प्रवाहनी अपेक्षाभ्ये आदि रहित; शर्यात वगरनुं प्रवाह की

अपेक्षा से आदि रहित. Without a beginning भग० ५, ६; ६, ३;

**अणादिअ-य**. न० ( अणादिक-अणं पापकर्म तदादि कारणं यस्य तदणादिकम् ) पाप इर्म, पापानुष्ठान. पापकर्म, पापानुष्ठान. Sin; a sinful action. परह० १, १;

**अणादिअ-य**. त्रि० ( अनादिक ) शर्यात वगरनुं; आदि रहित; अनादि अनादि, आदि रहित Without a beginning. भग० १२, २, १३, ६; १५, १; १६, ६; सूय० २, ५, २, ( २ ) लोड; संसार लोक; संसार. the world. सूय० २, ५, २;

**अणादिज्ज**. त्रि० ( अनादेय ) आदरवा योअ नहि ग्रहण करने के अयोग्य. Unfit to be accepted जं० प० २, ३६,

**अणादेज्ज**. न० ( अनादेय ) अनादेयनाम. अनादेय नाम. The term Anādeya. जं० प० २, ३६; सम० २५, भग० ७, ६;

**अणापुच्छित्ता**. सं० कृ० अ० ( अनापृच्छय ) पुछ्या विना; नहि पुछीने विना पूछे; न पूछ कर. Without asking, without having asked. वव० ६, १, ७, १; सम० ३३, वेय० ४, १८, कप्प० ६, ४६;

**अणापुच्छिय** सं० कृ० अ० ( अनापृच्छय ) पुछ्या वगर; नहि पुछीने न पूछ कर, विना पूछे. Without asking, without having asked वव० ८, १४, निसी० २, ४५, १४, ५;—चारि पु० (—चारिन् ) गशुने पुछ्या विना क्षेत्रातरमा विचरनार साधु, पांयमा निग्रहस्थानने प्राप्त धयेद. गण से विना पूछे क्षेत्रान्तर में विचरने वाला साधु, पाँचवें निग्रहस्थान को प्राप्त. an ascetic who wanders in another place without asking his bro-

thers of the same order; one who has attained the 5th stage of Nigraha-Sthāna. ठ० १, १;

**अणावाह.** पुं० ( अनावाध-न विद्यते आवाधा-पीडा यत्र तदनावाधम् ) स्वाभाविक सुख; मोक्ष सुख; परमानंद. स्वाभाविक सुख; मोक्षसुख; परमानंद Natural happiness; highest bliss. उक्त० ३५, ७; ठ० १०, ( ३ ) आधा-पीडा रहित. पीडा रहित. free from pain or misery. सु० च० ३, १०४; वव० ८, १३;—**सुह.** न० (-सुख) आधा-पीडा रहित सुख; अपाधित सुख; मोक्ष सुख; वाधा रहित सुख; मोक्ष सुख. eternal and unobstructed bliss दस० ६, १, १०,

**अणाभियोगिय.** पुं० ( अनाभियोगिक ) स्वतंत्र देव, जेतो दोष स्वाभी-नायक नथी तेवो देवता स्वतंत्र देव; जिसका कोई स्वामी न हो ऐसा देव. An independent deity. भग० ३, ५;

**अणाभोग.** पुं० ( अनाभोग ) ज्ञेयभ्रंश; अज्ञान अज्ञान; वेखवर; अज्ञान. Ignorant ओघ० नि० २४१; भग० ७, ६; २५, ७, ठ० ४, १; प्रव० १६५; ( २ ) अत्यन्तविस्मृति-भ्रंशो जे ते अत्यन्त विस्मृति-भूल जाना. extreme forgetfulness. आउ०—**गय.** त्रि० ( -गत ) अनाभोगपणाने-अज्ञानपणाने पामेल; ज्ञेयभ्रंश वेखवर ignorant of; unconscious of. क० प० ५, ३०—**ज्झाण.** न० (-ध्यान) अत्यन्त विस्मरण थयानुं ध्यान-लान आवुं ते; जेभ प्रसन्नयु रोज्झिने विस्मरण थयेल ततनीयादगिरी थर्ध. अत्यन्त विस्मरण होने वाली बात का ध्यान आना-जिस प्रकार प्रसन्नचंद्र राजर्षि को विस्मृत व्रत का स्मरण हुआ या recollection of extreme

forgetfulness, as in the case of the king-saint Prasannachandra who remembered that he had forgotten a vow taken. आउ०—**सिञ्चित्तिय.** पुं० (-निबर्तित) अज्ञानपणाने निपणुं. अज्ञानता से उत्पन्न. unconsciously performed. ठ० ४, १; भग० १, १; प्रव० ११६८;—**पडिसेवणा.** स्त्री० (\*-प्रतिसेवना-प्रतिसेवन) अज्ञानपणाने दोष दोष सेवणे ते. अनजानपन से किसी दोष का सेवन करना. incurring a sin unknowingly. ठ० १०;—**वउस.** त्रि० (-बकुश) अज्ञानपणाने दोष लगाने निबंधो-साधुविशेष. अनजानपन से दोष लगाने वाला बकुश प्रकार का साधु. a kind of an ascetic ( Bakuśa ) monk unconsciously running into sin भग० २५, ६; ठ० ५, ३;—**भाव.** पुं० (-भाव) अज्ञानपणाने थयुं ते; अज्ञानपणाने. अनजानपन से होना; अज्ञानपन. condition of unconsciousness or listlessness. “ इय चरखरिम ठियाण होइ अणाभोगभावओ खलणो ” पंचा० १७, ४७;—**वत्तिय.** स्त्री० ( -प्रात्ययिकी ) अज्ञानथी उपयोगशून्यपणाने भ्रंशे अन्धाय ते उपयोग विना अज्ञान से जो कर्म बन्ध हो वह; उपकरण; के लेने या रखने से जो कर्म बन्धता है वह. incurring of Karma by unwariness through ignorance. अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा परणत्ता, तंजहा-अणाउत्तप्रायणया चैव अणाउत्तपमज्जणया चैव ” ठ० २, १;

**अणामंतिय.** सं० क० अ० ( अनामन्त्य ) आमन्त्र्य विना; पुण्या विना. विना पूछे. Without having asked; without asking. निसी० २, ४५; १४, ५; आवा० २, १, ६, ५४; वव० ८, १४;

**अणामिय.** त्रि० ( अनामिक ) नाम विनातुं, जेतुं इध नाम पाठ्युं न होय ते विना नाम का. Nameless तंडु०—वाहि पुं० (—व्याधि) नाम वगरेना रोग, असाध्य रोग विना नाम का रोग, असाध्य रोग a nameless-incurable disease तंडु०

**अणाय.** पुं० ( अनात्मन् ) आत्माथी लिन पदार्थ; ०३ आत्मा से भिन्न पदार्थ, जड. Matter as distinguished from soul सम० १;

**अणायंबिल** त्रि० ( अनाचामस्त ) आयं-पिल विनातो; आयंपिल-तपविशेष जेने नथी ते. आयंबिल नामक तपविशेष से रहित Devoid of Āyambila—a kind of austerity आव० ६, ६,

**अणायग** पुं० ( अनायक—न विद्यतेऽन्यो नायकोऽस्येत्यनायक ) जेते डार्ध नायक नथी जेवे; स्वतंत्र, चक्रवर्ती वगेरे नायक रहित, स्वतंत्र, चक्रवर्ती वगेरह One who owns no supremacy; independent, a sovereign ruler etc. दसा० ६, १, ११, निसी० ८, १२; सम० ३०; सूय० १, २, ९, ३;

**अणाययण** न० ( अनायतन ) साधुने रहेवा योग्य स्थान नहि, नाटकशाळा, वेश्यागृह वगेरे साधु के रहने के अयोग्य स्थान, नाटक शाला, वेश्यागृह आदि A place unworthy of an ascetic to live in e. g. a theatre, a house of prostitute etc परह० २, ४; दस० ५, १, १०, ( २ ) पासत्था वगेरेने उतरानुं स्थान शायिलाचारि आदि के उतरने (ठहरने) का स्थान a lodging place for Pāsathās ( ascetics who have transgressed the rules of asceticism ) etc ओव०

**अणायर.** पुं० ( अनादर ) तिरस्कार; अपमान. तिरस्कार, अपमान Insult, disregard प्रव० १२२२; पि० नि० २०३;

**अणायरण्या** स्त्री० ( अनाचरणता ) आवर-वा योग्य नहि ते; माया अने क्पायनु पर्याय नाम; गौणभोहनीय कर्मना अेक भेद आचरणा के अयोग्य, माया और कषाय का पर्यायवाची नाम; गौणमोहनीयकर्म का एक भेद. Unfitness for performance; a synonym for Māyā. ( deceit ) and Kasāya, a variety of Gauṇa Mohaniya—Karma सम० १२,

**अणायरिय** पुं० ( अनार्य ) आर्य नहि ते; अनार्य, इ२ आर्यत्व रहित; अनार्य, क्रूर. A Non-Ārya, a barbarian, a cruel person आया० टी० १, ४, २, १३३, निसी० १६, १८,

**अणायरिय** त्रि० ( अनाचर्य ) आचरवा योग्य नहि आचरण के अयोग्य Unworthy of performance “अणायरियमज्जाण, आसइत्तु सहसु वा” दस० ६, १४,

**अणायया** पुं० ( अनात्मन्—न आत्मा अनात्मा ) ०३ पदार्थ, अशुच जड पदार्थ, निर्जीव A material substance, non-soul “एणे अणायया” सम० १; (२) पोता शिवाय, पर; थीजे अपने सिवाय; दूसरा other than one'sself “अणाययाए अवक्कमइ” भग० १, ४,—वाइ. पुं० (—वादिन्—आत्मान वदितुं शीलमस्येत्यात्मवादी नात्मवादी अनात्मवादी ) आत्मानुं अस्तित्व न मान-नार, नास्तिक आत्मा का अस्तित्व न मानने वाला, नास्तिक one who disbelieves in the existence of the soul. (२) आत्माने क्षणिक, सर्वव्यापी या अणुमात्र जेभ विपरीतपणे माननार; आइ वेदांती, वगेरे आत्मा को क्षणिक, सर्वव्यापी या अणु-

मात्र मानने वाला; बौद्ध, वेदान्ती वगैरह.  
a Vedāntī, a Bauddha etc. hav-  
ing false notions about the  
nature of the soul i. e. those  
who believe it as transitory,  
all or partly pervading आया०  
टी० १, १, १, २,

**अणायण**, न ( अनादान ) अकारण; अकारण।  
अभाव कारण का अभाव; अकारण।  
Absence of reason “ अणायणमेयं  
अभिनाहिसिज्जासणियस्स ’ कप्प० ६, ५४,  
**अणायार** पुं० ( अनाचार ) साधु के श्रावकना  
आचार व्यवहारने अंग, पञ्चखाण्डी उद्धृत  
उद्धरण करवुं ते साधु अथवा श्रावक के आचार  
व्यवहार का भंग; पञ्चखाण की सीमा का उल्लं-  
घन करना. Breach of right conduct  
on the part of a Jaina layman  
or an ascetic, transgression  
of Pachchkhāṇa. आव० ४, ६, ठ०  
३, ४, ( २ ) साधुते न आचरवा योप्य-पर  
अनाचीर्णमानो गमे ते अेक. वधुभाटे लुभ्ये  
‘अणाहयण’ शब्द साधु के आचरण न करने  
शोभ्य-पर अनाचीर्णों मे से कोई भी एक.  
अधिक के लिये देखो “ अणाहयण ” शब्द  
unworthy of performance for  
an ascetic “ एण्हिं दोहि ठायेहि,  
अणायारं तु जाणण् ” सूय० २, ५, ३;  
“ अणायारं परकम्म, नेव गूहे न निह्वे ”  
दस० ८, ३२; ६, २७, आया० २, ४, १, १३२,  
पि० नि० १७६;—उभारण. न० ( -ध्यान )  
दुष्टाचारनुं चितवणुं ते दुष्टाचार का चिंतन  
करना. contemplation of evil con-  
duct आड० ५०३;—सुय ( -श्रुत ) सुयग-  
अगता थीअ श्रुतस्कंधना पायमा अधयननुं  
नाम, के लेभा अनेकांतवादनुं समर्थन करता  
आचारनुं देवी रीते पालन करवुं अने अना-

आरनेो देवी रीते त्याग करवो ते पताचुं छे.  
सूत्रकृतांग के दूसरे श्रुतस्कंध के पांचवें  
अध्याय का नाम, जिसमें अनेकान्तवाद का  
समर्थन करते हुए यह बतलाया है कि, आचार का  
पालन और अनाचार का त्याग किस प्रकार  
करना चाहिये. the fifth chapter of  
the second Śrutaskandha of  
Sūyagadāṅga establishing  
Anekāntavāda and showing  
the manner of observing right  
conduct and that of avoiding  
a wrong one. सूय० २, ५, ३३;

**अणायवि**. त्रि० ( अनातापिन् ) आतापना  
वगेरे परिसह सहन न करनार साधु; शीत,  
उष्ण वगेरे सहन न करनार, अनातापी  
आतापना वगैरह परीषह सहन न करने वाला  
साधु, शीत, उष्ण वगैरह सहन न करने  
वाला ( An ascetic ) not enduring  
heat, cold etc ठा० ४, ३;

**अणारंभ** पुं० ( अनारंभ ) श्रवणे उपद्रव न,  
करवो ते. जीव को न सताना Giving no  
pain or trouble to living things.  
“ सत्तविहे अणारंभे पण्यसे, तंजहा-  
पुढविकाइयअणारंभे जाव अजीवकाय-  
अणारंभे ” ठा० ७; ( १ ) त्रि० ( न विद्यते  
सावद्य आरंभो येषां ते तथा ) पापना सावद्य  
व्यापार रहित. पाप-सावद्य व्यापार से रहित.  
free from sinful operations.  
“अपरिगहा अणारंभा, भिक्खू तायां परि-  
व्वण्” सूय० १, १, ४, ३; भग० १, १; ५, ७; ८, १;  
—जीवि. पुं० ( -जीविन् ) सर्व आरंभणी  
निवृत्त थयेल साधु, सावधानुष्ठान अने प्रमाद  
रहित श्रद्धगी गाणनार. सर्व आरंभ से निवृत्त  
हुआ साधु, सावधानुष्ठान और प्रमाद से रहित  
जीवन बिताने वाला a Sādhu free  
from all sinful actions, one who

leads a life without negligence and sinful actions "आवन्तिप्रायसि अणारंभजीविणो तेषु" आया० १, २, १, १४६,—द्वारा न० (—स्थान) आरंभ रहित स्थान; सावध अनुष्ठाननी सर्वथा निवृत्ति पापानुष्ठान की सर्वथा निवृत्ति, आरम्भ रहित स्थान perfect freedom from all sorts of sin, a stage of character which is free from all sinful actions "एगंतमिच्छे असाहू तत्थयं जा सा सव्वतो विरई एस द्वायो अणारंभद्वायो आरिप" सूय० २, २, ३६,

अणारंभमाण. व० क० त्रि० (अनारम्भमाण) आरंभ न करतो आरंभ न करता हुआ. Not beginning, e g. a sinful action भग० ३, ३;

अणारद्ध. त्रि० (अनारद्ध) महापुरुषोंमें आचरेलुं नहि ते महापुरुषों ने जिसका आचरण न किया हो. Not practised by greatmen "आरंभे जं अणारंभे अणारद्धं च य आरंभे" आया० १, २, ६, १०३;

अणाराहय. त्रि० (अनाराधक) धर्मने विरुद्ध धर्म के विरुद्ध, धर्म का विरोधी One adverse to religion; a heretic "अणायवि अस्समिप धम्मस्स अणाराहप भवइ" ठा० ४, ३;

अणारिय त्रि० (अनार्य) न करथा योग्य काम करना, पापी, अन्यायी न करने योग्य काम को करने वाला; पापी, अनाचारी Doing unworthy deeds, sinful. भग० ३, ७; सूय० १, १, २, १०, जीवा० ३, ३, निसी० ६, १, ( २ ) अनार्य देशवासी, भेदध, क्रूर. अनार्य देशवासी, म्लेच्छ, क्रूर. a barbarian, a cruel man सूय० २, १, १३, सम० ३४, ओव० ३४, उत० ३४, २६, ( ३ ) न० भेदधने जानतुं

आचरण, असत् अनुष्ठान म्लेच्छ के योग्य आचरण, असद् अनुष्ठान conduct worthy of barbarian परह० १, १; ( ४ ) अनार्य भूमि, अनार्य क्षेत्र, अनार्य देश अनार्य क्षेत्र; अनार्य देश. a country of barbarians. प्रव० ६४,—द्वारा न० (—स्थान) सावध आरंभनुस्थान सावधारंभ का स्थान a place of sinful operations सूय० २, २, ३४,

अणारोहग. त्रि० (अनारोहक) लुओ 'अणारोहय' शब्द देखो "अणारोहय" शब्द. Vide "अणारोहय" भग० ७, ६; अणारोहय त्रि० (अनारोहक) थोद्धाथी रहित; लडवैया वगरनुं योद्धाओं से रहित. Without a soldier "अणारोहय अणारोहय" भग० ७, ६,

अणालंयण. न० (अनालम्बन) आलम्बनने अभाव, टेका नहि ते. आलम्बन का अभाव; असहारा. Absence of support परह० १, ३,—पइद्वारा त्रि० (—प्रतिष्ठान) टेकना पाया विना, आलम्बन-रहक वगरनुं आलम्बन (सहारा) के पाये विना का, टेक रहित without support परह० १, ३,

अणालस त्रि० (अनालस) न थोद्धावेत, आलापसंलाप न करेले जिसके साथ बात चीत न की हो Not talked to, not conversed with "पुच्छि अणालसेण आलविस्सप वा संलविस्सप वा" उवा० १, ५, ५६,

अणालस त्रि० (अनालस्य) आलस्य रहित आलस्य रहित Free from laziness or idleness गच्छा० १२६,

अणालस्स न० (अनालस्य) आलसने अभाव आलस्य का अभाव Absence of idleness. ( ० ) त्रि० आलस रहित, उधभी. आलस्य रहित; उयोगां free

from idleness; industrious.  
गच्छा० ४१; तंडु०—शिलय. न० ( -नि-  
लय ) उत्साहजुं धर; अडु उत्साही. उत्साह  
का स्थान; बहुत उत्साही. abode of  
enthusiasm; very enthusiastic.  
तंडु०

अणालसि त्रि० ( अनाहस्यिन्-नास्त्यालस्य  
मस्येति ) आलस्य विना. उद्यमी. Free  
from laziness or idleness. गच्छा०  
४१,

अणालाव पुं० ( अनालाप ) भुत्सित लाषणु-  
आलाप; अराय भोलवुं ते कुत्सित भाषण;  
खराब बोल चाल. Indecent speech.  
ठा० ७, १;

अणालिप्त- त्रि० ( अनालिप्त ) अणुभोलाव्यो.  
बिना बुलाया Not spoken to; not  
talked to. प्रव० ६५२;

अणालिद्ध- त्रि० ( अनालिद्ध ) आलिगन न  
दीधित आलिगन न दिया हुआ Not  
embraced प्रव० १५२;

अणालोद्भ्र-य त्रि० ( अनालोचित ) आलो-  
चना न करे; नेने पोताना दोष गुण पासे  
आलोच्या नथी ते गुरु के समाप जिसने अपने  
दोषों की आलोचना न की हो One who  
has his faults unconfessed to  
a preceptor ओव० ३८; भग० ३, ४;  
५, ६; ६, ३३; २०, ६, नाया० ध० दसा०  
१०, ३; नाया० १६;—अपडिकंत. त्रि०  
( -अप्रतिक्रान्त ) नेने गुणनी सभीपे दोष  
आलोच्या नथी अने ते दोषधी निवृत्त थये।  
नथी ते जो गुरु के समाप दोषों की आलोचना  
न करने के कारण, उन दोषों से निवृत्त न  
हुआ हो. one who is not freed  
from faults through confession  
to a preceptor. ओव० भग० १०, २;

अणालोक. न० ( अनालोक ) अज्ञान. अज्ञान.  
Ignorance. परह० १, ३;

अणालोयाविच्छा. सं० कृ० अ० ( अना-  
लोचयित्वा ) आलोच्या विना. बिना  
आलोचना किये. Without having  
reviewed; without reviewing.  
वव० ६, २०;

अणालरिय. त्रि० ( अनावृत ) ढांझा वगर्नुं. न  
ढका हुआ. Uncovered. भग० १५, १;

अणालाय. न० ( अनापात ) भाणुसनी आव-  
णव विनानुं स्थण, निर्जन स्थण. निर्जन स्थान;  
मनुष्य के आवागमन से रहित स्थान. A  
place unfrequented by man.  
“अणालाय असलोण अणालाय चव-  
होइ संलोण” उक्त० २४, १६; नाया० १६; भग०  
८, ६, संत्या० ६६, ओघ० नि० २६६; प्रव०  
७१६;

अणालिल. त्रि० ( अनाविल ) रागद्वेषरूपी  
मल रहित, स्वच्छ. रागद्वेषरूपी मल रहित;  
स्वच्छ. Clear, free from dirt in  
the form of passions. “धम्मो हरण  
बंभे, संति तित्थे अणालिले । असपसज्जलेसे”  
उक्त० १२, ४६; सूय० १, २, २, ७;

अणालिल. त्रि० ( ऋणालिल ) ऋणरूपी मल से मलिन Sullied with  
indebtedness आउ०—उभ्राण न०  
( -ध्यान ) ऋणदारनु थितयन-थिता.  
ऋणी की चिंता the anxiety of a  
debtor आउ०

अणालिलप्प. पुं० ( अनाविलात्मन् ) उपाय  
रहित आत्मा. कपाय रहित आत्मा Soul  
unsullied with passions. “अभयंकरे  
भिक्षु अणालिलप्पा” सूय० १, ७, २८;

अणालुट्टि स्त्री० ( अनावृष्टि ) अनावृष्टि, वरसा-  
दनी भोसभमां वरसाद न वरसे ते. अनावृष्टि;



वर्षा का अभाव; वर्षाश्रुतु मे वर्षा का न होना.

Drought. सम० ३४; जं० प० १, १०;

अणसत्र-य त्रि० (अनाशय) पूजा-महता-  
दिङ्ना आशय-अलिप्राय-लालसा वगरतो;  
द्रव्यथी समवसरणादि छांतां लावथी तेना  
अनाङ्गी-तीर्थकर पूजा-महतादि की  
लालसा रहित, समवसरणादि के होने पर भी  
भावसे उनकी आकाङ्क्षा से रहित-तीर्थकर  
Mentally unattacked e. g. a  
Tirthankara; not covetous of  
honour etc. “अणसण जते दंते, ददे  
आरयमेहुणे” सूय० १, १५, ११, (२) इक्षती  
अशा विनाने। फल की आशा से रहित.  
without any desire for the  
fruits of actions. अणसण जो उ  
सहेज कंटण” दस० ६, ३, ६;

अणसग त्रि० (अनश्वक) घोडा विनाजुं;  
अश्व रहित विना घोड़े का, अश्व से रहित.  
Devoid of horses. भग० ७, ६,

अणसच्छिन्न. त्रि० (अच्छिन्ननास) नेनुं नाक  
छेदायेनुं नथी ते जिसकी नाक छिदी हुई  
न हो. With unperforated nose.  
निसी० १४, ६,

अणसराण. त्रि० (अनासन्न) छेक पास नहि,  
अहु नछक नहि ते. जो बहुत नजदीक च हो.  
Not very near. “नाइदूरमणसणे,  
पंजली पडिपुच्छई” उक्त० २०, ७; १, ३३;

अणससि स्त्री० (अनासक्ति) आसक्तिने  
अभाव. आसक्ति का अभाव. Absence of  
attachment भग० १, ६,

अणसव त्रि० (अनाश्व) आश्रव-कर्मबंध  
रहित. आश्रव-कर्मबंधसे रहित Free from  
the influx of Karma “अणसवे  
अममे अकिचये” ओव० भग० २५, ६,  
(२) आश्रवने अभाव-संवर. आश्रव का

अभाव. stoppage of Karma. परह०  
२, १; उक्त० ३०, २; (३) पुं० स्त्री०  
शुश्र्ना वयन उपर लक्ष्य न आपनार; शुश्र्ना  
आदेश न सांलग्नार गुरुके वचनों पर लक्ष्य न  
रखने वाला, गुरु का आदेश न सुनने वाला.  
one who does not pay heed  
to the instructions of the Guru  
or preceptor. “अणसवा थूलवया  
कुसीजा” उक्त० १, १३; (४) पुं० न० आश्रवना  
अभाववाणी महाव्रत आदि. आश्रव के  
अभाव वाले महाव्रत आदि. Mahāvratas  
etc which arrest Āśrava or  
Karmic influx. आया० १, ४, २, १३०;

अणसाइज्जमाण. त्रि० (अनास्वाद्यमान)  
रसेन्द्रियद्वारा अहण्य न थतुं-न यभातुं.  
रसनेन्द्रिय के द्वारा न चखा जाने वाला. Not  
being tasted. भग० १, १,

अणसाएमाण. व० क० त्रि० (अनास्वादयत्)  
नयाभतो न चाखता हुआ Not tasting.  
नाया० १८, (२) नवाभतो. न चाहता हुआ.  
not longing for. “परस्स लाभं  
अणसाएमाणे” उक्त० २६, ३३,

अणसायअ. त्रि० (अनाशातक) अशातना-  
आधा-पीडा न करनार अशातना-पीडा न  
करने वाला Not giving pain. आया०  
१, ६, ५, १६५;

अणसायणा स्त्री० (अनाशातना) तीर्थ-  
करादिङ्ना धर्मनी अशातना-हीलना न  
करवी ते, दर्शनविनयने अक लेद, धर्मनी  
लडित, अहुमान करवे ते तीर्थकरादि के धर्म  
की अवहेलाना न करना, दर्शनविनय का एक  
भेद, धर्म का आदर करना Abstaining  
from disrespect towards the  
religion of Tirthankaras etc,  
a variety of Darśanavinaya  
अ० ७,—चिराय. पुं० (-विनय) लुंअ

‘अणासायणा’ शब्द देखो ‘अणासायणा’ शब्द Vide ‘अणासायणा’. ठा० ७;

**अणासास.** पुं० ( \* अनाश्वास-अविश्वास ) अविश्वास; अभरोसा. अविश्वास; अभरोसा. Want of confidence; distrust. विशेष० १६३४;

**अणासिय.** त्रि० ( अनाशित ) लुप्ते। ‘अणासिय’ शब्द देखो ‘अणासिय’ शब्द. Vide ‘अणासिय’ “अणासिया नाम महासियात्ता, पागडिभणो तत्थ सया सकोवा ” सूय० १, ५, २, २०;

**अणासिय** त्रि० ( अनाशित ) आश्रय रहित. आश्रय रहित. Unsupported; support-less. विशेष० ८६३;

**अणासेवणा.** स्त्री० ( अनासेवना ) दौषनी सेवनाते। अभाव, अतिचारादि न सेवना ते. दोष के सेवन का अभाव; अतिचारादिकों का सेवन न करना. Freedom from sinfulness. आया० १, ८, ३, २१०;

**अणाह.** त्रि० ( अनाथ ) अशरण; अनाथ; नाथ वगैरते। अशरण, अनाथ Helpless. परह० १, १; नाया० ८; ६; १३, ( २ ) रंक; बिखारी. रंक; भिखारी. beggarly; indigent. नाया० ८; ( ३ ) अनाथी मुनि, के लेशे श्रेष्ठिक राजनी पासे अनाथता अने सनाथताने २५४ पुलासे करी श्रेष्ठिक राजने पणु पोते अनाथ होवानी भात्री करापी धर्म पभाउये। तेनुं विस्तृत यरित्र उत्त० २० भा अध्ययनभा छे. अनाथी मुनि, जिसने श्रेष्ठिक राजा के आगे अनाथता और सनाथता का स्पष्ट विवेचन करके श्रेष्ठिक को भी यह विश्वास करा दिया था कि, वह स्वयं भी अनाथ है, इसका विस्तृत वर्णन उत्त० के २० वें अध्याय में है. Anāthī Muni, who clearly explained the meaning of poverty and wealth to king

Śreṇika and convinced him of his poverty so that he was converted. “अणाहोमि महाराया, नाहो मज्ज न विज्जइ। अणुकंपयं सुहिं वावि, कंची णाहि तुमे महं॥ तत्रो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो, एवं ते इद्धिमंतस्स, कंहाहो न विज्जइ ॥ होमि णाओ भयंतायां, भोगो भुंजाहि संजया” उत्त० २०, ६; १०; ११;—पवज्जा स्त्री० (—प्रवज्या) उत्तराध्ययन सूत्रना २० भा अध्ययननुं अपर नाम. उत्तराध्ययन सूत्र के बीसवें अध्याय का दूसरा नाम. another name of the twentieth chapter of Uttarādhyayana Sūtra. उत्त० २०;—पिह न० (—पिह) अनाथने भाटे तैयार करेको पोरक. अनाथ के लिये तैयार किया हुआ भोजन food prepared for the helpless poor. निसी० ८, १६;

**अणाहया.** स्त्री० ( अनाथता ) अनाथपणुं. अनाथपन. Helplessness; poverty. उत्त० २०, २३;

**अणाहरण.** न० ( अनाहरण ) धरवाने-धरी रा-भवाने अशक्त। आधार के अयोग्य. Unable to hold or support. भग० १८, ३;

**अणाहार.** पुं० ( अणाधार ) करदार; देशदार देनदार, ऋणी A debtor. विवा० १, अणाहार पुं० ( अनाहार ) आहारने अभाव. आहार का अभाव Absence of food. भग० १, १, १८, ३, क० गं० ३, २३, प्रव० १३३३;—भाव. पुं० (—भाव) अनाहारपणुं अनाहारपन. lack of food भग० १८, १;

**अणाहारअ-य.** पुं० स्त्री० ( अनाहारक ) आहार (कवल आहार) रहित देवादि. आहार ( आसरूप आहार ) रहित देवादि. One who lives without food e. g. gods etc. विशेष० ४१२;

**अणाहारग.** पुं० ( अनाहारक ) अनाहारी  
 ७५; आहार न लेना ७५; ७५ न्यारे विग्रह  
 गतिभां, केवलसमुद्घातभां के यौद्धमे गुणुक्षणे  
 होय त्तारे अणुहारी होय, सिद्धभगवान्  
 पशु अणुहारी होय. अनाहारी जीव, आहार  
 न लेने वाला जीव, जीव जिस समय  
 विग्रहगति में, केवलसमुद्घात में या चौदहवें  
 गुणस्थान में होता है तब वह अनाहारी  
 होता है, सिद्धभगवान् भी अनाहारी होते हैं.  
 A soul living without food e. g.,  
 a soul in Vīgrahagati, Kevala-  
 smudghāta and the fourteenth  
 Guṇasthāna or Siddha state  
 “योरहया दुविहा पय्यस्ता, तंजहा-आहारगा  
 धेव अणाहारगा ” ङ० २, २, भग० ६, ४,  
 ७, १, ८, २, ११, १; १८, १, २५, १,  
 ३५, १, जीवा० ३;  
**अणाहारिय** त्रि० ( अनाहृत ) भूतकालनी  
 भावानी क्रियाथी परिणाम पायेले नहि ते  
 भूतकाल की खाने की क्रिया से परिणाम  
 नहीं पाया हुआ Undigested (food).  
 भग० १, १;  
**अणाहिद्व** पुं० ( अनाधृष्ट ) वसुदेव राजथी  
 थयेले धारिणी राणीनो पुत्र, केनेनो अधिकार  
 अंतगड सूत्रना त्रीण वर्गेना तेरमा अध्ययन-  
 मा छे वसुदेव राजा की धारिणी राणी का  
 पुत्र, जिसका अधिकार अंतगडसूत्र के  
 तीसरे वर्ग के तेरहवें अध्याय में है. Son of  
 queen Dhāriṇī by king Vasu-  
 deva mentioned in the  
 thirteenth chapter of the third  
 section of Antagada Sūtra अंत०  
 ३, १३; (२) अंतगड सूत्रना त्रीण वर्गेना  
 तेरमा अध्ययननु नाम अंतगडसूत्र के तीसरे  
 वर्ग के तेरहवें अध्याय का नाम. name of  
 the thirteenth chapter of the

the third section of Antagada  
 Sūtra. अंत० ३, १३;

**अणाहिद्वि.** पुं० ( अनाधृष्टि ) लुओ उपयो  
 शब्द. देखो “ अणाहिद्व ” शब्द. Vide.  
 “अणाहिद्व”. अंत० ३, १३.

**अणाहुअ** त्रि० ( अनाहृत ) आभंत्रथु न  
 करेले, नोत३ न दीधेले, भुनि आभंत्रथु विना  
 आहार देवा लय भाटे ते अणुहृत-अना-  
 भंत्रित विना नोते के; अनाभंत्रित. Un-  
 invited, e.g. an ascetic, because  
 he goes to take food uninvited.  
 भग० ७, १;

**अणिएअ-य.** न० ( अनीक ) सैन्य, ६५;  
 ६५३२; ई०; सेना; फौज An army.  
 नाया० ८, पञ्च० २, जं० प० ४, ७३;  
 सू० प० १८, सु० च० २, ६४,

**अणीइ** स्त्री० ( अनीति ) लुओ ‘अणीइ’  
 शब्द. देखो “अणीइ” शब्द Vide  
 “अणीइ”. नाया० १,—पत्त. त्रि० (-पत्र)  
 लुओ ‘अणीइपत्त’ शब्द देखो “अणीइ-  
 पत्त” शब्द vide “अणीइपत्त” नाया०  
 १;

**अणीइय** त्रि० ( अनित्य ) अनित्य, चिरंकाण  
 नहि रहेनार. अनित्य; चिरकाल तक न टिकने  
 वाला Transitory आया० १, ५, २, १४७;

**अणीइय** पुं० ( अनितिक-इतिशब्दो नियतरूपो-  
 पदर्शनपर, ततश्च न विषते इतिर्यत्रासाव-  
 नितिकः ) नेनु नियत स्वरूप नथी ते;  
 संसार जिसका नियत स्वरूप न हो, संसार.  
 The world, that which has no  
 fixed form भग० ६, ३३;

**अणिएअचारि** पुं० ( अनियतचारिन्-अनि-  
 यतमप्रतिबद्ध चरितुं शीलमस्याऽसाव-  
 नियतचारी ) अप्रनियन्ध विहारी, अप्रनि-  
 यन्धपणु विहार करनार. विना प्रतिबन्ध

के विहार करने वाला One with unrestricted and unobstructed movements. "सं भूइपरणे अणिएअचारी, ओहंतरे धीरे अणंतचक्खु" सूय० १, ६, ५; "अखिले अणिकट्टे अणिएअचारी, अभयं करं भिक्खु अणाविलप्पा" सूय० १, ७, २८;

**अणिगाल.** त्रि० (अनङ्गार) धंगाल दोषधी रहित. अग्नि के दोष से रहित Free from the fault of having embers परह० २, १;

**अणिद** त्रि० (अनिन्द्र-नास्तीन्द्रो यस्मिन् सोऽनिन्द्र.) धं विनातुं विना इन्द्र के. Devoid of Indra भग० ३, १,

**अणिदण्डिज्ज.** त्रि० (अनिन्दनीय) नि-दण्ड इत्या योऽय नडि; दूषण देवा योऽय नडि ते. दूषण देने के अयोग्य. Uncensurable, unrepachable जीवा० १;

**अणिय** त्रि० (अनिन्दित) अनिन्दित, जेनी नि-दण्ड न थर् शके ते अनिन्दित, जिसकी निन्दान हो सके. Uncensurable, unrepachable. उक्त० १२, २० (२) किन्नर नामे व्यतर देवनी पांचमी जत किन्नर नामक व्यंतर देव की पाँचवीं जाति. the fifth kind of Vyantara gods called Kinnaras पञ्च० १,—अंगी स्त्री० (-अङ्गी) दूषण वगरना अंग्वाणी स्त्री; जोऽ पांपणु वगरनी स्त्री दूषण रहित अंगों वाली स्त्री a woman without any defect in the body "भदेति णामेण अणियगी" उक्त० १२, २०;

**अणिय पुं०** (अनिन्द्रिय) सिद्धभगवान् तथा देवगी; धन्द्रिय तथा तेना उपयोग विनाना सिद्धभगवान् तथा केवली; इन्द्रियों से रहित A Siddha and a Kevalī, free from senses or organs and their

processes. विशेष० १८६५; भग० १, ७; २, १०; ८, २; १०, १; ११, १; १६, ८; २५, ३; ३५, १; ठा० २, १; (२) त्रि० अपर्याप्तो; जेने धन्द्रियप्रण व्यांधी नथी ते अपर्याप्त जीव, इन्द्रियों की पूर्णता से रहित जीव with senses yet undeveloped (Aparyāpta).

"शेरइया दुविहा परणत्ता, तंजहा-सइंदिया चव अणियदिया चव जाव वेमाणिया" ठा० २, २; प्रव० १४४,—पपएस. पुं० (-प्रदेश) सिद्धज्जना प्रदेश. सिद्धजीव का प्रदेश. molecules of the Siddha souls. भग० १०, १; ११, ११,—पपएस पुं० (-प्रदेश) लुओ 'अणियदियएस' शब्द देखो "अणियदियएस" शब्द. vide 'अणियदियएस'. भग० १, १; ११, ११;

**अणिय** स्त्री० (अनिन्दिता) उर्ध्वलोका वासी छठी दिशाकुमारी ऊर्ध्वलोक बासी छठी दिशाकुमारी The sixth Disā kumārī residing in the upper regions. ठा० ८;

**अणिकंप.** त्रि० (अनिष्कम्प) अनिश्चल; यदे अेवा; पदिसड आदिथी उगे तेवा. निश्चलता रहित, परिषह आदि से गिरजाने वाला. Not firm; one who flinches from danger आया० २, २, ३, ८८;

**अणिकेय पुं०** (अनिकेत-न विद्यते निकेतो गृहं यस्य) धर वगरतो (साधु) बिना घर का (साधु). One who has no house, an ascetic "अणिकेओ परिन्वए" उक्त० २, १६;

**अणिकट्ट** त्रि० (अनिकृष्ट) स्वथी स्थूल शरीरवागो अने लावथी ध्यायने वश नथी धर्या ते. द्रव्य से स्थूल शरीर वाला. और भाव से कषायों को जिसने वश में न किया हो. One who is physically developed but has not been able to

conquer passions ( Kasāyas )

ठा० ४, ४;

**अशिक्षकावाह** पु० ( अनेकवादिन्-सत्यपि कथञ्चिदेकत्वे भावानां सर्वथाऽनेकत्वं वदती-त्यनेकवादी ) पदार्थैर्भां दार्ष्ट्य अपेक्षाये अेकपात्यु ङोषा छतां पत्यु तेने न जेत। सर्वथा पदार्थैनु अनेकपात्यु स्थापित करनार वादी, पदार्थों में किसी अपेक्षा से एकत्व होते हुए भी उसे न देख कर सर्वथा पदार्थों का अनेकत्व स्थापित करने वाला वादी One not recognising unity in substances from any point of view and maintaining absolute difference among them, one inspite of the existence of similarity in substances from a certain point of view establishes the fact of absolute difference among them ठा० ८,

**अशिक्षित** त्रि० ( अनिक्षित ) त्याग करेड नडि; नापेड नडि विना त्यागा हुआ, Not abandoned, not thrown नाया० १; १३; १६, भग० ६, ३१, १७, २; २०, ६, ( २ ) अविश्रान्त; विश्राम वगरनुं; निरन्तर, सदा. विश्राम रहित; निरन्तर, सदा un-interrupted; ceaseless, without rest नाया० १; १६, भग० २, १;

**अशिक्षित्ता** सं० कृ० अ० ( अनिक्षित्य ) भूक्या विना विना छोडे Without placing, without having placed वेय० ४, १६, २०,

**अशिक्षण** पु० ( अनग्न-न विद्यन्ते, नगनास्तत्कालीना जना येभ्यस्तेऽनगना ) अडर्भभूमिना भनुष्य-जुगलियाते वस्त्र पुरां पाडनार डेव-वृक्ष भोगभूमि के जुगलिया मनुष्यों को वस्त्र देने वाला कल्पवृक्ष Kalpavrikṣa 01

desire-yielding tree supplying garments to Jugalyās, the denizens of the land of inaction जीवा० ३, ३, सम० १०, जं० प० २, २०,

**अशिक्षाम** त्रि० ( अनिकाम ) परिमित परिमित. Limited ( २ ) तुच्छ तुच्छ, हलका inferior उक्त० १४, १३,—**सोफ्रव** त्रि० ( -सौख्य ) तुच्छ सुख, थोडुं-अल्प सुख. तुच्छ सुख; थोडा सुख. scanty happiness “ अशिक्षामसोक्त्वा, संसार-मोक्त्वस्त्व-विपक्त्वभूया ” उक्त० १४; १३;  
**अशिक्षुहिय** त्रि० ( अनिगूहित ) गोपवेड नडि विना छिपाया हुआ Not concealed पंचा० १५, २७; १६, ३४;—**जलवीरिय** पु० ( -बलवीर्य ) जेजे अश-शरीरसामर्थ्य अने वीर्य-चित्तमे उत्साह-अनदरनुं सामर्थ्य गोपव्या नथी ते जिसने बल-शरीर का सामर्थ्य और वीर्य-चित्त का उत्साह-अंतरग का सामर्थ्य नहीं छुपाया हो वह one who has not concealed his physical and mental powers पचा० १५, २७; प्रव० १५६१,

**अशिक्षगय** त्रि० ( अनिर्गत ) नडि नीडिजेड नहो निकला हुआ Not come out, not started. विशेष० २३६, भग० १४, १,

**अशिक्षगह** पु० ( अनिग्रह-अविद्यमानो निग्रह-इन्द्रियनियन्त्रणात्मकोऽरुधेति ) जेने इन्द्रियना निग्रह-इन्द्रियो वश नथी ते जिसने इन्द्रियों का निग्रह न किया हो, जिसने इन्द्रियोंको वश में न किया हो One who has not obtained his senses परह० १, ४, ( २ ) त्रि० उद्धत, स्वच्छडी उद्धत, स्वच्छन्दचारी. selfwilled, insolent. परह० १, २; ( ३ ) न० अगीआरुभु गौण अथम-विपय-येवन ग्यारहवों गैश अद्रमहर्च्य-विपयंनयत्,

Gauna Abrahma, sexual enjoyment. परह० १, ४,

अणिच्च. त्रि० ( अनित्य ) अनित्य, क्षणभंग-  
शुभ्र; नाशयंत, नश्वर नाशवान्; क्षणभंगुर  
Transitory ओव० २०; ३४; पि० नि०  
१४१; भग० ६, ३३; नाया० १, परह० १, ५;  
आया० १, १, ५, ४६; मूय० १, ६, ४,  
—जागरिया स्त्री० ( —जागरिका )  
संसारतुं अनित्य स्वरूप स्थितवपु ते संसार  
के अनित्य स्वरूप का चिंतन करना think-  
ing upon the transitory nature  
of the world “ अणिच्चजागरियं  
जागरंति ” भग० ३, १ १५, १, निर० ३,  
३; —भावणा. स्त्री० ( —भावना ) संसार-  
तु स्वरूप अनित्य छे ऐवी लावना लावनी  
ते संसार का स्वरूप अनित्य है, ऐसी भावना  
करना. meditation upon the  
non-permanent nature of the  
world सूय० १, २, १, ५;—मर्यादास्वरूप  
पुं० ( —मर्यादास्वरूप ) अनियत मर्यादा  
रूप इत्य-वच्येना आदीश तीर्थक्षेत्रेना साधु-  
ओतो आचार अनियतमर्यादारूप कल्प-वीच  
के बाबास तीर्थकरों के साधुओं का आचार  
the practices of the Sādhus  
(monks) of the 22 intermediate  
Tirthankaras, scripture in  
which rules of conduct are not  
precisely fixed पंचा० १७, ७,

अणिच्चय त्रि० ( अनित्यक ) नाशयंत;  
धिरडाण नहि रहेना? नाशवान्; अनित्य  
Transitory. आया० १, १, ५, ४६,

अणिच्चयत् स्त्री० ( अनित्यता ) अनित्यपणु,  
नश्वरपणु अनित्यपना, नश्वरपना Transi-  
toriness. मूय० १, २, १, ५,

अणिच्चारण्येहा स्त्री० ( अनित्यानुपेक्षा )  
धन, पुत्र, शरीर वगैरे सर्व अनित्य छे, ऐवी

लावना धन, पुत्र, शरीर आदि सब अनित्य  
हैं, ऐसी भावना. Meditation upon  
the impermanence of wealth,  
sons, body etc. ठा० ४, १, भग०  
२५, ७,

अणिच्च्यंत. व० कृ० त्रि० ( अनिच्छत् )  
न भच्छतो, न आहतो इच्छा न करता हुआ;  
न चाहता हुआ Not wishing. विशेष०  
२०१, सु० च० १, ३६०;

अणिच्चिद्य. त्रि० ( अनीप्सित ) भ्रष्ट  
नहि; अनिष्ट अनिष्ट, अनिच्छित Not  
desired, evil, पन्न० २८;

अणिच्चिद्यत्ता स्त्री० ( अनीप्सित-ता ) पाभ-  
वानी अनिच्छा पाने की अनिच्छा-प्राप्त  
करने की इच्छा का न होना. Absence of  
desire to get भग० ६, ३;

अणिच्चिरण त्रि० ( अनिर्जाण ) छुवप्रदेशथी  
छुटा न पडेल इर्मपुद्गल; निर्जरा थयेल  
नहि जीवप्रदेश से न छूटा हुआ कर्म  
पुद्गल; जिसकी निर्जरा न हुई हो, ऐसा कर्म-  
पुद्गल-परमाणु Karmic atoms not  
worked off from the soul by  
Nirjarā. भग० ६, ३, कप्प० २, १८;

अणिच्चमाण त्रि० ( अन्धीयमान ) अनुसरतुं;  
अनुसरवामा आवतु जिसका अनुसरण  
किया जाता हो Being followed  
विवा० १,—मग्न त्रि० (—मार्ग ) अनुस-  
रवामा आवे छे मार्ग-पथ लेते ते वह  
मार्ग जिसका अनुसरण किया जाता हो  
which tenet is being followed  
“ मच्छिप्रा चहगरपठकरेण अणिच्चमाणमगो  
मियागामे ण्यंर ” विवा० १, नाया० १६,

अणिच्चूढ त्रि० ( अनिर्बूढ ) भेदात् अथभाथी  
संज्ञेपथे उद्धार इरेल नहि वह प्रथ में मं  
नक्षत्रप नही किया हुआ. Not epito-

omised, not summarised from a larger work. भग० १, ६,

अणिज्भाइत्ता सं० कृ० अ० ( अनिर्धार्य-  
चक्षुरव्यापार्येत्यर्थः ) यक्षुना व्यापार विना,  
आंभथी ज्ञेया विना आँखो से विना देखे  
Without seeing with the eye,  
without having seen with the  
eye. भग० ७, ७;

अणिष्ट. त्रि० ( अनिष्ट ) अनिष्ट, अप्रिय,  
अशुगमत्तुं. अनिष्ट, अप्रिय Unpleasant

“अणिष्टा भवन्ति णादिज्जे दुव्विणीया ”

परह० १, ३, भग० १, ५, ७, ३, २,  
६, ३३, १४, ५, ६; १६, ३, जीवा० १;

श्रोघ० नि० भा० २५, ३०६; ठा० २, ३;  
सम० प० २२७, नाया० १, ८; ६, १२, १४,

पञ्च० २८, ज० प० २, ३६, सु० च० २, ३१०,  
उवा० ८, २५६,—फल. त्रि० (—फल )

जेनु क्षल अनिष्ट छे ते अनिष्ट फल वाला  
resulting in evil पचा० ११, ३६;

—वयण. न० (—वचन ) अनिष्ट वचन,  
आक्रोश वचन अनिष्ट वचन, आक्रोश वचन

evil speech, cruel speech “अणि-  
ष्टवयणेहिं सप्पमाणा ” परह० १, ३;

—स्वर पु० (—स्वर ) अशुगमतेो स्वर-  
अथान् अप्रिय स्वर unpleasant

voice, sound भग० १, ७, ७, ६, ज०  
प० २, ३६;

अणिष्टतर त्रि० ( अनिष्टतर ) अति अनिष्ट;  
अतिशय अप्रिय. बहुत अनिष्ट, बहुत अप्रिय

Extremely unpleasant विवा० १,  
नाया० ८, ६, १२,

अणिष्टतरय त्रि० ( अनिष्टतर-क ) अति  
अनिष्ट अति अनिष्ट Extremely bad;

unpleasant नाया० ८ १६,  
अणिष्टविय त्रि० ( अनिष्टापित ) पृथुं न  
इरेल, असमाप्त, निष्ठा-समाप्तिने न पाभेत्

अपूर्णा, अवूरा Not finished. भग० ६,  
३३,

अणिष्टुवञ्च त्रि० (अनिष्टीवक) लुओ “अणि-  
ष्टुवञ्च” शब्द देखो “अणिष्टुवञ्च” शब्द

Vide “अणिष्टुवञ्च” परह० २, १,

अणिष्टुवञ्च त्रि० ( अनिष्टीवक ) मुभभांथी  
थुंअण्णया वगेरे न परह्वनार-इंइनार.

मुख में से थूक-कफ वगैरह न फेंकने वाला.  
Not spitting out cough, saliva

etc श्रोव० १६,

अणिद्धि स्त्री० (अनाद्धि) आमर्षोपधि आदि ल-  
ब्धिनेो अलाव, ऋद्धिनेो अलाव आमर्षोपधि

आदि लब्धियों का अभाव, ऋद्धि का अभाव.  
Absence of supernatural

powers like that of Amarsosa-  
dhi etc, absence of prosper-

ity नाया० ११, भग० १५, १,—पत्त  
त्रि० (—प्राप्त ) आमर्षोपधि आदि लब्धिने

प्राप्त थयेल नहि, लब्धि रहित आमर्षोपधि  
आदि लब्धि रहित having attained

without supernatural powers  
like that of Amarsosadhi etc.

भग० १४, ५,

अणिद्धिमंत त्रि० (अनद्धिमत्) लब्धिपंत नहि;  
ऋद्धिने प्राप्त थयेल नहि लब्धि रहित,

ऋद्धि रहित Without attaining  
supernatural powers; without

prosperity “ छुव्विहा अणिद्धिमता  
परयात्ता, तजहा-हेमवतगा हिरयणवतगा”

ठा० ६,

अणिगहवण न० (अनित्तवन) जेनी  
पाभे अभ्यास इथो डोय तेनु नाम न  
छुपावतु ते; ज्ञाननेो पाभेो आय०.  
जिमके पास अभ्यास किया हो उसका नाम  
न छिपाना, ज्ञान का पाँचवाँ आचार. Not  
concoaling the name of a

teacher, the fifth Āchāra of knowledge. पंचा० १२, २३;

अरिणहवमाण त्रि० (अनिन्दुवत्) भरी वात व धुपायतो. सत्य वात को न छिपाता हुआ.

Not concealing a truth नाया० १;

अरिणित्य त्रि० (अनित्य) अनित्य; क्षणभंगुर, नाशवंत अनित्य, क्षणभंगुर Transitory. आया० १, ५, २, १४७,

अरिणित्य. पुं (अनितिक-अनियत) लुभो "अरिणित्य" शब्द. देखो "अरिणित्य" शब्द Vide "अरिणित्य" भग० ६, ३३, दसा० १०, ६;

अरिणित्यं त्रि० (अनित्यंस्थ-असुं प्रकारमापन्नमित्यं, इत्थं तिष्ठतीतीत्यस्थं न इत्थंस्थमनित्यंस्थम् ) दैव दैविक प्रकार्थी न रहेनार, अद्वैदिक प्रकार्थी स्थितियां-अद्वैदिक संज्ञा, प्रसिद्ध संज्ञायां विलक्षण अलौकिक प्रकार की स्थिति वाला-अलौकिक संस्थान, प्रसिद्ध संस्थान से विलक्षण. One in a supernatural or extraordinary condition of existence "संज्ञायां अरिणित्यं, जरासरणविष्यमुक्तायां" श्रौ० ४४, ८, पञ्च० २; भग० २५, २, जीवा० १, विशेष० ३१७२;—संज्ञायां. न० (—संस्थान) अनियत संस्थान; अद्वैदिक-विलक्षण संज्ञा; सिद्धानु संस्थान-आधार अनियत संस्थान; विलक्षण संस्थान; सिद्धों का संस्थान-आकार. extraordinary or supernatural structure of the body or form of Siddhas जीवा० १;

अरिणित्य. स्त्री० (अनिदा) अन्धकारे डरेकी हिंसा; ज्ञान प्राणीने असावधानतामें मारना. ते अज्ञानपन से जो हुई हिंसा; ज्ञानने वाले प्राणी को असावधानी में मारना. Unconscious killing; killing a living being while it is

off its guard. भग० १६, ५; (२) अनिर्धारण; अयोक्त; अशुभपरपणुं. बे खबरपना; अनिश्चित. uncertainty; absence of positive knowledge. "पुढविकाइया सव्वे असरिणभूया अरिणित्यं वेययां वेदेति" भग० १, २; पञ्च० १; ३५;

अरिणित्यता. स्त्री० (अनिदानता) नियाणुं न करनारनो भाव; इलाशसा रहितपणुं; नरे, देवेत्यादिनी ऋद्धि न वांछनी ते फलाशा रहित भाव; नियाणा न करने का भाव; देवादिक की ऋद्धि की इच्छा न करना. Not desiring the prosperity of Indra etc; absence of an inclination for Niyāna ( e g., intense longing for the fulfilment of an avowed desire in future birth. ) "सव्वत्य भगवया अरिणित्यता पसत्या" ठा० ६; वेय० ६, १६; अरिणित्यस. त्रि० (अनिर्देश्य) शब्दधी न इही शब्दाय अणुं, अनभिदाप्य अनिर्वचनीय, शब्द से न कहे जाने योग्य. Indescribable; inexpressible in words, विशेष० २५२;

अरिणित्यस पु० (अनिर्देश) अमान्य; अस्वीकार. Denying the authority of; not accepting. उक्त० १, ३,—कर त्रि० (—कर) अमान्य करनार, इच्छुल न करनार. अमान्य करने वाला, कबूल न करने वाला. one who does not accept. "आर्याणिरिणित्यसकरे गुरुणामणुववायकारण" उक्त० १, ३;

अरिणित्य त्रि० (अनिष्पन्न) निष्पन्नं नदि; तैयार थयेतुं नदि. अनुत्पन्न. Not produced; uncooked. भग० १५, ११



**अणिमंतेमाण** ष० कृ० त्रि० ( अनिमन्त्रयत् ) नहि आमन्त्रतो; न नोत्तरतो; आमन्त्रणु न आपतो. नोता न देता हुआ; आमन्त्रित न करता हुआ. Not inviting; not giving an invitation. आया० २, २, ३, ६०;

**अणिमित्त.** न० ( अनिमित्त ) विना कारण; कारण विना. निना कारण, अकारण । Unreasonably, without any cause. नाया० ११;

**अणिमिस.** त्रि० ( अनिमेष ) आंभनो पलकारे भार्या वगरनुं. पलक न मारा हुआ Winkless; without twinkling. उत्त० १६, ६, नाया० ३, ८, भग० ६, ३३, ११, १०; १५, १; दसा० ७, १२; (२) ❀ वनस्पति विशेष + वनस्पति विशेष + a kind of vegetable. “ बहु अट्टिअं पोग्गलं अणिसं बहुकंटयं ” दस० ५, १, ७३,—रायण पु० ( -नयन-न विद्यते निमेषो येषा तानि अनिमेषाणि, अनिमेषाणि नयनानि येषा तेषानिमेषनयनाः ) ७ आंभनो पलकारे भारता नथी ते, देवता आँख के पलक न मारने वाला देव a god, with winkless eyes पंचा० १८, १६;

**अणिमुक्ख** पुं० ( अनिमोक्ष ) भोक्षनो अभाव. मोक्ष का अभाव Absence of

salvation. विशेष० २४६८;

**अणियट्टि.** न० ( अनिवर्त्तिन् ) मुक्ति भेजध्या विना निवर्त्ते नहि तेवुं ध्यान, शुक्लध्याननो त्रीजे भेद-पाथो. मुक्ति प्राप्त किये बिना उससे निवृत्त न हो ऐसा ध्यान; शुक्ल ध्यान का तीसरा भेद-पाया Meditation which does not cease without attaining salvation, the third variety or stage of Sūkladhyāna. “ सुहुमकिरिण्ण अणियट्टि ” ठा० ४, १; ओव० १०; उत्त० २६, ४१, पंचा० ३, २६, ( २ ) पुं० ७६ भो अह ७६ वीं ग्रह. the seventy-ninth planet. सू० प० २०; ठा० २, ३, ( ३ ) ङ्भूद्वीपना भरतक्षेत्रभां आवती योवीसीभा थनार २० भा तीर्थकर जवू द्वीप के भरतक्षेत्र की आगामी चौवांसी में होने वाले २० वें तीर्थकर the future twentieth Tirthankara of Bharata Ksetra in Jambūdvīpa in the coming Chovisī (cycle of Tirthankars) सम० प० २४१; —करण न० ( -करण ) समुद्रित प्राप्त करती वपत्ते रागद्वेषनी अंधिने भेदनार विशुद्ध अध्ववसायविशेष, ३ ७ अंधिने भेदा विना निवर्त्ते नहि ते करणविशेष सम्यक्त्व प्राप्त करते समय रागद्वेष की ग्रन्थि को भेदने वाला

ॐनोट—टीकाकारे पोग्गल शब्दने अर्थ भास अने अणिसने अर्थ मत्स्य इयों छे, पणु ते उचित लागतो नथी, कारण के आगण पाछण वनस्पतिविशेषने अधिकार छे टीकाकार पोते पणु ते वपतना पीण आचार्योने मत दर्शावता छे छे “ अन्ये त्वभिदधति वनस्पत्याधिकारात्तथाविधफलाभिधाने एते इति ”

+नोट—टीकाकार ने पोग्गल शब्द का अर्थ मत्स्य और अणिस शब्द का अर्थ मत्स्य किया है, परन्तु यह उचित नहीं प्रतीत होता, क्योंकि, आगे पीछे वनस्पति का वर्णन है और स्वयं टीकाकार भी उस समय के दूसरे आचार्यों का मत प्रकट करता हुआ कहता है कि, “ अन्ये त्वभिदधति वनस्पत्याधिकारात्तथाविधफलाभिधाने एते इति ”

\*Note—the commentary assigns the meaning “ fish ” but the context favours the meaning “ fruit ”

विशुद्ध अध्यवसायविशेष; जो ( रागद्वेषरूपी ) प्रथि कौ भेदे बिना निवृत्त न हो वह करणविशेष extremely pure thought-activity which does not subside without shattering the knot of passion and hatred at the time of initiation into the right faith. आया. नि० टी० १, ६, १, २८४,—वायर पुं० (—बादर—न विद्यतेऽन्योन्यमध्यवसायस्थानस्य व्यावृत्तिर्यस्यासावनिवृत्तिः स चासौ बादरश्चेति ) नवमे गुणुक्षाले वर्तते अथ नवे गुणस्थान वाला जीव. a soul in the ninth Gunasthāna क० ग० ६, ५०, ( २ ) नवमा गुणुस्थानकतुं नाम; आदि कपायोदय दशमा गुणुस्थानकती अपेक्षाये आदर—स्थूल छे, वणी आ गुणुक्षाले वर्तता धरा अथेना अध्यवसायो परस्पर व्यावृत्ति-पृथक्करणु पाभता नथी, भाटे “ अणियद्विवायरसंपराय ” अथेनुं सार्थ नाम छे नवे गुणस्थान का नाम; इस गुण स्थान में दशवे गुणस्थान की अपेक्षा कषायोदय स्थूल होता है और इस गुणस्थान वर्ती बहुत से जीवों के अध्यवसाय परस्पर पृथक्करण को प्राप्त नहीं होते अत इसका “ अनियद्विवादरमपराय ” यह सार्थक नाम है. the ninth Gunasthāna so named because here the Samparāya or unclean passions are grosser than in the tenth ( Bādara, gross ). The activities of the souls in this stage are not differentiated. क० ग० ६, ५०,

अणियद्विज्जमाण त्रि० ( अनिवर्त्तमान ) पाणिना तरंग वगेरे साथे अक्षलातु-गोथा

भातुं; सामानां हृद्धाथी दध्यातुं. पानी की लहर वगैरह से टकराने वाला; सामने के आक्रमण से दबजाने वाला. Being tossed to and fro e.g by waves. “ सलिलतित्तिक्खवेगोहि अणियद्विज्जमाणो कोट्टिमंसि करतत्ताहते विव तेंदुसण् ” नाया० ६;

अणियण. पुं० ( अनग्न ) लुभ्ये “अणियण” शब्द देखो “अणियण” शब्द. Vide “अणियण”. ठा० ७; प्रव० १०८४;

अणियत त्रि० ( अनियत ) नियमित नहि ते; अथोडस. नियत नहीं. Irregular; uncertain, not fixed पंचा० १३, ३३; —लाभ पुं० (—लाभ ) अथोडस लाभ अनियत लाभ—फायदा uncertain gain. पंचा० १३, ३३;

अणियत्त त्रि० ( अनिवृत्त ) निवृत्त नहि थयेद; निवृत्ति न पाभेद निवृत्ति रहित. Not quieted, in a state of activity. “ परिच्चयंते अणियत्तकामे ” उक्त० १४, १४; सूय० २, ६, २३,—काम. त्रि० (—काम ) जेनी धग्था निवृत्त नथी थथ ते अनिवृत्ति-निवृत्ति रहित इच्छा वाला one who is not free from longing, one with yearnings unassuaged. उक्त० १४, १४;

अणियमित्ता. सं० कृ० अ० ( अनियम्य ) नियमित न करीने; न अटकावीने, नियमित न करके, न रोक करके Without checking, without having restrained. “ इह जीवियं अणियमित्ता ” उक्त० ८, १४,

अणियय-अ. त्रि० ( अनियत ) अप्रतिबद्ध; डोधना अंधायेद नहि; नित्य वास रहित. अप्रतिबद्ध; किनीका बाधा हुआ नहीं; नित्य वास रहित. Unrestrained; free;

without premanent residence. "गामे अशियाणो चरे" उक्त० ६, १७, पत्र० १७; सूय० १, ६, ६; ( २ ) अनवस्थित, अनिश्चल अनिश्चल; अनवस्थित. not fixed, unsteady. परह० १, २, ( ३ ) न० अेकली नियतिथी नहि. पशु पांये समवायिकारण्यथी उत्पन्न थतुं शुभ वगेरे केवल अकेली नियति से ही नहीं किन्तु पाँचों समवायिकारणों से उत्पन्न होने वाला सुख वगैरह happiness etc resulting from the collective operation of the five Samavāyi causes and not from one of them viz. Niyati निययानिययं संतं, अयाणंता अद्भुद्धिया" सूय० १, १, २, ४, नाया० १, ( ४ ) पुत्रपार्थथी अन्यथा थथ शडे तेवे लाव, लावीलावथी भिन्न पुरुषार्थ से अन्यथा हो सकने वाला भाव, भावी भाव से भिन्न capable of being altered by human efforts; not unalterably fixed, different from future happenings "अशियायया सव्वभावा" उवा० ६, १६६,—चारि पुं० (-चारिन्) लुओ "अशियाणअचारि" श०६ देखो "अशियाणअचारि" शब्द. vide "अशियाणअचारि" सूय० १, ६, ६,—वट्टि पुं० (-वृत्ति) अप्रतिबद्ध निहार, प्रतिबद्ध विनानु वर्तन अप्रतिबद्ध विहार, प्रतिबंध रहित वर्तन unrestricted manner of living दसा० ४, १२, दसा० ४, ठ० ८,—वित्ति पुं० (-वृत्ति) लुओ उपलो श०६ देखो ऊपर का शब्द vide "अशियायवट्टि" ठ० ८, दसा० ४, १२, १३, १४; अशियाण त्रि० (अनिदान) लेशे संयमतप वगेरेतुं लावि इल भागी नथी क्षीयु ते; नियाणुं न करनार, निर्जरा सिवाय थील

इलनी आशंक्षा न राभनार संयमतप वगैरह का फल न चाहने वाला, नियाणा न करने वाला, निर्जरा के सिवाय दूसरे फल की आकाक्षा न रखने वाला. Practising penance etc; without any motive save that of destroying Karma (actions). "अशियाणो अकोउहले य जेस भिक्खू" पंचा० १६, ४१, दसा० १०, १३; आया० १, ४, ३, १३६; उक्त० ३५, १६, भग० २, १, आव० ४, ८, जं० प० ५, ११५, ( २ ) त्रि० सावधानुधान रहित पापानुदान रहित free from sinfulness in performance, e g of penance 'तिविहेणवि पाणमाहणे, आयहिते अशियाणसंबुडे' सूय० १, २, ३, २१, ( ३ ) त्रि० भोग अने ऋद्धिनी प्रार्थनारूप आर्तध्यान विनानो भोग और ऋद्धि के प्रार्थनारूप आर्तध्यान से रहित free from the painful meditative prayer for future self-enjoyment and prosperity. ठ० ३, १,

अशियाणभूय—अ त्रि० (अनिदानभूत) सावधानुधान रहित, आश्रव रहित पापानुदान रहित; आश्रव रहित Devoid of sinful conduct, not exposed to the inflow of Karma ( २ ) इर्भना उपादान धारणु रहित—ज्ञानादि कर्म के उपादान कारणों से रहित—ज्ञानादि devoid of or free from the efficient cause of Karma 1 & knowledge etc. "अप्पडिक्के भिक्खू ममाहिपत्ते, अशियाणभूए सुपरिव्वएज्जा" सूय० १, १०, १, अशियाणया. छं० (अनिदानता) लुओ 'अशियाणया' श०६ देखो "अशियाणया" शब्द. Vide 'अशियाणया' वेय० ६, ६६.

अणिरुद्ध त्रि० (अनिरुद्ध) इयांय पशु अटके नहि तेवुं. कहीं भी न अटकने वाला Unobstructed सूय० टी० १, १२, ८; (२) पुं० प्रद्युम्न कुमारथी थयेस वैदर्भी राणीना पुत्र, केने नेमनाथ प्रभु पासे दीक्षा लई शत्रुंजय पर सिद्ध था. प्रद्युम्न कुमार की वैदर्भी रानी का पुत्र, जिसने नेमिनाथ से दीक्षा ली और शत्रुंजय ऊपर सिद्ध गती प्राप्त की. the son of queen Vaidarbhi by Pradyumna Kumāra, who took Diksā from Neminātha, and obtained salvation on Śatruñjaya नाया० १६; —परण. पुं० (—प्रज्ञ) नेनी बुद्धि इयांय पशु रूपाक्षित न थाय. अेवा; तीर्थंकर, देवणी आदि. अस्खलित बुद्धि वाला; तीर्थंकर, केवली आदि. (one) of infallible, unobstructed intellect e. g. a Tirthankara etc. सूय० टी० १, १२, ८;

अणित पुं० (अनिल) वायु; पवन; वायरो वायु; हवा. Wind; breeze. जं० प० २, ३१; नाया० ६, दस० ६, ३७, उत्त० १४, १०, ओव० १७, परह० १, १, (२) गर्धयोवीसीना भरतक्षेत्रना अेकवीसमा तीर्थंकर भरतक्षेत्र की गत चौवीसी के २१ वे तीर्थंकर. the twenty-first Tirthankara of the last Chovīsī of Bharataksetra. प्रव० २६१; (३) स्त्री० आवीसमा तीर्थंकरनी प्रथम साध्वी नार्वासवें तीर्थंकर की प्रथम साध्वी. the first female disciple of the twenty-second Tirthankara. प्रव० २१०,

अणिल्लिङ्गिय. त्रि० (अनिल्लिङ्गत) आसीयत न इरेस; अप्रद आदिङ्गने. न समारेस खस्सी न किया हुआ. Not distinguished from others of the same class

by a special mark, spot etc. (an ox). भग० ८, ५;

अणिल्लिय. त्रि० (अनीत) लावेस; आणोस. लाया हुआ. Brought. नाया० १; अणिवारअ. त्रि० (अनिवारक) अटकावनार नहि; निवारणु करनार नहि. न-रोकने वाला; न निवारण करने वाला Not preventing; not checking, विवा० २; अणिवारिअ. त्रि० (अनिवारित) रेडेस-अटकावेस नहि. बिना रोक हुआ. Not stopped; not obstructed नाया० १८; विवा० २; नाया० ४०

अणिवारिया. स्त्री० (अनिवारिका-नास्ति निवारको-मैवं कार्षीरित्येवं निषेधको यस्याः साऽनिवारिका) नेने साईं नरसुं करतां केई अटकावनार नथी तेवी स्त्री. ऐसी स्त्री जिसे भला बुरा करने पर कोई रोकने वाला न हो. A woman without any body to check her "तप्यां सा सूमाजिया अजा अयोहट्टिया अणिवारिया सच्छंदमई अभिस्वरणं हृत्थे धोवेइ" नाया० १६; नाया० ४० अणिवृद्ध त्रि० (अनिर्वृद्ध) सांभणीने निर्वाइ इरेस नहि. सुनकर के उपयोग नहीं किया हुआ. Not made use of after hearing. सूय० २, ७, ३८,

अणिव्वत. त्रि० (अनिर्वृत्त) इयांय शान्ति पभेस नहि जिसने कहीं भी शान्ति न पाई हो. Bereft of peace; destitute of mental ease. "अणिव्वते घातमुवेति वाले" सूय० १, ४, २, ५, (२) परिणाम पभेस नहि; अपरिणत. अपरिणत, परिणाम शून्य. not matured दस० ३, ६, अणिव्वारण न० (अनिर्वाण) निर्वाणु-भेक्षते अभाव मोक्ष का-अभाव. Absence of final emancipation पंचा० ७, १३. अणिव्वुड. त्रि० (अनिर्वृत्त) परिणाम

पामेक्ष नहि; अपरिणत; अपरिपक्व.  
अपरिणत; परिणाम रहित; अपरिपक्व. Not  
matured. " तत्ता शिबुबुद्धभोद्धं आउ-  
रसरणाणि य " दस० ३, ६;

अणिसं अ० ( अनिशम् ) हुमेश, सदैव,  
निरंतर हमेशाह; सदा Always, con-  
stantly. सु० च० २, ५७२,

अणिसद्व त्रि० ( अनिसृष्ट ) धिनिनी के सडी-  
यारीनी अनुमति विनातु, धरना मुभ्य  
भाणुसोमे ड्यूल न डरेलु घर के मुखियों  
द्वारा अस्वीकृत. Not consented to  
by the principal members of a  
family अघ० नि० ७०६, निसी०  
१६, ५; आया० १, ७, २, २०२, पि० नि०  
६३, ठा० ६, ३, दसा० २, ७; ( २ ) धणु  
भागीदारोनी साधारण वस्तुमांथी अेकनी  
पणु रण विना साधुने आहारादि आपनाथी  
दागतो अेक दे.प; १६ उद्गमनना दोषमांते  
१५ भो दोष बहुत से भागीदारों की साधारण  
वस्तु भी एक की अनुमति के विना साधु  
को आहारादि में देने से लगने वाला एक दोष,  
१६ उद्गमन के दोषों में से १५ वौ दोष. a  
kind of sin incurred by giving  
food etc to a Sādhu from the  
property common to many part-  
ners without the permission  
of any of them, the fifteenth of  
the sixteen faults of Udgamana  
ठा० ६, १; पि० नि० ६३,

अणिसिद्ध. त्रि० ( अनिसृष्ट ) लुओ "अणिसद्व."  
शब्द देखो " अणिसद्व " शब्द  
Vide " अणिसद्व " अणिसिद्ध सामस  
गोट्टियभत्तार्इ देह पुगस्स " परह० २, ५,  
भग० ८, ७; ६, ३३; ओष० ४०, निसी० ५,  
७६, १४, ४; मूय० २, ७, ३८;

अणिसिद्ध त्रि० ( अनिसिद्ध ) संमति आपेक्ष,

अनुमोदन आपेक्ष, निषेध न डरेल अनुमोदित;  
निषेध न किया हुआ. Not prohibited;  
permitted. कान० ८, (२) सावधानुष्ठानथी  
निवृत्ति न पामेक्ष सात्रधानुष्ठान से निवृत्ति नहीं  
पाया हुआ not freed from faulty  
performance पंचा० १२, २५,

अणिसेस न० ( अनिश्रेयस ) अश्रेय,  
अकल्याण, अश्रेय. Absence  
of welfare, ruin " अणिसेसाणु  
अखाणुगाभिचत्ताणु भवति " दसा० ७, ३२,

अणिरुत्त त्रि० ( अनिश्र ) सर्व जननी त्याज्य,  
अनाथ, निराधार सब लोगों द्वारा उपेक्षणीय  
अथवा त्याज्य, अनाथ, निराधार Aband-  
oned by all men, helpless  
supportless. " ल्वे अतित्तो दुहिओ  
अणिसो " उक्त० ३२, ३१;

अणिरसर त्रि० ( अनीश्वर ) असमर्थ, दरिद्री,  
गरीब असमर्थ, दरिद्री, गरीब. Powerless,  
poor सम० ३०; दसा० ६, १५;

अणिससा स्त्री० ( अनिश्र ) निष्ठा-भङ्गने  
अभाव; ड्राधनी अपेक्षा न राखी ते  
सहायता का अभाव, किसीकी अपेक्षा न रखना  
Absence of help, absence of  
expectation वेत्र० १, २१,

अणिसिञ्ज-य त्रि० ( अनिश्रित ) प्रतिबंध  
रहित; भमता रहित प्रतिबंध रहित, ममत्त्व  
रहित Free from attachment  
" एत्थवि सज्जणो अणिसिणु अणिसिणु "   
सूय० १, १६, २; दस० ७, ५७; परह० २,  
३; सूय० १, २, २, ७, ( २ ) अशुभ;   
अप्रतुत असम्बद्ध, अप्रतुत not  
connected with, not engaged in  
" अणिसि सङ्कासेसु, आरभेसु अणिसिणु "   
सूय० १, ६, ३५, (३) न० डीत्यादिनी अपेक्षा  
विना देयावन्थ वगेरे डरवी ते वीतिं अदि

की अपेक्षा विना सेवा आदि करना service, worship etc without desire of fame परह० २, १; ( ४ ) न० दिग-हेतुनी निश्चा राभ्या विना थतुं ज्ञान; हेतु की अपेक्षा विना होने वाला ज्ञान knowledge not requiring syllogistic proof विशे० ३१०, ठा० ६, १, ( ५ ) पुस्तकादिद्विनी अपेक्षा विना थतु ज्ञान पुस्तकादि की अपेक्षा विना होने वाला ज्ञान knowledge not requiring reference of books etc. दस० ४, ( ६ ) त्रि० डोषनी पशु सहायता न पाओते किसीसे भी सहायता की चाहना न करने वाला not needing help from any quarter “ अणिस्सिओ इह लोए परलोए अणिस्सिओ ” उक्त० १६, ६३, विशे० १६६, ३०६,—वयण त्रि० (—वचन ) रागादिदोषरहित जेनां वयन छे ते, शुद्ध प्ररूपक रागादि दोषों से रहित वचनो वाला, शुद्ध प्ररूपक. free from attachment or hatred in speech २ दसा० ४, २७,—वयणया त्ती० (—वचनता—वचन ) रागद्वेष आदि रहित वयन रागद्वेषादि रहित वचन. speech free from passions ठा० ८;

अणिस्सिओवस्सिय पुं० ( अनिश्रितो-पाश्रित ) निश्रित-राग अथवा आहारदिनी दोषुपता, उपाश्रित-द्वेष अथवा शिष्य आदि नी अपेक्षा. अ-नहि, रागद्वेष रहित, आहार अने शिष्यादिनी अपेक्षा रहित साधु रागद्वेष रहित, आहार और शिष्य आदि की अपेक्षा रहित साधु A Sādhu free from passion and hatred, also, one not yearning for sweet, food, disciples etc. “ साहस्मियाणं अहि-

गरणंसि उप्यरणंसि तत्थ अणिस्सिओवस्सिओ अपक्खगाही ” ठा० ८, “ अणिस्सिओवस्सियं सम्मं ववहारमाणे समणे णिगंथे आणाए आराहए भवइ ” भग० ८, ८, दसा० ४, १०५, वव० १०, ३;

अणिस्सिओवहाण न० ( अनिश्रितोपधान ) णीजनी सहाय विना करवाभां आवतुं तप, निष्काम तप; ३२ योगसंग्रहमांनो योथो योगसंग्रह दूसरे की सहायता विना किया जाने वाला तप; निष्काम तप, ३२ योगसंग्रहों मे से चौथा योगसंग्रह. Penance observed without the help of others, penance without desire of worldly fruit, the fourth of the thirty-two Yogasaṅgrahas. सम० ३२;

अणिह पुं० स्त्री० ( अनिह ) क्रोधादिथी अपीडित. क्रोधादि से अपीडित ( One ) not afflicted by anger etc “ अणिहे से पुट्टे अहियासए ” सूय० १, २, १, १३; ( २ ) पुं० स्त्री० माया, प्रपंच रहित; उपर रहित माया, प्रपंच रहित, रूपट रहित. free from deceit, “ अस्सिं सुठिच्चा अणिहे चरेज्जा ” सूय० २, ६, ४२, १, ८, १८, दस० १०, १, १७,

अणिह पुं० ( अनिहत ) उपसर्गादिथी अपराजित; उपसर्गथी पराभव न पावेत्. उपसर्गादि से पराभव न पाया हुआ. ( One ) not overpowered by disturbance caused by human beings, celestial beings etc “ अणिहे एण मप्पाय संपेहाए धुयो सरीर ” आया० १, ४, ३, १३५; सूय० १, २, २, ३०;

अणिह. पु० ( अचेह ) रागद्वेष वगरतो, स्नेह वगरतो रागद्वेष रहित, स्नेह रहित. Free from attachment. आया० १, ४,

३, १३५; सूय० १, २, २, ३०;  
अणिहतय त्रि० (अनिहतक) धात नहि  
पाभेक्ष, निश्पक्षम आयुष्यवाणे. निरुपक्रम  
आयुष्य वाला, जिसकी आयुष्य घात न हो  
ऐसा. Not destroyed सम०

अणिहयारिउ पुं० (अनिहतरिपु) लद्दिलपुर  
ना रहैवासी नाग नामे गाथापतिनी  
की सुलसानो पुत्र, के जेने अधिकार अतगड  
सूत्रना त्रीण वर्गना योथा अध्ययनमा छे  
भदिलपुर के रहने वाले नाग नामक गाथापति की  
की सुलसा का पुत्र, जिसका अधिकार  
अंतगड सूत्र के तीसरे वर्ग के चौथे अध्याय  
में है. The son of Sulasā the wife  
of a petty ruler named Nāga,  
residing in Bhaddilapua,  
mentioned in the fourth chap-  
ter of the third section of  
Antagada Sūtra अंत० ३, ४,

अणिहुत त्रि० (अनिभृत) उपशांत थयेल  
नहि, शान्ति रहित अनुपशान्त, शान्ति रहित  
Devoid of peace, not calm  
श्रोव० २१; परह० १, ३.—इंद्रिय त्रि०  
(—इन्द्रिय) जेनी छद्रियो शांत नथी ते  
अशान्त—शान्ति रहित इन्द्रियो वाला  
of uncontrolled, excitable  
senses, with senses not calm  
परह० २, ५.—परिणाम त्रि० (—परि-  
णाम) शान्ति रहित—इपायना उपशम  
रहित परिणामवाणे शान्ति रहित—कपाय के  
उपशम से रहित परिणाम वाला possessed  
of sense-perception, thought  
etc; not free from evil  
passions परह० १, १,

अणीइ ह्री० (अनीति) धृति—अतिवृष्टि,  
अनावृष्टि आदिना अभाव अतिवृष्टि, अनावृष्टि  
आदि का अभाव. Absence of such

calamities as too much rain,  
no rain at all etc नाया० १,—पत्त  
त्रि० (—पत्र—न विद्यते इतिर्गडुर्का-  
दिरूपा येषु तान्यनीतीनि, अनीतीनि पक्षाणि  
येषा ते तथा ) जेना पादडा गाडर वगेरे  
डीडथी अनाथेक्ष—कैतराथेक्ष नथी ते जिमके  
पत्ते कीड़ों ने न खाये हों—न कतरे हो.  
with leaves not bitten by  
worms, insects etc ज० प०

अणीय न० (अनीक) धाथी, धेडा वगेरेनु  
सैन्य-दक्षर हाथी, घोडा वगैरह की सेना An  
army consisting of elephants,  
horses etc भग० १४, ६, उक्त०  
१८, २, श्रोव० ३१, परह० १, ३, कप०  
२, १३, जं० प० २, ११७, राय० ७६,

अणीयस पुं० (अणीयस) लद्दिलपुरना निवासी  
नागनामे गाथापतिनी भार्या सुलसाथी  
थयेल पुत्र, के जे नेमनाथ प्रभुपासे दीक्षा लध,  
१४ पूर्वतो अभ्यास करी, २० वर्षनी प्रव्रज्या  
पाणी शत्रुण्य पर सिद्ध थया; ७ लाघना  
नामथी प्रसिद्ध थयेल मुनिमाना अेड  
भदिलपुर के निवासी नाग गाथापति (अधि-  
कारी) की भार्या सुलसा के गर्भ से  
उत्पन्न पुत्र, जो नेमिनाथ प्रभु से दीक्षा  
लेकर, १४ वर्षों का अभ्यास कर और २०  
वर्षों तक प्रव्रज्या पालन करने के पश्चात्  
शत्रुंजय पर्वत पर से मोक्ष गया, छ. भार्गवों के  
नाम से प्रसिद्ध मुनियों में से एक मुनि  
A son born of Sulasā the wife  
of an officer named Nāga. a  
resident of Bhaddilapua, who  
took Dikṣā from Neminātha,  
studied fourteen Pūrvas,  
practised asceticism for twenty  
years and obtained salvation on  
Śatruñjaya अंत० ३, १; ३, ४;

**अणीया.** लॉ० (\*अनीका-अनीकिनी) सेना; ३८३.  
सेना; कटक. An army भग० ३, १; राय०  
७३; ठा० ५, १, —अहिबइ. पुं० (-अधिगति)  
सेनातो अधिपति-प्रमुष; लश्करतो उपरी  
सेनापति. the commander of an  
army; a general भग० ३, १,  
नाया० ८, ठा० ३, १; नाया० ६०

**अणीहड** त्रि० (अनिर्हृत) अहार नहिं डोटेड.  
वाहिर नहीं निकाला हुआ. Not taken  
out. वेय० २, १३;

**अणीहारि.** न० (अनिर्हारिन्) लुओ 'अणीहा-  
रिम्' शब्द. देखो "अणीहारिम्" शब्द Vide  
"अणीहारिम्" उक्त० ३०, १३;

**अणीहारिम्** न० (अनिर्हारिम्) ल्यां श्यनुं  
अग्नि-संस्कार करनार न भणे तेवे विषम  
स्थणे-पर्वतादिनी गुफाभा सथारे करवे ते,  
संथारानो अेड प्रकार. जहं शव का अग्नि  
संस्कार करने वाला न मिले ऐसे विषमस्थल  
में-पर्वतादि की गुफा में सथारा करना, संथारे  
का एक भेद. Practising Santhārā  
in a cave of a mountain where  
there would be no one to cre-  
mate the dead body, a variety  
of Santhārās भग० १३, ७, २५, ७,  
ठा० २, ४,

**अणीहिअ** त्रि० (अनीहित) अहापोह न  
डरेल; अविचारित अविचारित, विना ऊहापोह  
किया हुआ. Not argued with pros  
and cons विशेष २५७;

**अणु.** त्रि० (अणु) प्रमाणमा अतिथोडुं;  
प्रमाण में बहुत थोड़ा. Very small in  
size or proportion ज० प० ७,  
१३७, परह० २, ३; दस० ४, ( २ ) सूक्ष्म;  
प्यारीड; नानु, लुड. सूक्ष्म, दारीक; लुद; छोटा.  
small minute. क० गं० १, १८; भग०  
१, १, जीवा० १; म्य० १, २, १, ११;

आया० १, ५, २, १४६; ( ३ ) परमाणु;  
सूक्ष्ममां सूक्ष्म पुण्गलाश परमाणु, सूक्ष्म से  
सूक्ष्म पुण्गलाश. the smallest atoms.  
विशे० ४३२;

**अणु.** अ० (अणु) पश्चात्; पछी. पीछे, पश्चात्.  
Afterwards. " जीवा सोहिमखुपत्ता,  
आययंते मखुसयं " उक्त० ३, ७; पत्र० २;  
**अणुअ** त्रि० (अणुक) सूक्ष्म, लीणुं. सूक्ष्म;  
छोटा. Minute, small जं० प०

**अणुअस्तअ** त्रि० (अनुवर्तक) अनुकूल वर्तनार.  
अनुकूल वर्ताव करने वाला. Acting  
favourably. विशेष ३४०२;

**अणुअस्तत.** व० कृ० त्रि० (अनुवर्तमान)  
पाण्णी आवतुं, अनुसरतुं. पीछे आता हुआ.  
अनुसरण करता हुआ. Following;  
succeeding राय० ४२;

**अणुअस्तमाण** व० कृ० त्रि० (अनुवर्तमान)  
लुओ अहापोह शब्द देखो ऊपर का शब्द.  
Vide "अणुअस्तत." राय० ४२,

**अणुआ** ली० (अनुगा) लुवार, धान्यनी  
अेड लत जुवार. एक प्रकार का धान्य A  
species of corn; ( Juvāra )  
प्रक० १०१८,

**अणुइरण** त्रि० (अनुदीर्ण) आवेल. आया  
हुआ Come, approached. विशेष  
१२८८;

**अणुइअ.** त्रि० (अनुदीर्ण) उदीरण न डरेल.  
उदीरण न किया हुआ. Not caused to  
mature, not forced up into  
maturity क० प० ५, १,

**अणुउद्** पुं० (अनुत्-कालान्तर) पीतानो धभत  
नहिं; पीताना समयथी पहेला अथवा पछी,  
धभन. अनियमित समय, अपने समय से  
पहिले अथवा पीछे, कुसमय. An improper  
time i. e. too early or too late.



‘विसमं पवाक्षिणो परिष्मन्ति अणुउदे सुदेति  
पुष्पं फलं च ” षा० ५, ३;

अष्टांगश्रुति. त्रि० ( अनुयोजित ) प्रवतपिष;  
गोष्ठवेद योजना किया हुआ, संगठित.  
Arranged; organised. नदी०

अष्टांगश्रुति. पुं० ( अनुयोग-अणु सूत्र महानर्थः,  
महतोऽर्थस्याणुना सूत्रेण सह योगोऽणुयोगः  
अनुरूपो योगो वाऽणुयोगः सूत्रस्यार्थेन सहानु-  
कूलसम्बन्धः ) सूत्रतो अर्थनी साथे संबन्ध  
योगो ते; व्याख्या; विवरण; टीका; सूत्रतो  
अर्थ प्रकाशितो ते. सूत्र का अर्थ के साथ सम्बन्ध  
करना व्याख्या; विवरण, टीका, अर्थ प्रकाशित  
करना. Exposition of an aphorism  
अणुजो० २; नदी० ५६; विशेष० १, ८४१,  
१३५०; भग० २५, ३, अष्टांग० नि० १; ( २ )  
द्रव्याणुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग अने  
अक्षरानुयोग अने चारभानो गमे ते अक्ष  
द्रव्याणुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग और  
चरणकरणानुयोग इन चारों में से कोई भी एक  
अनुयोग. Any one of the four  
Anuyogas viz Dravya, Ganita,  
Dhramakathā and Charanaka-  
raṇa. “ से किं तं अष्टांगश्रुति ? अष्टांगश्रुति  
दुविहे पश्यन्ते, तजहा—मूलपदमाष्टांगश्रुति  
गणितानुयोगे च ” षा० १०, ( ३ ) दृष्टिवादे  
अंगतो योथो विभाग. दृष्टिवाद अंग का  
चौथा विभाग. the fourth part of  
the Dristivāda Anga नदी० ५६,  
सम० ( ४ ) उपक्रम, निक्षेप, अनुगम, नय  
ध्यादि अनुयोगद्वारभाना गमे ते अक्ष  
द्वारतुं ज्ञान; श्रुतज्ञानतो अक्ष प्रकार उपक्रम,  
निक्षेप, अनुगम, नय आदि अनुयोगद्वारों में  
से किसी भी एक का ज्ञान, श्रुतज्ञान का एक  
प्रकार. a variety of knowledge  
called Śrūta Jñāna, knowledge  
with regard to any one of the

ways of defining, namely Upa-  
krama, Niksepa, Anugama,  
Naya etc क० गं० १, ७;—अथ पु०  
(-अर्थ) व्याख्यानरूप अर्थ. व्याख्यानरूप अर्थ.  
meaning as shown by expla-  
nation. आया० नि० टी० १, १, १, १;  
—गङ्गा. पु० (-गत) दृष्टिवादे अंतर्गत  
अक्ष अधिकार; अवयवमां समुदायना उप-  
चारथी दृष्टिवादे सूत्र, पारमु अंगसूत्र. दृष्टि  
वाद के अंतर्गत एक अधिकार; अवयव मे  
समुदाय के उमचार से दृष्टिवाद सूत्र, बारहवाँ  
अंगसूत्र. a chapter in Dristivāda  
Sūtra; the twelfth Angasūtra.  
षा० १०,—दायय-अ. पु० (-दायक)  
अनुयोग-सूत्रार्थ आपनार, सुधर्मास्वामी  
वगेरे अनुयोग-सूत्रार्थ प्रदान करने वाले  
सुधर्मास्वामी वगेरे an expounder of  
a Sūtra, e g Sudharmā Svāmī  
etc “वंदितु सव्वे सिद्धे, जिये च अष्टांगो-  
गदायण सव्वे ” आया० नि० १, १, १, १,  
—द्वार. पु० (-द्वार) अनुयोग-व्याख्या  
करवानां उपक्रम, निक्षेप, अनुगम अने नय  
अने चार द्वार, व्याख्याननी रीति अनुयोग-  
व्याख्या करने के उपक्रम, निक्षेप, अनुगम  
और नय ये चार द्वार; व्याख्यान की रीति.  
the four points to be attended  
to in a commentary, viz Upa-  
krama, Niksepa, Anugama and  
Naya, a way of lecturing अणु-  
जो० ५६, १४६, सम० प० १६८, भग० ५, ४,  
१७, १, नदी० ४३, ४५, विशेष० ४४३,—  
द्वारसमाप्त. पुं० (-द्वारसमाप्त) अनुयोग  
द्वारना समुदायनु ज्ञान, श्रुतज्ञानतो अक्ष प्रकार.  
अनुयोगद्वारों के समुदाय का ज्ञान; श्रुतज्ञान का  
एक प्रकार. knowledge of the four  
points requisite for a collective

commentary. क० गं० १, ७;—घर पुं०(-घर) अनुयोग-सूत्रार्थ धारणु इरनार; अनुयोगी. सूत्रार्थ धारण करने वाला; अनुयोगी (one) who follows the explanation of the Sūtras. कप्प० ८; क० प० २, १;—पर त्रि०(-पर) अनुयोग-सिद्धांतनी व्याख्या इरवाभां तत्पर सिद्धान्त की व्याख्या करने मे तत्पर. intent on explaining the established principle of Sūtras. जीवा० १,—समास. पुं०(-समास) ऐक्यी वधारे अनुयोगद्वारोनुं ज्ञान थवुं ते; श्रुतज्ञानतो ऐक्य प्रकार एक से ज़्यादाह अनुयोगद्वारों का ज्ञान होना, श्रुतज्ञान का एक प्रकार. getting a knowledge of more than one Anuyogadvāra; a variety of scriptural knowledge. क० गं० १, ७;

अणुश्रोगि. पुं० ( अनुयोगिन् ) सूत्रनुं अवतरणु इरवाने प्रश्न इरवाभां आवे ते-नेम “चउहिं समएहिं लोगो ” ऐ सूत्रनुं अवतरणु इरवाने “कइहिं समएहिं ? ” ऐम पु०७नुं ते सूत्र का अवतरण करने के लिये प्रश्न करना-जैसे “ चउहिं समएहिं लोगो ” इस सूत्र के अवतरण के लिये इस प्रकार पूछना कि, “कइहिं समएहिं ? ” A question asked with a view to a quotation of a Sūtra ठ० ६;

अणुश्रोगिश्र-य. त्रि० ( अनुयोगिक ) प्रन्या कीधेक दीजित ( One ) who has entered the order of asceticism “ अणुश्रोगियवरवसभे नाइकुलवसनंदिकरे ” नदी० ३२; (२) व्याख्यान आपनार व्याख्यान देने वाला. a lecturer; an expounder नदी० ३२;

अणुकंपअ-य. त्रि० ( अनुकम्पक-अनुरूप

कम्पते चेषत इत्यनुकम्पकः ) उचित प्रवृत्ति इरनार; सेवा इरनार उचित प्रवृत्ति करने वाला; सेवा करने वाला. Acting properly; serving properly. “अणुकंपओ तस्स महामुणिसस” उक्त० १२, ८; कप्प० २, ३०; अणुकंपग त्रि० ( अनुकम्पक ) दया इरनार; हितचिंतक. दया करने वाला; हितचिंतक. Compassionate; ( one ) who is a well-wisher. “अणुकंपगं सुहिं वावि, किंचि नाभिसमेमहं ” उक्त० २०, ६; ( २ ) आत्महितमां प्रवृत्त थयेक आत्महितमें प्रवृत्त-तत्पर ( one ) engaged in self-weal. ठ० ४, ४;

अणुकंपण न० ( अनुकम्पन ) दुःखी-अनाथ उपर अनुकंपा इरपी ते अनार्यों पर दया करना. Showing compassion to the poor अंत० ३, ८, कप्प० ४, ६१;

अणुकंपमाण. व० कृ० त्रि० ( अनुकम्पयत् ) दया-अनुकंपा इरतो. दया करता हुआ. Showing compassion. नाया० १;

अणुकंपा स्त्री० ( अनुकम्पा ) अनुकंपा; दया. अनुकम्पा, दया. Compassion; mercy; pity. भग० ८, ८, १५, १; पिं० नि० ३२५; ओष० नि० ६११; पंचा० ६, ६; १०, १०; प्रव० ६५०; ( २ ) भाक्ति; प्रेमनी लागणी भक्ति, प्रेम की लगन feeling of love भग० ८, ८;—आसय. पुं० (-आसय ) अनुकंपावाणुं थित; दयाणु दुःख दयालु हृदय kind heart. अणुकंपासयप्पभोगनिकालमइविसुद्धभसपायाइं” सम०-दाण न० (-दान ) अनुकंपा-दयाथी दुःखी दीनने दान देवुं ते. अनुकम्पा-दया से दीन दुःखियों को दान देना. charity to the afflicted ones through compassion. ठ० १०,

अणुकट्टमाण. व० कृ० त्रि० (अनुकर्षत्) ष्येयते।  
खैचता हुआ. Drawing, pulling.  
विवा० १,

अणुकट्टि स्त्री० (अनुकृष्टि) अनुवर्तन-अनुसरण  
करवुं ते. अनुसरण करने की क्रिया. The  
act of following, imitation क०  
प० १, २६,

अणुकड्डेमाण व० कृ० त्रि० (अनुकर्षत्) पोत।  
तरङ्ग आकर्षण करतो, पोतानी पाठण ष्येयते।  
अपनी ओर आकर्षित करता हुआ Dragging  
behind, pulling behind towards  
one's self नदी० १०;

✓ अणुकह धा० I (अनु+कथ्) क्वाधना क्वा  
पञ्चि क्वाधेनुं, ष्येयथा पञ्चि ष्येयनुं, ष्येयन करवु,  
वाद्द करवे। किसीके कहने के पीछे-बोलने के  
बाद बोलना, खंडन करना, वाद करना. To  
speak after another has spoken,  
to refute; to dispute.

अणुकाहयते णि० सूय० १, १३, ३;

अणुकुड्ड. अ० (अनुकुड्य) खिंतनी पास दीवाल  
के पास Near a wall वेय० ३, २६;

अणुकूल त्रि० (अनुकूल) अनुकूल, सगवड  
पडतुं, मनगमतुं अनुकूल; मनचाहा; सुभीते  
का. Favourable, agreeable  
“अणुकूलेय धण्ये कुमारधंभचारी” सू० प०  
२०; परह० २, ४, जीवा० ३, ३, कप्प०  
४, ६५,—कारि त्रि०—(कारिन्) अनुकूल  
कर्म करने वाला. act-  
ing favourably नाया० १७;—वाय  
पु० (—वात) अनुकूल पवन, ष्येयधे तेवे।  
वायु, खितकर वायरो अनुकूल वायु, चाहिये  
जैसी हवा. favourable wind जीवा० १;

अणुकंत. त्रि० (अनुकान्त) अनुष्ठान करेले;  
सेवन करेले अनुष्ठान किया हुआ, सेवित  
Practised; performed “एस विहि

अणुकंते माहयेण मईमया बहुसो ” आया०  
१, ६, ४, १७,

अणुकंत त्रि० (अनुकान्त) आयरेल आचरित,  
व्यवहृत Practised, performed  
आया० १, ६, २, १६, १, ६, ३, १४,

अणुकम पु० (अनुक्रम) अनुक्रम, परिपाटी,  
अनुपूर्वी; क्रमसर अनुक्रम; परिपाटी, तरताव-  
वार Serial order, consecutive  
order. अणुजो० ४६; प्रव० १०५७, क०  
ग० ५, ५१,

अणुकमंत त्रि० (अनुक्रमत्) पग मुक्तां;  
प्रवेश करतां पैर रखते, प्रवेश करते Enter-  
ing. सूय० १, ५, १, ७,

अणुकसाइ पु० (अनुत्कपायिन्) सत्कार  
आदिनी उत्कंठाना अभाववाणो; अणु-  
पातणा क्वायवाणो सत्कार आदि की  
उत्कंठा न रखने वाला; सूक्ष्म कपाय वाला.  
(One) not desirous of honour,  
reception etc. or, one with  
scanty Kasāya. “अणुकसाई अप्पिच्छे,  
अणाएसी अलोलुए ” उत्त० २, ३६,

अणुकसाइ त्रि० (अणुकपायिन्) क्वाध आदि  
क्वायाने अणु-सूक्ष्म-पातणा पाडनार; स्वल्प  
क्वायी, मद्दक्वायी मंद कपाय वाला, कपायो  
को सूक्ष्म करने वाला Having slender  
or scanty moral impurity.  
“अणुकसाई लहु अप्प भक्खी, षिच्चा  
गिहं एग चरे स भिक्खू ” उत्त० १६, १६,

अणुकस्त त्रि० (अनुत्कर्षवत्) आठ मद्दमानो  
क्वाध मद्द न करतो, उत्कर्ष-मद्द रहित आठ  
प्रकार के मद्दों में से किसी भी प्रकार का मद्द  
न करने वाला; उत्कर्ष-मद्द रहित Free from  
any of the eight kinds of pride  
“अणुवत्तस्से अप्पलीये मज्जेण सुणी जावए”  
सूय० १, १, ४, २;

अणुकोस. पु० (अनुत्कर्ष) पोतानी

अणुकोस-अलिमान; मानकपाय निजकी  
बढ़ाई-अभिमान; मानकपाय. Self-con-  
ceit, pride सम० १२; ठ० ४, ४, भग०  
१२, ५; क० गं० ५, ७४;

अणुकोस. पुं० (अनुकोश) ६था. दया. Com-  
passion भग० १२, ५; ठ० ४, ४;  
✓अणुक्ख. धा० I. (अनु+ईच्) ल्नेतुं, दृष्टि  
करवी देखना; दृष्टि करना To see; to  
look at.

अणुक्खिस्सामि आया० १, ७, ५, २१७;  
अणुक्खित्त त्रि० (अनुत्तिप्त) पाठग द्देडुं.  
पीछे फेंका हुआ Thrown from behind,  
thrown after. "अणुक्खित्तंसि धुगंसि"  
नाया० ८;

अणुग. त्रि० (अनुग) अनुसरनार, पाठग  
पाठग ननार अनुसरण करने वाला; पीछे  
पीछे जाने वाला. One who follows or  
goes after उत्त० ३२, २७; गच्छा०  
१२६;

अणुगंतव्व त्रि० (अनुगन्तव्य) अनुसरतुं;  
अनुसरवा ये अणु. अनुसरण करना, अनुसरण  
करने योग्य. Worthy of imitation,  
worthy of being followed निस्सी०  
१, ४१; ठ० ५, १, ज० प० ७, १६०;

✓अणुगच्छु धा० I (अनु+गम्) सन्मुख  
ल्लु; सत्कार करवाने रहामे ल्लुं सन्मुख  
जाना, सत्कार करने के लिये सन्मुख जाना  
To go forward to receive or  
welcome.

अणुगच्छइ नाया० १४, १८; ओव० १२; जं०  
प० ५, ११५;

अणुगच्छंति. जं० प० ३, ५३;

अणुगच्छह आ० विवा० १;

अणुगच्छइत्ता सं० कृ० नाया० ३, १४, भग०  
१२, १,

अणुगच्छमाण. व० कृ० सूय० १, १४, २३;  
नाया० २; १८; भग० ३, २;

अणुगच्छणया. स्त्री० (अनुगमनता-अनुगमन)  
सत्कार करवाने शुश्री रहामे ल्लुं ते. सत्कार  
करने के लिये गुरु के सन्मुख जाना. Going  
forward to welcome a preceptor.  
ओव० २०;

✓अणुगम धा० I. (अनु+गम्) लुओ  
'अणुगच्छ' धातु देखो 'अणुगच्छ' धातु.  
Vide the verb "अणुगच्छ".

अणुगमह. सु० च० २, ४३८;

अणुगम्म. सं० कृ० सूय० १, १४, ११;

अणुगम पुं० (अनुगम-अनुगमनमनुगम; अनु-  
गम्यतेऽनेनास्मिन्नस्मादितिवाऽनुगमः) नि-  
क्षेपधी पाठेव भेदमांथी प्रकरण या प्रसंगते अ-  
नुकूल अर्थ ये लवे ते; सूत्रना अनुकूल अर्थतुं  
डहेतु ते निक्षेप से किये हुए भेदों में से प्रकरण  
या प्रसंग के अनुकूल अर्थ की योजना करना; सूत्र  
के अनुकूल अर्थ कहना Showing the  
connection of one chapter to  
another in the course of expla-  
nation. विशेष० २६०; ६१३; ६७१;  
१३५७; ठ० १; अणुजो० ६६, (२) ५६,  
५६७६, विग्रह, अन्वय वगेरे व्याख्यानना  
प्रकार पद, पदच्छेद, विग्रह, अन्वय वगैरह  
व्याख्यान के भेद. explanation by  
separation of words, paraphrase  
grammatical notes etc सम०

अणुगय-अ त्रि० (अनुगत) अनुसरल; अनुकरण  
करने अनुसरण किया हुआ, अनुकरण किया  
हुआ Followed, imitated परह० १,  
३; (३) त्रि० प्राप्त थयेद प्राप्त obtained.  
उत्त० ३२, २७, (४) व्याप्त व्याप्त pervaded  
by "ते पेज्जदोसाणुगया परज्जा" उत्त० ४,  
१३; (५) आश्रित आश्रित dependent,  
supported पि० नि० मा० ४०;

✓अणुगवेस धा० I ( अनु+गवेष् )

पाछणथी तपास करपी-शोध करपी पीछेसे खोजना; बाद में शोध करना To make an inquiry in the absence of, to search after

अणुगवेसइ भग० ८, ४, ८,

अणुगवेसमाण व० कृ० भग० ५, ६, ८, ४;

६, नाया० १६,

अणुगवेसियच्च त्रि० (अनुगवेपितव्य) गवे-

पण्णा करपी, तपास करपी, तपास करवा योग्य.

जोच करना, गवेषणा करने योग्य. Worthy of inquiry भग० ८, ६, वेय० ३, २४,

अणुगाम पुं० (अनुग्राम) गामांतरं गत्वा

वश्यं गाम आवेते, गाम पश्चिन्तु गाम, -हान्तु

गाम. ग्रामान्तरं जाते समय बीच में जो ग्राम

आवे वह, छोटा गाँव A village on the way to another village, a hamlet.

“ गामाणुगामं दूइजमाणे ” आया० १, ५, ४,

१५६, नाया० १, अणुजो० १३१, भग० ८, ६,

अणुगामि त्रि० (अनुगामिन्) अनुकरणु

करनार; नकल करनार, येष्टा के शब्द जोष्ठ के

साबणी ते प्रमाणे करी अतावनार अनुकरण

करने वाला, चेष्टा या शब्द देख अथवा सुनकर

उसके अनुसार कर बताने वाला (One)

imitating anything or gesture

or speech ओव० १६, (२) साध्यसाधक

हेतु, दोष-वगैराने हेतु माध्यसाधक हेतु

दोष रहित हेतु the middle term or

basis of proof, which is not

fallacious ठ० ३, ३, (३) ने डेडाणे

अवधिज्ञान उत्पन्न थयु होय तथाथी थीने

स्थाने पणु आभनी भाइके साथे साथे नय ते,

अवधिज्ञानने ओइ प्रज्ञा अवधिज्ञान का

एक भेद; जो ज्ञान जिस स्थान में उत्पन्न हुआ

हो वहासे दूसरे स्थान में भा साथ २ जाय वह

a variety of Avadhijñāna; that

division of knowledge which accompanies the soul from place to place. क० ग० १, ८,

अणुगामिअ-च पुं० (अनुगामिक) अनुगामि-

अ-व्यव्यतिरेकी हेतुथी थनो वस्तुनो निर्णय,

आनुमानिक निश्चय अन्वयव्यतिरेकी हेतु से

होने वाला वस्तुनिर्णय, आनुमानिक निश्चय

Conclusion derived from syllo-

gistic reasoning, an invariably

concomitant mark leading to in-

ference ठ० ३, ३, (२) त्रि० पाछण ननार,

थीने अनुसरनार पीछे चलने वाला, दूसरे

का अनुसरण करने वाला (one) going

after or following सूय० १, १, २, १८,

२, २, २८, (३) लवपरपरा साथे आवता सुभने

उत्पन्न करनार भवपरम्परा में साथ साथ आने

वाले सुख को उत्पन्न करने वाला producing

happiness accompanying one

in rebirths जीवा० ३, ४, (४) अनु-

यर; नोकर अनुचर, नौकर. an attendant

सूय० २, २, २, (५) पु० अदर्त्त्यरुप

थौइ असद अनुष्ठान. अकर्त्तव्यरूप-१४ असद

अनुष्ठान. the fourteen evil prac-

tices सूय० २, २, २, (६) क्षेत्रातरमा साथे

साथे ननार अवधिज्ञानविशेष; अवधिज्ञान-

ने ओइ लेइ क्षेत्रान्तर में भी साथ साथ जाने

वाला अवधिज्ञानविशेष; अवधिज्ञान का एक

भेद a division of Avadhijñāna,

accompanying the soul from

place to place पत्र० ३३,

अणुगामियत्ता: त्री० (अनुगामिकता-अनुगामि-

मिकत्व) लवपरपरा साथे ननार

सातुअध सुभ. भवपरपरा में साथ जाने वाला

सातुअध सुख Happiness accompan-

ing the soul in successive

rebirths ओव० नाया० १३,

✓ **अणुगिरह** धा० I ( अनु+गृह् ) अनुग्रह-  
कृपा करनी. अनुग्रह करना; दया करना To  
favour; to oblige

अणुगिरहत्ता सं० कृ० दसा० १०, १;

अणुगिरहंत. व० कृ० सु० च० ३, २१६;

अणुगिरहमाण व० कृ० नाया० १६,

अणुगिति स्त्री० ( अनुकृति ) अनुकृत्यु;  
नकल नकल. An imitation; a copy.  
पंचा० ६, ३७,

✓ **अणुगिल**. धा० I ( अनु+गृ ) आगु; भोजन  
करने; लक्षण्यु करने. खाना, भोजन  
करना. To eat.

अणुगिलइ नाया० ७;

अणुगिलइत्ता सं० कृ० नाया० ७,

अणुगीय. त्रि० ( अनुगीत ) पाछगथी गाथाभां  
आवेद; तीर्थकरादिनी पासेथी सांलणीते पाछ-  
गथी स्थविरोये संपादन करेक पाछे से गाया  
हुआ; तीर्थकरादिओं से सुनकर पाछे से स्थविरो  
द्वारा सपादित किया हुआ Reiterated;  
e. g words of Tirthankaras etc  
by Sthaviras or monks. 'महत्थरूवा  
वयणप्पभूया, गाहाणुगीया नरसंवमज्जे"  
उत्त० १३, १२;

अणुगुण पुं० (अनुगुण) गुणु उपर गुणु करवे  
ते गुण के ऊपर गुण A good turn  
done in return for a good turn  
नाया० १,

अणुगुअ-य. त्रि० ( अनुगत ) अणुउये,  
अणुउगेले: उदय न पामेद. उदय रहित,  
बिना उगा हुआ Not come out; not  
risen वेय० ५, ६, प्रव० ५६८; निसी०  
३, ०२,—सूर पुं० (—सूर) सूर्य उग्या  
पडेकाने वअन सूर्योदयके पहिलका समय  
time before sunrise; time pre-  
ceding sunrise प्रव० ५६८;

अणुगह. पुं० ( अनुग्रह ) उपकार.  
Benevolence. पि० नि० ४४८; ओघ०  
नि० १; ओव० १६; पंचा० ६, १; प्रव०  
१३८७; ( २ ) कृपा, भडेर्यानी; इया. कृपा;  
मेहरवानी, दया. favour; mercy, kind-  
ness विशेष० २०४, पि० नि० ४४८; ओघ०  
नि० भा० १; २७६; ओव० १६; दस० ५,  
१, ६४; नाया० ३; १४; सु० च० ७, १८५;  
उत्त० २५, ३७;—अट्ट पुं० (—अर्थ) उपकार  
रूप प्रयोगत उपकाररू प्रयोजन. bene-  
ficient motive. "सपरोसिसणुगहट्टाए"  
पंचा० ६, १,

अणुगहता स्त्री० ( अनुग्रहता-अनुग्रह ) अनुग्रह  
करवे ते. अनुग्रह. Favour, kindness  
विशे० १८५४,

अणुगहया. स्त्री ( अनुग्रहता-अनुग्रह )  
लुओ उपले शब्द देखो ऊपर का शब्द.  
Vide "अणुगहता." विशेष० १८५४,

अणुगघाइम त० ( अनुदघातिम-उदघातो  
भागपातस्तेन निर्दुत्तमुदघातिमं लघु तन्निषेधा-  
दनुदघातिमं गुरु ) गुरु प्रायश्चित्त, भेडोटु तप.  
सारी प्रायश्चित्त Austere penance;  
severe expiation. ठा० ३, ४;  
( २ ) पुं० स्त्री० गुरु प्रायश्चित्ततेयोअ साधु सा-  
ध्वी. बहुत बड़े प्रायश्चित्त के योग्य साधु साध्वी  
a male or female ascetic liable  
to severe expiatory penance  
ठा० ५, २;

अणुगघाइय. पुं० स्त्री० ( अनुदघातिक ) लुओ  
अवेद दोष सेव्यो होय के प्रायश्चित्तमां धटाडा  
करी शक्य नहि ते; गुरुप्रायश्चित्तने योग्य  
जिसने ऐसा दोष किया हो कि, उसके प्रायश्चित्त  
में कमी नहीं की जा सके; बहुत बड़े प्रायश्चित्त  
के योग्य. One deserving un-  
mitigated severity of expiatory  
penance. "तओ अणुगघाइया पअत्ता,

तंजहा-हृत्थकम्मं करेमाणे मेहुणं सेवमाणे राइभोयणं भुंजमाणे " ठा० ३, ४, वेय० १, ३६; ४, १; सम० २८; वव० ६, १६, निसी० १०, १६;

अणुगघाय पुं० ( अनुद्घात ) प्रायश्चित्तभा घटाडे न थाय ते, लघु प्रायश्चित्तने अलाव, गु३ प्रायश्चित्त प्रायश्चित्त में कमी न होना, लघु प्रायश्चित्त का अभाव, बहुत बडा प्रायश्चित्त Unmitigated severity of ex- piation. ठा० ५, २,

अणुगघायण न० ( अणोद्घातन-अणत्यनेन जन्तुगणश्रतुर्गतिकं संसारमित्यणं कर्म, तस्योत्प्राबह्येन घातनमपनयनमणोद्घात- नम् ) कर्मने दूर करवां ते, कर्मनी घात करवां ते कर्मों को दूर करना, कर्मों का नाश करना. Destruction of Karma. " से मेहावी जे अणुगघायणस्स खेयण्णे जे म बंधण् " आया० १, २, ६, १०२,

✓अणुघास. धा० II. (अनु+घस्+णि०) भ-उ-उवयुं, ङभाउयुं. खिलाना, भोजन कराना. To feed

अणुघासेजा. वि० निसी० ७, २३,

✓अणुचर धा० I ( अनु+चर् ) तपनु आ-उ-उयुं तप का आचरण करना To practise penance or austerity.

अणुचरंति प्रव० ६१४,

अणुचरंत व० कृ० त्रि० ( अनुचरत् ) पाउण ङतो, दासपणु सेवतो पीछे चलता हुआ, दासता को स्वीकारता हुआ. Attending, following as a servant गच्छा० ६८;

अणुचरग त्रि० ( अनुचरक ) सेवा करनेवा; अनुचर नौकर A servant, an attendant. प्रव० ६१४,

अणुचरिअ-य न० ( अनुचरित ) आरित्रने अनुसार. चारित्र के अनुसार According to right conduct. अणुजो० १३१,

( २ ) त्रि० आसेवित, आचरेल आचरित, आसेवित served; practised; performed भग० ११, ११;

अणुचरित्ता सं० कृ० अ० ( अनुचर्य्य ) आचरीने, सेवीने आचरणकरके, सेवन करके Serving or having served, having practised. सम० ६, चउ० १८,

अणुचरिया. स्त्री० ( अनुचरिका ) यरिका-गढ अने वसति वय्येने रस्तो, तेनी पास. गढ और वस्ती के बीच के रास्ता के पास Near the road leading from the fort to the town वेय० ३, २६;

✓अणुचित धा० II ( अनु+चिन्त् ) विचार करवे, विचारयुं विचारना, चिन्तन करना To meditate upon. अणुचितिय सं० कृ० सूय० १, ६, २५; जीवा० १,

अणुचित-ते-माण व० कृ० नाया० १, ६, १४, विवा० २,

✓अणुचिद्ध धा० I ( अनु+स्था-तिष् ) उभा रडेयुं, स्थिर थयु खड़े रहना, स्थिर होना To stand, to become steady अणुचिद्ध दस० ५, २, ३०,

अणुचेरण त्रि० ( अनुचीर्य्य ) ससर्गभा आवेस ससर्ग में आया हुआ Come in contact with आया० १, ५, ४, १५८, प्रव० ४३७, जीवा० १;

अणुचिरणव त्रि० ( अनुचीरणवत् ) नेणे अनुष्ठान कर्युं छे ते जिमने अनुष्ठान किया है वह. ( One ) who has performed e g religious practice आया० १, ७, ६, २२०

अणुचिय. त्रि० ( अनुचित ) अधटिन; अणुउयिन उयिन नदि ते अचिन. Improper पि० नि० २०८,

अणुचीइ-ति. सं० कृ० अ० ( अनुचिन्त्य )  
 चिंतनीते, विचारीते चितवन करके; विचार  
 करके. Thinking upon; having  
 thought; having meditated  
 upon. “ अणुचीइ भासए सयाणमज्जे  
 लहइ पसंसणं ” दस० ७, ५५; सूय० १,  
 १, ३, १३;

अणुच्च त्रि० ( अनुच्च ) उयुं नहि ते. जो  
 ऊंचा न हो Not lofty. “ अणुच्चे अकुए  
 थिरे ” उक्त० १, ३०; पि० नि० ३६४,

अणुच्चाकुइय. पुं० ( अनुच्चाकुचिक-न विद्यते  
 कुचश्चलनं यस्या. सा अकुचा, लिचमिच  
 शब्दमकुर्वाणा इत्यर्थ, अनुच्चा चासावकुचा  
 चानुच्चाकुचा, सा विद्यतेऽस्येति तथा )  
 उय्य-उयुं दुय-परिस्पंद-डालतुं यासतुं, नेतु  
 आसन-शय्या-पथारी गु३ इरतां उयी नथी  
 अने यथायमान नथी ते गुरु की अपेक्षा  
 जिसका आसन-शय्या-विछौना ऊंचा और  
 चलायमान न हो One whose seat,  
 bed etc. are not higher than  
 those of the preceptor and are  
 motionless कप्प० ६, ५३,

अणुच्छिद्ध त्रि० ( अनुच्छिष्ट ) अेडुं लुडुं नहि  
 ते अमनिया, मूठन नहीं (Food etc)  
 which is not stale or tainted  
 ( i e a remnant of what others  
 have already eaten ) प्रव० ११६;  
 अणुजत्ता वी० ( अनुयात्रा ) नीडणुं ते,  
 पाण्ण णुं ते. निकलना, पीछे जाना  
 Going after, starting. पि० नि०  
 ८८;

✓अणुजा. धा० I ( अनु+या ) पाण्ण णुं  
 अनुसरुं पीछे जाना, अनुसरण करना To  
 follow, to go after.  
 अणुजाइ. उक्त० १३, २३;

अणुजाअ-य. त्रि० ( अनुयात् ) संपत्ति अने गुण  
 वगेरेथी पिताना तुल्य थाय ते पुत्र; नेम डे-  
 आदित्यशानो हीडरो महायशा राज्ञ संपत्ति  
 और गुण आदि से पिता के समान पुत्र, जैसे-  
 आदित्यशशा का पुत्र महायशा राजा.  
 A son worthy of his father in  
 wealth, merits etc. e. g. king  
 Mahāyaśa the son of Āditya-  
 yaśā. ठा० ४, १; ( २ ) सदश, सरभुं.  
 समान, सदश. similar. “ सरिसे वस-  
 भाणुजाए ” सू० प० १२; ( ३ ) पाण्ण  
 गथेव पीछे गया हुआ followed, gone  
 behind. पण्ह० १, २;

✓अणुजाण धा० I. ( अनु+ज्ञा ) आशा देवी; रण  
 आपवी आजा देना, छुट्टी देना To permit.  
 ( २ ) अनुमोदन आपवुं; संमति देवी अनुमोदन  
 करना, सम्मति देना to consent  
 अणुजाणइ. नाया० २, ५, निसी० ५, ८;  
 अणुजाणाइ सूय० १, १, २, १;  
 अणुजाणति. दस० ६, १५;  
 अणुजाणामि भग० १६, १;  
 अणुजाणउ भग० ११, ६;  
 अणुजाणह आ० पि० नि० ४६५, वव०  
 २, २६; दसा० १०, १,  
 अणुजाणित्ता. स० कृ० नाया० ६;  
 अणुजाणित्तए हे० कृ० ठा० २, १;  
 अणुजाण व० कृ० उक्त० ८, ८,  
 अणुजाणावेउं. सि० सं० कृ० सु० च० २, १४२,  
 अणुजाणाविय. सि० स० कृ० प्रव० ६८८,  
 अणुजाणावित्तए. सि० हे० कृ० वव० २, २६;  
 अणुजाणावणा. वी० ( अनुज्ञापना ) रण  
 अपावपी ते छुट्टी दिलाना. Causing  
 another to consent or permit.  
 पचा० ६, १३;  
 अणुजाणावेयव्व. त्रि० ( अनुज्ञाप्य ) आशा  
 देना योग्य, नेनी आशा लक्ष प्रवर्तुं लोभये



ते आज्ञा लेने के योग्य; जिसकी आज्ञा पाकर कुछ किया जाय वह. ( One ) worthy of being asked permission to commence a work प्रव० ६६०;

**अणुजुति.** स्त्री० (अनुयुक्ति) अनुगत-संगत-युक्तिपूर्वक हेतुगर्भित दृष्टान्त संगत-युक्तिपूर्वक हेतु गर्भित दृष्टान्त A logically sound illustration to establish correct inference. “ सन्वाहिं अणुजुत्तीहिं अचयंता जवित्तण् ” सूय० १, ३, ३, १७, ( २ ) अनुकूल युक्ति-तर्क. अनुकूल युक्ति apt logical reasoning सन्वाहिं अणुजुत्तीहिं मतिमं पडिलेहिया ” सूय० १, ११, ६;

**अणुजेष्ठ** त्रि० (अनुज्येष्ठ-अनुगतो ज्येष्ठमनु-ज्येष्ठ.) सौथी भोटा पछी त्रीजे नंभरे जे होय ते सब से बड़े के बाद तीसरे नंबर का जो हो वह. Third in order from the eldest. पंचा० ६, ४७;

**अणुजोग** पुं (अनुयोग) तीर्थंकर, कुलंकर, यक्षवर्ती वगैरेना अधिकार जेमा दर्शाव्या हुता ते अनुयोग-दृष्टिवादनो अेक विभाग, जे जे हुल विच्छेद थप गयेल छे तीर्थंकर, चक्रवर्ती कुलंकर आदि के अधिकारों का जिसमें वर्णन था, वह अनुयोग-दृष्टिवाद का एक विभाग, जिसका हाल में विच्छेद हो गया है. A lost portion of Dristivāda dealing with the functions of Tirthankaras, Kulakaras, Chakravartīs etc ठा० ४, १;

**अणुजोगि.** पु० (अनुयोगिन्) लुओ। ‘अणुओगि’ शब्द देखो “अणुओगि” शब्द. Vide “अणुओगि”. ठा० ६, ४,

**अणुज्जा** स्त्री० (अनुद्या) महावीरस्वामीनी दीक्षरीनु नाम, प्रियदर्शनानु अपर नाम

महावीरस्वामी की पुत्री का नाम; प्रियदर्शना का दूसरा नाम Name of the daughter of Mahāvira Svāmī, another name of Priyadarśanā. “ तीसेणं दो नामधिज्जा एवमा० अणुज्जाह वा पियदंसणाह वा ” आया० २, १५, १७७;

**अणुज्जु** त्रि० (अनुज्जु) सरल-सीधो नहि ते, कपटी स्वभाववाणो. कपटी स्वभाव वाला Crooked in nature deceitful. पि० नि० २८६,

**अणुज्जुय** त्रि० (अनुजुक) असरल, सीधो नहि ते, वा के कपटी, टेढा. Not straight; crooked in nature. उक्त० ३४, २५, परह० १, २,

**अणुद्वारा** न० (अनुष्ठान) आचार, क्रिया-कलाप आचार, क्रियाकलाप Performance, religious practices. ठा० ७; भग० २, १, आया० १, ६, ३, १८७, पंचा० २, ४०, प्रव० ६६०,—**गोचर** त्रि० (—गोचर) अनुष्ठान-आचारनो विषय आचार का विषय (that) which is a subject or province of practice or conduct पंचा० १६, ३८;

**अणुद्विय** त्रि० (अनुद्वित) आचरेल; सेवेल सेवन किया हुआ. Performed, practised “अहवा अचितहं णो अणुद्विय” सूय० १, २, २, ३१, पंचा० ६, ४५,

**अणुद्विय** त्रि० (अनुद्वित) उठेन नहि; तैयार थयेन नहि, ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना उद्योगथी रहित ज्ञान, दर्शन और चारित्र के उद्योग से रहित. जो तैयार नहीं हुआ हो, नहीं उठा हुआ Not arisen, not performing vows etc to secure right knowledge, faith and conduct. आया० १,

४, १, १२६; प्रव० १४७; दसा० ३, ३०;  
निसा० ६, ११;

अणुडहमाण व० कृ० त्रि० (अनुदहत्)   
दाड डरेतो. दहन करता हुआ. Burning;  
setting on fire. भग० १५, १;

अणुणइअ. न० (अनुनदीक) नदी समीपे;  
नदी मध्ये नदी के पास, नदी के बीच में.  
Near a river; in the midst of  
a river. अणुजो० १३१;

अणुणंत. व० कृ० त्रि० (अनुनयत्) येतानो  
अलिप्राय ज्ञापतो-समजवतो. अपना  
अभिप्राय प्रकट करता हुआ Reasoning  
with, expostulating, reconciling.  
“पुरोहितं तं कमसोऽणुणंत, णिमंतयंतं च  
सुए घणोणं ” उक्त० १४, ११;

अणुणइ त्रि (अनुनादिन्) पडंठो-पडधो  
ठे अेवी रीते भोलनार ऐसा बोलना जो  
गूंज उठे या जिसकी प्रतिध्वनि हो. Speak-  
ing so as to start an echo.  
“ गजियसइस्स अणुणइणा ” कप्प० ३,  
४४;

अणुणइत्त न० (अनुनादित्व) पडंठो-पडधो  
ठे अेवो अवाण; सत्यवचनना उप  
अतिशयमानो अेड. ऐसी आवाज जो गूंज  
उठे, सत्यवचन के ३५ अतिशयो में से एक.  
A voice starting an echo; one  
of the thirty-five Atisayas  
of truthful speech. सम० ३५;

अणुणइरित्त. त्रि० (अनुनातिरिक्त)  
न्यून डे अधिड नडि; परापर प्रमाण-भाप  
सहित. न्यूनाधिकता रहित; बरोबर प्रमाण-  
माप सहित Neither more nor  
less, proportionate. उक्त० २६, २८;

अणुणस. पुं० (अनुनास) नाडभाधी गावु  
ते; गायनना छ दोषमानो अेड दोष नाकमे से  
गाना; गायन के छ. दोषो मे से एक दोष

Nasal melody; one of the six  
defects in singing. अणुजो० १२८;  
अणुणोत्ता. सं० कृ० अ० (अनुनीय)  
पाभीने; ध्यान धरीने. पाकरके, ध्यान धरके.  
Having meditated upon; hav-  
ing obtained. . सम० ६;

अणुणणय-अ. त्रि० (अनुन्नत) भद रहित; उन्नत  
नडि ते, गर्व विनातो मद रहित, जो उन्नत  
न हो वह; गर्व रहित. Free from  
pride; not conceited. ‘ एत्थवि  
भिक्षू अणुणणय विणीए’सूय० १, १६, ४,  
दस० ५, १, १३;

✓ अणुणव. धा० I. (अनु+ज्ञा+णि०) भीण  
आदेशतो अमल तथा पठी “ डरेल पाठ धारी  
राभ अने भीणने लणाय ” अेवी रीते शिष्य  
प्रत्ये गुरतो त्रीणे आदेश थाय ते. दूसरे  
आदेश का पालन होजाने पर “किये हुए पाठ  
की धारणा रख और दूसरे को पढा” इस प्रकार  
गुरु का शिष्य के प्रति तीसरा आदेश होना To  
order a disciple to hold and  
teach what he has learnt, (this  
comes after two previous  
orders ). (२) अनुमोदन डरेवु अनुमोदन  
करना to approve of.

अणुणविवज्जंति. अणुजो २,  
अणुणवित्तु. सं० कृ० दस० ५, १, ८१, ८३;  
अणुणवि-वे-त्ता सं० कृ० सम० ३३; दसा० ३,  
३२; ३३, वव० ७, १७; निसा०  
२, ५३; वेय० १, ३७, ३, २४,

अणुणविय. सं० कृ० दसा० ३, ३२, निसा०  
५, २३; ओघ० नि० १७;  
आया० २, १५, १७६;

अणुणवित्तए हे० कृ० वव० ८, १०;

अणुणवेमाण व० कृ० ठा० ६;

अणुणवणा छी० (अनुज्ञापना) आशा;  
रग. आज्ञा, छुट्टी. Order, approval.

अनुमोदन; संमति. अनुमोदन सम्मति permission. प्रव० ६६;

अणुरणवणी स्त्री० ( अनुज्ञापनी ) वसति-भट्टाननीरञ्ज भागवानी भाषा वस्ता-मकान मागने की भाषा. Speech used in asking permission for a house ठा० ४, १; दसा० ७, १;

अणुरणा स्त्री० ( अनुज्ञा ) अधिकार आपवे अधिकार देना. To invest with authority "तिविहा अणुरणा प० तं आयरियं-स्ताए उवज्झायस्ताए गणित्ताए " ठा० ३, ३; ( २ ) अनुमोदन देवु, समति आपवी, आशा अनुमोदन करना; सम्मति देना, आज्ञा consent, approval of, order दस० ५, १, १६; ८३; अणुजो० २,

अणुरणाअ-य त्रि० ( अनुज्ञात ) आशा आपेक्ष. आज्ञा दिया हुआ Permitted, ordered प्रव० ४४५; पंचा० ६, ३१;

अणुरणायव्व त्रि० ( अनुज्ञातव्य ) आशा भागवी, रञ्ज लेवी ते. आज्ञा मांगना, मजूरी लेना. Asking permission वव० ३, २८;

अणुतडभेद. पुं० ( अनुतटभेद ) जेम वांसने यीरवाथी झड पडे तेवी रीते डोर्ध वस्तुने यीरवाथी झड पडे ते. बॉसको चीरने से जिस तरह चिम्याली हो जाती है उसी तरह किसी वस्तु के चीरने से जो चीर हो वह Lengthwise split like that in a bamboo. ठा० १०;

अणुतडियाभेय. पुं० ( अनुतटिकाभेद ) शेड्डी-ने यीरवाथी छातां उतरे तेम डोर्ध पणु यीरवाथी छाड उतरे ते नतनेो द्रव्यभेद माठे को चीरने से जिस तरह उसका छिलका निकलता है उसी तरह किसी भी वस्तु की छाल निकले उस जात का द्रव्यभेद A variety of substance which is peeled off

lengthwise like a sugar-cane पन्न० ११;

✓अणुतप्प धा० I ( अनु+तप् ) पन्तावे डरवे; धोभो डरवे, थयेल लूडमाटे भेद डरवे पश्चात्ताप करना, भूल के लिये खेद प्रकट करना To repent.

अणुतप्पइ क० वा० सूय० १, ४, १, १०;

अणुताव. पु० ( अनुताप ) पश्चात्ताप पश्चात्ताप. Repentance, remorse "पच्छाणुता-वे य तवप्पभावं " उक्त० ३२, १०४, पंचा० १५, ३, जीवा० ३, १;

अणुतावअ त्रि० ( अनुतापक ) पश्चात्ताप डरना, भेद पाभनार पश्चात्ताप करने वाला. Repentant, penitent उक्त० १०, ३३;

अणुताविया. स्त्री० ( अनुतापिका ) परने संताप उपभवनार भाषा दूसरे को संताप कराने वाली भाषा Language giving pain to others. " अणुतावियं खलु ते भास भासति " सूय० २, ७, ७;

अणुत्तम. त्रि० ( अनुत्तम-न उल्लमा अनुत्तमाः ) उत्तम-श्रेष्ठ नडि ते; दुष्ट; नीच दुष्ट; नीच. Not best, wicked. पचा० २, ३१,

अणुत्तर त्रि० ( अनुत्तर ) सौथी श्रेष्ठ, प्रधान; सर्वोत्तम; सर्वोद्दृष्ट, जेनाथी उत्तर-प्रधान पीणुं नथी तेवुं सब से श्रेष्ठ, प्रधान, सर्वोत्तम Best, highest " केवलिसस ण दस अणुत्तरा पणुत्ता, तंजहा-अणुत्तरे नाणे अणुत्तरे दंसये अणुत्तरे चरिते अणुत्तरे तये " ठा० ५, १, भग० ६, ३१, १३, १, १४, ७; १६, ६, २५, ७, नाया० १, १४; दस० ४, १६; २०, ६, १, १६, जं० प० २, ३१; ओव० ३४, ४०, उक्त० २, ३७, १०, ३५, दसा० १०, १; ११, आव० ४, ८, काप० ५, १०६, ( २ ) पुं० वि० ५, ५० यत आदि पाय आणुत्तरविमान विजय,

वैजयंत आदि पाच अनुत्तर विमान. the five highest heavenly abodes viz Vijaya, Vaijayanta etc प्रव० ८३०; विशेष० ६६७; भग० १, ५; उक्त० ३६, २१०; ( ३ ) पु० अणुत्तर विमानवासी देवता. अनुत्तर विमानवासी देव. deities residing in the above heavens उक्त० ३६, २१०;—उववाइय-अ पु० ( -उपपातिक ) अनुत्तर विमानना देवतामां उपलवावाणा; अनुत्तर विमानना देवता. अनुत्तरविमान के देवों में उत्पन्न होने वाला, अनुत्तरविमान का देव deities born among those of Anuttara heavens, gods of Anuttara Vimāna. “अत्थि णं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा, हता अत्थि से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ अणुत्तरोववाइया देवा ” भग० १४, ७; सम० ११००; जं० प० २, ३१; नंदी० ५३; कप्प० ७, २२५, भग० ५, ४, ६, १, ८, १; २४, २१, नाया० ८; पन्न० १५, ठा० १, १, जीवा० १,— गइ. पुं० (-गति) सिद्धगतिने प्राप्त थयेव. सिद्धगति को प्राप्त. finally emancipated, Siddha. “ एस् करोमि पणामं तित्थयराणं अणुत्तरगईणं ” ( २ ) स्त्री० सिद्धगति. सिद्धगति Siddha-hood, final bliss, absolution. चं० प० —णाणदंसणाधर त्रि० (-ज्ञानदर्शनधर) सर्वोत्तम ज्ञान अने दर्शनना धरनार; तीर्थधर, देवणी आदि. सर्वोत्तम ज्ञान तथा दर्शन को धारण करने वाले, तीर्थकर केवली आदि possessing absolute knowledge. o g Tirthaṅkaras, Kevalis etc “ एवं से उदाहु अणुत्तरदसी अणुत्तरणाणदसण धरे ” सूय० १, २, ३, २२, —णाणि. त्रि०(- ज्ञानिन्) देवणी. केवली.

possessed of perfect and highest knowledge, a Kevalī उक्त० ६, १८; सूय० १, २, ३, २२;—दंसि. त्रि० (-दर्शिन् ) देवणी दर्शनी. केवल दर्शन वाला. possessed of perfect and absolute right belief, a Kevalī. उक्त० ६, १८,—विमाणं न० (-विमान) विन्थ, वैजयंत, जयंत, अपराजित अने सर्वार्थसिद्ध, ये पांच अणुत्तर विमान विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित और सर्वार्थसिद्ध ये पांच अनुत्तर विमान. the five Anuttara heavens viz Vijaya, Vaijyanta, Jayanta, Aparājita and Sarvārthasiddha “पंच अणुत्तरविमाणा पणत्ता, तंजहा-विजये वेजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे य ” भग० १, ५; ६, ५, १६, ८; १६, ७, २५, ६, अणुजो० १०४;

अणुत्तरग्गा स्त्री० (अनुत्तराग्गा) धित्प्राग्भारः पृथ्वी; आठमी पृथ्वी; सिद्धिशिला. ईषत् प्राग्भार पृथ्वी, आठवी पृथ्वी, सिद्धशिला. A place called Īsatprāgbhāra in which the Siddhas live; Siddhasīlā “अणुत्तरगं परमं महेसी” सूय० १, ६, १७,

अणुत्तरोववाइयदसा स्त्री० (अनुत्तरोपपातिक-दशा) नवमा नंथरनां अंगसूत्रनुनाम्, देवेभो न्ने मुनिओ अनुत्तरविमाने उपलया तेना तणु वर्ग छे; ‘अणुत्तरोववाइ’ नामे नवमु अंग सूत्र नवे अंग सूत्र का नाम, जिसमे जो मुनि अनुत्तरविमान मे उत्पन्न हुए है, उनके वर्णन के तीन वर्ग है; ‘अणुत्तरोववाइ’ नामक नवो अंगसूत्र. The ninth Aṅgasūtra describing the three classes of saints born in Anuttara heaven नंदी० ४४; सम० १, अणुजो० ४२;

अणुदह त्रि० ( अनुदयिन् ) उदय न  
पावनार; उदयमा न अवनार, जेनो उदय  
नथी थयो तेवी कर्मप्रकृति उदय न पाने  
वाला, उदय मे न आने वाला, जिसका उदय  
नहीं हुआ ऐसी कर्मप्रकृति. Not coming  
to rise, ( Karma ) that has not  
matured भग० ११, १, ३५, १;

अणुदय पुं० ( अनुदय ) कर्मना विपाकेऽयने  
अभाव कर्म के विपाकोदय का अभाव  
Absence of the maturing of  
Karma. क० ग० २, १३;

अणुद्विज्जंत त्रि० ( अनुदीयमान ) अंतर्भु-  
ङ्गापगत उदयमा न आवेत्तु. अतर्मुहूर्त-  
तक उदय मे नहीं आया हुआ Not  
maturing or rising for an  
Antarmuhūrta विशेष ५३०,

अणुदिरण त्रि० ( अनुदीर्य ) नष्टकना  
लविष्यमां जेनी उदीरणा थयानी नथी अेवी  
कर्मप्रकृति नजदीक के भविष्य में जिसकी  
उदीरणा न हो ऐसी कर्मप्रकृति  
Karma which is not to mature  
in very near future भग० १, ३,

अणुदिय त्रि० ( अनुदित ) उदयमा न आवेत्तु.  
उदय मे न आया हुआ Not risen, not  
come to rise or maturity क० प०  
५, ३३,

अणुदियहं अ० ( अनुदिवसम् ) दिन प्रतिदिन  
दिन प्रतिदिन Day after day, every  
day. सु० च० १, ३०४,

अणुदिसा स्त्री० ( अनुदिशा ) लघुवर्ती  
पदवी यावज्जीवन की पदवी Life-long  
status or position. " तीमे इत्तरिये  
दिसं वा अणुदिस वा " वव० ६, २०,  
( २ ) विदिशा, भुजो, अग्नि, नैऋत्य, वायव्य  
अने धिशन अे आरमानो गमे ते अेक  
भुजो: विदिशा, अग्नि, नैऋत्य, वायव्य और

ईशान इन चारों में से कोई एक विदिशा—कोना.  
any of the intermediate  
points of the compass पाईया पडियां  
वावि, उहं अणुदिसामावि " दस० ६, ३४,  
सूय० २, १, १७, आया० १, १, १, २;

अणुदिसी स्त्री० ( अनुदिशा ) विदिशा,  
भुजो कोना An intermediate  
point of the compass कप्प० ६, ६१,  
अणुदीरग त्रि० ( अनुदीरक ) कर्मनी उदीरणा  
न करनार कर्म की उदीरणा न करने वाला  
Not forcing up Karma into  
maturity. भग० ११, १, २५, ६, ३५, १;  
क० ग० ४, ६५,

अणुद्विष्ट त्रि० ( अनुद्विष्ट ) उद्देश दोषरहित  
आहार अ.दि उद्देश दोष से रहित आहारादि..  
Food etc free from the fault of  
being specially prepared भग०  
७, १,

अणुद्धरी स्त्री० ( अनुद्धरी-न उद्धर्तुं शक्येति )  
अंथवा; इथयानी अेक अत कुथु आदि सूक्ष्म  
जीव विशेष, ( भुम्मण, पजावी ) A variety  
of minute insects कप्प० ५, १३१,  
६, ४५;

अणुद्धित त्रि० ( अनुद्धित ) लुभो 'अणुद्धिय'  
शब्द. देखो 'अणुद्धिय' शब्द. Vide  
'अणुद्धिय'. पचा० १५, ३८,

अणुद्धिय त्रि० ( अनुद्धित ) अथी नहि  
इदिं खुंचकर नहीं निकाला हुआ Not  
drawn out ओष० नि० ८०४,

अणुद्धुअ त्रि० ( अनुद्धत-अनु पश्चादुद्धत  
मनुद्धतम् ) तपावनी सन्न उदय तपाकर तैयार  
किया हुआ. Made ready by heat-  
ing नाया० १; भग० ११, ११; ज० प०  
५, ११२, काप० ५, १०१,—मुद्ग. न०  
(—मृद्ग ) सन्न उदय मृद्ग तैयार  
किया हुआ मृद्ग. a kind of drum or

tabor made ready for use. कम्प०  
५, ११०;

अनुधम्म पुं० ( अनुधर्म ) अनुकूल धर्म  
अनुकूल धर्म Conformable religion  
सूय० १, २, १, १४, — चारि पुं० (—च.रिन्)   
तीर्थंकरादिनाः परंपरे धर्मप्रभागे यलनार.  
तीर्थकरादि के प्रहपित धर्मानुसार चलने वाला  
one conforming to the religion  
as expounded by Tirthankaras  
etc. “ जसि चिरता सणुट्टिया कासवत्स  
अनुधम्मचारिणो ” सूय० १, २, २, २५,

✓ अनुधाव. धा० I. ( अनु+धाव् ) धा० ७ ॥  
पाठ्य देवु पाछे पाछे दौडना To run  
behind; to run in the foot-  
steps of.

अनुधावइ. प्रव० १५१७;

✓ अनुज्ञव. धा० I ( अनु+ज्ञा ) आता देवी  
आज्ञा लेना To ask permission.  
अनुज्ञाविय सं० कृ० प्रव० ६४५;  
अनुज्ञाविनु सं० कृ० प्रव० १२४,

अनुज्ञवणा स्त्री० ( अनुज्ञापना ) लुओ  
“अनुज्ञवणा” शब्द देखो ‘अनुज्ञवणा’  
शब्द Vide “अनुज्ञवणा”. प्रव० ६६,

अनुज्ञवेयव्व त्रि० ( अनुज्ञापितव्य ) धी०  
५२ आज्ञा देवी दूसरी बार आज्ञा देना.  
Giving command for the second  
time वेय० ३, २८ ( २ ) आज्ञा देना  
योग्य. आज्ञा देने योग्य worthy of  
being comm nded वव० ४, २१,

अनुज्ञाय त्रि० ( अनुज्ञात ) जिनसमत;  
वीतरागे आज्ञा आपेक्ष जिनसम्मत, वीतराग  
भगवान् द्वारा आज्ञापित. Permitted  
by Tirthankaras etc. ठा० ३, ४,  
पिं० नि० २५२; -

✓ अनुपन्न. धा० I ( अनु+प्र+दा ) अपावतुं,

देवर वतुं दिताना, To cause to be  
given.

अनुपइजा. वि० आया० २, १, १, ५;

अनुपदावेइताः. णि० सं० कृ० भग० ५, ६;

अनुपइन्न. त्रि० ( अनुप्रकीर्ण ) परस्पर भगी  
गथेल परस्पर में मिला हुआ Mixed up  
together कन्० ३, ४६;

अनुपथ न० ( अनुपथ ) मार्ग—पथनी समी-  
पे मार्ग के समीप Near a road. वेय०  
३, २६,

अनुपत्त. त्रि० ( अनुप्राप्त ) पछीधी प्राप्त  
थयेल पाछे से प्राप्त (Got after. “सिद्धि  
सगमणुपत्तो ” दस० ३, १५; नाया०  
१, १२, १४; कम्प० १, ६; ३, ५३,  
भत्त० ६५,

अनुपपण त्रि० ( अनुपपन्न ) उपपन्न नहि  
थयेल अनुपपन्न, जो उपपन्न नहीं हुआ हो  
Not arisen, not come to exist.  
दसा० १, १३,

✓ अनुपरियट्ट धा० I. ( अनु+परि+वृत् )  
लटइवु; भ्रमणु इरवु भटकना, भ्रमण  
करना To wander.

अनुपरियट्टइ. नाया० ३; ६; भग० १, ६;  
२, १; जं० प० ७, १६९;

अनुपरियट्टति सम० १३, उत्त० ८, १५,  
सूय० १, १, २, ३२, १, ६,  
११, जं० प० ७, १४०;

अनुपरियट्टिजा. वि० भग० १८, ७,  
अनुपरियट्टिस्तइ-ति. भ० नाया० २; ६;  
१५, १७, १८; भग० १३, ६;

अनुपरियट्टिस्तंति. सूय० २, २, ८२;  
अनुपरियट्टिस्त. सं० कृ० भग० ३, २; ६,  
५, १०; ६, ३३; १८, ७;  
२०, ६; पम्प० ३६; ओव०  
४२;

अनुपरियट्टिजाण. व० कृ० सूय० १, ७, ३;

अणुपरियद्वियव्व त्रि० ( अनुपरिवर्तितव्य )  
परिभ्रमणुं करुवु, परिभ्रमणुं करुवा योग  
परिभ्रमण करुना, परिभ्रमण करुने योग्य  
Wandering frequently, deserv-  
ing of frequent wandering or  
transmigration नाया० ६,

अणुपरिहारि पुं० ( अनुपरिहारिन्-परिहारिण  
अणु स्तोत्रक प्रतिलेखनादिषु साहाय्यं करोतीति  
अणुपरिहारी ) परिहार तपत्र णो ल्यां ल्या  
ल्य ल्यां ल्यां तेनी प ल्वा इरो तेने सहाय  
करुनार साधु परिहार तप वॉला जहा जहा  
जावें वहा वहा पीछे रहकर उमकी सहायता  
करने वाला साधु An ascetic who  
accompanies and renders  
services to a Parihāī saint  
ठा० ३, ४,

अणुपरिहारिअ. पुं० ( अनुपरिहारिक )  
अणुओ 'अणुपरिहारि' शब्द दसो 'अणुपरि-  
हारि' शब्द Vido 'अणुपरिहारि' प्र०  
६१५, वव० २, ५;

अणुपविष्ट त्रि० ( अनुपविष्ट ) प ल्वा प्रवेश  
इरेअ पीछे प्रवेश किया हुआ. Entered  
after, next ज० प० ३, ५२, कप्प० ४,  
८७, वव० ८, ११,

अणुपव्वय धा० I ( अनुपव्वयन् )  
डे धनी साथे प्रव्वय-दीक्षा लेरी अथवा  
डे धनी अनुकरणी प्रव्वय लेरी किसीके  
साथ या किसीके अनुकरण से दीक्षा लेना.  
To follow another in taking  
Diksā

अणुपव्वयति. नाया० ५;

अणुपस्स धा० I ( अनुपस्स ) जेवु,  
देणवु देखना To see.

अणुपस्सइ. दसा० ५, ३१,

अणुपस्सिअ. सं० क० सूय० १, २, २, ५;

अणुपस्सअ. व० क० उत्त० ६, १६,

अणुपस्सि पुं० ( अनुपस्सिन्-अणुपस्सिन् )  
शुभाशुभ कर्म अने तेना पण्णामने जेवा  
व जे शुभ शुभ कर्म ओर उसके परिणाम  
को देखन वाला ( One ) looking  
into good and evil Karmas  
and their results " विद्वयकप्पे  
एणणुपस्सी " आया० १, ३, ३, ११७, १,  
३, २, ७७,

अणुपाअ. धा० II ( अनु+पा ) प वुं निजाना.  
To cause to drink

अणुपाअजा वि० निसी० ७, २३;

अणुपाणा त्रि० ( अणुपाणा अणुवः सूक्ष्माः  
प्राणा प्राणितो येवु ते अणुपाणाः ) सूक्ष्म  
अणुओश्री युक्त सूक्ष्म जन्तुओरा युक्त Full  
of minute insects " जत्रय विहराहि  
जोगव, अणुपाणा पथा दुरस्ता " सूय० १,  
२, १, ११, क० ग० ५, ७५;

अणुपाल धा० II ( अनु+पाल ) निरंतर  
पवन करवुं, निरंतर भेववु, अणु करवुं;  
अथ ववु निरंतर पालन करना, निरंतर सवन  
करना, रक्षण करना, बचाना To observe  
constantly, to protect con-  
stantly

अणुपालइ भग० २, १,

अणुपालो. आव० ४, ८;

अणुपालए दस० ६, ४७;

अणुपालिज्जा वि० आया० १, १, ३, १६;

दम० ८, ६१,

अणुपालहत्ता. सं० क० उत्त० २६, १;

अणुपालेता सं० क० ओव० ४१;

अणुपालित्तः " कप्प० ६, ६३ व० ६, ३७;

अणुपालित्तः " क० प० २, ६१;

अणुपालमाण व० क० भग० २, ५,

अणुपालत व० क० ज्ञान० ४, ८,

अणुपालणा क्री० ( अनुपालना-अनुपालना )  
संकेत पथे पथ दीक्षे पत्र्यभाष्य अ२. अ२

पाणवां ते संकट आने पर भी ग्रहण किये हुए पञ्चखाण का यथार्थ रीति से पालन करना Steady observance of vows of abstinence in spite of difficulties. ठा० ५, ३, —सुद्ध. न० (—शुद्ध) पञ्च-आणुनो अेक भेद, दुःकाण, अटवी वगेरे अपवादे पणु पञ्चआणु अरापर पणु ते पञ्चखाण का एक भेद; दुष्काल, वन आदि में भी पञ्चखाण का ठीक ठीक पालन करना. steady observance of the vows of Pachchakhāṇa or abstinence even where exceptions are allowed, e. g. in famine etc. ठा० ५, ३,

अनुपालिय त्रि० ( अनुपालित ) आत्म-संयमनी अनुकूलतापणे पाणेषु आत्म संयम की अनुकूलतापूर्वक पाला हुआ Observed consistently with self-restraint; e. g. a vow. ठा० ८;

अनुपेह न० ( अनुपृष्ट ) अनुक्रम; परिपाटी अनुक्रम; परिपाटी Serial order. “ अनुपिहसिद्धाह ” सम० ४४;

अनुपुत्तिया. त्री० ( अनुपुत्रिका ) संतति संतति. Progeny. नाया० १,

अनुपुव्व. न० (—अनुपूर्व—आनुपूर्व ) अनुक्रम; परिपाटी अनुक्रम; परिपाटी Serial order. सूय० १, ११, ५, ओव० १०; नाया० १; ३, ४, ५, ६; १३, १४; भग० ११, ११, १३, ६, आया० १, ७, २, २०४, ज० प० ४, ७४;

अनुपुव्वलो अ० ( अनुपूर्वणस् ) अनुक्रमप्रमाणे, अनुक्रमे अनुक्रमपूर्वक In serial order. आया० १, ६, १, १७२; उक्त० ३६, ४७;

अनुपुव्वी. त्री० ( अनुपूर्वी ) अनुक्रम, परिपाटी अनुक्रम; परिपाटी. Serial order. नाया० ८; राय० ६८, उक्त० २, १, जं० प० ७, १३७; आठ० ६७;

अनुपुव्वी. त्री० ( आनुपूर्वी ) नामकर्मनी अेक प्रकृति, के जेना उदयथी एव अेक गति-माथी एव गतिमा सिद्धिरीने लक्ष शके छे. नामकर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से जीव एक गति से दूसरी गति में सीधे तौर पर जा सकता है. A variety of Nāmakarma by the rise of which a soul can pass directly from one state of existence into another; क० गं० १, २४; ४३; ५, १६, प्रव० १२७७;

अनुपेहंत. व० क० त्रि० ( अनुप्रेक्षमाण ) चिंतयते. सोचता हुआ Thinking, meditating. प्रव० ३६३;

अनुष्णपअंत व० क० त्रि० ( अनुप्रददत् ) अपायते. दिलाता हुआ. Causing to be given निसी० १, २८,

अनुष्णपइय त्रि० ( अनूत्पत्तित ) उड़ी गयेल; उडेल; उर्ध्व गति करेल उड़ गया हुआ, ऊर्ध्व गमन किया हुआ, उड़ा हुआ Flown up, gone upwards “ आगासेणु-ष्णपइयो ललियचवलकुंडलतिरीडी ” उक्त० ६, ६०;

अनुष्णपगंध. पु० ( अनुष्णग्रन्थ—विरति-तयाऽणुः स्वल्पोऽपि प्रगतो ग्रन्थो धनादिर्यस्य स तथा ) निर्ग्रन्थ, परिग्रह रहित—साधु. निर्ग्रन्थ, परिग्रह रहित—साधु. One freed from even the slightest worldly possessions, an ascetic. ठा० ६;

अनुष्णपराण त्रि० ( अनुष्ण ) वर्तमान समयमा जेनुं अस्तित्व नथी ते, उत्पन्न नथील वर्तमान समय में जिसका अस्तित्व नहीं है वह; अनुष्ण, जो उत्पन्न नहीं हुआ है वह Not born, not existing. दसा० ४, ६१; विशेष० ४१;



✓ अणुपदा. धा० I (अनु+प्र+दा) आप्तुं; देतु. देना. To give; to bestow upon.  
 अणुपदाइ. निसी० १, २८;  
 अणुपदेजा. वि० वेय० ४, ११; १२;  
 अणुपदाउ हे० कृ० वव० २, २६,  
 अणुपदेमाण व० कृ० वेय० ४, ११,  
 अणुपदायव्व. त्रि० (अनुप्रदातव्य) देतु  
 अणुपदेय्ये; देना थोय्य देना चाहिये, देन योग्य.  
 Worth being given. भग० ८, ६,  
 अणुपयाहिणीकरेमाण त्रि० (अनुप्रद-  
 क्षिणीकुर्वत्) प्रक्षिणा इरतो. प्रदक्षिणा  
 करता हुआ. Circumambulating  
 राय० १७३; भग० ६, ३३, ज० प० ३, ६८,  
 ✓ अणुपवाअ धा० II. (अनु+प्र+वाच्).  
 निर्धारी वांय्यु, ध्यान एध वांय्यु ध्यान देकर  
 पढना. To read attentively.  
 अणुपवाएति ज० प० ३, ४५,  
 अणुपवाएमाण. व० कृ० ज० प० ३, ४५,  
 अणुपवाय-अ पुं० (अनुप्रवाद) नवमा  
 पूर्वनु नाम; विद्यानुप्रवाद तेनु अपर नाम छे.  
 नवें पूर्व का नाम, जिसका दूसरा नाम विद्यानुप्र-  
 वाद है. Name of the ninth Pūrva,  
 its other name is Vidyānupra-  
 vāda नदी० (२) येइना इला पछी इडेयुं  
 ते, अनुवाद एक के कहने के बाद कहना,  
 अनुवाद speaking after one has  
 spoken सूय० २, ७, १३;  
 अणुपविह त्रि० (अनुप्रविष्ट) प्रवेश इरैय,  
 पेइल-पेसेल प्रवेश किया हुआ Entered  
 नाया० १, ८, १४, १६, १८, भग० ३, १,  
 ८, ६; ११, ११, १२, १, १५, १, १६, ५, ६,  
 निर० १, १, दस० ६, २, वेय० १, ३७,  
 ✓ अणुपविस. धा० I II (अनु+प्र+विच्)  
 प्रवेश इरवे; अंदर जतु, दाअल थतु प्रवेश  
 करना, भीतर जाना To enter.  
 अणुपविसइ भग० ७, ६; १२, १, १५, १;  
 राय० १७३; ओव० ३१; ज०

प० ३, ५४, नाया० १; २, ५;  
 ८, १४; १६; निसी० १६, १;  
 अणुपवेसेइ. नाया० १६;  
 अणुपवाविमइ नाया० १;  
 अणुपविसति नाया० १; २, ८, ६, १६;  
 अणुपविसासि. नाया० १६;  
 अणुपविसामि. भग० १५, १;  
 अणुपविसे. वि० उत्त० २, १४,  
 अणुपविसेज्जा. वि० दसा० ७, १;  
 अणुपविस-से-ह. आ० नाया० ८, १४; १६;  
 अणुपविसइत्ता स० कृ० नाया० १, २;  
 ८; १४, १५, १६, भग०  
 ७, ६, १५, १;  
 अणुपवेसेइत्ता सं० कृ० नाया० १६,  
 अणुपविसइत्ता स० कृ० नाया० १;  
 अणुपवेसित्ता स० कृ० निसी० १, १०;  
 अणुपविसित्ता. स० कृ० भग० ३, ४, आया०  
 २, ७, १, १५५, निसी० ५, ३७,  
 अणुपविसामित्ता सं० कृ० भग० १५, १;  
 अणुपविस्सा स० कृ० सूय० १, १३, १७,  
 अणुपविसित्तए हे० कृ० नाया० ८;  
 अणुपविसमाण व० कृ० भग० १६, ६;  
 अणुपसूय. त्रि० (अनुप्रसूत) जन्मेकुं. जन्मा  
 हुआ. Boin. आया० २, १, ८, ४६,  
 अणुपिय. त्रि० (अनुप्रिय) अनुक्षु;  
 भीःभीः अनुकूल Favourable;  
 agreeable “अन्नस्स पाणस्स इहलो-  
 इयस्स, अणुपिय भासति सेवमाणे” सूय०  
 १, ७, २६,  
 ✓ अणुपेह धा० I (अनु+प्र+ईच्) अनुप्रेक्ष-  
 यितवना इरवी, लावना लाववी, आलोचन-  
 मनन इरतु चितवन करना, भावना करना;  
 आलोचन मनन करना To think; to  
 meditate upon.  
 अणुपेहंति ओव० २१;

अणुपेहा. स्त्री० (अनुपेक्षा.) भावना; विचारणा, स्थितयत्न. चिंतवन; भावना; विचारणा  
Meditation. ओव० नि० भा० २६१;  
अणुजो० १३; ओव० २०; ठा० ४, १, भग०  
२५, ७, वि० नि० ६६६; उत्त० २६, २;

अणुपेहि स्त्री० (अनुपेक्षिन्) स्थितयत्न-  
आलोचन करने. चिंतन-आलोचन करने  
वाला. One who thinks; one who  
meditates upon. उत्त० ५, ११, १३,  
१५;

अणुफरिहा स्त्री० (अनुगरिखा) खाधनी  
समीपनी जगह; खाधनी पसे, स्थान.  
खाई के समीप की जगह A place near  
a ditch or a trench. वेय० ३, २६,

अणुकास. पुं० (अनुसर्श) अनुभव; महिमा  
महिमा; महत्त; वडप्पन. Dignity,  
greatness दस० ६, १६;

अणुबंध पुं० (अनुबन्ध) सतत; निरंतर,  
अविच्छिन्नपणुं सतत; निरन्तर, सदा, अवि-  
च्छिन्नता Uninterruptedness;  
unbroken continuity. ओव० नि०  
२६५, वि० २५७०,—छेदण पु०  
(—छेदन) अनुभव-संसार-अधने छेदन. २  
उपाय; कर्म अपावधाने! उपाय. संसार  
सम्बन्ध के छेदने वाला उपाय, कर्मजय  
करने का उपाय. means of destroying  
Karma. “चित्त.एणं कम्माणं चित्तोचिं  
होइ खवणवाओ वि, अणुबंधेयणाइ सो  
उण एवति णायन्वो” पंचा० १८, ४१;  
—भाव. पुं० (—भाव) अनुभव-रसरूपे  
उभनी सता. अनुभव-रसरूप से कर्म की सत्ता  
the state of Karma matured  
into mild or strong results.  
पंचा० ५, ४; —भावविधि. पु० (—भाव-  
विधि) पश्यभाषुना परिणामते निरंतर

टक्षणी रभयानो विधि पचखाण के परिणाम  
को निरंतर बनाये रखने की विधि. rules  
of steadily keeping up the  
thought-activity about Pachch  
khāna or abstinence पंचा० ५, ४४;  
—साहग. वि० (—साधक) अनुबंध-  
निरंतरपणुं सधन. २ अनुबन्ध-निरन्तरता  
साधने वाला one obtaining or  
trying to obtain continuity.  
पंचा० ८, ४८; —सुद्धिभाव. पुं०  
(—सुद्धिभाव) निरंतर कर्मना क्षयोपशम-  
धी आत्मानि निर्मलताथायते निरंतर कर्म  
के क्षयोपशम से आत्मा की निर्मलता जो  
हो वह. the purity of soul arising  
from constant subsidence  
and destruction of Karma. पंचा०  
८, २७;

अणुबंधणा स्त्री० (अनुबन्धना-अनुसन्धान)  
अनुबंधान; लकी गयेद वतनुं रभरणु डरी  
सध मेणवरी ते अनुसन्धान, जौच, भूली हुई  
वात का स्मरण कर उसका सम्बन्ध मिला  
लेना. Establishment of proper  
contextual connection by  
recollection “तस्सेव पणुंतरणडुस्सणु-  
वधणा घडणा” पंचा० १२, ४५;

अणुबंधि वि० (अनुबन्धिन्) हेतु;  
सधक. हेतु; साधक. A mark; a  
basis of proof or inference.  
ओव० २०, ( २ ) निरंतर पत्र द्वि विलग  
लेगा डरवाथी पडिलेडुणमा अननुबंधी देप  
लागे ते देप टागीने पडिलेडुणु डरतुं ते.  
निरंतर वस्त्रादि विभाग एकत्रित करने से  
पडिलेहण में जो दोष लगता है उस दोष  
को टालकर पडिलेहण करना. get-  
ting rid of the fault of put-  
ting together clothes etc.

without examining them with care. टा० ६;

अणुबद्ध त्रि० (अनुबद्ध) आधेन, निरंतर  
अणुबद्ध करेन. बांधा हुआ, निरन्तर प्रहण किया  
हुआ Tied, taken ceaselessly  
सम० ११, (२) निरंतर; सतत, अव्यवच्छिन्न  
निरंतर, सतत, अव्यवच्छिन्न constant,  
ceaseless परह० १, १, २, नाया०  
२; (१) व्यप व्याप्त. pervading. नाया०  
२, (४) पूर्वसंचित, द्वेषबंधनधी बंधायेन  
पूर्वसंचित, द्वेषबंधन से बद्ध. fettered  
by the bond of hatred shown  
in past life. उक्त० ४, २,—खुडा लो०  
(-खुडा) अत्यन्त लूभ, तीव्र क्षुधा बहुत  
ज्यादा भूख, तीव्र क्षुधा sharp hunger  
“अणुबद्धखुहापरद्धसीऊरहतएहवेयणादुग्घट  
घटिप्रवित्रणमुहविच्छवित्रा ” परह० १,  
३,—णिरंतर. त्रि० (-निरन्तर) अत्यंत  
निरंतर; उभेश. सदा, हमेशह incessant;  
constant. “अणुबद्धणिरंतरवेयण सु ”  
परह० १, १;—तिव्वेण त्रि० (-तीव्वेण)  
निरंतरपणु तीव्र वैर शत्रुता निरन्तर  
तीव्र वैर रखने वाला given to implac-  
able hostility. “अणुबद्धतिव्वेण,  
परोप्परं वेयण उदीरति ” परह० १, १,  
-धम्मज्झाण. त्रि० (-धम्मज्झाण-अनुबद्धं  
सततं धम्मज्झाणमाज्ञाविनयादिलक्षण येषां  
तेऽनुबद्धधम्मज्झाणाः ) धर्मध्यान चिंतननी  
अहं सतत प्रवृत्ति शत्रुता धर्मध्यान  
चितवन में निरंतर प्रवृत्ति रखने वाला  
constantly engaged in religious  
meditation. परह० २, १,—रोसप्पसर  
त्रि० (-रोसप्पसर-अनुबद्धः सततमव्य-  
वच्छिन्नो रोसप्प प्रसरो विस्तारो यस्य  
सोऽनुबद्धरोसप्पसरः ) निरन्तर कोधी निरंतर  
कोधी; सदा क्रोध सहित. perpetually

in anger. गच्छा० टी० ८२;  
अणुबद्ध धा० I II (अनु+बद्ध) गोलुं, उडुं  
बोलना; कहना To speak, to tell.

अणुबद्ध भग० ११, ११,

अणुबद्ध नाया० १;

अणुबद्धमाणा व० कृ० नाया० १;

अणुबद्ध त्रि० (अनु+भट्ट) अलिमान  
रहित आभेमान से रहित Free from  
pride or conceit. “अणुबद्धमाणा  
जीवे अणुबद्ध अणुबद्ध विगमसेने” उक्त०  
२६, २६, (२) स्पष्ट नहिं ते, खुदु नहिं  
ते जो स्पष्ट नहीं हो-प्रकट नहीं हो वह  
not clear, not open. “अणुबद्ध-  
पसत्थ ज्ञेय ” जीवा० ३,

✓अणुभव धा० I (अनु+भू) अनुभवुं,  
भोगनुं अनुभव करना, भोगना.

अणुभवति भग० ११, १२,

अणुभविउं हे० कृ० उक्त० २०, ३१;

अणुभवमाण व० कृ० नाया० १३;

अणुभाग पु० (अनुभाग) कर्मतो तिक्त-निक्रमो,  
तिक्ततर-वधारे तिक्रमो, उडु, उडुतर वगेरे  
रस, कर्मता उडुधे मा अथवसायातुसार के  
रस पडे ते, कर्मविपाक, कर्मपरिशुति चर्परा,  
कडुआ वगेरह रस, कर्म के स्फुटो मे अथव-  
साय के अनुसार जो रस पडे वह, कर्मविपाक;  
कर्मपरिशुति Results of Karma  
with reference to their inten-  
sity caused by the degree of  
passion. क० ग० ४, ८५, ५, ६५;  
उक्त० ३३, २४, भग० १, ४, सम० ४;  
सूय० २, ६, ३४, (२) अनुभाग; स्वभाव.  
अनुभाग, स्वभाव. nature. क० प०  
१, २४;—अणुबद्धय. (-अणुबद्धत्व )  
अनुभाग-रस आशी कर्मनु अणुबद्धय-  
परस्पराओ वत्त. रूपे सरा. मणी उरवी ते.  
अनुभाग-रस की अवेदाने कर्म का अणुबद्धत्व-

न्यूनाधिकरूप से परस्पर तुलना करना. weighing the comparative intensity of Karmic results ठ० ४, २;—उदय. पुं० (—उदय) कर्मोत्पत्ति अनुभाग-रसरूपेण उदय कर्मोत्पत्ति का अनुभाग-रसरूप से होता हुआ उदय maturing of Karma in greater or lesser intensity. क० प० ६, ५,—उदीरणा स्त्री० (—उदीरणा) उदयमां आवेशान् कर्मोत्पत्ति रसनी साथे उदयमां न आवेश रसने भेद्यते तेषां भोग्यते तेषां उदय में आये हुए कर्म के रस के साथ उदय में नहीं आये हुए रस को मिलाकर उसका फल भोगना blending the intensity of matured Karmas with that of unmatured ones and experiencing the results of the modified intensity. ठ० ४, २;—उदीरणोपक्रम पुं० (—उदीरणोपक्रम) उदयमां आवेशान् रसनी साथे सत्तामां रक्षितां रसने भेद्यते वेदानो आरंभ इत्येते ते. उदय में आये हुए रस के साथ सत्ता में रहे हुए रस को खींचकर उसके भोगने का आरंभ करना beginning to experience the blended intensity of the matured and unmatured Karmas ठ० ५, १;—कर्म न० (—कर्मन्) कर्मोत्पत्ति रस, तीव्र, तीव्रतर, मंद, मंदतर वगैरे कर्मोत्पत्ति रस शुभ, अशुभ रस कर्म का रस, तीव्र, तीव्रतर, मंद, मंदतर आदि कर्मोत्पत्ति में का शुभ अशुभ रस greater or lesser intensity of the results of Karmas according to their nature. भग० १, ४;—सामान्यता उद्य न० (—नामनिधत्तायुष्-गत्यादीनां नाम कर्मणामनुभागवन्धरूपो भेदोऽनुभागनाम,

तेन सह निधत्तमायुरनुभागनामनिधत्ता-युरिति) नामकर्मोत्पत्ति गति आदि प्रकृतिना अनुभागवन्धनी साथे आयुष्य कर्मोत्पत्ति निवृत्त वन्ध इत्येते, आदिभ्यो वन्धो अत्रेक भेद. नामकर्म की गति आदि प्रकृति के अनुभागवन्ध के साथ आयुष्य कर्म का घनिष्ठ सम्बन्ध करना, आयुष्य कर्म के वन्ध का एक भेद blending together the intensity of Nāmakarma with that of Āyusyakarma; a variety of the bondage of Āyusyakarma. भग० ६, ८; सम०—वन्ध पुं० (—वन्ध) कर्मोत्पत्ति तीव्र, तीव्रतर आदि रसो वन्ध कर्मोत्पत्ति में तीव्र, तीव्रतर आदि रस का वन्ध. the intensity of the bondage of Karma according to the degree of passion ठ० ४, २,—वन्धद्वारा न० (—वन्धस्थान) अनुभागवन्धनी स्थानकः एते एते अध्यवसाये अनुभाग-अत्रेक समयना इत्यायुसंयुधो अध्यवसायधी अहंत्वं इत्येते कर्मोत्पत्तिना रससमुदायानु परिणाम थाय ते इत्यायोदयरूप अध्यवसायविशेष अनुभाग वन्ध के स्थानक, जिन जिन अध्यवसायों से अनुभागवन्ध का एक समय के कषायसम्बन्धी अध्यवसाय से ग्रहण किये हुए कर्मोत्पत्ति के रससमुदाय का परिणाम हो वह कषायोदयरूप अध्यवसायविशेष. thought-activity in the form of passion giving rise to greater or lesser Karmic bondage प्रव० १०६५,—संक्रम. पुं० (—संक्रम) कर्मोत्पत्ति रसमां संक्रमणं थयुं ते, संक्रमणो अत्रेक भेद. कर्म के रस में संक्रमण होना, संक्रम का एक भेद transformation of Karmic results; a variety of Sankrama क० प० ५, ५, ७१;

—संतकर्म. न० (—सत्कर्मन् ) अनुभाग  
संबंधी कर्मनी सत्ता; कर्मना अनुभाग-  
रसनी सत्ता अनुभाग सम्बन्धी कर्म की सत्ता,  
कर्म के रस की सत्ता existence of  
Karmic matter in relation to  
the intensity of bondage. क०  
प० ७, १,

**अणुभाव** पुं० ( अनुभाव ) प्रभाव, शक्ति,  
सामर्थ्य प्रभाव, शक्ति. Power; prowess  
सू० प० १, १६; ( २ ) सुख, सुख glory,  
blessedness सम० १०, ( ३ ) तीव्र, मन्द-  
रूपे कर्मना रसनो अनुभव इरेवो ते, रसरूपे  
कर्मनु परिणाम-विपाक तीव्र, मन्दरूप से कर्म  
के रस का अनुभव करना, रसरूप से कर्म का  
परिणाम-विपाक. the result of Karma  
in greater or lesser intensity,  
experiencing this result पञ्च०  
२३, क० प० २, १, उत्त० ३४, ६१,  
—कर्म न० ( —कर्मन् ) अनुभाव-  
विपाकरूपे वेदात्त कर्म अनुभाव अर्थात्  
विपाकरूप से जिसका वेदन हो वह कर्म.  
Karma experienced in result.  
ठा० ४, ४,

**अणुभासत्र** त्रि० ( अनुभासक ) गुरु पासे  
साक्षणीने पछी ओलनार-उपदेश इरनार  
गुरु द्वारा श्रवण करने के पश्चात् बोलने  
वाला-उपदेश करने वाला Preaching  
after hearing from a preceptor  
विशे० ३२१७,

**अणुभासंत.** व० कृ० त्रि० ( अनुभाषमाण )  
पाछी ओलतो पाछे से बोलता हुआ (One)  
speaking after another has  
spoken पंचा० ५, ५;

**अणुभासणा** स्त्री० ( अनुभाषणा-अनुभाषण )  
गुरु ने हृत्, दीर्घ इहे ते प्रभाषे शिष्ये  
ओलतुं ते, गुरुना ओलथाप्रभाषे ओलतुं ते

गुरु के बोलने के अनुसार बोलना, गुरु  
जैसे-हृत्, दीर्घ कहे वसा ही शिष्य का  
बोलना. Imitation of the accents  
of a preceptor by a pupil ठा०  
५, ३;

**अणुभित्ति** न० ( अनुभित्ति ) लीन समीपे,  
लीतनी पासे दीवाल के समीप Near a  
wall वेय० ३, २६;

**अणुभूइ.** न० ( अनुभूति ) अनुभव अनुभव.  
Experience विशे० १६११,

**अणुभूइमय.** त्रि० ( अनुभूतिमय ) अनुभव  
मय अनुभवमय, अनुभव स्वरूप Full of  
experience विशे० १६११,

**अणुभूय** त्रि० ( अनुभूत ) अनुभव इरेव  
अनुभवित; अनुभव क्रिया हुआ Expe-  
rienced. अणुजो० १३०; भग० ६, ३३;  
नाया० १,

**अणुमइ** स्त्री० ( अनुमति ) अनुमति-संमति,  
अनुमोदन अनुमति, सम्मति, अनुमोदन  
Consent, approval क० प० ५, २६,

**अणुमइत्तो.** अ० ( अनुमतितस् ) अनुमति छे  
भाटे. अनुमति होने से Because of,  
through, permission or consent.  
पंचा० ४, ३६;

**अणुमगंगं;** अ० ( अनुमार्गम् ) पछी; पाछी;  
छे पाछे Behind; in the wake of  
नाया० १८;

**अणुमगगजाय-अ** त्रि० ( अनुमार्गजात )  
पाछी न-मेव; न्दानो लाछे छे न्दाने पाछे से  
जन्मा हुआ, छोटा भाई या बहिन. Born  
after, a younger brother or  
sister नाया० ८, १८; विवा० १,

**अणुमरणा.** स्त्री० ( अनुमरणा-अनुमति )  
अनुमोदना, संमति, अनुमोदन Consent;

approval ( २ ) अनुमोदनजन्य अेक दोष  
दोष अनुमोदन से होने वाला एक दोष.  
a fault incurred by showing  
approbation पि० नि० १२८,

**अणुमत.** त्रि० ( अनुमत ) अवशुणु ज्ञेया  
भषी पणु ज्ञेना उपरथी प्रीति न उतरै तेवुं  
धृ, धृषित अवशुणु देखने के पश्चात् भी जिस  
पर से प्रीति कम न हो ऐसा, इष्ट Desired  
or liked inspite of faults  
भग० २, १, ओव० ३६; ( २ ) अनुकूलप-  
णाधी संभूत, मान्य. अनुकूलता से सम्मत;  
मान्य. acceptable; agreeable.  
जीवा० १.

✓ **अणुमन्न** धा० I ( अनु+मन्य-मन् )  
समति आपनी; मान्य राण्यु सम्मति देना,  
मान्य करना To permit, to approve  
of, to assent to

अणुमन्नसु आ० सु० च० १, ३४१;

अणुमणित्था भू० भग० ६, ३३, नाया०  
१, १६;

**अणुमय** त्रि० ( अनुमत ) लुओ 'अणुमत'  
श०६. देखो "अणुमत" शब्द Vide  
"अणुमत." नाया० १, भग० २, १, ६,  
३३; १५, १; पञ्च० ११, सु० च० २, ७४,  
वव० ३, ६; कप्प० ६, १६, जं० प० २,  
२०;

**अणुमाण** पुं० ( अनुमान ) अणु-अल्प मान-  
अहंकार, थोडा पणु गर्व थोडा अभिमान,  
थोडा गर्व Some little pride; a  
little touch of pride "अणुमाण  
च मायं च, तं पडिणाय पंडिण् " सूय०  
१, ८, १८,

**अणुमाण** न० ( अनुमान ) हेतु-द्विगथी थतुं  
साध्यनु ज्ञान; अनुमान ज्ञान हेतु से जो  
साध्य का ज्ञान हो वह, अनुमान ज्ञान An

inference; knowledge got by  
syllogistic reasoning भग० ५, ४;  
अणुजो० १४७, ठा० ४, ३; विशेष० ६०,  
—गिराकिय त्रि० ( -निराकृत )  
अनुमानथी निराकरणे इरेल अनुमान से  
निराकरण किया हुआ. refuted by  
inference ठा० १०,

**अणुमाणइत्ता** सं० कृ० अ० ( अनुमीय )  
अनुमान इरीने अनुमान करके. Having  
inferred भग० २५, ७;

**अणुमाय-अ** त्रि० ( अणुमात्र ) अणुमात्र;  
धणुं थोडु बहुत थोडा, नाममात्र. Very  
little "अणुमायंपि मेहावी, मायामोसं  
विवज्जण्" दस० ५, २, ४६, ८, २४;

**अणुमुलंत** व०कृ०त्रि०(अनुन्मुञ्चत्) न तण्ते;  
नहि मुक्तो; त्याग न इरेतो, न छोड़ता हुआ;  
न त्यागता हुआ Not abandoning  
उत्त० ३०, २३;

**अणुमेरा** स्त्री० ( अनुमर्यादा ) नगरभर्यादाती  
समीप नगर की मर्यादा-सीमा के समीप.  
Near the border of a town वेय०  
३, २६,

**अणुमोइय** त्रि० ( अनुमोदित ) अनुमति  
आपी उत्साही अनावेल; उत्तेजित इरेल  
अनुमति देकर उत्साहित किया हुआ उत्तेजित  
किया हुआ Encouraged आउ० ११;

**अणुमोयण.न०**(अनुमोदन) लुओ 'अणुमोयणा'  
श०६ देखो 'अणुमोयणा' शब्द, Vide  
'अणुमोयणा' पंचा० ६, २८, परह० १, ३;

**अणुमोयणा** स्त्री० ( अनुमोदना-अनुमोदन )  
अनुमोदन, संमति, सहानुभूति, मदद इरेती  
ते अनुमोदन, सहानुभूति, सहायता करना  
Approval, consent, sympathy.  
पि० नि० ६५; ११३;

**अणुम्मुक्** त्रि० ( अनुन्मुक्त ) मुक्तयेल नहि;

तज्ज्येय नहि नहीं छोडा हुआ, नहीं त्यागा हुआ. Not abandoned परह० १, ४,  
अणुय त्रि० ( अनुग ) लुओ 'अणुग'  
शब्द देखो 'अणुग' शब्द Vide "अणुग".  
श्रव० ४१,

अणुयत्तरा. स्त्री० ( अनुवर्तना ) दुःखी-उदान-  
नय्याने उपचार करने-सेवा करने ते,  
अनुकूलपणे वर्तवुं ते दुःखी-ग्लानया निर्वल  
का उपचार सेवा-करना, अनुकूलतापूर्वक  
वर्ताव करना. Serving the afflicted,  
sympathetic conduct जीवा० १

अणुयत्तमाण. व० कृ० त्रि० ( अनुवर्तमान )  
मानतो, अनुसरतो, स्वीकारतो, कृपल करते  
मानता हुआ, अनुसरण करता हुआ, स्वीकार  
करता हुआ Accepting, following,  
acknowledging " छदमखुयत्तमाणो  
गुरुजणाराहण कुणइ " विशेष० १४५१;  
श्रत० ६, १५,

अणुयात त्रि० ( अनुयातृ ) पाछा नानार,  
अनुसरनार. पीछे जाने वाला, अनुसरण करने  
वाला ( One ) who follows भग०  
१२, ६;

अणुयास पुं० ( अनुकाश ) विकाश-प्रकाशने  
विस्तार विकाश-प्रकाश का विस्तार  
Expanse of light नाया० १,

अणुरंजिएल्लय त्रि० ( अनुरजित—स्वार्थिक  
इल्लक प्रत्ययः ) संप्रदायकमयी रंगायेत्र  
संप्रदायपरपरा से रंगा हुआ Coloured  
with traditional doctrine ज० प०

अणुरत्त त्रि० ( अनुरक्त ) स्नेहवाणो, अनु-  
रागी, प्रेमी तेहयुक्त, अनुरागी; प्रेमी  
Affectionate, loving "अणुमणु  
मणुरत्ता अणुमणुहिणुसियो " उक्त० १३,  
५, श्रव० सू० प० २०; नाया० ३; १४,  
भग० १२, ६,

अणुरसिय न० ( अनुरसित ) भुंतेथी  
पेकार करेते ते, शब्द-अथा करेते ते.  
जोर से पुकारना; शब्द करना Crying  
aloud, bawling out नाया० ५;

अणुराग पु ( अनुराग ) अनुराग, प्रीति;  
प्रेम, अत्यन्त स्नेह अनुराग, प्रीति, प्रेम;  
बहुत ज़्यादाह स्नेह Love, affection,  
भग० ६, ३३, राय० २२४, ( २ ) वरुं;  
किरमन् आदिने रंग रग, किरमन् आदि  
का रग colour पद्म० २,

अणुरागय न० ( अन्वागत-रेफ आगमिक )  
अनुकूल आगमन, अनुकूलपणे आवनु ते  
अनुकूलतापूर्वक आना Favourable  
arrival, agreeable arrival "अणु-  
रागय ते खट्या " भग० २, १,

अणुराय पुं० ( अनुराग ) लुओ 'अनुराग'  
शब्द देखो 'अनुराग' शब्द Vide 'अनुराग'  
नाया० ५, भक्त० ३२;—रत्त त्रि० (—रक्त)  
प्रेमथी रंगायेल प्रेमसे रगा हुआ full of  
( lit coloured with ) attachment.  
प्रव० ८२४,

अणुराहा स्त्री० ( अनुराधा ) अनुराधानामनु  
नक्षत्र अनुराधा नाम का नक्षत्र. A con-  
stellation named Anurādhā  
सम० ४, सू० प० १०, अणुजो० १३१; ठा०  
२, ३, जं० प० ७, १५५;

अणुरूव त्रि० ( अनुरूप ) लायइ, धरित,  
उचित, अनुकूल योग्य, घाटत. अनुकूल,  
उचित Proper, fit, agreeable पिं०  
नि० ४८६, नाया० १६; ठा० ६, विशेष०  
१६२१;

अणुलग्ग. त्रि० ( अनुलग्न ) पाछा लागेहुं.  
पीछे लगा हुआ Attached behind.  
विवा० ८,

अणुलाव. पुं० ( अनुलाप ) वारंवार भोसवुं  
ते इरी इरी भोसवुं-आवाप करेते ते.

बारंवार बोलना, बारंवार बात चीत करना.  
Speaking frequently. ठा० ७;

✓ अशुल्लिप. धा० I. II (अनु+लिप्) लिपवुं;  
गार डरवी लीपना. To daub with  
cowdung, (२) विलेपन डरवु; लेप डरवे।  
विलेपन करना; लेप करना. to smear.

अशुल्लिपह. नाया० ५;

अशुल्लिपेइ. जीवा० ३, ४;

अशुल्लिपंति नाया० १; भग० ६, ३३; जं० प०  
२, २३;

अशुल्लिपह. आ० भग० १५, १;

अशुल्लिपहत्ता. सं० कृ० नाया० १; ५, भग० १५, १;

अशुल्लिप्येहत्ता सं० कृ० भग० ६, ३३;

अशुल्लिपित्तए हे० कृ० ओव० १८; ३८;

अशुल्लिपण. न० (अनुलेपन) अेडवार लिपेकी  
भूमि इरीथी लिपवी ते, इरी विलेपन डरवुं ते.  
एक बार लीपी हुई भूमि को फिर-से लीपना,  
पुनः विलेपन करना. Daubing or  
smearing again. परह० २, ३;

अशुल्लिच. त्रि० (अनुलिप्त) अदन पगेरेनुं  
विलेपन डरेख चंदन आदि का विलेपन  
किया हुआ. Besmeared; anointed  
ओव० २२, नाया० १, ५; कप्प० ४, ६२;  
—गत्ता. त्रि० (-गात्र) जेना गात्र-शरीर  
अवयव अंदनादिथी विलेपन डरेख छे अवे।  
जिसके शरीरअवयव आदि चंदनादि से  
विलेपित हैं वह. with limbs anoint-  
ed with fragrant unction. तंडु०

अशुल्लिहंत. व० कृ० त्रि० (अनुलिखत) अुंथन  
डरतु, स्पर्श डरतुं चुवन करता हुआ; स्पर्श  
करता हुआ. Touching; licking;  
“ नगणतलमशुल्लिहंतसिहर ” सू० प०  
१८; ओव० ३१; सम० प० २१३; राय० ६६;  
नाया० ५; भग० ६, ३३; जं० प० ५, ११७;

अशुल्लेहत्ता सं० कृ० अ० (अनुलुक्ष्य)  
शरीर लुंछीने. शरीर पोंछ कर. Having

wiped the body, e. g. with a  
towel. भग० १५, १;

अशुल्लेवण. न० (अनुलेपन) विलेपन, विलेपन  
डरवुं ते. लेप करना; विलेपन. Besmear-  
ing; anointing ओव० २२; जं० प०  
पत्र० २,—तल न० (-तल) इरी लीपेख  
भूमि-भूमि फिर से लीपी हुई भूमि  
ground which has been daubed  
again “ मेयवसापूयरुहिरमंसचिक्खिह  
लित्ताणुलेवणतला ” सूय० २, २, ३६;

अशुल्लोपत्ता. सं० कृ० अ० (अनुवलोक्य)  
न जेधने; अवलोडन डर्या विना. विना  
देखे, विना अवलोकन किये. Without  
having seen. भग० ७, ७;

अशुल्लोम न० (आनुलोम्य) कृम. क्रमवार.  
Natural order. पंचा० १५, १६,

अशुल्लोम. त्रि० (अनुलोमन्) अनुड्ल;  
मनने गमपु. अनुकूल; मन को रुचने  
वाला. Agreeable; pleasing, in  
natural order. जीवा० १; ३, ३;  
जं० प० २, ३१; नाया० १; ६; वव० १०, १;  
ओघ० नि० ३६; पंचा० १५, १६, ओव० १०;  
(२) भाडोभाडी अनुड्ल डरवाने पुछवु ते.  
आपस में अनुकूल करने के लिये पूछना.  
mutual consultation for coming  
to an agreement ठा० ६, १;  
—वाउवेग. त्रि० (-वायुवेग) जेना शरीर-  
नी अंदरना वायुने वेग अनुड्ल छे ते;  
जेना पेटमा गुदमवायु नथी ते; जुगल  
मनुष्य. जिसके शरीर के भीतर की वायु का  
वेग अनुकूल है वह, जिसके उदर में गुल्म  
वायु नहीं है वह, युगल मनुष्य free from  
unwholesome gases in the  
body; without vitiated windy  
humour in the stomach. जीवा० १;



**अणुलोमइत्ता** सं० कृ० अ० ( अनुलोम्य )  
अनुकूल करके, अपने पक्ष में लेकर Having  
made agreeable, having taken  
on one's side. ठा० ६, १,

**अणुलोमविलोम** पु० ( अनुलोमविलोम )  
आवलव ३२वीं ते; अणुं अने आवणुं  
आवागमन करना, जाना और आना Going  
to and from. पंचा० १६, १८,

**अणुल्लअ-य** पुं० ( अनुल्लवक ) ३-६ विशेष  
एक प्रकार का जमीकन्द A kind of  
bulbous root उक्त० ३६, १२८, ( २ )  
ये ध्रिय अविशेष दो इन्द्रियो वाला जीव  
विशेष. a variety of living being  
having two senses उक्त ३६, १२८,

**अणुल्लग** त्रि० ( अनुल्लवक ) अणुलोम "अणुल्लअ"  
शब्द देखो "अणुल्लअ" शब्द. Vide  
"अणुल्लअ". उक्त० ३६, १२६;

**अणुल्लाव** पुं० ( अनुल्लाव ) भाड़ा उल्लाव,  
कुत्सित रीतिथी वर्णन ३२वु ते कुत्सित रीति से-  
खराव रीति से वर्णन करना Contemptu-  
ous mention ठा० ७, १,

**अणुल्लोय** पुं० ( अनुल्लवक ) ये ध्रिय अविशेष  
दो इन्द्रियो वाला जीवविशेष. A  
kind of living being having  
two senses उक्त० ३६, १३०, ( २ )  
कंदविशेष कंदविशेष a kind of  
bulbous root उक्त० ३६, १३०,

**अणुवइह** त्रि० ( अनुपदिष्ट ) आचार्य परंपरा-  
थी उपदेशेण नहि ते जिसका आचार्य परंपरा  
से उपदेश न हुआ हो वह. Not taught  
traditionally by preceptors.  
क० प० ५, २५; प्रव० १२२,

**अणुवउत्त** त्रि० ( अनुपयुक्त ) उपयोग वगरनु;  
उपयोग शून्य. उपयोग रहित Careless,  
lacking in due attention. अणुजो०

१४, भग० ५, ४, विशेष० ४२, ओष० नि०  
१३;

**अणुवएस** पुं० ( अनुपदेश ) उपदेशेणो अभाव;  
स्वभाव; निसर्ग. उपदेश का अभाव; स्वभाव,  
निसर्ग. Absence of teaching;  
nature as opposed to art "निसर्गः  
स्वभावोऽनुपदेश इत्यनर्थान्तरम्" अणुजो०  
१५१, ठा० २, १,

**अणुवओग** पुं० ( अनुपयोग ) उपयोगेणो  
अभाव; उपयोग शून्यता. उपयोग का अभाव;  
उपयोग शून्यता Want of proper  
care or attention "अणुवओगो दब्बं"  
अणुजो० १३, ७२; ( २ ) उपयोगेणो अवि-  
षय; लावशून्य भावशून्य that which  
is not a province of Upayoga  
अणुजो० ७२; ( ३ ) निप्रयोगेण;  
निप्रयोज्य. वेमतलव; निप्रयोजन, निष्कारण.  
without any purpose पंचा० ३, ३७;

**अणुवओगि** त्रि० ( अनुपयोगिन् ) उपयोग  
शून्य, निप्रयोगेण. निकम्मा उपयोग  
शून्य Unnecessary, useless;  
purposeless पंचा० ३, ३७,

**अणुवकय** त्रि० ( अनुपकृत-उपकृतमुपकारो,  
न विद्यते उपकृतं येषां ते ) अणु उपकार नही  
किया वह. Devoid of benevolent deeds.  
नाया० ३, ( २ ) भीष्मना उपकार नीचे  
आवेक नहि ते दूसरे के द्वारा उपकृत न हुआ  
हो वह not under anybody's  
obligation विशेष० २१४३, नाया० ३;

**अणुवकंत** त्रि० ( अनुपक्रान्त ) निराकरण ३रेक  
नहि जिसका निराकरण नहीं किया गया  
हो वह Not repudiated ओव०

**अणुवघाइअ-य** त्रि० ( अनुपघातिक ) अणु  
संयम आदिनी घात न थाय तेनुं स्थण.  
ऐसा स्थान जहा संयम आदि का घात न हो (A

place ) secure against impediments to self-restraint. प्रव० ७१६;  
उत्त० २४, १७,

अणुवद्वारागाउस त्रि० ( अनुपवर्त्तनीयायुक् )  
नेना आयुष्यनु अपवर्त्तन न थाय तेवां देवता,  
नारकी वगेरे. जिनके आयुष्य का अपवर्त्तन  
न हो ऐसे देवता, नारकी आदि ( Gods, hell  
beings etc. ) whose life-term can-  
not be reduced or transferred  
क० प० १, ७५

अणुवद्वंत् त्रि० ( अनुपतिष्ठत् ) अध न भेसतुं;  
लागु न पडतुं. मेल न खाता, घटित न  
होता, ठीक न बैठता, संगति न खाता  
Not fitting; not applicable  
ओघ० नि० ४०१;

अणुवद्वारविअ. त्रि० ( अनुपस्थापितक ) पील  
चारित्रनी उपस्थापना द्विधा वगरतो दूसरे  
चारित्र की विना उपस्थापना किया हुआ  
( One ) who has not been re-  
admitted into the order of  
monkhood after a temporary  
expulsion for a fault वेय० ४, १३,

अणुवद्विअ. त्रि० ( अनुपस्थित ) धर्मायरणुमां  
प्रमाद करनार, धर्मायरणुमाटे तैयार न थयेद  
धर्माचरण में प्रमाद करने वाला; धर्माचरण  
के लिये जो तत्पर न हो वह Negligent in  
religious observations; not  
prepared for religious practices  
आया० १, ४, १, १२६;

√अणुवद्व. धा० II ( अनु+वृद्ध्+णि० ) वधारतुं;  
वृद्धि करनी बढ़ाना; वृद्धि करना. To  
increase; to accumulate.

अणुवद्वेइ. भग० ७, ६;

अणुवद्वेमि. नाया० १;

अणुवद्वेहि आ० नाया० १४;

अणुवद्वेस्सामि. भ० विवा० ७,

अणुवद्वेइत्ता. सं० कृ० भग० ७, ६,

अणुवरीय. त्रि० ( अनुपनीत ) सोपेद नहि  
ते जो सुपर्द न हुआ हो वह Not handed  
over. भग० ५, ६;

अणुवत्त त्रि ( अनुवृत्त ) पीछ वार प्रवृत्त  
थयेद दूसरी वार प्रवृत्त Re-engaged;  
occupied in doing again पि०  
नि० भा० १८;

अणुवत्तमाण व० कृ० त्रि० ( अनुवर्त्तमान )  
अनुसरतो. अनुसरण करना हुआ.  
Following भग० ११, ११;

अणुवत्ति त्रि० ( अनुवर्त्तिन् ) अनुसरनार.  
अनुसरण करने वाला. ( One ) who  
follows; following; a follower.  
गच्छा० ५२;

अणुवत्ति स्त्री० ( अनुवृत्ति ) गुरुनो मनोलाव-  
धगितादिद्वेष्टाथी वर्त्तिने तेने अनुकूल वर्त्तवु  
ते. गुरु के मनो भाव-इशारे आदि से जान  
कर उसके अनुकूल वर्त्ताव करना. Shaping  
one's conduct by guessing the  
likes and dislikes of a precep-  
tor from his actions etc. गच्छा०  
५२,

अणुवत्तिय सं० कृ० अ० ( अनुवृत्त्य )  
अनुसरीने. अनुसरण करके having  
followed विवा० २, ६;

अणुवधारिय. त्रि० ( अनुपधारित ) धारणु न  
करेद धारण न किया हुआ Not held,  
not put on. भग० १, ६,

अणुवम. त्रि० ( अनुपम ) अनुपम, उपमा  
रहित. उपमा रहित, अनुपम. Matchless,  
incomparable. विशे० ३१८३, कप्प०  
३, ३७,—सुख. न० (—सौख्य ) अनुपम  
सुख; उपमारहित सुख; मोक्ष सुख  
उपमा रहित सुख, मोक्ष सुख. Matchless  
happiness; perfect bliss.  
नाया० १७;

**अणुवमा** स्त्री० ( अनुपमा ) भाधविशेष,  
-भिक्षाणी ओक्ष णत् खाद्य पदार्थ विशेष,  
मिठाई की एक जाति A kind of sweet-  
meats जीवा० ३;

**अणुवमिय.** त्रि० ( अनुपमित ) उपमारहित,  
अनुपम उपमा रहित, अनुपम. Match-  
less सु० च० २, ५१६;

✓ **अणुवय.** धा० I. ( अनु+वृज् ) पा७ण ण्वुं;  
अनुसरतु; पा७ण गति करपी पीछे २ चलना,  
अनुसरण करना To follow, to pursue.  
अणुवयामो उक्त० १३, ३०;

**अणुवयमाण** व० कृ० त्रि० ( अनुवदत् ) पा-  
७णथी भोलतो, परपुडे भोलतो पीछे से बोलता  
हुआ; पीठ पीछे बोलता हुआ Speaking  
in the absence of " आरंभट्टी  
अणुवयमाणे हणमाणे घायमाणे " आया०  
१, ६, ४, १८६, १६२, नाया० १,

**अणुवयार** त्रि० ( अनुपचार ) उपचार-व्यवस्था  
रहित अव्यवस्थित Devoid of proper  
arrangement, out of order.  
प्रव० १५६,

**अणुवरय** त्रि० ( अनुपरत ) पापथी-सावध  
व्यापारथी निवृत्ति नहि पाभेल, अविरति  
युक्त पाप से-सावध व्यापार से निवृत्ति न पाया  
हुआ, अविरति सहित Not freed from  
sinful operations पन्न० २२, ठा०  
२, १, आया० १, ४, १, १२६; भग० ८,  
१०; विशेष १३२५, ( २ ) निरंतर, दुभेश;  
अविच्छिन्न निरन्तर. सदा. constant,  
ceaseless पि० नि० ७१, सम०—काय-  
किरिया स्त्री० ( -कायक्रिया ) अविरतिपणे  
शरीरने वापरवाथी लागती क्रिया-धर्मबंध,  
इयिडीक्रियाने ओक्ष भेद. अविरतिपूर्वक  
शरीर का उपयोग करने से जो कर्मबंध हो वह,  
कायकीक्रिया का एक भेद Kriyā  
incuried by using the body

without self-restraint a variety  
of Kāyikī kriyā भग० ३, ३,—दंड.  
त्रि० ( -दण्ड ) मन, वचन अने धायाना इत्थी  
निवृत्ति न थयेल मन, वचन और काया के दंड से  
आनिवृत्त-निवृत्ति न पाया हुआ not freed  
from austerities of mind, speech  
and body आया० १, ४, १, १२६,

**अणुवरिं** अ० ( अनुपरि ) उपर नहि ते,  
नीचे नीचे Below, not above  
क० प० १, ६६,

**अणुघलंभ** पु० ( अनुपलम्भ ) स्वसवेदनने  
अभाव स्वसवेदन का अभाव Absence  
of experience विशेष १६४,

**अणुवलेव** त्रि० ( अनुपलेप ) लेपरहित  
लेप रहित Unsmearied पण्ह० १, २,

**अणुवघरणग** त्रि० ( अनुपपन्न ) उपपन्न  
थया नथी ते-उत्पन्न नहीं हुआ हो वह Un-  
born, unproduced भग० १४, १,

**अणुववाय** पु० ( अनुपपात ) पासै न भेसतु  
ते समीप में न बैठना Not sitting in  
proximity " आणानिहेसकरे गुरूण-  
मणुववायकारण " उक्त० १, ३,—कार-  
अ त्रि० ( -कारक ) गुवांदिङ्नी पासै  
न भेसनार गुरु आदि के समीप न बैठने  
वाला not sitting in the proxi-  
mity (e g. of a preceptor) उक्त०  
१, ३,

**अणुववेय** त्रि० ( अनुपपेत ) प्राप्त नहि थयेल  
अप्राप्त; प्राप्त न हुआ हो वह Not endow-  
ed with पन्न० १७, ( २ ) युक्त नहि.  
अयुक्त unaccompanied with ज०  
प० २, २२;

**अणुवसंत.** त्रि० ( अनुपशान्त ) उपशान्त  
थयेल नहि, उदयमा आवेस उपशान्त नहीं  
हुआ हो वह, उदय में आया हुआ Not  
subsided, matured into result-

- भग० ७, ६, ठा० ४, १, ( २ ) कषाय वाणा; जेना कषाय उपशम्या नहीं ते. कषाय वाला, जिसके कषाय उपशमित न हुए हो वह. with passions unsubsidied “उवसते चेव अणुवसंते चेव” सूय० २, २, १; “जहाअणुवसंतेण” उक्त० १६, ४३; .
- अणुवसु** त्रि० (अनुवसु) रागवाणो, राग सहित सरागी, राग वाला. Attached to worldly things. ( २ ) स्थविर, श्रावक a Jain layman. “वसु वा अणुवसु वा जाणित्तु धम्मं जहा तथा” आया० १, ६, २, १८१;
- अणुवहं** अ० (अनुपथम्) मार्गनी समीपे; मार्गनी पासै मार्ग के समीप In the vicinity of the road “अणुपथमे-वास्मदवसथो भवतां वर्तेत” आया० टी० १, ८, १, १६८,
- अणुवहय** त्रि० (अनुपहत) अग्नि आदिथी नाश न पाभेअ अग्नि आदि से नाश न पाया हुआ. Not destroyed by fire etc पंचा० ४, ३६,
- अणुवहारिय** त्रि० (अनुपधारित) हृदयमां नडि अवधारेअ हृदय में जिसकी अवधारणा न की हो वह Not decided in the mind सूय० २, ७, ३८;
- अणुवहास** त्रि० (अनुपहास) उपहास रहित, डोछनी भस्करी न करनार. उपहास रहित; किसीकी हंसी न करने वाला Not given to jesting पंचा० ६, ६,
- अणुवाइ** त्रि० (अनुपातिन्) पाछग बनार; अनुसरनार पीछे जाने वाला; अनुसरण करने वाला. ( One ) who follows ( २ ) करनार. करने वाला ( one ) who does “नो विभूसाणुवाइ भवइ निगथे” उक्त० १६, ६; सम० ६;
- अणुवाय** पुं० (अनुवात) अनुसार, अनुसरतु

- ते. अनुसार; अनुसरण किया. Act of following, pursuit “सहाणुवाए रूवाणुवाए” उवा० १, ५४, पञ्ज० ३; १६;
- ( २ ) धशारे इशारा. sign. प्रव० २८५,
- अणुवाय** पुं० (अनुवात) अनुकूल वायु-पवन. अनुकूल वायु-पवन Agreeable wind; favourable wind. जं० प० (२) अनुकूल वायु-पवनवाणो देश, जे देशमांथी अनुकूल वायु आवे ते अनुकूल वायु वाला देश, वह देश, जहां से अनुकूल वायु आवे country from which agreeable wind blows. भग० १६, ६; राय० ५६;
- अणुवालय** पुं० (अनुपालक) अनुपालक नामे गोशालानो मुख्य श्रावक गोशाला का अनुपालक नामक मुख्य श्रावक Name of the principal layman follower of Gosālā. भग० ८, ५;
- अणुवासग** पुं० (अनुपासक-व उपासकः श्रावकोऽनुपासकः) अश्रावक; श्रावक नडि ते. जो श्रावक न हो वह. One who is not a Śrāvaka “अणुवासगो नायगमनायगो य” निसी० ८, १२;
- अणुवासणा** स्त्री० (अनुवासना) आभशनी नलीथी गुदाभार्गे पेटमां तेलविशेष नाभयुं ते चमडे की नली से गुदद्वार से पेट में तेल आदिका डालना Injection of a particular oil in the stomach through the rectum by means of a leathern tube. नाया० १३;
- अणुवासरं** अ० (अनुवासरम्) दररोज; प्रतिदिन प्रतिदिन. Every day, daily प्रव० १५६६;
- अणुवासिञ्ज** त्रि० (अनुवासित) संस्कार वडे वासित करेअ संस्कारो द्वारा वासित-गन्ध युक्त किया हुआ. Perfumed e. g.

with good deeds जं० प० ५, ११२,  
विशे० २६,

अणुवाहण न० ( अनुवाहन ) वाहनरहित,  
स्थारी वगरेतो विना वाहन का, विना सवारी  
का Without a procession of  
vehicles etc नाया० १५;

अणुविग्ग. त्रि० ( अनुद्विग्ग ) शांत; प्रशान्त  
रूप; व्यग्रपलाथी रहित, उद्वेगरहित  
शान्त, व्यग्रता से रहित, उद्वेग से रहित  
Free from worry, calm “ चरे मंद  
मणुविग्गे, अविक्खित्तेण चयसा ” दस०  
५, १, २,

अणुवित्ति. स्त्री० ( अनुवृत्ति ) प्रवृत्ति, धृष्ट  
वस्तुने प्राप्त करवानी क्रिया इष्ट वस्तु को प्राप्त  
करने की क्रिया, प्रवृत्ति Effort, action  
to gain a desired object विशे०  
१५६४;

अणुविरइ स्त्री० ( अनुविरति ) देशविरति,  
अव्यक्तपणु देशविरति, श्रावकपन Partial  
self-control e. g. on the part  
of a Jaina layman क० गं० १, १८,

अणुविवाग पु० ( अनुविपाक ) अनुरूप  
विपाक, कर्मनु अनुरूप परिणाम, कर्मप्रमाणे  
तेनु इल. अनुरूप विपाक, कर्म का अनुरूप  
परिणाम; कर्मानुसार फल Fitting  
results of Karma “ एवं तिरिक्खे  
मणुयासुरेसु, चउरत्तणं त तयणुविवाग ” सूय०  
१, ५, २, २५,

अणुवीइ. सं० कृ० अ० ( अनुविचिन्त्य ) आलो-  
चनीने, विचार करीने, चिंतनीने आलोचना  
करके, विचार करके, चिंतन करके Having  
reflected upon सूय० २, १, ५७, दस०  
७, ४४, ५५; परह० २, २, आया० १, १,  
३, २५, १, ६, ५, १६४, २, ४, १, १३२;  
—समिइजोग पु० ( —समितियोग )

विचारीने भोक्षवारूप भाषासमितिने व्यापार  
विचार कर बोलनेरूप भाषासमिति का व्यापार.  
careful speech परह० २, २;

अणुवीय. सं० कृ० अ० ( अनुविचिन्त्य ) लुण्णो  
‘ अणुवीइ ’ शब्द देखो ‘ अणुवीइ ’ शब्द.  
Vide “ अणुवीइ. ” सूय० १, १०, १,  
अणुवेदयंत व० कृ० त्रि० ( अनुवेदयत् )  
अनुभवतो, वेदना पाभतो, भोगवतो  
अनुभव करता हुआ, वेदना पाता हुआ  
Experiencing, feeling भग० २५,  
७, सूय० १, ५, १, १६,

अणुवेलंधर पुं० ( अनुवेलन्धर ) वेल-धर लतिना  
देवताना अनुयायी—डुकम उक्षावनारा नागकुमार  
लतिना देवता वेलन्धर जाति के देवों के  
अनुयायी—आज्ञा मानने वाले नागकुमार जाति के  
देव Deities of the Nāga-kumāra  
species of gods, followers of  
Velandhara gods “ कइणं भंते !  
अणुवेलंधरणागरायाणो परणत्ता ? गोयमा!  
चत्तारि अणुवेलंधरणागरायाणो परणत्ता,  
तंजहा—कइण्डेण कइमए कइलासे अरुणप्पमे ”  
जावा० ३, ४, सम० १७,

अणुवेह. पु० ( अनुवेध ) लोडाणु, भेदाप सयोग;  
जोड़, मिलाप Meeting, contact.  
पि० नि० ५६;

अणुवेहमाण. व० कृ० त्रि० ( अनुप्रेक्षमाण )  
विचार करतो, विचारतो; भावना भावतो.  
विचार करता हुआ, भावना करता हुआ.  
Considering meditating upon  
“ धुणे उराल अणुवेहमाणे, चिचाण सोंयं  
अणुवेक्खमाणे ” सूय० १, १०, ११,

अणुवचइय त्रि० ( अनुवचिक ) महाप्रतनी  
अपेलागे अलु-दाना प्रत-अलुप्रत संघधी,  
अलुप्रतरूप महाप्रत की अपेक्षा से लघु प्रत,  
अणुवचरूप. Relating to partial  
VOWS. श्रव० ३५,

अणुवृत्तिज्जमारा व० कृ० त्रि० (अनुद्वर्त्यमान)  
उद्वर्तन न पाभतो; ष्ठार दाववाभा न  
आवतो उद्वर्तन न पाता हुआ, जो बाहिर लाने  
में नहीं आता हुआ. Not being drawn  
out. नाया० ३;

अणुव्यय न० (अणु-नु-व्रत) महाव्रतनी अपेक्षाये  
नहाना व्रतो, आवडनां प्रथमनां पांच व्रतो.  
महाव्रत की अपेक्षा से छोटे व्रत, श्रावक  
के प्रारभ के पांच व्रत. The first five  
partial vows of a Jaina layman.  
नाया० १२, आउ० ३; राय० २२३; ओव० ४१,  
पंचा० १, ७; १०, १७, भत्त० ३६, — धारि  
त्रि० (-धारिन्) अणुव्रत धरनार, व्रतधारी—  
श्रावक व्रतधारी—श्रावक. ( a person )  
observing minor vows, a Jaina  
layman (observing minor vows)  
प्रव० ६६७;

अणुव्यय. त्रि० ( अनुव्रतक ) अज्ञानुद्ध  
डाम करने नार; पाण्ड्या आलनार आज्ञानुकूल  
काम करने वाला, पीछे चलने वाला Obedi-  
ent, following in the footsteps  
of नाया० ३;

अणुव्यया. स्त्री० ( अनुव्रता-अन्विति कुलाऽ  
नुरूपं व्रतमाचारोऽस्या इत्यनुव्रता ) पतिव्रता  
स्त्री; पतिव्रता धर्म पाणनार स्त्री पतिव्रता स्त्री;  
पातिव्रत्य वर्म पालने वाली स्त्री A chaste  
woman “भारिया मे महाराय! अणुरत्ता-  
मणुव्यया ” उक्त० २०, २८;

अणुव्वस्. त्रि० (अनुव्वश) वश थयेल वशीभूत.  
Subdued; under the sway of.  
“ एवं तुव्भे सरागन्वा, अन्नमन्नमणुव्वसा ”  
सूय० १, ३, ३, १०;

अणुव्वारा त्रि० (-अनुव्व्यान=अनुम्लान) इंधं  
रिनग्ध अने धणु भागे डरभायेधुं कुड्ड  
स्निग्ध और अधिकतर कुम्हलाया हुआ

Withered greatly but retaining  
some brilliance आषे० नि० ४८८;

अणुव्विग्ग. त्रि० (अनुव्विग्ग) लुभो “अणुव्विग्ग”  
शब्द देखो “अणुव्विग्ग” शब्द. Vide ‘अणु-  
व्विग्ग. नाया० ८, ६, दस० ५, १, २; ६०, ८, ४६.

अणुसंगिय त्रि० (आनुषङ्गिक) प्रासंगिक, प्रसंगे  
प्राप्त थयेल. प्रासंगिक, प्रसंग में आया हुआ.  
Incidentally coming in, arising  
incidentally पंचा० ८, ४५;

अणुसचर. धा० I. (अनु+सम्+चर) पाण्ड्या  
डरवुं, लटडवुं; परिभ्रमणु डरवुं पीछे फिरना;  
भटकना, परिभ्रमण करना. To move  
after, to wander.

अणुसंचरइ. आया० १, १, १, ४;

अणुसंचरंति. सूय० १, १२, १४;

अणुसचरंत. व० कृ० आया० १, १, १, ४;

अणुसंवेयण न० (अनुसंवेदन) पाण्ड्या वेधुं ते,  
अनुभवुं ते अनुभव करना, पीछे से संवेदन-  
ज्ञान होना Feeling afterwards;  
experiencing. “ अणुसंवेयणमप्यारोणं  
जं हंतव्वं ” आया० १, ५, ५, १६४,

अणुसंसर. धा० I (अनु+सम्+स्मृ) स्मरण  
डरवु; याद डरवु स्मरण करना, याद करना  
To recollect.

अणुसंसरइ आया० १, १, १, ४;

अणुसज्ज धा० I (अनु+षज्) प्रसंग प्राप्त  
थये। प्रसंगप्राप्त होना. To arise  
as an incident or occasion  
अणुसज्जति प्रव० ७६५;

अणुसज्जणा. स्त्री० (अनुषज्जना-अनुषज्ज) )  
अनुसरणु डरवु; अनुवर्तन डरवु ते.  
अनुसरण करना, अनुवर्तन करना Act of  
following. उक्त० २६, १७,

अणुसज्जित्थ. त्रि० (अनुपक्कवत्) डण्ड  
परंपराथी आयेल आवेल कालपरंपरा से  
चला आया हुआ Coming down from

times immemorial “छविहा मणुस्सा अणुसज्जित्था पणुत्ता ” भग० ६, ७, ज० प० २, २५, २६;

अणुसद्धि स्त्री० ( अनुशास्ति ) सद्गुणुनी स्तुति करवानेो उपदेश आपणे ते, सद्गुणुनी तारीक्ष करवी ते सद्गुण की स्तुति करने का उपदेश देना; सद्गुण की प्रशसा करना Instruction to laud virtue, praising of virtue “आहरणतद्देसे चउविहे पन्नत्ते, तंजहा-अणुसद्धि उवात्तमे पुच्छा णिस्सावयणे ” ठा० ४, ३, ( २ ) शिभाभणु, ललाभणु शिच्चा advice, exhortation भत्त० ५३, सत्था० १०८, ( ३ ) दोष दर्शावी शिक्षणु आपणु ते दोष दिखाकर शिच्चा देना instruction after pointing out faults “ ति-विहा अणुसद्धी पन्नत्ता तंजहा-अणुसद्धी पराणुसद्धी तदुभयाणुसद्धी ” ठा० ३, ३, अणुसमयं. अ० ( अनुसमयम् ) सभय सभय; प्रतिसभय प्रतिसमय, समय समय Every time, from time to time “अणुसमयं अविरहियं णिरतर उववज्जति” भग० १, १, २४, १२, १६, ४१, १, क० गं० ५, ८२, प्रव० १२, १०२२;

अणुसय पु० ( अनुशय ) गर्व, अहंकार गर्व, अहंकार, घमंड Pride, conceit ( २ ) पश्चात्ताप पश्चात्ताप, पछतावा repentance परह० १, १,

✓ अणुसर धा० I ( अनु+सृ ) अनुसरयुं; पाछण पाछण आलवुं अनुसरण करना, पीछे २ चलना, अनुगामी होना To follow अणुसरइ. विशेष० १६१,

अणुसरित्ता स० कृ० सूय० १, ७, १६ अणुसरअ व० कृ० विशेष० १६७,

अणुसरत. व० कृ० गच्छा० ३०,

अणुसरमाण. व० कृ० सु० च० ३, ४,

अणुसरण न० ( अनुस्मरण ) स्मरण, चिंतवन स्मरण, चिंतवन, याद Meditation, remembrance विशेष० २११;

अणुसरिअव्व त्रि० ( अनुसत्तव्य ) अनुसरवा थोअ अनुसरण करने योग्य Worthy of being followed महा० प० ३१,

अणुसरिया त्रि० ( अनुस्मर्तृ ) पाछणथी स्मरणु करनार पीछे से स्मरण करने वाला ( One ) who remembers, recollects or meditates upon विशेष० ६२;

अणुसार पुं० ( अनुसार ) पाछण जुवु ते; सरणुं पनाववु, अनुसरवुं पीछे जाना; समान बनाना, अनुसरण करना The act of following विशेष० १, नाया० १, ( २ ) परतंत्र पणुं परतन्त्रतो dependence. विशेष० १,

अणुसार पु० ( अनुस्वार ) अक्षर उपरतु टपडुं-भिन्दु, अक्षरनेो उच्चार करती वभते नाकमाथी अवाञ् नीडणे ते अनुस्वार, अक्षर के ऊपर की बिन्दी, जिसका उच्चारण नाक से होता है A dot over a letter representing a nasal sound नंदी० ३८, विशेष० ५०१,

अणुसारओ अ० ( अनुसारतस् ) अनुसारे, प्रमाणे अनुसार. In pursuance of, in accordance with पचा० २, ३६,

अणुसारि त्रि० ( अनुसारिन् ) अनुसरनार; अनुसरणु करनार अनुयायी, अनुकरण करने वाला ( One ) who follows, an imitator पचा० ३, ६, श्रोव० १६,

✓ अणुसास धा० I ( अनु+शास् ) शिक्षा करवी, सत्ता अलाववी; अंडुशमा शम्भु, शिभाभणु देवी शिक्षा देना, दड देना; गत्ता चलाना, अकुश नें रखना; नीव देना To

punish; to curb; to instruct  
अणुसासंति उक्त० २७, १०;

अणुसासण सु० च० १, ३५७;

अणुसासयंति “जे मे गुरुसययमणुसांसयंति”  
दस० ६, १, १३;

अणुसासामि सु० च० २, ३०२;

अणुसासंमि. उक्त० २७, १०,

अणुसासिडं हे० कृ० सु० च० १, ३५०;

अणुसासंत. व० कृ० उक्त० १, ३८;

अणुसासण नं० ( अनुशासन ) शिक्षा; शिक्षण, शासन-आगमनुं अनुसरणु नेम थाय तेम उपदेश आपवे ते शिक्षा, आगम का अनुसरण जिस प्रकार हो उस प्रकार उपदेश देना Spiritual instruction. “अणुसासणमोवायं, दुक्कडस्स य चोयण” उक्त० १, २८, ६, ११; सूय० १, २, १, ११, १, १५, ११; सम० ६; नाया० १३,

अणुसासिअ. त्रि० (अनुशासित) नेने शिक्षा-मणु-शिक्षा आपवामा आवे ते जिसे शिक्षा दी जाय वह Instructed; advised admonished “अणुसासिओ न कुप्पिज्जा, खंति सेवेज्ज पंडिण्” उक्त० १, ६, पंचा० ६, १५;

अणुसासिज्जंत. व० कृ० त्रि० (अनुशास्यमान) गुरुथी शुभ कार्यमा प्रेरणा करतो. गुरुद्वारा शुभकार्य मे प्रेरित किया हुआ. Being advised or instructed by a preceptor “अणुसासिज्जतो सुत्सूसइ” दस० ६, ४, १,

✓ अणुसिज्ज. घा० I. ( अनु+सृज् ) अविच्छिन्नपणु रहेवुं, धायम रहेवु; टट्टवु. अविच्छिन्न पनसे रहना, कायम रहना, टिकना. To remain constantly अणुसिज्जिस्सइ भ० भग० २०, ८,

अणुसिद्ध त्रि० ( अनुशिष्ट ) शिक्षा-शिक्षा-मणु आपेक्ष शिक्षित, समझाया हुआ. Instructed, admonished. “तत्तेण अणुसिद्धा ते, अपदिक्केण जाणथा” सूय० १, ३, ३, १४; परह० १, ५;

अणुसिद्धि. स्त्री० ( अनुशिष्टि ) हितकारक उपदेश, शिक्षा; बोध हितकारक उपदेश, शिक्षा, बोध Good instruction, just advice. “अत्थधम्मगइं नचं, अणुसिद्धिं सुणेह मे” उक्त० २०, १;

अणुसिण. त्रि० ( अनुष्ण ) उष्ण नहि ते, शीतण. ठंडा Not hot, cold. क० ग० १, ४६;

अणुसूय त्रि० ( अनुस्यूत ) पीननी नेश्राये रडेल-लुं, भाड्ड वगेरे. दूसरे के आश्रय में रहा हुआ-जू, खटमल आदि. Closely attached to, woven with; e. g. lice, bugs etc सूय० २, ३, २७,

अणुसूयत्ता. न० ( अनुस्यूतत्व ) पीननी शरीरने आश्रिते; पारधी नेश्रा-अपेक्षा. दूसरे के शरीर का आश्रय करके, दूसरे की अपेक्षा Having close connection with or dependence upon other bodies, close connection with other bodies. सूय० २, ३, २४,

अणुसेदि स्त्री० ( अनुश्रेणि ) लघु श्रेणि, न्हाणी श्रेणि, -आकाशप्रदेशपंक्ति लघु श्रेणि, छोटी श्रेणि; आकाशप्रदेशपंक्ति A small straight line parallel with east-west-north-south and up and down, either way भग० ३४, १; ( २ ) श्रेणि-आकाशप्रदेशपंक्ति, तेने अलिमुप रहीने अनुडूलपणु गति करपी ते श्रेणि अर्थात् आकाशप्रदेशपंक्ति के अभिमुख रहकर गति करना moving in a straight line parallel with



one of the three above-said directions भग० २५, ३;

**अणुसोय** न० ( अनुस्रोतस् ) नदी वगेरेने प्रवाह, वेग नदी वगैरह का प्रवाह; बहाव A current of a river etc ठा० ४, ४;  
—**चारि** त्रि० (—चारिन् ) नदीना प्रवाहने अनुसारे आलनार भाछला वगेरे नदी के प्रवाह के अनुसार चलने वाली मछलियो वगैरह moving along with the current of a river e g fish etc ( २ ) अलिग्रहविशेषथी उपाश्रय पासेथी कभसर लिक्षा-गोयरी इरनार साधु. अभिग्रहविशेष से उपाश्रय के समीप से क्रमानुसार भिच्चा मागने वाला साधु ( a Sādhu ) starting to beg food from his lodging-place and proceeding to beg in the order of houses ठा० ४, ४,

**अणुसोयमाण**. व० कृ० त्रि० ( अनुशोचत् ) शोड करतो शोक करता हुआ Grieving, lamenting सु० च० ५, ८०,

**अणुस्सरि**. त्रि० ( अनुसारिन् ) अनुसरनार अनुसरण करने वाला ( One ) that follows, following भक्त० १७१;

**अणुस्सियत्त** न० ( अनुस्सुत्तत्व ) उद्धताधने अलाव, अहंकारने अलाव, निरभिमानिपथु उद्धतपने का-उहंङता का अभाव, अहकार का अभाव; निरभिमानोपन Absence of pride or conceit उक्त० २६, ४६;

**अणुस्सुअ** त्रि० ( अनुस्सुक ) उत्सुक नहि ते, उछांछलापथुथी रहित जो उत्सुक नहीं हो वह; उच्छंखलता रहित Free from restless curiosity or eagerness. सूय० १, ६, ३०,

**अणुस्सुय**. त्रि० ( अनुश्रुत ) अवधारेतु अवधारित; निश्चित. Determined, fixed.

उक्त० ५, १३; ( २ ) साबनेतुं सुना हुआ. heard सूय० १, २, २, २५, ( ३ ). भारत आदि पुराणु भारत आदि पुराण a mythological work like Bhārata etc. सूय० १, ३, ४, ४,

**अणुस्सुयत्त** न० ( अनुस्सुकत्व ) दिव्य अने मानुषिक कामभोगमां निःस्पृहता दिव्य और मानुषिक कामभोगों मे निःस्पृहता. Freedom from desire for celestial or worldly enjoyments “ सुहसाणु अणुस्सुयत्त जणयति ” उक्त० २६, २६,

✓ **अणुहव** धा० I (—अनु+भ्व्-भू ) अनुभवतु, भोगवतुं अनुभव करना; भोगना To experience

अणुहवति सूय० १, १, १, २,

अणुहवित्तु स० कृ० सु० च० १, ३०६,

अणुहविउं हे० कृ० पंचा० २, ४३;

अणुहवंत व० कृ० सु० च० २, ५१६;

**अणुहव** पु० ( अनुभव ) अनुभव अनुभव. Experience पचा० ३, २५,—सिद्ध त्रि० (—सिद्ध ) अनुभवसिद्ध; अनुभवथी-अभ्यासथीसिद्ध थयेतु अनुभवसिद्ध, अनुभव-अभ्यास से सिद्ध proved by experience पचा० ३, २५,

**अणुहविय** त्रि० ( अनुभूत ) अनुभव इरेव अनुभव से आया हुआ Experienced. सु० च० १, १०५;

**अणुहवियच्च**. त्रि० ( अनुभवित्त्य ) अनुभव इरेवा योग्य अनुभव करने योग्य Worthy of being experienced. सु० च० ४, २४१;

**अणुहियासण** न० ( अन्वध्यामन ) अणुहियासण सहन इरेतुं ते निश्चल होकर-अटल होकर सहन करना Act of suffering bravely and courageously. जं० प० अणुह्रस्व. त्रि० ( अनुभूत ) अनुभव इरेव;

अनुभव किया हुआ. Experienced. विशेष १७०३;

✓ अणुहो. धा० I. (अनु+भू) अनुभवयुं; भोगयुं; वेद्यु. अनुभव करना, भोगना. To experience; to feel.

अणुहोति. पत्र० २;

अणुहन्ति भग० ११, ६;

अणुहोह. आ० नाया० ६,

अणुहोहि. आ० भग ६, ३३;

अणुहोहिह. भ० नाया० १;

अणुण. त्रि० (अन्यून) न्यून-ओष्ठुं नहि ते कम न हो वह. Not less; not falling short of. क० प० १, ७६; पि० नि० २६८;

अणुणदिय. त्रि० (अनिन्द्रिय) लुओ 'अणुणदिय' शब्द देखो "अणुणदिय" शब्द. Vide 'अणुणदिय' पत्र० ३;

अणुणक. त्रि० (अनेक) लुओ 'अणुण' शब्द देखो "अणुण" शब्द. Vide "अणुण" अ० १, १; उत्त० ३६, ४८,—विह. त्रि० (-विघ) नानाप्रकारता; अनेकविध. नाना प्रकारता; अनेक प्रकार का. of various kinds. उत्त० ३६, ४८,—सिद्ध पुं० (-सिद्ध) अनेक समये अनेक कर्ता वधारे सिद्ध थाय ते. एक समय में एक से आविक सिद्ध होना. attainment of Siddhahood by more than one at a time. अ० १, १;

अणुणकाचाइ त्रि० (अनेकवादिन्) धष्ठा आत्माने माननार वादी बहुत आत्माएं मानने वाला वादी. (One) believing in the existence of many souls. अ० ८, १;

अणुणग. त्रि० (अनेक) अनेक; अनेकथी वधारे; धष्ठां. अनेक; एक से ज्यादाह; बहुत Many, more than one "अणुणगवंदाए" राय० ४३; "अणुणगसाहप्पसाहविडिमा" ओव० ५०, "अणुणगरायवरसहस्साणुआयमग्गे" जं०

प० ३, ५४, "अणुणगभूयभावभविए वि अहं" अ० १, १; नाया० १; ५; ७; ८; १६; उत्त० ८, १८, भग० २, १; ५; ३, २; ५, २, ६, ६; ६, ३३; १८, १०; २०, २, १०, विशेष ३१; पि० नि० ५४; आया० १, १, १, ६; निर० १, १; दस० ५, २, ४३; जं० प० ५, ११५,—कोडि त्रि० (-कोडि) अनेक कोडि जेनी पासे धन अथवा कुटुंबियों की संख्या अनेक करोड़ है वह possessed of crores in riches or in family connections. "अणुणगकोडिकुटुंबियाइरणणिव्वुयसुहा" नाया० १, ओव०—खंडी. स्त्री० (-खण्डी) जेभां नीकणवाने अनेक छिडि-पारीओ छेय ओवी नगरी. ऐसी नगरी जिसमें निकलने की अनेक खिडकिया हों. & town with many exits. नाया० १८, विवा० १, ३;—गुण पु० (-गुण) अनेक-अनंत गुण अनेक-अनन्त गुण. many qualities or attributes विशेष १३०;—चित्त न० (-चित्त) अनेक वणगणामां-विचारमा लागेयु चित्त अनेकप्रकार के विचारों में लीन चित्त mind plunged in many thoughts. "अणुणगचित्ते खलु अयं पुरिसे" आया० १, ३, २, ११३;—जम्म न० (-जन्मन्) अनंत लव; अनेक जन्म. अनन्त भव, अनेक जन्म. many births पंचा० ८, ६,—जीव. त्रि० (-जीव) जेभा धष्ठा-अनेक छेय छे ते, पृथ्वि, पाणी, अग्नि वगेरे जिसमें अनेक जीव हैं वह, पृथ्वी, पानी, अग्नि आदि. possessed of or containing many sentient beings; e. g. earth, water, fire etc. "पुटवीचित्तमंतमक्खाया, अणुणगजीवा पुटो सत्ता" दस० ४, भग० ११, १,—जोगं-

धर. पु० (—योगधर—योग—हीराश्रवादि लब्धिकलापसम्बन्ध., अनेकाश्च योगाश्च, तथा, तान् धारयन्तीति ) अनेक लब्धिना धरनार, अनेक लब्धिसपन्न अनेक लब्धि का धारक; अनेक-अनंत लब्धिसपन्न possessed of many spiritual attainments or powers. सूय० नि० १, १, १, १६,—भूस. त्रि० (—भूप ) विविध भाछ्दी, नानी भोटी अनेक भाछ्दी छोटी, बड़ी अनेक मछलिया. many kinds of fishes. परह० १, १, —दंत. त्रि० (—दन्त ) अनेक दांतवाणो; अत्रीस दांतवाणो अनेक दातो वाला, बत्तीस दातो वाला having many teeth, having thirty-two teeth. तड्ड० —द्व्वक्खंध पु० (—द्रव्यस्कन्ध ) सचित्त, अचित्त अनेक द्रव्यनु अनेक अेक र्कन्ध, ज्यना प्रयोग—व्यापारथी विशेषरूप अेक परिणामवडे परिणत—परिणाम प.भेद सचेतन अने अचेतन द्रव्य ते अनेकद्रव्यस्कंध सचित्त, अचित्तरूप अनेक द्रव्यों का एक जीव के व्यापार से विशेषरूप एक परिणाम द्वारा परिणत सचेतन और अचेतन द्रव्य वह अनेकद्रव्यस्कन्ध. a body made up of sentient and insentient substances. विशे० ८६७,—पासंड पु० (—पापण्ड ) अनेक—नाना प्रकारना पाण्ड नाना प्रकार के पाखंड various kinds of false beliefs. “ अयोगपासंडपरिग-हिय” परह० २, २,—बहुविविह्वीससा पु० (—बहुविविधविससा) अनेक—अेक अतीथ पणु व्यक्ति भेदनी अपेक्षाअे अणु—धणु—अति-विविध सिन्न सिन्न अतिनी अपेक्षाअे नाना प्रकारनु विसूसा-स्वभाव, अर्थात् अेक अतीथ के अनेक अतीथ धणु स्वभाव व्यक्ति अथवा भिन्न भिन्न जाति की अपेक्षा से नानाप्रकार

का स्वभाव manifoldness of natu- res जीवा० ३, —भव पु० (—भव ) अनेक भव. अनेक भव-जन्म many births. नाया० ५,—भागस्थ त्रि० (—भागस्थ ) अनेक भागभां वहेथी शक्य अेवु अनेक भागों मे जो विभाजित हो सके वह divisible into many parts भग० १४, ४,—भाव त्रि० (—भाव ) अनेक भाववाणु, अणु पर्यायवाणु. अनेक भावों वाला; बहुत पर्याय वाला. of many qualities, having many modifi- cations. भग० १४, ४,—रूच त्रि० (—रूप ) अनेक रूप—प्रकारनु, विविध प्रकारनु. अनेक प्रकार का of various kinds or forms ‘सुहु सुहुं मोहगुणे जयंतं, अयोगरूवा समणं चरंतं ” उक्त० ४, ११, आया० १, ६, २, ७, ६; भग० ६, ६, ७, ६,—रूचधुरणा. स्त्री० (—रूपधुना ) वस्त्रे साधे पडिलेहवाथी अथवा त्रणुथी वधारे वअत वस्त्रने धुणाववाथी लागतो दे प, पडिलेहणुना दोपनो अेक प्रकार एक ही समय में अनेक वस्त्रों का एक साथ पडिलेहण से जो दोष लगे वह; पडिलेहण के दोष का एक भेद fault incurred by examining many garments at a time one or by examining more than three times “एगा मोमा अयोगरूवधुरणा” उक्त० २६, २७,—वरण पु० (—वर्ण) अनेक वर्ण—रंग, शणो, धोणो आदि अनेक रंग, काला, सफेद आदि. many colours, e g black, white etc भग० ६, ६,—वयणप्पहारण पु० (—वचनप्र- धान ) अनेक भाषानो जणुना; लुदी लुदी भाषाभा व्यवहार करनार अनेक भाषाओं का जानकार, भिन्न भिन्न भाषाओं में व्यवहार करने वाला ( one ) knowing many lan- guages. जं० प०—वायामजोग त्रि० (—व्यायामयोग ) अनेक प्रकारनी कसनने

योग्य. अनेक प्रकार की कसरत के योग्य.  
fit for many kinds of physical  
exercise. कण्प० ४, ६१;—वाल. पुं०  
(-व्याल) अनेक-सभ्याबंध व्याल-हिंसक  
जंगली जानवर बहुत से व्याल-हिंसक  
जंगली जानवर. many wild and  
carnivorous animals “अणोगवाल  
सयसंकणिजे यावि होव्या”नाया० २,—विह  
त्रि० ( -विध ) अनेक तरेह-प्रकारनु;  
विविध प्रकारनु अनेक प्रकार का of  
various kinds सिद्धाणोगविहा बुत्ता,  
तं मे कित्तयउं सुण ” उक्त० ३६, ४६; पन्न०  
१;—सयसहस्सखुत्तो अ० (-शत-  
सहस्रकृत्वस्) अनेक लाखवार, लाखों वार  
lacs of times. नाया० १६; भग० १५, १;—साहु पुं०  
(-साधु) अनेक साधु-मुनिओ अनेक साधु;  
बहुत से मुनि many Sādhus or  
ascetics “अणोगसाहुपूह्य” दस० ५, २,  
४३;—सिद्ध पुं० (-सिद्ध) अनेक समये  
अनेक सिद्ध थाय ते एक समय में अनेक  
सिद्ध होना, many persons attaining  
to Siddhahood at a time. पन्न०  
१; नंदी० २१;

अणोगंत त्रि० (अनेकान्त) अनिश्रय, अेक्षांत  
नहिं ते. जो एकान्त न हो वह अर्थात् जो अनेक  
दृष्टि से देखा जा सकता है वह. Looking at  
from various points of view  
सूय० टी० २, ५, ५; सम०—वाय पु०  
(-वाद) वस्तुनुं अेक्षान्त स्वरूप न मानपुं  
ते; अनंत धर्मवाणी वस्तुनुं अनेकान्तपणुं  
प्रतिपादन करपुं ते वस्तु का एकान्त स्वरूप  
न मानना; अनन्त धर्म वाली वस्तु का अनेकान्त  
स्वरूप प्रतिपादन करना system of Jaina  
logic by which things can be  
explained from several different

points of view सूय० टी० २, ५, ५,  
सम०

अणोगंतिग त्रि० (अनेकान्तिक) साध्यते मुझी  
अन्यत्र रहेनार हेतु, व्यलियारी हेतु. साध्य  
को छोड़कर अन्यत्र रहने वाला हेतु; व्यभिचारी  
हेतु. A middle term consistent  
also with the absence of the  
conclusion; a deviating middle  
term विशेष० २८३६;

अणोगंतिय न० (अनेकान्तिक) लुओ “अ-  
णोगंतिय” श०६ देखो “अणोगंतिय” शब्द.  
Vide “अणोगंतिय.” विशेष० ५६;

अणोगभूय. त्रि० (अनेकभूत) अनेकरूप-  
प्रकार अनेकप्रकार; नानाप्रकार Having  
many forms; of many kinds.  
“अणोगभूयभावभविण् अहं” “अणोगभूय  
भावभविण् भवं” नाया० ५, भग० १४, ४;  
अणोगया त्रि० (अनेकता) अनेकपणुं.  
अनेकपना, अनेकत्व Plurality. दसा०  
१०, ३;

अणोगहा अ० (अनेकधा) अनेक प्रकारे;  
धली रीते, धले प्रकारे अनेकप्रकार से; बहुत  
तरह से In many ways. सु० च० १४,  
५०; प्रव० १०६२; पचा० ५, ३०;

अणोगाह न० (अनेकाहन्) धला दिवस  
बहुत से दिन. Many days निसी० १६,  
१७,

अणोयाउय त्रि० (अनैयायिक-न्यायेन चरति  
नैयायिकः, न नैयायिकोऽनैयायिकः) अन्यायी;  
असह-न्यायवृत्तिवाणे. अन्यायी. Unjust;  
not impartial. “अणोडिपुणणे अणे-  
याउए असंसुद्धे” सूय० २, २, ३२;

अणोलिस्स त्रि० (अनीदश) अनन्यसदृश,  
अद्वितीय; अनुपम अद्वितीय; अनुपम; सादृश्य  
रहित Matchless, incomparable.  
“सत्त्वं नञ्चा अणोलिस्स” आया० १, ७, ६२

१; १, ७, २, २०४; सूय० १, ६, १,  
( २ ) अेना ळेवुं नहि; विक्षल्य विलक्षण;  
असमान. dissimilar; different,  
strange. सूय० १, १५, २;

**अणोवभूय** त्रि० ( अनेवम्भूत ) अेवी रीते नहि,  
लेवी रीते कुर्भयांभ्या छे तेवी रीते नहि किन्तु-  
तेथी ळुदी रीते: इस प्रकार नहीं, जिस रीति  
से कर्म बाधे हैं उस रीति से नहीं, किन्तु जो  
भिन्न रीति है वह. Of a different  
manner or description; of a  
manner different from that by  
which Karma is incurred. “अणो-  
वभूयं पि वेययं वेयंति ” भग० ५, ५,

**अणोस्सणा.** स्त्री० ( अनेपणा ) प्रमाददि दोष  
सहित अेषणा—आहारदिगवेषणा प्रमाद  
आदि दोषों सहित एषणा—आहारदिगवेषणा  
Lack of carefulness in receiving  
food etc. सूय० १, १३, १७; नाया० ध०  
३, ( २ ) अेषणा—गवेषणातो अभाव  
एषणा का अभाव; असावधानी absence  
of carefulness; negligence in  
proper examination e. g. of  
alms received. “एसणमणोसणं आलो  
एइरत्ता ” उवा० १, ८६, आव० ४, ५,

**अणोस्सणिज्ज** त्रि० ( अनेपणीय ) साधुने न  
कल्पे तेवुं, क्लेषणु दोषथी दुष्ट थयेल, अने-  
पणिक; असुअतुं साधु के लेने योग्य न हो  
वैसा, किसी भी दोष से जो अप्राप्त हो चुका हो  
वह Not fit to be taken by Sādhu,  
contaminated. “पूयं अणोस्सणिज्ज च,  
तं विज्जं परिजाणिया ” सूय० १, ८, १४,  
प्रव० ७६०, ठा० ३, १; भग० ५, ५; ८, ६,  
१८, १०, नाया० ५, वेय० ४, १३;  
आया० २, १, १, १;

**अणोस्सणीय** त्रि० ( अनेपणीय ) ळुअे ‘अणो-  
सणिज्ज ’ शब्द देखो ‘अणोस्सणिज्ज ’ शब्द

Vide “अणोस्सणिज्ज ” पंचा० १५, ३३,  
**अणोउया.** स्त्री० ( अनृतुका—न विद्यते ऋतुः—र-  
क्तरूपः शास्त्रप्रसिद्धो वा यस्या सा अनृतुका )  
ऋतुकाल वगरनी स्त्री, २०२५ला नहि ऋतु-  
काल रहित स्त्री, रजस्वला धर्म से रहित स्त्री A  
woman not in menses, a woman  
before menstruation. ठा० ५, २,  
**अणोक्कंत.** त्रि० ( अनुपक्कान्त ) निराकरण  
करेल नहि निराकरण न किया हुआ  
Not settled, not decided आव०  
**अणोगाढ** त्रि० ( अनवगाढ ) अवगाहन नहि  
करेल; अवगाहेल नहि. अवगाहन नहीं किया  
हुआ Not localised, not entered  
into भग० २५, ४;

**अणोग्घसिय.** त्रि० ( अनवघपित ) नहि धसेल-  
भाणेल, राभ वगेरेथी धसी साध न करेल  
विना माजा हुआ, राख वगैरह से साफ न  
किया हुआ. Not cleansed. “अणो-  
ग्घसियणिम्मलाए ळायाए सततो चेव समणु-  
वद्धा ” जीवा० ३;

**अणोघाहअ.** त्रि० ( अनवघपित ) न सेवेल;  
सेया विनानुं असेवित. Unseived  
वव० २, २३,

**अणोज्ज.** त्रि० ( अनवघ ) निर्दोष निर्दोष, दोष  
रहित. Faultless, pure. नाया० ८,

**अणोज्जा.** स्त्री० ( अनवघा ) महावीरस्वामिनी  
पुत्री. महावीरस्वामी की पुत्री The  
daughter of Mahāvīra Svāmī  
कप्प० ५, १०३;

**अणोद्धवेमाण** व० कृ० त्रि० ( अनुपद्रवत )  
उपद्रव न करतो. उपद्रव न करता हुआ Not  
causing any trouble or injury.  
भग० ८, ७, १८, ८;

**अणोद्धंसिज्जमाण** व० कृ० त्रि० ( अनुपध्व-  
स्यमान ) भाडात्म्यथी अष्ट न थतो. माहात्म्य  
से अष्ट न होता हुआ. Not degenerating

or falling off from greatness. ओव०  
अणोम त्रि० (अनवम) मिथ्यादृष्टि, अविरति  
आदि कर्मबंधना हेतु जेणे हूर धर्या छे ते;  
मिथ्यात्व, अविरति आदि कर्मबन्धके कारणों  
से रहित Free from false belief,  
attachment etc आया० १, २, २, ११४;  
—दंसि पुं० (-दर्शिन्) न्यूनदर्शी नहि; पूर्ण-  
दृष्टिवाणे; उच्च ज्ञान, दर्शन अने चारित्रवाणे।  
पूर्णदर्शी; अन्यूनदर्शी; उच्चप्रकार के ज्ञान,  
दर्शन और चारित्र वाला possessed of  
perfect knowledge faith and  
conduct “ अतरे पयासु अणोमदंसी  
णिसणो पावेहिं कम्महिं कोहाइमाणं हणिया-  
य वीरे ” आया० १, २, ३, ११४;

अणोमाणतर त्रि० (अनवमानतर) अतिशय  
छुटा छुटा; अति संकीर्ण-व्याप्त नहि ते विल्कुल  
पृथक् पृथक्; बहुत फैला हुआ Extremely  
scattered भग० १३, ४;

अणोरपार त्रि० (अनर्वाक्पार) आरपार  
वगइनु, आरपाररहित, विस्तीर्ण, विस्तृत,  
विस्तीर्ण; आरपार रहित Boundless,  
extensive “ आणोरपारं आगासं चव  
निरालंब ” परह० १, ३; सूय० २, ६, ४६,  
पंचा० १५, ४२, भत्त० १६५,

अणोवणिहिआ. स्त्री० (अनौपनिधिकी)  
अेक वस्तुमां-तेना दृष्टिपत अशोमां पौर्वा-  
पर्यं भाव-अनुक्रमनी धटना, द्रव्य आनुपूर्वीना  
अेक प्रकार. एक ही वस्तु में या उसके कल्पित  
अंशों में पूर्वापररूप अनुक्रम की रचना, द्रव्यानु  
पूर्वी का एक भेद. Due arrangement  
of the parts of a thing or sub-  
stance as conceived. अणुजो० ७२;

अणोवदग्ग. त्रि० (अनवदग्ग) अन्-नहि  
अवदग्ग-अंत; अत वगइनु-अन्त अत रहित;  
अनव; अन अर्थात् नहीं है अवदग्ग अर्थात् अन्त

जिसका वह Endless, infinite. सूय०  
१, १२, ६;

अणोवम त्रि० (अनुपम) अनुपम-उपमा  
रहित; तुलना रहित उपमा रहित, अतुलनीय,  
Matchless, incomparable “अतुल  
सुहसागरगया अच्चावाह अणोवमं पत्ता ”  
ओव० सम० ६, नाया० ६; पन्न० २; जं०  
प० ३, ५४,—दंसि पुं० (-दर्शिन्) उच्च  
ज्ञान, दर्शन अने चारित्रवान् उच्च ज्ञान, दर्शन  
और चारित्र वाला (one) having  
high knowledge, vision, and  
conduct “ अरतेपयासु अणोवमदंसी  
णिसणो पावेहि ” आया० १, २, ३, ११४;  
—सिरीअ त्रि० (-श्रीक) अनुपम शोभा  
वाणुं अनुपम-उपमा रहित-अद्वितीय श्री-शोभा  
वाला one having matchless beau-  
ty “अणोवमसिरीआ दासीदासपरिवुडा”  
नाया० ६,—सुह त्रि० (-सुख) अतुल सुख  
वाणुं मोक्षसुख having highest, eter-  
nal bliss. “ द्वाणमणोवमसुहसुवगयाणं ”  
सम० १;

अणोवमा स्त्री० (अनुपमा) सुखी-मिठाईनी  
अेक अत मिठाई की एक जाति. A kind of  
sweetmeats पन्न० १७;

अणोवलेवय त्रि० (अनुपलेपक) कर्मबंध-  
कर्मबंधनथी रहित कर्मलेप-कर्मबंधन से रहित.  
Free from Karmas. परह० १, २,

अणोवसंखा स्त्री० (अनुपसंख्या) अन्-नहि  
उपसंख्या-ज्ञान; अज्ञान; अविद्या अज्ञान;  
अविद्या. Ignorance, absence of  
knowledge. “अणोवसंखाइति ते उदाह,  
अट्टे सउभासइ अम्ह एवं ” सूय० १, १२, ४,

अणोवहिअ-य त्रि० (अनुपधिक) उपाधि  
रहित; द्रव्यथी उपाधि-सुवर्णादि धन, भावथी  
उपाधि भाया इपाय वगेरे, तेथी रहित. उपाधि  
से रहित; द्रव्यरूप अर्थात् धनधान्यादिरूप

और भावरूप अर्थात् मायाकषायादिरूप उपाधि से रहित Free from sources of trouble such as wealth, passions etc आया० १, ४, १, १२६,  
**अणोवाहणय** त्रि० (अनुपानत्क) जेडा-पगरभा रहित. जेडा न पड़ेरनार विनाजूतेका, जूतान पहिनेवाला Bare-footed भग० १, ६,  
**अणोसिअ** त्रि० (अनुपित) निवास नहि दुरेल, अण्यवस्थित. निवास न किया हुआ, अव्यवस्थित. Not lodged, not settled  
 "अणोसिए णतकरिंति णच्चा" सूय० १, १४, ४,  
**अणोहंतर** त्रि० (अनोवन्तर) जे प्रक्षरना ओधने नहि तरनार, १ द्रव्य ओधनदीपूर २ भाव ओध-आड प्रक्षरनां डर्म अथवा संसार, तेने न तरनार द्रव्य, भावरूप ओघ से नहीं तिरनेवाला नदी आदि का पूर द्रव्यओघ और कर्मरूप संसार भावओघ कहलाता है. Not able to cross the stream of a river or that of Karmas "अणोहंतराए णय ओहतरि-त्तए" आया० १, २, ३, ८०,  
**अणोहट्टअ-ट्टिअ**. त्रि० (अनपघट्टक-ट्टिका-अविद्यमानोपघट्टको यदच्छया गवर्तमानस्य हस्तग्राहादिना निवर्त्तको यस्य तत्तथा ) गमे तेम वर्ततां जतां जेने हाथ पडडी अट्टकावनार-रोडनार डोर्छि नथी ते मनमाना वर्तन करते हुए भी जिसका हाथ पकड़कर रोकने वाला कोई न हो वह Having no body to restrain in spite of wanton conduct. 'तवेण सा सुभद्दा अज्ज अणोहट्टिआ अणिवारिया सच्छदमई' नाया० १६, १८, विवा० २, नाया० ध०  
**अणोहिया**. स्त्री० (अनोघिका) जेनी अंदर पाणीनु डोर्छि पणु स्थान नथी जेवी अट्टवी ऐसा जंगल जिसमें पानी का एक भी स्थान नहीं हो. A forest having no place

containing water "एगं महं अगामियं अणोहियं छिन्नावायं दीहमद्धं" भग० १५, १;  
**अरण** न० (अर्ण) जल, पाणी पानी, जल Water "अरणवंसि महोहसि" उक्त० ५, १;  
**अरण** न० (अन्न) भात वगेरे धान्य, अनाज. चावल वगेरह धान्य, अन्न Corn, like rice etc नाया० १४, सूय० १, ४, २, ६;  
 (२) भोजन; भोदक वगेरे भोराक भोजन; लड्डु आदि की खुराक food e g. sweet balls etc "अरण पभूय भवयाणमेयं" उक्त० १२, १०, (३) भिक्षा; गोथरी शिचा begging of food etc  
 "अन्नस्स अट्टा इह मागत्रोपि" उक्त० १२, ६, पंचा० १६, १०,—गिलायक पु० (—ग्लायक) अन्न विना ग्लानि पाभनार साधु; लुभ्यान रडेवाथी अथवा अलिग्रहविशेषथी सवारभाज आहार डरनार साधु विना अन्न के ग्लानि पानेवाला साधु, भूखे न रहा जाने से अथवा अभिग्रहविशेष में सुबह ही आहार करने वाला साधु an ascetic experiencing trouble in fasting, a Sādhu who takes food in the morning, being unable to observe fast "जावइयंचरणं भंते ! अरणगिलायए समये निग्गथे कम्मं शिज्जेरेति" भग० १६, ४, परह० २, १; ओव०—जंभग. पु० स्त्री० (—जृ-म्भक) जलका देवतानी दस जतमानी पडेडी जत जभका देवो की दस जातियों में से पहिली जाति first of the ten kinds of Jambhaka gods "अरणजभगा पाणजंभका" भग० १४, ८,—पाण. न० (—पान) अन्नपाणी अन्नजल food and water. नाया० १६,—पुरण न० (—पुरण) अनुदंपालावे अन्न-भोजन आपवाथी यतु पुण्य, अन्नपुण्य दयाभाव ने भोजन देने के कारण जो पुण्य हो वह. reliquus

merit acquired by giving food through charity. ठ० ६;—**प्पमत्त**. त्रि० (—प्रमत्त ) भावानो गृद्धि-लोक्षपी. भोजन का लोलुपी. greedy of food. “अरण्यप्पमत्ते धणमेसमाणे” उक्त० १४, १४; —**भोग**. पुं० (—भोग) भाद्यआदि भोग्य पदार्थ. खाद्य आदि भोग्य पदार्थ. materials of enjoyment consisting of food etc. “अरण्यभोगेहिं लेण भोगेहिं” ओव०—**विहि**. पुं० (—विधि) अन्न उत्पन्न करवानी, शोधवानी अने रांधवानी इणा. अन्न उत्पन्न करने की, साफ करने की और उसे सिमाने की कला. the art of producing, cleansing, or purifying and cooking food ओव० ४०; जं० प० २, नाया० १;

**अरण्य** त्रि० (अन्य) पोताथी लिन्न; पोता शिवाय; श्रीलुं, पृथङ्; लुटुं. अपने से भिन्न; अपने सिवाय; दूसरा; भिन्न. Another; different. “नो अरण्यदेवे नो अरण्येहिं देवारां देवीओ अभि जुंजिय” भग० २, १; ५; ३, ४, ५, ४; १५, १; १६, ६; १८, २; २०, १०; नाया० १; ५; ७; ८; १३; १४; १५; १६, ओव० १३; सूय० १, १, २, १, आया० १, १, १, ४; वव० १, २३; ५, ११, ८, १२, जं० प० १, १४; विशे० ३४; ४६६; दसा० ६, ४,—**उक्त**. त्रि० (—उक्त) अन्य-अविवेदिन्नोअे इहेल-इथन इरेल अविवेकी जनों द्वारा कथित-कहा हुआ. mentioned by others; e.g. by undiscerning men. ओव०—**गण**. पु० (—गण) अन्य गण्य अन्य गच्छ. another order of saints. वव० ६, २०;—**गुण**. त्रि० (—गुण-चैतन्या-दन्त्ये गुणा येषां तान्यन्यगुणानि ) अचेतन; ०८३ अजीव; जड. inanimate; insentient. “पंचरहं संजोए अरण्यगुणारं च चेरखाइ गुणो” सूय० नि० १, १, १, ७;

—**दत्तहर** पुं० (—दत्तहर) श्रीलुंअे अक्षीश इरेली होय तेने रस्तामां छुंटनार. दूसरे ने जो इनाम दिया हो उसे रास्ते में लूटने वाला (one) robbing a person on the road, of a gift received by him “अरण्यदत्तहरे तेये, माई कन्नु हरे सवे” उक्त० ७, ५;—**धम्मिय**. पुं० (—धार्मिक) गृहस्थ; गृहस्थाश्रमी गृहस्थ; गृहस्थाश्रमी. a householder. ठ० ३, ४;—**परिभोग** पुं० (—परिभोग) अन्य-अन्नपाणी शिवाय आदिम, स्वादिम आदिने उपभोग अन्नजल के सिवाय खादिम, स्वादिम आदि का उपभोग. enjoyment of objects other than food and water. पंचा० ५, ३५;—**प्पमत्त** त्रि० (—प्रमत्त) अन्य-सगा संभन्धीमां आसक्त थयेल अन्य-नातेदारों में आसक्त. attached to others viz relatives “अरण्यप्पमत्ते धणमेसमाणे, पप्पोति मच्चुं पुरिसो जं च” उक्त० १४, १४,—**लिंग**. न० (—लिंग) अन्यलिंग, जैनेतर लिंग-वेष. अन्य लिंग; जैनेतर लिंग-वेष a non-Jaina characteristic mark भग० २५, ६; ७, सम० प० २३१;—**लिंगसिद्ध**. पुं० (—लिंगसिद्ध) अन्य-जैनशिवायना लिंगे-वेषे सिद्ध थाय ते अन्यलिंग-जैनलिंग के सिवाय अर्थात् अन्यधर्म से जो सिद्ध हो वह. a non-Jaina who has attained to Siddhahood. पन्न० १;—**ववएस** पुं० (—व्यपदेश) इध वस्तु पोतानी होय छता ते श्रीलुंनी भालेदिनी छे अेम इहेपुं ते; साधु ओहरवा आव्या होय त्तारे पोतानी वस्तुने श्रीलुंने व्यपदेश इरेवाधी साधु न ल्ये तेथी लागते भारमा प्रतने श्रीलुंने अतिथार. किसी वस्तु के अपनी होने पर भी यह कहना कि वह दूसरे की है; साधु भिन्नार्थ आये हो तत्र अपनी वस्तु



को दूसरे का व्यपदेश करना जिससे साधु न लें इससे जो बारहवें व्रत का तीसरा अतीचार लगता है वह attributing falsely to another the ownership of a thing belonging to oneself; the third violation of the twelfth vow viz telling this kind of lie to an ascetic. प्रव० २८७; —संभोद्ध्र. त्रि० (—साम्भोगिक) अन्य भीष्म गच्छना साधुसाथे आहारपाणीना व्यवहारवाणे। अन्य गच्छ के साधुओं के साथ अन्नजल का व्यवहार रखने वाला. one who keeps relation as regards food and drink with a Sādhu of another order वव० १, ३७,

अरण्यउत्थिय पुं० (अन्ययूथिक—जैनयूथादन्य-द्यूथं सङ्घान्तरं तीर्थान्तरं तदस्ति येषा तेऽन्य-यूथिकाः) तीर्थान्तरिय, जैनेतर, जैनशिवाय-ना मतान्तर—शाक्य, चरक, परिव्राजक, कपिल, आश्रवक, वृद्धश्रावक वगैरे। अन्यधर्मी, जैने-तर, जैन सिवाय अन्य मतान्तर—शाक्य, चरक, परिव्राजक, कपिल, आजीवक, वृद्ध, श्रावक आदि। One belonging to a non-Jaina creed such as, Śākya, Charaka, Parivrājaka, Kapila, Ājīvaka, Vriddha-śrāvaka etc “ तस्सयं गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामंते वहवे अरण्यउत्थिया परिवसंति ” भग० ७, १०, “अरण्यउत्थियायां भंते ! एवमाइक्खंति ..... एणेण समण्यं दो आउयाहं पकरेह ” भग० १, ६, “ अरण्यउत्थियायां भंते ! एवमाइक्खंति ..... चलमाये, अन्नलिप जाव निज्जरिज्ज-माये अनिज्जिण्ये ” भग० १, १०; “ अरण्य उत्थियायां. .... एणे जीवे एणेणं समण्यं दो किरियाओ पकरेह ” भग० १, १०; “ अरण्य-उत्थियायां भंते ! ... .. कहन्नं समणायं निगं-

धायां किरिया कज्जंति' ठा० ३, २; “अरण्यउत्थि-यायां भंते !..... अरण्ये जीवे अरण्ये जीवाया” भग० १७, २; २, १; ५, ५, २, ७, १, १५, १; १८, ७; नाया० ११, आया० २, १, १, ४; श्रव० उवा० १; सम० १, १२, ३४, निसी० ३, ४; १२, १६,—देवय न० (—देवत) अन्यभतिओ-ओ मानेल हरिहरादि देव. अन्यमतियों द्वारा मान्य हरिहरादि देव a god of non-Jaina creeds e g. Hari, Hara etc उवा० १, ५८,—परिग्राहिय. त्रि० (—परिगृहीत) अन्य तीर्थिओओ प्रहृषु इरेल; अन्यभतिओओ पोतानु इरी लीधेल अन्य धर्मावलम्बियों द्वारा ग्रहण किया हुआ; जिसे अन्यमतियों ने अपना कर लिया हो वह. adopted by followers of non-Jaina creeds. उवा० १, ५८;

अरण्यओ. अ० (अन्यतस्) भीष्मे स्थणे दूसरे स्थान पर At another place; else-where “ नहु दाहामि ते भिक्खं, भिक्खु जायाहि अरण्यओ ” उत० २५, ६; नाया० १;

अरण्यतर. त्रि० (अन्यतर) लुओ “अरण्यर” श०६ देखो ‘अरण्यर’ शब्द Vide “अरण्य-यर.” पन्न० २८, श्रव० १७, नाया० १४,

अरण्यतित्थिय. पुं० (अन्यतीर्थिक) अन्य-भति; अन्यदर्शनी; जैनेतर दर्शनवाणे। अन्यमतावलम्बी; जैनेतर दर्शन वाला A non-Jaina सम० २६,—पवत्ताणुओग. पुं० (—प्रवृत्तानुयोग) इपिशादिके प्रवतविधु शास्त्र, पापश्रुतविशेष. कपिलादिकों का प्रवर्ताया हुआ शास्त्र; पापश्रुतविशेष a scripture taught by non Jainas like Kapila etc, a variety of tainted scripture. सम० २६;

अरण्यतभावणा. स्त्री० (अन्यत्वभावना) देहथी आत्मा लुओ छे ओम चितवन इरुं-लावना भावनी ते. देह मे आत्मा भिन्न है एम

प्रकार की भावना करना Meditation upon the non-identity of the soul with the body. प्रव० ५६०,

अरण्यत्थ पुं० (अनर्थ) अर्थही विपरीत; अनर्थ. अर्थ से विपरीत; अनर्थ. Wrong interpretation, false meaning. भग० ७, २, विशेष० २५;

अरण्यत्थ त्रि० (अन्यस्त) रापेल नहि. न्यास न किया हुआ, निक्षेप न किया हुआ. Not placed; not deposited. विशेष० ६१६;

अरण्यत्थ. अ० (अन्यत्र) भीजे ध्यांङ्; शिवाय; वहाँने दूसरे स्थान पर, सिवाय, छोड़कर. Elsewhere; barring, excepting "अरण्यत्थकथ्यह्" विवा० २; प्रव० ८६२, अरण्यत्थकथ्यह् मया अकुर्वमाणे "अणुजो० २७, सू० प० २०, पन्न० ११; नाया० ५;—अणा-भोग पु० (अनाभोग) अनाभोग-अज्ञान-पणा शिवाय अनाभोग-अज्ञानपन के सिवाय Excepting ignorance or unconsciousness "अरण्यत्थाणाभोगेण" आव० ६, २;—गय त्रि० (गत) अन्यत्र-भीजे स्थणे गयेल. दूसरे स्थान को गया हुआ gone elsewhere. भग० ६, ६;

अरण्यत्थ. पुं० (अन्वर्थ-अनुगतौऽर्थोऽन्वर्थ.) व्युत्पत्तिने अनुसारे थता अर्थ विनाते शब्द, जेभा छन्दो अर्थ नथी जेवा डोर्ध् पाण्डु छन्द नाम पाउथुं ते. व्युत्पत्ति के अनुसार होने वाले अर्थ से शून्य शब्द; जैसे कि किसी साधारण बालक का नाम 'इन्द्र' रखा गया तो वहाँ इन्द्र शब्द का वह अर्थ घटित नहीं होता जो उस शब्द का वास्तविक अर्थ है. A word not bearing out its etymological significance; e. g. the name Indra given to a child not possessing the connotation

of the word Indra. पंचा० १२, १८, —जुय. त्रि० (युत) व्युत्पत्ति अनुसार अर्थयुक्त. व्युत्पत्ति के अनुसार अर्थ वाला. bearing a meaning bearing out the etymological sense. पंचा० १६, ३७; —जोग. पुं० (योग) शब्द अने तेना अर्थने अनुगत-व्युत्पत्ति अनुसारी संबन्ध. शब्द और उसके अर्थ का व्युत्पत्तिके अनुसार सम्बन्ध the etymological relation of a word and its meaning. पंचा० १२, १८;

अरण्यदा अ० (अन्यदा) भीजे डोर्ध् डोर्ध्मां. और किसी समय में At some other time, at another time भग० १६, ५; अरण्यमरण त्रि० (अन्योन्य) अन्योन्य; परस्पर; एक दूसरे का. Mutual "अरण्यमरणमणुरत्तया अरण्यमरणमणुव्या" नाया० २; "अरण्यमरणं खिज्जमाणीओ विव" राय० "अरण्यमरणं करेमाणे पारंचिए" ठा० ३, ४; जं० प० ३, ५६; "अरण्यमरणमणुरत्ता, अरण्यमरण हिणसियो" उक्त० १३, ५, अणुजो० ६७, भग० १, ८, २, ५; ३, १; ५, २, ६, ७, ६; ८, ६; ११; १०; १५, १; १८, ७; नाया० १; ३; ५; ८; १३; १४; १६; दसा० १०, १, वव० ४, ५; ६, ८, ६; ५, ६; ७, १५, ओव० २७, ३६, निसी० ४, ६६; १४, ५, —अव्भास. पुं० (अभ्यास) अन्योन्य अभ्यास करवो ते; जेभ के गुणा-कार करवो ते, जेभ के  $५ \times ५ = २५$  अन्योन्य अभ्यास का करमा, एक दूसरे का गुणाकार करना. जैसे  $५ \times ५ = २५$ ; multiplication of 5 by the same number e. g. five into five. अणुजो० ६७, —ओगाढ त्रि० (अवगाढ) परस्पर क्षीरनीरनी पेटे अवगाढीने रहेल. आपस में हिल मिलकर दूधपानी के समान मिलकर रहा हुआ. remaining in mutual contact like milk and

ter भग० १, ६,—किरिया. स्त्री० (-क्रिया)  
 रूढाम रूढमे अेड् भीज्ना पग पुन्वा, पग  
 योणवा, मर्दन करतुं वगेरे परस्पर में एक दूसरे  
 के पैर दबाना, मर्दन करना आदि. reciprocal  
 action, e. g. massaging feet  
 mutually etc “से भिक्खू वा भिक्खू-  
 र्णी ज्ञा अरण्यमरणकिरियं अज्झत्थियं संसेहयं  
 णो तं साइए णो तं णियमे से अरण्यमरणो  
 पाए आमजेज्ज वा पमजेज्ज वा” आया० २,  
 १३, १७२,—गंठिय. त्रि० (-ग्रथित) पर-  
 २पर गांठिणी गुंथेजुं, पर२पर गांठवाणु परस्पर  
 में गाठ से गुंथा हुआ, परस्पर गठान वाला  
 interwoven with knots भग० ५, ३,  
 —गुरुयत्ता स्त्री० (-गुरुक्ता) पर२पर  
 गुंथवाथी थथेक्ष विस्तीर्णता, परस्पर में गुंथने  
 से जो विस्तीर्णता हुई हो वह breadth got  
 by intertwinning one thing with  
 another. भग० ५, ३,—घडत्ता. स्त्री०  
 (-घटता) पर२पर समुदायरचना; पर२पर  
 संयुध परस्पर संबन्ध; परस्पर सामुदायिक रच-  
 ना. mutual formation of society;  
 interrelation “अन्नमन्नसियोहपडिबद्धा  
 अरण्यमरणघटत्ताए” जीवा० ३; भग० १, ६;  
 —पुट्ट त्रि० (-रुष्ट) अेड् भीज्ने अडेक्ष-  
 २पर्श करेक्ष एक दूसरे को छुआ हुआ. in  
 reciprocal contact भग० १, ६;  
 —वद्ध त्रि० (-बद्ध) पर२पर गांठतर आ-  
 धेक्ष, जेम श्रवसाथे कर्म अने कर्मसाथे श्रव  
 प्रदेश. परस्पर में बंधा हुआ, जिसप्रकार जीव  
 के साथ कर्म और कर्म के साथ जीवप्रदेश  
 in close inter-relation, e. g. the  
 soul with Karma and vice  
 versa भग० १, ६,—भारियत्ता स्त्री०  
 (-भारिकता-अन्योन्यस्य यो यो भार स  
 विद्यते यत्र तद्भाबस्तसथा) अेड् भीज्ना  
 भार-भोज्नाणुं. एक दूसरे का भार-बोझा

वाला state of bearing reciprocal  
 burden भग० ५, ३,—अणुगय. त्रि०  
 (-अनुगत) अेड्भीज्ने अनुकूलपणे  
 वणगेक्ष एक दूसरे से अनुकूलता पूर्वक मिला  
 हुआ. united in mutual interest  
 नदी०—मसंपत्त त्रि० (-असम्प्राप्त) अेड्भी-  
 ज्ने प्राप्त थथेक्ष नहि, पर२पर अेड् भीज्ने  
 अडेक्ष नहि एक दूसरे को प्राप्त नहीं हुआ हो  
 वह, परस्पर एक दूसरे से नहीं छुआ हुआ.  
 not in mutual contact जीवा० ३;  
 —समाउत्त त्रि० (-समायुक्त) पर२पर  
 संयुध युक्त. पारस्परिक सम्बन्ध युक्त related  
 mutually भग० १, ६,—सियोहपडि-  
 वद्ध त्रि० (-स्नेहप्रतिबद्ध) अन्योन्य स्नेहयु-  
 क्त, अेड् भीज्नासाथे वणगेक्ष-अेड्ले शुधी डे  
 अेड् यादे तो तेनी साथे भीज्ने पणु यादपुंण  
 पडे अन्योन्यस्नेहवद्ध, एक दूसरे के साथ स्नेह  
 से इसप्रकार बंधे हुए कि एक चले तो दुसरे को  
 भी चलनाहो पड़े bound by close ties of  
 mutual love, so much, so that if  
 one walks the other also must  
 walk in company जीवा० ३, भग० १, ६,  
 अरण्यकर. त्रि० (आश्रवकर) आश्रव करेना  
 आश्रव करने वाला. (One) who opens  
 a door to the influx of Karma  
 भग० २५, ७,  
 अरण्यकर त्रि० (अन्यतर) गमे ते अेड्, अ-  
 नेरुं; जेमानु डे अनेड्भांनुं डेअि अेड् चाहे जो  
 एक, दो में से या अनेकों में से कोई एक One  
 of two or more “अरण्यकरेषु अभियो-  
 गेषु देवलोगेषु देवत्ताए उववज्जह” निमी० ४,  
 २१; १०, ४, १२, १; ८; १३, १२, १५, ३५;  
 ४०; १७, ३३, भग० १, १, ६; २, १; ६; ३, ४;  
 ५, ६; ६, ५; ७, १, ७; ८, ३, १६, ६; २५, ६;  
 नाया० १; १४; १५; १६; वेय० ४, १३, ७६; ५,  
 १३; नम० २८; आया० १, १; १, २; आश्रव०

३४; दसा० ६, ४; १०, ४; पञ्च० २२;  
वव० १, ११, ३७; १०, ११; कप्प० २, १७;  
—कुल. न० (—कुल) गमे ते ओ३ कुल. दूसरा  
कुल—वंश another family; any one  
family दसा० १०, ४;

अरण्यरग त्रि० (अन्यतर-क) लुओ “अरण्य  
रग” शब्द. देखो “अरण्यरग” शब्द Vide  
“अरण्यरग” दसा० ६, ४;

अरण्यया अ० (अन्यदा) उयारे३, को३ ओ३ सभये;  
को३ व३ते किसी एक समय मे, कभी. At  
some time or other. नाया० १; २,  
५, १६, भग० २, १; ३, १; ५, ४; विवा० १;

अरण्ययाकयाइं. अ० (अन्यदाकदाचित्)  
को३ ओ३ व३ते; को३ ओ३ सभये; गमेते  
ओ३ व३ते; अनिर्धारित सभये किसी एक  
समय में, चाहे जिस एक समय में, अनिश्चित  
समय मे. At some time or other;  
at an unfixed time. नाया० ५; ८;  
१२; १३; १४; १६, भग० ६, ३१; १५, १;

अरण्यव. पुं० (अरण्यव) समुद्र. (२) संसार.  
समुद्र. संसार Ocean. worldly ocean.  
“अरण्यवसि महोहंसि, एगे तिरणे दुरुत्तरे”  
उत्त० ५, १; विशेष० ११२७;

अरण्यव त्रि० (अरण्यवत्) २७ मुं लोकोत्तर  
मुहूर्त्त. २७ वाँ लोकोत्तर मुहूर्त्त The  
twenty-seventh Lokottara  
Muhūrta जं० प०

अरण्यवालय पुं० (अरण्यपालक) ओ नामने  
ओ३ अन्यतीर्थि३; अलोदायी धत्यादिमाने  
ओ३. एक अन्यधर्मानुयायी का नाम,  
कालोदायी इत्यादियों में से एक. A non-  
Jaina of that name, one among  
Kālodāyī and others. भग० ७, ६;

अरण्यहा. अ० (अन्यथा) अन्यथा; अग२;  
आ३ रीते, नहि तो; नहितर अन्यथा; दूसरी  
तरह से, नही तो, या. If not, otherwise;

in another way. “अरण्यहा लो  
मुवेहमाणे” आया० १, ५, ३, १५४; नाया  
६; १६; पंचा० १४, २२,—भाव. पुं  
(—भाव) विपरीत भाव; सत्यने असत्य भा  
नपुं ते विपरीत भाव, सत्य को असत्य मानना  
regarding truth as untruth  
भग० ३, ६;—वाइ त्रि० (—वादिन्  
अन्वथावादी-असत्य ओलनार. अन्यथावादी  
असत्य बोलने वाला a liar; untruthful  
नाया० ३; भग० १६, ६;

अरण्यअ. त्रि० (अज्ञात) नहि नालाओल;  
अपरिचित. न जाना हुआ; अपरिचित. Not  
known; unacquainted. ओष०  
नि० ६६;

अरण्यइह. त्रि० (अन्वाविष्ट) देवताना  
आवेशथी व्याप्त थयेल-परवश थयेल देवता  
के आवेश से जो व्याप्त हो-परवश हुआ हो  
वह. Possessed, influenced, by a  
spirit or deity. भग० १५, १; १८, ६;

अरण्यउंछ. पुं० (अज्ञातोच्छ) लुओ “अरण्य-  
उंछ” शब्द देखो. “अरण्यउंछ”  
शब्द. Vide “अरण्यउंछ”. दसा० ७, १;

अरण्यपसि. पुं० (अज्ञातैपिन्) अति, विद्वता  
आदिथी अज्ञात थधने आहारादिनी अपथु  
अरनार, पोतानुं भाडात्म्य न नालुता होपतेवा  
कुलमां लिखा अरनार साधु. जाति, विद्वत्ता आदि  
न जताकर आहारादि की एषणा करने  
वाला, अपने महात्म को जो न जानता हो ऐसे कुल  
में भिक्षा ग्रहण करने वाला साधु An asce-  
tic begging alms from families  
ignorant of his greatness  
and learning. “अरण्यपसी परिव्वए जे स  
भिक्षू” उत्त० १५, १; उत्त० २, ३६;

अरण्यारा. न० (अज्ञान) अज्ञान, अनाशुपणुं;  
विपरीत बुद्धि; विपर्यास अज्ञान; अज्ञानपन;  
विपरीत बुद्धि. Ignorance, nescience.

“अरण्याणो तिविहे पण्यते तंजहा-देस  
रण्याणे सब्वरण्याणे भावरण्याणे ” ठा० ३,  
३, भग० ५, ७, ८, १, २; ६, ३१; २६,  
१; नाया० ५; श्रौव० २०, विशेष० १०७, श्राव०  
४, ८;—किरिया स्त्री० (-क्रिया) अज्ञान  
पणुे इरवाभां आवती येष्टथी लागती क्रिया-  
इर्भंयंध, अज्ञानक्रियानो अेड भेद अज्ञानपूर्णा  
चेष्टा से होने वाला कर्मबंध, अज्ञानक्रिया  
का एक भेद. Karma arising from  
actions done in ignorance,  
a variety of Ajñāna Kriyā  
ठा० ३, ३;—शिव्वत्ति स्त्री० (-निर्वृत्ति)  
अज्ञाननी उत्पत्ति, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान  
अने विभंग अे त्रणु अज्ञाननी निष्पत्ति  
अज्ञान की उत्पत्ति; कुमति, कुश्रुत और विभंग  
इन तीनों अज्ञानों की निष्पत्ति rise of  
the three varieties of ignorance  
viz Mati, Śruta and Vibhanga  
ignorance “कइ विहाणं भंते ! अरण्याण-  
णिव्वत्ति परणत्ता ? गोयमा ! तिविहा अरण्या-  
णणिव्वत्ति परणत्ता, तंजहा-मइअरण्याण-  
णिव्वत्ति सुयअरण्याणणिव्वत्ति विभंगरण्याण  
णिव्वत्ति ” भग० १६, ८;—दोष पुं० (-दोष)  
कुशाखना संस्कारथी हिंसादि कृत्यामां धर्म  
भुद्धि राभवथी लागतो अेड दोष, रौद्रध्यानतु  
त्रीणु लक्षणु कुशाख के सस्कार से हिंसा-  
दिक्त्यों में धर्मबुद्धि लाने से जो दोष लगता  
है वह, रौद्रध्यान का तीसरा लक्षण a sin  
arising from killing for religious  
purposes as a result of the  
teachings of false scriptures,  
the third variety of Raudra-  
dhyāna ठा० ४, १, भग० २५, ७,  
—परीसह. पुं० (-परीषह) अज्ञान परिसह,  
अज्ञान अेटले विद्या न आवडवाथी थतु इष्ट  
सहन इरपुं ते. अज्ञानपरीषद, विद्या न आने से

होने वाले कष्ट का सहन करना. bearing  
without complaint troubles  
caused by ignorance; suffering  
without complaint the trouble  
of the sense of shame arising  
from the consciousness of  
want of learning. उत्त० २, ३;  
—फल. न० (-फल) अज्ञानतुं इध-ज्ञाना-  
वरणरूप कर्म; धर्मगुरु वगैरेनी निंदा  
इरवाथी यंधातुं ज्ञानावरणीय कर्म.  
अज्ञान का फल-ज्ञानावरणरूप कर्म, धर्मगुरु  
वगैरह की निंदा से बंधने वाला ज्ञानावरणीय  
कर्म Jñānāvaranīya (knowledge  
obscuring) Karma arising  
from censuring preceptors etc.  
“से नूण मए पुव्व कम्मरण्याणफला कढा”  
उत्त० २, ३८,—लद्धि स्त्री० (-लद्धि)  
अज्ञाननी प्राप्ति; ज्ञानावरणीय कर्मना  
उदयथी थती अज्ञाननी प्राप्ति अज्ञान की प्राप्ति;  
ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से होने वाली अज्ञान  
की प्राप्ति. ignorance resulting from  
the maturing of knowledge  
obscuring Karma अरण्याणलद्धीणं  
भंते ! कइविहा परणत्ता ? गोयमा ! तिविहा  
परणत्ता, मइअरण्याणलद्धी सुयअरण्याणलद्धी  
विभंगरण्याणलद्धी ” भग० ८, २,—वादि.  
त्रि० (-वादिन्) अज्ञानवादी-अज्ञान-  
नेण अेय माननार वादी; ज्ञानभा दोष दर्शा-  
पी अज्ञानतु स्थापन इरना अज्ञान  
वादी, अज्ञान को ही अेय मानने वाला  
वादी, ज्ञान में दोष बतलाकर अज्ञान की  
स्थापना करने वाला one establishing  
the superiority of no'science  
by pointing out the defects of  
knowledge. सुय० १, १, २, २३; नंदी०  
४६;—सत्थ न० (-शास्त्र) अज्ञान शास्त्र;

भारत, काव्य, नाटकदि वैदिकशास्त्र  
अज्ञानशास्त्र-भारत, काव्य, नाटक आदि लौकिक  
शास्त्र. secular science such as  
that of poetry, drama etc;  
science or knowledge not  
dealing with spiritual matters  
ठ० ६;

अरण्याया. स्त्री० ( अज्ञानता ) अज्ञानता;  
अज्ञानपणुं. अज्ञानता; अज्ञान पन. Ignorance. भग० १, ६, सम० ३२;

अरण्याणि. त्रि० ( अज्ञानिन् ) अज्ञानी,  
अज्ञानपणुंथी रहित; ज्ञानथी रहित; अज्ञान-  
वादी. अज्ञानी, ज्ञान से रहित, अज्ञानवादी.  
Ignorant; devoid of knowledge;  
professing the doctrine of  
nescience " अरण्याणि अरण्याणं  
विषयइत्ता वेणइयवादी " सूत्र० नि० १, १२,  
११८; पंचा० ११, २६; भग० १, ५; ८, २,  
११, १; १८, १; २४, १; २६, १; सम० ३०,  
दसा० ६, ३०;

अरण्याणिअ-य. पुं० ( अज्ञानिक ) अज्ञानी,  
ज्ञानहीन; ज्ञानभा दोष दर्शाथी अज्ञाननेत्र  
श्रेय माननार; अज्ञानी; ज्ञान से दोष  
बतलाकर अज्ञान को ही श्रेय मानने वाला  
Ignorant; devoid of knowledge,  
one establishing the superior-  
ity of nescience by pointing  
out the defects of knowledge or  
science भग० १, ६; ८, २, सूत्र० १, १२,  
२; अणुजो० ४१;—वाइ. पुं० ( -वादिन् )  
अज्ञानवादी; ज्ञानभा दोष दर्शाथी अज्ञाननेत्र  
श्रेयरूप माननार वादी अज्ञान वादी, ज्ञान से  
दोष बतलाकर अज्ञान को ही श्रेयरूप मानने  
वाला वादी. ( one ) maintaining  
the superiority of nescience by  
pointing out the defects of

knowledge or science, भग० ३०,  
१, ठा० ४, ४;

अरण्याय. पुं० ( अन्याय ) अन्यायी; न्याय-  
रहित अन्यायी; न्याय से रहित. Devoid  
of justice, unjust सूत्र० १, १२, ६;  
—भासि. त्रि० ( -भापिन् ) अन्याययुक्त  
भोलनार; जेभ तेभ भोलनार. अन्याय  
युक्त बोलने वाला. one who speaks  
without a sense of justice or  
propriety. "जे विगहिण् अरण्यायभासी"  
सूत्र० १, १३, ६;

अरण्याय त्रि० ( अज्ञात ) अज्ञातपणुं; अज्ञात  
पणुं. विना जाना हुआ. Unknown;  
not known. श्लो० नि० ६६; प्रव०  
५८७; भग० ३, ७; १८, ७,—उंछ पुं०  
( -उच्छ ) परिचय इत्यादि विना शिक्षा,  
उपकरण वगैरे साधुओं से लेना ते. परिचय कस्ये  
विना शिक्षा, उपकरण वगैरे का साधुद्वारा लिखा  
जाना accepting of alms & begging  
of bowls by a Sādhu as a stran-  
ger. " अरण्यायउच्छं पुलनिष्पुलाए " दस०  
१०, १६;—चरत्र पुं० ( -चरक ) अज्ञात  
रहने-स्वभाव्यादि दर्शाथी विना गवेषणा इत-  
नार अज्ञात रहकर-स्वजात्यादि प्रकट कियेविना  
गवेषणा करने वाला. ( one ) wandering  
about in search of alms incogni-  
to. श्लो० ३८,—पिंड पुं० ( -पिण्ड )  
अज्ञात कुल की शिक्षा; अंतर्ग्रान्त शिक्षा.  
अज्ञात कुल की शिक्षा, अतर्ग्रान्त शिक्षा, alms  
from an unknown family, " अ-  
रण्यायपिंडेण हियालएज्जा, एणो पूययं तवसा  
आवहेज्जा " सूत्र० १, ७, २७,—सील. त्रि०  
( -शील ) जेने स्वभाव पंडितो पणुं न उणी-  
अणुं शिके तेणे. जिसका स्वभाव पंडित  
भी न जान सके एसे स्वभाव वाला.  
( one ) of a temperament

unknown even by learned men. ( २ ) जेणे शीत-अह्वयर्थ अर्गीकार नही करुं जेणे। जिसने ब्रह्मचर्य अर्गीकार नहीं किया वह. ( one ) devoid of strict observance of chastity or continence “ ताण अरणायसीलायं ( नारीणं ) ” तद्दु०

**अरणायया स्त्री० ( अज्ञातता )** अज्ञातपण; यश कीर्तिनी वांछणे तपस्या वगैरेनी प्रकाश न करुंवे। ते. अज्ञातपण; यशःवार्ति की वाछा से तपस्या वगैरह का प्रकाश न करना Remaining unknown. not disclosing one's penance etc out of a desire for fame. सम० ३२,

**अरणारंभणिविच्छि स्त्री० ( अन्यासभानिवृत्ति )** भेती आदि अरंभने त्याग खेती आदि आरंभ का त्याग. Giving up the pursuit of agriculture etc which involves killing “अरणारंभणिविच्छि अण्यणाहिदृण चैव” पंचा० ७, ३३;

**अरिण्याउत्त पुं० ( अन्निकापुत्र )** जयसिंह नामे त्रिपुत्रनी पुत्री अन्निकाने देवदत्तथी यथेक्ष पुत्र, के जेणे तरुणावस्थाभा जयसिंह आचार्यपासे दीक्षा लीधी अने थोडा वयनमां आचार्यपद भेगव्युं, वृद्धावस्थाभा ओडकेडाणे स्थिरवास हता दुःख पडवथी शिष्येने भीजे मोडली आ.प्या ओड पुष्पचूला साध्वी तेगने आहार, पाणी लावी आपता ते साध्वीने केवळज्ञान उपज्युं तो पणु वेयावच्य करता, ज्यारे आचार्यने अयस् पडी त्यारे तेनी सेवा अटकारी आ आचार्यने गंगानदीनावाथी उतरता नाविकेथे नदीमां नाभी दीधा, त्या तेमने केवळज्ञान उपज्यानु डडे-व गां अणु छे. जयसिंह नामक वणिक पुत्र की पुत्री अन्निका का देवदत्तद्वारा उत्तरक पुत्र, जिन्होंने तरुणावस्था में जयसिंह आचार्य

के पास दीक्षा ली थी और थोड़े समय में आचार्यपद प्राप्त किया फिर वृद्धावस्था में एक स्थान पर स्थिरतापूर्वक निवास करने लगे वहाँ दुष्काल पडने से उन्होंने अपने शिष्यों को दूसरे स्थान पर भेज दिया. एक पुष्प-चूला नामक साध्वी उनके लिये आहारादि लाती थी उस साध्वी को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ परंतु तो भी वह साधु की वैश्यावृत्त्य करती रही. जब आचार्य को यह मालूम हुआ तब आचार्य ने उसे रोक दिया. इन आचार्य को नावद्वारा गंगा नदी पार करते समय नाविकों ने नदी में फेंक दिया था. कहा जाता है कि, वहा उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ. The son of Devadatta by Annikā, the daughter of a merchant named Jayasimha He, in his youth, took Diksā from the preceptor Jayasimha and himself soon became a preceptor. In his old age he was living permanently at one place. Owing to famine he sent his disciples to another place One female ascetic named Puspachūlā used to bring food and water for him. She attained to perfect knowledge yet she used to serve the preceptor; when the latter came to know this he stopped her service. While this preceptor was crossing the Gāngā river in a boat he was thrown into the water by the sailors, where, it is said he obtained perfect knowledge. संथा०

**अरण्यारण्य.** त्रि० ( अन्योन्य ) लुभ्ये “ अरण्य-  
मरण्य ” शब्द देखो “ अरण्यमरण्य ” शब्द  
Vide “ अरण्यमरण्य ”. कप्प० ३, ४६;  
**अरण्यारण्य** त्रि० ( अनून-अन्यून ) न्यूनतायी  
रहित; पूर्ण. न्यूनता से रहित; पूर्ण. Com-  
plete; perfect, not wanting. नाया०  
८;  
**अरण्येस्वरा** न० ( अन्वेषण ) तपास करी लेवुं  
ते. गहरी जांच करना. Act of search-  
ing or looking minutely into  
पंचा० १३, २५;  
**अरण्येसि.** त्रि० ( अन्वेषिन् ) गवेषणा करनार;  
भागली करनार गवेषणा करने वाला; खोज  
करने वाला, प्रार्थी (One) who searches  
after; one who solicits. “ जे य  
बंधपमुखसमझेसी कुसले पुण नो बद्धे नो मुक्के ”  
आया० नि० १, १, १, ६६; आया० १, २,  
६, १०२;  
**अरण्योरण्य.** त्रि० ( अन्योन्य ) लुभ्ये “ अरण्य-  
मरण्य ” शब्द देखो “ अरण्यमरण्य ” शब्द  
Vide “ अरण्यमरण्य ”. विशे० ६१८;  
पन्न० २; जं० प० ७, १४१;—**अंतरिश्च**  
त्रि० ( अन्तरित ) अेकधीनने आंतरे रडेले.  
एक दूसरे से अन्तर पर रहा हुआ situat-  
ed at alternate intervals of  
each other पंचा० ३, १६;—**अनुगत**  
त्रि० ( अनुगत ) अन्योन्य-अेकधीनने  
अनुसरने रडेले एक दूसरे का अनुसरण  
कर रहा हुआ. situated in alternate  
succession. पंचा १८, ४५, —**गमण.**  
त्रि० ( गमन ) परस्पर गमन करवा योग्य  
परस्पर गमन करने योग्य. fitted for  
mutual intercourse. “ अरण्यो-  
रण्यगमणं च होज्ज कम्मं ” परह० २, २;  
—**जणिय** त्रि० ( जनित ) परस्पर करेले;  
रहाभरहाभे करेले परस्पर किया हुआ.

done mutually. “अरण्योरण्यजणियं च  
होज्ज हासं” परह० २, २;—**पग्गहियत्त.**  
न० ( प्रगृहीतत्व ) वाक्य वाक्यनी अने पद  
पदनी परस्पर सापेक्षता; परस्पर सापेक्ष  
वाक्य भोलवां ते, सत्यवचनना उप अतिशय-  
भाने १७ भे. वाक्य वाक्य की और पद  
पद की परस्पर सापेक्षता; परस्पर सापेक्ष  
वाक्य का बोलना; सत्यवचन के ३५ अतिशयों  
में से १७वां अतिशय. interdependence  
of sentences or words uttered;  
utterance of inter-related  
sentences; the seventeenth of  
the thirty-five Atisayas of  
truthful speech. सम० ३५, राय०  
—**समणुवद्ध** त्रि० ( समनुवद्ध ) परस्पर  
अंधायेले-लेअयेले. परस्पर अंधा हुआ-  
जुड़ा हुआ inter-linked. “ अरण्योरण्य  
समणुवद्धं णिच्छयतो भाणियविसयंतु ” पंचा०  
६, २७,

**अरण्य.** न० ( अह-अहन् ) दिवस. दिन.  
A day. “ पुण्वावरण्हकालसमयांसि ”  
उवा० ६, १६४;

\***अरण्य** पुं० ( आश्रव-अभिविधिना श्रौति  
श्रवति कर्म येभ्यस्ते आश्रवाः ) पापु ६१;  
कर्म आववाने मार्ग, कर्मअंध लेतु. पाप का  
द्वार, कर्म आने का मार्ग; कर्मबध का हेतु.  
An inlet for the influx of Ka-  
rma; cause of Karmic bondage.  
परह० १, १, ओव० २०, —**कर.** पुं०  
( कर ) आश्रव-कर्मग्रहण करनार, नया  
कर्म आववाने. आश्रव-कर्मग्रहण करने वाला;  
नवीन कर्म बाधने वाला. one who in-  
curs fresh Karmas ठा० ७; ओव०  
—**भावणा.** स्त्री० ( भावना ) आश्रवना  
अनिष्ट इलतुं थितवन करवु ते; आरभावना-  
भानी सातमी भावना. आश्रव के अनिष्ट फल



का चितवन करना; बारह भावनाओं में से सातवीं भावना meditation upon the evils of Karmic inflow; the seventh of the twelve Bhāvanās. प्रव० ५८०;

अण्डर्यत. व० कृ०त्रि० (अभत्) भोजन करते भोजन करता हुआ. Taking food, eating तंडु० श्रव०

✓ अण्डहा. धा० I (आ+श्रु) आश्रव-उर्भयन्ध थवे ते, उर्भनी आवड थवी ते आश्रव होना, कर्म का आना. Inflow of Karmic matter into the soul.

अण्डहाति. श्रव० ३८,

अण्डहाणग न० (अस्नानक) स्नान न करने ते. स्नान न करना. Not bathing भग० १, १, श्रव०

अण्डहाणय. त्रि० (अस्नानक) स्नानरहित स्नान से रहित. Bathless भग० १, ६,

अतक्रेमाण व० कृ०त्रि० (अतर्कयत्) कल्पना न करते. कल्पना न करता हुआ Not thinking about; not imagining "परस्स लाभं अणासाणमाणे अतक्रेमाणे अपीहेमाणे" उक्त० २६, ३३;

अतत्थ त्रि० (अत्रस्त) त्रास न पामेक्ष. त्रास नहीं पाया हुआ. Not terrified, not frightened. "एवं बुत्ते समाणे अभीण् अतत्थे अणुविग्गे" उवा० २, ६६, नाया० ८, ६,

अतर पु० (अतर-न तरितुं शक्यते इत्यतरः) रेनाडर; सागर, समुद्र. रत्नाकर; समुद्र The ocean प्रव० ४०१, (२) त्रि० दुस्तर; तरवाने अशक्य दुस्तर, जिसे पार करना अशक्य हो वह insurmountable "जे तरंति अतरं वणिया वा" उक्त० ८, ६;

अतरंत. त्रि० (अतरत्) रोगी, अक्षान.

रोगी; उदास. Diseased, sickly; invalid. पंचा० ५, ४१; (२) अशक्य; असहिष्णु अशक्य; सहनशीलता से रहित. incapable of endurance. सु० च० २, ५०४,

अतरण. त्रि० (अतरण-ग्लान) दुर्बल; अक्षान. दुर्बल, कमजोर; ग्लानियुक्त Feeble; sickly, lethargic. श्रव० नि० १४८,

अतव. न० (अतपस्) तपने अभाव तप का अभाव Absence of penance. "इसा अमरिस अतवो अविज्जमाया अहिरियाय" उक्त० ३४, २३;

अतवस्सि. त्रि० (अतपस्विन्) तपस्वी नहीं; तपस्वान करने न. तप न करने वाला (One) not practising penance. दसा० ६, २३, सम० ३०;

अतसी स्त्री० (अतसी) वनस्पतिविशेष; अलसीने छोड-आड अलसी का पौधा. A kind of vegetation; a linseed plant पञ्च० १;

अतह न० (अतथ-अतथ्य) असत्य, मिथ्या; असद्भूत; ऋतुं झूठ, मिथ्या, असद्भूत. A falsehood, a lie. "अणवज्जमतहं तेसिं, ण ते सवुद्धचारिणो" सूय० १, १, २, २६, आया० १, ६, ३, १६१; १, ६, २, १८३;

अतहकार पुं० (अतथाकार) गुरुके शिष्यने इंधि आज्ञा करता शिष्ये 'तेमळ करीश' अथ शब्दने प्रयोग न करेवे ते गुरु गिष्य को कुछ आज्ञा दे उस समय शिष्य का 'ऐसा ही करुगा' ऐना न कहना Non-utterance of the words "I shall do so" on the part of a disciple in response to an order given by a preceptor. पंचा० १०, १७;

अतहृणाण. त्रि० ( अतथाज्ञान-न विद्यते यथावस्तु तथाज्ञानं यस्य तत्तथा ) अयथार्थ ज्ञान; अज्ञानी अयथार्थ जानने वाला; अज्ञानी Ignorant; possessed of false knowledge ( २ ) न० अयथार्थ ज्ञान; अनेकान्तने अनेकान्तपक्षे ज्ञान्युं ते अयथार्थ ज्ञान, अनेकान्त को एकान्तरूप से जानना incorrect knowledge. टा० १०, ( ३ ) त्रि० प्रश्नोत्तरने अशक्य न ज्ञान्युं पृ० ७३. प्रश्नोत्तर को ठीक ठीक न जानने वाला पृच्छक an inquirer without a clear knowledge of questions and answers. भग० ६, ८;

अताण त्रि० ( अत्राण ) त्राण-शरणुद्धित शरण रहित. Without protection. परह० १, १;

अतार. त्रि० ( अतार ) तरयाने अशक्य; न तरी शक्य तेदुं विशाल. दुस्तर, जिसका तैरना अशक्य हो वह. Insurmountable; too vast to cross " अत्याहमतारम-पोरिसिअं सीओदगाम्मि अप्पाण सुयंति " नाया० १४; भग० ७, १;

अतारग. पुं० ( अतारक ) तरी न शक्य तेदुं; अगाध पाणी वगेरे जिसका तैरना असंभव हो वह, अगाध जल आदि Impossible to cross; e g. unfathomable water etc नाया० ६,

अतारिम. त्रि० ( अतारिम ) मुश्किली तरी शक्य तेदुं, दुःप्रेक्षरी तरया योग्य. कठिनता से तैरा जा सके वह Difficult to swim across. " एते संगं मणुस्साणं, पाताला व अतारिमा ,, सूय० १, ३, २, १२;

अतारिस त्रि० ( अतादृश ) तेना ज्ञेयुं नडि; तेना सरभुं नडि; तेथी विदक्ष्यु. उसके समान नहीं; उससे विलक्षण. Dissimilar;

of a different nature. " अतारिसे सुयी ओहंतरे " आया० १, ६, १, १८०;

अतालिस. त्रि० ( अतादृश ) तेना प्रकारनु नडि; तेना ज्ञेयुं नडि. उस प्रकार का नहीं; उसके समान नहीं. Of a different nature; dissimilar. " अतालिसे से कुणई पओसं " उक्त० ३२, २६;

अतावक्खेत्त. न० ( अतापक्षेत्र ) तापनुं क्षेत्र नडि ते; रात्रि ताप का अक्षेत्र; रात्रि. That which is not a province of sunlight; night प्रव० ८२७;

अति. अ० ( अति ) धलुं; अतिशय. ज्यादा; बहुत. Very much; excessive. नाया० १;

अतिउट्ट. त्रि० ( अतिवृत्त-अतिक्रान्तो वृत्ता-दतिवृत्तः ) पैताना कृत्यने न ज्ञान्युं. अपने कृत्य को न जानने वाला. Ignorant of the nature of one's own actions " जंसि गुहाए जलणे तिउट्टे, अविजाणओ डज्झइ सुत्तपओ " सूय० १, ५, १, १२;

अतिविषय. त्रि. ( \* अतिन्तितन ) निराशानां कारणो ढोवा अतां कथवाणु राभी जेम तेम न ज्ञान्युं साधु निराशा के कारण होते हुए भी कुछ का कुछ न बोलने वाला साधु. ( A Sādhu ) not losing control of speech in spite of reasons for disappointment. " अतिविषये अचवले, अप्पभासी मियासणे " दस० ८, २६, (२) ४६ वयन सांभलीने पणु शांति राभी अप्पगत न करनार. कदु वचन सुनकर भी शान्ति रखकर बड़बड़ाहट न करने वाला. keeping quiet and not losing control over speech in spite of bitter words. " जियवचणए अतिविषये " दस० ६, ५, ५;

**अभिकार्य.** त्रि० ( अभिकार्य ) लु० 'अभिकार्य'  
शब्द. देखो 'अभिकार्य' शब्द. Vide 'अभिकार्य'.  
भग० १५, १;

**अतिक्लिष्ट.** त्रि० ( अतिक्लिष्ट ) अत्यंत  
भलीन; उन्मत्त. अत्यन्त मलीन. क्लेशयुक्त  
Highly perturbed or agitated.  
क० प० ६, २०;

**अतिक्रान्त.** त्रि० ( अतिक्रान्त ) अतीत-भूत  
क्षणों में थये. अतीत-भूतकाल में हो चुका  
हुआ Past, gone by. " जे य बुद्धा  
अतिक्रान्ता, जे य बुद्धा अणागया " सू० १,  
११, ३६;

**अतिक्रम.** पुं० ( अतिक्रम ) लु० 'अतिक्रम'  
शब्द. देखो " अतिक्रम " शब्द Vide  
" अतिक्रम ". भग० ७, ६, सू० १, ८, २०;

**अतिवृद्ध.** त्रि० ( अतिवृद्ध ) तीक्ष्ण नहि ते.  
तिक्ष्ण-सम्भूत नहि ते. जो तीक्ष्ण न हो वह,  
कठोर न हो वह. Not sharp; not  
severe. पंचा० १६, ६;—तुंड त्रि०  
( -सुरा ) जेनी आंख तीक्ष्ण-सम्भूत-उद्दिन  
नथी तेवा पक्षी. जिसकी चोंच कठिन या  
तीक्ष्ण न हो ऐसा पक्षी a bird without  
sharp or hard beak पंचा० १६, ६,

**अतिगच्छमाण.** व० कृ० त्रि० ( अतिगच्छत् )  
अतिक्रमण करता हुआ Transgressing,  
violating निसी० ६, ८; नाया० १,

**अतिगमण.** न० ( अतिगमन ) लु० 'अतिगमण'  
शब्द. देखो 'अतिगमण' शब्द.  
Vide " अतिगमण ". नाया० २,

**अतिगत.** त्रि० ( अतिगत ) प्राप्त थये. प्राप्त  
हुआ. Obtained; got. नाया० १;

**अतिचार.** पुं० ( अतिचार ) लु० 'अतिचार'  
शब्द. देखो " अतिचार " शब्द Vide  
" अतिचार ". परह० २, १; आव० १, १;

**अतिच्छिन्न.** त्रि० ( \*अतिक्रान्त ) लु० 'अतिच्छिन्न'

'अतिच्छिन्न' शब्द. देखो 'अतिच्छिन्न' शब्द.  
Vide " अतिच्छिन्न ". श्लो० नि० ४१४;  
उत्त० ७, २१;

**अतिताणगिह.** न० ( अतिताणगृह ) नगरनां  
प्रसिद्ध उंचा घर, जे नगरमां पेसतां अतिउंच  
आवे नगर का प्रसिद्ध ऊंचा घर, जोकि,  
नगर में प्रविष्ट होते ही एक दम दिख जाय  
A lofty & conspicuous building  
in a town. टा० २, ४;

**अतितिक्ष्ण.** त्रि० ( अतितिक्ष्ण ) अतितिक्ष्ण;  
अत्यंत तीक्ष्ण. बहुत ज्यादा तीक्ष्ण. Very  
pungent or sharp. भग० १६, ४;

**अतितेजा.** त्रि० ( \* अतितेजा ) अतितेजा  
रात्रिनु नाम. चतुर्दशी का रात्रि का नाम,  
The night of the fourteenth  
day of a month, so named जं०  
प० सू० प० १०;

**अतित्त.** त्रि० ( अतित्त ) असंतोषी; अतृप्ति;  
संतोष परमेव नहि. तृप्ति थयेव नहि संतोष  
न पाया हुआ, असन्तुष्ट, तृप्ति न हुआ हो वह.  
Unsatisfied "फासे अतित्त य परिग्राहे य"  
उत्त० ३२, ८१, " अतित्त कामाण्य " परह०  
१, ४,—लाभ. पुं० ( -लाभ ) संतोषने  
लाभ नहि; असंतोष; अतृप्ति असन्तोष,  
अतृप्ति, संतोष की प्राप्ति न होना lack of  
contentment or satisfaction.  
"संभोगकाले य अतित्तलाभे" उत्त० ३२, २८;

**अतित्ति.** स्त्री० ( अतृप्ति ) असंतोष; अतृप्ति.  
असंतोष, तृप्ति का अभाव. Want of con-  
tentment or satisfaction. उत्त०  
३२, ८०,—लाभ पुं० ( -लाभ ) संतोष-  
नी अप्राप्ति, असंतोषने लाभ संतोष की  
प्राप्ति न होना, असंतोष का लाभ-प्राप्ति.  
absence of satisfaction or con-  
tentment. " संभोगकाले य अतित्ति  
लाभे " उत्त० ३२, ८०;

अतिथ न० ( अतीर्थ ) तीर्थकरे तीर्थ स्थाप्या पड़ेलानेो समय अने तीर्थव्यवच्छेद थया पछीनेो समय; तीर्थ-संघस्थापनानेो अलाव तीर्थकर के द्वारा तीर्थस्थापित होने के पहिले का और तीर्थविच्छेद के पीछे का समय; तीर्थ-संघस्थापना का अभाव Time preceding the establishment of Tirthas or orders of community by Tirthankara & also the time succeeding their break-down, भग० २५, ६, ७; नाया० १; पन्न० १;—सिद्ध. पुं० (-सिद्ध) तीर्थकरे संघस्थापना इयां पड़ेलां अथवा तीर्थ व्यवच्छेद थया पछी सिद्ध थाय ते, तीर्थने अलावे सिद्ध थाय ते, जेम मरुदेवी माता वगेरे तीर्थकर के संघ स्थापन करने के पहिले या तीर्थविच्छेद होने के बाद सिद्ध होना, तीर्थ के अभाव में सिद्ध होना, जैसे कि, मरुदेवी आदि. one who became Siddha when the orders of community were not founded or had suffered a break-down, e. g. Marudevī etc पन्न० १;

अतिथगर. पुं० ( अतीर्थकर ) तीर्थकर नहि ते; तीर्थकरनी पदवी न पाभनार डेवणी; गौतमस्वामी वगेरे. जो तीर्थकर न हो वह; तीर्थकर की पदवी न पाने वाला केवली; गौतम स्वामी वगैरह. One not entitled to be called Tirthankara e. g; a Kevalī; Gautamasvāmī etc. पन्न० १;—सिद्ध पुं०(-सिद्ध) तीर्थकर पद पाभ्या विना सिद्ध थयेत; गौतम स्वामी आदि. तीर्थकर की पदवी पाये विना जो सिद्ध हुए हों वे; गौतमस्वामी आदि. one who has attained salvation without being Tirthankara; e. g. Gauta-

masvāmī etc. पन्न० १; नंदी० अतिथयर पुं० ( अतीर्थकर ) तीर्थकर नहि पणु तीर्थकर जेवा डेवणी वगेरे. तीर्थकर नही किन्तु उनके जैसे केवली आदि A person who is not a Tirthankara but who is like one; e. g. a Kevalī. प्रव० ४७६;

अतिदुक्ख. न०(अतिदुःख) लुओ "अइदुक्ख" शब्द देखो 'अइदुक्ख' शब्द Vide "अइदुक्ख". "पिहिया व सक्खामो अति दुक्खोहिमगसंफासा" आया० १, ६, २, १४;—धम्म. पुं० (-धर्म) अत्यंत दुःख आपवाने जेनेो धर्म-स्वभाव छे ते; ज्यां निमिषे मात्र पणु विश्रांति नथी तेवां नरकादि स्थान. अत्यन्त दुःख देने का जिसका स्वभाव है वह, जहाँ निमिष-क्षणमात्र भी विश्रान्ति नहीं है ऐसे नरकादि स्थान. that, the nature of which is to give extreme pain (hell etc., in which there is acute and incessant misery). "सया य कलुयां पुण धम्मठायां, गाढोवणीयं अतिदुक्खधम्मं" सू० १, ५, १, १२;

अतिधुत्त. त्रि० ( अतिधूत-अतीव धूतमष्ट प्रकारं कर्म यस्य सोऽतिधूतः ) भारे डर्मी, अडुल डर्मी कर्म के बहुत भार से युक्त बहुत कर्मा. Heavily loaded with Karmas. "अभिकंतकूरकम्मो खलु अयं पुरिसे अतिधुत्ते" सूय० २, २, ३२,

अतिपंडुकंवल्ला स्त्री० ( अतिपाण्डुकम्बला ) लुओ "अइपंडुकंवल्लासिला" शब्द. देखो 'अइपंडुकंवल्लासिला' शब्द. Vide 'अइपंडुकंवल्लासिला.' ठा० २, ३;

अतिपास. पुं० ( अतिपार्श्व ) लुओ "अइपास" शब्द. देखो 'अइपास' शब्द. Vide 'अइपास'. सम० प० २४०;

अतिष्पणं अ० (अतिप्रगे) परेऽऽऽऽ प्रातःकाल,  
भोर; विलकुल सुबह In the early  
dawn ओष० नि० ४१४,

अतिष्पंत व० कृ० त्रि० (अतृप्यत्) अधरागु,  
तृप्ति न पाभुं तृप्ति न पाता हुआ Insa-  
tiate, unquenching “त चिय अइष्प-  
माणं, भुंजइ अ वा अतिष्पतो ” पि० नि०  
६४७,

अतिष्पणया स्त्री० ( अतेपनता-अतेपन )  
पसीना वणे, लाण अरे, आंसु भरे तेवा रुदनना  
कारणो दूर करवा ते, आंसु अरे तेवु रुदन न  
करवु ते रुदन के ऐसे कारणों का दूर करना  
जिनसे पसीना निकले, लार टपके और आसू  
गिरे, ऐसे रुदन का न करना जिससे आसू गिरे  
Removal of the causes of bitter  
weeping accompanied with  
perspiration, and dropping  
of saliva and tears, not to weep  
with tears dropping भग० ७, ६,

अतिष्पयंत व० कृ० त्रि० ( अतृप्यत् ) लुओ  
“अतिष्पंत ” शब्द देखो “ अतिष्पंत ” शब्द  
Vide “ अतिष्पत ” दसा० ६, २७,

अतिष्पसंग पुं० ( अतिप्रसङ्ग ) लुओ “अइ-  
ष्पसंग ” शब्द देखो “ अइष्पसंग ” शब्द  
Vide “ अइष्पसंग ” पचा० १०, २१,

अतिबल त्रि० ( अतिबल ) अतिशयवान्  
बहुत बलवान्. Very powerful सम०  
प० २३५,

अतिमंच पुं० ( अतिमञ्ज ) लुओ “अइमंच ”  
शब्द देखो “ अइमंच ” शब्द Vide  
“ अइमंच ” जीवा० ३,

अतिमहिच्छ त्रि० ( अतिमहेच्छ ) धणो  
असतोपी, भोटी ह्छावाणो बहुत असन्तुष्ट,  
बहुत बड़ी इच्छा वाला Extremely  
ambitious; highly discontented.  
परह० १, ३,

अतिमुच्छिद्य त्रि० ( अतिमृच्छित ) लुओ  
“ अइमुच्छिद्य ” शब्द देखो “ अइमुच्छिद्य ”  
शब्द Vide “ अइमुच्छिद्य ” परह० १, ३,

अतियर धा० I ( अति+चर् ) उदधन  
करवु, अतिक्रमणु करवु उल्लंघन करना,  
अतिक्रमण करना To transgress, to  
violate

अतियरंति सूय० २, ७, ६;

अतिराउल न० ( अतिराकुल-अतिशयोके  
समृद्धिरस्ति यत्र तच्च तत् कुलञ्चेति ) अनि-  
समृद्धिवाणु दुग वहुत बड़ी समृद्धि वाला  
कुल A very opulent family  
पचा० ११,

अतिरिक्त त्रि० ( अतिरिक्त ) लुओ “अइरिक्त ”  
शब्द देखो “ अइरिक्त ” शब्द Vide  
“ अइरिक्त ” भग० २५, ३, सूय० २, ६, १५;  
—संज्जासणिअ पुं० स्त्री० (—शय्याम्-  
निक ) मर्यादाथी अघिक् शया, पाट पाटवा  
वगेरे शय्यनार, असमाधिनु योधु स्थानक  
सेवनार साधु मर्यादा से अघिक शय्या, पाट  
आदि रखने वाला, असमाधि का चौथा स्थानक  
सेवन करने वाला साधु ( one ) who  
keeps bedding wooden seats  
etc in excess of the prescribed  
limit सम० २०,

अतिरेग त्रि० ( अतिरेक ) लुओ “अइरेग ”  
शब्द देखो “अइरेग” शब्द Vide “अइरेग ”  
भग० २४, १,

अतिह्लिय त्रि० ( अतैल ) तेलना अश यिनातु  
तेल के अंश से रहित Free from oil.  
तडु०

अतिचञ्चंत व० कृ० त्रि० ( अतिचञ्जन् ) अनिशय  
रतो-गनि करतो अतिशन गमन करता हुआ-  
गति करता हुआ Walking moving  
too far जीवा० ३,

✓ अतिवच्य. धा० I ( अति+वच् ) उल्लघन  
 કરવું; અતિક્રમણ કરવું उल्लघन करना;  
 अतिक्रमण करना To transgress; to  
 violate.

अतिवच्यति परह० १, १;

अतिवाति. त्रि० ( अतिपातिन् ) लु०ओ 'अइवाइ'  
 शब्द. देखो " अइवाइ " शब्द. Vide  
 " अइनाइ " सू० १, ५, १, ५;

अतिविज्ज त्रि० ( अतिविद्य ) लु०ओ " अइ-  
 विज्ज " शब्द. देखो " अइविज्ज " शब्द. Vide  
 " अइविज्ज. " " तम्हातिविज्जं परमंति ण्त्वा "

आया० १, ३, २, १११; १, ४, ३, १६६;

अतिवेलं अ० ( अतिवेलम् ) लु०ओ " अइवेलं "  
 शब्द. देखो " अइवेलं " शब्द. Vide  
 " अइवेलं. " सू० १, ६, २६; १, १४,  
 २५;

अतिसंक्लेश पुं० ( अतिसंक्लेश ) अत्यंत  
 चित्तनी मदीनता चित्त का वड़ा भारी मैलापन  
 Extreme impurity or turbidity  
 of the mind. पंचा० १५, ६,

अतिसेस त्रि० ( अतिशेष ) लु०ओ " अइसेस "  
 शब्द. देखो " अइसेस " शब्द. Vide " अइ-  
 सेस. " ठा० ५, २; ओव० १०, भग० ११, ६,

अतिहि. पुं० ( अतिथि ) अत्यागत; लो०न  
 वभते आवेदो प्राडुलो अम्यागत, भोजन  
 के समय आया हुआ पाहुना; मिहमान. A  
 guest; a mendicant who comes  
 at dinner time ( २ ) जेते आवरानी  
 तिथि मुकरर नथी जेवा साधु जिसके आने  
 की तिथि नियत नहीं है ऐसा साधु. a Sādhu  
 whose date of arrival is not  
 fixed आया० १, ८, ४, ११; अणु० ३,  
 १, आड० ५, ठा० ५, ३; नाया० १२;  
 —पूया स्त्री० ( -पूजा ) अतिथिनी पूजन-  
 सत्कार-परिष्ठागत-यादरी-परदास अतिथि  
 का सत्कार. hospitality निर० ३, २,

भग० ११, ६,—संविभाग पुं० ( संविभाग )  
 आवडनां पार व्रत पेडी पारमु व्रत; नभती  
 वभते पोताना लो०नमांथी अमुक लाग  
 अतिथिने आपवानी लावना लाववी ते. आवक  
 के वारह व्रतों में से वारहवाँ व्रत, भोजन  
 करते समय भोजन में से अमुक भाग अतिथि  
 को देने की भावना करना the last of  
 the twelve vows of a Jaina  
 layman, the earnest wish at the  
 time of dinner, that a portion  
 of it might be given to a guest  
 भग० ७, २, आड० ५,

अतीत पुं० ( अतीत ) भूतकाल भूतकाल  
 The past. भग० १२, ४; नाया० ७;  
 विशेष० ४१,—अद्धा स्त्री० ( -अद्धा ) अन-  
 ता पुद्गलपरावर्तनप्रमाणे अतीत-भूतकाल  
 अनन्त पुद्गलपरावर्तन के अनुसार अतीतकाल  
 past time viewed from the  
 point of changes in infinite  
 particles of matter, i e time  
 connected with past changes  
 अणु० ११५,—णिमित्त न० ( -निमित्त )  
 अतीत-भूतकालनु निमित्त अतीत-भूतकाल  
 का निमित्त instrumental cause of  
 past time निसी० १३, १५,

अतीय. पुं० ( अतीत ) लु०ओ " अतीत " शब्द  
 देखो " अतीत " शब्द. Vide " अतीत "  
 अणु० १४७, नाया० १, भग० १, ६,  
 ( २ ) त्रि० भूतकालनु भूतकाल का. of the  
 past. सू० १, २, २, ५;—अद्धा. स्त्री०  
 ( -अद्धा ) अतीतकाल; भूतकाल. भूतकाल.  
 past time, the past. प्रव० १०५२;  
 —वचण न० ( -वचन ) अतीतवचन-भूत  
 कालवाचक पद-जेम के कर्तुं, पाधु, पीधुं  
 वगेरे भूतकालवाचक शब्द, जैसे कि, खाया,  
 पिया, किया आदि. a word inflected

in the past tense; e g did etc  
आया० २, ४, १, १३२;

**अतीरंगम** त्रि० ( अतीरङ्गम ) तीरे-डांडे *or* पाने असमर्थ, सँसारने डांडे नहि पहुँचने पर संसार के तीर पर-किनारे पर पहुँचने में असमर्थ Unable to reach the opposite shore, e g of worldly existence आया० १, २, ३, ६०,

**अतीव** अ० ( अतीव ) अति, धृष्ट, अतिशय बहुत, ज्यादा, अतिशय Excessively भग० २, १, नाया० ११;

**अतुच्छ** त्रि० ( अतुच्छ ) तुच्छ नहि ते, उदार, श्रेष्ठ, प्रधान जो तुच्छ न हो वह, उदार, श्रेष्ठ, मुख्य Not mean or insignificant, high पंचा० ७, २४,—भाव पु० (—भाव ) उच्च भाव, प्रधान-श्रेष्ठ भाव, उदारता उच्च भाव, श्रेष्ठ भाव, उदारता high or liberal feeling, nobility, excellence पंचा० ७, २४,

**अतुष्टि** स्त्री० ( अतुष्टि ) असंतोष, अतृप्ति असन्तोष, तृप्ति कान होना. Dissatisfaction, discontent “ अतुष्टिदोषेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्त ” उक्त० ३२, २६,

**अतुरिय** त्रि० ( अत्वरित ) उतावगुं नहि, धीमु जो जल्दी वाला न हो वह, ठंडा, धीरे धीरे काम करने वाला Slow, not fast “ उद्ध धिर अतुरियं, पुण्वं चव ” उक्त० २६, २४, नाया० १, भग० २, ५; ७, १०, कप्प० १, ५,—भासि त्रि० (—भापिन् ) शांतिथी भोलनार, उतावणथी नहि भोलनार शांति से बोलने वाला, बोलने में शीघ्रता न करने वाला speaking without haste “अतुरियभासि विवेग भासि समियाणु ” आया० २, ४, १, १४०,

**अतुल** त्रि० ( अतुल ) नेनी तुलना न करी शक्य अथुं, अतुल्य, असाधारण अनुपम; जिसकी तुलना न की जा सके वह Incomparable, extraordinary सम० ३०; पणह० १, १;

**अतो** अ० ( अतस् ) अथी, अहिंथी, अनाथी. इससे, यहासे Hence, from the place, therefore “ अतोपरं तुमं जाणसि ” नाया० १६; दसा० २, ६, ६, १;

**अत्त** त्रि० ( आत्त-आ-अभिविधिना त्रायते दुं खात् सरद्धति सुखं चोत्पादयतीत्यात्त ) दुःख हरनार, सुख आपनार. दुःख हरने वाला, सुखप्रद ( One ) removing misery and giving happiness. “ येरह्मआणं भंते । किं अत्ता पोग्गला अणत्ता पोग्गला वा ” भग० १४, ६;

**अत्त** पु० ( आत्त-आसिहिं रागद्वेषमोहानामैकान्तिक आत्यन्तिकश्च क्षयः सा यस्यास्ति स आत्त ) यथार्थदर्शी, रागद्वेषादि सर्व दोषरहित, निर्दोषआगमना प्रणेता, वीतराग यथार्थदर्शी, रागद्वेषादि सब दोषों से रहित, निर्दोषआगम का प्रणेता, वीतराग One absolutely free from love, hatred etc, one with perfect vision of truth, an author of faultless scriptures, one devoid of passions सूय० १, ६, ३३,—पद्मेसि. त्रि० (—प्रज्ञान्वेपिन्-आप्तो रागादिविप्रमुक्तस्तस्य प्रज्ञा केवल ज्ञानारया तामन्वेष्टुं शीलं वेपां ते तथा ) सर्वजनी उदितनुं अन्वेषणुं करनार सर्वज की उक्तियों की खोज करने वाला. ( one ) who searches into ( i. e reflects upon ) the words or sayings of the omniscients “वीरा जे अत्तपन्नेमी ” सूय० १. ६. ३३,—मुद्धव.

पुं० (-मुख्य) आत्त पुरुषोभां मुख्य, दे-  
वणजानी. आत्त पुरुषो मे मुख्य; केवलज्ञानी.  
one chief among persons with  
perfect knowledge; a Kevali  
तंड०

अत्त त्रि० ( आत्त ) अहणु इरेव; स्वीकारेव  
ग्रहण क्रिया हुआ, स्वीकृत. Taken; acce-  
pted टा० २, ३; नाया० १, —परणह.  
पुं० (-प्रज्ञाहन्) पोतानी के परनी आत्त-  
अहणु इरेव अथवा आत्त-हितकर बुद्धिने  
हणुनार; आत्मसंधी प्रज्ञाने हणुनार-हरी-  
वनार; पाप श्रमणुं अेड लक्षणु अपनी या  
दूसरे की आत्त-ग्रहण की हुई या आत्त-हितकर  
बुद्धि को हनन करने वाला, आत्मसम्बन्धी  
प्रज्ञा को हनन करने वाला, पाप श्रमण का एक  
लक्षण. ( one ) destroying one's  
own or another's (आत्त)acquired,  
or ( आत्त ) wholesome inte-  
llect, ( one ) repudiating spir-  
itual wisdom; ( a mark of a  
sinful ascetic) "अहम्मे अत्तपरणहा"  
उत्त० १७, १८;

अत्त त्रि० ( आत्त ) पीडित, दुःखी, इंटाणी  
गपेव. पीडित; दुःखी, घबराया हुआ  
Afflicted, troubled. सूत्र० १, ३,  
१, ६; उत्त० ६, १०; ओव० २०, —गवे-  
सग्या. त्री० (-गवेपणता-गवेपणा) आर्त्त-  
दुःखी-गरीय भाणुसोनी गवेपणा इरवी ते,  
डोणु दुःखीछे? तेनु दुःख डेम दूर थाय? अेम  
शोध इरवी ते दुःखी मनुष्यों की खोज करना;  
दुःखी कौन है? उसका दुःख किन तरह दूर  
हो सकता है? इस प्रकार खोज करना. In-  
vestigation into the causes and  
cures of distress; finding out  
means and ways to remove  
their distress भग० २५, ७, —मड.

त्रि० (-मति-आत्त आर्त्तध्याने मतिर्येषां ते  
तथा) आर्त्तध्यानमा जेडअेड आर्त्तध्यान  
में लीन. engaged in painful  
meditation. आड०

अत्त पुं० ( आत्मन् ) श्रव, आत्मा; येतन  
पदार्थ जोव, आत्मा, चैतन्यपदार्थ. A soul,  
a living being विशे० ७५७, १३४३,  
आया० १, ६, ५, १६५, उत्त० २, १७,  
दस० ८, ३०, नाया० ५; १४, १६, भग०  
२, १, ३, १, ३; ६, १०; १२, २, १७, ४,  
पन्न० १५; ( २ ) पोते; जते; पंडे स्वयं,  
खुद one's self ओव० ४१; नवी०  
( ३ ) स्वभाव; प्रकृति. स्वभाव; प्रकृति  
nature अत्ताणं द्वि० ए० गच्छा० ४६;  
अत्तणो प० ए० गच्छा० १३;—आगम  
पु० (-आगम) तीर्थइरनी अपेक्षाये मू  
सूत्रपाठ; अत्तागम तीर्थकर की अपेक्षा से  
मूल सूत्रपाठ; आतागम the older or  
original Jaina Sūtra, the Attā-  
gama. भग० ५, ४;—उक्करिस पुं०  
(-उत्कर्ष) अलिमान; आत्मश्लाघा  
अभिमान, आत्मप्रशंसा pride; self-  
applause " तम्हा अत्तुकरिसो, वजेवजो  
जत्तिजणेणं " सूत्र० नि० १, १३, १२६;  
—उक्कोसिय पुं० (-उत्कर्षिक—आत्मो-  
त्कर्षोऽस्ति येषां ते आत्मोत्कर्षिकाः ) गर्विष्ठ  
वानप्रस्थ. गर्वयुक्त वानप्रस्थ a proud  
hermit ओव०—उवणीय. पुं० (-उपनी-  
त) दुराग्रह इरी पोतानो मत स्थापन  
इरवे ते, जेम श्रव हणुवा नहि ते अगअर  
पणु पापीओते तो हणुवाज जेडअे  
धत्यादि, पोताना मतमा होय, आवे तेवी  
रीते परमतनुं उत्थापन इरवु ते दुराग्रह  
पूर्वक अपने मत का स्थापन करना, जैसे जीव-  
हिसा करना नहीं परंतु पापी को तो मारना हीं



चाहिये इत्यादि; अपने मत को दोष लगे इस प्रकार दूसरे के मत की उत्थापना करना establishing one's own tenet by specious and perverse reasoning, refuting the opponent's doctrine by arguments damaging to one's own doctrine ठा० ४, ३,—उवमा स्त्री० (—उपमा) पोतानी उपमा, आत्मतुलना, पोतासाथेनी सरभामणी अपने आपकी उपमा; आत्म तुलना self-comparison सूय० १, ११, ३३,—कड त्रि० (—कृत) पोतानुं डरी स्वीकारेक, पोतानुं डरी राभेक अपना बनाकर स्वीकार किया हुआ, अपनाकर रखा हुआ accepted as one's own भग० १, ६, १७, ४,—कम्म न० (—कर्मन्) पोतानु दुश्चरित—दुष्कृत्य अपना दुश्चरित—दुष्कृत्य one's own wicked action “णिच्चुन्विग्गो जहातेणो, अत्तकम्मेहि दुम्महं” दस० ५, २, ३६, (२) नेनाथी आत्मा डमें डरी लेपाय तेयु डाय, आधा-डर्भी आहारदि ऐसा कार्य जिससे, आत्मा कर्मों से निप्त हो, आधाकर्मो आहार आदि action causing the inflow of Karma, accepting Adhākāmi food etc दसा० ६, ६,—गवेसअ त्रि० (—गवेषक) आत्मवितड—गवेषड, शोधड आत्मा की खोज करने वाला (one) meditating upon the nature of the soul दसा० ६, ३१, (२) (आत्मान चारित्रात्मान गवेपयतीति) आत्रिआत्मानो गवे-पड-शोधड चारित्रात्मा को शोध करने वाला (one) meditating upon the nature of the soul and right conduct “ तिगिच्छं नाभिनेदजा. सच्चि-क्खवेत्तगवेसणु ” उत्त० २, ३२,—गवेसि

त्रि० (—गवेपिन्) आत्मानो गवेपणु-शोध डरनार; आत्मार्थी. आत्मा की शोध करने वाला, आत्मार्थी (one) meditating or reflecting upon the nature of the soul, दस० ६, ५७,—गामि पुं० (—गामिन्) आत्माने प्राप्त डरवा भोक्षभार्गमा आलनार मुनि, मुमुक्षु आत्मा को प्राप्त करने के लिये मोक्षमार्ग में चलने वाला मुनि, मुमुक्षु a sage striving after final emancipation “ मुसं न वूया मुणी अत्तगामी” सूय० १, १०, २२;—छट्ट पु० (—पष्ट) सूयगडगसूत्रना पडेला अध्ययनना पडेला उद्देशानो पायभो अर्थाधिकार, डेलेभा पाय भूत अने छट्टा आ-त्मानु निरूपण छे सूयगडगसूत्र के पहिले अध्याय के पहिले उद्देश का पौचवौ अधिकार, जिसमें पंचभूत और छठे आत्मा का निरूपण है. the fifth subject of the first sub-division of the first chapter of Sūyagadānga dealing with the five elements and the soul “ अत्तछट्टो पुणो आहु, आया लोणे य सासणु” सूय० १, १, १, १५,—त्ताण न० (—त्राण) आत्मरक्षा, आत्मानु रक्षण. आत्मरक्षा, आत्मा का रक्षण protec- tion of the soul सूय० १, ११, ३२;—दुक्कड न० (—दुष्कृत) पोतानु दुष्कृत्य अपना दुष्कृत्य one's own evil action “ सपराइय णियच्छति, अत्तदुक्कड-कारिणो ” सूय० १, ६, ६,—दोस पु० (—दोष) पोतानो दोष-आभी अपना दोष; निजका त्रुटि. one's own fault मम० ३२. भग० २५ ७—दोपोपसंहार पु० (—दोषोपसंहार) पोताना दोषाने डर-डरवा-अटडाववा ते; उर योगभंडुआनो ओडवीशभो योगभंडु अपने दोषो न द

करना; ३२ योगसंग्रहों में से इकबोसवों योग-संग्रह removing one's own faults; the twenty-first of the thirty-two Yogasaṅgrahas. सम० ३२; —परणोसि पुं० (—प्रज्ञान्वेषिन्-आत्मनः प्रज्ञामन्वेष्टुं शीलं यस्य स तथा) आत्मज्ञान-नो शोधक; आत्महितनी गवेषणा इरनार ७५ आत्मज्ञान की शोध करने वाला, आत्महित की गवेषणा करने वाला जीव (one) seeking after the knowledge of the soul for one's spiritual evolution “ वीरा जे अत्तपरणोसां, धितिमंता जिहंदिया ” सूय० १, ६, ३३, —परहह पुं० (—प्रश्नहन्-आत्मनि प्रश्न आत्मप्रश्नस्तं हन्तीत्यात्मप्रश्नहा ) आत्मसंबंधी प्रश्नने ७५नार-७५वनार, पापश्रम-णुं अेक लक्षण आत्मसंबंधी प्रश्न का हनन करने वाला, पापश्रमण का एक लक्षण one who evades a question relating to the soul, a mark of Pāpaśramana “ अहस्मे अत्तपरहहा ” उक्त० १७, १२; —लब्धिय. पु० (—लब्धिक-आत्मन एव सत्का लब्धिर्भक्तादिलाभो वा यस्यासावात्मलब्धिकः ) पोतानी लब्धिवाणे आत्मलब्धि वाला, निज की लब्धि वाला. (one) possessed of one's own Labdhi or attainment पंचा० १२, ३५,—लाभ पुं० (—लाभ) स्वरूपनो लाभ स्वरूप का लाभ attainment of (one's own) real or essential form or nature. क० गं० २, २६;—संपगहिय त्रि० (—संग्रहीत) दरेक अर्थमा पोतानी उत्कृष्टता-श्रेष्ठता पतावनार, आत्मप्रशंसा इरनार. प्रत्येक कार्य में अपनी श्रेष्ठता बताने वाला; आत्मप्रशंसा करने वाला. given to self-praise in all matters. “न य भ-

वह अत्तसंपगहिय ” दस० ६, ४, १; —सम. त्रि० (—सम) आत्मतुल्य, पोता समान; आत्मवत्. आत्मतुल्य; अपने समान; आत्मवत्. like one's self; equal to oneself. “ अत्तसमे मन्नेज छप्पिकाये ” दस० १०, १, ५;—समाहित्र. पुं० (—समाधिक) स्वपक्षनी सिद्धि इरवाभाटे पणु मध्यस्थपणु रही परने दु प न उपज-वतु ते. स्वपक्ष की सिद्धि करने के लिए भी मध्यस्थभाव से रहकर दूसरे को दुख न उप-जाना. not defending one's own side for fear of giving pain to others. “ कुजा अत्तसमाहित्र ” सूय० १, ३, ३, १६;—समाहित्र-य. त्रि० (—समाहित) सदा स्वउपयोगमां जेअथेक; निर्विकल्पसमाधियुक्त. सदा आत्मोपयोग में लगा हुआ, निर्विकल्पसमाधियुक्त absorbed in Nirvikalpa meditation i. e. one in which there is no distinction between the knower and the known “ एवं अत्तसमाहित्र-अणिहे ” आया० १, ४, ३, १३५,—हिय. न० (—हित) आत्महित, आत्मानुं हित-श्रेय. आत्मा का हित कल्याण. well-being of the soul, one's own welfare. दस० ४,

अत्तग त्रि० ( आत्मग-आत्मनि गच्छतीत्या-त्मग ) आतरिक; आत्मिक. आन्तरिक, आत्मिक Inward, relating to the soul. “ चिच्चाण अत्तगं सोयं ” सूय० १, ६, ७; अत्तट्ट पुं० ( आत्मार्थ ) आत्मानो अर्थ-स्वर्ग, मोक्षादि. आत्मा का अर्थ-स्वर्ग, मोक्ष आदि. Final goal of the soul such as heaven, emancipation from births etc. “ इह कामनियट्टस्स, अत्तट्टे नावरज्जइ ” उक्त० ७, २६; ( २ ) पोतानी

मतलब; स्वार्थ अपना मतलब; स्वार्थ. self-interest. " अत्तद्वा गुरुओ लुद्धो, बहुपावं पकुच्चइ " दस० ५, २, ३२,

अत्तद्विय. त्रि० ( आत्मार्थिक-आत्मार्थे भव-मात्मार्थिकम् ) पोतानेभाटे; पोतानी जत-भाटे अपने लिये For one's own person " अत्तद्वियं सिद्धमिहेगपक्खं " उक्त० १२, ११, ( २ ) पोतानुं इरेल; स्वीकृ-रेल अपना किया हुआ; स्वीकृत accepted as one's own. आया० १, ६, १, १,

अत्तता. स्त्री० ( आत्मता-आत्मनो भाव आत्म-ता ) आत्मानुं अस्तित्व, अपनी हुयाती आत्मा का अस्तित्व, Existence of the soul; state of being of the soul ( २ ) पोताना इरेल कर्मनु परिणाम अपने किये हुए कर्मों का परिणाम. result of one's own Karma " इह खलु अत्त-ताए तेहि तेहि कुलेहि अभिसेप्पण संभूता " आया० १, ६, १, १७६;

अत्तत्तासंबुड त्रि० ( आत्मात्मसंवृत-आत्म-न्यात्मना संबृतः ) आत्मावडे आत्माभा-लीन थयेल आत्मा के द्वारा आत्मा में लीन Absorbed in the contemplation of one's own soul भग० ३, ३;

अत्तत्थ त्रि० ( अत्रस्त ) त्रास वगरनो, लय वगरनो; त्रास पाभेल नहि त्रास रहित, भय रहित, त्रास नहीं पाया हुआ Not terrified, without fear, not frightened नाया० ६, १५;

अत्तय-अ पुं० ( आत्मज ) छोडरे, दीडरे, पिताना वीर्यथी उत्पन्न थयेल पुत्र. लडका, पिता के वीर्य से उत्पन्न पुत्र A son ठा० १०; भग० ६, ३३, ११, ६; नाया० १, २, ७, ८; ६; १२, १४; १६, १८, विवा० १; निर० १, १,

अत्तया स्त्री० ( आत्मजा ) दीडरी, पुत्री लडकी, पुत्री A daughter नाया० ८, १४, विवा० ६,

अत्तरण. न० ( आस्तरण ) पथारी उपर ढांडवा-नु वस्त्र, ओछाड विस्तर के ऊपर टांकने का वस्त्र, चादर A bed-cover विशेष० २३२२;

अत्तवं पुं० ( आत्मवत् ) आत्माना उपयोग-वाणो, सावयेत साधु आत्मोपयोगी, सावधान साधु ( One ) self-restrained, ( one ) reflecting upon the soul, e. g. a Sādhu " भासं निसिर अत्तवं " दस० ८, ४६; ( २ ) अडपायी आत्मा. कषाय रहित आत्मा soul free from Kasāya or evil passions. ' अत्तवतो ' ष० ए० ठा० ६, १,

अत्ता पु० ( आत्मन ) आत्मा अथ आत्मा, जीव Soul पिं० नि० भा० ४,

अत्ताण. त्रि० ( अत्राण ) त्राणु-शरणुरहित; जेनो डोछ रक्षक न होय ते. त्राण-शरण-रहित, जिसका कोई रक्षक न हो वह Defenceless, destitute of refuge; helpless परह० १, १, विवा० ६;

✓ अत्तीकर ना० धा० II. ( आत्मी+कृ ) पोता-नुं इरी लेवुं, पोताना इयलमा लेवु अपना बना लेना, अपने कब्जे में लेना To take possession of, to make one's own. अत्तीकरेह. पिं० नि० ११२, निसी० ४, १, अत्तीकरंत व० कृ० निसी० ४, १.

अत्तेय पु० ( आत्रेय ) आत्रेय-ऋषि आत्रेय-ऋषि The sage Ātreya विशेष० २७६६,

✓ अत्थ धा० I ( आस् ) भेसवुं बैठना To sit. अत्थाहि आ० नाया० १,

✓ अत्थ धा० I. ( अस् ) धवु, होवु. होना To be, to exist

अत्थि. ओव० १७, नाया० १; २, ८, १६; भग० २, १, ५, ६, १८, ८,

अत्थु ओव० १२; जीवा० ३, ४;

अत्थ न० ( अस्त ) आधभनुं ते, अदभ्य थपुं,

यंद्र, सूर्य वगेरेतुं देशांतर-क्षेत्रांतरमां वरुं ते अस्त होना, अदृश्य होना, चन्द्र, सूर्य आदि का क्षेत्रान्तर में जाना Setting, disappearing; e.g. of the sun, the moon etc. सू० प० १, २, ३, जीवा० ३, दसा० ७, १;

अथ न० (अस्त्र) द्रुं वानां लुथीयार-तीर वगेरे. फैंकने का अस्त्र; तीर वगैरह A missile; e.g. an arrow etc परह० २, २; विशेष० ३० १६,

अथ. अ० (अत्र) आदि, अंदि, ँडि यहा Here; in this place भग० ८, १, पञ्च० २;

अथ. पुं० (अर्थ) धन, द्रव्य, संपत्ति, परिग्रह धन; संपत्ति, परिग्रह Wealth; riches ओव० ३२, सू० प० २०; परह० १, २; भग० १२, ६; सु० च० १०, ६५; भक्त० १०३, नाया० १, १४, १८; उत्त० ३२, १०७; (२) लक्ष्मीना भूतनारूप पर्वत, मेरुपर्वत लक्ष्मी का भंडाररूप पर्वत, मेरुपर्वत the Meru mountain, treasure of immense wealth. सम० १६, (३) तात्पर्य, मतलब; सारांश; भावार्थ तात्पर्य; मतलब, सारांश meaning, gist, sense. ओव० ४०, उत्त० १, २३; ३२, ३; नंदी० ४०, विशेष० १०३६; (४) शब्दतो अलिधेय, वाच्यार्थ; विषय. शब्द का वाच्यार्थ, विषय. the expressed meaning of a word. विशेष० १०७१, १३६६; ओव० १६; भग० ५, ४, ८, ८, २५, ७; पिं० नि० ६७, १२६, १६०, (५) अपेक्षा अपेक्षा standpoint; expectation, relation जीवा० १; (६) पदार्थ, अलिधेय पदार्थ पदार्थ; अभिलाष्य पदार्थ. a substance. विशेष० १२८; १०३७, (७) शब्दादि पांच विषय शब्दादि पांच विषय the sense-contacts. पञ्च० १५; विशेष० १७६, (८) मोक्ष; परमार्थ मोक्ष immortality. दस० ५, २, ४३;

—अथि. त्रि० (-अर्थिन्) धनतो अर्थी; धनतो याचक धन का अर्थी; धन का याचक. needy of wealth, (one) begging money भग० १५, १,—अथिय-अ. त्रि० (-अर्थिक) लुभो “अथिअथि” शब्द देखो “अथिअथि” शब्द vide ‘अथिअथि’ नाया० १; जं० प० ३, ६७,—अभिमुह. त्रि० (-अभिमुख) अर्थ ग्रहण करने में चतुर. clever in grasping meaning. विशेष० ८०,—अभिसंकि त्रि० (-अभिसंकिन्) धनतो आहना-छ्छा इरनार धन की चाहना करने वाला (one) longing for wealth, (one) desirous of getting wealth नाया० १८,—अलिय न० (-अलीक) द्रव्यतो भाटे लुहुं भोलुं ते द्रव्य के लिये असत्य बोलना. telling a lie for the sake of wealth परह० १, २;—अवग्रह पु० (-अवग्रह) पदार्थतो छ्छियोनी साथे स्पष्ट संबंध थाय ते; मतिज्ञानतो अेड भेद पदार्थ का इन्द्रियों के साथ स्पष्ट सम्बन्ध होना; मति ज्ञान का एक भेद connection of an organ of sense with its object, a variety of Matijñāna. नाया० १, सम० २८,—आदाण. न० (-आदान) द्रव्योपार्जन इरवाना इरलुंरूप अष्टांग निमित्त, आह प्रकाशना निमित्त प्रकाशना ते. द्रव्योपार्जन करने के कारणरूप अष्टांग निमित्त interpreting any or all of the eight varieties of signs and omens with a view to earn money. ठा० ३, ४,—आलोचण. न० (-आलोचन) अर्थतुं आलोचन इरुं रितवन इरुं ते. अर्थ का आलोचन-चितवन करना. reflecting upon the

meaning of. पंचा० ३, ६;—उग्राह्य पुं० (—अवग्रह) व्यंजनावग्रह पछी अर्थनुं सामान्यपक्षे अलक्ष्य करवुं ते, पांच इंद्रिय अने मनसाथे पदार्थनो व्यक्त संबंध थाय ते व्यंजनावग्रह के पश्चात् अर्थ का सामान्यतया ग्रहण करना, पांच इन्द्रिय और मन के साथ पदार्थ का व्यक्त सम्बन्ध होना perception of a determinable sense-object, the definite connection of the sense-object with five sense-organs and the mind सम० ६; नंदी० २७; क० गं० १, ५;—उग्राह्य न० (—अवग्रहण) करणीना इक्षते निश्चय करवे। ते करनी-कर्म के फल का निश्चय करना determining about the results of actions भग० ११, ११, —ओग्राह्य पुं० (—अवग्रह) पांच इंद्रिय अने मननी साथे पदार्थनो संबंध यतां ने प्रथम सामान्य बोध थाय ते पांच इंद्रिय और मन के साथ पदार्थों का सम्बन्ध होने पर जो प्रथम सामान्य बोध होता है वह the first perception of a determinable sense-object due to the connection of the object with the five sense-organs and the mind. कप्प० १, ७, विशेष० २६५, भग० ८, २, ठा० २, १,—ओग्राह्य न० (—अवग्रहण) इक्षनिश्चय फल का निश्चय certainty about result भग० ११, ११,—कंक्षिन्त्र्य त्रि० (—कंक्षिन्त्र्य) अर्थ-धननी आकाक्षा-तृष्णावाणो धन की तृष्णा वाला. desirous of, hankering after, wealth भग० १, ७, १५, १;—कर त्रि० (—कर) धन भेजवतार धन उपार्जन करने वाला, द्रव्य संपादन करने वाला. one, acquiring we-

alth वच० १०, ४,—कहा. स्त्री० (—कथा) अर्थ-द्रव्यसंबंधी कथा, जेम के द्रव्य विनाते मनुष्य तृष्य तुल्य छे धत्यादि. धन संबंधी कथा, जैसे कि, धनहीन मनुष्य तृष्य के समान है इत्यादि. talk about wealth; e g talking about the miseries of poverty. ठा० ३, ३,—कामग्र-य त्रि० (—कामक-अर्थे व्रजे कामो धाम्कामात्रं यस्याऽसावर्थकामकः ) द्रव्यनी वाञ्छना-वाणो द्रव्य की चाह वाला. desirous of wealth भग० १, ७;—गवेसण्या. स्त्री० (\*-गवेसण्याता-गवेसण्या) धननी गवेसण्या-शोध करवी ते धन की खोज करना search after wealth. भग० १५, १;—गवेसि त्रि० (—गवेसिन्) धननी गवेसण्या-शोध करतार धन का अन्वेषण-खोज करने वाला (one) searching after wealth भग० १५, १,—ग्राह्य न० (—ग्रहण) अर्थ-पदार्थनुं ज्ञान; पदार्थनो निश्चय करवे। ते अर्थ-पदार्थ का ज्ञान, पदार्थ का निश्चय करना. knowledge of the meaning of a word or words etc. विशेष० ७, —जाय न० (—जात) द्रव्यना प्रकार-जमीन, गरास, जलधर वगेरे द्रव्य का भेद-जमीन, जागीर, पशु आदि different forms of wealth, e. g land, animals etc वेय० १०, १८, पचा० १०, ३३,—जोषि. त्रि० (—योनि) पैशानी उत्पत्तिना स्थान, पैशा भेजवताना उपाय धन की उत्पत्ति का स्थान; धन उपार्जन करने का उपाय. means of gaining money. त्रिविहा अर्थजोषी पक्षता, तंजहा-सामे वडे भेष्ट ” ठा० ३, ३;—णय पुं० (—नय) अर्थप्रधान नय, अर्थनो आश्रय करतार-नैगम, सग्रह, व्यवहार अने ऋणसूत्र जे चार नय. अर्थप्रधान नय, अर्थ का आश्रय लेने वाले नैगम, सग्रह, व्यवहार

और ऋजुसूत्र ये चार नय. standpoint relating to the object considered. It is the collective name of four standpoints viz Naigama, Saṅgraha, Vyavahāra and Rijusūtra. “नैगमाद्याश्चत्वारोऽप्यर्थनया अर्थभेव प्राधान्येन शब्दोपसर्जनमिच्छन्ति” सूय० टी० २, ७, ४०;—णितर. पुं० (-निकुर) ८४ लाख अर्थनिकुरांगप्रमाणु काणविशेष ८४ लाख अर्थनिकुरांगप्रमाण कालविशेष. a period of time measuring eighty-four lacs of Arthanikurānga जीवा० ३, ४, जं० प० २, १८;—णितरंग पुं० (-निकुराङ्ग-निपूराङ्ग) ८४ लाख नलिनप्रमाणु काणविशेष ८४ लाख नलिनप्रमाण कालविशेष. a period of time measuring eighty-four lacs of Nalinas जीवा० ३, ४,—दंड पु० (-दण्ड) शरीरादि निर्वाह अर्थे कर्मबध थाय ते; स्वार्थे दंडावु ते शरीरादि के निर्वाह के लिये कर्मबध होना, स्वार्थ के लिये दंडित होना Karma arising from actions done to support one's body etc. प्रव० ८२६, परह० २, ५;—धर त्रि० (-धर) शास्त्रो अर्थ धरना; अर्थवेत्ता शास्त्र का अर्थ धारण करने वाला; अर्थवेत्ता (one) well-versed in the meaning of Śāstras. ठ० ३, ३;—निज्जवञ्च त्रि० (-निर्यापक) नयप्रमाणु लागु पाडी सूत्रना अर्थो निर्वाह धरना. नय प्रमाणु को अन्विन कर सूत्र के अर्थ का निर्वाह करने वाला (one) explaining the Sūtras with logical reasoning of stand points. दसा० ४, ३१,—पज्जय. पु० (-पर्याय) अर्थना अर्थ देशनु प्रतिपादन

धरना पर्याय; अर्थरूप पर्याय. अर्थ के एक देश का प्रतिपादन करने वाला पर्याय; अर्थरूप पर्याय a modification explaining a part of a substance. विशे० ३६८,—पय. न० (-पद) “उत्पाद, व्यय अने ध्रौव्ययुक्त सत्” इत्यादि अर्थ प्रतिपादक-प्रधान पद उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य युक्त पदार्थ होते हैं” इसप्रकार अर्थ का प्रतिपादन करने वाला-प्रधान पद. a term such as one conveying the meaning of a substance with the three attributes of creation, sustained existence and destruction प्रव० १५१७;—पिवासिय. त्रि० (-पिपासित) धननी तृष्णावाणो; धन भेगवाने आतुर थयेस धन की तृष्णा वाला, धन प्राप्त करने के लिये आतुरित greedy, thirsty of wealth. भग० २, ७, १५, १,—पुहुत्त न० (-पृथुत्व-पृथु-विस्तीर्ण तस्य भाव पृथुत्वम्, अर्थस्य पृथुत्वमर्थपृथुत्वम्) इत्यादि पदार्थना विस्ताररूप श्रुतज्ञान; सामान्य श्रुतज्ञान जीवादि पदार्थों का विस्ताररूप श्रुतज्ञान, सामान्य श्रुतज्ञान Śrutajñāna consisting of a detailed description of Jīva or soul and other categories “जं वा अत्येण पुहुं अत्यपुहुत्तंति तन्भावो” “अत्यपुहुत्तस्स तेहि कहियस्स” विशे० १०७२,—भाव पु० (-भाव) शब्दना अर्थभावाव-उपयोग जेसो ते शब्द के अर्थ में भाव का जोड़ना associating action or use with the meaning of a word “तद्धाभावा शियोगेण” पंचा० ३, ४५,—मास पु० (-माप) भासो, सोनुं, रुपुं जेपवानुं ८ रति भासनुं अर्थ वन माशा, सुवर्ण तोलने का ८ रती भर का एक

काट a measure of weight equal to eight Rattis, ( one, Ratti—about two grains) नाया० ५, भग० १८, १०;—लाभ पु० (—लाभ ) धनने। लाभ, धननी प्राप्ति धन का लाभ, धन की प्राप्ति acquisition of wealth भग० ११, ११, नाया० १,—लाह पु० (—लाभ ) धननी प्राप्ति धन की प्राप्ति acquisition of wealth काप० १, ८,—लुब्ध त्रि० (—लुब्ध ) द्रव्यनी लालसावाणे, द्रव्यलुब्ध, द्रव्यने लेली द्रव्य का लोभी, द्रव्य की लालसा वाला greedy of wealth भग० १५, १,—वाचक न० (—वाचक ) अर्थवाचक पद, जेभ के वृक्ष छे, घट छे छत्यादि अर्थवाचक पद, जैसे वृक्ष है, घट है आदि a complete or inflected word expressive of a meaning विशेष० १००३,—वि त्रि० (—वित् ) शब्दार्थने ज्ञानुनार शब्दार्थ को जानने वाला knowing the meaning of words पि० नि०भा० १,—विशिच्छय पु० (—विनिश्चय ) पदार्थने—यथार्थ निश्चय पदार्थ का यथार्थ निश्चय correct and well-established meaning of scriptural words, categories etc “ बहुस्तुअं पञ्चवासिजा, पुच्छिज्जत्यविशिच्छय ” दस० ८, ४४,—व्यापण पु० (—व्यापन ) सर्व अर्थप्रत्ये व्याप्त धनार सब अर्थों मे व्याप्त होने वाला pervading the whole Aitha 1 e meaning etc विशेष० ८६,—संजुक्त त्रि० (—सयुक्त ) अर्थसहित, सार्थक अर्थसहित, सार्थक accompanied with meaning “ विउल्ल अर्थसंजुक्तं, कित्तइस्सं सुणेह मे ” दस० ५, २, ४३,—संपया स्त्री० (—सम्पदा ) धनने। धन, धननी संपदा धन का वैभव, धन की संपदा।

opulence or magnificiance of wealth. विवा० १, नाया० ८, १३;—संपयाणं न० (—सम्प्रदान) अर्थ-धननुं दान देवु ते धन का देना, वन दान करना gift of wealth नाया० १६,—सत्थ न० (—शास्त्र ) अर्थशास्त्र; पैसो देवी रीते बेगो इरवे। तेनी रीति यतावनार शास्त्र. अर्थशास्त्र, धनसचय करने की रीति बताने वाला शास्त्र science of wealth, political economy सु० च० ४, ३१३, राय० २०६;—सत्थकुशल त्रि० (—शास्त्रकुशल ) अर्थशास्त्रमा कुशल—कुशीयार अर्थशास्त्र में निपुण-कुशल well-versed in political economy ज० प० ३,—सार पु० (—सार ) प्रधान धन; रोड्ड द्रव्य, सार द्रव्य, तत्त्वभाष प्रधान धन, नन्दमाल, रोकड़ धन cash money, essence नाया० २,—सिद्धि स्त्री० (—सिद्धि ) अर्थ सिद्धि. कार्यसिद्धि, मतलब का पूरा होना accomplishment of object गणि० प० १; नाया० ८,—सुराण त्रि० (—शून्य ) अर्थ-वगरनु, निरर्थक अर्थ रहित, निरर्थक, विना मतलब का useless, meaningless. ठा० १, १;

अर्थ्यओ अ० ( अर्थ्यत्म् ) अर्थनी अपेक्षासे, अर्थथी, अर्थ आथी, अर्थरूपे अर्थ की अपेक्षा से, अर्थसे, अर्थरूप से In the form of meaning from the point of meaning “सो होइ अभिगमरुई, सुयनाण जेण अर्थ्यओ दिट्ट” उक्त० २८, २३, नाया० १; प्रव० ६७०,

अर्थ्यंग पु० ( घस्ताङ्ग ) भारतक्षेत्रना गठि थोनीसीना पदभा तीर्थरनु नाम भरत क्षेत्र का गत चौबीसी के १५ वे तीर्थंकर का नाम Name of the 15th Tirtha-ṅkara of Bharata Kṣetra

in the past Chovīsī. प्रव० २६२;  
अर्थगय. त्रि० ( अस्तङ्गत ) आथभेदो; अस्त  
थयेदो. अस्तंगत; अस्त हो चुका हुआ Set;  
e.g. the sun, the moon etc  
“ अर्थगयमि आइसे, पुरथाय अणुगए ”  
दस० ८, २८;

अर्थत. व० कृ० त्रि० ( अस्तमयत् ) आथभतो;  
अस्त थतो-पामतो अस्त होता हुआ.  
Setting. “ अर्थतमिय सूरमि, आहारेइ  
अभिव्खणं ” उक्त० १७, १६;

\* अर्थक. न० ( अनवसरे ) अवसर विना;  
वपत वगर. विना अवसर के, बेमौके.  
At an improper time, too early  
or too late. सु० च० २, ३८०;

अर्थघ त्रि० ( अर्थघ्न ) अर्थनीहानि करनार  
अर्थ की हानि करने वाला. Destructive  
of Artha i.e. wealth etc. ओघ०  
नि० ३४;

अर्थणघरग. पुं० ( आस्थानगृहक ) ज्यं  
आवी देवता सुभे भेसे जेवां धर. ऐसा घर  
जहाँ देवगण आकर सुख पूर्वक बैठें. A  
house worthy of abode for  
gods. राय० १३६;

अर्थमण न० ( अस्तमन ) सूर्यनुं आथभनुं  
ते: सूर्यनुं अस्त थनुं ते सूर्य का अस्त होना  
The setting of the sun राय० ६२;  
जं० प० ७, १३६; सम० १६;—सुहुत्त. न०  
(—सुहुत्त ) सूर्यास्त थवानुं मुहुत्त-वपत  
सूर्यास्त होने का मुहुत्त-समय. time of  
sunset भग० ८, ८;

अर्थमय न० ( अस्तमय ) सूर्यवगेरेनुं अस्त  
थनुं—अदृश्य थनुं ते सूर्यादि का अस्त  
होना. Setting of the sun etc भग०  
२, १०;

अर्थमाण व० कृ० त्रि० ( आसीन ) भेसतो;  
श्मशानादिमा गस करतो बैठता हुआ, श्मशा-

नादि में रहता हुआ. Sitting; residing  
in such places as a cemetery  
etc. “ तत्थ से अर्थमाणस्स, उवसगा-  
भिधारए ” उक्त० २, २१; भग० ७,  
१, ८, ४;

अर्थमिअ त्रि० ( अस्तमित ) अस्त पामेद;  
आथभेद; सूर्य आथमी गयेद. अस्त प्राप्त;  
अस्त हुआ. Set; e.g. the sun. वेय०  
५, ६; विशेष० १५६८; ओघ० नि० ५०७, सय०  
१, २, २, १४;—उदिय. त्रि० (—उदित )  
जे आथमीने पाछा उग्या होय ते, अर्थात्  
हीनकुणमां जन्मी महत्पद भेणुं होय  
ते, जेम हरकेशी मुनि अस्त होकर फिर  
उदय होने वाला; अर्थात् हीनकुल में उत्पन्न  
होकर महत्पद प्राप्त करने वाला, जैसे कि, हर-  
केशी मुनि. risen after having set;  
i.e. a person of low birth  
rising to greatness, like the sage  
Harakesī ठा० ४, ३,—अर्थमिय.  
त्रि० (—अस्तमित) आथमीने पुन. आथभेद  
होय ते अर्थात् हीनकुणमां उत्पन्न थछ पुनः  
जेवा दुष्कर्म करेके मरीने दुर्गतिमां आये  
जय-जेम कालसुरियो कसाई अस्तंगत  
होते हुए फिर अस्त होना, अर्थात् हीन कुलमें  
उत्पन्न होकर फिर इस प्रकार के दुष्कर्म करना  
जिससे दुर्गति प्राप्त हो जैसे कालसूरिया नामक  
कसाई set once more i.e. a person  
born in a low family and ensur-  
ing the same kind of birth by  
evil actions like the butcher  
Kālasūriyā ठा० ४, ३;

✓ अर्थमे. धा० I ( अस्त+इण् ) आथभनुं;  
अस्तपामनुं अस्त होना. To set ( as  
opposed to “ to rise ” ).

अर्थमेइ प्रव० ५८८;

अर्थरग न० ( आस्तरक ) आच्छादन;



ओ३७३ आच्छादन, चादर A covering; a bed-cover. नाया० १, जीवा० ३, ४, भग० ११, ११,

अथरग त्रि० ( अस्तरजस् ) निर्मल; स्वच्छ निर्मल, स्वच्छ, साफ़. Free from dirt; pure. " अथरयमिडमसूरगोत्थयं " भग० ११, ११;

अथरण न० ( आस्तरण ) ओ३७३ आच्छादन, पर्दा. A covering; a bed-cover ओघ० नि० ७२;

अथरय न० ( आस्तरक ) ओ३७३ " अथरग " श०६. देखो " अथरग " शब्द. Vide " अथरग. " नाया० १; जीवा० ३, ४, भग० ११, ११; कप्य० ४, ६३;

अथर्वण्य पुं० ( अथर्वण्य ) अथर्वण्यनामे आर वेदमांते ओ३ वे६ चार वेदों में से अथर्वण्य नामक एक वेद. the Atharvāna Veda, one of the four Vedas " जाब अथर्वण्यकुसले यावि होत्था " विवा० १, ५, नाया० ५; १६, भग० ६, ३३;

अथसिद्ध पुं० ( अर्थसिद्ध ) जंबूद्वीपना ऐरावतक्षेत्रमां आवती उत्सर्पिणीमा थनार भीष्म तीर्थकर. जम्बूद्वीप के ऐरावतक्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में होने वाले दूसरे तीर्थकर The future second Tirthankara of the coming Utsarpiṇī in the Airāvata Ksetra of Jambūdvīpa नाया० ८; सम० प० २४२, ( २ ) पक्षना दशमा द्विसप्तुं लोकोत्तर नाम. पक्ष के दसवे दिन का लोकोत्तर नाम name of the 10th day of a fortnight in the Lokottara world " अथसिद्धे अभिजाते अथासौ य सतजप् " सू० प० १०, १४, जं० प० ७, १५२;

अथा. स्त्री० ( आस्था ) जिनशासनप्रत्ये

पहुमानपणुं; आस्था; श्रद्धा जिनशासन के प्रति श्रद्धा रखना, आस्था रखना. Faith, reverence, e. g. for Jainism. जीवा० १;

अथरण. न० ( अस्थान ) अविषय; अप्रसंग. अप्रसंग. Anything inappropriate. विशेष० ६७१;

अथरण. न० ( आस्थान ) सभागृह, भे६६. सभागृह; सभास्थान. A council hall; a meeting-house सु० च० २, ३६६; ४, ३६,

अथाणी स्त्री० ( आस्थानी ) सभा; भे६६. सभा; बैठक. A meeting पिं० नि० ८८,

अथात्यमण्यपविभक्ति पुं० ( अस्तास्तमन-प्रविभक्ति ) जेमां यद्रमा, सूर्य आथभवाना दृश्य अताववाभां आदे ओ३ ओ३ नात्य प्रकार, देवताना अत्रीश प्रकारना नाटकमाने नवमे प्रकार. एक प्रकार का नाटक, जिसमें सूर्य, चंद्र के अस्त होने का दृश्य बतलाया जाय, देवताओं के बत्तीम प्रकार के नाटकों में से ६ वें प्रकार का नाटक A variety of drama exhibiting scenes of the setting sun and moon, the ninth of the thirty-two kinds of dramas of gods. राय० ६२,

अथाम त्रि० ( अस्थामन् ) शारीरिक अथ रहित, सामान्य शक्ति वगरना. शारीरिक बल से रहित, सामान्य शक्ति रहित Physically weak नाया० १, ८; १३, १६, १८; १६; भग० ७, ६,

अथावत्ति स्त्री० ( अर्थावत्ति ) प्रत्यक्षादि प्रमा-ण्यी न्युयैल अर्थ जेना विना उपपन्न न थाय, तेवा अदृष्ट अर्थनी कल्पना कवी ते अर्थावत्ति, जेम " पीनो देवदत्तो दिवा म भुक्ते " ओ वा३प्रमा देवदत्तनुं पुष्टपणुं रात्रि भोजन विना उपपन्न नथी, तेथी रात्रिभोजननी

इदमना थाय छे ते अर्थापत्ति. प्रत्यक्षादि प्रमाणों से परिज्ञात अर्थ जिसके विना उपपन्न न हो ऐसे अदृष्ट अर्थ की कल्पना, जैसे मोटा ताजा देवदत्त दिन में नहीं खाता, परन्तु भोजन बिना मोटा ताजा हो नहीं सकता तो रात में अवश्य खाता होगा, ऐसी कल्पना करना अर्थापत्ति है. An inference used to account for an apparent inconsistency e. g from the sentence "Fat Devadatta does not dine by day" the inference is that he dines by night पि० नि० ४५७; पंचा० ४, ३६,—दोस पुं० (—दोष ) ज्यां अर्थापत्तिथी अनिष्टपणानी प्राप्ति थाय त्यां लागतो सूत्रतो अेक दोष नेम " ब्राह्मणो न हन्तव्य." अेधुं सूत्र आंध्युं होय तो आह्मणु न मारवो त्तारे आह्मणु-क्षत्रियादिकने मारवानु अर्थापत्तिथी आनी पडे छे, के ने अनिष्ट छे, माटे त्यां अर्थापत्तिदोष छे. सूत्र रचनामां ते दोष टागवो नेधये अर्थापत्ति से होने वाला दोष-सूत्रदोष, जैसे कि, " ब्राह्मणो न हन्तव्य. " अर्थात् ब्राह्मण को नहीं मारना चाहिए, यह एक सूत्र बनाया, परन्तु अर्थापत्ति से इसका यह अर्थ भी होता है कि, ब्राह्मण को नहीं मारना चाहिये पर क्षत्रियादि को मारना चाहिए, ऐसा अर्थ अनिष्टकारक होने से यह एक दोष है, जो अर्थापत्ति के कारण होता है, इस दोष को सूत्र रचना में न आने देना चाहिए a faulty construction of an aphorism involving by Arthāpatti, an undesired result e. g " a Brāhmana should not be killed", here the inference viz. a non-Brāhmana may be killed, is involved. पंचा० ४, ३६; अर्थाह त्रि० ( अस्ताव ) अगाध; धणु उदुं.

अगाध बहुत ऊंडा-गहरा. Very deep unfathomable. भग० १, ६; ७, १; नाया० ६, १४; १६, पि० नि० ३३२, अर्थाहिंगार पुं० ( अर्थाधिकार ) प्रकरणु वगेरेनु अलिधेय-विषय; उपक्रमतो अेक भेद. प्रकरण वगेरह का विषय. उपक्रम का एक भेद. The subject or topic of a chapter etc; a sub-division of Upakrama. " अहवा उवक्कमे छुव्विहे परणत्ते, तंजहा-आणुपुव्वी नामं पमायं वतच्चया अर्थाहिंगारे, समोअारे " अणुजो० ७०, ५८;—जाणअ. त्रि० (\*-ज्ञायक ) अर्थनुं स्वरूप परापर समज्जार अेटले सुधी के ते अर्थना उपयोगमां तन्मय अनी जय; दाभला तरीके अेक भाणुस ' धर्म ' शब्दना अर्थमां उपयोगवंत होय, धर्मनुं स्वरूप परापर समज्जतो होय तो ते भाणुसने शब्दादि नयवाणा धर्म तरीके ओणभे अथवा ' धर्म ' कही ओलावे. अर्थ का स्वरूप यहाँ तक ठीक ठीक समझने वाला कि, उस अर्थ के उपयोग में तन्मय हो जाय; उदाहरणार्थ एक मनुष्य " धर्म " शब्द के अर्थ में इतना उपयोग वाला हो और वह धर्म का स्वरूप इतना ठीक ठीक समझता हो कि, उस मनुष्य को शब्दादि नय वाले धर्मरूप ही समझें और " धर्म " कह कर उसे बुलावें. ( one ) thoroughly knowing the meaning and so much absorbed in it that he is unable to perceive any thing else properly. अणुजो० १४८; अर्थि अ० ( अस्ति ) छे, विद्यमान; इयातिमां. है, विद्यमान, मौजूद. Being; existent, so it is. " अर्थियां भंते, जीवाण पाणाइवाणुणं किरिया कज्जइ " ओव० ३४; भग० १;

१, ६, १०, २, १; ३, २, ५, ६, १८, ३, दस०  
५, २, २७; १०, १, ७, अणुजो० ८०; सू०  
प० २०; नाया० १, २, ८, १४, १६; ( २ )  
पुं० धर्मास्तिकाय आदिना प्रदेश-सूक्ष्म  
अंश धर्मास्तिकाय आदि का प्रदेश. atomic  
portions of Dharmāstikāya etc  
( ३ ) पन्नवणा सूत्रना त्रीज पदना ओडपीस-  
भा दारनुं नाम, जेभां धर्मास्तिकाय आदि  
छ द्रव्यतुं अल्पाअहुत्वा दर्शाव्युं छे पन्नवणा  
सूत्र के तीसरे पद के २१ वें द्वार का नाम,  
जिसमें धर्मास्तिकायादि छः द्रव्यों का अल्पा-  
बहुत्व दिखाया गया है name of the  
twenty-first Dvāra of the third  
Pada of Pannavanā dealing  
with the six substances such as  
Dharmāstikāya etc पन्न० ३;

अस्थि त्रि० ( अर्थिन् ) धनिक; श्रीमत  
धनवान् A wealthy man पचा० १०, २६,  
( ४ ) सूत्र अने अर्थने ज्ञानार गुरु  
सूत्र और अर्थ को जानने वाला गुरु ( one )  
knowing a Sūtra and its mean-  
ing, e. g. a preceptor विशेष० १४४६,

अस्थि न० ( अस्थि ) हड्डी हड्डी The bone  
प्रब० १३८४,—खंड न० (—खण्ड ) हड्डिने  
डडडे हड्डी का टुकड़ा. a piece of bone  
प्रब० १३८४,—मिज्ज न० (—मज्जा )  
हड्डी भिन्न हड्डी की मज्जा the marrow  
of the bones दसा० १०, ८,

अस्थिअ त्रि० ( अस्तिक ) श्रव, अश्रव, स्वर्ग,  
नरक, मोक्ष आदिने मानवावाणो; अस्तिक  
जाव, अजीव, स्वर्ग, नरक, मोक्ष आदि का अस्तित्व  
मानने वाला, आस्तिक ( One ) believing  
in the existence of soul, heaven,  
hell, absolution etc टा० ४, ८,

अस्थिअ त्रि० ( अर्थिक ) धिञ्जवाणु, अर्थी;  
क्षाद्यु, इच्छा वाला; अर्थी, लालची Desir-

ous of; covetous of ओव० ३२;  
अस्थिअ. पुं० ( अस्थिक ) अहुष्पीजवाणु वृक्ष-  
विशेष, अगस्थियानुं आऽ बहुबीज वाला वृक्ष-  
विशेष. A kind of tree with many  
seeds ( २ ) न० ते आऽनां इक्ष बहुबीज  
वाले वृक्ष का फल a fruit of the above-  
said tree दस० ५, १, ७३, जीवा० १;  
पन्न० १, भग० २२, ३;

अस्थिउद्देश्य. पुं० ( अस्त्युद्देशक ) भगवती  
सूत्रना २० भा शतकना पीज उद्देशानुं नाम.  
भगवती सूत्र के २० वें शतक के दूसरे उद्देश  
का नाम Name of the second Udd-  
eśā of the twentieth Śataka  
of Bhagavatī Sūtra भग० २०, २;

अस्थिकाय पु० ( अस्तिकाय ) धर्मास्तिकाय  
आदि पांच द्रव्य, अस्तिक-प्रदेश, काय-समूह-  
प्रदेशना समूहरूप काण शिवायना पांच द्रव्य,  
तेभा यार अश्रव अने ओड श्रव धर्मास्तिकाय  
आदि पांच द्रव्य, अस्तिक-प्रदेश, काय-समूह  
प्रदेश के समूहरूप काल द्रव्य के सिवाय अन्य  
पांच द्रव्य, जिनमे चार अजीव और एक  
जीव है. One of the five embodied  
substances viz Dhama, Adha-  
ma, Ākāśha, Pudgala and  
Jīva “ चत्तारि अस्थिकाया अजीवकाया  
पञ्चत्ता तंजहा--धम्मस्थिकाए अधम्मस्थिकाए  
आगासस्थिकाए पोगलस्थिकाए ” टा० ४,  
४, सूय० २, १, २३, पन्न० १५; सम० ५;  
भग० २, १, १०, ७, ६, २५, ४,—धम्म  
पुं० (—धर्म ) अस्तिकायरूप धर्म, गतिभां  
सहाय इरनार धर्मास्तिकायरूप स्वभाव  
अस्तिकाय रूप धर्म, गति में सहायता करने  
वाला धर्मास्तिकाय रूप द्रव्यधर्म. a sub-  
stance which is the medium of  
motion to soul and matter.  
टा० १०, प्रब० ६७४,

अस्थिक न० ( अस्तिक्य ) अस्तिक्यपणुं, ७५, अ७५, स्वर्ग, नरकादिने मानवां ते. अस्तिकपन; जीव, अजीव, स्वर्ग, नरक आदि का मानना Belief in the existence of soul, non-soul, heaven etc. पंचा० १०, ६;

अस्थित्त. न० ( अस्तित्व ) अस्तित्व; विद्यमानपणुं; होवापणुं, हुयाती मौजूदगी, विद्यमानता Existence. "से शून्यं भंते । अस्थित्तं अस्थित्ते परिणामह " भग० १, ३;

अस्थिनस्थिपव्वाय पुं० ( अस्तिनास्तिप्रवाद ) अस्तित्नास्ति नामनो योथोपूर्व; योथपूर्वशास्त्रमांनु अेक, जेमां अस्तित्व, नास्तित्वनुं विवेचन हतुं; हल तेनो विच्छेद थयेल छे. अस्ति नास्ति नामक चौथा पूर्व, चौदह पूर्वों में से एक पूर्व, जिसमें अस्तित्व, नास्तित्व का विवेचन था हाल में उसका विच्छेद हो गया है. The fourth Pūrva of the scriptures; one of the fourteen Pūrvas dealing with existence and non existence It is no longer extant; सम० १४; १८; नंदी० ५६, प्रव० ७१६;

अस्थिनिऊर पुं० ( अर्थनिपूर ) लुथो "अस्थिणुडर " शब्द. देखो " अस्थिणुडर " शब्द. Vide " अस्थिणुडर." अणुजो० ११५, भग० ५, १,

अस्थिनिऊरंग. न० ( अर्थनिपूराङ्ग ) लुथो "अस्थिणुडरंग" शब्द देखो " अस्थिणुडरंग " शब्द Vide "अस्थिणुडरंग." भग० ५, १; अणुजो० ११५;

अस्थिभाव पुं० ( अस्तिभाव ) विद्यमानपणुं; अस्तित्व विद्यमानपन; अस्तित्व. Existence; ( २ ) सत्पदार्थ; विद्यमान वस्तु. सत्पदार्थ, विद्यमान वस्तु. an existing thing भग० ७, १०; ओव० ३४;

अस्थिया. स्त्री० ( अस्तित्ता ) अस्तित्व; होवापणुं मौजूदगी; अस्तित्व. Existence. विशेष० १७२१;

अस्थिर त्रि० ( अस्थिर ) अपरिचित. अपरिचित; बिना पहिचान का. Unacquainted, unfamiliar "अस्थिरस्स पुम्बगहियस्स वत्तणा जं इह धिरीकरण " पंचा० १२, ४५; ( २ ) अटडाडि; अजो वपत याले नडि अेवुं. ज्यादह समय तक न टिक सकने वाला. not lasting. भग० १, ६;—छुक्क. न० (—पट्क ) अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय अने अणसकीर्ति अे नाम कर्मनी छ प्रकृतियोनो समुदाय. अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय और अयशःकीर्ति इन नाम कर्म की छः प्रकृतियों का समुदाय. the group of the six varieties of Nāmakarma viz. Asthira, Aśubha, Durbhaga, Dusvara, Anādeya and Ayaśakīrti क० गं० १, २८;—णाम. न० (—नामन् ) जेना उदयथी डान, आंभ वगेरे शरीरना अवयवो अस्थिर भणे ते नाम कर्मनी अेक प्रकृति. नामकर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से कान, आंख वगैरह शरीर के अवयव स्थिरता रहित हों. a variety of Nāmakarma maturing into unsteadiness of eyes, ears etc क० गं० ५, ६;—तिग. न० (—त्रिक ) अस्थिर नाम, अशुभ नाम अने अयशकीर्ति नाम अे त्रलु नाम कर्मनी प्रकृति अस्थिर नाम, अशुभ नाम और अयशःकीर्ति नाम ये नामकर्म की तीन प्रकृतिया the group of the three varieties of Nāmakarma viz Aśubhanāma, Ayaśakīrtināma and Asthiranāma क० प० २, १०२,—दुग न० (—द्विक ) अस्थिर

नाम अने अशुभनाम अे नामकर्तनी अे प्रकृति अस्थिरनाम और अशुभ नाम अे नामकर्म की दो प्रकृतिया. the group of the two varieties of Nāma-karma viz Asthira-nāma and Aśubhanāma. क० गं० २, ७,

अस्थिवाय पु० ( अस्थिवाद ) सत्पदार्थोनु अस्तित्व स्थापयु-अेभ अत्मा छे, कर्म छे, मोक्ष छे, मेक्षनो उपाय छे धत्यादि सत् पदार्थोनु सत्त्व अने शशशृंग, अपुष्प आदि असत्पदार्थोनु असत्त्व स्वीकारयु ते. सत्पदार्थो का अस्तित्व स्थापन करना, जैसे कि, आत्मा है, मोक्ष है, कर्म है आदि सत्पदार्थो का सत्त्व और आकाशकुसुम, बंध्यापुत्र आदि असत्पदार्थो का असत्त्व स्वीकार करना Doctrine accepting the existence of realities like soul, Karma, absolution etc “ अस्थि लोए अलोए वा, रोव सन्न निवेसए । अस्थि लोए अलोए वा, एवं सन्न निवेसए ” सूय० २, ५, १२;

अस्थुय त्रि० ( आस्तुत ) अि० वेदु विद्याया हुआ. Spread विशे० २३२१, नाया० १३, १७,

✓अस्थुव धा० I -( आ+स्तु- ) अि० अणुं, पथरी पाथरवी विद्याना, विस्तर करना To spread, e.g. a bed.

अस्थुवइ क० वा० विशे० २३२१,

अस्थुवत व० कृ० विशे० २३२१,

अस्थेगइअ-य त्रि० ( सन्थेकक ) छे डेटला ओड हैं कुछ Some there are “अस्थे गइया समाउया समोववरणगा अस्थेगइया समाउया विसमोववरणगा अस्थेगइया विसमाउया समोववरणगा अस्थेगइया विसमाउया विसमोववरणगा” भग० १, २, १६, ३;

अस्थेगइअ-य त्रि० ( अस्त्येकक ) छे डैध ओड, गभे ते डैध ओड. है कोई एक, कोई भी

एक One there is; some one. भग० २, १, ३, ३; ५, ४, ६, ५; ८, १०, १८, ८, २०, १; ८; २६, १, नाया० १, १५, १६; जं० प० ५, १२७,

अस्थेरय. पुं० ( आस्तरक ) अि० अणुं विस्तर. A bed नाया० १;

अथ अ० ( अथ ) प० अि०; पश्चात्; आ६ पीछे, पश्चात् Afterwards. सू० प० १०; अथव्वणवेय पुं० (अथर्वणवेद) लु० अि० “अथव्वण ” श० देसो “अथव्वण ” शब्द. Vide “अथव्वण” भग० ६, ३३; नाया० ५; कप्प० १, ६,

अथिर त्रि० ( अस्थिर ) लु० अि० “अथिर ” श० देसो ‘अथिर’ शब्द Vide ‘अथिर’ सूय० २, ६, २, सम० २८; भग० १, ६, सु० च० १०, ६५, पञ्च० २३, क० गं० १, २७, २, ३२,—अस्तरण न० (-आसन ) डैधणु आसन हिलता हुआ आसन. an unsteady seat “अथिरासणो कुक्कुइए, जत्थ तत्थ निसीयइ ” उक्त० १७, १३,

अदंड पु० ( अदण्ड ) हिंसा वगेरे डडतो अलाव, मन, वचन अने कथाना प्रशस्त योग; हिंसा वगेरह के दंड का अभाव, मन, वचन और काया का प्रशस्त योग Absence of such sins as killing etc , pure, sinless operations of mind, speech and body “एमे अदडे ” सम० १, ( २ ) ६३-सज्जतो अलाव सजा का अभाव. absence of punishment भग० १३, ११, —कुदंडिम न० (-कुदण्डिम ) लु० अि० “अदंडकोदंडिम ” श० देसो ‘अदंडकोदंडिम’ शब्द vide ‘अदंडकोदंडिम’ भग० ११, ११;—कोदंडिम. त्रि० (-कुदण्डिम-दण्डलभ्य दण्ड. कुदण्डेन निर्दुत्त कुदण्डिमं तज्जास्ति यत्र तत्तथा ) अपराध प्रमाणे डंड ते डंड, अपराध डडतां ओछो.

पतो दंड ते कुंठ, आ यनेनो ज्यां अभाव  
होय ते अपराधके अनुसार दंड, दंड कहलाता  
है और कर्मता बढ़ता कुदंड कहलाता है, इन  
दोनों का जहाँ अभाव हो वह. absence  
of disproportionate punishment.

“अभद्वेषवेसं अदंडकोदंडिम” भग० ११,  
११, जं० प० ३, ६८, कण्प० ५, १०१;

अदंतधुवणय न० (अदन्तधावनक) लुओ।  
“अदंतवण” शब्द देखो “अदंतवण”  
शब्द. Vide “अदंतवण” “अण्हाणय  
अदंतधुवणय अचछत्तयं” भग० १, ६,  
अदंतवण त्रि० (अदन्तवन-अदन्तधावन)  
दतधावन-दातणु डरवानो जेभा निषेध छे ते;  
दतधावन-दतून करने का जिसमे निषेध है  
वह Prohibiting the cleansing of  
teeth ठा० ६;

अदंसण न० (अदर्शन) दर्शननो अभाव;  
आभेडरी न जेवु ते दर्शन का अभाव; आंखो  
से न देखना Not seeing; not being  
seen “अदंसण चव अपत्थण च” उक्त०  
३२, १५, (२) त्रि० दर्शन-दृष्टि विना; नो, आध-  
णो दृष्टि रहित, अंधा blind (३) थिण्णद्धि  
निद्राना उदयवाणो थिण्णद्धि निद्रा के उदय  
वाला one overpowered by Thina-  
ddhi Nidrā, a somnambulist (४)  
दर्शन-समझित वगरनो, मिथ्यात्वी सम्यक्त्व  
रहित, मिथ्यात्वी heretic प्रव० ७८७.

अदंसणिज्ज त्रि० (अदर्शनीय) जेवा लायड  
नहि, न देण्वा योग्य देखने के अयोग्य  
Unfit to be seen “कयरे तुम ह्य  
अदंसणिज्जे” उक्त० १२, ७;

अदक्ख त्रि० (अदत्त) अणुसमणु. वे  
समझ, मूर्ख Stupid, foolish पि० नि०  
१०६;

√अदक्खु धा० I (दृश्) देण्णु, जेवु देखना.  
To see, to observe

अदक्खु. भ० प्र० व० “अदक्खुकामाह  
रोगव” सूय० १, २, ३, २, भग० ५,  
४, १६, ३;

अदक्खु. त्रि० (अदृष्ट) अर्वाग्दर्शन; दुंडी  
दृष्टि अर्वाग् दर्शन, संकुचित दृष्टि. Shortness  
of vision “अदक्खु व दक्खु वाहियं”  
सूय० १, २, ३, ११;

अदक्खु. त्रि० (अपश्य-पश्यतीति पश्यो न  
पश्याऽपश्य) अन्ध; आंधणो अन्धा.  
Blind सूय० १, २, ३, ११;

अदक्खु त्रि० (अदक्ष) अनिपुणु; कुशल-  
होशियार नहि ते चातुर्य रहित; निपुणता  
रहित Inexpert, not proficient.  
सूय० १, २, ३, ११,—दंसण. त्रि०  
(-दर्शन) असर्वज्ञशासनना अनुयायी;  
अन्यमति, अन्यदर्शनी असर्वज्ञ द्वारा प्र-  
पित शासन का अनुयायी; अन्यमतावलम्बी  
following a creed founded by  
non-omniscient persons, non-  
Jaina “सदहसु अदक्खुदंसणा” सूय०  
१, २, ३, ११;

अदक्खुव त्रि० (अपश्यवत्) अंधतुल्य;  
आंधणो जेवो; कार्यकार्य न जालुनार अंधे के  
समान, कार्यकार्य न जानने वाला Like a  
blind man, without discrimi-  
nation सूय० १, २, ३, ११;

अदच्चा. सं० क० अ० (अदत्त्वा) दान कर्था  
विना; नहि आपीने दान किये बिना, बिना  
दिये Without having given i e  
in charity. ठा० ३, २;

अदत्त. त्रि० (अदत्त) अणुदीधुं, दीधा  
वगरनु, अणुदीधेणु बिना दिया हुआ. Not  
given उक्त० ३२, २६, परहं० १, ३;  
भग० ८, १;—आदाण न० (आदान)  
लुओ। ‘आदिरणादाण’ शब्द देखो ‘आदिरणाः’

दाय" शब्द. Vide "अदिण्यादाय". ठ० १, १,—आहार पु० (—आहार) दीधा विना उरनार—योरनार, योर बिना दिये ग्रहण करने वाला, चोर a thief "अदत्ताहारो वा से अवहरंति रायाणो वा से विलुपति" आया० १, २, ३, ८०,—हरं त्रि० (—हर) अथुदीधु उरनार—योरनार बिना दिये लेने वाला, चोर. (one) who steals; one who takes away without being given. उक्त० ७, ५,

**अदम्भ** त्रि० ( अदम्भ ) अनल्प; धर्तुः अति अनल्प; अल्प नहीं हो वह, बहुत Not little, much, excessive जं० प०—वाह त्रि० (—वाह—अदम्भमन्त्रं बहतीत्यदम्भवाह ) धर्तुः ज्येष्ठे उपाडी ननार—धेऽऽ वगेरे बहुत भार उठाने वाला—घोडा, गधा आदि carrying heavy load, e g horses etc "अदम्भवाहं भ्रमेत्तन्मयाको कासियबहत्पत्तलाच्छं" जं० प०

**अदाउं** सं० कृ० अ० ( अदात्वा ) न आपीते न देकर. Having not given, without having given पचा० १५, ३६;

**अदारुय** त्रि० ( अदारुक ) लाडला वगरतु, काष्ठरहित काष्ठरहित Without wood, devoid of wood. तंडु०

**अदिह** पु० ( अदिति ) लुप्ते "अदिह" शब्द देखो 'अदिह' शब्द. Vide 'अदिह' सू० प० १०, अदित व० कृ० त्रि० ( अददत् ) नहि आपतो नहीं देता हुआ Not giving "तस्सावि संजमो सेभो, अदितस्स भि किंचियां" उक्त० ६, ४०, दस० ५, २, २८,

**अदिज्ज** त्रि० ( अदेय ) न देवा येऽथ. न देने योग्य Unfit to be given पि० नि० ५६५; ( २ ) न्यां लेती देती करवानी मना

करवायां आवी होय तेषु नगर वगेरे ऐसा नगर वगेरह जहाँ लेन देन करने की रोक टोक की गई हो ( a city etc ) in which exchange is prohibited भग० ११, ११, कप्प० ५, १०१,

**अदिज्जमाय** त्रि० ( अदीयमान ) नहि अयातुं, न देयातुं. नहीं दिया जाता हुआ. Not being given पि० नि० ५०८,

**अदिष्ट** त्रि० ( अदष्ट ) नहि ज्ञेयेत्तुं; नहि ज्ञेयेत्तु नहीं देखा हुआ, नहीं जाना हुआ. Unseen, unknown सूय० २, ७, ३८, भग० १, ६, ३, ७, १८, ७, ( २ ) न० पूर्व-जन्मना कर्म पूर्वजन्म का कर्म Karmas of the past life नदी०—दोष. त्रि० (—दोष ) ज्ञेतेो दोष दोष ज्ञेवामा न आये होय ते जिसका कोई दोष देखने में नहीं आया हो वह ( one ) whose fault is not seen, free from any fault brought to notice नाया० १६, —धम्म पु० (—धर्म ) ज्ञेत्ते श्रुतधर्म के चारित्रधर्म ज्ञेत्ते नथी ते जिसने श्रुत-धर्म या चारित्रधर्म नहीं पहिचाना वह. one not familiar with principles of scriptures or of right conduct. "अदिष्टधम्मे विण्ण अकोविण्ण" दस० ६, २, २३, दसा० ४, ७७,—फल त्रि० (—फल ) ज्ञेत्ते प्रयोजन ज्ञेवामा न आयु होय ते जिसका प्रयोजन देखने में न आया हो वह of unseen purpose. "दिष्टादिष्टफलमेयं" पंचा० ७, २१, —लाभिअ-य पु० (—लाभिक) पूर्वे नहि ज्ञेयेत्त-अपरिचित दाता आये तो लेवुं ज्ञेवा अभिग्रहणी गवेपणा करनार ( साधु ). अपरिचित दाता दे तो ही लेना, इस प्रकार के अभिग्रह से गवेपणा करने वाला ( साधु ). one, e g a Sādhu in quest of

alms with a vow to accept them from strangers only. ओव० १६; परह० २, १,—सेवक पुं० (—सेवक) देशपार थयेन सेवक; स्वामिने भो न पतावनार सेवक. देश से निकाला हुआ सेवक; मालिक को मुख न दिखाने वाला नौकर. an exiled servant. “ तं गच्छतु खं देवाणु-पिया ! पंच पंडवा दाहिणिल्लं वेयालिं तत्थ पंडु महुरं णिवेसंतु ममं अदिद्वेवगा भवंतुत्तिकट्टु ” नाया० १६;—हड त्रि० (—हन) हीक्ष वगर अणुणु डरेन विना देवे लिया हुआ accepted without being seen. आव० ४, ५;

अदिरण. त्रि० ( अदत्त ) स्वामी, तीर्थंकर के गुरुनी रज्ज विना लीधेनुं; अणुदीवेनुं. स्वामी, तीर्थंकर अथवा गुरु की आज्ञा विना लिया हुआ Not given, got without the permission of a preceptor, Tirthankara etc. “ अदिरणो सेवि अवि-वित्तए ” ओव० ३४; “ अदिरण भुजामो ” “ अदिरणं साइज्जामो ” भग० ८, ७, ओव० ३४, अदिरणादान न० ( अदत्तादान ) अदत्तादान; अणुदीधेनुं लेवु ते, चोरी, पापनुं त्रीणु स्थानुं. विना दिया हुआ लेना, चोरी, पाप का तीसरा स्थानक Theft, the third Sthānaka of sin. सम० २१, ओव० ३४; परह० १, ३; वेय० ६, २; नाया० १, ५, भग० ८, ५; १२, ४, १६, ३, दसा० २, १५, १६, पन्न० २२,—वत्तिय पुं० (—प्रत्ययिक—अदत्तादानं रतेयं तत्प्रत्ययिको द-ण्डस्तथोत्त) अदत्तवन्तु अणुणु डरेवार्थी अत्मा होय ते, तेर क्रियास्थानकमानु सातमु क्रिया-स्थानक. अदत्तवस्तु ग्रहण करने से आत्मा का दंडित होना, तेरह क्रियास्थानकों में से सातवों क्रियास्थानक. sin incurred by the soul for dishonest gain, theft

etc: the seventh of the thirteen Kriyāsthānakas. “ अहावरे सत्तमे क्रि-रियाठाणे अदियणादाणवत्तिपुत्ति आहिज्जइ ” सूय० २, २, १५, सम० १३;—विरइ. त्ती० (—विरति) अदत्तादाननी, निवृत्ति; अदत्त वस्तु अणुणु डरेवार्थो त्याग अदत्तवस्तु ग्रहण करने का त्याग, abstaining from taking things not given; abstention from dishonest gain. महा० प० ७,—वेरमण न० (—विरमण) अदत्त वस्तु लेवानो त्याग, त्रीणुं व्रत, ते जे स्थूल विरमणु होय तो आवडनुं त्रीणुं अणुव्रत अने सर्वथा विरमणु होय तो साधुनुं त्रीणुं महाव्रत अदत्तवस्तु लेने का त्याग; तीसरा व्रत, यदि स्थूल विरमण रूप हो तो आवक का अणुव्रत होता है और सर्वथा विरमणरूप हो तो साधु का तीसरा महाव्रत होता है. the third vow viz abstention from taking things not given; abstention from dishonest gain, partial in the case of a layman and total in that of an ascetic. परह० २, ३,

अदिति पु० ( अदिति ) लुओ “ अइइ ” शब्द देखो “ अइइ ” शब्द Vide “ अइइ. ” अणुजो० १३१, जं० ५०७, १५७,

अदिज्ञ. त्रि० ( अदत्त ) लुओ “ अदिरण ” शब्द. देखो “ अदिरण ” शब्द. Vide “ अदिरण. ” आया० १, ७, १, १६६, भग० १, ६, ६, निसी० ४, १७, मत्त० १०४;

अदिज्ञविति. त्ती० ( अदत्तवृत्ति ) प्रेताने के परने अर्थे अणुदीधु लेवनी वृत्ति; सातमु क्रिय स्थानक. अपने या औरों के लिये विना दिया हुआ लेने की वृत्ति, सातवों क्रियास्थान-क The - 7th Kriyāsthānaka ( source of incurring Karma )



viz desire or inclination to take ( for oneself or for another ) what is not given. प्रव० ८३३;

अदिज्ञादाण. न० ( अदत्तादान ) लुओ "अदि-  
शणादान" श०६. देखो "अदिरणादान" शब्द  
Vide " अदिरणादान. " दस० ४, आ०  
४, ७, आया० १, १, ३, २६,—चित्त०. न०  
(-प्रत्ययिक ) सातभु क्रिय स्थानक, अद  
तादान-चोरी करवाथी, कराववाथी अने करतां  
रुहुं लालुवाथी लागती क्रिया सातवों क्रिया-  
स्थानक; अदत्तादान-चोरी करने, कराने और  
करते हुए का अनुमोदन करने से होने वाला  
कर्मबंध. Karma incurred by  
committing theft, causing an-  
other to commit theft or  
approving of theft. सम० १३,  
सूय० २, २, १५;

अदिस्स. त्रि० ( अदृश्य ) देभाय नहिं ओवु,  
अदृश्य. अदृश्य; नहीं दिख सके ऐसा.  
Invisible " पच्छंने आहारनीहारे, अ-  
दिस्से-मंसचक्खुणा" सम० ३४, " अदिस्साण  
च भूयाणं, आसीं तत्थ समागमो" उक्त० ३३,  
२०, प्रव० ४४७, विशेष० १७४६, सु० च० ३, ३१,  
अदिस्समाण त्रि० ( अदृश्यमान ) जेवामां  
न आ० वु. दिखो में नहीं आता हुआ  
Being unseen, invisible आया०  
१, २, ५, ८८,

अदीण. त्रि० ( अदीन ) दीनता-गरीभाध  
रहित दीनता रहित. Not poor "सीलवंता  
सविसेसा, अदीणा जति देवयं" नाया० ८;  
दस० ५, २, २६; ओष० नि० ५३७; उक्त० ७, २१  
—चित्त. त्रि० (-चित्त) भेलाटा मनवाणो;  
प्रसन्न चित्तवाणो उदार मन वाला; प्रसन्न चित्त-  
वाला magnanimous, of a blithe,  
sanguine temper; cheerful.  
पंचा० १८, ३६;—मणस. त्रि० (-मनस्)

भेलाटा मनवाणो; प्रसन्न मनवाणो उदार मन  
वाला; प्रसन्न मन वाला magnanimous;  
high-minded; of blithe, sangui-  
ne spirits. " मायन्ने असणणस्स,  
अदीणमणसो चरे" उक्त० २, ३,—चित्त  
त्रि० (-वृत्ति) दीनवृत्ति वगरतो. दीनवृत्ति  
रहित. not-mean or poor in spirits.  
दस० ६, ३, १०;

अदीणसत्तु पुं० ( अदीनशत्रु ) कुरुदेशना  
हरितनागपुर नगरना राजानु नाम कुरुदेश  
के हस्तिनागपुर नगर के राजा का नाम Name  
of a king of Hastināgapura, a  
city of the country called  
Kuru. " अदीणसत्तुस्स रणणे धारणी  
पामोक्खाणं देवीसहस्स ओरोहेयावि होत्था"  
विवा २, १, ठा० ७, १, नाया० ८, ( २ ) पु०  
२२ भा तीर्थकरना त्रीज पूर्वजन्तु नाम २२वें  
तीर्थकर के तीसरे पूर्वभव का नाम name  
of the third past birth of the  
twenty-second Tirthankara.  
सम० ५० २३०, ( ३ ) यप नगरीना जित-  
शत्रुराजने अदीणशत्रु नामे युवराज-कुमार  
चंपा नगरी के जितशत्रु राजा के युवराज का  
नाम name of the her-apparent  
of Jitāsātru, king of Champā  
city. नाया० १२,

अदु अ० ( अथ ) पछी, पथत्, पाद  
पीछे, पथात्, अनन्तर, बाद Afterwards  
" अदु पोरासि तिरियं भित्ति " आया० १,  
६, १, ५, सूय० १, २, २, २,

अदुक्ख न० ( अदुःख ) दुःखता अभाव.  
दुःख का अभाव. Absence of misery.  
भग० १, १०,

अदुक्खणया स्त्री० ( अदुःखनता-अदुःख )  
दुःखी न थवु ते, दुःख न वेदुं ते. दुःखी  
न होना. Not suffering misery.

non-endurance of misery. भग०  
७, ६;

अदुःखमसुहा स्त्री० ( अदुःखसुखा ) जेभां  
दुःख नथी तेभन् सुख नथी ऐवी स्थिति  
ऐसी स्थिति जिसमें दुःख, सुख न हो. A  
feeling free from pain as well  
as pleasure. “नेरइयाण भते। किं दुःखं  
वेयणं वेयंति सुहं वेयणं वेयति अदुःखमसुहं  
वेयणं वेयंति ? ” भग० १०, २;

अदुःखावणया स्त्री० ( अदुःखापना-अदुःखा-  
पन ) डोअने दुःख न आपनुं ते; डोअ दुःखी  
थाय ऐवां साधने उभा न डरवाते किसीको  
दुःख न देना; ऐसें सावन खडे न करना जिन-  
से किसीको दुःख हो Not giving  
pain to any body, non-injury.  
भग० ३, ३;

अदुःखिख त्रि० ( अदुःखिन् ) सुखी; दुःखथी  
रहित सुखी, दुःखसे रहित Not misera-  
ble, happy. भग० ७, १; १४, ४,

अदुःखिच्छिय-अ त्रि० ( अजुगुप्सित ) अनि-  
न्दित; उत्तम अनिन्द्य; उत्तम Such as  
would not excite disgust or  
censure, excellent. “ कुलेसु अदुःखि-  
च्छियसु ” आया० २, १, २, ११,

अदुःख त्रि० ( अदुःख-अद्विष्ट ) द्वेष-अद्वेषाड  
रहित द्वेष-ईर्ष्या रहित Not envious  
or jealous परह० २, १,

अदुःख त्रि० ( अदुःख ) दोषरहित; दोष-पाप  
वगरने दोषरहित Free from fault or

sin. दस० ७, ५५, परह० २, १; पंचा०  
४, ३६, जं० प० २, ३१,

अदुत्तरं. अ० ( अथोत्तरम् ) † अथवा; एवं पडी.  
+अथवा, इसके बाद ×Or, hence forward.

“अदुत्तरं चणं गोयमा। पभूणं चमरे असुरिंदे”  
भग० ३, १, ७, ६, अदुत्तरं चणं मम समया  
निगंथा” नाया० १; २, १६, जं० प० २, ३६;

अदुत्तरं चणं अ० ( अथोत्तरं चणं ) जुओ।  
“अदुत्तरं” शब्द देखो “अदुत्तरं” शब्द.

Vide “अदुत्तरं” भग० ३, १, ७, ६,

अदुयं. अ० ( अदुत्तम् ) विलंबे; उतावणे  
नहि विलंब पूर्वक, शीघ्रता से नहीं Without  
haste. भग० ७, १, परह० २, १;

अदुयत्त न० ( अदुत्तत्त्व ) सत्य वयनना उप  
अतिशयमानो २७ मे। अतिशय सत्य  
वचन के ३५ अतिशयो मे से २७ वॉ  
अतिशय. The twenty-seventh of  
the thirty-five Atisayas or  
supernatural manifestations of  
truthful speech सम० ३५,

अदुवा अ० ( अथवा ) अथवा, या या, अथवा  
Or (an alternative conjunction).

दस० ५, १, ७५, ६, २, भग० २, ३; ११,  
१; २१, १, ३५, १, उत्त० १, १७, २,  
१२, आया० १, १, ३, २६; १, ६, २, १८३;  
१, ६, ४, १६१, सूय० १, ४, १, २१,  
दसा० ६, ७;

अदुस्समाया व० क० त्रि० ( अद्वेष्यत् ) द्वेष नहि  
डरतो. द्वेष नहीं करता हुआ Not hostile,  
not hating. सूय० १, १२, २२;

† नोट—टीकाकारे “अथापरम्” जेभ सस्कृत अनुवाद कर्योछे. पणु तेना डरता “अथोत्तरम्”  
मा वरुं साधर्म्यं वधारे होवाथी तथा अर्थ पणु वधारे अंध जेसतो होवाथी ते स्वीकार्युं छे

+ नोट—टीकाकारने ‘अथापरम्’ इस प्रकार सस्कृत पर्याय दिया है, परन्तु उससे ‘अथोत्तरम्’  
में वर्णसाधर्म्य अधिक होने से तथा अर्थ भी अधिक संगत होने से ऐसा किया है.

× Note—This appears preferable to the commentator’s rendering  
“अथापरम्.”

अदूर त्रि० ( अदूर ) पासैनु, नजदीकनुं समीप-  
वर्ती; नजदीक का Not far off, in the  
vicinity कप्प० ४, ६३, भग० २, १,  
निसी० २, ४५. ( २ ) न० पासै; नजदीक समीप,  
नजदीक. vicinity; neighbour-  
hood. ज० प० ५, ११२, नाया० २, १२,  
१४, अत० ६, ३; भग० १, १, २, १, ३, ५, ५,  
६,—आगय त्रि० (—आगत) नजदीक आवेल,  
पासै आवेल नजदीक आया हुआ, समीप  
आया हुआ situated in the vicinity;  
not far off “ अदूरागए बहुसपत्ते  
अद्दाणपडिवरणे अतरापहे वट्टइ” भग० २, १,  
—सामंत पुं० (—सामन्त) अतिदूर के  
अतिनजदीक नहि आवे। प्रदेश-उचितप्रदेश  
ऐसा प्रदेश जो न तो बहुत दूर हो और न बहुत  
पास हो region at a moderate  
distance नाया० १, ३, १२, १४; १६,  
राय० १००, अत० ६, ३; ओव० भग० १,  
१; २, १, ४; ५, ६, ७, ६, १०, ६, ३३,  
१८, ७,

अदूसिय त्रि० ( अदूषित ) दूषण  
रहित Free from fault or  
blemish. पचा० ६, २०,

अद् पुं० ( अर्द-अर्घते गम्यतेऽनेनेत्यर्दः )  
आकाश आकाश The sky भग० २०, २;

अद् त्रि० ( अर्द्र ) बिलुं, लीलुं, सजल भीजा  
हुआ, गीला, सजल Wet, moist. पन्न०  
१७, ओघ० नि० ३६, राय० ५०; ओव० २२,  
—चंदण न० (—चन्दन) लीलु यदन-सुभु  
हरा चदन, बिना सूखा हुआ चदन green  
sandalwood, sandalwood-un-  
ction “ अद्दचदणाणुलित्तगत्ता इसिसि-  
लिधपुष्पगासाहं सुहुमाइ असकिलिद्वाइ  
वत्थाइ पचरपरिहिया ” ओव० २२,

अद्दइज्ज न० ( अर्द्रकीय ) सूयगडांगसूत्रना  
शील श्रुतरक्षणा छद्वा अभयननु नम, के

जेभां आर्द्रकुमार मुनिने गोशाला वगेरेनी  
साथे वाद थये छे तेनु वर्णन छे. सूत्रकृतांग  
सूत्र के दूसरे श्रुतस्कंध के छठे अध्याय का  
नाम, जिसमें आर्द्रकुमार मुनि का गोशाला  
वगैरह से जो विवाद हुआ है उसका वर्णन  
है The sixth chapter of the  
second Śrutaskandha of  
Sūtrakritāṅga treating of the  
discussion between Ārdraku-  
māra and Gośālā etc. सू० २, ६,  
५५, सम० २३, अणुजो० १३१;

अद्दककुमार पु० ( आर्द्रककुमार ) आर्द्रक  
पुरना आर्द्रकराजने आर्द्रक नामे कुमार, के जेने  
अभयकुमारे मोक्षजेल अक्षीश उपरथी  
जतिस्मरणु ज्ञान उत्पन्न थता, पोतानी  
भेजे दीक्षा लीधी ते पथी महावीरस्वामी  
पासे जता, रस्तामा गोशालाने समागम  
थता, तेनी साथे धरुा वाद थये छे  
गोशालाना आक्षेपोना उत्तर सारी रीते  
आप्या छे तेने विस्तार-शील श्रुत  
रक्षणा छद्वा अध्ययनमा छे आर्द्रकपुर नगर  
के आर्द्रक राजा का आर्द्रक नामक कुमार,  
जिसे कि, अभयकुमारद्वारा भेजे हुए पारि-  
तोषिक पर से ज्ञानिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हुआ  
और अपने आप दीक्षा ली उसके बाद महावीर  
स्वामी के पास जाते समय रास्ते में गोशाला  
के मिलने पर उससे बहुत विवाद हुआ  
और उसके आक्षेपों का उत्तर अच्छी तरह से  
दिया इसका विस्तृत वर्णन दूसरे श्रुत  
स्कंध के छठे अध्याय में है Ārdraka,  
son of Ārdraka king of Ār-  
drakapura got the knowledge  
of birth-recollection on the  
occasion of a present sent to  
him by Abhayakumāra and  
became a monk. On his way

to a visit to Mahāvīrasvāmī he met Gośālā and a long discussion took place between them in which he answered or rather refuted all the objections raised by Gośālā. This is related in the sixth chapter of the second Śrutaskandha of Sūyaga-lānga. सूय० नि० २, ६, १६२; अहगपुर. न० (आद्रकपुर) ये नामनु अनार्य देशनु प्राचीन नगर, के जया आर्द्रकुमारने। ज-म थये हुने। अनार्यदेश का प्राचीन नगर, जहाँ आर्द्रकुमार का जन्म हुआ था An ancient city of the Anārya country—the birth-place of Ārdyakumāra. सूय० नि० २, ६, १६२, अहसुच्छा. स्त्री० (आर्द्रसूर्क्षा) इ-दविशेष. कन्दविशेष. A variety of bulbous root. भग० ७, ३; अहव. त्रि० (अद्रव) नडि गाभेसुं यिना गला हुआ. Not melted. प्रव० १०७;—दहि न० (-दधि) इडलु दंडि; परापर जभी गयेद दंडि. गाढ़ा दही Fully curdled (and so solid) milk प्रव० २०७; अहव्व. न० (अद्रव्य) रूपीया आदि ऽपने अभाव रुपये आदि द्रव्य का अभाव Want of, lack of wealth; e g. money etc. पंचा० ३, ३६, √अहह धा० II. (अः+इह्) पडवुं, तगु. तलना, पकाना. To bake; to fry. अहहेद् उवा० ३, १३२; अहहेमि. उवा० ३, १२६; १३५; ४, १४७; ७, २२७; अहा स्त्री० (आर्द्रा) अर्द्रानक्षत्र आर्द्रानक्षत्र. The constellation Ārdrā “दो अहा खलु” ठा० २, ३; “अहा खलु नकखत्ते”

सू० प० १०; अणुजो० १३१; सम० १; विशेष० ३४०८; जं० प० ७, १५५;

\*अहाग पुं० (आदर्श) अरीसो; दर्पण; आरसी; तडतो. कौच, दर्पण. “a looking glass; a mirror. “अहायं पेहमाणे मणुस्से किं अहायं पेहति” पन्न० १५; नंदी० ५४; अणुजो० १६; (२) इडिडि भणु. रफटिक माणे crystale. ओव० नि० २१५; —परिण. पुं० (-पन्न) प्रश्नविद्याविशेष-ने विद्यावडे अरीसामां देवतानुं आहुवान इरी तेनी भारइत जवाण अपावयमां आवे. प्रश्नविद्याविशेष, जिसके द्वारा दर्पण में देवता का आव्हान करके उसके द्वारा प्रश्न का उत्तर दिलाया जाता है. the science of getting questions answered by a deity invoked in a mirror ( २ ) प्रश्नव्याकरणनु अरीसाना प्रश्नविद्यावाणुं आहुमुं अध्ययन, के ने हाड विछेद थड गयेद छे. प्रश्नव्याकरण के दर्पण का प्रश्नविद्यावाला आठवो अध्ययन, जिसका वर्तमान में विच्छेद हो गया है. the eighth chapter, which is now extinct, of Praśna Vyākarna dealing with the above science. ठा० १०,—समाण. त्रि० (-समान) दर्पणनी पेडे साधु उपर निर्भल लाव राभी तेना डिताडितने दर्शयनार आवड. दर्पण के समान साधु के ऊपर निर्मल भाव रखकर उसके हितहित को दिखलाने वाला श्रावक. ( a layman ) pointing out with transparent love and honesty things beneficial or otherwise, to a monk. ठा० ४, ३;

\*अहाय न० (आदर्श) लुथे “अहाग” शब्द देखो “अहाग” शब्द Vide “अहाग” पन्न० १५; अहिज्जमाण त्रि० (आर्द्रायमान) स्नेहथी आर्द्र-कामण थतु, स्नेहार्द्र. स्नेह से कैमल

होता हुआ, स्नेहार्द्र Melting with affection; tender with affection

आया० १, ५, ३, १५५,

**अहिस्स** त्रि० ( अद्दश्य ) आंणे जेवामां न आवे तेजुं जो देखने में न आवे.

Invisible. प्रव० १०४०;

**अद्द** पुं० ( अध्वन् ) मार्ग; रस्ते। रास्ता, मार्ग  
A road; a way नाया० १४, भग० २,

१, २५, ५; उक्त० ६, १३; सूय० १, १, २, १६,

**अद्द** न० ( अर्द्ध ) अर्ध; अर्धुं, जे सरभा भाग; द्वितीयाश आधा; दोसमान भाग; द्वितीयाश A half, one of two halves.

“ अद्दगुलसोणिको जेट्ठप्पमाणो असी भणियाओ ” ज० प० ३, ओव० १०; अणु-

जो० १६, उक्त० २६, ३५, ३४, ३४; पन्न० २; सम० १, पिं० नि० ६४३, ६५०; राय० ५३;

भग० १, ६, ७, २, ८; १०, ३, २; ७, ७, १, २०, २; निर० १, १,—आढय पुं०

(—आढक) आढक—मगधदेशमां प्रसिद्ध मान-विशेष, तेना अर्धे भाग मगधदेश में प्रसिद्ध

आढक नामक मापविशेष का आधा हिस्सा half of an Ādhaka, a measure

of weight current in the Magadha country राय० २७२,—आसन

न० (—आसन) अर्धासन, अर्धुं आसन अर्धासन, आधा आसन a half-seat.

नाया० १; १४,—उद्द त्रि० (—चतुष्क) साडा त्रयु; साडे तीन three and half

“ अद्दधुट्टाओ कुमारकोटिओ ” नाया० १६, पण्ह० १, ४, जीवा० ३, ३, नंदी० ५०, विशेष

६६३, नाया० ध० २, निर० ५, १; प्रव० १०६८,—उरुग न० (—उरुक) साध्वीने

आथणपर धारणु करवानु पत्र; साध्वीना २५ ङिपकरणुमानुं अेक. साध्वी का कटिपर

धारण करने का वस्त्र, साध्वी के २५ उपकरणों में से एक उपकरण. a loin-cloth

of a nun, one of the twenty-five articles permitted to a nun. प्रव०

५४१, ओघ० नि० ६७६,—कारिस्स पुं० (—कर्ष)

अेक पलने आधे भाग, मगधदेशमां प्रसिद्ध अेक प्रकारने तेल एक पल का आठवाँ

हिस्सा, मगधदेश में प्रसिद्ध एक प्रकार का माप. a measure of weight current

in Magadha, equal to the eighth of a Pala अणुजो० १३३,—कविट्ट

पुं० (—कपित्थ) डेठ डेलतुं अड-धीयुं कवीट फल का आधा हिस्सा.

( form of ) half a wood-apple. “अद्दकविट्टसठाणसंठिय”सू० प० १०; जं० प०

७, १६५,—काय पुं० (—काय) अर्धुं शरीर; शरीरने अर्धे भाग शरीर का आधा हिस्सा.

half of a body राय० ११८;—कुडव पुं० (—कुडव) लुओ “अद्दकुलव” श० ६.

देखो ‘अद्दकुलव’ शब्द. vide “अद्दकुलव”. राय०—कुलव. पुं० (—कुडव) मगधदेश

प्रसिद्ध धान्यने अेक माप—मानविशेष. मगधदेश में प्रचलित धान्य का एक मापविशेष.

a measure of weight current in Magadha. राय०—कौस पुं०

(—कौश) अर्धे डेठ-गाडि, अेक हजार धनुष्य प्रमाण अर्धगाडि, अेक माप आधा कौस, एक हजार धनुष्यप्रमाण क्षेत्र, एक माइल.

a mile; half of a Krośa ( two miles) जं० प०—घडय पुं० (—घटक)

अर्धे धडे आधा घडा. half a pot. “घडए य अद्दवडए य कलसए य” उवा०

७, १८४,—अद्द त्रि० (—अन्द्र) अर्धयन्द्राकार अर्धचन्द्राकार of the shape of

half-moon. सम० प० २१३, (२) अडविशेष ग्रहविशेष a particular planet.

जीवा० ३, ३, (३) अर्धयन्द्र आकारने सीडी-प-गथीया. अर्धचन्द्र के आकार की सीडी.

a stair-case of the form of half moon. " मणिकयागरयणधूमियविडकजालद्वचंद्र" नाया० १, परह० १, १;—चक्रवा-  
ल न० (-चक्रवाल) गतिविशेष, जेभां अर्ध  
युक्त पडे ऐवी गति. गतिविशेष, अर्धचक्राकार  
में होने वाली गति semi-circular mo-  
tion ठ० ७;—चक्रवाला स्त्री० (-चक्र-  
वाला) अर्धयुक्त-गोला आकार श्रेणी अर्ध  
गोलाकार श्रेणी a semi-circular line  
भग० २५, ३; ३४, १, ठ० ७, —चक्रि पुं०  
(-चक्रिन्) युक्तवर्ती इरता जेनी अर्धी सत्ता  
होय ते, वासुदेव चक्रवर्ती की अपेक्षा आधी सत्ता  
वाला one whose power is half  
that of Chakravartī; a Vāsu-  
deva. क० गं० १, १२, —च्छिकडकल  
न० (-अक्षिकटाक्ष) अर्धी आप भास्वी ते,  
अर्धु उटाक्ष आधी आँख का मारना, आधा  
कटाक्ष a glance with half an eye.  
" अद्भच्छिकडकलचिद्विष्टहिं लूसमाणा "  
जीवा० ३;—जाम पुं० (-याम) अर्ध  
पहेर आधा प्रहर. half a Prahara  
( a Prahara=3 hours). गच्छा० ३,  
—जोयण. न० (-योजन) जे गाडि, अर्धु  
जेवन. दो कोस, आधा योजन. half a  
Yojana ( eight miles), four  
miles निसी० ११, ३; वेय० ४, ११; १२;  
जं० प० १, ४;—द्व. त्रि० (-अष्ट) साड सात;  
७। साडे सात. seven and a half  
भग० ११, ११;—द्वम. त्रि० (-अष्टम)  
साड सात; ७। साडे सात seven and  
a half. "अद्भहमाय य राइंदियायं च  
विद्वकंतायं" ठ० ६, कप्प० १, ८, जं० प०  
२, ३१;—द्वमसय. न० (-अष्टमशत)  
साड सात सौ. साडे सात सौ; ७५० seven  
hundred and fifty, 750 कप्प० ६,  
३६५, —णाराय न० (-नाराच-अर्द्ध ना-

राचसुभयतो मर्कटवन्धो यत्र तदर्द्धनाराचम् )  
जेते ऐड पउपे मर्कटवन्धन अने पीजे  
पउपे पीवी होय तेयुं डाडकानुं अधारणु; ७  
संधयणुमानु योयुं संधयणु जिसके एक ओर  
मर्कटवन्धन और दूसरी ओर खील हो, ऐसा  
शरीर की अस्थियों का संगठन, छः संहननों  
में से चौथा संहनन a physical consti-  
tution in which the bones have  
become partially loosened and  
so deprived of their strength;  
the fourth of the six varieties of  
bone-structure क० गं० १, ३८; ठ० ६, १;  
—णारायसंघयण. न० (-नाराचसंहमन)  
लुगो "अद्भणाराय" शब्द देखो "अद्भणाराय"  
शब्द vide "अद्भणाराय." जीवा० १;  
—तुला स्त्री० (-तुला) पचास पलनी  
अर्धतुला; प्राचीन समयमां मगधदेशप्रसिद्ध  
तोलाविशेष. पचास पलों की अर्धतुला, प्राचीन  
समय में मगधदेश में प्रसिद्ध एक माप. a  
measure of weight prevalent  
in the Magadha country equal  
to fifty Palas अणुजो० १३३;  
—तेरस त्रि० (-त्रयोदश) साड आर; १२।।  
साडे बारह twelve and a half विना०  
१, भग० ३, ७; १०, ६, सु० च० ३, २०; प्रब०  
१८४, जं० प० ४, ७४;—द्व न० (-अर्द्ध)  
अर्द्धानुं-अर्ध; पा भाग, योथो भाग. आधे  
का आधा, पाव हिस्सा, चौथाई. a quarter;  
half of a half; a fourth. भग० १४,  
६; पिं० नि० ६४३, क० प० १, ७७, —नवम.  
त्रि० (-नवम) साड आठ. साडे आठ,  
eight and a half. कप्प० १, २; ७,  
२२७;—पंचम त्रि० (-पञ्चम) साड आर;  
४।। साडे चार four and a half. भग०  
१४, ६, पञ्च० ४, जीवा० १;—पंचममुहुत्त-  
न० (-पञ्चममुहुत्त) आधाड सुदि पुनमे

१८ मुहूर्तना द्विवस होय त्यारे साध आर  
मुहूर्त—८ घडी परिमित अेक प्रहर थाय ते;  
द्विवसना अेथे लाग आषाढ सुदी १५ को  
१८ मुहूर्त का दिन होता है, तब साँचे चार मुहूर्त-  
६ घडी परिमित जो एक प्रहर होता है वह,  
दिन का चौथाई भाग the fourth part  
of a day, equal to four and a  
half Muhūrtas, taking the  
whole day to consist of eighteen  
Muhūrtas as on the full-moon  
day of Āṣāḍha. “जयाणं भंते । उद्धो-  
सिया अद्भपंचममुहुत्ता दिवसस्स राष्ट्रए वा  
पोरिसी भवइ ” भग० ११, ११,—पल न०  
(—पल ) अे कर्षप्रमाण, अर्ध पल आधा  
पल, दो कर्षप्रमाण a measure of  
weight equal to two Karsas.  
अणुजो० १३३,—पलियंका स्त्री० (—पर्यङ्का)  
अधधी पलाहीअे अेसनुं ते, अेक पग साथण  
उपर अने अेक पग नभीन उपर मुकनुं ते  
आधी पालकी मारकर बैठना, एक पैर जाघ  
पर और एक जमीन पर रखकर बैठना, आधा  
पद्मासन a sitting posture with  
crossed legs, one touching the  
ground and the other resting  
on the thigh ठ० ५, १,—बल न०  
(—बल ) अर्धु अक्ष आवा बल half the  
strength क० गं० १, १२,—भरह. पु०  
(—भरत ) भरतभंडने अर्धे लाग भरत  
खण्ड का आधाहिस्ता half of Bharata-  
khaṇḍa. “ अद्भरहस्स सामिका  
धीरवित्तिपुरिसा ” परह० १, ४, जं० प०  
नाया० १६,—भरहृप्पमाण त्रि० (—भरत-  
प्रमाण ) भरतक्षेत्रनु अर्धे प्रमाण, अर्धा  
भरतक्षेत्रप्रमाणे भरतक्षेत्र के आधे हिस्से  
जितना. of the measure of half of  
Bharatakhaṇḍa. ठ० ४, ४,—भरह-

प्पमाणमेत्त त्रि० (—भरतप्रमाणमात्र-  
अर्धभरतस्य यत्प्रमाणं तदेव मात्रा-प्रमाण  
यस्य स तथा) अुअे “अद्भरहृप्पमाण” श०फ.  
देखो “अद्भरहृप्पमाण” शब्द. vidē  
“अद्भरहृप्पमाण” “अद्भरहृ-  
प्पमाणमेत्तं वौदिविसेयं विसपरिणयं” ठ०  
४, ४;—भार पु० (—भार ) अउधे लाग;  
तोलविशेष आधा भार, तोलविशेष. a  
particular measure of weight  
अणुजो० १३३,—मंडल न० (—मण्डल)  
भंडने अर्धे लाग मण्डल का आधा हिस्ता.  
a semi-circle, a hemi-sphere  
सू० प० १,—मागह त्रि० (—माग-  
घ ) धरविशेष. गृहविशेष. a kind  
of a house जीवा० ३, ३;  
—मागही स्त्री० (—मागधी-मागध  
भाषालक्षणं किञ्चित् किञ्चिच्च प्राकृत-  
भाषालक्षणं यस्यामस्ति सा, अर्द्धं मागध्या  
इति व्युत्पत्त्याऽर्धमागधी ) प्राकृतभाषानी  
अेक पेटा भाषा, ३ न्ने महावीर स्वा-  
मीना वपतमा भगधदेशना अर्धे लागभा  
अेलाती हुती अने न्ने भाषामा तीर्थक्षेत्रांअे  
उपदेश आप्थे छे ते भाषा, नैन आगमनी  
भूण भाषा प्राकृतभाषान्तर्गत एक उपभाषा,  
जो कि, महावीरस्वामी के समय में मगधदेश  
के आधे हिस्से में प्रचलित थी और जिस  
भाषा में तीर्थक्षेत्रों ने उपदेश दिया है, जैनागम  
की मूलभाषा one of the varieties of  
the Prākṛita language current  
in half of the Magadha country  
in the time of Mahāvīrasvāmī;  
the original language of  
Jaina scriptures “ भगव चणं  
अद्भमागहीए भासाए धम्मसाइक्खइ ” सम०  
३४, “अद्भमागही भासा भासिज्जमाणा  
विसिज्जइ” भग० २, ४, पत्र० १, ओव० ३४,

—मासिआ खी०(-मासिका) अर्धं मासु, मासुनुं द्वितीयाश; धान्येनो मापविशेष आधी मानी, धान्य का मापविशेष half a Māṇī; a measure of weight for corn. अणुजो० १५३;—मसणी. खी० (-मासणी ) अर्धं मासु, १२८ पक्षप्रमाण आधी मानी, १२८ पक्षप्रमाण. a measure of weight equal to 128 Palas. अणुजो० १३२;—मास पुं० (-मास) अर्धं मास, पक्ष अर्धं मान; पक्ष, पक्षवादा half a month; a fortnight. विशेष० ६१०, दसा० ६, ४; भग० १५, १, प्रव० १३२४,—मासि-अ-य त्रि० (-मासिक) पाक्षिक; पक्षसंपंधी पाक्षिक; पक्षसम्बन्धी fortnightly “अद्ध-मासिषु कत्तरि मुदेसि ? ” कण्ठ० ६, ५७, ( २ ) पाक्षिक तप; पंढर द्विसना भोगा उप-वास इत्या ते; पञ्चवाडीआनु तप पाक्षिक तप, पंढर दिन का इकट्ठा उपवास करना a continuous fast of fifteen days “ मासद्धमासिषुं तु, आहारेणं तव चरे ” उक्त० ३६, २५३; भग० २५, ७, ओव० १६,—राजिय पुं०(-राज्यक) अर्धं राज्येनो धणी, अर्धं राज्येनो म विद्ध आवे राज्य का स्वामी owner of half a kingdom “ तस्यं अहं तुह्यं अद्धराजिय करिस्सामि ” विवा० ६;—रत्त न० (-रात्र) मध्यरात; मध्यरात्रि आधी रात, मध्यरात्रि midnight; mid- night time सु० च० १०, ७३; भग० ११, ११, नाया० १; २, १२; ठा० ४, २, निसी० १६, २;—रत्तकाल पुं० (-रात्रकाल) अर्द्धरात्रिने समय, मध्यरात्रिने वधत आधी रात का समय, मध्यरात्रि का समय. midnight time नाया० २,—रत्तकाल-समय. पुं० (-रात्रकालसमय) अर्धी रातने समय, मध्यरात्रिने वधत. आधी रात का समय midnight time “अद्धरत्तकाल-

समयसि सुत्तजागरा ओहरिमाणी ओही रमाणी ” भग० ११, ११, विवा० २; ६ —विसुद्ध त्रि०(-विशुद्ध) अर्धं शुद्ध अर्धं अर्धु अशुद्ध आधा शुद्ध और आधा अशुद्ध. partly correct and partly in- correct; partly pure and partly impure. क०गं० १, १४,—वेयाली खी० (-वैतालिकी) वैतालिक विद्याने समावनारी-दयावनारी विद्या वैतालिक विद्या को दबाने वाली विद्या an art enabling one to counteract Vaitālika-Vidyā i.e. science dealing with ghosts, magic etc. सूय० २, २, ३०;—सम. न० (-सम) जे अरणुमा सरभा अक्षर होय अने जेमां सरभा न होय तेवो छेद ऐसा छन्द, जिसके दो चरणोमे तो समान वर्ण हों और दो चरणों में असमान वर्ण हों a class of meters in which the first and third and the second and fourth lines have the same syllables and Ganas अणुजो० १२२, ठा० ७; अद्धद्धा. खी० (-अद्धाद्धा-अद्धाया अद्धा अद्धाद्धा) दिवस या रात्रिने ओड भाग, प्रहर वगेरे दिन या रात्रि का एक भाग, प्रहर वगेरह A part of a day or a night; e g. a Prahara etc पक्ष० ११; ठा० १०; प्रव० ६००;—मीसय न० (-मिश्रक) दिवस रात्रि आशी मिश्र भाषा ओलपी, जेभ पहोर दिवस यजे होय छता इहेनुं के अपोर तो थर्ध गभा छत्यादि, सत्य मृषा भाषाओ ओड प्रधार. दिन और रात्रि के संबंध में मिश्रित भाषा बोलना, जैसे कि, प्रहर दिन चढ़ा हो तो यह कहना कि, दुपहर हो गया, इत्यादि सत्यमृषा भाषा का एक भेद. speech which is a mixture of truth and falsehood in relation to-day



and night, e g saying that it is mid-day when it is not yet mid-day; a variety of speech partly true and partly false ठ० १०;

**अद्भुतपेडा** स्त्री० ( अद्भुतपेडा ) साधु गृहस्थतां धरोनी आरे दिशाभा आर पंक्ति कल्पी, तेमाथी अप्पे पंक्तिने छेडे ंहोरे, वयमा प दी राप्पे ते, गोचरीनी आठ वीथीभानी छडी वीथी गोचरी की आठ वीथियों में से छठी वीथी, जिसमें साधु गृहस्थ के घरों की चारों दिशाओं में चार कल्पित पंक्तिया बनाकर उनमें से दो दो पंक्तियों छोड़कर भिक्षा ग्रहण करता है A way of begging alms in wich a Sādhu the dwellings of householders into four imaginary lines and begs food from the ends of every two succeeding lines, the sixth of the eight Vithis (modes or paths of movement) of Gocharī ( proceeding to alms ) ठ० ६, १, दसा० ७, १, प्रव० ७५५,

**अद्भुतसागर.** पुं० ( अद्भुतसागर ) अद्भुत सागरोपम, दश डोड अध्या पत्योपम परिमित काण्विभाग, कायस्थिति अने कर्मस्थितिमां आ सागरोपमनो उपयोग थाय छे अद्भुतसागरोपम, दस करोड अद्भुत पत्योपम परिमित कालविभाग; कायस्थिति और कर्मस्थिति में इस सागरोपम का उपयोग होता है Addhā Sāgaropama; 10 x crore x Addhā Palyopama of time, ( this Sāgaropama of time is used as a unit in calculating the duation of Kāyasthiti and Karmasthiti ) "सुहुमेण उ अद्भुतसागरस्स मायेणं सब्बजीवाणं " प्रव० १०४४,

**अद्भुतहार.** पु० ( अद्भुतहार ) नवसरो डार,

गुणामां पहेश्वानुं आलरणविशेष नौ लङ्गहार, नौ लङ्गों का हार, गले में पहिरने का एक आभरण A kind of necklace. कप्प० ४, ६२, ओव० २७, जीवा० ३, ३; भग० ११, ११, राय० १८६, ज० प० ५, ११६; निसी० ७, ८, दसा० १०, १, ( २ ) अे नामनो अेड द्वीप अने अेड समुद्र इस नाम का एक द्वीप और एक समुद्र. name of an island and a sea जीवा० ३,—**ओभास** पु० ( -अवभास ) अे नामनो अेड द्वीप अने अेड समुद्र इस नाम का एक द्वीप और एक समुद्र. name of an island and a sea जीवा० ३;—**ओभासभद्र** पु० ( -अवभासभद्र ) अर्धहारावलास द्वीपनो अधिपति देवता. अर्धहारावभास द्वीप का अधिपति देव the presiding deity of the Ardha-hārāvabhāsa Dvīpa. जीवा० ३;—**ओभासमहाभद्र** पु० ( -अवभासमहाभद्र ) अर्धहारावलास द्वीपनो अधिपति देवता अर्धहारावभास द्वीप का अधिपति देव the presiding deity of the Ardha-hārāvabhāsa Dvīpa जीवा० ३,—**ओभासमहाचर** पु० ( -अवभासमहाचर ) अर्धहारावलास समुद्रनो अधिपति देवता अर्धहारावभास समुद्र का अधिपति देव. the presiding deity of the Ardha-hārāvabhāsa ocean जीवा० ३,—**ओभासवर** पुं० ( -अवभासवर ) अर्धहारावलास समुद्रनो अधिपति देवता अर्धहारावभास समुद्र का अधिपति देव the presiding deity of the Ardha-hārāvabhāsa ocean जीवा० ३;—**भद्र.** पु० ( -भद्र ) अर्धहारा द्वीपनो अधिपति देवता अर्धहार द्वीप का अधिपति देव. the presiding

deity of the Ardhahāra Dvīpa.

जीवा० ३;—महाभद्र पुं० (—महाभद्र )

अर्धहार द्वीपने अधिपति देवता. अर्धहार

द्वीप का अधिपति देव. the presiding

deity of the Ardhahāra Dvīpa.

जीवा० ३;—महावर पुं० (—महावर )

अर्धहार समुद्र अने अर्धहारवर समुद्रने

अधिपति देवता. अर्धहार समुद्र और अर्ध

हारवर समुद्र का अधिपति देव. the

presiding deity of the Ardhahāra

and Ardhahāravara

oceans. जीवा० ३;—वर पुं० (—वर )

अर्धहार समुद्रने अधिष्ठातृ देवता अर्ध-

हार समुद्र का अधिष्ठातृ देव. the

presiding deity of the Ardhahāra

ocean. जीवा० ३; ( २ ) अ

नामने अेक द्वीप अने अेक समुद्र एक द्वीप

और एक समुद्र का नाम. name of an

island, also, the name of an

ocean. जीवा० ३,—वरभद्र पुं० (—वर-

भद्र ) अर्धहारवर द्वीपने अधिष्ठाता देवता.

अर्धहारवर द्वीप का अधिष्ठातृ देव. the

presiding deity of the Ardhahāra

and Ardhahāravara Dvīpa जीवा० ३,

—वरमहावर. पुं० (—वरमहावर ) अर्ध

हारवर समुद्रने अधिष्ठाता देवता अर्धहारवर

समुद्र का अधिष्ठातृ देव. the presid-

ing deity of the Ardhahāravara

ocean जीवा० ३,—वरवर पुं० (—वर

वर ) अर्धहारवर समुद्रने अधिपति देवता

अर्धहारवर समुद्र का अधिपति देव. the

presiding deity of the Ardhahāra

and Ardhahāravara ocean. जीवा० ३;

अज्ञा. स्त्री० ( अघ्वन् ) मार्ग; रस्ते. मार्ग,

रास्ता. A road “ अघो अघं पहं गितो,

वरमन्दाणुगच्छद्” सूय० १, १, २, १६, उत्त०

६, १३; ओव० ३६; ४३; भग० १५, १;

अज्ञा. स्त्री० ( अघ्वन् ) भूत, भविष्य अने

वर्तमान काण भूत, भविष्य और वर्तमान

काल. Time, past, present and

future. अणुजो० १७; भग० ७, २; १६,

८; ओव० ४३; ( २ ) काण आश्री मिश्र

वयन भोलवुं, जेम रात छतां डेधने कडेवुं डे

“उठ उठ दिवस उगी गये;” मिश्रभाषाने

नवमो प्रकार. मिश्रभाषा का ६ वॉ प्रकार; काल

के बारे में मिश्र वचन कहना, जैसे रात रहते हुए

भी कहना कि, “उठ उठ दिन निकल आया ”

the 9th variety of speech

partly true and partly false;

viz that relating to time; e. g.

saying to another “ Get up, it

is day ” while yet it is night.

प्रव० ६००;—ओवमिय न० (—ओपम्य-

ओपम्यमुपमा पल्यसागररूपा सत्प्रधाना

अज्ञा-कालोऽद्वौपम्यम् ) पल्योपम, साग-

रोपम आदि उपमाकाण; उपमा विना जेतुं

अलुण न थर्ध शके तेवे काण. पल्योपम,

सागरोपम आदि उपमाकाल, उपमा के बिना

जिसका ग्रहण न हो सके वह काल long

periods of time such as Palyo-

pama Sāgaropama etc. which

are used as units to convey

the idea of a certain period

“दुविहे अद्वौवमिय पञ्जते, तंजहा-पतिओव-

मे चव सागरोवमे चव ” ठ० २, ४;

—काल पुं० (—काल ) सूर्यक्रियावाणा

समयक्षेत्र-अदीद्वीपमां वर्तते काण. सूर्य

क्रियाविशिष्ट समयक्षेत्र-अद्वै द्वीपवर्ती काल.

time in Samayaksetra ( i. e.

Adhī-Dvīpa ) marked by the

motion of the sun e g. setting,

rising etc. भग० ११, ११, ठ० ४, १;

—छेअ. पुं० (—च्छेद ) कर्मनी स्थितिरूप  
 काणतो छेद-उच्छेद; स्थितिघात. कर्म की  
 स्थितिरूप काल का उच्छेद; स्थितिघात. the  
 wearing out or destruction of  
 the time which constitutes  
 the duration of Karma ( from  
 the point of view of its being  
 worked off ) क० प० ४, ३२,  
 —पञ्चकखाण. न० (—प्रत्याख्यान ) काण-  
 नी मर्यादा आधी पञ्चखाणु करवा ते; नोका-  
 रसी, पोरसी वगैरेनां पञ्चखाणु, पञ्चखाणु-  
 नो दशभो प्रकार काल की मर्यादा बांधकर  
 प्रत्याख्यान करना; नोकारसी, पोरसी वगैरह का  
 प्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान का १० वॉ प्रकार  
 taking a vow i e. Pachcha-  
 khāṇa for limited periods  
 of time; e. g. Pachchakhānas  
 known as Nokārasī, Porasī,  
 etc.; ( This is the 10th variety  
 of Pachchakhāna ) प्रव० २०१,  
 —पज्जाय. पुं० (—पर्याय ) काणतो पर्याय  
 काल का पर्याय. modifications of  
 time. ठा० ७;—परिवसि. स्त्री०  
 (—परिवृत्ति ) काणनुं परावर्तन. काल का  
 परावर्तन. turning back of the  
 wheel of time. क० प० ५, ३४,  
 —मीसय न० (—मिश्रक ) काण आश्री  
 सत्यमृषा भाषानो अेक प्रकार, अेभके दिवस  
 होय छतां “उतावण करे, रात पडी गछ” अेभ  
 कडेवु ते काल का आश्रय कर सत्यमृषा भाषा  
 का एक भेद, जैसे दिन होने पर भी यह कहना  
 कि, ‘ जल्दी करो रात होगई ’ a kind of  
 speech in relation to time half  
 true and half false; e.g. saying  
 that it is night when it is yet  
 day time, ठा० १०;—मीसिया स्त्री०

(—मिश्रिता ) लुब्धो “ अद्धामीसय ” श०६.  
 देखो “ अद्धामीसय ” शब्द vide “ अद्धा-  
 मीसय ” पञ्च० ११;—रूव न० (—रूप-  
 अद्धा काल, तस्य रूपं स्वभावोऽद्धारू-  
 पम् ) काणतो स्वभाव. काल का स्वभाव  
 nature of time पंचा० ५, ३;  
 —समय-अ पुं० (—समय ) काणतो  
 अविभाज्य-अणुभां अणुि अंश काल का  
 अविभाज्य-विभाजित न हो सके ऐसा सूक्ष्म  
 अंश. the smallest indivisible part  
 of time अणुजो० ६८, भग० २, १०;  
 ( २ ) वस्तुनु परिवर्तन करनार अेक द्रव्य;  
 छ द्रव्यभानु काणनामे अेक द्रव्य वस्तु का  
 परिवर्तन करने वाला एक द्रव्य, छ द्रव्यों में से  
 काल नामक एक द्रव्य. time, regarded  
 as one of the six substances;  
 a substance which is the  
 cause of changes in things उक्त०  
 १६, ६, अणुजो० १३१; पञ्च० १; भग०  
 १०, १; ११, १०, २५, ४,

अन्दाउअ-य. पुं० न० ( अद्धायुष ) काणप्रधान  
 आयुष्य, मनुष्य अने तिर्य्यनुं आयुष्य काण-  
 प्रधान छे, अेटले के अेक अवयवा पछी पछु  
 काधने पुन तेव अवयवा यतां मनुष्य के तिर्य्यनुं  
 आयुष्य द्विती वेदाय छे-भोगवाय छे काल  
 प्रधान आयुष्य, मनुष्य और तिर्य्यच का आयुष्य  
 कालप्रधान है अर्थात् एक भव पूर्ण होने पर  
 किसीको पुनः वही भव प्राप्त होने पर मनुष्य  
 या तिर्य्यच का आयुष्य फिर से भोगना पड़ता  
 है Life period of human beings  
 and animals In case of their  
 re-birth in the same class their  
 life-period is the same. “ दोरणं  
 अद्धाउए परयत्ते तजहा-मणुस्सायं चैव  
 पंचिदियतिरिक्खजेणियायं चैव ” ठा०  
 २, ३, ४;

अद्धारण न० ( अध्वान ) प्रयाणु करवु ते; मुसफ़री करवी ते मुसाफ़िरी करना. यात्रा करना Travelling “अद्धारणेहिं सुहेहिं पातरासेहि जेणेव साल्लाढवी चोरपल्ली तेणेव उवागच्छह” विवा० ३;

अद्धारण पु० ( अध्वन् ) मार्ग; रस्तो. मार्ग, रास्ता. A road; a way वेय० १, ४५; श्रौव० ३८, गण० १४, नाया० १४, १५, वव० ८, ४, १३; प्रव० ५१६, —गमण न० ( -गमन ) मार्गमां पंथ करवे ते; विहार करवे ते विहार करना. travelling on foot ( by an ascetic ) “शरण्यथ अद्धारणगमणे खो कप्पइ” श्रौव० —पडिवरण त्रि० ( -प्रतिपन्न ) मार्गने पामेद, पथे पडेद रास्ते लगा हुआ, मार्गप्राप्त. on the road भग० २, १;

अद्धारपलिय. न० ( अद्धारपल्य ) अेक जेनेने लामो, पडोणे अने उडे कुवे वाणाअथी भरेले होय, तेमाथी से से वरसे अेक वाणाअ डाढता जेटला वपतमा आली थाय तेटले वपत एक योजन का लम्बा, चौडा और ऊंडा बान्नामो से भरा हुआ कूप हो उसमे से सौ सौ बरसमें एक २ बालाग्र निकालने मे जितना समय लगता है उस समय का नाम a pit one Yojana in length, one Yojana ( i. e. eight or nine miles ) in breadth and one Yojana in depth is to be filled with the finest points or ends of hair. At the close of every period of 100 years one point of hair is to be taken out The time required to empty the whole pit in this way constitutes the division of time known as Addhā-Palya. प्रव० १०३०;

अद्धारपल्ल. न० ( अद्धारपल्य ) लुओ “ अद्धारपलिय ” श०६. देखो “ अद्धारपलिय ” शब्द. Vide “ अद्धारपलिय. ” प्रव० १०४३;

अद्धारमलय न० ( अद्धारमलक ) आरी आरनुं मेर अथवा पीजुं खारी जुवार के मोर. The blossoms of the Juvāra having a saltish taste. प्रव० २२४;

अद्धारि. स्त्री० ( अधृति ) अधीराध; धीरने अभाव धैर्य का अभाव, अधीरता. Lack of patience. पि० नि० ४८७;

अद्धारि. त्रि० ( अद्धारिचतुर्थ ) साडा त्रयु. साडे तीन Three and a half कप्प० ६, १६४; —सय. न० ( -शत ) साडा त्रयु से. साडे तीन सौ, ३५०. three hundred and fifty ; 350. कप्प० ६, १६४;

अधुव त्रि० ( अधुव ) लुओ “ अधुव ” श०६ देखो “ अधुव ” शब्द Vide “ अधुव ”. श्रौव० १४, परह० १, ३, क० गं० ५, ७; क० प० ७, १; —उदया. स्त्री० ( -उदया ) जेने उदय विच्छिन्न थया पछी पणुद्रव्य, क्षेत्र, काण, भाव अने लवरूपहेतुना सांनिध्यथी पुन उदय थाय जेवी कर्मप्रकृति जिसका उदय विच्छिन्न होने के बाद भी फिर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और स्वरूपहेतु के सांनिध्य से उदय हो ऐसी कर्मप्रकृति a variety of Karma coming again into rise through the vicinity of contributory causes like substance, space, time etc ; a Karmic variety of an uncertain period of maturity; a variety of Karmic ( Prakriti ) nature. Though the development of it is at a stand still, yet on account of its close contact with substance, space, time and

the desire for worldly existence, it matures again क० ग० ५, ७;—**वंधिणी**. स्त्री० (—बन्धिनी ) लुओ 'अधुवबंधी' शब्द देखो 'अधुवबंधी' शब्द vide "अधुवबंधी." क० प० २, १०२;—**संतकम्म** न० (—सत्कर्मन् ) अधुव सत्तावाणा कर्म, जे कदाय बंधाय कदाय न बंधाय जेवी कर्म-प्रकृति अधुव सत्ता वाला कर्म, कदाचित् बंध होने वाली और कदाचित् बंध न होने वाली कर्मप्रकृति a Karmic variety which may or may not come into existence. क० प० २, ७२, —**सक्कम्मिया** स्त्री० (—सत्कर्मिका ) धुव सत्कर्मनी प्रतिपक्ष प्रकृति धुव सत्कर्म की प्रतिपक्ष प्रकृति a Karmic variety contrary in nature to Dhruvasatkarma क० प० २, ३७, —**सत्तागा** स्त्री० (—सत्ताका ) जेनी सत्ता काल वधते होय के.ध वधते न होय जेवी कर्मप्रकृति ऐसी कर्मप्रकृति, जिसकी सत्ता किसी समय में हो और किसी समय में न हो. a variety of Karma with uncertain periods of existence क० ग० ५, १,—**साहण** न० (—साधन ) अनुभवान्म वगेरे अनित्य साधन; अधुव हेतु अनुभवजन्म आदि अनित्य साधन; अधुव हेतु. transitory, uncertain means of accomplishment like birth in the human body etc. पंचा० १२, ४०,

**अधरण** त्रि० ( अधर्ण्य ) निन्द, निन्दापात्र,

सौभाग्यहीन निन्द्य, निन्दा का पात्र; सौभाग्य हीन. Blameworthy, unfortunate. "अधरणसूलगाभिन्नदेहा" परह० १, ३, "नरगा उवट्टिया अधरणे ते विय दीसति" परह० १, १, नाया० २, ६; १६, राय० २७६; पंचा० ६, २७, निर० १, १,

**अधम्म** त्रि० ( अधम्म ) डलकुं; नीयुं; दुष्ट अधम्मः नीच, दुष्ट. Mean, low, wicked. "अहो वयइ कोहेयं, माणेण अधम्मा गइ" उक्त० ६, ५४;

**अधम्म** पुं० ( अधर्म ) स्थितिहेतुभूत अधर्मास्तिकाय, ७ द्रव्यमांनु पीणुं द्रव्य. स्थितिहेतुभूत अधर्मास्तिकाय, छ द्रव्यों में से दूसरा द्रव्य. One of the six Dravyas which is a cause or rather a source of rest to soul and matter "एणे अधम्मे" सम० १; उक्त० २८, ७, ३६, ५; भग० २०, २; पञ्च० १, ठा० ७, ( २ ) भित्थात्त्व, अविरति, प्रमाद, कषाय अने अशुभयोगरूप कर्मबंध कारणभूत आत्मपरिणाम मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और अशुभयोगरूप कर्म बंध कारणभूत आत्मपरिणाम thought-activity of the soul consisting of false belief, passions etc. causing Karmic bonds. "णत्थि-धम्मे अधम्मे वा, शेवं सन्नं शिवेसए" सूय० २, ५, १४, दसा० ६, ४, ( ३ ) सावधानु-ष्ठानरूप पाप सावधानुष्ठानरूप पाप. sinful performance. "अधम्मणेण चैव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ" नाया० १८, ( ४ ) अधर्ण्यार्थेनु सोणमु गौण नाम. अधर्ण्यार्थे का सोलहवाँ गौण नाम the sixteenth description of unchastity परह० १, ४;—**अणुय** त्रि० (—अनुग ) अधर्मेने अनुसरनार. अधर्म का

अनुसरण करने वाला. following sinful ways. भग० १२, २; नाया० १८; विवा० १;—खाइ. त्रि० (-ख्याति) अधर्भितरीडे नेनी अ्याति-प्रसिद्धि होय ते जो "अधर्मा" के नाम से प्रसिद्ध हो वह. notorious as a sinful person. भग० १२, २; विवा० १;—खाइ. त्रि० (-ख्यायिन्) अधर्भनु आअ्यान-प्रतिपादन करनार अधर्म का प्रतिपादन करने वाला. ( one ) preaching sin. नाया० १८; भग० ३, ७; दसा० ६, ४, विवा० १;—जीवि त्रि० (-जीविन्) अधर्भवृत्तिथी श्रवतार. अधर्म वृत्ति से जाने वाला earning livelihood by sinful means दसा० ६, ४;—जुत्त न० (-युक्त) तद्दोष उदाहरणुनी अेक प्रकार, डे ने सालगवाथी श्रोताने अधर्भ बुद्धि थाय तद्दोष उदाहरण का एक भेद, जिसके सुनने से श्रोताश्रो में अधर्भवुद्धि उत्पन्न होती है an illustration breeding heresy in the mind of the hearer ङ० ४, ३,—त्थि-काय पु० (-अस्तिकाय) श्रव अने पुद्गलनी गति अटकाववामां-स्थिति करवामां स्थाय आपनार द्रव्य, ७ द्रव्यम. तु अधर्भा-स्तिकाय नामे थि श्रु द्रव्य जीव और पुद्गल की गति का अवरोध करने का कारणभूत द्रव्य; छ द्रव्यों मे से दूसरा द्रव्य one of the six Dravyas or substances which is a medium of rest to soul and matter " अधम्मत्थि-कायण भंते ! जावाण कि पवत्तइ ? " भग० १३, ६, "अधम्मत्थिकायस्स ण भंते ! केवह्या अभिवयणा ? " भग० २०, २, भग० २, १०, ७, १०; सम० ५, अणुजो० ६७, १३१, राय० २७,—द्वार. न० (-द्वार) अधर्भ भोपड दान, अधर्भा-पापीने अपातु दान, डे ने

अधर्भने उत्तेजन आपे ते. अधर्मपोषक दान, अधर्मा को दिये जाने वाला दान, जोकि, अधर्म को उत्तेजन दे. charity encouraging or promoting sin. ङ० १०;—द्वार. न० (-द्वार) आश्रवद्वार; प्रश्नव्याकरणसूत्रनुं प्रथम द्वार. आश्रव द्वार; प्रश्नव्याकरणसूत्र का प्रथम द्वार. the first Dvāra of the Sūtra called Praśna-vyākaraṇa; door for the inflow of Karma " पदमं अधम्मद्वारं संमत्तिसिद्धेभि " परह० १, १;—पक्ख पुं० (-पक्ष) क्रियावादी, अक्रियावादी, अज्ञानवादी, विनयवादी वगेरे पाअडी; अधर्भ-पक्ष क्रियावादी, अक्रियावादी, अज्ञानवादी, विनयवादी आदि पाखणडी; अधर्मपक्ष a heretic, e g. Kriyāvādī, Akriyāvādī, Ajñānavādī, Vinayavādī etc. सूय० २, २, ३५;—पजण्ण. न० (-प्रजनन) लोकेश्वर अधर्भ उत्पन्न करनार. लोगों मे अधर्भ उत्पन्न करने वाला. propagating heretical creed amongst people. राय०—पडिमा स्त्री० (-प्रतिमा) अधर्भप्रतिज्ञा; अधर्भप्रधान प्रतिमा-शरीर अधर्भप्रतिज्ञा, अधर्भप्रधान शरीर. a sinful vow, a body full of sin. " एगा अधम्मपडिमा जंसि आया परिकि-लेसत्ति " ङ० १, १;—पलज्जण. त्रि० (-प्ररजन-न भर्मे प्ररज्यन्ते ये ते) अधर्भमां रजन थनार, अधर्भप्रेमी. अधर्म से प्रसन्न होने वाला; अधर्मप्रेमी sin-loving नाया० १८; विवा० १; दसा० ६, ४,—पलोइ त्रि० (-प्रलोकित्-न धर्ममुपादेयतया प्रलोकयति यः स तथा) अधर्भनेन उपादेयरूपे नेनार. अधर्म को ही उपादेयरूप से देखने वाला. (one) preferring sin to piety etc. नाया० १८; विवा० १; दसा० ६, ४,—राइ.

त्रि० (-राग्नि) अधर्मने रागी, अधर्म प्रेमी. अधर्म का प्रेमी sin-loving, attached to sin दसा० ६, ४, —समुदायार त्रि० (समुदाचार-समाचार-अधर्मात्मकः समुदाचारः सप्रमोदो वाऽऽचारो यस्य स तथा ) आरित्री विकल; दुराचारी, अधर्मना आचरुषुमां मग्न रहेनार अधर्माचरण में मग्न रहने वाला, दुराचारी engrossed in vicious practices, steeped in vice. नाया० १८; विवा० १, —सीलसमायार त्रि० (-शीलसमाचार) अधर्मरूप स्वभाव अने आचार छे नेने ते जिसका अधर्मरूप स्वभाव और आचार हैं वह. of sinful nature and conduct दसा० ६, ४;

अधर्मि. त्रि० (अधर्मिन्) धर्महीन, अधर्मी. धर्म हीन, अधर्मी. Sinful, irreligious सम० ३०, —जोय. पुं०, (-योग) निमित्त, वशीकरण आदि प्रयोग करना ते. निमित्त, वशीकरण आदि प्रयोग करना practising such arts as fascination etc. सम० ३०;

अधर्मिद्व त्रि० (-अधर्मिष्ठ-अतिशयेन धर्मी धर्मिष्ठो न धर्मिष्ठोऽधर्मिष्ठ) अतिशय अधर्मी, अतिनिन्द्य कर्म करने वाला. अतिशय अधर्मी, बहुत निर्दय कर्म करने वाला. Highly sinful; doing highly wicked deeds नाया० १८; विवा० १,

अधर्मिमय. त्रि० (अधार्मिक) अधर्मधी वर्ननार, अधर्मी, पापी, असज्जति अधर्ममय वर्ताव करने वाला, अधर्मी, पापी Sinful, impious. नाया० १८, विवा० १; ठा० ४, १;

अधर. त्रि० (अधर) नीचेनी नीचे का The lower. जं० प० नंदी०—उद्व. पुं० (-गोष्ठ) नीचेनी छोड़ नीचे

का थोंठ. the lower lip “ प्रोयद्विष सिलप्पवालाविषफलसखिणभाधरुद्धा ” नदी० —गमण. न० (-गमन) अधोगति न्याना कारणे। अवोगति में ले जाने के कारण. cause of fall or degradation. “तद्वा गवालीकं च गह्वरं भवति अधरगमण” परह० १, २;

अधरिम त्रि० (अधरिम-अविद्यमानं धरिम मृणद्रव्यं यस्मिंस्तत्तथा) न्या० अभुक्त वपतभाटे छोड़ने छोड़नी पासेधी करण लेवुं नहि छे ते संयधी तकरार करपी नहि अवे। छुक्त करभाववाभां आव्यो छे.य तेवु नगर वगेरे ऐसा नगर वगैरह, जहा यह आजा दी गई हो कि, अमुक समय तक कोई भी किसीके पास से कर्ज न ले और न उस सम्बन्ध में झगडा करे (A city etc) in which exaction of money due or quarrel about it is prohibited for a time. भग० ११, ११, नाया० १, काप० ५, १०१;

अधरी त्रि० (अधरी) वाटवानी छिपर; अरल खरल A stone mortar “ अधरीसठाणसठिया दोवि तस्स पाया ” उवा० १, ६४, —लोठ पुं० (-लोष्ठ) वाटव नीलवानो पथरे, ओरसीयो वाटने का गोल पथर. a round flat stone used to pound substances as in a mortar “ अधरीलोठसठाणसठिआओ पाएसु अणुलिओ ” उवा० १, ६४,

अधारण्डिज त्रि० (अधारणीय) अभुक्त वपत भाटे परस्पर करनी लेती देती या ते संयधी तकरार करवानी न्या मना करवाभा आवी छे.य तेवु नगर वगेरे अमुक समय तक परस्पर ऋण लेने देने या उम संवधी झगडा करने की जहाँ मनाही की गई हो ऐसा नगर वगैरह (A city etc) in which

payment of debt or quarrels arising in connection with it are prohibited for a time. नाया० १; विवा० ३; ( २ ) प्राणु धारणु करवाने असमर्थ; जवनयात्रा-निर्वाह न थछ शके तेषुं. प्राण धारण करने मे असमर्थ; जवन यात्रा-निर्वाह न कर सकने योग्य incapable of maintaining life नाया० ८; १३; १६; भग० ७, ६,

अधि. उप० ( अधि ) अधिःपत्यं अधिकता, अधिकत्व. An indeclinable showing addition, excess etc भग० १, १, अधिकरण न० ( अधिकरण ) ङल्ल, ङल्ये कलह, झगडा. Quarrel दसा० ४, १०५; सम० २०, ( २ ) अेरणु; लोहार के सोनीनुं अेक धडवानु साधन लुहार अथवा सुनार का एक ओज़ार. anvil भग० १६, १; ( ३ ) कृषि आदि आरंभनु साधन-हुथीयार कृषि आदि आरंभ के साधन an implement of agriculture. “ जीवेणं भंते ! अधि-करणे कि आयप्पओगाणिन्वासिण् ? ” भग० १६, १,

✓ अधिगम धा० I. ( अधि+गम् ) ञाणुवु जानना. To know, to come to know.

अधिगम्मह क० वा० विशेष० २२;

अधिगम पुं० ( अधिगम ) गुरुनो उपदेश साभणवाथी थयेल भोध गुरु का उपदेश सुनने से जो बोध हुआ हो वह Knowledge derived from the teaching of a preceptor. ङ० २, १;—रुइ पु० ली० (—रुचि-अधिगमो विशिष्टं ज्ञानं तेन रुचिः—तत्त्वाभिज्ञाया यस्याऽसौ तथा ) गुरुनो भोध साभणी थयेल तत्त्वजिज्ञासा, समदितनो अेक प्रकार गुरु के उपदेश से उत्पन्न तत्त्वजिज्ञासा, सम्यक्त्व का एक भेद

desire for spiritual knowledge excited by the teaching of a preceptor, a variety of Samyaktva. प्रव० ६७०,—सम्मदंसण. न० (—सम्यग्दर्शन ) गुरुनो उपदेश साभणवाथी थयेल सम्यग्दर्शन-तत्त्वभोध. गुरु के उपदेश से उत्पन्न सम्यग्दर्शन-तत्त्वबोध. right belief caused by the sermon of a preceptor. “अभिगमसम्मदंसणे दुविहे पणत्ते, तंजहा-पडिवाई चैव अपडिवाई चैव ” ङ० २, १,

अधिगय. न० ( अधिकृत भावे क्तः ) अधिकार. अधिकार Fitness by reason of qualifications, authority; governing influence. पंचा० ६, ३६; अधिगय. त्रि० ( अधिगत ) ञाणुवामां आवेद जाना हुआ Known, understood. पंचा० ६, ३६;

अधिगरण. न० ( अधिकरण ) ञुओ ‘अधिकरण’ शब्द. देखो ‘अधिकरण’ शब्द. Vide “ अधिकरण ”. भग० १६, १;—किरिया ली० (—क्रिया ) अधिकरण-आरंभ, समारंभना हुथीयार-तक्षवार आदि निमित्तथी लागती क्रिया-कर्मबंध अधिकरण-आरंभ, समारंभ के ओजारों के निमित्त से होने वाला कर्मबंध Karma due to the use of implements of injury, killing etc; e.g. a sword etc “ अधिगरणाकिरिया पवत्तगा बहुविहं अनत्थं अवमहं अप्पणो परस्स य करेति ” परह० १, २;

अधिगरणिया. ली० (\*आधिकरणिका-आधिकरणिकी-अधिक्रियते नरकादिष्वात्मा येन तदधिकरणं कलहः खड्गादिकं वा तत्र भवा तेन वा निर्वृत्ता आधिकरणिकी ) क्लेश के हिंसादिङ्गना साधनो उभां करवाथी लागती



क्रिया; अधिकरणिङी क्रिया क्लेश अथवा हिंसादिक के साधनों को खड़ा करने से होता हुआ कर्मबंध, अधिकरणीकी क्रिया Karma due to the manufacture, storing up etc. of implements of conflict, injury, killing etc "अधिगरणियायां भंते ! किरिया कइविहा-पराणात्ता?, मंडियपुत्ता ! दुविहा संजोयणा-हिगरणकिरिया य निव्वत्तणाहिगरणकि-रिया य" भग० ३, ३, पन्न० २१, सम० ७; ठा० २, १,

अधिगरणी स्त्री० (अधिकरणी) अेरणु निहाई An anvil ठा० ८, १;—संठिय त्रि० (—संस्थित) अेरणुने आकारे रडेह निहाई के आकारमें स्थित anvil-shaped, ठा० ८, १;—साला स्त्री० (—शाला) दोढारनी डोड, न्या दोढुं धडाय ते धर लुहार की दुकान, जहाँ लोहे की चीजें बनाई जाती हैं. a smithy भग० १६, १;

अधिगार. पुं० (अधिकार) व्यापार Activity, business "अधिगारो तस्स विजयणं" आया० नि० १, २, १, १६६, प्रव० ८४,

अधिय त्रि० (अधिक) धलुं, वधारे, अधिक बहुत; अधिक More, additional सू० प० १,

अधीर त्रि० (अधीर) बुद्धिरहित, धीरव्य वगरने बुद्धि रहित धैर्य रहित Foolish, lacking in patience उक्त० ८, ६, —पुरिस पु० (—पुरुष) डिम्भत वगरने भाणुस, भदशक्तिवाणे पुरुष. साहस रहित मनुष्य; हीनशक्ति वाला पुरुष a man devoid of courage, a feeble-minded person "नो सुजहा अधीरपु-रिसोहिं" उक्त० ८, ६;

अधुव. त्रि० (अधुव) अनिश्चल, चल; अस्थिर अस्थिर, चंचल Unstable, in-constant; impermanent. "अधुवा अणियया असासया सडणपडणविद्धसण-धम्मा कामभोगा" नाया० १, "अधुव-धणधणकोसपरिभोगविचजिया" परह० १, ३, "अधुवे असासयंमि" उक्त० ८, १, दस० ८, ३४, भग० ६, ३३, आया० १, ५, २, १४७; दसा० १०, ६,—अच्चित्ता स्त्री० (—अचित्ता) धुवअयित्त द्रव्यनी वर्गणा पडीनी अधुव अयित्त पुद्गलनी वर्गणा धुवअचित्त द्रव्य की वर्गणा के बाद की अधुवअचित्त पुद्गल की वर्गणा material molecules of impermanent lifeless objects. क० प० १, १६,—बंधी. स्त्री० (—बन्धिनी) ने युगल प्रकृतिभाथी अेकनेो अंध थतां पीछनेो अंध न थाय ते, नेम हास्य अने रतिनेो अंध थता शोक अने अरतिनेो अंध न थाय ते जिस युगल प्रकृति में से एक का बंध होते हुए दूसरी का बंध न हो, जैसे हास्य और रति का बंध होते हुए शोक और अरति का बंध न हो वह mutually exclusive pairs of Karmic nature e g the pair of the two sentiments of humour (laughter) and love. excludes that made up of grief and ennu क० गं० ५, ४;—सत्ता. स्त्री० (—सत्ता) ने कर्मप्रकृतिनी सत्ता अनेो सर्वदा न होय ते. जिस कर्मप्रकृति की सत्ता जीव को सदा न हो वह, Karmic-influence which does not always accompany the soul क० गं० ५, ६;

अधो. अ० (अधस्) नीच. नीचे Below; beneath. नाया० २;

अधोगामि. त्रि० ( अधोगामिन् ) पाणीना  
प्रवाहनी पेडे अधो-तीये न्तर. पानी के  
प्रवाह के समान नीचे जाने वाला. Down-  
rushing like a torrent of water.  
निसी० १८, ११;

अधोहि. पुं० ( अधोवधि-परमावधेरधोवत्यं-  
वधिर्यस्य सोऽधोवधि. ) परमावधिथी उत-  
रता प्रकारना अध्विज्ञानवाला श्रव परमावधि  
से नीचे की श्रेणी के अध्विज्ञान वाला जीव. A  
soul falling short of the highest  
Avadhijñāna. “ अधोहिसमोहणं  
चेव अप्पायेणं आया अहेलोगं जाणइ ”  
ठा० २, २;

अनंत त्रि० ( अनन्त ) अन्त-पार वगरनुं  
नेना पार पायी शक्य नहि ते अनन्त;  
अन्त-पार रहित. Endless; infinite  
दस० ६, २, १६;—हिय न० (-हित)  
अन्त वगरनेो हित; मोक्ष अन्त रहित-  
शाश्वत् हित; मोक्ष external bliss;  
salvation दस० ६, २, १६,—हियकाम  
त्रि० (-हितकाम-अनन्तहितं मोक्षं कामय-  
त इति ) मोक्षनी धरुण करनार मुक्ति की  
कामना करने वाला. (one) desirous of  
eternal bliss or final emancipa-  
tion. दस० ६, २, १६,

अनन्न त्रि० ( अनन्य-न अन्योऽनन्यः ) अन्-  
लिन्न नहि ते. जो भिन्न-दूसरा न हो वह.  
Not different; not other than;  
identical; without a second  
पि० नि० १५०;

अनल. पुं० ( अनल ) अग्नि, आग अग्नि;  
आग. Fire. सु० च० १, २;—सेवा  
त्री० (-सेवा) अग्निनु सेवन अग्नि का सेवन.  
resorting to fire; making use  
of fire. प्रव० ५२५;

अनलस. त्रि० ( अनलस ) आलस्यरहित;

हितसाही. आलस्य रहित; उत्साही. Not  
lazy; energetic. “ जुंजे अनलसो धुवं ”  
दस० ८, ४३;

अनवरयं. अ० ( अनवरत्तम् ) सतत; निरंतर.  
सतत; निरंतर. Constantly; cease-  
lessly, uninterruptedly. पंचा० १, ५०;  
अनह न० ( \*अनह-अरुत-निर्विघ्न ) विघ्न  
वगरनुं. विघ्न रहित. Unobstructed;  
unopposed; unfettered सु० च० १,  
१०५;

अनाउत्त. त्रि० ( अनायुक्त ) उपयोग वगरनुं.  
उपयोग शून्य. Careless; inattentive.  
श्रव० २०;

अनागत. त्रि० ( अनागत ) आवता कणिनुं.  
भविष्य काल संबंधी. Future, belonging  
to the future. निसी० १०, ८;

अनागार. पुं० न० ( अनाकार ) आकार-भेद-  
विशेष वगरनुं आकार-भेद रहित. Shape-  
less, without any difference  
“ अनागारोवउत्ते बंधइ ” भग० ६, ३;

अनाण न० ( अज्ञान ) लुभ्यो “ अणाण ”  
शब्द देखो “ अणाण ” शब्द. Vide  
“ अणाण ”. क० गं० ३, १८;—तिग. न०  
(-त्रिक) त्रयु अज्ञान; मति, श्रुत अने विभंग  
अे त्रयु विपरीत ज्ञान तीन अज्ञान; मति, श्रुत  
और विभंग अे तीन विपरीत ज्ञान. the  
group of three kinds of igno-  
rance viz Mati, Śruta and  
Vibhanga. क० गं० ३, १८;

अनाणत्त त्रि० ( अनानात्व-न विद्यते नानात्वं  
येषां तेऽनानात्वाः ) नाना भाव-भेद-रहित; प्रकार  
विनातु. भेद रहित Undifferentiated;  
homogenous. “ एगविहमनाणत्ता,  
सुहुमा तत्थ वियाहिया ” उत्त० ३६, ७७;

अनादेज्ज त्रि० ( अनादेय ) नामकर्त्तनी  
अेक प्रकृति, के नेना उदयथी श्रुवे हडेह

हितकारी वचन पणु कोष्ठ स्वीकार करे नहि  
अने उपकृतभाष्यस पणु तिरस्कार करे छे  
नाम कर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से  
जीव के द्वारा प्रतिपादित हितकर वचनों को  
भी कोई अंगीकार न करे और उपकृत पुरुष भी  
घृणा करे A variety of Nāmakaṛma  
by the rise of which a person's  
words even though wholesome  
are not trusted or are derided  
and disregarded पञ्च० २३;

**अनावाह** त्रि० (अनावाह) लुओ "अणावाह"  
श०६. देखो 'अणावाह' शब्द. Vide  
"अणावाह" श्लो० नि० ३७;

**अनाय** त्रि० (अज्ञात) लुओ "अणाय"  
श०६. देखो 'अणाय' शब्द. Vide  
"अणाय" विशेष० २६६, ४८५;

**अनायभासि** त्रि० (अन्यायभासिन् )  
यद्वा तद्वा न्यायविद् भोलनार यद्वा तद्वा  
न्यायविरुद्ध बोलने वाला Speaking  
recklessly and without regard  
to justice. "जे विग्गहिण् अनायभासी,  
न से समे होइ अकंभपत्ते" सूय० १, १३, ६,

**अनायरं** व० कृ० त्रि० (अनाचरत् ) नहि आचर  
ते. नहीं आचरता हुआ Not practising,  
not performing पंचा० ११, ३६;

**अनारिय** त्रि० (अनार्य) लुओ 'अणा-  
रिय' श०६ देखो 'अणारिय' शब्द. Vide  
"अणारिय" आया० १, ४, २, १३३;

**अनाविल** न० (अनाविल) लुओ "अणा-  
विल" श०६ देखो "अणाविल" शब्द  
Vide "अणाविल" सूय० १, २, २, १४,

**अनासन्न** त्रि० (अनासन्न) आसन्न-न०  
नहि ते, दूरवर्ती दूरवर्ती. Not in the  
vicinity; situated at a distance.  
प्रव० ७१७;

**अनिअन्न** त्रि० (अनियत) नियत-नियम  
रहित अनियमित, नियम रहित Without  
fixed rules or principles. विशेष० १;  
**अनिअट्टिवायर** पुं० (अनिवृत्तिवादर) उपाय-  
ना अष्टकने अपाववाना आरंभथी अने  
नपुंसकवेदना उपशमथी भाडी पाएर लोभ-  
अउने अपावे के उपशमावे त्या सुधीनी  
स्थितिमा नवमे गुणक्षेत्रे वर्तते ७४. कषाय  
के अष्टक का क्षय करने के आरंभ से और  
नपुंसकवेद के उमशम से लेकर वादर लोभ-  
खंड को क्षय करे या उपशमित करे वहाँ  
तक की स्थिति में नवें गुणस्थान में विद्य-  
मान जीव A soul in the ninth Gu-  
nasthāna when eight of his  
passions begin to be wholly  
destroyed, he begins to feel  
sexless, and his greed of a  
grosser nature is destroyed or  
subsided सम० १४,

**अनिअम** पु० (अनियम) अनिवृत्ति, असं-  
यम असयम. Absence of control  
over senses; attachment to  
worldly objects क० गं० ४, ५४,

**अनिकेत** त्रि० (अनिकेत) धरप्याररहित अ-  
निकेतन, विना घरवारका. Houseless,  
possessionless उत्त० २, १६;

**अनिक्खिन्न** त्रि० (अनिच्छिन्न) निरंतर;  
अक्षु, आयो पाउया विना. निरंतर, लगातार.  
Continuous; uninterrupted.  
"छट्टं छट्टेयं अनिक्खित्तेयं तवोकम्मेषं"  
श्रौव० ४०, भग० २, ५३, १, ७, ६;  
निर० ३, ३;

**अनिगिण** पुं० (अनग्न) इत्यपक्षनी दशमी  
लत, अनग्न-नग्नपशुने टाणनार-वत्त्रादिक  
आपनार इत्यपक्ष. कल्पवृक्ष की दसवीं  
जाति, नग्नता को दूर करने के साधनरूप

वस्त्रादिक देने वाले कल्पवृक्ष. Tenth variety of Kalpavriksha removing nudity by yielding clothes etc मम० १०;

**अनिग्गह** पुं० ( अनिग्गह ) धन्द्रियेते क्षुभं न राप्पी शके ते; धन्द्रियते अधीन इन्द्रियों को वश न कर सकने वाला; अजितेन्द्रिय Want of control over the senses; lack of self restraint. उक्त० ११, २;

**अनिच्च** त्रि० ( अनित्य ) अनित्य, अस्थिर चलायमान, अस्थिर Transient; transitory; not permanent दस० ८, ५६;

**अनिज्जिएण**. त्रि० ( अनिज्जिएण ) निर्जरा क्षरेल नहि; आत्मप्रदेशथी अरीने दूर थयेल नहि. आत्मप्रदेश से जो पृथक् न हुआ हो वह, जिसकी निर्जरा नहीं हुई हो वह. Not worked off by Nirjarā भग० १, १०;

**अनिच्चूढ** त्रि० ( अनिर्यूढ ) लुहुं इत्थेपेहुं उता लुहुं उथेथी नहि आपेहु पृथक् माना हुआ होने पर भी पृथक् नहीं किया गया हो वह Imagined as separate but not actually divided in fact. वेय० २, १८,

**अनिद्ध**. त्रि० ( अनिष्ट ) धष्ट नहि ते; अशुल अनिष्ट, अशुभ, अभद्र. An evil; any thing not desired. भग० २०, १,

**अनिदा**. स्त्री० ( अनिदा ) लुओ 'अणिदा' शब्द. देखो 'अणिदा' शब्द. Vide "अणिदा" पत्र० ३५; भग० १६, ५;

**अनिमिस** पुं० ( अनिमिष ) आंभना पण-क्षर न भास्वा ते आस्व का पलक न मारना Absence of the twinklings of the eyes; winklessness भग० ३, २;

**अनियट्ट**. पुं० ( अनिवर्त्त ) न्थांथी क्षरी निवर्त्तवानुं नथी ते; मोक्ष जहाँ से फिर

वापिस आना नहीं होता वह; मोक्ष. Final emancipation; lit. that from which there is no return. आया० १, ४, ४, १३७;

**अनियट्ट** त्रि० ( अनिवृत्त ) निवृत्ति पाभेल नहि निवृत्ति नहीं पाया हुआ Unabstained. "इह कामानियट्टस्स, अत्तट्टे अवरज्झइ" उक्त० ७, २५,

**अनियट्टि**. न० ( अनिवर्त्तिन्-अनिवृत्ति ) लुओ 'अणियट्टि' शब्द. देखो 'अणियट्टि' शब्द Vide "अणियट्टि". क० प० २, ६७; ४, २४; क० गं० २, २; ५, ७; विशेष० १२०६; —वायर पु० (-वादर ) लुओ "अणियट्टिवायर" शब्द. देखो "अणियट्टिवायर" शब्द. vide 'अणियट्टिवायर'. क० गं० ६, ५०; क० प० २, ४३;

**अनियट्टिकरण** न० ( अनिवर्त्तिकरण ) लुओ "अणियट्टिकरण" शब्द. देखो 'अणियट्टिकरण' शब्द. Vide "अणियट्टिकरण" विशेष० १२०३;

**अनियत्त**. त्रि० ( अनिवृत्त ) निवृत्ति नहि पाभेल; अटकेल. निवृत्त नहीं हुआ. Not retired from; not turned away from उक्त० १४, १४,

**अनियय**. त्रि० ( अनियत ) नियत नहि ते. अनियत; नियत न हो वह. Unsettled. उक्त० ६, १७; प्रव० ५५०,—वित्ति. त्रि० (-वृत्ति ) अनियत-अप्रतिबद्धपणे वृत्ति-विहार इरनार अनियतवृत्ति से विहार करने वाला. roaming or wandering from place to place unrestrained or unchecked प्रव० ५५०,

**अनिया**. स्त्री० ( अनिदा ) लुओ 'अणिदा' शब्द. देखो 'अणिदा' शब्द Vide "अणिदा." पिं० नि० १०३;

**अनियण**. त्रि० ( अनिदान ) इरणीनु इल

न मागना, नियाला विनातो; लावी इलनी  
 कामना विनातो भावी फल की कामना नहीं  
 करने वाला; निदान रहित. Free from  
 desire of the fruits of actions  
 “ अनियाये अकोउहल्ले जे स भिक्खु ” दस०  
 १०, १, १३; भत्त० ३०,

**अनिरुद्ध** पुं० ( अनिरुद्ध ) प्रद्युम्नकुमारनी  
 वैदर्भी राणीतो पुत्र, के जे नेमनाथप्रभुनी  
 पासे दीक्षा लई, पार अंगतो अभ्यास करी,  
 सोण वरसनी प्रव्रज्या पाणी, शत्रुंजय पर्वत  
 उपर अेक मासतो संथारो करी सिद्ध थया.  
 प्रद्युम्नकुमार का वैदर्भी रानी से उत्पन्न पुत्र, जो  
 नेमनाथप्रभु के पास से दीक्षा लेकर, बारह  
 अंगों का अभ्यास कर और सोलह वर्ष तक  
 प्रव्रज्या का पालन कर शत्रुंजय पर्वत पर  
 एक मास का सथारा कर सिद्ध हुआ The  
 son of Vaidarbhi the queen of  
 Pradyumnakumara who took  
 Diksā from, Nemanātha, studied  
 twelve Aṅgas, observed ascetic  
 ism for sixteen years and obtain  
 ed salvation after a months'  
 fasting on the Śatruñjaya  
 mountain. ( २ ) अंतगडसूत्रना योथा  
 वर्गना आठमा अध्यायननु नाम अतगड सूत्र के  
 चौथे वर्ग का षाँ अध्याय. name of the  
 eighth chapter of the fourth  
 section of Antagada Sūtra  
 परह० १, ४; अंत० ४, ८,

**अनिला** पुं० ( अनिल ) पवन, वायु क्यु, हवा  
 Wind. भग० ५, १, ७, ६, दस० १०, १,  
 ३, क० गं० ४, १३, ( २ ) भरतक्षेत्रना गध  
 योपीसीना सत्तरमा तीर्थकरतुं नाम भरत  
 क्षेत्र की गत चौबीसी के १७ वें तीर्थकर का  
 नाम. name of the 17th Tirthan-  
 kara of Bharataksetra in the

past Chovīsī ( cycle of time ).  
 प्रव० २६१;

**अनिला** स्त्री० ( अनिला ) अेकपीशमा तीर्थकर-  
 मुनिसुप्रतस्वामीनी प्रथम साध्वीनु नाम  
 २१ वें तीर्थकर-मुनिसुप्रतस्वामी की प्रथम  
 साध्वी का नाम Name of the first  
 female ascetic disciple of Muni-  
 Suvrata Svāmī, the 21st  
 Tirthankara प्रव० ३१०,

**अनिव्वाण** न० ( अनिर्वाण ) अतृप्ति, असंतोष.  
 अतृप्ति, असन्तोष Absence of content-  
 ment “ अयसो य अनिवाणं, सययं च  
 असाहुया ” दस० ५, २, ३२; ३८,

**अनिव्वुड** त्रि० ( अनिवृत् ) अश्यादि शस्त्र-  
 थी परिष्कृत-अथित थयेल नहि, सयित.  
 अग्नि आदि से जो अचित नहीं हुआ हो वह;  
 सचित Not made lifeless by fire  
 etc, having life. “ उच्छुखंहे अनिव्वुडे ”  
 दस० ३, ७;

**अनिसट्ट** त्रि० ( अनिसृष्ट ) लुप्तो “ अणिसट्ट ”  
 शब्द देखो “ अणिसट्ट ” शब्द Vide  
 “ अणिसट्ट ” पंचा० १३, ६,

**अनिरिसिअ**. त्रि० ( अनिश्रित ) निश्रा-  
 थीलनी मद्द भेगवानी धरुण विनातो  
 दूसरे की सहायता प्राप्त करने की इच्छा रहित  
 Self-reliant दस० १, ५, सम० ३२;  
 दसा० ४, ४१, ५२,—चयण त्रि०  
 (—वचन ) रागद्वेषनी निश्रा रहित जेनां वचन  
 होय ते रागद्वेष से रहित वचन कहने वाला.  
 (one) whose speech is free from  
 passion or hatred. प्रव० ५५१,

**अनिहत्**. त्रि० ( अनिहत् ) निरुपक्रम आ-  
 युध्यवाणो; जेतु आयुष्य दुटे नहि—कोईथी  
 हलाय नहि अेषो अखंड आयु वाला, जिसकी  
 आयु किसीसे भंग न हो वह Indestruct-  
 ible सम० ५० २३५,

**अनिहुत.** त्रि० ( अनिभृत ) अनुपशान्त  
अशान्त. Not calmed, not quieted;  
not peaceful परह० १, ३;

**अनीश.** न० ( अनीक ) सैन्य, लक्ष्मि सेना  
An army कप्प० २, १३,—अहिवइ  
पुं० (-अधिपति ) सेनातो नायक सेना का  
नायक-अधिपति. commander of an  
army. कप्प० २, १३;

**अनीसा** स्त्री० ( अनिश्रा ) नेत्रा-पीननी  
अपेक्षानो अलाप. दूसरे की अपेक्षा का अभाव  
Self-reliance, self-help पिं० नि०  
१४५;

**अनीहारिम** न० ( अनिर्हारिम ) लुभ्यो  
“अणीहारिम” शब्द देखो ‘अणीहारिम’  
शब्द. Vide “अणीहारिम.” भग० २, १,

**अनुच्च** त्रि० ( अनुच्च ) प्रव्यथी अल्पमूल्य  
अने लावथी गुरुता आसनथी उच्युं नहि  
‘द्रव्य से अल्पमूल्य और भाव से गुरु के आसन  
से ऊंचा न हो Less in value and not  
more elevated from devotional  
point of view than the seat of  
a preceptor उक्त० १, ३०;

**अनुत्पन्न** त्रि० ( अनुत्पन्न ) उपज्जेल नहि ते.  
उत्पन्न नहीं हुआ Not produced; not  
born, not created निसी० ४, २२,

**अनुत्पयाहिणीकरेमाण.** व० कृ० त्रि० ( अनु-  
प्रदक्षिणीकुर्वत् ) आसपास प्रदक्षिणु  
करते आस पास प्रदक्षिणा करता हुआ  
Cir-cum ambulating; moving  
round an object, राय० ६७,

**अनुत्पविसित्ता** स० कृ० अ० ( अनुत्पविसित्ता )  
प्रवेश करीते. प्रवेश करके. Having  
entered “से अनुत्पविसित्ता गामं वा जाव  
रायहाणि वा ” आया० २, ७, १, १५५,

**अनुभूय-अ** त्रि० ( अनुभूत ) अनुभवेलुं,

परिचयमां - आवेलु अनुभूत, परिचित.  
Experienced, familiarly known.  
अणुजो० १३०;

**अनुरक्त.** त्रि० ( अनुरक्त ) अनुरागी, आस-  
क्त, प्रेमी अनुरागी, प्रेमी Full of attach-  
ment to or love for सु० च० १,  
२७६;

**अनुलेवणतल** न० ( अनुलेपनतल ) लुभ्यो  
‘अणुलेवणतल’ शब्द देखो ‘अणुलेवण-  
तल’ शब्द Vide ‘अणुलेवणतल’ दसा०  
६, १,

**अनुलोम** त्रि० ( अनुलोम ) लुभ्यो ‘अणु-  
लोम’ शब्द देखो ‘अणुलोम’ शब्द Vide  
“अणुलोम.” वव० ८, १०; परह० १, ४;

**अनुलोमेयव्व** त्रि० ( अनुलोमितव्य ) अनु-  
इल पनापवु ते अनुकूल करना Making  
agreeable, वव० ८, १०;

✓ **अनुसास** धा० I ( अनु+शास् ) अनुशासन  
करवु, शिक्षा आपथी अनुशासन करना, शिक्षण  
देना To teach, to instruct.

अनुसासंति उक्त० १, २७;

**अनेरइअ-य** त्रि० ( अनैरायिक ) नारकी शि-  
वायना, नारकीथी भिन्न नारकी के सिवाय;  
नारकी से भिन्न Not Nārakī; other  
thān Nārakī. भग० ४, ६; ६, १०;

**अन्न** न० ( अन्न ) अनाज; दाण्डा अनाज.  
Corn, grain. राय० २४१,—जीविय.  
(-जीवित-अन्नेन जीवितं प्राणधारणं यस्या-  
ऽसावन्नजीवितः ) अन्नेने आधारे अन्न  
अन्न के आधार से जीने वाला depending  
on food for life. राय० २४१;

**अन्न** त्रि० ( अन्नत् ) लुभ्यो ‘अण्ण’ शब्द  
देखो ‘अण्ण’ शब्द Vide “अण्ण.”  
राय० १६; दस० ४; ५, २, ३६; ६, १२;  
७, १६, अणुजो० १३०, नंदी० स्थ० ४३;

उत्त० १, ३३, ६, ४२; ३०, २५, सु० च० ४, १५२, विशे० १५४; पिं० नि० भा० ४,  
 —धर्मिअ. त्रि० ( -धार्मिक ) लिन्न धर्मवाणे, विधर्मी अन्यधर्मी, विधर्मी following another religion, belonging to a different creed  
 ओष० नि० १५;—भव पुं० ( -भव ) भीजे भव दूसरा भव another birth क० प० ६, १०,—मण त्रि० ( -मनस् ) भीञ्च तर्क लटकता मतवाणे जिसका मन दूसरी ओर भटकता हो वह having mind wandering elsewhere आया० १, १, ३, १५,—लिंग पुं० न० ( -लिङ्ग ) अन्यदर्शनीने वेप अन्यदर्शन वाले का वेप non-Jaina in dress etc उत्त० ३६, ४६; प्रव० ४७६,—वेलचरग पुं० ( -वेलचरक ) भोजनती वेणा पीतापीने शिक्षा करवाने अलिग्रह धरनार साधु भोजन का समय निकल जाने पर भिक्षा लाने का अभिग्रह रखने वाला साधु a Sādhu, begging food after the time of dinner has passed ठा० ५, १,  
 —संभोइय त्रि० ( -साम्भोगिक ) लिन्न सामायारीवाणे ( साधु ) भिन्न सामाचारी वाला साधु ( an ascetic ) differing in religious practices पचा० ५, ४१,  
 अन्नउत्थिय त्रि० ( अन्यचूथिक ) लुओ 'अण्णउत्थिय' शब्द देखो 'अण्णउत्थिय' शब्द Vide " अण्णउत्थिय " सम० ३४, नाया० ११, आया० २, १, १, ४, ओव० ४०,  
 अन्नतर त्रि० ( अन्यतर ) लुओ 'अण्णयर' शब्द देखो 'अण्णयर' शब्द Vide " अण्णयर " दस० ४, ६, ७,  
 अन्नतित्थि त्रि० ( अन्यतीर्थिन् ) अन्यतीर्थी, जैनेतरमतावलभी अन्य तीर्थी, जैनेतर मतानुयायी A non-Jaina प्रव० ६५१,

—देव पुं० ( -देव ) अन्य मतना देव-प्रदा, विष्णु प्रभृति अन्यमत के देव a god of a different ( i. e. heretical ) creed, e. g. Brahmā, Viṣṇu etc प्रव० ६५१;  
 अन्नतित्थिअ पुं० ( अन्यतीर्थिक ) जैनेतर जैनेतर A non-Jaina प्रव० ६५१;  
 अन्नत्त न० ( अन्यत्व ) अन्यत्वभावना; सकल संबंधी वस्तुत पोतापी लुदा छेओम थितववु ते अन्यत्व भावना Meditation upon the fact that all relatives etc are in reality unconnected with one's soul प्रव० ५७६,  
 अन्नत्थ अ० ( अन्यत्र ) लुओ 'अण्णत्थ' शब्द देखो 'अण्णत्थ' शब्द Vide " अण्णत्थ " सू० प० १, पिं० नि० १०८, २८३, ओष० नि० ७८; सु० च० ४, १६८,  
 अन्नमन्न त्रि० ( अन्योन्य ) लुओ 'अण्णमण्ण' शब्द देखो 'अण्णमण्ण' शब्द Vide " अण्णमण्ण " ठा० २, ३, नाया० ८, राय० ४२, वेय० ४, २,  
 अन्नयर त्रि० ( अन्यतर ) लुओ 'अण्णयर' शब्द देखो 'अण्णयर' शब्द Vide 'अण्णयर' आया० १, ६, २, १८३, २, ५, १, २४५, दस० ४, ६, ७; १६, ३३, ६०, सूय० १, २, २, ४, उत्त० ३०, २२, जीवा० ३, ३, निसी० १, १०, सु० च० २, ६०१, क० ग० २, २२, ५, ८७; क० प० २, ५३, कप्प० ४, ७६; दसा० १०, ३, ज० प० २, २१,  
 अन्नया अ० ( अन्यदा ) लुओ " अण्णया " शब्द देखो 'अण्णया' शब्द Vide 'अण्णया' ओव० ४०, पिं० नि० ८४; सु० च० १, ४२, दसा० १०, १;  
 अन्नयाकयाई अ० ( अन्यदाकदाचित् ) लुओ 'अण्णयाकयाई' शब्द देखो 'अण्णया-

कयाई"शब्द Vide "अणयाकयाई." जं०  
प० ३, ४३, भग० ७, ६;

अज्ञय पुं० ( अर्याव ) समुद्र; दरीयो. समुद्र;  
सागर. Ocean. उक्त० १०, ३४,

अज्ञहा. अ० ( अन्यथा ) लुओ 'अणहा'  
शब्द. देखो 'अणहा'शब्द Vide 'अणहा'.  
आया० १, २, ५, ६१; १, ५, ६, १७०;  
सूय० १, १, ३, १४; उक्त० २८, १८; विशेष०  
१८७; सु० च० ४, २४०; क० गं० १, २१;  
५६, २, ८३

अज्ञहिं. अ० ( अन्यत्र ) लुओ स्थले दूसरी जगह.  
In another place; elsewhere.  
"अज्ञहिं मच्छे" प्रव० ६०२;

अज्ञागय. त्रि० ( अज्ञागत ) युक्त; जोडयेल.  
मिला हुआ; जुडा हुआ Joined, con-  
nected. आया० १, ५, ३, १५३;

अज्ञाण न० ( अज्ञान ) लुओ 'अणाय' शब्द  
देखो 'अणाय' शब्द. Vide "अणाय".  
प्रव० ४५७; भग० १, ६, उक्त० १८, २३;  
—परिसह. पुं० ( -परिषह ) ज्ञानना  
अभावे यतुं कष्ट सहन करतुं ते. ज्ञान के अभाव  
से होने वाला कष्ट सहन करना. endur-  
ance of the dis-comforts of  
ignorance. सम० २२;

अज्ञाणया. स्त्री० ( अज्ञानता-अज्ञान ) अज्ञान-  
ता; अज्ञानपणुं अज्ञानता; अज्ञानपन.  
Ignorance सूय० २, ७, ३८,

अज्ञाणिय. त्रि० ( अज्ञानिन् ) लुओ 'अणायि'  
शब्द देखो 'अणायि' शब्द. Vide  
"अणायि". दस० ४, १०, विशेष० ३१८;  
भक्त० ८१;

अज्ञाणिय. त्रि० ( अज्ञानिक ) सम्यग्ज्ञान-  
रहित; अज्ञानी. सम्यग्ज्ञान से रहित,  
अज्ञानी. Ignorant; devoid of right  
knowledge. सूय० १, १, २, १६; ( २ )

अज्ञाननेण श्रेय माननार वादी, के जेना ६७  
प्रकार छे. अज्ञान को ही श्रेष्ठ मानने वाला  
वादी, जिसके ६७ प्रकार हैं. one who  
holds that ignorance alone is  
the highest bliss. (there are 67  
varieties of this tenet). प्रव०  
१२०२;—वाद् त्रि० ( -वादिन् ) "अज्ञान-  
नेण श्रेय थाय छे, ज्ञानमां तकरारो थाय छे,  
पुरे पुरं ज्ञान कोधने यतुं नथी, अधुरा  
ज्ञानथी अनेक भतो थाय छे, भाटे ज्ञान  
भेणयवुं नहि," ओम माननार ओक वादी.  
"अज्ञान से ही कल्याण होता है, ज्ञान में भगडा  
हो जाता है, पूर्णज्ञान किसीको होता नहीं,  
अधुरे ज्ञान से भिन्न २ मतों की उत्पत्ति होती  
है, इस लिये ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता  
नहीं है" ऐसा मानने वाला एक वादी. (one)  
who believes that knowledge is  
a curse and that ignorance is  
bliss सूय० २, २, ७६;

अज्ञाय त्रि० ( अज्ञात ) अपरिचित. अपरि-  
चित, विना पहिचान का, विना जाना हुआ.  
Not known, unfamiliar. दस० ६,  
३, ४;—उंचछ पु० ( -उच्छ ) लुओ  
'अणायउंचछ' शब्द. देखो 'अणायउंचछ'  
शब्द. vide 'अणायउंचछ' दस० ६, ३, ४;  
१०, १, १६;—परिस्त्रि. पुं० ( -परिस्त्रि ) अज्ञात  
थई आहारनी गवेषणा करनार. अज्ञात होकर  
आहार की गवेषणा करने वाला one who  
seeks food incognito. उक्त० १५, १;  
—चरअ. पु० ( -चरक ) लुओ 'अणायचरअ'  
शब्द देखो 'अणायचरअ' शब्द. vide  
'अणायचरअ'. ठा० ५, १;

अज्ञियापुत्त. पुं० ( अज्ञिकापुत्र ) ओक प्राचीन  
धर्माचार्यनु नाम. एक पुरातन धर्माचार्य.  
Name of an ancient religious  
preceptor. संथा० ५६,

अज्ञिय त्रि० ( अज्ञिय ) युक्त; सहित. युक्त;



सहित. Joined to; accompanied with. सू० १, १०, १०;

✓अज्ञेस धा० I (अनु+एष्) अन्वेषणुं; शोधयुं, तपास करणी. अन्वेषण करना, खोजना; शोध करना To inquire after; to search, to scrutinize.

अज्ञेसिं वि० आया० १, १, ७, ५६;

अज्ञेसअ. त्रि० (अन्वेषक) अन्वेषणु-तपास करणी खोजी One who looks into or inquires into प्रव० ६४२;

अज्ञेसण. न० (अन्वेषण) गवेषयुं; तपासयुं; ज्ञेयुं खोजना; शोध, अन्वेषण Inquiry, search विशेष० १३८१;

अज्ञेसि. त्रि० (अन्वेषिन्) ज्ञुओ "अज्ञेसि" शब्द देखो "अज्ञेसि" शब्द. Vide "अज्ञेसि" आया० १, २, ९, १०२; १, ५, २, १४६;

अज्ञोअ. त्रि० (अन्योन्य) ज्ञुओ "अज्ञोअण" शब्द देखो "अज्ञोअण" शब्द Vide "अज्ञोअण". पि० नि० ५९,—प्वेस पुं० (प्रवेश) अज्ञे अज्ञेना शृङ्खलायुध सन्ध एक दूसरे का शृङ्खलायुध सम्बन्ध connection as of the links of a chain क० प० १, ४;

अज्ञाणय. पुं० (अज्ञानक) ज्ञुओ "अज्ञाणय" शब्द देखो "अज्ञाणय" शब्द Vide "अज्ञाणय". भग० १, ६;

अपअ. त्रि० (अपद्) पञ्च वगर्नु, गति विना ना आउ वगेरे. बिना पैर का, गति रहित वृक्षादिक Devoid of feet; devoid of motion, e.g trees etc भग० १८, ४, पि० नि० ७६; आया० १, ५, ६, १७०, अणुजो० ६१,

अपइहाण पुं० (अप्रतिष्ठान) ज्ञुओ "अपइहाण" शब्द देखो "अपइहाण" शब्द,

Vide "अपइहाण" जीवा० ३, ठा० ५, ३, पञ्च० २;

अपइद्विय त्रि० (अप्रतिष्ठित) ज्ञुओ "अपइद्विय" शब्द देखो "अपइद्विय" शब्द.

Vide "अपइद्विय" ठा० ४, १,

अपइरणपसरियत्त न० (अप्रकीर्णप्रसृतत्व) ज्ञुओ "अपइरणपसरियत्त" शब्द देखो "अपइरणपसरियत्त" शब्द Vide "अपइरणपसरियत्त" सम० ३५;

\*अपउल्ल त्रि० (अपक्व) पाकेयुं नडि, कच्चा; न पका हुआ Unripe, raw. पंचा० १, २२,

अपपस त्रि० (अप्रदेश) प्रदेशरहित, अंश वगर्नु; अवयव विनायुं; ज्ञेना विभाग पडी शके नडि तेयुं, परमाणु वगेरे प्रदेश रहित; अवयव बिना का; अविभाजित-परमाणु वगैरह Indivisible; e.g an atom. भग० ५, ७, ८; ६, ४, २०, ५, ठा० ३, २; —द्वया स्त्री० (अर्थता) अप्रदेशयुता अज्ञेना अप्रदेशत्व की अपेक्षा. stand point of indivisibility भग० २५, ४;

अपओस पु० (अपद्वेष-अपगतो द्वेषोऽपद्वेष) द्वेषना अभाव, अभत्सरिपायुं; मध्यस्थपायुं. द्वेष का अभाव, अमात्सर्यभाव, माध्यस्थ भाव Absence of malice; neutrality पंचा० ३, ४८,

अपंडिय त्रि० (अपरिहृत) भूर्ध; अज्ञायु. सूख, अज्ञानी. Ignorant; stupid. सू० च० ४, ६८,

अपक्व त्रि० (अपक्व) अग्नि आदिथी पुरे पुरे पाकेयुं नडि, कच्चा अप्ति आदिसे बराबर नडा पका हुआ, कच्चा Not well cooked; raw. परह० २, ५; प्रव० २८२,—  
—अज्ञेसहिभक्खणया स्त्री० (अज्ञेसहिभक्खणता) अग्नि आदि उपर पडाया विनायुं अनाज पायुं ते, श्रावकना सातभा वतने प्रथम

अतिचार. अग्नि आदि द्वारा विना पकाया हुआ अन्न खाना, श्रावक के सातवें व्रत का प्रथम अतिचार. eating uncooked or raw food; the first partial violation of the seventh vow of a layman. उवा० १, ५१;

अपक्वखगाहि. त्रि० ( अपक्वग्रहाहिन्-न पक्वं गृह्णातीत्यपक्वग्रहाही ) शास्त्राधिष्ठित पक्ष भेद्यन्तार नहि; अपक्षपाती. शास्त्राधिष्ठित पक्ष का आग्रह न करने वाला; अपक्षपाती Impartial, not specially advocating any cause दसा० ४, १०५, ठा० ६;

अपक्वखेवग त्रि० ( अप्रक्षेपक ) मार्गनी पश्ये नेतुं प्रयत्नं परत्यार्षिग्यु डेय ते मार्ग के बीच में ही जिसका धन खर्च हो चुका हो वह. (One) whose money has been spent up in the midst of his travel नाया० १५,

अपगंड त्रि० ( अपगण्ड-अपगतं गण्डं दोषो यस्मात्तदपगण्डम् ) निर्दोष; दोषरहित निर्दोष, दोष रहित Innocent, faultless ( २ ) पानीना क्षीण पानी का फेन foam of water " सुसुकसुक अपगंड सुकं " सूय० १, ६, १६,

अपञ्चअ पुं० ( अप्रत्यय ) अप्रतीति, अविश्वास. अविश्वास Disbelief; distrust परह० १, २;

अपञ्चखाण पुं० न० ( अप्रत्याख्यान ) पञ्चखाण-त्याग-विरतिपरिणामने अभाव Not taking the vow of giving up or abstaining from. भग० ६, ४, ( २ ) देशविरतिपरिणामने अटकावनारु कषाय; अपञ्चखाणवरणीय कषायनी योक्ती देशविरतिरूप परिणाम को रोकने

वाला कषाय, अपञ्चखाणावरणीय कषाय की चौकड़ी. a sort of moral uncleanness which is an obstacle to the vow of partial abstinence from पञ्च० १४;—कसाय पुं० (-कषाय) अपञ्चखाणवरणीय कषाय-क्रोध, मान, माया अने लोभ, जेना उदयथी देशविरतिपरिणाम न आवे, जेवी कषायनी योक्ती अपञ्चखाणावरणीय कषाय-क्रोध, मान, माया और लोभ, जिसके उदय से देशविरतिरूप परिणाम न हो सके. Kaṣāya which prevents one from the vow of Pa-chchakhāṇa or abstaining from certain kinds of enjoyment or gratification. भग० ६, ३१;—किरिया स्त्री० (-क्रिया) पञ्चखाण-त्याग न करवाथी लागती क्रिया-कर्मबंध; अपञ्चखाण क्रिया त्याग न करने से होने वाला कर्मबंध, अपञ्चखाण क्रिया Karmā resulting from non-abstinence "अपञ्चखाणकिरिया दुविहा पं० तं० जीव अपञ्च० अजीवअपञ्च० " ठा० २, १, "अपञ्चखाणकिरियाणं भते ! कस्स कज्जह ? गोयमा ! अन्नयरस्स वि अपञ्चखाणिस्स " पञ्च० २२, १७, " से एण्यं भंते ! सेठिस्स य तण्णयस्स किण्णस्स खण्णियस्स य समा चेष अपञ्चखाणकिरिया कज्जह ? " भग० १, २, ६, ७, ८;—कोह पुं० (-क्रोध) जे क्रोध उत्पन्न थया पछी तदावनी क्षुब्धे अक वरसमुधी लुंसाय नहि अने कछि पण्य पञ्चखाण आववा छे नहि ते, अपञ्चखाणवरणीय क्रोध अपञ्चखाणावरणीय क्रोध, जो उत्पन्न होने के बाद एक वर्ष तक न छूटे और न कोई पञ्चखाण-त्याग वगैरह होने दे. anger lasting long and obstructing the vow of abstinence.

ठा० ४, १,—**अपच्यखाणि** त्रि० (—निर्वृत्ति-  
त ) अविरतिपरिणाम्भी निष्पन्न-उत्पन्न.  
अविरतिपरिणाम से निष्पन्न-उत्पन्न.  
resulting from the absence of  
the vow of abstinence भग० ६, ४,  
**अपच्यखाणि** त्रि० (अप्रत्याख्यानिन्) पश्य-  
भाणु-त्याग न करना, विरतिरहित. पच्यखा-  
ण-त्याग न करने वाला, विरति रहित Devoid  
of the vow of abstinence. भग०  
६, ४, ७, २;

**अपच्यखाणिया** स्त्री० (\*अप्रत्याख्यानिका-  
की) अपश्यभाणु निमित्ते लागती क्रिया-  
कर्मबन्ध अपच्यखाण के निमित्त से होने वाला  
कर्मबन्ध Karma due to absence  
of the vow of abstinence भग०  
५, ६,

**अपच्यखाण्य** त्रि० ( अप्रत्याख्यात ) जेने।  
त्याग नहीं किये ते, न तजेनुं जिसका त्याग  
नहीं किया हो वह Not given up, not  
renounced भग० ८, ५, नाया० १६,  
सूय० २, ४, १,

**अपच्यभिजाण्यमाण** व० कृ० त्रि० (अप्रत्याभि-  
जानत्) 'आ ते नहीं पणुं पीणुं छे' ऐम न-  
णुतो, तेने तेरूपे न नणुतो 'यह यह  
नहीं है किन्तु दूसरा है' इस प्रकार जानता हुआ,  
उसे उस रूप से न जानता हुआ. Not re-  
cognising, not able to identify  
" तत्तेयं सा बोवर्ह देवी पडिबुद्धा  
समाणी तं भवण असोगवणियं च अ-  
पच्यभिजाण्यमाणी " नाया० १६,

**अपच्यय** पुं० (अप्रत्यय) असत्यनुं ऐक नाम  
असत्य का एक नाम Disbelief परह० १,  
२, (२) अदत्तादाननुं सत्तरमु नाम. अदत्ता  
दान का सत्रहवाँ नाम a variety of  
falsehood, the seventeenth

synonymous word for Adattā-  
dāna परह० १, ३;—कारण त्रि०  
(—कारक) विश्वासघाती,—खरोसे उडाडनार  
विश्वासघाती committing breach  
of trust परह० १, २,

**अपच्छरण** त्रि० ( अपच्छन्न ) शुभ नहि;  
प्रगट, छानुं नहि बिना छिपा हुआ, प्रकट.  
Manifest, not concealed भग०  
१५, १,

**अपच्छायतावि** त्रि० ( अपश्चात्तापिन् )  
अपराध आलोचनीने पश्चात्ताप न करना,  
गुरुनी समीपे दोषनी आलोचनीना करी राण  
थनार अपराध की आलोचना करके पश्चात्ताप न  
करने वाला, गुरु के समीप दोष की आलोचना  
करके संतुष्ट होने वाला Not repenting  
after confession of faults to a  
Guru, feeling delighted after  
confession of faults to a Guru  
भग० २५, ७,

**अपच्छायमाण** व० कृ० त्रि० (अप्रच्छादयत्)  
न छुपावतो; छानु न राभतो नहीं छुपाता  
हुआ Not concealing " अणिरहव-  
माणा अपच्छायमाणा जहाभूयमवि-  
तहमसंदिद्धं पयमट्टं आहक्खइ " नाया० १,

**अपच्छिद्रम्** त्रि० ( अपश्चिम—न विद्यते पश्चिमो  
ऽस्मादित्यपश्चिम ) सौथी छेदु, जेना पंथी  
डोड नहीं ते, अतसमयनुं, आभरनु सब से  
आखिर का, अंतिम. Last; final. भग० ६,  
३३, २०, ५, सस० ७, श्रौव० ३४; नंदी०  
स्थ० २, नाया० १,—**मारणतियसंलेहणा**.  
स्त्री० (—मारणान्तिकसंलेखना—मरणमे-  
वास्तो मरणान्त, तत्र भवा मारणान्तिकी,  
संलिख्यते कृशीक्रियतेऽनया शरीरकपाया-  
दिकमिति संलेखना सपोविशेषकण्येया  
तत् कर्मभारय ) भरलुसभये—अतवभते  
इपापने उपशभावी देहनी मूर्च्छा टण्णी

करवायां आवतुं तपविशेष-संधारो. मृत्यु के समय कषाय का उपशमकर और देह में मूर्च्छा न रखकर जो तपविशेष किया जाता है वह-संधारा. an austerity practised at the approach of death, consisting in assuaging evil passions and giving up food and water etc. उवा० १, ७३; भग० ७, २;

**अपञ्ज.** त्रि० (अपर्याप्त) अपर्याप्तं दुर्दु रूप-नाम अपर्याप्त का छोटा नाम. An abbreviation of 'अपर्याप्त.' क० गं० १, २०; ३, १३;—बायद. न० (-बादर) आदर ऐकेन्द्रियतो अपर्याप्ति, जेणे पर्याप्ति पूरी नहीं आंधी ऐवे आदर ऐकेन्द्रिय. जिसने पर्याप्ति पूरी न बांधी हो ऐसा बादर ऐकेन्द्रिय. an undeveloped one-sensed Jiva (living being) with a gross body. क० गं० ४, १०;—सन्नि त्रि० (-संज्ञिन्) संज्ञी पञ्चेन्द्रियतो अपर्याप्ति, अपर्याप्ति संज्ञी. अपर्याप्त संज्ञी, संज्ञी पञ्चेन्द्रिय का अपर्याप्त. an undeveloped five-sensed rational living being क० गं० ४, ७;

**अपञ्जग** त्रि० (अपर्याप्तक) अपर्याप्ति, जेणे आहारादि ७ पर्याप्तिमांती पर्याप्ति पूरी नहीं करी ते जिसने आहारादि छः पर्याप्तियों में से पर्याप्ति पूरी न करी हो वह. Undeveloped; (the soul) that has not developed the six Paryāptis viz Āhāra etc. क० प० २, ४३;

**अपञ्जस्त.** त्रि० (अपर्याप्त-अपर्याप्तयो विद्यन्ते यस्य सोऽपर्याप्तः) अपर्याप्ति-नामकर्मना उद्यथी आहारादि पर्याप्ति आंधीने पूरी करी न होय ते; ते जे प्रकारना होय-जेके लब्धि-अपर्याप्ति पीजे करणुअपर्याप्ति, जे पोतानी

अति योग्य पर्याप्ति पूर्णु कर्या विना मरणु पाये ते लब्धि अपर्याप्ति अने जेणे ७ पर्याप्ति पूर्णु करी नहीं पणु अवश्य पूर्णु करी पर्याप्ति थरो ते करणुअपर्याप्ति; दरेक ७५ उतपन थवाने पहेले अंतर्मुहूर्ते करणुअपर्याप्ति थधनेण पर्याप्ति थाय छे. अपर्याप्ति-नामकर्म के उदय के कारण आहारादि पर्याप्ति का बंध करके जिसने उन्हें पूर्ण न किया हो वह; उसके दो प्रकार होते हैं-एक लब्धि अपर्याप्त, दूसरा करणुअपर्याप्त. जो अपनी जाति योग्य पर्याप्ति पूर्ण किये बिना मरण को प्राप्त हो वह लब्धिअपर्याप्त और जिसने अभी पर्याप्ति पूर्ण न की हो पर अवश्य पूर्ण करके पर्याप्त होगा वह करणुअपर्याप्त. प्रत्येक जीव उत्पन्न होने के पहिले अंतर्मुहूर्त तक करणुअपर्याप्त अवस्था में रहकर फिर पर्याप्त होता है. (A soul) without a full development of the characteristics of the body into which it is to incarnate It is of two sorts: (1) Labdhi-Aparyāpta i. e. dead in an Aparyāpta state; (2) Karaṇa-Aparyāpta i. e. sure to attain to the Paryāpta state. भग० ५, ४; ८, १, २; २४, २०; ३३, १; पञ्च० १; नंदी० १७; क० गं० २, ३३; ३, १०, ४, ५, प्रव० ११६५; (२) अपूर्णु; पूर्णु नहीं ते. जो पूर्ण न हो वह imperfect. "सर्वं पि ते अपञ्जस्तं, नेव तायाप तं तव " उक्त० १४, ३६; राम० २५७;—नाम न० (-नामन्) नामकर्मनी जेके प्रकृति, के जेना उद्यथी ७५ पोताने योग्य पर्याप्ति पूर्णु करवायां समर्थ थतो नहीं. नामकर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से जीव अपने योग्य पर्याप्ति पूर्ण करने में समर्थ नहीं होता. a variety of Nāma-

Karma by which the soul remains Aparyāpta क० गं० २, ३३;

अपज्जत्तग त्रि० ( अपर्याप्तक ) लुओ  
“ अपज्जत्त ” श०६ देखो “ अपज्जत्त ”  
शब्द Vide “ अपज्जत्त ” “ दुविहा  
नेरइया पणत्ता, तंजहा-पज्जत्तगा चेव अप-  
ज्जत्तगा चेव जाव वेमाणिया ” भग० ८, १,  
१६, ३, २५, १, पन्न० १, २३; क० प०-१,  
६८, ठा० २, २,

अपज्जत्तय-अ त्रि० ( अपर्याप्तक ) लुओ  
“ अपज्जत्त ” श०६ देखो “ अपज्जत्त ”  
शब्द Vide “ अपज्जत्त ”, भग० ६, ३;  
२४, १, १२, ३४, १; सम० १४;

अपज्जत्ति. स्त्री० ( अपर्याप्ति ) पर्याप्तिनी  
अपूर्णाता; पोताना स्थान योग्य पर्याप्ति आधी  
पूर्णा करी न होय ते पर्याप्ति की अपूर्णाता,  
अपने स्थान योग्य पर्याप्ति बाधकर उसे पूर्ण  
न किया हो State of being Aparyā-  
pta भग० १८, १;

अपज्जवसिय-अ. त्रि० ( अपर्यवसित ) लुओ  
पर्यवसान-छेडा नहीं ते, अनंत जिसका अंत  
नहीं वह, अनंत Endless, infinite  
“ एत्थयं सिद्धा भगवतो सादिया अपज्जव-  
सिया सिद्धति ” पन्न० २ आया० १, ७, १,  
१६६, ठा० २, १, ओव० ४३, भग० २, १,  
६, ३; ८, २, ८, २५, ३, उक्त० ३६, ८,

अपज्जवसियत्त न० ( अपर्यवसितत्व ) अंत-  
रहितपण्यं, अनंतपण्यं अन्त रहितपणा, अन-  
न्तत्व Infinity; endlessness विशेष०  
३१३१,

अपज्जुदास पु० ( अपर्युदास ) अनिषेध  
निषेध रहित Non-prohibition, ab-  
sence of prohibition विशेष० १८३;

अपज्जुवासणा स्त्री० ( अपर्युपासना ) पर्यु-  
पासना-सेना न करी ते सेवा न करना.

Not serving; absence of wor-  
ship. नाया० १३,

अपडिकम्म. न० ( अप्रतिकर्मन् ) लुओ  
“ अपडिकम्म ” श०६ देखो “ अपडिकम्म ”  
शब्द Vide “ अपडिकम्म ”, पन्न० २, ५;  
अपडिकंत त्रि० ( अप्रतिक्रान्त ) दोष-अति-  
आरथी निवृत्ति पाभेद नहि. दोष-अतिचार  
से निवृत्ति नहीं पाया हुआ Not abstained  
from sins or faults. दसा० १०, ३;

अपडिकम पुं० ( अप्रतिक्रम ) लुओ “अप-  
डिकम्म ” श०६ देखो “ अपडिकम्म ” शब्द.  
Vide “ अपडिकम्म ” भग० २, १;  
२५, ७;

अपडिकमित्तु सं० कृ० अ० ( अप्रतिक्रम्य )  
पडिक्कमणु न करीने प्रतिक्रमण किये बिना  
Without having performed  
Pāikamana ( repentance for  
sin ) उक्त० २६, २२,

अपडिग्गहा. स्त्री० ( अपतद्ग्रहा ) ले अंधाती  
कर्मप्रकृतिमा पीछे प्रकृतिना दलियानुं संक-  
मणु न थाय ते प्रकृति त्यारे ‘ अपतद्ग्रहा ’  
डहेवाय, लेम-संभवजनकपायनी योडडीनी  
ओड समय उणी तणु आरदिडानी स्थिति  
शेष रहे त्यारे ते ‘ अपतद्ग्रहा ’ डहेवाय जिस-  
ववती हुई प्रकृति में दूसरी प्रकृति के दल-समूह  
संक्रमण नहीं होता तब वह प्रकृति ‘ अपतद्ग्रहा ’  
इस नाम से कही जाती है, जैसे-सज्वलनकषाय  
की चौकड़ी की एक समय न्यून तीन आव-  
लिका की स्थिति शेष रहे तब वह ‘ अपतद्ग्रहा ’  
कही जाती है That Karmic nature  
or Karma into which another  
Karmic nature or Karma can-  
not be transformed while the  
former is yet being shaped क०  
प० २, ५;

अपडिचक्र त्रि० ( अप्रतिचक्र ) लुओ ‘अप-  
प-

डिचक्क ' शब्द. देखो 'अपडिचक्क' शब्द  
Vide " अपडिचक्क " नदी०

अपडिण त्रि० (अप्रतिज्ञ) अ-नदि-प्रतिज्ञा-  
नियाणु, नियाणु न करनार, करणुनु द्व  
भागी लेनार नदि प्रतिज्ञा न करने वाला  
कर्म के फल की चाह न रखने वाला,  
Not desiring the fruits of  
Karma सूय० १, २, २, २०, ( २ )  
क्रोधादिना आवेशमां 'अमुकते भागीश, अमु-  
कतुं अनिष्ट करीश' धत्यादि प्रतिज्ञा न करनार  
क्रोधादि के आवेश में किसीका अनिष्टादि करने  
की प्रतिज्ञा न करने वाला or not  
swearing to kill or injure an-  
other in a fit of rage. आया० १,  
२, ५, ८, १, ७, ३, २०६, ( ३ ) राशद्वेष  
रहित रागद्वेषरहित free from attach-  
ment and hatred " तस्तेण अणुसि-  
द्धा ते अपडिणणेण जाणया " सूय० १,  
३, ३, १४;

अपडिणवेत्ता सं० कृ० अ० (अप्रतिज्ञाप्य)  
आज्ञा लीधा विना आज्ञा लिये विना  
Without having taken permis-  
sion कप्प० ६, ५२;

अपडिणुण त्रि० (अप्रतिपूर्ण) अधुरे,  
तुच्छ, गुणहीन अधूरा, तुच्छ; गुण रहित  
Imperfect, mean, devoid of  
merit. सूय० २, २, ५७,

अपडिणुयञ्च त्रि० (अप्रतिपूजक) लुओ  
'अपडिणुयञ्च' शब्द देखो 'अपडिणुयञ्च'  
शब्द Vide " अपडिणुयञ्च ". दसा०  
६, २०; २१,

अपडिणुरेमाण व० कृ० त्रि० (अप्रतिपरयत्)  
साथीत न करतो, पुरवार न करतो साक्षित नहीं  
करता हुआ, सिद्ध नहीं करना हुआ Not  
proving, not adducing evidence  
वेय० ६, २;

अपडिवद्ध. त्रि० (अप्रतिबद्ध) विषयभोग के  
स्थानना प्रतिबंधी रहित विषयभोग या  
स्थान के प्रतिबंध से रहित Unrestrai-  
ned, e g in sensual pleasure,  
movement in space etc. " अप-  
डिवद्धो अनलो व्व " परह० २, ५; ठ०  
४, ४, जं० प० २, ३१;—विहार. पुं०  
(-विहार) अनिबंध-द्रव्यादि अलिप्वंगरहित  
विहार प्रतिबंध-द्रव्यादि अभिष्वग रहित  
विहार. movement unfettered  
by attachment to wealth etc.  
प्रव० ७७६,

अपडिवद्धया स्त्री० (अप्रतिबद्धता) लुओ  
"अपडिवद्धया" शब्द देखो "अपडि-  
वद्धया" शब्द Vide "अपडिवद्धया"  
उत्त० २६, ३२,

अपडिवुज्झमाण व० कृ० त्रि० (अप्रतिबुध्य-  
मान) शब्दान्तरने न समजतो; धारणा न  
करतो शब्दान्तर को न समझता हुआ, धारणा  
न करता हुआ. Not grasping the  
import of a word. जं० प० ३, ६७;  
भग० ६, ३३,

अपडिवार पुं० (अप्रतिकार) दुःखना उपा-  
यतो अभाव. दुःख के उपाय का अभाव,  
Absence of remedy for misery,  
पंचा० २, १०,

अपडिलद्ध त्रि० (अप्रतिलब्ध) न प्राप्त  
थये; नहीं पाया हुआ; अप्राप्त. Not re-  
ceived, not obtained. "अपडिलद्ध  
सम्मत्तरयणपडिलंभे" नाया० १;

अपडिलेस्स. त्रि० (अप्रतिलेख्य) लुओ  
"अपडिलेस्स" शब्द देखो "अपडिलेस्स"  
शब्द Vide "अपडिलेस्स." ओव०

अपडिलेहण न० (अप्रतिलेखन) पडिलेहण  
न करतु ते, न करे ओवु नदि ते पडिलेहण

न करना, दृष्टि से नहीं देखना Not examining, not inspecting आव० ४, ६, अपडिलेहणा स्त्री० ( अप्रतिलेखना ) आंघे न जेधु ते आंखों से नहीं देखना Not examining, not inspecting कप्प० ६, ५३,—सील त्रि० ( -शील ) जेने जेधने याखवानी टेव नथी ते जिसे देखकर चलने की आदत नहीं है वह used to walk without carefully inspecting कप्प० ६, ५३, अपडिलेहिय त्रि० ( अप्रतिलेखित ) ज्यनी रक्षाभाटे नजरे जेजेख-तपासेख नडि जीव की रक्षा के लिये आंखों से नहीं देखा हुआ Not examined with a view to the protection of lives उवा० १, ५५, —दुप्पडिलेहियउच्चारपासवणभूमि स्त्री० ( -दुष्प्रतिलेखितोच्चारप्रसवणभूमि-अप्रत्युपेक्षिता जीवरक्षार्थं चक्षुषा न निरीक्षिता दुष्प्रत्युपेक्षिताऽसम्यग् निरीक्षिता पुरीषमूत्र निमित्त भूमि स्थण्डिलं तत कर्मधारय ) पोषामा वडीनीत-आडे, लधुनीत-पेशाण पर-धवानी भूमि न जेवाथी अथवा सारी रीते न जेवाथी पोषामा लागतो अतियार, आवडना अगीयारमा प्रतनो त्रीजे अतियार पोषव-व्रत में शौच, पेशाव करने की भूमि न देखकर उन क्रियाओं के करने से जो दोष लगता है वह; श्रावक के ग्यारहवें व्रत का तसरा अतिचार sin arising from casting away or laying down feces, urine etc without examining or properly examining the ground, during the time of Posadha vow of a layman, the third partial violation of the eleventh vow of a layman. उवा० १, ५५,—दुप्पडिलेहियसिज्जासंधारय

पुं० (—दुष्प्रतिलेखितरव्यासंस्तारक ) पोषा-मां सुवानी पथारी न पडिजेडुवाथी अथवा सारी रीते पडिजेडुषु न डरवाथी पोषामा लाग-ते अतियार, आवडना अगीयारमा प्रतनो प्रथम अतियार पोषव में सोने का विद्यौना-विस्तर अच्छी तरह पडिलेहण न करने से जो दोष लगता है वह, श्रावक के ग्यारहवें व्रत का प्रथम अतिचार partial violation of Posadha vow acciuing to a layman through not examining or properly not examining his bed, the first partial violation of the eleventh vow of a layman उवा० १, ५५,

अपडिलोमया स्त्री० ( अप्रतिलोमता ) अनु-द्वेता अनुकूलता Favourableness, agreeableness भग० २५, ७,

अपडिवज्जचित्ता सं० कृ० अ० (अप्रतिपद्य) अगीडार ड्यां विना अंगीकार किये विना. Without having accepted वव० ६, २०,

अपडिवाइ त्रि० (अप्रतिपातिन् ) अपडिवाध; आन्धु ज्य नडि तेवु-डापडसमडित, डेवण ज्ञान वगेरे जो उत्पन्न होकर कमी नष्ट न हो ऐना ज्ञावकसम्यक्त्व, केवलज्ञान आदि Not passingaway, permanently remaining e g Kevala-Jñāna etc ठा० २, १, (२) न० डेवण ज्ञान उत्पन्न थायत्या सुधी रहेवावाणुं अवधि-ज्ञान केवलज्ञान उत्पन्न होने तक रहने वाला अवविज्ञान Avadhujñāna lasting till omniscience is attained to. “से कि त अपडिवाइ च ओहिनायं” नदी० विशेष० ७०३,

अपडिविरत्र-य त्रि० ( अप्रतिविरत ) जुओ “अपडिविरय” शब्द देखो “अप्य-

‘डिविरय’ शब्द. Vide “ अप्पडिविरय.”  
दसा० ६, १; ४;

अपडिसंलीण. त्रि० ( अप्रतिसंलीन ) जेणे  
धद्रिओ अने धपायनेो निग्रह नथी धर्यो ते-  
जिसने इन्द्रिय और कषाय का निग्रह नहीं  
क्रिया वह. Having passions and  
senses uncontrolled. “ चत्तारि  
अपडिसंलीणा प० तं० कोहअपडिसंलीणे  
मा० मा० लो० अपडि० ” ठा० ४, २,  
“ पंच अपडिसंलीणा प० तं० सोइन्द्रियअप-  
डिसंलीणे जाव फासिदियअपडिसंलीणे ”  
ठा० ५, २,

अपडिसुणणे न० ( अप्रतिश्रवण ) गुरुनां  
वचन साखण्यां छता ते वचनने गणुडारवा  
नहि ते; गुरुनी आज्ञानो स्वीकार करी न्वाण  
न वाणवेो ते गुरु के वचन सुनकर भी उन्हें  
न गिनना, गुरु की आज्ञा मानकर उत्तर न  
देना. Not giving a response to  
the order of a preceptor i. e  
not signifying acceptance of  
his order in words. प्रव० १३०;

अपडिसुणित्ता स० कृ० अ० ( अप्रतिश्रुत्य )  
जुओ “ अप्पडिसुणित्ता ” शब्द देखो  
“ अप्पडिसुणित्ता ” शब्द Vide “ अप्प-  
डिसुणित्ता ” दसा० ३, १४; १५, २०, २१,

अपडिसेवय पु० स्त्री० ( अप्रतिसेवक )  
अतियार आदि दोषने न सेवनार; दोष न  
लगानार अतिचार आदि दोषों को न लगाने  
वाला. One, not incurring sins  
like those of partial violation  
etc. भग० २५, ६; ७,

अपडिसेह. पुं० ( अप्रतिषेध ) निषेध न करवेो  
ते; अटकाव नहि निषेध न करना रोक  
टोक का अभाव Non-obstruction;  
not stopping पचा० ६, ३६,

अपडिहट्टु. सं० कृ० अ० ( अप्रतिहृत्य ) पाणुं  
आप्या विना. पांछे दिये विना. Without  
having given back. वेय० ३, २२;  
निसी० २, ५६;

अपडिहय त्रि० ( अप्रतिहत ) जुओ ‘ अप्प-  
डिहय ’ शब्द. देखो ‘ अप्पडिहय ’ शब्द.  
Vide “ अप्पडिहय. ” नाया० १६; उत्त०  
११, २१, भत्त० ५०,

अपडिहारय. त्रि० ( अप्रतिहारक ) अपाढी-  
यारा-धण्डिने पाण न आपवा योग्य सेण,  
संधारेो वगेरे मालिक को पांछे न देने योग्य  
शय्या, विस्तर आदि Unfit to be re-  
turned to the owner; e.g. bed,  
bed-cover etc. आया० २, २, ३;

अपडीकार. त्रि० ( अप्रतीकार ) प्रतीकार-  
धडाण वगरनेो, रक्षणुना उपाय विनानेो.  
प्रतीकार रहित, रक्षा के उपाय विना का.  
Ir-remediable; having no  
means of protection against.  
“ कि ते सीउरहतएहखुहवेयणं अपडीकार-  
अडविजम्मणा ” परह० १, १;

अपढम त्रि० ( अप्रथम ) प्रथमतारहित;  
जेमां प्रथमपाणुं नथी ते; अनादि, शरुआत  
विनानुं प्रथमता रहित; आदि रहित, अनादि.  
Having no beginning. भग० १८,  
१; ३५, ३; ( २ ) प्रथम-पडेणुं नहि;  
थीणु, त्रीणुं वगेरे प्रथम-पहिला न हो वह  
अप्रथम कहलाता है अर्थात् दूसरा, तीसरा  
आदि not first, e. g second, third  
etc क० गं० ५, १६; ठा० २, १, भग०  
२५, ६;—खगइ. स्त्री० (—खगति ) अगति-  
विहायोगति-यालवुं, ते याल जे प्रकारनी छे  
शुभ अने अशुभ तेमानी अपढम-थीणु अ-  
शुभ-अप्रशस्त विहायोगति वह विहायोगति  
जो दूसरी प्रकार की अर्थात् अशुभ है, क्यों  
कि, विहायोगति शुभ और अशुभ इस तरह दो



प्रकार की होती है. the second of the two kinds of Vihāyogati viz (1) good and (2) bad, gait or movement of a bad kind क० गं० ५, ५७; अपढमसमय पुं० ( अग्रथमसमय ) प्रथम समय नहीं, पीले, त्रीले समय वगेरे प्रथम समय नहीं, दूसरा, तीसरा आदि समय Samaya or unit of time other than the first भग० ३५, ५, ठा० २, २;—उववराणां त्रि० (—उपपन्नक ) नेने उपनये ऐक्यी वधारे-ये, त्रयु आदि समय तथा होय ते जिसे उत्पन्न हुए एक से अधिक अर्थात् दो तीन आदि समय हुए हों वह (one) after whose birth more than one Samaya have elapsed. “ खेरह्या दुविहा पन्नता, तं० पढमसमयो-ववराणां अपढमसमयोववराणां जाव वेमा-णिया” ठा० २, २;—उवसंतकसाय पुं० स्त्री० (—उपशान्तकषाय) नेने ऐक्यी वधारे-ये, त्रयु आदि समय कषाय उपशमाव्याने-उ-पशमप्रेणीये यज्याने तथा छे ते जिसे कषाय का उपशम किये एक से अधिक अर्थात् दो, तीन समय हुए हैं वह one after whose assuaging of impure passions more than one Samaya have elapsed ठा० ८,—एगिदिय पुं० (—एकेन्द्रिय ) नेने ऐक्येन्द्रियपणु प्राप्त कर्ये ऐक्यी वधारे समय तथा छे ते जिस जीव को एकेन्द्रियत्व प्राप्त किये एक से अधिक समय हुआ है वह. (a soul) after whose becoming one-sense-organed more than one Samaya have elapsed. ठा० १०,—कखणिकसाय. पुं० स्त्री० (—क्षीणकषाय) नेने कषाय क्षय कर्ये-क्षपकप्रेणीये यक्षे ऐक्यी वधारे समय तथा होय ते. जिसे कषाय को क्षय किये-क्षपकप्रेणी

पर चढे एक से अधिक समय हुआ हो वह one after whose starting on the path of destruction of impure passions more than one Samaya have elapsed. ठा० ८,—सजोगि-भवत्थ पुं० (—सयोगिभवत्थ ) नेने सजे-गिलवत्थ थये-तेरमे गुणुक्षाणे यक्षे ऐक्यी वधारे समय तथा छे ते जिसे सयोगिभवत्थ हुए-तेरहवें गुणस्थान पर चढे एक से अधिक समय हुआ हो वह one after whose reaching the thirteenth Gunasthāna ( Sayogibhava ) more than one Samaya have elapsed. ठा० २, १,—सिद्ध. पुं० (—सिद्ध ) सिद्ध पर्याय-सिद्धपणुना पीण, त्रीण आदि समय-मा वर्तमान सिद्धलगव न्; नेने सिद्ध तथा ने ऐक्यी वधारे समय तथा छे ते सिद्धपर्याय के दूमरे तीसरे आदि समय में वर्तमान सिद्ध भगवान्, जिसे सिद्ध हुए एक से अधिक समय हुआ हो वह one after whose attainment to Siddhahood more than one Samaya have elapsed. पन्न० १,—सुहुमसंपरायसंजम पुं० (—सूक्ष्मसंपरायसंयम ) नेने सूक्ष्मसंपराय संयम प्राप्त कर्ये-दशमे गुणुक्षाणे यक्षे ऐक्यी वधारे समय तथा होय ते जिस सूक्ष्मसाप-रायसयम प्राप्त किये-दशवें गुणस्थान पर चढे एक से अधिक समय हुआ हो वह one after whose attaining to the tenth Gunasthāna ( Sūkṣma-samparāya Saṃyama ) more than one Samaya have elapsed. ठा० ८;

अपत्त त्रि० ( अपात्र ) अयोग्य; पात्र-लायक नहीं. अयोग्य, पात्र-योग्य नहीं Unfit; unworthy. निसी० १६, २२,

अपत्त त्रि० ( अप्राप्त ) पामेद नडि, प्राप्त न  
 डरेद प्राप्त नहीं किया हुआ; नहीं पाया हुआ.  
 ( One ) not in possession of,  
 ( anything ) not obtained नाया०  
 ६, भग० १८, १,—कारि न० ( -कारिन् )  
 स्वविषयसाथे संबन्ध पाभ्या विना विषयने  
 अडुण डरनार छद्रिथो, आंभ अने मन  
 अपने विषय के साथ संबन्ध हुए विना विषय  
 को ग्रहण करने वाली इन्द्रियाँ—आँख और मन.  
 an organ of sense which be-  
 comes conscious of its object  
 without actual touch; i.e. the  
 eye and the mind विशेष० २४५,  
 —जोवणा. स्त्री० ( -जौवना ) योवन  
 अवस्थाने न प्राप्त थयेद स्त्री, कुमारिका,  
 आक्षा यौवनावस्था को अप्राप्त स्त्री, कुमारिका,  
 बाला. a young girl; a maiden  
 ठा० ५, २;—विसय. न० ( -विषय-अप्रा-  
 सोऽस्सम्बद्धो विषयो ग्राह्यवस्तुरूपो यस्य तद-  
 प्राप्तविषयम् ) अप्राप्यकारी इन्द्रिय, जे छद्रिय  
 विषयने पाभ्या विना विषयने अडुणु डरे ते-  
 आंभ अने मन अप्राप्तकारी इन्द्रिय, जो  
 इन्द्रिय विषय को प्राप्त किये विना विषय को  
 ग्रहण करे वह, आँख और मन an organ  
 of sense which becomes con-  
 scious of its object without  
 actual touch; i.e. the eye and the  
 mind “ लोयणमपत्तविसयं मणो न्न जम-  
 खुग्महाइ सुणत्ति ” विना० १, २; विशेष०  
 २०६;

अपत्तजात. त्रि० ( अपत्रजात ) जेते पांभो  
 नथी आपी अयेतुं पक्षीतुं अत्र्युं जिसे पंख नहीं  
 आये ऐसा पक्षी का बच्चा An unfledged  
 bird. “ जहा दियापोत्तमपत्तजातं,  
 सात्तासगा पत्तिडं सत्तमायं ” सुत्त० १,  
 १४, २;

अपत्ति स्त्री० ( अप्राप्ति ) अप्राप्ति अप्राप्ति.  
 Not getting, non-acquisition.  
 क० ग० २, १३,

अपत्तिग त्रि० ( अप्रीतिक ) प्रीति वगरनुं.  
 प्रीति रहित Devoid of pleasure पंचा०  
 ७, १०,—रहिय. त्रि० ( -रहित ) अप्रीति  
 रहित. अप्राप्ति हीन free from dis-  
 pleasure or disgust. पंचा० ७, १०;

अपत्तिय त्रि० ( अपात्रिक ) जेते डंछ आधार  
 नथी ते जिसे कुछ आधार नहीं है वह.  
 Help-less; supportless. भग०  
 १६, ४,

अपत्तियंत. त्रि० ( \* असंबद्धि-अप्राप्त ) न  
 पामतो; न भणतो प्राप्त न होता हुआ, नहीं  
 मिलता हुआ Not obtaining, not  
 being obtained. सु० ज० १०, ३८,

अपत्तियमाण व० क० त्रि० ( अप्रतीयत् )  
 प्रतीति-विश्वास न राभतो; लरोसे न राभतो  
 विश्वास न रखता हुआ Not believing;  
 not putting trust in. भग० ३,  
 १; ६, ३३; १५, १, नाया० १५; १६;

अपत्थ. त्रि० ( अपथ्य ) अपथ, शरीरनी प्रकृतिथी  
 प्रतिदूल-भोजन वगेरे पथ्यरहित भोजन, शरीर  
 की प्रकृति से विरुद्ध भोजन आदि Unwhole-  
 some, e.g. food etc. “ अपत्थं अंबगं  
 भुञ्जा, रय्या रजं तु हारण् ” उत्त० ७, ११; पंचा०  
 ८, १०; १५, ४०;—अयण त्रि० ( -अदन )  
 पथ्य-हितकर भोजन विनातो, संभल  
 वगरने; परलवसां सुथ्य आये तेवा सुकृत्य  
 विनातो. हितकर-पथ्यरूप भोजन रहित; पर  
 भव में सुख देने वाले सुकृत्य से रहित de-  
 stitute of wholesome food, de-  
 stitute of good actions which  
 would give happiness in the next  
 birth. नासा० १५;—पत्तिथय. त्रि०

(-प्रार्थित-अपत्यं प्रार्थितं येन स तथा )  
अपत्य-अनिष्टने धृञ्छनार अपत्य-अनिष्ट  
की इच्छा करने वाला. desirous of  
(things) unwholesome or evil  
जं० प० ३, ४५; निर० १, १;

अपत्यण. न० ( अप्रार्थन ) धृञ्छा न करती  
ते, प्रार्थनाको अभाव इच्छा का न करना,  
प्रार्थना का अभाव Absence of prayer  
or desire. " अदंसखं चैव अपत्यणं च "  
उत्त० ३२, १५,

अपत्थिय त्रि० ( अप्रार्थित ) न धृञ्छेत्तुं, न  
भाग्यं अनिच्छित, नहीं मागा हुआ Not  
sought, not wished नाया० १६,  
—पत्थिय त्रि० (-प्रार्थक) लुभ्ये। 'अप्प-  
त्थियपत्थय' शब्द देखो 'अप्पत्थियपत्थय'  
शब्द. Vide 'अप्पत्थियपत्थय' नाया० ८,  
६, निर० १, १,

अपत्येमाण व० कृ० त्रि० (अप्रार्थयमान) प्रार्थना  
न करतो, अणु धृञ्छतो प्रार्थना न करता हुआ,  
इच्छा न करता हुआ Not entreating,  
not wishing उत्त० २६, ३३,

अपद पुं० ( अपद-न विद्यते पदमवस्थाविशेषो  
यस्य सोऽपद ) मुक्त आत्मा, सिद्ध भगवान्  
मुक्तात्मा; सिद्ध भगवान् A liberated  
soul, Siddha " अपदस्स पय णत्थि "  
आया० १, ५, ६, १७०, ( २ ) ढाडिम, आंभो,  
भीजेरा वगेरे अड आम, अनार, बिजोरा  
आदि वृक्ष a variety of trees  
like mango, pome-granate,  
Bjorā etc भग० १८, ४;

अपदार न० ( अपद्वार ) नगरनी आणवगेरे,  
अपदार, दुष्टमार्ग दुष्टमार्ग, नाल-मलमूत्र बहने  
की नाली A passage for draining  
filth etc, a gutter etc, नाया० ८,  
अपदुस्समाण व० कृ० त्रि० (अप्रद्विष्यत्) द्वेषन

करतो. द्वेष न करता हुआ Not hating,  
not despising अंत० ४,

अपदेस्स, पुं० ( अप्रदेश ) निन्ध प्रदेस-स्थण.  
निन्ध स्थल. A bad place, an in-  
famous quarter पंचा० ७, ११,

अपद्दवंत व० कृ० त्रि० (अपद्रवत्) भरणु पा-  
भतो मरण पाता हुआ Dying, depart-  
ing the world. भग० २, १,

अपप्यकारिस्स न० ( अप्राप्यकारित्व ) विषय-  
ग्राह्यवस्तुना स्थणप्रत्ये गया विना विषयतो  
परिच्छेद करनार धृञ्छियोतो धर्म, आप्य अने  
मन ये ये शिवाय यार धृञ्छियो प्राप्यकारी  
छेत्यारे आ ये अप्राप्यकारी छे माटे ये  
येमा अप्राप्यकारित्व रहे छे. विषय-ग्राह्यवस्तु  
स्थल के प्रति गये विना विषय का परिच्छेद करने  
वाला इन्द्रियों का धर्म, अँख और मन ये दो  
इन्द्रियाँ अप्राप्यकारी हैं और बाकी की चार  
प्राप्यकारी हैं, इसलिये इन दो में अप्राप्यकारित्व  
धर्म है The property of a sense-  
organ by which it can cognise  
its object without actual  
contact with it The eye and  
the mind have this property.  
नदी०

अपमज्जण. न० ( अप्रमार्जन ) पुण्यं नहि  
ते, प्रमार्जन न करयुं ते परिमार्जन नहीं  
करना, जीव, जन्तु, रज आदि को नहीं हटाना  
Not removing away, not cleans-  
ing of dust etc सम० १७,

अपमज्जणासील. त्रि० ( अप्रमार्जनशील )  
रणेहरणु, पुण्य वगेरेथी प्रमार्जन न करवाना  
स्थणवावणा ( साधु साध्वी ) रजोहरण आदि  
से प्रमार्जन न करने वाला (साधु, साध्वी) ( A  
monk or a nun) not given to or  
disposed to cleanse vessels,

ground etc. by means of a long-handled brush कम्प० ६, ५३;

अपमज्जिय. त्रि० ( अप्रमार्जित ) रणेडरथु आदिथी पुंनेतुं नहि; प्रमार्जन न करेल. रजोहरण आदि से परिमार्जन नहीं किया हुआ Not cleansed by a brush etc; not removed away. प्रव० २६६; —चारि. पुं० (—चारिन् ) पुंन्या विनाना स्थानमां भेसनार, आलनार, परठवनार साधु; असमाधितुं भीजुं स्थानक सेवनार. अपरि-मार्जित स्थान में बैठने वाला, चलने वाला साधु, असमाधि का दूसरा स्थानक सेवन करने वाला. ( an ascetic ) sitting, walking etc. in a place not cleansed with a brush etc, ( one ) incurring the second Sthānaka of Asamādhi सम० २०, दसा० १, ५, —दुष्पमज्जियउच्चार-पासवणभूमि. स्त्री० (—दुष्प्रमार्जितोच्चार-प्रक्षवणभूमि) पोषामा उच्यते पासवणु परठव-वानी भूमि मुद्दल न पुंनवाथी के अरापर न पुंनवाथी पोषधव्रतमां लागते अतिवारः प्रोषधव्रतमें मलमूत्रादि प्रक्षेपण करने की भूमि को मलमूत्रादि प्रक्षेपण करते समय विलकुल न पूंजने-जीवजंतु रहित न करने या विधि-पूर्वक न पूंजने से जो अतिचार लगे वह partial violation incurred during the Posadha vow by not cleansing or by improperly cleansing (with a brush etc ) the ground for laying down feces and urine. उवा० १, ५५;—दुष्पम-ज्जियसिज्जासंथार पुं० (—दुष्प्रमार्जित शय्यासंस्तार ) पोषामां सुवानी पथारी मुद्दल न पुंनवाथी के विधिपूर्वक न पुंनवाथी लागते अतिवारः; आवडना अगीयारमा

मतने। ओक अतिवार-दोष प्रोषध में सोने का विस्तरा विलकुल न पूंजने से-जीवजंतु रहित करने से या विधिपूर्वक न पूंजने से लगता हुआ दोष, श्रावक के ग्यारहवें व्रत का एक अतिचार. a fault incurred by a layman during the Posadha vow by not cleansing or by improperly cleansing his bed ( with a brush etc.), partial violation of the eleventh vow of a layman. आव० ४, ६, उवा० १, ५५; अपमत्त. त्रि० ( अप्रमत्त ) भद, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा आदि प्रमाद वगैरना; अप्रमादी; सतत उपयोगी, सातमाथी यादमा गुणुस्थानक पर्यंतना शुच प्रमाद रहित जीव; विषय, कषाय, मद, निद्रा आदि प्रमादों से रहित सातवें से चौदहवें गुणस्थान तक का जीव. Free from pride, passions, Kaṣāya, and such other faults; souls between the seventh and the fourteenth stages of evolution. क० गं० २, १, २, ४, ६०; नदी० १७, —अंत. न० (—अन्त ) सातमा अप्र-मत्तसंयति गुणुक्षाणु पर्यंत सातवें अप्रमत्त-संयति गुणस्थान तक. up to the 7th Guṇasthāna, called Apramatta Guṇasthāna. क० गं० ४, ६२;—संजय. पुं० (—संयत ) सातमे गुणुक्षाणु वर्तते शुच; प्रमादरहित-अप्रमादी साधु सातवें गुणस्थानवर्ती जीव; प्रमाद रहित साधु. a soul in the seventh stage of spiritual evolution; a Sādhu free from Prāṇāda i e passions etc “अप्पमत्तसंजयस्स गं भते ! अप्पमत्त सजमे वट्टमाणस्स सव्वा वि य गां अप्पमत्तदा कालओ केवचिरं होइ ” भग० १, १, ३, ३१

—संजयगुणद्वारा. न० (—सयतगुणस्थान) सातमा गुणस्थानकतुं नाम, अप्रमत्तसयत नामे गुणुकायु सातवें गुणस्थान का नाम the seventh Gunasthāna so named प्रव० ३२४;

अपमार्. त्रि० (अप्रमादिन्) अप्रमादी; प्रमादरहित. प्रमाद रहित. Free from negligence or idleness. क० गं० ५, ७०,

अपमाण न० (अप्रमाण) प्रमाणीय बिभ्र; प्रामाण्यरहित. प्रमाण से रहित. Any thing not in harmony with the fixed standard. परह० २, ३, (२) प्रमाण्य उपरान्त आहार करवाथी साधुने लागतो अेक दोष; आहारनेो भीजे दोष. प्रमाण से अधिक भोजन करने से साधु को लगने वाला दोष, आहार का दूसरा दोष a fault incurred by a monk by eating beyond a fixed limit, the second fault connected with eating. परह० २, ३;—भोइ त्रि०. (—भोजिन्) अत्रीश कवली वधारे आहार करनार. वत्तीस कवल-कौर-ग्रास से अधिक भोजन करने वाला (one) eating more than thirty-two morsels of food. परह० २, ३.

अपमाय पु० (अप्रमाद) प्रमादनेो अभाव, अत्रीश योगसंग्रहमानेो २६ मेो योगसंग्रह प्रमाद का अभाव, वत्तीस प्रकार के योगसंग्रहों में से २६ वाँ योगसंग्रह. Absence of Pramāda i. e. entertaining passions etc. through inadvertance; the twenty-sixth of the thirty-two Yogasaṅgrahas. सम० ३२; पंचा० १, ३८,—पडिलेहा स्त्री० (—प्रतिलेखा-प्रत्युपेक्षणा) प्रमाद

वर्तने पडिलेहाय करवुं ते; “अण्वाविय” धत्यादि छ प्रकारे पडिलेहाय करवुं ते. प्रमाद छोड़कर पडिलेहाय करना, ‘अण्वाविय’ इत्यादि छ प्रकार से पडिलेहाय करना careful inspection of garments etc. ठा० ६,—भाचणा. स्त्री० (—भावना) मदिरा आदि प्रमादनुं सेवन न करवुं ते मदिरा आदि प्रमाद का सेवन न करना. abstention from such faults or vices as drinking etc आया० २, १५, १७६;—बुद्धि स्त्री० (—बुद्धि) अप्रमादनी वृद्धि-वधारे. अप्रमाद की वृद्धि progress or increase of carefulness पंचा० ५, १३.

अप्रमेय त्रि० (अप्रमेय) लुभ्यो “अप्पमेय” शब्द देखो “अप्पमेय” शब्द Vide “अप्पमेय” परह० १, ३,

अपर त्रि० (अपर) अन्य, पूर्वे कहेल दोष तेनाथी लुहुं. अन्य, पूर्वकथित से भिन्न-दूसरा. Different. निसी० २०, १०, (२) पश्चिम विभाग पश्चिम विभाग—हिस्ता. latter part, remaining part राय० ६३;—परिग्राहिय-अ त्रि० (—परिगृहीत-अपरै परिगृहीतोऽपरपरिगृहीत) भीज डोषये (साधुये) ग्रहण करेल अन्य-द्वारा ग्रहण किया हुआ accepted by another (monk). “अन्वोगहेसु अपर-परिग्राहेसु अपरपरिग्राहिणसु” वेय० ३, २७; वव० ७, २२,

अपरकम त्रि० (अपराक्रम) पराक्रम-सामर्थ्यहीन, नेतु न्वापलक्षीयु थयुं छे ते पराक्रम हीन; जिसका जंघावल क्षीण हुआ है वह. Powerless; incapacitated. नाया० १, आया० नि० १, ८, १, २६६; भक्त० ११; अपरत्त. न० (अपरत्त) अपरपण्यु; परत्यधी

विपरीत अपरभाव, परत्व से विपरीत भाव  
Condition of being different  
विशे० २४६९,

अपराह्य-अ. पुं० ( अपराजित ) लुओ।  
'अपराजिय-अ' शब्द देखो 'अपराजिय-अ'  
शब्द Vide 'अपराजिय-अ' जीवा० ३,  
२, जं० प० ३, ४२;

अपराह्या-आ स्त्री० ( अपराजिता ) लुओ।  
"अपराजिया-आ" शब्द देखो "अपरा-  
जिया-आ" शब्द Vide "अपराजिया-आ" जं०  
प० ५, ११४, ७, १५२;

अपराजित पुं० ( अपराजित ) लुओ। 'अपरा-  
जिय-अ' शब्द देखो 'अपराजिय-अ' शब्द  
Vide 'अपराजिय-अ' सम० जं० प० १, ७,

अपराजिता स्त्री० ( अपराजिता ) लुओ।  
'अपराजिया-आ' शब्द देखो 'अपराजिया-आ'  
शब्द Vide 'अपराजिया-आ' जं० प०

अपराजिय-अ पुं० ( अपराजित ) आवती  
चौवीसीना छठ्ठा प्रतिवासुदेवनाम आगामी  
चौवीसी के छठे प्रतिवासुदेव का नाम  
Name of the sixth Prativāsudeva of the coming Chovīsī.  
सम० प० २४२, (२) आठमा अत्रदेवना त्रीज्ज  
पूर्वभवनाम आठवें बलदेव के तीसरे  
पूर्वभव का नाम name of the third  
preceding birth of the eighth  
Baladeva. सम० प० २३६, (३) पांच  
अनुत्तर विमानपैठी योथा अनुत्तरविमाननु  
नाम पाँच अनुत्तरविमानों में से चौथे अनुत्तर  
विमान का नाम name of the fourth  
out of the five celestial abodes  
कप्प० ६, १७, भग० ५, ८, २४, २४,  
जीवा० ३, २, (४) योथा अनुत्तरविमानना  
देवता चौथे अनुत्तरविमान के देव the deity  
of the fourth celestial abode पञ्च०

१, (५) जम्बूद्वीपनी जगती-डोटना उत्तरदिशाना  
दरवाजानुं नाम जम्बूद्वीप के जगती-डोट का  
उत्तरदिशा के द्वार का नाम. the north-  
ern gate of the fort of Jambū-  
dvīpa, so named. जीवा० ३, ४, जं०  
प० (६) ८८ महाग्रहमांते ७२ में महाग्रह.  
८८ महाग्रहों में से ७२ वॉ महाग्रह. seven-  
ty-second of the eighty-eight  
Mahāgrahas or large planets.  
'दो अपराजियाओ' ठा० २, ३, (७) लवणु  
समुद्र, धातकीखंड द्वीप, कालोदधिसमुद्र अने  
पुष्करोद समुद्रना ओड दरवाजानु नाम  
लवणसमुद्र, धातकीखंड द्वीप और कालोदधि  
समुद्र के एक द्वार का नाम name  
of a gate of Dhātakikhandā  
Dvīpa, Kālodadhī Samudra,  
and Puskaroda Samudra  
and the Lavana Samudra  
जीवा० ३; ( ८ ) ऋषभदेव स्वामीना  
६३ मा पुत्रनु नाम ऋषभदेव स्वामी  
के ६३ वें पुत्र का नाम. name of  
the 63rd son of R̥sabhadēva  
Svāmī कप्प० ८, ( ९ ) मेरुनी उत्तरे  
रुचकपर्वतनु ओड डूट मेरु के उत्तर की  
ओर रुचकपर्वत का एक कूट a summit  
of the Ruchaka mountain to  
the north of Meru ठा० ८, ( १० )  
त्रि० पराजय नहि पायेल; अजित अपराजित,  
पराजय नहीं पाया हुआ not defeated,  
not subdued सम० ४००, सूय० १,  
२, २, २३, (११) पुं० १८ मा तीर्थकरने प्रथम  
बिक्षा आपनार गृहस्थनु नाम १८ वें तीर्थ-  
कर को प्रथम बार भिक्षा देने वाले गृहस्थ का  
नाम name of a gentleman who  
first gave alms to the eighteen-  
th Tirthānkara. सम० प० ३३२,

अपराजिया-आ जी० ( अपराजिता ) महा-  
 वच्छ विजयती मुपय रान्धानी. महावच्छा  
 विजय की मुख्य राजधानी The capital  
 of Mahāvachchhāvijayā “ दो  
 अपराजियाओ ” ठा० २, ३, ज० प० ( २ )  
 वप्रकावती विजयती रान्धानी वप्रकावती  
 विजय की राजधानी the capital of  
 Vaprikāvativijaya ज० प० ( ३ )  
 दशमनी रात्रिनुं नाम दशमी की रात्रि का  
 नाम name of the night of the  
 tenth day of a fortnight ज० प०  
 सू० प० १०, ( ४ ) अंजनगिरिनी उत्तर  
 तरङ्गी पुंडरशी-वावडीनुं नाम अजनगिरि  
 की उत्तर दिशा की ओर की वावडी का नाम  
 name of a well to the north of  
 Añjanagiri प्र० १५०३, जीवा० ३,  
 ४, ( ५ ) अगारक महाग्रह की पटरानी का नाम the  
 crowned queen of Angāraka  
 planet भग० १०, ५, ठा० ४, २, ( ६ )  
 अथा महाग्रहनी योथी अग्रमहिषी सब महाग्रहों  
 की चौथी पटरानी the fourth princi-  
 pal queen of all large planets  
 ठा० ४, १, जीवा० ४, १, ( ७ ) रुचकपर्वत  
 वारी आठमी दिशाकुमारिका रुचकपर्वत पर  
 रहने वाली आठवीं दिशाकुमारी the eighth  
 Disākumārī residing on the  
 Ruchaka mountain ज० प० ५,  
 ( ८ ) आठमा अशदेव अने वासुदेवनी मातानुं  
 नाम आठवे बलदेव और वासुदेव की माता का  
 नाम name of the mother of the  
 eighth Baladeva and Vāsudeva,  
 सम० प० २३५, ( ९ ) आठमा अद्रप्रभतीर्थ-  
 कर दीक्षा लेती वपते ञे शिथिका-पाणभीमा  
 भेदा हुता ते पाणभीनुं नाम आठवें तीर्थकर  
 चद्रप्रभस्वामी दीक्षा लेते समय जिस पालकी

पर आरूढ हुए थे उस पालकी का नाम name  
 of the palanquin of the eighth  
 Chandīaprabha—Tirthankara  
 in which he sat at the time of  
 taking Diksā सम० ७२,

अपराह पु० ( अपराध ) गु-हो; अपराध  
 अपराध, गुन्हा. A fault; a crime.  
 महा० प० ११,

अपरिआइत्ता सं० कृ० अ० ( अपर्यादाय )  
 भ्रंशु धर्या विना ग्रहण किये विना With-  
 out having taken or accepted  
 “ बाहिराइ पोग्गले अपरिआइत्ता ” भग०  
 ३, ४, २५, ७,

अपरिकम्म त्रि० ( अपरिकर्मन् ) लुग्यो  
 ‘ अप्पडिकम्म ’ श०-६ देखो ‘ अप्पडिकम्म ’  
 शब्द Vide ‘ अप्पडिकम्म ’ उक्तं ३०,  
 १३,

अपरिक्रम त्रि० ( अपराक्रम ) पराक्रमरहित;  
 सामर्थ्य विनातुं पराक्रम रहित, सामर्थ्य रहित  
 Unheroic, powerless “ तएणं तुमं  
 मेहा अत्थामे अबले अपरिक्रमे ” नाया० १;

अपरिकख सं० कृ० अ० ( अपरीक्ष्य ) परीक्षा  
 धर्या विना, तपास्था विना परीक्षा किये विना;  
 जाँचे विना Without having examin-  
 ed सू० १, ७, १६,

अपरिक्खऊण सं० कृ० अ० ( अपरीक्ष्य )  
 परीक्षा न करीने; तपास्था विना परीक्षा न  
 करके, विना जाँचे Without having  
 examined सु० च० ३, १६६,

अपरिखेदित्त न० ( अपरिखेदित्तत्र ) अना-  
 यामे उत्पत्तिरूप ३४ भो वयनातिशय.  
 अनायाम उत्पन्न होने वाला वचन वचन का  
 ३४ वाँ अतिशय The thirty fourth  
 Atisāya of speech viz speech  
 without effort श्रव०

**अपरिग्रह.** त्रि० ( अपरिग्रह ) निष्परिश्रुती,  
नेनी पासे धर्मना उपग्रह्य विना  
इष्ट परिग्रह नथी ते. परिग्रह रहित;  
जिसके पास धार्मिक उपकरणों के सिवाय  
कुछ भी परिग्रह नहीं है वह A possess-  
ionless monk “ अपरिग्रहा अणा-  
रंभा, भिक्खू तायां परिव्वए ” सय० १, १,  
४, ३; भग० ५, ७; परह० २, १;

**अपरिग्रहिया** स्त्री० ( अपरिग्रहीता ) वेश्या;  
रभात; अनाथ स्त्री वेश्या, रखेलस्त्री, अनाथ  
स्त्री. A prostitute; an unmarried  
( public ) woman. पंचा० १, १६;  
( २ ) विधवा विधवा. a widow. प्रव०  
२७८; ( ३ ) दासी. दासी. a maid-  
servant प्रव० २७८,—गमण न०  
( -गमन-अपरिग्रहीताया गमनं मैथुन  
सेवनम् ) अपरश्लेत स्त्रीनी साथे मैथुन  
सेवयुं ते; श्रावकना योथा व्रतनेो पीन्ने  
अतिचार अविवाहिता स्त्री के साथ मैथुन सेवन  
करना, श्रावक के चौथे व्रत का दूसरा अतिचार  
adultery, the second Atichāra  
of the fourth vow of a layman  
उवा० १, ४८;

**अपरिग्रहेमाण.** व० कृ० त्रि० ( अपरिग्रहत् )  
परिग्रह न राभतो; धन, धान्यादि परिग्रह उपर  
भूयर्था न राभतो परिग्रह नहीं रखता हुआ;  
धन, धान्यादि परिग्रह में मूर्छा न रखता हुआ.  
Not keeping any worldly effects.  
आया० १, ७, ३, २०७,

**अपरिचत्त.** त्रि० ( अपरित्यक्त ) न तन्नेद,  
न भुक्ते नहीं त्यागा हुआ, नहीं छोड़ा हुआ  
Not given up; not abandoned.  
ठा० २, ४,—कामभोग त्रि० ( -कामभोग-  
कामौ शब्दरूपे भोगाश्च गन्धरसस्पर्शा  
अथवा काम्यन्ते ते कामा मनोज्ञा, भुज्यन्ते  
इति भोगाः शब्दादयः, न परित्यक्ता चैस्ते  
तथा ) नेष्टे कामभोग-मनोज्ञ शब्दादि पाय

विषय तन्था नथी ते जिसने कामभोग-  
मनोज्ञ शब्दादि पांच विषय छोड़े नहीं हैं वह.

( one ) who has not renounced  
pleasures of the senses छ० २, ४;

**अपरिच्छिण्ण** त्रि० ( अपरिच्छिन्न ) परिवार  
रहित. परिवार रहित. Without de-  
pendants, attendants etc.  
वव० ३, १,

**अपरिजामाण** व० कृ० त्रि० ( अपरिजानत् )  
अनु न ज्ञातो; अनुभोदन न आपतो. भला  
नहीं जानता हुआ, अनुमोदन नहीं करता हुआ.  
Not supporting; not approv-  
ing उवा० ७, २१५, नाया० १६;

**अपरिजाणिज्जमाण** त्रि० ( अपरिज्ञायमान )  
नेना माटे मनभा रुदुं न ज्ञायुथाभां आवे  
ते; आदरभाव रहित. आदरभाव रहित.  
Not respected; not regarded  
with respect “ तण्णं से गोसाले  
आणढाइज्जमाणे अपरिजाणिज्जमाणे ”  
उवा० ७, २१६;

**अपरिणय** न० ( अपरिणत-न परिणत  
प्रासुकीभूतसपरिणतम् ) ने वस्तु पुरे पुरी  
प्रासुक्-अयित्त न थर्ध होय ते वस्तु लेवाथी  
भुनिने लागतो अेषणादोष; अेषणाना दश दोष-  
मनो आदोषो दोष जो वस्तु ठाँक तौर पर-  
पूर्णतया प्रासुक न हुई हो उस वस्तु के ग्रहण करने  
पर साधु को जो दोष लगे वह दोष; एषणा  
के दस दोषों में से आठवाँ दोष. A fault  
of an ascetic caused by eating  
food which is not rendered  
perfectly free from life. निसी०  
७, ३०; आया० २, १, ८, ४६; पिं० नि०  
५२०, भग० १६, ५; ( २ ) त्रि० रस, रुधिररूपे  
परिणाम न पायेला जोराक. रस, रुधिर आदि  
रूप से परिणाम न पाया हुआ भोजन. un-  
assimilated ( food ) पंचा० ३, १२;  
**अपरिणाम.** पु० ( अपरिणाम ) त्रि० प्रकाशना



शिष्य पैकी प्रथम प्रकारना शिष्य; अपरि-  
श्याम-अल्प बुद्धिवाला अने जिनवचनना  
रहस्यना अन्वेषु शिष्य. तीन प्रकार के शिष्यों  
में से प्रथम प्रकार का शिष्य, अल्पबुद्धि वाला और  
जिनवचन के रहस्य को न जानने वाला शिष्य.  
A dull-headed disciple unable  
to grasp the real meaning  
of the words of Tirthankara  
etc; a disciple of the first of  
the three sorts of disciples.  
विशे० २२६२;

अपरिणिष्वाण न० ( अपरिनिर्वाण-न परित.  
समन्ताभिर्वाणं सुखमपरिनिर्वाणम् ) आरे  
तरङ्गनी शारीरिक अने मानसिक पीडा-दुःख  
चारों ओर की शारीरिक और मानसिक पीडा  
All-round misery of mind and  
body “ सन्वेसि सत्तायं अस्सायं अपरि-  
णिष्वाणं महम्मयं दुक्खं ” आया० १, १,  
६, ५०;

अपरिणाय. त्रि० ( अपरिज्ञात-ज्ञपरिज्ञया  
स्वरूपतोऽनवगत प्रत्याख्यानपरिज्ञया  
चाप्रत्याख्यात ) अपरिज्ञा-समन्वृथी स-  
मन्वृते प्रत्याख्यात-परिज्ञाथी पश्यन्त्याणु  
करेण नहि ज्ञपरिज्ञा (समम्) से प्रत्याख्यान  
न किया हुआ अर्थात् बिना समझे ब्रूके  
प्रत्याख्यान किया हुआ Not consciously  
or intelligently given up. भग०  
८, ५, आया० १, १, १, ८; १, २, ५, ६४,  
ठा० ५, २; दसा० ६, २;

अपरितंत त्रि० ( अपरितान्त ) थोड़े नहि,  
परिश्रम न पाभे नही थका हुआ. Not  
fatigued; not tired. अणुत्त० ३, १,  
विशे० ३४०२;—जोगि. त्रि० ( -योगिन्-  
अपरितान्तोऽविश्रान्तो योगः समाधिर्धस्य स  
तथा ) थक-भेद-कटाणा विना योग-समाधि-  
वाला; अविश्रान्त सयमवाला थकावट-

खेद रहित योग-समाधि वाला, अविश्रान्त  
संयम वाला ( one ) with tireless  
meditation or self-control अणुत्त०  
३, १, परह० २, १;

अपरितापणया ली० ( \*अपरितापनता-अप-  
रितापन ) शरीरमां परिताप-संतापनुं न  
उपवु ते शरीर में सताप का उत्पन्न न  
होना Freedom of the body from  
mental distress भग० ५, ६;

अपरितापिय त्रि० (अपरितापित) पीताथी के  
भीज्जथी जेने कायिक अने मानसिक ताप-  
दुःख नथी थयुं ते अपने से अथवा दूसरे से  
जिसे मानसिक और शारीरिक कष्ट न हुआ हो  
वह Free from mental or phys-  
ical pain self-inflicted or other-  
wise भग० ३, २;

अपरित्त पुं० ( अपरित्त ) अनंतत्व वर्ये  
भेक साधारण शरीरवाला जव. अनंत  
जीवों के बीच में एक साधारण शरीर वाला  
जीव A soul sharing a common  
body with infinite souls ठा० ३,  
२, जीवा० १०, ( २ ) अनंतकाणसुधी  
संसारमा परिभ्रमणु करेनार जव; अनंत  
संसारी जव अनंतकाल तक संसार में परि-  
भ्रमण करने वाला जीव, अनंतसंसारी जीव a  
soul eternally wandering in the  
worldly existence “अपरित्ते बंधइ”  
भग० ६, ३, “अपरित्ते दुविहे प० तं० काय  
अपरित्ते य संसारअपरित्ते य संसार-  
अपरित्ते दुविहे प० तं० अयादिण् अपज्जवसिण्  
अयादिण् सपज्जवसिण्” पन्न० १८, जीवा० २;  
विशे० ४११;

अपरिनिष्वाण. न० (अपरिनिर्वाण) लुभे।  
“अपरिणिष्वाण” शब्द देखो “अपरिणि-  
ष्वाण” शब्द. Vide “अपरिणिष्वाण.”  
आया० १, ४, २, १३३;

अपरिपूत्र. त्रि० ( अपरिपूत ) अणुगणः  
वस्त्रादिद्वयी गणेश नहि. न छना हुआ.  
Unfiltered. कण० ६, २५;

अपरिभूय. त्रि० ( अपरिभूत ) ऌ डोष्ठथी  
पराभवो-गंठयो न लय ते, ऌतो डोष्ठ  
पराभव इरी शके नहि एवो धनवान् या अण-  
वान्. जिसका कोई पराभव न कर सके ऐसा  
धनवान् या बलवान्. Not vanquished,  
invincible in point of wealth,  
power etc. ठा० ७; नाया० ५; ७; ८;

१३, १४; १५; १६; १७; भग० २, ५; ३,  
१; ७, ६; ६, ३३; १५, १, नाया० घ०

अपरिभोग. पुं० ( अपरिभोग-परि-पुनः पुनः  
भोग. परिभोग, न परिभोगोऽपरिभोगः )  
वारंवार भोगवाय ते वस्त्र, धरेणुं वगेरेतो  
अभाव. वार वार भोगने में आने वाले वस्त्र,  
आभूषण आदि का अभाव. Absence of  
things not consumed by one  
enjoyment; e g. clothes, orna-  
ments. ठा० ५, २;

अपरिमाण त्रि० ( अपरिमाण-न विद्यते परि-  
माणं यस्य स तथा ) क्षेत्र डे डोष्ठथी परिमाण-  
भर्यादा विनातो. क्षेत्र या काल की मर्यादा  
रहित. Unlimited in point of time  
or space "अपरिमाणं विज्ञायाह, इहमेगे-  
सिमाहियं" सूय० १, १, ४, ७; निती० ८, १०,

अपरिमिय-अ त्रि० ( अपरिमित ) परिमाण  
रहित, अत्यंत भेदुं; विशाल परिमाण रहित,  
विशाल; बहुत बड़ा. Unlimited, ex-  
tensive. "अपरिमियमहिच्छकलुसमलि-  
चाडवेगडद्धम्ममायं." परह० २, ३; "अपरि-  
मियनायदंसणधरेहिं" परह० २, १, ओव०  
२१; ३४, कण० ६, २५,

अपरियत्त. त्रि० ( अपरिवृत्त ) ऌ इभप्रभृति  
पोताना अध डे उदय वभते भीष् प्रभृतिना  
अध अउशवे नहि ते; अपरावर्तमान इभं

प्रभृति अपरावर्तमान कर्मप्रकृति, जो अपने  
बंध या उदय के समय दूसरी प्रकृति के बंध  
या उदय को नहीं रोकती. ( Karmic  
nature ) which does not. either  
at the time of its own formation  
or of maturity, hinder the for-  
mation or rise of another Kar-  
mic nature i e. Karma; Karma  
Prakriti known as Aparāvarta-  
māna क० गं० ५, १८;

अपरियाइज्जमाण. त्रि० ( अपर्यादीयमान )  
न अहणु इरातुं; न स्वीकारातु. ग्रहण नहीं  
किया जाता हुआ, स्वीकार न किया जाता हुआ  
Not being accepted भग० ३, १;

अपरियाइत्ता सं० कृ० अ० ( अपर्यादाय )  
अहणु इर्या विना. ग्रहण किये विना. With-  
out having accepted. भग० ६, ६;  
७, ६; १६, ५; ठा० १, १;

अपरियाणमाण व० कृ० त्रि० ( अपरिज्ञान-  
मान-अपरिज्ञानत् ) लक्षु न लक्षते, अनुमोदन  
न आपतो मला न जानता हुआ; अनुमोदन  
नहीं करता हुआ. Not approving,  
not supporting. नाया० १; १४,

अपरियाणित्ता. सं० कृ० अ० ( अपरिज्ञाय )  
अपरिज्ञाथी लक्ष्या विना अने प्रत्याख्यान  
परिज्ञाथी त्याग इर्या विना. अपरिज्ञा से जाने  
विना और प्रत्याख्यानपरिज्ञा से त्याग किये  
विना Without having had con-  
sciousness of ( knowledge or  
giving up ) ठा० २, १,

अपरिचार त्रि० ( अपरिचार ) परिचारण-  
मैथुनसेवारहित परिचारणा रहित; मै-  
थुनसेवा रहित. Free from Parichā-  
ranā i e. sexual intercourse.  
पन्न० ३४;

अपरियावर्णयौ त्रि० ( अपरितापत्ता -

अपरितापन ) परितापना-दुःख-संतापनो  
अभाव दु ख-संताप का अभाव. Absence  
of misery or distress भग० ३,  
३, ७, ६, ८, ६,

अपरियाविय सं० कृ० अ० ( अपरिताप्य )  
परिताप-संताप उपजान्या विना. परिताप-  
सताप उत्पन्न किये विना Without caus-  
ing distress or misery जीवा० ३,  
३, जं० प० २, २५;

अपरिवडिय. त्रि० ( अपरिपतित ) स्थिर,  
अयथा स्थिर, अचल. Fixed, steady  
पचा० ७, २८,

अपरिवाग पुं० ( अपरिपाक ) अपरिपाक-  
परिपाकनो अभाव अपरिपाक-परिपाक का  
अभाव Absence of full ripeness  
पञ्च० १७,

अपरिसाडि पु० ( अपरिशाटि ) आतां आता  
नीचे ओढ न भेरवी ते खाते खाते नीचे  
भूँठन न डालना Not allowing  
scraps of food to drop while  
eating भग० ७, १,

अपरिसाडिय त्रि० ( अपरिशाटिक ) नीचे  
भेर्या वगरतुं नीचे न डाला हुआ Not  
dropped below, e g scraps of  
food while eating " जयं अपरि-  
साडियं " उक्त० १०, ३५, परह० २, १;

अपरिस्तावि त्रि० ( अपरिस्ताविन् ) लुब्धो  
' अपरिस्तावि ' शब्द देखो ' अपरिस्तावि '  
शब्द Vide ' अपरिस्तावि ' ठा० ८, १,

अपरिसुद्ध त्रि० ( अपरिशुद्ध ) दोषसहित;  
अशुद्ध दोष सहित, अशुद्ध. Impure,  
faulty पंचा० ३, ३६;-(२) अयुक्तिवाणुं  
अयुक्तिवाला lacking-in-art-or skill-  
पचा० ३, ३६,

अपरिसेस त्रि० ( अपरिशेष ) नि शेष, सर्व

सधु नि शेष; सर्व; सम्पूर्ण Whole,  
entire परह० २, १, भग० ३, १, ८; ८,  
६, ११, १, २१, २,

अपरिसेसिय त्रि० ( अपरिशेषिक ) जेभां  
शेष छंछि रह्यु नथी ते, पुरे पुरे जिसमे शेष  
कुछ न रहा हो वह, पूर्ण Complete,  
entire. भग० ५, ४,

अपरिस्सव पुं० ( अपरिश्रव ) पापनु उपपादन-  
कारण पाप का उपादान कारण Material  
cause of sin आया० १, ४, २, १३०,

अपरिस्सावि त्रि० ( अपरिस्साविन्-परिस्सवितुं  
शीलमस्येतिपरिस्सावी न परिस्सावी-अपरि-  
स्सावी ) जेभाथी पाणी अरी न ज्य तेवा तुण्डा  
वगेरे, न अरनार जिसमे से पानी वगैरह न  
भर सके ऐसा तुवा आदिक, न भरने वाला,  
Not causing to leak, e g water  
from gourds etc ठा० ४, १, ५, ३;  
भग० २५, ६, गच्छा० २२, ( २ ) लावथी  
अपरिभावी-कर्मण-धरहित, जेतेो कर्मप्रवाह  
आवतो अटकेछे ते भाव से अपरिस्सावी,  
अर्थात् कर्मवध रहित, जिसका कर्मप्रवाह आने  
से रुक गया है वह without influx of  
Karma भग० २५, ६, ठा० ४, १, ( ३ ) शिष्ये  
आलोयेव पोताना दोष धीअ क्खीअ पासे पणु  
न प्रकाशनार गुरु; सागर जेवा गंभीर पेटयाणा  
गुरु-आचार्य वगेरे शिष्य ने जिन अपने दोषों की  
आलोचना की हो उन दोषों को प्रकट न करने  
वाला-समुद्रवत् गंभीर गुरु ( a Guru  
or preceptor) who does not  
disclose the faults confessed  
by a disciple " जो अज्ञयस्स उ दोसे न  
कहेइ अपरिस्सावी सो होइ " ठा० ८, १;  
पंचा०-१५, १४ भग० २५, ७,

अपरिहारिय पुं० ( अपरिहारिक ) भूक्षणु  
दोष अने उत्तरणुदोषनो परिहारक-त्याग

करनार नहि; पासत्थो, अवसन्न, कुशीलीयो, संसक्त अने यथाच्छंदरूप दूषितसाधु. मूल गुणदोष और उत्तरगुणदोष का त्याग न करने वाला, शिथिलाचारी, अवसन्न, कुशीली, संसक्त और यथाच्छंदरूप पांच प्रकार के दूषित साधु. A Sādhu not abstaining from Mūla Guṇa and Uttara Guṇa; one of the five sorts of tainted Sādhus e. g. Pāsāttha, Avasanna etc आया० नि० १, १, १; ( २ ) अन्यतीर्थी गृहस्थ. जैनेतर गृहस्थ. a non-Jaina वव० २, २७;

**अपरोवघाद्या** स्त्री० ( अपरोपभातिका ) परने-भीष्म श्रवने उपधात-दु.ष्-त्रास न उपज्वनार भाषा, सांभणनारने आघात न थाय तेरी भाषा-भेदी दूसरे जीव को दुःख-त्रास आदि न पहुंचाने वाली भाषा, जिससे सुनने वाले को आघात न हो ऐसी बोली. Inoffensive speech भग० १८, ७;

**अपलापय** त्रि० ( अप्रलापक ) प्रलाप न करनार प्रलाप न करने वाला ( One ) not prattling भग० १५, १;

× **अपलिउंचमाण** व० कृ० त्रि० ( अपरि-कुञ्चयत् ) न छुपावते; न संताडते नहीं छिपाता हुआ. Not concealing, not hiding आया० २, ५, १,

**अपलिउंचिय** सं० कृ० अ० ( अपरि-कुञ्चय ) भाषा न करीने माया-कपट न करके Without having recourse to fraud निसी० २०, १०; वव० १, १;

**अपलिउज्जय** त्रि० ( अपरियोगिक-परि-सं-तात् योगिकाः परियोगिकाः परिज्ञानिनः, न

परियोगिका अपरियोगिकाः ) आरे आनुना ज्ञानवाणो नहि; विशाल ज्ञानरहित विशाल ज्ञान रहित; विस्तृत ज्ञान रहित; चारों ओर के ज्ञान से रहित. Not possessed of thorough and extensive knowledge. भग० २, ५;

\***अपलिओवमाण** व० कृ० त्रि० ( अगोपयत् ) न गोपयते; न संताडते. न छिपाता हुआ. Not hiding; not concealing. आया० १, ७, ४, २११;

**अपलिकखीण** त्रि० ( अपरिचीण ) क्षय पाभेन नहि. जिसका क्षय नहीं हुआ हो वह, जिसका विनाश नहीं हुआ हो वह. Not destroyed; not decayed. ओव० ४२;

**अपलिच्छिण** त्रि० ( अपरिच्छिन्न ) लुभो "अपरिच्छिण" शब्द देखो 'अपरिच्छिण' शब्द. Vide 'अपरिच्छिण'. वव० ३, १;

**अपलिमंथ** पुं० ( अपरिमन्थ ) स्वाध्याय आदि कार्यमा परिमंथ-अंतराय-विघ्नो अभाव. स्वाध्याय आदि कार्य में विघ्न का अभाव. Absence of obstacles in the work of religious study etc. उक्त० २६, ३४;

**अपवर्ग** पुं० ( अपवर्ग ) भेक्ष मोक्ष Absolution, final emancipation. भक्त० ४,

**अपवडय** पुं० ( अपवटक ) तपो; तापडी. तवा. A pan to bake bread भग० ११, ११;

**अपवत्तण** न० ( अपवर्तन ) प्रवृत्तिना अभाव प्रवृत्ति का अभाव Absence of activity. पंचा० ४, ४५;

**अपवरक** पुं० ( अपवरक ) ओरडे; डोडा. कमरा, कोठा A room. जीवा० ३, ३;

× नोट—आया० १, ७, ४, २११; आ-स-आ-भां 'अपलिओवमाण' ओवे पाठ छे.

× नोट—आया० १, ७, ४, २११; आ-स-आ-में 'अपलिओवमाण' यह पाठ है.

× Note, one reading is. 'अपलिओवमाण'

**अपसंसृज्ज** त्रि० ( अप्रशंसनीय ) सारा  
भाष्योत्प्रे प्रशंसा करवा योग्य नहि, वभाष्युवा  
दायक नहि प्रशंसा के अयोग्य, अच्छे  
मनुष्यों द्वारा प्रशंसा न करने योग्य Not  
praiseworthy. तंडु०

**अपसत्थ.** त्रि० ( अप्रशस्त ) भराभ्य;  
अशोभन. खराब, बुरा, शोभाहीन Not  
good, bad प्रव० १३०२; भग० ४, १०,  
( २ ) अश्रेय; देवा योग्य नहि अश्रेय; लेने  
के अयोग्य unacceptable ठा० ३, ३,  
( ३ ) वभाष्युवा दायक नहि प्रशंसा न करने  
योग्य. not laudable अणुजो० ६६,  
—कायविणाय पुं० (—कायविनय ) दुष्ट  
कार्यथी कायाने रोकवी ते, अशुभकार्यभा  
शरीरने न प्रवर्त्तावपुं ते दुष्टकार्य करने से  
शरीर को रोकना, अशुभकार्य में शरीर को  
प्रवृत्ति न करने देना restraining the  
body from sinful act भग० २५, ७,

**अपसन्न.** त्रि० ( अप्रसन्न ) लुभ्यो “अप्पसन्न”  
शब्द देखो ‘अप्पसन्न’ शब्द. Vide ‘अप्प-  
सन्न’ दस० ६, १, ५,

**अपसिण्ण** पुं० ( अप्रश्न ) प्रश्न पुछ्या विना-  
सवाल कर्या विना विधिपूर्वक विद्या के मंत्रना  
नपवाभात्रथी शुभाशुभ इल कही शक्य ते.  
प्रश्न पूछे विना विधिपूर्वक विद्या या मन्त्र का  
जाप करने मात्र से शुभाशुभ फल का कह  
सकना Foretelling good or evil  
result without asking ques-  
tions, simply by the force of  
science or repetition of incanta-  
tions. नंदी० ५४;

**अपसु** पुं० ( अपशु ) पशु-गाय, बैस, घोडा  
वगैरे जेनी पास नथी ते, साधु जिसके पास  
गाय, बैस, घोडा आदि पशु नहीं हैं वह, साधु  
One not possessed of domestic  
animals, a Sādhu “समये भवि-

स्सामि अणगारे अकिंचणो अपुत्ते अपसू  
परदत्तभोगी” आया० २, ७, १, १५५,

**अपस्समाण** व०कृ० त्रि० (अपश्यमान-अप-  
श्यत् ) न देखतो, न जेतो न देखता हुआ.  
Not seeing. “अपस्समाणे पस्सामि, देवे  
जक्खे य गुज्जगे” सम० ३०, ओव० ३६;  
दसा० ६, २६,

**अपहय.** त्रि० ( अपहत ) डलुयेल, अटकेल.  
मारा हुआ; अटका हुआ Struck; killed,  
obstructed. प्रव० ४६३;

**अपहिट्ट** त्रि० ( अप्रहट्ट ) लुभ्यो “अप्पहिट्ट”  
शब्द. देखो ‘अप्पहिट्ट’ शब्द. Vide  
‘अप्पहिट्ट’. दस० ५, १, १३,

**अपहुप्पंत** त्रि० ( अप्रभवत् ) परिपूर्ण न  
थतुं, ओधु रडेतु परिपूर्ण न होता हुआ.  
Remaining insufficient “ बहुसुय  
अपहुप्पते’ भणाइ अन्नपि रंधेह ” पिं० नि०  
२७२, भत्त० ११,

**अपाइया** स्त्री० ( अपात्रिका ) पातरा वि-  
नानी ( साध्वी ) पात्र रहित ( साध्वी ).  
(A nun) having no bowls. “ नो  
कप्पइ य निगंथीए अपाइयाए हुंतए ”  
वेय० ५, २०;

**अपाउड.** त्रि० ( अपावृत-न विद्यते प्रावृतं  
प्रावरणं यस्येत्यप्रावृत ) वस्त्ररहित वस्त्र  
रहित. Uncovered, naked ठा० ५, १;

**अपाउरण** त्रि० ( अप्रावरण ) प्रावरण-वस्त्र  
रहित वस्त्र रहित Devoid of covering  
in clothes प्रव० ५००;

**अपाण** न० ( अपान ) शुद्ध गुदा; मलद्वार.  
Anus; rectum विवा० ६; जं० प० २,  
३१;

**अपाणग** त्रि० ( अपानक ) लुभ्यो “अपाणय”  
शब्द देखो ‘अपाणय’ शब्द. Vide  
‘अपाणय’. प्रव० ५६४;

**अपाणय** त्रि० (अपानक) पाणी विनातुं, जल रहित Having no water, waterless. “छट्टेणं भत्तेणं अपाणयणं” जं० प० २; दशा० ७, ८; (२) दाहने शभावनार पाणी जेवा शीतल स्थालीपानक आदि पदार्थ, डे जे गोशालाने संभत हुता. दाह को शमन करने वाले पानी के समान शीतल स्थाली-पानक आदि पदार्थ, जो गोशाला के मत से आह्य समझा जाता था. substances such as Sthālīpānaka etc. which were acceptable in the opinion of Gośālā भग० १५, १, ( ३ ) जेभां पानकद्रव्य-दूध, डालो, राखडी, पाणी वगैरेने त्याग करवामा आवे जेवा उपवास वगैरे. जिसमें पान करने के द्रव्यों-दूध, रवडी, पानी आदि का त्याग किया जाय ऐसा उपवास आदि ( a fast etc ) in which drinkables like milk etc are abstained from प्रव० ५६०; कप्प० ७, २११, ठा० ६; पंचा० १८, १४,

**अपादान** न० (अपादान) उपादान कारण, जेमे-कुंडलनु सुवर्ण, धडानुं भाटी उपादान कारण, जैसे कुण्डल का उपादान कारण सुवर्ण और घट-उपादान कारण मिट्टी. Material cause e g earth of an earthen pot विशेष० २११७,

**अपायच्छिरण**, त्रि० (अपायच्छिन्न) जेना पग छेदाजेल नथी ते जिसका पाँव छेदा हुआ नहीं है वह One whose foot is not pierced with thorn etc निसी० १४, ६,

**अपार** त्रि० (अपार) पार-तीर विनातुं, जेना छेडा नथी ते, अनन्त, पार विनातु अपार-पार रहित, अन्त रहित; अनन्त, जिसका किनारा न हो ऐसा Infinite; endless नाया० ६, सम० ६;—दुःख न० (—दुःख) अनन्त दुःख, पार विनातु दुष्ट अर्थात् दुःख;

ऐसा कष्ट जिसका पार न हो. infinite misery. सम० ६,—संसार. पुं० (—संसार) जेना पार नथी जेना संसार पार रहित संसार; अनन्त संसार. endless world; world without an end नाया० ६;

**अपारंगम**, त्रि० (अपारङ्गम-पारस्तट परकूलं तद्गच्छतीति पारङ्गम, न पारङ्गमोऽपारङ्गमः) संसार समुद्रना पारने न पामनार. संसार समुद्र के पार को न पाने वाला. Not reaching the opposite shore of the worldly ocean. “अपारंगमा एषु, ए य पारं गमित्तए” आया०-१, २, ३, ८०;

**अपाव**, त्रि० (अपाप) पापरहित; सर्वथा शुद्ध. पाप से रहित; सर्वथा शुद्ध. Without sin भक्त० २३; दस० ८, ६३;—भाव त्रि० (—भाव) लब्धि आदिनी अपेक्षा विनातुं अपाप-शुद्ध-निर्मल जेनुं चित्त छे ते; निर्मल भावसहित. लब्धि वगैरह की अपेक्षा से रहित शुद्ध-निर्मल चित्त वाला; निर्मल भाव सहित having the heart unsullied by any sin, e g. the desire of supernatural attainment भक्त० २३, दस० ८, ६३;

**अपावमाण** व० कृ० त्रि० (अप्राप्नुवत्) न पामतो, प्राप्त न करतो. नहीं पाता हुआ, प्राप्त न करता हुआ Not getting; not obtaining. ओष० नि० १६;

**अपावय** पुं० (अपापक) शुभ चित्तवनरूप प्रशस्त मनोविनय शुभ चित्तवन करने रूप प्रशस्त ( प्रशंसा योग्य या उच्च ) मनो विनय. Reverential attitude of mind consisting in pure and pious thoughts सूय० १, १, ३, ११; ठा० ७; ( २ ) पाप विनाती वाणी जोलवा रूप वाणीविनय पाप रहित वाणी बोलने

रूप वाणीविनय. reverential speech consisting in expressions free from sinfulness भग० २५, ७, ( ३ ) सर्वथा दुर्भेदलंकरहित सम्पूर्णतया कर्मकलक से रहित wholly unsullied by Karma. सूय० १, १, ३, ११,

**अपावा** स्त्री० ( अपापा ) न्या महावीर स्वामी निर्वाणपद पाया तेनगरी, हस्तिपाल राजधानी राजधानी जहाँ महावीर स्वामी ने निर्वाण पद प्राप्त किया वह नगरी, हस्तिपाल राजा की राजधानी. The town where Mahāvīra-svāmī attained to Nirvāna or final beatitude; the capital of king Hastipāla पंचा० १६, १७,

**अपास** पुं० ( अपाश ) पाश-बंधनतो अलाव बंधन का अभाव Absence of fetters आया० १, १, ३, २५,

**अपासंत.** व० कृ० त्रि० ( अपश्यत् ) न ज्ञेते, न दृश्यते. नहीं देखता हुआ. Not seeing " जाइं रात्रो अपासंतो, कहमेसणीयं चरे " दस० ६, २४, सूय० १, ६, ३४,

**अपासत्थया** स्त्री० ( अपार्श्वस्थता-न पार्श्वस्थो-स्पार्श्वस्थस्तस्य भावस्तत्ता ) पासत्थापणुते परिहार-त्याग करने के. पार्श्वस्थपन का शिथिलाचार का त्याग करना Giving up the attitude of a Pāsāttha, giving up looseness in ascetic life ठा० १०,

**अपासमाण** व० कृ० त्रि० ( अपश्यत् ) न दृश्यते, न ज्ञेते. नहीं देखता हुआ Not seeing. नाया० २, ८; ६, १६, भग० १५, १,

**अपाहेज्ज** त्रि० ( अपाथेय ) पाथेय-संभण-लातुं, ते विनाने, लाता वगरेने पाथेय-कलेवा-रास्ते का भोजन जिसके पास न हो वह Without provision of food du-

ing journey etc. " अद्धानं जो महं तंतु, अपाहेज्जो पव्वज्जइ " उक्त० १६, १८, अपिज्ज. त्रि० ( अपेय ) पीवा लायक नहि; पान करने के अयोग्य न पीने योग्य Unfit for drinking पि० नि० १६४;

**अपिइणया** स्त्री० ( अपिइणता-अपिइण ) लाइडी आदिथी ताउन न करुं, कुटुं पिइणुं नहि ते लकड़ी वगैरह से न पीटना, मार पीट का अभाव Not striking with a stick etc भग० ७, ६;

**अपियं** त्रि० ( अप्रिय ) अप्रीतिकर, दृश्यमान अप्रिय-अनिष्ट देखने में जो अच्छा न लगे वह, अप्रीतिकारक, अनिष्ट Unpleasant in sight, of unpleasant appearance भग० ६, ३३, जीवा० १,

**अपिवणिज्जोदग** पु० ( अपानीयोदक ) जेतुं पाणी पिवा योग्य न होय तेवे मेध ऐसा मेघ, जिसका पानी पीने योग्य न हो Rain water which is not drink-worthy भग० ७, ६,

**अपिसुण** त्रि० ( अपिशुण ) याडी खुगणी न करने, डोढ़नुं आधु पाणु न करने. चुगली न खाने वाला Not given to back-biting, not being a tell-tale " अपिसुणे आवि अदीणवित्ति " दस० ६, ३, १०,

**अपीइकारग** त्रि० ( अप्रीतिकारक ) अभनोइ जेनाथी अप्रीति उपजे तेनु अमनोज; अप्रीतिकारक, जिससे अप्रीति उत्पन्न हो वह मनोहरता रहित. Unpleasant. ठा० ३, १,

**अपीइतर** त्रि० ( अप्रीतितर ) अतिशय अभनोइ अतिशय मनोहरता रहित, अति अप्रिय Highly unpleasant. विवा० १,

अपुच्छिन्न-य. त्रि० (अपृष्ट) पुछ्या विना, नेने पुछ्यामां नथी आ०युं ते विना पूछा हुआ Unasked “अपुच्छिन्नो न भासिजा, भासमाणस्स अंतरा” दस० ८, ४७;

अपुच्छिन्नय. सं० क० अ० (अपृष्ट्वा) पुछ्या विना; अणुपुछे विना पूछे, न पूछकर. Unasked. निसी० २, ४८, ६, ७, १५, ३४,

अपुष्ट. त्रि० (अपृष्ट) पुष्ट नहि; दुर्बल दुर्बल, कमजोर; कृश Not robust; weak सूय० १, १४, ३;

अपुष्ट त्रि० (अपृष्ट) नेने पुछ्युं नथी ते; पुछ्यामां न आवेद विना पूछा हुआ Unasked. “पुष्टो वावि अपुष्टो वा, लाभालाभं न निद्विसे” दस० ८, २२, उत्त० १, १४, भग० ३, १, —लाभिअ. पुं० (—लाभिक) ‘शुं आपु?’ अेम पुछ्या विना लिक्षा आपे ते लेवी अेवो अलिग्रह धरनार साधु ‘क्या दू?’ ऐसा पूछे विना जो भिच्चा दे वह भिच्चा लेने का अभिग्रह-नियम धारण करने वाला साधु an ascetic taking only those alms which are not preceded by the question “What may I give you?” ओव० १६, —वागरण न० (—व्याकरण) पुछ्यामां न आ०युं होय छतां प्रतिपादन करवुं ते. विना पूछे प्रतिपादन करना. explaining a thing that is not asked “ एवं सन्नं अपुष्टवागरणं नेयच्च ” भग० ३, १, कप्प० ५, १४६;

अपुष्ट त्रि० (अपृष्ट) स्पर्श न करे, नेने अड्यामां नथी आ०युं ते. विना छुया हुआ Untouched. “अपुष्टे उदाहृत्ति” भग० २, १; “अपुष्टं भासंते” भग० ८, ८, १, ६, ५, ४, १७, ४;—धम्म पुं० (—धर्मन्) नेने धर्म अणुहीन छे ते, नेने धर्म इरश्ये

नथी ते. जिसका धर्म बलहीन है वह; जिसने धर्म का स्पर्श न किया हो वह. (one) of feeble religion; (one) untouched by religion. “ एवं नु सेहे वि अपुष्टधम्मे, धम्मे न याणाइ अबुज्जमाये” सूय० १, १४, १३,

अपुण अ० (अपुनर्) इरी नहि. फिर नहीं. Not over again. पंचा० १२, ११;

अपुणकरण न० (अपुन.करण) इरीने न करवुं ते फिर से न करना Not doing over again पंचा० १५, २८,

अपुणकरणसंगय त्रि० (अपुन करणसङ्गत-पुनरिदं मिथ्याचरण न करिष्यामीत्येवं निश्चयान्वितः) ‘इरीने आवुं आयरणु नहि करुं’ अेवा निश्चयवाणे ‘ फिर से ऐसा आचरण नहीं करूंगा ’ ऐसा निश्चय करने वाला Resolving not to do a particular act again पंचा० १२, ११,

अपुणच्चव पुं० (अपुनश्च्यव-न पुनश्च्यवनं च्यवोऽपुनश्च्यवः) देवतामांथी यवीने तिर्यय आदिमां उत्पन्न न थवु ते; इरीने यववानो-भरवानो अभाव देवयोनि से च्युत होकर-देव शरीर को छोड़कर तिर्यच आदि गतियों में उत्पन्न न होना, फिर से मरने का अभाव. Not being born among animals etc after finishing life among gods, not being required to die again. “ मन्नंता अपुणच्चवं ” उत्त० ३, १४;

अपुणबन्धग. पुं० (अपुनर्बन्धक) लुओ ‘अपुणबन्धय’ शब्द देखो ‘अपुणबन्धय’ शब्द Vide ‘अपुणबन्धय’. पंचा० २, ४४;

अपुणबन्धय पुं० (अपुनर्बन्धक-न पुनरपि बन्धो मोहनीयकर्मोत्कृष्टस्थितिनिबन्धनं यस्य स



तथा ) जेणे ग्रंथिभेद कथो छे-रागद्वेषनी भङ्ग्युत गाठ भेदी छे ते, मोहनीयनी उल्लृष्ट स्थिति इरी, न पांधनार ७५ जिसने ग्रंथिभेद किया है-रागद्वेषरूपी मज्जवृत गाठ का भेदन किया है वह, धर्म का अधिकारी ( One ) who has shattered the bonds of love and hatred; ( one ) fitted for religion पंचा० २, ४४;

अपुण्णभव त्रि० ( अपुनर्भव ) जेते इरीने जन्म नथी करवे ते, पुनर्जन्मरहित. जिसे फिर जन्म नहीं धारण करना वह, पुनर्जन्म रहित Freed from rebirth "सिद्धि-गङ्गिलयं सासयमन्वावाहं अपुण्णभवं" परह० १, १;

अपुण्णरावत्तय. त्रि० ( अपुनरावर्त्तक ) जथा इरी आवर्त्तन-आगमन नथी तेवुं, पुनर्जन्मरहित रहित पुनरागमन रहित; पुनर्जन्म, मरणादि रहित, जहाँ फिर से आवर्त्तन-आगमन नहीं ऐसा From which there is no return; freed from the cycle of birth and death भग० १, १,

अपुण्णरावत्ति. स्त्री० ( अपुनरावृत्ति ) ज्यो 'अपुण्णरावत्ति' शब्द देखो 'अपुण्णरावत्ति' शब्द. Vide 'अपुण्णरावत्ति' आव० ६, ११;

अपुण्णरावत्तिअ त्रि० ( अपुनरावृत्तिक ) ज्यो 'अपुण्णरावत्तय' शब्द देखो 'अपुण्णरावत्तय' शब्द Vide 'अपुण्णरावत्तय' श्रव० १०,

अपुण्णरावत्ति स्त्री० ( अपुनरावृत्ति-न पुनरावृत्ति संसारेऽवतारो यस्मात्तत्तथा ) सिद्धि स्थान, मुक्ति सिद्धिस्थान, मुक्ति, मोक्ष Salvation; Siddhahood जं० प० ५, ११४, सम० १; राय० २३; कप्प० २, १५; नाया० १,

अपुण्णरुक्त. त्रि० ( अपुनरुक्त ) पुनरुक्ति दोष

रहित; जेने जे वात इरी कहेवी ते पुनरुक्ति, तेथी रहित पुनरुक्ति दोष रहित, एक ही वात को दुबारा कहना पुनरुक्ति होती है, उससे रहित Free from tautology राय० १६०; ज० प० २, ३०, ५, १२२; विशे० ४७२;

अपुण्णगम त्रि० ( अपुनरागम ) जथांथी इरी जन्म धारण नथी करवे ते, मोक्ष जहाँ से फिर जन्म धारण नहीं करना वह स्थान, मोक्ष. ( That ) from which there is no re-birth, salvation "समुद्दपाले अपुण्णगम गइं, गणुत्ति" उक्त० २१, २४, "उवेइ भिक्खू अपुण्णगमं गइं" दस० १०, १, २१,

अपुण्णोच्चय पुं० ( अपुनश्चय ) इरीने भरवातो अभाव, अमरपणु फिर से मरने का अभाव, अमरत्व Absence of any further death; freedom from death उक्त० ३, १४;

अपुण्ण त्रि० ( अपुण्य ) पुण्यहीन; जेनशीय पुण्यहीन, अभाग Devoid of religious merit, unfortunate नाया० २, १६; १६, विवा० १, ७, राय० २७६, निर० १, १, ( २ ) तीव्र असातावेदनीयना उदयवाणे तीव्र असातावेदनीयकर्म के उदय वाला ( one whose Karmas giving keen pain have matured. "सामा येरइयाण पवत्तयती अपुण्णयाण" सूय० नि० १, ५, १, ७५, ( ३ ) अनार्य; पापात्यरणी अनार्य; पापाचरणी sinful. आया० १, ६, १, ८,

अपुण्ण त्रि० ( अपूर्ण ) अधुइ, अधूर्ण मनोरथवाणे अधूरा; अपूर्ण, अपूर्ण मनोरथ वाला. Imperfect, incomplete, of unsatisfied desires "अहयं अधरणा अपुण्णया" विवा० १, ६, जं० प० ३, ४३,

अपुत्त. त्रि० ( अपुत्र ) पुत्र विनातो, दीकरा  
वगरेतो पुत्र रहित Sonless; having  
no son आया० २, ७, १, १२५, नाया० १४;

अपुम. पुं० ( अपुंसु ) पुरुषात्न वगरेतुं; नपुं-  
सक. पुरुषत्व रहित; नपुंसक An impo-  
tent क० प० ४, ४५; ओघ० नि० २२३;

अपुरकार. पुं० ( अपुरस्कार ) पुरस्कार-  
लोडमां गुणी तरीके मनावायी भगता  
सत्कारनेो अभाव; अवज्ञा, अनादर लोगो  
द्वारा गुणी जनों को जो सत्कार मिलता है,  
उसका अभाव, अनादर, अवज्ञा Lack of  
respect; disrespect " गरहणयाप्  
अपुरकारं जणयइ " उक्त० २६, ७;  
—गअ. त्रि० (-गत ) असत्कारनेे प्राप्त  
थयेल, अनादर पाभेस. असत्कार प्राप्त; अनादर  
पाया हुआ. dishonoured; an  
impotent उक्त० २६, ७;

अपुरिस. पुं० ( अपुरुष-न पुरुषोऽपुरुषः )  
नपुंसक; पुरुषत्वनेो अभाव. पुरुषत्व रहित,  
नपुंसक. An impotent ठ० ६;—वाय  
पुं० (-वाद ) नपुंसकवाद; झोडना उपर  
नपुंसकपणानेो आरोप भुडवेो ते; झोडनी  
नपुंसक तरीके वात देखावपी ते. नपुंसकवाद,  
किसीके ऊपर नपुंसकत्व का आरोप करना;  
किसीके नपुंसक होने की बात प्रकट  
करना. accusing a man for being  
impotent "अपुरिसवायं वयमाणे दासवायं  
वयमाणे " वेय० ६, २;

अपुरिसकारपरक्रम त्रि० ( अपुरुषाकारपराक्रम-  
पुरुषाकार. पौरुषाभिमान पराक्रमो निष्पादि-  
तप्रयोजनं सामर्थ्यं तौ न विद्येते यस्य तत्तथा )  
पुरुषाकार-माणुसाध-मनुष्यनेे छाजता परा-  
क्रम विनातो. मनुष्यत्व के योग्य पराक्रम  
से रहित. Devoid of manly exploits

नाया० १३; १६, भग० ७, ६; विवा० १, ३,  
अपुरोहित. त्रि० ( अपुरोहित-नास्ति पुरोहितो

यत्र ) पुरोहित-शांतिकर्मकरनार ज्यां नथी  
ते. पुरोहित-शान्तिकर्म करने वाला जहाँ नहीं  
है वह. Devoid of a family-  
priest भग० ३, १;

अपुव्व त्रि० ( अपूर्व ) नवीन; विदक्षणु;  
अन्य साधारण नहि. असाधारण; नवीन.  
Novel; extraordinary. क० प० ४,  
२०; क० गं० २, ६; ४, ४८, विशेष० १२०३;  
प्रव० ३१४ पंचा० ३, २६; (२) पूर्वे न अनु-  
लवेस, अपूर्वकरणु; तणु डरणुमानुं अेक.  
जो पहिले कभी अनुभव से न आया हो वह;  
अपूर्वकरण, तीन करणों में से एक करण. not  
experienced before; one of the  
three Karanas अणुजो० १३०; नाया०  
१७;—चिंतामणि. पुं० (-चिन्तामणि )  
अपूर्व-अद्वितीय चिंतामणि रत्न. अपूर्व  
चिन्तामणिरत्न. unrivaled or un-  
paralleled philosopher's stone.  
पंचा० ४, ३८;—नाण. न० (-ज्ञान )  
अपूर्वज्ञान; ननुं ननुं ज्ञान अपूर्व ज्ञान; नया-  
नया ज्ञान. knowledge which one  
did not possess before; new  
knowledge. प्रव० ३२०;

अपुव्वकरण. त्रि० ( अपूर्वकरण-अपूर्वमभिनवं  
प्रथमं करणं स्थितिघातरसघातगुण  
श्रेणुगुणसङ्क्रमस्थितिवन्धानां पञ्चाना  
मर्थानां निर्वर्तनं यस्यासावपूर्वकरणं )  
स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणु, गुणसंक्रम  
अने अन्यस्थितिवंध अे पांचनी अपूर्व-  
पहेलीज वार निष्पत्ति करनार एव; आदमे  
गुणुक्षणु निरुक्त पायस्थिति प्राप्त करनार  
एव स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणु, गुण-  
सक्रम और अन्यस्थितिवंध इन पांचों की  
प्रथम ही वार निष्पत्ति करने वाला जीव;  
आठवें गुणस्थान में उक्त पांचों स्थिति प्राप्त  
करने वाला जीव. (A soul) attaining

for the first time to a stage (the eighth stage of spiritual evolution) in which the five things occur viz Rasaghāta, Sthitighāta, Gunaśreni, Guna-sankrama and Anyasthitibandha. क० गं० २, ६; ( २ ) न० ( अत्रासं पूर्वमपूर्व-स्थितिघातरसघाताद्यपूर्वार्थं निर्वर्तनं वा तच्चतत्करणञ्चापूर्वकरणम्-भव्यानां सम्यक्त्वाद्यनुगुणो विशुद्धतरपरिणाम विशेष ) ७२ परिणाम-अध्यवसायधी स्थितिघात, रसघातादि अपूर्व अर्थनी अेकं समये साथे साथे निष्पत्तिथाय ते परिणाम विशेष, समकित आदिने अनुकूल अव्यवधाना विशुद्धतर परिणामविशेष जिस परिणाम से स्थितिघात, रसघात आदि अपूर्व-अर्थ की एक ही समय में साथ साथ प्राप्ति हो वह परिणाम विशेष; सम्यक्त्व आदि के अनुकूल भव्यजीव का विशुद्धतर परिणामविशेष modifications undergone by the soul simultaneously acquiring as result of them unique conditions of Rasaghāta etc. जं० प० ३, ७, भग० ६, ३१, क० प० ४, २०, क० गं० ४, ४६; ( ३ ) आठमं गुणस्थानकं आठवाँ गुणस्थानक the eighth Gunasthānaka नाया० ८, १४,—आलिगाली० (-आवलिगाली) अपूर्वकरण की आवलिगाली-समयविशेष the particular time of the attainment of Apūrvakarana क० प० २, ६८;

अपुव्वराणगहण न० ( अपूर्वज्ञानग्रहण-अपूर्वस्य ज्ञानस्य निरन्तरं ग्रहणम् ) निरंतर अपूर्व अपूर्व-ज्ञान प्राप्त करवु ते, तीर्थकर-नमिर्कर्म उपासना वीश स्थानकमानुं

१८ मु स्थानक. सदा अपूर्व अपूर्व ज्ञान प्राप्त करना, तीर्थकरनामकर्म उपार्जन करने के बीस स्थानको में से १८ वाँ स्थानक Ceaselessly acquiring new knowledge, the eighteenth of the twenty sources of attaining to Tirthanakara-Nāmakarma. नाया० ८,

अपुहत्त त्रि० ( अपृथक्त्व-अविद्यमानं पृथक्त्वं प्रस्तावात्संयमयोगेभ्यो विमुक्तत्वस्वरूपं यस्यासौ तथा ) निरंतर संयमयोगमां वर्तनार सदा संयमयोग मे प्रवृत्त Ceaselessly engaged in the practice of self-control. "अपुहत्ते सुप्पण्हिए विहरइ" उक्त० टी० २६,

अपूअ-य. पुं० न० ( अपूप ) पुरी, मालपुआ. पूरी, मालपुआ A small round cake of flour; a bun आया० २, १, ४, २४, ओव० ४२; जीवा० ३, १, जं० प०

अपूइवयण न० ( अपूतिवचन-न पूति अपूति तच्चतद्वचनं चापूतिवचनम् ) सडेलु-डावाध गयेलुं वयन नडि, अर्थात् भोएथुं पाणे तेवा उत्तमपुरुषेणु वयन पवित्र व्यक्तियों का वचन, जिनके कहे हुए वचन की पालना हो सके ऐसा उत्तमपुरुषों का वचन Wolds of men of character, wolds never growing rotten or stale. नाया० १६;

अपूप पु० ( अपूप ) ७७ अथ 'अपूअ-य' श०६. देखो 'अपूअ-य' शब्द Vide 'अपूअ-य'. पृ० ३६;

अपूया ली० ( अपूजा ) पूजने अभाव. पूजा का अभाव. Absence of worship.

"पूयापूया हियाहिया" ठा० ३३;

अपूरिअ. त्रि० ( अपूरित ) अपूर्ण; अधुन.

अधूरा; अपूर्ण Imperfect; incomplete. पि० नि० २१६;

अपूह पुं० (अपोह) अवाय; निश्चय; विशिष्टज्ञान. निश्चय, विशेषप्रकार का ज्ञान. Definite, determinate knowledge; certainty. नाया० १, ८;

अपेच्चमाण. व० कृ० त्रि० (अपेत्यमान-अनाक्रमत्) आक्रमण न करते; कोधना उपर लक्षे न करते आक्रमण न करता हुआ. Not attacking; not assailing. भग० ८, ७, १८, ८;

अपेज्ज. त्रि० (अपेय) पीवा योग्य नहि; मदिरा वगैरे अपेयपदार्थ न पीने योग्य, मदिरा आदि अपेयवस्तु Not drink-worthy; e g wine etc. जीवा० ३, ४;

अपोग्गल पुं० (अपुद्गल-न विद्यन्ते पुद्गला कर्मरूपा येषां ते तथा) धर्मपुद्गलरहित सिद्ध भगवान् कर्मपुद्गल रहित सिद्धभगवान् One free from Karmic atoms; a liberated soul ठा० २, १;

अपोरिसिय त्रि० (अपौरुषिक-पुरुष प्रमाण मस्येति पौरुषिकं तन्निषेधादपौरुषिकम्) पुरुषप्रमाण्वाथी अधिष्ठ उँदुं, अगाध जल वगैरे पुरुषप्रमाण से अधिक ऊँडा; अगाध जल वगैरह. Of a depth exceeding the height of a man; (water etc.) very deep. "अत्याहमपोरिसियं पक्खिवेज्जा" नाया० ६; भग० १, ६;

अपोरिसीय. त्रि० (अपौरुषेय) पुरुषप्रमाण्वाथी वधारे उँदुं; अगाध. पुरुषप्रमाण से अधिक ऊँडा-गहरा. Of a depth exceeding the height of a man; unfathomable. नाया० १४, (२) पुरुषना डडेक्ष नहि; अमानुषिक. पुरुषद्वारा न कहा हुआ, अमानुषिक. ठा० १०;

अपोरिसिय. त्रि० (अपौरुषिक) लुओ 'अपोरिसिय' शब्द. देखो 'अपोरिसिय' शब्द. Vide 'अपोरिसिय'. भग० ७, १;

✓ अपोह धा० I. (अप+ऊह्) छिडापोह डरी निश्चय करे. ऊहापोह करके निश्चय करना. To settle after discussion. अपोहण. विशेष० ५६१;

अपोह. पुं० (अपोह) छिडा पछी थतो निश्चय; अवाय; मतिज्ञानतो त्रीजे लेद. ईहा के बाद होने वाला निश्चय; अवाय; मतिज्ञान का तीसरा भेद Judgment; ascertained knowledge, the third variety of Matijñāna. जं० प० नंदी ३६; विशेष० ३६६, (२) विपक्षनी कुयुक्तिओतो निरासत्याग करवाने विशेष विचार करेते; तर्क; विशिष्ट ज्ञान; बुद्धिने छोडा गुण विपक्ष की कुयुक्तियों का परिहार करने के लिये विशेष विचार करना; तर्क; विशिष्ट ज्ञान, बुद्धि का छठा गुण minute logical reasoning to refute the objections raised by an opponent; the sixth merit of intellect. भग० ६, ३१; (३) पडिलेहणतो ओक प्रकार. पडिलेहण-प्रतिलेखन (बत्तों का निरीक्षण) का एक प्रकार. a variety of Padilehana i. e. minute inspection of garments etc. ओष० नि० ६२;

✓ अप्प. धा० II (अर्प) अर्पणुं करवुं; सौपी देवुं; अर्पण करना, सौप देना. To present; to give.

अप्पेह. सु० च० ४, ८०;

अप्पणामि. नाया० १६;

अप्पेज्जा. वि० पंचा० ८, ७;

अप्पाविउं. सं० कृ० सु० च० ४, १२६;

अप्य त्रि० ( अल्प ) थोड़ा, जरी, स्वल्प, लघु-  
 रेड थोड़ा, स्वल्प Little; small  
 भग० १, १; २, २; ३, २, ५, ६, १०; ७,  
 ३, १३, ४, नाया० १, १२, १६, दस० ४,  
 ५, १, ७४, ६, १४, जीवा० १, आया० १,  
 २, १, ६२, १, २, ३, ८०, उक्त० १, ३५,  
 ११, ११, २५, २४, वव० ६, ४१, ४२,  
 कप्प० ४, ६७, पि० नि० २०४; ३७६, सू०  
 प० १०, २०, ओव० ११, १६, ३८, ( २ )  
 अभाव, नहि अभाव. absence of,  
 negation of ठ० ७; राय० ३२, आया०  
 १, ८, ६, २२२;—अंड त्रि० (—अण्ड-  
 अल्पानि—न सन्ति अण्डानि क्रीटिकादीनां  
 यत्र तदल्पाण्डम् ) धां वगरनुं, ज्यां डीडी  
 वगेरेनां धां मुदल नथी ते अंड रहित,  
 जहा चिजंटियो आदिक के अंडे नाममात्र के भी  
 नहीं हैं वह. absolutely free from  
 eggs; free from eggs of ants  
 and other insects. आया० २, १,  
 १, १, वेय० ४, २६,—अहिगरण  
 त्रि० (—अधिकरण—अल्पमविद्यमानमधिकरण  
 कलहो यस्य तत्तथा ) डलडरहित, डलेश  
 विनाने कलह रहित, क्लेश रहित free  
 from feud or quarrel, peaceful  
 ठ० ६, १,—आउ त्रि० (—आयुष् ) लुओ।  
 'अप्यआउअ-य' श०६ देखो; 'अप्यआउअ-य'  
 शब्द vide "अप्यआउअ-य" क०प० ४, ७३,  
 —आउअ-य. त्रि० (—आयुष्क) अल्प—थोडा  
 आठिआवाणे; थोडी निंदगी लोगवनार  
 थोडी आयु वाला. having a short  
 life, short lived सूय० २, ७, २३,  
 परह० १, १,—आउअत्ता स्त्री० (—आयु-  
 ष्कता—अल्पमायुर्यस्यासावल्पायुष्कस्तस्य भा-  
 वस्तत्ता ) जघन्य आठिभुं, दुंडुं आयुष्य,  
 दुंडी निंदगी थोडी आयु, जघन्य आयु  
 shortness of life भग० ५, ६; ठ०

३, १,—आगम त्रि० (—आगम ) अल्प  
 आगमने लालुनार, अल्पज्ञ अल्प-थोडा आगम  
 जानने वाला, अल्पज्ञ. (one) possessed  
 of a smattering knowledge of  
 scriptures, a smatterer वव० ६,  
 २,—आर्यक त्रि० (—आतङ्क—अल्प सर्वथाऽ-  
 विद्यमान आतङ्को ज्वरादिर्यस्यासावल्पातङ्कः)  
 निरोगी, रोगरहित निरोगी, रोग रहित  
 free from disease, healthy.  
 "अप्यायंके महापन्ने, अभिजाणु जसोवले"  
 उक्त० ३, १८, भग० १६, ३, आया० २, ५,  
 १, १४१,—आरंभ त्रि० (—आरम्भ )  
 पृथ्वी आदि लोकोने थोडा आरंभ समारंभ  
 डरनार पृथ्वी आदि जीवों का थोडा आरंभ-  
 समारंभ करने वाला injuring or  
 killing to a slight extent the  
 sentient beings of earth—bodies  
 etc ओव०—आसव पुं० (—आश्रव )  
 थोडा आश्रव—डर्मप्रवाह थोडा आश्रव-कर्म  
 प्रवाह, slight influx of Karma.  
 भग० १६, ४,—आसवतर पुं० (—आश्रवतर)  
 धलोण थोडा आश्रव; अतिशय थोडी डर्मनी  
 आवड बहुत थोडा आश्रव, बहुत कम कर्म की  
 आय slight influx of Karma.  
 भग० १६, ५,—आहार पुं० (—आहार )  
 स्वल्प आहार, थोडा भोराड. स्वल्प आहार;  
 थोडी खुराक scanty food अट्टकुक्कुडि-  
 अंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे  
 अप्पाहारे " भग० ७, १, दसा० ५, २६;  
 पि० नि० ६४८, वव० ८, १५; ( २ ) त्रि०  
 भिताडारी, थोडुं भानार भिताहारी; थोडा  
 खाने वाला ( one ) taking scanty  
 food पि० नि० ६८८, वव० ८, १५;  
 —इच्छ त्रि० (—इच्छ—अल्पा स्तोकाऽ-  
 विद्यमाना वा इच्छा यस्य तत्तथा) धर्मोपडरुं  
 शिवाय अन्य वस्तुनी धंछा न राषनार.

धर्मोपकरण के सिवाय दूसरी वस्तुओं की इच्छा न रखने वाला. ( one ) having desires limited only to imple-  
ments of religious practices. सूय०  
२, २, ३६; जीवा० ३; (२) स्वल्प आहार  
करना; आहारना त्यागी. थोड़ा आहार करने  
वाला; आहार का त्यागी taking scanty  
food, one who gives up food.  
“ लूहवित्ती सुसंतुष्टे, अपिच्छे सुहरे सिया ”  
दस० ८, २५;—इच्छया स्त्री० (—इच्छता-  
इच्छा ) अल्प धन, धनहीन अभाव.  
थोड़ी इच्छा, अल्प इच्छा; इच्छा का अभाव.  
scantiness of desire, absence of  
desires. “अपिच्छया अहलाभेवि संते”  
दस० ६, ३, ५;—इच्छा स्त्री० (—इच्छा )  
आहारदिग्धमां थोड़ी धन, स्वल्प वांछा  
आहारादि में थोड़ी इच्छा. scantiness  
of desire for food etc भग० १, ६;  
—इच्छिय. त्रि० (—ऋद्धिक) थोड़ी ऋद्धिवाणो.  
थोड़ी ऋद्धि वाला possessed of limited  
means भग० ३, २, १०, ३, १६, १०,  
इच्छियतर. त्रि० (—ऋद्धिकतर ) अतिशय  
थोड़ी ऋद्धिवाणो बहुत ही कम ऋद्धि वाला  
having very scanty means भग०  
१२, ४,—उत्तिग त्रि० (—उत्तिङ्ग) उत्तिग-  
धीनीना नगररहित, धीनीना नगरा विनानु  
चिजंटीयों के नगराओं ( घरों ) से रहित  
free from ant-hills वेय० ४, २६;  
—उत्थाह. त्रि० (—उत्थायिन्—अल्पमुत्थातुं  
शीलमस्येत्यहोत्थायी ) प्रयोजन पक्षे पण्य  
वारंवार उठनेस करवाने जेते स्वभाव नहीं  
ते प्रयोजन होने पर भी बार बार उठने बैठने  
का जिसका स्वभाव नहीं हो वह ( one )  
not getting up from his seat  
frequently inspite of necessity  
“ अप्पुट्टाई निरुट्टाई, निसीएज्जप्पकुक्कुप ”

उत्त० १, ३०,—उदय त्रि० (—उदक )  
पाणि विनानुं: पाणिरहित जल रहित;  
विना पानी का. devoid of water;  
waterless आया० १, ८, ६, २२२;  
—उयय. त्रि० (—उदक ) लुभ्यो ‘अपुदय’  
शब्द. देखो ‘अपुदय’ शब्द. vide  
‘अपुदय’. नाया० १;—उस्स. त्रि०  
(—अवश्याय) ओस-आकणना पिनदु वगरनुं;  
नीचे के उपर धरना पिनदु नहीं तेवुं ओस के  
बिन्दुओं से रहित; जिसके ऊपर या नीचे  
ओस की बूंदें नहीं हैं ऐसा. free from  
dew-drops आया० १, ८, ६, २२२;  
वेय० ४, २६,—उस्सुय त्रि० (—अौत्सुक्य)  
उछांछणापण्णथी रहित; विध्वण नहीं उत्सु-  
कता रहित, विह्वलता रहित free from  
restlessness भग० २, १; ३, २;  
आया० २, ३, १, ११६,—कम्मतर.  
त्रि० (—कर्मतर) अणुण थोड़ा कर्मवाणो.  
बहुत ही थोड़े कर्मों वाला. having  
very slight Karmas. “ तत्रो पच्छा  
अप्यकम्मतराए चव ” भग० ५, ६, १, २;  
१६, ५,—कम्मतरय त्रि० (—कर्मतरक )  
धणुण थोड़ा कर्मवाणो, धणुण हणवाकर्मो.  
बहुत थोड़े कर्मों वाला. having very  
slight Karmas भग० ७, १०; १८, ५;  
—कालिय त्रि० (—कालिक) थोड़ा वपत  
रहेनार; थोड़ा डाणनुं थोड़ा समय रहने वाला;  
थोड़े समय का of a short duration  
of time, resting for a short  
time. भग० ६, ३३,—किरिय. त्रि०  
(—क्रिय) थोड़ी क्रियावाणो, जेते थोड़ी क्रिया  
दागे छे ते. थोड़ी क्रिया वाला, जिसका थोड़ा  
कर्मबंध होता है वह. having slight  
Karma ठा० ४, ३;—किरिया. स्त्री०  
(—क्रिया) थोड़ी क्रिया; अल्प क्रिया. अल्प  
क्रिया, थोड़ा कर्मबंध. slight Karma,

भग० १६, ४,—किरियातरा स्त्री० (—किरियातरा ) धृष्टी थोड़ी क्रिया—कर्मबन्ध बहुत थोड़ा कर्मबन्ध very slight Karma  
 भग० १६, ५;—किलंत त्रि० (—क्लान्त—अल्पं स्तोत्रं क्लान्तं क्लमो येषां ते तथा ) जेने भेद—परिश्रम नहीं ते जिसे परिश्रम—खेद नहीं है वह unfatigued, slightly fatigued “अप्यकिलंताय बहुसुभेण भे”  
 आव० ३, १;—कुक्कुत्र त्रि० (—कौकुच्य—अल्पमसत् कौकुच्यं करचरणादिचेष्टाऽस्येति तथा ) हाथ, पैर, मस्तक वगैरे ध्रुवाववानी चेष्टा विनानो हाथ, पैर, मस्तक आदि हिलाने की चेष्टा से रहित free from movements of hands, feet, head etc  
 “ निसीपुज्जपकुक्कुट ” उक्त० १, ३०,  
 —क्रोध त्रि० (—क्रोध ) क्रोधरहित, भाव ऊनोदरी का एक भेद free from anger; a variety of mental Unodari.  
 भग० २५, ७, ओव०—क्वचर न० (—अक्षर—अल्पान्यक्षराणि यस्मिंस्तत्तथा ) शुशुभुक्त सूत्र, जेमा अक्षर थोडा अने अर्थ गंभीर होय तेतुं सूत्र. गुण सहित सूत्र, जिसमें अक्षर थोड़े हों और अर्थ बहुत हो ऐसा सूत्र an aphorism concise in form but comprehensive in meaning ओव०  
 —गघ त्रि० (—अर्ध—अल्पोऽर्धो मूल्य यस्य तत्तथा ) थोड़ी किम्मतवाणुं, अल्प मूल्यवान् पदार्थ, सस्तु अल्प मूल्य वाला, थोड़ी कीमत वाला; सस्ता cheap; of small price जीवा० ३, ३, दस० ७, ४६, भग० ३, ७,  
 —जोग पुं० (—योग ) न्यून-योग—अल्प व्याप्तिने व्यापार जघन्य योग minimum or lowest degree of thought vibration and other activities क० गं० ५, ५३, —भङ्ग त्रि०

(—भङ्ग—विगततथाविधविप्रकीर्णवचनं )  
 क्लेश—अगडानां वचन न भोलनार; भाव उलोदरी करनार लड़ाई, झगड़े के वचन न बोलने वाला, भाव ऊनोदरी करने वाला. not given to offensive or quarrelsome speech, practising mental Unodari ठ० ८, भग० २५, ७,—द्विष्टय त्रि० (—द्विष्टिक ) थोड़ी ऋद्धिवाणु, जेनी पासे थोड़ी ऋद्धि छे ते. थोड़ी ऋद्धि वाला, जिसके पास थोड़ी ऋद्धि है वह having limited wealth.  
 भग० १४, ३, १६, ११, पत्र० १७;  
 —णिज्जरा स्त्री० (—निर्जरा ) थोड़ी निर्जरा थोड़ी निर्जरा, कम प्रमाण मे कर्मों का नाश a modicum of Nirjarā.  
 भग० १६, ४;—तुमंतुम त्रि० (—त्वम् त्वम् ) क्रोधने वशे ‘तुतु’ करी अके भीलनु अपमान न करनार क्रोध के वश होकर ‘तू तू’ आदि हीन शब्दों द्वारा एक दूसरे का अपमान न करने वाला not insulting one another by the use of the term “thou” in anger भग० २५, ७, ठ० ८, दसा० ४, १०५,—स्थामअ त्रि० (—स्थामन् ) थोडा अणवाणुं; अल्प सामर्थ्यवान्. कम शक्ति वाला, अल्प सामर्थ्यवान्. of small or limited strength. “ से अंतसो अप्यस्थामप् ” सूत्र० १, २, ३, ५;—द्धा स्त्री० (—अद्धा ) अल्प काल; थोडा वधत थोडा समय short time, a small duration of time क० प० २, १०१, ७, ४३,—पणसग्ग त्रि० (—प्रदेशाग्र—अल्पं प्रदेशाग्र कर्मवृत्तिकपरिमाण यस्य तत् ) थोडा प्रदेशवाणी कर्म; जेने प्रदेशाग्र—कर्मवृत्तने अर्थे थोडा होय ते कर्म वगैरे थोड़े प्रदश वाला कर्म, जिस कर्म का प्रदेशबंध थोडा हो वह कर्म (Kamas etc) covering

a narrow space भग० १, १;  
 —परिग्रह त्रि० (-परिग्रह) धनधान्यादि  
 थोडा परिग्रहवाला वनधान्यादि थोड़े परिग्रह  
 वाला. having limited worldly  
 possessions ओव०—परिचय पुं०  
 (-परित्याग) थोडा त्याग. थोड़ा त्याग;  
 अल्प त्याग slight abstention  
 पंचा० १८, ३२,—प्राण त्रि० (-प्राण-  
 अल्पा असन्त प्राणा प्राणिनो यत्र तत्तथा)  
 प्राणिरहित; जहाँ प्राणी पशु प्राणी-जंतु  
 नहीं तथा उपाश्रय वगेरे प्राणी रहित स्थान;  
 जहाँ कोई भी प्राणी-जीवजन्तु नहीं ऐसा उपा-  
 श्रय वगैरह free from living beings  
 e g a monastery or a monk's  
 abode. आया० १, ६, ८, ७; वेय० ४,  
 २६;—पाणासि त्रि० (-पानाशिन्-अल्पं  
 पानमशितुं शीलमस्यासावल्पपानाशी ) थोडुं  
 पेय द्रव्य पीनार; पाणी वगेरेनुं थोडु पान  
 करनार पेय पदार्थ को थोड़ा पीने वाला;  
 पानी वगैरह को अल्प प्रमाण में पीने वाला  
 (one) taking a limited quantity  
 of fluid substances like water  
 etc. सूय० १, ८, २५,—पिंडासि. त्रि०  
 (-पिण्डाशिन्-अल्पं पिण्डमशितुं शीलमस्ये-  
 ति) थोडा आहारनेो करनार, मितहारि,  
 अल्पाहारी अल्प प्रमाण में आहार करने  
 वाला, मितहारी (one) taking a  
 limited quantity of food; mode-  
 rate in food. “अल्पपिंडासिपाणासि,  
 अल्पं भासेज्ज सुव्वण्ण” सूय० १, ८, २५;  
 —पुरण त्रि० (-पुरण) पुण्यहीन, पापी;  
 अनार्थ पुरण हीन, पापी, पुण्य रहित; अनार्थ  
 sinful; devoid of religious  
 merit आया० १, ६, १, ८;—बहु त्रि०  
 (-बहु) ओष्ठुवत्तुं, थोडुं धणु, थोडुं अणुं  
 न्यूनाधिक, थोडा बहुत more or less

जीवा० २, जं० प० ७, १६२,—बहुग त्रि०  
 (-बहुक) ओष्ठु डरता थोडुं ओष्ठुं वा वधारे-  
 थोडुं वा धणु एक की अपेक्षा दूसरा कम या  
 ज्यादाह; कम ज्यादाह. more or less.  
 क० प० १, ५; भग० ७, २;—वीज त्रि०  
 (-बीज-अल्पमसद् बीजं यत्र तत्तथा) थोडा  
 रहित; जहाँ धान्य वगेरे थोडा विद्यमान नहीं ते  
 स्थान वगेरे. बीज रहित; जहाँ धान्य आदि के  
 बीज मौजूद नहीं हो वह स्थान आदि. barren  
 of seeds वेय० ४, २६;—भक्षि त्रि०  
 (-भक्षिन्-अल्पं भक्षितुं शीलमस्येति)  
 अल्पाहारी; मितहारि अल्पाहारी, कम  
 आहार करने वाला moderate in food;  
 taking a modicum of food “अ-  
 ल्पुक्कसाई लहुअल्पभवसी” उक्त० १५  
 १६;—भार त्रि० (-भार) जेनुं मूल्य धणुं  
 छता भार थोडा होय ते, थोडा वजनवाणु.  
 जिसका मूल्य बहुत होने पर भी वजन कम  
 हो वह, थोड़े वजन वाला. small in  
 weight. भग० २, १,—भाव. पुं०  
 (-भाव) अल्प भाव-लागणी. अल्प भाव.  
 slender or feeble feeling. पंचा०  
 ६, १६,—भासि. त्रि० (-भाषिन्) मित-  
 भाषी, विद्वथा आदिथी रहित मितभाषी;  
 विकथा आदि न करने वाला; अल्प प्रमाण में  
 बोलने वाला given to speak little;  
 not prolix. “अतित्तिये अचवले, अल्प-  
 भासी मियासणे” दस० ८, २६,—भूय.  
 त्रि० (-भूय) सत्त्व-प्राणीरहित स्थान  
 वगेरे. प्राणी रहित स्थान आदि (a place  
 etc) free from living beings.  
 ठा० ५, १,—मइ त्रि० (-मति) थोडा  
 बुद्धिवाणो थोडी बुद्धि वाला. of slender  
 intellect. क० प० ७, ५६,—महग्घ.  
 त्रि० (-महार्घ) जेनेो भार-वजन थोडुं अने  
 डिम्भत धणु होय तेनुं जिसका वजन थोडा



हो और कीमत बहुत हो वह. small in weight but of high price. राय० २३८; नाया० ध०—महर्घाभरणं त्रि० (—महर्घाभरणं—अल्पानि स्तोकभारवन्ति महर्घाणि बहुमूल्यान्याभरणानि यस्यासौ तथा ) थोडुं वजन अने धली डिम्भतवाणां आभूषणो राभनार. थोडे वजन और अधिक कीमत वाले आभूषणों को रखने वाला having ornaments of small weight and high price. उवा० १, १०,—रय त्रि० (—रजस् ) धर्मरञ्जित; अक्षुधर्मी कर्मरज रहित, अल्पकर्मों वाला sullied with slight Karma, unsullied with Karma “ सिद्धे वा हवद् सासए, देवे वावि अप्परए महिद्धिए ” उक्त० १, ४८,—रय त्रि० (—रत—अल्पमविद्यमानं रत क्रीडनं यस्येति ) श्रीडारहित-डाम लोगनीधृच्छ विनाना—अनुत्तरविमानना देवता वगेरे क्रीडा रहित, कामभोग की इच्छा रहित, अनुत्तरविमाननिवासी देवादि free from carnal lust, e g gods of Anuttara heavenly abode दस० ६, ४, २, ३,—लेवा स्त्री० (—लेपा) जेनाधी पात्र भरडाय नहि अेवा यथा, पडुंवा वगेरे आहार लेवानी प्रतिज्ञा करवी ते, पिंडे-पणुनो येथो प्रहार जिन वस्तुओं से पात्र न लिप्त हों उन वस्तुओं को आहार मे ग्रहण करने की प्रतिज्ञा करना, पिंडेषणा का चौथा भेद the fourth variety of cae in food, a vow to take food consisting of grams, beans etc which do not bespatter or stick to a vessel ठा० ७,—लोभ पु० (—लोभ ) दोल घटाडवे या न करवे ते; भाव उल्लादरीना अेक प्रहार लोभ का घटाना या न करना, भाव ऊनोदरी का एक भेद. miti-

gation of or cessation of greed; a variety of mental Unodari. भग० २५, ७,—लोह पु० (—लोभ ) लुओ 'अप्पलोभ' शब्द देखो 'अप्पलोभ' शब्द vide 'अप्पलोभ'. भग० २५, ७,—वुट्टि स्त्री० (—वृष्टि) थोडी परसाद. अल्प वर्षा, थोडी वर्षा. scanty rain ठा० ३, ३,—वुट्टिकाय. पु० (—वृष्टिकाय—वर्षणधर्मचुक्कमुदकं वृष्टिस्तस्या कायः समूहो वृष्टिकाय स चासावल्पः स्तोकोऽविद्यमानो वालवृष्टिकाय ) थोडी परसाद परसे अथवा मुदक न परसे ते. थोडी वर्षा हो अथवा विल्कुल वर्षा न हो वह. scantiness or complete absence, of rainfall “ तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्टिकाए सिया तंजहा ” ठा० ३, ३, “ अन्नयाकया पढमसरदकालसमयंसि अप्पवुट्टिकायसि ” भग० १५, १, कप० ६, ३१,—वेयणा-तरगा स्त्री० (—वेदनतर-का ) अतिशय थोडी वेदना, धली जे थोडी वेदना बहुत कम वेदना—कष्ट very slight pain भग० १, २, १८, ५; १६, ५,—वेयणा स्त्री० (—वेदना ) थोडी वेदना—दुःख थोडी वेदना, अल्प कष्ट slight pain. भग० ६, १; ७, ६, १६, ४,—सत्तिय त्रि० (—सात्त्विक) सत्त्व वगरना, मनोभग विनाना सत्त्व रहित; मनोबल रहित lacking in will-power, stuffless सूय० नि० १, ४, १, ६१;—सद्द पु० (—शब्द) राड न पाडवी, धीमे धीमे ओलवुं ते, भाव उल्लादरीना अेक प्रहार ऊचे स्वर से न चिल्लाना, धीमे स्वर से बोलना; भाव ऊनोदरी का एक भेद not shouting, speaking in a low tone; a variety of mental Unodari भग० २५, ७, ( २ ) डुओ करवा गुरसाथी न ओलवुं ते भगवा हो जानि की संभावना के

कारण क्रोध या गुस्से से न बोलना not shouting with a view to quarrel. श्रव०—ससरक्ख. त्रि० (—सरजस्क ) २०—इयरो डाढीने साइ सुइ इरेइ कचरा निकालकर साफ किया हुआ. cleansed by the removal of dirt. आया० २, २, १, ११०;—सागारिय. त्रि० (—सागारिक ) द्रव्यादिइथी रहित. द्रव्यादि से रहित not possessed of wealth etc वेय० १, २४;—सावज्जकिरिया स्त्री० (—सावज्जक्रिया ) जेभां सावज्जक्रिया थोड़ी छे जेपी वसति—स्थान. जिसमें पाप क्रिया थोड़ी हो ऐसी वस्ती—स्थान. a residence with very few sinful actions in it आया० २, २, २, ८६;—सुअ. त्रि० (—श्रुत ) शास्त्र—आगमनो अज्जालु, थोडुं ज्जालुनार; अल्पज्ञ. शास्त्रों को थोड़ा जानने वाला, अल्पज्ञ ignorant of scriptures; possessed of meagre knowledge. “ उहरे इमे अप्यसुपुत्ति णच्चा ” दस० ६, १, २; वव० ६, २;—सुह त्रि० (—सुख ) थोडुं सुअ आपनार; नहि जेपु सुअ जेभां छे ते. थोड़ा सुख देने वाला; नाममात्र का सुख जिसमें है वह giving but little happiness परह० १, १,—हरिअ. त्रि० (—हरित) ज्ज्यां हरित-वनस्पति नहीं तेपु, वनस्पतिरहित. जहां हरी वनस्पति नहीं हो वह (स्थान), वनस्पति रहित free from green vegetation वेय० ४, २६,

अप्य पुं० ( आत्मन्—अतति सततं गच्छति विशुद्धिसंक्लेशात्मकपरिणामान्तराणीत्यात्मा ) ज्ज्य, आत्मा; जेतन; स्वय; पोते; पडे. जीव; आत्मा, चेतन; खुद व खुद; स्वयं. Consciousness; soul; self; oneself. “अप्यणा चैव उदीरेइ ” भग० १, ३;

“ अप्यणा अप्यणो कम्मक्खयं करित्तए ” नाया० ५; “ अप्यणो भासाए परिणामेण ” “अप्या णई वेयरणी, अप्या मे कूडसामत्ती ” उक्त० २०, २६; पिं० नि० भा० ३०; विशेष० १५६; १५६८; निसी० १३, ३०; १५, १; दस० १, २; ६, २२, कप्प० १, ७, गच्छा० ६६, आव० १, ३; नाया० ७; १६; भग० १५, १, दसा० ५, १६; वव० २, २७; ५, ११; ८, १२; अप्याणं. द्वि० ए० उक्त० १, ६; २६; जं० प० ३, ६८; नाया० १४; निसी० ११, १३; अप्यणा. तृ० ए० वेय० १, ३३; ४, ११; १२; भग० २, ५; २४, १; २३; नाया० २, दसा० १०, ७; अप्यणो ष० ए० श्रव० ३४; सूय० १, १, १, ३; अणुजो० १६४; दस० ४; नाया० १; ८; वेय० ४, २५; उक्त० १०, २८, भग० ५, २; ६; १५, १; १७, १; १८, ८; भत्त० ३६; पंचा० ६, ५०; दसा० ६, १२; पन्न० २२; निसी० ३, ३४; १६, १७, अप्ये. स० ए० उक्त० ६, ३६;—अभिरिवेस. पुं० (—अभिनिवेश ) पुत्र, कुलत्रादिइभा पोतापणुनो आग्रह; जे वास्तविक रीते पोताना नहीं तेने विषे आग्रहपूर्वक भक्तव राखपुं ते जो वस्तुएं वास्तविक रीति से अपनी नहीं हैं उनमें आग्रहपूर्वक भक्तव रखना; पुत्र, कुलत्र आदि में अहंभाव. excessive attachment to family, worldly possession etc. which are not really a part of one's self or soul नंदी०—उपमा. स्त्री० (—उपमा ) आत्मतुलना; पोतानी उपमा आत्मतुलना; अपने आपकी उपमा comparison with one's own self. सूय० १, ११, ३३;—उत्सुय. त्रि० (—उत्सुक ) भीजनी संपत्तिनी अवगणुना इरी पोतानी संपत्तिने विशेष माननार, आत्मप्रशंसा इरनार दूसरे

की संपत्ति की अवहेलना करके अपनी संपत्ति को विशेष मानने वाला, अपनी प्रशंसा करने वाला. self-applauding, self-exalting ज० प०,—चउत्थ. त्रि० (-चतुर्थ) जेभां पोताने योथे नंयर छे ते, पोते जेभा योथे छे ते जिसमे अपना चौथा नंबर हो वह having oneself as the fourth of a series or group वेय० १, ४८; वव० ४, ५, ६; ८, ९; १०; ११; ५, ३; ८,—छुट्ट. त्रि० (-षष्ठ) जेभां पोते छे छे ते जिसमें खुद का छठा नंबर हो वह. having oneself as the sixth of a group or series नाया० ६, १६, १८,—तइय त्रि० (-तृतीय) पोते जेभां त्रीजे नंयर छे ते स्वयं जिसमें तीसरे नंबर पर हो वह. having one-self as the third of a group or series वेय० १, ४७, ४८, वव० ४, ५, ६, ८, ५, ३,—पंचम त्रि० (-पञ्चम) जेभां पोते पांचमे छे ते, पोता सहित पांचमे जिसमें खुद पांचवां हो वह, अपने सहित पांचवां having oneself as the fifth of a group or series. वव० ५, ८;—पर त्रि० (-पर-आत्मा च परश्चात्मपरौ तथा ) पोते अने भी-ल, पोते अथवा भीजे खुद और दूसरा, स्वयं अथवा दूसरा oneself and others, oneself or another. नाया० ७;—विद्वि-ति-य. त्रि० (-द्वितीय) पोते जेभां भीजे छे ते, पोता सहित जे स्वयं जिसमे दूसरा है वह. having oneself as the second of a group or series; forming a group of two inclusive of oneself वेय० १, ४; ४७; वव० ४, २; ५, १,—वस. त्रि० (-वश) स्वतंत्र; पोताने वश, परवश नहि आत्मवश, स्वाधीन, जो परवश नहीं है वह. self-dependent,

independent गच्छा० ६८, नाया० १६;—वसा स्त्री० (-वशा) स्वच्छंद स्त्री, निरं-कुश नारी स्वच्छद स्त्री, स्वेच्छाचारिणी नारी. a self-willed woman, a woman without any body to curb her नाया० ध०—वह पु० (-वध) आत्मघात; पोताने वध-घात करवी ते आत्महत्या sui-icide भक्त० ६३,—वाइ पु० (-वादिन्) 'पुरुष एवेदं सर्व' जे कंधं देभाय छे ते सर्व आत्मा शिवाय भीजुं कंधं नथी—जेकर आ-त्मतत्त्वने प्रातिपादन करनार वादी, अद्वैत-वादी "पुरुष एवेदं सर्व" जो कुछ दिखता है वह सब आत्मा है, आत्मा के सिवाय दूसरा कुछ नहीं है, इस प्रकार केवल आत्म-तत्व का प्रतिपादन करने वाला वादी, अद्वैत-वादी a pantheist, a non-dualist. नंदी०—सत्तम त्रि० (-सप्तम) जेभां पोते सातमे छे ते, पोता सहित सातमे. जिसमें स्वयं सातवां हो वह having oneself as the seventh of a series or group 'मह्नीणं अरहा अप्पसत्तमे मुंडे भवित्ता' ठा० ७,—द्विय न० (-हित) आत्महित; आत्मानुं श्रेय-लक्षुं आत्मा का भला, आत्मा का हित welfare of the soul or self. नाया० ७;

अप्यइहाण पु० (अप्रतिष्ठान-न विद्यते प्रतिष्ठानमौदारिकशरीरादे. कर्मणो वा यत्र सो अप्रतिष्ठान) मोक्ष; मुक्ति मोक्ष, मुक्ति. Salvation, final liberation. आया० १, ५, ६, १७०; (२) सातमी नरकना पांच नरकावासामाने मध्यवर्ति जेकर नरकावासो. सातवें नरक के पांच नरकावासों में से मध्यवर्ती एक नरकावास. name of the middle of the five infernal abodes of the seventh

hell“अप्पइड्डाणे नरए एगं जोयणसयसहस्स  
आयामविक्खंभेण ’ ठा० ५, ३; पन्न० २;  
-जीवा० ३, १; भग० १३, १; सम० प० २०६;  
अप्पइड्डिअ त्रि० (अप्रतिष्ठित) प्रतिष्ठान-  
रहित; पाया विना-निमित्त विना स्वभावे  
उद्भववेद प्रतिष्ठान रहित; विना निमित्त के  
अपने आप उत्पन्न. Self-born ठा० ४,  
१; (२) प्रतिबंधरहित; अशरीरी.  
प्रतिबंध रहित, अशरीरी. free from  
obstruction; bodiless; unem-  
bodied. आया० २, १६, १२;

अप्पइरणपसरियत्त न० (अप्रकीर्णप्रसृतत्व)  
जेभा असय्यद्वपणुं अने अतिविस्तार  
नथी जेवी वाणी; तीर्थंकरनी वाणीना उप  
अतिशयमानो जेठ. जिसमे असंबद्धता और  
विस्तार नहीं है ऐसी वाणी; तीर्थंकर की  
वाणी के ३५ अतिशयों में से एक अतिशय  
Speech free from irrelevance  
and prolixity; one of the  
thirty-five Atishayas of a Ti-  
rthāṅkar's speech सम० ३५;

अप्पउल्लिअ. त्रि० (अप्रज्वलित) अपडय;  
अरापर रंधाजेल नहि. विना पका हुआ;  
अच्छीतरह से न सीका हुआ Raw; im-  
perfectly cooked. “अप्पउल्लिओ  
सहिभवत्तणया” उवा० १, ५१;

अप्पकंप. त्रि० (अप्रकम्प) अउय; अचल,  
इंजे नहि-हले नहि तेयु, ६६. हलन चलन  
रहित; अचल; दृढ. Firm, steady.

“मंदरो इव अप्पकंपे” ठा० १०; ओव० १७,

अप्पकम्म. त्रि० (अल्पकर्मन्) हलवा इर्भा;  
जेने थोडां इर्भे भोगवाना छे ते जिसे थोड़े  
कर्मों का फल भोगना है वह. Having  
slight Karmas. ठा० ४, ३, —पच्चा-  
याय. त्रि० (-प्रत्यायात-अल्पै. स्तोके कर्मभिः  
प्रत्यायातः प्रत्यागतो मानुपत्वमित्यल्पकर्मप्र-

त्यायातः) भोगवतां छे अपावतां थोडां इर्भे।  
आडी रखा तेथी इरी मनुष्ययोनिमां जन्मेस;  
थोडां इर्भे साथे मनुष्यरूपे जन्मेस. थोड़े कर्मों  
सहित मनुष्ययोनि में उत्पन्न; भोगते या  
क्षय करते २ जो थोड़े कर्म शेष रहे हों उनसे  
फिर मनुष्ययोनि में उत्पन्न born again  
in the human womb on account  
of a few remnants of Karmas.  
ठा० ४, १;

अप्पच्चक्खाण न० (अप्रत्याख्यान) लुओ।  
“अपच्चक्खाण” शब्द देखो ‘अपच्चक्खाण’  
शब्द Vide ‘अपच्चक्खाण.’ क० गं०  
१, १७; ठा० २, १; विशेष १२३१;  
—वत्तिया ली० (-प्रत्यया) पय्यण्ण  
न इरवाथी दागती क्रिया-इर्भंध. पच्चक्खाण-  
प्रत्याख्यान न करने से जो कर्मबंध हो वह.  
Karma arising from not taking  
a vow of giving up sense-  
pleasure etc ठा० ४, ४;

अप्पच्चक्खाय. सं० क० अ० (अप्रत्याख्याय)  
पय्यण्ण न इरीने, त्याग न इरीने.  
प्रत्याख्यान न करके, त्याग न करके. With-  
out having given up or  
abandoned “इहमेगे उ मज्जति, अप्प-  
च्चक्खाय पावगं” उक्त० ६, ६;

अप्पजुहिअ त्रि० (सिद्ध) पाडीने तैयार  
थयेस; रंधाई रहेस. पककर तैयार; सीका चुका  
हुआ. Cooked; ripe for eating.  
आया० २, १, ४, २३;

अप्पाडिकंठय. त्रि० (अप्रतिकण्टक-न विद्यते  
प्रतिमह कण्टको यत्र तदप्रतिकण्टकम्)  
जेने डोछ प्रतिपक्षी नथी ते. जिसका कोई  
प्रतिपक्षी नहीं हो वह. Unrivalled;  
having no rival. राय०

अप्पाडिकम्म. न० (अप्रतिकर्मन्) जेभां  
प्रतिइर्भे-शरीर-संस्कार, शरीरयेष्टा-संकेय,

विस्तार वगैरे इंध न थर्ष शङ्के तेवो संथारानो अेक प्रकार, पादपोपगमन संथारानो अेक भेद जिसमें शरीरसंस्कार, शरीर चेष्टा अर्थात् संकोच, विस्तार वगैरह कुछ न हो सके ऐसा देह त्यागने का एक भेद, पादपोपगमन नामक उपवास का एक भेद A variety of Pādapopagamana ( bodily ) austerity; a variety of bodily austerity in which an ascetic gives up food and drink and awaits death without moving any part of the body "सुत्तागारे य अप्पाडिकम्मे" परह० २, ५; ठा० २, ४, ओव० १६;

अप्पाडिकुट्ट त्रि० ( अप्रतिक्रुष्ट ) निषेध न करेले, मनाध न करेले; अनिन्ध निषेध न किया हुआ; अनिन्ध, जिसकी मनाही न की गई हो वह. Unforbidden, unproscribed ठा० २, ४,

अप्पाडिकंत त्रि० ( अप्रतिक्रान्त ) प्रतिक्रमण द्वारा पाप से पीछे न हटा हुआ Not freed from sin through Pratikramana उत्त० १३, २६; ओव० ३८, नाया ध०

अप्पाडिकमित्तु सं० कृ० अ० ( अप्रतिक्रम्य ) पडिक्रम्या विना; सचारना प्रतिक्रमणमाटे डा-उसग्न कथा विना प्रात कालीन प्रतिक्रमण के लिये कायोत्सर्ग किये विना Without performing Pratikramana or confession of sin; without performing Kāyotsarga for the morning Pratikramana. "अप्पाडिकमित्तु कालस्स, भायण पडिकेहए" उत्त० २६, २२;

अप्पाडिकम्मावेत्ता सं० कृ० अ० ( अप्रतिक्रम्य ) पडिक्रम्या विना. प्रतिक्रमण कराये

विना. Without performing Pratikramana or confession of sins. वव० ६, २०;

अप्पाडिग्गहिय त्रि० ( अप्रतिगृहीत ) ग्रहण न करेले. अग्रहीत, ग्रहण न किया हुआ. Not accepted, not taken भग० ८, ७;

अप्पाडिचक्क त्रि० ( अप्रतिचक्र-न विघते प्रति-अनुरूप समानं चक्रं यस्य तदप्रतिचक्रम् ) पर्यक्त जेनी परापरि न करी शङ्के तेवु थरक आदि जिसके समान दूसरा चक्र आदि न हो ऐसा चक्र आदि Unrivalled by unapproached by other schools of philosophy such as that of Charaka etc " अप्पाडिचक्कस्स जज्जो होइ सया संघचक्कस्स " नंदी०

अप्पाडिन्न त्रि० ( अप्रतिज्ञ ) जुओ ' अप्पाडि-रण ' शब्द देखो ' अप्पाडिरण ' शब्द Vide ' अप्पाडिरण ' सूय० १, १५, २०;

अप्पाडिपूअय त्रि० ( अप्रतिपूजक ) गुरुनी पूजा-सेवा न करनार गुरु की पूजा-सेवा न करने वाला Not worshipping a preceptor " अप्पाडिपूयए थद्धे, पावस-मणेत्ति बुच्चइ " उत्त० १७, ५; सम० ३०,

अप्पाडिवद्ध त्रि० ( अप्रतिबद्ध ) जुओ ' अप्पाडिवद्ध ' शब्द देखो ' अप्पाडिवद्ध ' शब्द Vide " अप्पाडिवद्ध " प्रव० २४; सत्या० ६१,

अप्पाडिवद्धया स्त्री० ( अप्रतिबद्धता ) नि सगपणुं, अप्रतिबंध विहार नि सगपना; अप्रतिबंध विहार State of being unaccompanied by any body, unobstructed movement from one place to another " अप्पाडि-वद्धयाए णं भंते ! जीवे कि जणयइ ? " उत्त० २६, २, भग० १, ६; १७, ३;

**अप्पडिम** त्रि० ( अप्रतिम ) सीमा-७६  
वगरनुं. असिम, सीमा रहित Unlimited,  
limitless सु० च० २, ७०;

**अप्पडिरुव** त्रि० ( अप्रतिरूप ) नेनी अरापर  
पीअनुं रूप नथी ते. जिसके समान दूसरे का  
रूप नहीं है वह. Of matchless appear-  
ance or beauty. “ अप्पडिरुवे  
अहाउयं ” उक्त० ३, १६;

**अप्पडिलद्ध** त्रि० ( अप्रतिलब्ध ) लुओ  
‘ अपडिलद्ध ’ श०६. देखो ‘ अपडिलद्ध ’  
शब्द. Vide “ अपडिलद्ध ” नाया० १;

**अप्पडिलेस्स** त्रि० ( अप्रतिलेश्य ) नेनी भने-  
वृत्ति अतुल अगवाणी डेय ते जिसकी  
मनोवृत्ति अतुलबल वाली हो वह Of very  
strong desires or emotions “अ-  
प्पडिलेस्सासु सामरणारया दंता इयमेव  
गिगंथं पावयणं पुरओ काड विहरंति” ओव०

**अप्पडिलेहण** न० ( अप्रतिलेखन ) लुओ  
‘ अपडिलेहण ’ श०६ देखो ‘ अपडिलेहण ’  
शब्द. Vide “ अपडिलेहण ” आव० ४, ६,

**अप्पडिलेहिय** त्रि० ( अप्रतिलेखित ) लुओ  
‘ अपडिलेहिय ’ श०६ देखो ‘ अपडिलेहिय ’  
शब्द. Vide ‘ अपडिलेहिय. ’ प्रव० २६६,  
उवा० १, ५५,

**अप्पडिलोमता** स्त्री० ( अप्रतिलोमता )  
लुओ ‘ अपडिलोमया ’ श०६ देखो ‘ अपडि-  
लोमया ’ शब्द Vide ‘ अपडिलोमया ’  
भग० २५, ७,

**अप्पडिवाइ** त्रि० ( अप्रतिपातिन् ) लुओ  
‘ अपडिवाइ ’ श०६ देखो ‘ अपडिवाइ ’ शब्द.  
Vide ‘ अपडिवाइ. ’ ओव० २०, नंदी० ६,  
कप्प० ५, १०६, विशेष० ८२३;

**अप्पडिविरय** त्रि० ( अप्रतिविरत ) पा०५  
अनिवृत्त थयेल पाप से अनिवृत्त, जो पाप से  
निवृत्त न हुआ हो वह Not free from

sinfulness; not refraining  
from sin सू० २, १, १६,

**अप्पडिसुणेत्ता** त्रि० ( अप्रतिश्रोतृ ) प्रत्युत्तर  
नहि आपनार प्रत्युत्तर नहीं देने वाला.  
(One) who does not respond  
to सम० ३३;

**अप्पडिसेह** पुं० ( अप्रतिषेध ) प्रतिषेध नहि ते  
अप्रतिषेध; रोक टोक का अभाव. Absence  
of prohibition; absence of  
check पंचा० ६, ३६,

**अप्पडिहय** त्रि० ( अप्रतिहत ) प्रतिघातरहित;  
अपडित प्रतिघात से रहित; अखरिडत.  
Unbroken, unimpaired नाया०  
१६, ( २ ) ध्यांय पणु रूषलना पाभेल नहि.  
जो कहीं भी स्थलित न हुआ हो वह un-  
obstructed, unimpeded सम० १;  
( २ ) डार्थ अटकारी न शके डे डार्थ तेनु उडधन  
न करी शके तेवुं कोई रोक न सके या कोई उसका  
रूषधन न कर सके ऐसा. irresistible.  
“ अप्पडिहयबले जोहे, एवं हवइ  
वहुस्सुए ” उक्त० ११, २१; उक्त०

११, १८, काप० २, १५, सम० १,  
ओव० १७, अणुजो० ४२; सु० च०  
२, १७६, नाया० १, १६, भग० ८, ६, जं०  
प० ५, ११५,—गइ त्रि० (—गति ) अप्रति-

अध विहारी अप्रतिबंध विहारी, विना रोक  
टोक के विहार करने वाला unimpeded “ अप्पडिहयगई गामे गामे  
य एगरायं गगरे गगरे पंचरायं दूइअंते य  
जिहंदिपु ” जं० प० २, ३१, परह० २, ५;

ठा० ६,—प्पच्चक्खायपावकम्म. त्रि०  
(—प्रत्याख्यातपापकर्मन्—प्रतिहतं निराकृत-  
मतीतकालकृतं निन्दादिकरणेन प्रत्याख्यातं  
च वर्जितमनागतकालविषयं पापकर्म  
—प्राख्यातिपातादि येन स तन्निषेधात्तथा )  
अतीत-अने अनागत क्षण संबंधी पाप

कर्मना जेले पश्यणालु नथी कर्ताते. भूत और भविष्य कालसम्बन्धी पापकर्मों का जिसने प्रत्याख्यान नहीं किया वह ( one ) who has not repudiated past sinful acts by censuring them and future ones by vowing to abstain from them भग० १, १, —बल त्रि० (—बल) जेनु यण डोषधी डुणाय नहि—डिबंघाय नहि ते जिस केबल का किसीके द्वारा नाश न हो अथवा उल्लघन न हो वह. of irresistible might उत्त० ११, २१,—सासण त्रि० (—शासन) जेते डुकम अण्डपणु पणाय तेवे। जिसकी आज्ञा अखंडित रीति से पाली जाय ऐसा of unchecked, irresistible authority “अप्यडिहयसासणे असे-यावई” नाया० १६,—वरणाणदंसणधर पु० (—वरज्ञानदर्शनधर) कया न अटके तेवा ज्ञान—डेवणज्ञान अने दर्शन—डेवण दर्शनना धरनार कहीं भी न रुके ऐसा ज्ञान-केवलज्ञान और केवलदर्शन धारण करने वाला one possessed of irresistible or invincible perfect knowledge and right faith आव० ६, ११, भग० १, १,

अप्यण न० (अर्पण) अर्पणु करनु ते, भेट आपनी ते भेट करना, अर्पण करना Act of giving, act of presenting विशेष० १८४३,

अप्यण पु० (आत्मन्) आत्मा, पोते आत्मा, स्वय खुदवखुद Soul, self, oneself “अप्यणहा परहा वा, उभयस्सतरेण वा” उत्त० १, २५,—अट्ट. पु० (—अर्थ) स्वार्थ, पोतानुं प्रयेणन—मतलण स्वार्थ, खुद का मतलब, अपना प्रयोजन self interest, one's own interest दस० ६, १२, ६, २, १३, उत्त० १, २५,

अप्यणिच्चिय त्रि० (आत्मीय) आत्मसं-अधी, पोतानु अपना, आत्मसम्बन्धी One's own, relating to oneself. “यो अप्यणिच्चियाओ देवीओ अभिजुजिय” भग० २, ५;

अप्यणिज्जिय. त्रि० (आत्मीय) पोतानुं; आपणु, आत्मानुं अपना, निजका. Relating to one's self or soul; one's own दसा० १०, ६, ७;

अप्यतर त्रि० (अल्पतर) अतिशय अल्प; धणु थोडुं बहुत थोडा Very little. “अप्यतराणु से पावे कम्मे कज्जइ” भग० ८, ६, भग० १, १, २, आव० ३८; क० गं० ५, २२, पचा० ५, १६,—बंध. पुं० (—बन्ध) अत्यंत थोडा कर्मबंध; ज्यारे आठ प्रकृतिनो यधक थरने सातनो यंधक थाय त्यारे प्रथम अल्पतर—धणु थोडा यंध होय बहुत थोडा कर्मबंध जब कि आठ प्रकृतियों का बंधक होकर सात प्रकृतियों का बंधक होता है तब पहिले जो बहुत थोडा बंध हो वह. very little Karmic bondage क० ग० ५, २२;

अप्यतिट्ठाण न० (अप्रतिष्ठान) ज्युओ। “अप्यट्ठाण” श०६ देखो ‘अप्यट्ठाण’ शब्द Vide “अप्यट्ठाण” जीवा० ३;

अप्यत्त त्रि० (अप्राप्त) न प्राप्त थयेल जो प्राप्त न हुआ हो वह Unobtained पि० नि० भा० २६, प्रव० ८७१,—कारि त्रि० (—कारिन्) ज्युओ ‘अपत्तकारि’ श०६ देखो ‘अपत्तकारि’ शब्द vide ‘अपत्तकारि’ विशेष० ३४०,—जाल पु० (—ज्वाला) थूला उपर रहेल जे वासणुने अग्निनी जण न स्पर्शती होय ते चूहे पर रखे हुए जिस वर्तन को अग्नि की ज्वाला न लगती हो वह. untouched by flames (e g a vessel on an oven) पि० नि० २६६;

अप्यत्तिय. पुं० ( अप्रत्यय ) अविश्वास. अवि-  
श्वास. Distrust सूय० २, २, ६५; ( २ )  
दुष्ट ध्यान. दुष्ट ध्यान evil contempla-  
tion. सूय० २, २, ६५,

अप्यत्तिय. न० ( अप्रीतिक ) अप्रीति; द्वेष;  
अप्रेम. अप्रीति, द्वेष, प्रेम का अभाव.  
Hatred; absence or want of  
love. “अप्यत्तियं जेण सिया, आसु कुप्पि-  
ज्ज वा परो” दस० ८, ४८, “अप्यत्तियं सिया  
हुज्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा ” दस० ५, ९,  
१२; “ महया अप्यत्तिएयं मयो माणासिएयं  
नुक्खेयं अभिभूए समाणे ” भग० १३, ६,  
सूय० १, १, २, १२; भग० ७, १,

अप्यत्थिय त्रि० ( अप्रार्थित ) लुप्तो “अप-  
त्थिय ” श०६ देखो ‘अपत्थिय’ शब्द.

Vide ‘अपत्थिय’ नाया० ५, भग० ३, २,

अप्यत्थियपत्थअ त्रि० ( अप्रार्थितप्रार्थक )  
नेने कोर्छि न धच्छे ते अप्रार्थित-मरण, तेने  
धच्छनार, मेतनेो अलिदापी. जिसे कोई न  
चाहे वह अप्रार्थित-मरण, उस मरण को चाह-  
ने वाला. ( One ) desiring what  
nobody desires viz death “कस्सणं  
एस अप्यत्थियपत्थए दुरतपंतलवखणे ”  
भग० ३, २; जं० प० ३;

अप्यत्थुय त्रि० ( अप्रस्तुत ) प्रस्तुत नहि,  
असंबन्ध असंबद्ध Irrelevant, void  
of the mark सु० च० ४, ६६,

अप्यदुस्समाण व० कृ० त्रि० ( अप्रद्विष्यत् )  
द्वेष न करता द्वेष न करता हुआ Not  
hating. अंत० ४.

अप्यप्प त्रि० ( अप्राप्य ) न भणी शडे अेपु;  
प्राप्त न थर्छ शडे अेपु जो न मिल सके वह.  
Unobtainable विशेष० २६८०,

अप्यवहुअ. न० ( अल्पवहुक-त्व ) लुप्तो  
‘अप्यवहुत्त’ श०६ देखो ‘अप्यवहुत्त’ शब्द  
Vide ‘अप्यवहुत्त’ प्रव० ६१,

अप्यवहुता. स्त्री० ( अल्पवहुता ) लुप्तो  
‘अप्यवहुत्त’ श०६ देखो ‘अप्यवहुत्त’ शब्द.  
Vide “अप्यवहुत्त.” क० प० ३, २६;

अप्यवहुत्त न० ( अल्पवहुत्व ) अत्यधिकता-  
पणुं, सरभाभणुि करतां कोणुि केटलुं वधु-  
ओणुं छे ते अतावपुं ते. कमती बढ़ती,  
मुकाबले में कौन ज्यादा कम है सो बताना.  
Excess or defect in point of  
comparison क० गं० ४, १, ३,

अप्यभु त्रि० (अप्रभु) प्रभु-भालिक नहि ते माल-  
कियत से रहित; जो स्वामी न हो वह One  
who is not a master भग० २, ५;

अप्यमज्जण न० (अप्रमार्जन) लुप्तो “अपम-  
ज्जण’ श०६ देखो ‘अपमज्जण’ शब्द.  
Vide ‘अपमज्जण.’ सम० १७;

अप्यमज्जणा स्त्री० ( अप्रमार्जना ) प्रमार्जना  
नहि ते प्रमार्जना का अभाव Absence of  
cleansing or blushing. आव० ४, ६,

अप्यमज्जिय. त्रि० ( अप्रमार्जित ) लुप्तो  
‘अपमज्जिय’ श०६ देखो ‘अपमज्जिय’  
शब्द. Vide ‘अपमज्जिय.’ उवा० १,  
५५, उत्त० १७, ७,

अप्यमत्त त्रि० ( अप्रमत्त ) लुप्तो ‘अपमत्त’  
श०६ देखो ‘अपमत्त’ शब्द Vide  
‘अपमत्त’ “अहो य राओ य अप्यमत्तेण  
हुंति’ परह० २, ५, ‘अप्यमत्तो जए शिच्चं’  
दस० ८, १६; उत्त० ४, ६; नाया० १;  
भग० ६, ३३, ओव० १७, सु० च० २,  
६५; दसा० ४, १०५, पंचा० ४, ४६; प्रव०  
८४२, क० गं० २, ८, क० प० ४, १६; ६,  
२, आया० १, १, ४, ३३,—लंजय पुं०  
( -संयत ) सर्वथा प्रमादरहित साधु;  
सातमे गुणहाले वर्तते लुप्त. सर्वथा  
प्रमाद रहित साधु; सातवें गुणस्थानवर्ती  
जीव. an ever vigilant ascetic



free from errors due to negligence; a soul in the seventh Gunasthāna सम० १४;

**अप्पमत्तया.** स्त्री० ( अप्रमत्तता ) प्रमादो अभाव, अप्रमत्तपणुं प्रमाद का अभाव, अप्रमत्तपणा Absence of negligence or errors due to it सम० ५, अप्पमाअ-य पुं० ( अप्रमाद ) प्रमादो अभाव, प्रमाद का अभाव. Absence of carelessness or errors due to it परह० २, १;

**अप्पमाद पुं०** ( अप्रमाद ) प्रमादो अभाव, प्रमादो त्याग प्रमाद का अभाव, प्रमाद का त्याग Absence of negligence or errors due to it सम० ३२, उक्त० १३, २६,

**अप्पमेय त्रि०** ( अप्रमेय ) प्रमाणग्राह्य नहि, जेतो भाप न थर्ष शके ते जो प्रमाण में न आ सके वह Immeasurable “अयंतमप्पमेय-भविद्यधम्मचाउरंतचक्कवट्टी चमोत्थु ते अरि-हतासिकट्टु” परह० १, ३,

**अप्पयत्थो अ०** ( आत्मत्वस् ) आत्मान्ती अपेक्षाये, पोतान्ती अपेक्षाये आत्मा की अपेक्षा से, अपनी-निज की अपेक्षा से Regarding one's self, regarding the soul विशेष० ६१६,

**अप्पयर त्रि०** ( अल्पतर ) लुओ ‘अप्पतर’ शब्द देखो ‘अप्पतर’ शब्द. Vide ‘अप्पतर.’ दसा० ६, १, क० प० ७, ५१; क० गं० ५, ८६;

**अप्परिसाडिय न०** ( अपरिशाटित ) परिशाट-भोज्यपदार्थतु नीये भरवु न थाय ते, अथवा परिशाट-यावता यावता ‘अययय’ ओवे अवाज न करवे ते भोज्यपदार्थ का नीचे न गिरना, अथवा चवाने में ‘बच बच’ आवाज

का न होना Not dropping down food while eating; not making a chuckling noise while chewing.

“आलोए भायये साहू, जयं अप्परिसाडियं” दस० ५, १, ६६, उक्त० १, ३५,

**अप्पलीण त्रि०** ( अप्रलीन ) असंयुद्ध, संगरहित; अनासक्त संबध रहित, आसक्ति रहित Unattached. free from attachment “अणुक्कसे अप्पलीणे” सूय० १, १, ४, २,

**अप्पलीयमाण त्रि०** ( अप्रलीयमान ) काम भोग, सपत्ति, स्वर्ण आदिमा लीन-आसक्त थयेल नहि, स्नेहमां अनासक्त कामभोग, सपत्ति, स्वर्ण आदि में जो आसक्त न हुआ हो वह, स्नेह में अनासक्त Unattached to wealth, pleasures, relatives etc आया० १, ६, २, १८३,

**अप्पलेचडा स्त्री०** ( अल्पलेपकृत्त ) जेथी वासणु न भरवाय तेवा यणु, पटाणु वगेरेनी शिक्षा लेवी ते, अपेणुनो अेक प्रकार एषणा का एक प्रकार, जिससे बरतन न लिपे ऐसा चना आदि का आहार लेना. Begging only that food which does not soil or bespatter the vessel in which it is placed, e g grams, peas etc, a mode of Esanā. प्रव० ७४८,

**अप्पवत्त त्रि०** ( अप्रवृत्त ) प्रवृत्त न थयेल. जो प्रवृत्त नहीं हुआ हो वह (One) who has not engaged himself in or set himself to क० प० ५, ७३,

**अप्पवत्तण न०** ( अप्रवृत्त ) प्रवृत्तिने अभाव प्रवृत्ति का अभाव Absence of activity पंचा० ४, ४५,

**अप्पचित्त त्रि०** ( अप्रवृत्त ) निवृत्ति पायेल; प्रवृत्त न थयेल निवृत्ति पाया हुआ, जो प्रवृत्त

न हुआ हो वह. Not engaged in activity; retired पचा० १४, १४, अप्पवियार त्रि० ( अप्रविचार ) मैथुन-विषय-सेवननी प्रवृत्ति विनाना. विषयसेवन की प्रवृत्ति विना का Not engaging in sexual intercourse प्रव० १४५४; अप्पसंत. त्रि० ( अप्रशान्त ) शांत थयेद नहि अशान्त, जो शान्त न हुआ हो वह. Not calmed पंचा० २, २;—चित्त त्रि० (—चित्त ) जेनुं यित शांत नथी थयुं ते जिसका चित्त शान्त नहीं हुआ वह with a mind not calm पंचा० २, २; अप्पसत्थ त्रि० ( अप्रशस्त ) भराय, अशो-भन; प्रशंसना योग्य नहि खराव; अशोभनीय, बुरा, मनोहरता रहित, प्रशंसा न करने योग्य. Evil; not praise-worthy उत्त० २६, २८, ३४, १६, भग० ६, ३१, २४, १, प्रव० ५३, ६४८,—मणविणय पुं० (—मनोविनय ) दुष्ट मननो निरोध करवे। ते, मनने दुष्ट चिंतयनाथी अटडावयुं ते मन को दुष्ट चिंतवन-विचार आदि से पराङ्मुख करना restraining the mind from wicked thoughts भग० २५, ७;—वइविणय पुं० (—वाग्विनय ) दूषित वाणीने उच्यार न करवे। ते; दुष्ट वचनो न भोजया ते. दूषित वाणी का उच्चार न करना, खराव वचन न बोलना abstaining from wicked speech भग० २५, ७; अप्पसन्न त्रि० ( अप्रसन्न ) अप्रसन्न, प्रसाद-रहित, भुशी नहि अप्रसन्न, प्रसन्नता रहित, ना-खुश. Not pleased, displeased “आयरियपाया पुण अप्पसन्ना” दस० ६, १, ५; अप्पहाण त्रि० ( अप्रधान ) प्रधान-श्रेष्ठ नहि ते. जो प्रधान न हो वह Not prominent or predominant. पचा० ३, ७, ६, १२;

अप्पहिट्ट त्रि० ( अप्रहृष्ट ) ‘संपदि यस्य न हर्षो’ संपत्ति मध्ये पुलाय न जनार; शुभ वस्तु भगवाधी राउन थनार; सुख के दुःख-मां समभाव राअनार संपत्ति मिलने पर न फूलने वाला; शुभ वस्तु मिलने से प्रसन्न न होने वाला, सुख दुःख म समभाव रखने वाला Not transported with joy in prosperity, balanced in mind in weal and woe “अप्पहिट्टे अणाउले” दस० ५, १, १३,

अप्पा पु० (आत्मन्-अतति सातत्येन गच्छति तौस्तान्पर्यायानित्यात्मा ) आत्मा; श्रव; पोते आत्मा, जीव; स्वयं Soul; self; oneself. दस० १, २, ५, १, ५, ८०, ६, ६८, ८, ७, नाया० १, ५; ६, १२, १३; १४, १६; भग० १, १; ६, ६, १२, २; २५, ७; राय० २७; सू० प० १, ओव० १२, पि० नि० ६६, सु० च० ३, ४७,

अप्पाउड पुं० ( अप्रावृत ) वस्त्र न पहरेवानो अलिग्रह धरनार, वस्त्र परतवे अलिग्रह-विशेषधारी मुनि वस्त्र न पहिरने का नियम लेने वाला, वस्त्रसम्बन्धी अभिग्रहविशेष धारण करने वाला मुनि An ascetic who has vowed nudity सूय० २, २, ३८, अप्पाउरणा पु० ( अप्रावरण ) वस्त्र न पहरे-वानो अलिग्रह धरनार; वस्त्र पिना रहेवुं जेनी प्रतिज्ञा लेनार मुनि वस्त्र न पहिरने का अभिग्रह धारण करने वाला, वस्त्र रहित रहने की प्रतिज्ञा लेने वाला मुनि An ascetic with a vow of nudity. परह० २, १, प्रव० २०६, पंचा० ५, १०;

अप्पाण पुं० ( आत्मन् ) आत्मा; श्रव, पंडे; पोते. आत्मा; जीव, स्वयं Soul; self, oneself. “अप्पाण भावेमाणे विहरइ” भग० १, १, “अप्पाणं विसंजोएइ” भग०

६, ३१, “ अप्पाणं मरणाद् ” भग०  
१५, १; “ अप्पाणं मजावेद् ” नाया० १४,  
“ अप्पाणं ” तृ० ए० नाया० १६,—र-  
क्खि त्रि० (—रत्तिन्—आत्मान रक्षति पापेभ्यः  
कुगतिगमनाद्वा स आत्सरक्षी ) पापशी डे  
दुर्गतिशी आत्माने अयावनार पाप से या दुर्गति  
से आत्मा को बचाने वाला saving the  
soul from sin or perdition  
“अप्पाणरक्खी व चरेप्पमत्तो” उक्त० ४, १०,  
अप्पाणग त्रि० ( अपानक ) शुभो ‘अपाणय’  
श०६ देखो ‘अपाणय’ शब्द Vide  
‘अपाणय’ नाया० ८, १६;

अप्पावहुअ-य न० ( अल्पवहुत्व—अल्पवच  
बहु चाल्पबहु तद्भावोऽल्पवहुत्वस् दीर्घत्वा-  
संयुक्तत्वे चार्षत्वात् ) भे वरतुनी सरभाम-  
णीमां परस्पर तारतम्य—ओजावतापणु  
कडेवुं ते, मुझापलाभा न्यूनताधिकता—थोडा  
अजापणु दर्शावु ते दो वस्तुओं की सह-  
शता में परस्पर तारतम्यतापूर्वक न्यूनाधिकता  
बताना Pointing out proportions  
of two things by comparison.  
“ अउव्विहे अप्पावहुए प० तं० पगइ  
अप्पावहुए ठिइ० अणुभाव० पएसअप्पावहुए’  
ठा० ४, २, पन्न० ३, विशेष० ४०६,

अप्पावहुग न० ( अल्पवहुत्व ) शुभो  
‘अपावहुअ-य’ श०६ देखो ‘अप्पावहुअ-य’  
शब्द Vide ‘अप्पावहुअ-य’ भग० २०, १०,  
अप्पावहुत्त न० ( अल्पवहुत्व ) शुभो  
‘अप्पावहुअ-य’ श०६ देखो ‘अप्पावहुअ-य’  
शब्द Vide ‘अप्पावहुअ-य’ अणुजो० ८०,  
अप्पावय त्रि० ( अप्रावृत्त ) ढाकेल नहि, अंध  
न करेक बिना ढँका हुआ, बंद न किया  
हुआ Not covered, सूय०  
२, ६, ३,—दुवार पुं० (—द्वार—अप्रावृत्त-  
मस्थगितं द्वारं गृहमुखं यस्य स तथा ) ६६  
अभङ्कितवाणो श्रावक, डे जेणे धरनां ६१२

पुढला मुझ्या छे ओटला भाटे डे कोध पणु  
दुभी, लायार रूहाय लेवाने आवे अथवा  
कोध पणु वाही वाद करवाने आवे तेने  
उत्तर आपवाने सामर्थ्य छे दृढ सम्यक्त्व  
वाला श्रावक, जिसने अपने घर के द्वार इसलिये  
खुले रखे हैं कि, कोई दु खी सहायता लेने को  
आवे तो उसे सहायता देने की सामर्थ्य है यह  
प्रकट हो इसी तरह कोई वादी विवाद करने  
आवे तो उसे भी विदित हो कि, उत्तर देने की  
सामर्थ्य है an enlightened Śrā-  
vaka with his doors wide open  
for the helpless or for religious  
controversialists सूय० २, ६, ३,

अप्पाविउं सं० कृ० अ० ( अर्पयित्वा ) अर्पणु  
करीने अर्पण करके Having given or  
presented सु० च० ४, १२६,

\*√अप्पाह धा० I ( सम्+दिष् ) सभायार  
कडेवा, संदेशो पडोयाडवे, वात कडेवी  
समाचार कहना, संदेश भेजना, वात कहना.  
To convey a message.

अप्पाहति वव० १, ४,

अप्पाहे ओघ० नि० २४२,

अप्पाहिकरण सं० कृ० पिं० नि० ५७६,

अप्पाहट्टु सं० कृ० अ० ( आत्मनि+आहरण्य )  
आत्माभा—मनमां व्यवस्थापन करीने, मान-  
सिद्ध निश्चय करीने आत्मा में—मन में  
निश्चय करके Having decided in  
mind सूय० २, १, १२;

\*अप्पाहरण पुं० ( सन्देश ) संदेशो, सभायार.  
संदेश, समाचार. Message, news.  
पिं० नि० ४३०,

अप्पाहरण न० ( अप्रधान्य ) अप्रधानपणु;  
मुज्यपणु नहि अप्रधानता; मुख्यता नहीं.  
Subordinate position; sub-  
sidiary position. पंचा० ६, १३;

\*अप्पाहित. त्रि० (सन्विष्ट) संदेशो भोक्तेः।  
संदेश दिया हुआ. Communicated  
through message पि० नि० ४३०;  
अर्पित. व० कृ० त्रि० (अर्पयत्) देतो; अर्पयु  
करतो. देता हुआ; अर्पण करता हुआ. Giv-  
ing; presenting. सु० च० १, १०३;  
अप्पिय. त्रि० (अर्पित) अर्पयु करेत्; ता-  
त्पर्यामां सोपेत्; इवात्वे करेत् अर्पण किया  
हुआ; कब्जे में दिया हुआ; सुपुर्द किया हुआ.  
Given; consigned; presented.  
“ अप्पिया देवकामायं ” उक्त० ३, १५;  
अणुजो० २७; ( २ ) विशेषते मुप्यता  
आपेत्; विशिष्ट करेत्. विशेष को मुख्यता दी  
हुई. with the particular made  
prominent. “ अप्पियमयं विसोसो ’  
सामान्यणप्पियनयस्स ” विशे० ३५८८;  
ठा० १०; जं० प० २, ३६;—व्यवहार. पुं०  
(—व्यवहार—अर्पित इति व्यवहारो यस्मिन् स  
तथा ) ‘आज्ञाता आनुं ज्ञान’ इत्यादिपयन-  
रूपे वक्तव्ये स्थापित करेत् व्यवहार. यह  
‘ज्ञाता और इसका ज्ञान’ इत्यादिरूप से वक्ता द्वारा  
स्थापित व्यवहार particular arised  
speech; e. g. this is the knower,  
he has a knowledge of this  
particular thing etc उक्त० टी० १;  
अप्पिय. त्रि० (अप्रिय) अनिष्ट; अरुचिकर;  
नेवाथी प्रेमने अदले द्वेष उपने तेवुं; ना-  
पसंद. अप्रिय; अरुचिकर, जिसे देखने से प्रेम  
के बदल द्वेष उत्पन्न हो वह Evil; unplea-  
sant, exciting disgust “अग्निट्टा अ-  
कंता अप्पिया अमखुत्ता अमणा एगट्टा” विवा०  
१, १, “ कोहं असच्चं कुन्विजा, धारिजा  
पियमप्पियं ” उक्त० १, १५, जीवा० १; ठा०  
८; नाया० १, ८; भग० १, ५; ७; ३, २;  
३, ३; ६, ३३; पञ्च० २८;—कारिणी. स्त्री०  
(—कारिणी) अनिष्ट समाचार—डोढना मृत्युना

समाचारवाणी भाषा; सामाने अप्रिय लागे  
तेवी भोली. अनिष्ट समाचार—मृत्यु आदि के  
समाचार वाली भाषा; सामने वाले को जो  
अप्रिय लगे ऐसी बोली. unwelcome  
language; speech conveying  
unwelcome news. “.....अप्पिय-  
कारिणि च, भासं न भासेज्ज सया स पुजो ”  
दस० ६, ३, ६;—वह त्रि० (—वध) वध-  
भार या भरणे नेने अप्रिय छे ते जिसे वध  
या मरण अप्रिय है वह one who fears  
death. “ सवे पाया पियाउया सुहसाया  
दुक्खपडिकूला अप्पियवहा ” आया० १, २,  
३, ८०;—स्सर. त्रि० (—स्वर—अप्रिय स्वरों  
येवां ते तथा ) नेने आवाज दरेकने अप्रिय  
लागे ते जिसका स्वर प्रत्येक को अप्रिय लगे  
वह. of harsh or jarring voice भग०  
१, ७, ठा० ८;—संवास पुं० (—संवास-  
अप्रियेषु संवासो निवास. ) दुश्मनोंमां  
वसतु ते शत्रुओं में रहना. residence  
among enemies. सूय० २, २, ८२,  
अप्पियता. स्त्री० (अप्रियता) अप्रियपणुं.  
अप्रियता. Unpleasantness, dislike.  
भग० ६, ३;

अप्पियत्त. न० (अप्रियत्व) अप्रीति, स्नेहने  
अभाव अप्रीति, स्नेह का अभाव. Dislike;  
absence of affection. पि० नि०  
३६७;

अप्पियाणप्पिय. न० (अर्पितानर्पित—अर्पितं  
विशेषितं अनर्पितं सामान्य, अर्पितं च तदन-  
र्पितं चेत्यर्पितानर्पितं) द्रव्य सामान्य अने  
विशेष उलयरूप छे अेभ प्रतिपादन करवुं ते;  
द्रव्यानुयोगेने अेक प्रकार. ‘द्रव्य सामान्य और  
विशेष उभयरूप है’ इस प्रकार प्रतिपादन  
करना, द्रव्यानुयोग का एक भेद. Declaring  
substance (Dravya) to be two-

fold viz. general and particular, a variety or an aspect of Dravyā-nuyoga. ठा० १०;

अप्रीहकारय. त्रि० (अप्रीतिकारक) अप्रीति करनेवाले, प्रेमरहित अप्रीति करने वाला, प्रेमरहित Exciting dislike or displeasure, devoid of affection. भग० ५, ६,

अप्रीकय त्रि० (आत्मीकृत-आत्मना गाढत-रमागूहितं तनुलन्नतोयवदात्मप्रदेशैर्मिश्रीभू-तम् ) आत्मप्रदेशसाथे मिश्र थयेल-ओकता पामेल आत्मप्रदेशों के साथ मिला हुआ. Struck to the soul, made a part of the soul 'पुट्टं रेणुं व तणुम्मि षडमप्रीकयं' विशेष० ३३७,

अप्येगइय-अ. त्रि० (\*अप्येकक) केरि ओक, गभे ते ओक; केटला ओक कोई एक, कोई भी एक Some, any, some one नाया० १, ५, ८; ११, १३, १४, भग० १५, १, जं० प० १, ११, ५, ११५,

\*अप्योक्त त्रि० (अयोक्त) पोख विनानुं, नछर ठोस. Without hollows, solid प्रव० ६८१;

अप्योलंभ. पुं० (आप्तोपालम्भ-आसेन गुरुणा दत्त उपालम्भ आप्तोपालम्भ ) अविधिमे आलता शिष्यने ठेकाए लाववाने गुरुअे आ-पेल उलंभो-दृष्टांत, युक्ति अने उपकासाथे शिष्याभए अविधिपूर्वक चलने वाले शिष्य को ठिकाने लाने के लिये गुरु ने दिया हुआ उपालभ-दृष्टान्त, युक्ति और उपालंभ के साथ शिक्षा. Admonition administered by a Guru to a disciple. 'अप्यो-लंभनिमित्तं पढमस्स षायज्जकयणस्स अयमद्वे पणत्तेत्तिवेमि' नाया० १,

✓अप्फाल धा० II (आ+स्फाल्) पीठ थापटी ननावरने सनन-सावधान करवुं,

थापोटा भारवा पीठ पर थपकी मारकर पशु को सावधान करना To pat e. g. an animal on the back.

अप्फालेइ दसा० १०, १, ओव० ३०;

अप्फालसु आ० म० ए० सु० च० ३, ५७,

अप्फालिस्सइ सु० च० ७, १६६,

अप्फालिज्जत रि० व० कृ० 'अप्फालिज्जं-तीरां भभायां होरंभाय' राय० ८८;

अप्फालण न० (आस्फालन) हाथेकरेरी था-पोटा भारवा, थापडवुं-उतेनित करवुं ते हाथ से थपकी मारना, उत्तेजन देना Patt- ing with the hand; encourag- ing by patting ओव० (२) लंभा, होरंभ वगेरे वानिंनु वगाडवु भंभा, होरंभ वगेरह बाजों का बजाना playing upon a musical instrument. राय०

अप्फुडिअ-य त्रि० (अस्फुटित) पुटेल नडि; अपंड, अकंध न फूटा हुआ, सावित Unbroken, entire नाया० ७, ओव० १०, (३) सर्व विराधनानो त्याग करवाथी अतियाररहित करेल, अपंड रापेल सब प्रकार की विराधना का त्याग करने से निरति-चार-निर्दोष किया हुआ preserved in tact 'अखंडप्फुडिआ कायन्वा, तं सुयेह जहा तहा' दस० ६, ६,—दंत त्रि० (-दन्त) नर्नरित के वेभावाणां दातवाणे नडि; मन्भूत दांतवाणे मज्जवूत दांतों वाला, जिसके दांत जर्जरित-सडे गले या छिद्र वाले न हों वह having strong teeth, having teeth unimpaired ज० प० ओव०

\*अप्फुरण त्रि० (आक्रान्त-हेनाप्फुरणादमं इति सूत्रेणाक्रान्तस्याप्फुरणादेशः) व्याप्त; आकृत व्याप्त; आक्रान्त Pervaded by, overpowered by अणुजो० १४३ जं० प० राय०

अफोआ-या. स्त्री० ( अस्फोता ) ये नामनी  
येऽ वेद-लता, वनस्पतिविशेष इस नामकी  
एक वनस्पति, एक जाति की लता Name of  
a creeper; a variety of vegeta-  
tion. पत्र० १, जीवा० ३, ४; जं० ५०

✓ अफोड घा० II. ( आ + स्फुट्-स्फाल् )  
थापडुं, थापेटा मारवा; थपेटा मारवा  
थपकी देना, थपड़ी मारना. To pat; to  
stroke gently with the hand.  
अफोडेह-ति भग० ३, २; अंत० ५, १;  
अफोडेति राय० १८२, जीवा० ३, ४, जं०  
५० ५, १२१,

अफोडेहता सं० कृ० भग० ३, २;

अफोडंत. व० कृ० नाया० ८; उवा० २, ६५,

अफोडिअ. न० ( आस्फोटित ) हाथना थापे-  
टा-थपेटा हाथ की थपकी Patting जं०  
५० ७, १६६, ( २ ) पछाडुं पछाडना  
causing to dash against; fling-  
ing against कप्प० ३, ३५;

अफोव पु० ( \*अफोव ) वृक्ष, गुच्छ, गुहम, लता  
वगेरेथी व्याप्त प्रदेश, गीय आडीवाणो प्रदेश  
वृक्ष, गुच्छ, लता आदि से व्याप्त प्रदेश, झाड़ी  
से भरा हुआ प्रदेश. A region covered  
with thickets of trees, a woody

region उक्त० १८, ५;—मंडव. पु०  
(-मण्डप ) नागवेल, द्राप आदि धड़ लता-  
ओथी विटायेल मंडप-मांडवे। नागवेल, दाख  
आदि की सघन लताओं से घिरा हुआ मंडप  
a bower densely covered with  
creepers “ अफोवमंडवमि, भायइ  
भविद्यासवे ” उक्त० १८, ५, राय० ३७७,

अफल त्रि० ( अफल ) अक्ष, क्षत्र पगरतु;  
निष्फल. फल रहित, निष्फल Fruitless;  
unsuccessful दसा० ६, ४;

अफास. त्रि० ( अस्पर्श-न विद्यते स्पर्शोऽष्ट-  
विधो यत्र तत्तथा ) स्पर्शरहित; स्पर्श

विनातु स्पर्श रहित Untouched;  
without a touch भग० २, ५, १०;  
११, १,

अफासाइज्जमाण व० कृ० त्रि० ( अस्पृश्य-  
मान ) स्पर्श न करतो स्पर्श न कराता हुआ  
Being untouched भग० १, १;

अफासुय-अ त्रि० ( अग्रासुक-न प्रगता अस-  
वोऽमुमन्तो यस्मात्तदग्रासुकम् ) सञ्च, स-  
ञ्चित, ग्रासुक-अञ्चित नहि सजीव,  
सञ्चित, साधु के न लेने योग्य Con-  
taining living beings, unworthy  
of being received by a Sādhu.

आया० २, १, १, १, दस० ८, २३, भग०

५, ६, ८, ६, नाया० ५,—पडिसेवि त्रि०

(-प्रतिसेविन्-अग्रासुकं सञ्चित प्रतिसेवितुं  
शीलमस्येति तथा ) सञ्चित वस्तुना भोग-  
वनार सञ्चित वस्तु का उपभोग करने वाला  
using or enjoying things con-  
taining sentient beings अफालुय-  
पडिसेवी य, गामं भुज्जो य सीलवादी य'  
सूय० नि० १, ७, ८६,

अफुडिय त्रि० ( अस्फुटित ) सर्व विराधना-  
रहित सर्व प्रकार की विराधना रहित Not  
injuring in any way “ अखड-  
फुडिया कायव्वा तं सुणेह जहातहा ” दस०  
६, ६; ओव० १०, नाया० ७;

अफुस त्रि० ( अस्पृश्य ) स्पर्श करवाने अ-  
योग्य स्पर्श करने के अयोग्य. Untouch-  
able “ अफुसं दुक्खं ” ठा० ३, २, भग०  
१, १०;

अफुसमाणगइ पु० ( \*अस्पृशति-अस्पृशन्ती  
सिद्धयन्तरालप्रदेशान् गतिर्यस्य स तथा )  
अंतरालना आकाशप्रदेशने स्पर्श्या विना  
उर्ध्वगति करनार ७व; सिद्ध भगवान्.  
अंतराल के आकाशप्रदेशों का स्पर्श किये बिना  
ऊर्ध्व गति करने वाला जीव, सिद्ध भगवान्.

A Siddha; a soul that ascends to the region of Siddhahood without touching the intervening space. “ उज्जुसेदिपड्डिवणे अफुसमाणागई उहुं एक्कसमएणं अविगाहेण उहुं गता सागारोवउत्ते सिज्जिक्कहिच्छि ” ओव० अफेराग त्रि० ( अफेनक ) क्षीणु विनातुं फेन विना का Having no froth or foam, frothless. प्रव० ८०२,  
 अवध पुं० ( अवन्ध ) कर्मना अंधेना अलाव कर्मबन्ध का अभाव Absence of Karmic bonds. क० गं० २, ५, ५, ५७,  
 —ठिइ छी० (—स्थिति) कर्मने अंध न होय ते वपतनी स्थिति कर्म का बंध न हो उस समय की स्थिति condition or state at the time when there is no Karmic bondage क० गं० ५, ५७,  
 अवंधग त्रि० ( अवन्धक ) कर्मने न आंधनार, आठ कर्म पैडी अेक, अे अथवा सर्वने न आंधनार कर्मबंध न करने वाला, आठ कर्मों में से एक, दो या सब कर्मों को न बाधने वाला Not incurring the bondage of Karma partially or wholly भग० ८, ८, ६, ११, १, २१, १, २५, ३; ६, क० गं० ४, ६२,  
 अवंधव त्रि० ( अवान्धक ) अंधुनरहित, अनाथ, निराधार बन्धुजन रहित, अनाथ, आश्रय रहित Having no friends and relatives, helpless परह० १, १, नाया० ६, पि० नि० ४४६,  
 अवंधिता-स्तु सं० कृ० अ० ( अवध्वा ) न आधीने न बाधकर Without having tied or fastened. क० प० २, १०४, १०५;  
 अवंभ. न० ( अवहान् ) अथलार्थ, मैथुन; विषय सेवन मैथुन, ब्रह्मचर्य का अभाव,

विषय सेवन Absence of chastity; sexual intercourse. ‘ अट्टारसविहे अवंभे ओरालिच्छं च दिव्वं ’ परह० १, ४; “ जंबू ! अवंभं च चउत्थं सदेव मणुयासुरस्स लोयस्स पत्थाणिज्जं पंकपणागपासजालभूयं ..... चउत्थं अहम्मदारं ” परह० १, ४, आव० ४, ७, प्रव० १००२, पंचा० १, ४६, १०, ३, परह० १, ३,—वज्जण. न० (—वर्जन) मैथुन-विषय सेवनेो त्याग करवो ते, आवकती छट्टी प्रतिमा मैथुन-विषय सेवन का त्याग करना; आवक की छठी प्रतिमा abstention from sexual enjoyment, the sixth vow of a Jaina परह० १, १,—सेवण न० (—सेवन) अथल-मैथुन सेवतुं ते, विषय सेवन करतुं ते विषय सेवन करना sexual enjoyment ‘ तहेव हिंसं अलिय, चोज्जं अवभसेवणं ’ उक्त० ३५, ३,  
 अवंभचरिय न० ( अवहचर्य ) अथलार्थनेो अलाव, मैथुन सेवन ब्रह्मचर्य का अभाव; मैथुन सेवन Absence of chastity; sexual intercourse ‘ अवंभचरियं वोरं, पमायं दुरहिद्वियं ’ दस० ६, १६,  
 अवंभयारि त्रि० ( अवहचारिन् ) अथल-यारी, अथल्यारी नहि अवहचारी, ब्रह्मचर्य से रहित Not abstaining from sexual intercourse दसा० ६, १२,  
 अवज्भूमाणी. स्त्री० ( अवध्यमाना ) न अंधाय तेवी कर्मप्रकृति, जेनेो उदय थाय पणु अंध न थाय, जेवी उे समकितमेडुनीय, मिश्रमेडुनीय वगेरे न बधने वाली कर्मप्रकृति, जिसका उदय होता है परन्तु बन्ध नहीं होता, समकित मोहनीय, मिश्रमोहनीय आदि Karmic nature i e Karma which has got no Bandha (bondage with soul) but which has got Udaya

(i e. maturity); e g. Samakita Mohaniya, Misra Mohaniya etc क० प० २, ८०;

अवज्झा स्त्री० ( अवध्या ) लुभ्ये। “ अवज्झमाणी ’ श०६ देखो ‘ अवज्झमाणी ’ शब्द.

Vide ‘ अवज्झमाणी. ’ क० प० २, ६६;

अवज्झा स्त्री० ( अत्राध्या ) गंधिधाविजयनी मुष्य राजधानी गंधिलाविजय की मुख्य राजधानी The capital city of Gandhilāvijaya. ‘ दो अवज्झाओ ’ ठा० २, ३, ( २ ) अयोध्या नगरी अयोध्या पुरी. the city of Ayodhyā जं० प०

अवद्ध. न० ( अवद्ध ) पद्यबंधरहित ग्रंथ. पद्यबंध से रहित ग्रंथ A non-metrical work. विशेष० ३३५५,

अवद्धिय. पु० ( अवद्धिक-जीवन कर्म स्पृष्टमेव ननु चद्धं वन्मत्तमेवामस्तीत्यबद्धिका. ) ‘ ७५ अने कर्मनो बंध थतो नथी पणु र्पशं थाय छे ’ अथेभ माननार अथेइ नि-हव; गोष्ठ-माहिलना अनुयायी ‘ जीव और कर्म का बंध नहीं होता किन्तु स्पर्श होता है ’ ऐसा मानने वाला एक निन्हव, गोष्ठमाहिल का अनुयायी One believing that Karma touches but does not bind the soul; a follower of Gosthā-

māhila ठा० ७, ओव० ४१, विशेष० २३००; अवल त्रि० ( अवल-नास्ति बलं येषां ते तथा ) अणरहित, दुर्बल; अशक्त; अस-मर्थ निर्वल; दुर्बल, शक्ति रहित Feeble, powerless. विवा० १, ३, उक्त० ४, ६, १०, ३३, भग० १, ३, ७, ६, नाया० १; ८; १३, १६;

अवहिम्मण. त्रि० ( अवहिर्मनस्-न विद्यते वहिर्मनो यस्यासौ तथा ) सर्वज्ञ प्रभुना उपदेश अनुसारै वर्तनार; मनने ज्ञेयां त्यां अटकावना नहि स्वज्ञ प्रभु के उपदेश के

अनुसार चलने वाला, मन को इधर उधर न भटकाने वाला. ( One ) not allowing the mind to wander outside the teachings of the omniscient, आया० १, ५, ६, १६७;

अवहिल्लेस्स. त्रि० ( अवहिल्लेश्य-नास्ति संयमाद्धिल्लेश्या मनोवृत्तिर्यस्यासौ तथा ) संयमभां मनोवृत्ति राप्पनार; निरंतर आत्म-संयमभां रभी रहेल संयम में मनोवृत्ति रखने वाला, निरन्तर-सदा आत्मसंयम में रत. ( One ) absorbed in self-restraint. आया० १, ५, ६, १६५, भग० २, १;

अवहुवाइ त्रि० ( अवहुवादिन्-न बहु वदितुं शीलमस्येति ) अहु भोयो नहि; वधारे भो-लनार नहि ज्यादह न बोलने वाला. Not prolix, not flippanant. आया० १, ६, २, १०;

अवहुवादि त्रि० ( अवहुवादिन् ) लुभ्ये। ‘ अवहुवाइ ’ श०६. देखो ‘ अवहुवाइ ’ शब्द. Vide ‘ अवहुवाइ ’ आया० १, ६, २, १०;

अवहुसंपन्न. त्रि० ( अवहुसम्पन्न-न बहुभ्यः सम्पन्न दर्शितं यत्तत्तथा ) धणा ऽणुने दर्शावेध नहि ते बहुतसों को न दिखाया हुआ Not shown to or exposed to the view of many persons. कप्प० ६, २५,

अवहुस्सुय-अ\* पु० ( अवहुश्रुत-बहुश्रुतं यस्य स बहुश्रुत, न बहुश्रुतोऽवहुश्रुतः ) जेणे अ.यारप्रकल्प नामे निशीथना अध्ययननो अभ्यास नथी क्यो अने नीचेनां सूत्रो सांलब्धा नथी ते, अहुशास्त्रवेत्ता नहि जिसने आचारप्रकल्प नामक निशीथ का अध्ययन नहीं किया और नीचे के सूत्र नहीं सुने वह, बहुत शास्त्र न जानने वाला Not profound in the study of scriptures. ‘ अविणीए अवहुस्सुए ’ उक्त० ११, २, सम० ३०, दसा० ६, २२,



अवाधा. स्त्री० (अवाधा) लुप्ते। 'अवाहा' शब्द देखो 'अवाहा' शब्द. Vide 'अवाहा' क० गं० ५, ३४, जीवा० २,

अवाह. पु० (अवाधा) अप्पाधा ङाण; कर्मते अनुदय ङाण अवाधा काल, कर्म का अनुदय काल Time preceding the ripening of Karma into fruit क० गं० ५, ३६;

अवाहा. स्त्री० (अवाधा-वाधत इति बाधा कर्मण उदय, न बाधाऽबाधा) कर्मना पन्ध अने उदय पन्धेते ङाण, कर्म पन्धया पन्धी उदयमां न आवे त्यां सुधीते पन्धत, अप्पाधा ङाण कर्म के वन्ध और उदय के बीच का समय, कर्म वन्धाने के बाद उदय में न आने तक का समय, अवाधाकाल. The interval between the incurring and the maturing of Karma. भग० ६, ३, जीवा० ३, सम० क० प० १, ७४, ३, १, ( २ ) ये प्रदेश के ये वस्तु पन्धेते व्यवधान, अन्तर, छेदु दो प्रदेशों या दो वस्तुओं के बीच का व्यवधान, अन्तर. Intervening space between two places or objects "संदरस्स णं भते। पव्वयस्स केवह्-चाए अवाहाए जोइसं चारं चरंति" जं० प० १, ६; ७, १२८, सू० प० १८, सम० ६; भग० ६, ५, विशेष० ७७२, ( ३ ) अ-नहि आधा-पीडा, आधा-पीडा न करवी ते, आक-भणुते अभाव बाधा-पीडा का न करना, आक्रमण का अभाव absence of trouble, not causing obstruction भग० ६, ३, १४, ८, ज० प०—काल पु० (—काल) कर्मपन्ध अने कर्मना उदय पन्धेते ङाण कर्मबंध और कर्मोदय के बीच का काल the time between the incurring of Karmic bondage

and the maturity of Karma. प्रव० १२६६;

अवाहूणिया स्त्री० (अवाधोनिका-अवाधया ऊनिका न्यूना अवाधोनिका) अप्पाधा-ङाणे ङाणु कर्मस्थिति; अवाधाकाल से ऊनी-न्यून कर्मस्थिति Karmic stage in a condition of the imperfection during the interval of birth and maturity of Karma. 'अवाहूणिया कम्मठिई पणत्ता' जीवा० २; भग० ६, ३,

अवितिज्ज त्रि० (अद्वितीय) लुप्ते। 'अवीय-अ' शब्द देखो 'अवीय-अ' शब्द. Vide 'अवीय-अ' पण० २, २;

अवीय-अ त्रि० (अद्वितीय) पीलुं डोठ साथे नहि, अेकलो, अेकडो, डेवण अेक दूसरा कोई भी साथ नहीं; अकेला, एकाकी One; without a second. भग० ३, २; नाया० १;

अवीय-अ. न० (अबीज) पीलरूप नहि; उत्पत्तिनु डारणु नहि, पीलरहित. बीजत्व रहित; जो बीजरूप न हो वह, उत्पत्तिकारण-रूप न हो वह Anything non-germinating, any thing without a germ or seed of growth or creation ठा० ३, १, भग० ६, ७,

अवीयत्त. म० (अबीजत्व) अप्पीलपणु; पीलपणुते अभाव बीजत्व का अभाव. State of being without seed; state of not being seed. प्रव० १०१०;

अबुइत्ता. सं० कृ० अ० (अनुक्त्वा) डला विना; न डलीने. विना कहे. Without having spoken ठा० ३, २;

अबुज्झ सं० कृ० अ० (अबुध्वा) समणया विना, न समणते विना समझे Without

having understood. सूय० १, १३, २०;

**अबुद्ध.** त्रि० ( अबुद्ध ) अशुभ; अविवेकी; तत्त्वने न ज्ञानार मूर्ख, बुद्धि रहित, अविवेकी, तत्त्व को न जानने वाला Ignorant, incapable of knowing right from wrong 'जे अबुद्धा महाभागा, वीरा समत्त-दंसिणो' सूय० १, ८, २२,—जागरिया. स्त्री० (—जागरिका—अबुद्धानामकेवलिनं छद्म-स्थानामिति यावत् जागरिकाऽबुद्धजागरिका) छद्मस्थनी जगत्ता-वित्याख्या. छद्मस्थ का विचार the thought of those who are not Kevali or omniscient. भग० १२, १;

**अबुद्धिय-अ.** त्रि० ( अबुद्धिक ) तत्त्वज्ञान-रहित; अशुभ; बुद्धिहीन. तत्त्वज्ञान रहित, बुद्धि रहित Ignorant; devoid of intelligence; not possessed of philosophical knowledge. सूय० १, १, २, ४; नाया० १७;

**अबुध.** त्रि० ( अबुध ) अज्ञान; अशुभ, मूर्ख. मूर्ख; बुद्धि रहित. Ignorant, foolish. परह० १, १, —जरा पुं० (—जन) अज्ञान भाष्यस; मूर्ख मूर्ख, देवकूप, बुद्धिहीन मनुष्य a fool, an ignorant fellow. सम० १०;

**अबुह.** त्रि० ( अबुध ) अशुभ; बुद्धिरहित बुद्धि रहित. Ignorant, devoid of intellect भग० ६, ३३;

**अबोहि** स्त्री० ( अबोधि—न बोधिर्ज्ञानमबोधिः ) समजने अभाव; अज्ञान, परा धर्मनी अप्राप्ति बुद्धि का अभाव; समझ का अभाव; सत्य धर्म की अप्राप्ति; अज्ञान. Ignorance, ignorance of true religion. 'अबोहिं परियागामि' आव० ४, ८, दस० ४, १; २०; २१; ८, २१; ६, १, ५; सूय० १, २,

३, १; २, ६, २५; २, ७, ३८,—कलुस. त्रि० (—कलुष ) मिथ्यादृष्टि, अज्ञानी मिथ्या-दृष्टि, अज्ञानी, ज्ञान रहित. ignorant; deluded in the matter of true religion 'अबोहिकलुसं कदं' दस० ४, २१;—वीज. न० (—बीज) सम्यग् मार्गना अभावतुं कारण, अज्ञानतु पीठ. सम्यग् मार्ग के अभाव का कारण; अज्ञान का बीज. the root-cause of the ignorance of the right path पंचा० ४, १२, ७, १५;

**अबोहिय-अ** त्रि० ( अबोधिक ) बोधिरहित, अज्ञानी. ज्ञान शून्य, बोध रहित. Ignorant, devoid of true knowledge. 'निच्छयत्थं न याणंति, मिलक्खुव्व अबोहिया' सूय० १, १, २, १६, २, ७, ३८; अप्पणो य अबोहीए, महामोहं पकुव्वइ' सम० ३०, दस० ६, ५७; ( ३ ) धर्मप्राप्तिमां लंगाणु पाउनार धर्मप्राप्ति मे बाधा डालने वाला causing hinderance in spiritual progress दसा० ६, ४; ६, २५;

**अबोहिया** स्त्री० ( अबोधिता—अबोधि-अबोध ) अभोधि; स-मार्गनी अप्राप्ति. सन्मार्ग की अप्राप्ति Ignorance, non-attainment of the right path. आव० ४, ८,

✓ **अव्ववी** ब्रू धा० प्र० ए० ( अब्रवीत् ) बोधतुं. बोलता हुआ He said.

अव्ववी. भू० सूय० १, ५, १, २;

**अव्वम** न० ( अव्वम-अपो विभर्तीति अव्वम ) वादल; मेघ. बादल, मेघ. A cloud जीवा० ३, ३; ठा० ३, ३; अणुजो० १२७; ओव० १०; विशेष० १६२६; भग० ३, ७, जं० प० ५, ११३,—मुक्क. त्रि० (—मुक्त) वादलरहित बादल रहित, मेघ रहित cloudless. दस० ६, १, १५;—राग. पुं० (—राग) संध्यानी राग. संध्या का राग—रंग; संध्या की लालिमा.

colour of twilight पत्र० १७,—  
 कख पु० (-वृत्त) वादणानुं अड; अडने आकारे  
 परिणुभेद वादण भाङ् के आकार मे परिण-  
 मित बादल a tree-shaped cloud  
 अणुजो० १२७; भग० ३, ७, ८, ६; जीवा०  
 ३;—वहलय न० (-वार्दलक-वारोजलस्य  
 दलकं वार्दलकं अभ्ररूपं तत्तथा ) पाणीवाणी  
 वादण पानी वाला बादल clouds filled  
 with water “अभवहलए विउव्वह”  
 राय० ३४; भग० १५, १, ठा० ३, ३,  
 —संघट्ट. पुं० (-संघट्ट) वादणानी घटा  
 बादलों की घटा thick or dense clouds  
 ठा० ४, ४,—संज्झा स्त्री० (-सन्ध्या)  
 संध्या सभये रंग भेरंगी वादण देभाय छे  
 ते. वादणनी संध्या संध्या समय जो रंग वेरंग  
 बादल दिखते हैं वह, बादलो की संध्या party-  
 coloured, chequered clouds  
 at the time of twilight जीवा० ३,  
 —संघट्ट न० (-संघट्ट) वादणथी आकाशनुं  
 षवाध षवु ते बादलो से आकाश का छा जाना  
 being overcast with clouds  
 ( e g the sky ) ठा० ४, ४,

✓ अब्भंग धा० II ( अभि+अब्ज् ) भर्दन  
 करुते, तेल वगेरेथी शरीर योणवु मालिश  
 करना, तेल आदि से शरीर मलना To rub  
 the body with oil etc  
 अब्भगेह नाया० ६, १६,  
 अब्भंगति. सु० च० २, १७१,  
 अब्भंगति ज० प० ५, ११४,  
 अब्भंगिज्ज वि० आया० २, १३, १७२,  
 अब्भंगेजा वि० निसी० १, ५,  
 अब्भंगेत्ता सं० क० ठा० ३, १,  
 अब्भंगित्तए. हे० क० वेय० ५, ४०;  
 अब्भंगंत व० क० निसी० १, ५;  
 अब्भंगावेह रि० सु० च० ४, ७६, विवा० ३;  
 अब्भंग पुं० ( अभ्यङ्ग ) तेल आदिथी भर्दन

करुते तेल आदि से भर्दन करना Rubb-  
 ing the body with oil etc विशेष  
 १६४१,  
 अब्भंगरा न० ( अभ्यञ्जन ) तेल वगेरे  
 योणने भर्दन करुते. तेल आदि लगा-  
 कर मालिश करना Rubbing the body  
 with oil etc नाया० १, पणह० २, ४;  
 आया० १, ६, ४, २, ओघ० नि० ५४६;  
 अब्भंगावय त्रि० (\*अभ्यङ्गापक ) तेल योण-  
 नार, भर्दन करुते तेल चुपडने वाला;  
 मालिश करने वाला One who rubs  
 the body with oil etc निसी० ६, २४,  
 अब्भंगिय त्रि० ( अभ्यङ्गित ) तेल आदिथी  
 भर्दन करुते तेल आदि से भर्दन किया हुआ  
 ( One ) with body smeared or  
 rubbed with oil etc. ‘ अब्भंगिए  
 समाये ’ नाया० १, १६, कप्प० ४, ६१,  
 पि० नि० ४२३,  
 अब्भंतर त्रि० ( अभ्यन्तर ) अंदर; भाँडि,  
 भाँडिडी डेर, अंदरने भाग अंदर, भीतर,  
 भीतरी हिस्सा Internal; interior  
 जीवा० ३, १, सू० प० १, भग० ११, ११,  
 ओव० अणुजो० १३२, निर० १, १; पचा०  
 १३, ४८, जं० प०—ठावणिज्ज पुं०  
 (-स्थापनीय ) अंगत नोकर, अंगत भाणुस,  
 ढुणुरी निजी नोकर, खास आदमी a per-  
 sonal attendant ‘ अब्भंतरठावणिजे  
 पुरिसे सहावेह ’ विवा० ६, नाया० १२, १४,  
 —तव न० (-तपस्-अन्तरस्यैव शरीरस्य  
 स्थापनात्सम्यग्दृष्टिभिरेव तपस्तया प्रती-  
 यमानत्वाच्चाभ्यन्तरं तच्च तत्तपश्च तथा )  
 मोक्षने अंतरंग हेतुभूत प्रायश्चित्त आदि छ  
 प्रकारनुं तप; आंतरिक तप मोक्ष का अन्तरंग  
 हेतुभूत प्रायश्चित्त आदि छ प्रकार का तप,  
 अन्तरंग तप sixfold austerity  
 leading to Moksa, e.g. expiatory

practices, reverence etc छन्विह  
 अब्धंतरिणु तवे पं० तं० पायच्छित्तं विणश्रो  
 वेयावच्चं सज्जाश्रो ज्जाणं विउस्सगो '   
 ठ० ६, परह० २, ५; ओव०—परिसा.  
 छी०(—परिषत् ) अंदरनी सभा; समिति  
 नामे देवेन्द्रनी आंतरिक सभा; मित्रमंडली.  
 अन्तरंग सभा; देवेन्द्र की समिति नामक  
 आन्तरिक सभा, मित्रमण्डली inner circle  
 of friends; a private assembly  
 of Devendra styled Samiti-  
 जं० प० ५, ११६, नाया० ८; १४; राय०  
 —पाणीय. त्रि० (—पानीय—अभ्यन्तरे पानी-  
 यं यस्य तत्तथा ) नेनी अंदर पाणी छे अथवा  
 चोरपल्ली आदि स्थान. जिसके भीतर पानी  
 है ऐसा चोरपल्ली आदि स्थान. ( places  
 like Chorapalli ) containing  
 water in the interior. नाया० १८;  
 —पुक्खर. पुं० (—पुक्कर ) पुष्करद्वीपनी  
 अंदरनी भाग. पुक्कर द्वीप का भीतरी हिस्सा.  
 सू० प० ८;—पुक्खरद्ध. न०(—पुक्कराद्ध )  
 मानुषोत्तर पर्वतनी अंदरनी पुष्करद्वीपनी  
 अर्द्ध भाग; अर्द्ध द्वीप अंतर्गत पुष्करद्वीप  
 मानुषोत्तर पर्वत के भीतरवाले पुक्करद्वीप  
 का आधा भाग; अर्द्ध द्वीपान्तर्गत पुक्कराद्ध  
 द्वीप. half of Puskaradvīpa in  
 the interior of the mountain  
 Mānusottara. भग० ८, २; जीवा०  
 ३,—पुष्पफल त्रि०(—पुष्पफल—अभ्यन्तरा-  
 णि अभ्यन्तरभागवर्त्तीनि पुष्पाणि फलानि च  
 येषां ते तथा ) नेनां फूल फल, पत्रे दांडेल होवाथी  
 फूल न देखातुं वृक्ष जिस वृक्ष के फूल  
 फल पत्तों से ढके होने के कारण नहीं  
 दिखते ऐसा वृक्ष. (trees) with fruits  
 and flowers hidden by foliage  
 राय०—वास पुं० (—वास) अंदरनी निवास,  
 आंतरिक निवासस्थान. आन्तरिक निवास-

स्थान. residence in the interior  
 parts. नाया० ८,—संबुद्धा. छी०  
 (—शम्बूका—अभ्यन्तरान्मध्यभागात् शम्बूका  
 शंखवृत्तगत्या भिन्नसायस्य वहिर्निस्तरणे  
 भवन्ती गोचरभूमिरभ्यन्तरशम्बूका ) गामनी  
 अंदरथी रांपना आवर्तनी माक्ष गोचरी  
 इरतां फहार नीडणवु ते, अथवा फहारथी  
 तेथी रीते गोचरी इरतां अंदर आववु ते;  
 गोचरीने अेक प्रहार गाँव के भीतरसे शंख  
 के आवर्त के समान गोचरी करते हुए बाहिर  
 निकलना, अथवा बाहिर से उसी प्रकार गोचरी  
 करते हुए भीतर आना, गोचरी का एक भेद.  
 coming out of or going into  
 a town after begging alms or  
 to beg alms, in a zigzag course  
 like the lines in a conch ठ०६;  
 —सगडुद्धिया छी० (—शकटोद्धिका )  
 अंगुल मे लेगा अने पेनीने फोणी इरी  
 डाडिसगग इरवे। ते, डाडिसगगेने अेक  
 दोप दोनो पैरों के अंगूठे एकत्रित करके और एकी  
 को चौड़ी करके कायोत्सर्ग करना, कायोत्सर्ग  
 का एक दोष a fault in the perfor-  
 mance of Kāusagga viz.  
 joining the toes together and  
 extending apart the heels.  
 प्रव० २५६;

अब्धं-विभ-तरअ. त्रि० ( आभ्यन्तरक )  
 अंदरतुं, आंतरिक भीतर का, आन्तरिक.  
 Internal, interior ओव० १८, जं०  
 प०

अब्धं-विभ-तरओ. अ० ( अभ्यन्तरतस् )  
 अंदर आने, मध्ये मध्य में, बीच में. In  
 the midst; in the interior  
 नाया० १;

अब्धं-विभ-तरग त्रि० ( आभ्यन्तरक )  
 अंतर्गत भागस, नशकने भागस, भंत्री प्रवृत्ति.

नज़दीकी सम्बन्ध रखने वाला मनुष्य-मंत्री आदि. ( A person ) remaining in constant touch e g a minister etc. विवा० १, ३;

**अभिम-भि-तरतो** अ० ( अभ्यन्तरतस् ) लुभे। “ अभिभतरश्चो ” शब्द. देखो “ अभिभतरश्चो ” शब्द. Vide “ अभिभतरश्चो. ” निर० २, १,

**अभिम-भि-तरभूअ** त्रि० ( अभ्यन्तरभूत ) अंतर्गत, अंदर समायेले भीतर समाया हुआ, अन्तर्व्याप्त, अन्तर्गत. Internal; forming the interior. विशेष० ६;

**अभिमंतरिय.** त्रि० ( आभ्यन्तरिक ) अंदरतो, अंदर रहेनारे; आंतरिक भीतर का, भीतर रहने वाला, आंतरिक Internal, interior नाया० १, २; ७, ८, भग० ६, ३३; ११, ११, दसा० ६, ४,

**अभिमक्खइज्ज.** त्रि० ( अभ्याख्यातव्य ) कोषना उपर जोटो आरोप मुक्खे, योर न डोय तेने योर डडेवे छत्यादि किसी पर झूठा आरोप करना, चोर न होने पर उसे चोर कहना आदि False accusation, false imputation आया० १, १, ३, २२,

✓ **अभिमक्खा** धा० I. ( अभि+आ+ख्या ) डलक यडावुं, जोटो आरोप मुक्खे कलंक लगाना, मिथ्या आरोप करना To accuse falsely; to charge falsely with guilt.

अभिमक्खाइ. भग० ५, ६,

**अभिमक्खाण.** पुं० न० ( अभ्याख्यान-आभिमुख्येन आख्यानं दोषाविष्करण अभ्याख्यानम् ) कोषना उपर प्रगटरीते जोटो आरोप मुक्खे-आण यडाववे किसी पर प्रकटरीते से आरोप करना False public imputation of guilt. “ एणे अभि-

क्खारो ’ ठा० १, १, ओव० ३६, सूय० २, १, ५१; परह० १, २, पन्न० २२, नाया० १, भग० १, ६; ६; ५, ६, दसा० ६, ४, कप्प० ५, ११७, प्रव० १३६६;

**अभिमगुरणा** स्त्री० ( अभ्यनुज्ञा ) कर्तव्यानुष्ठाननी अनुमति देवी ते; अनुष्ठान विषयक आज्ञा करने योग्य अनुष्ठान की आज्ञा देना Giving permission to or ordering the performance of religious duties etc ‘पंच ठाणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गंथाणं. ...खिच्चमव्वगुरणाइं भवंति तं खंती मोत्ती अज्जवे महवे लाघवे ’ ठा० ५, १, भग० २, १, ५, ४, विवा० १,

**अभिमगुरणाय.** त्रि० ( अभ्यनुज्ञात ) कर्तव्यरूपे आज्ञा आपेक्ष; कर्तव्यरूपे अनुमत. कर्तव्यरूप से आज्ञा-आज्ञा दिया हुआ, कर्तव्य रूप से अनुमत Ordered or permitted to perform as a duty नाया० १, २; ५; ८, ६, १२; १३, १४, १६, भग० ६, ३३, ठा० ५, १; कप्प० ३, ४६, ४, ८६, ५, १०४, विवा० ७,

✓ **अभिमत्थ** धा० I ( अभि+अर्थ ) प्रार्थना करपी, भागशी करपी मागना To pray for, to request; to solicit अभिमत्थिज्ज वि० प्रव० ७६६;

**अभिमत्थ** त्रि० ( अभ्यस्त ) अभ्यास करेले; वारंवार आवृत्ति करेले अभ्यस्त, बार बार आवृत्ति किया हुआ. Studied, revised again and again. सूय० १, २, २, १६, ( २ ) गुणाकार करेले, गुणोक्त गुणाकार किया हुआ, गुणा हुआ multiplied. विशेष० २६८;

**अभिमत्थणा.** स्त्री० ( अभ्यर्थना ) परपर प्रवृत्ति करावपी ते, आग्रहशी नहि पथु तेनी छत्थापूर्वक कार्य करवानु डडेवु ते. परस्पर प्रवृत्ति कराना, आग्रहपूर्वक नहीं किन्तु स्वेच्छापूर्वक कार्य करने को कहना Mutual

encouragement of activity, a request to a person to do an act without exerting pressure on him. पंचा० १२, ४;

अभ्यन्तिय त्रि० ( अभ्यर्थित ) प्रार्थना-याचना इरेव मगनी किया हुआ. Requested, solicited कृष्ण० २, १६, ५, १०३, प्रव० ७७०,

अभ्रपटल. न० ( अभ्रपटल ) अश्रु, सञ्चित इहिन पृथ्वीने ऐक प्रकार. अभ्रक; सञ्चित कठिन पृथ्वी का एक भेद. Talc; mica, उत्त० ३६, ७४, ( २ ) वादणतो समूह बादलों का समूह a group of clouds. "अभ्रपटलपिगलुज्जलेण" ओव० पञ्च० १,

अभ्रवालुया स्त्री० ( अभ्रवालुका ) अश्रु-धातुविशेषी मिश्रित रेती, इहलु आदर पृथ्वीने ऐक प्रकार अभ्रक से मिश्रित रेती, कठिन स्थूल पृथ्वी का एक भेद. Sand mixed with mica, उत्त० ३६, ७४; पञ्च० १;

अभ्रहिय त्रि० ( अभ्रधिक ) विशेष, वधारे, अधि, अत्यन्त अधिक, ज्यादहः विशेष Additional; in excess. 'अभ्रहियभीमभेरवप्पगारेण' नाया० १; भग० १, ५, ७, ३, ८, १, ६, १२, ४, २४, १; १२; २५, १, ६; जीवा० २; ओव० ३१, ३८, अणुजो० १४२; उत्त० ३४, ३५, सम० १; कृष्ण० ४, ६२, नाया० व० ७; ८,

अभ्रहियतरग. त्रि० ( अभ्रधिकतर-क ) अतिशय अधि; धलुं वधारे. बहुत ज्यादह Much in excess; excessive. नंदी०

✓ अभ्राइक्ख. धा० I ( अभ्रि+आ+ख्या ) पोये आरोप मुद्रवे, आण यथाववे मिध्या

आरोप करना To accuse falsely; to impute guilt falsely.

अभ्राइक्खइ. आया० १, १, ३, २२;

अभ्राइक्खंति. सूय० २, ७, ७;

✓ अभ्राइक्ख धा० I. ( अभ्रि+आ+चच् ) अपलाप इरेवे; सत्य वात छुपाववी. सच्ची वात छिपाना. To suppress a fact.

अभ्राइक्खिज्जा आया० १, १, ३, २२;

अभ्रभागमित. त्रि० ( अभ्रयागत ) आगंतुक; भेमान. मिहमान; अतिथि. A guest. सूय० १, २, ३, १७;

अभ्रभावगासिय. न० ( अभ्रभावकाशिक ) आंण्णा वगेरे आउना भूणी नीयेनुं धर; आउनी नीये आउथी उवायेदी अगासी आम वगैरह फाड के नीचे बना हुआ घर, जिस घर की छत फाड से छाई हुई हो वह A house situated below the roots of trees like mango trees etc, a terrace covered with dense trees वेय० २, १० ;

अभ्रभास. पुं० ( अभ्रयास ) अभ्रयास इरेवे; वारंवार आश्रित इरेवी. अभ्रयास करना; बार बार आवृत्ति करना. Reading over and over again. अणुजो० ६७; १३०; ओव० २०; क० गं० ४, ८६; क० प० १, ४; ओघ० नि० ६६, पंचा० ६, ३७; ( २ ) समीप. समीप near, in the vicinity. सम० ६१,—आसण न० (—आसन ) पासै भेसवु ते समीप बैठना sitting near. सय० ६६;—करण. न० (—करण ) धर्मथी पतित थयेव पासत्थादिने, पुनः धर्मभां स्थापन इरी, तेनी साथै आहारपाणीने व्यवहार इरेवे ते, संभोगतो ऐक प्रकार धर्म से पतित हुए पासत्ये आदि को धर्म में पुनः स्थापितकर, उनके साथ आहार, पानी का व्यवहार करना; संभोग का एक भेद. १७०

establishing an apostate in true religion and then entering into social relations ( e g eating and drinking ) with him, a variety of Sambhoga सम० ६;—गुण. पुं० (—गुण ) पूर्वना अभ्यासजन्य सरकार्थी उत्पन्न थयेल गुण-भेद आदि भवतां, शीभव्या विना पणु स्तनपान करे छे धत्यादि पूर्व के अभ्यासजन्य संस्कारो से उत्पन्न गुण, जैसे बिना सिखाये वालक उत्पन्न होते ही स्तनपान करने लग जाता है यह उसके पूर्व अभ्यास का संस्कार-गुण है intuitive qualities, qualities born of impressions in a past birth. आया० नि० १, ३, १, १७२,—वर्त्तिय न० (—वर्त्तित्व-अभ्याशो गुर्वादिसामीप्यं तत्र वर्त्तितुं शीलमस्येति तद्भावस्त्वम् ) गुर्वादिकनी पासे-नल्लुके भेसवु ते, लोके-पथार विनयनो अेक प्रकार गुरु आदि के समीप-नजदीक बैठना, लोकोपचार विनय का एक भेद sitting in the proximity of a preceptor etc, a kind of formal reverence paid to a Guru etc भग० २५, ७,—वर्त्तिय त्रि० (—प्रत्यय-अभ्यासो हेवाको वर्णनीयास-ज्ञता वा प्रत्ययो निमित्तं यत्र तत्तथा) अभ्यास-वर्णनीय पुरुषोनी, पासे रहवु, ते निमित्त छे भेमा अेवु सहशुशोतु दीपाववु वगेरे अभ्यास वर्णनीय पुरुषों के पास रहने का निमित्त है जिसमें ऐसे सद्गुणों को प्रकाशित करना इत्यादि adorning or illumining virtues by coming into contact with saints and sages. 'चउहि ठायेहि सते गुणे दीवेजा तंजहा-अभ्यास-वर्त्तियं परच्छदाणुवर्त्तिय कजहेउ कयपडिकपु-

इवा ” ठ० ८, ४,—वर्त्तिय न० (—प्रीतिक ) गुरु आदिनी पासे भेस-वामां प्रीति राभवी ते; लोके-पथार विनयनो अेक प्रकार गुरु आदि के समीप बैठने से प्रीति रखना, लोकोपचार विनय का एक भेद delight in the company of a Guru, fondness for sitting near a preceptor भग० २५, ७;—वर्त्तिय. स्त्री० (—वृत्ति ) नरेन्द्र आदिनी पासे भेसवु ते नरेन्द्र-राजा आदि के पास बैठना. sitting or remaining in the proximity of a king etc दस० ६, १,

अभ्याहय त्रि० ( अभ्याहत ) पीडा पाभेद; दुःखी दुःखीयेल पीडित, दुःख से सताया हुआ. Struck with pain, afflicted with misery “ अभ्याहयमि लोगमि, सव्वओ परिवारिण् ” उक्त० १४, २१

अर्चिभग पुं० ( अभ्यङ्ग ) तेल आदिथी मर्दन करवु ते तेल आदि स मर्दन करना Rubbing the body with oil etc श्रोत्र० ३१, नाया० १८, विवा० १,

अर्चिभगिय त्रि० ( अभ्यङ्गित ) लुओ 'अर्चिभगिय' शब्द देखो 'अर्चिभगिय' शब्द. Vide 'अर्चिभगिय' नाया० १,

अर्चिभतर त्रि० ( अभ्यन्तर ) लुओ 'अर्चिभतर' शब्द देखो 'अर्चिभतर' शब्द Vide 'अर्चिभतर'. नाया० १, १८, भग० २, ६, ५, १, १४, २, सु० च० १, ३६१, पञ्च० १५, भक्त० १३१, कप्प० ३, ३२, प्रव० २७२,

अर्चिभतर त्रि० ( अभ्यन्तर अभ्यन्तरे भवमाभ्यन्तरम् ) अदरनु, अतदि आन्तरिक; भीतर का Inward, internal 'सव्व-भतराणंतर मडल उवसकमिक्ता' जं० प० ५, ११६, (२) पु० न० आतरिदि १५, प्राय-

श्रित्त, विनय, वेयावय्य, संन्याय, ध्यान अने डाडिसग्न अये छ प्रक्षरतुं अर्थंतर तप आन्तरिक तप; प्रायश्चित्त, विनय, वेयावय्य, स्वाध्याय, ध्यान और कायोत्सर्ग ये छ प्रकार के तप internal austerity of six kinds e. g. expiatory performance, reverence etc. 'तवो च दु-विहो वुत्तो, बाहिरभिभतरो तहा' उक्त० २८, ३४; सम० ६; भग० २५, ७,—दुवार. न० (-द्वार) अंदरतुं आरंभुं भीतर का दरवाजा. inner door; inside door. प्रव० ६३८;—संबुक्का. स्त्री० (-शम्बूका) लुभ्ये 'अभंतरसंबुक्का' श०६ देखो 'अभंतरसंबुक्का' शब्द. vide 'अभंतरसंबुक्का' प्रव० ७५६;

अभिभतरओ अ० (अभ्यन्तरतस्) अंदर भीतर.

In; inside. क० प० १, ८२;

अभिभतरिय. त्रि० (अभ्यन्तरिक) आंतरिक-तप वगेरे; प्रायश्चित्त आदि छ प्रक्षरतुं आंतरिक तप अभ्यन्तरिक-तप आदि, प्रायश्चित्त आदि छ प्रकार का आन्तरिक तप. Internal austerity etc; sixfold internal austerity e.g. expiation etc. भग० ११, ११, २५, ७; विवा० २: कण्प० ४, ६३;

अम्भुअ पुं० (अद्भुत) डोछ पणु अपूर्व वस्तु लेवाथी डे साक्षणवाथी आश्चर्यरूप रस उत्पन्न थाय ते, नव रसमाने अेड रस कोई भी अपूर्व वस्तु देखने या सुनने से जो आश्चर्यरूप रस उत्पन्न हो वह, नव रसों में से एक रस One of the nine sentiments viz the sentiment of wonder. अणुजो० १३०; (२) त्रि० आश्चर्यं न्तं आश्चर्यजनक wonderful. चउ० ३;

√ अम्भुक्ख धा० II (अभि+उच्) पाणीथी

सिंयतुं; उपरथी पाणी रेडतुं पानी से सीचना, ऊपर से पानी का छिड़काव करना. To sprinkle with water.

अम्भुक्खेइ-ति. जीवा० ३, ४; नाया० ३; जं० प० ३, ४३;

अम्भुक्खित्ता. सं० कृ० नाया० १६; नाया० व०

अम्भुक्खेइत्ता. सं० कृ० नाया० २;

अम्भुक्खवेइ. णि० अत० ३, ८;

अम्भुगय. त्रि० (अभ्रौदत्त) आडाशभां पहुँचये तेडतुं उच्युं. आकाश में पहुँचे इतना ऊँचा Touching the sky; so tall as to touch the sky. भग० १२, ५;

अम्भुगय त्रि० (अभ्युद्गत-अभिमुखमुद्गतोऽभ्युद्गत) सर्व तरङ्गी ५हार निकषेड; उगी आवेड; अंदुरनी भाङ्क अग्रभाग डंछ उन्नत थयेड चारों ओर से बाहिर निकला हुआ; जगा हुआ, अंकुर के समान कुछ उन्नत अग्रभाग वाला. Shot up; sprouted up भग० ११, ११; १४, ६; १५, १, सम० प० २१२; ओव० ३१; नाया० १, ६, १६; जं० प० १, १४; (२) लेनारने रमणीय लागे तेवी रीते रहेड. देखने वाले को रमणीय प्रतीत हो इस तरह से स्थित of a charming situation; beautifully situated 'अम्भुगयमउलमल्लियाविमलधवलदंतं' उवा० २, १०१; 'अम्भुगयमउलमल्लियाधवलसरिस-संठाणं' जं० प० १, १४, भग० ६, ३३; राव० ५८; (३) उपाडेड ऊपर उठाया हुआ. lifted up; raised up. ओव०—भिगार. पुं० (-भृङ्गार-अभिमुखमुद्गत उत्पादितो भृङ्गारो यस्य स तथा) लेनी आगण डोटे उपाडी अेड भाणुस आडे, तेवे भाणु-शाली भाणुस. जिसके आगे लोटा उठाकर एक मनुष्य चले, ऐसा भाग्यशाली मनुष्य. a person favoured of fortune whose pot is borne for him by



another walking in front ओव०  
दसा० १०, ३,—मुस्सिय. त्रि० (—उच्छ्रित-  
अभ्युद्गतश्चासावुच्छ्रितश्चेत्यभ्युद्गतोच्छ्रित. )  
अत्यंत उंचुं. बहुत ज्यादह ऊंचा. very  
tall; very lofty 'अब्भुगयमुस्सिय  
पहसिया' भग० २, ८; जं० प० १, १४,  
७, १६५;

अब्भुगगम पुं० ( अभ्युद्गम ) उदय; अस्ती,  
उगुं ते उदय, चढ़ती; ऊगना. Rise;  
prosperity सूय० १, १४, १२,

अब्भुज्जय त्रि० ( अभ्युद्यत ) वधवा भाडेल,  
वृद्धिगत. वृद्धिगत; बढ़ने को उद्यत  
Attained to growth, in a state  
of growth नाया० १, ( २ ) उद्यम-  
सहित, उद्यतविहारी, जिनकल्पी, परिहार-  
कल्पी अने यथावंदकल्पी ये त्रयुभानो  
गमे ते अेक उद्यम-सहित, विहार के लिये  
उद्यत, जिनकल्पी, परिहारकल्पी और यथा-  
वंदकल्पी इन तीनों में से कोई भी एक full  
of industry, one of the three  
viz Jinakalpī, Parihānakalpī  
and Yathālandakalpī नाया० ५,  
भत्त० ८,—मरण न० (—मरण ) जिन-  
कल्पी आदि अभ्युद्यतविहारीनुं मरण-  
पादपोपगमनादि जिनकल्पी आदि अभ्युद्यत-  
विहारी का मरण-पादपोपगमनादि the  
death of Jinakalpī ascetics etc  
caused by the vow Santhāā  
etc. संस्था०

√ अब्भुट्ट. धा० II (अभि+उत्+स्था) उठुं,  
उभा थवु; तैयार थवुं, सज्ज थवुं उठना,  
खड़े होना, तय्यार होना, सज्जित होना To  
rise up, to stand up; to be  
ready or prepared

अब्भुट्टेइ भग० २, १, ३, २, सूय० २, २,

२०; राय० २२; २०८, ओव० १२, जं०  
प० ५, ११५, नाया० १, २, ५, १४;  
दसा० १०, १;

अब्भुट्टेति. भग० ५, ४;

अब्भुट्टेमि. भग० २, १, ८, ६, ६, ३३;  
नाया० १; राय० २२२,

अब्भुट्टामो. सूय० २, ७, १५;

अब्भुट्टेज्जा वि० वेय० १, ३३; ४, २५;

अब्भुट्टेहि. आ० नाया० १४;

अब्भुट्टित्ता स० कृ० दसा० ४, ८२; १०४;  
१०५,

अब्भुट्टेइत्ता सं० कृ० भग० २, १; ६, ३३;  
१५, १, नाया० ३, ८, १४;

अब्भुट्टित्तण् हे० कृ० ठा० २, १, वव०  
१, ३७,

अब्भुट्टाण न० ( अभ्युत्थान ) गुर्वादिक् पासे  
आव्ये उठी उभा थवु ते, गुरुसेवामा उद्यत  
रहेवुं ते, दश प्रकारनी सामाचारीभानो  
नवमे प्रकार गुरु आदि के समीप आने पर  
उठकर खड़े होना; गुरुसेवा में उद्यत  
रहना; सामाचारी के दस भेदों में से नौवा भेद  
Revering a preceptor etc.  
by rising up from one's seat;  
being prompt and ready for the  
service of a preceptor etc, the  
ninth of the ten varieties of  
Sāmāchārī अब्भुट्टाणं नवमं दसमा  
उवसपया' उक्त० २६, ४, भग० १४, ३;  
उक्त० २, ३८, ओव० २०; सम० १२, सु०  
च० १, ८०; प्रव० १८२,

अब्भुट्टिय. त्रि० ( अभ्युत्थित ) उद्यत थयेल;  
तैयार थयेल, सज्ज थयेल उद्यत; तय्यार.  
Ready; prepared 'अब्भुट्टिएसु मेहेसु'  
नाया० १; 'अब्भुट्टियं रायरिसिं, पव्वजाठाण-  
मुत्तम' उक्त० ६, ६, ओव० १७, वेय० १,

३३; जं० प० ओष० नि० ५३७; आव० ४, ८; निसी० १०, ४४,

अवभुङ्क्ता त्रि० ( अभ्युत्थात् ) शुर्वादिङने सन्मुख गत २ गुरु आदि के सन्मुख जाने वाला. ( One ) going forward to receive a preceptor etc ठा० ५, १;

अवभुङ्क्तेयव्व. त्रि० ( अभ्युत्थातव्य ) रहामे लथ सत्कार इत्याने योग्य सामने जाने योग्य, सन्मुख जाकर सत्कार करने योग्य. Worthy of a reception by going forward to receive. ठा० ८;

अवभुङ्क्तेय. त्रि० ( अभ्युत्तत ) उन्नत; उभार निकलेल. उन्नत; बाहिर निकला हुआ. Rised up; prominently coming out. " अवभुङ्क्तेयपरइयतलिणतंबसुइनिद्धनखा ' परह० १, ४; अवभुङ्क्तेयपीणरइयसठियपयोहरा ' जीवा० ३; नाया० १; जं० पं० ७, १६६,

अवभुङ्क्तेय त्रि० ( अद्भुतक ) अद्भुत डारक; आश्चर्य उत्पन्न करने वाला. Wonderful; astonishing. ' अच्छे-रगमवभुङ्क्तेय ' उक्त० ६, ५१,

अवभुङ्क्तेय पुं० ( अभ्युदय ) उदय, उत्थती उदय; चढती. Rise, prosperity. नाया० १; २; परह० १, ३,—हेउ पुं० (—हेतु) इत्याणुने हेतु-डारणु. कल्याण का कारण. cause of prosperity. पंचा० ८, १६,

अवभुङ्क्तेय धा० II. ( अभि+उप+इ ) प्राप्त इत्यु, पासे आवयुं; भोगवयुं प्राप्त करना; समीप आना To obtain; to acquire; to go to.

अवभुङ्क्तेति. सम० ६,

अवभुङ्क्तेय-य. त्रि० ( अभ्युपगत-अभि-आभि-सुखेनोपगत ) प्राप्त थयत; रहामे आवेद,

उदयप्राप्ते उदयप्राप्त, सन्मुख आया हुआ; प्राप्त. Obtained, attained to; come to; come towards सूय० २, ७, ११; आया० २, ३, १, १११;

अवभुङ्क्तेय धा० I ( अभि+उप+गम् ) स्वीकार इत्ये स्वीकार करना. To-accept. अवभुङ्क्तेयजामि. नाया० १६, अवभुङ्क्तेय. सं० कृ० विशेष० ३१४;

अवभुङ्क्तेय पुं० ( अभ्युपगत ) अंगीकार, स्वीकार इत्ये ते. स्वीकार करना; अंगीकार करना. Acceptance, acknowledgement. ठा० २, ४;

अवभुङ्क्तेयमिया. स्त्री० ( अभ्युपगमिकी-अभ्युपगमेनाङ्गीकरणेन निर्वृता तत्र भवा वाभ्युपगमिकी ) पोतानी धर्मार्थी स्वीकारेले शिरोलुंचन, भूमिशयन, ब्रह्मचर्य, उपवास वगैरे य रित्रना इत्यर्थी यती वेदना. अपनी इच्छा से स्वीकार किये हुए शिरोलुंचन, भूमिशयन, ब्रह्मचर्य, उपवास आदि चारिद्र के कष्टों द्वारा उत्पन्न वेदना Pain caused by the voluntary acceptance of the hardships of right conduct such as pulling out hair, fasting etc. 'दुविहा वेयणा प० तं अवभुङ्क्तेयमिया य उवक्कमिया य' पञ्च० ३४, ३५; ठा० २, ४; भग० १, ४,

अभय-य. न० ( अभय-न भयमभयम् ) लयते। अभाव, निर्भयपणु निर्भयता, भय का अभाव. Fearlessness; absence of fear 'अभयो पत्थिवा तुवमं, अभयदाया भवाहि य' उक्त० १८, ११; परह० २, १, सम० १; नाया० १६; राय० २३; ( २ ) पु० श्रेण्डि रान्गनी नंदा राणीतो पुत्र अलयकुमार, के ले महावीर स्वामी पासे दीक्षा लई, ११ अंग लणी, गुणुरयणु तप तपी, पात्र वन्सनी प्रत्रन्या पाणी, विपुत्र पर्यंत उपर अेड भासने।

संधारो करी, विन्ध्य नामे अनुत्तरविमानमा  
उत्पन्न थया, त्याथी ओक अवतार करी भोक्ष  
प्राप्त करशे श्रेणिक राजा की नंदा रानी के  
गर्भ से उत्पन्न पुत्र अभयकुमार, जो कि  
महावीरस्वामी से दीक्षा लेकर ११ अंगों का  
अभ्यास कर गुणारयण तप करके पांच वर्ष तक  
प्रव्रज्या का पालनकर अंत में विपुल  
पर्वत पर एक मास का संधारा धारणकर  
अनुत्तरविमान में उत्पन्न हुआ, वहा से  
एक भव धारणकर मोक्ष को प्राप्त होगा  
Abhayakumāra the son of  
Nandā the queen of Śrenika  
who took Diksā from Mahā-  
vira Svāmī, studied eleven An-  
gas, observed Gunarayana  
penance entered the order of  
asceticism for 5 years and  
breathed his last on the Vipula  
mountain after remaining with-  
out food and drink for one month  
and was born in Anuttara  
heavenly abode named Vijaya  
Therefrom after one birth he  
will get salvation अणुत्त० १, १०;  
नाया० १; (३) अणुत्तरोपपात्तिक  
सूत्र के प्रथम वर्ग के दशवे अध्याय का  
नाम name of the tenth chapter  
of the first section of Anutta-  
rovavāi Sūtra अणुत्त० १, १०, (४)  
प्राणिरक्षा; संयम प्राणिरक्षा; सयम.  
protection of living beings; self-  
control. आया० १, १, ५, ३६; सूय० १,  
६, २३,—दय. पुं० (—दक-अभय ददाती-  
त्यभयदः) सर्व जन्तु अलक्षयदान आपनार  
अपावनार तीर्थकर भगवान् सम्पूर्ण जीवों

को अभयदान देने और दिलाने वाले तीर्थकर  
भगवान् Tirthankara, the giver  
and admonisher of the blessing  
of freedom of fear to all living  
beings ' अभयदयाणं चक्रुदयाण  
भग० १, १, ओव० नाया० १; आव० ६, ११;  
कप्प० २, १५,—प्पयाण न० (—प्रदान) लुओ  
'अभय-य-दय' श०६. देखो ' अभय-य-दय '  
शब्द vide " अभय-य-दय ". ' दाय्याण-  
सेट्टं अभयप्पयाणं ' सूय० १, ६, २३;  
अभंगक त्रि० ( अभङ्गक ) लुओ ' अभंगय '  
श०६ देखो ' अभंगय ' शब्द Vide  
" अभंगय. " भग० ६, ४,

अभंगय त्रि० ( अभङ्गक ) नेमा लांगो—विद्वेष  
न उठे ते, लांगो विनातुं जिसमे शंका न  
उठे वह Free from any kind of  
doubt or mis-giving भग० १, ५;  
६, ४;

अभंगसेण पुं० ( अभङ्गसेन ) विन्ध्य नामे  
येरना सेनापतिना पुत्र, के ने पुरिमताल  
नगरने ईशान पुत्रे आवेक्षी सालाटवी नामे  
येरपक्षीमा पायसो येरनी साथे रहेंतो  
हुतो पुरिमतालना महापण राज्जये तेने  
पकडवाने लश्कर भोक्ष्यु पण ते पकडालो  
नहि, आपर महोत्सव प्रसंगे सत्कारपूर्वक  
तेने गाममा ओलावी, दणो करी, राज्जये ते  
येरने पकडावी क्षसीये यडाव्यो. २७ वरसनी  
उभरे भरणु पाभी पडेवी नरके गये.  
विजय नामक चोर के सेनापति का पुत्र, जो कि  
पुरिमताल नगर के ईशान कोन की ओर साला-  
टवी नामक चोरपल्ली में पाच सौ चोरों के साथ  
रहता था. पुरिमताल नगर के राजा महाबल ने  
उसे पकडवाने के लिये अपनी सेना भेजी, परन्तु  
वह नहीं पकड़ा जा सका, अन्त में महोत्सव के  
अवसर पर राजा ने उसे सत्कारपूर्वक ग्राम  
में बुलवाया और कपट से उसे फासी पर

चढ़ा दिया. वह २७ वर्ष की अवस्था में मरकर पाहेले नरक में गया. The son of Vijaya the leader of thieves who was staying with 500 thieves in a place called Sālātavī in the North East of Purimatāla city Mahābala the King of Purimatāla sent a great army to arrest him but he escaped. At last he was invited to a festival and was hanged treacherously. He went to the first Hell after his death at the age of twenty-seven years विवा० १, ३;

**अभंड.** त्रि० ( अभण्ड ) लांड-उपगण्य विनाते. पात्र-उपकरण सहित, उपकरण विना क्क. Not possessd of necessary materials like vessels etc. भग० ८, ४;

**अभक्ष्य** त्रि० ( अभक्ष्य-न भक्षितुं योग्यम-भक्ष्यम् ) भावा योग्य नहि; लक्ष्यु करवा योग्य नहि. न खाने योग्य; न भक्षण करने योग्य Unfit to be used as food. नाया० ५, भग० १८, १०;

**अभक्ष्य** त्रि० ( अभक्ष्यक ) लुभो " अभक्ष्य " शब्द देखो " अभक्ष्य " शब्द Vide 'अभक्ष्य' नाया० ५; भग० १८, १०;

**अभग्न.** त्रि० ( अभग्न ) लांगेद नहि; अर्थात् जो अखंड हो-टूटा फूटा न हो वह. Not broken; whole "एवमाइएहि आगारेहि, अभग्नो अविराह्यो " आव० १, ५; भग० ६, ३३; कप्प० ५, १०८, ( २ ) विपाकसूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना त्रीण्यभ्ययनतु नाम. विपाकसूत्र के प्रथम श्रुतस्कंध के तीसरे अध्याय का नाम. name of the third chapter of the second

Śrutaskandha of Vipāka Sūtra. विवा० १, १;

**अभडप्पवेश** त्रि० ( अभटप्रवेश-न विद्यते भदानां राजाज्ञादायिनां पुरुषाणां प्रवेशः कुटुम्बिगृहेषु यत्र तत्तथा ) " जथा अभुङ्क्त्वा वभतभाटे कोष्ठ पशु गृहस्थने धर कोष्ठ कुडम लघने जय नहि " अभ मनाष्ठ करवाभां आपी छे तेषु नगर वगैरे. जहाँ अमुक समय के लिये इस प्रकार हुक्म दिया गया हो कि "कोई भी राजकर्मचारी किसी गृहस्थ के घर पर किसी भी प्रकार का हुक्म लेकर न जाय " ऐसा नगर वगैरह. ( A city etc. ) where the visit of an official carrying any order to a citizen's house is prohibited. नाया० १; भग० ११, ११; जं० प० कप्प० ५, १०१;

**अभणित्त** त्रि ( अभणित ) न लण्ड-डहेल न कहा हुआ. Not said, unsaid; unspoken. गच्छा० ८६;

**अभक्त.** न० ( अभक्त ) लकत-अनते त्याग; उपवास. उपवास A fast आव० ६, ६;

**अभक्तद्व** पुं० ( अभक्तार्थ-भक्तेन भोजनेनार्थः प्रयोजनं भक्तार्थः, न स तथा यद्वा न विद्यते भक्तार्थो यस्मिन् प्रत्याख्यानविशेषे स तथा ) लोभनते त्याग करवाना पश्यत्प्राणु; उपवास. भोजन का त्याग करने का प्रत्याख्यान; उपवास. Vow, to give up food; fasting. "सुरे उगण अभक्तद्व पचक्त्वाइ" प्रव० १६१, वव० १०, २; पंचा० ५, ६,

**अभक्ति.** स्त्री० ( अभक्ति ) लकिताने अभाव. भक्ति का अभाव. Absence of devotion. नाया० १६६ ( २ ) त्रि० लकितरहित; लकित विनाते. भक्ति रहित, भक्ति विना का. devoid of devotion. नाया० १६६;

**अभक्तिमंत.** त्रि० ( अभक्तिमत् ) लकित वि-

नानो. भक्ति रहित. Void of devotion  
भक्त० ७२;

**अभयंकर पु०** ( अभयङ्कर—अभयं प्राणिरक्षारूप स्वयं हिसानिवृत्तत्वेन परतश्च हिसां मा कार्पीरित्युपदेशदानेन करोतीत्यभयङ्कर ) सर्वं श्रवते पोते अलयदान आपी भीष्मनी पासे अलय अपावनार महात्मा सम्पूर्ण जीवों को स्वयं अभयदान देकर दूसरो से भी अभय दिलाने वाला महात्मा. A great person protecting living beings against injury personally and through others. “ अभयकरे वीरे अणतचक्रू ” सूय० १, ६, २५,

**अभयंकरा स्त्री०** ( अभयङ्करा ) १७मा तीर्थ-कर-कुंथुनाथस्वामी प्रव्रज्या लेती वपते ले पाणभीमां भेडा उता ते पाणभीनु नाम सत्रहवें तीर्थकर कुंथुनाथस्वामी दीक्षा लेते समय जिस पालकी में बैठे थे उस पालकी का नाम Name of the palanquin used by Kunthunātha Svāmī, the seven-tenth Tirthakar a, at the time of his Pravrajyā सम० प० २३१,

**अभयकुमार पुं०** ( अभयकुमार ) श्रेणिक राजानो पुत्र; विशेषभाटे लुओ ' अभय-य' शब्दतो भीन्ने अर्थ श्रेणिक राजा का पुत्र, विशेष जानने के लिये देखो 'अभय-य' शब्द का दूसरा अर्थ Son of king Siṅṅika, vide 'अभय-य' नाया० १,

**अभयकुमारी स्त्री०** ( अभयनन्दा ) नन्दा राणीनो पुत्र, बुद्धिनिधान अलयकुमार नन्दा रानी का पुत्र, बुद्धिनिधान अभयकुमार Abhayakumāra the son of queen Nandā अणुत्त० १,

**अभया. स्त्री०** ( अभया ) ६२३. हर, हरितकी

Name of a plant, the myrobalan tree or its fruit प्रव० १०१६, ( २ ) दधिवाहन राजनी अलया नामे अेक राणी. दधिवाहन राजा की अभया नाम की एक रानी. Abhayā, a queen of king Dadhivāhana तंडु०

**अभवस्थ पु०** ( अभवस्थ—भवे संसारे न तिष्ठतीत्यभवस्थ ) भव-संसारमा न इरनार; सिद्धभगवान् संसार में न फिरने वाला, सिद्ध भगवान् An emancipated soul, a Siddha. भग० ८, २;

**अभवसिद्धि. त्रि०** ( अभव्यसिद्धि ) लुओ 'अभवसिद्धिय' शब्द देखो 'अभवसिद्धिय' शब्द Vide 'अभवसिद्धिय' क० प० ५, ७०,

**अभवसिद्धिय-अ पुं०** ( अभव्यसिद्धिक-न भव्यसिद्धिकोऽभव्यसिद्धिक ) सिद्धि पागवाने अयोग्य, अलव्य श्रव सिद्धि पाने के अयोग्य, अभव्य जीव A soul not fitted to get absolution “ खेरइया दुविहा प० त० भवसिद्धिया चैव अभवसिद्धिया चैव ” ठा० १, १, राय० ७६, अणुजो० १४५, भग० १, ६, ३, १, ६, ३, ४, १०; ८, २; १६, १, २५, १०,

✓ **अभविंसु धा० भूत० प्र० व०** ( अभूवन् ) भू धातुना भूतकालना प्रथम पुरुषतु षड्वयन भू वातु के भूतकाल का प्रथम बहुवचन. They became, they were सूय० १, २, ३, १६,

**अभविय पु०** ( अभव्य ) लुओ ' अभव ' शब्द देखो ' अभव ' शब्द Vide ' अभव ' दसा० १०, ३; क० प० १, ६३;

**अभव्व पु०** ( अभव्य ) सिद्धि भेगववाने अयोग्य; अलव्य श्रव सिद्धि प्राप्त करने के अयोग्य; अभव्य जीव. A soul not fitted

to get salvation विशेष ४११; क० गं० ३, २३; ४, २२; क० प० १, १८, पंचा० ३, ६, ४६;

अभञ्जत्त. न० (अभव्यत्व) अलव्यपणुं, भोक्ष पाभवाने अयोग्यपणुं अभव्यता; मोक्ष पाने की अयोग्यता Unfitness for attaining to final bliss क० गं० ४, ६६;

अभाव पुं० (अभाव) दुस्सित भाव, निन्द्य भाव कुत्सित भाव, खोटा भाव, निन्द्य भाव Bad or wicked thought. "सुशिया भाव साणस्स, सूयरस्स नरस्स य" उक्त० १, ६; (२) अभाव, निषेध अभाव, निषेध, नैर मौजूदगी absence, negation भग० ४२, १; पिं० नि० २०४, विशेष० २८६, पंचा० ३, २३;

अभावित त्रि० (अभावित) बोध न पायेल बोध न पाया हुआ Not enlightened प्रव० ८६२,

अभाविय-अ, त्रि० (अभावित) सम्भववाने योग्य नहि, अयोग्य, अनुभवरहित. ससम्माने के अयोग्य, अनुभव रहित Unfit; inexperienced. "अभाविया परिसा" ठा० १०, पिं० नि० ६४१; ओघ० नि० ५५६,

अभावुग, त्रि० (अभावुक-न भावुकमभावुकम्) थील वस्तुने योग्य पाभीने पणु तेना गुणुभा परिणुत न थना पोताना स्वरूपभाण अर-स्थित रहे ते दूसरी वस्तु का संयोग मिलने पर भी जो उसके गुणो में परिणामित न होकर निज स्वरूप में ही स्थित रहे वह Maintaining one's own quality inspite of contact with another object and its qualities ओघ० नि० ७७३;

अभास पुं० (अवभास) प्रभा; अण्ड. प्रभा, कलक, आभास Lustre; light पञ्ज० २;

अभासअ. पुं० (अभाषक) लुओ 'अभासग' शब्द देखो 'अभासग' शब्द. Vide 'अभासग', विशेष० १४८, भग० १, १०; ६, ३;

अभासग. त्रि० (अभाषक) भाषापर्याप्ति विनाने; अइन्द्रिय, अयोगी, सिद्ध, वाटे-हेते लुव वगेरे भाषापर्याप्ति रहित, एकेन्द्रिय, अयोगी, सिद्ध आदि जीव. Having no speech development; e g. a one sensed being etc जीवा० ८,

अभासा. स्त्री० (अभाषा) मृषा अने सत्य-मृषा अे अे प्रकारनी भाषा; भोटुं अथवा मिश्र भोलवु ते मृषा और सत्यमृषा यह दो प्रकार की भाषा; झूठ अथवा झूठसच मिला हुआ बोलना False or half-false speech; untrue or half-true words भग० २५, ३;

अभासित्ता सं० क० अ० (अभाषित्वा) भोल्या विना, भाषणु कुर्या विना विना बोले; विना भाषण किये Without speaking, without having spoken ठा० ३, २;

अभासिय त्रि० (अभाषित) न भाषेले; न उहेले न कहा हुआ Not said, unsaid, unspoken क० प० ७, २६;

अभासिय त्रि० (अभासिक) दीप्ति-प्रकाश विनाना पदार्थ-भूमि आदि. प्रकाश रहित पदार्थ-भूमि आदि (Things like earth etc) without light or lustre. क० प० ७, २६;

अभि. उप० (अभि) अभिमुष् अभिसुख, In front राय० ५७;

अभिप्रावण त्रि० (अभ्यापन्न) स-मुष् आवेले. सामने आया हुआ, Come towards or in the direction सूय० १, ४, २, १४;

अभिज्ञ. न० ( अभिजित् ) अह्न ज्येतो देवता छे अयं नक्षत्र, अभिजित्-अभिय नामे नक्षत्र जिसका देवता ब्रह्म है वह नक्षत्र, अभिजित् नामक नक्षत्र Name of a constellation styled as Abhijit " दो अभिज्ञ " ठा० २, ३, अणुजो० १३१, जीवा० ६, जं० प० ७, १५१, सू० प० ६; ( २ ) पीतलय नगरना उदायन राजनेो पुत्र-अभिजितकुमार, छे ज्येते पिताये शक्य न आपवाथी तेना उपर द्वेष रथो हतो, तेथी श्रावकपणुं लीधा छतां विराधक थध ते असुरकुमारमां उपन्यो वीतभय नगर के उदायन राजा का पुत्र अभिजितकुमार, जिसे कि पिता के राज्य न देने से उस पर क्रोध उत्पन्न हुआ था, जिससे श्रावक के व्रत ग्रहण करने पर भी विरावक होकर वह असुरकुमार जाति के देवों में उत्पन्न हुआ Abhijitakumāra, the son of king Udāyana of the city of Vitabhaya His father did not give him the throne and so he bore grudge towards him The result was that inspite of having accepted the Janalayman's vow, he violated them and consequently had to take birth as Asurakumāra. भग० १३, ६;

✓ अभिउंज धा० I ( अभि+युञ् ) भोलपु; वातथीत करपी बोलना, वात चीत करना To speak ( २ ) वशीकरण करवुं वशीकरण करना to enchant, to fascinate ( ३ ) आलिंगन करवुं आलिंगन करना. to embrace.

अभिउजे वि० ' अयाइसुद्धं वययां भिउजे ' सू० १, १४, २४,

अभिउंजित्ता. सं० कृ० विवा० २,

अभिओग. पुं० ( अभियोग-अभियोजनमभि-

योग. ) दयाणु, अलाटकार, जपरदस्ती. दवाव, जवरदस्ती Pressure, force सू० २, ६, १७, प्रव० ६५३, ( २ ) आत्ता, लुडम हुक्म; आज्ञा command; order ओव० ठा० १०, ( ३ ) मंत्र, नंत्र वगेरेथी वशीकरणेो प्रयोग करथो ते, ज्येथी आलियोगिक जतना ललडा देवतामां उत्पन्न थयुं पडे तेवी लावना. मन्त्र, तन्त्र आदि वशीकरण का प्रयोग करना, जिससे अभियोगिक जाति के नीचश्रेणी के देवों में उत्पन्न होना पड़े ऐसी भावना fascination by charms and incantations, thought activity leading to birth among lower gods like Abhiyogika उक्त० ३६, २६४,

अभिओगिय पुं० स्त्री० ( अभियोगिक ) तावेदार-नौकर देवता, ललडी जतनुं काम करनार देवता हलकी श्रेणी के काम करने वाला देव, तावेदार-नौकर देव. A subordinate kind of gods, a lower class or order of deities. जीवा० ३, ३,

अभिओगी स्त्री० ( अभियोगी-आ समन्ता-दाभिमुख्येन युज्यन्ते प्रेष्यकर्मणि व्यापार्यन्त इत्याभियोग्या. किङ्करस्थानीया देवविशेषा-स्तेपामियमाभियोगी ) आलियोगिक देवतामां उत्पन्न थयु पडे तेवी लावना, मन्त्र, नंत्र, वशीकरण आदि प्रयोग ऐसी भावना जिससे अभियोगिक देवों में उत्पन्न होना पड़े, मन्त्र, तन्त्र, वशीकरण आदि प्रयोग Practice of fascination by charms and incantations, leading to a birth among lower deities called Abhiyogika उक्त० ३६, २६४; प्रव० ६४८,

✓ अभिकंख. धा० I. ( अभि+काङ्च् )

धृच्छुं, धृच्छा इरपी. इच्छा करना; चाहना.  
To wish, to desire.

अभिकंखण् दस० १०, १, १२;

अभिकंखसि आया० २, १, ६, ३३;

अभिकंखेज्ज वि० सूय० १ २, २, २६;

अभिकंखे वि० सूय० १, २, २, २७;

अभिकंख सं० कृ० आया० २, ४, १, १३३;

अभिकंखमाण व० कृ० दस० ६, ३, २,

अभिकंखि त्रि० ( अभिकाङ्क्षिन् ) आडांक्षा  
राभनार, धृच्छा इरनार. आकांक्षा रखने  
वाला, इच्छा करने वाला (One) desiring,  
(one) having a desire उक्त० ३२,  
१७,

अभिकंकंत त्रि० ( अभिक्रान्त ) लुपानी  
उध्वंही गयेल; मोतनी नलुक आवेल जुवानी  
को उलाघ चुका हुआ, मृत्यु के समीप पहुंचा  
हुआ. Past the period of youth,  
nearing death आया० १, २, १, ६३;  
( २ ) पराभव पाभेल, येतनरहित पराभव  
पाया हुआ; चैतन्य रहित overpowered,  
deprived of consciousness आया०  
२, १, १, २, ( ३ ) प्रवृत्त थयेल  
प्रवृत्त, काममें लगा हुआ set to work;  
engaged in working सूय० २, २,  
५६;—किरिया स्त्री० (—क्रिया ) यरुड  
आदि पंथना साधुओओ न सेवेदी जग्या, ले  
मडानमा थीज्ज डोर्ध मतना त्यागिओ उतर्या  
न डोय ते मडान चरक आदि संप्रदाय के  
साधुओ द्वारा सेवन न की हुई जगह, जहा दूसरे  
किसी मत के साधु न उतरे हों वह स्थान a  
house in which ascetics of  
other religious orders are not  
lodged आया० २, २, २, ८०,—कूर-  
कम्म त्रि० (—कूरकर्मन् ) कूरकर्म—हिसादि  
क्रियामा प्रवृत्त थयेल कूरकर्म-हिसादि क्रिया

में प्रवृत्त (one) engaged in cruel  
acts, e. g. killing etc. सूय० २, २,  
३२;

✓ अभिककम धा० II. ( अभिक्रम् )  
सन्भुष आवपुं; रडामे आवपुं सन्मुख आना;  
सामने आना. To come towards  
अभिकमेइ. सूय० २, १, ६;

अभिकम्माय स० कृ० सूय० १, १, २, २६;

अभिककमण न० ( अभिक्रमण ) सन्भुष  
वपुं; रडामे आवपुं ते. सन्मुख जाना, सामने  
आना. Act of coming or going  
towards. सूय० १, ८, ८,

अभिकखणं अ० ( अभीक्षणम् ) निरंतर, पुनः  
पुनः; वारवार सदा, वार वार Fre-  
quently, continually “ एगे समुप्प-  
ज्जेजा अभिकखणं इत्थिकहं भत्तकह ” ठा०  
२, ४, नाया० १; २, ८, १३, १४, १६; भग०  
१, २, ७, ७, ६, १५, १, उक्त० ११, २, २७,  
४, ११, आया० २, २, २, ७७, सूय० १,  
४, १, ३, ठा० ४, २, सम० २०, परह० २,  
४, जं० प० १, १०; दस० ५, १, १०, पिं०  
नि० ३८७; ५८५; पन्न० १७, निसी० १२, ३,  
दसा० १, ११, २, ८; ६, ६, १; कप्प० ६,  
४४,—णाणोवओग पुं० (—ज्ञानोपयोग )  
वारंवार ज्ञानमा उपयोग लगाडवे ते, तीर्थंकर  
नामगोत्र आधवाना २० प्रधारमाने ओड.  
वार वार ज्ञान मे ध्यान लगाना, तीर्थंकर  
नामगोत्र को वावने के २० भेदों में से एक भेद.  
repeated contemplation of know-  
ledge, one of the twenty varie-  
ties of attainting to the Tir-  
thankara Nāma-gotra. नाया० ८;  
अभिकखा स्त्री० ( अभिख्या ) नाम, संज्ञा.  
संज्ञा; नाम Name; appellation;  
denomination विशेष० १०४८,



**अभिखालाभिय पुं०** ( अभिखालाभिक )  
 गोयरी संयधी अभिग्रहविशेष धरनार सधु.  
 भिक्षा-गोचरी सम्बन्धी अभिग्रहविशेष धारण  
 करने वाला साधु An ascetic observ-  
 ing a particular vow as regards  
 begging of alms or food ओव०

**अभिगंतुं हे० कृ० अ०** ( अभिगन्तुम् ) लभ-  
 वाने जानने को In order to know.  
 क० प० १, १०२,

✓ **अभिगच्छु** धा० I (अभि+गम्) सन्मुभ  
 न्युं सन्मुख जाना. To go towards  
 (२) लेडु जोडना. to join (३) पांधुं  
 बाधना. to acquire ( ४ ) प्राप्त करुं  
 प्राप्त करना to obtain

**अभिगच्छुइ-ति** नाया० १; दस० ४, २१,  
 २२, ६, २, २, २२, स्य०  
 १, १, २, २७, राय० २३५,

**अभिगच्छंति** भग० २, ५,

**अभिगच्छिजा** वि० दस० ५, १, १४,

**अभिगच्छिहिइ** भ० नाया० १८,

**अभिगजंत.** व० कृ० त्रि० (अभिगर्जत्) सन्मुभ  
 गर्जना करतो सामने गर्जना करता हुआ  
 Roaring in front of नाया० ८, १८,

**अभिगम पुं०** (अभिगम) सन्मुभ न्युं, रडामे  
 न्युं सन्मुख जाना, सामने जाना Going  
 in front of, going towards भग०  
 २, ५, ६, ३३, नाया० १, ( २ ) उपदेश  
 साधुवाथी यतो ओध उपदेश सुनने से  
 जो बोध हो वह knowledge acquired  
 by hearing a religious sermon  
 प्रव० ६६३, जीवा० १, ठा० २, १, दस० ६, ४,  
 २, ३, भग० १, ६, ( ३ ) साधुओंनी पासे  
 नता उपाश्रयनी हदमा दापल यती वपते  
 श्रावकोअे सचित्तवस्तुतो त्याग करवो, पडरेल  
 वस्त्रो व्यवस्थित मर्यादाभा रापवां, अभी  
 उपर भेस-दुपटानो उत्तरासग करवो, भेहाथ  
 लेडी अनलि पाधवी अने मननी वृत्तिओ



येकाग्र करवी अे पात्र नियम सायववा ते, श्रा-  
 वकनां पात्र अभिगमन साधुओं के समीप जाते  
 समय उपाश्रय की सीमा मे प्रवेश करते ही श्रावको  
 का सचित्त वस्तु का त्याग करना, पहिरे हुए  
 वस्त्रों को व्यवस्थितत मर्यादा में रखना, दुपट्टे  
 का उत्तरासंग ( मुह पर ) करना, दोनों हाथ  
 जोडना और मनोवृत्तियों को एकाग्र करना इन  
 पाच नियमों का पालन करना, श्रावक के पाच  
 अभिगमन observance by a layman  
 of the five rules (e g abandoning  
 things with life or living beings in  
 them, covering the mouth with  
 a garment, folding of hands  
 etc while entering an Upāsāyā  
 and approaching an ascetic राय०  
 २७८, —रुइ. स्त्री० (—रुचि) उपदेश साधुनी  
 यथेव तत्परुचि, समदितनो अेड प्रधार.  
 उपदेश सुनने मे जो तत्परुचि हुई हो वह  
 सम्यक्त्व का एक भेद desire for right  
 knowledge engendered by  
 listening to a religious sermon.

पत्र० १; उत्त० २८, प्रव० ६६४;  
—सम्मदसण न० (अभिगमण) नव-  
तत्त्वनी परीक्षापूर्वक समझित प्राप्त थाय ते,  
नव तत्त्वनी समझणपूर्वकनुं सम्यक्त्व. नव  
तत्त्वों की परीक्षापूर्वक जो सम्यक्त्व प्राप्त होवह,  
नव तत्त्व का ज्ञानपूर्वक सम्यक्त्व. right  
belief after due examination of  
the nine categories. “ अभिगम-  
सम्मदसणो दुविहे प० तं० पडिवाई चैव  
अपडिवाई चैव ” ठा० २, १;

**अभिगमण.** न० (अभिगमन) सन्मुख जाणे;  
पासे जाणे; नज्जुं जाणे. सन्मुख जाना, समीप  
जाना. Act of going towards,  
approaching भग० २, १, ६, ३३, राय०  
६७; दसा० १०, १, जं० प० ५, ११७;—अद्द.  
न० (-अर्थ) रहामे जाणे भाटे सामने जाने  
के लिये in order to go towards or  
to approach नाया० १२, (२) बोध-  
ज्ञानभाटे बोध-ज्ञान के लिये in order  
to acquire knowledge. नाया० १२;  
—जोग्ग त्रि० (-योग्य) सन्मुख जाणे  
योग्य सन्मुख जाने के योग्य. worthy of  
being approached राय०

**अभिगमणया.** स्त्री० (\*अभिगमनता-अभि-  
गमन) रहामे जाणे सामने जाना. Going  
towards, approaching ओव० ७७,

**अभिगमणिज्ज.** त्रि० (अभिगमनीय) आक्षीने  
रहामे जाणे योग्य चलकर सन्मुख जाने योग्य  
Worthy of being honoured  
by going forward to meet. राय०

**अभिगय.** त्रि० (अभिगत) ज्ञाने; सम-  
झे, जाना हुआ; समझा हुआ Known;  
comprehended. ओव० ४०; नाया०  
५, ८; १२; १४; भग० २, ५; ७, ६, १८,  
१०; (२) प्राप्त करे; सन्मुख आवे  
प्राप्त किया हुआ, सन्मुख आया हुआ.

obtained, approached; come  
towards. ओव० ४०;—अद्द. त्रि०  
(-अर्थ) जेणे अर्थ जाण्यो छे ते, अर्थने  
निश्चय करेनार. जिसने अर्थ जाना है वह, अर्थ  
का निश्चय करने वाला. (one) who has  
comprehended the meaning.  
नाया० १; भग० २, ५, कप्प० ४, ७२;  
—जीवाजीव. पुं० स्त्री० (-जीवाजीव)  
जेणे ज्य अने अज्यनुं स्वरूप जाण्यो छे ते  
जिसने जीव और अजीव का स्वरूप जाना है  
वह. (one) who has compre-  
hended the nature of the  
soul and the non-soul विवा० १;  
नाया० १२; दसा० १०, ७; ८;

**अभिगहिअ** न० (अभिगृहीत) गुण, अवगुण  
जाण्यो विना कुमतने आग्रह करेवे ते.  
गुण, दोष को जाने विना अपने मत का आग्रह  
करना Obstinately persisting  
in one's own belief or opinion  
without regard to merits or  
demerits. क० गं० ४, ५४;

✓ **अभिगाह** धा० I. (अभि+गाह्) सेवणुं,  
भोगवणुं सेवन करना, भोगना To resort  
to; to enjoy; to experience.

अभिगाह आया० १, २, २, ७४,

✓ **अभिगिज्ज** धा० I (अभि+गृह्) गृह्णि  
थणुं, लेणी अणुं. लोभी बनना, किसी विषय  
में आसक्त होना To be greedy of, to  
covet. (२) स्वीकारणुं. अगीकार करना.  
to accept

अभिगिज्जंति सूय० २, २, ५७;

अभिगिज्ज सं० कृ० ठा० २, १, दस० ७, १७;

✓ **अभिगिरह** धा० II (अभि+गृह्) अवि-  
ग्रह धारणुं करेवे; नियमविशेष धारणे;  
आहारादि देवामां द्रव्य, क्षेत्र, दान अने लावणी  
अभुं हृदं आंधवी. अभिग्रह धारण करना;

नियमविशेष का धारण करना, आहारादिक लेने में द्रव्य, क्षेत्र, काल या भाव के अनुसार अमुक सीमा बाधना. To take a vow, to observe certain restrictions in the matter of food etc. (२) ग्रहण करवुं, स्वीकारवुं ग्रहण करना, स्वीकार करना to accept

अभिगेरहहृ. भग० ७, ६,

अभिगिरहहृ नाया० १३, १६; भग० ३, १,

अभिगिरिहस्सामि. भग० ३, १;

अभिगिरहस्सामि. भग० ११, ६,

अभिगिरहहृत्ता सं० कृ० भग० ३, १; ७, ६; नाया० १६;

अभिग्रह पुं० (अभिग्रह) आहारादि ंहोरवा-  
भा दुंडी मर्यादा बांधनी ते, अमुक वेप के रंगने  
भाषुस अमुक स्थितिमां आपे तोलेवु धत्यादि  
नियमधारणे ते आहारादि ग्रहण करने मे मर्यादा  
बाधना, अमुक वेष या वर्ण का मनुष्य अमुक-  
स्थिति में देवे तोही आहारादि लेना इस प्रकार  
का नियम धारण करना Imposing vari-  
ous kinds of voluntary restric-  
tions upon oneself in the matter  
of accepting food etc e g to  
accept food from a person of a  
particular colour etc. नाया० १३,  
१६; ओव० १६, भग० ३, १, ७, ६, उक्त०  
३०, २५, कप्प० ४, ६४, निर० ३, ३, पिं०  
नि० १३८, (२) स्त्री० जेनेो अर्थ अशुभर स-  
भल शक्य तेवी भाषा जिसका अर्थ बराबर  
समझ में आ सके ऐसी भाषा clear and in-  
telligible language पञ्च० ११, (३)  
ग्रहण करवुं, हाथमा लेवु ते ग्रहण करना, हाथ  
में लेना accepting; act of under-  
taking ओव० १६, (४) आग्रह; पकड़  
आग्रह, पकड़, obstinately holding

fast to anything, insistence.  
प्रव० ६०२,

अभिग्रहिय. त्रि० (अभिग्रहिक) कुमतनी  
पकड़ करनार, दुराग्रही, अलिग्रहिक मिथ्यात्व-  
वाणे कुमत की पकड़ करने वाला, दुराग्रही,  
अभिग्रहिक मिथ्यात्व वाला. (One) obsti-  
nately holding fast to a wrong  
doctrine or heretical belief ठ०  
२, १, (२) न० कुमतनी पकड़ करवी ते, अलि-  
ग्रहिक नामे मिथ्यात्व कुमत सवन्धी हठ करना;  
अभिग्रहिक नामक मिथ्यात्व stubborn  
maintenance of heretical faith.  
ठ० २, १, (३) स्त्री० जेनेो अर्थ स्पष्ट  
समझ शक्य तेवी भाषा ऐसी भाषा, जिसका  
अर्थ स्पष्टता से समझ में आ सके lucid  
and perspicuous language. भग०  
१०, ३,

अभिग्रहिय त्रि० (अभिगृहीत-अभि-आभि-  
मुख्येन गृहीत ) जे आपतनेो अलिग्रह  
दीधेल होय ते जिस बाबत अभिग्रह  
लिया हो वह (An object, a matter)  
in connection with which a vow  
is taken or a restriction is  
imposed ' नो कप्पह निगंथाण वा  
निगंथीण वा अणभिग्रहियसिज्जा-  
सरिण्ण ण हुत्तण ' कप्प० ६, ५४;  
—सिज्जासरिण्य त्रि० (-शय्यासनिक )  
जेणे शय्य, आसन ग्रहण कर्या छे ते (साधु)  
जिसने शय्या और आसन ग्रहण किया हो  
वह (साधु) ( an ascetic ) who has  
accepted a seat and a bed कप्प०  
६, ५४;

अभिघट्टियमाण व० कृ० त्रि० (अभिघट्टयमाण)  
वेगथी होइतो वेग से-शीघ्रता से दौड़ता हुआ.  
Running fast; scampering.  
राय० १३१,

अभिघडिज्जमाण व० कृ० त्रि० (अभिघट्ट-  
मान) लुओ 'अभिघट्टियमाण' शब्द देखो  
"अभिघट्टियमाण" शब्द Vide 'अभि-  
घट्टियमाण' राय० १३०;

अभिघाय पुं० (अभिघात) लाडडी वगेरेथी  
प्रहार भारवा ते, गोक्षु वगेरेथी गोणा डेंडवा  
ते लकडी वगैरह से प्रहार करना, गोफन  
वगैरह से गोला फेंकना. Act of giving  
blows with a stick etc, throwing  
missiles by a sling etc परह० १,  
१, कप्प० ३, ४३;

अभिचंद्र. पुं० (अभिचंद्र) अंधकवृष्णि  
राजनी धारणी राजीना पुत्र, डे ने नेमनाथ  
अशु पासे दीक्षा लध, गुणुरयलु तप करी, सोण  
वरसनी प्रवण्या पाणी, ओड भासनेो संभारो  
करी, शत्रुव्य डिपर निर्वाणु पढ पाभ्या अंधक-  
वृष्णि राजा की धारणी नामक रानी का पुत्र,  
जिसने नेमिनाथस्वामी से दीक्षा ली और गुण-  
रयण तप किया तथा सोलह वर्ष तक प्रवण्या  
पालनकर अंत में एक मास का संघारा कर  
शत्रुजय पर निर्वाण प्राप्त किया Name of  
the son of Dhāranī the queen  
of king Andhakavrisni He  
took Diksā from Lord Neminā-  
tha, practised Gunaryan pena-  
nce, observed ascetic vows for  
sixteen years and after one  
month's Santhārā got salvation  
on Śatruñjaya अंत० २, ८, (२)  
अतगड सूत्रना भीज्ज वर्गेना आठमा अध्या-  
यनु नाम अंतगड सूत्र के दूसरे वर्ग के  
आठवें अध्याय का नाम. name of the  
eighth chapter of the second  
section of Antagada Sūtra अंत०  
२, ८; (३) द्विसना छडी मुहूर्तनु नाम  
दिन के छठे मुहूर्त का नाम. name of

the sixth Muhūrta of a day.  
सू० प० १०, सम० ३०; (४) यालु अव-  
सर्पिणीमां भरतक्षेत्रना पंदरमांना दशमा अने  
सातमांना योथा कुलगरनु नाम. वर्तमान अव-  
सर्पिणी काल के पद्रह कुलकरो मे से दसवे और  
सात कुलकरो मे से चौथे कुलकर का नाम  
name of the tenth of the fifteen  
and the fourth of the seven  
Kulagaras of Bharataksetra in  
the present Avasarpinī. जं० प०  
२, २८, सम० १५६, (५) महायण राजनी  
ओड अभियंढ नामथी प्रसिद्ध मित्र  
महाबल राजा का अभिचन्द्र नामक एक प्रिय  
मित्र. name of a beloved friend  
of king Mahābala नाया० ८;

अभिजयंत न० (अभिजयन्त) माणुव गणुथी  
नीक्षेज कुणनुं नाम माणव गण से निकले  
हुए कुल का नाम Name of a family  
descended from Mānavagana.  
कप्प० ८,

✓ अभिजा. धा० I. (अभिजा) नगरथी  
ज्जहार लुं. नगर से बाहिर जाना To go  
out of a town.

अभिजाहिति भ० भग० १५, १;

अभिजाइ. स्त्री० (अभिजाति) कुलीनपणुं,  
आनदानी कुलीनता; खानदानी Nobi-  
lity. उक्त० ११, १३,

अभिजाइअ. त्रि० (अभिजातिग) लुओ  
"अभिजाइग" शब्द देखो 'अभिजाइग'  
शब्द Vide 'अभिजाइग'. उक्त० ११,  
१३;

अभिजाइग त्रि० (अभिजातिग-अभिजाति  
कुलीनतां गच्छतीत्यभिजातिगः) कुलीन, आन-  
दानी. कुलीन, उच्च कुल का. Noble; born  
in a high family. कलहडगरवज्जए, उद्रे  
य अभिजाइगो' उक्त० ११, १३;

✓ अभिजाण धा० I ( अभि+ज्ञा ) ञ्णुं; समञ्जुं जानना; समझना To know, to understand.

अभिजाणंति सू० १, १, २, १३,

अभिजाणामि. उक्त० २, ४०,

✓ अभिजाय धा० I ( अभि+जन् ) ञ्णुं; उत्पन्न थयुं, उपज्जु जन्मना; उत्पन्न होना, To be born.

अभिजायद् उक्त० ३, १७;

अभिजाय-अ त्रि० (अभिजात-अभि-प्रशस्त जातं जन्म यस्य स तथा ) कुलीन, आनन्दन कुलमां ञ्णुं-भेद. कुलीन, उच्च कुल मे जन्मा हुआ Noble, born in a high family भग० ६, ३३, उक्त० ३, १८, ( ३ ) अगीयारसनु नाम, पक्षना अगीयारमा द्विवसनु नाम ग्यारस का नाम, परखाहे की एकादशी तिथि का नाम name of the eleventh day of a fortnight ज० प० ७, १५१, सू० प० १०, ( ३ ) उत्पन्न उत्पन्न born, produced उक्त० १४, ६;—सङ्घ त्रि० (-श्रद्ध ) ञ्णेने श्रद्धा-तत्त्वस्यि उत्पन्न थथ् ढोय ते जिसे श्रद्धा तत्त्वस्यि उत्पन्न हुई हो वह ( one ) in whom a desire for right knowledge has been excited "अभिजायसङ्घे तातं उवागम्म इमं उदाहु" उक्त० १४, ६,

अभिजायत्त न० ( अभिजातत्व ) भूमिदाने अनुसरवारूप सत्यवचनना उप अतिशय-माने अथ भूमिका में कहे हुए वचनों के अनुसार वचन, सत्य वचन के ३५ अतिशयो में से एक अतिशय. One of the thirty-five Atisayas, of truthful speech making a man conform to what he has stated in the introduction. सम० ३५;

✓ अभिजुंज धा० I ( अभि+युज् ) योञ्जुं; ञ्णेञ्जुं. जोड़ना To unite ( २ ) गोक्षयु, क्षमे लगाञ्जुं काम में लगाना, जमाना. to arrange, to employ. ( ३ ) भेटयुं; आदिगन हेयुं मिलना, आलिङ्गन करना to embrace ( ४ ) वश करयु, वशीकरयु प्रयोग करवे वशीकरण प्रयोग करना, वश करना to enchant, to fascinate ( ५ ) विद्यादि सामर्थ्यथी प्रवेश करवे विद्यादि सामर्थ्य से प्रवेश करना to make an entrance by the power given by knowledge or science

अभिजुंजिति परह० १, २,

अभिजुंजित्तए हे० कृ० भग० ३, ५;

अभिजुंजिय सं० कृ० ठा० ३, १, भग० २, ५, दसा० १०, ६,

अभिजुंजिया सं० कृ० सू० १, ५, २, १५, आया० १, २, ३, ८०,

अभिजुत्त त्रि० ( अभियुक्त ) पडित, प्राज्ञ. पण्डित, विद्वान्, प्राज्ञ Learned, wise. नंदी० ( २ ) अपराधी, गुन्हेगार अपराधी, दोषी guilty, accused नाया० १४, अभिजेतुं हे० कृ० अ० ( अभिजेतुम् ) आरे तरङ्ग अत भेगववाने चारों ओर विजय प्राप्त करने के लिये In order to be victorious everywhere ज० प०

अभिज्झा स्त्री० ( अभिध्या ) असतोष, लेल असन्तोष, लोभ Discontent, avarice, greed सम० ५२, ( २ ) विषय चिंतवन, रौद्र ध्यान विषयोंका निरन्तर चिन्तवन, रौद्र ध्यान contemplation of sensual pleasures, wicked concentration परह० १, ३, भग० १२, ५,

अभिजिह्वयत्ता स्त्री० ( अभिध्वेयता-अभिध्यातु योग्योऽभिध्वेयोऽनृततया पुन पुनर-

भिलपणीयस्तद्भावस्तथा ) अतृप्ति; वस्तु भेणववाने वारंवार उद्भवती धृच्छा वस्तु- विशेष को प्राप्त करने के लिये बार बार उत्पन्न होने वाली इच्छा; असन्तोष Restless longing after an object; want of contentment. “ अभिङ्गुयत्ताए अहत्ताए नो उद्भृत्ताए दुक्खत्ताए नो सुहत्ताए एतेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमंति ” पञ्च० २८, भग० १, १; ६, ३;

अभिङ्गुय. त्रि० ( अभिद्रुत ) गर्भाधानादि दुःखी पीडयेत् गर्भाधानादि दुःखों से पीडित Troubled with the pain of pregnancy etc सूय० १, २, ३, १८; नाया० ६, ( २ ) अध्यवसायरूपे व्याप्त अध्यवसायरूप से व्याप्त. pervading through or by the instrumentality of thought activity. सूय० १, २, ३, १८;

✓ अभिङ्गु. धा० I. ( अभि+नन्द ) स्तुति करनी, अभिनन्दन आपवु स्तुति करना, अभिनन्दन करना To praise, to congratulate. ( २ ) अनुमोदन आपवु; भुशी थयुं; समति आपवी अनुमोदन करना, सम्मति देना, खुश होना to support, to give consent to; to be delighted.

अभिङ्गुइ संथा० २६,

अभिङ्गुइति भग० ६, ३३,

अभिङ्गुइज्जा. वि० उत्त० २, ३३;

अभिङ्गुइंत व० कृ० ओव० ३२, भग० ६, ३३,

ज० प० २, ३०; नाया० १, ८,

अभिङ्गुइमाण व० कृ० कप्प० ५, १०४,

अभिङ्गुइज्जमाण. क० वा०

३२, नाया

अभिङ्गुइ पुं० ( अभिनन्द ) आपवु भक्षिनातुं लोकोत्तर नाम श्रावण मास का लोकोत्तर नाम The celestial name of the month of Śrāvana सू० प० १०;

अभिङ्गुइण पुं० ( अभिनन्दन-अभिनन्दते देवेन्द्रादिभिरित्यभिनन्दन ) आपवु अवसर्पिणीमां भरतक्षेत्रना योथा तीर्थकरनुं नाम वर्तमान अवसर्पिणी काल में भरतक्षेत्र के चौथे तीर्थकर का नाम Name of the fourth Tirthankara of Bhartaksetra in the present Avasarpinī अणुजो० ११६; भग० २०, ८; सम० २४;

✓ अभिङ्गुच्च धा० I ( अभि + नृत् ) नृत्ययुं, नृत्य करवु नाचना, नृत्य करना To dance.

अभिङ्गुच्चेज्ज वि० निसी० १७, ३२;

अभिङ्गुय पुं० ( अभिनय-अभिनयति बोधयत्यर्थमित्यभिनयः ) ओगप्लीसगा भक्षिनाथ तीर्थकरना गणधरनुं नाम उच्चीसवे तीर्थकर मक्षिनाथ के गणधर का नाम. Name of the Ganadhara of the nineteenth Tirthankara Mallinātha. सम० प० २३३; ( २ ) अभिनय, भावव्यञ्जक येषाविशेष; नाट्यकलातु प्रधान अंग अभिनय; नाट्यकला का एक प्रधान अंग dramatic gestures, acting ‘चउन्विहे अभिङ्गुए पण्णत्ते, तंजहा-दिट्ठतिण्ण पाडिसुण्ण सामंतो-वण्णिए लोमज्जक्वासिए ‘ जं० प० राय० ६६, जीवा० ३, ४,

अभिङ्गुव. त्रि० ( अभिनव ) नवीन, नूतन; नवु नवीन, नया New; novel जीवा० ३;

अभिङ्गुइय पुं० ( अभिनादित ) आपवु भा-नुं लोकोत्तर नाम श्रावण मास का लोकोत्तर

नाम. The celestial name of the month of Śrārvana ज० प०

अभिलिङ्कत त्रि० ( अभिनिष्क्रान्त )  
 आचारांगादि शास्त्रना अर्थतुं मनन  
 इरवाथी चारित्ररूप परिष्णाम जेतो  
 वृद्धिगत थयो छे ते आचारागादि शास्त्रो  
 के अर्थका मनन करने से जिसका  
 चारित्ररूप परिष्णाम वृद्धि को प्राप्त  
 हुआ है वह Developed in  
 light conduct on account of the  
 study of and meditation  
 upon Śastras like Āchārānga  
 etc आया० १, ६, १, १७६,

√ अभिलिङ्गच्छ धा० I ( अभि+नि+गम् )  
 उद्धार नीकणुं बाहिर निकलना To go  
 out, to stir out  
 अभिलिङ्गच्छति नाया० १६,  
 अभिलिङ्गच्छइत्ता सं० कृ० नाया० १६,

अभिलिङ्गिञ्भ सं० कृ० अ० ( अभिनिगृह्य )  
 रोकीने, अटकावीने, निरोध इरीने रोककर,  
 अटकाकर Having stopped, having  
 restrained आया० १, ३, ३, ११८,

अभिलिङ्गारिया स्त्री० (अभिनिचारिका-अभि-  
 मुखेन नियता चारिकाऽभिनिचारिका )  
 अेकट्टा थधने दिचरवुं ते, समुदायरूपे आ-  
 लवुं ते इकट्टे होकर विचरण करना, समुदाय-  
 रूप से चलना Moving about slowly  
 in a group वव० ४, १६,

√ अभिलिङ्गज्ज धा० I ( अभि+नी- )  
 अगिनय इरवे; अेकटीग इरवी, लाव० य० ४६  
 अेष्टा इरवी अभिनय करना, रंगभूमि पर  
 खेलना To act as in a dramatic  
 performance

अभिलिङ्गज्ज क० वा० राय० २७६,

√ अभिलिङ्गुञ्भ धा० I. (अभि+नि+बुध्-य)

अर्थने निश्चिन रीते ज्ञथुं अर्थ का निश्चित  
 रीति से जानना To know a meaning  
 definitely.

अभिलिङ्गुञ्भइ-ए विशेष० ८१, ६८, नदी० २४;

अभिलिङ्गोह पु० ( अभिनिबोध-अर्थाभिमुखो  
 नियत. प्रतिनियतस्वरूपो बोधो बोध-  
 विशेषोऽभिनिबोध, अभिनिबुध्यतेऽनेना-  
 स्मादस्मिन् वाऽभिनिबोध ) भतिज्ञान; आ-  
 बिनिषेधिक ज्ञान; पाय ज्ञानभानुं प्रथम  
 ज्ञान मतिज्ञान, पाच ज्ञानों मे से प्रथम  
 ज्ञान Matijñāna, knowledge  
 acquired by the five senses and  
 the mind नदी० ( २ ) भतिज्ञाना-  
 वरणीय इर्भने क्षयोपशम मतिज्ञानावरणीय  
 कर्म का क्षयोपशम destruction and  
 subsidence of Kamas which  
 obscure Matijñāna नदी०

√ अभिलिङ्गवट्ट वा० I ( अभि+नि-वृत् )  
 व्यावर्तन इरयु व्यावर्तन करना. To  
 separate, to interrupt.  
 अभिलिङ्गवट्टिजा वि० आया० १, ३, ४, १२५,  
 अभिलिङ्गवट्टिता सं० कृ० भग० ५, ४;

अभिलिङ्गिवट्ट त्रि० ( अभिनिविष्ट ) आग्रही,  
 पडड इरनार, अेक निश्चयवाणे आग्रही, हठी;  
 एक निश्चय वाला Determined,  
 determinate, holding fast to.  
 'बहि विहाराभिलिङ्गिवट्टिचित्ता' उक्त० १४,  
 ४, (२) व्याप्त थधने प्रवेश इरेड, व्याप्तपणु-  
 मज्जुत रीते अेकता पामेल व्याप्त होकर  
 प्रवेश किया हुआ, मजवृत रीति से मिला हुआ.  
 strongly and thoroughly assimila-  
 ted, entered through and  
 through भग० १, ७, १२, ४,

अभिलिङ्गिेस पु० ( अभिनिवेश ) पोटी पातनी  
 पडड, दुराग्रह, पोटी आग्रह इरवे। अमत्य

घात का आग्रह करना, झूठा आग्रह करना, दुराग्रह. Obstnacy in a wrong cause; perverseness. श्रव० ४१,

अभिरिण्वगडा स्त्री० ( अभिनिवगडा-अभि-प्रत्येकं नियतो वगड परिक्षेपो यस्यां साऽभि-निवगडा ) ज्यां दरेडनी ५३५-डेडी-योड-वाड-नुदा नुदा छे येवी ज्या-वसति जहाँ प्रत्येक-हरएक का चौक पृथक् २ है ऐसी जगह-वस्ती A residence with a separate courtyard to the habitation of each person or family वव० ६, १६, ६, १३;

अभिरिण्वदृ त्रि० ( अभिनिर्वृत्त ) सांगो-पाग निपन्नवेतुं; पेशीभाथी अंगोपांगरु पे परिणुत थयेल सांगोपाङ्ग उत्पन्न किया हुआ, पेशी में से अंगोपाङ्गरूप परिणत Developed, produced with all parts in tact आया० १, ६, १, १७६,

अभिरिण्वुड त्रि० ( अभिनिर्वृत्त ) क्रोधादि उपायने टाणी शीतल थयेल; परम शान्ति पाभेद क्रोधादि कषायों को नष्टकर शीतलता को प्राप्त, परम शांति पाया हुआ Calm and happy on account of the banishment of passions ' खंतेभि-रिण्वुडे दंते, वीतगिन्दी सया जए' सूय० १, ८, २५, सूय० १, २, १, १२, ( २ ) पेशी-भाथी अंगोपांगरुपे परिणाम पाभेद पेशी में से अंगोपाङ्गरूप से परिणमित with all limbs fully developed आया० १, ६, १, १७६;

अभिरिण्वड त्रि० ( अभिनि सट-अभिविधिना निर्गता सटास्तद्वयवरूपा केशरिस्कन्धसटा वा यस्य तत्तथा ) जेतो अवयव उडार नीडगेल छे ते. जिसके अवयव बाहिर निकले

हुए हैं वह. With limbs come out, shot out, having limbs come out. भग० १५, १,

अभिरिण्विज्जा स्त्री० ( अभिनिपद्या-अभि दिवसमभिव्याप्य स्वाध्यायनिमित्तमागत निधीदन्त्यस्यामित्यभिनिपद्या ) ज्यां येसीने मुनि दिवसे स्वाध्याय डरे ते वसति, स्वाध्यायभूमिडा जहाँ बैठकर मुनि दिन में स्वाध्याय करें वह वस्ती, स्वाध्याय भूमि. A place of study for an ascetic during day time एगंतओ अभिरि-सिज्जं अभिनिसीहियं वा चेइएतए ' वव० १, २२;

अभिरिण्विदृ त्रि० ( अभिनिसृष्ट ) उडार नीडणतुं पनावेद ऐसा बनाया हुआ जो बाहिर निकला हो Made in a way to jut out or appear prominently. जीवा० ३; राय०

अभिरिण्वेहिया स्त्री० ( अभिनैषेधिकी-निषेधः स्वाध्यायं विना सकलव्यापारप्रतिषेधस्तेन निर्वृत्ता नैषेधिकी, आभिमुख्येन संयतप्रायो-ग्यतया नैषेधिकी अभिनैषेधिकी ) दिवसे स्वाध्याय डरीने रात्रे मुनि ज्या रडे ते वसति. दिन में स्वाध्याय करके रात्रि में मुनि जहाँ रहें वह वस्ती A night-residence of an ascetic after his study during day time. वव० १, २२,

अभिरिण्वसड त्रि० ( अभिनिस्रुत ) उडार नीडणतुं बाहर निकलता हुआ Projecting, coming out prominently. वहिया अभिरिण्वसडओ पभासेति ' भग० १४, ६,

✓ अभिरिण्वसव. धा० I. II ( अभि+नि+सु ) उडार नीडणतु; अरतुं; टपडतु; पसरतु बाहर निकलना; भरना; टपकना, फैलना.



To ooze, to come out, to spread

अभिणुस्सवति जीवा० ३; भग० २, ५;

अभिणुस्सवेंति भग० १५, १;

अभिणुस्सवंति. राय० ५७,

**अभिणूमकड** त्रि० ( अभिनूमकृत-आभि-  
मुख्येन नूमेन मायया कर्मणा वा कृतम-  
भिनूमकृतम् ) भाषा ३३ इर्भथी अलिमुप इरेतुं  
माया या कर्म से सन्मुख किया हुआ Made  
to incline towards by deceit or  
any other action ' अभिणूमकडेहिं  
मुच्छिणु, तिब्वं से कम्मोहिं किच्चति ' सूय०  
१, २, १, ७;

**अभिणु** त्रि० ( अभिन्न ) भेदेतुं नडि, अणु-  
भेदेक्ष, अणु३; आणु अखंड, विना भेदा  
हुआ Not pierced, whole, entire,  
not broken वेय० १, १, ३, ८, नाया०  
८, निसी० २, २४, ६, ११, दसा० ३, ३०, (२)  
णुदुं नडि, ओडीभूत भिन्नतरहित, एकमेक  
same, not separate वव० ६, १०,  
१३, सम० ३३,—आचार पु० (—आचार-  
न भिन्नो न केनचिदप्यतिचारविशेषेण खरिडित  
आचारो यस्यासौ तथा ) अणु३ आचार-ज्ञाना-  
यारादिनो पालन इरनार. अखंड आचार-ज्ञाना-  
चारादि को पालने वाला जीव a soul ob-  
serving right conduct, in all  
respects वव० ३, ३,—**गंठि** पु०  
(—ग्रन्थि ) णेणुग्रंथिभेद इरी ओड वार पणु  
सभडित प्राप्त इरुं नथी ते अणु जिसने ग्रंथि  
भेद करके एक बार भी सम्यक्त्व प्राप्त नहीं  
किया वह जीव a soul that has not  
even once acquired right belief,  
cutting off the knot that binds  
him पंचा० ११, ३८,—**मुहराग** त्रि०  
(—मुखराग ) णेना भोढानो-अहेरानो रंग  
भेदाणो नथी ते जिसके मुख का रंग  
बदला न गया हो वह (one) with the

colour of face unaffected, un-  
changed नाया० ८;

**अभिणुणाय** सं० कृ० अ० ( अभिज्ञाय )  
अणुणीने; समणुते, निर्णुय इरीने जान करके;  
समभ करके, निर्णय करके Having  
known, having decided आया० १,  
६, २, १८३, १, ६, १, १३,

**अभिणुणाय** त्रि० ( अभिज्ञात ) अणुणामां  
आवेक्ष जानने में आया हुआ Known;  
understood भग० ३, ७,

**अभितज्जेमाण** व० कृ० त्रि० ( अभितर्जयत )  
यारे तरइथी तर्जना इरतो चारो ओर से  
तर्जना-भर्त्सना करता हुआ Threaten-  
ing from all sides नाया० १८,

**अभितत्त** त्रि० ( अभितप्त ) अग्निथी तपा-  
वेक्ष अग्नि से तपाया हुआ. Heated by  
fire सूय० १, ४, १, २७,

**अभितप्पमाण** त्रि० ( अभितप्यमान ) इद-  
र्थना पामतो, परिताप पामतो परिताप  
पाता हुआ Being troubled, being  
afflicted with pain सूय० १, ५,  
१, १३,

**अभिताव** पुं० न० ( अभिताप ) तापनी  
रुढाभे, सूर्यनी सन्मुख ताप के सन्मुख, सूर्य  
के सामने, In front of the sun  
आया० १, ६, ४, ४, ( २ ) सताप, दुःख,  
दुःख सताप, दुःख, दाह, जलन, कष्ट.  
agony of mind, distress. सूय० १,  
५, १, १७,

**अभितासेमाण** व० कृ० त्रि० ( अभित्रासयत् )  
त्रास उपणवतो, अथ पमाडतो त्रास देता  
हुआ, भय उत्पन्न करता हुआ Frighten-  
ing, terrifying नाया० १८,

✓ **अभितुर** घा० I ( अभि + त्वर् ) उतावण  
इरती; वेगथी णुं शीघ्रता करना, वेग से

जाना. To make haste; to hasten.

अभितुर. आ० “अभितुर पारं गमित्त्वा”

उत्त० १०, ३४,

✓ अभितोस धा० I. (अभि + तुष् + णि०)  
संतोष उपनयने। संतोष देना. To  
satisfy, to cause satisfaction  
अभितोसइजा वि० दस० ६, ३, ५;

✓ अभित्युग धा० I (अभि + स्तु) स्तुति  
करवी; गुणगान करवा; सन्मुख रही तारीफ़  
करवी स्तुति करना, सन्मुख रहकर प्रशंसा  
करना To praise any body in his  
presence.

अभित्युगति भग० ६, ३३,

अभित्युगामि. विशेष० १०५४;

अभित्युगंत व० कृ० “एवं अभित्युगंतो”

उत्त० ६, ५५, ज० प० २, ३०;

नाया० १, ओव० ३२;

अभित्युगमाण व० कृ० नाया० ८,

अभित्युग्वमाण. क० वा० व० कृ० ओव०

३२, कप्प० ५, १०४,

अभित्युय त्रि० (अभिष्टुत) विशिष्ट गुण  
कीर्तन करी वर्णन विशेष प्रकार के गुण  
कीर्तन करके वर्णित Mentioned with  
appreciation and praised  
“एवं मए अभित्युया” आव० २, ५,

अभिदुग्ग त्रि० (अभिदुर्ग) अतिविषम, गहन  
अतिविषम, गहन Very difficult of  
access, very dense. सूय० १, ५,  
१, ८;

अभिद्दुय त्रि० (अभिद्दुत) दुःखना अध्व-  
वसायरूपे व्याप्त. दुःख के अध्ववसाय द्वारा  
व्याप्त. Pervading in the form of  
painful thought activity. (२)  
गर्वावास आदि दुःखथी पीडयेल गर्मा-

वासादि के दुःख से पीडित troubled by  
the pain of having to stay in  
the womb सूय० १, २, ३, १८; जीवा०  
३, १;

✓ अभिधार. धा० I. (अभि + धृ + णि०)  
निन्दानी धारणा राभी कोचना छिद्र उधाडा  
पाडावा, शत्रुनी रक्षामे छाती डोडी लडवुं.  
निन्दा के भावों से किसीका दोष प्रकट करना,  
शत्रु के सन्मुख छाती ठोककर लडना.  
To disclose the foibles or weak  
points of others with a view  
to cast censure on them;  
to fight bravely against an  
enemy

अभिधारयामो सूय० २, ६, १३,

अभिधारण. वि० उत्त० २, २१; दस० ५, २, २५;

अभिधारण न० (अभिधारण) मनमां धारणा  
धारवी तै; अमुकनी पासे प्रवर्णना लक्ष  
येम मनमा धारणु ते मन में धारणा करना;  
अमुक के पास से दीक्षा लूंगा ऐसी मन में  
धारणा करना Contemplating in the  
mind; e g upon taking Diksā  
from a certain preceptor. ओष०  
नि० १६६,

अभिधारणा स्त्री० (अभिधारणा) गोभ;  
अरुणो; पवन आववाते मार्ग. करोखा;  
हवा आने की खिड़की A sheltered  
window jutting out from a  
building generally below the  
roof, a lattice window. आया० १,  
१, ७, १००,

अभिनन्दण. पुं० (अभिनन्दन) लुणो “अभि-  
रांदण” शब्द देखो “अभिरांदण” शब्द.  
Vide ‘अभिरांदण’ सम० २४;

अभिनन्दिय त्रि० (अभिनन्दित) अलिनन्दन-  
आनंद पाभेद. अभिनन्दन-आनंद पाया हुआ.

Delighted; congratulated  
सम० ५;

अभिनव. पुं० ( अभिनव ) लुओ। ' अभिणव ' शब्द देखो ' अभिणव ' शब्द. Vide " अभिणव " क० गं० २, ३;

अभिनिक्रखंत व० कृ० त्रि० ( अभिनिक्रमत् ) संसार छोडी ँडार नीडणतो, प्रप्रल्या-दीक्षा लेतो संसार छोडकर बाहर निकलता हुआ, दीक्षा लेता हुआ (One) who has abandoned the world and taken to asceticism " चिन्ना अभिनिक्रखंतो, एगतमहिद्विओ भयवं " उक्त० ६, ४; आया० १, ६, १, १७६,

✓ अभिनिक्रखम. धा० I ( अभि + नि + क्रम् ) संसार छोडी ँडार नीडणतुं, प्रप्रल्या लेवी संसार छोडकर बाहर निकलना; दीक्षा लेना To take to asceticism, abandoning the world

अभिनिक्रखमाहि. आ० " आयाणहेडं अभिनिक्रखमाहि " उक्त० १३, २०,

✓ अभिनिवट्ट धा० I ( अभि + नि + वृत् ) भेंथी ँडार डाढतुं, लुहुं पाडतुं खेंचकर बाहर निकालना, पृथक् करना To draw out, to sever

अभिनिवट्टिता स० कृ० सूय० २, १, १६, राय० २६८,

अभिनिवट्टेता स० कृ० भग० ५, ४, ६, १०,

अभिनिवट्टमाण व० कृ० सूय० २, ३, २२,

अभिनिविट्ट त्रि० ( अभिनिविट्ट ) लुओ। " अभिणिविट्ट " शब्द देखो ' अभिणिविट्ट ' शब्द Vide ' अभिणिविट्ट ' भग० १, ७, कप्प० ५, १०७;

✓ अभिनिवेस धा० II. ( अभि + नि + विश् + णि० ) आग्रहपूर्वक डरतुं आग्रहपूर्वक

करना To act with great ardour or attachment

अभिनिवेसए " विसएसु सणुजेसु, पेसं नाभि- निवेसए " दस० ८, २६,

अभिनिवेसिअ-न० ( अभिनिवेशिक ) पोतानुं पयन स्थापवामाटे ड्युडित लगाडी सूत्रनो विपरीत अर्थ डरवो ते; अभिनिवेशिक मिथ्यात्व. अपने वचन को स्थापन करने के लिये कुयुक्ति लगाकर सूत्र का विपरीत अर्थ करना, अभिनिवेशिक मिथ्यात्व Sophistical twisting or distorting of scriptural meaning in order to establish one's own preconceived notion; the heresy called Abhinivesika क० ग० ४, ५४;

अभिनिवुड त्रि० ( अभिनिवृत ) लुओ। " अभिणिवुड " शब्द देखो " अभिणिवुड " शब्द Vide ' अभिणिवुड ' सूय० १, २, १, १२, १, ८, २५,—अच्च त्रि० (—अच्च—अभि निर्वृता अर्चा-शरीरं यस्य तत्तथा ) शरीर सतापरहित शरीर के संताप से रहित free from physical pain आया० १, ७, ६, २२१,

अभिनिससड त्रि० ( अभिनिसृत ) लुओ। " अभिणिससड " शब्द देखो " अभिणिससड " शब्द Vide ' अभिणिससड ' भग० १४, ६,

अभिज्ञाण न० ( अभिज्ञान ) धंधाणु; निशानी निशानी चिन्ह A mark or token of recognition ओघ० नि० ४३६;

✓ अभिपत्थ धा० I ( अभि + प्र + अर्थ ) यायवु, मागवु, प्रार्थना डरवी; धंधा डरवी मागना, प्रार्थना करना, इच्छा करना To request, to ask for; to pray for. अभिपत्थए उक्त० २, ६,

अभिष्पवुद्ध त्रि० ( अभिष्पवुष्ट ) वरसेल;  
वरसाद थयेल. वरसा हुआ. Rained  
'वासावासे अभिष्पवुष्टे बहवे पाणा' आया०  
२, ३, १, १११,

अभिष्पाइयणाम. पुं० न० ( आभिप्रायिक-  
नामन् ) अलिप्राय प्रमाणे पाडेल नाम, गुण  
निरपेक्ष भरल मुळ्य पाडेल नाम, जेम आ-  
भो, ध्यरे धत्यादि. अभिप्राय के अनुसार रखा  
हुआ नाम, गुणों की अपेक्षा न कर इच्छापूर्वक  
रखा हुआ नाम, जैसे आम, कचरा आदि A  
name given without reference  
to the qualities of a thing  
simply at one's will 'से किं तं  
अभिष्पाइयणामे अभिष्पाइयणामे अंबए  
निवुए वकुलए' अणुजो० १३१;

अभिष्पाय. पुं० ( अभिप्राय ) लाव, आशय;  
ध्या, मन्ती धारणा भाव; अभिप्राय,  
आशय; इच्छा, मन की वारणा Intended  
meaning; intention, aim,  
purpose. आया० २, १५, १७६, विशेष०  
२६, पि० नि० भा०४; सु० च० १, ११४;

अभिष्पेअ त्रि० ( अभिप्रेत ) धारेणु; ध्येणुं  
चाहा हुआ, धारा हुआ Desired,  
wished; intended. ' तत्रो काले  
अभिष्पेए ' उक्त० ५, ३१;

✓ अभिभव. धा० I ( अभि + भू ) ङितपुं;  
न्य भेणवपी जीतना, विजय प्राप्त करना  
To conquer, to overpower. (२)  
अलिखव-तिरस्कार धरेवो. तिरस्कार करना  
to insult, to hate; to scorn  
अभिभवे. वि० " सूरौ अभिभवे परं "  
उक्त० २, १०,

अभिभविय. सं० कृ० भग० ६, ३३;

✓ अभिभास. धा० I. ( अभि + भाप् )  
भोलपुं; वातयित धरवी बोलना, वात चीत  
करना. To talk; to speak

अभिभासे आ० आया० १, ६, १, ८;

अभिभूय सं० कृ०अ० (अभिभूय) अलिखव-  
तिरस्कार धरीने अभिभव-तिरस्कार करके.  
Having despised. आया० १, १, ४, ३३,  
१, ५, ६, १६७; सूय० २, १, २६, दस०  
१०, १, १४; परह० १, ३; उक्त० २, १८,

अभिभूय-अ त्रि० ( अभिभूत ) ङिताथेल;  
पराभव पाभेल; धारी गथेल. पराजित,  
पराभव को प्राप्त, हारा हुआ Defeated;  
vanquished, overpowered दस० ६,  
६०; विवा० १, १, ५; ७, ठा० ३, १; उक्त०  
३२, ३०, ( २ ) दु अथी पीडित. दु ख से  
पीडित afflicted with pain or  
misery भग० १५, १; नाया० १; ( ३ )  
व्याप्त थयेल व्याप्त per vaded;  
occupied भग० ६, ३३; १३, ६, नाया०  
१, २, ८, ६; १२; १३, १६, १८;

अभिभूयणाणि पु० (अभिभूयज्ञानिन्-अभि-  
भूय परिपहादीन् मत्यादीनि चत्वारि ज्ञाना-  
नि वा यद्वर्तते ज्ञानं केवलाख्यं तदस्यास्ती-  
त्यभिभूयज्ञानी ) डेयण गानी केवल ज्ञानी  
One possessed of perfect  
knowledge, a Kevalī; an  
omniscient person " से सबदंसी  
अभिभूयणाणी " सूय० १, ६, ५;

अभिमय त्रि० ( अभिमत ) संभत; धष्ट  
सम्मत, इष्ट. Desired, wished;  
acceptable. नाया० १,—अट्ट पु०  
(—अर्थ ) अलिमत अर्थ, धष्ट अर्थ.  
अभिमत-स्वानुकूल अर्थ; इष्ट अर्थ accept-  
able meaning; desired meaning.  
नाया० १;

अभिमाण. पुं० ( अभिमान ) अलिमान,  
अहंकार अभिमान, अहंकार; घमंड. Pride;  
conceit सूय० १, १३, १०,—वद्ध त्रि०

(-बद्ध) अलिमानुं धर, धरो। अलिमान्नी  
अभिमान का खजाना, बहुत अभिमानो  
extremely proud, highly  
conceited सू० १, १३, १०,

अभिमुह त्रि० ( अभिसुख-अभि भगवन्त  
लक्ष्मीकृत्य सुखमस्येति अभिसुख ) स-मु-  
प्यथ्येत्; रक्षाभे, मोटा आगण सन्मुख,  
सामने, मुह आगे In front of, with  
the face; turned towards  
भग० १, १, ३, २, ५, ४, ७, १; ६, ६,  
३३, ११, १०; नाया० १, ८, श्रौव० १२,  
२२, २६, राय० २२, विशेष० १८४,  
कप्प० २, १४, ज० प० ५, ११५, पि० नि०  
३५६,

अभियागम पुं० ( अभ्यागम ) आगमन,  
आवपुं ते आगमन, आना Coming,  
arrival सू० १, १, ३, २,

अभियावराण त्रि० ( अभ्यापन्न-अभिसुख्येन  
भोगानुकूल्येनापन्नो व्यवस्थितोऽभ्यापन्न )  
सावद्य अतुष्टानमा तत्पर थ्येत् पाप कर्मों  
में तत्पर Bent on, intent upon  
sinful performances सू० १, ४,  
२, १४,

अभियोग पुं० ( अभियोग ) आलियोगिड  
देवता, आडर देवता; ताभेदार देवता अभियो-  
गिक जालि का देव; नौकरी करने वाला देव  
An attendant deity, a subordi-  
nate deity भग० ३, ७,

अभियोगिअ त्रि० ( आभियोगिक ) अलि-  
योग-आत्ता-हुडभं उडावनार, ताभेदार हुक्म  
वजाने वाला, सेवक, नौकर Subordi-  
nate. विवा० २,

✓ अभिरक्ष धा० I. ( अभि + रक्ष् ) रक्ष्यु  
कर्युं, अथावपुं रक्षा करना; वचाना. To  
protect, to save  
अभिरक्षड भग० ११, ६; निर० ३, ३,

अभिरक्षत्र त्रि० ( अभिरक्षक ) रक्षा करनीर  
रक्षा करने वाला ( One ) who saves  
or protects भग० ११, ६,

अभिरक्षिज्जमाण व० कृ० त्रि० ( अभिरक्ष-  
माण ) रक्ष्यु करतो रक्षा कराता हुआ Be-  
ings saved or protected नाया० ८,

✓ अभिरम धा० II ( अभि + रम् ) रति-  
कीज करनी, लीला-विलास करवा. फ्रीडा  
करना, लीला-विलास करना To enjoy  
amorous sport, to enjoy  
dalliance

अभिरमइ-ति भग० ५, ४, नाया० २,

अभिरमयंति दस० ६, ४, १;

अभिरमड. आ० सु० च० १, १६;

अभिरमेत्था भू० कृ० नाया० १;

अभिरममाण व० कृ० “ अभिरममाण  
तुट्टा ” परह० १, १, भग० १३, ६, ज०  
प० ५, १२३, नाया० २, ४, ६, १३, १८,

अभिराम त्रि० ( अभिराम ) रमणीय;  
सुंदर, मनोहर, मनोहर रमणीय, मनोहर, खूब-  
सुरत, सुंदर Charming; beautiful.  
“ वाला भिरामेसु दुहावहेसु ” उक्त० १३,  
१७, जीवा० ३, ३, नाया० १; १७; सू०  
प० २०, सम० ३४, पन्न० २, श्रौव० ३०;  
३४, कप्प० ३, ४२, ज० प० ५, ११५,

अभिरुइय त्रि० ( अभिरुचित ) रुयेडु, गभेडु;  
मनपसद थ्येडु चाहा हुआ, मन पसद;  
रुचिपूर्ण Agreeable, liked नाया० १,  
५, भग० ६, ३३, १८, २, नाया० व०

अभिरुज्झ सं० कृ० अ० ( अभिरुध्य ) थारे  
तरुथी रोडीने चारों ओर ने रोककर  
Having obstructed from all  
sides आया० १, ६, १, ३;

अभिरुच त्रि० ( अभिरुच-अभि-प्रतिच्छयं  
नवं नवमिवरुपं यस्य तत्, द्रष्टार द्रष्टारं

प्रत्यभिमुखं न कस्यचिद्विरागहेतुरूपमाकारो यस्य तत् ) क्षणे क्षणे ननु ननु देभाय तेवु सुंदर, जेतां जेतां डेधते डंटाणे। न आवे तेवुं मनोहर. प्रतिक्षण नया नया दिखे ऐसा सुंदर; जिसे देखते देखते थकावट या अस्वचि न हो ऐसा मनोहर Perpetually charming; ever pleasing; never growing stale. " अभिरूवं अभिरूवं पडिरूवं पडिरूव " आया० २, ४, २, १३६, नाया० १, ५; ६, १३; भग० २, ५, १८, ५, राय० २, २२७, ओव० ज० प० १, ३;

अभिरू-ह-वा. ली० ( अभिरू-भ-वा ) मध्यमग्राभनी सातमी मूर्च्छना मध्यम ग्राम की सातवीं मूर्च्छना ( A term in music) the seventh modulation of the middle scale of a musical instrument ठ० ३, १, अणुजो० १२८;

✓ अभिरोय धा० I. ( अभि + रुच् ) रुचि-इच्छी; धृच्छा इच्छी इच्छा करना; चाहना; रुचि करना To desire, to wish; to like

अभिरोयप्. वि० उक्त० ३५, ६;

अभिरोहिय. त्रि० ( अभिरोहित ) रोडाध गयेत; रोडवाभा आवेत् रुक गया हुआ रोका हुआ Obstructed, stopped नाया० ६;

अभिलंघमाण व० कृ० त्रि० (अभिलङ्घमान) उल्लंघन इरतो. उल्लंघन करता हुआ Transgressing नाया० १,

अभिलप्य त्रि० ( अभिलाप्य-अभिलपितुं चोग्यमभिलाप्यम् ) वाणीथी जेनुं इथन थथ शके तेवुं वाणी से जिसका कथन हो सके ऐसा. Expressible in speech विशेष० १५२, ४५२,

✓ अभिलस धा० I ( अभि + लप् ) धृच्छा इच्छी; अलिदापा इच्छी. इच्छा करना; अभिलापा करना. To desire, to long for

अभिलसइ दसा० १०, १; उक्त० २६, ३३, नाया० ६;

अभिलसंति. ओव० ११,

अभिलसमाण. व० कृ० विवा० १;

अभिलसशिज्ज त्रि० ( अभिलषणीय ) धृच्छवा योग्य; अलिदापा इच्छवा योग्य इच्छा करने योग्य Desirable; fit to be desired. दसा० १०, ५, ६;

अभिलाव पुं० ( अभिलाप-अभिलप्यते आ-भिसुख्येन व्यक्तसुख्यतेऽनेनार्थ इत्यभिलाप.) शब्दसंदर्भ. सूत्रपाठ; अदापो शब्दसन्दर्भ; सूत्रपाठ, आलाप Words expressive of a meaning, words as distinguished from the meaning or sense they convey. नाया० १; भग० ५, १, ८, १; १६, ५, १७, १, ३२, २; कप्प० ६, १५१; (२) इडेवुं, इथन इरवुं. कहना, कथन करना to tell, to speak जीवा० १, नाया० ८; भग० ६, ३१, पञ्च० १५, अणुजो० ४६ विशेष० २०६०, ओव० ३४ ज० प० ७, १६१, सू० प० १८; १६; —पुरिस पुं० (-पुरुष) नरजातिना शब्द, जेम-धट ५२; धत्यादि नरजाति वाचक पुल्लिङ्ग शब्द. यथा-घट, पट आदि a word in the masculine gender ठ० ३, १;

अभिलास पुं० ( अभिलाप ) धृच्छा; प्रार्थना, इमना; अलिदापा इच्छा, चाह, कामना A wish; a desire; a prayer, a longing ठ० ४, ३, नंदी० नाया० ६, अणुजो० १३०; पचा० १, १६;

✓ अभिवंद. धा० I ( अभि + वदि ) वादना

ज्यु; दर्शन करवा ज्यु, पगे लागवा ज्यु  
वदन करने को जाना, दर्शन करने जाना,  
पॉत्र पड़ना To go to bow to, to go  
to prostrate at the feet of  
अभिवंदन हे० कृ० “ निजाइस्सामि .

महावीर अभिवंदन ”

श्रौव० २६,

अभिवंदित्तए. ” दसा० १०, १,

अभिवंदना ,, “ महावीरं अभिवंदना ”

श्रौव० ३०,

अभिवदिउं ,, भस० २०;

अभिवंदन न० ( अभिवन्दन ) नमस्कार,  
स्तुति नमस्कार, प्रणाम; रतुति. A bow,  
a salutation; praise. राय० ४२,

अभिवंदित्त त्रि० ( अभिवन्दित ) स्तुति  
करायेल, जेते वदन करेले होय ते जिसकी स्तु-  
ति की गई हो, जिसका अभिवादन किया गया  
हो वह ( One ) praised, ( one )  
saluted. “ नरिंददेविदभिवदिण्ण ”  
उत्त० १२, २१,

अभिवग्गत व० कृ० त्रि० ( अभिवलगत )  
जमीन खोदते जमीन खोदता हुआ Digging  
the ground, scratching the  
earth नाया० ८,

✓ अभिवद्ध वा० II ( अभि + वृद्ध् ) वृद्धि  
पामची, आयाथ थवु, वधवु. वृद्धि पाना,  
आवाद होना, बढ़ना To increase, to  
prosper, to grow

अभिवद्धामि भग० ३, १,

अभिवद्धामो कप्प० ५, १०३,

अभिवद्धेमाण व० कृ० जं० प० ७,

अभिवद्धिय-अ त्रि० ( अभिवद्धित ) अधिक  
मास, अेकत्रीश दिवस अने अेक सेो येवी-  
स या १२१ लागते महिने अधिक मास,  
इकतीस दिन और एक सौ चौबीस या १२१  
भाग का महीना An intercalary

month (२) अधिक मासवाणु वरस, जे  
वरसमां तेर थद्रमास होय ते, ३८३ दिवस अने  
३३३ लागणु वरस जिस वर्ष में तेरह चन्द्र  
मारा हो वह वर्ष, अधिक मास वाला वर्ष;  
अर्थात् ३८३ दिन और ३३३ भाग का एक  
वर्ष an year having an in-  
tercalary month “तेरस उ चदमासा  
एसो अभिवद्धिओ उ नायव्वो ” ज० प० २,  
ठा० ५, ३, सू० प० १२, प्रव० ६०६,  
६०८,

अभिवयण. पु० न० ( अभिवचन ) पर्याय शब्द;  
अने अे अर्थनेो पीने शब्द, जेम-घट, कलश  
धृत्यादि पर्याय वाची शब्द, उसी अर्थ का  
दूसरा शब्द, जैसे-घट, कलश आदि An  
other word of the same mean-  
ing, a synonym “अहम्मत्थिकायस्सण  
भंते! केवइया अभिवयणा प० तं० अहमेत्ति  
वा अघम्मत्थिकाएत्ति वा पाणात्ति वा ”  
भग० २०, २,

अभिवाइऊण सं० कृ० अ० ( अभिवाघ ) प्रणाम  
करने प्रणाम करके Having saluted  
सु० च० ८, ३०३,

अभिवादण न० ( अभिवादन ) लुण्णेो “ अ-  
भिवायण ” शब्द देखो ‘ अभिवायण ’  
शब्द Vide ‘ अभिवायण ’ उत्त० २, ३८,

अभिवायण. न० ( अभिवादन ) पयनथी  
स्तुति करवी वचन में स्तुति करना. Prais-  
ing in words उत्त० २, ३८, ( २ )  
भस्तक नमाडी थरणु स्पर्श करवे ते भस्तक  
नमाकर चरण छूना touching the  
feet ( of a Guru etc ) by bow-  
ing down the head. उत्त० २, ३८,

अभिवायमाण व० कृ० त्रि० ( अभिवावसत् )  
अभिवादन करने प्रणाम करना हुआ Salut-  
ing, bowing to आया० १, ६, १, ८;

अभिवाहरणा. स्त्री० (अभिव्याहरणा) गुरु शि-  
ष्यनी उक्ति प्रत्युक्ति-संवाद न्वाय, संवाद  
गुरु शिष्य की उक्ति प्रत्युक्ति, प्रश्नोत्तर; संवाद A  
dialogue or discussion between  
a Guru and his disciple पंचा०  
२, २६;

अभिवाहार पुं० (अभिव्याहार-अभिव्याहरणा-  
मभिव्याहारः ) द्वाविदश्रुतपरत्वे शिष्य  
रुतो गुसंवाद-संवाद न्वाय कालिक श्रुत  
सम्बन्धी गुरु शिष्य का संवाद A religious  
discussion between a Guru and  
his disciple विशेष ३४१२,

अभिविधि. पुं० (अभिविधि) द्वाविदश्रुतनी  
सर्व तरङ्ग; यारे आञ्ज, किसी भी वस्तु के सब  
तर्फ; चारों ओर Complete compre-  
hension or inclusion " आलोचयणं  
अक्रियं, अभिविहिणा दंसखं तिलिंगेहि "   
पंचा० १५, २,

अभिवृद्धि पुं० (अभिवृद्धि) उत्तरभाद्रपद  
नक्षत्र उत्तरभाद्रपद नक्षत्र The constel-  
lation named Uttarā Bhādra-  
pada जं० प० ७;

अभिवृद्धिस्ता. स० कृ० अ० (अभिवृद्धि)   
वृद्धि इरीने, वधारीने ष्ढाकर Having  
increased; having caused to  
increase. सू० प० १;

अभिसंका स्त्री० (अभिसंका) आशङ्का,  
संशय आशंका, संदेह Doubt; sus-  
picion. " भूयाभिसंकाइ दुगुच्छमाणे "   
सूय० १, १४, २०,

अभिसंकि त्रि० (अभिसंकिन्) शंका राभ-  
नार शका रखने वाला ( One ) doubt-  
ing or suspecting "उज्जु माराभि-  
सकी मरणा पमुच्चति " आया० १, ३, १,  
१०६;

अभिसंग पुं० ( अभिष्वङ्ग ) भाव राग;  
द्रव्यादि प्रतिबंध भाव राग, द्रव्यादि प्रतिबंध.  
Attachment to wealth etc ठा०  
३, ४,

अभिसंजाय. त्रि० (अभिसंजात) इक्षल अण-  
स्थाभाथी पेशीरूपे अनेल कलल अवस्थामें  
से पेशीरूप बना हुआ. Formed in the  
shape of a womb. आया० १, ६, १,  
१०६,

✓ अभिसंधार धा० II. ( अभि + सम् +  
ष्ट + णि० ) संकल्प आधवे, मनमा ध रणा  
इरवी, विचार आधवे संकल्प करना, विचार  
करना, मन में धारणा करना. To  
conceive, to imagine, to think  
अभिसंधारेइ निसी० ६, ८, १६, १७, १७,  
३३,

अभिसन्धिज न० (अभिसन्धिज) बुद्धि के  
धरादापूर्वक इरवाभा आवता क्रियारूपे  
परिणमनार वीर्य, वीर्येना अेक प्रकार वीर्य  
का एक प्रकार, बुद्धिपूर्वक की जाती हुई क्रिया  
के रूप में परिणमने वाला वीर्य The  
vital power which finds ex-  
pression in a volitional act; a  
variety of vital power क० प०  
१, ३,

अभिसंबुद्ध त्रि० (अभिसंबुद्ध) विज्ञानमेण-  
वेल, अध पाभेस बोव को प्राप्त, विज्ञान को  
प्राप्त Enlightened, instructed  
आया० १, ६, १, १०६;

अभिसंभूय त्रि० (अभिसंभूय) प्रादुर्भाव  
पाभेस, प्रगट थयेल जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो  
वह; उत्पन्न, प्रकटीभूत Manifested;  
come to light आया० १, २, ३, १;  
( २ ) वीर्य अने रुधिरना मिश्रणुथी  
इक्षलरूपे थयेल वीर्य और रुधिर के  
मिश्रण में कललरूप बना हुआ formed



into an embryo by the blending of blood and semen आया० १, ६, १, १७८,

अभिसंबुद्ध त्रि० ( अभिसंबुद्ध ) प्रसूती पाभी वधवा मांडेल, न्म पाभी उछरवा मांडेल प्रसूत होकर—जन्म पाकर बढने लगा हुआ Growing and developing in body after birth आया० १, ६, १, १७६,

अभिसमरणाय त्रि० ( अभिसमन्वागत—अभि-अभिसुख्येन सम्यगिष्टानिष्टावधारणतया अन्विति—शब्दादिस्वरूपावगमात् पश्चादागतो ज्ञात. परिच्छिन्नोऽभिसमन्वागत ) सन्मुभ रडेल धृष्टानिष्ट पदार्थोनु अवधारणु डरी शब्दानुसारे न्णुअयेल, शब्दस्वरूप समञ्जने अवधारणु डरेल सन्मुख रहे हुए इष्ट, अनिष्ट पदार्थो का अवधारणकर शब्दानुसार जाना हुआ Known after a proper comprehension of words, (anything) understood after a due and critical knowledge of the words that convey its sense जं० प० ३, ४५, आया० १, ७, ४, २१३, नाया० १४, (२) भणेद, प्राप्त थयेद, परिभोग पछी उपभोगमा आवेद, सन्मुभ आवेद प्राप्त, मिला हुआ, परिभोग के पश्चात् उपभोग में आया हुआ, सम्मुखीभूत obtained, got come towards or in front of come to Upabhoga after Paribhoga नाया० २, ४, ८, १३, राय० ७८, भग० १, ८, ३, १, २, ५, ४, १२, ४, १६, ५, १७, २, (३) न० (अभिविधिना समन्वागतानि सम्प्राप्तानि जीवेन रसानुभूति समाश्रित्योदयावलिकायामागतानि अभिसमन्वागतानि ) आभ्या पछी सर्व तरुथी उदयावलिङ्गमां आवेद, पिपाड यथाऽयाने सन्मुभ थयेद बाधने के बाद चारो ओर से उदयावलि-

का में आये हुए कर्म, फल देने को उद्यत. on the point of maturing, in readiness to mature भग० १, ७, ठा० ४, ३, पत्र० २०,

अभिसमागच्छु. धा० I ( अभि + सम् + आ + गम् ) सन्मुभ आववु, स्थाभे आववु सन्मुख आना, सामने आना To come towards, to come in front of (२) गुणु दोष न्णुवा, समन्वु. गुण दोष जानना, समझना to understand; to come to know the merits and demerits of a thing

अभिसमागच्छइ भग० ५, ६, ७, ६, ३३, नाया० ८,

अभिसमागच्छेज्ज वि० भग० ६, ५,

अभिसमागम्म स० कृ० आया० १, ६, ४, १६, दसा० ५, ४१, ६, ३०;

अभिसमागम पु० ( अभिसमागम—अभि-अर्थाभिसुख्येन सम्यक् संशयाभावेन आ-मर्यादया गमो ज्ञानमभिसमागम ) अलि-अर्था लिमुभपणे, सम्-सम्यक्-सशयरहित, आ-मर्यादासहित, गम-ज्ञान, अर्थात् अर्थविषयक सशयरहित मर्यादापूर्वक ज्ञान; वस्तुपरिच्छेद—निर्णय सशय रहित अर्थविषयक मर्यादापूर्वक ज्ञान, वस्तुनिर्णय A due and full comprehension of meaning freed from all doubts “ तिविहे अभिसमागमे प० तं० उद्गु ग्रह तिरियं जयाण तहास्वस्व समणस्व वा माहणस्स वा अइसेले णाणज्जणे समुपज्जइ से ण तत्पढमयापु उद्गुमभियमेइ तत्रो तिरियं तत्रो पच्छा अहे अहोत्तोण्य दुरभिगमे पन्नत्ते समणाउमो । ” ठा० ३, ४,

अभिसमागय त्रि० ( अभिसमागत ) सन्मुभ आवेद सामने आया हुआ Come towards; come in front of भग० ७, १, अभिसमे धा० I. ( अभि + सम् + इ )

सारी शीते संशयरहित ज्ञानयुं, समन्वु.  
अच्छी तरह से नि संशयपूर्वक जानना, समझना  
To grasp, to understand fully.

( २ ) स-भुष गति इरवी, पासै न्वुं.  
सन्मुख जाना, समीप जाना to go to,  
to go towards

अभिलमेद्-ति. "ददुधु धल नाभिसमेद् तारं"  
उत्त० १३, ३०, नाया० १; मग०  
११, ११,

अभिसमेच्च सं० कृ० ठा० २, १;

अभिसमेच्चा " आया० १, १, ३, २१,  
अभिसमिच्चा., आया० १, ३, ४, १२४; १,  
६, ३ १८५;

अभिसरण न० ( अभिसरण ) स-भुष न्वु  
सन्मुख जाना; सामने जाना To go  
towards, to go in front of.  
परह० १, १,

अभिसरमाण व० कृ० त्रि० ( अभिसरमान-  
अभिसरत् ) सरइते.; गाड धसडीया डरी  
याइते। सरकता हुआ, सरककर चलता हुआ  
Creeping; crawling; moving on  
slowly or feebly नाया० २, विवा० ७,

√ अभिसिंच धा० I ( अभि+सिच् )  
गल्याभिषेड इरवी; पदवी धारणु निमित्ते  
पण्डि सिच्युं राज्याभिषेक करना, पदवी  
धारण करने के निमित्त जल छिटकना  
To sprinkle with water on the  
occasion of coronation

अभिसिंच-ति. मग० ६, ३३, नाया० १२;  
१४; १६, विवा० ६, जं०  
प० २, २०;

अभिसिंचंति नाया० १, ५, ८, १८; विवा०  
३; जं० प० ५, १२१,

अभिसिंचामि नाया० १६;

अभिसिंचामो. नाया० १८,

अभिसिंचेह. आ० नाया० ८; १४,

अभिसिंचेहिति. मग० १५, १,

अभिसिंचित्तु हे० कृ० नाया० १८,

अभिसिंच-चे-इत्ता सं० कृ० नाया० १६; १६;  
मग० ६, ३३;

अभिसिंचित्ता " कण्प० ७, २१०;

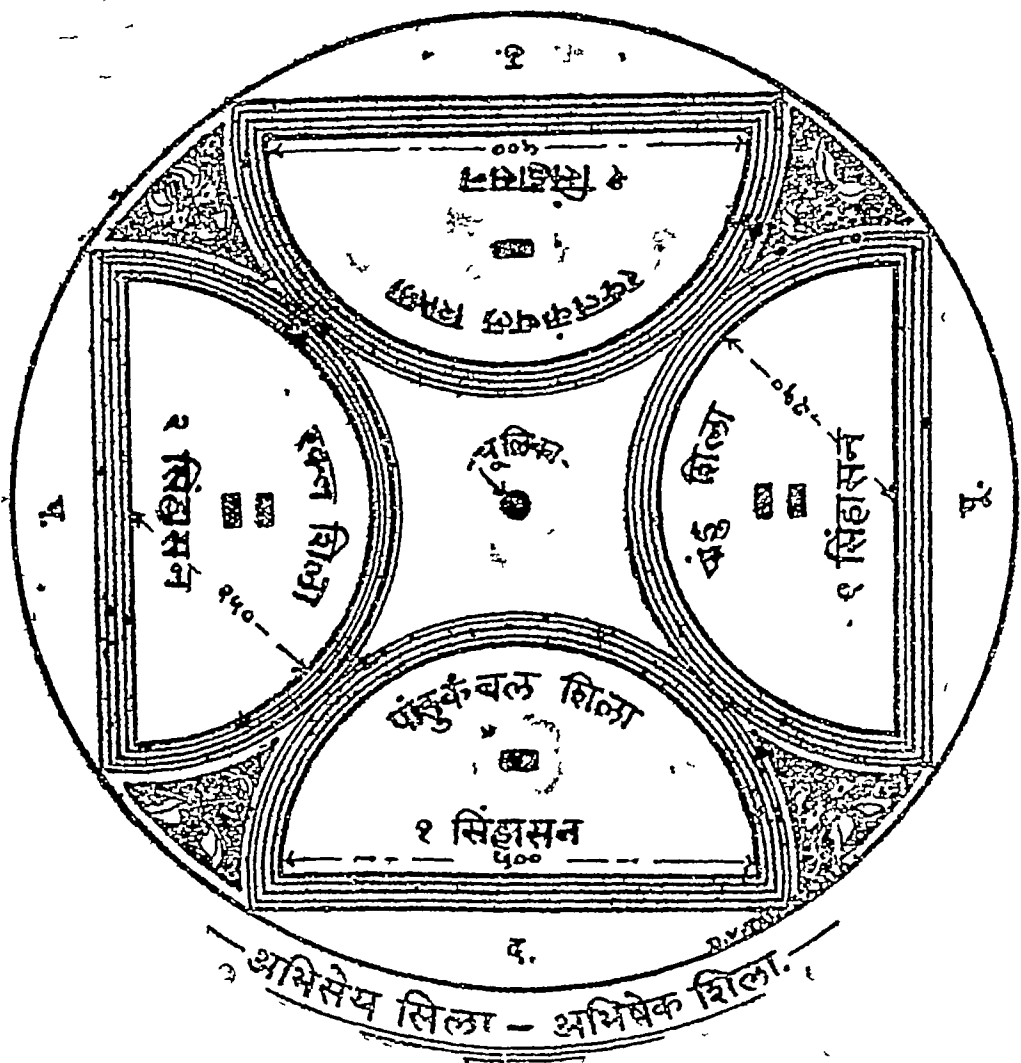
अभिसिंच्यमाण. त्रि० ( अभिसिंच्यमान )  
अभिषेड इरतु अभिषेक किया जाता हुआ  
Being sprinkled with holy  
water at the time of coronation,  
installation etc कण्प० ३, ३६;

अभिसेक. त्रि० ( अभिषेक्य ) अभिषेड इरवा  
योग्य; मुष्य; नायड, पाटवी. अभिषेक करने  
योग्य; मुख्य; नायक, उत्तराधिकारी. Fit to  
be crowned; to be crowned  
in course of time, e. g. an heir-  
apparent, a leader etc "अभिसेक  
हृत्थिरयणं " नाया० १६; निर० १, १;  
निसी० ६, २०;

अभिसेत्र-य. पुं० ( अभिषेक ) सर्व ओपधि  
सहकृत तीर्थना पवित्र न्णथी मंत्रोच्चारपूर्वक  
राज्य आदि पदवीतुं आरोपणु इरवाने म-  
स्तक उपर सिच्युन इरवुं ते, राज्याभिषेकनी  
क्रिया; राज्यागादीये भेसवानी क्रिया-महोत्सव.  
सब ओपधियों सहित तीर्थ के पवित्र जल से  
मंत्रोच्चारपूर्वक राज्य आदि पदवी का आरोपण  
करने के लिये मस्तक सिंचन करने-मस्तक पर  
जल छिटकने की क्रिया; राज्याभिषेक की क्रिया;  
राज्यागादी पर बैठने का महोत्सव Coro-  
nation ceremony, coronation  
festivity, sprinkling holy and  
medicated water on the head  
at the time of coronation मग०  
३, ७; १०, ६, ११, ११; नाया० १; ८;  
अत० ५, १; ज० प० ४, ६०; ५, १२१;  
ओव० ३८; राव० ६५, नंदी० ५६; कण्प०  
१, ४;—अरिह त्रि० (-अर्ह) गल्या, आ-  
यार्थ, उपाध्याय आदि पदवीतो अभिषेड  
इरवाने योग्य-दायड राज्य, आचार्य, उपा-  
ध्याय आदि पदवीयो का अभिषेक करने के  
योग्य fit to be installed as king,

religious head etc नाया० १४,—जल न० (-जल) राज्यादिने अलिपेड इरवानु पवित्र पाणी राज्यादि का अभिषेक करने योग्य पवित्र जल holy water for coronation ceremony “ अभिसेयजलपूषपा ” श्रौव०—ठाण न० (-स्थान) राज्यादि अलिपेड इरवानी जग्या राज्यादि अभिषेक करने का स्थान the place of coronation निमी० १२, ३२,—पेठ पु० (-पीठ) अलिपेडमंडपनी अदर रडेडु अलिपेड इरवानु आन्नेडे अभिषेकमडप के भीतर स्थित अभिषेक करने का पाट-चौकी a square-stool used at the time of coronation ceremony जं० प० ३,

६८,—थंड न० (-भाण्ड) राज्यालिपेडभा भप लागे तेरा उपगणु राज्याभिषेक की क्रिया के उपयोग में आने लायक उपकरण materials used in coronation ceremony राय०—महिसा पु० (-महिमन्) अलिपेडने उत्सव अभिषेकोत्सव coronation festivity, installation or coronation festivity कप्प० ५, ६८,—सभा स्त्री० (-सभा) जग्या राज्यालिपेड थाय ते सला-स्थान जहा राज्याभिषेक होता है वह स्थान the place of coronation “ जेणामेव अभिसेयसभा तेणामेव उवागच्छति ” राय० १६८, ठा० ५, ३, जीवा० ३, ४,—सिला स्त्री०



(-शिला) मेरु पर्वतना पंडग वन उपर आवेली चार अभिषेक शिला, के जेना उपर धंरा तीर्थकर महाराजने। अभिषेक-नवलु करे छे तेमां दक्षिण तरफनी पांडुकंबल शिला उपर भरतक्षेत्रना तीर्थकरने, उत्तर तरफनी रक्तकंबल शिला उपर भरतक्षेत्रना तीर्थकरने, पूर्व दिशानी पांडुशिला उपर पूर्व महाविदेहना तीर्थकरने अने पश्चिम दिशानी रक्तशिला उपर पश्चिम महाविदेहना तीर्थकरने। जन्माभिषेक करवामां आवे छे मेरुपर्वत-के पडगवन की चार अभिषेक शिलाएं, जिनके ऊपर इन्द्र तार्थकरों का जन्माभिषेक करते हैं, उनमें से दक्षिण तरफ की पांडुकंबल शिला ऊपर भरतक्षेत्र के तीर्थकर का, उत्तर तरफ की रक्तकंबल शिला ऊपर भरतक्षेत्र के तीर्थकर का, पूर्व दिशा की पांडुशिला ऊपर पूर्व महाविदेह के तीर्थकर का और पश्चिम दिशा की रक्तशिला ऊपर पश्चिम महाविदेह के तीर्थकर का जन्माभिषेक करने में आता है Four celestial slabs of stone namely Pāndukambala in the south, Raktakambala in the north, Pāndu in the east and Rakta in the west, on which the birth ceremony of the Tīthāṅkaras of Bharataksetra, Navataksetra, eastern Mahāvīdeha respectively is celebrated by Indras These slabs are situate in the Paṇḍaga forest on the mountain Meru “चत्वारि अभिसेयसिलाओ प० तं० पंडुकंबलसिला अतिपंडुकंबलसिला रक्तकंबलसिला अतिरक्तकंबलसिला” ठा० ४, २; जं० प० ५, ११५,

अभिसेजा स्त्री० ( अभिशय्या ) अलिनैषेधि-डीमां दिवसनी के रात्रिनी सजाय करी रात-वासो रही सवारभा मुनि जे जग्यामां आवे ते जग्या अभिनैषधिकी में दिन या रात्रि का स्वाध्याय करके रात्रि में रहने के बाद प्रातः-काल सुनि जिस स्थान में आवें वह स्थान A place a monk comes to in the morning after spending his night in A bhinaisedhikī in study during day or night विशेष० ३४६३-अभिस्संग पु० ( अभिष्वङ्ग ) लुओ “ अभि-संग” शब्द देखो ‘अभिसंग’ शब्द. Vide “ अभिसंग ” ठा० ३, ४, पचा० २, ३४; ६, १८,

अभिहड्ड सं० कृ० अ० ( अभिहृत्य ) पक्ष-कार करीने, जबरदस्ती करीने बलात्कार करके, जबरदस्ती करके. Forcibly, violently, by main force. ‘सेवं वदंतस्स परो अभिहड्डु अंतो पडिगाहंसि’ आया० २, १, १०, ५८;

अभिहड्ड. त्रि० ( अभिहृत ) सन्भुष आणुं, गामभाथी के उदार गामथी लघ रडामे आणुल. सन्मुख लाया हुआ, गाँव में से या गाँव के बाहिर से लाकर सन्मुख किया हुआ. Carried towards; taken to (२,) न० साधुने माटे धैरथी के दुकानेथी उपाश्रयमां लघ आवेल आहारादि आपवाथी साधुने लागतो दोष, उद्गमनना १६ दोषमानो ११ भो दोष साधु के लिये घर से या दुकान से लाकर उपाश्रय में आहारादि देने से साधु को जो दोष लगे वह, उद्गमन के १६ दोषो मे से ११ वॉ दोष a kind of fault incurred by a Sādhu by food being brought to him in Upas h r a y a from a house or a shop ‘उद्देसियं कीयगडं, नि-यागं अभिहडाणि य’ दस० ३, २; भग० ६, ३३;

आया० १, ७, २, २०२; सूय० १, ३, ३, १५,  
श्रोव० ४०, निसी० ३, ५, ६, ४, ११, ८; १४,  
४, १६, ४, पि० नि० ६३, ३०६, पंचा० १३, ६;

✓ अभिहण. धा० I. (अभि+हन्) सन्मुख  
आवता प्राणीने मारवुं, घात करती. सन्मुख  
आते हुए प्राणी को मारना, घात करना To  
kill a living being coming in  
front, to kill.

अभिहणह भग० ५, ६;

अभिहणति पत्र० ३६,

अभिहणामो. भग० ८, ७,

अभिहणिज्ज. वि० आया० २, १, ७, ३७,

अभिहणोज्जा वि० भग० १६, ३,

अभिहणह आ० भग० ८, ७, १८, ८,

अभिहणमाण व० कृ० भग० ८, ७;

१६, ३,

अभिहणण. न० (अभिहनन) सन्मुख आव-  
ताने हल्युं-प्रहार मारवा, रक्षामे लातो  
मारवी, घात करवी सामने आते हुए को  
मारना; सामने लाते मारना, घात करना  
To strike, kick or kill any living  
being coming in front परह० १, १,

अभिहय त्रि० (अभिहत-आभिमुख्येन हतो-  
ऽभिहत) पगथी दृष्यावेक्ष, लात मारेक्ष  
पैरों से दबाया हुआ, लातों से मारा हुआ.  
kicked, trodden under foot.

“अभिहया वृत्तियलेस्सिया” आ० ४, ३,

भग० १४, ८;

अभिहाण न० (अभिधान-अभिधीयते येन  
तदभिधानम्) नाम, संज्ञा नाम; संज्ञा.  
Name, appellation नाया० ७, विशेष०  
२०, प्रव० ६४,—वन्न पुं० (-वर्ण) नामना  
वर्ण-अक्षर नाम के अक्षर. one of the  
constituent letters of a word  
or name पचा० ३, २२;

अभिहिय त्रि० (अभिहित) उक्त, उद्देश.

कहा हुआ Said, expressed प्रव०  
६७४;

अभीह पुं० (अभिजित्) शुभो 'अभिह' शब्द-  
देखो 'अभिह' शब्द. Vide 'अभिह'  
भग० १३, ६; सम० ३, कप्प० ७, २०५;  
जं० प० २, ३३,—पंचम त्रि० (-पञ्चम)  
अभिय नक्षत्रथी पांयमु (उत्तराभाद्रपद) नक्ष-  
त्र अभिजित् से पाचवौ नक्षत्र, उत्तराभाद्रपद  
(a constellation) fifth in order  
from Abhijit, the constella-  
tion named Uttarābhādrapada.  
कप्प० ७, २०५,

अभीय-अ त्रि० (अभीत) भयरहित, डर  
विनातो, निडर निर्भय; डर रहित, निडर  
Fearless उवा० २, ६६, १०३, १०६;  
नाया० १, ८, ६,

अभीरु त्रि० (अभीरु) निडर; सात प्रकारना  
लय विनातो सात प्रकार के भयों से रहित;  
निर्भय Fearless आया० २, १५, १; (२)  
मध्यम आसनी श्रेष्ठ भूर्च्छना मध्यम ग्राम  
की एक मूर्च्छना. a modulation in the  
middle scale of a musical  
instrument ठ० ७,

अभुंजमाण व० कृ० त्रि० (अभुञ्जान) भोजन न  
करते। भोजन न करना हुआ. Not eating  
or dining पंचा० १६, १२;

अभुंजित्ता स० कृ० अ० (अभुक्त्वा)  
अनुभोगवीने, भोगव्या वगर विना भोगे.  
Without having enjoyed.  
or suffered ठ० ३, २,

अभुञ्चा. स० कृ० अ० (अभुक्त्वा) खाया  
विना, भोगव्या विना. विना खाये, विना भोगे.  
Without having eaten or  
enjoyed आया० १, ६, १, ११,

\*अभुञ्जिर त्रि० (अभ्रशनशील) भुलना  
नहि; अश्रुपलित. जो भूल करने वाला या

चूकने वाला न हो वह; अस्खलित Infallible, not likely to commit a mistake सु० च० ४, २८०;

अभूअ-य त्रि० (अभूत) असद्भूत; न यत्नेषुं न बना हुआ; असद्भूत. Not taken place, not come into existence सम० ३०, दसा० ६, ६; विशेष० १८४;

अभूइ स्त्री० (अभूति) भूति-संपद्दने अभाव संपत्ति का अभाव. Absence of wealth or prosperity दस० ६, १, १,—भाव पुं० (-भाव) ज्ञानरूपी संपद्दने सद्भाव नहि ज्ञानरूपी संपत्ति का अभाव absence of wealth of knowledge 'सा चेव ओ तस्स अभूइभावो' दस० ६, १, १,

अभूयाभिसंकरा पु० (अभूताभिशङ्कन-न भूतान्यभिशङ्कन्ते यस्मात् स तथा) भूतोने लय न आपनार, जेनाथी प्राणीओ भीओ नहि ते, प्रशस्तवाणीविनयने ओइ प्रकार जिससे प्राणी न डरें वह, प्रशस्त वाणीविनय का एक भेद. (One) who is not a source of fear to living beings, a variety of reverential speech ठा० ७, भग० २५, ७,

अभेज्ज त्रि० (अभेद्य) न भेदी शक्य तेवु, धणु मज्जत्त, अभेद्य अभेद्य; जो भेदा न जा सके वह; बहुत मज्जत्त. Very strong, impenetrable भग० २०, ५, ठा० ३, २,—कवच पुं० (-कवच-अभेद्य कवचो यस्य स तथा) अभेद्य-मज्जत्त इत्ययवाणे अभेद्य-मज्जत्त कवच वाला (one) having an impenetrable armour. ज० प० ३, ५२, ५५, भग० ७, ६;

अभेद्य. पुं० (अभेद्य) इभतु उद्धवन न इरुं ते, अनतिक्रम अनतिक्रम, कर्म का उल्लघन न करना Sameness, non-transgression. विशेष० ६४३,

अभेल त्रि० (-अभीर) निर्भय; निडर भय रहित; निडर Fearless ज० प० ३, ५७;

अभोज्ज त्रि० (अभोज्य) भोगवदा योग्य नहि. न भोगने योग्य Unfit to be enjoyed नाया० १६;

अमइ स्त्री० (अमति) मति-युद्धिने अभाव. बुद्धि का अभाव. Lack, absence of intellect विशेष० १०६;

अमइल त्रि० (-अमलिन) स्वच्छ; निर्मल; मेध विनाशुं मलिनता रहित, स्वच्छ, साफ, विना मैल का Free from dirt; pure; clear नाया० ११, परह० १, ४,

अमंगल. न० (अमङ्गल) अमंगल-अनिष्ट मंगल-शुभ का अभाव, अशुभ, अनिष्ट Inauspicious; evil परह० १, २;—निमित्त त्रि० (-निमित्त) अमंगल-अनिष्ट सूचक अगस्पृश्यादिक. अमङ्गलसूचक, अशुभसूचक अङ्गस्फुरणादिक निमित्त of evil omen (throbbing of limbs etc) indicative of an evil. परह० १, २,

अमंगलत्ता. स्त्री० (अमङ्गलता) अमंगलपणुं; अमङ्गलपना; अशुभपना Inauspiciousness. विशेष० १५;

अमग्ग पुं० (अमार्ग) मिथ्यात्व, इपाय आदि अ-मार्ग मिथ्यात्व, कपाय वगैरह, आत्मा का अहित करने वाला मार्ग A wrong path, e g of heresy, evil passion etc. "अमग्गं परिचाणामि मग्ग उवसपण्णामि" आव० ४, ८,

अमग्घाय पु० (अमाघात) लुओ 'अमाघाय' शब्द देखो 'अमाघाय' शब्द. Vide "अमाघाय" उवा० ८, २४१; परह० २, १,

अमच्च. पुं० (अमात्य) प्रधान; मंत्री, दिवान, राजपते डारलार यथावता मंत्री; दीवान;

प्रधान, राज्य का मुख्य कारोबार करने वाला  
A minister; an administrator  
of a state नाया० १, ८, १२, १४, विवा०  
४, ६, राय० २५३, ओव० अणुजो० ६६,  
परह० १, ४, संथा० ८०, विशेष० ६२८,  
कप्प० ४, ६२; सु० च० ११, ५६,

अमच्छर त्रि० ( अमत्सर ) मत्सर-ईर्ष्या  
विनातो; पारडा गुणुने सहन करनार मत्सर-  
ईर्ष्या के अभाव वाला, दूसरे के गुणों को सहन  
करने वाला Free from jealousy  
सम० प० २३६,

अमच्छरि त्रि० ( अमत्सरिन् ) मत्सर  
रहित, परगुणुग्राहक मत्सर रहित, दूसरों के  
गुणों को प्रहण करने वाला Free from  
malice or jealousy परह० १, ४;

अमच्छरियत्ता स्त्री० (अमत्सरिकता) शुभे  
'अमच्छरियया' श०६ देखो 'अमच्छरियया'  
शब्द Vide "अमच्छरियया". ओव० ३४,  
भग० ८, ६,

अमच्छरियया स्त्री० (अमत्सरिकता) मात्सर्य-  
ईर्ष्या का अभाव, पारडा गुणु सहन करवा ते  
मत्सरता-ईर्ष्या का अभाव, दूसरों के गुणों को  
सहन करना. Absence of malice or  
jealousy. ओव० ३४, भग० ८, ६,

अमज्जमंसासि. त्रि० ( अमज्जमासाशिन् )  
भक्षित अने मास न वापरनार मदिरा और  
मास का सेवन न करने वाला, मद्य और मास को  
व्यवहार में न लाने वाला. ( One )  
abstaining from wine and flesh  
सूय० २, २, ३८,

अमज्ज त्रि० ( अमज्ज-नास्ति मध्य यस्मिन्  
तत् ) मध्य विनातु, जेभा जे भाग न थछ  
शेठे तेषु मध्य रहित, जिसमे दो भाग न हो  
सकें ऐसा. Having no middle part,  
incapable of being divided into  
two or more parts. " तत्रो अमज्जा

प० तं० समणु पणुसे परमाणु " ठा० ३, २,  
भग० ५, ७, २०, ५,

अमण. न० ( अमन ) ज्ञानुते; आंतरिक  
निर्णय जानना, आन्तरिक अथवा मानसिक  
निर्णय Knowing, mental decision  
ठा० ३, ४, ( २ ) अत, अवसान अन्त,  
आखिर, अवसान end विशेष० ३४५३,

अमण न० ( अमनस् ) विचारशून्य मन.  
विचारशून्य मन Vacant mind, mind  
void of thought " तिविहे अमणे  
प० तं० शोतम्मणे शोतयन्नमणे अमणे " ठा०  
३, ३, ( २ ) असज्जी, मन विनातु असज्जी, मन  
रहित devoid of the possession  
of a mind क० प० १, १६, क० ग० ५,  
५०, प्रव० ११२५,—तिरिय त्रि०  
( -तिर्यच् ) असंज्ञी तिर्यय असज्जी तिर्यच  
sub-human living beings devoid  
of consciousness प्रव० ११२५,

अमणक्ख त्रि० ( अमनक्क ) मननी प्रवृत्ति  
रहित मन की प्रवृत्ति रहित Devoid of  
mental activity सूय० २, ४, २,

अमणाम त्रि० ( अमनाम-अमनआप-न कदा-  
चिदपि ग्राह्यतया जन्तूनां मनांसि आप्पोती-  
त्यमनआपम् ) मनने ग्राह्य न थाय ते, दुभेश  
मनने अप्रिय लागे तेषु, मनने प्रतिदूल मन  
को जो ग्राह्य न हो वह, जो सदा मन को अप्रिय  
लगे, मन के प्रतिकूल Disagreeable to  
the mind, distasteful नागा० १,  
१६, जीवा० १, पन्न० २८, भग० १, ५; ७;  
३, २, ७, ६, ६, ३३, ज० प० २, ३६,

अमणाम त्रि० ( अमनोअ-न मचमा अम्यते  
गयते पुन पुन स्वरणतो वत्तदमनोमम् )  
मनने अत्यंत अनिष्ट मन को अत्यंत अनिष्ट  
Most disagreeable to  
the mind भग० १, ५,—स्तर  
पु० ( -स्तर ) अप्रिय स्व०-अवा०,

मनने अणुगमतो स्वर मनोहरता रहित स्वर;  
अप्रिय स्वर; मन को न रुचने वाला स्वर.  
unpleasant sound, harsh voice.  
भग० १, ७;

अमणामतर. त्रि० (अमनआपतर) मनने अति-  
शय अणुआमणु मन को अत्यंत अप्रिय.  
Highly displeasing to the  
mind. नाया० १२; १६;

अमणामत्ता. स्त्री० (अमनोमता ) मनने  
अनिष्टपणुं; मननी प्रतिदूशता. मन का प्रति-  
कूलपना; मन का अनिष्टपन Disagree-  
ableness to the mind; mental  
disrelish भग० ६, ३;

अमणुण्ण. त्रि० (अमनोज्ञ-मनसोऽनुकूलं  
मनोज्ञं न मनोज्ञममनोज्ञम्, अथवा न मनसा  
ज्ञायतेऽसुन्दरतया इत्यमनोज्ञम् ) मनने गम-  
तुं नहि; मनने आनंददायक नहि, अशोभन,  
असुंदर, अनिष्ट; मनने प्रतिदूष मन को जो  
अप्रिय हो वह, मनोहरता रहित; अनिष्ट; अशो-  
भन; मन के प्रतिकूल. Not agreeable  
to the mind, not charming,  
ugly. पञ्च० २८; श्रव० २०; निसी० ७,  
२७; सूय० १, १, ३, १०; नाया० १; १२;  
१६; जीवा० १; भग० १, ५, ७; ३, २; ६,  
३; ६, ३३; २५, ७; ज० प० २, ३६;  
—पाणियग. न० (—पानीयक ) अनिष्ट-  
अराय पाणी; न पीवा योग्य पाणी  
खराब पानी; न पीने योग्य जल bad  
water; water unfit for drink-  
ing purposes. भग० ७, ६;—स्तर.  
पुं० (—स्वर ) अराय स्वर: अभधुर अवाञ्  
अनिष्ट-खराब स्वर bad voice, harsh  
voice. भग० १, ७,

अमणुण्णतर. त्रि० (अमनोऋतर) अतिशय  
अमनोज्ञ-अनिष्ट अत्यन्त अनिष्ट-अमनोज्ञ.

Highly disagreeable; highly  
unpleasant विवा० १, १,

अमणुस्स पुं० (अमणुष्य) मणुष्य नहि ते; देवता  
आदि. जो मणुष्य न हो वह; देव वगैरह. Not  
man, 1 e. gods etc. नदी० (२) नपुंसक.  
नपुंसक an impotent भग० ८, ६;

अमत. न० (अमृत) सुधा; अमृत अमृत.  
Nectar नाया० १; (२) क्षीरोदधि समुद्रतुं  
अणु. क्षीरोदधि समुद्र का जल. water of  
the Ksīrodadhī ocean जीवा० ३, ४;  
अमत त्रि० (अमत) संमत नहि, अमान्य.  
असम्मत; अमान्य Not assented to;  
not acceptable. भग० १८, ७;

अमति. स्त्री० (अमति) दुमति, दुशुद्धि.  
कुबुद्धि, दुर्मति Wickedness of thou-  
ght “समाययन्ति अमति गहाय ” उक्त०  
४, २,

अमत्त न० (अमत्र) पात्र; लालन. पात्र, वरतन;  
भाजन A vessel, a utensil सूय० १,  
६, २०, श्रव० १७;

अमम त्रि० (अमम-नास्ति मम ममत्वं यस्य स  
तथा ) डार्ध पणु वस्तु उपर ञेने मारापणुं  
नथी ते; ममत्वरहित; निर्दोषी किसी भी  
वस्तु पर जिसका ममत्व नहीं है वह Self-  
less, free from attachment to  
any object, free from greed.  
श्रव० १०, १७; दस० ६, ६६; ८, ६४, भग०  
६, ७; ( २ ) अणुद्वीपना भरतक्षेत्रमां  
आवती येवीसीमां थनार पारमा तीर्थकर.  
जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र में आगामी चौवीसी में  
होने वाले बारहवें तीर्थकर the would-  
be twelfth Tirthankara in the  
coming Chovīsi in the Bha-  
rataksetra of Jambūdvīpa अंत०  
५, १; सम० प० २४१, प्रव० २६६, ( ३ )  
दिवसना २५ भा मुद्गर्पणुं नाम. दिवस के



२५ वें मुहूर्त का नाम name of the twenty-fifth Muhūrta of a day जं० प० २, २५; ७, १५२, सू० प० १०; ( ४ ) देवकुरु, उत्तरकुरुना जुगलिया मनुष्यनी अेक जत देवकुरु, उत्तरकुरु के युगलिया मनुष्यों की एकजाति a species of the Jugalyās of Devakuru, Uttarakuru. जीवा० ३, ४,

अममायमाण व० कृ० त्रि० (अममीकुर्वत्) भारं भारु न इरतो, वस्तु उपर ममत्व न राभतो किसी भी वस्तु पर ममत्व न रखता हुआ, "यह वस्तु मेरी है, वह वस्तु मेरी है" इत्यादि न कहता हुआ. Not saying "mine, mine," not attached to any thing. आया० १, २, ५, ८८,

अममगा. स्त्री० (अमन्मना) अरुणित-२५४ वाणी, जेभां अयथाय नहि-उयथा न भाय-मभम थाय नहि तेनी वाणी अस्खलित-स्पष्ट वाणी, धाराप्रवाह वाणी, जिसमें अटके नहीं ऐसी वाणी Uninterrupted clear speech, distinct, unstammering speech ओव० ३४,

अमय त्रि० (अमत) लुओ 'अमत' शब्द देखो 'अमत' शब्द Vide 'अमत' पि० नि० १६४;

अमय न० (अमृत) लुओ 'अमत' शब्द देखो 'अमत' शब्द Vide "अमत" उत्त० १७, २१; नाया० १, राय० ६२, भक्त० १६७, पचा० ३, १२,—कलस पु० (—कलश) अमृते ज्यै धडे अमृत से भरा हुआ घडा. a pot full of nectar नाया० ६,—फल. न० (—फल) अमृतोपम फल, अतिश्वादृष्ट फल अमृत के समान फल, अतिशय स्वादिष्ट फल a nectar like fruit a very delicious fruit

नाया० ६,—मेह पु० (—मेघ) भरत आदि क्षेत्रमा उत्सर्पिणीना पीजे आरे ज्येसतां सात दिवस सुधी ज्येथे वरसाद वरसे तेनु नाम भरत आदि क्षेत्रों में उत्सर्पिणी के दूसरे आरे का-दूसरे कालविशेष का प्रवेश होते ही सात दिनों तक जो चौथी वर्षा हो उसका नाम the fourth shower of rain lasting seven days at the commencement of the second aeon of Utsarpini in Bhrataksetia etc जं० प० २, ३८,—रस पु० (—रस) अमृतरस अमृतरस nectar पंचा० १६, १०; —रसायण न० (—रसायन-अमृतमिव रसायनं जराव्याधिहरौषधममृतरसायनम्) अमृतरूप रसायण, हितकारी अमृतरूप रसायन हितकर an elixir prolonging youth and life like nectar, anything wholesome गच्छा० ४५,—वल्ली स्त्री० (—वल्ली) अमरवेद. अमरवेल, एक लता-विशेष a kind of creeper प्रव० २४०,—वास पु० (—वर्षा) तीर्थंकरना अम आदि प्रसंगे देवता वृष्टि करे ते. तीर्थंकर के जन्मादि के समय देवगण जो वृष्टि करते हैं वह a shower of rain sent by gods at the time of the birth of a Tirthankara आया० २, १५, १७६;

अमयघोस पु० (अमृतघोष) डाडडी नगरीना अेक प्राचीन राजा, डे जे स० म लध परम पद पाभ्यो डतो काकंदी नगरी का एक प्राचीन राजा, जो कि सयम लेकर परम पद-मोक्ष को प्राप्त हुआ Name of an ancient king of a city named Kākandī who became a monk and attained to Moksa संत्या० ७५,

अमर पुं० (अमर) देवता, देव देवता, देव. God. क० ग० १, १८, प्रव० १३३३;

पन्न० २, परह० १, ४, ओव० २१,  
 ( २ ) ऋषभदेवस्वामीना तेरमा पुत्रनु  
 नाम. ऋषभदेवस्वामी के १३वें पुत्र का नाम  
 the name of the thirteenth son  
 of R̥ṣabhadeva Svāmī कप्प०७,(३)  
 सिद्ध भगवान् सिद्ध परमेष्ठी, सिद्ध भगवान्  
 soul that has obtained salvation  
 “इमस्स चेष पडिबूहणट्ठाए अमराय महा-  
 सट्ठी” आया० १, २, ५, ६४, ओव०—इंद्र  
 पु० (—इन्द्र ) देवतानो ध्र, देवतानो राज.  
 देवों का इन्द्र—राजा a king of gods चउ०  
 १०,—ईस्सर पु० (—ईश्वर) देवतानो ईश्वर-  
 ध्र. देवों का ईश्वर—इन्द्र the lord of gods,  
 viz Indra प्रव० १४६६,—तिरिआउ.  
 न० (—तिर्यगायुप्) देवता अने तिर्ययनु आयुष्य  
 देवता और तिर्यच का आयुष्य the life  
 period of gods and sub-human  
 living beings क० ग० ५, ५२,—अ-  
 च्चण न० (—अचन ) देवताना विमान,  
 स्वर्गलो० देवों का विमान, स्वर्गलोक  
 abodes of gods heaven दस०  
 ४, २८,—वइ. पुं० (—पति) देवतानो ध्र.  
 देवों का इन्द्र king of gods, Indra of  
 gods भग० ३, ८, पन्न० २, ज० प०—वर  
 पुं० (—वर) महद्विद्धि देव महद्विकदेव a  
 god of great wealth and power  
 तंड०—सुह. न० (—सुख) देवतानुं मुष्प  
 देवताओं का सुख, happiness of  
 gods. आव० ४,

अमरकंका ली० ( अमरकंका ) द्रौपदीनु  
 डरणु डरनार धातकी ऋउना पद्मेत्तर  
 राजनी मुष्प राजधानी द्रौपदी का  
 हरण करने वाले धातकी खंड के राजा  
 पद्मेत्तर की मुख्य राजधानी. The capital  
 of Padmottara king of Dhāta-

ki Khanda who had kidnapped  
 Draupadi नाया० १, १६,

अमरजिअ. पुं० ( अमरजीव ) अमरकुमारतो  
 एव, डे ले आवती येवीसीमां त्रेवीसमा  
 अनंतवीर्यनामे तीर्थंकर थशे अमरकुमार  
 का जीव, जो आगामी चौवीसी में अनन्तवीर्य  
 नाम का २३ वॉ तीर्थंकर होगा. The soul of  
 Amarakumāra which will take  
 birth as the 23rd Tirthankara  
 Anantavīrya by name, in the  
 coming Chovīsī (cycle of time).  
 प्रव० ४७५,

अमरवइ. पु० ( अमरपति ) ज्ञातवंशतो  
 ओड कुमार, डे लेले मल्लीनाथ प्रभु साथे  
 प्रवज्या लीधी ज्ञातवंश का एक कुमार,  
 जिसने मल्लीनाथ प्रभु के साथ दीक्षा ली थी A  
 prince of Jñāta dynasty who  
 entered the order of asceticism  
 with Mallinātha नाया० ८,

अमरसेण. पु० ( अमरसेन ) ज्ञातवंशना ओड  
 कुमार, डे लेले मल्लीनाथनी साथे प्रवज्या  
 लीधी ज्ञातवंश का एक कुमार, जिसने कि  
 मल्लीनाथ के साथ दीक्षा ली. A prince of  
 the Jñāta race who entered  
 monkhood with Mallinātha  
 नाया० ८;

अमरिस पुं० ( अमर्ष ) ईर्ष्या, असूया; अदे-  
 ष्याई ईर्ष्या, अदेखाई. Jealousy, envy.  
 भग० ३, २, १५, १. ( २ ) डोप, रोप; अ-  
 सहनशीलता कोप- रोप, सहनशीलता  
 का अभाव anger; impatience,  
 परह० १, ३; विशेष० १६०६; ( ३ ) महा-  
 द्वाग्रह बहुत अधिक मगडा. deadly  
 strife. “ ईसा अमरिस अतवा ”  
 उक्त० ३४, २३,

अमरिसण त्रि० ( अमर्षण ) अपराध सहन  
 नहि डरनार, अपराधी उपर क्षमा न राप्-

नार अपराध सहन न करने वाला, अपराधी के ऊपर क्षमाभाव न रखने वाला Unforgiving परह० १, ४. सम० प० २३६, अमल त्रि० ( अमल ) निर्मल, स्वच्छ निर्मल, साफ Pure, clear राय० ४७, ( २ ) पु० ( न विद्यते मल कर्म यस्यासावमल ) सिद्ध भगवान् सिद्ध भगवान् one free from the bondage of Karma, a Siddha प्रव० १२५४, ( ३ ) ऋषभदेवस्वामीना सातमा पुत्रनु नाम ऋषभदेवस्वामी के सातवें पुत्र का नाम name of the seventh son of Risabhadeva कप्प० ७,

अमला स्त्री० ( अमला ) शक्रेन्द्रनी पायमी अथ-भडिपीनु नाम शक्रेन्द्र की पाँचवीं पटरानी का नाम Name of the fifth principal queen of Sakiendra ठा० ४, २, भग० १०, ५,

अमवस्सा स्त्री० ( अमावस्या ) अभावास, कृष्ण पक्षने छेले दिवस अमावस, कृष्ण पक्ष की अन्तिम तिथि The 15th day of the dark half of every lunar month "अमवस्सपडिवयाहि" पंचा० १६, २०,

अमहग्घय त्रि० ( अमहार्घक-सहती अर्घा मूल्यं यस्यासौ महार्घः, न महार्घोऽमहार्घ स एवामहार्घक ) अहु मूल्यवानुं नडि, सस्तुं, थोडी डिम्भतनु, डलकुं. सस्ता, थोडी कीमत वाला, हलका Cheap, of small value or price "अमहग्घए होइ हु जाणएसु" उक्त० २०, ४२,

अमहद्धण त्रि० ( अमहाधन ) लुओ। 'अमहग्घय' शब्द देखो 'अमहग्घय' शब्द Vide "अमहग्घय" पंचा० १७, १३,

अमाइ त्रि० ( अमायिन्-न मायाऽस्यास्तीत्य-मायी ) माया-कुटिलता रहित, सरल; विश्वास-पात्र माया-कुटिलता रहित. सरल, विश्वास-पात्र Free from guile, guileless "अलोलुए अकुहए अमाई" दस० ६, ३, १०, भग० ३, ४, ५, उक्त० ११, १०. पंचा०

१५, १२,—रूच त्रि० (—रूप-अमायि रूपं यस्यासावमाथिरूप ) सर्वथा मायारहित सर्वथा माया-रूप से रहित perfectly free from guile, perfectly guileless "एगतदिट्ठी य अमाइरूवे" सूय० १, १३, ६,

अमाइल्ल त्रि० ( अमायाविन् ) मायारहित छल कपट रहित Free from guile or deceit आया० १, ६, ४, १६,

अमाइल्लया स्त्री० ( अमायावित्ता ) मायानो अभाव, मायानो त्याग इरवे माया-छल कपट का अभाव Guilelessness, freedom from deceit ठा० १०, १०,

अमाघाय पु० ( असाघात्-सा लक्ष्मीः सा च द्वेषा धनरूपा प्राणरूपा च तस्या घातो हनन तस्याभावोऽसाघात् ) चोरी न इरवी ते, छेपने भारनुं नडि ते, अमारी चोरी का न करना, किसीको न मारना Absence of killing or stealing or both "तएण रायगिहे नयरे अन्नयाकयाइं अमाघाए घुट्टे यावि होत्था" उवा० ८, २४१, परह० २, १,

अमाणत्त न० ( अमानत्व ) अमानिपणुं, मानने अभाव मान का अभाव Absence of conceit भग० १, ६,

अमाणुस त्रि० ( अमानुष ) मनुष्य संधी नडि, मनुष्य शिवायनुं जो मनुष्य सम्बन्धी नहीं वह Not human, pertaining to things, not human "अमाणुसासु जोणिसु, विण्हम्मति पाणिसो" उक्त० ३, ६,

अमाणुस्सअ त्रि० ( अमानुषक ) मनुष्य संधी नडि, मनुष्य शिवायनुं जो मनुष्य सम्बन्धी नहीं वह, मनुष्येतर Pertaining to things not human सम० ३०;

अमाय त्रि० ( अमाय ) मायारहित माया रहित. छल कपट रहित Free from guile or deceit आया० १, १, ३, १८, अमार्यत व० क० त्रि० ( अमात् ) न माते, न समाते न समाता हुया Incapable of being contained हु० च० २, ६८;

**अमायत्त.** न० ( अमायत्व ) अभायिपक्षं, मायानो अभाव माया 'का अभाव Absence of guile or deceit भग० १, ६; **अमायि.** त्रि० ( अमायिन् ) लुप्तो 'अमाइ' शब्द देखो 'अमाइ' शब्द Vide "अमाइ". भग० ५, ४; १८, ५, २५, ७;—**सम्मदिट्ठि** पुं० (—सम्यग्दृष्टि) मायारहित सम्यग् दृष्टिवाणो एव; दुटिलतारहित समझिती. माया-छल कपट रहित सम्यग्दृष्टि जीव a soul full of guileless right faith भग० १, २; ३, ६; १६, ५;

**अमावस्सा.** स्त्री० ( अमावस्या ) अभावस अमावस. The last day of the dark half of a month. प्रव० १५६६; जं० प०—**चंद्र.** पु० (—चन्द्र) अभासनी यद्भा. अमावस्या का चंद्र a moon on the fifteenth day of the dark half of a month नाया० १०, प्रव० १५६६,

**अमावासा.** स्त्री० ( अमावास्या ) अभावास, कृष्ण पक्षनी छेह्यो द्विपस अमावस्या, अमावस, कृष्ण पक्ष का अन्तिम दिन. The last day of the dark half of a month "दुवालस अमावासाओ प० तं० सावट्टी पोह्वती जाव आसाडी" सू० प० १०, "जयाणं भंते! साविट्ठिपुरिणमा भवइ तयाणं माही अमावासा भवइ" जं० प० ७, १५३; वव० १०, २; कप्प० ५, १२७,

**अमिज्ज** न० ( अमेय ) लुप्तो 'अमेज्ज' शब्द. देखो 'अमेज्ज' शब्द Vide "अमेज्ज." कप्प० ५, १०१;

**अमिमेज्ज.** त्रि० ( अमेय ) डोर्ध पणु वस्तु भापीने आपवानी-इय विक्रय डरवानी अमुड समथभाटे ल्या भनार्थ डरवाभा आवी छे अेवुं नगर वगेरे. ऐसा नगर वगेरह, जहाँ किसी भी वस्तु को नापकर क्रय विक्रय करने की अमुक समय तक के लिये मनाही की गई हो. ( A city etc ) prohibited from buying or selling any thing by

a measure of capacity जं० प० ३; भग० ११, ११,

**अमिमेज्ज** न० ( अमेय ) विषा; अशुचि. विषा, मल, अशुचि Filth, dirt तंडु०—**पूरण.** त्रि० (—पूर्ण) अशुचिथी भरल. अशुचि से भरा हुआ. full of filth; filthy. तंडु०—**रस** पु० (—रस) प्रवाही विषा, अशुचि रस वहने वाली विषा, अशुचि रस liquid excrement तंडु०—**संभूय.** त्रि० (—सम्भूत) विषाभांथी उत्पन्न थयेल. विषा में से उत्पन्न produced from excrement or filth. तंडु०

**अमिज्जमय** न० (अमेयमय) विषामय, अशुचिमय विषामय, अशुचियुक्त Filthy, full of filth. तंडु०

**अमिज्ज.** न० ( अमित्र ) अहित डरनार; दुश्मन अहित करने वाला, शत्रु, दुश्मन. An enemy; a foe. ठा० ४, ४, नाया० १४;

**अमिय.** पुं० ( अमृत ) जेनेो भरवानो धर्म नथी ते; सिद्ध भगवान् जिसका मरने का धर्म नहीं है वह, सिद्ध भगवान्. A Siddha, one not subject to death. पन्न० २; ( २ ) न० अमृत, सुधा अमृत; सुधा. nectar. भग० ६, ३३, सम० प० २३२, गच्छा० ४६,

**अमिय.** त्रि० (अमित-न मित परिमितममितम्) अपरिमित; परिभाषुरहित, असंख्येय वा अनंत असीम, परिमाण रहित, असंख्य, अनन्त Unlimited innumerable. "केवली...मियपि जाणइ अमियंपि जाणइ" भग० ५, ४, ६, १०; उत्त० ३२, १०४; कप्प० २, ३४, ( ३ ) दक्षिण तरङ्गा दिशाकुमार देवतानो धन्व दक्षिण की ओर के दिशाकुमार देवों का इन्द्र. the Indra of the Disākumāra gods of the south पन्न० २;—**आसणिय** पुं० (—आसनिक) चारंवार डेहायुं पह्लावना-

उभेस ३२२ बार बार ठिकाना बदलाने वाला; एक स्थानपर न रहने वाला one changing his seat frequently कप्प० ६, ५०,—ग्राणि पु० (—ज्ञानिन् ) अनंतशानी; सर्वज्ञ, देवशानी अनंत ज्ञान वाला, सर्वज्ञ, केवली one having perfect knowledge सम० प० २४०,—मेह पुं० (—मेघ ) लुओ 'अमयमेह' शब्द देखो 'अमयमेह' शब्द vide "अमयमेह" "एथण अभियमेहे णामं महामेहे पाउब्भविस्सइ" जं० प०

अभियगह पुं० (अमितगति) दक्षिण दिशाना दिशाकुमार भतिना देवतानो धन्द्र, भवनपतिना २० धन्द्रभानो अेक दक्षिण दिशा के दिशाकुमार जाति के देवों का इन्द्र, भवनपतियों के २० इन्द्रों में से एक इन्द्र The Indra of the Disākumāra gods of the south, one of the twenty Indras of Bhavanapatis ठा० २, ३, पञ्च० २; सम० ३२, भग० ३, ८; जं० प० ७, १६६;

अभियभूय त्रि० (अमृतभूत) अमृत तुल्य अमृत के समान Nectarious 'जिणवयणसुभासिय अभियभूय' आउ० ६३,

अभियवाहण पुं० (अमितवाहन) उत्तर दिशाना दिशाकुमार देवतानो धन्द्र; भवनपतिना २० धन्द्रभानो अेक उत्तर दिशा के दिशाकुमार देवों का इन्द्र, भवनपतियों के २० इन्द्रों में से एक इन्द्र The Indra of the Disākumāra gods of the north, one of the twenty Indras of Bhavanapatis सम० ३२; ठा० २, ३, पञ्च० २, भग० ३, ८;

अमिल न० (अमिल) अमिल देशनी पनावटनु वस्त्र, उननु वस्त्र अमिल देश का बना हुआ वस्त्र; जन का कपड़ा A cloth made in the Amila country; a wollen cloth आया० २, ५, १, १४५,

अमिलक्खु पुं० (अम्लेच्छ) भेदछ लापा न

अमिलानर, आर्य म्लेच्छ भाषान जानने वाला, आर्य A civilized man, an Ārya सूय० १, १, २, १५,

अमिला स्त्री० (अमिला) २१ मा नमिनाथ तीर्थकरनी मुख्य साध्वी इकीसवे नमिनाथ तीर्थकर की मुख्य साध्वी The chief female ascetic of the twenty-first Tirthankara Naminātha सम० प० २३४;

अमिलाण त्रि० (अम्लान) ३२ भाध गमेल नडि, मलिन थमेल नडि, ताणुं ताजा, जिना: सुरमाया हुआ, जो मलिन न हुआ हो वह Unwithered, fresh श्रौव०

अमिलाय त्रि० (अम्लान) लुओ 'अमिलाण' शब्द देखो 'अमिलाण' शब्द Vide "अमिलाण." भग० ११, ११; जं० प० —मल्लदाम न० (माल्यवामन्) न ३२ भाथेल फूलनी भाणा न सुरमाये हुए फूलों कीमाला a garland of unwithered flowers भग० ११, ११, कप्प० ५, १०१,

अमिलिञ्च त्रि० (अमिलित) अेक सूत्रेमा भीजं सूत्रे भेणवी-भेण संभेण करी भोलवुं ते मिलित दोष, ते दोष भेमां नथी अेवुं एक सूत्र में दूसरे सूत्रों को मिलाकर-गट पट करके बोलना मिलित दोष कहलाता है, यह दोष जिसमें नहीं है ऐसा Free from the fault of causing confusion by intermixing one Sūtra with another अणुजो० १३, भग० ४२, १, विशेष० ८५४,

अमुह त्रि० (अमोचिन्) लीधेल अर्थने न छोडनार-अधवय न मुकनार उठाये हुए काम को बीच में न छोडने वाला (One) not leaving a work half done. विशेष० ३४०२;

**असुंचओ** व० कृ० त्रि० (असुंचत्) ( ' असुंचत् ' शब्दनी पद्यीनुं ओड पयन, ' असुंचत्. ' ओ संस्कृत शब्दनी अनुवाद छे ) न भुक्तो; न छोडतो. " असुंचत्, शब्द की षष्ठी विभक्ति का एक वचन " नहीं छोड़ता हुआ; त्याग न करता हुआ Not abandoning, not leaving off. उक्त० ३६, ८१;

**असुग.** त्रि० ( असुक ) असुक, इलाखो; गमे ते काछ ओड. असुक; फलों; कोई एक. Certain, some one. वच० २, २२; ७, ५; नंदी० ३५; दस० ७, ६; ५०; विशेष० १५६०;

**असुच्यमाण.** व० कृ० त्रि० ( असुच्यमान ) न छोडतो नहीं छूटता हुआ Not being abandoned. भग० ६, ३३;

**असुच्छा** स्त्री० ( असुच्छा ) मूर्च्छा नी अभाव मूर्च्छा का अभाव. Absence of attachment. भग० १, ६;

**असुच्छिअ-य.** त्रि० ( असुच्छित ) मुच्छा-आसक्तिरहित. मूर्च्छा रहित; ममत्व रहित, आसक्ति रहित. Free from attachment दस० ५, १, १; ५, २, २६; १०, १, १६; उक्त० ३५, १७, जाया० १७; १६; भग० १४, ७, आया० २, १, ५, २६;

**असुणंत.** व० कृ० त्रि० ( असुणन् ) न जानतो नहीं जानता हुआ. Not knowing विशेष० ३३२,

**असुणिय** त्रि० ( असुणित-अज्ञात-नास्ति मुणितं ज्ञानं यत्र तदमुणितम् ) अजानतो, ज्ञानरहित नहीं जाना हुआ, ज्ञान रहित. Ignorant, devoid of knowledge परह० १, २, प्रव० २४८, उक्त० १२४; — नाम. त्रि० ( — नामन् ) नेतु नाम जानवामा नथी वेपी वस्तु. अज्ञातनाम की वस्तु. ( a thing )

of unknown name. प्रव० २४८; — संख. त्रि० ( — संख्य ) नेनी संख्या जानवामां नथी ते; अपरमित सख्या रहित; जिसकी संख्या की जानकारी न हो वह; परिमाण रहित. of unknown measure or quantity, unlimited in quantity सु० च० २, ६४१;

**असुत्त** त्रि० ( असुत्त ) संसारथी मुक्त नथी थयो ते; संसारी. जो ससार से मुक्त नहीं हुआ वह, संसारी. Not liberated from worldly existence. ठा० ४, ४; १०, जं० प० ५, ११२;

**असुत्त.** त्रि० ( असुत्त ) अभूर्त; वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शरहित धर्मास्तिकाय वगेरे असुत्त, मूर्ति रहित; वर्ण, गंध, रस और स्पर्श रहित धर्मास्तिकाय आदि असुत्त द्रव्य ( Substance like Dharmāstikāya ) devoid of colour, smell, taste and touch. विशेष० ६८८; — भाव. पुं० ( — भाव ) अभूर्तपुं०, असुत्तता state of being devoid of colour, smell, taste and touch. " असुत्तभावा विच होइ शिचो " उक्त० १४, १६,

**असुत्ति** स्त्री० ( असुत्ति ) मोक्षनी अभाव. मोक्ष का अभाव Absence of salvation. ( २ ) लोल लोभ. greed; avarice, परह० १, ५;

**असुय** त्रि० ( असुक ) लुओ ' असुग ' शब्द देखो ' असुग ' शब्द. Vide ' असुग ' पि० नि० ५२८,

**असुय.** त्रि० ( असुयत ) स्मृतिभां नहि आवेद स्मृति में नहीं आया हुआ Not remembered, unrecollected. मू० २, ७, ३८, भग० ३, ७,

**असुयंत.** व० कृ० त्रि० ( असुयन् ) न छोडतो;

न मुक्तो नहीं छोड़ता हुआ, न त्यागता हुआ  
Not abandoning, not giving  
up. भग० ६, ३२;

**असुय-द-ग.** त्रि० ( अमृतक ) आत्मा अने  
आभ्यन्तर पुद्गल की धा विना वैक्रियशरीर  
अनावनार बाह्य और आभ्यन्तर पुद्गल ग्रहण  
क्रिये बिना वैक्रियशरीर बनाने वाला (One)  
who makes or creates a Vai-  
kriya body (i.e. one which can  
be made large or small at will)  
without taking particles of  
matter either from inside the  
body or outside it ठा० ७;

**असुला** अ० ( अमृषा ) सत्य. सत्य, सचाई  
Truly, not falsely. सूय० १, १०,  
१२,

**असुह** त्रि० ( असुख ) निरुत्तर; जवाब न आपी  
शके ते. जो उत्तर न दे सके वह Having no  
answer to give, tongue-tied.  
भग० ८, ६,

**असुहरि** त्रि० ( असुखरिन् ) वायाण नडि ते,  
अडुभोडो नडि ते; जो बात न हो वह,  
जो ज़्यादाह नहीं बोले वह Not loqua-  
cious, not flippanant. “ निसंते सिया  
सुहरी’ उत्त० १, ८,

**असूढ** त्रि० ( असूढ ) मूढ नडि ते, तरवने  
जलानार, सन्मार्ग जलानार जो मूढ न हो  
वह, तत्रज्ञ सन्मार्ग जानने वाला (One) not  
a block-head, (one) who knows  
the reality, (one) knowing the  
true path नाया० १७; दस० १०, १, ७,  
—दिष्टि स्त्री० (—दृष्टि ) अन्य दर्शननी  
धाम धुम तरङ्ग मोड वगरनी दृष्टि-बुद्धि;  
समकितना आठ आचारमानो योथो आचार  
अन्य धर्मों की ओर मोह रहित दृष्टि, सम्यक्त्व  
के आठ आचारों में से चौथा आचार. sight

or view uninfatuated by the  
pomp etc. of other creeds; the  
fourth of the eight practices of  
right faith पञ्च० १, उत्त० २८, ३१;  
प्रव० २६६, पंचा० १५, २४; —लक्ष्म.  
त्रि० (—लक्ष्य-असूढ सुनिर्णयो लक्ष्यो बोध-  
विशेषो यस्य स तथा ) वस्तुना स्वरूपने  
यथार्थ जलानार. वस्तु के स्वरूप को यथार्थ  
रीति से जानने वाला. (one) knowing  
the real nature of things;  
possessed of a correct know-  
ledge of the reality of things.  
पंचा० १४, २८; —हृत्थ त्रि० (—हस्त )  
हाथनी कृणामा दुशीयार, दुस्तकणा दुशल  
हाथ की कारीगरी में कुशल proficient  
in handicrafts; skilful in  
manual arts. नाया० ६,

**असूढ** त्रि० ( असूढ ) लुभ्ये ‘असूढ’ शब्द देखो  
‘असूढ’ शब्द Vide ‘असूढ’ नाया० ६;

**अमेज्ज** न० ( अमेय ) डोषये अमुक वपत  
सुधी डोष वस्तुने भापीने डोषने वेयाती  
आपनी नडि येवो नीडणेद डुडभ  
‘कोई भी अमुक समय तक किसी वस्तु को  
नापकर न वेंचे’ इस प्रकार की निरुली  
हुई आज्ञा Temporary prohibition  
of sale by measurement ज० प०  
भग० ११, ११,

**अमेज्ज** त्रि० ( अमेध्य ) अपवित्र. अपवित्र;  
पवित्रता रहित Impure, unfit for  
religious purposes. विशे० ३४०५;  
न० पिशा; नरग विष्टा; मल excreta;  
faeces तदु०

**अमोसलि.** न० ( असुसलि—न सुसली  
क्रिया यस्मिन् प्रत्युपेक्षणे तदसुसलि )  
पडिबेडुणु इरता वस्त्रने मुशान-साभेदानी  
मादक उँयु नीयुं. इरी उपर डे नीयुं

भीनने न अडाडुं ते; पडिलेहनुतो अेड गुणु  
पडिलेहन करते समय वस्त्र को मूसल के समान  
ऊचा नीचा करके ऊपर या नीचे जमीन से न  
छुआना; पडिलेहन का एक गुण. A virtue  
in the examination of clothes  
or garments, not raising up or  
lowering down like a pestle the  
cloth to be examined and so  
preventing it from touching  
the ground etc उत्त० २६, २५; ठ०  
६, १;

अमोह त्रि० (अमोघ) अवन्ध्य; सफल  
सफल; जो वन्ध्य न हो वह; जो कभी  
असफल न हो वह. Unfailing, sure  
of effect विशेष० १८४; ३०१६; विवा०  
४, उत्त० १४, २१; दस० ८, ३३, (२) पुं०  
डाध वभते सूर्यना भिष्यन्ती नीचे गाडानी  
उध-धोरीआने आकारे डाडी डेपीअ रगती  
रेभा देभाय छे ते कभी कभी सूर्य के नीचे गाडी के  
ऊद के आकार की काली या दूसरे किसी रंग की जो  
रेखा दिखलाई पड़ती है वह lines which  
some times appear under the  
disc of the sun resembling the  
front narrow pole of a cart  
अणुजो० १२७, जीवा० ३, ३, भग० ३, ७;  
(३) वाटणा वगरती विजली. बिना बादलों  
का बिजली lightning without  
clouds in the sky जीवा० ३,  
—दसि त्रि० (-दशेन्) यथार्थ ज्ञेनार  
यथार्थ देखने वाला. of uninfatuated  
sight or vision: (one) knowing  
the real nature of things विवा०  
३, दस० ६, ६८, —वयण न० (-वचन)  
सार्यक-अरण ययन सार्यक वचन, सरल  
वचन. s e n s i b l e or straight

forward speech; speech pro-  
ductive of proper effects. ठ०  
४, ३;

अमोह. त्रि० (अमोह) मोहरहित. मोह  
रहित. Free from delusion or  
infatuation. भग० १७, २;(२) पुं० ंपू  
भंहरना रुचक पर्वततो अेड डूट -शिषर.  
जंबू मंदर के रुचक पर्वत के एक शिखर का  
नाम name of a summit of the  
Ruchaka mountain of Jambū  
Mandara. ठ० ८,

अमोहा. स्त्री० (अमोघा) ंपू सुदर्शनातु  
अपर नाम जंबू सुदर्शना का दूसरा  
नाम. Another name of the  
Jambū Sudarśanā. जं० प०  
जीवा० ३, ४, (२) पश्चिम दिशाना अंजनक  
पर्वतनी दक्षिण तरङ्गी अेड वावडीनुं नाम  
पश्चिमीय अंजनक पर्वत की दक्षिण ओर  
की एक वावडी का नाम. name of a  
well in the south of the western  
Añjanaka mountain. जीवा० ३,  
४, ठ० ४, २, प्रव० १५०२;

अम्म. स्त्री० (अम्वा) माता, मा मा, माता  
Mother. नाया० ८, —आअ पुं० (-तात)  
मायाप, मातापिता. सावाप, माता  
पिता father and mother, parents  
नाया० ६, —ताअ-य पुं० (-तात) लुभो  
'अम्मआअ' शब्द देखो 'अम्मआअ' शब्द  
vide 'अम्मआअ' उत्त० १६, ११;  
भग० ६, ३३; —धाई स्त्री० (-धात्री)  
धावमाता, धार्ध वाय a wet-nurse,  
a nurse who suckles a child  
for its mother भग० ६, ३३; नाया०  
८, १४, १६; —याअ पुं० (-तात) लुभो  
'अम्मआअ' शब्द देखो 'अम्मआअ' शब्द.  
vide 'अम्मआअ' अंत० ६, ३; नाया० ८,



अम्मगा स्त्री० ( अम्बा ) माता, मा. माता, मा.  
 Mother. भग० ६, ३३,  
 अम्मड पुं० ( अम्बड ) ओे नामतो ओेक  
 संन्यासी, के जेणे महावीरस्वामीना शासनमां  
 तीर्थकरनामगोत्र उपार्जन कथुं. इस नाम  
 का एक सन्यासी, जिसने कि महावीरस्वामी  
 के शासन में तीर्थकरनामगोत्र उपार्जन किया  
 A hermit so named who attained  
 Tirthankara Nāmagotra  
 during the rule of Mahāvira  
 भग० १४, ८; ठा० ६, १, ओव० ३६;  
 अम्मया. स्त्री० ( अम्बिका ) माता; मा मा,  
 माता. Mother. विवा० २, नाया० २,  
 अम्मा स्त्री० ( अम्बा ) माता, मा माता, मा  
 Mother अंत० ३, ८, सम० प० १७६;  
 भग० १, ७, ८, ५, ६, ३३, १५, १,  
 कप्प० ५, १०२, नाया० १, ६; १८,  
 —पिहसमाण पुं० (—पितृसमान )  
 माता पिता समान, साधु-मुनिने ओेकत  
 हितकारी श्रावक माता पिता के समान, साधु-  
 मुनि के लिये एकान्त हितकारी श्रावक (any  
 body) equal to or in the place  
 of parents, a Jain household  
 devoted wholly to the interests  
 of ascetics ठा० ४, ३,—पिड  
 पुं० (—पितृ) मातापिता, मायाप मातापिता,  
 मावाप parents राय० २८६, ठा० ३, १,  
 ओव० ३८, नाया० १,—पिति पु० (—पितृ)  
 मातापिता; मायाप माता पिता, मावाप  
 parents अंत० ६, ३,—पितिसमाण  
 पुं० (—पितृसमान ) ओुओे ' अम्मापिह-  
 समाण ' शब्द. देखो ' अम्मापिहसमाण '  
 शब्द vide 'अम्मापिहसमाण.' ठा० ४, ३,  
 —पियर पु० (—पितृ) मातापिता; मा-  
 याप मावाप, माता पिता parents  
 निर० १, १; भग० ६, ३३; ११, १०, १५,

१, सु० च० २, ३६३; दसा० १०, ३; नाया० १;  
 ८; ६; १६, १८; ठा० ३, १, अंत० ६, ३,  
 कप्प० ५, १०२,—पेहय. त्रि० (—पैतृक )  
 मातापिता संबंधी माता पिता सम्बन्धी of  
 parents " अम्मापेहयं भते । सररिए  
 केवइयं कालं संभित्ठइ " भग० १, ७;  
 अम्मह त्रि० ( अस्मद् ) तुं; पोते में, खुद व-  
 खुद, स्वयं I, the first person  
 singular  
 अहं प्र० ए० ठा० ५, १, आया० १, १, १, २;  
 मं प्र० ए० विशेषे २४,  
 अम्मह प्र० व० नाया० १, २, ५, ८, १४;  
 १६, भग० ३, १, २, ७, १०,  
 ११, ११; १५, १,  
 अहं प्र० व० नाया० १, ३, ५; ८, ६,  
 १४, १६; भग० १, ३, ६, ३, १, ५,  
 ४, ७, १०, ८, ७, ६, ३३, १२, १,  
 १८, २; ८, १६, ३; अंत० ६, १५;  
 राय० ३०; २४१, पंया० ६, २७, ज०  
 प० ५, ११२;  
 मे द्वि० ए० नाया० १, ८, १६, नाया० थ०  
 भग० ३, २, दस० ५, २, ३७;  
 ६, १, १३,  
 मम द्वि० ए० भग० ३, २, १३, ६, १५, १;  
 नाया० १, ५, ८, ६, १४, १५;  
 १६, १८,  
 मम द्वि० ए० नाया० १, ७; १६, भग० १५, १;  
 अम्मं द्वि० व० नाया० १, २, ५, ८, ६, १४,  
 १६,  
 अम्महे द्वि० व० नाया० ३, ६, १४,  
 अम्मं तृ० ए० ठा० ४, १, निर० १, १;  
 आया० १, १, १, १,  
 मे. तृ० ए० नाया० १, ८; भग० १४, ७,  
 दस० ४, ५, २, ३१, ६, ४, १;  
 मए तृ० ए० भग० १, ४, २, १; ३, २, ७,  
 ६, ८, १०, १५, १, १७, २;

३४, १; नाया० १; २; ५; ७; ८;

६; ११; १२; १३; १४; १६;

अम्हेहिं. तु० व० नाया० १; ८; १६; भग० २,

१; ६, ३३; १५, १, जं० प० २, २४;

ममाहितो. पं० ए० भग० १५, १; नाया० १६;

ममं. ष० ए० भग० ३, २; ६; ५, ४, ६, ३३;

१८, ८; २०, ८, नाया० ५; ७; ६;

१२; १४; १६, १८;

मज्झ-ज्झं. ष० ए० नाया० ६; दसा० ६, २४;

२५; विशेष० १६१, पिं० निं०

३७६; सु० च० १, २;

महं-अम्हं. ष० ए० नाया० १२; १६;

आया० १, ६, २, १८३;

मम. ष० ए० भग० २, १; ३, २; ५, ४; ७,

६; १५, १, ४२, १, नाया० १;

२; ५; ७; ८; ६; १२; १४;

१५;

मे. ष० ए० भग० १, ३; २, १; ३, १; २;

५, ४; ८, ११, ११; १८, १०;

नाया० १; ५; ८; ६; १३; १६;

दसा० ४; ५, १, ५२; ७६, ६४;

५, २, ३१; ३७, ६, ४; ८, १;

वव० १, ३७; निसी० १४, १२;

अम्हं. ष० व० नाया० १; २; ३; ४; ५; ७;

८; ६, १४, १५; १६; १८; भग०

७, १०; ६, ३३; ११, ११;

१५, १; १८, २; विवा० ६; पिं०

निं० ४८६;

अम्हे ष० व० नाया० ७; ६, १०; १४, १६;

भग० १२, १; ओव० ३८, विवा०

५; जं० प०

अम्हाणं ष० व० नाया० ५; ८; भग० ३, १;

अम्हारिस. त्रि० ( अस्मादृश ) अभास

येवा. हमारे जैसा; हमारे समान. Simi-

lar to us; like us; resembling us.

“जे दुजया अजो अम्हारिसेहि ” उक्त० १३,

२७; सु० च० १, १६;

अय. पुं० (अज) पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रने अधिष्ठाता

देवता. पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का अधिष्ठातृ देव.

The presiding deity of the Pūr-  
vā Bhādrapada constellation.

“दो अया” ठा० २, ३; अणुजो० १३१; (२)

पक्षरे बकरा. a goat. पञ्ज० १; जं० प०

५, ११४,—ककरभोई. त्रि० (—कर्करभोजि-

न्—अजस्य कर्करं कर्करायितं मांसं भोक्तुं

शीलमस्येति ) पक्षराना कर्करं मांसनु लक्ष्यु

करीना. बकरे के कर्कर मांस का भक्षण करने

वाला. (one) eating the crisp flesh

of a goat. ‘अयकककरभोई या, तुंदिस्त्वे चिय

सोण्णि” उक्त० ७, ७;—करगा पुं० (—करक)

अध्यासी ग्रहमानो १७ मेो महाग्रह. अध्यासी

ग्रहों में से १७ वॉ महाग्रह. the seven-

teenth major planet of

the 88 planets. ‘दो अय-

करगा ‘ठा० २, ३; सू० प० २०; जं० प०

७, १७०;—गर. पुं० (—गर—अजं गिरती-

स्यजगरः ) अणु—पक्षराने पक्षु गणाणनार;

सर्पनी अेक जत; भेडोटो सर्प. बकरों को

भी लील जाने वाला, सर्प की एक जाति;

बड़ा भारी सर्प; अणगर a huge kind

of serpent swallowing even

a goat; a boa-constrictor. जीवा०

१; पञ्ज० १; सूय० २, ३, २४; जं० प० ३,

२४;—पोसय. त्रि० (—पोषक) पक्षराने

पाणनार—पोषक. बकरों को पालने वाला.

a shepherd; herdsman.

निसी० ६, २३;—वीहि स्रो० (—वीधि)

हस्त, यित्रा, श्याति, विशाभा अने अनुराधा

अे पांच नक्षत्रनी आश्र-गतिविशेष हस्त,

चित्रा, स्वाती, विशाखा और अनुराधा इन

पाच नक्षत्रों की चाल-गतिविशेष. the

motion of (peculiar to) the five

constellations viz Hasta, Chitrā, Svāti, Viśākhā and Anurādhā ठ० ६, १;

अथ. न० ( अयस् ) लोहं; धातुविशेष, लोह.  
लोहा. Iron. जीवा० ३, १; राय० २५३;  
पन्न० १, श्रोव० ३८, उत्त० ३६, ७३; दस०  
५, १, २३; ८, २३; भग० ३, ३, ५,  
२, १६, १; १८, ६;—आगर. पुं०  
(—आकर ) लोहानी भाष्य लोही लोहे की  
खदान. iron-mine निस्त्री० ५, ३७;  
ठा० ७,—कवल्ल. न० ( \*कवल्ल )  
लोहानो तवा; लोही लोहे का तवा. an iron  
pan ' केइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लंसि '  
भग० ६, १,—कुंडिया स्त्री० (—कुण्डिका)  
लोहानी कुंडी लोहे की कुंडी. an iron  
vessel resembling a large or a  
small tub. विवा० ६;—कोट्टय. न०  
(—कोष्ठक ) लोहं तपायवानी डोडी-भट्टी.  
लोहा तपाने की भट्टी. an oven to heat  
iron; a furnace भग० १६, १;—गोल  
पुं० (—गोल ) लोहानो गोला लोहे का गोला.  
an iron-ball. ठा० ४, ४, सूय० २, २,  
६५; पिं० नि० ४६०,—णिव्वत्तिय त्रि०  
(—निर्वर्तित ) लोहानुं अनेसु, लोहथी निपत्तेसु  
लोहे का बना हुआ, लोह से उत्पन्न made of  
iron भग० १६, १;—पाय न० (—पात्र)  
लोहानुं पात्र-वासथ्य. लोहे का बरतन an  
iron vessel. आया० २, ६, १, १५२,  
निस्त्री० ११, १,—बंधण न० (—बन्धन)  
लोहानुं अंधन-अंध लोहे का बंध; लोहे का  
बंधन. an iron band or fetter  
निस्त्री० ११, २,—भार. पुं० (—भार)  
लोहाने भार. लोहे का भार-वजन. load  
of iron भग० १३, ६;—रासि. पुं०  
(—राशि ) लोहानो ढगयो. लोहे का ढेर  
& heap of iron. भग० १६, ६;—लोह

पुं० (—लोभ ) लोहानो लोल-अंग्रहृत्ति.  
लोहे का लोभ; लोहा संग्रह करने का लोभ.  
g l o e d to store up iron.  
निस्त्री० ७, ५; १७, ६,—हारि त्रि० (—हारि-  
न् ) सोनुं रूपु वगेरेने मुशी लोहानेण उपा-  
उनार, लोहवाणियो. सोना चादी वगैरह छोड़  
कर लोहे को ही उठाने वाला, लोहिया-लोहे  
का व्यापारी ( one ) carrying away  
iron leaving aside gold, silver  
etc. सूय० १, ३, ४, ७;

अयं पुं० ( अयम्-इदम्-प्र०ए० ) आ, २६।मे.  
न०२ आगण यह, सन्मुख, निगाह के आगे  
This नाया० ८, १४; १६, १८, भग० १, ४;  
२, ५; ६; ७, १०, १६, १, दस० ५, २, ३४;  
अणुजो० १६, वव० ४, १३;

अयंतिय त्रि० ( अयन्त्रित ) राजनी म्हेर-  
छाप पिनानु; नेना उपर राजनी मुद्रा नथी  
अवे। सिद्धे वगेरे राजा की मुद्रा रहित  
सिक्का वगैरह ( A coin etc ) not bear-  
ing the seal of the king पोह्लेव  
मुट्टी जह से असार, अयंतिय कूडकहा वयो  
वा " उत्त० २०, ४२,

अयंपुल पुं० ( अयंपुल ) अयंपुल नामे गो-  
शालानो अेक सेवक गोशाला का अयंपुल  
नाम का एक सेवक A devotee of Go-  
śālā by name Ayampula भग०  
३, ७,

अयंपुलय पुं० ( अयंपुलक ) लुअे। उपले।  
शब्द देखो ऊपर का शब्द Vide the  
above word भग० ८, ५; १५, १;

अयंसंधि त्रि० ( अयंसन्धि-अयं सन्धिर्यत्य  
साधोरसावयंसन्धिः—यथाकालमनुष्ठानविधा-  
यी, यो यस्य-वर्तमानः कालः कर्तव्यतयो-  
पस्थितस्तस्य तत्करणतया तमेव सन्धत्त इति  
छान्दसत्वाद्भिभक्तेरलुक् ) ने वपतनुं स्ना-

ध्याय, पडिलेडुयु आदि जे काम होय ते वप-  
तेज ते काम करनार; वपतसर काम करनार.  
स्वाध्याय, पडिलेहन आदि जो काम जिस  
समय का हो वह काम उसी समय पर करने  
वाला; समय पर काम करने वाला Punctual  
in the performance of religious and other actions  
आया० १, २, ५, ८७,

अयण पुं० (अयन) सूर्य अंदरने मांडलेथी  
फुहार नय के फुहारने मांडलेथी अंदरने मांडले  
आथी ओक आवृत्ति पुरी करे तेरलो वपत,  
त्रयु ऋतु अथवा छ मास प्रमाणे ओक अयन  
थाय छे, ओक वर्षमां जे अयन थाय पोषथी  
आपाठ सुधी उत्तरायण अने आपाठथी पोष-  
सुधी दक्षिणायन सूर्य की अन्तरंग या बाह्य  
मंडल की एक पूरी आवृत्ति में जो समय व्यतीत  
हो वह, एक वर्ष में दो अयन होते हैं एक दक्षि-  
णायन दूसरा उत्तरायण पौष मास से आषाढ  
तक उत्तरायण होता है और आषाढ से पौष  
तक दक्षिणायन यह अयन का समय सूर्य की  
गति पर अवलंबित है The duration  
of time required for the sun  
to make a complete revolution  
from outer to the inner orbit or  
vice versa जीवा० ३, ४, ज० प० २, १८;  
अणुजो० ११५; ओव० १७, सू० प० ठा०  
२, ४, भग० ५, १, ६, ७, २५, ५, विशेष०  
२०७१; ओघ० नि० २८२, ( २ ) ओ नामनु  
ओक शास्त्र. इस नाम का एक शास्त्र. a  
science of this name ओव० ३८,  
अयण न० (अतन-अत्सातत्यगमने, भावेबुज,  
अतनमनादिकालात्सातत्यभवनप्रवृत्तम्) अ-  
नादि ज्ञानथी निरंतर उत्पन्न थनामा प्रवर्तुं.  
अनादि जाल से निरंतर उत्पन्न होने में जो  
प्रवृत्त हो वह Being eternally and  
ceaselessly produced 'अत्तायमयण-

महवा सावज्जमई य जोगंति' विशेष० ३५७८,  
अयण न० (अदन) अन्न; भोराक. सुराक,  
अन्न. Food, food-stuff प्रव० १३६;  
अयत्त. त्रि० (अयत्न) न्ययु विनातुं, यतना-  
रहित. यत्नाचार रहित Without inspec-  
tion in the matter of living  
beings दसा० ६, ४,

अयर पुं० न० (अतर) सागरोपमरूप का  
परिमाणविशेष सागरोपम प्रमाण काल  
विभाग A period of time measured  
by or equal to a Sāgaropama  
“ तीसहिं अयरेहिं रयरहिओ ” प्रव० ४०१;  
१०४७, विशेष० ३३३५;

अयल पुं० (अचल) अंधकवृष्णिना पुत्र-  
छटा दशार्ह, के जे नेमिनाथ प्रभु पासे दीक्षा लध,  
आर वरसती प्रव्रज्या पाणी, शत्रुंजय उपर  
ओक मासने संथारो करी, सिद्ध थया अन्धक-  
वृष्णि का पुत्र-छटा दशार्ह, जो कि नेमिनाथ प्रभु  
के पास से दीक्षा लेकर, बारह वर्ष तक प्रव्रज्या  
का पालन करके, शत्रुंजय पर्वत पर एक मास  
का संथार कर, सिद्धगति को प्राप्त हुआ The  
sixth Daśārha, son of Andhaka-  
vr̥isni. He took Diksā from  
Neminātha, observed ascetic-  
ism for twelve years, practised  
Santhārā for one month on  
mount Śatruñjaya and became a  
Siddha. अत० १, ६, (२) अंतगड सूत्रना  
पडेका वर्गना छटा अध्ययननुं नाम अंतगड सूत्र  
के पहिले वर्ग के छठे अध्याय का नाम name  
of the sixth chapter of the first  
section of Antagada Sūtra. अंत०  
१, ६, ( ३ ) त्रि० निश्चल; स्थिर. निश्चल;  
स्थिर. steady; motionless जं० प०  
३, ५२; भग० १, १; काप० २, १५; ५,  
१०३; ( ४ ) प्रथम अणुदेवतुं नाम. प्रथम

वलदेव का नाम name of the first  
Baladeva. प्रव० १२२५,

अथलभाया पुं० ( अचलभ्रातृ ) लुओ  
'अचलभाया' श०६ देखो 'अचलभाया'  
शब्द Vide 'अचलभाया' विशेष० १६०५,  
अथला स्त्री० ( अचला ) लुओ 'अचला'  
श०६. देखो 'अचला' शब्द Vide 'अचला'  
नाया० ध० ६,

अथस न० ( अथसस् ) अपथश, अपथीति  
अपथश, बुराई Infamy, ill fame  
" अथसो य अणिव्वाण " दस० ५, २, ३८,  
ओव० ४१; भग० १४, ८, क० प० ४, ३७,  
—कर. त्रि० (—कर ) अपथश करनार  
बुराई करने वाला defaming, bringing  
on ill fame, scandalous भग० ६,  
३३,—कारय. त्रि० (—कारक ) अपथीति  
करनार बुराई करने वाला scandalising,  
defaming. भग० १५, १,—बहुल त्रि०  
(—बहुल ) नेनी अपथीति धृषु थयेदी छे  
येवे। जिसकी बुराई बहुत हुई है वह  
highly infamous, notorious.  
दसा० ६, १;

अथसी स्त्री० ( अतसी ) अलसी, अेक नतनुं  
तेलवाणुं धान्य. अलसी, एक तरह का  
तेल वाला धान्य A kind of oily seed,  
linseed नाया० ८, ६, भग० ६, ७, २१,  
३, ओव० २२; जीवा० ३, ४, उत्त० ३४, ५,  
पत्र० १; जं० प० प्रव० १०१३, (२) अल-  
सीनुं अड-छेडवे। अलसी का भाद. a  
plant of the above seed पत्र०  
१७, ओघ० नि० ४०६,—कुसुम  
न० (—कुसुम ) अलसीनुं दूद. अलसी का  
फूल the flower of the Alasī  
plant. नाया० ५,—पुष्प न० (—पुष्प )  
लुओ उपे। श०६ देखो ऊपर का  
शब्द vide the above word

उत्त० ३४, ६, —वण न० (—वन ) अल-  
सीनु वन अलसी का वन a forest of  
Alasī plants भग० १, १,—वणण.  
पुं० (—वर्ण ) अलसीना दूदने रंग; श्याम-  
वर्ण अलसी के फूल का रंग, श्याम वर्ण  
bluish colour of the flower of  
the Alasī plant (२) त्रि० अलसीना  
नेवा रगवाणे, डाणा रगने अलसी के  
समान रग वाला black, of the colour  
of the Alasī plant or flower.  
उत्त० १६, ५६,

अथा स्त्री० ( अजा ) अडरी. बकरी A  
she-goat भग० १२, ६; पिं० नि०  
१३२,—कुच्छि त्रि० (—कुच्छि-अजाया-  
कुच्छिरिव कुच्छिर्यस्य स तथा ) अडरीनी भादक  
नाना पेटवाणे बकरी के समान छोटे पेट  
वाला having a small belly like  
that of a she-goat उवा० २, १०१,  
—वय पुं० (—वज ) अडरीने वाडे.  
बकरियों का वाडा a fold or pen in  
which goats are enclosed "केह-  
पुरसे अथासयस्स एगमहं अथावयं करेजा"  
भग० १९, ७,

अथाणंत व० कृ० त्रि० ( अजानंत ) अणणु; न  
णणुते। अजान, नहीं जानता हुआ Not  
knowing, ignorant पत्र० १, सूय०  
१, १, १, ६, १, १, २, ४, उत्त० ८, ७,  
पिं० नि० ४१६, पंचा० ११, ३७,

अथाणग त्रि० (—अजायक-अजानान ) अण, न  
णणुनार न जानने वाला, अण Not know-  
ing, ignorant पत्रा० १७, २५;

अथाणमाण व० कृ० त्रि० ( अजानान )  
नणणुते, अणणु अजान, न जानता हुआ  
Not knowing, ignorant " पावस्स  
फलविवारं अथाणमाणा वट्टति " परह० २, १;

अथावणलज्ज त्रि० ( अथापनीय ) नेनाथी

कार्य न सरे तेतुं; प्रयोजन पुरतुं नहि.  
जिससे काम न हो सके ऐसा; जिससे प्रयोजन  
पूरा न हो वह. Not capable of ac-  
complishing one's purpose; fall-  
ing short of one's requirements.  
भग० ७, ६, —उदग. न० (—उदक) प्रयोजन  
न सरे. तेतुं पाणी उतना जल जिससे कार्य  
भाग न हो सके. water not enough to  
serve the purpose. भग० ७, ६;  
अथावयव. त्रि० ( अथावदर्थ—न थावदर्थो-  
यत्र तत्तथा ) अपरिपूर्ण, लोभ्ये तेतुं नहि;  
अधु३. अपूर्ण; जितना चाहिये उतना नहीं,  
अधूरा Inadequate, insufficient;  
incomplete. “ अथावयवा सोच्चाणं, जइ  
तेण न लथरे” दस० ५, २, २;  
अयुत. न० ( अयुत ) लुभ्यो “अउअ” शब्द.  
देखो ‘अउअ’ शब्द Vide “अउअ”.  
जीवा० ३, ४;  
अयो. न० ( अयस् ) लोहं, लोहं लोहा. Iron  
भग० १६, ४, —कवल्ता. न० (—कवल्ल )  
तवे; लोही, इडाध. तवा, लोहे की कड़ाही.  
iron pan; iron caldron. भग० १६,  
४; सूय० १, ५, १, १५;—कुम्भी. स्त्री०  
(—कुम्भी ) लोहानी डोडी-डुंडी. लोहे की  
कुर्वा. an iron vessel resembling  
a large or small tub राय० २५३;  
—गोल पुं० (—गोल ) लोहानो गोला  
लोहे का गेला an iron ball दना०  
६, १;—घण. न० (—घन ) लोहं दुटवानुं  
धथु लोहा पीटने का घन a sledge-  
hammer सूय० १, ५, २, १४,  
अयोमय. त्रि० ( अयोमय ) लोहमय,  
लोहानुं लोहनय, लोहे का Iron; made  
of iron, consisting of iron.  
भग० १६, १, वृत्त० ६ ३ ६; राय० २५३,  
अयोपुह पुं० ( अयोपुहा ) लथु समुद्रमां  
पायव्य भुशुमा पांचसो जेजन उपर

आवेद ओड अंतरद्वीप; ५६ अंतरद्वीपमानो  
११ भो अंतरद्वीप लवण समुद्र के वायव्य  
कोन में पाच सौ योजन पर स्थित एक अंतर  
द्वीप; ५६ अन्तरद्वीपों में से ११ वॉ अन्तरद्वीप.  
The eleventh of the 56 Antara-  
dvīpas; an Antara-dvīpa in  
the Lavaṇa ocean in the  
north-west at a distance of  
500 Yojanas. ठ ४, २, ( २ ) त्रि०  
अयोमुह अंतरद्वीपमां रहेनार मनुष्य. उक्त  
अन्तरद्वीप में रहने वाले मनुष्य. the  
people residing in the  
Ayomukha Antara-dvīpa.  
पन्न० १;

अर. पुं० ( अर ) यालु अवसर्पिणीमां भरत  
क्षेत्रना सातमा यक्षवर्ती अने १८ मा  
तीर्थंकर वर्तमान अवसर्पिणी के भरतक्षेत्र  
के सातवे चक्रवर्ती और १८ वे तीर्थंकर.  
Name of the eighteenth Ti-  
rthankara and the seventh  
Chakravartī of Bharataksetra  
in the present Avasarpinī.  
“अरोय अरयं पत्तो” उक्त० १८, ४०; भग०  
२०, ८; सम० २४; अणुजो० ११६;  
अरञ्ज पुं० ( अरञ्ज ) पैडानी वय्ये यक्षनी नाभि  
अने नेमि वय्येनां आडां लाडां; आरा.  
आरा. A spoke of a wheel. जं० प०  
अरञ्ज. पुं० ( अरञ्ज ) ८८ महाग्रहमांने  
७० भो महाग्रह ८८ महाग्रहों में से ७० वॉ  
महाग्रह. The seventieth of the  
eighty-eight major planets.  
सू० प० २०;  
अरञ्ज. न० ( अरञ्ज ) पांचमा अहोदेवलोडने  
अरत नामे ओड पाथडे पांचवें ब्रह्मदेव-  
लोक के एक पाथडे (परत) का नाम Name  
of a layer in the fifth Brahma

Devaloka. ठ० ६, १; (२) रागरहित; प्रीति विनाने. राग रहित, बिना प्रीति का unattached, free from attachment आया० १, ३, २, ११४,

अरह स्त्री० ( अरति-न रति. संयमविषया घृतिररति ) संयमभां उद्वेग, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने वीर्य अे पांय आचारभां भेयेनी, मोहनीयना उदयथी थतो उद्वेगरूप चित्तविकार. संयम में उद्वेग, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य इन पाचों आचारों में बेचैनी, मोहनीय के उदय से होता हुआ उद्वेगरूप चित्तविकार Discomfort experienced in the practice of self-restraint, feeling of uneasiness in ascetic practices leading to right knowledge etc. "अरहं आउट्टे से मेहावी" आया० १, २, २, ७२; १, ३, ३, ११७, जं० प० नाया० १, दस० ८, २७; सूय० २, १, २६; उक्त० १०, १७; ३२, १०२, प्रव० ४५७; क० प० २, १०३; भक्त० १०६, क० गं० २, ७; ५, ३१; ठा० ६, १; (२) आवीस परिषडमाने अेक परिषड. २२ परिषडों में से एक परिषड one of the twenty-two varieties of sufferings उक्त० २, १४, भग० ८, ८, (३) ष्ट्र वियोग के अनिष्ट संयोगथी थतुं मानसिक दुःख. इष्टवियोग या अनिष्ट संयोग से होता हुआ मानसिक दुःख mental distress caused by an unfavourable event. भग० १, ६,—कर्म. न० (—कर्मन्) जेना उदयथी ज्वने संयम वगेरेभां अरति उत्पन्न थाय तेथी अेक नोकषाय मोहनीयनी प्रकृति, अरतिमोहनीय कर्म जिसके उदय से जीव को संयम आदि में अरति उत्पन्न हो ऐसी एक नोकषाय मोहनीय की प्रकृति, अरतिमोहनीय कर्म. a variety of Karma known as Nokaṣāya Mohaniya the maturing of which

produces distaste for ascetic practices; Arati Mohaniya Karma. ठा० ६, १, —परि-री-सह. पुं० (—परिषह) साधुना २२ परिषडमाने अेक; अरतिनामे परिषड. साधु के २२ परिषडों में से एक अरति नामक परिषड. one of the twenty-two varieties of sufferings; a suffering known as Arati उक्त० २, १४, भग० ८, ८;—मोहनिज्ज. न० (—मोहनीय) अरति नामे मोहनीयकर्मनी अेक प्रकृति. अरति नामक मोहनीय कर्म की एक प्रकृति a variety of Karma known as Arati Mohaniya. क० गं० १, २१;—रह स्त्री० (—रति) अरति रति, धर्मभां अरति अने पापभा रति अरति रति, धर्म में अरति और पाप में रति dislike for virtuous actions and inclination towards evil deeds "एगाअरतिरती" ठा० १, १,—रहसह वि० (—रति-सह) अरति अने रतिने सहन करनार अरति और रति का सहन करने वाला one who can remain indifferent to the feelings of attachment or dislike towards an object. आया० १, ३, १, १०८,

अरंजर पुं० ( अरंजर ) ल०२ तरीके प्रसिद्ध पाणीना धडे लजर के नाम से प्रसिद्ध पानी का घड़ा A pot of water known by the name of Lanjara ठा० ४, ४; अरकवुरी. स्त्री० ( अरकवुरी ) जिनचन्द्र-ध्वज राजनी अेक नगरी, सूर्यनी अग्रमहिषी—सूर्यप्रलानी पूर्वलयनी ल०२नगरी. जिनचन्द्र ध्वज राजा की एक नगरी, सूर्य की अग्रमहिषी सूर्यप्रग की जन्मपुरी A town belonging to king Jinchandra Dhvaj; a town in

which the previous birth of Sū-  
ryaprabhā the principal queen  
of Sūrya took place नाया० ध० ७,  
अरग पुं० (अरक) पैडानां वञ्चेनां आडां लाडडां;  
आरा. आरा The spoke of a wheel.  
भग० २, १, ३, ५; ५, ५, राय० १२६;  
—आउत्त.त्रि० (—आयुक्त—अरकैरभिविधिना  
युक्तोऽरकायुक्त.) सर्वं तरङ् आराथी युक्त  
चारों ओर आराओं से युक्त. furnished  
with spokes on all sides भग० ३, १;  
—उत्तासिय. त्रि० (—उत्त्रासित—अरका  
उत्त्रासिता आस्फालिता यत्र ) जेमां पैडाना  
आरा अक्षालवामां आव्या छे ते जिसमे आरे  
हिलते हों वह with the spokes of the  
wheel caused to shake भग० ३, १;  
अरज्जंत. व० क० त्रि० (अरज्यत्) रक्त—आसक्त  
न थतो; रागथी न रंगातो आसक्त न होना  
हुआ Being unattached, not  
affected by passions “ विसणुसु  
अरज्जतो, रजंतो संजमम्मि य” उक्त० १६, १०,  
अरज्जुय त्रि० (अरज्जुक) २०७—दो२३  
विनानु डोर विना का. Devoid of a  
rope. तडु०—पास. पुं० (—पाश) दो२३  
वगरनेो पाश—अंधन डोरी विना का बन्धन  
bondage without a rope तडु०  
अरणि पु० (अरणि) अरणिपुं लाडडुं, जेने  
माडोमाडि धसवाथी अग्नि अरे तेपुं लाडडुं  
आपस मे घिसने पर अग्नि को उत्पन्न करने  
वाली अग्नि की लकड़ी A fire—produc-  
ing wooden stick; wood of  
Arani tree used to kindle fire  
by friction “ जहा य अग्गो अरणी  
असंतो ” उक्त० १३, १८, नाया० १८, राय०  
२६४, सूय० २, १, १६, भग० ११, ६, १८,  
७; भक्त० १२३; जं० प० ५, ११४,  
अरणिया स्त्री० (अरणिका) जेनेो अंध  
पीजरूप छे ओवी ओड वनस्पति एक

वनस्पति; जिसका स्कंध ही बीजरूप है वह.  
A variety of vegetation grow-  
ing out of the branches of the  
original stem. आया० १, १, ५, १३०;  
अरराण. न० (अरय) निर्जन जंगल;  
वसति विनानी अटवी निर्जन वन. A  
forest, a tenantless forest. उक्त०  
२५, २६, भग० ७, ६; परह० २, ३; ओघ०  
नि० १६६, सूय० १, १, १, १६, जं० प० २,  
३१, विशेष० १४५५;  
अरराणवडिसग पुं० (अरययावतंसक )  
अगीयारमा देवलोकनु अरययावतंसक नामे  
ओड विमान, डे जेना देवतानी २१ सागरनी  
स्थिति छे ग्यारहवें देवलोक का अरययावतंसक  
नामक एक विमान, जहां के निवासी देवों की  
२१ सागर की स्थिति—आयु है. A heaven-  
ly abode of the eleventh  
Devaloka, Aranyāvataṃsaka  
by name, the gods of this abode  
live for twenty-one Sāgaras  
of time सम० २१;  
अरति स्त्री० (अरति) लुओ 'अरइ' श०६.  
देखो 'अरइ' शब्द. Vide 'अरइ' सम० २१;  
ठ० १, १, ओघ० २१; भग० १, ६, पञ्च० २३;  
—परिसह. पुं० (—परिषह) लुओ  
'अरइपरिसह' श०६. देखो 'अरइपरिमह' शब्द.  
vide 'अरइपरिसह'. सम० २२,—रति.  
स्त्री० (—रति) लुओ 'अरइरइ' श०६. देखो  
'अरइरइ' शब्द. vide 'अरइरइ'. पञ्च० २२;  
अरय. पु० (अरक) पैडाना आरा. पहिये का  
आरा. A spoke of a wheel. नदी० ५;  
अरय. पुं० (अरजस्) इभैररहित; सिद्ध  
लगवान् कर्मरूपी रज रहित, सिद्ध भगवान्.  
Free from Karmic dust; a  
Siddha भग० ३, १; (२) ८८ अडमानेो  
ओड भडप्रड. ८८ ग्रहो मे से एक  
महाग्रह. a major planet out  
of eighty-eight planets ठ०



२, ३; सू० प० २०; ( ३ ) पांचमा देवलोकना विमानतो अेक पाथडो. पाचवें देवलोक के विमान का एक पाथड़ा-परत. a layer of the heavenly abode of the fifth Devaloka. ठा० ६; ( ४ ) त्रि० २०-भेदरहित. रज रहित; निर्मल free from dirt. कप्प० २, १३;—अंबर न० (-अम्बर) २०-रहित वस्त्र. स्वच्छ वस्त्र; रज रहित वस्त्र. cloth or garment free from dust जं० प० ५, ११८, कप्प० २, १३,—अंबरवत्थ न० (-अम्बरवस्त्र ) २०-रहित आकाश जेवां स्वच्छ वस्त्र, निर्भण लुगडा रज रहित आकाश के समान स्वच्छ वस्त्र, निर्मल वस्त्र. a clean cloth; cloth as clean as the sky. भग० ३, २; जं० प०

अरयणि पुं० ( अरत्नि ) विस्तृत आंगुलि सहित हाथ विस्तृत-खुली अंगुली सहित हाथ. A hand with the fingers stretched ठा० ४, ४,

अरया स्त्री० ( अरजा-अरजस् ) कुमुद विजयनी मुप्य राजधानी. कुमुद विजय की मुख्य राजधानी The capital city of Kumuda Vijaya. जं० प०

अरवग त्रि० ( अर्वक ) अर्व देशमां रहेनार मनुष्य वगेरे अर्व देश के रहने वाले मनुष्य वगैरह. ( A resident etc ) of the Arva country. पञ्ज० १,

अरविन्द न० ( अरविन्द ) कमल. कमल, पद्म A kind of lotus. ' पुष्पेसु वा जह अरविदमाहु ' सूय० १, ६, २२; २, ३, १८, पञ्ज० ३, परह २, ४, —लोअण त्रि० (-लोचन ) कमल समान नेत्रवाणे अरविन्द-कमल के समान 'हैं नेत्र' जिसके, वह. lotus-eyed कप्प० ३, ४७;

अरस. त्रि० ( अरस ) हिंस आदि द्रव्यथी

संस्कारेद नहि; रस विनानुं, नीरस हींग आदि द्रव्य से संस्कारित न किया हुआ, रस रहित; नीरस. Ininsipid, tasteless; juice-less " अरस विरसं वावि, सूहयं वा असूहयं " दस० ५, १, ६८, ओव० १६; नाया० १६, भग० २, १०, ६, ३३, ११, १, २०, ५,—आहार पुं० (-आहार) रस विनानो आहार. रस रहित आहार. in-sipid food; tasteless food ठा० ५, १, ( २ ) नीरस आहार देवानो अभिग्रह धारणु करनार साधु नीरस आहार ग्रहण करने का अभिग्रह धारण करने वाला साधु. an ascetic who has vowed to receive tasteless food ठा० ५, १, परह० २, १,—जीवि पु० (-जीविन्-अरसेन जीवितु शीलमस्येति) अरस आहारथी लवनार; अभिग्रह धारी मुनिविशेष. रसहीन आहार मे जीने वाला, अभिग्रहधारी मुनि विशेष an ascetic living on tasteless food. ठा० ५, १; भग० ६, ३३; —मेह पुं० (-मेव ) रस विनानो वरसाद; जेतो धणो त्रंहु न रहे तेवो वरसाद. रस रहित वर्षा unsubstantial rain. जं० प० २, ३६, भग० ७, ६;

अरह पु० ( अरहस्- न विद्यते रहो गुसं यस्या-सावरहा ) कर्म पणु रहस्य जेनी जणु षडार नथी ते; अरिहंत भगवान् कोई भी रहस्य जिस से छिपा नहीं है वह, अरिहंत भगवान् One to whom nothing can be a secret; an Arihanta. ठा० ४, १, ८, १,—स्सर. त्रि० (-स्वर) जेतो प्रगत स्वर-अवाज छे ते, भोटा अवाजवाणे, खुदकी वात करनार. उच्च स्वर वाला, बड़ी आवाज वाला (one) having a loud voice, frank. " अरहस्सरा केइ चिरठितीया " सूय० १, ५, २, ११,

अरह पुं० ( अर्हत् ) धं आदिना पूजनीय;

तीर्थकर; अरिहंत भगवान् इन्द्रादिकों का पूज्य, तीर्थकर; अरिहंत भगवान् One worthy of worship by Indra etc, a Tirthankara (२) अवधिज्ञानी अने मन पर्यवज्ञानी. अवधिज्ञानी और मनपर्यवज्ञानी. one possessed of Avadhijñāna and Manahparyavajñāna. " तत्रो अरहा प० तं० ओहिनाणअरहा मणपज्वनाणअरहा केवलनाणअरहा " ठ० ३, ४; नंदी० ४३, उत्त० ६, १८; सू० प० २०; आव० १०; नाया० ५; ८, १६; भग० १, ४, २, १; ७, १; ६, ३२; जं० प० २, ३०;—प्ल्लावि पुं० (—प्रलापिन् ) पोते अरिहंत नहि छता पोताने अरिहंत तरीके भोलनार, 'हुं अरिहंत छुं' ऐस मिथ्या प्रलाप करनार. अरिहंत न होते हुए भी ' मैं अरिहंत हूं ' ऐसा मिथ्या प्रलाप करने वाला. one vainly pretending to call himself Arihanta; one hypocritically calling himself an Arihanta. भग० १५, १;

अरहत्र-य. पुं० ( अर्हत् ) लुओ 'अरह'. श०६. देखो 'अरह'. शब्द. Vide 'अरह' नाया० ८; १६, नाया० ध० १०; भग० ५, ६, ७, ६, अरहत्रो. ष० ए०

अरहंत. पुं० ( अर्हत् ) लुओ 'अरह' श०६ देखो 'अरह' शब्द. Vide 'अरह'. भग० ३, २; ७, ६; १२, २; १५, १; २०, ८, आया० १, ४, १, १२६; दसा० ६, ४; वव० १, ३७, नाया० १; ८; १३; ओव० २०; ओघ० नि० १, जं० प० २, ३४, ५, ११५;—लद्धि ली० (—लद्धि) लद्धिविशेष; जेथी अरिहंतपणुं प्राप्त थाय तेवी लद्धि. लद्धिविशेष; जिससे अरिहंतता प्राप्त हो ऐसी लद्धि. a spiritual acquirement leading a man to the

state of an Arihanta. प्रव० १५०७; अरहट्ट पुं० ( अरहट्ट ) पाली शब्दानुं रेंट; धटीयंत्र; धटभाण पानी निकालने का घटीयंत्र; रहट्ट A water-wheel with pots fixed in it to draw water from a well. " जम्ममरणारहट्टे भित्तूय भवा विमुच्चिहिसि " आउ० ५६; परह० १, १; पिं० नि० ८३;

अरहणाय. पुं० ( अरहणक ) चंपा नगरी निवासी जेक व्हाणुवटी श्रावक, के जेने समुद्रमा देवताजे परिपह आधो, प्रतथी यलाववाने व्हाणुने दुप्याडवा जेवे देभाव कथो तो पणु ते यदित थयो नहि; त्यारे देवता तेना उपर प्रसन्न थय जेक दुंडणीजेड भेट आपी यात्यो गयो. अरहणके ते दुंडणी भस्कीनाथने भेट आध्या. चंपा नगरी निवासी एक जहाजी श्रावक, जिसे समुद्र में देवता मे कष्ट दिया और व्रत से चलित होने के लिये जहाज को डुबा देने का दृश्य दिखलाया, तो भी वह चलित नहीं हुआ. तब देवता ने प्रसन्न होकर उसे एक जोड़ी कुंडल भेंट में दिये. अरहणक ने वे कुंडल मल्लीनाथ को भेंट में दिये. A Śrāvaka living in Champā city and also a seafaring merchant; he was greatly troubled by a god in the ocean; the god in order to tempt him to give up his vows threatened to sink his vessel but in vain. The god then became pleased and presented him a pair of golden earrings. Arhannaka presented them to Mallinātha. नाया० ८; ( २ ) तारी नगरीना दत्ततो पुत्र, के जेणे पोताना मायाप साथे अर्द्धन्मित्र आया. पासे दीक्षा लीधी, आपनो स्वर्गवास थया

पञ्च अरिषु भुनिने गोयरी ज्यु पञ्चु तडके सहन न थवाथी ते पातत थयो, पञ्चु तेथी तेनी भा जे आर्या थया छे, तेने अहु दु.प्य लाग्युं, ते गांडा थध गया आभर भोगमां इसायेल अरिषुके मातानी अयदशा जेध त्तारे इरी वैराग्य धारणु कर्तुं माना कहेवाथी इरी दीक्षा लीधी, धगधगती शिला उपर संथारे इरी, तापने परिषु सहन कथे। तारी नगरी के दत्त का पुत्र, जिसने कि अपने माता पिता के साथ अर्हन्मित्र नामक आचार्य से दीक्षा ली पिता के स्वर्गवास हो जाने के पश्चात् अरिषिक को भिक्षार्थ जाना पड़ा, परन्तु धूप सहन न होने से वह दीक्षा से पतित हो गया और भोग में फँस गया, इससे इसकी माता को बहुत दुःख हुआ और इस दुःख से वह पागलसी हो गई माता की यह दशा देखकर भोग में फँसे हुए अरिषिक को वैराग्य हुआ और माता के कहने से फिर दीक्षा धारण की, तथा तप्त शिला ऊपर संथारा कर ताप का परिषह सहन किया. the son of Datta of the city of Tārī. He along with his parents took Dikṣā from the Āchārya Arhanmitra After the death of his father he (Araṇika Muni) had to go out to beg alms. He could not bear the heat of the sun and fell off from his ascetic vows The mother, greatly distressed at this became mad At length Aranika pitying her again became a monk at her request and performed Santhāiā on a hot slab of stone and endured the pain caused by

heat उत्त० टी० २; —समणो-वात्सग पुं० (—श्रमणोपासक) अरु हनड नामे श्रमणोपासक—श्रावक अरह-न्नक नामका साधुओं की उपासना करने वाला श्रावक. a Jaina layman of the name of Arāhannka नाया० ८;

अरहस्स न० (अरहस्य—नास्ति रहस्य-मपरं यस्मात्तदरहस्यम्) शुभभा शुभ छेद शास्त्रनु तत्त्व—रहस्य छेद शास्त्र का गुप्त से गुप्त तत्व—रहस्य The most abstruse and deep meaning of Chhedā Śāstra ठा० ६,—भागि पुं० (—भागिन् (—रहस्यस्याभावोऽरहस्य तद्भाजते य.स तथा) जेनाथी इंधं रहस्य—शुभ नथी ते , सर्वज्ञ, अरिहत भगवान् जिससे कोई रहस्य छिपा न हो वह; सर्वज्ञ, अरिहत omniscient; Arhanta ठा० ६;

अरहा पुं० (अर्हत्) लुभो 'अरह' शब्द देखो 'अरह' शब्द Vide 'अरह' भग० १६, ५, १८, २, २०, ८, २५, ६; निर० ३, १, अणुजो० १२७, सूय० २, ३, २२; ठा० ३, ४, कप्प० ५, १२०, ज० प० २, ३०;

अरहिय त्रि० (अरहित) निरंतर, विरह विना. निरतर, सदा Ceaseless, continuous "अरहियाभितावा तहवि तविति" सूय० १, ५, १, १७;

अराग त्रि० (अराग) रागरहित राग रहित. Free from passion or attachment. भग० १७, २,

अरि पुं० (अरि) दुश्मन, वेरी, शत्रु शत्रु; दुश्मन An enemy जीवा० ३, ३; नाया० २, जं० प० २, —छुवग्ग पुं० (—पड्वर्ग-पण्णां वग्गं समुदायः पड्वर्ग) इम, इध, दोल, मान भद अने भोद (दुर्घ) जे छ आतरिक

दुश्मनो समुदाय काम, क्रोध, लोभ, मान, मद, और मोह इन छ आन्तरिक शत्रुओं का समुदाय. the collection of the six internal enemies viz lust, anger, greed, pride, intoxication and rapture. सूय० टी० १, १, ४, १; अरिष्ट पुं० न० (अरिष्ट) विंशत्युं अड. नीम का झाड़. the Nimb tree melia azadirachta पत्र० १, २, (२) अरीक्षुं वृक्ष अने इक्षु; जेना झोलुथी वस्त्र धोवायछे ते. अरीठे का वृक्ष और फल, जिसकी माग से वस्त्र धोये जाते हैं वह the soap berry tree. पत्र० १; ६; राय० ५०, ( ३ ) पंढरमा धर्मनाथ-तीर्थंकरना प्रथम गणधरनु नाम. पन्द्रहवें तीर्थंकर धर्मनाथ के पहिले गणधर का नाम. name of the first Ganadhara of the 15th Tirthankara Dharmānātha. सम० प० २३३; ( ४ ) वृषभासुर वृषभासुर Vrisabhāsura; name of a demon परह० १, ४, (५) यालु योवीसीना आवीसमा तीर्थंकर नेमिनाथुं अपर नाम वर्तमान चोवीसी के बावीसवें तीर्थंकर नेमिनाथ का दूसरा नाम. another name of the twenty-second Tirthankara Neminātha of the present Chovīsī सम० १०; ठा० २, ४, (६) पांचमादेव-लोका त्रीण पाथयानुं नाम. पाचवें देवलोक के तीसरे पाथड़े ( परत ) का नाम. name of the third layer or stratum of the 5th Devaloka. प्रव० १४५५; ( ७ ) आनन्तनाथ तीर्थंकरना प्रथम गणधरनु नाम. १४ वें तीर्थंकर अनन्तनाथ के पहिले गणधर का नाम. name of the first Ganadhara ( apostle ) of Anantanātha the 14th Tirthankara प्रव० ३०७,

अरिष्टनेमि. पुं० ( अरिष्टनेमि ). यालु योवीसीना भरतक्षेत्रना आवीसमा तीर्थंकर; यदुवशमा उत्पन्न थयेल नेमिनाथ तीर्थंकर, जे जे परलुना जता पशुजोना पोटार सांलगरी राजुलने परएया विना पाछा वलया सज्जम लीधो अने आवीसमा तीर्थंकर थया वर्तमान चोवीसी के बावीसवें तीर्थंकर, यदुवशी नेमिनाथ तीर्थंकर, जो कि विवाह के लिये जाते समय रास्ते में पशुओं की पुकार सुन राजुल से विवाह किये बिना पीछे लौटे और दीक्षा धारण कर बावीसवें तीर्थंकर हुए. The twenty-second Tirthankara of the Bharataksetra of the present Chovīsī; the Tirthankara Neminātha born in the Yaduvamśa While on his way for marriage, he heard the piteous cries of animals, as a result of which he turned back without marrying Rājulā ( the proposed bride ) and became a monk. He became the twenty-second Tirthankara. “ तेणं का० ते० स० अरहा अरिष्टनेमी पंच चित्ते होत्था ” कप्प० ६, १६६; ठा० २, ४, सम० १०; नाया० ५; उत्त० २२, ४, अणुजो० ११६; निर० ५, १, अंत० १, १;

अरिष्टपुरा. स्त्री० ( अरिष्टपुरी ) इच्छावाध विजयनी मुख्य राजधानी कच्छकावती विजय की मुख्य राजधानी. The principal capital of Kachchhakāvati Vijaya. जं० प०

अरिष्टा. स्त्री० ( अरिष्टा ) महाकच्छा विजयनी मुख्य राजधानी महाकच्छा विजय की मुख्य राजधानी. The principal capital of Mahākachchhā Vijaya जं० प०

अरिस्ता स्त्री० (अरित) दुश्मनादि, शत्रुत्व  
दुरमा, शत्रुता Enmity, hostility.  
भग० १२, ७,

अरिदमण पुं० (अरिदमत) श्री साभदे २॥  
भीनासीनेरमा पुत्रपुंताम प्राच्यमदव स्वामी  
के ७० व पुत्र का नाम Nuno of the  
seventieth son of Śrī Rāzabh-  
deva Svāmī कर्म० ७, (२) व. तपु-  
रने अेक राजा के जेनी राजीमे येरने  
अभयदान आयेथु इत वमन्पुर का एक  
राजा, जिसका राजी ने चार को अभय  
दान दिया था an ancient king of  
Vasantapura whose queen had  
given an assurance of safety  
to a thief सूय० टा० १, ६, २३;

अरिस्त न० (अरिस्त) इरय, पुं०ना भया;  
अेक जनने रोग ववासार, मस्स की वगधि  
Piles, hemorrhoids जीजा० ३, ३;  
भग० ३, ७, नाया० १३, ज० प० २, २४;  
आष० ति भा० १८४;

अरिस्ता स्त्री० (अरिस्त) इरय, अेक प्रशरने  
रोग मस्स का रोग Piles, hemorh-  
oids प्रव० १३६०;

अरिस्तल्ल त्रि० (अरिस्त) इरयन रोगयोगे  
ववासीर की वामीवाला (One) suffer-  
ing from piles विवा० ७,

✓ अरिह धा० I (अरिह) योग्य अतुं, लायक  
थु, पूज्य थुं योग्य बनना, लायक हो 1,  
पूज्य होना To deserve, to be  
deserving of worship.

अरिहइ-ति सूय० १, ३, २, ७; दस० ८,  
२०, भग० २५, ७,

अरिहए आया० १, ३, २, ११३;

अरिहसि. भग० १५, १;

अरिह त्रि० (अरिह) योग्य, लायक. योग्य;  
लायक. Deserving; fit, worthy.  
नाया० ८, आव० २०; भग० ३, १, सु० च०  
१, ३५६, (२) आचार्य आदिनी पदवी  
योग्य, पूज्य आचार्य आदि की पदवीयोग्य;  
पूज्य possessing the qualities  
of a preceptor सम० ८, नाया० ५;  
पंचा० ३५, ८, प्रव० १३५;

अरिह पु० (अरिह) भूय, किम्मत. मूल्य;  
कांमत Price, cost, value सय० ८०;

अरिहंत पु० (अरिहंत-अरिहन्ति सिद्धिसोधशि-  
खरारोहणं चैत्यहन्त ) भेक्ष जयने लायक;  
तीर्थकर, अरिहंत भगवान् मान जाने के योग्य;  
तीर्थकर; अरिहंत भगवान्. One worthy of  
final liberation, a Tirthankara.

“ अरिहति बंदणनमंसणाणि अरिहति पूय-  
सक्कार सिद्धिगमणं च अरिहा तेण बुद्धति.”  
जं० प० भग० १, १, ३, १, १८, ७; २५,  
७, नाया० १, ८, १६, पञ्ज० १, आव० ३४;  
अणुजा० ४२ दस० ६, ४, २, कप्प० १, १;  
आव० १, २, प्रव० ४,

अरिहंत पु० (अरिहन्त-अरीनष्टकर्माणि हन्तीत्य-  
रिहन्ता ) कर्मरूपी दुश्मनने मारना, अरिहंत  
भगवान् कर्मरूपी दुश्मनो को मारने वाला,  
अरिहत भगवान् Destroyer of ene-  
mies in the form of Karmas; Ari-  
hanta आव० १२, भग० १, १; अणुजो०  
१३१, नाया० १६; दसा० १, १,—चैद्य.  
पु० न० (—चैत्य ) अरिहंत संयधी कुंठ पथु  
रुम रक्षयिन्स-स धु, साधुने वेध, धुम-स्तूप  
वगैरे अरिहत सम्यग्नी के इ भी स्मारक चिन्ह-  
साधु साधु का वेष और स्तूप आदिक. any  
of the marks by which an  
Arihanta is brought to mind,  
e g. an ascetic, the gar-  
ments of an ascetic etc.

भग० ३, २; ओव० ३६;—भासिय त्रि० (-भाषित) अरिहंतना लाभेल-परूपेक्ष अरिहंत कथित, अरिहत का कहा हुआ. told by or explained by Arihanta. सू० १, ६, २६;—असु-रणाय त्रि० (-अनुज्ञात) अरिहंते कर्तव्य रूपे लक्ष्णापेक्ष अरिहंत द्वारा कर्तव्यरूप वत-लाया हुआ prescribed as a duty by Arihanta पत्र० १२,—वंस पु० (-वंश) अरिहंतने पश अरिहंत का वंश the genealogy of Arihanta ठा० ३, १;—सासन न० (-शासन) अरिहंत-तीर्थकरनु शासन-दर्शन, जैन दर्शन अरिहंत-तीर्थकर का शासन, जैन दर्शन the canon of Arihantas; the Jaina canon or church. परह० २, ५;

अरिहदत्त. पु० ( अरिहदत्त ) आर्य सुस्थित अने सुप्रतिबुद्धना पंचमः शिष्यनु नाम आर्य सुस्थित और सुप्रतिबुद्ध के पाचवें शिष्य का नाम Name of the fifth disciple of Ārya-Susthita and Suprati-buddha. कप्प० ८;

अरिहदिरण पु० ( अरिहदत्त ) आर्य सिंहगिरिना चोथा शिष्य आर्य सिंहगिरि का चौथा शिष्य. The fourth disciple of Ārya-Simhagiri कप्प० ८,

अरिहदिन्न. पु० ( अरिहदत्त ) लुओ ' अरिह-दिरण ' शब्द देखो ' अरिहदिरण ' शब्द Vide ' अरिहदिरण ' कप्प० ८,

अरिहया. स्त्री० ( अरिहत्ता ) अरिहंतपणुं, तीर्थकरपणुं अरिहंतपना Status of an Arihanta; Tirthankara-hood पंचा० ८, ४०;

अरुअ. त्रि० ( अरुअ ) रे गरहित; निरोगी रोग,

रहित; निरोगी Free from disease; healthy भग० १, १, ओव० १०; कप्प० २, १५; सम० १; नाया० १;

अरुण पुं० ( अरुण ) हरिवास क्षेत्रना विषड-वर्ष नामे वाटला. वैताल्य पर्वतने अधिष्ठाता देवता. हरिवर्ष क्षेत्र के विषडवर्ष नामक वाटला वैताल्य पर्वत का अधिष्ठातृ देव. The presiding deity of Vātālā Vaitādhyā mountain called Viyarhāvai in Harivarṣa Kṣetra जं० प० ठा० २, ३, ( २ ) ८८ महाग्रहमांते ५४ मेा ग्रह. ८८ महाग्रहों में से ५४ वॉ ग्रह. the 54th of the 88 great planets. सू० प० २०, ठा० २, ३, ( ३ ) सूर्यनी प्रला कूटवाने समय. सूर्य की प्रभा कूटने का समय. dawn ओघ० नि० २६६, ( ४ ) नन्दी-श्वरवर समुद्र अने अरुणोदग समुद्रनी पंच्येनु द्वीप नन्दीश्वरवर समुद्र और अरुणो-दग समुद्र के बीच का द्वीप the island between the two oceans viz Nandīśvaravara and Aru-no-daga सू० प० १६, जं० प०

अरुणप्पभ पुं० ( अरुणप्रभ ) अनुवेसंधर देवाना चोथा नागराजनु नाम अनुवेलधर देवों का चौथा नागराज The fourth king of the Anuvelandhara gods. जावा० ३, ४, ( २ ) लवण समुद्रमा उत्तर दिशाये ४२ हजार योजन उपरे आवेल अनुवेसंधर देवाने आवास पर्वत लवण समुद्र की उत्तर दिशा में ४२ हजार योजन की दूरी पर अनुवेलधर देवों का आवास पर्वत-निवास स्थान the mountaina-bode of the Anuvelandhara gods in the north of Lavana ocean at a distance of 42 thousand Yojanas ठा० ४, २, ( ३ ) राहुनां लालअन्तिवाणा पुद्गण. राहु के लाल

कान्ति वाले पुद्गल the red particles of matter of the body of Rāhu चं० प० २०;

**अरुणप्रभा.** स्त्री० ( अरुणप्रभा ) ६ मा तीर्थंकरनी प्रव्रज्या पालकी नाम ६ वें तीर्थंकर की प्रव्रज्या पालकी का नाम. Name of the Pravrajyā palanquin of the ninth Tirthankara. सम० प० २३१,  
**अरुणभद्र.** पु० ( अरुणभद्र ) अशुक्ल समुद्रने अधिपति देवता अरुणवर समुद्र का अधिपति देव The presiding deity of Arunavara ocean सू० प० १६, जीवा० ३,

**अरुणमहाभद्र** पुं० ( अरुणमहाभद्र ) ७७ अथो उपलो शब्द देखो ऊपर का शब्द Vide the above word सू० प० १६, जीवा० ३;

**अरुणवर** पु० ( अरुणवर ) अे नामने अेड द्वीप अने अेड समुद्र इस नाम का एक द्वीप और एक समुद्र. An ocean of that name; an island of that name. पञ्च० १५; सू० प० १६, जीवा० ३, ४; अणुजो० १०३;—**द्वीव** पु० (—द्वीप ) अे नामने अेड द्वीप एक द्वीप का नाम an island of that name भग० २, ८,—**समुद्र.** पुं० (—समुद्र ) अे नामने अेड समुद्र, ३ नेमांथी तमस्काय नीकणेल छे. एक समुद्र का नाम, जिसमें से तमस्काय निकला हुआ है name of an ocean from which Tamaskāya has emanated. प्रव० १४१२,

**अरुणवरभद्र** पुं० ( अरुणवरभद्र ) अशुक्ल द्वीपने अधिपति देव अरुणवर द्वीप का अधिपति देव The presiding deity of Arunavara island. जीवा० ३, ४,

**अरुणवरमहाभद्र.** पुं० ( अरुणवरमहाभद्र ) अशुक्ल द्वीपने अधिपति देवता अरुणवर द्वीप का अधिपति देव The presiding deity of Arunavara island. जीवा० ३, ४,

**अरुणवरोभास.** पुं० ( अरुणवरोभास ) अे नामने अेड द्वीप अने अेड समुद्र. एक द्वीप और एक समुद्र का नाम Name of an ocean, also the name of an island जीवा० ३, ४,

**अरुणवरोभासभद्र** पु० ( अरुणवरोभासभद्र ) अशुक्ल द्वीपने अधिपति देवता अरुणवरभास द्वीप का अधिपति देव The presiding deity of Arunavarabhāsa island. जीवा० ३, ४, सू० प० १६,

**अरुणवरोभासमहाभद्र** पुं० ( अरुणवरोभासमहाभद्र ) अशुक्ल द्वीपने अधिपति देवता अरुणवरभास द्वीप का अधिपति देव. The presiding deity of Arunavarabhāsa island जीवा० ३, ४; सू० प० १६,

**अरुणवरोभासमहावर** पुं० ( अरुणवरोभासमहावर ) अशुक्ल समुद्रने अधिपति देवता अरुणवरोभास समुद्र का अधिपति देव The presiding deity of Arunavarabhāsa ocean सू० प० १६, जीवा० ३, ४;

**अरुणवरोभासवर** पु० ( अरुणवरोभासवर ) अशुक्ल समुद्रने अधिपति देवता अरुणवरोभास समुद्र का अधिपति देव The presiding deity of Arunavarabhāsa ocean जीवा० ३, ४, सू० प० १६;

**अरुणाभ** पुं० ( अरुणाभ ) राहुना कान्ति वाले पुद्गल The

red material particles of Rāhu. सू० प० २०; ( २ ) पथम. देवलोके ङ् अरुणा नाम ङ् विमानः पाचये देवलाक वा अरुणा नामक विमान. the heavenly abode of the fifth Devaloka, Arunābha by name सम० ८; भग० ७, ६; १८, ७; सू० प० १६;

अरुणावडिसग. पुं० ( अरुणावतंसक ) अग्नी-  
आरमा देवलोके नुं ओ नामनु ओक विमान, के  
नेना देवत नु आयु' य ओकवीस सागरोपमनु  
छे. ग्यारहवें देवलाक के एक विमान वा षम,  
जिसके निवासी देवों की आयु २१ सागरोपम  
की है. The name of an abode in  
the eleventh heavenly region;  
the resident gods of which have  
a duration of life for twenty-  
one Siguropamas. सम० २१,

अरुणोत्तरवडिसग पुं० ( अरुणोत्तरवतंसक )  
अरुणोत्तरवतंसक नामनु पथम. देवलोके नु  
ओक विमान पाचये देवलाक के एक विमान  
का नाम. A heavenly abode of  
the fifth Devaloka, Arunottara-  
vātamsaka by name. सम० ८

अरुणोद पुं० ( अरुणोद ) अरुणोद नामे ओक  
द्वीप अने ओक समुद्र अरुणोद नाम वा एक  
द्वीप और एक समुद्र. An island of  
that name; an ocean of that  
name सू० प० १६;

अरुणोदग पुं० ( अरुणोदक ) अरुणोद द्वीपने  
द्वरेना अरुणोदग नामने समुद्र. अरुणोद द्वीप  
को घेरे हुए अरुणोदक नामक समुद्र.  
An ocean named Arunodaka  
encircling the Arunodaka Dvīpa  
सू० प० १६; भग० १३, ६,

अरुणोदय. पुं० ( अरुणोदक ) अरुणो  
" अरुणोदग " शब्द दखा " अरुणोदग "  
शब्द. Vids " अरुणोदग ". भग०  
६, ४;—समुद्र. त्रि० ( समुद्र ) अरुणो  
" अरुणोदग " शब्द. दखा " अरुणोदग "  
शब्द vide " अरुणोदग. " भग० २, ८;  
६, ४;

अरुणोवधाय. पुं० ( अरुणोवधाय ) ७२ सूत्र-  
मानुं ओक कथित सूत्र, के नेमा अरुणो  
देवत नी उत्पाते संधी लीकत लती लाव  
ते लच्छे थु गये छे ७२ सूत्रों में से  
एक कातिक सूत्र, जवन अरुण देवता का  
उत्पात क मन्त्र में वर्ण था इस सूत्र का  
अवच्छिन्न हो गना है A Kālika Sutra,  
forming one of the seventy-  
two Satras It contained an  
account of the origin of Arun-  
god. It is at present not in  
existence नदी० ४३, वक्० १०, २८,  
अहय न० ( अष् ) अथम, २९, था जल्म,  
घात्र, वरा A wound, a cut. " नाति-  
कइइय सेयं प्रत्यस्तावत्समन्ति " सूय० १,  
३, ३, १३,

अरुह पुं० ( अरुह ) अरुह तीर्कर, अरिहंत  
अरिहंत, तीर्कर Arahanta, Tirchan-  
kara. विशेष० २०८५;

अरुह त्रि० ( अरुह ) योग्य, लयक योग्य;  
लायक. Worthy, deserving विशेष०  
३३६८,

अरुह पुं० ( अरुह-न रोहति भूयः सतारे  
समुत्पद्यत इत्यरुहः ) अ-भरहित; सिद्ध-  
लगव न जन्म रहित. सिद्ध भगवान्. Free  
from birth; a Siddha. भग० १. १;  
अरुहंत पुं० ( अरुह-न रोहति संतारे भूते  
दग्धबीजत्वदित्यरुहन् ) अरिहंत लगवान्  
अरिहन्त भगवान्. Arihanta. भग० १, १;



अरुच त्रि० (अरूप-न विद्यते रूपं यस्यासावरूपः  
रूपरहित; वर्णरहित रूपरहित, वर्ण रहित.  
Formless; colourless भग० ७, १०,  
—काय पुं० (-काय) धर्मास्तिकाय, अध-  
र्मास्तिकाय, आकाशस्तिकाय अने अणुस्तिकाय  
धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश-  
स्तिकाय और जीवास्तिकाय. the four  
substances viz Dharmāstikāya,  
Adharmāstikāya, Ākāśastikā-  
ya and Jivāstikāya. भग० ७, १०,  
अरुचि. त्रि० (अरुचिन्-रूप मूर्तिवैर्णादिमत्र  
तन्नास्ति यस्यैत्यरूपी) रूपरहित, रूपवगरि  
'अमूर्त; रूप रहित; अरुची Formless,  
colourless उत्त० ३६, ४, ६५, टा०  
२, १; ४, १, भग० २, १०, ७, ७, ११, १०;  
१३, ७; १६, ८, १७, २; आया० १, ५, ६, १७०,  
—अजीव त्रि० (-अजीव) धर्मास्तिकाय  
आदि चार अणु द्रव्य. धर्मास्तिकाय आदि  
चार अजीव द्रव्य. the four material  
substances viz Dharmāstikāya  
etc. भग० १०, १, ११, १०, -अजीवद्रव्य  
न० (-अजीवद्रव्य) अरुपी अणु पदार्थ;  
धर्म, अधर्म, आकाश अने काण अने चार द्रव्य  
रूप रहित अजीव पदार्थ; धर्म, अधर्म, आकाश  
और काल ये चार द्रव्य. the four  
formless material substances  
viz Dharma, Adharma, Kāla  
and Ākāśa भग० २५, २,  
—अजीवपरणवणा. त्रि० (-अजीवप्रज्ञा  
पना) अरुपी अणुवती परुपत्त्या-निरूपण  
रूप रहित अजीव पदार्थों का निरूपण  
explanation of the formless  
material substances. पञ्च० १,  
—काय. पुं० (-काय) लुओ "अरुचकाय"  
शब्द. देखो "अरुचकाय" शब्द. vide  
"अरुचकाय." भग० ७, १०;

अरोग त्रि० (अरोग) पीडाहित; रोगहित.  
पीडा रहित, रोग रहित; नारोग Free  
from disease or pain भग० १८, १;  
अरोगि त्रि० (अरोगिन्) लुओ "अरोग" शब्द  
देखो "अरोग" शब्द Vide "अरोग" दस०  
६, ६१, पि० नि० ४१३; निसी० १३, ३७;  
अरोग्ग. त्रि० (अरोग) लुओ "अरोग" शब्द.  
देखो "अरोग" शब्द. Vide "अरोग"  
आया० २, १५, १७६,  
अरोप-प-माण व० कृ० त्रि० (अरोचयत्) न  
रे अयतो. ही रुचता हुआ Not pleasing  
भग० ३, १, ६, ३३, नाया० १५, १६,  
अल त्रि० (अल) धृष्ट कार्य करय म' समर्थ.  
इष्ट कार्य करन में समर्थ. One able to  
perform a desired work आया०  
२, ५, १, १४७; ( २ ) अलादेवी  
सिंहासन अलादेवी का सिंहासन the  
throne of Alādevī नाया० ध० ३,  
अलं अ० (अलम्) परेपू, परिपू, परेपू, परिपू,  
पर्याप्त Full; full of perfection.  
भक्त० ५, पचा० ६, ५०; आया० १, ३, २,  
१११, १, ७, ५, २११; ( २ ) समर्थ समर्थ  
able, capable दस० ७, २७, ८, ६२,  
भग० ११, ११ १५, १, नाया० १, ८, १४;  
१६, निसी० १४, ७; उत्त० ६, ३ ( ३ )  
प्रतिषेध, निषेध न कर प्रातवम, निषेध,  
नामजू an indeclinable showing  
prohibition, no more सूय० नि०  
टा० २, ७, २०४, ( ४ ) अति, ध्यु;  
अत्यन्त बहुत, अत्यन्त. enough, too  
much. आव०  
अलंकरण त्रि० (अलङ्कृत्य) शोभाकारक  
शोभाकारक Adorning, beautify-  
ing, embellishing कप० ३, ३६;  
अलंकार. पुं० (अलङ्कार) आभूपायु केशाङ्ग-  
कार, भागाङ्गकार, वस्त्र लंकार अने आभरण्या-

लंकार ये चार प्रकारना अलंकारमानो गमे ते अेक प्रकार आभूषण, गहना; केशालंकार, मालालंकार, वस्त्रालंकार और आभूषणालंकार इन चार प्रकार के अलंकारों में से कोई भी एक प्रकार का अलंकार. Any one of the four kinds of embellishment, viz those for the hair, those consisting of garlands, rich clothes, and gold and silver ornaments.

“ तप्य से सूरियाभे देवे केशालंकारेण मालालंकारेण वस्त्रालंकारेण आभरणालंकारेण च उविहेण अलंकारेण अलंकिए विभूषिए समाप्ते’ राय० १८६, नाया० १, २, १४, १६, १८; दस० २, २, भग० ३, १, ७, ६, ६, ३३, १५, १; ठा० ४, ४, दसा० ६, ४; कप्प० ४, ८२; ज० प० ५, ११७,—सभा स्त्री० (-सभा) अलंकार-धरेणु पढेरानी सभा-अेक-धर. गहने पहिरने का घर a chamber reserved for putting on ornaments जीवा० ३, ४,

अलंकारिय पु० ( अलंकारिक ) इलम, नाई, वांछुं, नापित नाई A barber विवा० ६; नाया० १३, ( २ ) अलंकार, धरेणु अलंकार, गहना. an ornament. नाया० १३, ठा० ५, १, ज० प० ४, ८८,—कम्म न० (-कर्मन्) केश आदि समारवानु कर्म, क्षुरकर्म, नभ्यादि उतारवा ते. केश-वाल वगैरह बनाने का कर्म, चौरकर्म, बाल नख आदि काटना shaving, hair-cutting etc. विवा० ६, नाया० २, १६;—सभा स्त्री० (-सभा) न्या अेसा अलंकार-धरेणु पढेराय तेतुं स्थान, आभूषण पढेरानी सभा-धर जहा बैठकर आभूषण पहिरे जाय वह घर. a chamber reserved for putting on ornaments ज० प० ४, ८८; राय० १६; ठा० ५, ३; ( २ ) इलमत इरावानी न्या. हजामत कर-

वाने की जगह. a room set apart for shaving purposes नाया० २; १३,— सहा स्त्री० (-सभा) लुओ उपनी १७६. देखो ऊपर का शब्द. vide the above word. नाया० १३, ठा० ५, ३;

अलंकारिय. त्रि० ( अलंकारित ) आभूषण वगेरेथी अलंकृत करे. आभूषण-गहनों से अलंकृत. Adorned; ornamented. भग० ६, ३३,

अलंकिअ-य त्रि० ( अलंकृत ) अलंकृत; विलुपित, मुकुट आदिथी शलुगारे, शोभा-वे, अलंकारयुक्त अलंकृत, सुशोभित, मुकुट आदि से शृंगारा हुआ; अलंकार युक्त Adorned, ornamented ओव० ११; ३१; आया० २, २, ४, १७०; अणुजो० १२८; ठा० ७, १, उत्त० ३०, २२; नाया० १, भग० ६, ३३, १८, ५, निसी० १२, ३४, कप्प० ४, ६७; ( २ ) न० २५४ अलग अलग २१२थी गावु ते; गायनने अेक गुणु. गायन का एक गुण, स्पष्ट स्वर से गाना. singing in distinct tunes or strains, regarded as a merit in music. अणुजा० १२८, जीवा० ३;

अलंघसिज्ज. त्रि० ( अलंघनीय ) उलंघन करवा योअ नडि उल्लघन करने के अयोग्य.

Intransgressible. सु० च० २, ४४४,

अलंब. त्रि० ( अलम्ब ) लायु नडि, दुकुं. जो लंबा न हो वह, छोटा. Not long, short.

“ अयाकुच्चि अलंबकुच्चि ” उवा० २, १०१;

—कुक्खि त्रि० (-कुक्खि) लंघ धरदित कुक्खि-कुंघे जेनी ते, जेनी कुंघे वधारे लांघी नथी ते. जिसकी कुक्की-कोख बहुत लंबी न हो वह ( one ) of small womb; having a womb not very long. नाया० १;

अलंबुसा स्त्री० ( अलम्बुसा ) उत्तररुचि पर्यंत उपर वसनागी आहमांनी पढेकी दिशाकुमारिका. उत्तर

रुचक पर्वत पर रहने वाली आठ दिशाकुमारियों में से पहिली दिशाकुमारी The first of the eight Dīśākumārīs residing on Uttara Ruchaka mountain ज० प० ५, ११४;

अलंबिता स० कृ० अ० ( अलच्छा ) न पा-  
भीने; भोग्या वगर. विना पाये; विना प्राप्त  
किये Without getting, without  
having obtained. ठा० ३, २.

अलभोगसमर्थ. त्रि० ( अलभोगसमर्थ )  
भोग भोगवाने पुरती रीते समर्थ यथेष्ट,  
अर बुवानीमा आवेष्ट भोग भोगने में पूर्ण  
रीति से समर्थ Fully capable of  
worldly enjoyments, in the  
full spring of life. ओव०

अलकापुरी. स्त्री० ( अलकापुरी ) वैदिक  
शास्त्र प्रमाणे कुबेरनी नगरी लौकिक शास्त्र के  
अनुसार कुबेर की नगरी The city  
belonging to Kubera according  
to popular mythology ज० प०  
३, ४१;

अलक पु० ( अलक ) वाराणसी नगरीने  
राज वाराणसी नगरी का राजा A king  
of the city of Vārāṇasī. अत० ६,  
१६;

अलक पु० ( अलक ) अंतगड सूत्रना छठ  
वर्गना सोपमा अध्ययननु नाम अन्तगड सूत्र  
के छठे वर्ग के सोलहवें अध्याय का नाम. The  
sixteenth chapter of the sixth  
section of Antagada Sūtra अत०  
६, १६; (२) महावीरस्वामीना समयमा डाशी-  
वणारसी ( वाराणसी ) नगरीने अंक राज, ३  
के अठे भोटा पुत्रने रत्न्य सोपी महावीर  
स्वामी प से दीक्षा लीधी, अगीयार अगने  
अभ्यास करी, धणु वरसनी प्रवन्था पाणी,  
विपुल पर्वत उपर सथारो करी सिद्धि भोगी

महावीरस्वामी के समय का काशी (वाराण-  
सी) नगरी का एक राजा, जिसने अपने  
बड़े पुत्र को राज्य दे, महावीर स्वामी से दीक्षा  
ली और ग्यारह अंगों का अभ्यासकर बहुत  
वर्षों तक दीक्षा का पालन किया, तथा अन्त में  
विपुल पर्वत के ऊपर संन्यासकर सिद्धि प्राप्त  
की a king of Benares contem-  
porary with Mahāvīra Svāmī,  
who resigned his kingdom in  
favour of his eldest son, took  
Dīksā from Mahāvīra, studied  
eleven Angas, practised asce-  
ticism for many years perform-  
ed Sānthārā on Vipula mount  
and became Siddha अंत० ६, १६;

अलक्षणा. न० ( अलक्षण ) अपक्षय.  
कुलक्षण; खराब चिन्ह. A bad sign, a  
bad habit ( २ ) त्रि० सारा लक्षण  
रहित अच्छे लक्षणों से रहित devoid of  
good signs. नाया० २;

अलक्षण्या स्त्री० ( अलक्षणा ) असमन्वस  
भाषण, यद्वा तद्वा भोक्षु ने असमन्वस भाषण,  
यद्वा तद्वा बोलना Reckless, wanton  
speech विशेष० ३४७;

अलगापुरी स्त्री० ( अलकापुरी ) लुभो  
“अलकापुरी” शब्द देखो “अलकापुरी”  
शब्द. Vide “अलकापुरी” अत० १,

अलग्ग. त्रि ( अलग्न ) असम्बद्ध, न लागेष्ट.  
न लगा हुआ; असम्बद्ध. Unconnected;  
not joined together पंचा० ३, २१;

अलक्ष पुं० ( अलक्ष ) लक्ष्मी रस, अलक्ष  
लाक्ष का रस, लाक्षारस Lac, a dark-  
red trans-paerent substance.  
निर० ३, ४,

अलक्षत्र-य. पुं० ( अलक्षत्रक ) अलक्षो.  
लाक्ष Lac, a dark-red trans-

parent substance. (२) त्रि० लाभ्यती  
रंगले, लाख लाख से रंगा हुआ, लाल  
dyed with lac; of scarlet colour.

‘जे रत्तए ते अलत्तए’ अणुजा० १३१;

अलत्तग न० (अलक्तक) अक्षतो; लाल रंगतुं  
येऽद्रव्य. लाख, लाल रंग का एक द्रव्य.  
Lac; a duk-red transparent  
substance. अणुत्त० ३, १;

अलद्ध त्रि० (अलब्ध) नहि भजेत; प्राप्त न  
थयेत् नही मिला हुआ: अप्राप्त.  
Unobtained; not obtained

ठ० ५, २, नाया० ५; भग० १८, १०;

—पुञ्ज. त्रि० (-पूज) पूर्वं प्राप्त-  
नहि श्रेय. कोष्ठ प्राप्त नहि भजेत् पहिले  
कमी न मिला हुआ. not obtained  
before; never obtained before.

आया० १, ६, ३, ८;

अलद्धिजुत्त त्रि (अलद्धियुक्त) अक्षमिध-  
अप्रमिध जुं, जेने अक्षमिधको लक्षण भजे  
ते अलद्धि सहित, जिस आहारादिक का लाभ  
न हो वह (One) with non-attain-  
ment of e. g. food etc. पंचा० १८,

३६,

अलद्धिय. त्रि० (अलद्धिक) अक्षमिधया जुं,  
लक्षण वगरतुं, अक्षमिधरहित. लब्धिरहित, लाभ  
विनाका. (One) having no attain-  
ment of: attainment of. भग०  
८, २, ओ३०

अलद्धुश्च सं० कृ० अ० (अलद्धुश्च) भेग०या  
वन, न भेग०याने विना प्राप्त किये, विना पाये  
Without having obtained; hav-  
ing not obtained. “अलद्धुश्च नो  
परिदेवयुजा” दस० ६, ३, ४;

अलभमाण व० कृ० त्रि० (अलभमान) न प्राप्त  
थजुं, न भणुं. प्राप्त न होता हुआ; न मिलता  
हुआ. Being not obtained; not

being obtained. नाया० ६; १६;

अलभमाण व० कृ० त्रि० (अलभमान) न  
पाभते. देखा प्राप्त न करता हुआ. Not  
obtaining. निसी० १०, ४४; नाया० २;  
८, ६; १६, ओ३० ३६;

अलभसिरी त्रि० (अलभत्री) अलदेवीनी  
पूर्वनी माता. अलादेवी की पूर्वकी माता.  
The former mother of Alādevī.  
नाया० घ० ३;

\*अलमंथु त्रि० (अलमस्तु-समर्थ) समर्थ;  
शक्तिमान्. समर्थ, शक्तिवाला Powerful;  
strong. ठ० ४, २;

अलमत्थु. त्रि० (अलमस्तु) थस करो-भ  
करो अथी रीते निषेध करनार ‘वस, समाप्त,  
अब न करो’ इस प्रकार निषेध करने वाला.  
Enough of it; don't do it. भग०  
७, ८, ठ० ४, २;

अलय. न० (अलक) विछिनो कांटे. विच्छू  
का डंक. A scorpion's sting. “अलय  
भंजावेइ” विवा० १, ६;

अलया. स्त्री० (अलका) लुओ “अलकापुरी”  
शब्द देखो ‘अलकापुरी’ शब्द. Vide  
“अलकापुरी”. नाया० ४;

अलयापुरी स्त्री० (अलकापुरी) लुओ  
“अलकापुरी” शब्द देखो “अलकापुरी”  
शब्द. Vide “अलकापुरी” अंत० १, १,  
नाया० ५;

अलव त्रि० (अलप-लपन्तीति लया वाचला,  
न लग अलया मौनव्रतिनः) मौनव्रतधारी.  
मौन व्रत धारण करने वाला (One) with  
a vow of silence सूय० २, ६, १५;

अलस. त्रि० (अलस) आणसु; प्रमादी  
आलसी, प्रमादी. Lazy; idle; negligent.  
नि० नि० २६५; ओ३० नि० भा० ४८, (२)  
भ-६; धीमु. मंद; ठंडा, सुस्त. slow; not  
quick; dull ओ३० नि० ४८, (३) पुं०

अलसीयो. एक प्रकार का बरसाती दो इन्द्रिय वाला जीवविशेष, अलसीया the snake-like worms that originate in the rainy season mostly in the Aslesā constellation 1 e about the beginning of July “अलसा मा इवाहया” उक्त० ३६, १२७, ( ५ ) उत्तर भरतभानो अेक देश उत्तर भरत क्षेत्र मे का एक देश name of a country in Uttara ( northern ) Bharata ज० प०

अलसग त्रि० ( अलसक ) आणसु आलसी Lazy, idle, inert सूय० २, २, ५४;

अलसमाण व० कृ० त्रि० ( अलसायमान-अनलसोऽलसो भवतीत्यलसायते, अलसायत इत्यलसायमान ) आलस्य करतो आलस्य करता हुआ Remaining idle; keeping lazy गच्छा० ४,

अलसय. त्रि० ( अलसक ) विश्वयिक्तविशेष, आऽानो अेक रोग. विश्वचिकाविशेष, दस्त का एक रोगविशेष A disease connected with stools, a disease affecting stools “ एवं खलु तुम अतो सत्तरत्तस्स अलसण्ण वाहिणा अभिभूया समासी” उवा० ८, २५५,

अलसिअ त्रि० ( आलस्यिक ) आणसु, प्रमादी आलसी, प्रमादी Idle, lazy, negligent. उक्त० २७, १०,

अलसिरी स्त्री० ( अलसी ) वाराणसी नगरीना अल गाथापतिनी स्त्री, धरणेन्द्रनी अला नामनी अग्रभक्षिणीनी पूर्वभवनी माता वाराणसी नगरी के अल गाथापति की स्त्री, धरणेन्द्र की अला नामक पटरानी की पूर्वभव की माता का नाम The wife of the Gāthāpati Ala, of the city of

Vārānasī, the mother of Alā the crowned queen of Dharaṇendra in her previous buth. नाया० ध० ३,

अलसी स्त्री० ( अलसी ) अलसी, धान्य-विशेष अलसी धान्यविशेष A kind of corn आया० नि० टी० १, १, ५, १२६; भग० २२, २;

अलह्य त्रि० ( अलघुक ) अत्यन्त सूक्ष्म; अनाथी अने कोष लघु नथी ते. अत्यन्त सूक्ष्म, जिससे दूसरा कोई लघु न हो वह Vely minute, infinitesimal ठ० १०;

अला त्रि० ( अला ) धरणेन्द्रनी अथम अग्रभक्षिणीनु नाम. धरणेन्द्र की प्रथम पटरानी का नाम. Name of the first principal queen of Dharaṇendra भग० १०, ५; नाया० २, ( २ ) विद्युत्कुमार ज्ञातनी भोटी देवी विद्युत्कुमार जाति की बड़ी देवी a great goddess of the Vidyutkumāra class ठ० ६;

—वर्डिसय न० ( अलसक ) अला देवीनु भवन अलादेवी का भवन the palace of Alā Devī नाया० २, नाया० ध० ३,—सीहासण न० (—सिहासन ) धरणेन्द्रनी पटरानी अलादेवीनु सिंहासन. धरणेन्द्र की पटरानी अलादेवी का सिंहासन. the throne of Alā Devī the crowned queen of Dharaṇendra नाया० ध० ३,

अलात्र-य न० ( अलात्र ) आणसु, सणगतु-धुधवातुं आणु अथवा लाङ्गुं सिलगता-धुधकता हुआ कंडा अथवा काष्ठ A burning piece of fuel विशे० २२४; २४३३, दस० ४, ८, ८, नदी० १०; पन्न० १; नाया० १६; ओष० नि० भा० २१, जीवा० ३, १; ठ० ५, १,

अलाउ. न० ( अलाउ ) तुं० तुं० A  
 gourd अणुजो० १३१, आया० २, ६, १,  
 १५२; सूय० १, ४, २, ४;—च्छेद न० (—च्छेद)  
 तुं० छेदवानुं छेदियार—यधुवगेरे. तूवा छेदने  
 का हथियार an instrument (e g  
 knife) to cut or bore a gourd  
 “अलाउच्छेदं पेहेहि” सूय० १, ४, २, ४,  
 —पाय न० (—पात्र) तुं० पात्र तूवे  
 का पात्र a vessel or receptacle  
 made of gourd आया० २, ६, १, १५२,  
 अलाउय न० (अलाउक) तुं० तूवा  
 A gourd आया० २, ६, १, १५२;  
 अलाघवया स्त्री० (—अलाघवता—अलाघव—  
 अविद्यमान लाघव लघुता यस्य स तथा तद्भावो-  
 स्लाघवता ) लघुतानो अभाव लघुता  
 का अभाव Absence of lightness  
 or smallness प्रव० ८१३, पंचा० १७,  
 १८;  
 अलादेवी स्त्री० (अलादेवी) लु० ‘अला’  
 शब्द देखो ‘अला’ शब्द Vide ‘अला’  
 नाया० ध० ३;  
 अलावु न० (अलावु) लु० ‘अलाउ’ शब्द  
 देखो ‘अलाउ’ शब्द Vide ‘अलाउ’ विशेष०  
 २३७०; जं० प०  
 अलाभ पुं० (अलाभ) अलाभ, आहारादिनी  
 अप्राप्ति अलाभ, आहारादि की अप्राप्ति Non-  
 acquisition e g of food etc  
 “अलाभो तं न तज्जण्” उक्त० २, ३१, दस०  
 ५, २ ६,—परिसह पुं० (—परिपह)  
 आहारादिदिनी अप्राप्तिनो परिपह आहारादिक  
 की अप्राप्ति का परिपह bearing calmly  
 pain arising from not obtaining  
 ‘food etc सम० २२, मग० ८, ८;  
 अलाहि अ० (अलम) निवाग्ल, निषेध निवा-  
 रण, निषेध; ननाहो An indeclinable  
 meaning “enough” “don t do”

( २ ) संपूर्ण, पर्याप्त सम्पूर्ण. पर्याप्त  
 fully; perfectly मग० ६, ३३; १५, १,  
 नाया० १; १६,

अलाहि धा० (अलाभि) लल धातुनु ओ३  
 रूप, लु० ‘लम्’ धातु लम धातु का एक रूप,  
 देखो ‘लम्’ धातु A form of the root  
 “लम्” q v. कम्प० ६, १८

अलिआ स्त्री० (अलीका) लु० लाण्वाणी  
 भाषा, असत्य भाषा मूठ भरी भाषा False  
 speech falsehood प्रव० १३३५;  
 अलिजर पुं० (अलिजर) धडे, लादीयो,  
 पाणी भरवानुं क्षम घडा, पानी भरने का  
 बरतन A pot of water, a vessel in  
 which water is kept जीवा० ३, ठा०  
 ४, २;

अलिजरय पुं० (अलिजरक) लु० ‘अलिजर’  
 शब्द देखो “अलिजर” शब्द Vide  
 “अलिजर” “कलसए य अलिजरए य जंबूलए  
 य” उवा० ७, १८४,

अलिन्द न० (अलिन्द) ओ३, योतरे.  
 ओस्ला, चवूतरा Verandah (२) कुंड  
 कूडा a round tub-like vessel  
 ओघ० नि० ४७६;

अलिन्दअ-य. न० (अलिन्दक) लु० ‘अलिन्द’  
 शब्द देखो ‘अलिन्द’ शब्द. Vide “अलिन्द”  
 अणुजो० १३२,

अलित्त त्रि० (अलिप्त) लेपाओल-परिपह  
 नहि विना लीपा हुआ Unsmearred, not  
 bespattered उक्त० २५, २६,

अलित्त न० (अरित्र) लु०, नावाने  
 ललाववानुं वांसु नाव चलाने का वास—डाड  
 An oar “अलित्तेण वा पीढण्ण वा” आया०  
 २, ३, १, ११६,

अलित्तत्र न० (अरित्रक) लु० ‘अलित्त’  
 शब्द देखो “अलित्त” शब्द Vide  
 “अलित्त” निरी० १८, १९,

अलिपत्त पु० ( अलिपत्र ) विष्ठीनी पुष्पीना  
आकारे जेनां पादडा छे अेवुं वृक्ष वृक्षविशेष.  
जिसके पत्तों का आकार विच्छू की पूछ के  
समान होता है A tree with leaves  
of the shape of the tail of a  
scorpion विवा० १, ६,

अलिय-अ. न० ( अलीक ) लुहुं, ज्योहुं,  
मिथ्या, असत्य झूठ मिथ्या, असत्य  
Falsehood, untruth “नापुट्टो वागरे  
किचि, पुट्टो वा नालिय वए” उक्त० १,  
१४, ३४, ३, भग० ५, ६, सम० १० सु० च०  
१३, ३३, ओव० नि० ७८७, ठा० ६, १,  
परह० १, २, ओव० ३४, पंचा० १, ११, भक्त०  
१०१,—वयण. न० (—वचन ) असत्य-  
लुहुं वचन; असत्य वचन. झूठ वचन false-  
hood, false speech प्रव० ४५७,  
भग० ८, ६, वय० ६, १,

अलिसंद. पु० (अलिप्यन्द) योणानी अेक न्त.  
धान्यविशेष चोला, वान्यविशेष A kind  
of corn. पत्र० १,

अलुक्खि त्रि० ( अरुक्खिन् ) शिन्ध-रतेडुयुक्त  
स्पर्शवाणो, लुभु नडि ते. स्खापन रहित,  
चिकना Sticky, not dry भग० १४, ४,  
अलुग न० (अलुक) आलु-पटाटा, उदविशेष.  
आलू, कंदविशेष A bulbous root, e g  
a potato. पत्र० १,

अलुद्ध त्रि० ( अलुद्ध ) लोभ वगरतो,  
सतोषी लोभ रहित, सतोषी Free from  
greed, contented “लद्धूण तय न  
अत्तट्टे एस्स अलुद्धो” परह० १ ५,

अलूसअ त्रि० ( अलूपक ) अ-नडि लूपक-  
विराधक, नरा पणु संयमनी विराधना न  
डरनार. संयम की अणुमात्र भी विराधना, न  
करने वाला (One) not in the least  
violating the vows of asceti-  
cism. सूय० १, २, २, ६;

अलूसअ व० कृ० त्रि० (अलूपयत्) परितापना-  
पीडा न उपज्जवतो, डोधना प्राणु न लुटतो.  
किसीको पीडा न देता हुआ, किसीके प्राण न  
लेता हुआ (One) not troubling  
others, one not depriving  
anybody of life आया० २, १६, ४;

अलेव पु० ( अलेप ) लेपनो अभाव, अलिप्त  
पणुं लेप का अभाव, अलिप्तपना State  
of being unsmeared, unbespat-  
tered आव० ६, १०,—कड त्रि० (—कृत)  
जेनाथी पात्र भरडाय-लेपाय नडि तेवी वस्तु;  
फाणीया, यणु, वटाणु वगैरे जिमसे पात्र न  
लिप्त हो ऐसी वस्तु, चना, बटला वगैरह  
( anything ) which does not  
bespatter the vessel in which  
it is put, e g grams etc.  
पंचा० १८, ६,

अलेवड त्रि० ( अलेपकृत ) लुओ “अलेव-  
कड” शब्द देखो “अलेवकड” शब्द Vide  
‘अलेवकड’ पि० नि० भा ३७, प्रव० ५८५,

अलेवाड त्रि० (अलेपकृत) लुओ ‘अलेव-  
कड’ शब्द देखो ‘अलेवकड’ शब्द Vide  
‘अलेवकड’ नाया० ८, अत० ८, १, प्रव०  
७५१,

अलेसि पु० ( अलेसियन् ) लेभ्यारहित एव,  
सिद्ध भगवान् तथा अयोगी-चौदमा गुणुडालु  
वाणा एव, कृणु आदि ७ लेश्यामांनी डोड  
पणु लेश्या वगरना लेग्या रहित जीव, सिद्ध  
भगवान् तथा चौदहवें गुणस्थान वाला  
अयोगी जीव, जिसमें कृष्ण आदि छ लेश्याओं  
में से कोई लेग्या नहीं होती ऐमा जीव  
A soul free from thought-tint  
or thought colours, a Siddha or  
a soul in the 14th Gunasthāna.  
ठा० ३, ४,

अलेस्स पुं० ( अलेश्य ) लेश्यारहित शुव;  
 यौद्धमा गुणु क्षणुवाणा तथा सिद्ध भगवान्.  
 लेश्या रहित जीव; चौदहवे गुणस्थान वाला  
 जीव तथा सिद्ध भगवान्. A soul free  
 from Lesyā or thought-tint  
 e. g. a soul in the fourteenth  
 spiritual stage and a Siddha  
 भग० ६, ४; ८, २, १७, २; १८, १; २५,  
 ६, २६, १, जीवा० १;

अलोअ-य. पुं० ( अलोक ) लोड-जगत  
 ँडारने प्रदेश; अलोड. लोक-जगत के वाहर  
 का प्रदेश; अलोक Place outside the  
 world; place beyond the uni-  
 verse. ठा० ५; उक्त० ३६, १, नदी० १५;  
 ओव० ३४, सूय० २, ५, १२; भग० १, ६,  
 २०, २; प्रव० ४६३,

अलोग पुं० ( अलोक ) लुओ 'अलोअ-य'  
 शब्द देखो 'अलोअ-य' शब्द Vide  
 'अलोअ-य' दसा० ५, ३३; भग० २, ४;  
 १४, ८;—अंत पुं० (—अन्त ) अलोडने  
 अत-छेडे। अलोक का अंत. the end of  
 Aloka ( i. e. region beyond  
 the universe). प्रव० ६१६;

अलोगाकास पु० ( अलोकाकाश ) लोडाडा-  
 शनी ँडार अलोडाकाश. अलोकाकाश,  
 लोक के वाहर का आकाश; Akāśa or  
 space beyond the universe. भग०  
 २५, ३,—सेदी. स्त्री० (—श्रेणी) अलोडा-  
 डाशनी श्रेणी-पंक्ति. अलोकाकाश की श्रेणी-  
 पक्ति. the line of space beyond  
 the universe. भग० २५, ३;

अलोभ. त्रि० ( अलोभ ) लोभरहित लोभ  
 रहित. Free from greed. ( २ ) पु०  
 लोभने अभाव लोभका अभाव. absence  
 of greed सम० ३३; क० ग० ४, ६१;

अलोभत्त. न० ( अलोभत्व ) लोभने  
 अभाव. लोभ का अभाव. Absence of  
 greed. भग० १, ६;

अलोभया स्त्री० ( अलोभता ) लोभने अ-  
 भाव; ३२ योगसग्रहमाने आहमे योग-  
 सग्रह. लोभ का अभाव: ३२ योगसग्रहों मे  
 से आठवाँ योग संग्रह. Absence of  
 greed, the eighth of the thirty-  
 two Yoga-Sangrahas सम० ३२,

अलोयंत. पुं० ( अलोकान्त ) अलोडने अन्त-  
 छेडे। अलोक का अंत. End of the space  
 beyond the universe भग० १, ६;  
 ११, १०;

अलोयागास पुं० ( अलोकाकाश ) लुओ  
 'अलोगाकास' शब्द देखो 'अलोगाकास'  
 शब्द. Vide 'अलोगाकास' भग० २,  
 १०, २०, २;

अलोल. त्रि० ( अलोल ) अलुब्ध; लोलुपता  
 रहित; डोषनी पासे प्रार्थना डरनार नहि.  
 लोलुपता रहित, किसीसे भी प्रार्थना न करते  
 वाला. Not greedy; not soliciting  
 anything from anybody. दस०  
 १०, १, १७,—भिक्षु. पु० (—भिक्षु )  
 डोषनी पासे प्रार्थना करीने लिक्षा नहि भाग-  
 नार ( साधु ). किसीसे प्रार्थना करके भिक्षा  
 नहीं मांगने वाला (साधु). a Sādhu not  
 asking food by solicitation  
 "अलोलभिक्षु न रसेषु गिज्जे" दस०  
 १०, १, १७;

अलोलुअ-य. त्रि० ( अलोलुप ) लोलुप-रस  
 लंपट नहि; आवाने गृद्धि नहि लोलुपता  
 रहित. Not greedy of sensual  
 pleasures, of food etc. उक्त० २,  
 ३६; २५, २७, दस० ६, ३, १०;

अलोलुप त्रि० ( अलोलुप ) लुओ 'अलो-



लुअ-य' शब्द. देखो "अलोलुअ-य" शब्द  
Vide 'अलोलुअ-य.' उक्त० २, ६६;

\*अल्ल त्रि० (आर्द्र) लीलु; स००१, भीतु गीला;  
सजल भीगा हुआ Wet, damp "अल्लं  
चम्मं दुरूहइ" नाया० १२; १८, निर० १, १;  
प्रव० २३८;—कच्चूर. पुं० (—कच्चूर) श्लेष्  
लतनी आर्द्र वनस्पति; लीलो क्यूरै। एक जाति  
की हरी वनस्पति, कच्चूर. a kind of green  
vegetation. प्रव० २३८;—चम्म न०  
(—चर्मन्) आलु आमडुं. आर्द्र चर्म,  
गीला चमड़ा; wet leather. विवा०  
३,—मुत्था. स्त्री० (—मुस्ता) नागरमोथा  
नागरमोथा. a kind of fragrant  
grass. प्रव० २४०,

अल्लई स्त्री० (अल्लकी) गुच्छ लतनी श्लेष्  
वनस्पति, दूधी एक जाति की गुच्छ वनस्पति,  
दूधी A kind of vegetation growing  
in bunches राय० ५४, पञ्च० १७, भग०  
२२, ४,—कुसुम न० (—कुसुम) दूधीनु फूल  
दूधी का फूल. a flower of अल्लई (१५५)  
पञ्च० १; राय० ५४;

\*अल्लक. न० (आर्द्रक) आलु अदरक  
Ginger. ज० प०

\*अल्लग. पुं० (आर्द्रक) लुओ 'अल्लक' शब्द  
देखो 'अल्लक' शब्द Vide 'अल्लक'  
प्रव० २३८,

अल्लियावण त्रि० (\*आलायन-सन्धि) कणाय  
नहि तेवे साधो-श्ले द्रव्यतो परस्पर भेगाप  
मालूम न हो ऐसा जोड़; दो वस्तुओं का पर-  
स्पर मेल Union of two substances  
without the dividing line  
being visible भग० ८, ६,—वंध. पु०  
(—बन्ध) श्लेष् द्रव्यते भील द्रव्यनी साथे  
योटाउतु ते, साधो कणाय नहि तेवी रीते शुद्ध  
वगेरेथी योउतु ते. एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य के

साथ चिपकाना, जोड़ान मालूम हो इस रीति से  
गोद वगैरह से जोड़ना. joining two sub-  
stances in such a way that the  
joint is not visible "से किं ते  
अल्लियावणवधे ? अल्लियावणबंधे चउविहे  
पण्यत्ते, तंजहा-लेसणावधे उच्चयवधे  
समुच्चयबंधे साहणणाबंधे" भग० ८, ६,

✓अल्लीअ धा० I (आ+ली) आश्रय  
करवे। आश्रय करना. To resort to.  
(२) छद्रियो गोपववी-वश करवी इन्द्रियो  
को वश करना to restrain or  
control the senses.

अल्लिण् वि० गच्छा० ४६;

अल्लियावेइ णि० नाया० २;

अल्लियावेइत्ता स० कृ० नाया० २,

अल्लीण. त्रि० (आलीन) गुर्वादिङने आश्रि  
रहेल गुरुआदि के आश्रित रहा हुआ (One)  
relying or depending upon a  
preceptor etc. नाया० १६; राय० २८६,  
भग० १, ६, ओव० १०, ३८, अत० ३,  
१, (२) आ-समन्तात् सर्व क्रियाभा  
लीन-गुप्त, गलीर श्लेष् करनार सम्पूर्ण क्रियाओं  
में लीन-गभीर चेष्टा करने वाला seriously  
or solemnly performing  
all actions ज० प० २, २०, (३) मन,  
वचन अने कायाथी गुप्त थय्येल मन, वचन  
और काया से गुप्त controlled in mind;  
speech and body. उक्त० २३, ६, भग०  
२, १, २५, ७; नाया० १, कप्प० ४, ६१;  
अणुत्त० ३, १; (४) उत्पन्न थय्येल, वृद्धि  
पामेल उत्पन्न; वृद्धि को प्राप्त born;  
developed. नाया० १६; (५) मनोहर;  
सुंदर मनोहर, सुन्दर, खूबसूरत charming;  
beautiful नाया० १, (६) न० शरीर  
शरीर. body. नाया० १, (७) त्रि० नि संग,

वेपरहित नि संग; लेप रहित free from attachment; unattached कम्प० ७, २१०,—पस्त्रीणगुत्त. त्रि० (—प्रलीनगुत्त ) अंगोपाग वगेरेने सारी रीते सयमभां राभनार अंगोपाग वगेरह को अच्छी तरह से सयम में रखने वाला well-controlled in the actions of the limbs and sub-limbs of the body दस० ८, ४१:—प्पमाण. न० (—प्रमाण) शरीर प्रमाण शरीर प्रमाण शरीरानुसार the measure of the body. नाया० १; जं० प० २, २०,

अस्त्रीण त्रि० ( अलीन ) गुप्त नहि ते जो गुप्त न हो वह Not secret, open. जीवा० ३, ३;

अस्त्रीणया. स्त्री० ( अलीनता ) गुप्तेन्द्रियपणु गुप्तेन्द्रियपना Restraint of the senses भग० ६, ३१;

अस्त्रीसा. स्त्री० ( अलेश्या ) लेश्यातो अभाव लेश्या का अभाव Absence of Lesyā (1 e thought tint or thought colours ). क० गं० ४, ५३;

अव अ० ( अव ) अधि३पणुं अविकता A prefix showing addition, excess सम० १;

अवङ्गण त्रि० ( अवतीर्ण ) उतरेतु; तरीने पार गयेतुं उतरा हुआ, तिरकर पार गया हुआ Crossed; descended सु० च० १, २२८, ४, ३५;

अवउज्जिय स० कृ० अ० ( अवकुञ्ज ) नीचे नभीने; नीचे शरीर सङ्कोचीने नीचे मुककर, शरीर नीचे को सिकोडकर Bowing down, contracting the body and lowering it आया० २, १, ७, ३७;

अवउज्ज धा० I ( अप+उज्ज् ) त्याग करेवे; तणु; सुधी देवु त्याग करना; छोड़ना. To abandon; to give up अवउज्ज्. 'अवउज्ज् पायकंबल' उक्त० १७, ६; पंचा० १६, ६,

अवउड. न० (—अवकोट—ग्रीवाभङ्गन) ग्रीवा-डोड मरुपी ते गर्दन मरोड़ना To turn or twist the neck. नाया० २,

अवउडग न० (—अवकोटक ) लुओ उपले शब्द देखो ऊपर का शब्द Vide the above word विवा० २;—बंधण. न० (—बन्धन ) मस्तकने मरुडीने लुज साथे पीठना लागमा पाधवु ते, मुश्केटाट पाधवु ते. मस्तक को मरोडकर भुजा साथ के पीठ पर बाधना to bind fast e. g. by twisting the arms and the head and tying them to the back विवा० २, ६, अंत० ६, ३, राय० २५३, परह० १, १;

अवउडय न० (—अवकोटक ) लुओ " अवउड " शब्द देखो " अवउड " शब्द Vide "अवउड." विवा० १, २,

अवउसग. न० (—अपवसन—अवजोपण ) उपवास. उपवास A fast, fasting " अवउसगा उ जे चित्त " पंचा० १६, २५;

अवउसणग. न० (अपवसनक) पस्त्र विना रडी टाड वगेरे सहन करवा ते, तपविशेष सेववु ते वस्त्र रहित होकर ठंड आदि का सहन करना, तपविशेष करना. Endurance of cold etc without putting on clothes, a kind of austerity पंचा० १६, ३७,

अवंक त्रि० ( अवक्र ) अ—नहि वक्र—वांङुं; सीधु सरल वक्रता रहित, सीधा, सरल. Straight, straightforward. not tortuous. राय० ८६;

अवंग पु० ( अपाङ्ग ) आभने भुलो आख  
का कोना The corner of the eye  
राय० ११२, जं० प० (२) त्रि० अगती भोऽ  
आपलुवाणे शारिरिक ऐव चाला. ( one )  
having a physical defect  
ज० प० जीवा० ३, ३,

\*अवंगुय त्रि० (अपावृत्त) उधाडु मुकेलुं, भुद्लु  
मुकेलु उचाडा रखा हुआ, विना ढका हुआ  
Kept open, open भग० २, ५, परह०  
२, ८, वेय० १, १८, राय० २२५, ओव० ४०,  
—दुवार त्रि० (—द्वार) उधाडु मुकेलु ६२—पा-  
री आरुछे नेतु ते जिसका द्वार या खिडकी  
खुली हुई हो वह with door open,  
with the gate open “अवगुयदुवारा”  
भग० २, ५;

अवज्जजाय त्रि० (अव्यञ्जनजात—व्यञ्जनान्यु-  
पस्थरोमाणि न जातानि यस्य स तथा) नेते  
दाढी, भुच्छ वगेरे उग्या नथी अवे। जिसकी  
डाढी और मूछ उगी न हो वह ( One )  
having beard, moustaches etc  
not yet grown. वव० १०, २०, कप्प०  
६, २०;

अवभं त्रि० ( अवन्ध्य ) वध्य नहि, सङ्ग  
कार्यकर्ता जो वन्ध्य न हो, सफल कार्य-  
कर्ता Not barren, unfailing in  
doing work सूय० २, १, २२. (२) सङ्ग  
सफल fruitful, bearing fruit in due  
season विशेष ११०३ (३) पु० सङ्ग-  
शुभाशुभ कर्मना विवेचनवाणे ११ भो पूर्व  
शुभाशुभ कर्म का विवेचन करने वाला ग्यारहवो  
पूर्व the eleventh Pūrva  
discussing knowledge etc. and  
so fruitful in result समं० १४, नदी०  
५६, प्रव० ७२३,

अवभ्मा स्त्री० ( अवन्ध्या ) गंधिलाविजयनी  
मुप्य राजधानी गविलाविजय की मुख्य  
राजधानी The principal capital  
city of Gandhīlāvijaya ज० प०  
अवन्तिसुकुमाल पुं० ( अवन्तिसुकुमार )  
उज्जयनी नगरी निवासी भद्रा सेठायीने  
पुत्र, के नेले आचार्य पासे दीक्षा लध, तरत  
सथारे धर्यो, वनमां अेड सियालधुओ तेनी  
वधानुं मास भाधु, तथापि ते समाधि  
परिशुभथी पतित न थता डाणधर्म  
पागी सद्गति पाभ्या उज्जयिनी नगरी  
निवासी भद्रा सेठायी का पुत्र, जिसने कि आ-  
चार्य से दीक्षा लेकर तुरत संथारा किया वनमे  
एक लोवड़ी ने उसकी जघा का मास खाया तो  
भी वह समाधि से च्युत न हुआ और मरकर  
सद्गति को प्राप्त हुआ The son of Bha-  
diā the wife of a merchant of  
Ujjain He took Diksā from  
his preceptor and immediately  
performed Santhārā The flesh  
of his thigh was eaten by  
a she-jackal but he got  
absolution as a result of  
his Samādhi, after his death  
सत्या०

अवन्तीगंगा स्त्री० ( अवन्तीगङ्गा ) गोशालाना  
मतने अनुसार अेड डाणविलाग गोशाला  
के मत के अनुसार एक कालविभाग. A  
division of time according to  
the tenet of Gośālā भग० १५, १,  
अवन्दंत व० कृ० त्रि० ( अवन्दमान ) वन्दना न  
धरतो वन्दना न करता हुआ. Not salut-  
ing, not bowing to प्रव० ६२८,  
अवन्दरिज्ज त्रि० ( अवन्दनीय ) न  
वाफ्वा योग्य, नमन धरवा योग्य नहि वन्दना  
करने योग्य नहीं Unworthy of be-

ing saluted, not deserving salutation. प्रव० १०३;

✓ अवकंख. धा० I. (अव+काङ्) आकांक्षा इरवी; अलिखापा इरवी आकांक्षा करना; अभिलाषा करना. To desire. (२) पा० ग० नेतुं. पीछे देखना. to look behind or backward.

अवकंखइ. भग० १, ६;

अवकंखंति. आया० १, १, ७, ५७, १, २, २, ७५;

अवकंखमाण. व० कृ० नाया० ६;

अवकंखा. ली० (अवकाङ्क्षा) उत्सुकपणुं, उत्सुकता. उत्सुकता. Longing, yearning. ठा० ४, २;

अवकर. पुं० (अवकर) इयरो. कचरा. Refuse; dirt. भग० १५, १;—रासि पुं० (—राशि) इयरातो ढगदो. कचरे का ढेर heap of dirt or refuse भग० १५, १;

अवकरअ पुं० (अवकरक) अवइरइ—इयरो नामतो इाई भाणुस किसी मनुष्य का नाम. Name of a person. अणुजो० १३१;

अवकास पुं० (अवकाश) आश्रयविशेष. आश्रयविशेष. A place of shelter of a particular kind परह० २, ४;

अवकिरियव्व. त्रि० (::अवकिरणीय) छोडवा लायइ; त्यागवा थोअ. छोडने लायक त्यागने योग्य. Worth being cast away or thrown away. परह० १, ३; ५;

अवकोडग न० (::अवकोटक) माथुं नमाडी हाथ साथे पछवाडे आंधतुं ते. सिर नमाकर हाथों के साथ पीछे बांधना. Lowering or bending the head backward and tying it to the hands. परह० १, १;

अवकंत त्रि० (अपक्रान्त) सर्व शुभ भावथी

अष्ट थअेल—पतित थअेल सम्पूर्णा शुभ भावों से अष्ट—पतित. Utterly sinful or degenerate “रयणप्पभाए पुढवीए इ अवकंतमहानिरया प० तं० लोले लोलुए उदहे निदहे जरए पजरए” “पंकप्पभाए पुढवीए इ अवकंतमहाणिरया प० तं० आरे वारे मारे रोरे रोएए खाडखडे” ठा० ६;

अवकंति. ली० (अपक्रान्ति) परित्याग; तणुं ते. छोडना; त्यागना. Abandonment; leaving off. नाया० ८;

✓ अवक्रम. धा० I. II. (अव+क्रम) गति इरवी; गतुं. गमन करना, जाना. To go; to move. (२) पा० ग० हतुं. पीछे हटना. to retreat; to turn back.

अवक्रमइ. राय० ४४; नाया० १; २; ६; १२; १३; भग० १, ४, २, १; ३, २; ७, ६; दसा० १०, १;

अवक्रमेइ. नाया० १;

अवक्रमंति जं० प० ५, ११२; नाया० ४; ८; १७, भग० ३, १; १५, १;

अवक्रमामि नाया० २; ७;

अवक्रमामो नाया० २;

अवक्रमिजा. वि० आया० १, ७, ६, २२२; २, १, १, १; दस० ६, १, ६;

अवक्रमेजा. वि० भग० १, ४;

अवक्रमित्ता सं० कृ० नाया० २; १६; आया० २, १, १, १, दसा० १०, १, चड० १४,

अवक्रमम्म सं० कृ० वेय० ४, १५; वव० १, २६;

अवक्रमइत्ता. सं० कृ० नाया० १; ७, ६; १३, भग० २, १; ३, २; ५, ६; ६, ३३; ११, ६;

अवक्रमंतित्ता. सं० कृ० भग० १५, १;

अवक्रममाण व० कृ० विवा० ६,

अवक्रमण न० (अपक्रमण) नीकण्यु निकलना.

To come out, to go out भग० ६, ३३, ठा० ७, (२) पा० ७६६, पा० ७६६, पीछे हटना, पीछे सरकना to retreat, to turn back भग० १५, १, पि० नि० २११,

अवकास पुं० (अप्रकाश) अलिमान्थी अन्ध थनुं ते, मोहनीयकर्मतो अेक लेद अभिमान से अन्धा हो जाना, मोहनीय कर्म का एक भेद. Being blinded with pride, a variety of Mohaniya Karma सम० १२, भग० १२, ५,

अवकास पु० (अपकर्ष) ऋद्धि आदिनो अत्यन्त प्रकाश करवेो ते, समृद्धितु अत्यन्त अलिमान राभ्यु ते ऋद्धि आदि का अत्यन्त प्रकट करना, सपत्ति का बहुत ज्यादह अभिमान रखना. Trumpeting forth one's opulence or prosperity, boundless pride of one's prosperity भग० १२, ५,

अवक्रोश पुं० (अपक्रोश) भीष्मनु धसातु भोक्षति ते, निन्दा निन्दा, दूसरे को चुभता हुआ बोलना Casting obloquy or censure upon others सम० ५२, भग० १२, ५,

√ अवक्ख धा० I (अप+इच्) अपेक्षा राभवी, राहनेपी अपेक्षा रखना, वाट जोहना To expect, to wait with eagerness

अवक्खह आ० नाया० ६,

अवक्खार पु० (अवस्कार) विषा, मल, विषा, मल. Dirt; excrement विशेष ३४०५,

अवक्खारण न० (अपक्षारण) अपशब्द भोक्षया ते अपशब्द बोलना Speaking indecent words परह० १, २;

५२

अवक्खारण न० (अपक्षारण) सानिध्य न करवु ते, असन्न न थनुं ते सगति न करना, असन्न न होना Not to be associated with, not to be pleased with परह० १, २;

अवक्खेवण न० (अपक्षेपण) नीये ईकवु से, उत्क्षेपणादि पाच कर्म पैडी भीष्म कर्म नीचे फेंकना, उत्क्षेपणादि पाच कर्मों में से दूसरा कर्म Flinging, throwing down, the second of the five varieties of action viz throwing up etc विशेष २४६२,

अवग. न० (अवक) पाष्ठीमां उत्पन्न थती अेक जलनी वनस्पति पानी में उत्पन्न होने वाली एक जाति की वनस्पति A kind of aquatic plant. सू० २, ३, १८,

अवगअ-य त्रि० (अपगत) भरी गयेलुं, दूर थयेलु मर गया हुआ, दूर होगया हुआ Dead; removed ओव० ३१, नाया० १, २; राय० २२५; भग० ८, ८, उत्त० २८, २०, दस० ७, ५७, ८, ६४, प्रव० ६६७, कप्प० ४, ६१,—वेय त्रि० (—वेद) पुरुषवेद, स्त्रीवेद अने नपुसक वेद, अे त्रयु वेदथी रहित पुरुषवेद, स्त्रीवेद और नपुसक वेद, इन तीनों वेदों से रहित having no sex, either, masculine feminine or neuter. प्रव० १४३४; भग० ८, ८,

अवगअ-य. त्रि० (अवगत) ज्ञेयुं; अवधारणु करेद जाना हुआ, अवधारित. Known, understood आया० टी० १, १, १, ३,

अवगारिणय त्रि० (अपकर्णित-प्रवगणित) अवगणुना करेद, अनादर करेद अनादर किया हुआ Despised; disrespected. जीवा० १;

अवगत त्रि० (अपगत) नष्ट थयेद, क्षीणु

थमेव नाश को प्राप्त. Destroyed; faded; decayed पंचा० १०, ७६;  
 अवगम पुं० ( अवगम ) विनाश. विनाश  
 Destruction. विशेष० २७६;  
 अवगम. पुं० ( अवगम ) निश्चय. निश्चय.  
 Determination. विशेष० २७६;  
 अवगार. पुं० ( अवकर ) लुओ 'अवकर' शब्द  
 देखो " अवकर " शब्द. Vide 'अवकर'  
 भग० ८, ६;—राशि. पुं० (—राशि )  
 उचरने। शशि-लग्ना। द्वांसत पदार्थों की  
 राशि-ढेर. heap of worthless  
 things. भग० ८, ६;  
 अवगाढ त्रि० ( अवगाढ ) अवगाहीने रहेल;  
 आश्रीने रहेल आश्रय में रहा हुआ,  
 पकड़कर रहा हुआ. Resorting to,  
 dependent upon. वदी० स्व० १२;  
 विशेष० २८२२, भग० १, ६; ओव०  
 अवगारि. त्रि० ( अवकारिन् ) अपकार करने  
 वाला. ( One ) who  
 does an ill turn; ( one ) who  
 injures. पंचा० १४, ३७,  
 अवगास. न० ( अवकाश ) उत्पत्ति स्थान.  
 उत्पत्ति स्थान. Place of origin;  
 source of birth, place of pro-  
 duction. मूय० २, २, १;  
 अवगाह. पु० ( अवगाह ) अवगाहना; क्षेत्र  
 स्पर्शना. अवगाहना, क्षेत्रस्पर्शना. Per-  
 vasion or occupation of space.  
 क० न० ५, ७६;  
 अवगाहणा स्त्री० ( अवगाहना ) शरीर-मिनी  
 उच्यते, शरीर-दिने आकाश-प्रदेशने अवग हीने  
 रहेल छे ते आकाश-प्रदेशनु परिभाष्य शरी-  
 रादि की ऊंचाई, आकाश के जितने प्रदेश में  
 गरीगादि गे हुए हैं उतने आकाश-प्रदेश का  
 परिमाण The height of a body

etc; the measure of space  
 occupied by a body etc. which  
 remains in it प्रव० ११, भग० २, १;  
 विशेष० ३८१, ( २ ) अरकाश आपवे। ते.  
 अवकाश देना, जगह देना. giving room  
 or space to. भग० १३, ४, ( ३ ) अंद्दर  
 प्रवेश करवे ते. भोंतर प्रवेश करना. en-  
 trance into विशेष० १०२६;—गुण पुं०  
 (—गुण ) अवकाश आपवाने गुण अवकाश  
 देने का गुण the attribute of giv-  
 ing room or space to टा० ५, ३;  
 भग० २, १०;—लक्षण न० (—लक्षण )  
 अवकाश आपवानु लक्षण छे जेनु ते, आका-  
 शाश्रितकाय अवकाश देना हा जिसका लक्षण  
 है वह; आकाशाश्रितकाय that of which  
 the property is to give room  
 or entrance into viz Ākāśā-  
 stikāya. भग० १३, ४.

अवगाहिया सं० कृ० अ० ( अवगाह ) प्रवेश  
 करीने, घेरीने. प्रवेश करके, घुसकरके. Hav-  
 ing entered उक्त० १०, ३३;

अवगाहिक्य सं० कृ० अ० ( अवगूह ) उद्दे-  
 शीने; लक्ष्मीने उद्देश करके, लक्ष करके.  
 Alluding to, aiming at. कप्प० ६,  
 ६१;

✓ अवगुण वा० II. ( अवगुण ) उभाऽ  
 उभाऽय . किनाई खोलना. To open the  
 doors.

अवगुणेह नाग० १६;

अवगुणति. भग० १५, १;

अवगुणेहता सं० कृ० नाया० १६;

अवगुणित्ता सं० कृ० भग० १५, १;

अवगुणित व० कृ० भग० १५, १;

अवगूह. त्रि० ( अवगूह ) व्याप्त, व्यापितुं. व्याप्त.

Pervading; pervasive नाया० ८;

अवगूहिकं. सं० कृ० अ० ( अवगूह ) आवृत्ति-

गन एधने आलिगन देका, भेंट करके  
Having embraced सु० च० १०, २६,  
अवचय पु० ( अवचय ) धराडे, डानि घाटा,  
नुकसान. Decrease, loss. भग०  
११, ११;

अत्रस्त्रिय-य त्रि० (अत्रचित) धरेतुं; कृश थयेतु,  
शेषाः अत्रुं. कृश, घटा हुआ, सूखा हुआ. De-  
creased, weakened; attenuated  
नाया० १, भग० २, १, ११, ११, ओव०  
५३, ( २ ) त्रि० अत्रप्रदेशरहित, अचित.  
जीवप्रदेश रहित, अत्रेता मरुता मरुत  
विशे० ८६७ — त्रैव वे शिर त्रि० ( -न. ज-  
शोणित ) जेता भास अने लेही शेषायेना  
छे ते जिसका मास और रुधिर सूख गया हो  
वह. ( one ) whose flesh and  
blood have been dried up  
“ तवस्त्रिय किस दत, अत्रचित्तसतोणिय ”  
उत्त० २५, २२,

✓ अवचिज्ज धा० J ( अच+चि+य ) अपत्य  
पाभवे, धटी नु घट जाना, कम हो जाना.  
To decrease, to be diminished.  
अवचिज्जइ क० वा० सूय० १, २, ३, १,  
अवचिज्जति. क० वा० भग० २५, २,

अवचुल्ल पुं० ( अवचुल्ल ) युवानी पाभेने  
ओगे चूल्हेके पास का आला-ताक A niche  
behind an oven पिं० निं० भा० ३४,  
अवचुल्ली स्त्री० ( अवचुल्ली ) नुओ 'अवचुल्ल'  
शब्द देखो 'अवचुल्ल' शब्द Vide 'अवचुल्ल'  
पिं० निं० भा० ३४,

अवचूल्लग न० ( अवचूल्लक-अवचूल्लमधोमुखी-  
कृता चूडा यथा भवति तथा कृतमवचूल्लकम् )  
योऽक्षी नीचे रहे तेनी रीने मस्तक  
नभाऽनुं ते इस प्रकार मस्तक नमाना, जिस से  
कि चोटो नोवे हो Bonding down the  
head in such a way that the

tuft of hair on it also becomes  
lowered in the act नात्रा० १६,  
अत्रय त्रि० ( अत्रय ) न डहेता योग्य;  
अत्रयनीय, अत्रयनीय. न कहने योग्य;  
अकथनीय Inexpressible; un-  
worthy of being said or spoken.  
विशे० ६१;

अवच्छ न० ( अत्रय-न पतन्ति यस्मिन्नुत्पत्ते  
दुर्गतो अत्रय पक्के वा पूर्वजस्तदपत्यम् )  
सतान, पुत्र-पुत्री सन्तान, पुत्र-पुत्री.  
Issue progeny टा० ४, ४; अणुजो०  
१३१, भग० ३, ७, त्रि० ३००७, — नेह  
पुं० ( -स्नेह ) पुत्र, पौत्र आदिने स्नेह पुत्र,  
पौत्र आदि का स्नेह parental affection.  
सु० च० ४, ३१८,

अवच्छेय पुं० ( अवच्छेद ) विभाग, भाग,  
अश विभाग, टुकडा, अश, हिस्सा. A  
part, a portion, a division टा०  
३, ३,

अवजात्र-य. पुं० ( अत्रजात ) पिता  
इस्ता ओग गुणुवागे पुत्र, जेभ भग  
यकवर्तीना पुत्र आदित्ययशा पिता की  
अपेक्षा कम गुणों वाला पुत्र, जैसे भरत  
चक्रवर्ती का पुत्र आदित्ययशा A son in-  
ferior in qualities to his father,  
e g Adityayaśā the son  
of Bharata Chakravartī. टा० ४, १,

✓ अवजाण धा० I ( अच+जा ) अपत्य  
इरवे, नाऽशुत्र थय, वत छुपावरी नामजूर  
करना, बात छिपाना To hide or  
suppress a fact, to deny a fact.  
अवजाणइ सू० १, ४, १, २६,

अवज्ज न० ( अवच ) पाप, निन्द्य कर्म-अनु-  
ष्ठान पाप; निन्द्य कर्म A sinful deed  
or performance. च्य० २, २, ६५;

ओष० नि० ६४७;—इयर. त्रि० (-इतर ) पापथी खिन्न. पाप से भिन्न. different from, opposed to sin. पंचा० १, २५; —कर. त्रि० (-कर-अवद्यं पापं तत्करण-शीलः ) पापी; पाप करनेवाला पापी. sinful; given to sin. “ तज्जातिआ इमे कामा वज्जकरा य एवमक्खाए ” सूय० १, ४; ३, १६, —भीरु. त्रि० (-भीरु ) पाप करनेवाला भीरु. पाप करने में भीरु-डरपोक. timid in the matter of sinfulness; afraid of sin. उत्त० ३४, २८, —विरह. खी० (-विरति ) अवद्य-पापनी निवृत्ति पाप की निवृत्ति. cessation of sin क० प० ५, २८:

अवज्झ त्रि० ( अवध्य ) वध करने योग्य नहीं वध न करने के योग्य. Unworthy of being killed नाया० १६,

अवज्झाण न० (अपध्यान) भा० ध्यान, दुष्ट ध्यान, आर्त्त अने रौद्र ध्यान बुरा ध्यान आर्त्त और रौद्र ध्यान Evil meditation viz painful and revengeful meditation. ओव० ४०; पंचा० १, २३,

अवज्झाणया. खी० (अपध्यानता) आर्त्त अने रौद्र ध्यान ध्यायुं ते आर्त्त और रौद्र ध्यान का करना Act of meditating painfully or revengefully. ङ० ३, ३,

अवज्झाय त्रि० (अपध्यात्) दुष्ट चिंतन करनेवाला, दुष्ट ध्यान करनेवाला. दुष्ट-खराब चिन्तन करने वाला. ( One ) who performs an evil kind of meditation नाया० १४,

अवट्टमास व० क० त्रि० (अवर्तमान) न वर्तते न वर्तता हुआ Not present, not existing ङ० ३ ३

अवट्टंभ पु० ( अवट्टम्भ ) भिन्न. थाली

वगेरेने टेका आपवे ते. दिवाल, स्तम्भ आदि को जो सहारा दिया जाता है वह. Supporting; leaning upon a wall, a pillar etc. for support. ओव० नि० २६३, ३२३;

अवट्टंभिय सं० क० अ० ( अवट्टम्भ ) अट्टेकीने; टेका धरने टेका देकर. Leaning against, supporting oneself on or against. ष्व० २५२,

अवट्टावणा खी० ( अवस्थापना ) महाप्रतनु आरोपण करनेवाला महाव्रत का आरोपण करना. Investing ( a disciple ) with Mahāvratas i. e. full vows. पंचा० १७, २६;

अवट्टिअ-य त्रि० ( अवस्थित ) स्थिर रहनेवाला; पथ्य न थाय तेयु स्थिर, न्यूनाधिक न होने वाला. Steady, unchanging; remaining fixed. नाया० ५, ओव० १०, ३४; सम० ३४; प० २०४, सू० प० ८, भग० २, १०; ५, १; ८, ६, ३३; १८, १०; २०, ८, २५, ७; पंचा० १०, १३, जं० प० १, १५, ( २ ) शाश्वत, नाश न पामे अयेवुं. शाश्वत, नित्य. eternal, imperishable. ङ० ३, ३; नंदी० ५७, ( ३ ) पु० अप्रतिपाति ( नेतुं पतन न थाय ते ) अवस्थित अवधिज्ञान; यावच्छ्रव पर्यंत रहे तेयु अवधि ज्ञान. अवस्थित अवधिज्ञान; जीवन पर्यन्त रहने वाला अवधिज्ञान. steady Avadhi-Jñāna supported by proper circumspection and spiritual power. पञ्च० ३३ विशेष० ५७७, ( ४ ) प्रथम समये नेटकी प्रकृति आये तेटकीने भीने नीने आदि समये आये ते अवस्थित अध प्रथम समय में प्रकृति का जितना बंध हो उतना ही बंध दमरे तीसरे आदि मनयों में होता वह अवस्थित बंध.



Karmic bondage uniformly increasing or rising with every Samaya, beginning with the first (Samaya). क० गं० ५, ७६, क० प० ७, ५१,--परिणाम पुं० (-परिणाम) स्थिर परिणाम स्थिर परिणाम. steady thought-activity. भग० २५, ६, —बंध पुं० (-बन्ध) पहले समये जेठली प्रकृति बाधे तेठली नीले त्रीने आदि समये बाधे ते, प्रकृतिबंधनो अेक प्रकार पहिले समय में जितनी प्रकृति बाधे उतनी ही दूसरे और तीसरे आदि समय में बांधने वाला, प्रकृतिबंध का एक भेद. steady bondage of Karmic matter, i. e. the same amount in every unit of time, a variety of Prakriti-bandha. क० गं० ५, ७६, क० प० ७, ५१, अवधि स्त्री० (अवस्थिति) मर्यादा, ६६ सीमा, मर्यादा. Limit, boundary ठा० ३, ४, अवड पुं० (अवट) कुवो कूप, कुआ. A well. पि० नि० १६१, ठा० २, ४, अवडिस पुं० (अवतंस) भूषण. भूषण, गहना. An ornament सू० प० १८, —कूट पुं० (-कूट) मेरुना अद्रसाव वनना आड दिग्दस्थि इटमांनु सातमु इट-शिखर मेरु पर्वत के अद्रसाल वन के आठ दिग्दस्ती कूटों में से सातवाँ कूट. the seventh of the eight Dig-hastī summits of the Bhadrāsāla forest of mount Meru. ज० प० अवडिसअ. पु० (अवतंसक) शिखर. शिखर A summit, a pinnacle जीवा० ३; (२) मेरु पर्वत मेरु पर्वत mount Meru ज० प०

अवडिसग पु० (अवतंसक) मुगट, शिखर मुकुट, शिखर. A diadem, a summit. पणह० २, ४, जीवा० ३, ४, अवड पु० (-अवड-कृकाटिका) श्रीवा- डोडनो पाठनो भाग. श्रीवा, गर्दन का पिच्छला भाग The back part of the neck. भग० १५, १, अवड्ड त्रि० (अपाद्ध-अपगतमर्द्ध यस्य तदपाद्धम्) अर्ध, अर्ध आधा Half ओव० १६; भग० २५, ६, ओघ० नि० भा० ६६; पक्ष० १८, (२) अर्द्ध दिनस. आधा दिन. half of a day. भग० १६, ३; —उमोयरिया स्त्री० (-अवमोदरिका) उलोदरी तपनो अेक भेद, अर्ध जोराड लेवो ते. ऊनोदरी नामक तप का एक भेद; नित्य के भोजन से आधा भोजन करना a variety of Unodari kind of austerity viz taking half the amount of food required वव० ८, १५, भग० ७, १, —खेत्त न० (-क्षेत्र) अर्ध क्षेत्र-पंढर मुहूर्त सुधी यद्रती जेठे योग डरनार नक्षत्र अर्ध क्षेत्र अर्थात् पद्रह मुहूर्त तक चंद्र के साथ योग करने वाला नक्षत्र a constellation which remains in conjunction with the moon for Aīdhaksetra i. e. 15 Muhūrtas च० प० १०; ठा० ६, —गोल पुं० (-गोल) अर्ध गोला, गोलातो अर्ध भाग. आधा गोला, गोले का आधा हिस्सा. half of a globe, hemi-sphere सू० प० ८, —गोलगोल पु० (-गोलगोल) अर्ध गोलाभा सभाअेव भीअ अनेड गोला. आधे गोले में समाये हुए दूसरे अनेक गोले. several other spheres contained in a hemi-sphere. चं० प० ८; —चंद्रसंठाण. न० (-चन्द्रसंस्थान) अर्ध

चन्द्राकार. हाथीना हातने आकार श्रवंचद्रा-  
कार; हाथां के द त का आकार shape of  
the half-moon; shape of the  
tusk of an elephant. ठा० २, ३;  
—अवण. पु० (—दिवस ) अर्ध दिवस.  
आधा दिन. half a day भग० १६, ३;  
—पुद्गलपरिवर्तन. पुं० ( पुद्गलपरिवर्तन )  
अर्ध पुद्गलपरिवर्तन; पुद्गलपरिवर्तन-  
क्षणविशेष, तेना अर्ध भाग.  
पुद्गल परिवर्तन; अर्धात् कालात्रभागत्रिंशत्  
के आध भाग का अर्ध पुद्गलपरिवर्तन कहते हे.  
half the time required for  
Pudgala change पचा० ३, ३२,  
भग० ८, ६; १२. ६; जात्रा० १,

अवण. न० ( अवण ) गमन इत्युं ते; गति  
इत्युं ते. गमन करना; गति करना. Act of  
going; motion ( २ ) ज्ञानुं ते  
जानना. act of knowing नदी०

अवणद्ध. त्रि० ( अवणद्ध ) ण धेत्तुं बांधा  
हुआ Bound; fastened. भग० २, १;  
अवणमंत व० कृ० त्रि० ( अवणमन् ) नीयुं नभ्युं  
नीचे नमता-नम्र हाता हुआ. Bending  
low. राय०

अवणव. पु० ( अवणव ) इत्युं ते. निषेध इत्युं  
ते. दूर करना, निषेध करना Removal, pro-  
hibition. ठा० ८, —वयण. न० (—वचन )  
दोषदंड वचन; निन्दा वचन दोषदर्शक वचन,  
निन्दा वचन. words of censure,  
fault-finding speech. प्रव० ६०३;  
अवणयण. न० ( अवणयण ) निषेध इत्युं ते,  
इत्युं ते; निषेध करना; दूर करना.  
Act of removing; act of  
forbidding. विशेष० १८८, १०२८, विं.  
नि० ४०३, पचा० १६, ३४;

अवणि. स्त्री० ( अवणि ) पृथ्वी पृथ्वी, जमीन  
Earth, land. विं० नि० ६१६;

√अवणो. धा० I. ( अप+नी ) इत् इत्युं  
इत् इत्युं. दूर करना, निकाल डालना. To  
remove, to drive out.

अवणोह. नाया० ८; पचा० १७, ४;

अवणोह. आ० विं० नि० २२३;

अवणोज्जा. विं० “ एतन्मवणोज्जा ” दस० ६;

अवणोत्तु स० कृ० आ० नि० ४०१;

अवणोत्त. व० कृ० विशेष० १२६६;

अवणोय. न० ( अपनीत ) निन्दासूचक. निन्दा  
सूचक Slanderous; scandalous पचा०  
११; दस० ६, २, २०; ( २ ) त्रि० इत्युं इत्युं.  
दूर किया हुआ. removed; forbidden.  
सु० च० २, ६ ;—उवणोयवण न०  
(—उपनीतवचन ) निन्दा साथे स्तुति सूचक  
वचन जेभ ‘ अ स्त्री रूपमां परायण पणु  
आयरणमां सारी छे. वचनना सेण प्रशं-  
सना आरमो प्रशं २ निन्दा के साथ साथ स्तुति  
सूचक वचन, जैसे ‘अमुक स्त्री कुल्पा  
है परंतु है सदाचारणी, ’ वचन के सोलह भेदों  
में से बारहवाँ भेद. an expression  
combining praise with cen-  
sure; e. g this woman is not  
fair but she is well-behaved.  
आया० २, ४, १, १३२,—चरण. त्रि०  
(—चक्र ) इत्युं मोक्षरामा अ व्युं होय,  
ये इ स्थानेथी थीने स्थाने राभवामां  
आवुं होय, तेनी गवे रणा इत्युं २, अलिग्रह  
निशेधारी कहां भेजे हुए या एक स्थान से  
दूसर स्थान पर रखे हुए की गवणणा करने  
वाल; अभिग्रहविशेष का धारी. ( one )  
who searches after a thing  
transferred from one place to  
another, ( a person ) with a  
particular kind of vow. ओव० १६;  
अवणोय. न० ( अपनीत ) इत्युं ते.  
दूर करना. Removal. विशेष० ६८२;

अवर्ण. त्रि० ( अवर्ण-त् विद्यते वर्णः पंच विधः सितादिरस्मेत्यवर्णम् ) वर्णरहित, रंगरहित; अभूर्त्त द्रव्य. वर्णरहित त्रिना रंग का, अनूर्त्त द्रव्य. Colourless, having no colour; formless (substance) भग० २, १०; ११, १; २०, ५; ( २ ) निन्दा. निन्दा censure, obloquy पि० नि० भा० २७,—कर त्रि० (-कर) अवर्ण्यु भोक्षयावाणे; निन्दा करने वाला, निन्दा करने वाला. ( one ) who detracts or censures भग० ६, ३३.—कारअवर्ण. त्रि० (-कारक) अवर्ण्यु भोक्षनर, अवर्ण्युवाद् भोक्षनर. अवर्ण्यु कहने वाला ( one ) who detracts or censures भग० १५, १,—वाइ पु० (-वादिन्-अवर्णं वाइतुं शीलमस्येत्यवर्णवादी ) अपकीर्ति करने वाला, निन्दा करने वाला, निन्दक. ( one ) who detracts or censures “ माई अवर्ण्यवाइ, किविस्सिय भावण कुणह ” उक्त० ३६, २६३; दसा० ४, १०१; प्रव० ६६५०;—वाय. पु० (-वाइ) अवर्ण्यु भोक्षया ते; निन्दा करने वाले. निन्दा करना, अवर्ण्युवाद् बोलना. detr. acting, censuring. “ अवर्ण्यवाय च परंमुहस्व ” प्रव० ३१७, ६४५;

अवर्ण्यवत् त्रि० ( अवर्ण्यवत् ) निन्दा. निन्दक. ( One ) who detracts or censures. दसा० ६, १८,

अवर्ण्यवन्त. त्रि० ( अवर्ण्यवन्त ) अवर्ण्युवादेने भोक्षनर, निन्दा. अवर्ण्युवाद् बोलने वाला, निन्दा करने वाला. ( One ) who detracts or censures. सम० ३०;

अवर्ण्य. स्त्री० ( अवर्ण्य ) अपमान; अनिन्द. अपमान, अनिन्द Insult, disrespect ओष० ४१; पंचा० १, ३५, प्रव० ८७२,

अवर्ण्यहाण न० ( अवस्तव ) तथाविध अस्तव-रित जगथी स्नान करने से शरीर की विकार हटाने के लिए अस्तव-मिश्रित जगथी स्नान करने से तथाविध सत्कारित जगथी स्नान करना शरीर की विकार हटाने के लिए अस्तव-मिश्रित जगथी स्नान करना A bath with water mixed with a dirt-removing substance विवा० १; नाया० १३,

अवर्ण्यु त्रि० ( अवर्ण्यु ) छोड़ने पातलुं करने. छोड़कर पतला किया हुआ Made slender by chopping off the outer parts सूय० १, ५, २, १४,

अवर्ण्यु पु० ( अवर्ण्यु ) आठ वरसनी अर्द्धवर्षी आठ वर्ष से कम उम्र का बालक, अपरिणत अवस्था का बालक A boy under eight years of age; a boy of immature age ओष० नि० ४६७,

अवर्ण्यु त्रि० ( अवर्ण्यु ) अविश्वनीय. न कहने योग्य; अनिर्वचनीय. Inexpressible, indescribable; unspeakable दस० ७, ४३; पञ्च० १०; अणुजो० ७४, भग० १०, १०, प्रव० १२१३; क० प० ७, ५२;—वन्ध. पु० (-वन्ध) अवर्ण्यु अन्ध, अन्ध के अन्धप्रकृतिने अन्ध-ध तथा पृथी पुन जगथीय ते प्रथम समये अवर्ण्यु अन्ध अन्ध अन्ध. जिस कर्मप्रकृति का अवर्ण्यु होने के बाद पुन वन्ध हो वह प्रथम समय में अवर्ण्यु वन्ध कहलाती है that Karmic nature which binds a man again after once freeing him from bondage is at its initial stage called Avaktavya-bandha. क० प० ५, २२,

अवत्तव्वग. न० ( अवक्तव्यक—न कति नाप्य-  
कतीति वक्तुं शक्यते यत्तदवक्तव्यकमेकमि-  
त्यर्थ ) इति डे अइति शब्दधी डहेवा योग्य  
नहि ते; अइती संख्या कति अथवा अकति  
( कितने हैं ? या कितने नहीं हैं ? ) शब्द  
के द्वारा न कहने योग्य एक की संख्या.  
The numerical figure one in  
speaking about which we can  
not say " how many ? or how  
many not?" ठ० ३, १; भग० २०, १०,  
—संचिय. त्रि० (—सञ्चित-अवक्तव्यकेनैकेन  
सञ्चिता.) अइ समये अइत्त उत्पन्न थाय-  
अइ संख्याधी गणाय तेवा नारथी वगेरे. एक  
समय में एक ही उत्पन्न हो अर्थात् एक ही संख्या  
से गिना जाय ऐसा नारकी आदि Nārakis  
( hell-beings ) etc. that are born  
one at a time or that can be  
counted one at a time ठ० ३, १,  
भग० २०, १०;

अवत्तव्वा लो० ( अवक्तव्या ) न डहेवा योग्य  
भाषा न कहने योग्य भाषा. Speech  
unworthy of being expressed  
or uttered. " जा य सच्चा अवत्तव्वा "  
दस० ७, २;

अवत्थ. त्रि० ( अवस्थ-अवतिष्ठन्तीत्यवस्था. )  
रहेनार. रहने वाला ( One ) who  
resides. " त्तराणविहुमलवणो, बला-  
दथो सासयावत्था " विशेष० १७५६,

अवत्थग. न० ( अपार्थक ) पूर्वापरना संबन्ध  
विनाती वअपर्यना; सूत्रतो अइ दोष.  
पूर्वापर सम्बन्ध रहित वाक्यरचना: सूत्र का एक  
दोष. A fault in the construction  
of a Sūtra, faulty grammatical  
construction of a sentence  
परह० १, २;

अवत्था. लो० ( अवस्था ) दशा; स्थिति. दशा,  
स्थिति Condition; state, plight

पंचा० १६, ३६; १८, २६; प्रव० ६६;  
( २ ) छद्मस्थ, डेवणी अने सिद्धपणुं अ  
त्रणु अवस्था. छद्मस्थ, केवली और सिद्धपना  
यह तीन अवस्थाएं. The three states  
viz that of a Chhadmastha, a  
Kevali and a Siddha. प्रव० ६६,

—अंतर. न० (—अन्तर ) दशाविशेष दशा  
विशेष. a particular, specified state  
or condition ( २ ) पर्याया-तर-अइ  
पर्यायमाधी पीअ पर्यायमां वुं ते एक  
पर्याय में से दूसरे पर्याय में जाना. passing  
from one modification to  
another. पंचा० १८, २६,—आभरण.

न० (—आभरण ) अवस्थाने उचित आभरण-  
धरेणुं. अवस्था के योग्य आभूषण—गहना an  
ornament befitting a particular  
condition. ठ० ८, १;—उचित. त्रि०  
(—उचित ) अवस्थाने उचित, अवस्था योग्य.  
अवस्था के योग्य. befitting a particular  
stage or condition. पंचा० ४, ६,

—तिग. न० (—त्रिक) छद्मस्थ, डेवणी अने  
सिद्ध अत्रे दशा. छद्मस्थ, केवली और सिद्ध  
ये तीन दशाएं. the three conditions  
viz that of a Chhadmastha, a  
Kevali and a Siddha प्रव० ६६;

अवत्थाण. न० ( अवस्थान ) स्थिति, अइ  
दशाणु स्थिर रहेवु ते. स्थिति; एक स्थानपर  
स्थिर रहना. Steady residence in  
a place; steady condition. विशेष०  
११०, प्रव० २७५;

अवत्थिय त्रि० ( अवस्तृत ) पसारेल; अिअ-  
वेअ फैलाया हुआ विद्धा हुआ. Spread;  
extended. नाया० ८;

अवत्थु. न० ( अवस्तु—न विद्यते वस्त्वनिधे-  
योस्यो यत्र तदवस्तु ) निरर्थक; अर्थ  
शून्य. निरर्थक; अर्थ रहित Meaningless,

fruitless; purposeless. परह० १, २;

अवदग्ग. न० ( अवदग्ग ) अंत; छेडे, पर्यन्त.  
अन्त, आखिरी सिरा; पर्यन्त. End. सू०  
२, ५, २,

अवदल. त्रि० ( अपदल-अपदलमपसदं द्रव्यं  
कारणभूतं मृत्तिकादि यस्याऽसावपदलः )  
दलदार नहि ते, तद्वदादी विना तह का, नाजुक.  
Not solid, fragile. ठा० ४, ४,

अवदहण. न० ( अपदहन ) अभुङ्ग प्रकारेण  
अंल किसी प्रकार की डाह A brand or  
burn of a particular kind. नाया०  
१३;

अवदात. त्रि० ( अवदात ) निर्मल; शुद्ध,  
स्वच्छ. निर्मल, साफ, स्वच्छ Pure, clean,  
clear. “ संखिंदुपगतवदातसुकं ” सू०  
१, ६, १६;

अवदाय. त्रि० ( अवदात ) गौर; सफेद. गौरा;  
सफेद. White; spotless. परह० १, ४,

√ अवदाल. धा० II. ( अप+दल् ) विदारण  
करुं, चीरुं, छेडुं. चीरना, फाड़ना, विदारण  
करना To cut; to tear, to cut  
into two or more pieces.

अवदालेह. भग० १६, ४,

अवदालिय सं० कृ० भग० १३, ६,

अवदालिय त्रि० ( अवदारि-लित ) विकसित,  
प्रभुक्षित विकसित, फूला हुआ. Opened,  
budded. जीवा० ३, ३, ओव० १०; नाया०  
१, उवा० २, ६५,

अवहार. न० ( अपहार ) नानी आरी; छोटी.  
छोटी खिड़की. A small window, a  
back-door. “तेण अवहारेणं सो अतिगतो  
असोगवणियाण” नाया० २, १४,

√ अवहाल. धा० II. ( अप+उद्+दल् ) उधा-  
डुं; भोखुं. उघाड़ना; खोलना To open

अवहालेह. पञ्च० ३६, भग० ६, १०;

अवहालेत्ता सं० कृ० भग० ६, १०,

अवहाहण. न० ( अपदाहन ) लुभ्यो ‘अवद-  
हण’ शब्द. देखो ‘अवदहण’ शब्द. Vide  
‘अवदहण’. विवा० १;

अवद्धंस. पुं० ( अपध्वंस ) चारित्र तथा तेना  
इणने नि सार पनावनार भावना, के जे भाव-  
नाथी असुरादिदमां उत्पत्ति थाय ते. चारित्र  
और उसके फल को नि.सार बनाने वाली भावना,  
जिससे असुरादि पर्याय में उत्पत्ति होती है.  
A thought showing right con-  
duct and its fruits as useless,  
this sort of thought causes a  
man to be born among demons  
etc. “ चउन्विहे अवद्धंसे प० तं० आसुरे  
अभियोगे संमोहे देसकिन्विसे ” ठा० ४, ४;

अवद्धंसि. त्रि० ( अपध्वंसिन् ) ध्वंस करनार;  
नाश करनार ध्वंस करने वाला, नाश करने  
वाला. A destroyer; a killer. “पच्छा  
परिणया य मलावद्धंसी ” उत० ४, ७,

अवधट्ट. त्रि० ( अवधट्ट ) तृप्त थयेल. तृप्त.  
Satisfied, having enough.  
नाया० १८;

अवधारियव्व. त्रि० ( अवधारित्तव्य ) अव-  
धारणुं करुं ते. अवधारण करना. Think-  
ing, considering. पंचा० ३, २५,

अवनमिय सं० कृ० अ० ( अवनम्य ) नीचा  
थधने, नभीने नम्र-नीचा होकर. Having  
bent low, bowing down. आया० २,  
१, ६, ३२,

√ अवपंगुर. धा० I ( \*अव+अप+गृ ) उभाड  
उधाडवा-भोखवा. किवाड खोलना To  
open a door.

अवपगुरे वि० ‘अप्पणा नावपंगुरे’ दस०  
५, १, १८;

अवपुट्ट त्रि० ( अवस्पृष्ट ) स्पर्श करेख. स्पर्श  
किया हुआ. Touched. सु० च० १, ३२,

✓ अवपेकख. धा० I (अव + प्र + ईत्) योतरश्  
दृष्टिही ज्ञेयुं; तपासयु; निरीक्षणुं इत्युं चारौ  
ओर देखना; जाच करना, निरीक्षण करना.  
To examine; to investigate.

अवपेकखह. आ० उक्त० ६, १२;

✓ अवबुज्झ. धा० I (अव + बुज्) लक्ष्युं;  
समञ्जस्यु. जानना, समझना. To know,  
to understand

अवबुज्झति विशे० १६७;

अवबुज्झसि उक्त० १८, १३;

अवबोध पु० (अवबोध) स्मृति; स्मरण.  
स्मृति, याद, स्मरण. Recollection;  
remembrance. आया० टी०  
१, १, १;

अवभास. पु० (अवभास) दृष्टान् दिखाव, दृश्य.  
Show, manifestation, appear-  
ance. जीवा० ३, १, (२) तेन अने ज्ञानने  
प्रकाश तेज और ज्ञान का प्रकाश. lustre  
of knowledge and power.  
जीवा० ३, १;

अवभासय. त्रि० (अवभासक) लक्ष्युनाः  
५ र्थे ॥ २ वलास इत्यने जानने वाला,  
पदार्थों का जान करने वाला. (One) who  
knows or understands. विशे० ३१७.

अवम त्रि० (अवम) हीन, ओष्ठु हीन,  
हलका. Less आया० २, १, ३, १७,

अवमरण. धा० II. (अव + मन्) अपमान  
इत्युं, अनादर इत्ये, तिरस्कार इत्ये  
अपमान करना; तिरस्कार करना. To insult,  
to disregard.

अवमरणेति सूय० २, २, १७;

अवमरणाति भग० ३, १, नाया० ध०

अवमरणह. आ० उक्त० १२, ३६; भग० ५, ४;

१२, १;

अवमाणिता. न० कृ० अ० ३, १;

अवमाणिता. सं० कृ० भग० ५, ६,

अवमरणात्. व० कृ० सूय० १, २, ४, ७;  
२, ४, ७;

अवमह. पुं० (अवमर्द) मसण्यु-मर्दन  
इत्युं ते. मलना, मर्दन करना. Act of rub-  
bing "अवमहं अप्पणो परस्स य करेति"  
परह० १, २,

अवमारा. न० (अपमान) अपमान, अनादर;  
तिरस्कार अपमान; तिरस्कार. Insult,  
disregard भग० ३, २; राय० २६४;  
ओव० २१;

अवमाण. न० (अवमान) अपमान—हाथ,  
गज, पुट वगैरेथी वस्तुने भरपी ते,  
भरपविशेष. अवमान—हाथ, गज, फुट  
वगैरह से वस्तुविशेष का माप करना.  
Measurement of a thing  
by the hand, by a yard etc, a  
kind of measurement. अ० ४,  
१; अणुजो० १३२, (२) माननीय  
पुरुषने तुकारे ओक्षाव्यु ते; अपमान  
इत्युं ते. मान्य पुरुष को तू तझक से  
बुलाना, अपमान करना. insulting;  
showing disrespect to a worthy  
person. परह० २, ५; ओव० २१;

अवमाणिअ-प्र त्रि० (अपमानित) अप-  
मान पाभेक्ष. अपमानित. Insulted. सु०  
च० १२, ५; पि० नि० ४६५; भग० ३, २;  
११, ११, ओष० नि० ५२८;

अवमार. पु० (अपस्मार-अपस्मर्यते पूर्ववृत्तं वि-  
स्मर्यतेऽनेन यपस्मार) रोगविशेष; जेभां  
पूर्वती लक्षितनुं विस्मरण थछ लय अथी  
जानने अथ रोग, प.छ, मृगी, हिस्टेरीया एक  
रोगविशेष, जिसमें पूर्व की स्मृति नष्ट हो जाय  
वह रोग, मृगी A disease such as  
hysteria, epilepsy etc. in which  
a person becomes unconscious

of his former condition आया० १,  
६, १, १७२;

अवमारिय. त्रि० ( अपस्मारित—अपस्मार  
संजातो यस्येति ) अपस्माररेगवाणे;  
वाध-मृगी रोगवाणे। अपस्मार-मृगी रोग  
वाला। Suffering from epilepsy  
etc. आया० १, ६, १, १७२;

अवय. न० ( अवक ) ओ३ साधारण वनस्पति,  
सेवाण. एक साधारण वनस्पति; सिवार. A  
kind of vegetation, moss. पत्र० १,

अवय न० ( अम्बज ) कमल. A lotus.  
पत्र० १,

√ अवयक्ख. धा० I ( अप+ईच् ) अपेक्षा  
राप्ती, आकांक्षा इत्वी अपेक्षा रखना,  
आकाक्षा रखना To expect; to  
desire ( २ ) ज्ञेयुं, आगणपाठण निरी-  
क्षण इत्तुं. देखना, आगे पीछे निरीक्षण  
करना to observe.

अवयक्खइ नाया० ६;

अवयक्खति नाया० ६,

अवयक्खसि. नाया० ६,

अवयक्खमाण. व० कृ० भग० १०, १,

अवयक्खत. व० कृ० नाया० ६, ओघ० नि०  
भा० १८८,

अवयग्ग पुं० ( \*अवदग्र-पर्यन्त ) अन्त, छेडे,  
पर्यन्त अन्त, आखिरी End, limit ठा०  
२, १, भग० १, १,

अवयण. न० ( अवचन ) नि-द्य वचन, अयोग्य  
वचन निंदा वचन, अयोग्य वचन Im-  
proper speech, censurable  
speech. वेय० ६, १, ठा० ३, ३;

अवयमाण व० कृ० त्रि० ( अवदत् ) जुहुं न भो-  
लतो, भोहुं न भोलतो झूठ न बोलता हुआ Not  
telling a lie. आया० १, ५, २, १४६,

√ अवयर. धा० I. ( अप+कृ ) अपकार  
इत्तुं; अपमान इत्तुं. अपकार करना,

अपमान करना To injure, to insult.  
अवयरइ मम० ४०,

अवयरण न० ( अवतरण ) उतरतुं; नीचे  
आवतुं. नीचे उतरना. Act of descend-  
ing, coming down प्रव० ८६२,  
अवयरिस त्रि० ( अपकर्ष ) थोडुं. थोड़ा.  
Small, little. विशेष० १५०३,

अवयव. पुं० ( अवयव ) अवयव, अवयविने  
ओ३ विभाग. अवयव, अवयवी का एक  
विभाग. A limb, a part of a body.  
अणुजा० १३१, विशेष० २८, प्रव० १५११,  
क० ग० १, ४८,—फरिस पुं० ( -स्पर्श )  
अवयव-ओ३ देशतो स्पर्श एक देश का छूना  
touch or contact of a part. "जस्स  
वरसासणावयवफरिसविकसिवविमलमइकिर-  
णा " क० प० ७, ५७,

अवयवि त्रि० ( अवयविन् ) अवयववाणुं, जेना  
भाग पडी शके ओ३ अवयवों वाला; जिसके  
भाग हो सकें वह. Having limbs or  
parts; divisible into parts or  
limbs. ठा० १, १, सम०

अवयार पुं० ( अपकार ) अपकार. अपकार.  
Damage; hurt, injury विशेष०  
३२६८,

अवयार पुं० ( अवतार ) समावेश, अन्तर्भाव.  
समावेश, अन्तर्भाव Inclusion, state  
of being included प्रव० ६६६,

\*अवयास त्रि० ( मत्त ) गाडे पागल  
Mad पिं० नि० ५८१,

अवयास न० ( अवकाश-आलिङ्गन )  
आलिङ्गन, भेटतुं ते आलिङ्गन, भेंट करना  
Embrace. ओघ० नि० भा० २४४,

अवयासाविय त्रि० ( अवकाशित-आश्ले-  
पित ) आलिङ्गन आपेल आलिङ्गन किया  
हुआ। Embraced. विवा० १, ४,

अवयासेऊण. सं० कृ० अ० ( \*अवकारय-  
आलिग्य ) आलिगन धने. आलिगन देकर.  
Having embraced. तंडु०

अचर. त्रि० ( अपर ) अन्य; भीजुं. अन्य;  
दूसरा. Another; other. पि० नि०  
२१५; ४१५; नाया० १; भग० ३, ७; सू०  
प० १८; प्रव० ५२७; विशेष० ३४६; चं० प० ३;  
(२) पधीजुं; पाछणजुं. पीछे का; आखिर का.  
following; next. सूय० २, ६, २; (३)  
पश्चिम दिशा. पश्चिम दिशा. the west;  
the western direction. सम० १४;  
(४) पर नहि ते, पोते. जो दूसरा न हो  
वह; स्वयं, खुद. self. विशेष० ३३५२;  
—उत्तर पुं० (-उत्तर) उत्तर अने पश्चिम  
दिशा वच्येते प्रदेश, वायव्य प्रदेश. उत्तर और  
पश्चिम दिशा के बीच का प्रदेश, वायव्य प्रदेश.  
the region between the north  
and the west; the north-west.  
राय० ६४, जं० प० ४, ७३, ५, ११६;—उत्तरा.  
स्त्री० (-उत्तरा) वायव्य भुजो, पश्चिम अने  
उत्तर वच्येते विदिशा. वायव्य कोण, पश्चिम  
और उत्तर के बीच की विदिशा. the  
north-west. प्रव० ६६०,—रह. पुं०  
(-अह) द्विपसने पाछेला भाग. दिन का  
पिछला पहर-पिछला हिस्सा the latter  
part of the day. "पुवावररह-  
कालसमयंसि" निसी० १६, ७; ८; ठा०  
४, २; अणुजो० २५, पि० नि० २२५;  
प्रव० ५६८,—दक्खिणा स्त्री० (-दक्षिणा)  
नैऋत्य भुजो, पश्चिम अने दक्षिण वच्येते  
विदिशा. नैऋत्य कोण. the inter-  
mediate point of the compass  
called the south-west. प्रव०  
७६०;—दारिय न० (-द्वारिक) पश्चिम  
तरफ रही यदनी साथे जोग जेउना

नक्षत्रे. पश्चिम की ओर रहकर चंद्र के साथ  
संयोग करने वाला नक्षत्र. constellations  
causing a conjunction with the  
moon, remaining in her west.  
" पुस्ताइयाणं सत्त णक्खत्ता अवरदारिया  
पणत्ता, तंजहा-पुस्तो असिलेसा मघा पुवा  
फग्गुणी उत्तरफग्गुणी हत्थो चित्ता " ठा० ४,  
४;—दाहिण. पुं० (-दक्षिण) पश्चिम अने  
दक्षिण वच्येते प्रदेश; नैऋत्य भुजो. पश्चिम  
और दक्षिण के बीच का प्रदेश; नैऋत्य कोन.  
the region between the west  
and the south i. e. the south-  
west. पंचा० २, १६;—पत्रोगज. त्रि०  
(-प्रयोगज) स्वाभाविक; भीजना प्रयोग-  
व्यापारथी उत्पन्न थयेल नहि. स्वाभाविक;  
प्राकृतिक; अकृत्रिम. natural, naturally  
produced. विशेष० ३३५२;—मम्मवे-  
हित्त न० (-मर्मवेधित्व) भीजना मर्म  
विधाय नहि अयेवुं भोखवुं ते, सत्य वचनते  
२० भो अतिशय. मर्मभेदी वचन न बोलना;  
सत्य वचन का २० वॉ अतिशय inoffen-  
sive speech, speech not wound-  
ing the feelings of others, the  
twentieth Atisaya of truth-  
ful speech. सम० ३५;—मय. त्रि०  
(-मत) भीजने मत. दूसरे का मत.  
another's opinion or judg-  
ment. विशेष० ६८४,—राय. पुं० (-रात्र)  
पाछली रात. पिछली रात. the latter  
part of a night. 'पुवावररायं जयमाणे'  
आया० १, ५, ३, १५३;

अचरकंका. स्त्री० ( अपरकंका ) धातडी भ-  
उना भरतक्षेत्रनी पदभोत्तर राजनी राज-  
धानी, जयां द्रौपदीतुं हरण थयुं हतुं. राता  
धर्म इथाना १६ भा अध्ययनमा तेना विस्तार  
छे. धातकी खंडान्तर्गत भरतक्षेत्र के पश्चोत्तर



राजा की राजधानी, जहाँ द्रौपदी का हरण हुआ था. ( इस का वर्णन शाता धर्म कथा के १६ वें अध्याय में है ) The capital of the Padmottara king of the Bharataksetra of the Dhātakikhandā where Draupadī was kidnaped. This is described in the 16th chapter of Jñātādharma-kathā सम० १६, नाया० १५;

अवरच्छ. न० ( अपरोक्ष-अविद्यमानानि परेषामक्षीणि द्रष्टव्यतया यत्र तदपरोक्षम् ) असमक्ष चोरी करवी ते, चोरीनुं त्रीशमुं नाम. गैर मौजूदगी में चोरी करना, चोरी का तीसवाँ नाम. The thirtieth kind of theft; stealing in the presence of the owner or others when inattentive. परह० १, ३;

✓ अवरज्झ धा० I. ( अप+राध् ) अपराध करवे, अपराधी थवुं अपराध करना, अपराधी होना. To offend, to commit a crime ( २ ) नाश पामवुं. नाश पाना. to be destroyed; to be ruined

अवरज्झ-ति. विवा० २, नाया० २, राय० २६६, उक्त० ७, २५, ३२, २५, सूय० १, १, ३, ११, १, ३, ३, १३,

अवरज्झति. नाया० २,

अवररण. न० ( अवरण्य ) शाकविशेष शाकविशेष A kind of vegetable. ज० प०

अवरस्त. पुं० ( अपररात्र ) रात्रीने पाछले भाग; पाछली रात रात्रि का पिछला भाग, पिछली रात. The latter part of a night. "पुन्वावरस्तकालसमयांसि " विवा० १, ६,—कालसमय. पुं० (—कालसमय ) पाछली रातने डाण-वभ्त. पिछली रात का

समय. time after midnight. कप्प० ६, १५०,

अवरद्ध. न० ( अपराद्ध ) अपराध करवे ते; भीमने पीडा उपजववी ते अपराध करना; दूसरे को कष्ट पहुँचाना. Act of offending others. वव० १, ३७, विवा० ४; सु० च० १, ८१; ( २ ) विनाश करेव. विनाश किया हुआ destroyed; ruined. नाया० १,

अवरद्धिय पुं० ( अपराद्धिक-अपराधनं अपराद्धं पीडाजनकतया तदस्यास्तीत्यपराद्धिको लूता-विस्फोट सर्पादिदंशो वा ) सर्पदंस सर्पदंश. Snake-bite ( २ ) लूता रोगने श्लो. लूता रोग का फोड़ा. an insectbite. पिं० नि० भा० १४,

अवरद्धिगा. स्त्री० ( अपराद्धिका ) असनी श्लोकी खुजली की फुन्सी A tumour of itches ओघ० नि० ३४१;

अवरविदेह. पुं० ( अपरविदेह ) पश्चिम महाविदेह-मेरुथी पश्चिम तरङ्गने महाविदेह क्षेत्रने अर्धो भाग पश्चिम महाविदेह-मेरु से पश्चिम की ओर के महाविदेहक्षेत्र का आधा भाग. The western Mahāvideha, the half of Mahāvideha in the west of Meru mount. 'दो अवरविदेहाइं' ठा० २, ३, अणुजो० १३४; पञ्च० १६, ज० प० जीवा० १,—कूड न० (—कूट) निधध पर्वतनुं आडमुं तथा नीलवंत पर्वतनुं सातमुं शिभर. निषध पर्वत का आठवाँ और नीलवंत पर्वत का सातवाँ शिखर. the eighth summit of Niṣadha mount and the seventh summit of Nilavanta mountain. ज० प०—वास. पुं० (—वर्ष) ऋथो "अवरविदेह" शब्द. देखो 'अवरविदेह' शब्द vide 'अवरविदेह.' नाया० ८,

अवरविदेहत्र. त्रि० ( अपरविदेहक ) पश्चिम महाविदेह क्षेत्रमां लन्भेल पश्चिम महाविदेह क्षेत्र मे जन्मा हुआ. Born in the western Mahāvideha region अणुजो० १३१;

अवरा. स्त्री० ( अपरा ) नलिना विजयनी मुख्य नगरी. नलिना विजय की मुख्य नगरी. The chief city of Nalinā Vijaya ठा० २, ३; ( २ ) पश्चिम दिशा. पश्चिम दिशा. the west प्रव० ७६०;

अवराइत्रा. स्त्री० ( अपराजिता ) पश्चिम महाविदेहना दक्षिण आडवानी पांचमी वप्रा विजयनी मुख्य राजधानी. पश्चिम महाविदेह के दक्षिण भाग की पाचवी वप्रा विजय की मुख्य राजधानी. The capital of the fifth Vapra Vijaya of the southern part of western Mahāvideha ज० ५०

अवराजिया. स्त्री० ( अपराजिता ) शष्प विजयनी मुख्य नगरी शंख विजय की मुख्य नगरी The capital of Śaṅkha-Vijaya. ठा० २, ३;

अवराह. पुं० न० ( अपराध ) अपराध; गु-डेा; डभुर; लूत. अपराध, गुनाह, मूल. Fault, offence. ' अवराहसहस्सधरणीओ ' तंड० नाया० ६; दस० ६, २, १८, सु० च० ४, १२४; वव० १, ३७, दसा० ६, ४, पिं० नि० १२७, प्रव० ७३६, पंचा० १५, १७; ( २ ) अतियार; व्रत लांगवानी डोशीश अतिचार; व्रत भंग करने का प्रयत्न. an attempt to violate a vow. पंचा० १६, १४,—खामणा. स्त्री० (—क्षमापना) अपराधनी क्षमा मांगनी ते. अपराध की क्षमा मांगना. asking pardon for a sin or a fault प्रव० ६६;—पय. न० (—पट्ट) धट्टिय डपाय आदि-भोक्ष भार्गने रोडनार. इन्द्रियविषयक कपाय आदि; मोक्ष

को रोकने वाला. an obstacle in the path of salvation; e. g. passion etc. भक्त० ४६;—वण. पुं० (—वण) अपराधरूपी वणु-धा. अपराधरूपी वण. a wound or a scar in the form of a sin. पंचा० १५, ४०;—सल्ल. त्रि० (—शल्य) अतियाररूप शल्य. अतिचार रूप शल्य. a fault rankling in the heart like a thorn. पंचा० १६, १४,—सल्लप्पभव. त्रि० (—शल्य; प्रभव) सथित पृथ्वीना संसर्गरूप अतियार-लूत शल्यथी उत्पन्न थयेल. सचित्त पृथ्वी का संसर्ग रूपी जो अतिचार उससे उत्पन्न. born of, arising from Atichāra (partial violation) incurred by touching animate earth i. e. earth-bodied sentient being. पंचा० १६, १४,

अवराहि. त्रि० ( अपराधिन् ) गु-डेगार, अपराधी अपरावी Guilty, criminal. राय० २४७,

अवरिल्ल. त्रि० ( अपरत्य ) पश्चिम तरक्षुं. पश्चिम की ओर का Western. " अवर-वणसड " नाया० ६;

अवरुद्. पु० (अपरुद्) नारकीना हाथपग लाग-नार परमाधामी. नारकी के हाथ पैरो को तोड़ने वाला परमाधामी. One who breaks off the hands and feet of Nārakīs; the Paramādhāmī सम० १५;

अवरोप्पर. न० ( परस्पर-प्राकृतत्वादादि रकार. ) अन्योन्य. अन्योन्य. Mutual. विशेष० २५१; पिं० नि० २३४;

अवरोह. पुं० ( अवरोध ) अन्त-पुर. अन्त पुर; ज़नान खाना A harem सु० च० ३, ४०३, ( २ ) आवरण आवरण; अटकाव absence of obstruction. विशेष० १०३;

✓ अवलंब धा० I ( अवलम्ब ) आश्रय  
करवे; अवलंबन करेवु. आश्रय करना अवल-  
म्बन करना To lean upon, to resort  
to.

अवलंबियाण सं० कृ० आया० १, ६, १, २२,

अवलंबिअ-य. सं० कृ० आया० २, १, ६,  
३२; सु० च० ४, २३२;

अवलंबिऊ. भक्त० १६३,

अवलंबित्प हे० कृ० दसा० ७, १,

अवलंबमाण व० कृ० ठा० ५, २,

अवलंब. त्रि० ( अवलम्ब ) पगुठ्या अने भायुं  
नियुं करी लटकनार. पाँव ऊँचे ओर सिर नीचे  
करके लटकने वाला. (One) in a topsy-  
turvy posture of the body,  
one suspending him-self head  
over heels. ओव०

अवलंबण. न० ( अवलम्बन ) वस्तुना सामान्य  
तथा विशेष अशने अवग्रह वस्तु के सामान्य  
तथा विशष अश-भाग का अवग्रह-अवलम्बन  
Grasping the general and  
particular parts of a thing नदी०  
३०; ( २ ) आश्रय, आधार; टेका आश्रय;  
आधार, टेका support जीवा० ३, ४, ज०  
प० १, निसी० १, १२, ( ३ ) ओटलेो. ओटला.  
a verandah. ( ४ ) भरतक नभापवुं  
ते. मस्तक नमाना, सिर झुकाना act of  
lowering the head. ठा० ५, २,  
—बाहा स्त्री० ( \*बाहु ) कडोडो, कडोरो  
कठहरा A railing. ज० प०

अवलंबणया स्त्री० ( अवलम्बनता ) अवग्रह;  
मतिज्ञाननेो अेक भेड, अवग्रह; मतिज्ञान का  
एक भेद. A variety of Matijñāna;  
perception, apprehension of an  
object Here the state of mind

is such that it has a vague idea  
of an object. नदी० ३०;

अवलंबिअ-य. त्रि० ( अवलम्बित ) निरन्तर;  
हमेशां. निरन्तर, हमेशा, सदा. Always,  
eternally नाया० १, ( २ ) त्रि० अव-  
लंबन करेवु. अवलम्बन किया हुआ. 10-  
sorted ( to ). दस० ५, २, ६;

अवलंब. त्रि० ( अपलब्ध ) अपमानपूर्वक;  
भजेवु अपमानपूर्वक मिला हुआ Obtained  
with insult. "परघरप्पवेसे लद्धावलद्धाई"  
अत० ५, भग० १, ६;

अवलंबिज्जंत व० कृ० त्रि० ( अपलपत् ) अकतो;  
अकतो वकता हुआ, बड़बड़ाता हुआ.  
Prattling; talking nonsense सु०  
च० ५, ६०;

अवलंब पु० ( अवलम्ब ) अेक देशनु नाम.  
एक देश का नाम. Name of -  
country ठा० २, ४;

अवलंबित्त. त्रि० ( अवलंबित ) व्याप्त. व्याप्त.  
Pervaded by सूय० १, १३, १४;

✓ अवलिप्प. धा० I ( अव + लिप् + क० + वा० )  
लेपावुं, भरडावु. लेप का किया जाना To  
be smeared, to be bespattered.  
अवलिप्पइ क० वा० उक्त० २५, २६; भग०  
६, ३३;

अवलंबिय त्रि० ( अवलंबित ) नहि वजेवुं, धडी  
पाडेव नहि, वाजेव नहि विना मुडा हुआ,  
न झुकाना हुआ. Not folded, not  
bent उक्त० २६, २५;

अवलुय. न० ( \*अवलुक-नौकादण्ड ) हलेसा  
विशेष, नावाने यथावधानुं अेक उपकरण. एक  
प्रकार का वांस, नाव चलाने का एक उपकरण.  
A kind of oar. आया० २, ३, १, ११६;

**अवलेहणिया** स्त्री० (\*अवलेखनिका-वंशत्वग्) वांसनी उपरी छाल-छोष्ट. वांस के उपर की छाल. The outer bark of a bamboo. ठा० ४, २; निसी० २, २६;

**अवलेहिया**. स्त्री० (अवलेहिका) आटणु. अवलेह, चटनी. Semi-fluid medicine to be licked. प्रव० २२८;

**अवलेही** स्त्री० (\*अवलेहिका-वंशवल्कल) वांसनी छोष्ट वास के ऊपर की छाल, जो वास पर पत्ती के आकार में होती है. The outer bark of a bamboo tree. क० गं० १, २०;

**अवलोक्यमाण** व० कृ० त्रि० (अवलोकयत्) अवलोकन करतो. अवलोकन करता हुआ Observing; inspecting. नाया० १, १६; भग० १०, १,

**अवलोच**. पुं० (अवलोप) वस्तुना सहभावने छुपावणे ते; असत्यं त्रीशमुं नाम. वस्तु के सद्भाव को छिपाना, असत्य का तीसवाँ नाम. Concealing the real nature of a thing; the thirtieth variety of untruth. परह० १, २;

**अवव**. न० (\*अवव-अवयव) ८४ लाख अवयवंग प्रमाण कालविशेष. ८४ लाख अवयवंग प्रमाण काल विशेष A period of time, measuring eighty-four lacs of Avavangas. ठा० २, ४; भग० ५, १; २५, ५; अणुजो० ११५, जीवा० ३;

**अववंग**. न० (\*अववाङ्ग-अवयवाङ्ग) ८४ लाख अवट्ट प्रमाण कालविशेष. ८४ लाख अवट्ट प्रमाण कालविशेष. A period of time measuring eighty-four lacs of Avatas. जीवा० ३; ठा० २, ४; भग० ५, १; २५, ५; अणुजो० ११५;

**अववका**. स्त्री० (अवपाक्या) तपी; तवे., तवा A pan; a metal or earthen vessel to bake bread. भग० ११, ११;  
**अववट्टणा**. स्त्री० (अपवर्तना-अपवर्त्यते ह्रस्वी-क्रियते स्थित्यादि यया सा) ने अध्यवसायथी कुर्मनी दीर्घ स्थिति अने तीव्र रसमां धटाडे करवामां आवे-स्थितिधात या रसधात कराय ते अध्यवसायविशेष. जिस प्रयत्न से कर्म की दीर्घ स्थिति और तीव्र रस में कमी की जा सके वह प्रयत्नविशेष. Thought activity lessening the duration, and intensity of Karma. क० प० १, २;

**अववरोवित्ता**. स्त्री० (\*अव्यवरोपिता-अव्यवरोपण) अपरोप-नाशने अभाव; अविनाशनाश का अभाव. Non-destruction- eternal existence. " जिन्ममयाओ सोवक्खाओ अववरोवित्ता भवइ " ठा० ६५;

**अववाअ**. पुं० (अवपात) आगमन; आवतुं ते. आगमन; आना Act of coming; arrival. " साहूयमणुवाओ किरियाणासो उ अववाए " पंचा० ७, ११;

**अववाय**. पुं० (अपवाद) भीष्मं परायण्य भेलतुं ते; नि-दा. निन्दा, खराब बोलना. A censure; scandal. परह० २, २; पंचा० ५, १६;

**अवविह**. पुं० (अवविध) गोशालानो अेक. श्रावक-उपासक गोशाला (एक मतप्रवर्तक) का एक श्रावक-अनुयायी. A follower of Gosālā. भग० ८, ५;

**अवस**. त्रि० (अवश) परवश, परतंत्र; कुर्मवश; अस्वतंत्र. परवश; कर्मवश, पराधीन. Dependent; not free; under the controlling influence of Karma. भग० ३, २; नाया० ६; सूय० १, ३, १, १७; उक्त० ७, १०; १३, २४

अवसोहिय. त्रि० ( अवशोभित ) शोभतुं; शोभनीक. सुशोभित. Beautiful, charming. नाया० १;

अवसस. न० ( अवश्य ) अवश्य; नष्टी; नरु, निश्चे अवश्य, जरूर, निश्चय. Certain, unavoidable अणुजो० २८; नाया० १, भग० ६, ३३, पि० नि० ३५२;—कायव्व त्रि० (—कर्त्तव्य ) अवश्य करवा योग्य. अवश्य करने योग्य. necessarily to be done गच्छा० १२;—विष्पजहिय त्रि० (—विप्रहेय ) अवश्य त्यागवा योग्य. अवश्य त्यागने योग्य. necessarily to be given up or abandoned नाया० १८;

अवस्तस्य पुं० ( अवश्रय—अवश्रावण ) ओहिगणु—आलंघन आप्तानुं साधन अवलम्बन—सहारा देने का साधन A means to lean upon; a support वेय० ५, ३२,

अवहृद् सं० कृ० अ० ( अपहृत्य ) अपहरीने; हूर करीने, छोडी दृष्टिने, अणुं मुप्रीने. हूर करके; अलग करके, छोड़ करके. Having abandoned; having removed. सूय० १, ४, १, १७, ओष० नि० भा० १७२, ओव० १२; ३२, भग० १, ६;

अवहृद्दुलेसस त्रि० ( अवहृत्यलेश्य—अपहत-लेश्य ) लेणुं लेश्या हूर करी छे ते. जिसने लेश्या-ओका नाश किया हो वह. One who has removed thought-tint. दसा० ५, ३०;

अवहृद्दुसंजम. पुं० ( अपहृत्यसंयम—अपहत-संयम ) उच्यारादि अविधिमे परद्वयाथी लागतो असंयम; असंयमना १७ प्रकारमां-ने ओड. मल नृत्रादि अविधिसे जालने से होने वाला असंयम, असंयमके १० प्रकारोंमे से एक प्रकार A sin arising from laying

down excreta etc. in improper ways; one of the seventeen kinds of Asamyama or lack of asceticism. सम० १७,

अवहृड. त्रि० ( अपहृत ) लधनेपीने मुकेल. लेकर दूसरी जगह रखा हुआ. Carried to another place “वालगं अवहाय अवहृडे विसुद्धे ” भग० ६, ७,

अवहृत्थिअ त्रि० ( अपहस्तित ) हाथ पक-डीने पहर डाटी मुकेल हाथ पकड़कर बाहिर किया हुआ. Pushed out by holding the hand; turned out by holding the hand नदी०

✓ अवहर धा० I. ( अप+हृ ) डरवु, डरवु डरवुं; येरवुं. हरण करना, चुराना. To remove, to take away; to steal. ( २ ) स्वीकार करवा. स्वीकार करना. to accept.

अवहरइ. सु० च० १५, ५४; नाया० १६; १८; दसा० ६, १६; भग० १०, ३; निसी० १०, १०;

अवहरि—रे—जा. वि० भग० ५, ६; ८, ७; अवहरिसु. मू० ठा० १०;

अवहरिमाण. व० कृ० भग० ३५, १;

अवहरिअ त्रि० ( अपहृत ) अपहार करैल; लध लीधेल. चुराया हुआ या छीना हुआ Taken away; removed; robbed. प्रव० ६१, नाया० २; १८;

✓ अवहस वा० I. ( अप+हृ ) डसवुं; डस्य डरवुं हसना. To laugh.

अवहसइ ठा० ५, १; नाया० १८,

अवहसिय स० कृ० नाया० ८;

अवहाण न० ( अवधान ) साक्षात् अर्थनुं पणि—छेदन—जान. वास्तविक अर्थ का बोध. Knowledge of the actual or true meaning. विशे० ८२;

**अवहाय** सं० कृ० अ० (अपहाय) तञ्जे, छोड़ने. छोड़ करके, त्याग करके. Having abandoned. भग० ६, ७; १३, ६, १५, १; जं० प० २, १८,

**अजहाय** सं० कृ० अ० (अपहृत्य) अपहृत्यु करीने, उपाड़ी लधने. अपहरण करके, चुरा करके Having carried away; having taken away अणुजो० १३६,

**अवहार** पुं० (अपहार) गर्भंजुं अपहृत्यु करवु ते. गर्भ का अपहरण करना. Act of removing an embryo by causing miscarriage etc. भग० १८, ४, २१, १; २३, १; ३१, १, ३५ १, ४१, १; प्रव० १०४०, (२) थोरी, डरल्यु चोरी, हरण theft परह० १, ३, (४) जलचर प्राणीविशेष. एक प्रकार का जलचर प्राणी. a kind of aquatic animal परह० १, २,

**अवहारण** न० (अवधारण) अवधारल्यु करवु ते, निश्चय करवो ते निश्चय करना. Deciding, determining. विशेष० २५६, ६८७,

**अवहारवं** त्रि० (अवधारवत्) अवधारल्यु वाणो; निश्चयवान् निश्चयवान्, दृढ (One) who has made a determination or decision, determined. ठा० १०,

**अवहिं** पु० (अवधि-अव-अधो विस्तृतं वस्तु धीयते परिच्छिद्यतेऽनेनेत्यवधि, यद्वा अवधिर्मर्यादा रूपेणैव वस्तुषु द्रव्येषु परिच्छेदकतया प्रवृत्तिरूपतया तदुपलक्षित मानमप्यवधि) अवधिज्ञान; पाच ज्ञानमांजुं त्रींजुं ज्ञान. अवधि ज्ञान; पाच ज्ञानों में से तीसरा ज्ञान. The third of the five kinds of knowledge; visual knowledge. क० ग० ४, १४, पञ्ज० २८;

(२) मर्यादा. मर्यादा, हद्द. limit सु० च० ३, ५५,

**अवहित्र** त्रि० (अवष्टत) नियमित, थोड़स डरायेल. नियमित, निश्चित किया हुआ. Settled, fixed विशेष० २६३२;

**अवहित्र** त्रि० (अव्यथित) जेजुं मन दीन नहीं ते जिसका मन दीन न हो वह Of unafflicted mind दस० ८, २७,

**अवहित** त्रि० (अपहृत) आकर्षित; भेयायेल आकर्षित, खींचा हुआ Drawn; attracted उत्त० ३२, ८६, (२) अपहार करेन, लध लीयेन. चुराया हुआ या छीना हुआ taken away, removed; robbed प्रव० १०३७, नाया० १६,

**अवहित** नं० (अवहित-अवहृष्ट) मैथुन, स्त्रीपुरुषसमागम मैथुन, स्त्रीपुरुषसमागम सूय० १, ६, १०; Sexual intercourse.

**\*अवहित्त** हे० कृ० अ० (चालयितुम्) यथावधाने. चलाने को In order to cause to move. नाया० १७,

**अवहिय** त्रि० (अवहित) डलेल कहा हुआ. Said, related पञ्ज० १५;

**अवहियमण** ति० (अवहित्तमनस्) सावधान; शान्त. सावधान; शान्त Attentive, calm सु० च० १, १०४;

**अवहिरिच** त्रि० (अपहृत) अपहृत्यु करेन; लध लीयेन चुराया हुआ, लूटा हुआ. Snatched, looted भग० ११, १; १२, २, ३५, १,

**अवहीय** न० (अवधीक) उदधी बुद्धिी भोलापजुं वचन तुच्छ बुद्धि से कहा हुआ वचन. Speech proceeding from mean motives परह० १, २,

✓ अवहीर. घा० II. (अव+हृ) अपहरणं; आली  
उरुं. खाली करना, अपहरण करना. To  
clear away; to take away.

अवहीरइ. भग० १२, २; २३, १;

अवहीरंति. अणुजो० १४५; पन्न० १२,  
भग० ११, १;

अवहीरैति. भग० ३५, १;

अवहीरमाण. व० कृ० अणुजो० १४५; भग०  
११, १; १२, २; २३, १; ३१,  
१, ४१, १; जीवा० ३, १,  
नाया० १८;

अवहीरेमाण. व० कृ० भग० १८, ४;

अवहीरिऊण. सं० कृ० अ० (अवधीर्यं) धीरज  
आपीने; धैर्यं दधति. धीरज बंधाकर; धैर्यं  
देकर. Having calmed; having  
consoled. सु० च० १४, ४६;

अवहेडिअ-य. त्रि० (\*अवहेडित-अवहेलित)  
भायुं नीचे नभावेत्; पीडं मुधी उंङ्क नभावेत्.  
नीचे सिर किया हुआ, पीठ तक मस्तक नमाया  
हुआ. With the head bent as far  
as the back, with head lowered  
down. " अवहेडियविट्टिसउत्तमंगे "  
उत्त० १२, २६;

अवहेरी. स्त्री० (अवहेला) मञ्जु; हंसी  
हँसी. मजाक. Joke. सु० च० १४, ७४;

अवहोलंत. त्रि० (अवघोलयत्) दोषायमान;  
यथायमान. चलायमान; चलित; हलचल  
सहित. Moving; swinging; waving;  
unsteady. नाया० ८;

अवाञ्ज-य पुं० (अपाञ्ज) रागादिषु उत्पन्न  
थमेव दोष; अनर्थ. रागादि से उत्पन्न  
हुआ दोष; अनर्थ. Sin arising from  
passion etc. ओव० २०; ठा० ४, १;  
३; क० सं० १, ५;—अणुप्पेहा. स्त्री०

(—अनुप्रेक्षा—अपायानामाश्रवजन्यानर्थानाम-  
नुप्रेक्षानुचिन्तनमपायानुप्रेक्षा ) आश्रव  
आदि दोषोऽनुं स्थितवन उरुं ते; शुक्ल  
ध्यानतो अेङ्क भेद; आश्रव आदि दोषों का  
चितवन करना; शुक्लध्यान का एक भेद.  
a variety of Śukla Dhyāna  
viz meditation upon the  
influx of Karma etc.  
ओव० ठा० ४, १; भग० २५, ७,—दंसि.  
पुं० (—दर्शिनू) अनर्थं वगेरे दोष यतावनार;  
दोषदर्शी. अनर्थ आदि दोष बताने वाला; दोष-  
दर्शी. one who points out fault;  
fault-finding. भग० २५, ७; ठा० ८,  
१; पंचा० १५, १४,—भीय. त्रि० (—भीत)  
अपाय—पापदोषधी लय पाभेद. पापदोष  
से डरा हुआ. frightened or terri-  
fied by sin; fearful of  
sin पंचा० ७, ३६—विजय. न०  
(—विचय—अपाया रागादिजनिता अनर्था;  
विचीयन्ते निर्णयन्ते पर्यालोच्यन्ते वा  
यस्मिंस्तदपायविचयम् ) रागद्वेष आदि दोषोऽनुं  
स्थितवन उरुं ते; धर्मध्यानतो पहेलो भेद.  
रागद्वेषादि दोषों का चिन्तवन करना; धर्मध्यान  
का प्रथम भेद. meditating upon  
faults arising from passions etc,  
the first variety of Dharma  
Dhyāna भग० २५, ७, ठा० ४, २;

अवाञ्ज-य. पुं० (अवाञ्ज) उदापोह करी  
वस्तुतो निश्चय उरुवो ते, नेम के आ  
ध्वज छे; मतिज्ञानतो त्रीने भेद. ऊहापोह  
(तर्कवितर्क) के द्वारा वस्तु का निश्चय  
करना, जैसे यह ध्वज ही है; मतिज्ञान का  
तीव्र भेद. Specific determination  
of a thing by the process of  
thinking and mental reason-  
ing, e. g. this is a banner and

nothing else; the third variety of Mati-Jñāna. दसा० ४, ४५, नंदी० २६, पक्ष० १५; विशेष० १७८, सम० २८; नाया० १५; भग० ८, २; १२, ५, १७, २,—मइ. स्त्री० (—मति) छटाथी वस्तुतो निश्चय करवे ते, मतिज्ञानतो त्रीणे भेद, ईहा से वस्तु का निश्चय करना, मतिज्ञान का तीसरा भेद, the third variety of Mati-Jñāna; determining the nature of a thing by exertion or dealing with perception to arrive at judgment ठा० ४, ४; ६, १,

**अवाइड** त्रि० (अन्यादिग्ध) वक्रताथी रहित, अवक्र. वक्रता से रहित, अवक्र, सीधा Not crooked, free from crookedness. भग० १६, ४,

**अवाइण** त्रि० (अवातीन-वातीनानि वातो-पहतानि, न वातीनानि-अवातीनानि) वायुथी न पडे अेवा ढढ भूणवाणु. वायु से न गिरसकने वाला; दढ मूल वाला. Firmly, deeply rooted, not to be uprooted by wind राय०

**अवाउड** त्रि० (अप्रावृत) वस्त्ररहित, नग्न. वस्त्र रहित, नग्न, नंगा Naked, devoid of clothes प्रव० ५२६, ओघ० नि० भा० २५२, दस० ३, १२, (२) न० वस्त्रनो अभाव वस्त्र का अभाव absence of clothes, nudity. भग० २, १;

**अवाउडअ** त्रि० (अप्रावृतक) वस्त्र ओढया विना शियाणामां टाढ अने उनाणामा तडके सेवनार; नग्न थध आतापना देनार; विना वस्त्र पहिने शीतकाल में ठंड और ग्रीष्म ऋतु में गर्मी सहने वाला (One) enduring cold and heat without putting

on clothes; one practising austerity in a condition of nudity.

नाया० १, ठा० ५, १; ओव० १६;

**अवाउयाइय** पुं० (अवायुकायिक) वायुकाय नडि; वायुकायथी बिभ. वायुकाय से भिन्न. One not an air-embodied soul. भग० ८, १; ६,

**अवापत्ता** सं० कृ० अ० (अवाचयित्वा) अणुवाचीने; वाच्या विना विना पढे, विना वाचे. Without having read निसी० १६, १६;

**अवायणिज्ज** त्रि० (अवाचनीय) वाच्या आपवा योग्य नडि, लणुववा लायक नडि. बंचाने के अयोग्य, पढाने के अयोग्य Unfit to be taught, unfit for teaching. “ चत्तारि अवायणिजा प० तं० अविणीए विगइपडिबद्धे अविउसवियपाहुडे माई ” ठा० ४, ३;

**अवायाण** न० (अपादान) जे वस्तुमांती अेक वस्तु, जेनाथी छुट्टी पडे ते अपादन; पायभी विभक्तिनो अर्थ. जिससे दो वस्तुओं में से एक वस्तु पृथक् हो जाय वह अपादान; पाचवीं विभक्ति का अर्थ Taking away from; separation of one thing from another, the meaning of the ablative case पि० नि० भा० २६; अणुजो० १२६, ठा० ८, १;

**अवारिय** त्रि० (अवारित) निवारणु नडि करेड; डोअे अटडावेल नडि; निरंकुश. निवारण न किया हुआ, किसीसे न अटकायारोका हुआ, निरंकुश. Unhindered; unchecked “ अजा अवारियाओ, इत्थीरज्जुं न तं गच्छ ” गच्छा० ६५;

**अवाचकहा** स्त्री० (अवाचकथा-पाककथा) शाक, घी वगेरे भोजन संबंधी वातचीत करवी ते. शाक, घी वगैरह भोजन के सबन्ध की बात



चीत करना. Talk about the articles of food such as ghee, vegetables etc. ढा० ४, २;

अवावड. त्रि० ( अप्रावृत ) वस्त्ररहित; नग्न. वस्त्र रहित, नंगा Naked, devoid of clothes. प्रव० १५८१,

अवि. अ० (अपि) पणु भी, ही. Also; but also. दसा० १, ४; ३, ३१; निसी० २०, १०; १५; श्रोत्र० ११, नाया० १; २; १२; १६; १८; अणुजो० ३; सूय० १, १, २, १; वेय० १, ४४; वव० १, ६; १६, विशेष० ४५३; दस० ५, १, ६८; क० प० १, २१; ( २ ) संभावना. संभावना, मुमकिन. a particle showing possibility. प्रव० ८१४;

अविअ. अ० (अपि च) समुच्चय. समुच्चय An indeclinable meaning "moreover." जं० प० ४;

अविआरि. त्रि० (अविचारिन्) जे स्थितिमां शुद्धी अर्थमा अने अर्थथी शुद्धमा तेमळ मन वगेरे योगोतुं परिवर्तन-हलन अलन नथी ते; शुद्धध्यानने पीजे लेद. जिस स्थिति में शब्द से अर्थ में और अर्थ से शब्द में उसी प्रकार मन आदि योगों का भी परिवर्तन-हलन चलन नहीं होता वह स्थितिविशेष, शुक्लध्यान का दूसरा भेद. The second variety of Śukladhyāna, the condition of mind in which the thought-process is stopped and there is no passing of the mind from word to meaning and meaning to word. श्रोत्र० २०;

अविअ. त्रि० (अविदित) अज्ञप्यु; नडि नखेनुं. विनाजाना हुआ. Not known; unknown पि० नि० ३३६;

अविइय. त्रि० (अद्वितीय) जेनी साथे पीजे नथी ते, ओडले. जिसके साथ दूसरा न हो वह; अकंला. Alone, unaccompanied by a second. भग० ३, २;

अविउककंतिअ. त्रि० (अव्युक्कान्तिक) व्युक्कान्त-मृत्युने न प्राप्त थयेद; जेमां ज्य मरी गया नथी ते; सचित्त. विना मरा हुआ; सचित्त; जीव सहित. Sentient; full of sentient beings. भग० १, ७;

अविउट्टमाण. व० कृ० त्रि० (अविदुष्यमान) पीडतो; दुःख पातो. दुःख पाता हुआ. Suffering pain; being afflicted. सूय० २, २, २०;

अविउप्पगडा. खी० (अव्युत्प्रकटा-न विशेष-पत उत् प्रावल्पतश्च प्रकटा अव्युत्प्रकटा) विशेषे इरीने प्रगट नडि ते. विशेषता से अप्रकटित. Not conspicuous; not prominently visible. भग० ७, १०,

अविउप्पगडा. खी० (अविद्वत्प्रकृता) अविद्वानोअे शरु इरेद.-इहेल अविद्वानोंके द्वारा कहा हुई (कथा). Told by those who are not learned "अरुहं इमा कहा अविउप्पगडा" भग० १, १; १८, ७,

अविउसरण्या. खी० (अव्युत्सर्जना-अव्युत्सर्जन) अचित्त वस्तु-वस्त्र वगेरेने व्यवस्थित राखवा ते; आवजना पाय अलिगमन-मने पीजे अलिगमन अचित्त वस्तु-वस्त्र आदि को व्यवस्थित रखना; आवक के पाच अभिगमनों में से दूसरा अभिगमन. The second of the five Abhigamanas of a Jaina layman; orderly arrangement of inanimate objects such as clothes etc. नाया० १;

**अविउसविता.** सं० कृ० अ० (अव्युपस्थाप्य-अव्युपशाम्य) उपशमाव्या विना विना उपशम किये. Without having calmed or quieted. वेय० १, ३३;

**अविउसविय.** त्रि० (अव्युपशमित) उपशमावेद नहि न उपशम किया हुआ Not calmed, not quieted वेय० १, ३३.—पाहुड. त्रि० (-प्राभृत) जेणे क्कोधने शांत नथी क्यो ते क्रोध को जिसने शान्त न किया हो वह. (one) who has not assuaged or calmed his anger निसी० १०, १४, ठा० ४, ३;

**अविउसिसय.** सं० कृ० अ० (अव्युत्सज्य) नहि छोडीने; नहि तलने न छोडकर; न त्यागकर. Without having abandoned; without giving up सूय० २, ६, २३,

**अविओग.** पुं० (अवियोग) वियोगने अभाव; पुत्र, मित्र आदिने अपिरह वियोग का अभाव; पुत्र, मित्र आदि का अविरह Absence of separation, e. g. from sons, friends etc. परह० १, ५;

**अविओसिय.** त्रि० (अव्यवसित) अनुपशांत; उपशमावेद नहि अनुपशान्त, न उपशमाया हुआ Not calmed; not assuaged ठा० ३, ४,—पाहुड. त्रि० (-प्राभृत) जेणे क्कोध उपशमाव्यो नथी ते जिसने क्रोध का उपशम नहीं किया वह (one) who has not calmed his anger "बहुसो उदीरयंतो, अविओसिय-पाहुडो सखंडु" ठा० ३, ४,

**अविदमाण.** व० कृ० त्रि० (अविन्दमान) न भेगवतो प्राप्त न करता हुआ. Not getting, not obtaining. विवा० १, २;

**अविकंप** त्रि० (अविकम्प) अचल, स्थिर. अचल, स्थिर. Immoveable, steady; firm पंचा० १८, १५, प्रव० ५६१;

**अविकंपमाण.** त्रि० (अविकम्पमान) क्कोधथी न कम्पतो; न क्कुरतो क्रोध से न कम्पता हुआ Not trembling, e g with anger "विगिच कोहं अविकंपमाणे" आया० १, ४, ३, १३५;

**अविकत्थण** पुं० (अविकत्थन) अतिवधारे न भोलनार; हितकारी अने परिमित भोलनार. बहुत ज्यादह न बोलने वाला; हितकारी और परिमित बोलने वाला One, not given to speak too much, one measured and beneficent in speech. प्रव० ५५६;

**अविकप्प** पुं० (अविकल्प) निडहप-संदेहने अभाव, नि शक्यपणुं संदेह का अभाव, निःशंकपना Freedom from doubt; absence of misgiving "अविकप्पेण तहक्कारो" प्रव० ७७१;

**अविकल** त्रि० (अविकल) परिपूर्ण, विडल-अडित नहि ते. परिपूर्ण, अखंडित Perfect; entire, complete. पिं० नि० ७१; भग० ६, ३३; पचा० ६, ३६;

**अविकार.** पुं० (अविकार) विडारने अभाव. विकार का अभाव. Absence of modification or change. अणुजो० १३०,

**अविकारि** त्रि० (अविकारिन्) जेनु रूपान्तर न थाय ते; अविडारी. जिसका रूपान्तर न हो सके वह, अविकारी. Unchangeable; constant पिं० नि० २७६;

**अविकिअ.** त्रि० (अविक्रेय) वेयया योज्य नहि न वेचने योग्य Unworthy of sale, unfit to be sold. दस० ७, ४३;

**अविकल**. पुं० ( अपेक्षक ) अपेक्षा करनेवाला (One) who desires or expects. विशेष १७१६,

**अविकल**. न० ( अपेक्षणा ) अपेक्षा अपेक्षा. Desire; expectation. विशेष १७०६;

**अविकल**. त्रि० ( अपेक्षणीय ) अपेक्षा करने योग्य. अपेक्षा करने योग्य. Worth desiring; worthy of being desired. विशेष १७१६;

**अविकल**. त्रि० ( अव्याचिन्त ) व्यथित-रहित; विक्षेपरहित. चंचलता रहित. Free from distraction; free from instability. ( २ ) उपयोगपूर्वक गमन करनेवाला उपयोगपूर्वक गमन करने वाला. (one) who walks attentively. दस० ५, १, २, ६०;

**अविकल**. त्रि० ( अवैक्षित ) नजरे नज़रे; दृष्टिगोचर करनेवाला. खुद का देखा हुआ. Seen; seen with one's own eyes. पि० नि० ४१७;

**अविकल**. त्रि० ( अविकृतिक ) विग्रह-ही आदि विकारी वस्तुओं का त्याग करनेवाला. (One) abstaining from things increasing passions, e. g. ghee etc. सूय० टी० २, २, ३८,

**अविकल्प**. पुं० ( अविकल्प ) निश्चय; विकल्प-लेहने अभाव निश्चय; विकल्प का अभाव. Absence of doubt or difference of opinion; determined principle, settled principle. क० गं० ६, ३६,

**अविकल**. त्रि० ( अविकल ) अशुद्ध, अशुद्ध नहिंते. जो अशुद्ध न हो वह Not contaminated, unpolluted. नाया० ६, १६;

**अविकल**. त्रि० ( अविकल ) दक्ष; चतुर. दक्ष; चतुर; कुशल. Clever; skilful. विशेष १४३६;—कुल. त्रि० (—कुल ) श्रेष्ठ; परिपूर्ण कुल. ऋद्धि से भरपूर कुल. a well-to-do, opulent family. भग० ६, ३३;

**अविकल**. त्रि० ( अविकल ) छुट्टी अंदरुन तप करनेवाला. छुट्टी के अंदर का तप करने वाला (लगातार दो उपवासों से अधिक उपवास न करते हुए तप करने वाला). ( One ) not practising the austerity of more than two consecutive fasts. पंचा० १२, ४७;

**अविकल**. त्रि० ( अविकल ) सरल; अवक्र. सरल; सीधासादा. Straight; straightforward. ओव०—गइ. स्त्री० (—गति ) सरल गति, वांछ विनानी गति. सरल गति. straightforward gait; motion which is not crooked. भग० १४, ५;—गइसमाचरण. त्रि० (—गतिसमापन्न ) श्रेष्ठ गति संपादन करने, सरल गति पाभेला श्रेष्ठ गति—सरल गति को प्राप्त. one who has acquired a straightforward gait. भग० १४, ५; २५, ४;—गइसमाचरणय. पुं० (—गतिसमापन्नक) श्रेष्ठ गति—सरल गति प्राप्त करनेवाला श्रेष्ठ सरल गति पाया हुआ जीव. ( a soul ) that has acquired a straightforward gait भग० १, ७;

**अविकल**. न० ( अविकल ) विघ्नने अभाव; निर्विघ्नपाशु, अंतरायने अभाव. विघ्न का अभाव; निर्विघ्नपन; अंतराय का अभाव. Absence of or freedom from obstacles. विशेष १३; ओव० ३८, नाया० १; ५; ८; भग० ४२, १; भक्त० १४८; जं० प० २, ३०;

अविद्युट. न० ( अविद्युट ) भेसुर न थाय, तेवी रीते गावु ते, गावनते अेड गुणु वेसुरा न होने पावे, इस रीतिसे गाना, गान का एक गुण. Singing without discordance, a merit in singing. अणुजो० १२८, ठा० ७, १;

अविचिंतिय. त्रि० ( अविचिन्तित ) चिंतन न करेन न विचारा हुआ Not thought upon विशेष० १११;

अविच्यवण. न० ( अविच्यवन ) विच्यवन-विनाशने अभाव, अविनाश विच्यवन-विनाश का अभाव Absence of destruction विशेष० २६१,

अविच्युह. स्त्री० ( अविच्युति ) स्मृति; धारणा स्मृति, याद Remembrance, recollection विशेष० १८०;

अविच्छिन्नण. त्रि० ( अविच्छिन्न ) विच्छेद न पाभेन, अच्युतित; आलु विच्छेद न पाया हुआ, चालू Continuous, uninterrupted ठा० ४, १, (२) नेमा प्रतिपक्षिने सदे-छेदवामा नथी आव्ये ते. जिसमें प्रतिपक्षी का सन्देह दूर न किया गया हो वह (that) in which the doubt or objection of an opponent has not been set at rest सूय० २, ७, ३८;

अविच्छेय पु० ( अविच्छेद ) विच्छेदने अभाव, निरंतरपणु विच्छेद का अभाव, लगातार. Continuity, absence of break प्रव० ६२;

अविज्ञाणअ. त्रि० ( अविज्ञानक ) अणु; अणु, विज्ञानरहित अज्ञान; विज्ञान रहित Ignorant, devoid of knowledge आया० १, १, २, १४,

अविज्ञाणअ व० क० त्रि० ( अविज्ञानत् ) न अणुतो नहीं जानता हुआ Not knowing जसि गुहाए जलणे तिउट्टे, अविज्ञाणओ डम्मइ लुत्तपरणो ' सूय० १, ५, १, १२,

अविज्ञा स्त्री० ( अविद्या ) मिथ्यात्वसहित अज्ञान, दुशाश्च मिथ्यात्व सहित अज्ञान, कुशाश्च. Ignorance accompanied with false belief उक्त० ६, १, ३४, २३;

अविणय पु० ( अविनय-विशिष्टो नयो विनयः प्रतिपत्तिविशेषः, तत्प्रतिषेधोऽविनयः ), अेअदधी, अविनय वेअदवी, अविनय Immodesty. 'अविणय ति विहे परणत्ते, तंजहा-देसच्चाई गिरालवणया णायपेम्म-दोसे " ठा० ३, ३, पिं० नि० ५०४,—पणु-हाण त्रि० (—प्रधान ) अविनय नेमा प्रधानपणु छे ते जिसमें अविनय की प्रधानता है वह ( that ) in which false principles insolence etc. are predominant नाया० १६,

अविणिज्जमाण व० क० त्रि० ( अविनीयमान ) पूर्ण न थतो पूर्ण न होता हुआ Not being complete विवा० २, ३, नाया० १;

अविशीघ्र त्रि० ( अविनीत ) अविनीयवान्, विनयरहित, अविनीत, अविवेकी विनय रहित, अविनीत Immodest, insolent दस० ६, २, २२, उक्त० ११, २; ६; ठा० ४, ३; वेय० ४, ६,—पणु पु० (—आत्मन् ) विनयरहित आत्मा विनय रहित आत्मा. a soul devoid of modesty पत्र० ३ —पणु पु० (—आत्मन् ) निन्द्य आत्मा, विनयरहित आत्मा निन्द्य आत्मा; विनय रहित आत्मा soul deserving censure, soul devoid of politeness. दस० ६, २, ३,

अविरण्णा. स्त्री० ( अविज्ञा ) अनप्ये दोष सेववे।  
ते विना जाने दोष का सेवन करना. Uncon-  
sciously resorting to sin सूय०  
नि० टी० १, १, १,—उच्यते. न० (—उप-  
चित्त-अविज्ञानमविज्ञा तयोपचित्तम् ) अ-  
नप्युपलु इरेल इर्म निः जाने किया हुआ  
कर्म Karma done unconsciously.  
सूय० नि० टि० १, १, १;

अविरण्णाय. त्रि० ( अविज्ञात ) न ज्ञायायेत;  
अविदित अविदित, न जाना हुआ; वे मालूम.  
Unknown; not known. भग० १,  
६; ३, ७; १८, ७;—कर्म. त्रि० (—कर्मन्-  
अविज्ञातमविदित कर्म क्रियाव्यापारो मनो-  
वाक्कायलक्षणो यस्यासौ ) जेने मन, वचन अने  
झायानी प्रवृत्तितु ज्ञान नथी ते. मन, वचन  
और काय की प्रवृत्ति के ज्ञान से रहित (one)  
who has no knowledge of the  
processes of mind, speech  
and body. आया० १, १, १, ८;  
—धर्म त्रि० (—धर्म) धर्मज्ञानरहित;  
धर्मतुं स्वरूप जेना ज्ञायुवामा नथी ते. धर्म  
ज्ञान रहित; धर्म का स्वरूप जिसने नहीं जाना  
वह. ignorant of the real nature  
of religion. भग० ८, १०;

अविरण्णक त्रि० ( अवितर्क-न विद्यते वित-  
कोऽश्रद्धानक्रियाफलं देहरूपो यस्त्र भिक्षो  
सोऽवितर्क. ) दुर्तईरहित, पराथ विचार  
रहित. कुतर्क रहित; अच्छे विचारों वाला.  
Free from bad or irreligious  
thought. " सुसमाहितलेखस्त, आवित-  
कस्तन भिक्षुरूपो " दसा० ५, ३१, ३२;

अविरण्णह. त्रि० ( अविरण्य ) सत्य; साध्य; परं,  
वास्तविक; यथार्थ. सत्य सच्चा, वास्तविक.  
True; correct, proper. ज० प० २,  
३१; सु० च० ४, २४०; श्रौ० १६; ३२;

नाया० १: ३, १२; भग० ६, ३३; ११, ११,  
परह० २, २; आद० ४, ८, कप्प० १,  
१२, ३, ५५. पचा० १२, १५, ( २ ) न०  
सम्यार्थ सच्चाई, सत्यता truth, श्रौ० १६;  
३२;

अविरण्णह. त्रि० ( अवितीर्य ) संसारने नहीं  
तरेल; संसार सागरने डाँटे नहीं पहुँचिये।  
संसाररूपी सागर के किनारे न पहुँचा हुआ;  
जन्म मरण में फँसा हुआ. ( One ) who  
has not crossed the worldly  
ocean, सूय० १, २, १, ६;

अविरण्णह. त्रि० ( अविष्य न-विगता तृष्या  
यस्यासौ ) जेने काम भोगनी तृष्या मटी नथी  
ते जिसकी काम भोग की इच्छा नहीं मिटी  
वह. ( One ) whose thirst for  
sensual pleasure is not quenched  
नाया० १;

अविरण्णह. त्रि० ( अविष्य न-विगता तृष्या  
यस्यासौ ) जेने काम भोगनी तृष्या मटी नथी  
ते जिसकी काम भोग की इच्छा नहीं मिटी  
वह. ( One ) whose thirst for  
sensual pleasure is not quenched  
नाया० १;

अविरण्णह. त्रि० ( अविष्य न-विगता तृष्या  
यस्यासौ ) जेने काम भोगनी तृष्या मटी नथी  
ते जिसकी काम भोग की इच्छा नहीं मिटी  
वह. ( One ) whose thirst for  
sensual pleasure is not quenched  
नाया० १;

अविरण्णह. त्रि० ( अविष्य न-विगता तृष्या  
यस्यासौ ) जेने काम भोगनी तृष्या मटी नथी  
ते जिसकी काम भोग की इच्छा नहीं मिटी  
वह. ( One ) whose thirst for  
sensual pleasure is not quenched  
नाया० १;

अविरण्णह. त्रि० ( अविष्य न-विगता तृष्या  
यस्यासौ ) जेने काम भोगनी तृष्या मटी नथी  
ते जिसकी काम भोग की इच्छा नहीं मिटी  
वह. ( One ) whose thirst for  
sensual pleasure is not quenched  
नाया० १;

अविद्धकरणय. त्रि० ( अविद्धकरणक ) धान  
विंध्या पगरने विना विंधे-दिरे हुए  
धाने वाला. ( One ) with ears  
unperforated. भग० १२, १;

अविद्धत्थ. त्रि० ( अविध्वस्त ) जेभा छव  
नाश पाभेद नथी ते; अयेत नहि ते, सयेत  
सचित्त, सजीव. S e n t i e n t ; l i v i n g ;  
h a v i n g l i f e निसी० १७, ३०; आया०  
२, १, ७, ४१; २, १, ८, ४६;

अविधूरिस्ता. सं० कृ० अ० ( अविधूर्य )  
अभेर्या वगर; हूर कर्था विना खदेहे बिना;  
बिना दूर किये. W i t h o u t s h a k i n g o f f ;  
w i t h o u t r e m o v i n g सू० २, ४, १०;

अविप्पओग. पु० ( अविप्रयोग ) विप्रयोग-  
वियोगतो अभाव, रक्षालु वियोग का अभाव;  
सरक्षण. A b s e n c e o f s e p a r a t i o n ,  
p r o t e c t i o n . “ सुवखाणं अविप्पओगेणं ”  
ठ० ४, ४, भग० २५, ७,

अविप्पकट्ट त्रि० ( अविप्रकट्ट ) नछुड; हूर  
नहि ते नजदीक, समीप, पास. N e a r , i n  
t h e v i c i n i t y . नाया० १,

अविप्पगड. त्रि० ( अविप्रकट ) अप्रकट,  
भुलु नहि; छुपु अप्रकट, छिपा हुआ. N o t  
o p e n , s e c r e t , h i d d e n भग० ७, १०;

अविप्पमुक्क. पुं० ( अविप्रमुक्क ) नहि छुटेला,  
विशेषे करी न मुकायेला विशेषतया न  
छूटा हुआ U n e m a n c i p a t e d ,  
n o t r e l e a s e d भग० १७, २,

अविभज्ज त्रि० ( अविभाज्य ) जेना विभाग  
न थर्ध शके ऐवु; अवयव विनानु अविभाज्य,  
विभाग रहित, अवयव रहित N o t d i v i -  
s i b l e i n t o p a r t s ठ० ३, २, तहु०

अविभत्त त्रि० ( अविभक्त ) विभाग नहि  
करेद, भाग न पाडेद अविभाजित, जिसके  
विभाग न किये गये हों वह. U n d i v i d e d ,  
n o t d i v i d e d i n t o p a r t s .  
वेय० २, १८;

अविभाइम. त्रि० ( अविभागिम-अविभागेन  
निर्वृत्तोऽविभागिमः ) भागशून्य, भागरहित,

ऐक रूप भाग शून्य; एक रूप. H a v i n g  
n o p a r t s , h o m o g e n i o u s , w h o l e .  
ठ० ३, २,

अविभाइय. त्रि० ( अविभाज्य ) जुओ 'अवि-  
भज्ज' शब्द देखो 'अविभज्ज' शब्द. V i d e  
“अविभज्ज” “तत्रो अविभाइया परणत्ता,  
तंजहा-समए पएसे परमाणू” ठ० ३, २;

अविभाग पु० ( अविभाग ) विभागतो अ-  
भाव, अन्तररहितपणु विभाग रहितता.  
A b s e n c e o f d i v i s i o n i n t o p a r t s .  
भग० २०, ५, क० प० १, ५; ( २ ) जेना  
ऐकना जे भाग न थाय ते; निर्विभाज्य अंश.  
जिसके दो भाग न हो सकें वह अश. a n  
i n d i v i s i b l e p o r t i o n क० प० १, ३०;

—उत्तरिय. त्रि० (—उत्तर) रसना ऐकेके  
अंशे उत्तरोत्तर वधतु रस के एक एक अश  
से उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ. p r o g r e s s i v e l y  
i n c r e a s i n g i n i n t e n s i t y . क० प०  
१, ३०,—परिच्छेद्य पु० (—परिच्छेद-प-  
रिच्छिद्यन्त इति परिच्छेदा अंशा, ते च सवि-  
भागा भवन्त्यतो विशेष्यन्ते, अविभागाश्च ते  
परिच्छेदाश्चेत्यविभागपरिच्छेदा ) जेना  
विभाग न पडि शके तेवा अश. ऐसा अंश  
जिसका विभाग नहीं किया जा सके.  
a n i n d i v i s i b l e p a r t o f a t h i n g .  
भग० ८, १०;

अविभाच. त्रि० ( अविभाव्य ) पराभव करवा  
योग्य नहि पराभव न करने योग्य U n -  
w o r t h y o f b e i n g o v e r p o w e r e d ,  
d e f e a t e d e t c प० १, १,

अविभावशिज्ज. त्रि० ( अविभावनीय ) अ-  
प्रशसनीय, अप्रशसापात्र अप्रशमनीय.  
N o t p r a i s e - w o r t h y , n o t c o m -  
m e n d a b l e , b l a m e w o r t h y . सु० च०  
२, ३४६;

अविभूसिय. त्रि० ( अविभूषित ) विभूषण-  
रहित, शृंगाररहित. विभूषण रहित,  
शृंगार रहित. Devoid of ornaments,  
not adorned. प्रव० ६४६,—प्प. त्रि०  
(—आत्मन् ) विभूषणरहित देह छे जेने ते  
जिसका देह आभूषणों से रहित हो वह.  
( one ) with body devoid of  
ornaments प्रव० ६४६,

अविमग्न. त्रि० ( अविमनस् ) शून्य चित्त  
वगरनुं; अशून्य चित्तवाणे शून्यता रहित  
चित्त वाला. Not absent-minded;  
not vacant-minded अणुत्त० ३,  
१, ( २ ) भोगादि विषयमां जेनुं मन लागेले  
छे ते. भोगादि विषयों में आसक्त मन वाला.  
( one ) longing after sensual  
pleasures आया० १, ४, ४, १३७,

अविमणिय. त्रि० ( अवमानित ) लुभ्यो  
'अवमानिय' शब्द देखो 'अवमानिय' शब्द.  
Vide " अवमानिय " कप्प० ४, ६५,

अविमणियदोहला स्त्री० ( अविमानितदो-  
हदा ) जेने दोहलो-मनोरथ पूर्ण थयो छे  
ते स्त्री जिसका दोहला-गर्भावस्था का मनोरथ  
पूर्ण हुआ हो वह स्त्री A woman with  
her cravings during pregnancy  
fulfilled. भग० ११, ११,

अविमुत्तया स्त्री० ( अविमुक्तता ) परिग्रह  
वृत्ति, परिग्रह राभवो ते परिग्रह का रखना  
Attachment to worldly posse-  
ssions ठ० ४, ४,

अविमुक्ति. स्त्री० ( अविमुक्ति ) लोभवृत्ति, लोभ  
इश्वे ते लोभ करना. Avarice greed  
पंचा० १०, १८, ( २ ) न मुद्धुं ते न छोडना.  
not giving up, non-abandon-  
ment प्रव० ८१३;

अविमोयणया स्त्री० ( अविमोचनता-अवि-  
मोचन ) परत्रादिने अत्याग. कच्चादि का

त्याग न करना. Not giving up or  
abandoning clothes etc भग०  
६, ३३,

अविय. अ० ( अपि च ) वणी; भीजुं; पणु  
परन्तु, और भी. Moreover, also.  
भग० १, ७; ३, २, १५, १; पि० नि० ३७६,  
अविय. पुं० ( अविक ) मेंढो, धेढो मेंढा. A  
ram आया० टी० १, १, ६, ४८;

अवियत्त. त्रि० ( अव्यक्त ) अस्पष्ट अस्पष्ट.  
Not clear, obscure. सूय० १, १, २, २५;  
( २ ) मुग्ध, सदसद् विवेकरहित, ज्ञान अने  
वयमा अपरिपक्व. मुग्ध; सदसद् विवेक शून्य;  
ज्ञान और वय में अपरिपक्व. young and  
inexperienced, raw आया० १, ५,  
३, १५६, सूय० १, १, २, ११,—जंभग. त्रि०  
(—जृम्भक) जलदा देवतानी अेड जत. जृम्भक  
देवों की एक जाति a kind of gods  
called Jrimbhaka भग० १४, ८;

अवियत्त त्रि० ( अप्रीतिक ) अप्रीति डारड  
अप्रीति कारक Unpleasant, excit-  
ing disgust परह० १, ३; २, ३;  
—उचघाय पु० (—उपघात ) प्रेमना  
अभावने लधने विनयने उपघात-नाश.  
प्रेम के अभाव के कारण विनय का नाश  
destruction of modesty due to  
absence of love, lack of polite-  
ness arising from lack of  
love or affection ठ० १०,  
—विशोधि पुं० (—विशोधि ) प्रेम वगर  
विशोधि थयी ते; विशोधिनो अेड भेद. विना  
प्रेम के विशुद्धता का होना, विशुद्धि का एक भेद  
purity without love; a variety  
of purity. ठ० १०, १.

अविद्याई. अ० ( अपि च ) वणीपणु, संभा-  
वना. और भी, संभावना Moreover,

an indeclinable showing probability नाया० १६, आया० २, १, ६, ४६, तंडु० २४, सूय० २, ७, ५; (२) समये, अवसर पर on an occasion; at a proper time. राय०-२३७,

\* अवियाउरी स्त्री० (अविजनित्री) वंध्या, वानस्पृशी वंध्या, बाक. A barren woman नाया० २;

अवियाणत्र व० कृ० त्रि० (अविजानत्) नहि ज्ञाणुते, अज्ञानी. अजानी, न जानता हुआ Not knowing, ignorant आया० १, १, ६, ४६,

अवियार न० (अविचार-न विद्यते विचारो-स्यव्यञ्जनयोरितरस्मादितरत्र तथा मन प्रभृती-नामन्यतरस्मादन्यत्र यस्य तदविचारम्) अेक योगमाथी भीज योगमा के अर्थमाथी व्यंजनमा ज्वु अ ववु ज्या नथी ते, शुक्लध्यानतो अेक प्रकार एक योग में से दूसरे योग में या अर्थ में से व्यंजन में जहाँ मन की वृत्ति का आना जाना नहीं होता वह ध्यान, शुक्लध्यान का एक भेद. A variety of Śukladhyāna, meditation in which one does not pass from one thought activity into another or from the meaning of a word to other notions suggested by it "एगत्त वितक्के अवियारे" ठा० ४, १, (२) निश्च्येष्ट, हुलन यलन विनातो-पादपोपगमन सथारे चेष्टा रहित-हलचल रहित-पादपोपगमन सथारा motionless, Santhāra known as Pādapopagamana "सवियारमवियारा, कायच्चिट्टु पर्ह भवे" उक्त० ३०, १२, ( ३ ) त्रि० त्रियार्था वगरनु, असगत, अशोभन विना विचार किया हुआ, असंगत, असंबद्ध disconnected in

thought, inconsiderate thoughtless सूय० २, ४, १;

\* अवियासिय सं० कृ० अ० (आलिङ्ग्य) आलिङ्गन धने आलिङ्गन करके Having embraced नाया० २,

अविरइ स्त्री० (अविरति) पापनी अनिवृत्ति-अपच्युत्पाणु, असन्म, आश्रवणुं भीजुं ६।२ पापकी अनिवृत्ति, अपचक्राण, असयम; आश्रव का दूसरा द्वार Non-cessation from sin, not giving up sin, lack of ascetic practice, the second opening for Āśīava सूय० २, २, ३६, सम० ५, ठा० ५, २, नाया० ६; भग० १, ६, ७, ८, पि० नि० ६३; क० प० २, ६१, ओघ० नि० ४६, ( २ ) अश्रद्धार्थ. अत्रह्यचर्य, मैथुन incontinence, sexual intercourse ठा० ६,—वाद् पु० (-वाद्-अविरतिरब्रह्म तद्वादो वार्ता ) मैथुन संबंधी यर्था मैथुन सबधी चर्चा talk about sexual intercourse ठा० ६;

अविरइय त्रि० (अविरतिक) पापनी निवृत्ति विनातो पाप की निवृत्ति से रहित (One) not free from sinfulness ओघ० नि० ६००,

अविरइया स्त्री० (अविरतिका-न विद्यते विरतिर्यस्या सा अविरतिका) प्रतरहित स्त्री प्रत रहित स्त्री A woman not observing vows ठा० ६, वेय० ६, २,

अविरति स्त्री० (अविरति) जुओ "अविरइ" शब्द देखो "अविरइ" शब्द Vide "अविरइ" भग० १, १;

अविरत्त त्रि० (अविरक्त) विरक्त थयेन नहि; रागी, अनुरक्त जो विरक्त न हुआ हो वह: रागी Not free from attachment. ओव० नाया० १८, भग० १२, ६, १६, १;



अविरय-अ त्रि० (अविरत) सावध ज्ञेयथी निवृत्त  
 थयेव नहि, पापस्थानदृथी निवृत्ति पामेल नहि.  
 सावद्ययोग-पापकर्म से अनिवृत्त ( One )  
 not free from sinful practices.  
 भग० १, १; ८, ६; ११, १; १७, २, ३५,  
 १; ४०, १; पन्न० ३, नाया० ५; १६; ठा०  
 २, १, ओव० ३८, उक्त० ३४, २१; पंचा०  
 ६, ४२; भक्त० ६७, ( २ ) अविरति;  
 सम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थान. अविरति;  
 सम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थान. non-cessa-  
 tion of attachment to worldly  
 objects; the Gunasthāna  
 called Avirati Samyagdristi  
 etc. क० ग० १, ५६; २, २; ५, ४२,  
 —भाव पुं० (—भाव ) अविरतपणुं, आरं-  
 लनी अनिवृत्ति अविरतता; पाप कर्म से  
 अनिवृत्ति. non-cessation of  
 sinful activity, non-abstinence  
 from a sin प्रव० १३२०;—मरण न०  
 (—मरण) अप्रतीपणुं भरवु ते; आणभरवु  
 व्रतहीन अवस्था में मरना, जिसे जैन परिभाषा  
 में बालमरण कहते हैं death in a state  
 of vowlessness ( this is called  
 Bālamaraṇa, lit death in child-  
 hood) प्रव० १०२७,—वाइ पु० (—वा-  
 दिन्-वदनशीलो वादी, अविरतस्य वादी  
 अविरतवादी ) 'अविरत छुं' ऐभ भे। लनार;  
 परिग्रहधारी परिग्रहवारी, अपने को अविरत  
 कहने वाला. one who declares  
 himself to be not free from sin;  
 (one) having worldly possessions  
 आया० नि० १, ४, १, २२४,—सम्मत्त  
 पुं० (—सम्यक्त्व ) अविरत सम्यग्दृष्टिवाणे;  
 योथा गुणुक्षाणावाणे श्रव. अविरत सम्यग्दृष्टि;  
 चौथे गुणस्थान वाला जीव. a soul in  
 the fourth Gunasthāna or spiri-

tual stage of evolution; a soul  
 with vowless right belief. क० ग०  
 ५, ४२;—सम्मदिद्वि पुं० (—सम्यग्दृष्टि)  
 विरति विनातो केवण समकितदृष्टिवाणे; योथे  
 गुणुक्षाणे वर्तते श्रव. व्रत रहित सम्यग्दृष्टि;  
 चौथे गुणस्थान वाला जीव. a soul in  
 the fourth Gunasthāna, with  
 right belief but without  
 abstention from sin. सम०  
 १४;—सम्मदिद्विगुणद्वारणं न० (—सम्यग्-  
 दृष्टिगुणस्थान ) अविरतिसम्यग्दृष्टि नामे  
 योथुं गुणुक्षाणुं. अविरत सम्यग्दृष्टि नामक  
 चौथा गुणस्थान. the fourth Guna-  
 sthāna so named. क० ग० २, २;  
 अविरयं. अ० ( अविरतम् ) सतत, निरंतर  
 हमेशा; निरन्तर; सदा. Constantly;  
 incessantly. प्रव० ४८३,

अविरल त्रि० ( अविरल ) छुटां श्रवायां  
 नहि; धाटुं, धट्ट. विरलता रहित, जो तितर  
 वितर न हो; मिला हुआ; गाढा. Not  
 scattered, thick, dense. "अविरल-  
 समसहियचंदमंडलसमप्पमेहि " परह० १,  
 ४, ओव० १०, ( २ ) निरंतर; आंतरा  
 रहित. निरंतर; अंतर रहित. perpetual;  
 having no intervening sub-  
 stance. ओव० १०; जीवा० ३, ३;—दंत.  
 त्रि० (—दन्त) छिद्र वगरना तथा सरभी पंक्ति-  
 भा रहेला दंतवाणे अंतर रहित समश्रेणों में  
 रहे हुए दातों वाला. (one) with regular  
 and closely set teeth. तंडु०—पत्त.  
 त्रि० (—पत्र) धाटां पांदांवाणा आऽ वगेरे.  
 सघन पत्तों वाला झाड़ वगैरह. ( trees  
 etc. ) with densely growing  
 leaves. " अविरलपत्ता अच्चिद्वपत्ता "  
 जीवा० ३;

**अविरह.** पुं० ( अविरह ) विरहनेो अभाव, निरंतर रहेवुं ते. विरह का अभाव. Absence of separation. continuous stay or existence. " अतोमुहुत्त-विरहो " आया० नि० १, १, ६, १५६;

**अविरहित्र.** त्रि० ( अविरहित ) विरहरहित, निरंतर विरह रहित; निरन्तर. Having no separation; continuous. पचा० ४, ५०, ६, ५०; भग० १, १, १०, १; १३, १, २४, १२; १६; ४१, १; वव० ८, ५;

**अविराहणा.** स्त्री० ( अविराधना ) विराधना-संभ्रमणानेो अभाव विराधना-संयम के खडित होने का अभाव Absence of breach of ascetic conduct, भग० २५, ६; ७;

**अविराहित्र-य.** त्रि० ( अविराधित-न विराधितोऽविराधित ) सर्वथा विराधना डरेन नहि. सर्वथा विराधना-खरडन नकिया हुआ. Not wholly violated, partially violated, (e g. ascetic conduct). परह० १, ३; प्रव० ११३३, —संजम. पुं० (-संयम) अंभडित संभ्रमवान्, भराभर पाणेख छे संभ्रम जेजे जेवा साधु अखंडित संयम वाला, संयम को यथा रीति से पालने वाला साधु an ascetic fully observing the rules of right conduct. भग० १, २; —संजमासंजम. पुं० (-संयमासंयम) अंभडित श्रावडपणुं; भराभर पाणेख श्रावडपणुं अखंडित श्रावक मन, यथारीति पाला हुआ श्रावकाचार. flawless, complete observance of the rules of right conduct prescribed for a Śāṅkya भग० १, २, —सामरण त्रि० (-आमरण) जेजे आरित्र भराभर आराधेख छे ते. आरित्र का विधिवत्

आराधन-पालन करने वाला (one) who has perfectly practised the rules of right conduct. भग० १५, १;

**अविरिच्य** त्रि० (अवीर्य) पीर्य-सामर्थ्यरहित. सामर्थ्य रहित. Powerless; devoid of powers. विवा० १, ३;

**अविरुद्ध.** त्रि० ( अविरुद्ध ) पूर्वापर विरोध रहित, संगतियुक्त पूर्वापर विरोध रहित. Not involving contradiction; having proper connection of parts पचा० १७, ३, (२) विनयवादी; देवता, मनुष्य, तिर्यक, पशु, पक्षी वगैरे सर्वनेो विनय डरनार. विनयवादी, देव, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि सबका विनय करने वाला (one) having reverence for all viz gods, men, lower animals etc. 'अविरुद्धो विणयकारी देवाईरुं पराए भक्ति' नाया० १४, ओव० अणुजो० २०; (३) पुं० न० परस्पर विरोध न होय जेवा संभ्रमनां आमादि परस्पर विरोध रहित राज्य के ग्राम आदिक. villages of kingdoms which are not mutually at variance. प्रव० १३१०, (४) वडीयोनी भयादानु उधंधन न डरनार वडे बूडों की मर्यादा का उल्लघन न करने वाला. obedient and respectful to elders. प्रव० १३१०; —वेणइय पु० (-वैनयिक) माता आदि सर्वनेो अविरोधपणे विनय डरनार माता, पिता आदि सब का अविरोधो भाव से विनय करने वाला. one invariably respectful to parents etc अणुजो० २०;

**अविरोह.** पुं० ( अविरोध ) विरोधनेो अभाव. विरोध का अभाव. Absence of hostility. विशेष० ६३, पंचा० १, १७, ४, ८,

अविल न० ( आविल ) अस्वच्छ; डोणुं, मलीन. अस्वच्छ, मलिन. Not clear, turbid जीवा० ३, ४,

अविलंविद्य. त्रि० ( अविलम्बित ) विलम्ब-रहित, उतावगो. विलम्ब रहित, फुर्तीला, उतावला. Bearing no delay, hasty. नाया० १; भग० ७, १, ११, ११, परह० २, १, कप्प० १, ५;

अविला. स्त्री० ( अवी ) धेटी; गाडर भेड. A owe पि० नि० भा० ५०, पि० नि० १६४; अविविचारास त्रि० ( अविपर्यास ) विपर्यास-विपरीततरहित. विपरीतता रहित. Free from a contrary state of things उक्त० २६, २८; भग० ३, ६,

अविविज्ञय पुं० ( अविपर्यय ) विपरीत बुद्धिने अभाव विपरीत बुद्धि का अभाव. Absence of a contrary inclination of the intellect (२) तत्त्वना अध्यवसाय-रूप समुक्ति तत्त्व का अध्यवसायरूप सम्यक्त्व right faith consisting in a settled conviction about reality विशेष २७८४,

अविवरिय. त्रि० ( अविवरित-अविवृत ) विवरणु करेले नहि; अर्थरूपे व्याख्यान न करेले जिसका विवरण न किया गया हो. Not explained विशेष १३६६;

अविविचिता सं० कृ० अ० ( अविविच्य ) विवेचन-पृथक्करणे ध्या विना, लुटा ध्या विना. विना पृथक्करण किये, विवेचन किये विना Without having distinguished, without having separated or analysed सूय० २, ४, १०,

अविसंधि पुं० ( अविसन्धि ) नेतो सांधी विधटे नहि ते; पूर्वापर विरोध आवे नहि तेयुं पूर्वापर विरोध रहित. जिसका जोड़ स्टे नही वह. Anything not in-

volving its parts in mutual contradiction ओव० ३४,

अविसंवाइ त्रि० ( अविसवादिन् ) विसवाही नहि, अयथार्थ नहि. विसंवाद-बकवाद न करने वाला; अयथार्थता रहित. Not inconsistent, not incongruous परह० २, २, अविसंवादणजोग. पुं० ( अविसंवादनयोग ) यथार्थ ओलवुं, ओलीने इरी न वयुं अने यथार्थ प्रवृत्ति करी ते. यथार्थ कहना और चलना-कहकर बदल न जाना. Consistency in speech and action. ठा० ४, १; भग० ८, ६,

अविसंवादि. त्रि० ( अविसंवादिन् ) लुओ 'अविसवाइ' शब्द. देखो 'अविसंवाइ' शब्द. Vide 'अविसंवाइ' परह० २, २; अविसंवायणाजोग पुं० ( अविसंवादनयोग ) लुओ 'अविसंवादणजोग' शब्द देखो 'अविसंवादणजोग' शब्द. Vide 'अविसंवादणजोग.' भग० ८, ६, ठा० ४, १,

अविसम त्रि० ( अविपम ) समतल; सपाट, उथु नीयुं नहि ते समतल, ऊचाई नीचाई रहित Level, not having ups and downs तंडु०

अविसय न० ( अविषय ) निर्विषय ज्ञान, ज्ञान-ने अविषय ज्ञान के विषय से रहित. Objectless knowledge, (anything) not a province or object of knowledge पचा० ५, ४६,

अविसाइ त्रि० ( अविपादिन् ) भेदरहित. खेद रहित, विपाद रहित Free from dejection, undejected परह० २, १,

अविसाति. त्रि० ( अविपादिन् ) लुओ 'अविसाइ' शब्द. देखो 'अविमाइ' शब्द Vide 'अविमाइ.' परह० २, १;

अविसारअ-य. त्रि० ( अविसारद ) अयतुं; अदुशक. चातुर्य रहित Not clever; not

skilful; not proficient उत्त० २८,  
२६, प्रव० ६७३,

अविशुद्ध. त्रि० ( अविशुद्ध ) अविशुद्ध, शुद्ध  
नहि, विशुद्ध वर्ण आदिही रहित अशुद्ध,  
विशुद्ध वर्ण आदि से रहित Not clear,  
devoid of pure tint. पंचा०  
४, १३; क० गं० १, १४, ठा० ३, ४,  
क० प० २, २,—लेस्स त्रि० (—लेस्स)  
कृष्णादि अशुद्ध देश्यावागो; शुद्ध देश्यारहित.  
कृष्णादि अशुद्ध लेस्सया वाला, शुद्ध लेस्सया  
रहित. having black etc thought-  
tint; devoid of pure thought-  
tint; भग० १, २, (२) विशंग ज्ञानी, विभंग  
ज्ञानी. one having wrong visual  
knowledge. भग० ३, ६,

अविशेष त्रि० ( अविशेष ) विशेषरहित; सा-  
मान्य विशेष रहित, सामान्य Common,  
devoid of particularity. ठा० २,  
३; भग० १४, ८, ३४, १,

अविशेषण न० ( अविशेषण ) अविशेष,  
समान अविशेष, समान. Absence of  
particularity विशेष० ११५,

अविशेषित त्रि० ( अविशेषित ) सामान्य,  
विभागरहित सामान्य, साधारण, विभाग  
रहित Common, not specified or  
particularised विशेष० ११८, ४१८,  
नाया० ध० ३; ठा० १०, क० प० १, २४,

अविशोहि. पु० ( अविशोहि ) विशुद्धिने  
अभाव विशुद्धि का अभाव. Absence of  
purity पंचा० १३, १६, (२) अनिचार,  
आरित्रने भङ्गीन करवु ते अतिचार; चारित्र  
को मलिन करना violation of rules  
of right conduct; sullyng one's  
conduct. प्रव० ५७८,—कोडि. लो०  
(—कोटि) संयमने अविशुद्ध करना आधा-

कर्पादि छदोपोनेो समूह; पोने हणुं, पीन्नी  
पासे हणुं, हणुंने अनुभोदवु, पे.ते  
संधवु, पीन्नी प से संधवुं अने संधनारने  
अनुभोदवु, जो छते धर्म संयम को अशुद्ध  
करने वाले आदात्म्यादि छ दोषों का समूह,  
स्वयं मारना, दूसरे से मरवाना, मारने वाले  
का अनुमोदन करना, स्वयं पकाना, दूसरे से  
पकाना और पकाने वाले का अनुमोदन करना,  
इन छ दोषों का समूह the collection of  
six faults like Adhākarma etc.  
which pollute ascetic conduct.  
These are as follows.—to kill, to  
cause another to kill, to approve  
of an act of killing on the part  
of another; to cook, to cause  
another to cook and to  
approve of cooking on the part  
of another आया० नि० टी० १, १, ६;  
अविस्सससिज्ज त्रि० ( अविश्वयन्तिय ) वि-  
श्वास करवा योग्य नहि विश्वास न करने योग्य.  
Unworthy of trust तडु०

अविस्सज्ज न० ( अविश्रम ) विश्राम  
हीन विना, नरत पणु डेर्या विना, निरन्तर.  
विश्राम का न लेना, जरा भी न ठहरना, निरन्तर;  
रुग्गतार Without rest, without  
stopping; ceaseless. ओव० २५;  
उत्त० १६, ३५;—वेस्सा. लो० (—वेस्सा)  
विश्रान्तिरहित वेस्सा, निरन्तर—अणु वेस्सा.  
विश्रान्ति रहित वेस्सा; निरन्तर होने वाली  
पांडा. ceaseless pain; perpetual  
pain पणु० १, १;

अविस्सास. त्रि० ( अविश्वात्स ) विश्वास  
करवाने अयोग्य विश्वास न करने योग्य.  
Unworthy of trust “ अविस्सासो  
य भूयासं ” दस० ६, १३; (२) न०  
अविश्राम; अशान्ति; दुःख अशान्ति, दुःख

pain, restlessness जीवा० ३, १,

अविहरणमाणा त्रि० ( अद्विहन्यमान ) विविध परिप्लव, उपसर्गधी न ह्युतातो जो विविध परीषह और उपसर्गों से न मारा जा सके वह Not sinking under various sufferings; not succumbing to various kinds of pain. "अविहरणमाणा फलगावतट्टि" आचा० १, ६, ५, १६६,

अविहवा. स्त्री० ( अविधवा ) पतिवाणी स्त्री, सधवा सववा स्त्री. A woman whose husband is alive, a woman in coverture भग० ११, ११,—वहू स्त्री (-वधू) सधवा; विधवा नहि ते सधवा स्त्री a woman whose husband is alive नाया० १, भग० १२, २;

अविहार पुं० ( अविहार ) विहार न करवा ते, विहार न करना Absence of or cessation from peregrination ( Vihāra ) पचा० १७, ३६,—पक्ख. पुं० (-पक्ख) विहार न करवानो पक्ष-अभिप्राय विहार न करने का पक्ष-अभिप्राय. the tenet that there should be no peregrination. पचा० १७, ३६,

अविहि पुं० (-अविधि) अविधि, शास्त्रविहित विधिना अभाव शास्त्र विहित-शास्त्रानु-दृष्ट विधि का अभाव Absence of ceremony prescribed by Śāstias निसी० १, २४, ४, २०; पंचा० ७, १७,

अविहिंस त्रि० ( अविहिंस-न विधने विहिंसा चेपां तेऽविहिंसाः ) हिंसा पगरना. दयालु व्यालु, हिंसा से रहित. Kind, merciful, not injuring others आया० १, ६२, ४२, १६३;

अविहिंसा. स्त्री० ( अविहिंसा-विविधा हिंसा विहिंसा, न विहिंसा अविहिंसा ) हिंसानो अभाव; अहिंसा अहिंसा, हिंसा का अभाव. Absence of different kinds of injury, e g. killing, etc. "अविहिंसामेव पव्वए, अणुधम्मो सुणिणा पवेदितो" सूय० १, २, १, १४; अणुजो० १३०;

अविहिंसिय. त्रि० (अविहिंसित-नास्ति विहिंसा यस्मिंस्तदविहिंसितम्) सारी शीते निर्लभ थअल, अथित सम्यक् अचित्त, जीव रहित. Lifeless, insentient सूय० २, १, ५६;

अविहेडअ-य पु० (अविहेठक-अविहेलक) डोधने आधा-पीडा उपनवनार नहि, पीनने दुःख उपनवनार नहि. किसीको पीडा न देने वाला, दूसरे को दुख न देने वाला. One, not giving pain or trouble to others. "उवसते अविहेडए जो स भिक्खू" दस० १०, १, १०; उत्त० १५, १५;

अवीइ त्रि० ( अवीचि ) डपायना तरंगथी रहित कपाय की तरंगों से रहित. Free from the waves or billows of passion भग० १०, १,—दव्व. न० (-दव्व-न वीचिद्रव्यमवीचिद्रव्यम्) सम्पूर्ण आहार द्रव्य, आहार की सर्वोत्कृष्ट वर्गणा. substance excellent for being used as food भग० १३, ६, १४, ६;

अवीइकंत त्रि० ( अव्यतिक्रान्त ) अतिक्रमण नहि करेक, उलंघन न करेक न उलांघाहुआ, अतिक्रमण न किया हुआ. Not violated; not transgressed. भग० ८, ७,

अवीइमंत. त्रि० ( अवीचिमंत ) डपायना संबंध पगरना कपाय के संबंध से रहित. Free from any contact with passions. भग० १०, २,

अवीह्य सं० कृ० अ० (अवीविच्य) लुट्  
पाठ्या विना बिना जुदा किये Without  
having separated or discrimi-  
nated भग० १०, २,

अवीह्य. स० कृ० अ० (अविचिन्त्य) नडि  
विचारीने, विडल्य ड्या विना विना विचारे,  
विकल्प किये बिना Without having  
thought भग० १०, २,

अवीय त्रि० (अद्वितीय) अविनी सहाय  
विनाने, अकेला, अकेल बूसरे की सहायता से  
रहित, अकेला Alone, solitary, one  
without a second विवा० १, २,  
(२) अनुपम, जेना जेवे अविने न डेय  
ते अनुपम, जिसके समान बूसरा न हो वह  
matchless, univalled उक्त० २०, २२,

अवीयराग पु० (अवीतराग) वीतराग-डेवणी  
नडि ते, अहमस्थ जिसका राग नहीं गया वह,  
अहमस्थ One who is not a Vitarā-  
ga or an omniscient, one who is  
Chhadmastha (1 e in the 11th  
or 12th stage of the spiritual  
ladder) पचा० ६, ४३,

अवीरिय पुं० (अवीर्य्य) मननी शक्ति विना-  
ने; वीर्यहीन मन की शक्ति से रहित, वीर्यहीन.  
Devoid of mental strength;  
devoid of power. नाया० ८, १३, १६,  
भग० १, ८, ७, ६,

अवीसंभ पुं० (अविश्रम्भ) अविश्वास; प्राणा-  
तिपातनु त्रीजुं गौण नाम. विश्वास का अभाव,  
प्राणातिपात का तीसरा गौण नाम Distrust,  
want of confidence, the third  
subordinate description of Prā-  
nātipāta (killing etc) परह० १, १,

अवीसतथ. त्रि० (अविश्वस्त) विश्वासरहित  
विश्वास रहित Lacking in con-  
fidence. गच्छा० ६७,

अबुक्तं त्रि० (अव्युक्तान्त) अयेत नडि थयेल;  
सयेत. सजीव Living; sentient निसी०  
१७, ३०;—जीव पुं० (—जीव) सयेत,  
जेमाथी अय नीडणी गया नथी ते सक्ति,  
सजीव sentient or living matter  
निसी० १७, ३०,

अबुग्गहठाराण न० (अविग्रहस्थान) अविग्रह  
स्थान; डलडनु स्थान नडि अविग्रह स्थान, जो  
स्थान कलह का न हो वह Anything not  
a proper abode or object for  
quarrel “आयरियउवज्झाएस्स खं  
गणंसि पच अबुग्गहठाराणा परणत्ता, तजहा-  
आयरियउवज्झाएणं गणंसि आण वा धारण  
वा सम्म पउजित्ता भवइ १, एवं महाराइ  
णियाए सम्म २, आयरियउवज्झाएणं  
गणंसि जे सुपज्वजाए धारेइ ते काले सम्मं  
३, एवं गिलाणसेहवेयावषं सम्मं ४, आ-  
यरियउवज्झाएणं गणंसि आपुच्छियचारी  
यावि भवइ णो अणापुच्छियचारी” ठा० ५, १,

अबुच्छिण त्रि० (अव्यवच्छिन्न) अय-  
रहित नडि, अवसरहित सजीव Living,  
sentient आया० २, १, १, २,

अबुक्त त्रि० (अनुक्त) डोधती न प्रेरायेल  
किसीसे प्रेरित न किया हुआ. Not directed  
or instructed by anybody. ठा० ८,

अवे धा० I (अप+इष्) लुट् जाना To  
go (२) नाश पामयुं नाश पाना to be  
destroyed

अवेति. पचा० १५, ७; पञ्च० २८, विशेष० ७०,  
अवेअ पु० (अवेद) वेदरहित, अवेदी  
वेद (स्त्री वेद, पुंवेद और नपुंसक वेद) रहित.  
(One) free from or devoid  
of sex-feeling क० प० ५, ४८,

अवेइय त्रि० (अवेदित) नडि वेदेल, नडि  
अनुभवेल, अनुभव न किया हुआ Not  
felt or experienced. कथ० ३, १८,

अवेडवियसरीर पुं० ( अवेडवियसरीर )  
अनकाररहित शरीर अलंकार रहित शरीर.  
Body devoid of ornaments  
भग० १८, ५;

अवेकखमाण् व० कृ० त्रि० ( अवेकखमाण् )  
निरीक्षण् करतो निरीक्षण करता हुआ.  
Looking into, observing. नाया० ६;

अवेकखयंत त्रि० ( अवेकखयंत-अवेकखमाण् )  
लुग्यो "अवेकखमाण्" शब्द. देखो  
'अवेकखमाण्' शब्द. Vide 'अवेकखमाण्'  
नाया० ६;

अवेकखा स्त्री० ( अवेकखा ) अपेक्षा; आशय,  
द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आदिनो अलिप्राय.  
अपेक्षा, आशय; द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आदि  
का अभिप्राय. Expectation; desire,  
aim, intention. विशेष० २५५; १०१६;  
पंचा० ५, ४२; पिं० नि० ४४२;

अवेत त्रि० ( अवेत ) लुग्युं, लिन जुदा, भिन्न,  
पृथक् Different from, separated  
from. विशेष० २२१३;

अवेद. पुं० ( अवेद ) पुरुषवेद, स्त्रीवेद आदि  
वेदरहित श्रव, हसमा शुशुदाशुधी माडी सिद्ध  
पर्यंत श्रव पुरुषवेद, स्त्रीवेद आदि वेद रहित जीव,  
दसवें गुणस्थान ने सिद्ध पर्यन्त जीव. A soul  
free from Purusa-Veda, Stī-Ve-  
da etc, a soul between the tenth  
Gunasthāna and final emancipa-  
tion, a soul free from sex-feeling.

ठा० २, १, पञ्च० २, जीवा० १; भग० १७, २,

अवेदअ-य. पुं० ( अवेदक ) लुग्यो "अवेद"  
शब्द. देखो "अवेद" शब्द. Vide "अवेद".  
भग० ६, ३१; १८, १, २५, ६; २६, १;

अवेदग पुं० ( अवेदक ) लुग्यो "अवेद" शब्द.  
देखो "अवेद" शब्द Vide "अवेद."  
ठा० २, १, ४, ४; परह० १, २, भग० ६,  
३; ४; ८, २; ११, १; २६, १, ३०, १;

अवेदइत्ता सं० कृ० अ० (अवेदइत्ता) वेदा वगर;  
भोग्या वगर अनुभवकिये बिना, बिना भोगे.  
Without having experienced.  
भग० १, ४; सम० प० १६४, परह० १, १;

अवेदग पुं० (अवेदक) लुग्यो "अवेद"  
शब्द देखो "अवेद" शब्द. Vide 'अवेद.'  
ठा० ४, ४, क० गं० ६, ५१, क० प० ५, ६५;

अवेदग. त्रि० ( अवेदन-न विद्यते वेदना  
यस्य सोऽवेदन ) सात्ता, असात्ता वेदनरहित;  
सिद्ध सात्ता, असात्ता रूप वेदना से रहित, सिद्ध  
(The soul) free from the feeling  
of pain and pleasure; (the soul)  
that has obtained salvation.  
विशे० २१२७, पञ्च० २;

अवेरमणजभाण न० ( अविरमणध्यान-  
न विरमणमविरमणम्, तस्य ध्यानम् )  
पापथी न निवृत्त थयानु ध्यान पाप से निवृत्त  
न होने का ध्यान. Meditation upon  
non-abstention from sin. आउ०

अवेहिया सं० कृ० अ० ( अवेहिय ) लेधने;  
आदे यीने देखकर, आलोचना करके.  
Having seen or observed.  
सूय० १, २, २, ८,

अवोगड. त्रि० (अव्यकृत) विल ग नदि पाडेस;  
लायातोये वहुंथी न क्षीधेसुं अविभाजित;  
सगा संवन्धियों द्वारा न बाटा हुआ Not  
divided into shares. सम० ३३, वव०  
७, २२, ( २ ) त्रि० विशेषणार्थी लेद न  
पाडेस विशेषणों द्वारा जिसका भेद न किया  
गया हो वह not distinguished by  
adjectives; not differentiated  
by adjectives सम० ३३;

अवोगडा. स्त्री० ( अव्यकृता ) गंभीर अर्थ-  
वाणी लाया अथवा अव्यकृत-अव्यक्त अक्षर

वाणी ल.पा. गम्भीर अर्थ वाली अथवा अस्पष्ट अक्षरों वाली भाषा Language with deep and profound meaning, language with obscure or illegible letters. "अवोच्छ्रयणगण अवोच्छ्रयण" सम० ६, परह० २, १,

अवोच्छ्रयण. त्रि० ( अव्युच्छ्रयण ) व्ययच्छेद रहित, पृथक्त्वरहित, छिन्न बिलिन नहि थयेल; लुहुं नहि पाडेल. व्यवच्छेद रहित; पृथक्त्व रहित. Not scattered, not separated. दसा० ६, २; वव० ७, २२; सम० ३३, वेय० २, १८, भग० ७, १, ८, ५, पंचा० ४, ८;

अवोच्छ्रयण. पुं० ( अव्यवच्छ्रयण-अव्यवच्छ्रयणप्रतिपादनपरो नयोऽव्यवच्छ्रयणमय. ) द्रव्यास्तिक नय, वस्तुनु निरन्तर अस्तित्व अत वनार नय. द्रव्यास्तिक नय, वस्तु का निरन्तर अस्तित्व बताने वाला नय Logical standpoint showing the eternal and continuous existence of things नदी०—दृ. पुं० (-अर्थ ) द्रव्य, शाश्वत पदार्थ. द्रव्य, शाश्वत पदार्थ eternally existing substance; substance. नदी०—दृया स्त्री० (-अर्थता ) द्रव्यनी अपेक्षा द्रव्य की अपेक्षा standpoint of substance or matter नदी०

अवोच्छेद. पुं० ( अव्यवच्छेद ) व्ययच्छेद-पृथक्त्वरहित अभाव. पृथक्करण का अभाव. Absence of separation भग० २०, ८;

अवोह पु० ( अपोह-अपोहनमपोह ) निश्चय निश्चय. Decision; determination सम० १;

अव्ययीभाव. पुं० ( अव्ययीभाव ) अव्ययी-भाव समास, समासने अेक प्रकार अव्ययी-

भाव समास, समास का एक भेद Avyayībhāva compound, a kind of compound adverbial in meaning अणुजो० १३१,

अव्यवच्छ्रयण त्रि० ( अव्यवच्छ्रयण ) विभ्रुप वगरनु, स्थिर, विक्षिप्त वृत्तिवाणे नहि. स्थिर, विभ्रुप रहित, चिना विक्षिप्त वृत्ति का. Undistracted in mind, steady. दस० ५, १, २, उक्त० १८, ५०;

अव्यग्र त्रि० ( अव्यग्र ) स्वस्थ, चिन्ता वगरनु स्वस्थ, चिन्ता रहित Calm, free from anxiety or distraction. उक्त० १५, ३; —मण त्रि० (-मन्स् ) स्वस्थ चित्तवाणे, प्रफुल्लित चित्तवाणे स्वस्थ चित्त वाला, प्रफुल्लित चित्त वाला. ( one ) having a calm and undistracted mind उक्त० १५, ३;

अव्यङ्गभागा त्रि० ( अर्धभाग ) अर्ध भाग. अर्ध भाग, आधा हिस्सा. A half, half. निसी० २३४,

अव्यक्त त्रि० ( अव्यक्त ) निर्देश-नाम, जति आदिथी कथन करवा योग्य नहि नाम, जाति आदि के द्वारा कथन करने के अयोग्य. Indistinct, incapable of being indicated by name, kind etc. सूय० २, ६, ४७, विशेष० १६६; २३२; पि० नि० ५६८, नदी० ३५; प्रव० २६३, ( २ ) ज्ञान अने उमरमा न्हानो, आठ वर्ष सुधीनो आण्ड ज्ञान और उमरमे छोटा, आठ वर्ष की अवस्था तक का बालक immature in age and knowledge, a boy up to eight years of age. निसी० १६, २१, ( ३ ) अपत्त, छेद सूत्र के रहस्य को न जानने वाला. shallow in knowledge; igno-



rant of the real deeper meaning of Chheda Sūtra भग० २५, ७; (४) साधुनामां सदेह राभनार अव्यक्तवादी अेद निहव साधुत्व मे संदेह रखने वाला अव्यक्तवादी एक निहव a Nihava known as Avyaktavādī, having misgivings about asceticism विशेष० २३००,—गम. त्रि० (-गम) नारावाने असमर्थ. भागने में असमर्थ incapable of making an escape (२) पुं० गमनतो अभाव गमन का अभाव absence of going away or escape. (३) अस्पष्ट गतिवाणो अस्पष्ट गति वाला (one) without clearly defined motion; (one) with indistinct gait. सूय० १, १४, २;—दंसारण. पुं० न० (-दर्शन-अव्यक्तमस्पष्टं दर्शनं स्वप्नार्थानुभवो यत्रासावव्यक्तदर्शनः) अस्पष्ट दर्शन-देभाव; स्वप्न दर्शनतो अेद लेद. अस्पष्ट दर्शन; स्वप्न दर्शन का एक भेद. a dim, dreamlike sight or appearance; a variety of dreamy appearances भग० १६, ६;—रूव. त्रि० (-रूप-अमूर्तत्वादन्यक्तरूपमस्याऽसावव्यक्तरूप ) अव्यक्तरूपी ७५; आत्मा. अव्यक्तरूप वाला जीव; आत्मा. soul, so called because it is formless. “ अव्वत्तरूवं पुरिसं महंतं ” सूय० २, ६, ४७,—लिंग. न० (-लिङ्ग ) अव्यक्त लिंग, निन्दद्विपतो वेप. जिनकल्पी साधु का वेप. the dress of a Jaina ascetic. प्रव० ७६३;

अव्वत्तव्वगसंचिय. पुं० ( अव्यक्तव्यकसञ्चित ) लुओ “अव्वत्त” शब्द देखो “अव्वत्त” शब्द.

Vide “ अव्वत्त ” भग० २०, १०;

अव्वभिचारि पुं० ( अव्यभिचारिन् ) अव्यभिचारी हेतु; साध्यते छोड़ी पीने न बनार हेतु अव्यभिचारी हेतु; साध्य

को छोड़कर अन्यत्र घटित न होने वाला हेतु. (In logic) the middle term that invariably accompanies the Sādhya (i. e. major term), invariably concomitant middle term. पंचा० २, ३७,

अव्वय त्रि० ( अव्यय ) नाशरहित; अपरिहत. नाश रहित. अव्यय-अखण्डित. Indestructible नंदी० ५७; सम० १३; भग० ६, ३३; १८, १०, नाया० ५, सूय० २, ६, ४७, ज० प० १, १५; (२) पुं० आत्मा-आत्मा soul. “धुवे णियए सासए अक्खए अव्वए” भग० २, १, (३) आचारंग आदि पार अंग शास्त्र-प्रवचन. आचाराङ्ग आदि वारह अङ्ग शास्त्र. 12 Aṅgasastras viz Āchārāṅga etc नंदी०

अव्ववसिअ त्रि० (अव्यवसित) पराक्रम वगरतो; निश्चय वगरतो. पराक्रम रहित, निश्चयरहित. Not heroic, not decisive; not firm ‘तत्रो ठाणा अव्ववसियस्स अहियाए असुहाए अक्खमाए अणित्सेसाए’ ठा० ३, ४; अव्वसण. पुं० ( अव्यसन ) लोकोत्तर रीते पक्षतो १२ भो दिवस, पारसनुं नाम. पक्ष का बारहवाँ दिन, द्वादशी का लोकोत्तर नाम The name of the twelfth day of a fortnight. जं० प० ७;

अव्वह. त्रि० ( अव्यय ) पीडारहित; देव वगेरेना उपसर्गथी न पीओ तेवो. पीडा रहित, देवादिके उपसर्ग से न डरने वाला Free from affliction; fearless of troubles caused by deities etc (२) न० व्यथानो अभाव, शुद्ध ध्यानतु अेद आलम्भन व्यथा का अभाव; शुद्ध ध्यान का अवलम्बन absence of or freedom from mental pain; practice of pure concentration

on the soul ठा० ४, १, ओव० २०,  
भग० २५, ७,

**अव्यय-य** त्रि० ( अव्ययित ) उदात्त  
द्विधाणा, धीर. उदार मन वाला, धीर  
Lofty or courageous in heart  
“ अहिया से अव्ययिओ ” दस० ८, २७,  
( २ ) जेने डेहा दु अ न आपे ते जिसे कोई  
दु.ख न दे वह (one) not troubled by  
anybody. भग० ३, २; जीवा० ३, ३,  
पचा० ५, १०६, जं० ५० २, २५;

**अव्यय-य** त्रि० ( अव्ययिद्ध ) अविपरीत,  
उलटु सुलटु नहि ते. अविपरीत, जो  
उलटा सुलटा न हो वह. Not topsy-  
turvy, not turned upside down  
अणुजो० १३,

**अव्यय-य** पु० ( अव्ययघात ) व्याघात-विघ्नो  
अभाव व्याघात-विघ्न का अभाव. Absence  
of obstacles, absence of obstruc-  
tion विशेष ५६६;

**अव्यय-य** त्रि० ( अव्ययान ) थोडुं रिनग्ध अने  
पधारे करमायेल. कुछ झिगव और अविक  
मुरमाया हुआ. More withered than  
flesh ओघ० नि० ४८८,

**अव्यय-य** न० ( अव्ययबाध-न विघ्नते व्याघाध  
यत्र तदव्ययबाधम् ) जेभा द्रव्यथी शरीर पीडा  
अने लावथी मिथ्यात्वादि दोषनी आधा-पीडा  
नथी जेवु सुख-स्वास्थ्य गुणादिने वदना  
करती वधते पुछु ते जिसमें द्रव्य से शरीर  
पीडा और भाव से मिथ्यात्वादि दोष की पीडा  
नहीं ऐसा सुख-स्वास्थ्य गुरु आदि को वदना  
करते समय पूछना A question about  
health and comfort to a pre-  
ceptor etc at the time of saluta-  
tion प्रव० ६६, ( २ ) शरीरनी पीडाने  
अभाव. शारीरिक पीडा का अभाव. absence  
of physical pain. “ किंते भंते! अव्ययवाह

सोमिलाजंमे वातियपित्तियसंभिमसन्निवाइय  
...सरीरगया दोसा उवसता ' भग० १८,  
१०, नाया० १, ५: ( ३ ) विविध आधा-पीडाविनानुं  
सुख विविध प्रकार की बाधाओं से रहित सुख  
happiness unalloyed with vari-  
ous kinds of troubles ' अव्ययवाहम-  
व्ययवाहेण ' भग० ५, ४, ११, ६, १२, नाया०  
५, ओव० १०, सम० १; दसा० १०, ८, ६,  
आव० ६, ११, कप्प० २, १५, २७, ( ४ )  
व्ययधारहित सिद्धिस्थान, मोक्ष. बाधा रहित  
सिद्धिस्थान, मोक्ष absoluton पञ्च०  
३६, परह० २, ३, ( ५ ) कृष्णराजनी वय्ये  
आवेक सुप्रतिष्ठाभविमानवासि लोकान्तिड  
देवतानी जेक जत कृष्णराजी के बीच में  
आये हुए सुप्रतिष्ठाभ नामक विमान वासी लोका-  
न्तिक देवों की एक जाति a kind of  
Lokāntika deities residing in  
the Supratisthābha Vimāna  
situated between the Kṛṣṇa-  
rājās प्रव० १४६२, नाया० ८, भग० ६, ५,  
१४, ८, ठा० ६, परह० २, ३,

**अव्यय-य** पु० ( अव्ययमोह ) व्यामोह-आति-  
नो अभाव आन्ति का अभाव Absence  
of delusion or infatuation. विशेष  
८०६,

**अव्यय-य** त्रि० ( अव्ययान्त-अग्लान ) करमायेल  
नहि न मुरमाया हुआ Not faded or  
withered नाया० १;

**अव्यय-य** त्रि० ( अव्ययपट्ट ) व्यापार उग्वाने  
अयोग्य वस्तु व्यापार करने के अयोग्य वस्तु.  
( A thing ) unfit for trade  
purposes “ सडियपडिय न कीरइ जहिय  
अव्ययवडं तय वत्थु ” वेय० ३, २७;

**अव्यय-य** त्रि० ( अव्ययपन्न ) बेदेक नहि, नाश  
पामेक नहि. न भेदा हुआ, नाश न पाया हुआ.

Not pierced; not destroyed. भग०  
१, ७;

अव्वाहय. त्रि० (अव्वाहत) न ह्युञ्जेत्।  
नहीं मारा हुआ। Not killed; not  
struck or beaten. नंदी०

अव्वाहयपुव्वावरत्त न० (अव्वाहतपूर्वा-  
परत्त्व) पूर्वापर वाक्यनो विरोध न आवे, तेथी  
रीते भोक्तु ते; सत्यवचनना ३५ अतिशय-  
मानो अेक. पूर्वार् विरोध रहित बोलना;  
सत्य वचन के ३५ अतिशयो में से एक अति-  
शय. Speech without inconsisten-  
cy; one of the thirty-five Ati-  
śayas of truthful speech राय०  
सम०

अव्वाहिञ्च त्रि० (अव्वाहृत) न भोक्तावेत्  
विना बुलाया हुआ Not called or  
spoken to "अव्वाहिञ्च कसाइत्था"  
आया० १, ६, २, ११;

अव्वो.अ० (\*अव्वो-हा) अेक-शोऽस्य अन्वय.  
खेद सूचक अव्यय An interjection ex-  
pressive of sorrow. सु० च० ७, ३०५;

अव्वोक-ग-ड. त्रि० (अव्वाकृत) लुञ्जेत्।  
"अव्वोगड" शब्द. देखो 'अव्वोगड' शब्द  
Vide 'अव्वोगड.' वे० २, १८; ३, २७;  
भग० १, ६;

अव्वोगडा. स्त्री० (अव्वाकृता) लुञ्जेत्। 'अव्वो-  
गडा' शब्द. देखो "अव्वोगडा" शब्द. Vide  
'अव्वोगडा' दसा० ३, ३०; सू० २, ७, ३८;

अव्वोच्छिञ्चण. त्रि० (अव्वच्छिञ्च) ६६ वग२नुं;  
भाप विनाऽपु सोमा रहित; भाप रहित.  
Unlimited, immeasurable. आया०  
१, ४, ४, १३८; (२) अन्वयित; छेद  
दथा विनाऽपु अखरिडत, विना छेदा हुआ.  
whole, unbroken. आया० २, ७, २,  
१२०; जं० ५० ३, ४२;

अव्वोच्छिञ्चि. त्रि० (अव्वच्छिञ्चि) लु  
तुदित न थतां निरन्तर प्रवाहरूपे आत्थुं आवे  
ते. जो विना दृष्टे निरन्तर प्रवाहरूप से चला आ  
रहा हो वह. Continuing ceaseless-  
ly or without a break. विशेष० १४;  
६६१; (२) स्त्री० अन्वयितो अभाव.  
व्यवच्छेदका अभाव. absence of break  
or separation भग० ७, ३;—एयद्व.  
पुं० (-नयार्थ) लुञ्जेत्। "अव्वोच्छिञ्चिणयद्व"  
शब्द. देखो "अव्वोच्छिञ्चिणयद्व" शब्द.  
Vide 'अव्वोच्छिञ्चिणयद्व.' भग० ७, ३;

अव्वोगडा स्त्री० (अव्वाकृता) लुञ्जेत्। "अव्वो-  
गडा" शब्द. देखो "अव्वोगडा" शब्द.  
Vide "अव्वोगडा." भग० ७, ३; १०,  
३, प्रव० ६०२;

✓ अस. धा० I. (अस्) होतुं; थतुं. होना.  
To be.

अस्थि. अणुजो० ८१; आया० १, १, १, ३;  
वे० १, ३३; दस० ५, २, २६;

संति. सू० १, १, १, ७, आया० १, १, २, १५;  
अति सू० २, १, ६, आया० १, १, १, २;  
मो व० उ० व० भग० १५, १;

सिञ्चा. वि० ओव० ३८; उत्त० ६, ४८; आया०  
१, १, २, १३;

आसी. मू० आया० १, १, १, ३; उत्त० २५,  
१; अणुजो० १६;

आसिमो. उत्त० १३, ५;

✓ अस. धा० I. (अस्) भातुं; लो० ८२२नुं.  
खाना; भोजन करना. To eat; to dine.  
असइ. पि० नि० ११४; सु० च० १०, ३७;

असइ स्त्री० (असृति) अनाज भापतानुं अेक  
भाप; हथेली के २२नुं भाप; पसवि. अनाज  
नापने का एक भाप; हथेली के चरानर भाप.  
A measure of capacity for

corn equal to the palmful of the hand अणुजो० १३२,

असहं अ० ( असहत् ) वारंवार, अनेक वार. वार वार, अनेक वार. Often; frequently 'असहं तु मणुस्तेहिं, मिच्छादंबो पजुजइ' उक्त० ६, ३०, भग० ६, ५, ३५, १, जीवा० ३, १, दस० १०, १, १३, आया० १, २, ३, ७७,

असहं. स्त्री० ( असती ) कुलटा, असती कुलटा, व्यभिचारिणी. A strumpet; an unchaste woman प्रव० २६७; ( २ ) दासी. दासी a maid-servant भग० ८, ६;—पोष न० (—पोषण—असत्यो दु शीलास्तासां दासीसारिकादीनां पोषणं पालन-मसतीपोषणम् ) हिंसक अथवा दुर्भर्मी आणुनुं व्यापार अर्थे पोषणुं करवुं ते; श्रावकना सातमा व्रतने छेदने अतिचार. हिंसक अथवा कुकर्मी जीव का व्यापार के लिये पोषण करना, श्रावक के सातवे व्रत का अन्तिम कर्मादानरूप अतिचार feeding and keeping a cruel animal for the purposes of trade, the Atichāra of the last vow of a layman, styled its fifteenth Karmādāna प्रव० २६७;—पोषणया. स्त्री० (—पोषणता—पोषण ) दासी, वेश्या वगैरेणुं पोषणुं—पालन करवुं ते; सातमा व्रतने अेक अतिचार दासी, वेश्या आदि का पालन—पोषण करना, सातवें व्रत का एक अतिचार maintenance of maid-servants, prostitutes etc, an Atichāra ( partial violation ) of the seventh vow भग० ८, ५; उवा० १, ५१;

असं त्रि० ( असत् ) अविद्यमान, असत् अविद्यमान Not existing, not being. सूय० १, १, १, १६,

असंक त्रि० ( अशङ्क—न विद्यते शङ्का यस्य तदशङ्कम् ) नि शङ्, शङ्का वगैरेणो. नि शङ्क; शंका रहित Having no doubt, free from doubt आया० १, ३, २, ८०;—मण त्रि० (—मनस्—अशङ्क मनो यस्यासावशङ्कमनाः ) इणन्ती शङ्का न राभ्यन्तार; तंपना इणन्तो संदेह न करन्तार. फल की शंका न करने वाला; तप के फल का संदेह न करने वाला free from any doubt about the efficacy of penance आया० १, ३, २, ८०,

असंकल्पिय. त्रि० ( असङ्कल्पित ) आलोचन न करेह, मनमा संकल्प न करेह मन में सकल्प न किया हुआ. Not even thought of विशे० २४४, भग० ७, १, असंकमाण व० कृ० त्रि० ( अशङ्कमान ) शंका न करतो शंका न करता हुआ Not doubting or suspecting नाया० १, असंकि. त्रि० ( अशङ्किन् ) शंका नहिं करन्तार. शङ्का न करने वाला One who does not suspect or doubt सूय० १, १, २, ६;

असंकिय. त्रि० ( अशङ्क्य ) शंका करवा योग्य नहिं, शंकातु स्थान नहिं शङ्का न करने योग्य, शंका का जिसमें स्थान न हो. Not worthy of suspicion. "असंकियाहं संकति, संकियाहं असंकियो" सूय० १, १, २, ६,

असंकलित त्रि० ( असंकलित ) सङ्कलित-दुष्ट नहिं; अदुष्ट, विशुद्ध परिष्णामवाणे दुष्ट परिष्णाम रहित. विशुद्ध परिष्णाम वाला Not wicked; not impure in mind "असंकलित्वाहं वरथाहं" श्रौव० ३८; परह० २, १, —आचार त्रि० (—आचार—असंकलित इहपरलोकाशंसारूपसंकलेशविप्रमुक्त आचारो यस्य सोऽसंकलित्वाचारः ) नेने

आचार सर्व दोषरहित छे ते; सडल दोषनो परित्याग इरनार. सम्पूर्ण दोष रहित आचार वाला; समस्त दोषों का परित्याग करने वाला ( one ) who has abandoned all sorts of sins षव० ३, ४,

**असंकिलेस** पुं० (असंक्लेश) संक्षेपशेनो अभाव, परिष्कामनी विशुद्धि. सक्लेश का अभाव, परिष्काम की विशुद्धि Absence of impurity of thought, purity of thought-activity. “ दसविहे असंकिलेसे परणत्ते, तजहा—उवहिअसंकिलेसे जाव चरित्तअसंकिलेसे” टा० १०,

**असंक्लेश** त्रि० (असंस्कृत) संस्काररहित, अक्षररहित संस्काररहित; अलङ्कार रहित Devoid of purifying impressions, not civilized, devoid of embellishments परह० १, २,

**असंख** त्रि० (असंख्य) संप्र्यातीत, जेनी गणुत्री न थध शडे तेनुं; असंप्र्यात संख्यातीत, जिसकी संख्या न की जा सके ऐसा. Incalculable, countless क० गं० ४, ४०, नाया० १, ७, क० प० १, ६,—अंश पुं० (—अंश) असंप्र्यातमे अंश—भाग असंख्यातवाँ अंश—हिस्सा. an infinitesimal portion क० गं० ५, ७६,—आउच त्रि० (—आयुष्क) असंप्र्यात वर्पना आयुष्यवाणा, जुगलीया वगेरे. असंख्यात वर्ष की आयु वाला; जुगलिया आदिक. having a life of countless years (e g. the Jugaliyās etc. ) प्रव० १३६६,—कोडि. पु० (—कोटि) असंप्र्या ट्रेड असंख्य करोड countless crores, an infinite number of crores. प्रव०

६११,—**गुणिय** त्रि० (—गुणित) असंप्र्या गणुं असंख्य गुणा. multiplied countless times, infinitely multiplied क० प० १, १६; प्रव० १०६५;—**बल** न० (—बल) असंप्र्या षण, असंप्र्या—अपरिमित सेना. असंख्य बल, असंख्य—अपरिमित सेना a countless host, an innumerable army. सु० च० २, ६४;—**वास** त्रि० (—वर्ष) असंप्र्यात वर्पना आयुष्यवाणा जुगलीया वगेरे असंख्य वर्षों की आयु वाला जुगलिया आदिक. having a life of countless years (e. g. the Jugaliyās etc. ). क० प० ४, १६;

**असंखगुण** त्रि० (असंख्यगुण) असंप्र्यात गणुं, संप्र्याथी गुणाय नहि तेडु असंख्यात गुणा, संख्या से गुना न जा सके उतना. Of countless multiples. क० गं० ४, ४२,—**विरिय**. त्रि० (—वीर्य) असंप्र्यात गणु वीर्य—योगवाणे असंख्यात गुण वीर्य—योग वाला ( one ) whose power extends to incalculable multiples, of incalculably multiplied power क० गं० ४, ४२,

**असंखड** पु० (—असंखड—असंस्कृत—मौखिक—कलह) मोढानो डुओ शब्दो डलड वार्तो की लडाई शब्दकलह A wordy quarrel, quarrel by exchange of angry words गच्छा० ११७,

**असंखडि** पुं० (—असंस्कृति—कलह) डलड; डुओ. मगडावाजी Quarrel, strife प्रव० ७६२.

**असंखतम** त्रि० (असंख्यतम) असंप्र्यातमे. असंख्यातवाँ. Infinitesimal. क० प० १, ६;

**असंखय**. त्रि० (असंस्कृत) संस्कार थध शडे नहि तेनुं; क्षयना वासणुनी भेडे नुटुं थध पण

रीते संधाय नडि तेषु जिसका संस्कार न हो सके वह, काच के बर्तन के समान टूटने पर पुन न जोड़ा जा सके वह Incapable of being restored to its original condition like a vessel of glass when it is broken “असंख्यं जीविय मा पमायए, जरोवणीयस्स हूँ नत्थि ताणं” उत्त० ४, १; (२) उत्तराध्ययन सूत्रना योथा अध्ययननु नाम . उत्तराध्ययन सूत्र के चौथे अध्याय का नाम the name of the 4th chapter of Uttarādhyayana अणुजो० १३१,

**असंख्य** त्रि० (असंख्य) संख्यातीत, जेनी गणुत्री न थछ शके तेदला, असंख्यात संख्यातीत; जिसकी गिन्ती न हो सके, असंख्यात Innumerable; countless उत्त० ६, ४८;

**असंखिज्ज** त्रि० (असंख्येय) जेनी संख्या थछ न शके अेषुं, संख्याते उद्वंधी गयेसु; संख्यातीत. जिसकी संख्या न की जा सके वह, संख्यातीत Innumerable, countless अणुजो० ४८, सम० १, क० गं० ५, ६५, ज० प० २, १८, ५, ११७, कप्प० २, २७, —अंस पुं० (—अश) असंख्यातमे लाग असंख्यातवो भाग an infinitesimal portion क० ग० ५, ६५, —**पणसिअ** पु० (—प्रदेशिक) असंख्यप्रदेशिक रक्षध, असंख्यात परमाणु मणी अनेल अेक थीज असंख्य प्रदेशिक स्कंव; असंख्यात परमाणुओं से मिलकर बनी हुई एक वस्तु. a thing made up of countless atoms अणुजो० १३२, —**समयाहिय** त्रि० (—समयाधिक) असंख्यात समये क्षरी अधि३-५ धारे. असंख्यात समय की अपेक्षा अधिक exceeding by an incalculable period of time भग० १, ५,

**असंखियभाग**. पु० (असंख्यभाग) असंख्यातमे लाग असंख्यातवो भाग. An infinitesimal portion. क० प० १, १०; **असंखियमित्त** त्रि० (असंख्यमात्र) असंख्यात परिमाणुवाणु असंख्यात परिमाण वाला. Occupying an infinitesimal portion of space. क० प० १, ८, **असंखेज्ज**. त्रि० (असंख्येय) णुओ ‘असंखिज्ज’ शब्द देखो “असंखिज्ज” शब्द Vide “असंखिज्ज” भग० १, ५, २, ८, १०; ३, १, ५, ७, १३, १, १६, ८, १६, ७, २५, ३, ३२, १; ४१, ३, ठा० १, १, ज० प० २, ३१, नंदी० १०, विशेष० १६६, —काल. पुं० (—काल) असंख्यातो डाल; पल्योपम, सागरोपम, उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी वगेरे असंख्य समय, पल्योपम, सागरोपम, उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी वगेरह incalculable period of time. भग० ५, ७, ज० प० २, ४२, —**कालसमय** पु० (—कालसमय) असंख्यात डालरूप समय असंख्यात कालरूप समय. period of time incalculable in its extent. ठा० २, २, —**कालसमयद्वइ** पु० (—कालसमयस्थिति) असंख्याता डालसमयनी स्थितिवाणा अणु; नारकी आदि असंख्यात समय की स्थिति वाला जीव, नारकी आदि. souls like Nārakī etc whose life (in hell etc) extends over incalculable periods of time “दुविहा गोरइया परणत्ता, तंजहा-सखेज्जकालसमयद्वइया चव असखेज्जकालसमयद्वइया चव” ठा० २, २, —**जीविय**. पु० (—जीवित) असंख्याता अणु जेमा छे ते. जिसमे असंख्य जीव हैं वह (anything) containing countless lives “से किं त असखेज्जजीविया ? असखेज्जजीविया दुविहा परणत्ता, तंजहा-पुगाद्विया बहुद्विया य’

भग० ८, ३; ठा० ३, १; पन्न० १;—  
 दीवसमुद्द. पुं० (—द्वीपसमुद्द) असंख्याता  
 द्वीप अने समुद्र. असंख्यात द्वीप और  
 समुद्र. countless islands and  
 oceans. भग० ६, ८; जं० प० १, १४,  
 —पप्साहिय त्रि० (—प्रदेशाधिक) असं-  
 ख्याता प्रदेशे डरी अधिक असंख्यात प्रदेशों  
 की अपेक्षा से अधिक exceeding by  
 incalculable units of space. भग०  
 १, ५;—पप्सिअ- पु० (—प्रदेशिक)  
 लुओ “असंखिज्जपप्सिअ” शब्द. देखो  
 “असंखिज्जपप्सिअ” शब्द vide  
 “असंखिज्जपप्सिअ”. भग० २, १;—पप-  
 सोगाढ. त्रि० (—प्रदेशावगाढ) आकाशना  
 असंख्याता प्रदेशने अवगाहीने रहैल  
 आकाश के असंख्य प्रदेशों को अवगाहन  
 करके ठहरा हुआ interpenetrating  
 the incalculable units of space.  
 भग० २, १;—पदेसिये पुं० (—प्रदेशिक)  
 लुओ “असंखिज्जपप्सिअ” शब्द देखो  
 ‘असंखिज्जपप्सिअ’ शब्द. vide “असंखिज्ज-  
 पप्सिअ.” भग० १८, ६;—विट्थुड. त्रि०  
 (—विस्तृत) असंख्याता लोन्नतना विस्तार-  
 वाला; असंख्यात लोन्नतनुं लालुं अने पडोणुं.  
 असंख्यात योजन के विस्तार वाला असंख्यात  
 योजन का लंबा और चौड़ा. of the  
 length and breadth of countless  
 yojanas भग० ६, ५, जावा० ३;—सम-  
 यसिद्ध. पुं० (—समयसिद्ध) लेने सिद्ध  
 थयाने असंख्याता समय थल गया छे ते  
 जिसे सिद्ध हुए असंख्य समय हो गया है वह  
 one after whose Siddhahood  
 countless units of time have  
 elapsed पन्न० १;

असंखेज्जइ. त्रि० (असंखेय) लुओ “अन-

खिज्ज” शब्द. देखो “असंखिज्ज” शब्द.  
 Vide “असंखिज्ज” भग० १८, ३;

असंखेज्जइगुण. त्रि० (असंखेयगुण) असं-  
 ख्यातगणुं, अने असंख्याते गुणीओ तेडुं.  
 एक को असंख्यात से गुणा करने के समान.  
 Multiplied innumerable times.  
 भग० २५, ६,—हीण त्रि० (—हीन)  
 असंख्यात गुणुडीणुं; अने भीनती अपेक्षाओ  
 असंख्यात गुणु ओणुं. असंख्यात गुण हीन,  
 एक दूसरे की अपेक्षा असंख्य गुणा-भाग हीन.  
 falling short to an incalculable  
 extent. भग० २५, ६;

असंखेज्जइभाग. पुं० (असंखेयभाग) असं-  
 ख्यातभो लाग-अंश, अने वस्तुना असंख्यात  
 अंश डरीओ तेमानो अने अंश असंख्यातवाँ  
 भाग, एक वस्तु के असंख्यात भागों में से एक  
 भाग. An infinitesimal part of a  
 thing. भग० १, १, ५, २, ७; १०;  
 ५, ७, ८, ६; १८, ३, २४, १; ३६, १;  
 —हीण त्रि० (—हीन) असंख्यातभो लाग  
 हीन-ओणुं. असंख्यातवाँ भाग हीन-कम.  
 less by an infinitesimal part.  
 भग० २५, १; ६,

असंखेज्जग त्रि० (असंखेयक) असंख्य.  
 असंख्य. Countless, innumerable.  
 क० प० १, ६,—पप्स. पु० (—प्रदेश)  
 असंख्यात प्रदेश. असंख्यात प्रदेश. an infi-  
 nitesimal particle of matter  
 occupying a unit of space. क०  
 प० १, ६;

असंखेज्जगुण पुं० (असंखेयगुण) असंख्यात  
 गुणु; असंख्यात गणुं. असंख्य गुणा, असंख्यात  
 गुणा Multiplied innumerable  
 times. भग० ५, ७, १६, ३, २०,  
 १०, २५, १; ४, ६;—परिहीण. त्रि०

(-परिहीण-असंख्येयगुणेन परिहीणो य स तथा) असंख्यातगुणुडीणु, असंख्यात गणु ओष्ठु असंख्यात गुण हीन, असख्यात गुणा कम. falling short to an incalculable extent. श्रव०—हीण त्रि० (-हीन) लुभ्ये “असंखेज्जगुणपरिहीण” श०६. देखो “असंखेज्जगुणपरिहीण” शब्द vide “असंखेज्जगुणपरिहीण.” भग० २५, १;

असंखेज्जभागमेत्त. पुं० (असंख्येयभागमात्र) असंख्यातमे भागमात्र असंख्यातवो भाग मात्र. The infinitesimal part of a thing. भग० ६, ५,

असंखेज्जहा. अ० (असंख्येयघा) असंख्या-  
त प्रकारनु असंख्यात प्रकार का. In  
countless varieties. भग० १२, ४;

असंग पुं० (असङ्ग-न विद्यते सङ्गो मूर्त्तत्वा-  
वस्य स तथ<sup>१</sup>) भरिग्रह तथा कषायनी उपाधि-  
रहित आत्मा परिग्रह तथा कषायरूप  
उपाधि से रहित आत्मा. Soul free  
from the troubles of worldly  
possessions and impure  
passions. श्रव० (२) भोक्ष मोक्ष. ab-  
soluton पक्ष० २, (३) सिद्ध भगवान्;  
मुक्त आत्मा सिद्ध भगवान्, मुक्त आत्मा.  
the soul that has obtained  
salvation; a Siddha श्रव० (४)  
त्रि० आद्य अने आभ्यन्तर सगरहित बाह्या-  
भ्यन्तर ससर्ग से रहित free from  
physical and mental attach-  
ment. पक्ष० २;

असंगह. पुं० (असंग्रह) संग्रह न करनेवाला. (One) who does  
not collect विशेष० ५०६, (२)  
विवाहने अभाव. विवाह का अभाव. ab-  
sence of marriage, celibacy.

पच्छाविय तं कज्जं असंगहो माय नासिजा”  
पिं० नि० ५०६,—रुह. पुं० (-रुचि-न  
विद्यते संग्रहे रुचिर्यस्य स) उपगणु आदिनी  
रुचि न करनेवाला; लोभवृत्तिवाणे नहि.  
उपकरण आदि की रुचि न करने वाला;  
लोभवृत्ति रहित one free from  
the desire of such materials as  
alms-bowl etc. परह० २, ३;

असंगहिय. त्रि० (असङ्गहीत) आश्रय  
विनाशो, डोषधी संग्रह करानेवाला नहि.  
आश्रय रहित; किसीके द्वारा भी जिसका  
संग्रह न किया गया हो वह. Not  
supported or harboured by  
anybody. ङ० ८,

असंघयण. न० (असंहनन) पणु अथवा नाराच  
आदि संघयणुने अभाव वज्र, ऋषभ, नाराच  
आदि संहनन का अभाव Absence of such  
physical constitutions of bones  
as Vajra, R̥ṣabha, Nārācha  
etc (adamantine structure)  
भग० १, ५,

असंघयणि. त्रि० (असंहननिन्) संघयणु  
वगरेणो, नारकी, देवता प्रभृति संहनन रहित;  
नारकी, देव आदि. Having no phy-  
sical constitution consisting of  
bony joints like adamant  
bony joints etc, Nārakī, gods  
etc. भग० १, ५, २४, १२,

असंजम पुं० (असंयम) संयमने अभाव;  
पापनी प्रवृत्ति, प्राणतिपात आदि सावध  
अनुष्ठान. संयम का अभाव, पाप की प्रवृत्ति,  
प्राणतिपात आदि सावध अनुष्ठान. Ab-  
sence of ascetic conduct, sinful  
conduct, e. g. killing injuring  
etc श्रव० ४, ७, परह० १, ३; उक्त० ३१,



२; भग० २, ५; २५, ६; ७; दस० ५, १, ६६, ६, ५१; प्रव० १३०७, ( २ ) संयमनी विराधना संयम की विराधना-नाश destruction of right or ascetic conduct. एगिंदियाणं जीवा समारंभ माणस्स पंचविहे असंजमे कजइ ” ठा० ५, २; ७, १; —कर त्रि० (—कर) असं-  
जम इरना२-सेवनार; सावध प्रवृत्ति इरना२, असंयमी; पाप करने वाला. (one) acting sinfully; (one) acting against the rules of right conduct. दस० ५, १, २६,—जोग पु० (—योग) सावध जोग-पापना व्यापार. पापकर्म sinful operation. पि० नि० ४६०;

असंजय. त्रि० ( असंयत ) लुओ ' अवरिय ' शब्द. देखो ' अवरिय ' शब्द Vide ' अवरिय ' ओव० ३८; सूय० १, १, २, २८, आया० २, १, २, १३; ठा० ४, ४, भग० १, १; २; ६, ३; १७, २; नाया० १६; दस० ७, ४७, नदी० १७, प्रव० ८६३;—पूया त्री० (—पूजा) असंजय-अविरति-आहाण आदि मिथ्या-त्विनी पूजा, के जे नवमा अने दशमा तीर्थ-इरना आंतराभां आलु थछ छती; दश अचछेराभाने अछे अचछेरे अविरती-ब्राह्मण आदि मिथ्यात्वियों की पूजा, जो नवें और दसवें तीर्थकर के बीच के समय में शुरू हुई थी, दस अचछेरो में से एक अचछेरा-आश्रय. worship done of Brāhmanas and other heretics, not accompanied with restraint of senses etc. It commenced in the time that passed between the ninth and the tenth Tirthankaras कप० २;—भवियद्वदेव. पु० (—भव्य-द्रव्यदेव ) अव्यय छव तथा चारित्र-यन्य लव्य छव, के जेने आलु मनुष्यभव

पूरु इरी देवतापणे उपरुं छे ते अभव्य जीव तथा चारित्रशून्य भव्य जीव. जिसे वर्तमान मनुष्यपर्याय पूराकर देवपर्याय मे उत्पन्न होना है. an Abhavya soul and a Bhavya soul without right conduct to be born amongst gods after their death in their human existing birth. भग० १, २,

असंजल. पु० ( असज्वल ) भरतक्षेत्रनी आलु अवसर्पिणीना आडेभा अनंतनाथ स्वामीना समडादीन-इरवत क्षेत्रना तीर्थ-इर. भरतक्षेत्र की वर्तमान अवसर्पिणी के आठवें तीर्थकर अनन्तनाथस्वामी के समकालीन ऐरावत क्षेत्र के तीर्थकर. The Tirthankara of Iravata Ksetra, the contemporary of eighth Anautanātha Svāmī of the present Avasarpinī of Bharata Ksetra. सम०

असंजोएत्ता त्रि० ( असंयोजयित् ) संयोग न इरावनार. संयोग न कराने वाला (One) who does not cause union with “ सौयामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ ” ठा० १०;

असंजोगि त्रि० ( असंयोगिन् ) संयोगरहित. संयोग रहित. Devoid of union with. (२) पु० सिद्ध ७१. सिद्ध जीव. a soul that has attained to salvation. ठा० २, १;

असंठाचिय. त्रि० ( असंस्थापित ) संस्था-वगरनु सस्कार रहित Devoid of ceremony performed or impressions made. नदी० ८६;

**असंत** त्रि० ( असत् ) अविद्यमान; भ्रूट्ट, असत् अविद्यमान; भ्रूटा, असत् Non-existent, untrue अणुजो० १४६, उत्त० ६, ५१, षचा० १, ३५, ६, २१, १२, ३८, प्रथ० १२१३,

**असंत** त्रि० ( अशान्त ) शान्त न थयेत्, क्रोधादिद्वेने न उपशमावेत् अशान्त, शान्ति रहित, क्रोधादि सहित With passions unassuaged परह० १, २,

**असंत** अ. पुं० ( असत्क ) असत्, अविद्यमान असत्, अविद्यमान Non-existent सूय० २, ४, २,

**असंतक** न० ( असत्क ) भ्रूट्ट, असत्य भ्रूट्ट, असत्य A lie, falsehood परह० १, २, ( २ ) असुंदर सुन्दरता रहित devoid of beauty परह० १, २,

**असंतक** न० ( अशान्तक ) जेना क्रोधादि क्षयाय शान्त तथा नथी ते जिसके क्रोध आदि कषाय शान्त न हुए हो वह ( One ) with unassuaged passions like anger etc परह० २, ३;

**असंतय** न० ( असन्तत ) रागादिनी प्रवृत्ति रागादि की प्रवृत्ति Active condition of attachment, passion etc परह० १, २;

**असंतोष** पुं० ( असन्तोष ) असन्तोष, परिग्रह तु अक्षे नाम असन्तोष, परिग्रह का एक नाम, Discontentment. परह० १, ५,

**असंथड** त्रि० ( असंस्तृत ) अशक्त, असमर्थ, निर्वाह पुरतुं नहि अशक्त, असमर्थ, निर्वाह के अयोग्य. Insufficient, incapable, powerless " असंथडा इमे अवा " दस० ७, ३३, आया० २, ४, २, १३८,

**असंथडिअ** त्रि० ( असंस्तृत ) असमर्थ अशक्त असमर्थ, अशक्त Incapable; powerless वेय० ५, ८,

**असंथरंत** व० कृ० त्रि० ( असस्तरत् ) निर्वाह पुरतुं न थतां निर्वाह योग्य न होता हुआ. Insufficient for meeting the required purpose ओघ० नि० १८१, निसी० १०, ४५,

**असंथरमाण** व० कृ० त्रि० ( \* असस्तरमाण-असस्तरत् ) ङुओ " असंथरत " शब्द देखो ' असंथरंत ' शब्द Vide " असंथरत " ओघ० नि० १८१, निसी० १०, ४५, **असंथुय** त्रि० ( असस्तुत ) असम्बद्ध, सम्बद्ध नहि असंबद्ध, जो संबद्ध न हो वह Irrelevant. " असंथुर्या णो वित्तिगिच्छतिन्ना " सूय० १, १२, २;

**असंदिद्ध** त्रि० ( असन्दिग्ध ) सन्देहरहित संदेह रहित Devoid of doubt भग० २, १, ६, ३३, ११, ११, नाया० १; ६, ठा० ६, १, दस० ७, ३, दसा० ४, ४१, ५२, निर० १, १; कप्प० १, १२, ३, ५५,—**फुडवयण** त्रि० (—स्फुटवचन) सन्देहरहित स्पष्ट वचन भोलना संदेह रहित स्फुट वचन बोलने वाला (one) who speaks clear words devoid of doubt दसा० ४, २७, —**वयणया** स्त्री० (—वचनता) सन्देहरहित स्पष्ट वचन भोलना speaking clear words devoid of doubt ठा० १, १,

**असंदिद्धत्त** न० ( असन्दिग्धत्व ) संदेह न करणे ते, निःशंकपणु; सत्यवचनने ११भो अतिशय सन्देह न करना, नि शंकपना, सत्य वचन का ग्यारहवाँ अतिशय. Freedom from doubt, eleventh Atisaya of true speech. सम० ३६, ओव० राय०

असंदिद्धा. स्त्री० ( असन्दिग्धा ) शंकरद्वित २५८  
 लाभा. शका रहित स्फुट भाषा Clear  
 speech devoid of doubt. दस० ८, ४६,  
 असंदीर्ण त्रि० ( असन्दीन ) पंद्रह दिवस सुधी  
 जगमा मुसाद्री करी पडे अटला छेटानुं  
 स्थान, सिंहलद्वीप आदि इतनी दूरी का  
 स्थान, जिसके लिये पन्द्रह दिनों तक जल मे  
 यात्रा करना पड़े, सिंहलद्वीप वगैरह ( A  
 place ) requiring fifteen days'  
 voyage to reach, Simhala  
 Dvīpa etc आया० १, ६, ३, १८७,  
 ( २ ) समुद्री वेण अये पशु पाणीमां  
 दुभे नहि तेवे द्वीप. समुद्र की भर्ती-चढ़ाव  
 के समय भी पानी में न डूबने वाला द्वीप  
 ( island ) not covered under  
 water even by the waters of  
 the tide जं० ५०

असंप्रयोग पुं० ( असम्प्रयोग ) विप्रयोग,  
 अयोग; संयोगतो अभाव. संयोग का  
 अभाव, वियोग. Separation; absence  
 of union भग० २५, ७;

असंप्रग्रह पुं० ( असम्प्रग्रह-समन्तात् प्रकर्षेण  
 जात्यादिप्रकृतलक्षणेन ग्रहणमात्मनोऽवधारणं  
 सम्प्रग्रहः, तदभावोऽसम्प्रग्रह ) अति  
 आदिना मदनो अभाव. जाति आदि के मद  
 का अभाव. Absence of pride of  
 caste etc ठा० ८,

असंप्रगृहीत त्रि० ( असंप्रगृहीत ) मान-मद  
 रहित मान रहित Free from pride  
 or conceit दसा० ४, १२, १३; १४,

असंप्रप्त त्रि० ( असम्प्राप्त ) असंलग्न-लागेल  
 नहि; वणगेल नहि न लगा हुआ, न मिला  
 हुआ. Not joined or attached राय०  
 ६३. ( २ ) प्राप्त नहि थयेल, न पड़ेयेल.  
 अप्राप्त; न पहुँचा हुआ not obtain-  
 ed, not reached. पञ्च० १; १६;

ओव० २२; नाया० १; १८, भग० ३,  
 २; ८, ६; ७; १४, १; ( ३ ) स्त्री आदिना  
 संगम थया पड़ेलानी कामनी दशा, स्त्रीनुं  
 चिन्तन-स्मरण वगेरे स्त्रीसङ्ग होने के पूर्व  
 को कामदशा; स्त्री का चिन्तन आदि.  
 mental condition of a lustful  
 person before the actual fruition  
 of desire, e g. meditating upon  
 a woman etc. प्रव० १०७७,

असंपहिद्व त्रि० ( असम्प्रहृष्ट ) पीलने पिच्छा-  
 रवाभां हर्ष वगरतो. दूसरे को धिक्कार देने में  
 हर्ष न करने वाला. Not rejoicing in  
 hating others. "अवग्गमये असंपहिद्वो  
 जे स भिक्खु" उक्त० १५, ३;

असंपुडिय त्रि० ( असम्पुटित ) परस्पर न  
 भणेल, अुद्धुं. परस्पर न मिला हुआ, खुला  
 हुआ. Not mutually attached or  
 joined. नाया० १; २;

असंपुराण त्रि० ( असम्पूर्णा ) अपूर्ण, सम्पूर्ण  
 नहि. अपूर्ण, अधूरा. Incomplete;  
 imperfect. नाया० १, भग० २५, ७;  
 प्रव० ५३५, पंचा० १४, ४८,

असंबद्ध त्रि० ( असम्बद्ध ) सम्बन्धरहित;  
 शब्दादि भोगमां सम्बन्ध विनातो; परिग्रह  
 आदिभमां अभूर्हित सम्बन्ध रहित; शब्दादि  
 भोग में विना सम्बन्ध वाला, परिग्रहादिक में  
 मूर्च्छा रहित. Not connected, not  
 attached to worldly possessions  
 and pleasures "मुहाजीवी असंबद्धो,  
 हविजा जगणिसिस्सिण्ण" दस० ८, २४; भग०  
 १२, ६; विशेष० २०८;

असंबुद्ध त्रि० ( असम्बुद्ध ) अ-नहि सम्बुद्ध-  
 सम्बन्धुवाणो; तत्त्ववेत्ता नहि, सम्बन्धु-  
 वाणो नहि; दाधारीगो समक रहित; ज्ञान  
 रहित; तत्वो को न जानने वाला. One

lightened; ignorant अंत० ६, १५,  
उत्त० १, ३;

**असंभंत.** त्रि० ( असम्भान्त ) भ्रमरहित,  
भ्रान्तिरहित भ्रम रहित. Free from  
delusion. कप्प० १, ५; दस० ४, १; ५,  
१, १, नाया० १, ८, ६; भग० २, ५; विवा०  
१, १, राय० ३३,

**असंभव** पुं० ( असम्भव ) न होतुं, असम्भा-  
वना असंभव, होने की आशा तक का अभाव  
Impossibility; impiobability पि-  
नि० भा० २०; नाया० ३,

**असंभवि** त्रि० ( असम्भविन् ) जेते क्षयरे  
पणु सम्भव न होय ते, शून्य जिसका कभी  
अस्तित्व न हो वह; शून्य Impossible  
at all times, non-existent. "जोया  
वीस असंभविणो " प्रव० १३१०, क० गं०  
४, ७१;

**असंमुच्छ्रिता** सं० कृ० अ० ( असमुच्छ्रित )  
उच्छेदन क्षया विना. विना उच्छेदन किये  
Without eradicating, without  
destroying सूय० २, ४, १०;

**असंमुच्छ्रिय.** त्रि० ( असम्मुच्छ्रित ) मूर्च्छा न  
पामेक्ष मूर्च्छा रहित, मोह रहित Not  
enticed, not infatuated भग० ७, १,

**असंमोह.** त्रि० ( असम्मोह ) जेते देवता  
वगेरेनी मायाथी मोडु लागे नहि ते. देवादिक  
की माया से मोहित न होने वाला ( One )  
not thrown into delusion by  
the supernatural powers of  
gods etc ठा० ४, १, भग० २५, ७;  
( २ ) पुं० मूढताती अभाव, शुक्लध्याननु  
अेक्ष लक्षण मूढता का अभाव; शुक्लध्यान  
का एक लक्षण absence of delusion,  
a mark of pure concentration.  
श्लोव० २०;

**असंमोहय.** त्रि० ( असम्मोहक ) उपयोगशून्य;  
अनुपयुक्त. उपयोग शून्य, उपयोग रहित.  
Devoid of attention towards  
the soul भग० ६, ६;

**असंलप्य** त्रि० ( असंलप्यं ) ज्योती न शक्य  
तेतुं; वाणीगोचर न थाय तेतुं कहा न जा  
सकने वाला, वचनातीत Inexpressible;  
incapable of utterance. अणुजो०  
१५०;

**असंलोक्य-य.** पुं० ( असंलोक ) अप्रकाश-  
प्रकाश का अभाव. Absence of light;  
darkness आया० २, १०, १६७, ( २ )  
त्रि० अप्रकाशवाणुं, अधारावाणु प्रकाश  
रहित स्थान, अंधेरा वाला dark, full of  
darkness आया० २, १०, १६७, ( ३ )  
न० न्या इर रडेल माणुसनी नरर न पडे  
तेतु स्थग ऐसा स्थान, जो दूरी पर के मनुष्य  
को न दिख सके. a place not within  
range of sight from a distance.  
उत्त० २४, १६; प्रव० ७१६,

**असंघट्टया** स्त्री० ( असम्घट्टता ) अरस परस  
अनायाध्याणुं, अर्थात् अेक्ष क्रिया पीछ  
क्रियाने आधा-विघ्नरूप यथा न पामे ते.  
परस्पर कृतवाधा रहितता, अर्थात् एक क्रिया  
का दूसरी क्रिया को बाधा रूप न होना.  
Non-collision of one per-  
formance with another;  
harmony. विशेष० ३०७१;

**असंवर.** पु० ( असवर-सवरणं सवर, न  
संवरोऽसंवरः ) आश्रव, संवरती अभाव  
आश्रव; सवर का अभाव. Absence of  
stoppage of karma, influx of  
Karma. " पंचविहे असवरे परणत्ते, तं-  
जहा-सोइन्द्रियअसंवरे " ठा० ५, २; " छविहे  
असंवरे परणत्ते, तंजहा-सोइन्द्रियअसंवरे  
फासइन्द्रियअसंवरे " ठा० ६;

असंबलिय. त्रि० ( असंबलित ) न वण्डेन  
न मोड-वल्याकार किया हुआ Not  
curved or bent. तंडु०

असंबिग. त्रि० ( असंबिग्न-न संबिग्नोऽसंबि-  
ग्न ) शिथिल आचारवाणा; पासत्था आदि  
शिथिल आचार वाला. Lax in spiritual  
discipline, Pāsattthās etc  
प्रव० ७१७,—पक्खिय. पु० ( -पाक्षिक )  
सुसाधुनी लुगु'सा डरनार, पासत्था आदिने  
पक्षपाती सुसाधु की जुगुप्सा-निन्दा करने वाला  
( one ) who is partial to well  
behaved Sādhus etc प्रव० ७१७;

असंबिभाग पुं० ( असंबिभाग ) संबिभागने  
अभाव, सरभा भाग न पाडवा ते, सबिभाग-  
समान भाग का अभाव Unequal divi-  
sion दस० ६, २, २३;

असंबिभागी पु० ( असंबिभागीन् ) आहार-  
दिक्का सरभो भाग न डरनार, भीजनी  
साथे विपमता राखनार. आहारादिक में एक  
समान भाग न करने वाला ( One ) not  
dividing equally, e g food etc  
“ असंबिभागी न हु तस्स मोक्खो ” दस०  
६, २, २३, उक्त० ११, ६;

असंबुड त्रि० ( असंबुड ) पापना निरोध-  
रहित छद्रियनिग्रहथी रहित, जेणे आश्रयना  
दार रोड्या नथी ते पाप के विरोध से रहित,  
इन्द्रियनिग्रह से रहित; आश्रव के द्वारों को न रोकने  
वाला Unrestrained in senses,  
( one ) who has not stopped  
the gates of Āsrava. भग० १, १;  
७, १; २, ८, १६, ६, ओव० ३८; ( २ )  
अशुश-नियंदातो अेड प्रधार. लोड न्दणे तेवी  
रीते प्रगटपणे दोष लगाडी संयमने भलीन  
डरे ते 'बकुशनिचज्ज' दोष का एक प्रकार,  
जिनमें कुलनखुल्ला दोष लगाकर संयम को

मलिन किया जाय an ascetic who  
sullies his right conduct openly,  
a variety of Bakuśa Niyan-  
ga. प्रव० ७३१,—वउस. ( -बकुश )  
प्रगट रीते दोष लगाडनार साधु प्रकटतया  
दोष लगाने वाला साधु. an ascetic  
openly ( shamelessly ) incurring  
sin ठा० ५, ३, भग० २५, ६,

असंसट्ट त्रि० ( असंसट्ट ) भीजना पिंड-आहारमां  
नहि भगेजुं दूनरे के आहार में नमिला हुआ  
Not mixed up with another's  
food वेय० २, १३; ( २ ) नहि भरडाअेल,  
नहि लेपाअेल न लिगा हुआ not  
bedaubed; not smeared ओव०  
१६, दस० ५, १, ३५,—चरअ-य. पुं० स्त्री०  
( -चरक ) विना भरडाअेल हाथे अपाय तेज  
लेजुं अेवी गवेण्णा डरनार, अलिग्रहविशेष-  
धारी साधु विना लिपे हुए हाथों से लेने की  
प्रतिज्ञा करने वाला साधु; अभिग्रहविशेषधारी  
साधु a Sādhu who has made up  
his mind to accept only that  
( food ) which is given with  
an unsmeared hand ओव० १६,  
असंसट्टा. स्त्री० ( असंसट्टा ) हाथ तथा पात्र  
न अग्रय तेवी रीते शिक्षा लेवी ते, पिण्डे-  
प्रणतो पडेदेो प्रधार. इस प्रकार से भिक्षा  
लेना जिससे हाथ तथा पात्र लिप्त न हो, पिण्ड-  
पणा का पहिला भेद. Accepting food  
without smearing the hand or  
the alms-bowl, the first point  
of carefulness in begging food  
प्रव० ७४६;

असंसख न० ( आसंसन-आसंसख ) विनाश.  
विनाश Destruction, ruin पण्ह० १, ३,

असंसक्त त्रि० ( असंसक्त ) ससर्ग-संयंघ-परिग्रह-रहित सम्बन्ध रहित, जान पहिचान रहित Having no contact or connection. उक्त० २, १६, २५, २७, ( २ ) अप्रतिषिद्ध, आसक्ति-भ्रमत्वरहित आसक्ति रहित; ममत्व विना का. unattached to worldly things दस० ५, १, २३, २२, परह० २, ३,

असंसार. पुं० ( असंसार ) संसारतो अभाव, मोक्ष ससार का अभाव, मोक्ष. Absolution; salvation. भग० १, ८; जीवा० १, —समावर्ण पु० (—समापन्न-न ससारोऽसंसारो मोक्षस्त समापन्नोऽसंसारसमापन्न. ) ससारविन-मोक्ष पाभेद एव, मुक्त एव, सिद्ध मोक्ष गया हुआ जीव, मुक्त जीव, सिद्ध. a liberated soul पन्न० १, ठा० २, १,

असंस्कृत त्रि० ( असंस्कृत-न विद्यते संस्कृतं संस्कारो यस्य सोऽसंस्कृत ) संस्कार-रहित संस्कार रहित Unrefined, unenlightened. परह० १, १, —मसंस्कृत त्रि० (—असंस्कृत ) अत्यन्त संस्काररहित, मुद्दल संस्कार धरनुं सर्वथा संस्कारों से रहित altogether unrefined or unenlightened परह० १, ४,

असंकार पुं० ( असंकार ) असत्कार, अनादर, अपमान अपमान, अनादर Insult, disrespect (२) त्रि० सत्काररहित सत्कार रहित full of disrespect भग० १५, १,

असंकारित त्रि० ( असंकारित ) अनादर कराने, सत्कार न कराने अनादर पाया हुआ, सत्कार न पाया हुआ Dishonoured, disrespected निर० १, १,

असंकारिय त्रि० ( असंकारित ) सत्कार न देकर सत्कार न किया हुआ Disrespected, dishonoured नाया० १६,

असंकारिय स० कृ० अ० (—असत्कार्य-असत्कृत्य) सत्कार न कराने; अनादर कराने, असत्कार कराने सत्कार न करके, अनादर करके Having dishonoured or disrespected. नाया० ८,

असंक्रिया स्त्री० ( असंक्रिया ) भोटी क्रिया; भ्रष्ट यज्ञ दुष्ट चेष्टा, खराब क्रिया A wrong action; a wicked action पचा० १०, १०, —रहित त्रि० (—रहित) भोटी क्रिया-पापना व्यापारही रहित खराब क्रिया-पाप के व्यापार से रहित free from sinful actions पचा० १३, ४१,

असंग्रह पु० ( असंग्रह ) भोटी आग्रह, दुर्ग्रह, आप्त वचनही आधारित अश्रेय आश्रयतो पशु पदा अर्थवो ते दुराग्रह, आप्त वचन से आवित विषय का भी पक्ष लेना Perverseness, obstinately maintaining things proved to be false by the words of competent authorities. विशेष० २३८३, पचा० १, ३,

असंग्रह त्रि० ( असंग्रह ) न प्रशंसा योग्य; श्लाघा न करवा योग्य प्रशंसा न करने योग्य Unworthy of praise विशेष० २५७८,

असच्च त्रि० ( असत्य ) मिथ्या-भोटी; निष्फल, परिणामशून्य मिथ्या, झूठा; निष्फल, परिणाम रहित Futile, false “ कोह असच्च कुव्विजा ” उक्त० १, १४, ( २ ) न० असत्य लुट असत्य, झूठ falsehood, lie. भक्त० ६७, सम० १३, परह० १, २, —मरणजोग पु० (—मनोयोग-नास्ति जीव एकान्त-सदभूतो विश्वव्यापी-त्यादिकुविकल्पचिन्तनपरो मनोयोग ) मनमां भोटी रीते चिंतवन उच्यु ते; असंभूत के विपरीत पदार्थनुं चिंतवन उच्युं

ते. मन में मिथ्या चिन्तन करना, असद्भूत या विपरीत पदार्थ का चिन्तन करना. false and perverse thought-activity. क० गं० ४, २७;—**वद्भजोग. पुं०** (—वाग्योग) असत्य-मिथ्या वचनयोग-वचनव्यापार; वचनयोगतो अेक भेद. असत्य वचनयोग-असत्य वचनव्यापार; वचनयोग का एक भेद. false speech-activity; a false speech; a variety of speech-activity. क० गं० ४, २७;—**वाइ. त्रि०** (—वादिन्) असत्य भोक्षनार. असत्य बोलने वाला a liar. दसा० ६, ८;—**संघत्तण. न०** (—सन्धत्व) असत्य संकेत; लुटुं २६ भुं नाम. असत्य सङ्केत; भूठ का २६ वाँ नाम. the twenty-sixth variety of falsehood, a false Sanketa. परह० १, २;

**असच्चमोस. त्रि०** ( असत्यमृपां-नारित सत्यं मृपा च यत्र तदसत्यमृषम् ) सत्य नहि तेम असत्य पणु नहि तेनुं; व्यवहारमात्र सत्यता और असत्यता रहित. Neither true nor false; practical standpoint. विशेष० ३७५; दस० ७, ३;—**भासा स्त्री०** (—भाषा-न विद्यते सत्यं मृपा च यत्र सा चासौ भाषा चासत्यमृषाभाषा) सत्य नहि तेम असत्य नहि अेवी भाषा, व्यवहारभाषा. सत्यता और असत्यता रहित भाषा, व्यवहारभाषा. speech which is neither true nor false; practical speech. भग० १६, ८;—**मणजोय. पुं०** (—मनोयोग) सत्य नहि तेम असत्य पणु नहि अेवी व्यवहार-मनो योग-मनतो व्यापार, मनोयोगतो अेक भेद सत्यता और असत्यता रहित मनोव्यापार; मनोयोग का एक भेद practical thought-activity neither wholly true nor wholly false; conventional

thought भग० २५, १; सम० १३; क० ग० ४, २७,

**असच्चमोसा. स्त्री०** ( असत्यमृपा ) सत्य नहि तेम असत्य नहि अेवी भाषा, व्यवहार भाषा सत्यता और असत्यता से रहित व्यवहार भाषा Language which is neither wholly true nor wholly false; practical speech; conventional speech. उक्त० २४, २०;

**असच्चा स्त्री०** ( असत्या ) असत्य भाषा असत्य भाषा. False, untruthful speech प्रव० ८६७;

**असच्चामोस त्रि०** ( असत्यमृपा ) लुओ " असच्चमोस " शब्द देखो " असच्चमोस " शब्द. Vide 'असच्चमोस'. भग० १६, ८;—**भासा. स्त्री०** (—भाषा) व्यवहार भाषा व्यवहार भाषा, सत्य और असत्य रहित भाषा conventional speech; language which is neither wholly true nor wholly false. भग० १६, ८;—**मणजोय. पुं०** (—मनोयोग) लुओ " असच्चमोसमणजोय " शब्द. देखो असच्चमोसमणजोय " शब्द. vide "असच्चमोसमणजोय." भग० २५, १;—**मणनिव्वत्ति स्त्री०** (—मनोनिव्वत्ति) न सत्य तेम न असत्य अेवा मनना व्यापारती निव्वत्ति. सत्यता और असत्यता रहित मनोव्यापार की निव्वत्ति conventional thought neither wholly true nor wholly false. भग० १६, ८;—**मणप्पत्रोग पुं०** (—मनःप्रयोग) लुओ " असच्चमोसमणजोय " शब्द देखो " असच्चमोसमणजोय " शब्द. vide "असच्चमोसमणजोय". भग० ८, १, सम० १३;—**वद्भजोय. पुं०** (—वाग्योग) व्यवहार वचनतो योग-प्रवृत्ति, वाग्योगतो अेक भेद.

सत्याऽसत्य वचनव्यापार; वचनयोग का एक भेद practical, conventional thought-activity neither wholly true nor wholly false भग० २५, १,

**असच्चामोसा.** स्त्री० (असत्यमृषा) लुभो "असच्चमोसा" श०६. देखो "असच्चमोसा" शब्द. Vide "असच्चमोसा" "जं शोव सच्चं शोव मोसं शोव सच्चमोस असच्चामोसं शाम तं चउत्थं भासज्जातं" आया० २, ४, १, १३३, भग० १३, ७, १६, २, १८, ७, पञ्च० ११,

**असज्जमाण** व० कृ० त्रि० ( \* असज्जमाण-असज्जत् ) रक्त न थतो, संगे न डरतो सग न करता हुआ, अनुरक्त न होता हुआ Remaining unattached, free from attachment "ते कामभोगेषु असज्जमाणा, माणुस्सएसु जे यावि दिव्वा" उक्त० १४, १४, १४, ६, ३२, ६;

**असज्जम्** त्रि० (असाध्य) असाध्य, अशक्य, साधी न शक्य अथुं असाध्य, सिद्ध न हो सकने वाला Impossible to be accomplished विशे० २५६; सु० च० ६, ४०;

**असज्जभाअ.** पुं० (अस्वाध्याय) स०अ-यने अभाव. स्वाध्याय-शाल के पठन पाठन का अभाव. Absence of the study of Śāstras वव० ७, १२, १३, निसी० १६, १४, १५;

**असज्जभाइअ.** न० (अस्वाध्यायिक-आ मर्यादया सिद्धान्तोक्तन्यायेन पठनम् आध्याय, सुष्ठु शोभन आध्यायः स्वाध्याय स एव स्वाध्यायिकं नास्ति स्वाध्यायो यत्र तदस्वाध्यायिकम्) स०अयने अटकावनारा डारणो; लोही, परू, मांस वगैरे, पत्रीस अस०अयना डारणोमांनु गमे ते अेक. स्वाध्याय को रोकने वाला कारण, लोही, मांस वगैरह, वत्तीस अस्वा-

ध्याय के कारणों में से कोई एक कारण Any one of the thirty-two obstructions to the study of Śāstras; flesh, blood, puss etc. डा० ४, २, १०, प्रव० १४८१; आव० ४, ७,

**असठ** त्रि० (अशठ) शङ्कारहित; स०अन; रागद्वेषरहित, शुद्ध अंत डरलुवाणो सज्जन; रागद्वेष रहित, शुद्ध अन्त करण वाला (One) not a rogue or a rascal, (one) of pure heart सु० च० १, ६०, पिं० नि० ३६६, विशे० ३४१०, प्रव० ७८५; १३७०,

**असण** न० (अशन) भोजन, पोराड, अन्न; आधानुं भोजन Food दस० ५, १, ४७; ५०, ५७; १०, १, ८, उक्त० २, ३, ३२, १२; राय० २६२; आया० १, ७, १, १६७, २, ११, १७०, पिं० नि० १३४; १६०, ६५०; परह० २, १, भग० २, १, ५, ७, १, पञ्च० १, सम० २१, ३३, वेय० १, १६, नाया० १; ५; १६, कप्प० ४, ८२, प्रव० १३५; पचा० ५, २५, (२) भीयडानुं अड एक विशेष प्रकार का वृक्ष a kind of tree. उक्त० ३४, ८,—पाण. न० (-पान) अन्न पाणी. अन्नजल. food and water दस०६, ५०; —वण न० (-वन) अशन-भीयडाना अडनुं वन एक विशेष जाति के वृक्षों का वन. a forest of Aśana trees भग० १, १;

**असणक.** पुं० (अशनक) भीयडानुं अड एक जाति का वृक्ष. A kind of tree ओव०

**असणि** पु० (अशनि) वज्र; इन्द्रने आयुध. वज्र, इन्द्र का आयुध India's thunderbolt, उक्त० २०, २१; (२) आडाशमांथी भरते अग्निने डणु आकाश से गिरता हुआ अग्नि का कण. particles of fire dropping from the sky. पञ्च० १;



( ३ ) विशेष. विशेष. particularity  
सू० प० २०;—मेह. पुं० (—मेघ ) इशतो  
वरसाद ओलों की वर्षा a shower of  
hail भग० ७, ६;

असली. स्त्री० ( अशनी ) अलेन्दना लोडपाण  
सोमनी योथी पट्टराणी बलेन्द्र के लोकपाल  
सोम की चौथी पट्टरानी The fourth prin-  
cipal queen of Soma the Loka-  
pāla of Balendra भग० १०, ५, ठ०  
४, १; ( २ ) वैरोचनेन्दनी योथी पट्टराणी  
वैरोचनेन्द्र की चौथी पट्टरानी. the fourth  
principal queen of Vairocha-  
nendra भग० १०, ५;

असरीण पुं० ( असंज्ञिन् ) मननी संज्ञारहित  
शुच मन रहित जीव; असंज्ञी. A soul  
devoid of consciousness of  
mind. ठा० २, २; पञ्च० १७, भग०  
१, २, ७, ७, ८, २; २४ १; ३६, १; क०  
ग० ४, ३५;—आडय न० (—आयुष्क )  
असंज्ञिये आधिपतुं परलयनं आयुष्य—आडिभुं.  
मन रहित जीव द्वारा वाधा हुआ परभव का  
आयुष्य. period of life for the  
next birth incurred by a soul  
without mind-consciousness  
भग० १, २,—पंचिन्द्रिय पुं० (—पञ्चेन्द्रिय)  
असंज्ञी पंचेन्द्रिय शुच. संभूर्द्धिम मनुष्य,  
संभूर्द्धिम तिर्य्य वगेरे मन रहित पंचेन्द्रिय  
जीव. a soul having five senses but  
without mind-consciousness  
भग० २५, १, ३६, १;—मणुस्स पुं०  
(—मनुष्य ) मन विनाता—संभूर्द्धिम मनुष्य.  
मन रहित सम्भूर्द्धिम मनुष्य a Sammū-  
rchhima human being devoid of  
mind भग० २४, १; २०;—सुय. न०  
(—द्वन्द्व ) मिथ्यादृष्टिं श्रुत—शास्त्र. मिथ्या-

दृष्टि का शास्त्र. a heretical Śāstra  
नंदो.

असरिणभूय. त्रि० ( अज्ञीभूत ) मिथ्या-  
दृष्टि. मिथ्यादृष्टि. Heretical; having  
a false faith ( २ ) असंज्ञि—मनरहित  
तिर्य्य पंचेन्द्रिय वगेरे मन रहित तिर्य्यच पंच-  
न्द्रिय वगैरह. devoid of mind, e. g.  
animals with five senses. भग० १, २;

असरिणहिसंचय पुं० ( असन्निधिसञ्चय )  
नेनी पासे वासी भावानुं नथी ते; सदा  
ताशुं आनार, जुगलिया मनुष्य जिसके  
पास वासी भोजन आदि न हो वह जुगलिया  
का मनुष्य. One who always eats  
fresh food, e. g. Jugaliyā जं० प०

असर्ति अ० ( असकृत् ) जुथो ' असई '  
शब्द देखो ' असई ' शब्द Vide ' असई.'  
भग० २, ३; ११, १; उत्त० ५, ३, १२, ७,

असतो. अ० ( अस्वत्स् ) अस्व—परमतभाः  
पर मत से. In another faith; not  
in one's own faith सूय० २, ६, १२;

असत्त त्रि० ( अशक्त ) अशक्त, शक्ति वगरनु;  
सामर्थ्य वगरनुं शक्ति रहित, सामर्थ्य रहित.  
Incapable; powerless उत्त० १३,  
३२; पिं० निं० ६६४, विशे० २२६३;

असत्त त्रि० ( असक्त ) निःसग, अनासक्त  
अनासक्त; परिग्रह रहित निर्माही Free  
from attachment "जे असत्ता पावेहि  
कम्मोहि ' आया० १, ५, २, १६७,

असत्त न० ( असत्त्व ) पारस्पर्ये अवि-  
द्यमानपणुं, जेम—भाटीनु सुवर्णरूपे असत्त्व,  
सुवर्णनुं भाटीनुपे असत्त्व दूसरे की  
अपेक्षा अस्तित्व की अभाव, जेम सुवर्ण  
की अपेक्षा नहीं का और मटी को अपेक्षा  
सुवर्ण का अभाव Mutual non-exist-

ence, e g of earth in gold and  
of gold in earth. नदी०

असत्थ न० ( अशस्त्र ) निरवध-निर्दोष आ-  
चाररूप सञ्जम निर्दोष आचाररूप सयम  
Asceticism consisting in fault-  
less conduct. आया० १, ३, ३, १२४,  
(२) अग्नि आदि शस्त्रतो अलाव अग्नि आदि  
शस्त्र का अभाव absence of weapons  
such as fire etc आव० ६, १०, दस०  
५, २, २३,—परिणय त्रि० (-परिणत)  
अग्नि आदि शस्त्रथी परिणाम न पायेल,  
अयेत थयेल नहि सयेत वस्तु अग्नि आदि  
शस्त्रो से परिणाम ( विचार ) न पाया हुआ,  
सचित्त a living, sentient thing  
not deprived of life by fire  
etc दस० ५, २, २३, नाया० ५, भग०  
१८, १०,

असत्थामा पु० ( अश्वत्थामा ) अश्वत्थामा  
नामे अश्वत्थामा अश्वत्थामा नामक या-  
दवकुमार Aśvatthāmā of Yādava  
family नाया० १६,

असदारंभ पु० ( असदारम्भ ) हिंसाकारक-  
कृषि आदि आरंभ खोटा आरंभ An evil  
activity ( such as agriculture  
etc. involving killing ) पचा० ४,  
४३,—एवत्त त्रि० (-प्रवृत्त ) जेती आदि  
आरंभमा प्रवृत्त थयेल खोटे आरंभो मे  
लगा हुआ ( one ) engaged in an  
evil activity, e g agriculture  
etc पचा० ४, ४३,

असद् त्रि० ( अशब्द ) शब्दरहित शब्द  
रहित Speechless, wordless भग०  
५, ७,

असद्दहण न० ( अश्रद्धान ) निगोद आदिनी  
हुडीकत उपर लरोसे न राभवे ते, अश्रद्धा,  
अविश्वास निगोद आदि के वर्णन पर श्रद्धा

न रखना, अविश्वास, अश्रद्धा. Want of  
trust, lack of faith in the  
account given about Nigoda  
etc पंचा० १५, ३४,

असद्दहमाण व० कृ० त्रि० ( अश्रद्धान-अश्र-  
द्धत् ) श्रद्धा न करतो-राभतो श्रद्धा न रखता  
हुआ Not putting faith in भग०  
३, १, ६, ३३, ११, १२, १५, १, नाया०  
१२, १५, १६, उवा० २, ११३,

असद्दहाण त्रि० ( अश्रद्धत् ) श्रद्धा न  
राभतो श्रद्धा न रखता हुआ. ( One )  
having no faith in प्रव० ८२३,

असद्देय त्रि० ( अश्रद्धेय ) श्रद्धा करवा ये ज्य  
नहि श्रद्धा न करने योग्य Unworthy  
of faith, incredible नाया० १४;

असन्नि त्रि० ( असंजिन् ) ज्यो ' असरिण '   
शब्द देखो " असरिण " शब्द Vide  
' असरिण ' भग० ६, ३, ३१, १, ठा० २, ३, क०  
प० १, ६८, क० गं० ३, २४,—पंचिन्द्रिय  
पुं० (-पञ्चेन्द्रिय ) मन विनाना पाय पञ्चिन्द्रिय  
वाला ज्य. असन्नि पञ्चेन्द्रिय जीव a liv-  
ing being with five senses but  
having no mind. क० ग० ४, ५,

असवल त्रि० ( अशवल ) २१ सयणी  
दोषथी हर रहेनार, आरित्रना अतिचार टाणी  
शुद्ध संयम पाणिनार २१ शवल दोषों से  
दूर रहने वाला, अतिचार रहित शुद्ध चारित्र  
का आराधक One avoiding twenty-  
one Śābala faults, ( one ) lead-  
ing an ascetic life avoiding  
violations of the rules of right  
conduct ठा० ५, ३, परह० ३, १;  
भग० २५, ७,—आचार. पुं० (-आचार )  
विशुद्धाचार; निर्दोष आरित्र. शुद्धाचार, निर्दोष  
चारित्र faultless, unblemished  
conduct वव० ३, ३,

**असम्भ.** त्रि० ( असम्भ्य ) असम्भ्य; विवेकरहित.  
असम्भ्य; विवेक शून्य Impolite. ओव०  
—वयण न० (—वचन) असम्भ्य वचन;  
विवेकरहित वाक्य; दुर्वचन असम्भ्य वचन,  
दुर्वचन, खराब वचन. impolite words.  
“ असम्भवयणेहिं य कलुणाविवञ्छदा ”  
दस० ८, २; ६, २, ८;

**असम्भाव.** त्रि० ( असद्भाव ) आकाशकुसु-  
मनी पेठे असद्भाव—पर्याय, न अनेल अनाव  
आकाश कुसुम के समान पदार्थ के अस्तित्व का  
अभाव A non-existing thing, e. g.  
a sky-flower. जीवा० ३, १, ओव० ४१;  
अणुजो० १५१, क० प० ५, २४,—उच्चा-  
वणा स्त्री० (—उच्चावना) असत् पदार्थनु  
प्रतिपादन करणु ते असत् पदार्थ का प्रतिपादन  
करना. act of propounding false,  
non-existing things. नाया० १२,  
भग० ६, ३३;—ठवणा स्त्री० (—स्थापना) ते  
आधार न होय उता तेमा तेनी स्थापना  
करवी ते; जेम लाडलीने घोडे अनावणे—  
घोडानी इत्पना करवी ते. वह आकार न होने  
पर भी उसमें उसकी स्थापना करना, जैसे  
लकड़ी का घोड़ा बनाना अथवा लकड़ी के डंडे  
में घोड़े की कल्पना करना imagining  
a thing to be that which it is  
not, e. g. to imagine a stick to  
be a horse. अणुजो० १५१;—पञ्च  
पुं० (—पर्यव) पर पर्यायनी अपेक्षाये अस-  
दरूप पर्याय पर पर्याय की अपेक्षा से असद्  
रूप—नास्तिरूप पर्याय. false from the  
standpoint of the higher form  
of modification. भग० १२, १०;  
—पठवणा स्त्री० (—प्रस्थापना) असत्  
अर्थनी इत्पना. असत् अर्थ की कल्पना  
imagining a false, non-existent  
meaning or thing. भग० ११, १०;

**असम्भावणा.** स्त्री० ( असद्भावना ) असत्य  
भावना असत्य—मूठ भावना. Medita-  
tion on an unreal thing.  
भग० १५, १,

**असम्भूय** न० ( असद्भूत—न सद्भूतमसद्-  
भूतम् ) असत्य, लुप्त. असत्य; मूठ Un-  
truth; falsehood. भग० ५, ४; ६;

**असमंजस** त्रि० ( असमंजस ) असंगत;  
अधटित, अशोभन असंगत; अधटित  
Unbecoming, improper; un-  
graceful. उक्त० ४, ११, आया० १, ६, १,  
१७२, गच्छा० ७३;—चेष्टिय न० (—चेष्टित)  
अधटित चेष्टा करवी ते, प्राणीने वध आदि.  
अयोग्य चेष्टा का करना; प्राणी का वध आदि.  
improper action, e. g. killing  
etc. पंचा० १, ४८;

**असमण.** पुं० ( अश्रमण ) असाधु, साधु  
नहिं असाधु; साधुत्व का अभाव. One, not  
a Sādhu. “ गंतुं ताय पुणो गच्छे, ण य  
तेणासमणो सिया ” सूय० १, ३, २, ७;  
—पाउग्ग त्रि० (—प्रायोग्य) साधुने आथ-  
रवा योअ नहिं. साधु के आचरण न करने  
योग्य. unworthy of practice for  
an ascetic निसी० ८, १;

**असमणुच्च.** त्रि० ( असमनोज्ञ ) अनिष्ट.  
अनिष्ट; हानिकारक Evil. ठा० ४, १; ( २ )  
शाक्यादि ३६३ पापंडी. शाक्यादि ३६३  
पापंडी. the 363 heretics like  
Śākya etc आया० १, ६, १, २;

**असमत्त.** त्रि० ( असमाप्त ) अपूर्ण, अपर्याप्त.  
अधुरा. अपूर्ण; अपर्याप्त; अधूरा. Incom-  
plete. क० गं० ५, ५४; क० प० १, १५;  
६६, प्रव० ६२६; ( २ ) असमाप्त विधि.  
अधुराविधि. incomplete ceremony.  
वद० ४, ११; पंचा० ११, २७;—कप्प. पुं०

(-कल्प) अपूर्ण विधि. अधूरी विधि. incomplete ceremony. पचा० ११, २७;

**असमत्त.** न० ( असम्यक्त्व-न सम्यक् असम्यक् तस्य भावस्तथा ) असम्यक्पणु, सम्यग् नहि. सम्यक्त्व का अभाव; यथार्थता का नहोना The quality of not being right. सूय० १, ८, २२,--दांसि. त्रि० (-दर्शिन) सम्यग्दर्शी नहि; मिथ्या दर्शनी मिथ्यादृष्टि, असत्य दर्शनों को मानने वाला ( one ) having wrong belief, ( one ) who does not see things rightly. सूय० १, ८, २२;

**असमत्थ** त्रि० ( असमर्थ ) असमर्थ; अशक्त; डरडी आंभथी पणु पीनार. अशक्त; कमजोर, कहीं नजर से भी डर जाने वाला. Feeble; weak, timid. सूय० नि० १, ४, १, ६१,

**असमय.** पुं० (\*असमय-असम्यक्) असम्यग् आचार, लुठतुं पथीसमु नाम खराब चालचलन; झूठ का पच्चीसवाँ नाम Bad conduct; 25th name of falsehood. परह० १, २,

**असमाण.** त्रि० ( असमान ) असाधारण, सर्वोत्कृष्ट असाधारण; सब से श्रेष्ठ Extraordinary, the best or highest of all " असमाण चरे भिक्खु " उक्त० २, १६,

**असमाणिय** त्रि० ( असन्मानित ) जेतो सन्मान नथी थये ते, तिरस्कृत जिसका सन्मान नहीं हुआ वह, अपमानित Hated, unhonoured नाया० १६, निर० १, १,

**असमारंभ.** पुं० ( असमारम्भ ) समारंभतो अलाव, श्रवणी हिंसा न करती ते. समारम्भ

का अभाव; जीव की हिंसा न करना Absence of killing or injuring sentient beings "सत्तविहे असमारंभे परणत्ते, तंजहा-पुढवीकाइयअसमारंभे जाव अजीवकायअसमारंभे " ठा० ७;

**असमारंभमाण** व० कृ० त्रि० ( असमारम्भ-माण ) समारंभ न करतो समारंभ न करता हुआ Not killing or injuring sentient creatures. ठा० ५, २; भग० ३, ३; ८, १;

**असमाहड** त्रि० ( असमाहृत ) अशुद्ध, शुद्धि-थी रहित शुद्धि रहित, अशुद्ध. Impure, full of dirt. " कितिगिच्छसमावणणेणं अप्पाणोणं असमाहडाए लेस्ताए " आया० २, १, ३, १८, (२) स्वीकार नहि, ग्रहण नहि करेन. स्वीकार न किया हुआ, ग्रहण न किया हुआ not accepted or taken. सूय० २, २, २०,

**असमाहि** पुं० ( असमाधि ), समाधिथी विपरीत; मोक्षमार्गथी विपरीत मार्ग-असमाधि, चित्तनी अस्वस्थता समाधि से विपरीत, मोक्ष मार्ग से विपरीत मार्ग; चित्त की अस्वस्थता. Distraction of mind, lack of concentration of mind opposed to the path of salvation 'दसविहा असमाही परणत्ता, पाणाइवाए' ठा० १०, सूय० १, २, २, १८, उक्त० २७, ३; सम० २०,—कर त्रि० (-कर) असमाधि-चित्तनी अस्वस्थता करनार अममाधि-चित्त की अस्वस्थता करने वाला. causing distraction of mind. नाया० १६; परह० २, ३,—कारअ. त्रि० (-कारक) पोताने अथवा पीजने असमाधि उपलवणार. अपनी अथवा दूसरे की अममाधि-चित्त की अस्वस्थता उत्पन्न करने वाला. ( one )

causing distraction to himself or others दसा० १, २; २१; २२;—द्वारा त्रि० (-स्थान) असमाधिना २० स्थानक. असमाधि के २० स्थान. the twenty causes or sources of distraction of mind परह० २, ५; ठा० १०; दसा० १, ३, आव० ४, ७;—पक्ष. त्रि० (-प्राप्त) असमाधिने पाभेक्ष. असमाधि पाया हुआ (one) who has not got a concentrated, peaceful mind. "असमाहिपत्ता कालमासे कालं किञ्चा" उवा० ८, २५५;—मरण. न० (-मरण) आक्षमरण. बालमरण. premature death, death in infancy. आउ०—मरणउभ्कारण. न० (-मरणध्यान) 'सामो माणुस असमाधिमे' भरे अेम स्थितवुं ते, जेम पालक अलव्ये अंधकमुनिना संअंधमां स्थितवुं तेम किसी दूसरे मनुष्य का समाधि रहित मरण चितवन करना, जैसे पालक नामक अभव्य ने खंधक मुनि के सम्बन्ध में चितवन किया था act of meditating that a particular person may die in a distracted condition of mind; the Abhavya Pālaka, wished this sort of death to Khandhaka Muni आउ०

**असमाहिय** त्रि० (असमाहित) भीलत्स; लुं. वीभत्स; भयानक Indecent, obscene. सूय० १, ३, १, १०; (२) भोक्षमार्गरूप लाव समाधिथी दूर वर्तनार; शुभ अध्ववसायरहित. मोक्षमार्गरूप भाव-समाधि के अनुसार वर्ताव न करने वाला; शुभ अध्ववसाय रहित. devoid of the good thought-activity of meditation leading to salvation सूय० १, ३, ३, १३;

**असमिक्खिय** त्रि० (असमीक्षित) विचार्य विनानुं विना विचारा-सोचा हुआ Not properly thought of or considered. कप्प० ६, ५३;

**असमित** त्रि० (असमित) लुओ 'असमिय' शब्द देखो 'असमिय' शब्द. Vide "असमिय." पंचा० १६, १६;

**असमिति.** स्त्री० (असमिति) ओलवाभां, आलवाभां, वस्तु लेना, मुकना, के परक्यवाभां यत्ना (जतना) न राखी ते, समितिने अभाव. बोलने, उठने, चलने, वस्तु लेने, रखने अथवा परोसने में यत्नाचार का न रखना; समिति का अभाव. Carelessness in speech, movement, taking up and laying down things or in laying down the filth of the body. भग० २०, २;

**असमित्त** पुं० (अश्वमित्र) क्षणिकवादने माननार अश्वमित्र नामने योथो निहव. क्षणिकवाद को मानने वाला अश्वमित्र नामक चौथा निहव (मत प्रवर्तक). The fourth Nihava named Aśvamitra; a follower of the doctrine of Kṣaṇika-vāda विशे २३०१,

**असमिय** पुं० (असमित) ओलवा, आलवा, भावा, पीवा वगेरेमा उपयोगशु-य (शुय). बोलना. चलना, खाना, पीना इत्यादि में उपयोग न रखने वाला (जीव). A soul devoid of carefulness in speech, gait etc. परह० १, २;—कारि. त्रि० (-कारिन्) वगर विचार्युं करनार. विना विचारे करने वाला. (one) acting thoughtlessly or rashly. दसा० ६, ४,—प्लवाचि. त्रि० (-प्रलापिन्) वगर विचार्युं ओलनार विना विचारे बोलने

वाला. ( one ) speaking thoughtlessly or rashly. परह० १, २;  
—भासि. त्रि० (—भाषिन् ) विचार्या विना  
भोलनार विना विचारे बोलने वाला. (one)  
speaking thoughtlessly or  
rashly. परह० १, २,

**असमिय.** अ० ( असम्यक् ) अयुक्त अयोग्य,  
अयुक्त Improper, not right. 'अस-  
मियंति मरणमाणस्स एगदा समिया होइ  
समियंति मरणमाणस्स एगदा असमिया  
होइ" आया० १, ५, ५, १६३;

**असमिय** त्रि० ( अशान्त ) शान्त न थयेल  
अशान्त, शान्ति रहित. Not calmed,  
not quieted आया० १, २, ३, ८१, १,  
२, ६, १०४;—दुक्ख त्रि० (—दुःख )  
नेनुं दुःख उपशम्यं नथी ते, दुःखनी शान्ति  
वगरेना जिसके दुःख का उपशम न हुआ हो  
वह, दुखी ( one ) whose pain or  
misery is not subsided, ( one )  
still troubled with misery.  
आया० १, २, ३, ८१; १, २, ६, १०४,

**असमिया.** अ० ( असम्यक् ) सारं नहि;  
अथार्थ. अयथार्थ, अयुक्त. Improper,  
not right. भग० २, ५,

**असमुपत्तणपुच्च.** त्रि० ( असमुत्पन्नपूर्व )  
पूर्व उत्पन्न न थयेल जो पहिले उत्पन्न न हुआ  
हो वह. Not existing before,  
unprecedented. दसा० ५, १६, १८,  
१६, ७, १२;

**असमोहय** त्रि० ( असमवहत ) मृत्यु वभते  
समुद्घात कर्था विना अद्घुक्ता लडाकानी  
भाइक अेडी साथे ने एवना प्रदेश शरीरने  
छोडी परलोक तरक प्रयाणु करे ते, असमोहिया  
भरणे भरनार एव मृत्यु के समय में समुद्-  
घात किये विना बंदूक की आवाज के समान

एक साथ जिस जीव के प्रदेश शरीर को छोड़  
जाय वह; असमोहिया नामक मृत्यु से मरने  
वाला. Simultaneous departure  
of all the soul-particles from  
the body at the time of death;  
a soul thus dying भग० ११, १;  
१६, ३, २४, १;—मरण न० (—मरण )  
मृत्यु वभते समुद्घात कर्था विना अद्घुक्ता  
लडाकानी भाइक अेडी साथे एवना प्रदेश श-  
रीरने छोडी परलोक तरक प्रयाणु करे ते, अस-  
मोहय भरणे मृत्यु के समय समुद्घात विना  
किये बंदूक के भडाके के समान जीवप्रदेशों  
का एक साथ शरीर से निकल जाना; अस-  
मोहय नामक मरण death known as  
Asamohaya, simultaneous  
departure of all the soul-  
particles for good, from the  
body like the report of a gun.  
जीवा० १,

**असम्म** त्रि० ( असम्यक्—दृष्टि ) सम्यक् दृष्टि-  
रहित, समझित विनातो सम्यक्त्व विना का.  
Devoid of right faith क० प०  
२, ५६

**असम्मानिय** त्रि० ( असन्मानित ) सन्मान-  
रहित सन्मान रहित Not honoured  
or respected नाया० १, ८, १६, निर०  
१, १,

**असयं** अ० (अस्वयम्) पोताना विना खुदके  
विना, अपने विना. Not oneself, any  
body else than oneself. भग०  
६, ३२,

**असयारंभ** पुं० ( असदारंभ ) लुओ 'अस-  
दारंभ' शब्द. देखो 'असदारंभ' शब्द.  
Vide 'असदारंभ.' पचा० १, १७,

**असरण.** त्रि० ( अशरण ) आधाररहित;

शरणरहित. आधार रहित; शरण रहित. Helpless. ठा० ४, १; परह० १, १; विवा० ६; ( २ ) न० जेमां शरण-धर नथी ते, संयम. ऐसा संयम जिसमें शरण-घर न हो. houselessness; asceticism. 'सोगे अदक्खु एताइं सोउलाइं गच्छति णायपुत्ते असरणाए' आया० १, ६, १, १०; (३) अशरणु भावना; संसारमां धर्म सिवाय अन्य कोछ शरणु नथी जेम थितवुं ते 'संसार में धर्म के सिवाय कोई शरण नहीं' इस प्रकार चिन्तवन करना. the meditation that excepting right religion there is nothing to help the soul. प्रव० ५७६; —अणुप्पेहा व्ही० (-अनुप्रेक्षा) 'संसारमां जन्म भरणु वगेरेमां ज्वनु रक्षणु करनार धर्म सिवाय थिज्जुं कोछ नथी' जेम थितवुं ते, ज्वने जिन भगवान् सिवाय कोछ शरणु नथी जेवी भावना 'संसार और जन्म मरण से जीव की रक्षा करने वाला सिवाय धर्म के दूसरा कोई नहीं है' ऐसी भावना. meditation upon the soul's helplessness in the world ओव० २०; भग० २५, ७; ठा० ४, १, —भावणा. व्ही० (-भावना) 'भरणु समये अरिहंत देव सिवाय कोछ शरणु आये तेम नथी' जेम थितवुं ते, पार भावनामानी थिज्जु भावना. 'मृत्यु के समय अरिहंत देव के सिवाय दूसरा कोई शरण नहीं दे सकता' ऐसा चिन्तवन करना; वारह भावनाओं में से दूसरी भावना. the meditation that at the time of death nobody can afford any help or shelter to the soul except Arihanta, the second of the 12 Bhāvanās or meditations 'प्रव० १०६,

असरमाण. व० कृ० अ० (अस्मर्यमाण) न संलारातो; जेने सलारवामां न आवे ते. याद न किया जाता हुआ. (One) not being remembered वव० ४, १६;

असरिस त्रि० (असदृश) असमान; समान पणुथी रहित समानता से रहित. Dissimilar; not similar भग० १२, ६, परह० १, २;

असरीर. त्रि० (अशरीर) शरीररहित; सिद्ध. शरीर रहित, सिद्ध. Disembodied; a Siddha "असरीरा जीवघणा दंसणनाणोवउत्ता" भग० १७, २, १८, ४,—पडिबद्ध. त्रि० (-प्रतिबद्ध) सर्व उदारिठ आदि शरीररहित. औदारिक आदि शरीरों से रहित devoid of all kinds of bodies such as physical etc. भग० १६, ३,

असरीरि. पुं० (अशरीरिन्) शरीररहित ज्व, सिद्ध भगवान्. शरीर रहित जीव; सिद्ध भगवान्. A disembodied soul; a Siddha. भग० १, ७, २, १; १६, १; १८, १; जीवा० १०, ठा० ६, १;

असलेसा. व्ही० (अश्लेषा) अश्लेषा नक्षत्र. अश्लेषा नक्षत्र. The constellation Aśleṣā. सम० ६,

असवणया. व्ही० (\*अश्रवणता-अश्रवण) न सावणुं ते; श्रवणुने अभाव न सुनना; श्रवण का अभाव Not hearing, absence of hearing. सूय० २, ७, ३८; भग० १, ६;

असव्वराणु. त्रि० (असर्वज्ञ) असर्वज्ञ; ज्जमस्थ. असर्वज्ञ, ज्जमस्थ. (One) not omniscient, (one) in the stage of Chhadmastha. भग० १५, १;

**असह.** त्रि० ( असह ) असह-देवकु३ अने  
उत्तरकु३क्षेत्रना मनुष्यनी अेक जति. असह-  
देवकु३ और उत्तरकु३ के मनुष्योंकी एक जाति  
A species of human beings  
residing in Devakuru and  
Uttarakuru. जीवा० ३, ४,

**असहंत.** व० क० त्रि० (असहंत) सहन न करतो  
सहन न करता हुआ (One) not endur-  
ing. नाया० १७,

**असहण** न० ( असहन ) सहन न करतुं ते  
सहन न करना. Not enduring; non-  
endurance. नाया० ११;

**असहमाण.** व० क० त्रि० ( असहमान ) सहन न  
करतो; सहन न करता हुआ (One) not  
enduring. भग० ३, १, १६, २; नाया०  
१६;

**असहिज्ज.** त्रि० ( असाहाय्य ) सहायनी  
अपेक्षा-धृच्छा न करनार सहाय की इच्छा  
न करने वाला. ( One ) not wishing,  
expecting help. भग० २, २,

**असहु.** त्रि० ( असह-न सहत इत्यसह )  
चारित्रनु कष्ट सहन करवाने असमर्थ  
राजकुमारादि, तडलादि-सुकामलशरीरवाणो.  
चारित्र का कष्ट सहन करने मे असमर्थ  
राजकुमारादि; कोमल शरीर वाला. Deli-  
cate in body, ( one ) unable to  
endure the hardships of right  
conduct, e g. a prince etc. ठा०  
३, ३, औष० नि० भा० ६८,

**असहेज्ज.** त्रि० ( असाहाय्य-अविद्यमानं  
साहाय्यं परसाहायिकमत्यन्तसमर्थत्वाद् येषां  
त्वेऽसाहाय्या आपद्यपि देवादिसाहाय्यानपे-  
क्षकाः, स्वयं कृतं कर्म स्वयमेव भोक्तव्यमित्य-  
दीनमनोवृत्तयः, ये पाखण्डिभिः प्रारब्धाः  
सम्यक्त्वाद् विचलनं प्रति न परसाहायिकम-

पेक्षन्ते किन्तु स्वयमेव तत्प्रतिघातसमर्थत्वा-  
जिनशासनात्यन्तभवित्रत्वात् ते सुश्रावका. )  
भीमनीसहायनी धृच्छा न राभनार, दु षमा  
पणु देवतानी सहायनी धृच्छा न करनार; आ-  
पणु कीधेला कर्म आपणु-पोतेन भोगववां  
अेवी अदीनमनोवृत्तिवाणा श्रावक. दूसरे की  
सहायता की इच्छा न रखने वाला; दु ख मे  
देवों की भी सहायता न चाहने वाला; स्वयं  
किये हुए कर्मों को स्वय ही भोगना है ऐसी  
अदीनमनोवृत्ति वाला श्रावक (One) who  
does not desire the help of  
others even in distress, a high-  
spirited Śrāvaka prepared to  
endure the results of his own  
Karma भग० २, ५,

**असाडभूइ.** पुं० ( आषाढभूति ) आत्मीन-  
समयमा धर्मरुचि सूरिना शिष्य आषाढभूति  
नामे अेक साधु हुता; ते अेकदा विश्वकर्मा  
नामे राजनटने धरे वडोरवा गया. त्यांथी  
अेक मोदक-लाडवो मण्ये, अुडार तीकण्या पछी  
'आ अेक तो गुरु लेशे, मने नहि मणे' अेम  
वियारी रूप परावर्तन करी थीण वार नटने  
धरे गया वणी 'आ तो उपाध्याय लेशे' अेम  
वियारी रूप अदलावता अदलावता करी करी  
जवा मांडयुं, कोछ वपते सुंदर तो कोछवपते  
जेडोण, कोछ वपते काणो तो कोछ वपते  
कोढी, अेम रूप अदलावतां वडोरवां आवता  
विश्वकर्मा नटे ज्येया. तेणु पोतानी अति  
सौंदर्यवती अे पुत्रीअोने कणु, के कोछ पणु  
प्रकारे आ माणुसने वश करे तो तेआपणुने  
अडु उपयोगी थर्ष पडे. पुत्रीअोअे नेने  
धीमे धीमे लालयमा नाथी वश कर्ये. चारित्र-  
थी पतित थर्ष गुरुने छोडी नटनेो वेप पहुँच्ये.  
नटकणामा प्रवीणु थर्ष नटनेो सरदार अन्थे.  
राजवाडाने रीअथी अ्व्य लाल भेगववा लाअ्ये.  
तेने मदिरा उपर धणुो तिररकार हुतो,



तेथी नटनी लक्ष्मणुथी तेनी पुत्रीओओ भदिरानो त्याग क्यो हुतो, ओकदा कोठ राज्ज्ये स्त्रीओ विना मात्र नटोओओ राजसलामां आवी नाटक करवुं ओवुं इरमाओओ हुं. आपाढभूतिनी ओ स्त्रीओओ विचार क्यो, के ओओ राते पति नहि आवे माटे भदिरा पान इरीओ. तेम इरी वस्त्ररहित थछ भेडी उपर सुती. राज्ज्ये इंधं कारणु पडवाथी नाटक पाडवानुं मुसतनी राण्युं; तेथी आपाढभूति घेर आवता, ओ स्त्रीओनी इडी दशा जेध, विरक्त थयो अने पाछे वज्यो. आ अण्णर विश्वकर्माने पडतां पुत्रीने इपका आपी तेने समजवना भोक्ली, आपाढभूतिने पगे पडी विनववा लागी, के डांतो ! पाछे इरो अने डांतो ! अमारी उविकानो अंघोअस्त करो. आपाढभूतिओ ओक राष्ट्रपाल नाटक रच्युं राज्ज्ये नगरना सिंहरथ राज्जने त्यां ते नाटक लजववा मुकरर क्युं पायसे राजकुमारोनी भागणी इरी, राज्ज्ये ते आभ्या, त्यारे पोते लरतयकवर्ती अज्यो अने ५०० राजकुमारोने सामंतो अनानी जेल लज्यो. आओओ अरु रत्न, नवनिधान, अरीसाधर वगेरेते देभाव इरी, आण्णर अरीसा लवनमां ५०० राजकुमारो-ओकरोनी साथे ओध पामी साधु थाय छे अने आलूषणो वगेरे पोतानी ओ स्त्रीओने उविका अर्थे सांपी दीक्षा ल्ये छे. आ राष्ट्रपाल नाटक ओटलु तो सरस रच्युं, के त्यार पछी पणु विश्वकर्माणे त्यारे लज्युं त्यारे त्यारे क्षत्रियकुमारो प्रप्रणित थछ गया क्षत्रिओ अधा विरक्त थछ जशे ओवी दहेशतथी पाछण आ राष्ट्रपाल नाटक अग्निमां आणी देवामां आओ. प्राचीन समय में धर्मरुचि सूरि का आषाढभूति नामक शिष्य था । यह एक बार विश्वकर्मा नामक राजनट के घर पर भिच्चा लेने गया । वहाँ भिच्चा में उसे एक

लड्डू मिला, बाहिर आने पर उसने विचार किया कि ' यह लड्डू तो गुरु ले लेंगे, मुझे नहीं मिलेगा ' तब रूप बदल कर फिर नट के यहां भिच्चाडर्थ गया । दूसरी बार फिर लड्डू मिला, फिर उसने विचार किया कि 'यह तो उपाध्याय लेंगे' फिर रूप बदल कर गया । इस प्रकार बारं २ जाने लगा कभी सुदर रूप धारण करता तो कभी कुरूप हो जाता कभी काने और कभी कोढ़ी का रूप धारण करता । विश्वकर्मानट ने उसकी यह चेष्टा जानकर अपनी अतिसौंदर्यवती दो पुत्रियों से कहा कि, किसी भी प्रकार इस पुरुष को वश में करें तो यह अपने बहुत काम आयगा, पुत्रियों ने उसे वश में किया, और चारित्र से पतित होकर वह नट के यहां रहने लगा । नाट्य कला में प्रवीण होकर नटों का सरदार बना तथा राजाओं को प्रसन्नकर द्रव्य लाभ करने लगा । यह मदिरा का कट्टर विरोधी था । इस लिये नट की दोनों पुत्रियों ने भी अपने पिता के कहने से मदिरा का त्याग किया । एक बार किसी राजा ने बिना स्त्री के केवल नटों-पुरुषों को ही राजसभा में नाटक करने की आज्ञा दी । तब आषाढभूति की दोनों स्त्रियों ने विचार किया कि आज रात को पति नहीं आवेगा अतः मदिरा पान करना ठीक होगा और इस विचार के अनुसार मदिरा पानकर वद्व रहित अवस्था में मकान की छतपर सो गईं । उधर राजा ने किसी कारण से नाटक करना बंद करवा दिया । अग आषाढभूति घर पर आया और दोनों स्त्रियों को नशे की हालत में देखकर वह पीछे फिर गया और विरक्त होगया । विश्वकर्मा को जब यह विदित हुआ तब उसने पुत्रियों को फटकारा और आषाढभूति को फिर समझाने के लिये भेजा । वे स्त्रियों आषाढभूति के पास आईं और पैरों पर पड़कर कहने लगीं कि 'या तो आप घर चले या हमारी आजीविका का प्रबन्ध

करें' । तब आषाडभूति ने राष्ट्रपाल नामक एक नाटक की रचना की और राजगृह नगरी के राजा सिंहरथ की राजसभा में उस नाटक का खेलना निश्चित कर राजा से ५०० राजकुमार मागे । राजा ने देना स्वीकार किया तथा नाटक खेला गया । आषाडभूति ने भरतचक्रवर्ती का रूप किया और ५०० राजकुमार सामन्त बने । इस नाटक में चौदह रत्न, नव निधान, अरीसा भवन आदि का दृश्य दिखाया । फिर अरीसा भवन में ५०० राजकुमारों के साथ विरक्त होकर दीक्षा ली और आभूषण वगैरह अपनी स्त्रियों को जीविका के अर्थ दे दिये । यह राष्ट्रपाल नामक नाटक इतना सुंदर रचा गया था कि, विश्वकर्मा नट जब जब उसे खेलता तब तब क्षत्रिय राजकुमार दीक्षित होते थे । अतः सम्पूर्ण क्षत्रिय राजकुमारों के दीक्षित होने के भय से यह नाटक अग्नि में जला डाला गया । In ancient times Āsādhabhūti was the disciple of Dharmaruchisūri. Once he went to Viśvakarmā, a royal actor to ask for food. He got one sweet-ball from that place. While coming out from the house he thought that the Guru would take the ball and he would get nothing, so thinking he changed his form and went to the actor a second time. Thinking that the priest would take the second ball, he changed his form and went again. Viśvakarmā saw him coming with different forms—

some times beautiful, some times awkward, some times one-eyed, some times leprous. He told his two beautiful daughters that if the man were fascinated, he would be useful to them. The daughters after enticing, fascinated him. Having given up his asceticism, he abandoned his Guru and put on the dress of an actor. He became the leader of actors after becoming proficient in the art of acting. He used to earn a mass of wealth by propitiating princes. He disliked wine and so the two daughters of Viśvakarmā gave it up through his advice. Once a king had ordered that only the actors, without any woman, should perform a play at the court. The two wives of Āsādhabhūti thought that their husband would not be at home that night and so they could take wine. They did accordingly and slept upstairs quite naked. The king postponed the performance owing to some circumstances; so Āsādhabhūti returning, saw the drunken plight of the wives, lost all attachment for the world and returned. When Viśvakarmā came to know about this, he reproached his daughters and

sent them to conciliate him. They bowed down before Āsādhabhūti and requested him either to return or to arrange for their maintenance. Āsādhabhūti composed a drama named Rāstrapāla and settled to perform the drama before Simharatha, the king of Rājagriha city. He asked for 500 princes to act as players and the king consented. He took the part of Bharata, the suzerain and making the princes his tributary kings, performed the drama. He showed the actual scene of 14 jewels, 9 Nidhānas, house of looking-glasses etc. At last in the house of looking-glasses he, together with the 500 princes, became a Sādhu after getting knowledge, and entered the order of asceticism, giving all ornaments to his wives as the means of their support. The Rāstrapāla drama was so nicely composed that whenever Viśvakarmā performed it, the Kṣatriya princes entered the order of asceticism. Afterwards the Rāstrapāla drama was burnt in the fire through the fear that all Kṣatriyas would renounce the world by witnessing it. पि० लि० ४७४;

**असाढ पुं०** ( आषाढ ) अषाढ मास. आषाढ मास-आषाढ महीना The month Āsādha. नाया० ५; ( २ ) ओ३ णतनी पर्व-गांधवाणी वनस्पति. एक प्रकार की गाँठ वाली वनस्पति. a kind of vegetation with joints. पञ्च० १;

**असाता.** स्त्री० ( असात ) असातावेदनीय दुर्भ भोगवत् ते असातावेदनीय कर्म का भोगना. Act of bearing painful Karma. पञ्च० ३५;—वेदग. त्रि० (—वेदक) असातावेदनीय दुर्भ भोगवन्तः एव. असाता वेदनीय कर्म भोगने वाला जीव. a soul bearing painful Karma. पञ्च० ३; भग० २४, १, ३५, १;

**असाय.** न० ( असात ) वेदनीय दुर्भनी ओ३ प्रकृति, के जेना उदयथी एव असाता-दुःख -पीडा पावे वेदनीय कर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से जीव असाता-दुःख पाता है. A variety of Vedaniya Karma maturing of which the soul by the experiences pain. भग० ६, १; ठा० २, ३; उक्त० ३३, ७; परह० १, १; पञ्च० ३४; क० गं० १, १२; २, २३; ३३; ५, १६; क० प० १, ६१; २, १०३;

**असायण.** पुं० ( आश्वयन ) अश्व ऋषिना वंशजे. अश्व ऋषि का वंशज. A descendant of Ashva Rishi. जं० प०

**असाय-या-वेयण्डज्ज.** न० ( असातवेदनीय ) वेदनीय दुर्भनी ओ३ प्रकृति, के जेना उदयथी एव दुःख पावे छे. वेदनीय कर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से जीव दुःख पाता है. A variety of Vedaniya Karma by the maturing of which the soul experiences pain. ठा० ७; सम० ३७; भग० १, १; ७, ६; ८, ६;

**असार.** त्रि० ( असार ) साररहित सार हीन; सार रहित. Worthless, unsubstantial. प्रव० ७३०;

**असारअ.** त्रि० ( असारक ) साररहित सार रहित. Worthless, unsubstantial. “ साहारणं अयाणंतो, साहु होइ असारओ ” ओघ० नि० ५६७,

**असारंभ.** पुं० ( असारम्भ ) प्राणीना वधनो संकल्प न करवो ते, प्राणातिपातरूपी संकल्पनो अभाव. जीवों के वध का संकल्प न करना, प्राणातिपातरूपी संकल्प का अभाव. Absence of thought about killing etc. of sentient beings. “ सत्तविहे असारंभे पयणत्ते, तंजहा-पुढवीकाहयअसारंभे ” ठा० ७; भग० ३, ३; ८, १;

**असारंभमाण.** व० कृ० त्रि० ( असारंभमाण - असमारंभमाण ) प्राणीना वधनो संकल्प न करतो. प्राणी के वध का संकल्प न करता हुआ. Not meditating on killing or injuring sentient beings भग० ३, ३;

**असारहिय.** त्रि० ( असारथिक ) सारथिरहित सारथी रहित. Devoid of a charioteer भग० ७, ६;

**असालिया.** स्त्री० ( आसालिका ) आसारीआ वधनो अेक सर्प. आसारीया जाति का एक सर्प. A kind of serpent सूय० २, ३, २४;

**असावज्ज.** त्रि० ( असावद्य ) पापरहित; निर्दोष. पाप रहित, निर्दोष Sinless; faultless. “ अहो जियेहिं असावज्जा वित्ती साहुण देसिया ” दस० ५, १, ६२, भग० २५, ७, उक्त० २४, १०,

**असावज्जा.** स्त्री० ( असावद्या ) निर्दोष भाषा; पापरहित-निरपेक्ष भाषा. निर्दोष भाषा; पाप

रहित भाषा. Sinless speech, harmless speech भग० १८, ७,

**असासय** त्रि० ( अशाश्वत ) नाशवंत; अनित्य, अस्थिर, नश्वर. नाशवान्, अनित्य. Perishable, evanescent. उक्त० ८, १, १३, २०; ठा० २, १, आया० १, १, ५, ४६; १, ५, २, १४७; दसा० १०, ६; दस० १०, १, २१, नाया० १, भग० १, ६; ७, २, ८; ६, ३३; १४, ४; १८, ७, जं० प० ७, १७५,

**असाधारण** त्रि० ( असाधारण ) साधारण नहि, अेना अेवुं भीलुं नहि ते. असाधारण; जिसके समान दूसरा न हो वह. Extraordinary, having no parallel विशेष० ८६; —कारण. न० (—कारण ) असाधारण-मुप्य कारण, उपादान कारण. असाधारण-मुख्य कारण, उपादान कारण. principal or material cause. विशेष० १७४;

**असाहु** त्रि० ( असाधु ) अविनीत-कुत्सित साधु अविनीत-विनय रहित साधु. A Sādhu lacking in reverence, a disobedient Sādhu दस० ७, ४८; उक्त० १, २८, ( २ ) अभंगल, असुंदर. अभंगल; असुंदर inauspicious; bad सूय० २, ५, १२; ( ३ ) अनर्थकर; अनर्थहेतु अनर्थकारक, अनर्थहेतु cause of evil or calamity सूय० १, २, २, १८; ( ४ ) गेशाला आदि कुदर्शनना साधु गेशाला आदि कुदर्शन का साधु. ascetics of false faith like Goshālā etc दसा० ६, ४; ( ५ ) असंयति; अपत्नी; अप्रहयारी अव्रती; व्रत रहित; अव्रह्मचारी. vowless; incontinent ठा० ७, १०,—कम्म पुं० (—कर्मन् ) कूर कर्म; नन्मान्तरमां करेअु अशुल अनुधान कूर

कर्म; पूर्व जन्म में किया हुआ अशुभ कर्म.  
cruel deed, evil deed done in  
past life. सूय० १, ५, १, ६; (२) पुं०  
दूर धर्मवाणा परमाधामी. क्रूर कर्म करने वाला  
परमाधर्मा. Paramādhāmīs who do  
cruel deeds सूय० १, ५, १, ६;—दंस्त्रण.  
न० (-दर्शन) असाधु दर्शन, दुर्दर्शन असाधु  
दर्शन, कुदर्शन, मिथ्यादर्शन false faith;  
wrong belief. नाया० १३,—धम्म  
पुं० (-धर्म) स्नान इत्युं, तर्पणुं इत्युं इत्यादि  
असंयतिओये अतावेस धर्म असयतियों  
का बताया हुआ—स्नान, तर्पण करने रूप धर्म.  
religion of the unrestrained in  
senses, e g. bathing, perform-  
ing Tarpana etc. “असाहुधम्मणि  
ण संबएजा” सूय० १, १४, २०,

असाहुया स्त्री० (असाधुता) साधुता  
अभाव; असाधुपणु साधुता का अभाव.  
Absence of goodness, absence  
of asceticism दस० ५, २, ३८;

असाहुवं. अ० (असाधुवत्) असाधुनी पेठे.  
असाधु के समान Like a man who is  
not a Sādhu उक्त० २, २७;

असाहेमाण. व० कृ० त्रि० (असाधयत्) इर्थं  
न साधनो कार्यं न सावता हुआ. Not  
accomplishing any purpose  
भग० १५, १,

असि पुं० (असि) अङ्ग, तलवार. खड्ग,  
तलवार. A sword सम० १४, भग० १,  
८, ३, ५, ६, ३३, १४, ८, नाया० १, ८;  
६, १५, १८, जीवा० ३, ३; जं० प० (२)  
पु० न० तलवार आंधी नोडरी इरवी ते,  
दुथीयार धर्म असि कर्म; शस्त्र आदि धारण  
करने का कर्म military service  
जीवा० ३, ३; जं० प० (३) न रडीना  
उपने तलवार वडे छेदनार परमाधामी

नारकी जीव को तलवार से छेदने वाला पर-  
माधामी a Paramādhāmī who  
hacks the Nārakī beings  
with a sword. भग० ३, ६,—खेडग.  
न० (-खेटक) तलवारसहित म्यान तल-  
वार सहित म्यान a scabbard with  
a sword in it. परह० १, १, नाया० ६;  
—खेवणी. स्त्री० (-क्षेपणी-असिः क्षिप्यते  
यस्यां साऽसिक्षेपणी) ढाल ढाल a shield  
जं० प०—चम्मपाय. न० (-चर्मपात्र)  
म्यान, तलवारसहित म्यान. म्यान; तलवार  
साहित म्यान a scabbard “असिचम्म-  
पायहृत्थकिञ्चगणं अप्पाणोणति” भग०  
३, ५,—धारव्वय. न० (-धारव्रत)  
तलवारनी (आंघनी) धार पर चलना  
लेवु व्रत, अतिदुर्लभ व्रत. तलवार की  
धार पर चलने के समान व्रत, अतिकठिन व्रत,  
an austere vow, a vow as  
difficult as the act of walking  
on the edge of a sword नाया० १;  
—धारा स्त्री० (-धारा) तलवारनी धार  
तलवार की धार the edge of a sword.  
भग० ५, ७, १८, १०, उक्त० १६, ३७, नाया०  
१, १४,—धाराग. न० (-धाराक-  
असेधारा यस्मिन् व्रते आक्रमणीयतया  
तदसिधारकम्) लुओ “असिधारव्वय”  
शब्द. देखो “असिधारव्वय” शब्द  
vide “असिधारव्वय.” “असिधारगं  
वयं चरियं” भग० ६, ३३,—धारागमण.  
न० (-धारागमन) अङ्ग-तलवारनी धारपर  
चलनुं ते तलवार की धार पर चलना. the  
act of walking on the edge of  
a sword उक्त० १६, ३८,—पंजर.  
न० (-पञ्जर) तलवारतुं पांजरुं; इरती  
तलवारथी अनेवु पांजरुं. तलवार का पिंजरा;  
फिरती हुई तलवार से बना हुआ पिंजरा.

a cage of swords. परह० २, २,—पञ्ज-  
रगश्च त्रि० (-पञ्जरगत) इरता तरवार-  
वाणा भाणुसोथी धेरायेक्ष. तलवार घुमाते  
हुए मनुष्यों से घिरा हुआ surrounded  
by men bearing swords. परह०  
२, २,—पत्त. न० (-पत्र) तरवारनी  
धार जेवां पांढसांवाणुं आड, शाड्मली नामे  
नरकनु अेड आड. तलवार की धार के समान  
पत्तों वाला झाड़, नरक से होने वाला शाल्मली  
नामक झाड़. a tree in hell  
named Sālmali, a tree having  
leaves like the edge of a  
sword उत्त० १६, ६०, भग० ३, ७,  
नाया० १६, ठा० ४, ४, जीवा० ३, १, विवा०  
६, (२) तलवारना जेवा पांढसांवाणु  
शाड्मली नामे वृक्ष विकुर्वी तेनी नाये  
भेसाडीने नारकीना; तलतल जेवडा डटका डरी  
नाये ते, परमाधामी देवतानी नयमी जत  
तलवार के समान पत्तों वाले शाल्मली नामक  
वृक्ष को देवमायासे प्रकटकर उसके नीचे नार-  
कीयों को बैठकर उनके टुकड़े २ कर डालने  
वाला, परमाधामी देवताओं की नवीं जाति.  
the ninth kind of Paramā-  
dhāmis seating Nārakīs  
under supernaturally created  
Sālmali tree with its sword-  
like leaves and hacking  
them to pieces सम० १५, सूय०  
नि० १, ५, १, ७६;—रयरा. न० (-रत्न)  
अक्षवर्तीनुं अेड रत्न, अङ्गरत्न चक्रवर्ती  
का एक रत्न, खड्गरत्न a jewel of a  
Chakravartī ( a paramount  
king, ) a sword-jewel ठा० ७, १;  
पन्न० २०, ज० प० ४, ६७,—लक्षखरा.  
न० (-लक्षण) तरवारना लक्षण ज्ञानुपानी  
डणा-ज्ञान तलवार के लक्षण जानने की कला  
the act of knowing the marks of

a sword सूय० २, २, ३०, जं० प० ३;  
नाया० १,—लक्षि स्त्री० (-यष्टि) तरवार-  
वाणी लाडडी, शुभी तलवार की लकड़ी, गुप्ति  
a sword-stick. विवा० १, ३, ओव०  
भक्त० ५८,—वण न० (-वन) अङ्गना  
आकारे पांढसांवाणी वृक्षनुं वन तलवार  
के आकार के समान पत्तों वाले वृक्षों का वन.  
a grove of trees having leaves  
of the form of a sword परह० १,  
१,—चर पु० (-वर) श्रेष्ठ अङ्ग श्रेष्ठ  
खड्ग-तलवार the best sword, an  
excellent sword नाया० ६,

असिद्ध त्रि० (अशिष्ट-अकथित) न डडेनुं  
न कहा हुआ Not told परह० २, १;  
असिणाइ त्रि० (अस्नायिन्) स्नान नहि  
डरन २ स्नान न करने वाला One who  
does not take a bath सम० ११,  
असिणाण त्रि० (अस्नान) स्नानरहित;  
स्नान रहित. Unbathed, bathless.  
दस० ६, ६३, (२) न० स्नान नहि डरनु ते  
स्नान का न करना absence of a bath.  
पचा० १०, १८,—अहिङ्गा त्रि० (-अधि-  
ष्ठात्) जेभा स्नाननो प्रतिषेध छे अेयुं अनुष्ठान  
डरन २ जिसमें स्नान का निषेध-मनाही है ऐसा  
अनुष्ठान करने वाला one who practises  
religious performance in which  
a bath is prohibited "जावजीव वयं  
घोर असिणाणमहिङ्गा" दस० ६, ६३,  
असिणाणअ त्रि० (अस्नानक) स्नानरहित;  
स्नान न डरनार स्नान रहित, स्नान न  
करने वाला Bath-less, one who  
does not take a bath दसा० ६, २;  
असित त्रि० (असित) पुत्र डलनादिथी  
अथक्ष. मुनिविशेष. त्वां पुत्र आदि से न बधा  
हुआ, मुनिविशेष Not tied to or

fettered by wife, children etc.  
name of a saint आया० १, ५, ५, १६१;

**असिद्ध**. न० ( असिद्ध ) प्रवाही आहार;  
डाणीया वणी न शके अवे आहार. प्रवाही  
आहार; जिसका कवल-ग्रास न बंध सके ऐसा  
भोजन Liquid food कप्प० ६, २५;

**असिद्ध**. पुं० (असिद्ध) संसारी श्रव. संसारी जीव.  
A worldly soul; a soul not  
liberated. भग० १, ६;

**असिद्धत्त**. न० ( असिद्धत्व ) असिद्धपणुं;  
सिद्धपणुतो अभाव. सिद्धपन का अभाव.  
Absence of Siddhahood i. e  
state of final emancipation.  
प्रव० १३०७;

**असिद्धि**. स्त्री० ( असिद्धि ) सिद्धिने अभाव,  
भोक्षने अभाव. सिद्धि का अभाव, मोक्ष का  
अभाव. Non-liberation from world-  
ly existence; absence of salva-  
tion. भग० १, ६; सूय० २, ५, १२;—**मर्ग**.  
न० (—मार्ग—न विद्यते सिद्धेर्मोक्षस्य विशिष्ट-  
स्थानोपलक्षितस्य मार्गो यस्मिन्नसाव-  
सिद्धिमार्ग ) जेमां भोक्षमार्ग नथी ते; भोक्ष  
मार्गथी विपरीत अनुष्ठान. मोक्ष मार्ग से  
विपरीत मार्ग. a performance which  
does not lead to salvation. सूय०  
२, २, ३२;

**असिद्धजीवि**. पुं० (असिद्धजीविन्) शिल्प-  
कारीगरी आदि धंधे इरी श्रवण यदावनार  
नहि; कारीगरी वगेरे सावद्य व्यापारने  
तवनार शिल्पादि से आजीविका न चलाने  
वाला, कारीगरी आदि पाप व्यापार को न करने  
वाला One who does not main-  
tain himself by mechanical  
arts involving sinful opera-  
tions. “असिद्धजीवी अगिहे असित्ते” उक्त०  
१५, १६;

**असिय**. न० ( अशस् ) हरसने रोग. बवासीर;  
मस्से का रोग. The disease known  
as piles. “जे भिक्खु अप्पणो कायंसि गंडं  
वा पलियं वा अरियं वा असियं वा” निसी०  
३, ३४;

**असिय**. त्रि० ( असित ) कृष्णु; डाणुं; अशुभ.  
काला; अशुभ. Black; inauspicious.  
सु० च० २, ३५, जीवा० ३, ४; नाया० ८;  
पन्न० २; जं० प० परह० १, ३; (२) विष-  
यादिकमां न अंधाअेल. विषयादिक में न बंधा  
हुआ. not entangled in sensual  
pleasures etc. आया० १, ५, ५, १६१;  
—**केश**. त्रि० (—केश ) डाणा भोवाणा-केश  
वाणा. काले केशों वाला. black-haired.  
जीवा० ३,—**सिरय**. पुं० (—शिरोज) डाणा  
रंगना केश. काले रंग के केश. black hair.  
नाया० ८;

**असिय**. न० ( असिक ) नानी तलवार; दारुणुं.  
छोटो तलवार, हँसिया. A small sword;  
a scythe. नाया० ७; भग० १४, ७;

**असियग**. न० ( असितक ) दारुणुं. हँसिया;  
दारुण A scythe. भग० १४, ७;

**असिलाहा** स्त्री० ( अश्लाघा ) अकीर्ति;  
श्लाघा नहि ते अकीर्ति; अश्लाघा. Ill  
fame; disrepute. ठा० ४, १,

**असिलिद्ध**. त्रि० ( अश्लिष्ट ) धुणुं; योरेणुं नहि.  
पृथक्, न चिपका हुआ. Loose, not  
stuck नाया० ८;

**असिलेस**. पुं० ( अश्लेष ) अंधन; अंधनने  
अभाव. बंधन का अभाव Absence of  
bondage गच्छा० ७०;

**असिलेसा**. स्त्री० ( अश्लेषा ) अश्लेषा नामनुं  
नक्षत्र. अश्लेषा नामक नक्षत्र. The  
constellation Aslesā “ असिलेसा  
यक्खत्ते छ तारे परयत्ते ” ठा० ६;

असिलोत्र. पुं० ( अरलोक ) अपयश; अप्र-  
शंसा. अपयश; बदनामी. Ill-fame;

disrepute; dishonour. प्रव० १३३३;  
—भय न०(-भय) अपयशनुं भय बदनामी  
का डर. fear of dishonour प्रव० १३३४,

असिलोग. पुं० ( अरलोक ) अपकीर्ति;  
अपयश; अप्रशंसा. अपकीर्ति, निन्दा;  
अपयश. Obloquy, ill reputation,  
disrepute. सम० ७, विशेष० ३४५२;

—भय-य. पुं० (-भय ) अपकीर्ति-  
अपयशनेो भय. अपकीर्ति-अपयश का भय.  
fear of infamy or disrepute.  
ठ० ७, १; सम० ७;

असिव. त्रि० ( अशिव ) अभंगल, अशुभ.  
अमंगल; अशुभ Inauspicious; evil,  
bad सु० च० २, ३१०, अणुजो० १३१;  
( २ ) देवताकृत उपद्रव; मार, भरझी, ताव  
वगेरे. लुद्र देवों द्वारा किया हुआ उपद्रव;  
मरी, बुखार आदि trouble caused  
by lowdeities. वव० २, ४,

असी. स्त्री० ( अशीति ) ८०; अंशी अस्ती;  
८०. Eighty; 80. पन्न० २, भग० ३, १,

असीइ स्त्री० ( अशीति ) ८०; अंशीनी संख्या  
अस्ती की संख्या, ८०. Eighty, 80. नाया०  
८; भग० १, ५; सम० ८०, जं० प० २, २३;  
५, ११८,

असीइम त्रि० ( अशीतिम ) असीमे, ८० मे.  
अस्तीवाँ, ८० वाँ Eightieth; 80 th.  
कप्प० ७, २२७,

असीति स्त्री० ( अशीति ) ८०; अंशी. अस्ती,  
८०. Eighty, 80 पन्न० ४, भग०  
११, १, २०, ५, २१, ८,

असील. त्रि० ( अशील ) शीयण वगरनेो, दुरा-

चारी. दुराचारी. Loose in character,  
vicious उक्त० ५, १२,

असीलया स्त्री० ( अशीलता-अशील ) शीयणनेो  
अलाव, मैथुन सेवयुं ते शील का अभाव;  
मैथुन का सेवन करना. Absence of  
chastity; sexual intercourse.  
( २ ) चारित्रनेो अलाव. चारित्र का अभाव.  
absence of right conduct परह०  
१, ४;

असीलवं त्रि० ( अशीलवत् ) सावध योग्यी  
निवृत्त थयेल नहि, चारित्रहीन. पाप से  
निवृत्ति न पाया हुआ, चारित्रहीन. Devoid  
of character, not free from sinful  
practices "असीलमंत" भग० ८, १०;

असीविय. त्रि० ( असीवित ) सीवेलुं नहि ते.  
बिना सिला हुआ, बिनासिलाई का. Un-  
sewn, unstitched प्रव० ५४१;

असुअ त्रि० ( असुत ) पुत्ररहित. पुत्र रहित.  
Having no son, sonless "जहा न  
होइ असुआण लोगो" उक्त० १४, ८;

असुइ त्रि० ( अश्रुति ) शास्त्ररहित शास्त्र  
रहित. Devoid of Śāstras, bereft  
of Śāstras. भग० ७, ६;

असुइ त्रि० ( अशुचि ) अपवित्र; अशुद्ध.  
अपवित्र; अशुद्ध. Impure, unholy. पिं०  
नि०भा० ३२, पिं०नि० १६५, निर० ३, ४, सु०च०  
४, २८३, भग० ६, ३३, जं० प० २, ३६;  
वव० ३, २७; राय० २६; पन्न० १; २;  
नाया० १२, भक्त० ३६, ( २ ) न० अपवित्रता;  
अशुद्धता. अशुचि, अपवित्रता, अशुद्धता.  
impurity; filth. जीवा० ३, ३;  
नाया० १, ६, भग० ७, ६; ११, ११; दस०  
१०, १, २१; ओव० ३८, अणुजो० १३०,  
—कृणिम. न० (-कृणिम) अपवित्र भास.



अपवित्र मांस. impure flesh; filthy flesh तंडु०—जायकर्मकरण. न० (-जातकर्मकरण ) जन्मती वप्यते नाऽ-च्छेदन वगेरे डर्म डरुं ते, अशुचि-जन्म-डर्म. जन्म के समय नालच्छेदन वगैरह अशुद्ध कर्म करना; अशुचि-जन्मकर्म. the act of cutting the umbilical cord at the time of birth; an impure ceremony performed at the birth of a child. भग० ११, ११;—विल न० (-विल) अशुचि नीक्षणवातो छिद्र; शरीरमाथी अशुचि वहेवाना द्वार अशुचिद्वार; मलमूत्र निकलने का द्वार. a hole or aperture in the body to discharge its filth तंडु०—वेस. त्रि० (-विश्र) भण मूत्रादिभ्ये डरी विभ्र थयेतुं अथवा भीमत्स थयेतुं मल मूत्रादि से लिप्त अथवा बीभत्स. smeared and made dirty with filth. दसा० ६, १;—संकलित्ठ. त्रि० (-संकलित्ठ) अपवित्र पदार्थोथी दूषित थयेतुं ( शरीर ). अपवित्र पदार्थों से दूषित ( शरीर ). (body) polluted with impure things भग० ६, ३३;—समुत्पण. त्रि० (-समुत्पन्न) अपवित्रतामा उत्पन्न थयेत्त. अपवित्रता में उत्पन्न. born in the midst of impurities. तंडु०—सामंत. त्रि० (-सामन्त) अपवित्र वस्तुनी समीप रहेतुं ( शरीर ). अपवित्र वस्तु के समीप रहा हुआ ( शरीर ). (body) remaining in the vicinity of filthy things. ठा० १०;

असुइत्त न० ( अशुचित्व ) अशुचि भावना, 'आ शरीर अशुचिनुं लाज्जन छे, अम धितवयुं ते 'यह शरीर गन्दा है' ऐसा सोचना The meditation that the body (one's

body) is full of impurities. प्रव० ५७६,—भावणा. स्त्री० (-भावना) 'आ देह अशुचिभय छे' अम धितवयुं ते, आर भावनामानी छठी भावना. देह की अशुचिता का चिंतन करना; बारह भावनाओं में से छठी भावना meditation upon the filthiness of the body; the sixth of the twelve Bhāvanās or meditations. प्रव० ५८०;

असुइत्ता सं० कृ० अ० ( असुप्त्वा ) अशुसुधने; सुता वगर. विना सोये, शयन न करके Without having slept; without sleeping. ठा० ३, २;

असुइय. त्रि० ( अशुचिक ) अशुचिरूप; भणमूत्रादि अशुचिरूप, मल मूत्र आदिक. Filthy; impure, urine etc. तंडु० ठा० १०,

असुक त्रि० ( अशुक्क ) न सुकायेतुं, सुक नहि ते, लीतुं. विना सूखा हुआ, हरा Not dry, green पि० नि० २७६;

असुज्झमाण. व० कृ० त्रि० ( अशुध्यमान-अशुध्यत् ) शुद्धि न पाभते; अशुद्ध थतो. शुद्धि को प्राप्त न होता हुआ, अशुद्ध होता हुआ. Not getting purity; becoming impure, not being purified. " असुज्झमाणे छेयविसेसा विसोहंति " पचा० १६, १८;

असुरणकाल. पुं० ( अशून्यकाल ) विवक्षित स्थानमा डोष अहारथी नवेो अथ आपी उत्पन्न न थाय अने तेमांथी मरीने डोष अहार नय नहि-नेटला वप्यत सुधी विवक्षित नारथी आदिनी आपी स्थिति रहे तेटयो डण; अविरेड डण. जितने समय तक विवक्षित नारकी आदि की ऐया स्थिति रहे कि, विवक्षित

स्थान में उससे बाहर का कोई नया जीव उत्पन्न न हो और न वहाँ का मरकर बाहर जाय उतना समय; अविरह काल. The period of time during which Nārakī and other such souls remain compactly together, no new soul coming in and no old soul going out of a particular area भग० १, २,

**असुद्ध.** त्रि० ( असुद्ध ) अशुद्ध, दोषसहित अपवित्र, शुद्धता रहित, दोष सहित Impure; faulty. प्रव० ३०, सम० प० १६८, परह० १, २; (२) सावधानुष्ठान करनार. पाप कर्म करने वाला. ( one ) doing a sinful performance. "असुद्धपरिणामसंकलितं भवति" परह० १, १; सूय० १, ८, २२,—भाव पुं० (—भाव ) अशुल अभ्यवसाय असुद्ध अध्यवसाय, असुद्ध-दुष्ट भाव impure thought-activity पंचा० १८, ३८;

**असुन्न** त्रि० ( असून्य ) शून्य नहि ते असून्य, शून्यता रहित. Not void; not blank, not solitary. क० प० १, १६;

**असुभ** त्रि० ( असुभ ) अशुल; अमंगल, भराय. असुभ, अमंगल, बुरा Inauspicious; bad. अणुजो० १२७, सम० २५, दसा० ६, ४, ७, १२, नाया० ८, पि० नि० ५२, जीवा० १, भग० १, ७, ३, २; ५, ६, ६, ७, ६, ज० प० ५, १२३; सूय० २, २, ३६, क० प० १, ६०, ( २ ) न० अशुल-पापकर्म. असुभ-पाप कर्म. sinful Karma. ठा० ५, १, क० ग० १, ४२; —अज्भवसाण. न० (—अध्यवसान ) अशुल परिणाम असुभ-खराव परिणाम

undesurable thought-activity. पंचा० १६, २८,—अणुजोहा स्त्री० (—अनुजोहा ) संसारनी अशुलतानु चितवन करुनुं ते. संसार के अशुभपना का चितवन करना. meditation upon the evils of worldly existence. भग० २५, ७; ठा० ४, १, ओव० २०,—कम्म. त्रि० (—कर्मन् ) अशुल कर्मवाणो. असुभ कर्म वाला ( one ) having evil Karmas परह० १, १; —किरिया. स्त्री० (—क्रिया) अशुल-अमंगल येष्टा-क्रिया. अमंगल क्रिया, असुभ चेष्टा an evil action, a pernicious action. पंचा० १३, ४०,—गंध पुं० (—गन्ध ) अशुल-भराय गंध, दुर्गंध दुर्गन्ध, बदबू bad smell; odious smell. नाया० ६,—णाम. न० (—नामन् ) अशुल नामकर्म, नामकर्मनी अशुल-अनिष्ट प्रकृति. नामकर्म की असुभ-खराव प्रकृति. an evil variety of Nāma-Karma ठा० २, ४,—णामकम्म. न० (—नामकर्मन् ) नामकर्मनी अशुल प्रकृति नाम कर्म की असुभ प्रकृति. An evil variety of Nāma-Karma. भग० ८, ६,—दुखभागि त्रि० (—दुःखभागिन् ) अशुल प्रकृति-य दुःखतो लागी असुभ प्रकृति से उत्पन्न दुःख का भागी. ( one ) sharing in the misery arising from a variety of evil Karma भग० ७, ६, जं० प० २, ३६,—पोगल पुं० (—पुद्गल) अशुल पुद्गल, भराय पुद्गल असुभ पुद्गल; खराव परमाणु. matter or substance bad in its nature नाया० ८, ६,—वराण. पुं० (—वर्ण ) भराय वर्ण-रूप. असुभ वर्ण-रूप. bad or repulsive colour or appearance. क० प० १, ५७,—चिवाग.

न० (-विपाक ) असातावेदनीयादिरूपे परिष्णम आपनार डर्म. असातावेदनीयादि रूप से फल देने वाला कर्म. misery or pain-entailing Karma; Karma resulting in pain. ठा० ४, ४;

—स्वर. पुं० (-स्वर) अशुभ-पराध २४२-अथाज. अशुभ स्वर, कर्कश-अप्रिय आवाज़. bad voice; harsh voice. भग० १, ७;

असुभतर त्रि० (अशुभतर) अति अशुभ.

अति अशुभ; बहुत ज्यादह अशुभ Highly inauspicious; very bad नाया० ८;

असुभत्त. न० (अशुभत्व) अशुभपणुं; अशुभपना. Inauspiciousness; badness. भग० ६, ३,

असुमण. त्रि० (असुमन्स्) शुभ मन विनातो; अप्रसन्न. खराब मन वाला. Evil-minded; cynical in mind. प्रव० १५४;

असुय त्रि० (अश्रुत) नहि सांलणेषुं. न सुना हुआ. Not heard, unheard. भग०

१, ६; ३, ७; १८, ७, नाया० १; राय० ४२, पि० नि० २३६; ठा० ८, १;—गिस्सिय.

त्रि० (-निश्चित) सांलण्या-अनुलण्या विना उत्पातकी आदि बुद्धि-तर्कथी थतुं ज्ञान; उत्पातकी, वैनयिकी, कार्मिकी अने पारिणामिकी ये चार प्रकार की बुद्धि से होने वाला ज्ञान. knowledge derived from spontaneous thought; there are four kinds of intellect viz Utpātakī, Vainayikī, Kārmikī and Pāriṇāmikī नदी० २६; ठा० ३, १;—पुव्व त्रि० (-पूर्व) पूर्व इदी नहि सांलणेषुं. पहिले कमी न सुना

हुआ. not heard before; unheard before. भग० ६, ३३;

असुयक्खरपरिणामा. त्री० (अश्रुतात्तरपरिणामा-न श्रुतानुसार्यत्तरपरिणामो यस्या सा) श्रुतानुसाररहित शब्दमात्र परिष्णमवाणी भति श्रुतानुसार न होकर केवल शब्दमात्र परिणाम वाली बुद्धि Intellect depending on words without following the Śāstras for its development. विशेष० १५७;

असुयवं. त्रि० (अश्रुतवत्) ज्ञानथी रहित. ज्ञान से रहित. Devoid of knowledge; ignorant. भग० ८, १०;

असुर. पुं० (असुर) लवनपति अने वाणव्यंतर ये ये ज्ञतना देवता. भवनपति और वाणव्यंतर इन दो जातियों के देव. The two kinds of subordinate gods viz Bhavanapati and Vānavyantara. (२) असुरकुमार देवता; असुरकुमार देव. the Asurakumāra kind of gods. नाया० ८; जीवा० १, ३, ४; भग० २, ५; १८, ७, नदी० स्थ० ३; ठा० १, १; सम० ३४; उत्त०

१२, २५; ३६, २०४, ओव० २२; अणुजो० १३०;—टिड. त्री० (-स्थिति) असुर-

कुमारनी स्थिति-आयुष्य. असुरकुमारों की आयु. the life period of Asurakumāra gods. भग० २४, १;—दार-

न० (-द्वार) सिद्धायतनतुं दक्षिण द्वार, के ल्यां असुरों वसे छे. सिद्धायतन का दक्षिण द्वार, जेहों असुर निवास करते हैं. the southern door of the abode of

Siddhās where the Āsuras reside. ठा० २, २;—रत्तण. पुं० (-राज) असुर-

कुमारने राज. असुरकुमारों का राज. the king of Asurakumāra gods. सम०

३३;—रायो. पुं० (—राज) लुओ  
'असुरकुमारराया' शब्द. देखो "असुर-  
कुमारराया" शब्द vide "असुरकुमार-  
राया." भग० ३, १; जं० प० ५, ११६;

**असुरकुमार.** पुं० (असुरकुमार) भवनपति  
देवतानी ओक भति भवनपति देव की एक  
जाति A kind of Bhavanapati  
gods. सू० प० २०, भग० १, १, ८, १, पञ्च०  
१, ओव० २२, सम० १, (२) आरभा  
तीर्थकर वासुपूज्यना यक्षुं नाम. बारहवें  
तीर्थकर वासुपूज्य के यक्ष का नाम &  
name of the Yaksa ( a kind of  
demi-god ) of Vāsupūjya the  
12th Tūthankara. प्रव० ३७५,  
—आवास पुं० (—आवास) असुरकुमार-  
ना आवास-भेद-भवन; असुरकुमार  
देवतानुं निवासस्थान असुरकुमारों का निवास-  
स्थान the residence of Asura-  
kumāra gods भग० १, ५; १८, ५,  
—भवन न० (—भवन्) असुरकुमार  
देवताने रहेवानु स्थान असुरकुमार देवों के  
रहने का स्थान the residence of  
Asurakumāra gods भग० २४, १२,  
—राया. पुं० (—राज) असुरकुमारने राज.  
असुरकुमारों का राजा the king of  
Asurakumāra gods भग० ७, ६,

**असुरकुमारत्त** न० (असुरकुमारत्व) असु-  
कुमारपणुं असुरकुमारपन. The state  
of being an Asurakumāra god  
भग० ६, ५, २०, ३,

**असुरसुर.** त्रि० (—असुरसुर) 'सुरसुर' शब्द  
रहित, 'सुरसुर'मेवा आवाण विनाने 'सुरसुर'  
ऐसे आवाज रहित, Free from the  
hissing sound like " Sur, Sui "   
परह० २, १, भग० ७, १;

**असुरिंद.** पुं० ( असुरेन्द्र ) असुरकुमार  
देवताना छन्द, यमरेन्द्र अने अलेन्द्र असुर-  
कुमार देवों का इन्द्र, चमरेन्द्र और बलेन्द्र  
India of the Asurakumāra  
gods, Chamarendra and  
Balendra भग० २, ८; ३, १, ७, ६, १८, ७;  
ओव० २३, ठा० २, ४, ३, १, सम० ३३, नाया०  
८; कप्प० ५, ११५, जं० प० २, ३३, ५,  
११८,—वज्जिय त्रि० (—वज्जित) असुरे-  
न्द्ररहित, असुरकुमारना छन्दनी गेरहाणरी-  
वाणुं असुरेन्द्र रहित, असुरकुमारों के इन्द्र की  
अनुपस्थिति-गैर मौजूदगी वाला devoid  
of the presence of the Indra of  
Asurakumāra gods. भग० १४, ६,

**असुस्सुसणा** स्त्री० (अशुश्रूषणा-अशुश्रूषण)  
गुरु आदिनी शुश्रूषणा-सेवाभङ्गिता न करवी  
ते गुरु आदि की सुश्रूषा-सेवा न करना.  
Omission of proper services to  
elders etc. नाया० १३,

**असुह** न० (असुख) दुःख दुःख. Misery,  
pain. ठा० ३, ३,

**असुह** त्रि० (अशुभ) लुओ 'असुभ' शब्द  
देखो "असुभ" शब्द Vide 'असुभ' भग०  
१, ५, पिं० नि० १०६, उत्त० १०, १५,  
कप्प० २, २७, (२) अशुल नामकर्म.  
अशुभ नामकर्म. bad or evil Nāma-  
Karma. क० ग० १, ४२, ५, ६,—गइः  
स्त्री० (—गति) अशुल गति, नरक आदि अशुल  
गति नरक आदि अशुभ गति bad or  
miserable condition of existence;  
e g that of hell-beings etc क०  
गं० ५, ६१,—जोग पु० (—योग) अशुल  
योग अशुभ योग evil thought-acti-  
vity. भग० १, १,—नवग न० (—नवक)

डाणो, नीलो ओ भे वर्ण, दुरसिगंध, तीणो, उडवो ओ भे रस, गुरु, अरुअरो, लुणो अने शीत ओ चार स्पर्श, ओ नाम-कर्मनी नव प्रकृतियोनो समूह. काला और नीला ये दो रङ्ग, दुर्गन्ध, ताँखा और कड़वा ये दो रस, भारी, खुदरा, रूखा और ठंडा ये चार स्पर्श इस प्रकार नामकर्म की नौ प्रकृतियों का समुदाय. the group of the following nine varieties of Nāma-Karma viz the two colours (viz black and blue) the three tastes ( viz pungent, bitter and stinking ) and the four kinds of touch (viz heavy, rough, dry and cold ). क० ग० १, ४२; —नाम. न० (-नामन्) लुणो 'असुभयाम' शब्द देखो 'असुभयाम' शब्द. vide 'असुभयाम.' उक्त० ३३, १३;

**असुहस.** न० (-असुभत्त्व) अशुभपणुं. असुभयाम. Evil; badness. सूय० १, ८, ११;

**असुहस.** त्रि० (असूचित) सूयना नहि उरेव. सूचित न किया हुआ; विना सूचना दिया हुआ. Not instructed; not suggested. ( २ ) व्यंजनादिही रहित. व्यजनादि से रहित. devoid of unseasoned eatables. दस० ५, १, ६८; ( ३ ) उखा विना आपेक्षुं अन्न वगैरे. विना कहे दिया हुआ अन्न वगैरह. food etc. given without being asked for. दस० ५, १, ६८;

**असुया.** त्रि० (असूचा-असूची-अङ्गद्वाराचेष्टा सूची न सूची असूची-स्फुटवचनम् ) स्फुट वचन. स्फुट वचन. Frank speech; clear speech. पि० नि० ४३७;

**असुरिय** त्रि० (असूर्य) जेभां सूर्य नथी ते; नरकावासो. जहां सूर्य नहीं है ऐसा स्थान;

नरकावास. Sunless; e. g. hell. "असुरियं नाम महाभितावं, अंधंतमं दुष्पतरं महंतं" सूय० १, ५, १, ११;

**असेदिगय** त्रि० (अश्रेणिगत) उपशम श्रेणि तथा क्षपक श्रेणिओ अडेव नहि ते श्रेणी (उपशम-श्रेणी और क्षपकश्रेणी) में नहीं पहुँचा हुआ. (One) that has not attained to the stage called Upasāma (subsidence) and Kṣapaka (wearing off). क० प० ५, ४१;

**असेलेसिपडिवन्नग.** पुं० (अशैलेशीप्रतिपन्नक) अयोगी अवस्थाने प्राप्त नथयेव; यौद्ध-मा गुणुक्षाणुनी शैलेशी अवस्थाने न पाभेव. अयोगी अवस्था को न पाया हुआ; चौदहवें गुणस्थान की शैलेशी अवस्था को न पहुँचा हुआ. One who has not attained to the stage of complete cessation of physical and mental activity known as Śaileśī stage in the 14th Guṇasthāna भग० २४, ४; पन्न० २२;

**असेस.** त्रि० (अशेष) नि.शेष; सर्व; समग्र; संपूर्ण. नि.शेष; सर्व, सम्पूर्ण. Whole; entire; complete. सूय० १, ६, १७; दसा० ५, ३४, ३५; पंचा० १६, ३६; क० गं० ४, ७२, —सत्तहिय न० (-सत्तहित) समस्त प्राणिने हितकरनार. सम्पूर्ण प्राणियों का हित करने वाला. that which is beneficial to all living beings. "जिणिद्वययं असेससत्तहियं" पंचा० १६, ३६;

**असेहिय.** त्रि० (असैदिक) अ-नहि सैदिक-भौतिक; सांसारिक; मोक्ष संबंधी नहि. जो मुक्ति संबन्धी न हो वह; सांसारिक; जिसका मोक्ष से संबंध न हो वह. Temporal; not

spiritual; not pertaining to  
absolution. सुहं वाजइ वा दुक्खं, सेहियं  
वा असोहियं ” सूय० १, १, २, २;

असोग. पुं० ( अशोक ) कंडेली नामनु अेक  
इणीआवाणुं—आसोपालवनु अड. एक वृक्ष-  
विशेष; अशोक वृक्ष. Name of a tree;  
the Aśoka tree. सम० ३४; ओव०  
अणुजो० १६; नाया० ६, भग० २२, २;  
जीवा० १; पन्न० १; कप्प० ३, ३७;  
ज० प० ५, १२२; राय० ५७; ( २ )  
नेनी नीये १६मा तीर्थकर मल्लीनाथ  
स्वामीने डेवल ज्ञान उपण्युं ते अड  
वह वृक्ष जिसके नीचे १६वें तीर्थकर मल्लीनाथ  
स्वामी को केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ था. the  
tree under which Mallinātha  
the 19th Tirthankarā attained  
to omniscience. सम० प० २३३, ( ३ )  
येथा अलदेवनुं त्रीण पूर्वलवनुं नाम चौथे  
बलदेव के तीसरे पूर्वभव का नाम. name of  
the third previous birth of the  
fourth Baladeva. सम० प० २३६; ( ४ )  
अशोकनामे ७२ मेा महाग्रह अशोक नामक  
७२वाँ महाग्रह the 72nd great  
planet named Aśoka ठा० २, ३, सू०  
प० २०; ( ५ ) सूर्याभि विमानना अशोकवनने  
देवता सूर्याभि विमान के अशोकवन का  
देव. the deity of the Aśoka  
forest of Sūryābha राय० १४०,  
( ६ ) अरुणद्वीपना देवतानुं नाम. अरुणद्वीप  
के देव का नाम. name of the deity of  
Arunadvīpa. जीवा० ३, ४, ( ७ ) किनर  
देवनी सभा आगणनुं चैत्यवृक्ष—आसोपाल-  
वनुं अड. किनर देवता की सभा के आगे का  
चैत्यवृक्ष the Aśoka tree in front  
of the council-hall of Kinnara  
god. ठा० ८, १; ( ८ ) अे नामनी अेक

लता; अशोकलता. एक लता का नाम;  
अशोकलता. a creeper of that  
name, the Aśoka creeper.  
पन्न० १;—लया छी० (-लता ) अशोक  
वृक्षने विट्टीने रहेली लता. अशोक वृक्ष से  
लिपटी हुई लता a parasite encircl-  
ing an Aśoka tree. जं० प० १;  
—वण. पुं० (-वन ) सूर्याभि विमानना  
पूर्वने दरवान्थी प०० जेजने अंतरे  
साड आर डन्नर जेजने लाणुं अने प००  
जेजने पडेणुं अशोक वृक्षनुं वन. सूर्याभि  
विमान के पूर्व द्वार से ५०० योजन की दूरी  
पर साढ़े बारह हजार योजन लंबा और ५००  
योजन चौड़ा अशोकवृक्षों का वन name  
of an Aśoka forest 12500  
Yojanas in length and 500  
Yojanas in width, situated at a  
distance of 500 Yojanas from  
the eastern gate of the Sūryā-  
bha celestial abode. राय० १२५;  
अणुजो० १३१, निसी० ३, ८१; भग०  
१, १;—वरिया छी० (-वनिका )  
अशोक वृक्षनुं नानुं वन अशोक वृक्षों-  
का छोटासा वन a grove of Aśoka  
trees. नाया० ८, १४; १६; १६; विवा०  
१०,—वरपायव पुं० (-वरपादप ) अति  
उत्कृष्ट—उत्तम अशोक वृक्ष. अत्युत्कृष्ट अशोक  
वृक्ष an excellent Aśoka tree.  
“ ईसिं असोगवरपायवसमुवट्टिया ” जीवा०  
३; नाया० ५; ८, १४; १६, निर० ३, ३;  
कप्प० ५, ११३; जं० प० २, ३०;  
असोगजकख. पुं० ( अशोकयक्ष ) प्राचीन कालमां  
विजयपुरनगरना नन्दवन नामना उद्यानने  
अेक यक्ष प्राचीन काल के विजयपुरनगर के  
नन्दन वन नामक उद्यान में रहने वाला  
एक यक्ष. A Yakṣa ( a kind of

demi-god ) residing in the garden called Nandanavana in the city of Vijayapura in ancient times विवा० २, ३,

असोगवडिसग पुं० ( अशोकावतंसक )  
- लुग्यो " असोगवडिसग " शब्द. देखो  
' असोगवडिसग ' शब्द. Vide ' असोगव-  
डिसग ' राय० १०२;

असोगवडिसग. न० ( अशोकावतंसक )  
पडेवा देवलोडना सौधर्म विमाननी  
पूर्व दिशाभा आवेक्ष विमाननु नाम पहिले  
देवलोक के सौधर्म विमान की पूर्व दिशा  
में आये हुए विमान का नाम. Name  
of a celestial abode in the east  
of the Saudharma heavenly  
abode of the first Devaloka.  
राय० १०२;

असोगसिरी. पु० ( अशोकश्री ) चंद्रगुप्तना दीडरा  
पिन्डुसारनो पुत्र, पाटलीपुत्र नगरनो अेड प्रा-  
थीन राज चन्द्रगुप्त के पुत्र विन्दुसार का लडका;  
पाटलीपुत्र-पटना नगर का एक प्राचीन राजा.  
An ancient king of Pātalīputra  
( Patnā ) city; son of Bindu-  
sāra the son of Chandragupta  
चंद्रगुप्तस्स पुत्तो उ, विन्दुसारस्स नत्तुओ असोग-  
सिरिणो पुत्त, अंधो जायड् कागणि' विशे० ८६२;

असोगा स्त्री० ( अशोका ) नागकुमारना राज-  
धरणेडना लोडपाव डालनी पडेकी पट्टराणी.  
नागकुमार देवों के राजा धरणेन्द्र के काल नामक  
लोकपाल की पहिली पट्टरानी The first  
principal or crowned queen of  
Kāla, the Lokapāla of Dharane-  
ndra the king of Nāgakumāras.  
ठा०४, १ भग० १०, ५, (२) शीतलनायस्वामीनी  
शासनदेवीनुं नाम शांतलनायस्वामी की शास-  
नदेवी का नाम. name of the tutelary

goddess of Śitalanātha Svāmī.  
प्रव० २७७, ( ३ ) नलिनी विजयनी मुख्य  
राजधानी नलिन विजय की मुख्य राजधानी.  
the principal capital of Nalina

Vijaya "दो असोगाओ" ठा० २, ३, ज० प०  
असोचछा सं० कृ० अ० ( अश्रुत्वा ) धर्मो-  
पदेश सांलुग्या विना धर्मोपदेश सुने विना.  
Without having heard reli-  
gious instruction " असोचछा भंते !  
केवलिस्स वा केवलिसावगस्स वा केवलि-  
सावियाए वा केवलिउवासगस्स वा केवलि-  
उवासियाए वा " भग० ६, ३१,

असोखित. त्रि० ( अशोखित ) लोडी वगरनुं.  
रक्त रहित, विना रुविर का. Bloodless.  
पंचा० १६. ६;

असोत्थ पुं० ( अश्वत्थ ) पीपलनुं वृक्ष पीपल  
का वृक्ष The Pipala tree; the  
holy fig-tree. भग० २२, ३;

असोम्म. त्रि० ( असौम्य ) क्रूर, सौम्य नडि.  
क्रूर; जो सौम्य न हो वह. Cruel, not  
gentle परह० १, २;—गगह. पुं० (-ग्रह)  
क्रूर अड-भंगल, शनि वगेरे. क्रूर ग्रह; मंगल,  
शनि वगैरह. a cruel planet, e. g.  
Mars, Saturn etc परह० १, २;  
—गगहचरिय. न० (-ग्रहचरित ) क्रूर अड-  
नी याव, शनि आदि क्रूर अडनी गति. क्रूर  
ग्रहों की चाल the motion of a cruel  
planet. परह० १, २;

असोय. न० ( अशौच ) अपवित्रता. अपवि-  
त्रता, अशुद्धता Impurity, absence  
of cleanliness ओव० नि० ३१६,

असोय. पुं० ( अशोक ) लुग्यो ' असोग '  
शब्द देखो " असोग " शब्द Vide  
' असोग '. राय० ४, जीवा० ३, ३; भग० ३,  
२; सु० न० ३, ८०;—पल्लव न० (-पल्लव )  
अशोक वृक्ष का पत्ता the

leaves of the Aśoka tree  
 राय० ६४;—पल्लवपविभक्ति न०  
 (-पल्लवप्रविभक्ति ) जेभा अशोकना  
 पांढांनी रचना करवाभा आवे छे  
 ऐवु नाटक; ३२ नाटकमांतुं ऐक. जिसमें  
 अशोक वृक्ष के पत्तों की रचना की जाय ऐसा  
 नाटक, ३२ प्रकार के नाटकों में से एक प्रकार का  
 नाटक. a drama exhibiting ( a  
 bower etc ) of the leaves of Aśo-  
 ka trees; one of the 32 kinds  
 of dramas. राय० ६४,—वणपंड  
 न० (-वनषण्ड ) आसोपालवनु वन.  
 अशोक वृक्षों का वन a forest of Aśoka  
 trees. भग० ३, २,—वरपायव. पुं०  
 (-वरपादप ) लुओ। “ असोगवरपायव ”  
 शब्द. देखो “ असोगवरपायव ” शब्द.  
 vide “ असोगवरपायव ” नाया० ८,

असोयण्या. स्त्री० (-अशोचनता-अशोचन )  
 शैथ न करवे ते शोक न करना, रज्ज न करना.  
 Not giving way to grief, avoid-  
 ance of grief. भग० ७, ६,

असोयवडिसय न० ( अशोकावतंसक )  
 लुओ। “ असोगवडिसय ” शब्द देखो  
 “ असोगवडिसय ” शब्द. Vide  
 “ असोगवडिसय. ” भग० ३, ७, १०, ६,

असोया स्त्री० (अशोका ) कुमुदा विजयनी  
 मुख्य नगरी कुमुदा विजय की मुख्य नगरी  
 The capital city of Kumudā  
 Vijaya ठा० २, ३, ( २ ) दशमा  
 शीतलनाथ तीर्थकरनी शासन देवीनुं नाम  
 दसवें तीर्थकर शीतलनाथ की शासन देवी  
 का नाम name of the tutelary  
 goddess of the 10th Tirthankara  
 Sitalanātha प्रव० ३७७,

अस्स. अस्मद्, प० ए० (अस्य) लुओ। ‘एत’ शब्द-  
 ना पडीना ऐक वयननुं रूप देखो ‘एत’ शब्द

की षष्ठी विभक्ति के एक वचन का रूप. Vide  
 the genitive sing. of ‘एत’ क० गं०  
 ४, ८१,

अस्स पुं० (अश्व) घोडा घोडा A horse.  
 पत्र० १, ओघ० नि० १६२, भग० ३, २, ( २ )  
 अश्विनी नक्षत्रने देवता; अश्विनीकुमार.  
 अश्विनी नक्षत्र का देवता, अश्विनीकुमार.  
 the deity of the Aśvinī  
 constellation, Aśvinikumāra ‘दो  
 अस्सा’ ठा० २, ३, सू० प० १०,—चोरग.  
 पुं० (-चोरक ) घोडानी चोरी करनार;  
 घोडाने चोर घोडे की चोरी करने वाला.  
 a stealer of horses परह० १, ३,

अस्सकंता. स्त्री० ( अश्वकान्ता ) मध्यम  
 ग्रामनी पाचमी मूर्च्छना. मध्यम ग्राम  
 की पांचवीं मूर्च्छना The fifth note of  
 the middle scale of music. ठा०  
 ७, १,

अस्सकरणा पुं० (अश्वकर्ण) ओ नामने ऐक  
 अतरद्वीप, ५६ अतरद्वीपमाने ऐक  
 एक अन्तर्द्वीप का नाम, ५६ अन्तर्द्वीपो में से  
 एक An Antaradvīpa of that  
 name, one of the 56 Antara-  
 dvīpas. नंदी०

अस्सकरणी स्त्री० (अश्वकर्णी) घोडाना  
 डान जेवा पांढांवाणी वनस्पति, ऐक  
 जतने ३-६ घोडे के कानों के आकार के समान  
 पत्तों वाली वनस्पति, एक जाति का कन्द. A  
 kind of vegetation having leaves  
 of the shape of a horse's ear, a  
 kind of bulbous root उक्त० ३६,  
 ६६, जीवा० १, पत्र० १, भग० ७, ३, २३, २,

अस्सतर पुं० (अश्वतर) ऐक जतने घोडा-  
 अश्वर एक जाति का घोडा, खच्चर A kind  
 of horse, a mule. पत्र० १,



अस्सत्थ. पुं० (अश्वत्थ) पिपप्लो; असुरकुमारतुं  
चैत्य वृक्ष. पीपल, असुरकुमारों का चैत्य  
वृक्ष. The holy fig-tree; the  
Chaitya tree of Asurakumāra.  
ठ० १०, १;

अस्सपुरा. स्त्री० ( अश्वपुरी ) पश्चिम  
महाविदेहना दक्षिण भांडवानी प्रथम  
विजयनीमुष्य राजधानी. पश्चिम महाविदेह  
के दक्षिण खंड के प्रथम विजय की मुख्य  
राजधानी. The capital of the first  
Vijaya of the southern Khanda  
of western Mahāvīdeha.  
जं० प०

अस्समाण. व० कृ० त्रि० ( \* आस्रवमाण-  
आस्रवत् ) सूषुं; अरुं. भरता हुआ.  
Dropping; oozing. निसी० १८, १८;

अस्समुह पुं० ( अश्वमुख ) आदर्शमुख  
उपरने ओड अन्तरद्वीप; ५६ अन्तरद्वीप-  
भानो ओड. आदर्शमुख के आगे का  
एक द्वीप; ५६ अन्तर्द्वीपों में से एक द्वीप.  
Name of an Antaradvīpa next  
to Ādarśamukha; one of the  
56 Antaradvīpas. पञ० १;

अस्सलेसा. स्त्री० ( अश्लेषा ) अश्लेषा नक्षत्र.  
अश्लेषा नक्षत्र. The constellation  
Aśleṣā. ठ० २, ३;

अस्ससेण. पुं० ( अश्वसेन ) पार्श्वनाथस्वामी-  
ना पिता. पार्श्वनाथस्वामी के पिता. The  
father of Paśvanātha Svāmī.  
प्रव० ३६; (२) १४ मे ३६ १४ वॉ ग्रह. the  
fourteenth planet. सं० प० २०;

अस्साएमाण. व० कृ० त्रि० ( \* आस्वादमान-  
आस्वादयत् ) थोडुं थापतो; सेरडीना-सांझानी  
पेडे थोडुं युसतो अने धणुं नाणी देतो. थोडा  
चाखता हुआ; सांठे की तरह थोडा चूसकर  
अधिक फैंक देता हुआ Tasting  
or relishing a little. भग० १२, १;

अस्साकं. अस्मद्, ष० व० ( अस्माकम् )  
थापणुं; अमारुं. अपना, हमारा. Our. सूय०  
२, ७, १३;

अस्सादेमाण. व० कृ० त्रि० ( आस्वादयत् )  
णुंओ " अस्साएमाण " श०६. देखो  
'अस्साएमाण' शब्द. Vide 'अस्साएमाण'.  
भग० १२, १;

अस्साय. न० ( असात् ) असातावेदनीयता  
उदयथी प्राप्त थयेसुं दुःख. असातावेदनीय  
कर्म के उदय से प्राप्त हुआ दुःख. Misery  
arising from the maturity  
of Asātāvedaniya Karma (i. e.  
one accompanied with  
pain-feeling). आया० १, १, ६, ५०;  
क० गं० २, ७;

अस्सायण. पुं० ( अश्वयन ) अश्विनी नक्षत्रतुं  
गोत्र. अश्विनी नक्षत्र का गोत्र. The  
family line of the constellation  
Aśvinī. सू० प० १०; जं० प० ७, १५६;

अस्सायणिज्ज. त्रि० ( आस्वादनीय ) स्वाद  
लेना योग्य. स्वाद लेने योग्य. Tasteful;  
full of relish. नाया० १२;

अस्सावि. त्रि० ( आस्वाविन्-आसमन्ताद  
स्रवति तच्छील आस्वावी ) छिद्रसहित; जेभां  
पाणी आवे येवुं, छिद्र वाला; जिसमें पानी  
आ सके ऐसा. Having leaks or  
holes; leaking. "जहा अस्साविणि  
नावं, जाइअंधो दुस्सए" सूय० १, १, २, ३०;

अस्ति. पुं० ( अस्ति ) भुजो. कोना. An angle, a corner, e. g of a room etc ठा० ६;

अस्ति. पुं० ( अश्विन् ) अश्विनी नक्षत्रतो देवता. अश्विनी नक्षत्रका देव The deity of the Aśvinī constellation. ठा० २, २;

अस्तिअ-य. त्रि० (आश्रित)आश्रय करी रहेल; छोड़ने आशरे रहेल, आश्रय करेल. आश्रित, किसीके आश्रय मे रहा हुआ. Resorted to; resting on; dependent on उत्त० १३, १५; २८, ६; ३५, २; दस० ४; अणुजो० १२८,

अस्तिं. इदम्, स० ए० ( अस्मिन् ) आभां; ऐभां. इसमें In this; on this नाया० १, ५; भग० ५, ४, ६, ३३, ११, ६; २०, ८,

अस्तिं इदम्, ष० व० ( एषाम् ) ऐभनु, आभनु इनका Of them, of these. भग० २, १; ५, ४;

अस्तिणी. स्त्री० ( अश्विनी ) अश्विनी नामतुं नक्षत्र. अश्विनी नामक नक्षत्र A constellation named Aśvinī. " अस्तिणी राखत्ते तितारे पर्यात्ते " सम० ३; सू० प० १०; जं० प० ७, १५१; ठा० २, ३, अणुजो० १३१,—राखत्ते न० (-नक्षत्र) ऋथो उपलो शब्द. देखो ऊपर का शब्द. vide above नाया० ८;

अस्तिसेसा स्त्री० (अश्लेषा) ऋथो 'अस्तिसेसा' शब्द. देखो 'अस्तिसेसा' शब्द. Vide 'अस्तिसेसा.' अणुजो० १३१;

अस्तुय. त्रि० ( अश्रुत ) न सांलजेलुं. न सुना हुआ Not heard, unheard. भग० ३, २; ओव० २७,

अस्तेसा. स्त्री० ( अश्लेषा ) अश्लेषा नक्षत्र अश्लेषा नक्षत्र The constellation

Aśleṣā. जं० प० ७, १५५; सू० प० १०; विशेष० ३४०८;

अस्तोई स्त्री० ( आश्वयुजी-अश्वयुजि भवा-ऽऽश्वयुजी )आसो-आश्विन भासनी पूर्णिमा तथा अमावास्या. आश्विन मास की पूर्णिमा तथा अमावस्या का नाम. The full-moon and the new-moon days of the month of Āśvina. सू० प० १०;

अस्तोकिंता. स्त्री० ( अश्लोक्कान्ता ) मध्यम आभनी पायभी मूर्च्छना. मध्यम ग्राम की पाँचवीं मूर्च्छना. The fifth stage in the modulation of the middle gamut in the science of music. ठा० ७,

अह अ० ( अथ ) हुवे, हुवे पछी; त्पार पछी; पछी. अब, इसके पश्चात्, उसके बाद; पीछे. Now, now then; after आया० १, ६, २, १८३; दस० ५, १, ६६, विशेष० ११८; १३४, नाया० १; ८, १७, निषो० ६, १२; २०, ११; दसा० ६, २, वव० ७, ५; वेय० २, २; सूय० १, २, १, ८; १, १६, १, उत्त० २, ४१; पि० नि० ५३; भग० १, ६; ५, ६, (२) प्रकरण, वाक्य के शब्दतुं भंगणु-शरुआत. प्रकरण, वाक्य या शब्द का प्रारम्भिक अव्यय, a word marking the beginning of a chapter, sentence etc भग० २०, ३, नाया० १, आया० १, ६, १, १७२; (२) भांगत्य. मागल्य a word marking an auspicious beginning. सूय० १, १६, १; (४) पक्षान्तर हेभाऽवुं. पक्षान्तर दिखलाना. a word expressing vicinity or the other side. आया० नि० १, ८, १, २६२; (५) विकल्प विकल्प. a word showing alternation.

क० प० १, २५, दस० ५, १, ७७, जीवा०  
१; ( ६ ) विशेष. विशेष. a word  
showing particularity. ठा० ७;  
( ७ ) वाक्यालंकार. वाक्यालंकार an  
expletive सू० १, ७, ५,

अह. अ० ( अघस् ) नीचे, अधोभाग नीचे,  
नीचे का भाग. Below, in the lower  
place. आया० १, १, ५, ४१, भग० १, १, दसा०  
५, ३१, सू० प० १६, (२) अधोगति, नीची गति  
अधोगति. damnation, low plight.  
( ३ ) अधोलोक, पाताल लोक. अधोलोक,  
पाताल लोक. the nether world ठा०  
३, ४, ( ४ ) दिशाभेद, अधोदिशा. अधो-  
दिशा, दिशा का एक भेद the nether  
quarter ठा० ६;

अह. न० (अहन्) द्विपक्ष, द्वाडो, दिन. दिन A  
day. जीवा० ३, १, सू० प० ८,

अहं. अस्मद्, प्र० ए० (अहम्) हुँ मैं I नाया०  
१, २, ५, ८, ६; १३; १४, १६, १८; १६, पञ्च०  
११, दस० ७, ६, ९, १३, भग० १, ६, १०,  
२, १; ७, १०; १६, २, जं० प० ५, ११५;

अहंता. सं० कृ० अ० (अहत्वा) हृष्या  
वगर, नहि हृषीते. विना मारे, न मारकर  
Without having killed or  
struck ठा० ३, २,

अहकम. न० (यथाक्रम) यथाक्रम; अनुक्रम  
यथाक्रम; अनुक्रम In serial order.  
पंचा० ७, ४६;

अहकखाय. न० (अथाख्यात-अथशब्दो  
यथार्थं याथातथ्येन ख्यात कथितमकषायं  
चारित्रमथाख्यातम् ) अथाख्यात नामे  
चारित्रनो पांचमो प्रकार; अथाख्यातमां  
सर्वथा कषायनो दोष लगावामां आवे नहि  
अनु, विशुद्ध-निर्भण चारित्र, तीर्थकरे कहेल  
स्वरूपने अंशे अंश पाणिनारतुं चारित्र.  
यथाख्यात चारित्र का पांचवां भेद; जिसमें

कषाय का विल्कुल दोष न लगे ऐसा  
विशुद्ध चारित्र, तीर्थकर द्वारा कहे हुए  
स्वरूप का अंशतः पालन करने वाले का  
चारित्र. The fifth variety of right  
conduct styled Yathākhyāta  
i e. right conduct strictly  
observing the words of Tīrthān-  
kara. पंचा० ११, ४, क० गं० ३, १७;  
४, १५, २३; ठा० ५, २; पञ्च० १, उत्त०  
२८, ३३, औव० २०; सु० च० १५, ७२;  
विशे० १२३८; भग० २५, ७,—चरण. न०  
(-चरण) यथाख्यातचारित्र. यथाख्यात  
चारित्र right conduct which is  
quite spotless explained or  
prescribed. प्रव० ६६३,—चरित्त. न०  
(-चारित्र) अथो 'अहकखायचरण' शब्द.  
देखो 'अहकखायचरण' शब्द. vide 'अह-  
कखायचरण.' भग० ८, २; क० गं० १, १८;  
—चरित्तलद्धिया स्त्री० (-चारित्रलद्धिका)  
यथाख्यात चारित्रनी लद्धि-प्राप्ति यथा-  
ख्यात चारित्र की लद्धि-प्राप्ति the att-  
ainment of absolutely spotless  
right conduct. भग० ८, २,—लद्धि.  
स्त्री० (-लद्धि) यथाख्यात चारित्रनी लद्धि-  
प्राप्ति यथाख्यात चारित्र की प्राप्ति. the  
attainment of perfectly spotless  
right conduct. भग० ८, २—संजम.  
पुं० (-संजम) यथाख्यात चारित्र. यथाख्यात  
चारित्र perfectly spotless, blame-  
less right conduct ठा० ५, २;  
भग० २५, ६;—संजय. पुं० (-संजय)  
यथाख्यात चारित्रवान्; अक्षययचारित्रि.  
यथाख्यात चारित्र वाला (one) possess-  
ed of absolutely spotless  
right conduct " अहकखायसंजयम् "

- पुच्छा गोयमा । दुविहे पर्यत्ते, तंजहा-  
छुडमत्थे य केवलो य " भग० २५, ७;
- अहर्षद.** पुं० ( यथाच्छन्द ) पोते सूत्रविरुद्ध  
आयत्तु इरे अने उत्सूत्र परूपणा इरे ते  
साधु जो स्वयं सूत्रविरुद्ध आचरण करे और  
उत्सूत्रप्रवृत्तता ( निरुत्तण ) करे वह An  
ascetic who in his own conduct  
as well as in his scriptural  
explanations to others violates  
the teachings of the Sūtras  
प्रव० १०३;
- अहड** त्रि० ( अहत ) न हरेत्तु-येरेत्तु हरण  
न किया हुआ, न चुराया हुआ अथवा बिना  
छीना हुआ Not taken away; not  
stolen. " तेणाहडे तकरप्पओगे " उवा०  
१, ४७;
- अहण** त्रि० ( अवन ) धनरहित. धन रहित,  
निर्धन Poor, having no wealth  
दस० १०, १, ६,
- अहण** त्रि० ( अवन्य ) धन्यवादेने पात्र  
नहि. धन्यवाद के अयोग्य Unfor-  
tunate, not worthy of compli-  
ments. नाया० १३, १६, ज० प० ५,  
११७,
- अहत.** त्रि० ( अहत ) ह्युत्थेन नहि, वपरा-  
येन नहि, नवीन वर्तव में न आया हुआ,  
नया; सचित्त Not struck, not  
killed, not used, new. च० प०  
१६; जीवा० ३, ४, भग० ३, ३; ८, ६, सूय०  
२, २, ५५; जं० प० २, ३३;
- अहत्त** न० ( अघस्त्व ) अधन्यता, अधन्यपणुं  
जघन्यता; जघन्यपन. State of being  
low or below. भग० ६, ३;

- अहत्थ** त्रि० ( यथास्थ ) यथावस्थित; जेवुं  
छेप तेवु रडेवुं. जैसा हो वैसा ही रहा हुआ.  
यथास्थित Being in the same  
condition in which it originally  
was, status quo ठा० ५, ३,
- अहत्थ** त्रि० ( यथार्थ ) यथार्थ, परापर यथार्थ;  
ठीक, उचित. Appropriate, proper.  
" अहत्थे वा भावे जाणिसुणामि " ठा० ५, ३;
- अहत्थच्छिण्ण.** त्रि० ( अहस्तच्छिञ्ज-हस्ता-  
वच्छिञ्जो यस्य सोऽच्छिण्णहस्तः ) अ० अ०  
हाथवाणो अखड हाथोंवाला. (One) with  
hands not cut or cut off; ( one )  
having sound hands निसी० १४, ६;
- अहत्थहारां.** अ० ( यथाप्रधानम् ) प्रधानते  
अनुसरते, प्रधान-मुष्य वस्तुते अनुसार.  
प्रधान-मुख्य वस्तु के अनुसार In accord-  
ance with the principal thing;  
following the principal object.  
भग० १५, १;
- अहम.** त्रि० ( अधम ) अधम, नीच, इनिध;  
क्षुद्र. नीच, लुद्र, अधम Low, base;  
mean 'नरेदजाई अहमा नराण' उक्त० १३,  
१८, ६, ५४, ठा० ४, ४;
- अहमंति.** पु० ( अहमन्तिन्-अहमेव जात्यादि-  
भिरुत्तमतया पर्यन्तवर्तित्यहमन्ती ) अति  
आदिना अलिमानवाणे. जाति आदि के अभि-  
मान वाला One proud of caste etc.  
' दसहिं ठाणेहिं अहमंतीति थंभेजा तं०  
जाइमएण वा कुलमएण वा जाव इस्सरियम-  
एण वा नागसुवत्ता वा मे अंतिअ हव्वमाग-  
च्छति पुरिसधम्माओ वा से उत्तरिए अहोवाहिए  
नाणदंसणे समुप्पचे ' ठा० १०,
- अहमया** स्त्री० ( अधमता ) अधमपणुं, नीचता.  
अधमता; नीचता. Baseness, mean-  
ness. विशेष० १६१०,

अहम्म पुं० ( अधर्म ) अधर्म, पाप, सावध अनुश्रुत. अधर्म, पाप Sin, sinful performance, irreligion दसा० ६, ४; उक्त० ४, १३, ३४, ५६, परह० १, ४, राय० २०७; कम्प० ४, ६२, दत्त० ६, १७; पिं० नि० ६३, ( २ ) त्रि० अधर्म हेतु अधर्म का हेतु cause of sin उक्त० ४, १३, ( ३ ) धर्म वगैरतो. धर्म रहित, अधर्मी. irreligious विवा० १, २;—अट्टि त्रि० (—अर्थिन् ) अधर्मना प्रयोजनवाणो. अधर्मरूप प्रयोजन वाला. (one) having a sinful or irreligious purpose आया० १, ६, ४, १६२,—अणुअ त्रि० (—अनुग ) अधर्मनी पाछणी नतार अधर्म के पीछे चलने वाला (one) following sin or irreligion. दसा० ६, ४,—अणुग त्रि० (—अनुग) लुओ उपेो शब्द देखो ऊपर का शब्द vide above भग० १२, २;—इंदत्ता. स्त्री० (—इन्द्रता) अधर्मनु धरपणु, अधर्मनी सरदारी. अधर्म की सरदारी, अधर्म का अगुआवन. power, authority based on sin, injustice etc भग० २५, ६,—केड पु० (—केतु ) अधर्मनी ध्वजरूप, अधर्म—पाप प्रधान अधर्म—पाप की ध्वजा के समान, अधर्मप्रधान the flag or banner of sin, anything outrageously sinful नाया० १८,—कखाइ. त्रि० (—आख्यायिन्-अधर्ममाख्यातुं शीलमस्येत्यधर्माख्यायी ) अधर्मनु प्रतिपादन इरतार अधर्म का प्रतिपादन करने वाला. one who establishes, propagates sin or irreligion भग० १२, १,—कम्माइ त्रि० (—ख्याति-अधर्मात् ख्यातिः प्रसिद्धिर्यस्य स तथा ) अधर्मनी नेनी ख्याति छे—अधर्मी तरीके ने प्रसिद्ध छे ते अधर्म के कारण,

जिसका प्रसिद्धि है वह (one) notorious for sinfulness or irreligiosity दसा० ६, ४,—जीवि. त्रि० (—जीविन्) अधर्मथी लवनार अधर्म से जीने वाला (one) maintaining himself by sinful deeds दसा० ६, ४;—दाण पु० न० (—दान ) योराहिते दान आपवु ते, अधर्मदान अधर्म दान, चोरादिक को दान देना irreligious charity, e g. to a thief ठा० १०,—पलज्जमाण त्रि० (—प्ररज्जमान ) अधर्मभां राओ रहेतो-रंन थतो अधर्म में प्रसन्न होता हुआ. (one) taking delight in sin or irreligion भग० १२, २,—पलोइ. त्रि० (—प्रलोकिन्) धर्मथी विपरीत-अधर्मने नेवा-वाणो. धर्म से विरुद्ध-अधर्म को देखने वाला. (one) whose view is sinful भग० १२, २,—समुदायार. पु० (—समुदाचार ) धर्मथी विपरीत आचार, अधर्ममय आचार—अनुष्ठान धर्म से विपरीत आचार, अधर्ममय आचार. irreligious conduct, sinful performance भग० १२, २,—सेवि. त्रि० (—सेविन्) अधर्म सेवनार अधर्म का सेवन करने वाला one practising sin or irreligion दसा० ६, ४,

अहम्मओ अ० (अधर्मतस्) अधर्म अंगीकार इरीते, अधर्म आशी. अधर्म से; अधर्म को अंगीकार करके Through sinfulness, sinfully परह० १, २,

अहम्मतिकाय पुं० (अधर्मास्तिकाय) लुओ "अधम्मतिकाय" शब्द. देखो "अधम्मतिकाय" शब्द. Vide 'अधम्मतिकाय.' भग० २०, २,

अहम्मि. त्रि० (अधर्मिन्) लुओ 'अधम्मि' श०६. देखो "अधम्मि" शब्द. Vide 'अधम्मि'. सम० ३०,

अहम्मिद्ध. त्रि० (अधर्मिष्ठ) लुओ 'अधम्मिद्ध' श०६ देखो "अधम्मिद्ध" शब्द. Vide 'अधम्मिद्ध.' उक्त० ७, ४, दसा० ६, ४, राय० २०७, भग० १२, २,

अहम्मिय-अ. त्रि० (अधर्मिक) लुओ 'अधम्मिय' श०६ देखो 'अधम्मिय' शब्द. Vide 'अधम्मिय.' दसा० ६, ४, ६, २६, राय० २०७, भग० १२, २, नाया० १८,

अहय. त्रि० (अहत) अ०३, झटेलु तुटेलु नडि अखड; न दटा फूटा हुआ. Whole, sound, unbroken. भग० ७, ६, ८, ६, राय० ७६, जं० प० ३, ४३, (२) ननु, अधा दुधी वगरनुं, डारू. नया, कारा. new, without spots etc. कप्प० ४, ६२, नाया० १,

अहर. पुं० (अवर) नीयेनेो डोड. नीचे का ओठ. The lower lip नाया० १, पञ्च० २,—गह. स्त्री० (-गति) नीची गति, अधोगति अधोगति damnation, low plight. पिं० निं० १०२, नाया० ६,—गहगमण न० (-गतिगमन) अधोगति गमन, अधोगतिमा लुओ ते. अधोगति गमन, अधोगतिमें जाना downward motion, going towards a lower stage of existence. परह० १, २,

अहरस. न० (अहोरात्र) अेक दिवस अने अेक रात एक दिन और एक रात A day and a night प्रव० ६०५,

अहराई स्त्री० (अहोरात्रिकी) लुओ 'अहराई' श०६ देखो 'अहराई' शब्द. Vide 'अहो-राई' पचा० १८, ३,

अहरिम त्रि० (अधरिम) लुओ "अधरिम" श०६ देखो 'अधरिम' शब्द Vide 'अधरिम'. भग० ११, ११; नाया० १, जं० प०

अहरिय. त्रि० (अधरित) तिरस्कृत डरेल. तिरस्कृत Despised, looked upon with contempt सु० च० ५, ७२;

अहरी. स्त्री० (अधरी) लुओ 'अधरी' श०६. देखो 'अधरी' शब्द Vide 'अधरी'. "अहरीसंठाणसंठिया" उवा० २, ६४,—लोड्ड पुं० (-लोष्ट) लुओ 'अधरीलोड्ड' श०६ देखो 'अधरीलोड्ड' शब्द vide अधरीलोड्ड. 'अहरीलोड्डसंठाणसंठियाओ-पाएसु' उवा० २, ६४,

अहरीभूय त्रि० (अधरीभूत) डलडो गणुवा-मां आवेल जो हलका गिना गया हो वह. Despised, regarded as mean. सु० च० २, ५८,

अहरुड्ड पुं० (अधरोष्ठ) लुओ 'अधरुड्ड' श०६.

देखो 'अधरुड्ड' शब्द Vide 'अधरुड्ड' नदी०

अहरोड्ड पुं० (अधरोष्ठ) नीयेनेो डोड नीचे का ओठ The lower lip ओव० १०; जीवा० ३, ३, कप्प० ६, ४३,

अहलंदि पुं० न० (\* यथालन्द ) खिनेो डाय सुडाय तेटला वपतथी भाडी पांच रात्रि पर्यंतनेो डाय जितने समय में गीला हाथ सूखे उतने समय से लेकर पांच रात्रि तक के काल का नाम. Time ranging between that taken up by a wet hand to get dry and that (1 e. time) making up five nights. प्रव० ६२१,

अहलंदि पुं० ( यथालन्दिन् ) जिनडएपी जेवी डडिन क्रिया डरनार, गायरी-बिक्षाने भाटे अमुक डड आधनार साधु, डेजे रोगनी चिडि-त्सा न डरावे, आपनेो भेड पणु न डडे, गाम डडार रहे, डारणु पडये पाण गडडमा आवे, तेना गणुमा पाय साधुओ डोय.

जिनकल्पी के समान काठिन किया करने वाला; चोचरी के लिये खास सीमा बान्धने वाला, रोग की चिकित्सा न कराने वाला, आख का सैल भी न निकालने वाला, शहर के बाहर रहने वाला और कोई कारण पड़ने पर ही वापिस गच्छ में आने वाला साधु इसके गण में पाच साधु होते हैं. An ascetic practising hard austerities like those of a Jaina monk, e g. one who imposes severe limitations upon alms-begging, does not take medical treatment for a disease, does not remove dirt even from eyes, stays outside the town and returns to his order only when necessary. His following (Gana) consists of five Sādhus. प्रव० ६२१;

अहलंदिद्य. पु० ( यथालन्दिक ) लुप्त्यो 'अहलदि' शब्द. देखो 'अहलंदि' शब्द. Vide 'अहलदि.' प्रव० ६२३,

अहल. त्रि० ( अफल ) क्षण विनाशु, निष्फल. फल रहित, निष्फल. Fruitless. उक्त० १४, २४;

अहल्लोय. पुं० (अधोलोक) नीचेतो लोह, पानाध लोह, सात राज परिमित लोहतो नीचलो भाग. अधोलोक; सात राज परिमित लोक के नीचे का हिस्सा The infernal world, the nether world प्रव० ६१६;

अहव अ० ( अथवा ) अथवा, अथवा अथवा, या Or, (an alternative conjunction) सम० पंचा० १०, ३०;

अहवण. न० ( गृह ) घरविशेष. घरविशेष. A particular house. जीवा० ३, ३;

अहवण. अ० ( अथवा ) अथवा. अथवा; वा. Or. पञ्च० १२;

अहवा. अ० (अथवा) विकल्प, अथवा. अथवा; या, विकल्प. Or भग० १, ५; ६, ४; ८, ५, सु० च० १, १४; अणुजो० ३७; पि० नि० भा० ४; विशे० २२; सूय० नि० १, १३, १२३; क० गं० २, २८, क० प० ५, ३३; पंचा० ३, ३;

अहव्वण. पुं० ( अथर्वण ) चार वेदभांते योथो अथर्वण वेद चार वेदों में से चौथा अथर्व वेद. The fourth Veda viz the Atharva Veda भग० २, १; ओव० ३८;—वेय. पु० ( -वेद ) लुप्त्यो उपलो शब्द. देखो ऊपर का शब्द. vide above. भग० २, १, ओव० ३८;

अहसुहुमत्र. पुं० ( यथासूक्ष्मक ) मनभांते मनभां क्रीधादि दुशीलतो सेवनार; कषाय-दुशील. मन ही मन में क्रोधादि कषायों का सेवन करने वाला, कषायकुशील. A morally impure person who cherishes anger etc. in his mind. प्रव० ७३२;

अहस्स. न० (अहास्य) हास्यतो त्याग-अभाव. हास्य का त्याग, हास्य का अभाव. Absence of laughter, giving up or abstaining from laughter. प्रव० ६४४;

अहस्सिर. त्रि० ( अहस्सिर-अहसनशील ) अथवा जोटा धारणु वगर हुआवाना सभाव-वाणो नहि विना सचे भूटे कारणो के न हंसने वाला (One) not given to laughter without a cause "अहस्सिरे सया दंते, न य मम्ममुदाहरे" उक्त० ११, ४; अहा. अ० ( अधस् ) नीचे, नीची दिशा. नीचे. Below, the nether quarter. ठा० ६; भग० २५, ३;

अहा. अ० ( अथा ) जैसा, जैसी रीति; जैसा प्रकार, जिस प्रकार, जैसे. Just as; in

the way in which, as. रात्र० २६;  
भग० १, ६; ३, १; नाया० १;

**अहा अ०** ( अथ ) लुभ्यो 'अह' शब्द. देखो  
“अह”शब्द Vide 'अह' अणुजो० १६;

**अहाअर्थं अ०** ( यथार्थम्-अर्थमनतिक्रम्य )  
यथार्थ, अराअर. यथार्थ, उचित. Properly;  
appropriately ठ० ७;

**अहाइरिक्त त्रि०** ( यथातिरिक्त ) यथातिरि-  
क्त-पोताने भाटे उपभोग इतरां वधे ते.  
अपने उपभोग से बचा हुआ-शेष रहा हुआ.  
(That) which remains after one  
has enjoyed, '(portion) remain-  
ing after enjoyment. आया० १,  
७, ७, २२५;

**अहाउ व०** ( यथायुप् ) जेटलुं आउपुं आधुं  
होय जेटलु जितनी आयु बांधी हो उतनी  
Period of life incurred by one's  
Karma. ठ० ४, १, भग० ११, ११;  
—णिव्वत्तिकाल. पुं० (-निर्वृत्तिकाल-  
यथा यत्प्रकारं नारकादिभेदेनायुः कर्मविशेषो  
यथाऽऽयुः, तस्य रौद्रादिध्यानादिना निर्वृत्ति-  
र्बन्धनं तस्याः सकाशात् यः कालो नारका-  
दित्वेन स्थितिर्जीवानां स यथायुर्निर्वृत्तिकालः )  
जेटलुं आयुष्य आधुं होय जेटलु भोगवतु ते,  
आधेल आयुष्य पुरेपुरी रीते भोगवतानो  
सभय. जितनी आयु बांधी हो उतनी ही  
भोगना, बावी हुई आयु पूर्ण रीति से भोगने  
का समय completing the period  
of life incurred by Karmas.  
“ से किं तं अहाउणिव्वत्तिकाले ? अहा-  
उणिव्वत्तिकाले जं ण येरहएण वा तिरिक्ख-  
जोगिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा  
अहाउणिव्वत्तिरं से तं पालेमाणे अहाउ-  
णिव्वत्तिकाले ” भग० ११, ११; ठ०  
४, १, भग० ११, १०;

**अहाउअ-य. न०** ( यथायुष्क ) जेटलुं आयुष्य  
आधेल होय ते प्रमाणे भोगवतानो कण.  
जितनी आयु बांधी हो उतनी ही भोगने का  
काल Duration of life incurred  
by Karmas. 'दो अहाउय पालेहुं  
तंजहा-देवेचेव नेरहएचेव' ठ० २, ३;

**अहाकड त्रि०** ( यथाकृत ) गृहस्थे पोताने  
भाटे तैयार इरेल आहारादि, आधाकर्मादि  
दोषरहित. गृहस्थ ने अपने लिये तैयार किया  
हुआ आहार वगैरह; आधाकर्मादि दोष रहित  
आहारादि Food etc. prepared by  
a house-holder for himself. पिं०  
नि० भा० ३३; ( २ ) साधुने भाटे आस तैयार  
इरेल आहारादि, आधाकर्मादि आदि दोष साधु  
के लिये खास तैयार किया हुआ आहारादि;  
आधाकर्म आदि दोष. food etc spe-  
cially prepared for a Sādhu;  
food tainted with Adhākarma.  
“अहाकडं न से सेवे सव्वसो कम्म अदक्खु”  
आया० १, ६, १, १८;

**अहाकप्पं अ०** ( यथाकल्पम् ) इएय प्रमाणे;  
जे कियातो जे इएय-विधि शास्त्रमां  
अतावेल होय तेने अनुसरीते, इएयती रीते.  
कल्प के अनुसार, शास्त्राय विधि के अनुसार.  
According to scriptural rites.  
वव० ४, १३, ६, ३७, नाया० १; भग० २,  
१, कप्प० ६, ६३,

**अहाकम्म न०** ( आधाकर्मन् ) साधुने भाटे  
आस आरंभ समारंभ इरी निपज्जवेल  
आहारादि, साधुने भाटे आहारनो अेइ दोष;  
उद्गमना १६ दोषमांनो पडेदो दोष. खास साधु  
के लिये आरंभ समारंभ करके बनाया हुआ आहार  
वगैरह; साधु के लिये होने वाला आहार का  
एक दोष, उद्गम के १६ दोषों में से पहिला  
दोष. One of the 16 faults of  
Udgama, food etc. produced,



prepared for a Sādhu by injuring or killing sentient beings  
भग० १, ४; परह० २, ३; सूय० २, ५; ८,  
अहागड. त्रि० ( यथाकृत ) लुओ 'अहाकड'  
श०६. देखो 'अहाकड' शब्द Vide  
"अहाकड." "अहागडेसु रीयंति पुप्फेसु  
भमरा जहा" दस० १, ४, ओघ० नि० २३२;  
प्रव० ८७८,

अहाचर. त्रि० ( अधश्चर ) दरमां रहेनार साप  
वगेरे. विल. में रहने वाला साप वगैरह  
(A serpent etc) living in under-  
ground holes आया० १, ८, ७, ९,

अहाच्छन्द. पुं० ( यथाच्छन्द ) पोतानी भरल  
मुळ्य वर्तनार, शास्त्रनी आज्ञाने आधीन न  
रहेता पोताना छादा-अभिप्राय प्रमाणे  
वर्तनार साधु. अपनी इच्छा के अनुसार वर्तव  
करने वाला, शास्त्र की आज्ञा के अधीन न रहकर  
स्वच्छन्दचारी साधु. One behaving  
wilfully, regardless of scriptures.  
निसी० ११, ३१, ३२; भग० १०, ४, ओघ०  
नि० १०४, वव० १, ३४; प्रव० १२१;  
—विहारि. त्रि० ( -विहारिन् ) पोतानी  
भरल मुळ्य आलनार; स्वैच्छाचारी. अपनी  
इच्छा के अनुसार चलने वाला, स्वैच्छाचारी.  
wilfully roaming, self-willed.  
नाया० ध० भग० १०, ४;

अहाजाय. न० ( यथाजात—जातं जन्म श्रम-  
णात्वप्रतिपत्तिर्वा, जन्मसमये रचितकरस-  
म्पुटो यथा दहिर्याति श्रमणात्वप्रतिपत्ति-  
काले च गृहीतरजोहरणमुखवस्त्रिकाघोल-  
पट्टकमात्रो भवति, एतद्द्वयमपि जातशब्दार्थ ,  
जातमनतिक्रम्य यथाजातं वन्दनकमित्यर्थः )  
जन्म वप्यते जेम हाथ जेडेल होय तेवी रीते  
हाथ जेडीने अने दीक्षा वप्यते रजेडरलु, मुष-  
वस्त्रिका अने योक्षपट्ट आदि जेम उपगरेलु  
धारलु इया होय तेदनामात्र उपगरेलु धारीने

वंदना करवी ते, वंदनानो ओड प्रकार जन्म  
के समय जिस प्रकार हाथ जुडे होते हैं उसी प्रकार  
हाथ जोडकर और दीक्षा के समय रजोहरण,  
मुखवस्त्रिका, चोलपट्ट आदि उपकरण जिस  
प्रकार धारण किये जाते हैं उसी प्रकार उतने  
ही उपकरण धारण करके वंदना करना; वंदना  
का एक भेद A mode of salutation  
viz with folded hands as at  
the time of birth and with those  
materials only upon the body  
which were there at the time  
of Diksā, e g mouth-cloth  
etc प्रव० २६; ८६७,

अहागिगरणं अ० ( यथानिकरणम् ) जेवी  
रीते इर्म आंभ्यु छे—इर्मनी रयना करी छे तेवी  
रीते. जिस प्रकार कर्म बांधा है उसी प्रकार.  
In the way in which Karma  
is incurred भग० १, ४;

अहाणुपुर्वी. स्त्री० ( यथानुपूर्वी ) अनुक्रम;  
परिपाटी अनुक्रम; परिपाटी Proper  
order, serial order. भग० २, १, ५,  
६, ३३, नाया० १, ओव० ३१, जं० प० ३,  
६७; ५, ११७,

अहातच्च न० ( यथातस्व ) जेवुं होय तेवुं  
इहेवु ते, तत्त्वतु उल्लंघन न करवु ते जैसा  
हो वैसा कहना; तच्च का उल्लंघन न करना.  
Declaring what is truth, not  
going beyond truth भग० २, १;  
ठ० ५, १,

अहातच्चं. अ० ( यथातथ्यम् ) सत्य, वास्तविक;  
असत्य, वास्तविक, ठीक Truth;  
state of a thing being exactly  
as it has taken place. दसा० ४,  
१०१; भग० १६, ६, वव० ६, ३७, सम०-१०;  
कप्य० ६, ६३,

**अहातत्थिज्ज** न० ( यथातथ्यक ) सूयगडा-  
गसूत्रनां तेरमा अध्येयननु नाम. सूयगडाग  
सूत्र के तेरहवे अध्यायका नाम Name of  
the 13th chapter of Sūyaga-  
dānga Sūtra अणुजो० १३१,  
**अहातहं** अ० ( यथातथ्यम् ) नेम होय तेम  
जैसे का तैसा Exactly, without the  
slightest deviation आया० १, ४,  
४, १४०,  
**अहापज्जत्त** त्रि० ( यथापर्याप्त ) धञ्छा पु२तु प्राप्ति  
थयेल, नेधये तेतलु भणेले आवश्यकतानुसार  
मिला हुआ. Enough, obtained to  
one's fill विवा० २, ७; नाया० १६, १६,  
भग० २, ५, ७, १०;  
**अहापडिग्गहिय** त्रि० ( यथाप्रतिगृहीत )  
नेतलु लीधु हतु तेतलु, ओछुं थयेलु नहि  
दिनु प्रथम लीधेव हतु तेतलु. जितना लिया  
था उतना ही, कम नहीं Exactly as  
much as was taken or got,  
neither more nor less भग० २, ५,  
**अहापडिरूव** त्रि० ( यथाप्रतिरूप ) यथायोग्य,  
उचित उचित, यथायोग्य. Proper, ap-  
propriate नाया० १, २, ५, १३, १४,  
१६; भग० २, ५, ६, ३३, राय० २७, विवा०  
१, दसा० १०, १, नाया० ध० निर० १, १,  
**अहापणिहिय** त्रि० ( यथाप्रणिहित ) यथा-  
वस्थित यथावस्थित, जैसे का तैसा रहा  
हुआ Exactly in the condition  
in which a thing stands अहापणि-  
हिण्हिं गाण्हिं ” भग० ३, २, दसा० ७, १२;  
**अहापरिग्गहिय** त्रि० ( यथापरिगृहीत ) नेपी  
रीते लीधु होय तेपी रीते स्वीकारेव. जिस  
प्रकार लिया हो उसी प्रकार स्वीकार किया  
हुआ. ( Anything ) as accepted,  
in the manner in which ( it ) is  
accepted. भग० २, ५; ११, १२;

**अहापरिणायं** त्रि० ( यथापरिज्ञात ) नेटली  
जग्याने माटे डहेवामा—इरभाववामां आण्युं  
होय तेटली जग्या. जितना जगह के लिये कहा  
गया हो उतनी जगह Room space  
exactly as ordered “अहापरिणायं  
वसिस्सामो ” आया० २, २, ३, ८६;  
**अहापवत्त** न० ( यथाप्रवृत्त ) अनादि काण्ठी  
ने स्वभावे वर्ते छे ते स्वभावे वर्तना२;  
स्वभावान्तरने पाभेले नहि अनादि काल से  
जिस स्वभाव के अनुसार वर्ताव कर रही हो  
उसी स्वभाव के अनुसार वर्ताव करने वाली  
वस्तु, स्वभावान्तर को प्राप्त न होने वाली वस्तु.  
Unchanged in nature, maintain-  
ing the nature coming down  
from times immemorial क० प०  
२, ६, ५, ८, पचा० ३, ६, नाया० ५;  
—करण न० (—करण) लुओ। ‘अहापवत्त’  
श०६. देखो ‘अहापवत्त’ शब्द vide  
‘अहापवत्त.’ क० प० ७, ४१,  
**अहापवित्त** त्रि० ( यथाप्रवृत्त ) यालु प्रवृत्ति-  
मां नेटलु नेधये तेतलु, यथायोग्य प्रच-  
लित प्रवृत्ति में जितना चाहिये उतना, यथा-  
योग्य Proper, appropriate, just  
as much as is needed. अत० ५,  
१, नाया० १६;  
**अहापवित्ति** स्त्री० ( यथाप्रवृत्ति ) उचित  
प्रवृत्ति उचित प्रवृत्ति. Proper action  
or activity नाया० ५, —करण न०  
(—करण) समकितने अतुडूण अध्ववसाय-  
विशेष. सम्यक्त्व के अनुकूल अध्ववसायवि-  
शेष thought-activity favour-  
able to right faith क० गं० ५, ८;  
**अहावद्ध** त्रि० ( यथावद्ध ) नेधये तेतुं  
भण्युत पाधेले, दढ गोडेवेले आवश्यकता  
के अनुसार मजबूत बाधा हुआ. Strongly

fastened; tied; firmly fixed.

आया० २, २, ३, ६६;

**अहावादर.** त्रि० ( यथावादर-यथास्थूल )

स्थूल स्थूल; ञडुं ञडुं. स्थूलातिस्थूल; बहुत मोटा. Very gross. भग० १६, ४;

**अहावायर** त्रि० ( यथावादर-यथास्थूल ) लुओ।

उपलो शब्द देखो ऊपर का शब्द. Vide above. "अहावायराइं कम्माइं" भग० ६, १; आया० २, १५, १७६; कप्प० २, २६;

**अहावीय.** न० ( यथावीज ) जेभांथी आऽनी

उत्पत्ति थाय तेथीज. जिसमें से वृक्ष की उत्पत्ति हो वह बीज. A seed from which a tree grows. तेसिचणं अहावीणं" सूय० २, ३, ४३;

**अहावुइय.** न० ( यथोक्त ) जेम डुल्लुं होय तेम;

जैसे का तैसा कहा हुआ (Anything) as said or mentioned. सूय० १, १४, २५;

**अहाभूत.** त्रि० ( यथाभूत ) जेम होय तेम;

तात्पर्य. जैसे का तैसा; तात्त्विक. As (it has) happened; true. ठ० १, १;

**अहामगं.** अ० ( यथामार्गम् ) ज्ञान आदि भेक्ष

मार्गते अनुसार. ज्ञान आदि मोक्ष मार्ग के अनुसार. Following the path of knowledge etc leading to salvation. नाया० १; वव० ६, ३७; भग० २, १; कप्प० ६, ६३; ( २ ) औदधिक लावने पसार डरीने; क्षयोपशम लावनुं उद्वंघन न डरीने. औदधिक भाव को दूर करके; क्षयोपशम भाव का उद्वंघन न करके crossing or transgressing the stages of destruction and subsidence of Karma. ठ० ७;

**अहारायणियं.** त्रि० ( यथारात्तिक )

आऽत्रि डरी अधिक; दीक्षा-प्रव्रज्यामां

भ्ये. चारित्र को अपेक्षा से महान्. Superior by reason of right conduct; superior in asceticism.

वव० ८, १; वेय० ३, १६; नाया० १;

**अहारायणियं.** अ० ( यथारात्तिकम् )

दीक्षां न्हाणा भ्ये. होय तेना अनुक्रमते अनुसार; न्हाण भ्ये. होय तेना अनुसार-प्रमाणे. दीक्षा की छोटाई बड़ाई के क्रम के अनुसार. In the order of superiority, seniority in asceticism 'अहारायणियं गामाणुगामं दूहजेज्जा' आया० २, ३, ३, १२८;

**अहारिय.** न० ( यथारीत-यथारीति ) यथायोग्य

रीति; रीति-आधु पद्धतिने अनुसरी. यथायोग्य रीति; प्रचलित रिवाज के अनुसार. According to the current method or fashion; following the proper method. "अहारियं रीयइ" भग० ५, २;

**अहारिय.** त्रि० ( यथार्ह ) यथायोग्य; उचित;

वाज्यी; लोकाचार प्रमाणे. यथायोग्य; वाजिव; लोकाचार के अनुसार. Proper; appropriate; in accordance with prevailing popular opinion. ठ० २, १;

**अहारियं.** अ० ( यथेर्यम् ) जेम धरिया समिति.

शोधय-जणवाय तेरी रीते जिस प्रकार से इरिया समिति का पालन हो सके उस प्रकार से. In the way in which carefulness in walking is preserved. "अहारियं रीणुजा" आया० २, ३, २, १२८; दसा० ७, १;

**अहारिह.** त्रि० ( यथार्ह ) लुओ. 'अहारिय'

शब्द. देखो अहारिय' शब्द. Vide 'अहारिय.' दसा० १०, ११; वेय० ४, २५; भग० ८, ६; ठ० २, १; वव० १, ३७;

**अहालंद. पु०** ( यथालन्द ) जेटला वषतने भाटे कछु होय तेटलो वषत; यथालंदकाण न्धन्य होय तो पाणीथी लीने हाथ सुकाय तेटलो वषत, उत्कृष्ट यथालंदकाण पांय द्विवस अने मध्यम यथालंदकाण ते जेनी वञ्चेने वषत. जितने समय के लिये कहा गया हो उतना समय; पानी से भांगा हुआ हाथ जितनी देरी में सूखे उतने समय को जघन्य यथालंद काल कहते हैं और पांच दिन की अवधि तक उत्कृष्ट यथालंद काल होता है तथा इन दोनों के बीच का समय मध्यम यथालंद काल कहलाता है. Specified time; the minimum Ythālānda time is that required by a wet hand to get dry; the maximum is five days the medium ranging between the two वे० २, १; आया० २, ७, १, १५६; वव० ४, २१; कप्प० ६, ६, प्रव० १७,

**अहालंदिय. पुं०** ( यथालन्दिक ) लुञ्जे। 'अहलंदि' शब्द देखो 'अहलदि' शब्द. Vide 'अहलंदि.' प्रव० ६३१;

**अहालहुग** त्रि० ( यथालघुक ) अतिलघु, अति-छानो बहुत छोटा, अत्यन्त लघु Very small, very young. सू० २, २, १८;

**अहालहुय.** त्रि० ( यथालघुक ) लुञ्जे उपलो शब्द देखो ऊपर का शब्द Vide above नाया० ६; दसा० ६, ४;

**अहालहुसग.** त्रि० ( यथालघुस्वक ) कंठक नानो अने छलका; छानाभां छानो. कुछ छोटा और हलका, छोटे से भी छोटा. Some what small and light, smallest "देवाण अहालहुसगाइं रयणाइं हंता अत्थि" भग० ३, २; वव० ८, ११,

**अहावगासं** अ० ( यथावकाशम्—यो यस्या-वकाश उत्पत्तिस्थानं भूमिबीजसंयोगादिर्वा तदनतिक्रमेणैवार्थ ) जेवुं उत्पत्ति स्थान होय ते त्रेभाणे जैसा उत्पत्तिस्थान हो उसके अनुसार In accordance with the source or place of birth. "तेसि चण अहावीपुणं अहावगासेणं इत्थीण्" सू० २, ३, ४३;

**अहावच्च.** पुं० ( यथापत्य ) पुत्रस्थानीय; पुत्र समान पुत्रस्थानीय, पुत्र के समान. ( One ) in the place of a son; equal to a son भग० ३, ६, ७; —अभिरणाय त्रि० (—अभिज्ञात ) पुत्र समान लण्णेलो पुत्र के समान जाना हुआ. known as, treated as a son. भग० ३, ७,—देव. पुं० (—देव ) पुत्रस्थानीय देव; पुत्रसमान देव. पुत्र के समान देव. a god looked upon as a son, a god equal to a son. भग० ३, ७, ४, ४,

**अहावरं.** अ० ( अथापरम् ) त्थार पछी, वणी थिलुं इसके बाद Again; moreover. सू० १, १, २, २४, दस० ४,

**अहाविहि** अ० ( यथाविधि ) शास्त्रना न्यायने अनुसार, परापर विधिपूर्वक शास्त्र के न्यायानुसार, यथायोग्य विधिपूर्वक In accordance with prescribed, scriptural ceremony दसा० ४, ६३, ७, १,

**अहास.** त्रि० ( अहास्य ) हारयरहित हास्य रहित. Free from laughter, devoid of laughter भत्त० १३,

**अहासंधड** न० ( यथासंस्तृत ) जेधुंजे तेवी रीते पाथरेल, शयनयोग्य जैसा चाहिये वैसा वि-छाया हुआ. Properly spread, e g. a bed. आया० २, २, ३, १०२, दसा० ७, १३

अहासंध. न० ( यथासंस्कृत ) जेही रीते उपभोग थप शक्ये तेही रीते संस्कार पमाडेवुं जिस प्रकार उपभोग किया जा सके उस प्रकार संस्कार किया हुआ. Properly refined and made fit for use ठा० २, ४,

अहासंविभाग. पु० ( यथासंविभाग-यथा-सिद्धस्य स्वार्थं निर्वर्तितस्वाशनादेः पश्चात्क-र्मादिदोषपरिहारेण विभजनं साधवे दान-द्वारेण विभागकरणं यथासंविभागः ) गृहस्थे जमती व्रभते, पुराडर्म अने पश्चा-डर्म दोष न लागे तेही रीते, पोताना भेराड-मांथी 'अमुक भाग साधु पधारे तो ंडोरवुं' जेही लावना लावपी ते, श्रावकनु पारमु व्रत भोजन करते समय पुराकर्म और पश्चात्कर्म दोष न लगे उस प्रकार अपने भोजन में से अमुक भाग साधु के पधारने पर देने की भावना करना, श्रावक का वारहवाँ व्रत The 12 th vow of of a Śrāvaka viz meditating in mind at the time of taking food that a portion of it might be given without incurring any fault to a Sādhu if he came up there at the time. उवा० १, १;

अहासच्च न० ( यथासत्य ) अरेअर, अर-अर, यथातथ्य; सायेसायुं, यथार्थ, सत्य; वास्तविक. Truly, truthfully आया० १, ४, २, १३१,

अहासरिणाहियं अ० ( यथासन्निहितम् ) जेठवुं जेठजे तेठवुं नठुं जितना समीप चाहिये उतना As near as is necessary; within the necessary limits of proximity. नाया० ८, १४; भग० ७, ६;

अहासम्मं अ० ( यथासान्यम ) जेजे जेजे तेजे समभाव जितना चाहिये उतना मन-

भाव. Proper equality; due even-handedness भग० २, १;

अहासुत्तं अ० ( यथासूत्रम् ) सूत्रानुसार; सूत्रमां डुं छे ते प्रमाणे. सूत्र के कहे अनुसार. In accordance with what is given in the Sūtras. नाया० १; ८, भग० २, १, ७, १; १०, १; सम० ४६; वव० ६, ३७; कप्य० ६, ६३;

अहासुयं अ० ( यथाश्रुतम् ) जेवुं सांलज्युं होय तेवुं, सांलज्या प्रमाणे जैसा सुना हो वैसा. In accordance with what is heard; as heard. आया० १, ६, १, १; सूय० १, ६, २,

अहासुहं अ० ( यथासुखम् ) सुप्पानुसार; जेम पोताने सुप् थाय तेम डरवु. जिस रीति से अपने को सुख हो उस प्रकार करना. As one likes, according as one is pleased नाया० १; ५, १२, १४, १६; भग० १, ६, २, १, ५, ६, ३३; १६, ५, निर० ३, ४, सूय० २, ७, ४०,

अहासुहुम पु० ( यथासूचम ) निर्ग्रथनो जेक प्रकाश, सर्व समयवर्ति निर्ग्रथ, पठम, अपठमादि विशेषणरहित सामान्य निर्ग्रथ सर्व समय-वर्ती साधारण निर्ग्रन्थ. An ordinary Jaina monk, a class of Jaina monks to be met with in all times प्रव० ७३३,—कसायकुसील. पु० (—कपायकुसील ) भनथी सक्षमरीते कौधादिने सेवन डरनार (साधु) मन द्वारा सूचम रीति से कौधादिक का सेवन करने वाला (साधु), ( an ascetic ) harbouring anger etc in the mind in a slight diluted form भग० २५, ६;—रियंठ. पु० (—निर्ग्रन्थ ) गुणुडाणाना सर्व समयमा वर्तमान निर्ग्रन्थ; अरम समयमादि विशेष भेद-

रहित सामान्य निर्ग्रन्थ गुणस्थान के सर्व समय मे वर्तमान निर्ग्रन्थ, चरम समय आदि विशेष भेदों से रहित सामान्य निर्ग्रन्थ an ordinary ascetic who is not strictly confined to a particular Gunasthāna भग० २५, ६,—पुलाय पुं० (—पुलाक ) मनथी ज्ञान आदिना अति-चार सेवी संयमने नि सार अनापनार (साधु) मन से ज्ञान आदि का अतिचार सेवन कर संयम को निःसार बनाने वाला ( साधु ) an ascetic frustrating the object of asceticism by harbouring in mind thoughts of violation of right knowledge etc भग० २५, ६;—वउस पु०(—बकुश) शरीर संयंधी के छिपगरेणु संयंधी द्वियित दोष लगाउनार ( साधु ) शरीर सम्बन्धी अथवा उपकरण सम्बन्धी किंचित् दोष लगाने वाला (साधु) a person who incuies a slight fault in the matter of his implements or his body. भग० २५, ६;

**अहासुहुमं** अ० ( यथासूक्ष्मम् ) लोभये तेयुं सूक्ष्म-आरीड जितना चाहिये उतना सूक्ष्म As fine as is necessary, as fine as is needed. नाया० १, भग० ३, १, २५, ६, कप्प० २, १६, जं० प० ३, ६८, **अहि.** पु० ( अहि ) सर्प; साप, नाग सर्प, साप. A serpent “से किं त अही ? अही दुविहा पणत्ता, तंजहा—द्विवियकरा य मउ-लिणो य ” पञ्च० १; अणुजो० १३१, जं० प० सूय० २, ३, २४, उत्त० ३६, १८०; जीवा० १, पिं० नि० २००, नाया० १, भग० ६, ३३, पंचा० २, २२,—दृष्ट न० (—दृष्ट) सर्प दश ( उंश ) सर्प दश a serpent-bite. “ अहिदृष्टाइसु छेयाइ वज्जयंतीह

तह सेसं”पंचा० १८, २७,—मड.पु०(—मृत) भरेखा सर्पनुं शरीर, सर्पनु डलेवर मरे हुए सर्प का शरीर. a dead body of a serpent नाया० ८, ६, १२, उत्त० ३४, १६, विवा० १, १,—सिलागा स्त्री० (—शलाका) ओड तरेहुतो मुकुली सर्प. एक तरह का मुकुली सर्प a kind of serpent पञ्च० १,

**अहिअ.** पुं० ( अस्त्रिक ) ढास, धार धार. Edge राय० १५६,

**अहिआर.** पुं० ( अधिकार ) अधिकार; डे डे. अधिकार, ओहदा, पद Authority; high post पिं० नि० ८६,

**अहिंसअ** त्रि० ( अहिंसक ) हिंसा न करनार; प्राणिनो वधं न करनार, भीष्ण डोधनि दु ष्य न आपनार हिंसा न करने वाला, किसी प्राणी को दु ख न देने वाला. (One) who does not kill or injure or give pain to another परह० २, १;

**अहिंसया.** स्त्री० ( अहिंसता-अहिंसा ) अहिंसा; हिंसानो अभाव अहिंसा, हिंसा का अभाव. Absence of killing or injuring; state of being free from the sin of killing “ ज सोच्चा पडिव-ज्जति, तवं खतिमहिसय ” उत्त० ३, ८,

**अहिंसा.** स्त्री० ( अहिंसा ) अहिंसा, प्राणिनो वधनो अभाव, अथवा अहिंसा; प्राणिवध का अभाव; जीवदया. Mercy towards living beings; non-injury, non-killing दस० १, १, ६, ६, सूय० १, १, ४, १०, पंचा० ७, ४२;—समय पुं० (—समय) अहिंसाप्रधान आगम, अहिंसाने प्रधानपणे दर्शावनार शास्त्र अहिंसा की प्रधानता से उपदेश देने वाला शास्त्र a scripture principally inculcat-

ing non-injury and non-killing

सूय० १, ११, १०;

अहिंसित. त्रि० ( अहिंसित ) जेने मार-  
वाभां न आवे ते जिसे मारा न जाय वह.  
'Not injured; non-killed.' सूय०  
१, १, ४, ६;

अहिक. त्रि० ( अधिक ) अधिक; विशेष.  
अधिक; विशेष More; additional  
अणुजो० १२८,

अहिकरण. न० ( अधिकरण ) लुओ 'अधि-  
गरण' शब्द देखो 'अधिगरण' शब्द.  
Vide "अधिगरण" "भिक्षू य अहि-  
करणं कट्टु तं अहिकरणं अविओसमिता  
नो से कप्पइ गाहावइकुलं" निसी० १०, ४;

✓अहिक्खव. धा० I. ( अधि+क्षिप् )  
तिरस्कार करवे, अपमान करवुं. तिरस्कार  
करना, अपमान करना. To insult; to  
show contempt.

अहिक्खवइ. उक्त० ११, ११;

अहिकखेव. पुं० ( अधिक्षेप ) निन्दा.  
निन्दा. Censure परह० १, २;

अहिग. त्रि० ( अधिक ) लुओ "अधिक"  
शब्द. देखो 'अधिक' शब्द. Vide 'अधिक'.  
पंचा० ३, १४;—पदाण न० (—प्रदान)  
इराव इरता अधिक हेतुं ते. ठहराव से अधिक  
देना. giving more than what is  
settled by contract or agree-  
ment पंचा० ७, २१;

अहिगत्त. न० ( अधिकत्व ) अधिकपणुं  
अधिकता. State of being more or  
additional. पंचा० ३, १४;

अहिगम. पुं० ( अभिगम ) उपचार; आवडना  
पांय अभिगमनभांते गमे ते ओइ. उपचार;  
आवक के पाच अभिगमनों में से कोई भी एक  
Any one of the five Abhiga-

manas of a Śrāvaka; service,  
politeness of behaviour etc.

"अभिगमेण अभिगच्छंति" ओव०

अहिगम पुं० ( अधिगम ) लुओ "अधिगम"  
शब्द देखो "अधिगम" शब्द Vide  
"अधिगम." ठा० ७; दसा० ६, १३; विशेष०  
२६५; ६०८; क० प० २, १०२,—रुइ.  
पुं० (—रुचि) उपदेश सांलणवाथी थओइ  
सम्यक्त्व (समझित); सम्यक्त्वने ओइ  
प्रकार उपदेश सुनने से उत्पन्न हुआ सम्यक्त्व;  
सम्यक्त्व का एक भेद. right faith en-  
gendered dy hearing a reli-  
gious sermon प्रव० १४५;

अहिगमओ. अ० ( अधिगमतस् ) तीर्थंकर  
आदिनी समीपे धर्म श्रवणु इरवाथी. तीर्थ-  
कर आदि के समीप धर्म श्रवण करने से.  
Through hearing religion ex-  
plained by Tirthankaras etc.  
विशे० २६७५;

अहिगमय. त्रि० ( अधिगमक ) अर्थने पता-  
पनाइ, अर्थ को बताने वाला (One) who  
explains the meaning. विशेष० ५०३;

अहिगय. न० ( अधिकृत ) लुओ "अधिगय"  
शब्द. देखो 'अधिगय' शब्द. Vide "अधि-  
गय." विशेष० १२०;

अहिगय. त्रि० ( अधिगत ) दीक्षा लेवानी  
साथे स्वीकार करेइ दीक्षा लेने के साथ स्वी-  
कार किया हुआ. Accepted at the  
time of taking Diksā पंचा० २, २३;  
पत्र० १; उक्त० २८, १७,—जीव पुं०  
(—जीव) जेणे आत्मस्वरूप जणुं छे ते;  
दीक्षा लेवने योग्य जणुं. जिसने आत्मस्वरूप  
को जान लिया हो; दीक्षा लेने के योग्य जीव.  
one who has known the real  
nature of a soul; a soul fitted to

take Diksā i. e. enter the ascetic order पंचा० २, २३;—जीवा-जीव. त्रि० (—जीवाजीव—अधिगतौ सम्य-ग्विज्ञातौ जीवाजीवौ येन स तथा ) ७७, अ७७ आदि नव तत्त्वने लक्षणार जीव, अजीव आदि नौ तत्त्वों को जानने वाला. (one) who knows the nine categories viz soul, matter etc. राय०

**अहिगयर.** त्रि० ( अधिकतर ) अत्यंत अधिक बहुत ज्यादह. Much more; much in excess. पंचा० १, ५;—**गुण** पुं० (—गुण ) वधारे श्रेष्ठ गुण. अधिक श्रेष्ठ गुण. a superior quality. पंचा० १, ३, ४;

**अधिगरण.** न० (अधिकरण) लु०ओ। “अधि-गरण” शब्द देखो “अधिगरण” शब्द. Vide “अधिगरण.” जं० प० ३, ६३; प्रव० २८३; पंचा० १, २४, कप्प० ६, ५८; राय० २२४; ११५, दसा० १, १३; विशेष० २२६०; वेय० १, ३३, ३, २३, पि० नि० १६६, ५०६, सूय० १, २, २, १६; भग० २, ५; १६, १;

**अधिगरणिया.** स्त्री० (अधिकरणिकी) लु०ओ। ‘अधिगरणिया’ शब्द देखो ‘अधिगर-णिया’ शब्द. Vide “अधिगरणियां.” भग० १, ८; ३, ३; ८, ३, सम० ५; पञ्च० २२; आव० ४, ७;

**अधिगरणी.** स्त्री० (अधिकरणी) लु०ओ। ‘अधिगरणी’ शब्द देखो ‘अधिगरणी’ शब्द. Vide “अधिगरणी” भग० ६, १, जं० प०—**खोडी.** स्त्री० (—खोडि) लु०। लाड्डामा अेरणु भेसाडेली होय छे ते लाड्डुं जिस लकड़ी में ऐरन लगी हुई हो वह लकड़ी a piece of wood in which anvil is fixed. भग० १६, १,

**अधिगार.** पुं० (अधिकार) लु०ओ। ‘अधिगार’—शब्द देखो ‘अधिगार’ शब्द. Vide

‘अधिगार’ सु० च० २, ५५४; पि० नि० ६८; ओघ० नि० ४०६, प्रव० १; विशेष० ६;

**अधिगारि.** पुं० (अधिकारिन्) अधिकारी. अधिकारी One who has got an authority, a right etc. प्रव० ६४;

**अधिगिच्च.** सं० कृ० अ० (अधिकृत्य) प्रतीत करीने प्रतीति-यकीन करके. Having confided भग० १, १; पंचा० १३, ३७;

**अधिच्छत्ता.** स्त्री० (अधिच्छत्रा) लु०ओ। देशनी मुख्य नगरी. जंगल-देश-की मुख्य नगरी. The principal city of the country named Jangala “चंपाए रायरीए उत्तरपुरत्थिमे अधिच्छत्ता नाम रायरी होत्था” नाया० १६, १५; प्रव० १६०२, पञ्च० १;—**रायरी** स्त्री० (—नगरी) लु०ओ। उपलो शब्द देखो ऊपर का शब्द vide above. नाया० १५;

**अधिजाय.** त्रि० (अभिजात) पुलीन, उँया पुलीमां उत्पन्न थयेल. कुलीन, कंचे कुल में पैदा हुआ. Nobly born “अधिजायं महक्खमं” भग० ६, ३३,

✓ **अधिज्ज.** धा० I (अधि+इ) अध्थयन करवुं, लखुयुं. अध्ययन करना, पढना To study.

**अधिज्जइ** नाया० १; ५; १६, भग० २, १; ६, ३३, ११, ११, १६, ८; १८, २, वव० ३, १०, ११,

**अधिज्जंति** नाया० १६, सूय० १, ८, ४;

**अधिज्जेजा.** वि० भग० २५, ६, ७;

**अधिज्जिस्सामि.** वव० ३, १०;

**अधिज्जिउं** हे० कृ० दस० ४;

**अधिज्ज सं० कृ०** “अधिज्ज वेए परिविस्स विप्पे” उक्त० १४, ६; १२, १५;

**अधिज्जित्ता.** सं० कृ० नाया० ८, १२, १५;

दस० ६, ४, २, ३; भग० २, १;

उक्त० १, १०,



अहिज्जज्ज सं० कृ० सु० च० १, २३०,  
अहिज्जि-ज्ज-इत्ता सं० कृ० नाया० १; भग०  
२, १; ६, ३३; ११, ११; १८, २;  
अहिज्जा. सं० कृ० सूय० १, १२, ६,  
अहीउं. सं० कृ० विशे० ५६३;  
अहिज्जंत. व० कृ० उत्त० २८, २१; पन्न० १,  
प्रव० ६६८,

अहिज्जश्च. त्रि० (अध्येतृक) लुओ  
'अहिज्जग' शब्द देखो 'अहिज्जग' शब्द.  
Vide "अहिज्जग." वव० ३, १०;

अहिज्जग. त्रि० (अध्येतृक) लणुना२; पाठ  
-अध्ययन करनेवाला. (One)  
who studies. "दिट्ठिवायमहिज्जगं"  
दस० ८, ५०;

अहिज्जिभयत्ता. स्त्री० (अभिधितता-भिध्या  
लोभः सा सज्जाता यत्र स भिधियतः, न  
भिधियतोऽभिधितस्तस्य भावस्तत्ता )  
अलोभ, लोभतो अभाव लोभ का अभाव  
Absence of greed or avarice.  
भग० ६, ३,

✓अहिट्ठ. धा० II (अधि + स्था) लुओ  
'अधिट्ठ' धातु. देखो 'अधिट्ठ' धातु. Vide  
"अधिट्ठ"

अहिट्ठेइ. "जे भिक्खू रयहरण अहिट्ठेइ"  
निसी० ५, २२; १२, ६;

अहिट्ठिअइ. निसी० ५, ७८,

अहिट्ठए वि० उत्त० ३४, ६१;

अहिट्ठिए. वि० सूय० १, २, ३, १५,  
दस० ६, ४, १;

अहिट्ठित्तए हे० कृ० वेय० ३, ३, वव० ८, ८;

अहिट्ठाण. न० (अधिष्ठान) भेसतुं; आश्रय  
करने के बैठना, आश्रय लेना. Sitting,  
taking resort to. प्रव० ८८६ (२) भेड्ड,  
गुदा प्रदेश; भेसण्णी बैठक, गुदा प्रदेश. the  
hips. ओघ० नि० भा० ७६,

अहिट्ठिअ त्रि० (अधिष्ठातृ) अनुष्ठान करनेवाला.  
अनुष्ठान करने वाला (One) who  
does or performs "सकमायजोग च  
सया अहिट्ठिए" दस० ८, ६२;

अहिट्ठिअ. त्रि० (अधिष्ठित) निवास करेला;  
रहेला. निवास किया हुआ, रहा हुआ.  
Resorted to, having an abode  
in; remaining. "एगंतमहिट्ठिओ  
भयवं" उत्त० ६, ४, (२) वश थओल;  
ताथे थओल वशीभूत; वश हुआ come  
under control. "राजाहिट्ठिया"  
नाया० १४,

अहिट्ठिज्जमाण व० कृ० त्रि० (अधिष्ठीयमान)  
आक्रमण करातुं आक्रमण कराता हुआ.  
Being invaded. ठा० ४, १;

अहिणव. त्रि० (अभिनव) नया, नवीन गुणु-  
वाणो नया; नये-गुणों वाला. New;  
fresh. राय०

अहिणिवोह. पुं० (अभिनिबोध) मतिज्ञान.  
मतिज्ञान Matijñāna, knowledge  
derived through the five  
senses and the mind (२) मति  
ज्ञानना आवरणतो क्षयोपशम मतिज्ञान. के  
आवरण का क्षयोपशम. the destruction  
and subsidence of the  
obstacles of Matijñāna. पन्न० २६;

अहिणण. त्रि० (अभिन्न) न भेदेला. न भिदा  
हुआ. Unbroken; unpierced. पंचा०  
११, ३८,—गांठि. त्रि० (-ग्रन्थि) व्येथे  
राग द्वेषनी मज्जवूत गांठ भेदी नथी ते जिसने  
राग द्वेष की मज्जवूत गांठ नहीं भेदी वह.  
(one) who has not broken or  
pierced the hard tie of passion  
and hatred पचा० ११, ३८,

अहित्त. त्रि० (अभितप्त) अति पीडाओलो;  
तपेले, तातो थओलो. अति पीडाओला;  
तपेले, तातो थओलो. अति पीडाओला;  
तपेले, तातो थओलो.

हुआ. Greatly afflicted, greatly heated उक्त० २, ६,  
**अहिताव.** पुं० ( अभिताप ) गरमी, ताप. गर्मी, ताप Heat. “पुट्टे गिम्हाहितावेण” सूय० १, ३, १, ५,  
**अहिता.** सं० कृ० अ० ( अधीत्य ) लक्ष्मीने; पढन करीने. पढकर Having studied. “अट्टंगमेयं बहवे अहिता, लोगंसि जाणंसि अणागताइं” सूय० १, १२, ६,  
**अहिनव** त्रि० ( अभिनव ) लुभो ‘अहिणव’ शब्द. देखो ‘अहिणव’ शब्द Vide “अहिणव.” पिं० नि० १८०,  
**अहिनायदंसण.** त्रि० ( अभिज्ञातदर्शन ) अभिज्ञात-संमत छे दर्शन जेतु ते, शांत. जिसका दर्शन अभिज्ञात-सम्मत हो वह, शांत Of a calm, agreeable appearance, ( one ) whose sight is agreeable. आया० १, ६, १, ११,  
**अहिमर** पुं० ( अभिमर-अभिमुखा सन्तो त्रियन्ते परान् मारयन्ति वा ये तेऽभिमरा ) रक्षाभे रक्षीने भरे अथवा भारे ते सन्मुख रहकर मरने, मारने वाला. ( One ) who stands face to face and kills or is killed विशेष० १७६३, परह० १, ३, ओष० नि० भा० २५,  
**अहिय-अ** त्रि० ( अधिक ) अधिक, वधारे, विशेष. अधिक, ज्यादाह. विशेष More; additional. उक्त० ३४, ३४, ओष० ३०, अणुजो० १३४, नंदी० १२, पिं० नि० २२६; ३२७, नाया० १, विशेष० १३४, भग० ७, ६, ११, ११, २४, १, कप्प० ३, ४०, ४, ६२, क० ग० ४, ४१, जं० प० ४, ६; ७, १३२, प्रव० ८२१, —खंति स्त्री० ( -क्षान्ति ) अत्यन्त क्षान्ति, अधिक क्षमा अधिक क्षान्ति-क्षमा greater forgiveness; additional pardon नाया० १०;—दिण पुं० ( -दिन ) अधिक

दिवस अधिक दिन. an additional day ठा० ६,—पिच्छुण्णिज्जं. त्रि० ( -प्रेक्षणीय ) अधिक जेवा लायक. खूब देखने योग्य worthy of being particularly seen or observed कप्प० ४, ६३;—**पोरिसीय.** त्रि० ( -पौरुपीक ) पुरुष प्रमाण इतरा अधिक पुरुष प्रमाण से ज्यादाह. more than is natural to man “ कुंभी महताहियपोरिसीया, समूसिता लोहियपूयपुरणा ” सूय० १, ५, १, २४,—**मंडल.** पुं० ( -मण्डल ) अधिक भङ्ग-भाङ्गो अत्रिक मंडल-घेराव an additional or a larger circle नाया० १०,—**वरण** पुं० ( -वर्ण ) अधिक वर्ण-रंग. ज्यादाह रंग. more colour, deeper. नाया० १०,

**अहिय-अ** त्रि० ( अहित ) अहित इतरा अहित करने वाला Injurious; harmful, दसा० ६, १, ४, ७, १२, ६, १२, सम० ३०, सूय० १, १, २, ६, ( २ ) पुं० अहित; असुख अहित, असुख. uneasiness, harm आया० १, १, २, १६, १, ३, १, १०६, दस० ६, १, ४,—**गामिणी** स्त्री० ( -गामिनी ) अहितकारी भाषा injurious, pernicious speech दस० ८, ४८,

**अहिययर** त्रि० ( अधिकतर ) अतिधलुं, अतिशय अधिक-वधारे. बहुत ज्यादाह Too much, excessive सु० च० २, ३५८,—**वरण** पुं० ( -वर्ण ) अतिशय अधिक रंग बहुत ज्यादाह रंग too much colour, too deep colour नाया० १०,

✓ **अहियास.** घा० II ( अधि + आस् ) सहन करवु, सहन करना To bear; to endure.

अहियासेह. आया० १, ६, ३, १८५; २,  
१५, १७६; नाया० ११; जं०  
प० २, ३१; अंत० ६, ३;

अहियासिजा. वि० आया० १, ६, २, १८४;

अहियासए. वि० दसा० ७, १; उत्त० २,  
२३; सूय० १, ६, ३०; दस० ५,  
२, ६; ८, २६, वव० १०, १;  
नाया० १;

अहियासिस्तं. भवि० उ० ए० भग० १५, १;

अहियासित्तए. हे० कृ० आया० १, ७, ४,  
२१५; भग० ६, ३३;

अहियास. पुं० (अध्यास) परिषद् वगेरे  
सारी रीते सहन करवां ते; उपसर्गथी  
व्यवस्थामान नथतां चारित्र परापर पाणवुं ते  
परीषद् वगैरह को अचछी तरह सहन करना;  
उपसर्ग से चलायमान न होकर चारित्र का  
बराबर पालन करना. Endurance of  
troubles and difficulties; main-  
tenance of right conduct in-  
spite of disturbances. पत्र० २;

अहियासण. न० (\*अध्यासन-अधिसहन)  
सहन करवुं; भभवुं. सहन करना. Endur-  
ance, bearing troubles etc  
सम० ७;

अहियासणया. (अध्यासनता-अधिसहनता)  
अधिष्ठ सहन करवुं ते, सहनशीलपण्य  
सहनशीलता; बहुत अधिक सहन करना.  
Patient endurance; great  
patience. सम० २७;

अहियासणया. स्त्री० (अहितासनता-अहित-  
मननुकूलमासनं यस्य स तथा तद्भावस्त-  
त्ता) अनुकूल आसन-पेठकनुं न भणवुं ते.  
अनुकूल आसन-बैठक का न मिलना. Not  
getting a proper, agreeable  
seat. ठा० ६;

अहियासणया. स्त्री० (अध्यशनता-अध्यशन-  
मधिकभोजनमेवाध्यशनता) अशुभ्यं छतां

भोजन करवुं ते अजीर्ण होते हुए भी  
भोजन का करना. Taking food in  
indigestion. ठा० ६;

अहियासिय. त्रि० (अध्यासित) परिषद्दि  
सहन करेत्; उपसर्ग आदि श्लेष परीषद्  
आदि सहन किया हुआ. (One) who has  
endured and conquered  
troubles, disturbances etc भग०  
१५, १; (२) न० (भावे क्त) सहन करवुं  
ते. सहन करना. endurance; patience.  
“दवियाण पास अहियासियं” आया० १,  
६, ३, १८५;

अहियासिय. त्रि० (अधिकासिक) वधारे  
नशुकरुं; धण्युं पासेनुं. बहुत नजदीकी.  
Very near; in the near; neigh-  
bourhood. ओघ० नि० ६३३;

अहिरणसोवरिणय. त्रि० (अहिरण्यसौवर्णिक);  
सोनुं, रुपु आदि परिशुद्धरहित. सोना, चांदी  
आदि परिग्रह से रहित. Devoid of such  
worldly possessions as gold,  
silver etc परह० २, ३;

अहिरि. त्रि० (अहारिन्) अनिष्ट; अभनोत्.  
अनिष्ट, मनोहरता रहित Not attractive;  
not charming “जे य अहिरी जे य  
अहिरीमण” आया० १, ६, २, १८३;

अहिरिअ. त्रि० (अहीक) भेशरम; निर्लज्ज.  
निर्लज्ज, वे शर्म. Shameless. पि० नि०  
६३१;

अहिरीमण. त्रि० (अहीमनम्) शीत, उष्ण्युः  
आदि परिसह भवयामा लाज न राषनार.  
शीत, उष्ण आदिक परीषद् सहन करने में  
लज्जा न रखने वाला. (One) not  
feeling ashamed of patiently  
enduring of the troubles of cold,  
heat etc. आया० १, ६, २, १८३;

**अहिलसंत.** व० कृ० त्रि० ( अभिलषत् ) धृ० अ-  
अभिलाषा इरते। इच्छा-अभिलाषा करता  
हुआ। Wishing, desiring सु०  
च० १, ८१,

**अहिला स्त्री०** ( अहल्या ) अहल्या नामनी  
येक स्त्री, के नेने भाटे युद्ध थयुं हुतु अहल्या  
नाम की एक स्त्री, कि जिसके लिये युद्ध हुआ  
या A woman of the name of  
Ahalyā for whom a war was  
waged. परह० १, ४,

**अहिलाण** न० (\*अहिलान-खलीन) येकडुं;  
सगाम लगाम. A bridle, reins. ओव०  
३१, जं० प० ३, नाया० ४, १७;

**अहिलाव.** पुं० ( अभिलाप ) शब्दतु उच्यारथु,  
उच्यारथु शके तेवे शब्द- शब्द का उच्चा-  
रण, उच्चार जा सके ऐसा शब्द. Pronunci-  
ation of a word, a word that can  
be pronounced ठ० २, ३, प्रव०  
१२१४,—इत्थी. स्त्री० (-स्त्री) शब्द उच्यार-  
रमा स्त्री; स्त्री लतिने शब्द, नेम सादा,  
भाषा धत्यादि. स्त्रीलिंग शब्द, यथा शाला, माला  
आदि. A word in the feminine  
gender. सूय० नि० १, ४, १, ५६,

**अहिलास** पुं० ( अभिलाष-अभिलषनमभि-  
लष्यते वा ) धृ० अ; अभिलाषा इच्छा, अभिला-  
षा A desire; a wish क० गं० १, २२,

**अहिलासि** त्रि० ( अभिलाषिन् ) धृ० अवाणे,  
अभिलाषावाणे इच्छा वाला, अभिलाषा  
वाला, ( One ) having a wish,  
desirous विशेष ४,

**अहिलोय.** न० ( अभिलोक-अभिलोक्यते-  
उच्यते यत्र तदभिलोकम् ) उन्नत  
स्थान. उन्नत स्थान. A lofty or  
elevated place. परह० २, ४,

**अहिव.** पुं० ( अभिव ) स्वामी; अधिपति, धरुी.

स्वामी; मालिक; धनी. Owner, lord;  
king. विशेष १०५५,

**अहिवइ** पुं० ( अधिपति ) लुओ ' अहिव.'  
शब्द देखो 'अहिव' शब्द Vide 'अहिव.'  
नाया० ८, १७, राय० १६, ३७; ज० प०  
४, ११५; उत्त० ११, १६, भग० ३,  
१; १२, ६, परह० १, ४, कप्प० ३, १३.  
—जंभग पुं० (\*जृम्भक-जृम्भकाधिपति )  
लंका देवताने अधिपति जृम्भक देवों  
का अधिपति. the lord of the  
Jrimbhaka gods भग० १४, ८,

✓ **अहिवड.** धा० I ( अधि+पत् ) आवुं.  
आना To come अहिवडंति. ओघ०  
नि० ८१;

**अहिवडंत.** व० कृ० त्रि० ( अभिपत्त् ) स-मुष्-  
आवतो. सामने आता हुआ. Coming  
towards गच्छा० ११५,

**अहिवासण** न० ( अधिवासन ) सुगंधि वस्तु  
छाटवी ते सुगन्धित वस्तु का छिड़कना  
Sprinkling with a fragrant  
substance पंचा० ८, २१;

**अहिसंधारण.** न० ( अभिसन्धारण ) अलि-  
प्राय आधवे-धारण करवी ते. अभिप्राय निश्चित-  
करना, धारण करनी Act of form-  
ing a definite idea or opinion  
पचा० ६, ३६,

**अहिसकरण.** न० ( अभिष्वक्कन ) क्रियाना  
समयने उद्यधीने ते क्रिया करवी ते, नेम के-  
गोचरीने समय भव्याहृकाण नियत होवा।  
छता कलाकभे कलाक भेडा गोचरीने वुं ते.  
किसी क्रिया के नियमित समय का उल्लघन  
करके वह क्रिया करना, जैसे भिक्षा का  
समय मध्याह्न काल निश्चित होने पर भी घंटे  
दो घंटे देरी से भिक्षार्थ जाना Doing a  
thing after the appointed time  
has lapsed, e g going to beg

too - in the afternoon when the me fixed for it is mid-noon.  
 ओष० नि० भा० २१६, ( २ ) आसपास  
 दुधु ते आसपास-चारों ओर कूदना  
 jumping about; leaping to and  
 fro. प्रव० १५७;

**अहिसहण.** न० ( अघिसहन ) सहन करने। Act of bearing or enduring ठा० ६;

**अहिसि.** हु-भू वा० भूत० तृ० व० ( अभूवन् )  
 लुभो ' हु ' धातु. देखो ' हु ' धातु. Past  
 tense 3rd person of ' भू ' vide  
 the root ' हु. ' " एतीए सच्चसत्ता सुहिया  
 खु अहिसि तंमि कालंमि " पंचा० ६, २०;

**अहिसिचण.** न० ( अभिषिञ्चत ) स्नान-अ-  
 लिपेड; उपरथी पाणीनी धार सिंथरी ते स्नान,  
 अभिषेक, ऊपर से पानी की धारा डालना  
 Sprinkling of water from above.  
 सम० प० १६३;

**अहिसिक्त** त्रि० ( अभिषिक्त ) राज्यालिपेड  
 इरेव. राज्याभिषेक किया हुआ. Appoi-  
 nted as a king ( one ) crowned  
 as a king / with coronation  
 ceremony. उ० १५, ५२,

**अहिसि** त्रि० ( अहिसि ) अहिसिने,  
 Living read or  
 १५, ५२,

**अहीण.** त्रि० ( अहीन-अधिकः स्वायत्त इनः  
 स्वार्धानः ) स्वाधीन. स्वार्धान. Self-  
 dependent. परह० २, ४; विशेष० ६३;

**अहीण** त्रि० ( अहीन ) अधिष्ठत; संपूर्ण;  
 हीनताथी रहित अतिक्रम, संपूर्ण; हीनता से  
 रहित Full; perfect; not defect-  
 ive नाया० १; ७; ८; १२; १६; उक्त०  
 १०, १७; भगव० २६, १; अगुजो० १३,

ओव०—अहरित्त. त्रि० ( अतिरिक्त ) हीन  
 नहि तेम अधिष्ठ नहि. हीनता और अधिकता  
 से रहित; यथार्थ. Neither more nor  
 less; neither defective nor  
 excessive. निसी० २०, ११;—**पचि-**  
**दिय.** न० ( पचिन्द्रिय ) पूरेपूरी पांच  
 धन्द्रियो जेभां छे ओवुं ( शरीर ). सपूर्ण  
 इन्द्रियों वाला(शरीर). (a body) having  
 all the five senses. नाया० १८,

✓ **अहीय.** धा० I. ( अधि + इ ) लघुवुं; पढन  
 इरुं, अध्ययन इरुं. पढ़ना, अध्ययन करना.  
 To study; to learn.

अहीयइ. विशेष० ३१६६;

अहिस्तं. भवि० प्रव० ७८६;

**अहीय.** त्रि० ( अधीत ) लघुवुं; पढन इरेव.  
 पढ़ा हुआ Studied, learned. प्रव०  
 ५३०;

**अहीरग.** न० ( अहीरक-छिद्यमानस्यैव न  
 विद्यन्ते हीरिकास्तन्तुलक्षणा मध्ये यस्य  
 तदहीरकम् ) तंतुरहित; जेने छेदता रेसा  
 न पडे ते तन्तु रहित; जिसमे छेदन भेदन  
 करते समय रेसा न निकले वह Anything  
 having no fibers in it. प्रव०  
 २४४;

**अहीलशिज्ज** त्रि० ( अहीलनीय-प्रशंसनीय )  
 वभाषुया थायड, स्तुत्य प्रशंसनीय, स्तुति करने  
 योग्य. Praise-worthy; meritor-  
 ous. उक्त० १२, २३;

**अहुणा** अ० ( अहुना ) दमला; सध; आ  
 धीमे. अभी, सध., इमी समय Now; just  
 now. उक्त० ५, २७. निसी० १७, ३०;  
 भग० ३, २; ५, ६,—**उवाचित्त.** त्रि०  
 ( उपलित ) तरतनुं दीपेधुं. अभी का लिपा  
 हुआ.freshly smeared; smeared  
 just a little time back. -दस० ५१

१, २०, २१,—उवचन्न. त्रि० ( \*—उपपन्न उत्पन्न ) तत्कालीनो उत्पन्न थयेल तत्काल का उत्पन्न. born at that very moment, freshly born ठा० ४, ३, भग० ३, १, १६, ५, राय० २४८,—धोय त्रि० (—धौत) तत्कालीनु धोवणु, जे शस्त्र परिणत—अचित्त न थयुं होय ते अभी का धुला हुआ, जो अचित्त न हुआ हो वह freshly washed, not freed from sentient beings. “अहुणाधोयं विवज्जए” दस० ५, १, ७५,—भिन्न त्रि० (—भिन्न) तत्कालीना पुटेल, नया अंकुर उगा हुआ freshly sprouted up आया० २, ३, १, १११;

अहे. अ० ( अधस् ) नीचे, अधो नीचे Below, beneath “अहे वयइ कोहेण, माणेण अहमा गई” उत्त० ६, ५४; ३६, ५०; विशेष० ४३२, जं० प० २, ३१; सूय० १, १, २, ८, १, ३, ४, २०, पि० नि० ६८, वेय० ४, २४, दस० ६, ३४, दसा० ६, १; ७, १; नाया० ६, ८; १४, १६, भग० १, ६, २, ५; ३, १; २, ५, ४, ६, ५; ८, ८, १७, १, कप्प० ५, ११४,

अहे. अ० ( अथ ) लुओ ‘अह’ शब्द देखो ‘अह’ शब्द Vide ‘अह’ वेय० २, १०, ठा० ३, १, जं० प० ७, १३६,

अहेउ पु० ( अहेतु ) हेत्वाभास, अनुमितिने न साधनार हेतु. हेत्वाभास, अनुमिति को सिद्ध न करने वाला हेतु. A fallacious middle term or mark, a middle term that does not prove the conclusion. ‘पच अहेउ पणत्ता, तंजहा—अहेऊ य जाणइ० जाव अहेउ छउम-त्थमरण मरइ” ठा० ५, १, सम० अणुजो० १५१, भग० ५, ७,

अहेउअ-य. त्रि० (अहेतुक) हेतुरहित; अन्य-  
न्य; नित्य हेतु रहित; अजन्य, नित्य  
Having no cause; eternally  
existing. विशेष० ७०,

अहेकम्म. न० ( अध कर्मन्—विशुद्धसयम-  
स्थानेभ्यः प्रतिपत्याऽऽत्मानमविशुद्धसयम-  
स्थानेषु यदधोऽधः करोति तदधःकर्मन् )  
जे भोजन इस्वाधी साधुने अधोगतिमा  
जुं पडे ते, आधाकर्म दोषवाणुं भोजनः  
साधुने आक्षरदिमा लागतो आधाकर्म दोष  
जिस भोजन के करने से साधु को अधोगति मे  
जाना पड़े वह आधाकर्म दोष वाला भोजन,  
साधु को आहार मे लगने वाला आधाकर्म दोष  
Sin incurred by a Sādhu by  
Ādhākarmī food, food with the  
fault of Ādhākarma lowering  
down an ascetic in spiritual  
evolution. “भाव अहे करेइ तम्हा तं  
भावहेकम्मं” पि० नि० ६७,

अहेकाय पु० ( अध.काय ) शरीरने नीचले  
भाग शरीर का अधोभाग—नीचे का हिस्सा  
The lower part of the body सू०  
४, १, ३,

अहेगाम पु० ( अधोगाम ) निचु गाम नीचे  
का गाँव A low village. भग० ६, ७,

अहेगारवपरिणाम पु० ( अधोगौरवपरि-  
णाम ) जे परिणामना स्वभावधी लुयने  
अधोगतिमा जु पडे छे तेनुं गौव परि-  
णाम; अलिमानवृत्ति जिस परिणाम के  
स्वभाव से जीव को अधोगति मे जाना पडता  
है वह अभिमानपूर्ण वृत्ति Pride which  
degrades a man to a lower  
condition of existence भग० ६, ७;

अहेतारग पु० ( अवस्तारक ) पिशाचनीयेऽ  
न्तं पिशाचो की एक जाति. A species  
of fiends or goblins पन्न० १,

**अहेपन्नगद्धरुच.** त्रि० ( अघःपन्नगार्द्धरूप-  
अधोऽधस्तनं यत् पन्नगत्य सर्पत्यार्द्धं तस्येव  
रूपमाकारो येषां तेष्व.पन्नगार्द्धरूपाः ) सर्पना  
नीयता पेटाणती भाङ्क सरण-सीधो. सर्प के  
नीचे के हिस्ते के समान सरल-सीधा.  
Straight like the belly of a  
serpent. जांवा० ३; राय०

**अहेभव.** पुं० (अधोभव) रत्नप्रभा आदि नार-  
कीने भव. रत्नप्रभा आदि नारकी का भव.  
Birth of Nārakīs like those of  
Ratnaprabhā etc. पिं० निं० १०१;

**अहेलोग.** पुं० (अधोलोक) अधोलोड; नीयेने  
लोड; पाताण लोड. अधोलोक; पाताल लोक.  
The lower world; the infernal  
world भग० ३, ४; जं० प० ५, ११२;

**अहेलोग.** पुं० (अधोलोक) लुओ 'अहेलोग'  
शब्द. देखो 'अहेलोग' शब्द. Vide 'अहे-  
लोग.' भग० ११, १०; २०, २;—खेत्तणाली.  
छां० (—चेन्ननाली) अधोलोडमांती तस नाडी;  
अधोलोडनी वर्योवय्य ओड रत्न प्रमाण  
क्षेत्र. अधोलोक की तस नाडी; अधोलोक के  
नीचे नीचे का एक राजु प्रमाण क्षेत्र. A  
region in the midst of the  
infernal world. भग० ३४, १;

**अहेवाय.** पुं० (अधोवात) अधोवायु; नीयी  
दिशाने वायु. अधोवायु; अधोदिशा का वायु.  
The lower wind. ठ० ७, १;

**अहेत्तणिज्ज.** त्रि० (अधैपणीच) सुधारना,  
पणाऽवा वगेरेना संस्कार वगरनुं; ले  
स्थितिमा होय तेन स्थितिनुं बुवारने और  
विगाइने वर्गरह के संस्कार से रहित; जिस स्थिति  
में हो उता स्थिति में रहने वाला. ( Any )  
thing in its actual condition;  
neither set right nor thrown

into disorder. "अहेत्तणिज्जाई वत्थाइं  
जाण्जा " आया० १, ८, ४, २११;

**अहेसत्तमा.** छौं० (अधःसत्तमी) तमतमा  
प्रभा नामनी सातमी नरक तमतमा प्रभा नाम  
की सातवीं नरकभूमि. The seventh  
hell named Tamatamā Prabhā.  
"अहेसत्तमाए पुढवीए" ठा० २, ४; नाया०  
१६, भग० ३१, ५; ६;

**अहो.** अ० (अहो) आश्चर्य; विस्मय. आश्चर्य,  
विस्मय. An interjection of sur-  
prise, astonishment. विवा० १;  
दस० ५, १, ६२; ६, २३; अणुजो० १६;  
नाया० २; ३; १२; १३; १६; भग० ३, १,  
२; १५, १; १६, ५; ( २ ) दीनता. दीनता  
an interjection of helplessness;  
( ३ ) आमन्त्रण. आमन्त्रण. an inter-  
jection of address. प्रव० ६१२;

**अहो.** अ० (अधस्) नीये. नीचे. Below;  
beneath; lower; down. अणुजो०  
१०३; ओव० २१, ३८; भग० ३, २;

**अहोअहो** अ० (अधोऽधस्) नीये नीये  
नीचे नीचे. Below, lower and lower.  
पिं० निं० १००;

**अहोक्रड्यग.** त्रि० (अधःकरड्यक)  
नाभिथी नीये धंज्जेणनार. नाभी से नीचे  
खुजाने वाला. ( One ) who scratches  
below the navel भग० ११, .६;

**अहोसिंसं.** अ० (अहर्निशम्) रातदिवस;  
अहोरात्र, हमेशा. रात दिन: अहर्निश. Day  
and night; always. "विरए  
एणइवार्यं अहोसिंसं पणमायायं " अणुजो०  
२८;

**अहोसिंसि.** अ० (अहर्निशम्) लुओ 'अहो-  
सिंसं' शब्द. देखो 'अहोसिंसं' शब्द.  
Vide "अहोसिंसं" विशेष० = ३५,

**अहोदाय** न० ( अहोदान ) आश्चर्यकारी दान; जेहद दान आश्चर्यकारी दान; असीम दान  
Wonderful act of charity " आगा-  
से अहोदाय च बुद्धं " उक्त० १२, ३६;  
भग० १५, १;

**अहोदिशा** स्त्री० (अधोदिशा) नीचेनी दिशा,  
अधोदिशा. नीचे की दिशा, अधोदिशा. The  
lower quarter आया० १, १, १, २;

**अहोनिशं** अ० ( अहर्निशम् ) रात दिवस.  
दिन रात Day and night, always.  
सूय० २, ४, १०;

**अहोभागि** त्रि० (अधोभागिन्-हतभागिन्)  
कमलागी; अभागा; हतभाग्य. Unfor-  
tunate; unhappy. सूय० २, ३, ५६;

**अहोमुह** त्रि० ( अधोमुख-अधोगत्वभिमुखानि-  
अधोगतिनयनशीलानि-अधोमुखानि )  
अधोगति-नरकादिमा लक्ष नरकार अधोगति-  
नरकादि में ले जाने वाला. Leading  
to hell etc पि० नि० १०१, प्रव० ४५२,  
६१२,—मल्लग पुं० (\*-मल्लक-सृत्पात्र)  
नीचे मोड़ुं छे जेतु अवेदा सरावलो. नीचे  
मुख वाला मट्टी का एक पात्र विशेष &  
kind of vessel with its mouth  
pointing downwards प्रव० ६१२,

\***अहोयरात्रो** अ० (अहोरात्रम्) रात दिवस,  
निरन्तर दिन रात, निरन्तर. Day and  
night, constantly. "अहोयरात्रो  
परितप्पमाथे" उक्त० १४, १४, सूय० १,  
१३, २;

**अहोरत्त** न० (अहोरात्र) साठ घड़ी प्रमाणुना  
कालविभाग, रातदिवस, अेक रात अने अेक  
दिवस. साठ घड़ी परिमित कालविभाग, रात  
दिन, एक रात और एक दिन A day  
and a night. " तिविहे अहोरत्ते, तीते  
पडुप्पमे अणागए " ठा० ३, ४; ठा० २, ४,  
तंडु० ५, नाया० ८, भग० ५, १, ६, ७, २५, ५,  
अणुजो० ११५; १३८, जं० प० २, १८, ३१,  
७, १३३, उक्त० ३६, ११३; प्रव० ८६;

**अहोरत्तिया** स्त्री० (अहोरात्रिकी) लुओ  
'अहोराहंदिया' श०६ देखो 'अहोराहंदिया'  
शब्द. Vide "अहोराहंदिया." दसा० ७,  
११,

**अहोराहंदिया** स्त्री० (अहोरात्रिन्दिवा)  
साधुनी ११ भी पडिमा, ६ जेमां छठनुं तप  
करवामां आवे छे अने अेक अहोरात्र प्रमाणु  
गाम अहार रही अमुक आसने कठिसग  
करवामां आवे ते भिक्षुकी ११ भी पडिमा.  
साधु की ग्यारहवां प्रतिमा, जिसमें छठ का  
तप किया जाता है और एक अहोरात्र तक  
ग्राम के बाहर रहकर अमुक आसन से कायोत्सर्ग  
किया जाता है. The 11th vow of an  
ascetic in which the austerity  
known as Chhatha is per-  
formed and religious medi-  
tation is practised outside the  
town in a certain bodily  
posture for a day and a night.  
भग० २, १, नाम० १, दसा० ७, १,

**अहोराह्या** स्त्री० (अहोरात्रिकी) लुओ  
'अहोराहंदिया' श०६ देखो 'अहोराहंदिया'  
शब्द Vide "अहोराहंदिया." पचा० १८, ३;

**अहोराहई** स्त्री० (अहोरात्रिकी) भिक्षुनी ११  
भी पडिमा, ६ जेमा छठनु तप करी गाम  
अहार रहेवानु होय छे. भिक्षु की ग्यारहवां  
प्रतिमा, जिसमें छठ का तप करके गाँव के  
बाहर रहना पड़ता है. The 11th vow  
of a monk by which he has  
to remain outside the town  
after fasting प्रव० ५३५,

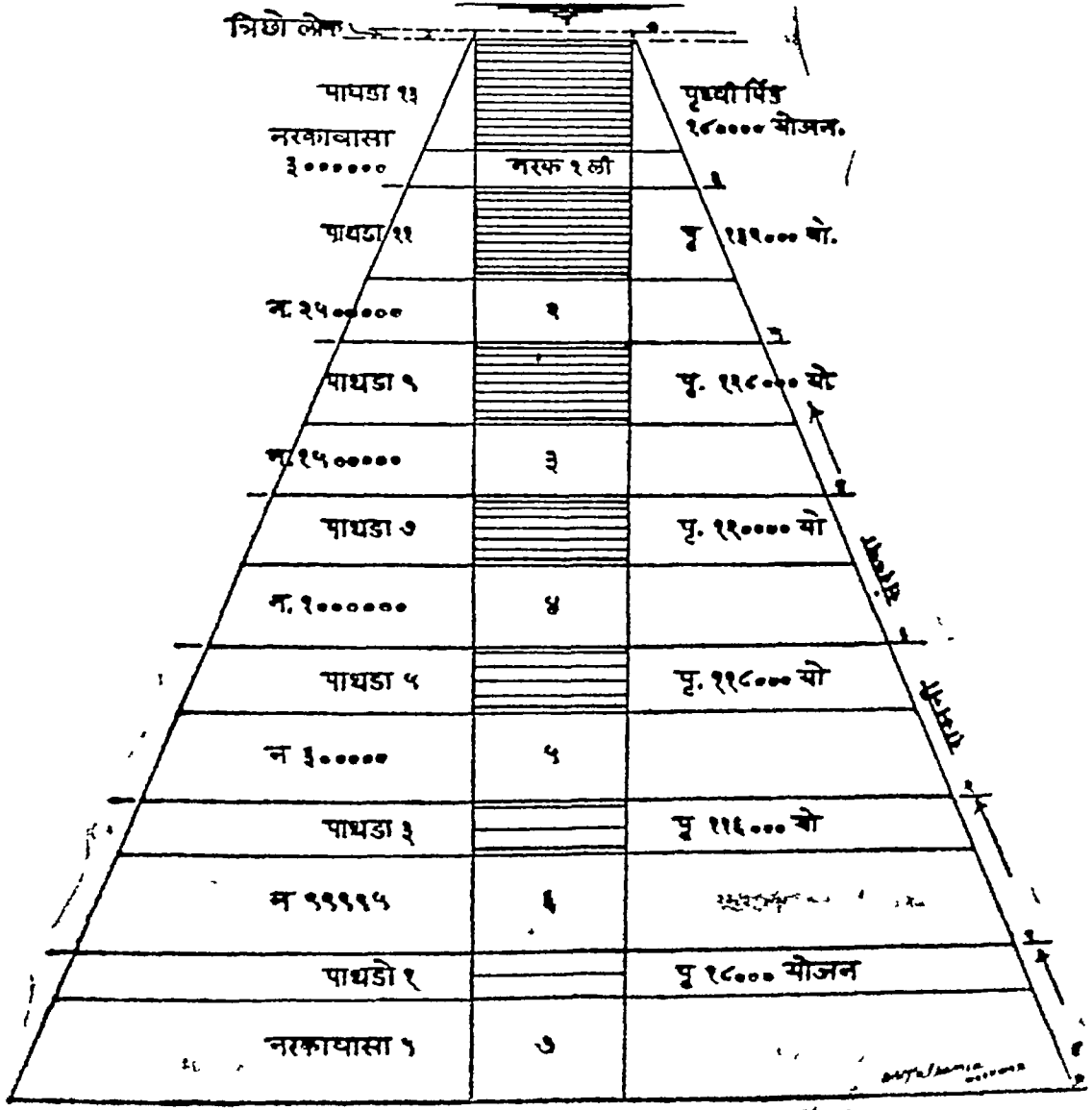
**अहोलोत्र-य** पु० (अधोलोक) नीचेनी लोक;  
पाताण लोक, ६ जेमा सात नरक आवेस छे, ते  
नरकमां तसनाडीना भागमां पाथडा छे तेना  
उपर नरकावासा छे, तेमां नारडी रहे छे. अेकडी



नरके डेटला डेटला पाथडा अने डेटला नरका-  
वासा छे, ते चित्रमां अतावेव छे, पहेली नरक  
अेड राननी, भीछ अे राननी, अेम अेकेड रान  
वधारता, सातमी नरक सात रानना विस्तारमां  
छे अधोलोकमा नारकी, भवनपति, वाणुव्यंतर  
अने नंभडा देवता रहे छे, ते उपरांत पांय  
स्थावर छे अधोलोक, पाताल लोक; जहाँ सात  
नरक हैं, त्रस नाडी के भाग मे पाथडे-स्तर हैं,  
उनके ऊपर नरकावास हैं, उनमें नारकी रहते हैं,  
एक एक नरक में कितने २ स्तर और कितने २  
नरकावास है सां चित्र में बताया गया है ।  
प्रथम नरक एक राजु का, और दूसरा दो राजु  
का है, इस प्रकार एक एक राजु की वृद्धि होने पर

सातवों नरक सात राजु के विस्तार में है अधो-  
लोक में नारकी, भवनपति, वाणुव्यन्तर और  
जृम्भक देव रहते हैं, इनके अतिरिक्त पाच  
स्थावर भौर रहते हैं. The nether world;  
the lower world consisting of  
seven Narakas ( hell ) each  
separated by a certain number  
of earth layers. The middle  
portion of this world is known  
as Trasanādi which is habitu-  
ated by Nāiki beings and  
Bhavanpati, Vanvyantara and  
Jrumbhāka gods. अणुजो० १०३,  
१४८; पञ्ज० २, भग० २, १०;

— अधोलोत्रय-अधोलोक. —



**अहोलोग.** पुं० ( अधोलोक ) लुओो उपलेो  
 श०६. देखो ऊपर का शब्द. Vide above.  
 ठ० ३, २,—वत्थव. त्रि० ( -वास्तव्य )  
 अधोलोकमां वसन्त२. अधोलोक मे बसने  
 वाला ( one ) residing in the  
 nether world (२) स्त्री० अधोलोकावासी  
 दिशाकुमारिका. अधोलोक निवासी दिशाकु-  
 मारिका Dishākumārīkā, living in  
 the nether world नाया० ८,  
**अहोवाय** पुं० ( अधोवात ) नीची दिशानो वायु.  
 नीची दिशा का वायु The wind of the  
 lower quarter ( २ ) अधोवायु;  
 अधोवा; अपानवायु अपानवायु, अधोवायु  
 the lower wind. पञ्ज० १; नाया० १,  
**अहोविहार** पुं० ( अहोविहार ) आश्चर्य कारक  
 विहार, यथोक्त संयमनु अनुष्ठान आश्चर्य  
 कारक विहार, यथोक्त संयम का अनुष्ठान.  
 Wonderful observance of the

rules of asceticism, e. g leaving  
 a place at a punctual time etc  
 “ सुमुट्टिए अहोविहारए ” आया० १, २,  
 १, ६५,

**अहोसिर.** त्रि० ( अधोशिरस् ) नेनुं भायुं  
 नियुं छे ते जिसका मस्तक नीचा हे वह-  
 ( One ) with the head low or  
 down ward “अहोसिरा कंटया जायति”  
 सम० ३४, “उडुं जाण् अहोसिरं” नाया० १,  
 भग० १, १, ८, ७, ११, २,

**अहोहिम्र.** त्रि० ( अधोऽवधिक—परमावधे-  
 रधोवर्त्यवधिर्यस्य सोऽधोऽवधिक. ) परम  
 अधिज्ञानवाणी करता उतगता अधि-  
 ज्ञानवाणी उत्कृष्ट अधिज्ञान वाले से कम  
 दर्जे के अधिज्ञानवाला Next or infe-  
 rior to one who has attained  
 the highest Avadhyñāna,  
 possessed of an inferior degree  
 of Avadhyñāna. राय० २४०,

इति श्री लाम्बडीसम्प्रदायतिलकायमानपूज्यपाद  
 श्री १००८ श्री गुलाबचन्द्रजित्स्वामिशिष्य-  
 श्रीजिनशासनसुधाकर—शतावधानि—परिडत  
 प्रवरमुनिराज श्री१०८ श्रीरत्नचन्द्रजित्स्वामी  
 विरचिते बृहदर्धभागधीकोषे सप्रमाण-  
 मकारादिशब्दसङ्कलनं  
 समाप्तम् ।  
 इति  
 प्रथमो भागः





# Extracts From Opinions.

---

17 Bendler Strasse

Berlin ( Germany )

June 14 th. 1922.

Dear Sir,

With many thanks I beg to acknowledge the receipt of the specimen of the Ardha Māgadhī Dictionary. Your work deserves a cordial welcome from all students of Prākṛit. It fills a decided gap in the literature devoted to this important branch of oriental studies and will be found invaluable to all who are interested in the language, literature and philosophy of Jainism. It bears evidence of a thorough grasp of the students requirements and is as far as I am able to judge from the specimen—comprehensive and well arranged. What I have seen of it, I consider interesting in the highest degree and a useful help to teachers and pupils.

Believe me dear sir,

Yours sincerely,

HELMUTH VON GLASENAPP, Ph. D.

*Privatdozent der indischen Philologie*

*an der Universität Berlin*

---

1 st July 1922.

Dear Sir,

I received your letter with the copy of the specimen of the Ardha Māgadhī Dictionary. I cannot find anything that should be noted with respect to the Dictionary. There is no doubt that your book will be a work of very great interest for all scholars who

are occupied with the study of the Indian languages For it is a matter of regret that there is up to this day no good dictionary of any of the Prākṛit language, so that it is very difficult for the students to read a Prākṛit text especially one in Ardha Māgadhī. This difficulty is a good deal greater for the European students on account of their being quite unacquainted with the element of Ardha Māgadhī whilst every man in India is familiar with it.

Hoping that we need not wait too long till your Dictionary will appear

*Preussische Staatsbibliothek*

*Orientalists*

*Underden Linden 38.*

*Berlin N. W. 7.*

I remain

Dear Sir,

Yours sincerely,

JOH. NOBEL,

---

*Bonn 15 th March 1922.*

Dear Sir,

I have received your circular letter and the specimen of an Illustrated Ardha Māgadhī Dictionary, and I congratulate you on succeeding to bring out this eminently important work at a comparatively moderate cost.

Yours truly,

PROF H. JACOBI.

---

*Godesberg, 4 th July 1922.*

Dear Sir,

I thank you for your letter accompanied with a copy of the Ardha Māgadhī Dictionary It will be the first complete Ardha Māgadhī Dictionary and certainly a very useful work for

scholars and students - I congratulate you for this great and prominent undertaking

I will acquire this indispensable work.

Yours faithfully.

PROF. Dr. W. KIRFEL.

---

*Hamburgische Universität.*

**Hamburg** 36, *March 28 th 1922.*

*Seminar Für Kultur und*

*Edmund Siemers Allee.*

*Geschichte Indiens.*

Dear Sir,

Please accept my best thanks for a copy of the printed specimen of an Illustrated Ardha Māgadhī Dictionary. To judge from the specimen pages, the work is done with great devotion and care and deserves the attention of the European Prākṛitists in a high degree.

The S S Jain Conference which is going to publish this work should gain a great merit by distributing a few copies among those German scholars who by long years' work promote the knowledge of Jain religion and literature in Europe

With my best wishes for good success of your undertaking.

I am dear sir,

Yours

PROF. W SCHÜBRING.

---

Prague ( *Czecho-Slovakia* )

*July 16 th. 1922.*

Dear Sir,

I am much obliged to you for sending me the specimen of the *Ardha Māgadhī Dictionary*. It will, as far as I can see from the specimen, be a very useful work for all scholars interested in Jaina literature.

I have asked the Librarian of our University Library to order a copy of the work.

Yours truly

M. WINTERNITZ.

---

*10 August 1922.*

Dear Sir,

I am in receipt of your letter dated 26th/s which owing to my removal I could not answer sooner.

The prospectus formerly sent to me made a very favourable impression upon me and I shall be pleased to obtain with the help of this valuable work a wider knowledge of Prākṛit and the Jaina writings.

*Valerius street 171,*

**Amsterdam.**

Yours Truly,

**B. TADDEGON.**

---

Katmandu, Nepal,

6 th July 1922.

Sir,

I am in receipt of your post card dated 22-6-22 asking for my opinion. My opinion is that you are doing a very useful work and which will be greeted by all scholars. I wish to be one of your first subscribers, and I shall send you the amount as soon as required. I am sure that I shall get several subscribers from my colleagues and pupils at home.

My compliments also for the illustrations which are a very happy feature of the work. I am myself particularly interested in this line and I have been in communication with Mr P C Nahar for getting photos of several of his Jain pictures. Perhaps I shall visit Indore next September, and I shall not miss to visit you.

Yours sincerely,

SYLVAIN LEVI.

*Professor*

*an Collège de France.*

---

56-58 Walkeshwar Road,

Malabar Hill,

Bombay.

The 18th June 1922.

Dear Sir,

As far as I can judge from the specimen, it seems to me to be a work of a real importance and very useful for every student of Jaina religious works. Already the simple fact, that there was not



any up-to-date Ardha-Māgadhī Dictionary, shows the importance of such a work. It is an excellent idea to illustrate the explanations of the words by pictures, as very often it is very difficult for a man, who never has been in India and did not study Indian knowledge by the help of an Indian native, to understand some of the abstruse theories about the Indian idea about the world, the heavens, hell's etc without proper diagrams. Therefore this book will be useful also to such students, who never have had the opportunity either to come to India or to have an Indian teacher.

The parallel explanation of each word in English, Gujarati and Hindi together will be useful not only to the Indian students, but also to the Europeans, specially to those of Non-English nationality, who will be helped very often by the Hindi translation especially.

The only suggestion I may make, is to advise you to carry the work through the press as soon as possible, because the work is badly wanted by all students of Jainism, and at the same time to care, that the printer's mistakes may be eliminated up to the unavoidable minimum, then very often the Indian books of a high importance lose all their value by heaps of either corrected or uncorrected printers' mistakes, which make often the book if not entirely useless, then at least a great hindrance in the scientific study of the respective subjects.

Hoping this will satisfy you.

I remain

Yours truly,

DR. O. PERTOLD. Ph. D.

*Senate House*  
*College Square Calcutta*

29-8-1922

Dear Sir,

Your letter of 13th instant and a specimen of an illustrated Ardha-Māgadhī Dictionary are to hand I have gone through the specimen pages and find that the Dictionary will be a very useful guide to Philologists Prākṛitists and lovers of Jain literature. It will remove a great want of students of ancient Indian literature

To the students of Māgadhī now known as Pāli, it also will be very useful. There are many common words in these two languages. You will do a great service to the cause of Māgadhī literature by bringing out the proposed Dictionary.

I shall subscribe a copy of your dictionary later on

Wishing you all success in your noble undertaking

Yours faithfully  
S PURNANAND.

---

*48 Indian Mirror Street*

**Calcutta**

1922

Dear Sir,

I note with pleasure the publication of the Prākṛit Dictionary undertaken by you. I am sure it will be a scholarly work and will prove very useful to scholars interested in Prākṛit language.

As encouragement, I wish to subscribe 3 copies of *Ardha Māgadhī Dictionary* which please note.

Yours faithfully,

PURANCHANDRA NAHAR.

---

*Camp Indore*

*27 th June 1922.*

My dear Mr Bhandari,

I have gone over the specimen of the *Ardha Māgadhī Dictionary* which when completed will be very helpful to the students as well as to those who are in research work. Being pentalingual it should be very useful to almost all educated people of North India as well as elsewhere. It is not only a Lexicon but it is an, Encyclopaedia not a mere Glossary but attempt has been made to explain as clearly as possible the numerous technical terms that are met in the *Ardha Māgadhī Literature*. The quotations themselves give references to a rich Bibliography.

Suggestions are unnecessary when you have already taken so much pains and diligence to make the Dictionary exhaustive. Suggestions will merely add to your labour. As for my opinion I can only say your work is highly creditable.

Yours sincerely,

I. W. JOHORY. M. A B.D.

*Prof. Indore Christian College*

# कर्त्तव्य-कौमुदी ।

हिन्दी भाषानुवाद सहित ।

सम्पादक

सचित्र अर्ध-मागधी कोष के रचयिता

शतावधानी मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ।

पृष्ठ संख्या ५५० ]

[ मूल्य सजिल्द का रु. २ )

मानवीय जीवन को सफल एवं समुन्नत बनाने के लिये जिन २ कर्त्तव्य कर्मों की परमावश्यकता है, वे सब सामान्य और विशेष रूप से इस ग्रन्थ में बतलाये गये हैं । इस परमोपयोगी ग्रन्थ को बनाकर महाराजश्री ने जनसमाज पर बड़ा भारी उपकार किया है । यह ग्रन्थ स्त्री, पुरुष, बाल, युवा और वृद्ध सबके लिये अनुपम उपदेश देने वाला सिद्ध हो चुका है । भारत की साक्षर समाज में इसका प्रकाम आदर है तथा हिन्दी के प्रसिद्ध २ समाचार पत्र और पत्रिकाओं द्वारा पर्याप्त प्रशंसित भी हो चुका है । गायकवाड राज्य में पारितोषिक और पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत किया गया है । इस ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में सामान्य कर्त्तव्य, दूसरे में विद्यार्थियों के कर्त्तव्य और तीसरे में गृहस्थों के कर्त्तव्य बतलाये गये हैं । जैन तथा जैनेतर सर्व साधारण के लिये यह ग्रन्थ उपयुक्त और आदेय है । सत्य, क्षमा, शील, ध्यान, नीति, धर्म, व्यवहार, व्यायाम, चिकित्सा, व्यसन-त्याग आदि २ का मर्मस्पर्शी उल्लेख करते हुए पति का पत्नी के प्रति कर्त्तव्य, स्त्री का पति के प्रति कर्त्तव्य, पिता पुत्र का, माता पुत्र का, वहिन भाई का, सास बहू का, विधवा का कर्त्तव्य आदि २ गृहस्थाश्रम के प्रधान २ अंगों का प्रतिपादन पूर्ण विवेचन के साथ इस शैली से किया गया है कि प्रत्येक मनुष्य इसे एक बार पढते ही अपने जीवन को सफल बनाने के वास्ते प्रतिज्ञावद्ध सा हो जाता है । अपने चरित्र को उच्चतम बनाकर ऐहलौकिक और पारलौकिक सुख प्राप्त करने की सदिच्छा वालों को तत्सादनभूत इस अमूल्य ग्रन्थरत्न को अवश्य पढना चाहिये तथा इसमें विन्यस्त सामयिक, सर्वमान्य सिद्धान्तों का रहस्य हृदयङ्गम करके तदनुसार व्यवहार करना चाहिये । इस ग्रन्थ के प्रत्येक श्लोक में प्रसादगुण कूट २ कर भरा हुआ है । हरएक पद्य आत्मसात् करने योग्य है । माधुर्य और अर्थगाम्भीर्य को विशेष स्थान दिया गया है । ग्रन्थकर्त्ता की असाधारण विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता, वाक्यचातुरी, नीतिनिपुणता, तत्वावधारणता, तथा धार्मिकता का एवं जनता की वर्तमान परिस्थिति का साक्षात्कार करने वालों को इस ग्रन्थ का अवश्य अवलोकन करना चाहिये ।

इस ग्रन्थ रत्न का गुजराती संस्करण हजारों की संख्या में विक्रय हुआ है ।

मिलने का पता.—मुन्शी केसरीमल मोतीलाल रांका अर्जुनवीस

ऑनरेरी मैनेजर, जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय, व्यावर ( राजपुताना )



